मध्यएसिया का इतिहास

खण्ड २

राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्,
पटना

समर्पण

परंगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको
जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके बाद भी
मेरे जीवन की प्रिय निधि है

वक्तव्य

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड के 'वक्तव्य' में यह निवेदन किया जा चुका है कि परिषद् ने इसका प्रकाशन किस परिस्थिति में क्यों स्वीकृत किया था और इसकी मुद्रणशैली मे परिषद् की नियम-परम्परा से कुछ भिन्नता होने का कारण क्या है।

प्रस्तुत खंड की छपाई १९५४ ई० में ही शुरू हो गई थी। पहला खंड इसके बाद छपने लगा और इससे एक वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो गया। इस खंड के प्रकाशन मे अनिवार्य कारणो से विलम्ब तो हुआ, पर कठिनाइयो को देखते हुए विलम्ब स्वाभाविक जान पडता है। विज्ञ पाठक इस बात का अनुमान कर सकते है।

पहले खण्ड से इस खण्ड का आकार डेवढ़ा है। दोनों खण्ड मिलकर यह इतिहास एक हजार पृष्ठों से अधिक का हुआ है। इसकी विशालता के अनुसार लेखक की श्रमशीलता का अनुमान भी पाठक अनायास कर सकते हैं।

श्री राहुल जी की साहित्यसेवा पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होने साहित्य के विभिन्न विषयों पर जितना अधिक लिखा है, उतना दूसरा कोई एक साहित्यसेवी अबतक नहीं लिख सका है। उन्हें केवल उद्‌भट लेखक न मानकर एक सुप्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ही मानना उपयुक्त होगा। उनकी नई खोज और नई प्रतिभा की देन से हुई हिन्दी-साहित्य की समृद्धि सादर उल्लेखनीय है।

वर्तमान युग की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति मे एसिया का महत्त्व दिन-दिन बढ रहा है। उसमें भी मध्य एसिया के साथ भारत के ऐतिहासिक सम्पर्क की प्राचीनता पर ध्यान देने से इस इतिहास की उपादेयता और भी बढ जाती है। इसकी प्रामाणिकता का अनुभव स्वय पाठक ही कर सकते है, क्योकि श्री राहुलजी के बहुवर्षव्यापी मौलिक अनुसन्धान के परिणाम-स्वरूप यह इतिहास तैयार हुआ है। अत आशा है कि इससे हिन्दी के चिरकालानुभूत अभाव की पूर्त्ति होगी।

कार्त्तिक-पूर्णिमा, शकाब्द १८७९ — शिवपूजन सहाय
नवम्बर १९५८ ई० — (संचालक)

प्रस्तावना

पुस्तकके अंतिम खंडको पाठकोंके हाथ में जाते देखकर, मालूम होता है, एक बड़ा भार सिर से उतर गया। इस सारे समयमे कई बार आशा और निराशाके बीचमे भटकना पडा था। बाधायें कभी प्रकाशककी ओरसे और कभी प्रेसकी ओरसे आ जाती थी। एक प्रेसमे प्रथम खडके आठ-दस फार्म कपोज हो जानेके बाद काम रुक गया, और अंतमे प्रकाशक वदलने पर ही गाडी आगे चली। द्वितीय खडको मैंने स्वय कागज दे कर अपनी जिम्मेवारीपर प्रेसमे दे दिया, पर प्रेसकी गड़बड़ी इतनी हो गई, कि आशा नही थी, नैया पार होगी। खैर, "कुफ्र टूटा खुदा-खुदा करके"। ऐसी बाधायें उपस्थित न हुई होती, तो ग्रथ तीन साल पहले ही प्रकाशित हो गया होता।

मध्य-एसियाके इतिहासपर किसी भी भाषामे कोई विस्तृत ग्रथ नही है। जो एकाध है भी, वह बहुत सक्षिप्त तथा कालमे बहुत दूरतक हमे नही ले जाते, और न वह आधुनिकतम सामग्रीपर आधारित है। मध्य-एसियाके इतिहासकी सामग्रीकी गवेषणा सोवियत रूसमें बहुत हुई है। किसी-किसी कालपर ग्रथ भी लिखे गये, पर संपूर्ण कालके ऊपर लिखनेको आगेके लिये छोड़ दिया गया। इन बातों से लेखककी कठिनाई मालूम होगी। इस ग्रथमें अनेक त्रुटिया होनी बिलकुल सभव है। १९४७ के बाद की उपलब्ध सामग्रीका बहुत कम उपयोग मैंने कर पाया है। भारत में सोवियतमे प्रकाशित ग्रथ और अनुसंधान-पत्रिकायें सुलभ नहीं है।

मध्य-एसियामे चीनी मध्य-एसिया भी शामिल है। जिसके किसी-किसी कालपर इस ग्रंथमें काफी विवेचन हुआ है, पर पूरी तौरसे लिखना बाकी है। मेरी इच्छा तिब्बत को लेते चीनके इतिहासपर एक विस्तृत ग्रथ लिखनेकी है। यदि उसके लिखनेमे सफल हुआ, तो यह कमी पूरी हो जायगी। पर, इसमें आयु और भौतिक बाधायें ही रास्ता रोके नही है, बल्कि हमारे स्वतंत्र देशकी नौकरशाही भी पूरी तौरसे रोडा अटकाने के लिये तैयार है। अग्रेजी शासनमे सिर्फ पहली बार मुझे छिपकर तिब्बत जानेकी जरूरत पड़ी थी। मेरे राजनीतिक विचार उस वक्त भी वही थे, जो आज है। पर, अग्रेजी सरकार और अग्रेज नौकरशाहोंने सास्कृतिक कार्यके महत्वको समझते बाधा नहीं दी।

१९३४ ई० मे मै दूसरी बार तिब्बत जानेके लिये ब्रिटिश पोलेटिकल एजेटके पास गंतोकमें आज्ञापत्र लेने गया। नाम मालूम होते ही वह बडे हर्षके साथ मिले। और आज्ञापत्र ही नही दिया, बल्कि अधिक आत्मीयता दिखलाने के लिये तिब्बतमें अपने लिये हुए फोटो दिखलाये, कितनी ही बातें पूछीं। उसीके स्थानपर १९५० में जो भारतीय सज्जन थे, वह मिलनेपर बिलकुल दूसरे ही साबित हुए। उन्हें तिब्बतके बारेमे कोई जिज्ञासा नही थी, और शिष्टाचारके नाते ही एक-दो मिनटके लिये मिले। नौकरशाहीने एकबार पासपोर्ट देनेसे इन्कार किया, खैर, दूसरी बार कोशिश करने पर वह मिल गया। उसके लिये बड़ी उत्सुकता इसी कारण है, कि तिब्बतमे भारतीय सस्कृत-ग्रंथोकी नई तालप्रतियोके मिलनेकी संभावना है।

ग्रथके प्रकाशित होनेका सबसे अधिक श्रेय श्रीजगदीशचन्द्र माथुर (तत्कालीन शिक्षा-सचिव, बिहार) और श्री शिवपूजन सहाय को है। शिवपूजन बाबू तो ग्रथको प्रकाशित देखनेके लिये मुझसे भी अधिक उतावले थे।

मसूरी,

२०–९–५७

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
भाग १		मंगोल-हथियार	२४
उत्तरापथ (१२००-१५५० ई०)		३. सरतक	२६
१. चीनमें मंगोल-वंश (१२००-१३६८ ई०)	३	४. उलकची	२६
१. छिङ-गिस्	३	५. बेरेक (बरका)	२६
२. उगेताइ (ताइ-चुङ)	४	६. मङ-गू-ते (मुङ-खे) तेमूर	२९
३. गू-युग्, गो-दान (चिङ-चुङ)	६	७. तुदा-मङगू	२९
४. मुङ-खे (स्यान्-चुङ)	७	८. तोगताइ	२९
५. क़ुबिलेइ (शि-चू)	७	नोगाइके साथ संघर्ष	३०
(१) मार्को पोलो	१०	९. उज़्बेक खान	३१
(२) जाति-व्यवस्था	१२	(१) आपसी संघर्ष	३१
६. थुबु-थेमुर (चेङ-चुङ)	१४	(२) यूरोपपर अभियान	३४
७. खु-लुग् (वू-चुङ)	१४	(३) मास्को राजुल	३४
८. बोयन् थू (जुन्-चुङ)	१५	(४) इस्लामसे सहानुभूति	३६
९. गेगेन्, शु-तु-फल (यिङ-चुङ)	१५	१०. दिनीबेग	३८
१०. यिसु-थेमुर (ताइ-चिङ-ति)	"	११. जानीबेग	३८
११. रिन्-छेन्-फग्-, (यू-चू)	"	(१) प्लेग महामारी	३८
१२. कुसलऽ (मिङ-तिङ)	"	(२) ईरानपर आक्रमण	३९
१३. थुग्-थेमुर (वेन्-चुङ)	१६	१२. बरदीबेग	४२
१४. रिन्-छेन्-पल् (निङ-चुङ)	१६	१३. किलदीबेग	४२
१५. थेगन्-थेमुर (शुङ-ति)	१६	१४. नौरोज़बेग	४२
वंश-वृक्ष	१७	१५. चेरकेसबेग	४२
२. सुवर्ण-ओर्दू (१२२४-१३७५ ई०)	१८	१६. ओर्दा शेख	४३
१. जू-छि (तू-शि)	१८	१७. खिजिर	४३
२. बा-तू खान, जू-छि-पुत्र	२०	१८. कुलफा	४३
(क) बाश्किर-विजय	२१	१९. तेमूरखोजा	४३
(ख) बोल्गार-विजय	२१	२०. मुरीद	४३
(ग) सकसिन-विजय	२२	२१. अजीज	४३
(घ) मास्को-विजय	२२	२२. हाजीखां	४३
(ङ) कियेफ्-विजय	२२	वंशवृक्ष	
(च) यूरोप-विजय	२३	**३. श्वेत-ओर्दू (१२२४-१४२५ ई०)**	४५
		१. जू-छि	४५

अध्याय	पृष्ठ
२. ओरदा, एसन	४६
३. कोनिचि	४६
४. बायन	४७
५. ससीबूगा	४८
६. एर्जन	४८
७. मुबारक खोजा	४८
८ चमिताई	४८
९. उरुस खान	४८
१०. तोगताकिया	५०
११. तेमूरबेग	५०
१२. तोकतामिश	५१
मास्को-ध्वंस	५१
तेमूरके साथ लड़ाइयां	५५
प्रथम महाभियान	५६
द्वितीय अभियान	६०
१३. कोइरिअक	६२
१४. तेमूर कुतुलुक	६२
१५. शादीबेक	६३
१६. पूलाद खान	६३
१७ तेमूर खान	६४
१८. जलालुद्दीन जलाबेर्दी	६५
१९. करीमबर्दी	६५
२०. चिङ-गिज ओगलान	६५
२१. जब्बार बर्दी	६६
२२. दर्विस खान	६६
२३. चकरा खान	६६
२४. किबेक	६६
२५. उलुक मोहम्मद	६७
२६ सैयद अहमद	६७
२७. मोहम्मद	६७
बोरक (बुर्रांक)	६८
२८. मुहम्मद सुल्तान	६९
२९. दौलत बर्दी	६९
३०. कादिर बर्दी	६९
३१. शादी बेक	६९
३२. सैयद (सैदक)	६९
३३. कासिम	६९
३४. अकनजर, हकनजर	७०

अध्याय	पृष्ठ
वंशवृक्ष	७०
४. रूस रूरिक-वंश (९११-१५९४ ई०)	७१
अवतरणिका	७१
शक-सरमात	७१
वेन्द	७१
अंत	७१
रूसोके पड़ोसी मंगोलायित	७३
बोल्गार	७३
खाजार	७४
पेचेनेगा	७५
क कियेफ़के राजुल	७५
१. रूरिक	७५
२. ओलेग्	७७
३. ईगर	७८
४. ओलगा, ईगर पत्नी	८२
५. स्व्यातोस्लाव I	८२
६. व्लादिमिर	८३
ईसाई-धर्म स्वीकार	८३
७ स्व्यातोपोल्क	८४
८. यारोस्लाव I	८४
"रुस्कया प्राव्दा"	८५
९. इज़्यास्लाव	८६
स्व्यातोस्लाव	८७
१०. स्व्यातोपोल्क	८७
११. व्लादिमिर मनोमाख	८७
"ईगर-सेना-गाथा"	८९
ख. रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल	९०
१२. यूरी I दीर्घबाहु	९०
१३. अन्द्रेइ बगोल्युवोव्स्की	९१
१४ व्सेवोलद	९१
१५. यूरी	९२
१६. यारोस्लाव	९२
नवोगोरद	९३
१७. अलेक्सान्द्र नेव्स्की	९५
ग. मास्को महाराजुल	९६
१८. दानियल	९६
२०. इवान I (खलीता)	९७
२१. सेमेओन	९७

अध्याय	पृष्ठ
२२. इवान II	९७
२३. दिमित्रि दोन्स्की	९८
२४. वासिली	९९
२५. वासिली II अंध	९९
२६. इवान III	९९
मंगोल शासन समाप्ति	१००
तुर्की	१००
अफनासीकी भारत-यात्रा	१०१
२७. वासिली III	१०६
२८. मेलेना	१०६
२९. इवान IV	
राज्य-विस्तार	१०७
येरमक द्वारा साइबेरिया-विजय	१०९
३०. फ्योदर	११५
वंशवृक्ष	११७

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४-१७४३ ई०)

अध्याय	पृष्ठ
१. चगताई वंश (१२२२-१३७० ई०)	१२१
१. जगताई	१२१
बुखारा-विद्रोह	१२१
राजावलि	१२५
२ करा हुलाकू	१२६
३. येस्सू मङ-गू	१२६
करा हुलाकू	१२७
४. एरगेना	१२७
५. अलगू (अरिकबुगा)	१२८
६. मुबारकशाह	१२९
७. बोराक	१२९
८. निगपई	१३१
९ तोका तेमूर	१३१
१०. दुवा (दावा)	१३१
११. कुजेक (कंचोक)	१३३
१२. तलिकू (खिजिर)	१३३
१३. केबेक	१३३
१४. एसेनबुगा	१३३
केबेक (पुनः)	१३४
१५. इलिकदई	१३४
१६. तुवा (दुवा) तेमूर	१३४
१७. तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिङ)	१३४
१८. बूज़न	१३५
१९. जेकिश	१३५
२०. येस्सुन तेमूर	१३६
२१. अली सुल्तान	१३६
२२. मुहम्मद पुलाद	१३६
२३. काजान (गाजान)	१३६
२४. दानिशमंद	१३६
२५. बायन कुल्ली	१३६
२६. तेमूरशाह	१३६
२७. इलियास खोजा	१३७
२८. काबिलशाह	१३७
चगताई-अर्थ-नीति	१३७
साहित्य	१३७
वंशवृक्ष	१३८
२. हुलाकू-वंश (१२५६-१३४५ ई०)	१३९
राजावलि	१३९
१. हुलाकू, खुलागू	१३९
२. अबका	१४३
३. अहमद तगूदर, निकोदर	१४३
४. अरगून	१४३
५. गैखातू	१४४
६. बैदू	१४४
७. गाजन	१४४
८. उलजैतू (खुदाबन्दा)	१४५
९. अबूसईद	१४५
वंशवृक्ष	१४७
हजारा	१४७
साहित्य	१४७
३ तेमूर-वंश (१३७०-१५००ई०)	१४८
१. तेमूरलंग	१४८
तोकतामिशपर आक्रमण	१५०
भारतपर आक्रमण	१५१
तेमूरके उत्तराधिकारी	१५४
राजावलि	१५५
२. खलील सुल्तान	१५५
३. शाहरुख	१५५
४. उलुगबेग	१५७

अध्याय	पृष्ठ
साहित्य	१५८
५. अब्दुललतीफ	१५८
६. अब्दुल्ला	१५९
७. अबूसईद	१५९
८. अहमद	१६०
कवि नवाई	१६०
९. सुल्तान मुहम्मद	१६२
१०. बैसुकर	१६२
११. सुल्तान अली	१६३
१२. जहीरुद्दीन बाबर	१६३
साहित्य और संस्कृति	१६३
वंशवृक्ष	१६४
४. शैबानी-वंश (१५००-९९ ई०)	१६५
अबुल्खैर	१६५
राजावलि	१६७
१. मुहम्मद शैबानी	१६७
२. कुचुनजी	१७३
३. अबूसईद खान	१७७
४. उबैदुल्ला	१७८
५. अब्दुल्ला I	१७९
६. अब्दुललतीफ	१७९
७ नौरोज मुहम्मद	१७९
८. पीर मुहम्मद	१७९
९. इस्कन्दर	१७९
१०. अब्दुल्ला II	१८०
११. अब्दुल मोमिन	१८२
१२. पीर मुहम्मद	१८२
साहित्य संस्कृति	१८३
वंशवृक्ष	१८३
५. अस्त्राखानी (१५९९-१७४७ ई०)	१८५
१. दीन मुहम्मद	१८५
राजावलि	१८६
२. बाकी मुहम्मद	१८६
३. वली मुहम्मद	१८६
४. सैयद इमामकुल्ली	१८७
५. सैयद नादिर, नाजिर	१८९
६. सैयद अब्दुल अजीज	१९०
७. सैयद सुभानकुल्ली	१९१
८. मुकीम	१९२

अध्याय	पृष्ठ
९. उबैदुल्ला I	१९२
१०. अबुल्फैज	१९२
११. सैयद अब्दुल् मोमिन	१९४
१२. सैयद उबैदुल्ला II	१९४
१३. सैयद अबुल्गाजी	१९४
वंशवृक्ष	१९५
६. खीवा-खान (१५१५-१७१४ ई०)	१९६
१. इलबर्स	१९९
२. सुल्तान हाजी	१९९
३. हसनकुल्ली	१९९
४. सोफियान	१९९
५ बुजुगा	२००
६. अवानेक	२००
७. काल	२०१
८ अकताई खान	२०१
९ दोस्त खान	२०२
मुहम्मद	२०२
१०. हाजिम मुहम्मद	२०५
जेन्किन्सन (अंग्रेजी यात्री)	२०५
११. अरब मुहम्मद	२०६
१२ इस्फन्दयार	२०७
१३. अबुलगाजी	२०८
१४. अनुशा मुहम्मद	२११
१५. मुहम्मद एरेंक (औरंग)	२१२
१६. शाहनियाज	२१२
१७. अरब मुहम्मद II	२१२
१८. हाजी मुहम्मद	२१२
१९ यादगार	२१२
वंशवृक्ष	२१२

भाग ३

उत्तरापथ (१५९-१८०१ ई०)

अध्याय	पृष्ठ
१. रूसका प्रसार (१५९८-१८०१ ई०)	२१७
१. बीचके जार	२१७
१. बोरिस गदुनोफ	२१७
२. फ्योदोर	२१९
३. दिमित्रि (मिथ्या)	२१९
४. वासिली शुइस्की	२२०

अध्याय	पृष्ठ
५. व्लादिस्लाव	२२१
२. रोमनोफ-वंश	२२४
१. मिखाइल	२२५
चीनतक प्रसार	२२७
२. अलेक्सी	२२७
शासन-यंत्र	२२८
उक्रइन विलयन	२२९
वोल्गाकी-जातियां	२३४
राजिन-विद्रोह	२३५
साइबेरियामें प्रसार	२३८
चीनसे संबंध	२४१
साइबेरियामें विद्रोह	२४४
साइबेरियामें रूसी बस्तियां	२४४
३. फ्योदोर	२४५
४. इवान IV	२४६
५. पीतर I	२४६
पूर्वमे प्रसार	२५१
शासन-सुधार	२५१
शिक्षा और संस्कृति	२५२
पीतरबुर्ग-निर्माण	२५२
साइबेरिया	२५२
चीनके साथ संबध	२५३
६. एकातेरिना I	२५५
७. पीतर II	२५६
८ अन्ना	२५६
९. इवान II	२५७
१०. एलिजाबेत	२५७
११. पीतर III	२५८
१२. एकातेरिना II	२५९
प्रथम तुर्की युद्ध	२६०
किसान-संघर्ष (पुगाचेफ)	१६१
वैदेशिक नीति	२६२
चीनसे संबंध	२६३
शिक्षा और संस्कृति	२६४
रूस प्रतिगामिताका गढ़	२६७
१३. पावल I	२६८
साइबेरियाकी जातिया	२७१
२. श्वेत-ओर्दू (१४२५-१७२८ ई०)	२७५
राजावलि	२७५
१. बुर्राक	२७५
२. गिराई	२७५
३. बेरेंदक	२७७
४. कासिम	२७७
५. मीमाश (बिनाश)	२७७
६. ताहिर	२७७
७. उजियाक अहमद	२७८
८. अकनजर	२७८
९. शिगाई	२७९
१०. तववकल	२८०
११. इशिन	२८१
१२. यमगीर, जहागीर	२८२
१३. तौफीक	२८२
वंशवृक्ष	२८३
३. नोगाई	२८४
१. नोगाइ (१३००-१७२४ ई०)	२८४
१. नोगाई	२८४
२. चुको	२८४
३. बुरी	२८५
४. कराकिजिक	२८५
५. करा नोगाई	२८६
२. महानोगाई	२८६
१. नूरुद्दीन	२८६
२. ओकस	२८६
३. यमागुरची	२८६
४. शेख ममाई	२८७
५. युसुफ मिर्जा	२८७
६. अली मिर्जा	२८७
७. इस्माईल मिर्जा	२८७
८. दीनमुहम्मद	२८८
९. उरुस	२८९
१०. अलता	२८९
३. कराकल्पक	२९०
१. ऊपरी कराकल्पक	२९१
२. निचले कराकल्पक	२९१
बातिरखान काइप	२९२
४. मुगोलिस्तानके खान (१३२१-१५६५ ई०)	२९३
राजावलि	२९५

अध्याय	पृष्ठ
१. तुगलक तेमूर	२९५
२. इलियास खोजा	२९६
३. खिजिर मुहम्मद	२९७
४. शमाजहान	२९८
५. मुहम्मद	२९८
६. नक्शेजहान	२९९
७. शेरमुहम्मद	२९९
८. वेइस	३००
९. शातुक	३०१
१०. एसेनबुगा	३०१
११. दोस्तमुहम्मद	३०३
१२. यूनस	३०४
१३. महमूद	३०६
१४. मन्सूर	३०७
१५. सईद	३०८
तिब्बतपर जहाद	३११
१६. रशीद	३१२
१७. अब्दुल करीम	३१३
१८. मुहम्मद खान	३१३
१९. इस्माइल खान	३१३
वंशवृक्ष	३१४
५. सिबिरखान (१५००-१६५९ ई०)	३१५
१. ईबक	३१५
२. मुर्त्तुजा	३१५
३. कूचुम	३१६
४. अली	३१८
५. इशिम	३१९
६. अबलइ गिराई	३१९
७. दौलत गिराई	३१९
वंशवृक्ष	३२०
६. जुंगर-साम्राज्य (१५८२-१७५७ ई०)	३२१
कल्मक-मंगोल	३२१
मंगोल-राजावलि	३२१
अंतर्-मंगोलिया	३२४
बाह्य-मंगोलिया	३२४
कजाक	३२५
जुंगर-राजावलि	३२५
१. खराखुल	३२५
२. बातुर थैची	३२५
३. सेङ-गे	३२८
४. गल्दन् I	३२८
५ छेवङ-रब्तन	३३०
शासन-व्यवस्था	३३३
उपज	३३४
६. गल्दन II छेरिङ	३३४
७. बायन	३३५
८ छेवङ दोर्जे	३३५
९. दावा छेरिङ	३३५
१०. अमुरसना	३३६
वंशवृक्ष	३३७
७ वोल्गा-कल्मक (१६१६-१७७१ ई०)	३३८
राजावलि	"
१. खुङ थैची उर्लुक	"
२. दै-शिङ	"
३. फुन्-छोग	३३९
४. आयकम् थैची	"
५. छेरिङ दोण्डुब्	"
६. दोण्डुब् अम्बो	"
७. दोण्डुब् थैची	"
८. उबासा	३४०
कल्मकोंका भागना	"
वंशवृक्ष	३४२
८. कजाक-ओर्दू (१७१८-१८१८ ई०)	३४३
क. मध्य-ओर्दू (१७१८-१८१९ ई०)	"
१. पुलाद	"
२. अबुल् मुहम्मद	३४५
३. अबलइ	३४६
४. वली	३४८
ख. लघु-ओर्दू (१७४४-१८१८ई०)	३५०
१. अदिया	३५०
२. अबुल्खैर	"
३. नूरअली	३५३
४. एरली	३५६
५. इशिम	३५७
६. ऐचुवक	"
७. जंती उरा	"
८. शेरगाजी	"
वंशवृक्ष	३५८
ग. महा-ओर्दू (१७४०-६० ई०)	"

अध्याय	पृष्ठ
१. एलबर्स	३५९
२. तिउल बी	३६०
३. कुसियन बी	"

भाग ४

दक्षिणा-पथ (१७४७-१९१७ ई०) ३६३

अध्याय	पृष्ठ
१ जारशाहीका अंतिम प्रसार (१८०१-१९१७ ई०)	३६५
१४. अलेकेसान्द्र	"
नेपोलियनसे युद्ध	३६६
सुधार	३७०
काकेशस-विजय	३७१
[वोल्गाके लोग	३७२
भौगोलिक अभियान	"
दिसबरी-विद्रोह	३७३
चीनसे संपर्क	३७४
१५. निकोलाइ I	"
पूंजीवादी विकास	३७६
ईरान-तुर्की-युद्ध	३७७
शामिलका विद्रोह	"
मध्य-एसियाकी रियासतें	३७८
साइबेरियामें प्रसार	३८०
सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रगति	३८२
हेर्जन (एर्ज़ेन)	"
व. ग. वेलिन्स्की	"
वैज्ञानिक	३८३
साहित्यकार	"
पुश्किन	"
१६. अलेक्सान्द्र I	३८५
तुर्की-युद्ध	३८६
राजनीतिक आन्दोलन	३८७
मध्य-एसियामें प्रसार	३८७
साइबेरिया और चीन	३८८
१७. अलेक्सान्द्र III	३९०
प्रथम मजदूर-आंदोलन	३९१
शिक्षा और संस्कृति	३९२
साहित्य	"
मार्क्सवादका प्रचार आरम्भ	३९३

अध्याय	पृष्ठ
१८. निकोलाइ II	३९४
लेनिन	३९५
संस्कृति-साहित्य-विज्ञान	३९६
साहित्य और कला	३९६
रूस-जापान-युद्ध	३९७
१९०५ की क्रांति	३९८
जापानसे संधि	४००
दिसंबरका विद्रोह	४०२
वैदेशिक संबध	४०६
औद्योगिक प्रगति	४०८
चतुर्थ दूमाका चुनाव	४१०
विश्व-युद्धकी तैयारी	४११
बल्कान-युद्ध	"
प्रथम विश्व-युद्ध	४१२
मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव	४१४
फर्वरी-क्रांति	४१५
२. खोकंदके खान (१७४७-१८७६ ई०)	४२०
राजावलि	"
१. शाहरुख बेक	"
२. रहीम बेक	४२१
३. अब्दुलकरीम बेक	"
४. एर्दनी बेक	"
६. आलम खान	४२२
७. उमर खान	४२३
८. मुहम्मद अली	४२४
९. शेरअली	४२७
१०. मुराद	४२८
१२. मल्ला खान	४२९
१३. शाह मुराद	४३१
खुदायार (पुन.)	"
१४. सैयद सुल्तान	"
खुदायार (पुन.)	४३२
१५. नासिरुद्दीन	४३५
रूसमें विलयन	४३७
वंशवृक्ष	४३८
३. बुखाराके अमीर (१७४७-१९२० ई०)	४३९
१. मुहम्मद रहीम	"
२. दानियाल बी	४४०

अध्याय	पृष्ठ
३. शाह मुराद (नगीबेखा)	"
४. हैदर	४४४
शासन-प्रबंध	४४५
वैदेशिक संबंध	"
५. हुसेन	४४६
६. उमर	"
७. नसरुल्ला	"
अंग्रेजोंकी चालें	४४८
प्रथम अफगान-युद्ध	४५०
८. सैयद मुजफ्फरुद्दीन	४५१
रूससे युद्ध	"
९. अब्दुल अहद	४५३
१०. मीर आलम	"
शासन-प्रबंध	"
वंशवृक्ष	४५४
४. छोटे-छोटे राज्य	४५५
१. उरातिप्पा और जीजक	"
बाबा बेक, बेक मुराद	४५५
२. शहरसब्ज	"
(१) दानियाल अतालीक	"
(२) खोजाकुल	४५७
(३) अशुर कुली बेक	"
(४) इस्कन्दर	"
(५) बाबाबेक	"
३. कोहिस्तान	४५७
उरगुत	"
४. हिसारके इलाके	४५८
(१) करातगनि	४५९
(२) दरवाज	"
(३) कुलाब	"
(४) शगनान	"
(५) हिसार	"
५. तुखारिस्तान	"
(१) खुलम	४६०
खिलिच अली	"
(२) कुन्दुज	"
(क) मुराद बी	"
(ख) मुहम्मद अमीन	४७
(३) बदख्शां	४६२
(क) सुल्तान शाह	"
(ख) मीर महम्मद	"
(ग) मीर यारबेक	"
(घ) जहांदार	"
(ङ) महमूद	"
(४) मेमना	"
(५) अंदखुद	४६३
(६) शाबिरगान	"
(७) सरीपुल	"
खीवाके खान (१७१४-१८८१ ई०)	
१ बाहरी वंश	"
१. अरंक	"
२. शेर गाजी	"
३. इल्बर्स	४६७
४. ताहिर	४६८
५. अबुल् मुहम्मद	"
६. अबुल्गाजी II	"
७. काइप	"
८. अबलगाजी III	४६९
२. कंकुरत-वंश	४७०
राजावलि	"
१. इल्तजार	"
२. महम्मद रहीम	४७१
३. अल्ला कुल	४७३
असफल रूसी अभियान	४७४
४. रहीम कुल	४७६
५. अमीन	"
६. अब्दुल्ला	४७७
७. कुतुलुक मुराद	"
८ सैयद मुम्मद	"
मुहम्मद फना	४७९
९. मुहम्मद रहीम	"
रूसी अभियान	४८०
वंशवृक्ष	४८७
तुर्कमान	
१. तुर्कमान भूमि	४८८
२. तुर्कमान कबीले	४८९

अध्यांय	पृष्ठ
३. तेक्कों का शासन	४९१
४. पोशाक और रूपरेखा	४९३
५. रूससे यद्ध	४९४
साइबेरिया और चीन	४८८
६. अंग्रेजोसे तनातनी	४९७
७. रेल-निर्माण	४९९
८. अश्काबाद	"
९. मेर्व	५००

भाग ५

बोल्शेविक क्रांति (१९१७-२९ ई०)

१. रूसमें क्रांति

१. रूसमें लेनिन	५०३
२. करेन्स्कीकी सरकार	५०४
विद्रोहकी तैयारियां	५०७
३. राजधानीपर अधिकार	५०८
४. दास-जातियोंकी मुक्ति	५११

२. उज्बेकिस्तानमें क्रांति

१. उज्बेक जाति	५१४
२ उज्बेक भूमि	५१७
३. क्रांतिकी लपट	"
४. वोल्शेविक प्रभाव-वृद्धि	५१९
५. खोकंद-स्वायत्ततावादियोका अंत	५२०.
६. समरकंद-विजय	५२४
७. बुखारा-अमीर भगा	५२५
८. उज्बेक जातिका निर्माण	६१७

३. कजाकस्तानमें क्रांति

१. कजाक जाति	५२८
२. १९१६ का विद्रोह	५३०
३. क्रांति-संघर्ष	५३२
४. सोवियत शासनकी स्थापना	५३४

४. किर्गिजिस्तानमें क्रांति

१. किर्गिज	५३५
२. १९१६ का विद्रोह	५३६

५. ताजिकिस्तानमें क्रांति

अध्याय	पृष्ठ
१. सोग्दियोंके वंशज	५२९
२. बासमची-उत्पीडन	५४२
(१) अनवर पाशा	५४२
(२) ईशान सुल्तान	५४३
(३) फुजेंल मकसूम	५४६
(४) इब्राहीम गल्लू	"
३ तजिकिस्तान गणराज्य	"

६ तुर्कमानिस्तानमे क्रांति

१. तुर्कमान कबीले	५४८
२ लालसेना-निर्माण	५४९
३. केर्की-काड	५५०
४. ईरानका दावा	५५४

मान-चित्र

१. मंगोल-साम्राज्य	४
२. बातू-विजय	१९
३. शंक-वंशज	७२
४. रूरिक रूस	७८
५. मास्को-राज्य-विस्तार	९९
६. रुसिया	१०५
७. चगताइ-राज्य	१२३
८. हुलाकू-राज्य	१४२
९. तेमूर-राज्य	१५२
१०. शैबानी-अस्त्राखानी राज्य	१७५
११. खीवा खान	१९८
१२. रूस (१७२१ ई०)	२३३
१३. साइबेरियामें विस्तार	२३९
१४. श्वेत ओर्दू	२७६
१५. जुंगर-साम्राज्य	२८५
१६. मुगोलिस्तान	२९४
१७. जुंगारिया	३२२
१८. मध्य-ओर्दू	३४४
१९. जारशाही प्रसार	४१८
२०. मध्य-एसिया (आधुनिक)	५०४-५

परिशिष्ट

१. रूसी भाषा और भारत	५५७
२. स्रोत ग्रंथ	५९३
३. नामानुक्रमणी	६०३

मध्य एसिया का इतिहास

खण्ड २

भाग १

उत्तरापथ (१२००–१५५० ई०)

अध्याय १

चीनमें मंगोल-वंश

(१२००-१३६८ ई०)

१. छिङ-गिस् (१२०६-२७ ई०)

मध्य-एसियामें मगोलोका राज्य कोई अलग-थलग नही था, बल्कि कितने ही समय तक चीनपर शासन करनेवाले मगोल हगान (खाकान, खआन, खान) को ही सभी मंगोलखान अपना अधिराज मानते थे। १३ वी सदीमें कोरियासे पोलंद और साइबेरियासे पजाब तक मगोलोका साम्राज्य फैला हुआ था। छिङ-गिस्‌ने अपने विशाल साम्राज्यको अपने जीवन हीमें चारों पुत्रोंमे बांट दिया था, लेकिन साथ ही यह व्यवस्था की थी, कि सभी खान अपनेमेंसे एकको अपने ऊपर मानते हुये साम्राज्यमें एक तरहकी एकता कायम रक्खें। घुमन्तू जातियोमें एक तरहकी जनतंत्रता स्वाभाविक है। घुमन्तू राजा घुमन्तुओंकी अपनी जिस सेनाके बलपर देश-विजय करते है, उसे अपने पक्षमे रखनेके लिये सैनिक जनतंत्रता कायम रखना जरूरी है। अपने पूर्वज घुमन्तू-राज्योकी भाति छिङ-गिस्‌के साम्राज्यमे भी सैनिक जनतंत्रता थी। कोई बडे सवालका हल, या खानका निर्वाचन कूरिल्‌ताईमें होता था, जो सभी राजकुमारों, सैनिक सरदारों और जन-नायकोसे मिलकर बनी थी।

मध्य-एसियामे मंगोलोके शासनके इतिहासके समझनेके लिये जरूरी है, कि हम चीनके मंगोल-राजवंशके इतिहासको भी समझें, साथ ही सुवर्ण-ओर्दू, और ईरानके खुलागू-वंशको भी हम नही छोड़ सकते। इन सबका मैत्री या शत्रुताके रूपमे बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। तंगुत नगरके विजयके वक्त छिङ-गिस् आहत हुआ था, जिससे ही अपने चलते-फिरते प्रासाद या महा-गाड़ीपर ही वह १८ अगस्त १२२७ ई० को मर गया। दुनियामे और राजाओको भी अपने पुत्रोंमें राजका बंटवारा करते हम देखते हैं, लेकिन उसका एकमात्र परिणाम उनका जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो नष्ट होनेके सिवा और कुछ नही होता। छिङ-गिस् युद्ध और शासनकी व्यवस्थामे अद्भुत प्रतिभा रखता था, इसलिये उसके बटवारेने कोई उस तरहका दुष्परिणाम तुरत नही दिखलाया और करीब-करीब १२९४ ई० तक खुबिलेके शासनके अन्त तक मगोल-साम्राज्य बहुत शक्तिशाली और एकताबद्ध रहा, जिसमें छिङ-गिस्‌की दूरदर्शिताका हाथ भी था, इसमें सदेह नही। छिङ-गिस्‌के मरनेके बादही मगोल-विजययात्रा मन्द नही हुई। १२७९ ई० से सम्पूर्ण चीन, हिन्द-चीन और बर्मापर खुबिले (कुबिलेइ) का शासन स्थापित हुआ। पश्चिम-दक्षिणमें कितना राज्य-विस्तार हुआ, उसके बारेमे हम आगे कहेंगे। छिङ-गिस्‌के मरनेके एक साल बाद (१२२८ ई० में) मंगोल-सेना ईरानमे अस्पहान तक पहुची थी।

छिङ-गिस्‌की मृत्युके बाद तुरंत ही नये हगान (खान) का चुनाव नही हुआ। दो साल (१२२९ ई०) तक छिङ-गिस्-पुत्र तू-लुइ और उसकी रानीकी देख-रेखमें शासन होता रहा और इस सारे समयमें मंगोलोंकी शक्ति घटनेकी जगह बढ़ती ही रही, यह छिङ-गीसी व्यवस्थाका चमत्कार था।

चीनमे निम्न मंगोल खाकान हुये—

१. छिङ-गिस् (चिङ-गीस, ताइ-चुङ)	१२०६-२७ ई०
२. उगेताइ (ताइ-चुङ छिङ-गिस्)-पुत्र	१२२९-४६ "
३. गू-युग (गोदन, उगेताइ-पुत्र चिङ-चुङ)	१२४६-५१ "
४. मुङ-खे (मङ-गू थोलोइ-पुत्र स्यान्-चुङ)	१२५१-५९ "
५. कुबिलइ (ह्वो-बिलइ तू-लोइ-पुत्र, छिङ-गिस्-पौत्र शिचुङ)	१२६०-९४ "

६.	थु-बू-थेमुर (ह्वो-बिलइ-पौत्र छिङ-येन्-पुत्र चेङ-चुङ)	१२९४-१३०७ "
७.	खू-लुग (धर्मपाल-पुत्र व्रू-चुङ)	१३०७-११ ,,
८.	बोयन्-थू (धर्मपाल-पुत्र जुन्-चुङ)	१३११-२० ,,
९.	गे-गेन् (शुद्धफल, बोयन्-थू-पुत्र यिङ-चुङ)	१३२०-२३ ई०
१०.	यि-सु-थेमुर, (ताइ-चिङ-ती कमल-पुत्र)	१३२३-२८ ,,
११.	रिन्-छेन्-फग् (यिसु-पुत्र यू-चू)	१३२८ ,,
१२.	कुसलइ, (मिङ-चुङ खू-लुग-पुत्र)	१३२८-२९ ,,
१३	थुग्-थेमुर, (वेङ-चुङ बोयन्-थू-पुत्र)	१३२९-३२ ,,
१४.	रिन्-छेन्-पल् (कुशल-पुत्र मिङ-चुङ)	१३३२-३३ ,,
१५.	थेगन्-थेमुर, (शुङ-त थुग्-थेमुर-पुत्र)	१३३३-६८ ,,
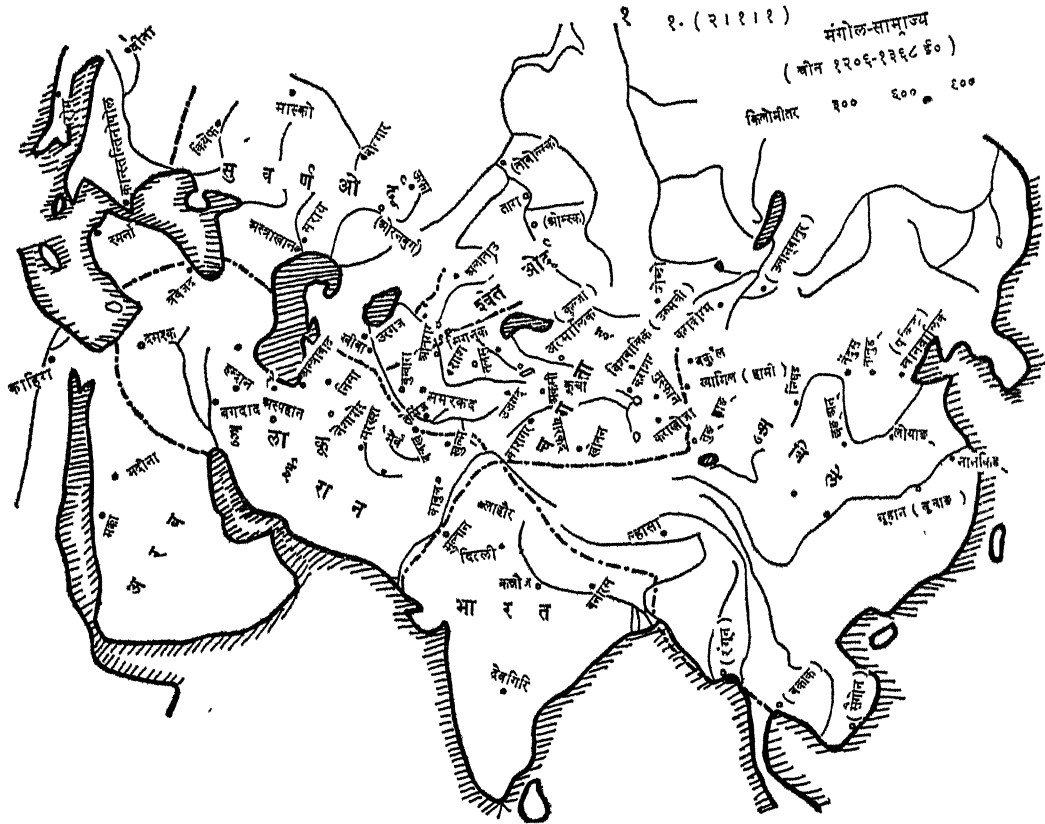
२. उगेताइ, ओगोताइ, ताइ-चुङ (१२२९-४६ ई०)

१२२९ ई० मे नये हगानके चुननेके लिये कूरिल् ताई (महापरिषद्) बैठी। तीन दिन तक खूब भोजन-पान होता रहा। कूरिल्ताई एक रायसे उगेताइको हगान निर्वाचित करना चाहती थी, लेकिन उगेताइ इसके लिये तैयार नही था। ज्येष्ठ-पुत्र जू-छिके मर जानेसे द्वितीय पुत्र चगताइ अपनेको उत्तराधिकारी समझता था, इसलिये वह उगेताइको क्यो पसंद करता? लेकिन कूरिल्ताईके निर्णयके विरुद्ध जाना उसके मानकी बात नहीं थी। अन्तमे उगेताइको हगान निर्वाचित कर उसे नम्देके ऊपर बैठा सरदारोंने कंधेपर उठाकर घुमाते हुये राजगद्दी देनेकी रसम अदा की। खूब घोडेके मांस और कूमिस-पान की दावत हुई, विजयकी अपार धन-राशिको उत्तराधिकारियोंमें बांटा गया। कूरिल्ताईने येल्यु चुत्साइको कोषाध्यक्ष बनाया, जो कित्तन-राजवंशी तथा बडा ही प्रतिभाशाली व्यक्ति था। योग्य राजनीतिज्ञ होते हुये वह ज्योतिष, गणित, भूगोल और वैद्यकका भी अच्छा पंडित था, और पहले ही पेकिङ नगरका

वह राज्यपाल रह चुका था। येल्युका जन्म ११९० ई० मे हुआ था, इस प्रकार राज्य-शासकके इस सर्वोच्च पदपर वह ३९ वर्षके उमरमे पहुंच गया। कूरिल्ताईने जू-छि-पुत्र सुन्ताइको बातूके साथ यूरोप-विजयके लिये भेजा। मध्य-एसियाकी मंगोल-सेनाने आगे बढकर मेसोपोतामिया, दियारबेकर, और आसपासकी भूमिका सर्वसंहार किया। चीनमे अपने बचे-खुचे राज्यके लिये खैरियत मनाते किन्-सम्राट्ने मगोलोसे सुलह् करनी चाही, लेकिन मंगोल एक समय दो सम्राट् माननेके खिलाफ थे। किनोने जानपर खेलकर मुकाबिला किया और मगोलोंको १२३० ई० मे दो बार करारी हार दी। किन्-खतरा इतना बढ गया, कि उगेताइ और उसके भाई तू-लुइने स्वय सेनाकी बागडोर अपने हाथमे ली। इस समय शेन्सी सारा मगोलोके हाथमे था और किन् (सुवर्ण) केवल होनान्के शासक रह गये थे। मंगोल कोरियापर भी हाथ साफ करना चाहते थे, इसलिये वहाके राजाने मगोल-राजदूतको मार डाला। इसपर मगोल-सेनाने आक्रमण करके १२३२ ई० में कोरियापर अधिकार कर लिया। १२३२ ई० मे सफल अभियानके बाद दोनों भाई मगोलिया लौट आये, वही अक्तूबरमे तू-लुइका देहात हो गया। अब छिङ-गिस्-पुत्रोंमें जगतइ और चीन-सम्राट् उगेतइ बच रहे थे।

छिङ-गिस् (चंगेज) के जीवनमे ही एक बार मंगोल-सेना रूसके भीतर तक विजय-यात्रा कर आई थी। लेकिन वह बहुत कुछ लूट-मारका अभियान था। अब वह विजय करके वहा अपना दृढ शासन स्थापित करनेके लिये बढी थी। सुन्ताइने बोल्गाके किनारे अवस्थित बोल्गारोकी राजधानी वोल्गार नगरको जीतना चाहा। बोल्गारोसे पश्चिममें रहनेवाले रूसी खतरेको समझ गये थे : बोल्गार-ध्वंसके बाद मगोल हमपर पडेगे। इसीलिये कियेफ और स्मोलेन्स्कके रावलो (राजुलो) ने बोल्गारोंकी मदद की, जिससे उनकी राजधानी बच गई।

१२३४ ई० के मई महीनेमे चीनमे ११८ वर्ष शासन करनेके बाद किन्-राजवंश समाप्त हुआ। अब दक्षिणी चीनमें सुङ-वंश बच रहा था, जो काफी शक्तिशाली था, इसलिये मगोल उससे जल्दी छेड़-खानी करनेके लिये तैयार नही थे। किनोंपर आक्रमण करते समय उन्होने वचन दिया था, कि इस विजय के बाद हम सुङ-वंश के लिये होनान खाली कर देंगे, लेकिन उन्होंने वैसा नही किया। अदूरदर्शी दरबारियों ने मंगोल-शक्तिका ठीक अंदाजा नही लगा सुङ-सम्राट्को भड़काया। छङ-अन् (सि-यन-फू, शेन्सीमे), लोयाङ (होनान्) और पेन-किङ (नानकिङ) यह तीन सुङ-वंशकी राजधानियां थीं। सुङ-सेनापति-ने आक्रमण करके लोयाङ और पेन-किङको मंगोलोके हाथसे मुक्त करा लिया। यह "आ बैल मुझे मार" वाली कहावत थी। मगोलोको अब सुङ-वंशकी ओर ध्यान देना जरूरी था। इतने बड़े निर्णयको हगान स्वय नही कर सकता था, इसके लिये उसने १२३५ ई० मे महा-कूरिल्ताई बुलाई। जिसने सुङ-वशको खतम करनेका निश्चय किया। दक्षिणी चीनके विरुद्ध तीन सेनाये भेजी गई, जिनमें एकको सेनापति ओगोताइ-द्वितीय-पुत्र कू-तन तथा जेनरल तेगरीके नेतृत्वमे सूचाउकी ओर बढना था। दूसरी सेना तुमूताइ और चाङ-जूके अधीन हू-कुङके ऊपर चढ़ी, ओगोताइका तृतीय पुत्र कू-चू, राजकुमार खुन-बुका और जेनरल चागनके नेतृत्वमे तीसरी सेना क्याङ-नान्की ओर बढ़ी। इसी समय जू-छीके पुत्र बा-तूको पश्चिम-दिग्विजयका काम सौपा गया।

मार्च, १२३६ ई० मे कू-चूने सुङ-राज्यकी प्रधान नगरी सियाङ-याङपर अधिकार कर लिया। मंगोल-साम्राज्यकी सीमा दक्षिणमें अब याङ-ची तक पहुच गई।

खु-बिले (कुबिलेइ) के पहले मगोल-साम्राज्यकी राजधानी मगोलियामें ओरखोन् और तुला नदियोंके बीच कराकोरम थी। राजधानी कहनेसे यह न समझना चाहिये, कि वहा कोई नगर बसा हुआ था। राजधानीका मतलब इतना ही था, खान सरदारोके साथ मीलोतक लगे नम्दे और दूसरे प्रकारके तम्बुओंमे अपने घोडों और पशुओके साथ रहता था। ओगोताइने पहलेपहल वहां एक विशाल प्रासाद बनवाया, जिसका उद्घाटन १२३६ ई० मे हुआ। इस प्रासादके बनानेमें बहुत परिश्रम किया गया था। चीनी कलाकारो ने मूर्तियो और चित्रोसे उसे अलंकृत किया था। इसके चारो तरफ बगीचे लगे थे, और चारो दिशाओमें चार बड़े-बडे दरवाजे थे, जिनमेंसे एक हगान (सम्राट्) के लिये, दूसरा राज-कुमारों, तीसरा अन्त.पुरिकाओ के लिये था, चौथे दरवाजेसे साधारण जनता जा सकती थी। महलके चारों ओर बड़े-बड़े सरदारोके अपने महल थे, जिनके बाद बड़ा नगर था, जिसको ओर्दू-बालिक या

कराकोरम कहते थे। नगरके चारों ओर ऊंची प्राकार थी। कराकोरममें सम्राट्के निजी पारिवारिक खर्चेके लिये प्रतिदिन पाचसौ गाडी भोजन-सामग्री आती थी। उसमेंसे कुछ वह अपने परिवारके लिये खर्च करता, बाकी दूसरोंमे वितरित करता। इसी समयसे मगोल घुमन्तुओका सादा जीवन खतम होने लगा ओर वह हर बातमे दुनियाकी सभ्य जातियोकी नकल करने लगे।

ईरान और काकेशसकी ओर अब मगोल अपना हाथ-पैर बडी दृढ़तासे बढ़ा रहे थे। १२२७ ई० में अराग और कुरा नदी तक अरमेनियापर उनका अधिकार हो गया। उसी साल उन्होने जार्जिया (गुर्जी) को विजय करते अरमेनियाकी राजधानी अनीका सहार किया। इसी साल २१ दिसम्बरको साइबेरियाके कीमती समूरोके सबसे बडे बाजार बोलगारगर बा-तूने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया, सो भी ऐसा कि जिसके देखनेके लिये नगरमे एक भी आख नही बच रही। पाच वर्ष पहले आत्मरक्षा करके बोल्गार नगरीने जो गुस्ताखी दिखलाई थी, मगोलोने उसका इस तरह बदला लिया। सिरदरिया और अराल के उत्तर दूर तक फैली किपचक भूमिके हूणवशधर घुमन्तु लडनेमे मंगोलोंसे कम नही थे, इसलिये उनपर अधिकार करना मगोलोके लिये टेढ़ी खीर था। १२३८ ई० में तू-लुइ (थो-लोइ) के पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) ने अपने भाई बुद्-जेकके साथ कास्पियनके किपचकोंपर आक्रमण कर उन्हे जीत लिया। किपचक-राजा पतचीमन और असेत (ओसेत)-राजा कचर ओगोला मारे गये। कोलोम्ना नगर भी मगोलोके हाथमे चला गया और उसका राजा रोमन ईगरपुत्र वीरगतिको प्राप्त हुआ। १५ फर्वरीको मास्को लेते उन्होने व्लादिमिर नगरपर अधिकार कर, पुरोहितोंको छोड़कर मगोलोंने किसीको प्राणदान देना पसद नही किया। वह वस्तुत किसी देशमे भी युद्धको केवल राजनीतिक युद्ध रखना चाहते थे और उसे धार्मिक युद्धका रूप न लेने देनेके लिये हर तरहकी कोशिश करते थे।

ओगोताइको राज्य करते ११ साल हो गये थे, जब कि दिसम्बर १२४० ई० मे बा-तूकी सेनाने कियेफ नगरका सर्वसहार किया, वहा की सारी कलाकृतिया और इमारतें अग्निसात् कर दीं। तबसे १५ वी सदी तकके लिये कियेफ नगर उजाड हो गया। इसी साल अरमनीका राजा आवक अपनी बहिन तमता के साथ ओगोताइके दरबारमें सम्मान प्रकट करनेके लिये गया। उसी साल किपचक-राजा ओनियक मलदावियाकी ओर भागा।

१२४१ ई० में मंगोल-सेना लुबलिन नगरमें दाखिल हुई और उसने विस्तुला तकके प्रदेशको लूटा तथा जलाया। मार्चमें मंगोल काकोफ नगरमे थे, फिर लूटते-मारते आग लगाते सेलिसियाकी ओर बढे। ओडेर नदीको रतिबरके पास पार कर वह ब्रेसलाके सामने पहुचे। आगे भी योजना बना वह लूटते-पाटते लिग्नित्ज् नगरकी ओर बढे, जहांपर बीस हजार सेनाके साथ ड्यूक हेनरी द्वितीय मुकाबिलेके लिये तैयार था। मंगोल-सेना एक लाख बतलाई जाती है, जिसमें संदेह है। काइड नदीके तटपर अवस्थित उस मैदानमें—जहा पीछे वाल-स्टाट (युद्धक्षेत्र) गांव बसा—९ अप्रैल १२४१ ई० को वह युद्ध हुआ, जिसने यूरोपके भाग्यका फैसला किया। मंगोल विजय नहीं प्राप्त कर सके, और खिसियाये हुये वहांसे एक लीगपर अवस्थित लिग्निज् नगरको जलाते पीछे हटे। इस युद्धमें मरे लोगोंके कान ९ बोरे हुये थे।

इससे पहले ही १२ मार्चको बा-तूने पेस्तसे साढे तीन दिनके रास्तेपर हुंगरोंको हराया था। लिग्-नित्ज्से लौटकर उसने दलमासियाको लेते अद्रियातिक समुद्रके तटपर क्रोसियन (यूगोस्लाविया) तककी विजय-यात्रा की।

इस प्रकार ११ दिसम्बर १२४६ ई० में अपनी मृत्युके समयसे पाच साल पहले ही ओगोताइने अपने साम्राज्यको पश्चिममें अद्रियातिक समुद्र और ओदेर नदीके पास तक फैले देखा। मंगोलोंका कोई अपना सामन्तवादी धर्म नहीं था, इसलिये धर्मके बारेमें वह बड़ी उदारता और तटस्थता दिखलाते थे, जिससे फायदा उठानेके लिये १२४५ ई० में ईसाइयों की ल्योन-परिषद् ने मंगोलियामें मिशनरी (धर्मदूत) भेजने का निश्चय किया।

३. गू-युग, कू-युक, गो-दन, चिङ-चुङ (१२५१-५९ ई०)

गू-युग ओगोताइ अर्थात् बडे हगानका पुत्र था, जिसे कूरिल्ताईने अगस्त महीनेमें खान निर्वाचित किया। यद्यपि वक्षु (आमूदरिया) के दक्षिण दिग्विजयके (खुलाकूकी अधीनतामें) सुव्यवस्थित रूपसे होनेमे अभी तीन सालकी देर थी, लेकिन मंगोल-सेनायें खुरासान और अफगानिस्तानपर छाई

हुई थी। १२५१ ई० में मंगोलोंने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरू था।

४. मुङ-खे, मङ-गू, स्यान्-चुङ (१२५१-५९ ई०)

मुङ-खे थों (तो) लोइका पुत्र तथाखु-बि-लेई (कुबिलेइ) का अग्रज था। अवसे एक तरह सिंहासन थो-लोइकी संतानमे चला गया। इन्ही दोनो भाइयोका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी सतानो के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० मे ही, जिस साल कि लाहौर का सर्वसहार हुआ, मंगोल-सेनाये मेसोपोतामियामे प्रविष्ट हुई, जहा उन्होंने दियारबेकर और मेयाफरकिनका सर्वसहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगडेका परिणाम मगोल-राज-कुमारोमें वैमनस्यके रूपमे दिखलाई पडा, जिसके लिये १२५२ ई० मे कूरिल्ताई बुलाई गई। इसी कूरिल्ताईने जहां राजकुमारोंके मुकदमोका फैसला किया, वहां जागीरो और अधिकारोका बंटवारा भी किया। तुङ-कुङ-चुङ-फू (शेन्सी), ह्नोनान् कुबिलेइ (हूबिलेइ) को जागीरमे मिले। उसे सुङ-वंशके खिलाफ दक्षिण-चीन मे अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर बढनेका काम सौंपा गया, जिसकी सहायताके लिये कितू-बुकाको नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एसियाके पहाडो ही तक सीमित थी।

सबसे कडा सघर्ष दक्षिणी चीनमें सुङ-वशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुबिलेने बडी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमें उसने एक बडी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढनेमे जल्दी नही की—मंगोल-सेनायें पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थी। १२५३ ई० मे ही मगोल-सेनाओने पूर्वी तिब्बत ले लिया, और उसी साल मुल्तान भी उनके हाथमे चला गया। इसी साल ईसाई मिश्नरी रुबरिक मुङ-खेके दरबारमे कराकोरम पहुंचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमें मंगोल-साम्राज्य, उसके राजपथो और राजधानीका बहुत अच्छा वर्णन किया है। उसके लिखनेसे मालूम तोता है, कि राजपरिवारके लोग ईसाई, बौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओमे शामिल हुआ करते थे। मार्को पोलोकी महान् यात्रा मुङ-खेके भाई कुबिलेके समय हुई, लेकिन रुबरिकका यात्रा-विवरण भी कम महत्त्व नहीं रखता।

फर्वरी १२५४ ई० में खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर बढा। संसारमें चारो तरफ मंगोलोकी धाक जमी हुई थी। "एक बार खूनके कीचड और खोपडि-योके बड़े-बडे मीनार खडा कर गांवो और नगरोको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहा कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मंगोलोके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नही करेगा"—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूर्व-दक्षिणी तिब्बत और आवा (बर्मा) के राजाओंने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये स्वयं हगान (खाकान) के दरबारमें पहुचा। अगले साल (१२५७ ई० में) तोङ-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मंगोलोको अपना स्वामी स्वीकार किया। सुङ-राज पूरी तौरसे खतम नही हो पाया था,लेकिन कुबिलेइके प्रहारोसे अब वह कुछ ही दिनोंका मेहमान था। कुबिलेइकी इस सफलतापर मुङ-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरबारियोंने उसे भड़काया, कि कुबिलेइ स्वयं खाकान बनना चाहता है। कुबिलेइको जब यह खबर लगी, तो वह जल्दी-जल्दी अपने भाईके दरबारमें पहुंचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदर्शनसे मुङ-खे बहुत प्रसन्न हुआ और कुबिलेइके साथ स्वयं सुङ-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फर्वरी (१२५९ ई०) को मुङ-खे चुङ-कुये (सू-चाउ) में मर गया। इस समय तक सारा मंगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोंने अपनी स्वतंत्रता घोषित नहीं की थी।

५. कुबिलेइ, ह्वोबिलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

ह्वोबिलेइ कुबिलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके बाद इसने कूरिल्ताईके निर्वाचन-की प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्ताईकी रसमको वह हटाना नहीं

चाहता था। इसी साल उसने शाङ-तू (कै-पिङ-हू) में अपने लिये एक प्रासाद तथा कितने ही बौद्ध मंदिर बनवाये। मंगोल-सम्राटोंमें यही सबसे पहला सम्राट् था, जिसने सांस्कृतिक बातोंके महत्त्वको समझा। इसने जहा सास्कृतिक जीवनकी बहुत-सी बाहरी बातें चीनसे ली, वहां धर्मके रूपमें बौद्धधर्मको स्वीकार किया। गद्दी पर बैठनेके साल ही इसने शाङ-तूमें कूरिल्ताई बुलवाई, जिसने कुबिलेइको खाकान घोषित किया। फिर लाखोंकी संख्यामें एकत्रित सैनिको और हजारों सरदारोंकी चार दिन तक भारी दावत चलती रही, बड़ा महोत्सव मनाया गया। इतना सब होनेके बाद भी गृहयुद्धकी आग भडक उठी, जिसमे कुबिलेइके एक अपने भाईने भी हाथ बटाया। कुबिलेइका छोटा भाई हुलाकू दूर ईरानमे था। वह आखिर तक अपने भाईका अनुगामी हो अपने राज्यको बृहत् मगोल-साम्राज्यका अग मानता रहा। इसका प्रभाव एक यह भी हुआ, कि ईरान और मेसोपोतामिया जैसे मुस्लिम दुनियाके गढ़में हुलाकू-वंश पीढ़ियो तक अपनेको बौद्ध रखनेको कोशिश करता रहा। १२ सितम्बर १२५९ ई० को प्रस्थान कर हुलाकूने दियारबेकर, जजीरत (मेसोपोतामिया), रोहा, एदेस्सा, अर्जरुम और निसिबीपर अधिकार कर लिया। रोहाके पास उसने भारी सैनिक प्रदर्शन किया, जिसमें अरमेनिया, रूम (सल्जूकी) आदिके राजा भी उपस्थित थे। प्रतिरोध करनेके अपराध मे हलब (अलेप्पो) का सर्वसंहार हुआ। दमिश्कने आसानीसे मंगोल-जूआ स्वीकार कर लिया। इसी समय १२६० ई० में कुबिलेइके नामसे हुलाकूने नोट चलाया, जो दुनियाका सबसे पुराना कागजी नोट था।

दो वर्षके शासनमे गृह-युद्ध इतना भयंकर रूप ले चुका था, कि उसे दबानेके लिये १२६१ ई० में कुबिलेइको स्वय मंगोलियापर धावा करना पड़ा। इस लड़ाईमे उसका प्रतिद्वंद्वी अरिग्बूका पराजित हो कुछ दिनों बाद मर गया। कुबिलेइ अब अपनी स्थितिको ज्यादा मजबूत समझता था। यद्यपि चीनमें भी बौद्ध-धर्मका प्रचार था, लेकिन कुबिलेइने उसे तिब्बतसे स्वीकार किया। जिस समय मंगोल-सेनायें देश-विजयमें लगी हुई थीं, उसी समय तिब्बतके एक दूरदर्शी तथा अद्वितीय विद्वान् सक्या महापंडित आनन्दध्वजने—जो सक्यापण्छेन्के नामसे अधिक प्रसिद्ध है——मंगोलियामें अपने धर्मप्रचारक भेजे। ईसाई रुबरिक और मुल्लाओंको अपने काममे उतनी सफलता नहीं मिली, जितना कि गुमनाम तिब्बतसे आये बौद्ध-धर्मदूतोंको। सक्या पण्-छेन्के उत्तराधिकारी तथा भतीजे लो-डो-ग्यल्-छेन्को कुबिलेइके गुरु बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। १२६१ ई० मे कुबिलेइने अपने गुरुको फग्-पा लामा (आर्यगुरु) की उपाधि दी, जिसके ही नामसे वह आजकल तिब्बतमें मशहूर है। कुबिलेइको दूर मंगोलियाका कराकोरम राजधानीके लिये अनुकूल नहीं मालूम हुआ। पितृदेश होनेके कारण मंगोलियाके साथ चाहे जितना ही सद्-भाव हो, लेकिन एक विशाल साम्राज्यके शासनके लिये उपयुक्त स्थान वही हो सकता था, जहांसे यातायातकी सुविधा हो। पे-किङको ऐसा ही स्थान कुबिलेइने समझा और वही उसकी राजधानी बनी। १२६३ ई० मे कुबिलेइने पितरोंकी पूजाके लिये वहां एक विशाल ताइ-म्याउ (धर्मशाला) बनवाई।

सुङ-राज्यका अभी खातमा नही हुआ था। १२६४ ई० में सुङ-सम्राट् ली-चुङके मरनेपर उसका भतीजा तू-चुङ गद्दीपर बैठा। मंगोलोंने सुङ-शक्तिको इतना सीमित कर दिया गया था, कि कुबिलेइ को उससे बहुत खतरा नही था, अतएव उसे जल्दी नही थी। १२६५ ई० में जगताइ खान मुबारकशाह मर गया, कुबिलेइने उसकी जगह बोरकको खान बनाया। अभी कुबिलेइका प्रतिद्वंद्वी अरिग्बूका जिंदा था और १२६६ ई० में उसके मर जानेपर ही कुबिलेइको भारी खतरेसे मुक्ति मिली। इसी साल कई और मंगोल-खानोंकी मृत्यु हुई। सुवर्ण-ओर्दू खान बेरेक, जगताइ खान अलगू और मुबारकशाह, ईरानका खान हुलाकू मर चुके थे। हुलाकूकी जगह अबका ईरानका, मेंगू तेमूर सुवर्ण-ओर्दूका और जगताइका मुबारकशाह खान बनाये गये। मुबारकशाहके जल्दी ही मर जानेपर कुबिलेइने बोरकको उसके स्थान पर नियुक्त किया।

१२६७ ई० में कुबिलेइने सुङ-वंशका उच्छेद करनेके लिये दक्षिणी चीनके बचे हिस्सेपर आक्रमण किया। सबसे कडी लड़ाई सियाङ-याङ (सियाङ-फू) में हुई। १२६८ ई० में मंगोल-सेनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया, लेकिन उसे तीन साल तक नगरपर अधिकार करनेमें सफलता नहीं मिली। १२६६ ई० मे कुबिलेइने जापानको अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिखा, लेकिन अभिमानी जापानियोंने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। सियाङ-याङके मुहासरेके आरम्भके साथ-साथ कुबिलेइने जापानपर आक्र-

मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरू की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनासे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारों जंगी जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नहीं शब्द-सकेतका उपयोग होता है, जिसमें अंकोंकी तरह कुछ सुभीते भी है, लेकिन उसमें उच्चारण-संकेतके लिये कोई स्थान नही है। मगोल-भाषा उइगुर (सिरियावाली) लिपिमें लिखी जाती थी, जिसमें डेढ दर्जन भी अक्षर न होनेसे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नही था। कुबिलेइके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिसे सुपरिचित होनेके कारण फग्पाने १२६९ ई० में मंगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इसी साल उसे कुबिलेइने ता-पाउ-फा-वङकी उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० में कुबिलेइने अपने वंशका नया नाम यु-अन रखा, जिस नामसे वह वंश आज भी चीनमें प्रसिद्ध है। इसी साल बर्मा (मी-यन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मंगोल-सेना भेजी गई। १२७४ ई० में जहां सियाङ-याङके विजयसे सम्राट्को बड़ी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मंगोल नौसेना चु-सिमाकी खाड़ी मे जापानियों द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक बेड़ा नष्ट हो गया। इसमें शक नही उस समय जापानियोंसे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमें हुई चु-सीमाकी हार कुबिलेइके विशाल साम्राज्य में उसकी धाकके कम होनेका कारण नहीं हो सकती थी। हा, जापानियोंमें यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियों तक जापान बाहरी शत्रुओंसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वीं शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोंकी आखें नही खोल दी। अगले साल १२७५ ई० मे सेनापति बायनने चिङ-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोंको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोंकी निर्मम हत्या की गई। इसी साल लिङ-अन् राजधानी-पर भी मंगोलोंने अधिकार कर लिया। तरुण सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमें राजसिंहासनको भेजा; लेकिन सेनापति बायनको यह अधिकार नहीं था, कि वह सुङ-वंशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबंधके लिये चीनियों और मंगोलोंकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मंगोलोंके हाथमें था, इसलिये मंगोल-भक्त चीनियोंकी कमी नही थी। चार मंगोल-अफसर राजधानीकी चीजोंके संग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होंने भिन्न-भिन्न राज्यविभागों की मुद्रायें जमा की। अभिलेखा-गारमें उन्हें बहुत-सी किताबें, बही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिङ-अन् (हङ-चाउ) चीनकी सबसे बड़ी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोके लिये नगरमें बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोंमें विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमें बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमें बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकड़ीके थे। राजप्रासादमे बीस बड़े-बड़े हाल थे। सबसे बड़ी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोंपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तोसिर्फ रंग्रेजोंके घर थे। सात सौ मंदिर थे। सेनापति बायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुङ और उसके अनुचरोंको खानके पास भेज दिया। महल छोड़नेसे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दंडवत् करनी पड़ी। कुबिलेइकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा बर्ताव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पड़ी। वह इस प्राचीन राजवंशके ध्वंसमें मंगोल-राजवशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, "उस समय मेरे बच्चों की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वंशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह बेइज्जत हो बंदी बनना पडेगा।" लेकिन, मंगोल-वंशका अंत सुङकी तरह नहीं हुआ, क्योंकि मंगोलिया इस वंशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुबिलेइका राज्यकाल केवल राजसी तड़क-भड़क और दिग्विजयोंके लिये ही प्रसिद्ध नहीं था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० में राजाज्ञा पाकर ह्वाङ-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

१२८७ ई० मे तोङ-किङ (हिन्द-चीन) ने अधीनता स्वीकार की। १२९० ई० में १०३ जिल्दोंमें आज भी मौजूद कजूर (तिब्बती त्रिपिटक) को कुबिलेइने सुवर्णाक्षरोंमें लिखवाया। जापानमें नौसैनिक अभियान में असफल होनेपर भी कुबिलेइने समुद्र-विजयके निश्चयको छोडा नहीं। मृत्युसे एक साल पहिले १२९३ ई० में उसने तीस हजार सेनाके साथ एक हजार जंगी जहाज जावा आदिकी विजयके लिये भेजे। कुछ सघर्षके बाद जावाने अधीनता स्वीकार की१ ।

जिस साल सुङ राजधानीका पतन हुआ, उसी साल मंगोल-सेनापति नासिरुद्दीनने बर्मा और बगालपर आक्रमण किया। बर्माकी राजधानीपर वह अधिकार नहीं कर सका, लेकिन दोनों देशों ने मंगोलोंकी आशिक अधीनता जरूर स्वीकार कर ली। १२८४ ई० मे बर्मापर पूरी तौरसे भी अधिकार हो गया। इसी समय कोचीन-चीनपर भी मगोलोने आक्रमण किया। इसी साल कुबिलेइ का दूत बुद्धकी दत-धातुकी पूजाके लिये लका पहुचा। १२८७ ई० में तोङ-किङ (कोचीन-चीन) ने मंगोल-अधीनता स्वीकार कर ली।

पैंतीस साल राज्य करनेके बाद १२८४ ई० में अस्सी वर्षकी उमरमें कुबिलेइ हगानका देहान्त हुआ। "इतने बडे साम्राज्य पर हुबिलेइसे पहले किसी एक व्यक्तिने शासन नहीं किया था। उसके राज्यमें सारा चीन, कोरिया, तोङ-किङ (कोचीन-चीन), गंगासे परे और पंजाबकी बहुत-सी भारतीय भूमि, साइबेरियासे तुर्की तकके देश, और पोलैंड और हंगरी तककी भूमि सम्मिलित थी।"

(१) **मार्को-पोलो**—कुबिलेइके शासन और कालके ऊपर वेनिस-निवासी प्रसिद्ध पर्यटक मार्को पोलोकी यात्रा-पुस्तक द्वारा बहुत प्रकाश पड़ता है। १३ वी शताब्दीमे वेनिस नगर युरोपका सबसे बडा व्यापार-केंद्र था। वेनिसी व्यापारियोंने सभी देशोमें अपनी कोठियों के जाल बिछा रक्खे थे। इन्हीं व्यापारियोंमेंसे दो जौहरी-भाई मफियो और पोलो १२५५ ई० में व्यापार करने कान्स्तन्तिनोपोल आये। दोनों भाइयोंने वहा अपने रत्नोंका बहुत अच्छा दाम पाया। उससे उत्साहित होकर वह पासके क्षुद्र-एसियाके मंगोल-शासित प्रदेशमें सौदा करनेकी गरजसे प्रविष्ट हुये। यह भूमि हुलाकू-वंशके अधीन थी। वहां उन्हे कुबिलेइ खानका दूत मिला, जिसने पोलोसे साथ पेकिङ चलनेका प्रस्ताव किया। मंगोल-साम्राज्यमें जितना सुरक्षित यातायातका प्रबंध था, उतना उससे पहले और बादकी भी कई शताब्दियो तक नही देखा गया। मंगोलों का इतना आतंक था, कि कोई चोरी-बटमारी करनेकी हिम्मत नहीं करता था। युरोपसे चीनकी पूर्वी छोर तक लोग निश्चित हो स्थल-यात्रा करते थे। सामुद्रिक यात्राका भी अच्छा प्रबंध था। दोनों वेनिसी व्यापारी मंगोल-दूतके साथ कुछ समय बाद कुबिलेइके दरबारमें पहुंचे। हगानने उनका बड़ा सम्मान किया। उस समय पश्चिमी युरोपमें रोमके पोपका जबर्दस्त प्रभाव था। वह धार्मिक महन्त ही नहीं, बल्कि राजाओका भी राजा था—किसी को गद्दीपर बैठाना या उतारना उसके बायें हाथका खेल था। कुबिलेइने पूरबके स्वामीके तौरपर पश्चिमी देशोंके प्रमुख पोप ग्रेगरीको एक पत्र लिखकर पोलोके हाथ भेजा। पोपने इस अवसरसे लाभ उठाना चाहा। हमें मालूम ही है, इससे पहले ही रुबरिक मुङ-खेके दरबारमें कराकोरम पहुंचा था। पोपने अपने संदेशको सुरक्षित पहुंचानेके लिये फिर निकोलो पोलोको चीन जानेकेलिये मजबूर किया। अबकी बार निकोलोने अपने भाई मफियोको ही नहीं बल्कि सत्रह सालके पुत्र मार्को को भी साथ लिया। ईरान, मध्य-एसिया, पामीर, पूर्वी-तुर्किस्तान होते तीनों पोलो चीन पहुंचे। खानने उनका बड़ा सम्मान किया। मार्को पोलोकी प्रतिभा और योग्यतासे प्रभावित हो कुबिलेइने उसपर अधिक अनुकम्पा दिखलाई। उसे साम्राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंमें भौगोलिक तथा दूसरी खोजें करनेके लिये भेजा। अन्तमें बढ़ते-बढ़ते मार्कोको याङ-च्वाउ जैसे एक बड़े समृद्ध नगरका राज्यपाल बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। पोलो बाप-बेटे सत्रह साल चीनमें रहे। गणतंत्री वेनिस नगरके नागरिक होनेके कारण वह केवल बनिया ही नहीं बल्कि सैनिक और दूसरी विद्याओंका भी काफी ज्ञान रखते थे। उन्होंने अपने पश्चिमी दुनियाके ज्ञान-द्वारा मंगोल-शासनको बहुत लाभ पहुंचाया। यद्यपि बारूदकी प्रारम्भिक तोपों, और पाषाणक्षेपक यंत्र (कताकुल) का उपयोग छिङ-गिस खानने भी किया था, लेकिन उसमें अब बहुत-से सुधार और विकास

१ देखो मेरी "बौद्ध-संस्कृति" पृष्ठ ११५-१६

किये गये, जिसमें पोलोका भी हाथ था। इनके सुझावके अनुसार बनाये हुये हथियारोंका इस्तेमाल १२७३ ई० मे सियाङ-याङ नगरके मुहासिरेमें किया गया। उस अजेय नगरीको नतमस्तक करनेमे इन यंत्रोंका बहुत हाथ था, इसमें सदेह नही।

पोलो बडे सम्मान और आनन्दके साथ चीन में रह रहे थे, लेकिन उधर मातृनगरी वेनिस इतना अपनी ओर खीच रही थी, कि उनकी नजरोंमे यह सारा सुख और आनन्द फीका था। उनकी प्रार्थनापर कुबिलेइ खानने प्रसन्नतापूर्वक बिदाई दी। इसी समय एक मगोल-राजकुमारी ईरानके मंगोल-राजकुमार के साथ ब्याह करनेके लिये भेजी जा रही थी। पोलो बाप-बेटो को भी उसी बधू-यात्रामें सम्मिलित कर दिया गया। अबके उनकी यात्रा समुद्र-मार्गसे हुई। वह अठारह महीने बाद पारसकी खाड़ी में पहुंचे। बन्दरगाहसे राजकुमारीको स्वागत कर ससुरालवाले ले गये और पोलो बाप-बेटोंने वेनिसका रास्ता लिया, जहां कान्स्तंतिनोपोल होते १२९५ ई० में पहुंचे। तब तक कुबिलेइको मरे एक साल हो गया था। हित-मित्र पोलोकी यात्राओंको सुनते नही थकते थे, लेकिन साथ ही वह इस बातका विश्वास करनेके लिये तैयार नही थे, कि हगानका राजस्व प्रतिवर्ष एकसे डेढ करोड सुवर्ण दुकात है, तथा उसके अधीन मिलियनो (करोड़ों) मानव है। इस सख्यापर विश्वास न कर उन्होंने मार्कोको 'मिलियनी' (करोड़ी) नाम दे दिया था। उस युगमे युरोपमें पड़ोसी देशोंके झगडे आम थे। वेनिस गणराज्यका झगडा गेनवावालोंसे था। इसी लड़ाईमें मार्को पोलो भी भाग लेने गया और युद्धबंदी बना। अपने बंदी-जीवनमें ही मार्को पोलोने अपनी यात्रा-कथा मध्यकालीन लेखक रस्तिसियन-दे-पीसाको सुनाई, जिसने उसके आधारपर "मार्को पोलोकी यात्रायें" नामक प्रसिद्ध पुस्तक तैयार की। मार्को पोलोकी यह यात्रा दुनियाकी यात्रा-पुस्तकों मे सिरमौर मानी जाती है, जिसमें उसने अपने देखे हुये स्थानों, व्यक्तियों, रीति-रवाजों और दूसरी चीजोका बडा सुदर विवरण दिया है। वह कहता है--"सम्राट्के दूत काम्-बालू (खान-बालिग, पेकिङ) से यात्रा करते समय हर पचीस मीलपर टिकान पाते हैं, जिसे वह लोग घोड़ाचौकी कहते हैं। प्रत्येक मंजिलपर एक बड़ी और सुदर इमारत उनके ठहरनेके लिये बनी है। इमारतके सभी कमरे बढिया कालीनों और कीमती रेशमी वस्त्रों से सजाये गये है। अगर कोई राजा भी इन मकानोंमें आ जाये, तो वह बड़े आरामसे ठहर सकता है। इन चौकियोंमेंसे कितनोंमें चार सौ और किन्ही-किन्हीमें दो सौ घोडे तैयार रहते है। चाहे दूतको ऐसी बे-रास्तेकी भूमिमें भी जाना पड़ रहा हो, जहापर टिकानकी आशा नही हो सकती, वहा भी कुछ फासलेपर ऐसा विश्राम-स्थान मिल जायेगा, जहां सभी आवश्यक चीजोंका प्रबंध होगा। इसीलिये सम्राटके दूत चाहे जिस देशसे भी आयें, उनके लिये वहां सभी चीजें तैयार मिलती है।

"जो सम्पत्ति और समृद्धि खाकानके यहां देखी जाती है, उसे कभी किसी सम्राट्, राजा या राजुलके पास नही देखा गया। इन सभी विश्रामस्थानोमें दो लाख घोड़े तैयार रहते है, और इमारतें दस हजारसे ज्यादा है। सामान इतने बड़े पैमानेपर और अद्भुत ढंगके है, कि उनका वर्णन करना मुश्किल है।

"इस प्रबंधसे खाकान दस दिनकी दूरीके स्थानोंके समाचार एक दिन-रातमें पा लेता है। कितनी ही बार सबेरेके वक्त काम्बालू (पेकिङ) से फल रवाना किया जाता है, और दूसरे दिन शामको वह खाकानके पास चेन्-दू (सन्दा) में पहुंच जाता है। आदमी एक दिनमें दो-ढाई सौ मील चले जाते हैं, और उतनी ही यात्रा वह रातको करते हैं। इन दूतोंके शरीरपर एक चौडी पट्टी बंधी रहती है, जिसके चारों ओर घंटियां लगी रहती हैं। घंटियां दूरसे ही सुनाई देती है, जिसके कारण चौकीपर पहुचनेके समय दूसरा दूत वहां तैयार मिलता है, जो उसी तरह पहले दूतकी लाई चीजको लेकर घोड़ा दौड़ाने लगता है। चौकीका लेखक चीजकी प्राप्तिकी चिट आये हुये दूतको दे देनेके लिये हर वक्त तैयार रहता है। हर चौकीका लेखक दूतके आगमन और प्रस्थानका समय लिख लेता है। हर चौकीपर लगाम-चारजामा लगे तैयार ताजे घोड़े मौजूद रहते हैं। बस उसपर चढ़ो और पूरी चालसे दौड़ाओ। फिर दूसरी चौकीपर जब दूरसे घंटीकी आवाज सुनाई देती है, तो दूसरा घोड़ा और सवार तैयार हो जाता है। जिस वेगसे वह दौड़ते हैं, वह बड़ा अद्भुत है। रातको भी वह उतना ही तेज चलते हैं, जितना दिनको, क्योंकि उनके साथ मशालची सवार होते हैं।

"ये घोडसवार-दूत बहुत अच्छा वेतन पाते हैं। वह इतने मुश्किल कामको बिना अपने पेट, सिर और छातीको मजबूत पट्टीसे बाधे नही कर सकते। वह अपने साथ एक अंकित पट्टिका ले चलते है,जो इस बातको प्रकट करती है, कि वह बहुत जरूरी कामके लिये जा रहे हैं। इसीलिये यदि संयोगसे कही घोड़ेके अंग-भंग होने या गिर जाने से दूत सडकपर पड जाये, तो वह दूसरा घोड़ा ले सकता है। कोई उसकी मागसे इन्कार नही कर सकता।"

मार्कों पोलोने बतलाया है, कि उस समय प्रत्येक बडे शहरमे एक दारोगा रहता था, जिसका काम था रास्तेकी देख-भाल करना।

(२)**जाति-व्यवस्था**—चाहे भारतकी तरहकी कड़ी जाति-व्यवस्था न हो, किन्तु सभी सामन्ती शासनोमे जातिभेदका होना आवश्यक देखा जाता है। ६ठी-७वी शताब्दीमें ईरानमे जातिभेद करीब-करीब उसी तरहका था, जैसा भारतमें। मगोलोसे पहले चीनमें भी जातिभेद था। मंगोलोंने भी अपनी प्रजाको चार वर्गोमें बांटा था, जिनमें प्रथममे उनके अपने मंगोल आते थे, द्वितीय वर्गमें से-मू (तुर्क मुसलमान), तूफान (तिब्बती), तुगुत, मध्य-एसिया तथा पश्चिमी एसिया के दूसरे वह लोग थे, जो मंगोलोंके साथ नसली या सांस्कृतिक समीपता रखते थे। तीसरे वर्गमे उत्तरी चीनवाले थे, जो कि किन्-शासनके बाद मंगोल-शासन में आये थे। चौथे वर्ग में सुङ-साम्राज्यमें रहनेवाले दक्षिणी चीनी थे, जिन्होंने मगोलोंका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था, इसीलिये उन्हें सबसे निचले वर्गमें रखा गया था। पहले इन्हें किसी राजकीय सेवामें भरती होनेका अधिकार भी नहीं था। चीनमें पहलेसे चली आती अधिकारियोंकी परीक्षाओंमें यद्यपि चीनियोंके सम्मिलित होनेमें कोई रुकावट नही थी, लेकिन चाहे चीनी परीक्षामें उच्चसे उच्च स्थान पाये, तब भी बाईं ओरकी सूचीमें उसका नाम लिखा जाता था, जब कि मंगोल और से-मू दक्षिणी सूचीमें स्थान पाते थे। नौकरीमें ले लेनेपर भी चीनियोंको मगोल-भाषा सीखने और मंगोलोंके धर्मके प्रति सम्मान दिखानेके लिये मजबूर होना पड़ता। दंड देनेमें भी भेद-भाव रक्खा जाता। यदि कोई चीनी चोरी करता, तो पहले अपराधके लिये उसकी बाईं बांहमें गोदना गोद दिया जाता, दूसरी बार अपराध करनेपर दाहिनी बांहमें, तीसरी बार गर्दनपर, जिसे देखकर कोई भी आदमी अपराधीको पहिचान सकता था। लेकिन, उसी अपराधके लिये मंगोलोंको इस तरहका दंड नहीं दे मामूली जुर्माना लेकर छोड़ दिया जाता था। अगर कोई चीनी किसी मंगोल या से-मू को मार डालता, तो उसे मृत्यु-दड मिलता और हत्यारेके परिवारसे धन वसूल करके मृत व्यक्तिकी अन्त्येष्टि आदिका खर्च दिलवाया जाता। अगर हत्यारा मंगोल होता, तो उसे शराब के नशे, या झगड़ेके पागलपनको कारण बतलाकर जुर्माना या निर्वासनका दंडभर करके छोड़ दिया जाता था। १२७९ ई० की एक मंगोल-राजाज्ञाके अनुसार चीनियोंको हथियार रखनेका अधिकार नही था। धनुष-बाण भी न रख पानेके कारण वह शिकार नही कर सकते थे। भारतके अंग्रेज शासकोंकी तरह चीनमें मंगोल-शासकोंने भी जगह-जगह मंगोल-छावनियां कायम की थीं।

और भी विस्तृत वर्गीकरण करते हुये मंगोलोने अपनी प्रजाको निम्न दस श्रेणियो में बांटा था—

(१) उच्च दरबारी, (२) अधीनस्थ या स्थानीय अफसर, (३) लामा (साधु), (४) ताउ-साधु, (५) वैद्य, (६) कारीगर और मजूर, (७) शिकारी, (८) पेशावर लोग, (९) कन्फूसी पुरोहित और (१०) भिखमंगे। मंगोल कन्फूसी आचार्योको बहुत नीची दृष्टिसे देखते थे, जब कि पुराने चीनी शासनमें कन्फूसी विद्वानों का स्थान राजवंशके बाद ही आता था। इसमें शक नहीं, चीनी विद्या और संस्कृतिके निधिरक्षकोको उनके अनुरूप स्थान न दे मगोलोंने बुरा किया था; लेकिन वह यह भी जानते थे, कि चीनी संस्कृति और सामन्तवादके इन अंधे पुजारियोंसे अपने लिये, हम कोई भलाईकी आशा नहीं रख सकते थे। कन्फूसी यदि केवल चीनी संस्कृति और कलाके ही नेता होते, तो समझौता हो जाता, अथवा यदि मंगोल पूरी तौरसे चीनी बननेके लिये तैयार होते, तब भी कन्फूसी विद्वानोंको भिखारियोंके पास बैठनेकी जरूरत नहीं पड़ती। कन्फूसी शिक्षा और विद्वानोंके प्रभावको चीनके सभी सामन्ती शासक अपने लाभके लिये इस्तेमाल करते रहे। अभी हालमें चाङ-काइ-शकने भी इस हथियारका पूरी तौरसे उपयोग करना चाहा। शासकके प्रति आख मूदकर सद्भावना और आज्ञाकारिता प्रदर्शित करना कन्फूसी शिक्षाका एक मुख्य अंग है, इसीलिये शासकोंकी उनपर विशेष अनुकम्पा होनी स्वा-

भाविक है। लेकिन कन्फूसी साहित्य और शिक्षामे एकमात्र दास-मनोवृत्ति सिखलाना ही नही है, उसमे कितनेही और भी उच्च सांस्कृतिक तत्त्व है, जिनको छोडा नही जा सकता, लेकिन इसका नीर-क्षीर-विवेक करते उपयोग करना नवीन चीनमे ही सम्भव हो सकता है ।

मंगोल खाकान गैर-मंगोल जातियोके लिये स्वेच्छारी और कितनी ही बार अतिनिष्ठुर शासक थे, लेकिन उस निष्ठुरताका प्रयोग वह हर वक्त नहीं करते थे। यद्यपि मगोलोके साथ उनका खास पक्षपात था, लेकिन अधीनस्थ जातियोंको भी वह अधिकारोसे स र्वथा वंचित नही रखते थे। प्राय सभी विजित देशोमे उन्होंने पुराने राजाओं और सुल्तानोंको अपने अ धीन शासक बनाकर रख छोडा, सिवाय उन देशोंके जहाके लोगोंने उनका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। कुबिलेइने यद्यपि खानबालिग (पेकिङ) को अपनी राजधानी बना उसे भव्य प्रासादोंवाली समृद्ध नगरीमें परिणत कर दिया था, लेकिन उसका भी अधिक समय तम्बुओंके भीतर बीतता था। मंगोल अपने घुमंतू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझते थे, इसीलिये चीन या दूसरे देशों पर शासन करनेवाले सभी मगोल-खाकानोकी राजधानियां चिड़िया-रैनबसेरा जैसी ही थी। मंगोल-भाषामें राजधानी और प्रासादों को सराय कहते है। उसका अर्थ मुसाफिरोंकी सरायका हर्गिज नही था। मार्को पोलोके अनुसार राजपथोके हर मजिलपर "सराय" (प्रासाद) थी, शायद उसीके कारण मुसाफिरोंकी टिकानको भी सराय कहा जाने लगा। राजकुमारों और बडे-बडे सैनिक अफसरोंको राज्यके भीतर अपने-अपने भूखण्ड मिले हुये थे, जिनपर वह अपनी मर्जीके मुताबिक शासन करते थे। यद्यपि छिङ-गिस्ने मध्य-एसियाके मु सलमानोके साथ बडी क्रूरताका बर्ताव किया था, बलख, मेर्व, तूस जैसे कितने ही समृद्ध नगरोंकी वस्तुत. उसने ईटसे ईट बजा दी थी, जिसके कारण वह फिर नही उठ सके; लेकिन, पीछे मगोलोंका बर्ताव मुस्लिम जातियोसे अधिक सहानुभूति-पूर्ण था, यह इसीसे पता लगता है, कि इन जातियोंको उन्होने चारों वर्गोमेसे द्वितीय वर्गमे रक्खा था। कुबिले खानकी बर्मा और बंगालपर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनापति नासिरुद्दीन भी इसका स्पष्ट उदाहरण है—मंगोल ऊंचे सैनिक पद को भी मुसलमानोको देनेके लिये तैयार थे।इसका एक और भी कारण था—चाहे मध्य-एसियाके तुर्क मुसल मान हो गये हों, लेकिन जातित. वह मंगोलोके भाई-बन्द थे। रूसियों और पश्चिमी जातियोंके खिलाफ अभियान करते समय मगोलोने किपचक तुर्कोसे भाईचारा लगाकर उन्हें अपनी ओर कर लिया था, जिससे उन्हे एक लडाकू जाति सहायक मिल गई ।

मंगोल-भाषाके प्रति मंगोल-शासकोंका अधिक पक्षपात स्वाभाविक था। उनके आज्ञापत्र उइगुर लिपिमें लिखी मंगोल-भाषामें हुआ करते थे। १३वीं शताब्दीके आरम्भमे चली हुई यह परिपाटी १५वीं शताब्दीके आरम्भ तक तेमूरलग और उसके पुत्रोंके समय तक जारी रही। कट्टर मुसलमान होते भी यह लोग छिङ-गिस् की वरासतको छोड़नेके लिये तैयार नही थे। लेकिन, मंगोल-भाषाका विकास जितना होना चाहिये था, उतना नहीं हो सका। "मंगोल-उन्निगुचा" (तोपचिया), "युवान-चाउ-बि-शी" जैसे कुछ इतिहास या दूसरे विषयोंके ग्रंथ उस समय मगोल-भाषामे लिखे गये। पीछेके मगोल-शासकोंके लिये ग्रंथ अधिकतर चीनी या पारसीमें लिखे गये, जो प्राय. इतिहाससे सबध रखते थे। चीनमें मंगोल-भाषामें जो ग्रंथ लिखे गये, उनके अनुवाद चीनीमे भी हुये थे, पीछे मूल (मगोल) ग्रंथ लुप्त हो गये और उनके चीनी अनुवाद भर बच रहे। कुबिलेइ खानने अपना ही नही अपने वंशका भी धर्म बौद्ध-धर्मको घोषित किया और अपने गुरु फगपा लामाको तिब्बतका राज्य प्रदान किया, किन्तु उसने बौद्ध-ग्रंथोंके मंगोल-अनुवादका काम बहुत आगे नही बढाया। १५ महाभारतोके बराबर भारतीय ग्रंथोंके अनुवाद कन्जुर (बुद्ध-वचनानुवाद) और तन्जुर (शास्त्रानुवाद) के नामसे तिब्बती भाषामे मौजूद थे। उनमे (तिब्बती) कन्जुरको कुबिलेइ खानने स्वयं सोनेके अक्षरो में लिखवाया था, लेकिन उनका मंगोल-अनुवाद उस समय हुआ, जब चीनसे मगोल-शासन खतम हो गया। मंगोल शायद संस्कृतकी तरह तिब्बती भाषामें ही धर्म-ग्रंथो का पढना ज्यादा पुण्यदायक समझते थे। आज भी मंगोलियामें कन्जुर और तन्जुरके मगोल-भाषामें हो जानेपर भी उन्हें तिब्बती भाषामें पढ़ना ज्यादा पुण्यकार्य समझा जाता है। शायद यह भी कारण रहा हो, लेकिन उस समय आजकी तरह मंगोलोंमें तिब्बती भाषाका प्रचार नही था, इसलिये अधिकांश लोग तिब्बती ग्रंथोंको बिना समझे ही पढ़ सकते थे ।

मंगोलोंके समयसे पहले ही चीनी कलाका सुवर्ण-युग थाङ-काल (६१८-८६९ ई०) बीत चुका था, तो भी मंगोलोंने कलाका सरक्षण-सबर्धन किया। नाट्य-कला के विकासमे तो उनका विशेष हाथ रहा। चीनमें सगीत, अभिनय और नृत्यका प्रयोग बडी साजसज्जाके साथ बहुत पहलेसे चला आता था, लेकिन तीनों चीजोंका पहले वैसा सुदर सम्मिश्रण नही हुआ था, जैसा कि मगोल-शासकोके सरक्षणमे। मंगोल-वंशने नाट्य-कला की बडी अभिवृद्धि की, बडे सुंदर-सुदर रगमंच बनवाये। दरबारके समय खानके साथ भिन्न-भिन्न देशोके राजदूत भी नाटकका अभिनय देखते थे। उस समय नाट्यके लिये जो नियम और व्यवस्था कायम की गई, उससे चीनी रगमंचको बहुत प्रेरणा मिली, जिसका प्रभाव आज भी देखा जाता है। चित्र-कलामें भी वस्तु-निर्वाचन, उसके चित्रण तथा प्रभावमें विशेष कार्य हुआ। मगोलोंका गतिमय शक्तिशाली जीवन चित्रोंकी रेखाओमे अंकित होने लगा, पुराने कालसे चले आये शान्त-रसकी प्रधानताका स्थान अब वीर और रौद्ररसोंने लिया। अब भी शान्त प्राकृतिक दृश्य अंकित होते थे, लेकिन घुडसवारी, शिकार और बाजके दृश्य अधिक प्रिय थे। अब बलसम्पन्न गतिको प्राप्तकर चीनी चित्रकलाको आगे बढनेको एक नया रास्ता मिला।

६. थुबु थेमुर, उल्द-शे-तू, चेङ-चुङ (१२९४-१३०७ ई०)

कुबिलेइने कूरिल्ताईकी शक्तिको कमजोर कर दिया था, जिससे खानोंके निर्वाचनमें पहले-जैसी स्वतंत्रता नही बरती जा सकती थी। इसीलिये अब सारे मंगोल-खानजादोंमेंसे किसी एकको चुननेकी जगह मृत खानकी संतानको ही उत्तराधिकारी समझा जाने लगा। कुबिलेइका पुत्र छिङ-गेन् बापके समय ही मर गया था, इसलिये उसके पुत्र थुबु-थेमुरको गद्दी मिली। अब छिङ-गिस्‌की पांचवीं पीढी चल रही थी। एक शताब्दी के विजयोंके बाद भी अभी मगोलोंकी शक्तिका उतना ह्रास नही हुआ था। १३०० ई० में बर्माके सिंहासन-वंचित राजपुत्रने मंगोल-दरबारमे पुकार की, और मंगोल-सेनाने बर्मामें पहुंचकर उसे गद्दीपर बैठाया। कुबिलेइके प्रतिद्वंद्वी अरिग्बुकाके साथ प्रतिद्वंद्विता खतम नहीं हुई थी। कै-दू खानने अब भी अपने उत्तराधिकारके दावेको नहीं छोड़ा था। १३०१ ई० में उसने थुबु-थेमुरके ऊपर जबर्दस्त आक्रमण किया, जिसमें चगताइ खान्दान भी उसका सहायक था। कराकोरमके पास लड़ाई हुई। ओगोताइ-वंशी और चगताइ-वंशी दोनों खानोंको हार खानी पड़ी, कै-दू मारा भी गया। उसकी जगहपर उसका पुत्र चापर ओगोताइ खान बना, जिसने थुबु-थेमुरकी अधीनता स्वीकार कर ली। १३०३ ई० में पिङयाङ और ताइ-युआनमें, फिर १३०४ ई० में गिङ-याङमें भूकम्प हुये, जिसको लेकर तरह-तरहकी भविष्यद्वाणियां की जाने लगी। सौ वर्ष पहले १२०६ ई० में छिङ-गिस् खाकान घोषित हुआ था, इसलिये विरोधी यह भी अफवा उड़ा रहे थे, कि अब मंगोल-वंशका सितारा डूबनेवाला है। १३०६ ई० में कै-दूका समर्थक चगताइ दावाखान मर गया, जिससे अगले साल थुबु-थेमुर भी काल कवलित हुआ।

७. खू-लुग, कू-लुक, से-सन्, बू-चुङ् (१३०७-११ ई०)

थुबु-थेमुरके मरनेके बाद उसके भाई धर्मपालका पुत्र खु-लुग कूरिल्ताई द्वारा खाकान घोषित किया गया। भूकम्पके बाद अब १३०८ में अकाल और महामारीकी बारी आई, लेकिन वह सारे साम्राज्यमें नहीं फैल सकती थी। प्रजाको प्राणोसे मोल चुकाना पड रहा था, लेकिन खाकानके दरबार पर उसका क्या प्रभाव हो सकता था? इसी साल चापर खान तथा दूसरे दरबार में आये, जिनकी बडी आवभगत हुई। चगताइ और ओगोताइ-परिवारोंके साथ होता संघर्ष अब दब गया था, इसलिये खू-लुग घरेलू-युद्धसे निश्चिंत था, तो भी १३०९ ई० में युन्नानमें भारी विद्रोह हुआ। युन्नान भारतीयतासे प्रभावित पूर्व-गंधार देशके नामसे प्रसिद्ध था। यहांके लोग संस्कृतिमें ही आगे बढ़े हुये नही थे, बल्कि अच्छे योद्धा भी थे। अपनी स्वतंत्रताके लिये उन्होंने कुबिलेइका जबर्दस्त मुकाबिला किया था और जब कोई दूसरा रास्ता नहीं रह गया, तो उनमें से बहुत-से लोग भागकर थाई (स्याम), शान (बर्मा) और अहोम (आसाम) में चले गये, जहां उन्होंने नये राजवंशोंकी स्थापना की। १३०९ ई० में उन्हीं गंधारोंने अपने देश युन्नानमें जबर्दस्त विद्रोह किया, जिसके दबानेमें मंगोलोंको भारी मुश्किलका सामना करना पड़ा।

यद्यपि कुबिलेइके समय ही फग्पा (फग्स्-पा=आर्य) लामाने मंगोल-बादशाहके लिये नये अक्षर बना दिये थे, लेकिन इस अक्षरमें अंकित पहलेपहल ताबेके सिक्के खु-लुगने १३१० ई० में ढलवाये। इसी साल मंगोल-राजकुमार तू-ला (कोकोचू-पुत्र) ने असफल विद्रोह किया। थुबु-थेमुरके समय तक अभी बाहरके मंगोल-राजवंशोंके साथ चीनके खाकानका घनिष्ठ संबंध था, उसे अधिपति माना जाता था; लेकिन अब वह संबंध शिथिल होने लगा। फर्वरी १३११ ई० में खु-लुग मर गया और उसकी जगह उसका भाई बोयन्-थू गद्दीपर बैठा।

बोयन्-थू, आयुरपरवल, आयुर्बलीभद्र, बूयन्-तू, जुन्-चुङ (१३११-२०ई०)

खु-लुगकी मृत्युके साल ही उसके भाईको गद्दी मिली। ईरानका मंगोल-वंश कुबिलेइके छोटे भाई खुलाकू-खानका था, इसलिये जिस वक्त जू-छी, चगताइ और ओगोताइ खानोंका चीनके हगानसे (खकान) से मतभेद या झगड़ा भी रहता, उस समय भी ईरानके मंगोल-वंशका हगानके साथ बहुत सौहार्द रहता। १३१२ ई० की फर्वरीमें बोयन्-थू ने अपना दूत ईरानी खान उल-जै-तूके पास भेजा। पुराने कालसे चीनमें हिजड़े बनाकर उन्हें अन्तःपुरमें ही बड़े-बड़े स्थान नहीं दिये जाते थे, बल्कि राज्यके ऊंचे-ऊंचे पदों पर भी वह पाये जाते थे। १३१४ ई० में बोयन्-थूने सरकारी नौकरियोंमें हिजड़ोंका प्रवेश निषिद्ध कर दिया, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि हिजड़े अब बाट के भिखारी बन गये। उसके लिये तो अभी १९११ ई० तक प्रतीक्षा करनी थी। अगले ही साल (१३१४ ई०) एक प्रमुख हिजड़ेने एक सुंदर मन्दिर बनवाया। पिताकी गद्दी न पानेके कारण खुलुग-पुत्र कुसलने १३१६ ई० में चचाके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। यह हम पहले देख चुके हैं, कि व्यापार और कृषि-उद्योगको धनका प्रधान स्रोत समझकर मंगोल-शासक उनकी उन्नतिकी ओर विशेष ध्यान देते थे। डेढ़ हजार वर्षोंसे अधिक समयसे रेशमकी जन्मभूमि चीन अपने सुंदर रेशमी कपड़ोंके लिये सारी दुनियामें प्रसिद्ध था। रेशम देशकी आमदनीका एक बड़ा भाग था। बोयन्-थूके शासन-कालमें १३१८ ई० में सरकारने तूतके वृक्ष लगाने तथा रेशमके कीड़े पालनेकी विधिके ऊपर एक पुस्तिका प्रकाशित की। शायद सरकारोंकी ओरसे इस तरहकी छपनेवाली पुस्तकोंमें यह सबसे पहिली थी।

फर्वरी १३२० ई० में बोयन्-थू मर गया और उसकी जगहपर उसका पुत्र गेगेन् गद्दी पर बैठा।

९. गेगेन्, शु-तु-फल (शुद्धफल), यिङ-चुङ (१३२०-२३ ई०)

मंगोल खान-वंशमें धर्मपाल, आयुर्बलीभद्र या शुद्धफल जैसे शुद्ध भारतीय नामोंका होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि अब मंगोल-राजवंश ही नहीं साधारण जनतामें भी बौद्ध-धर्म जातीय धर्म समझा जाने लगा था। गेगेन् (ग्य-गेन्) १८ वर्षका था, जब कि वह गद्दीपर बैठा और २१ सालकी आयुमें मर गया। उसके बाद छठे खान थुबु-थेमुरके भाई कमलका पुत्र यिसु-थेमुर गद्दीपर बैठा।

१०. यिसु-थेमुर, यिस्सुन-तइमुर, ताइ-चिङ-ति (१३२३-२८ ई०)

अब खानोंके शासनमें कोई विशेष बात नहीं थी। १३२३ ई० में "ताइ-युवान-तोङ-शी" (महा-मंगोल-विधान) प्रकाशित हुआ। अगस्त १३२८ ई० में खान मर गया और उसकी जगह उसका भतीजा रिन्छेन् गद्दी पर बैठा।

११. रिन्-छेन्-फग्, यू-चू (१३२८ ई०)

बहुत कम समय शासन करनेके कारण कितनी ही वंशावलियोंमें इसका नाम नहीं मिलता। रिन्-छेन्-फग् तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्न-आर्य। उसके बाद उसका भाई तथा खु-लुगका पुत्र कुसल गद्दीपर बैठा।

१२. कुसलऽ, कोसल, मिङ-तिङ (१३२८-२९ ई०)

अब वंशकी निर्बलताके सूचक चंद दिनोंके खान होते रहे।

१३. थुग्-थेमुर, उल्जे-थू जीया-शा-तू, वेन्-चुङ (१३२९-३२ ई०)

यह बोयन्-थू खाकानका पुत्र तथा गेगेन्का भाई था। इसके शासन-कालमें १३३० ई० मे फिर युन्नन्में विद्रोह हुआ, जो १३३१ ई० मे भी जारी रहा। इसी समय चीन में अवर्षणके कारण अकाल पड़ा। उसी सालकी एक घटना बतलाती है, कि पहलेसे चले आये नियमोका अबभी कितनी कड़ाईके साथ पालन किया जाता था। खाकानने साम्राजी वर्षपत्रको देखना चाहा, लेकिन अधिकारीने इन्कार कर दिया। यह परिपाटी इसलिये चली आती थी, जिसमे खाकान दरबारी इतिहास-लेखकसे मनमाना न लिखवा सके, इसीलिये दैनंदिनीको उसे दिखलाया नही जाता था। थुग्-थेमुरने अपनेको अपवाद बनाना चाहा, लेकिन दैनंदिनी लेखकने उसे दिखलानेसे इन्कार कर दिया।

१४. रिन्-छेन्-पल्, निङ-चुङ (१३३२-३३ ई०)

रिन्-छेन्-पल् भी तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्नश्री। यह कुसलका पुत्र था और केवल दो मास राज्य करके मर गया। इसके बाद अन्तिम खाकानका दीर्घकालीन राज्य शुरू हुआ।

१५. थेगन्-थेमुर, तोगोन्-तिमुर, शुङ-ति (१३३३-६८ ई०)

यह थुग्-थेमुरका पुत्र था। इसने ३५ वर्ष तक शासन किया। जान पड़ता है, राजवंशकी समाप्तिके लिये हर वंशमे वाजिदअली शाहके पैदा होनेकी अवश्यकता होती है। थेगन्-थेमुर चरम विलासी था। लामा लोगोंका प्रभाव भी राजवंशपर अब चरम सीमा को पहुंचा हुआ था। तिब्बतका धर्म, तांत्रिक बौद्ध-धर्म है, जिसे लामा-धर्म कहकर कितने ही लोग उसकी सारी जिम्मेवारी तिब्बतके ऊपर मढ़ना चाहते हैं। लेकिन, तान्त्रिक बौद्ध-धर्म तिब्बतकी उपज नही है। वह भारतमें पैदा हुआ और यहीं चरम सीमापर पहुंचकर भारतके गारत करनेका एक कारण बना। प्रभावशाली लामोंका खाकानके ऊपर बहुत प्रभाव था। उसका तंत्र-मंत्रपर बहुत विश्वास था। पंच मकार--उन्मुक्त व्यभिचार भी जिसका एक प्रधान अग था--का खुलकर प्रयोग खानके यहां होता था। बहुत निम्न श्रेणीके यौन-दुराचार साधनके अंग माने जाते थे। मंत्र-तंत्र-सिद्धि तथा भैरवी चक्र के लिये एक मकान बनाया गया था, जिसका नाम रखा गया था "निर्दोष-भवन"। वहा पर यौन-अतिचारकी हद की जाती थी। अन्तःपुरिकाओंको "दिव्य नृत्य" के नामसे बहुत-सी अश्लील चेष्टाओंके प्रदर्शन करनेके लिये मजबूर किया जाता था। चारों तरफ विलासिता और व्यभिचारका बाजार गर्म था। यह वही समय था, जब चीन में १३२६, १३२७, १३३४, १३३६, १३४२ और १३४६ में जबर्दस्त अकाल पड़े थे। खान, उसके दरबारी और अधिकारी भैरवी चक्रमें मस्त थे, जब कि लोग भयंकर कष्टसे गुजर रहे थे। सूखा और अकालके समय किसानोंकी कोई खोज-खबर लेनेवाला नहीं था। यही नहीं, अब भी उन्हे दरबारके लिये भारी करोको देना पड़ता था। मंगोल-वैसे भी निर्लिप्त विदेशी शासक थे, जिनके साथ चीनियोंका कोई सौहार्द नहीं था। इस क्रूरता-पूर्ण विलासमय जीवनसे तो चीनी जनताके नाकों दम हो गया। वह और अधिक दिनों तक इस दुःशा-सनको बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। राजधानीसे दूर दक्षिणमे याङ-चि-उपत्यकामें विद्रोहियोंने सिर उठाया। जंगलकी आगकी तरह विद्रोह जल्दी ही सारे देश में फैल गया। विद्रोहियों का नेता चू-युवान्-चाङ एक किसानका लड़का था। उसने भूख और कष्टके दिन देखे थे, इसलिये वह किसानोंको विद्रोह-में शामिल करनेमें सफल हुआ। मंगोल-सेनाने विद्रोहको पहले कही-कहीं दबाया, लेकिन थोड़े ही समयमें सारी याङ-चि-उपत्यका चू-युवान्-चाङ के हाथमें चली गई। १३६८ ई० में उसने अपनेको स्वतंत्र सम्राट् घोषित करते नान्-किङ् में मिङ (प्रकाश)-वंशकी नींव रक्खी। इसी साल उसकी सेना पेकिङके ऊपर चढी। थेगन्-थेमुरके लिये मंगोलिया अभी सुरक्षित जगह थी, इसलिये वह वहां भाग गया। इस प्रकार चीनमें मंगोल-राज्यका अन्त हुआ। थेगन्-थेमुरके वंशज आगे मंगोलियापर शासन करते रहे, जहां समय बीतते-बीतते उनके अनेक राज्य हो गये, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके इतिहासपर पीछे फिर एक बार पड़ा, जब कि १८ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें मालूम होता था, मध्य-एसिया में फिर एक विशाल मंगोल-साम्राज्य कायम होने जा रहा है; लेकिन पलासीकी लड़ाई १७५७ ई० के समय उसका नाश चीन और रूसके प्रहारोंसे हो गया।

चीनके मंगोल खाकानोंके समय पहले घनिष्ठतापूर्वक किंतु पीछे शिथिलताके साथ चगताइ, जू-छि, हुलाकू आदिके राजवंशोंका संबंध रहा, इसका वर्णन आगे हम करेंगे। तू-लुइ-वंश के वर्णन के बाद अब हम जू-छि-वंशको लेते हैं जिसके शासनमें उत्तरी मध्य-एसिया और रूस बहुत समय तक रहे।
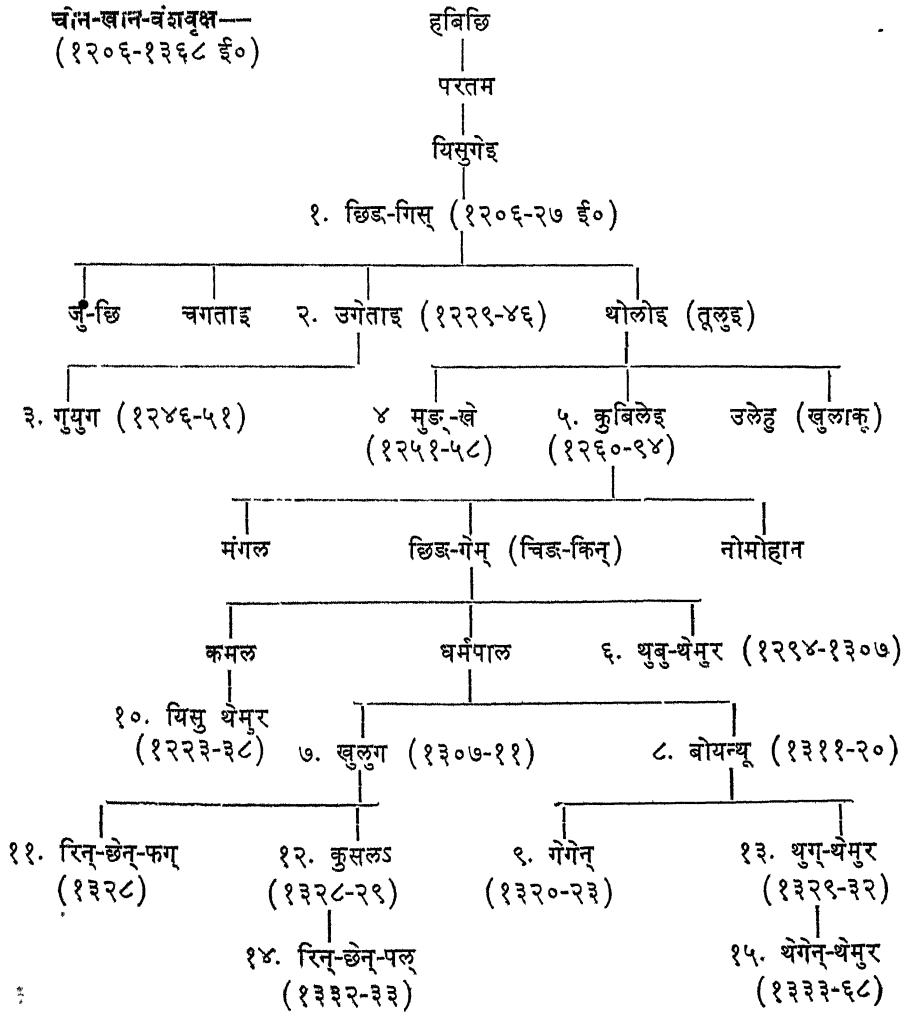
अध्याय २

सुवर्ण-ओर्दू

(१२२४-१४०० ई०)

छिङ-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके ओर्दूको "सुवर्ण-ओर्दू" के नामसे पुकारा जाता है, यद्यपि मुसलमान इतिहासकार इसे अधिकतर कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू) के नामसे याद करते है, और जू-छिके ज्येष्ठ पुत्र ओर्दाके उलुसको अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) कहते हैं। रूसी प्रजा इन्हे जोल्तोय (सुवर्ण-ओर्दू) के नामसे जानती है ।

१. जू-छि, तू-शि (म० १२२४ ई०)

छिङ-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि या तू-शिकी मृत्यु बापसे छ महीने पहले हुई थी, यह हम कह आये हे। जू-छिके बारेमें एक मुसलमान गुमनाम लेखककी कृति "शजरतुल्-अतराक" (तुर्कवंश-वृक्ष) में कितनी ही बातें कही गई है। मंगोलियासे दूर चले गये मंगोल तुर्क-समुद्रमे चंद बूंदोंकी तरह थे, और वह उनके भीतर हजम भी हो गये।.इसीलिये इस लेखकने मंगोल-वंशवृक्षको तुर्क-वशवृक्ष कहा। इस तथा दूसरे ग्रंथोंके अनु-सार भी छिङ-गिस्को अनुपस्थित देखकर उसके प्रतिद्वंद्वी मरकितोंने छिङ-गिसी उलुसको मार भगाया और वह उसकी ज्येष्ठ पत्नी बुर्ते-फूजिन्को और बहुतसे आदमियोंके साथ पकड ले गये। बुर्ते-फूजिन् कंकुरत कबीलेके सरदार दाई-नोयन्की पुत्री थी। यही छिङ-गिस्के चार प्रधान पुत्रों और पांच पुत्रियोंकी मां थी। बुर्ते-फूजिन्के पकड़े जानेके समय जू-छि माके पेटमें ६ मासके गर्भके रूपमें था। केरइत खान ओङ-खान छिङ-गिस्का बड़ा समर्थक था। वह छिङ-गिस्को अपना पुत्र मानता था। जब इस घटनाका पता लगा, तो उसने मरकितोपर आक्रमण कर बुर्ते-फूजिन् तथा उसके आदमियोंको छुडा लिया, और अपनी धर्म-बधूको फिर छिङ-गिस्के पास भेज दिया। इसी समय रास्ते मे जू-छि पैदा हुआ। पंथमें पैदा होनेके कारण ही उसका नाम जू-छि (पंथक) पड़ा। पीछे चगताइ खानोंका जू-छि-वंशके कोक-ओर्दू और अक-ओर्दूसे सदा झगडा होता रहा। इसीलिये चगताइ विद्वानोंके इतिहास-ग्रंथोंमें जू-छिको कलंकित करते हुये यह साबित करनेकी कोशिश की गई, कि जू-छि छिङ-गिस्का पुत्र ही नहीं था। समर्थक इस बातके साबित करनेका प्रयत्न करते है, कि जू-छिकी मां केवल चार महीने छिङ्-गिस्से दूर रही, जब कि रास्तेमे जू-छि पैदा हुआ। "तुर्कवंश-वृक्ष" का लेखक यह भी कहता है—"चाहे पुत्र कितना ही अच्छा हो, असली और नकलीके प्रति पिताके प्रेममें जमीन-आसमानका अन्तर होता है। साइन् (छिङ्-गिस्) जू-छि खानके ऊपर हदसे ज्यादा प्रेम और स्नेह रखता था।" जू-छि खानके मृत्युकी खबर जब उलुसमें पहुंची, तो उसे बापतक पहुंचानेकी किसीको हिम्मत न हुई। यह काम दरबारी कवि उलुग-दुर्जीके सिरपर रखा गया। कविने हिम्मत करके पद्यमें उपमाके रूपमें यह खबर सुनाई, जिसे सुनकर छिङ-गिस् बहुत दु:खी हुआ। कवि और छिङ-गिस्के दु:खोंको तुर्की भाषाके पद्यमें प्रकट किया गया है, यद्यपि यह निश्चय है, कि छिङ-गिस् तुर्की नहीं बोलता था, इसलिये यह पद्य पीछे बनाये गये हैं। तो भी इसमें संदेह नही, कि छिङ-गिस्को अपने ज्येष्ठ पुत्रकी सरकसीके बाद भी उसके साथ असाधारण प्रेम था, इसीलिये उसे बहुत दु:ख हुआ।

ख्वारेज्म-विजयके समय छिङ-गिस्ने जू-छिको पूर्वमें कयालिकसे पश्चिममें सकसीनतकी दश्ते-किपचक (वर्तमान कजाकस्तान), बोल्गारों, आलानों, बश्किरों, उरुसों और चेरकासोंके देशोंके साथ वह भूमि भी प्रदान की, जहा कि तातारों (मंगोलों) के घोड़ोंकी टापें पड़ें। जू-छिका ओर्दू यद्यपि जेष्ठ पुत्र ओर्दा और द्वितीय पुत्र बा-तूके अधीन पहले हीसे दो उलुसोंमें बंट गया था, लेकिन श्वेत-ओर्दूके संस्थापक ओर्दाने जिस तरह अपने छोटे भाई बा-तूको अपना अधिपति स्वीकार किया, वैसे ही उसका श्वेत-ओर्दू भी अपनेको बा-तूके सुवर्ण-ओर्दूके अधीन मानता रहा। जू-छि ओर्दूका पूर्वी

भाग (किपचक-भूमि) श्वेत-ओर्दूकी माना जाता था। सुवर्ण-ओर्दूके ३९ शासक हुये—

१.	जू-छि, तू-शि छिङ-गिस्-पुत्र	१२२४ ई०
२.	बा-तू जू-छि-पुत्र	१२२४-५५ ,,
३.	सेर-तक बा-तू-पुत्र	१२५५ ,,
४.	उलकची बा-तू-पुत्र	१२५५ ,,
५.	बेरेके, बरका, जू-छि-पुत्र	१२५५-६५ ,,
६	मुङ-खे थे-मुर, मगू-थेमुर तोगोन-पुत्र	१२६५-८० ,,
७.	तू-दा-मंगू तोगन-पुत्र	१२८०-८९ ,,
८.	तोग्-ताइ, तोक्-तोगू, मंगू-थेमुर-पुत्र	१२८९-१३१३ ,,
९.	उज्बेक तोक्-तोगूका भतीजा	१३१३-४२ ,,
१०.	तिनी (दिनी) बेग उज्बेक-पुत्र	१३४२ ,,
११.	जानी-बेग उज्बेक-पुत्र	१३४२-५७ ,,
१२.	बेर्दी-बेग जानी-पुत्र	१३५७-५९ ,,
१३.	कुलदी (कुल्या) बेग, जानी-पुत्र	१३५९ ,,
१४.	नौरोज (नूरुस) बेग जानी-पुत्र	१३५९-६० ,,
१५.	चेरकेस-बेग जानी-पुत्र	१३६० ,,
१६	ओरदा शेख	
१७.	खिजिर	
१८.	कुलफा	
१९.	तेमूर खोजा	
२०.	मुरीद	
२१.	अजीज, बाजारची	
२२.	हाजी एरजन-पुत्र	
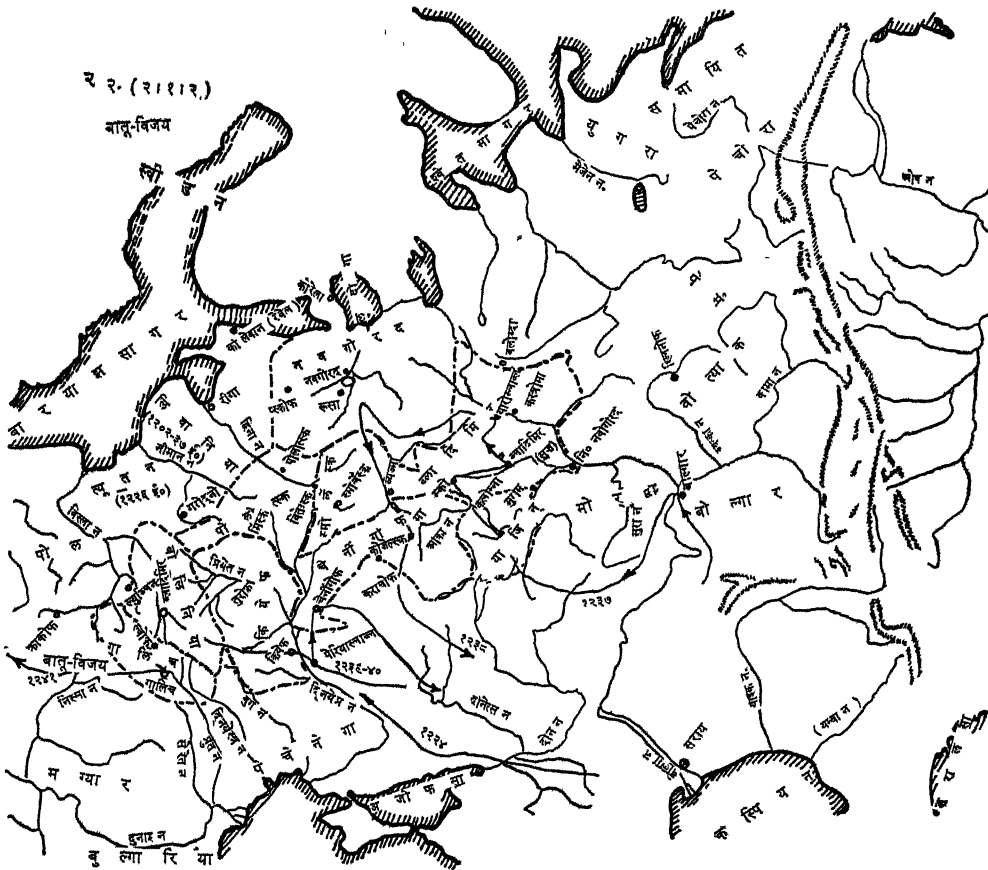
२. बा-तू खान, सायन खान जू-छि-पुत्र (१२२४-५५ ई०)

छिङ-गिस्के पोतोंमे बा-तू पहला था, जिसने चारो उलुसोंमेसे एकके खानपद को दादाके जीवनमें ही प्राप्त किया। इसकी मा खू-जिन खातून कंकुरत-कबीलेके सरदार अची नोयनकी लड़की थी। यद्यपि बातूसे बड़ा एक और भी भाई उर्दा (ओर्दा) था, लेकिन दादाने इसे ही अधिक योग्य समझा। छिङ-गिस् पश्चिम दिशाके महत्त्वको समझता था, इसलिये द्वितीय पुत्र होनेपर भी समझ समझ बा-तू को बापका स्थान दिया। बडे भाई ओर्दाने भी दादाके निर्णय को दिलसे स्वीकार किया, तथा उसके उलुसने भी बातूके उ ाराधिकारियो को अपना प्रधान माना। यद्यपि रूसियोमे बा-तूका ओर्दू सुवर्ण-ओर्दूके नामसे प्रसिद्ध है, किन्तु पूर्वी इतिहासकार उसे कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू)के नामसे ज्यादा जानते हैं—ओर्दाका उलुस अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) के नामसे प्रसिद्ध था। जू-छि ओर्दू, हम जानते है, लडाकू घुमन्तुओंका समूह था, जो जू-छिके मरनेपर बा-तू और ओर्दामे आधा-आधा बट गया। ओर्दाके उलुसको बाम-दल और बा-तू को दक्षिण-दल भी कहा जाता था। बाम-दलमे वैसे बा-तूके भाई ओर्दा, तुकातेमुर, सिङ-कुर और सिङ-कुड भी शामिल थे। समकालीन इतिहासकार मिनहाजुद्दीन जुजजानी (११९३-१२२६) ने दिल्लीमे रहते अपने संरक्षक नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह (१२४६-६५ई०) के नामसे प्रसिद्ध "तवारीखे-नासिरी" में लिखा है, कि जू-छिके मरनेपर छिङ-गिस्ने बा-तूको जू-छिका स्थानापन्न बनाते हुये उसे किपचको, कगलियो, ऐमकों, इलवारों, अलानो, असियों, रूसियो, चेरकासोंकी भूमि प्रदान की, और वह सभी भूमि भी, जहापर मगोल घोडसवारोकी टापे पडी। यह हम देखेंगे, कि आगे खजार-दर्बन्द—जिसे मंगोल थिमुर-कखलखा (लौहद्वार) कहते हैं—भी बा-तूके हाथमें था। इस प्रकार काकेशसमे उसके और उसके चचेरे भाई ईरानके खान खु-ला-गूकी सीमा मिलती थी। जुज़जानीके अनुसार बा-तू मुसलमानोका मित्र था। उसने छावनियों और डेरोंमें मस्जिदें बनवा इमाम और मुअज्जिन नियुक्त किये थे। उसकी मुसलमानी प्रजामे सर्वत्र शाति और समृद्धि देखी जाती थी। इसका अर्थ यही है, कि बा-तू धर्मके बारेमे अपने दादाकी नीतिका अनुगमन करता था। लेकिन ख्वारेज्म, किपचक और काकेशसमें ही उसकी मुसलमान प्रजा रहती थी। बशगिर ईसाई थे। वही बात रूसी तथा दूसरे लोगोकी थी। ऐसी हालतमे बा-तू यदि स्वय ईसाई हो, तो कोई विचित्र बात नहीं थी। बहुसंख्यक जनताको अधिक अनुकूल बनानेके लिये यह अच्छा ढंग था। अभी उस समय तक मंगोल-राजवंशने बौद्ध-धर्मको जातीय धर्म नही बनाया था। एक तरह ससारके बड़े-बड़े धर्मोकी वह परीक्षा कर रहा था। खुबिलेइ (कुबिले) कआनने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर यद्यपि वह कदम बढाया, जिससे बौद्ध-धर्म मंगोलोंका राष्ट्रीय धर्म बन गया, किन्तु खुबिलेइके निर्णयको उन्ही जगहोंमें मंगोलोने माना, जहां बौद्ध-धर्मकी प्रधानता थी, अथवा जहां कोई गैर-कबीली देशी धर्म प्रचलित नही था। बा-तूके उत्तराधिकारी तथा अनुज बरकाने अपने आपको खुल्लमखुल्ला मुसलमान घोषित किया, जिसका उसके अपने मगोलोंपर बुरा प्रभाव पडा, जो ही पीछे पूर्वी और पश्चिमी मंगोल-साम्राज्यमें मतभेदका एक कारण भी हो पड़ा। सुवर्ण-ओर्दू ऐसी स्थितिमें था, कि यदि उसने ईसाई धर्म को स्वीकार किया होता, तो शायद आगे चलकर रूसियोंको उनके विरुद्ध धर्मयुद्धका ख्याल न आता। चगताइ और खुलाकू-वंशकी साधारण प्रजा सारी मुसलमान थी, जिसके कारण राजनीतिक लाभके ख्यालसे उन्हें इस्लामको स्वीकार करना पड़ा। चगताइ खान तर्मछेरिङ—जो कि मुहम्मद तुगलकका समकालीन था—का नाम बौद्ध था, लेकिन पीछे वह कट्टर मुसलमान हो गया। इसके कारण भारतके तुगलक सुलतान तथा चगताइ खानमे बड़ी घनिष्ठता स्थापित हो गई। ईरानी खान गज्जन (१२९५-१३०४) ने पहले अपनी राजधानीमें एक सुन्दर बौद्ध विहार बनवाया, लेकिन अंतमें राजनीतिक-दाव-पेचके लिये उसे इस्लाम स्वीकार करना पडा। धर्म किस तरह राजनीतिक चालके लिये इस्तेमाल होता है, इसका यह स्पष्ट उदाहरण है। ईसाइयतको न ले सुवर्ण-ओर्दूके खानोंने इस्लामको क्यों स्वीकार किया, इसमें एक कारण था—मुसलमान तुर्क-लड़ाकुओंसे अपने शासनको मजबूत करनेका ख्याल। वोल्गाको उस समय इतिलके नामसे पुकारा जाता था। वोल्गार जातिके इस उपत्यकामें रहनेके कारण

पीछे इसी नदीका वोल्गा नाम पड़ा। वोल्गाके बायें तटपर अस्त्राखानसे उत्तर बा-तूने अपनी राजधानी बनवाई, जिसका नाम सराय, बा-तू-सराय (या बरका-सराय भी) पड गया। गू-युक कआनके मरने के समय (१२५१ ई०) मंगोलोंने बा-तूको अपना कआन बनाना चाहा, लेकिन तबतक उसके घोडोकी टापें जर्मनीकी सीमातक पहुच चुकी थी, इसलिये पश्चिम-विजेताने पूर्व जाना पसद नही किया और उसके समर्थनपर छिङ-गिस्-पुत्र तू-लुइके पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) को कआन बनाया गया।

दिग्विजय—१२२४ ई० मे बापकी जगह बैठनेके बाद बा-तू ख्वारेज्म और उसके पश्चिमकी भूमि का शासक बना। मगोलो की प्रथम पश्चिमी विजय स्थायी नही थी, इसलिये बा-तूको फिर लड़कर अपनी स्थितिको मजबूत करना पडा। ख्वारेज्म और किपचकके बहुत से भागोने बा-तूके शासनको जल्दी स्वीकार कर लिया, किन्तु सुवर्ण-ओर्दूके आगेके विस्तारके लिये उसे बहुत सघर्ष करना पड़ा। इसके लिये शायद बा-तू राजी न होता, यदि १२३५ ई० की अपनी दूसरी कूरिल्ताइ (महाससद) मे उगेताइने प्रोत्साहन न दिया होता। इसी कुरिल्ताइमे दक्षिणी चीन तथा और भी दक्षिणके देशोंके विजयका निश्चय हुआ था, और बा-तूको वोल्गारो, असो और रूसियोपर अधिकार करनेका काम सौपा गया था। उसकी मददके लिये उगेताइने अपने पुत्रो गू-युक और कदगन, तु-लुइके पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) और मोकू, एव जू-छिके पुत्रो ओर्दा, और तङ-गुतको सहायतार्थ दिया। इनके अतिरिक्त कुछ और खान-जादों (राजकुमारो) के साथ प्रसिद्ध सेनापति सु-बो-ताइ बहादुर भी साथ था।

बा-तूकी सेना केलरोंको विजय करके बाश्किरोपर पडी। बाश्किरोके बारेमे १२३६ ई० मे साधु जुलियनने लिखा था—"पूर्वी मगयार (हुगेरियन) या बाश्किर काफिर है। उन्हे न सच्चे ईश्वर-का ज्ञान है और न वह दूसरे देवताओंको पूजते है। वह जगली जानवरोकी तरह रहते हैं, खेती नही करते, घोड़ो और भेड़ोका मास खाते, दूध, दूधकी शराब (कूमिस) और खून पीते है। उनके पास घोडे और हथियार प्रचुर परिमाणमे हैं और वह बडे लडाकू हैं। उनमे एक कथा मशहूर है, कि मगयार हमारे देशसे गये, किंतु कहा गये, यह नही जानते।" लेकिन जहांतक बाश्किर सरदारो और सामन्तोका सबध था, वह अधिकतर ईसाई थे, यह पूर्वी इतिहासकारों के लेखोसे भी मालूम होता है।

(क) बाश्किर-विजय—महाकूरिल्ताइके निर्णयके बाद जो महाअभियान शुरू हुआ, उसके अनुसार १२३८ ई० में यायिक (ऊराल) नदीके तटपर बा-तूकी साढे चार लाख सेना एकत्रित हुई। इसमें कंकली (कंगली), नैमन, कराखिताई आदि कबीलोके सैनिक अधिक थे। सेनाको तीन भागों में बांटा गया—(१) मुङ-खे और बे-चुकके अधीन एक सेना सकसिन (निम्न वोल्गा उपत्यका) के सरदार पचिमान (राजधानी सुमरकंद) के विरुद्ध भेजी गई, (२) दूसरी सेना सुबोताइके अधीन वोल्गारोके विरुद्ध। (३) स्वयं बा-तूने दुश्मनकी सख्या और शक्तिका पता लगानेके लिये अपने भाई सेबानको दस हजार सैनिकोंके साथ आगे भेजा। सेबानने हफ्तेके भीतर लौटकर दुश्मनकी जबर्दस्त शक्ति का पता दिया। दोनो ओरकी सेनाये एक नदीके किनारे आमने-सामने खड़ी हुई। इतिहासकार जुवैनी (१२२६-८३ ई०) के अनुसार बाश्किर सेनाको देख बा-तू अपने शिविरमे चला गया और किसीसे एक शब्द भी न कह बस भगवान्से प्रार्थना करते खूब रोता रहा। उसने सभी मुसलमानोंको भी एकत्रित करके दुआ मांगनेके लिये कहा। दूसरे दिन युद्ध करनेका निश्चय हुआ। मंगोल सेना रात-को ही नदी पार करनेमे सफल हुई और उसके प्रहारसे केलरोंके पैर उखड गये। बा-तूकी जबर्दस्त विजय हुई, दुश्मन भारी संख्यामें काम आये, उनकी बहुत-सी संपत्ति हाथ आई। उसी जाडेमे बा-तूके सेनापति सुबोताइने खबान उपत्यकापर अधिकार किया।

(ख) बोल्गार-विजय—१२३८ ई० मे सुबोताइ (सुङ-ताइ) ने वोल्गा-उपत्यकाके तटपर अवस्थित बोल्गारोंकी राजधानीपर आक्रमण किया। बोल्गारोने व्लादिमिरके महारावल द्वितीय जार्ज व्सेवोलद-पुत्रसे सहायता मांगी। उसका भाई नवोग्रादका शासक तथा अभी-अभी कियेफके सिहासनपर बैठनेवाला था, जिसके बाद नवोग्रादका शासक प्रसिद्ध रूसी वीर तथा कियेफ-रावलका पुत्र अलेक्सी नेव्स्की हुआ। इस प्रकार कियेफ, नवोग्राद और व्लादिमिर तीनों राज्य एक ही परिवारके हाथमें थे। रूसियों और बोल्गारोंकी सम्मिलित सेनाने मंगोलोंका जबर्दस्त मुकाबिला किया।

(ग) **सकसिन-विजय**—मङ-गूने सकसिनोको हराया। पचिमानने अपने अनुयायियोके साथ जंगलमे शरण ली। लेकिन मंगोल भगोडोंको फिरसे मुकाबला करने लायक क्यों छोडने लगे? मुङ-खेने जगह्-जगह् अपनी सैनिक चौकियां स्थापित की और अंतमें पीछा करते-करते वोल्गा नदीके टापूमें उसे जा दबाया। पचिमानके अनुयायियोमें वहुतसे मारे गये। बदियोमे स्त्री-बच्चे तथा स्वयं पचिमान हाथ आया और गुस्ताखीके अपराधमे मुङ-खेके हुक्मसे उसके सामने ही पचिमान-के दो टुकड़े कर दिये गये।

(घ) **मास्को-विजय**—उसी ग्रीष्म (१२३७ या १२३८ ई०) मे खानजादो (राजकुमारों) ने रूसियो के नगर अरपान (र्याजन) पर आक्रमण किया। तीन दिनमें ही नगरने अधीनता स्वीकार कर ली। उस समय सिम्बिर्स्क, पेन्ज़ा, तम्बोफ नामसे पीछे प्रसिद्ध स्थानोंमे मोर्दवीन लोग बसते थे, जिनका अपने पड़ोसी रूसियोंसे अच्छा संबंध नही था। उन्होने मगोलोंके लिये गुप्तचरका काम किया। उनसे पता पाकर मुङ-खे और बा-तूकी सम्मिलित सेनाने सीमाती नगर र्याजनके ऊपर आक्रमण किया था। र्याजनके रावल जार्जने मगोल्लोसे लड़नेमे सफलता न पा अपने पुत्र फ्योदरको भेंटके साथ बा-तूके पास भेजा। बा-तूने भेट स्वीकार की, लेकिन साथ ही फ्योदरसे उसकी बहन और बेटियोंको भेजनेके लिये कहा और यह भी, कि वह अपनी सुन्दरी भार्या एउफ्रेसिया को दिखलावे। फ्योदरने कहा—ईसाई राजकुमार अपनी स्त्रियोंको काफिरोंको नही दिखाया करते। इसपर बा-तूके हुक्मसे वह वहीं मार दिया गया, जिसकी खबर पा अपना सतीत्व बचाने के लिये उसकी स्त्रीने अपने पुत्रके साथ छतसे गिरकर जान दे दी। अब भी वर्तमान र्याजनसे दस लीगपर पुराने (स्तारया) र्याजन का ध्वंस मौजूद है।

(१) र्याजन-विजयके बाद बा-तूकी सेना ओकाके किनारे-किनारे कलोम्ना पहुची और उसपर अधिकार कर मास्को (मकस) जा उसे लूटा-जलाया। फिर वह सुज़्दलकी राजधानी ब्लादिमिरके ऊपर पड़ी। नवगोरद जाते १४ मार्च १२३८ ई० को वोलोखोन्स्की (त्वेर) और तोरयकपर भी कब्जा किया, लेकिन मंगोल वोल्गाके उद्गम सेलिगोरसे आगे नही बढे। मंगोलोंके सामने "ग्राम लुप्त हो गये, रूसियोके मुड हंसियेके सामने घासकी तरह गिरते गये।"

(२) दूसरी सेना इसी समय बा-तूके भाई बेरेकके नेतृत्वमे वोल्गा और दोनके बीचके किपचकोंके ऊपर पड़ी। किपचक-सरदार कोतियक देश छोड अपने बंधुओं (मग्यारों) के पास हुंगरीकी ओर भगा।

(३) तीसरी सेना सेबान, बूजक और बूरीके नेतृत्वमे मारी लोगोंके ऊपर पडी, जो कि उस समय दक्षिण-पश्चिमी रूसमें रहते थे।

(४) चौथी सेना काकेशसकी पहाड़ियोंकी ओर चेरकासियोके पीछे पडी। १२३८ ई० की शरद्में चेरकास-राजा तुकान मारा गया और १२३९ ई० मे मंगोलोंने काकेशसके दरबंदपर आक्रमण किया।

मास्कोकी तरफ बढ़ते समय रूसी राजुल रोमनने प्रतिरोध करते मंगोलोंके हाथ अपने प्राण खोये। तीन दिनोके सघर्षके बाद मंगोलोंने मास्को (मकस) को ले लिया और वहांके राजुल (क्न्याज) ब्लादिमिर (उलयतमुर) को मार डाला। फिर वह लोगोंको कत्ल करके नगरोंको बिल्कुल लूटते-जलाते चीजोंको नष्ट करते आगे बढ़े, जिसमे पीछेसे उनपर प्रहार करनेवाला कोई न रह जाय। उस समय सारा रूस छोटे-छोटे राजुलोंमें बंटा हुआ था। वह भला कैसे मंगोलोंके टिड्डी-दलका मुकाबिला कर सकते थे? रूसी जंगलोमें भागते, लेकिन वहांसे भी पकड़कर मारे जाते।

बा-तूके दो महीनेके मुहासिरेके बाद भी कोजेल्स्क सर नही हुआ, कदन तथा बूरीकी सेनाओंके आनेपर तीन दिनके संघर्षके बाद ही उसपर अधिकार हो पाया। मुस्लिम इतिहासकारोंके अनुसार चेर-कासोंके ऊपर ६३५ हिजरी (१२३६-३८ ई०) के जाड़ोंमे मुङ-खे और कदनने आक्रमण किया, और वहांका राजा तुकर मारा गया।

(ङ) **कियेफ-विजय**—१२३९ ई० के वसंतमें बा-तूके नेतृत्वमें प्रधान सेना द्नियेपर-उपत्यकाके निवासियोंके ऊपर पड़ी। राजुलोंकी आपसी शत्रुताके कारण दक्षिण-पश्चिमी रूसियोंने भी एक होकर

मुकाबिला नही कर पाया। मंगोल रूसी राजुलोको भगाते कियेफ पहुचे। ६३७ हिजरी (१२४० ई०) की शरद्में कआन * ओगोताइ का बुलावा आनेसे गो-युक और मुङ-खे किंपचक-भूमिके रास्ते मंगोलिया लौट गये, लेकिन बा-तूकी विजय-यात्राका सबसे बडा कदम अब उठनेवाला था।

बा-तू अपने भाइयो कदन, बूरी और बू-चेकके साथ रूसियों और कालीटोपियों (स्याहकुलाह) की ओर बढा। इसी समय दिसबरमें नौ दिनो के मुहासिरेके बाद उसने महानगर मनकेरकानको ले लिया। मनकेरकान रूसका सबसे पुराना और वैभवशाली नगर कियेफका ही नाम था, मगोलोंने नगरकी होली जला दी, जिसमे शताब्दियोसे जमा होती कलाकी वस्तुये तथा भव्य इमारतें नष्ट हो गई। तबसे १५वी शताब्दी तक कियेफ उजाड़ रहा।

१२४१ ई० (६३८ हि०) मे ओगोताइ मरा, वसंतमे बाकी खानजादे भी बाश्किरोकी भूमि होते मगोलिया लौट गये। इसी साल बा-तूने बाश्किर-राजाको नष्ट किया।

(च) युरोप-विजय—१२३८ ई० से १२४० ई० के वसंततककी बा-तूकी विजय-यात्रा अभूतपूर्व है। इसी समय उसने वोल्गाके कबीलोको परास्त किया, रूसी नगरोको जीता, काला सागरके मैदानो-को अपने हाथमें किया, कियेफको ध्वस्त किया, और फिर अपने सैनिक दलोको दक्षिणी पोलैंड (रुथे-निया) की ओर भेजा। उस समय रूसकी तरह पोलैंद भी बहुत-से छोटेछोटे राज्योमे बटा हुआ था। मार्च १२४१ ई० मे जब जाडोंकी बर्फ पिघली, तो मगोलोंके सैनिक शिविर कारपेथीय पर्वतमालाके ऊपर लेम्बरमे थे।

जनवरी १२४१ ई० मे मगोल गोलेनियामे लूट-मार मचाते पोलैदकी राजधानी क्राकोके पास पहुचे। १८ मार्चको पोलोंको पराजित कर २४ मार्चको मंगोल-सेनापति बैदरने क्राकोको जलाया। मंगोल फिर सिलेसिया और रतिवरमें ओडर नदीको पार कर दब्रेस्जव नगरके सामने पहुंचे। ९ अप्रैलको मंगोलोंने पोलों और त्युतानिक सरदारों (राजुल हेनरी आदि) की सेनाओंको लिग्नित्जके पास वालस्टाट (युद्धक्षेत्र) नामक स्थानमे हराया। लिग्नित्ज, ओत्माखन, बोलातीजको लूटते-जलाते मईमे वह मोराविया में पहुंचे। वहा त्रोपनके इलाके तथा दूसरे स्थानोका उन्होंने संहार किया। फ्रासके राजा लुईके पास पत्र लिखते हुये इस ध्वस-लीलाका वर्णन एक ईसाई पादरीने इस प्रकार किया है—"जर्मनीके सभी राजुल, राजा तथा पुरोहित एवं हगरीके भी लोगोंने हाथमें सलीब लेकर तातारोके खिलाफ अभियान किया। हमारे भाइयोंने जो बतलाया है, यदि वह ठीक है, और भगवान्की इच्छा-से वह पराजित हो गये, तो तुम्हारे देश (फ्रास) तक कोई ऐसा नही है, जो तातारोके मुकाबिलेमे खड़ा हो सके।"

बा-तूके दुश्मनको मग्यार-राजा बेलाने शरण दी थी। मंगोलोंके लिये यह भी एक बहाना मिला। चालीस हजार बंदी बा-तूकी सेनाके लिये रास्ता बनाते थे। बा-तूकी एक सेना मोलदाविया, कुमा-सिया, त्रान्सिल्वानियाको नष्ट करते ओरसोवा पहुंची, उसने नगरको मलियामेट करदिया। बेलाकी सेनाको १२ मार्चको रुथेनियन डाडेके पास हार खानी पड़ी थी। सरविया होते बोल्गारिया में दाखिल हो २५ दिसंबरको मंगोलोंने वहांके ग्रामो-नगरोंका सर्वसंहार किया। प्लातेन झीलसे होते मंगोल क्रोसि-याकी ओर बढ़कर स्पालत्रो समुद्रतट पर पहुंचे और कतारोंको ध्वंस करते अलबानियामे जा दाखिल हुये। वहांसे मईमें कदनकी सेना बोलगारिया होते लौटकर बा-तूके पास पहुंची। उनकी गति कितनी तेज थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि वह तीन दिनमें सत्तर मीलकी यात्रा करके पेस्त (बुदापेस्त) नगर पहुंच गये।

सुबोदाइ और बा-तू तीन सेनाओके साथ कारपेथीय पर्वतमालाके भीतरसे दुश्मनके दक्षिणी पक्षकी ओर बढ़े थे। गलीसियासे हुंगरीमें घुसकर सुबोदाइकी सेना मलदावियाकी ओर लौट पड़ी। रास्तेमें जो भी प्रतिरोधी सैनिक-टुकडियां मिली, उनका सफाया करते उसकी सेना पेस्तमें प्रधान सेनासे अप्रैल-के आरंभमें—लिग्नित्जके युद्धके जरा-सा ही पहले—आ मिली। इस सेनाको यह पता नहीं था, कि उत्तरमें क्या हो रहा है। उसने ओडेरके तटपर अवस्थित मंगोल-सेनप कैदू और उसके भाइयोंके साथ संबंध

* कआन=कगान=खाकान=खान खान=राजाधिराज (सम्राट्)

स्थापित करनेके लिये एक सेना भेजी। उगोलिनके बिशपकी छोटी सेना हारी, और बिशप अपने तीन साथियोंके साथ जान बचाकर किसी तरह निकल भागा। मगोलोंका अभियान प्रलयकी ध्वंस-लीला जैसा था, जिससे सारे युरोपमे उनका आतंक मचा हुआ था। सभी मुकाबिला करनेकी तैयारी कर रहे थे। सुदूर-फ्रास भी सैनिक सहायतायें भेज रहा था। हुगरीके राजा बेला चतुर्थने एक लाखकी सेना तैयार की थी, जिसमे मगयार (हुगेरियन), क्रोत, जर्मन तथा फ्रेंच सैनिक भी शामिल थे। मंगोलोंकी सैनिक चाल वही थी, जो कि उनके पूर्वज हूणोकी, और उससे वे अक्सर सफल होते रहे; शत्रु-सेना-के सामने मंगोल पीछे हटने लगते। जब शत्रु इसे पराजय समझकर बेखटके खदेड़ना शुरू करते, तो मंगोल चारो तरफसे उन्हे घेर लेते। निर्णायक युद्ध-स्थल के एक तरफ सायो नदी थी, दूसरी तरफ द्राक्षालताओसे ढका तोकय पर्वत, तीसरी तरफ लोमनिद्जके घने जंगलों से ढंके बड़े पहाड। सूर्योदयके समय बा-तूकी सेना पुलकी ओर आगे बढ़ी और उसने वहाकी रक्षक सेना पर एकाएक आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया। अब मगोलोकी प्रधान सेना पुलके पार दौडी। शत्रु-सेनामें भगदड मच गई। युद्ध बडे जोरका हुआ और दोपहरके करीब ही उसकी समाप्ति हो सकी। इसी समय सुबोताई बेलाकी सेनाके पीछे पहुचा। हुगेरियन जान लेकर भगे ओर मंगोल उनका पीछा करने लगे। दो दिनके रास्तेतक सडकों-पर युरोपियनोंकी लाशे पडी हुई थी—चालीस हजार आदमी मारे गये थे। बेलाका भाग्य था, जो कि अपने तेज दौड़नेवाले घोड़ेकी सहायतासे वह बच निकला। वह दुनाइ (दन्यूब) के किनारे-किनारे छिपता भागता रहा और मंगोल उसकी तलाशमें फिरते रहे। अन्तमे बेला कारपेथीय पर्वतमालामें पहुंचा। मंगोलोंने मग्यार राजधानी पेस्तमे आग लगा दी। वह बढते हुये आस्ट्रियामें न्यूस्टाट तक पहुचे। भगोड़े जर्मनों और बोहेमियो (चेको) को एक ओर छोडते वह दक्षिणकी ओर मुड अद्रियातिक समुद्रतटपर पहुंचे और केवल रगूसा को छोड़कर समुद्रतटके सभी नगरोंको उन्होंने लूटा-जलाया। दो महीनेके भीतर मंगोल घोड़ोंने युरोपको एलबा नदीके उद्गमसे अद्रियातिकके समुद्रतटतक रौंद डाला। उन्होंने तीन महासेनाओ, एक दर्जन छोटी सेनाओंको हराया और ओलमुत्ज छोडकर इस भूभागके सारे नगरोंको पराजित किया। स्टर्नबर्गके यारोस्लावने अपने बारह हजार सैनिकोंके साथ ओलमुत्जकी बड़ी बहादुरीसे रक्षा की थी। युरोपके तत्कालीन राजा हुगरीका बेला और फ्रांसका सत लुई दोनोंही योग्य थे, लेकिन सुबोदाइ, मङ्-गू, कै-दू और बा-तू जैसे महान् सेनापतियोंके सामने उनकी एक भी न चली।

जिस वक्त मंगोल दावानलकी तरह युरोपकी ओर बढ़ रहे थे, उसी वक्त कैसर फ्रेडरिक द्वितीय और पोप ग्रेगरी नवम का द्वंद्व चल रहा था। दोनोंने तुरंत अपने संघर्षको बंद कर दिया। धर्मयुद्धका प्रचार होने लगा। कैसर नेपल्स और सिसिलीका स्वामी था। वह अल्प्स पर्वतमालाके पारके सभी देशोंपर अधिकार जमाना चाहता था। पोप इसके लिये तैयार नही था। अगस्त १२४० ई० से अप्रैल १२४१ तक—जब कि मंगोल युरोपको रौद रहे थे—फ्रेडरिकने महतराज (पोप) के नगर फायनकाको घेर रक्खा था, जिसे अंतमें उसने अपने हाथमे कर लिया। दूसरी ओर पोपने २० मार्च १२३९ ई० को फ्रेड्रिकको धर्म-बहिष्कृत कर दिया। साल भर बाद फ्रेड्रिकके विरुद्ध पोपने धर्मयुद्धकी घोषणा की और जर्मन राजुलोंके एक समुदायको फ्रेड्रिकके खिलाफ लड़नेके लिये तैयार किया। युरोपकी यह कमजोरी बतला रही थी कि बा-तूके संकल्प करनेकी देर थी, फिर इंग्लिश-चैनेल तक कोई भी शक्ति उसकी सेनाको रोक नहीं सकती थी।

मंगोल-हथियार—साधु कारपीनी दूत बनाकर जिस वक्त मंगोलिया भेजा गया, उससे थोड़ा ही पहले मंगोलोंकी १२३८-४२ ई० वाली विजय-यात्रा हुई थी। कारपीनी दरबारमें इसीलिये भेजा गया था, कि खाकानसे ईसाइयोंकी निर्मम हत्या बंद करनेके लिये प्रार्थना करे। कारपीनीने अपने यात्रा-विवरणमें मंगोलोंकी अजेय शक्तिके बारेमें लिखा है—

"कोई भी अकेला राज्य या देश तारतारों (मंगोलों) का मुकाबिला नहीं कर सकता। तारतारोंकी लड़ाई केवल बलकी नहीं, बल्कि दाव-पेंचकी होती है। युरोपवालोंकी अपेक्षा तारतारोंकी संख्या कम है और शारीरिक डीलडौल और शक्तिमें भी वह छोटे हैं। हमारी सेनाओंको भी तारतारोंके नियमके अनुसार शिक्षित करने, और उन्हींके युद्ध-नियमोंको कड़ाईके साथ पालनेकी जरूरत है।

जहां तक सभव हो युद्धक्षेत्र ऐसा चुनना चाहिये, जहा चारो ओरकी चीजे दिखलाई पड़ती हों। सेनाको एक निकायमें नही लाकर खड़ा करना चाहिये, बल्कि उसे कई विभागोमे विभक्त करके रखना चाहिये। पता लगानेके लिये चारों तरफ चर भेजने चाहिये। हमारे सेनापतियोको रात-दिन अपनी सेनाओको सजग, सदा हथियारबद तथा युद्धके लिये तैयार रखना चाहिये। तारतार शैतानकी तरह सजग रहते है।

"अगर ईसाई दुनियाके राजा और शासक मगोलोंके बढावको रोकना चाहते है, तो उन्हे एक संयुक्त परिषद् बनाकर एक उद्देश्यके साथ प्रतिरोध करना चाहिये। ईसाई-राजाओको चाहिये, कि वह अपने सिपाहियोको मजबूत धनुषो, लबी कमानो और तोपो से हथियारबंद करे। यही हथियार है, जिनसे तारतार लडते है। इनके अतिरिक्त सैनिकोको अच्छे लोहेकी गदाओं अथवा लंबे बेंटवाले गडासोको रखना चाहिये। वाणके फौलादी फलोंको तारतारोके ढंगसे खूब लाल रहते नमक-मिले पानीमे डुबाकर तैयार करना चाहिये। इस तरह वह कवचके भीतरतक घुस सकते है। हमारे आदमियोंके पास अच्छे शिरस्त्राण तथा कवच होने चाहिये, जिसमे उनकी रक्षा हो सके। घोड़ोके लिये भी यही बात है। जो इतने हथियारबंद नही है, उन्हे पीछेकी पांती मे रखना चाहिये।"

आस्ट्रियामे न्यूस्टाटपर पहुंचकर मगोलसेना अपनी जन्मभूमि (मगोलिया) से ६ हजार मील दूर पहुची थी, और यहापर भी अजेय साबित हुई।

साधु सेवलरीने मंगोलोके हथियारोके बारे में लिखा था—

"उनके कवच भैसके चमड़ोके बने होते है, जिनके ऊपर जजीरे खिची रहती है। वह अभेद्य होते है जिसके कारण सैनिकका अग सुरक्षित रहता है। वह अपने सिरपर लोहे या चमड़ेके शिरस्त्राण पहनते है। टेढी तलवार, धनुष-वाण उनके हथियार है। उनके वाणोके फल चार अगुल चौडे—हमारे फलोंसे अधिक लंबे और लोहे, हड्डी या सीगके बने होते है। उनके दात इतने छोटे होते है, कि वह धनुषकी प्रत्यंचाओंके ऊपर नही लग सकते। उनकी ध्वजायें छोटी तथा चमरीके काले या सफेद पूंछोंकी होती है, जिनके सिरेपर ऊनका गुच्छा रहता है। उनके घोड़े छोटे, सुडौल और मेहनती तथा सभी तरहकी कठिनाइयों को सहनेके लिये तैयार होते है। वह बिना रिकाबके सवार हो उन्हे चट्टानों या दीवारोपर हरिनकी तरह कुदा सकते है।"

यह सभी स्वीकार करते है, कि तत्कालीन जगत्में सेना-सबंधी इंजिनियरी-निपुणता जितनी मंगोलोंके पास थी, वैसी उस समय युरोपमें कही नही थी। उनके पाषाण-क्षेपक (कतापुल्त) और बारूदकी तोपें गजब ढाती थी।

जर्मन सीमात नगर लिग्नित्जसे लेकर वोल्गाके किनारे तक शायद ही कोई नगर हो, जो बा-तूकी ध्वंस-लीलासे बचा हो। नगर मगोलोंकी आखोमे काटेकी तरह चुभते थे। यही नही, कि वहां उनके लिये प्रतिरोधकी संभावना थी, बल्कि स्थिर वासी लोग जिस भूमिको जोतते-बोते थे, वह मंगोल सैनिकोंको अपने घोड़ों और पशुओंके चरनेके लिये आवश्यक थी। इसीलिये वह नगरों और बस्तियोंको उजाड उन्हे घासका मैदान बना देना चाहते थे। बा-तूका युद्ध मगोलो और युरोपियोंका ही नहीं बल्कि घुमन्तू-पशुपालों और स्थिर बस्तीवाले किसानोंका भी युद्ध था। यदि इसी समय ओगोताइ न मर गया होता और मगोल-सेनापतियोंको लौटनेका बुलावा न आता, तो इसमे कोई शक नहीं, कि युरोपकी चप्पा-चप्पा भूमिको मंगोल-सवारोंने रौद डाला होता, सारे नगरोंको जला दिया होता। उनकी सफलताका कारण बतलाते हुये एक इतिहासकारने लिखा है—"घुमन्तू जातिया यद्यपि अनियमित सेना हैं, किंतु उन्हें बहुत आसानीसे गतिशील किया जा सकता है। वह सजग हो तैयार खड़ी रहती है। जो कुछ उनके पास है, उसे बूढों, स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षामें छोड़कर वह हर समय कूच करनेके लिये तैयार रहते है। ऐसी जातिके लिये युद्ध कोई विशेष घटना नहीं है। घुमन्तुओके लिये लबी यात्रायें थोड़ेसे परिवर्तनके सिवा और कुछ नही है। उनके घोड़े और रसद सब साथ-साथ होती है।"

मंगोल आखिरतक घुमंतू रहे। जहां यह उनकी शक्तिका एक बहुत भारी कारण था, वहां यही उनकी कमजोरीका भी मुख्य कारण था। रूसी इतिहासकार करमाज़िन (१७६५—१८२६ ई०) के अनुसार—"अगर वे कृषिजीवी बन गये होते, तो शायद रूस अभी भी मंगोलोंके अधीन होता।"

बा-तूने विजय-यात्रासे लौटकर मास्कोके महाराजुल यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्रको सारे रूसी राजुलोंका सरदार बना दिया। इसी समयसे मास्कोकी प्रधानता शुरू हुई। दो साल बाद गु-युक कआनके राज्याभिषेकके समय यारोस्लावको मंगोलिया भेजा गया, जहांसे वह लौट नही सका। इसी महोत्सवमें फ्रांसिस्कन साधु जान प्लानो कारपीनी (११८२-१२४६....ई०) भी शामिल हुआ था, जो पोप इन्नोसेंत-द्वारा मगोल-सम्राट्को ईसाई बनानेके लिये भी भेजा गया था। वह १६ अप्रैल १२८४ ई० को ल्योन्ससे चला और जर्मनी, बोहीमिया, ब्रेस्लो, त्राको, वोल्दमीर (वोल्हूनिया), कियेफ (४ फ़र्वरी १२४६ ई०), तारतार-राज्य कानियेफ, ओरेन्जा (दूनियेपर दक्षिणतट), दोन, वोल्गा (बातूसराय), यायिक (उराल-नदी), कोमानियाकी पूर्वी सीमा, कंग-ली, दुश, यानीकेन्त (सिरतट), तलस (तरस), इमिल, ओगोताइ-शिविर, नेमन (२८ जून) होते राजधानी कराकोरममें पहुंचा। कारपीनीने अपनी यात्राका जो वर्णन किया है, उससे उसके रास्तेके देशोंका अच्छा परिचय मिलता है। बा-तूके दरबारमें उसने पत्नियोंसहित खानको तख्तपर बैठे देखा। खानजादे (राजकुमार) बेंचोंपर बैठे थे, जिनमें पुरुष तख्तकी दाहिनी ओर और स्त्रियां बाईं ओर थी। उसके वर्णनसे यह भी मालूम होता है, कि मुङ-खेके कआन चुने जानेमें बा-तूका खास हाथ था। उस समय छिङ-गि ्-वंशका वही सबसे बड़ा और सम्मानित राजकुमार था, इसलिये उसकी बातको कोई नही काटता था। मुङ-खेने पश्चिमकी दिग्विजय में बा-तूकी बड़ी सहायता भी की थी। मंगोल बा-तूको कितने सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे, यह उसके सायन (भले राजा) के नामसे सिद्ध है।

१२५५ ई० में मुङ-खेके राज्याभिषेकके समय बा-तू स्वयं नही जा सका। उसने अपनी जगह अपने पुत्र सरतकको भेजा था। इसी समय (१२५५ ई०) इतिल (वोल्गा) के तटपर बा-तूका देहान्त हो गया।

३. सरतक बा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

बा-तूने अपने ज्येष्ठ पुत्र सरतकको मुङ-खे कआनके सिंहासन-महोत्सवमें भेजा था। वहीं बा-तूके मरनेकी खबर पा मुङ-खे कआनने उसे सुवर्ण-ओर्दूके खानकी यारलिक (शासनपत्र) प्रदान करके भेजा। लेकिन वह अधिक दिनोतक नही जिया। समकालीन मंगोल इतिहास-लेखक रशी-दुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०) के इतिहास 'जामेउत्-तवारीख' के अनुसार बा-तूके मुख्य पुत्र चार थे—सरतक, तुकात, अवगान और उलकची। सरतक निस्संतान मरा और उसकी जगहपर उसके भाई उलकचीको गद्दी मिली।

४. उलकची बा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

कआनके यारलिकके अनुसार बा-तूकी जेठी रानी बोरकचिन खातूनने उलकचीको गद्दीपर बैठाया, लेकिन यह भी जल्दी ही मर गया। अब बा-तूके मनस्वी भाई बेरेकंके लिये रास्ता साफ था।

५. बेरेक (बरका) जू-छि-पुत्र (१२५५-६५ ई०)

बेरेक अपने भाईके समान ही दृढ़ योद्धा और शासक था। वह भाईके मरनेके साल ही पश्चिममें फैले विशाल मंगोल-राज्यका खान बना। बेरेकने भाईके समयमें (१२३८ ई०) ही किपचकोंकी भूमिमें विजय प्राप्त कर अपनी योग्यताका परिचय दिया था। कुछ इतिहासकारोंके अनुसार बेरेक प्रथम मंगोल राजकुमार था, जिसने इस्लाम-धर्म कबूल किया, यद्यपि उसका यह अर्थ नहीं, कि उसके समय हीसे सुवर्ण-ओर्दूके खानोंमें इस्लामकी परंपरा चल गई। इसके लिये अभी आठवें उत्तराधिकारी उज्बेक (१३१३—४०ई०) के आनेकी प्रतीक्षा थी, जो कि बा-तूकी पांचवीं पीढ़ीमें पैदा हुआ था। 'शज्रतुल्-अतराक' के अनुसार बरका खान मुसलमान था। कुछ इतिहासोंमें लिखा है, कि वह मुसलमान-मांसे पैदा हुआ था। दूसरी परंपरा कहती है—पैदा होनेपर बहुत चाहा, कि बरकाको मांका दूध उसे दें, लेकिन उसने तबतक दूध नहीं पिया, जबतक कि एक मुसलमान औरतको उसे दूध पिलानेके लिये रख नहीं दिया गया। बड़ा होनेपर वह अपने भाईके हुकुमके अनुसार जब चारों ओर घूमता सैर कर रहा था, उसी समय संयोगसे वह इस्लामके पुण्यतीर्थ बुखारामें पहुंचा, जहा उसे एक मुस्लिम संतसे शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य

मिला, कहते हैं, "वह महान् संत (शेख) बुजुरगवार हजरत शेख सैफुद्दीन बाखरजी थे, जोकि महान् हजरत शेख नजमुद्दीन कुबराके उत्तराधिकारी थे......। महान् शेखके हुक्मसे वह दश्ते-किपचकमे हाजी तुरकानकी ओर गया, जहां ईतल नदीके तटपर खुलाकू खान (तूलिखान-पुत्र) की विशाल सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। दरवेशोंके पुण्य-प्रतापसे खुलाकूको हार खानी पडी.....।*

दूसरी कहावत—जिसमें सच्चाईका अंश ज्यादा मालूम होता है—जुजजानी द्वारा उद्धृत है, जिसके अनुसार बेरेकके पैदा होनेपर उसके बाप जू-छिने—"इस लड़केको मै मुसलमान बनाऊगा" यह निश्चय कर उसके लिये मुसलमान धाय रक्खी. खोजंदमे उसे इमामों और मौलवियोसे कुरान पढ़वाया। बा-तूका बेरेकके ऊपर विशेष प्रेम था। भाईके युद्धोंमे उसके तीस हजार मुसलमान सवार घोड़ोंकी पीठपर नमाजकी आसनी (जायनमाज) बांधे हुये चलते थे। वहा शरीयतकी सख्त पाबन्दी होती थी। मुसलमानों मे कोई शराब नही पीता था। जुजजानी यद्यपि मूलत: ईरानका रहनेवाला था, लेकिन वह गुलामोंके शासनके अंतमें नासिरुद्दीन मोहम्मदशाहके समय (१२४०-६५ ई०) दिल्दी आकर रहने लगा था। उसने अपने इतिहासमें बेरेकके संबंधमें तत्कालीन कथाका उल्लेख करते हुये लिखा है—"६५७ हि० (१२५८ ई०) मे समरकंदसे नूरुद्दीन सूफीके महन्त जलालुद्दीन सूफीके पुत्र अशरफउद्दीन दिल्लीमें व्यापारके लिये आये। वह अपने साथ इस्लामके बादशाह नासिरुद्दीनके लिये बेरेककी भेंट भी लाये थे। वह बेरेकके पक्के मुसलमान बादशाह होनेके बारेमें बातें करते थे, जिनमेंसे दोको जुजजानीने अपने ग्रंथ "तवकाते-नासिरी" में उद्धृत किया है—(१) समरकंदमें किसी ईसाईका बेटा मुसलमान हो गया। बापने हाकिमोंके दरबारमें फरियाद की, कि मेरे बेटेको बहकाकर मुसलमान बनाया गया है। स्थानीय हाकिमने भी उसका पक्ष लिया। जब इसका पता बेरेकको लगा, तो उसने मुल्लोंके पक्षमे निर्णय दिया। यह याद ही है, कि मंगोल-शासक धर्मके बारेमें बिलकुल तटस्थ रहते थे, जिसका बहुत कुछ पालन उनके अधीन मुसलमान अफसरोंको भी करना पड़ता था। गद्दीपर बैठनेके तीसरे सालकी यह बात बेरेकके कट्टर मुसलमान होनेका पता देती है। हो सकता है, इसीलिये उसने हिंदुस्तानके इस्लामी बादशाहके साथ संबंध स्थापित करना चाहा। (२) दूसरी बात—बा-तूके बाद सरतक गद्दीपर बैठा। वह अपने मुसलमान चाचा (बेरेक) को उसके अनुरूप सम्मान नही प्रदान करता था। इसके बारेमें कहनेपर सरतकने जवाब दिया—"तू मुसलमान है, और मै ईसाई-धर्मका माननेवाला हूं। मेरे लिये मुसलमानका मुह देखना भी ठीक नही है।" बेरेकने इस अपमानसे दु.खित हो रोते-रोते रातभर अल्लाहसे प्रार्थना की और अल्लाहने दुआ सुनकर सरतकको मार दिया। जुजजानीके अनुसार बेरेकका राज्य किपचकों, सकसिनो, बोल्गारों शकलाओं, रूसियोंकी भूमि तथा रूमके उत्तर-पूरबतक फैला हुआ था—जेन्द और ख्वारेज्म उसके राज्यमें थे।

बेरेकके गद्दीपर बैठनेके समय नवोग्राद (० गोरद) गणराज्यके महाराजुल अलक्सान्द्र नेव्स्की तथा उसके भाई सुज्दलके राजुल आन्द्रेइने बधाई और भेंट भेजी थी। बा-तूकी पश्चिमकी विजय-यात्राको फिरसे जारी करनेका बेरेकको ख्याल आया, लेकिन पीछे खुलाकू (ईरान) खानके साथ झगड़ा हो जाने-से वह वही उलझा रहा और पश्चिमी युरोपको मंगोल-खतरेसे मुक्ति मिली। तो भी १२५९ ई० में बेरेकने अपने सेनापतियों बुरुन्दे, नोगाई और तुतूबुगाको दिग्विजयके लिये भेजा था। वह लुब्लिन होते बिस्तुला नदी पार कर २ फर्वरी १२५९ ई० को सेन्दोमीर पहुंचे। और जगहोंमें लूट-मार और अधीनता स्वीकार करानेमें कोई दिक्कत नहीं हुई, लेकिन सेन्दोमीरवालोंने प्रतिरोध किया, जिसपर मंगोलोंने वहांके लोगोंका कत्ले-आम कर दिया। पोलेंदकी तत्कालीन राजधानी क्राको फिर नष्ट हुई। मंगोल-सेना ओप्पेलनतक पहुंची, जहांसे लूटके साथ भारी संख्यामें ईसाई दासोंको लिये लौट गई। बेरेककी दो राजधानियां थीं—बा-तूसराय और बुल्गारी, जिनमें बुल्गारी बुल्गारों (बोल्गारो) की पुरानी राजधानी वर्तमान कजानके आसपास वोल्गा और कामा नदियोंके संगमपर अवस्थित थी।

खुलाकूसे संघर्ष—"तारीख-शेखेउबेस" (१३५६–७४ ई०) के अनुसार: "उस समयके रवाजके अनुसार बेरेकके कितने ही अमीर, खानजादे (राजकुमार) और सैनिक गर्मियोंको आजुर-बाइजानमें

* "स्बोर्निक मतेरियलोफ अत्नोश्चेरव्स्या क. इस्तोरी जोल्तोइ ओर्दी" पृष्ठ—२६४–६५।

बिताया करते थे। इलखान (खुलाकू) भी जाड़ोंमें चगातू और गर्मियोंमें अलदकमे रहता था। सराय-बेरेकसे मुहम्मदाबाद (अर्रान) होते गुश्तास्क तक वह अराबो (गाडियो) पर आते।" आजुर-बाइजान आजकी तरह उस समय भी दो राज्यो मे बंटा था—उत्तरी भाग सुवर्ण-ओर्दूके हाथमें था और दक्षिणी भाग इलखान (खुलाकू-वंश) के हाथमे। मंगोल ओर्दू अपने-अपने पशुओके साथ चरवाहीके लिये सारी भूमिमे बिखरा रहता, उसका जाड़ा और गर्मी बितानेका अर्थ केवल एक जगहपर रहकर मनोविनोद करना नही था। झगड़ेके लिये वहा कोई भी कारण पैदा होना आसान था। बेरेकके भाई बुआल (मोवाल) के पुत्र तुतार (ततार)ने कुछ गुश्ताखी की, जिसके लिये उसे खुलाकूके पास लाया गया। खुलाकूने उसे उसके चचा—बेरेक (बरका) के पास भेज दिया। बेरेकने फिर उसे खुलाकूके पास कान मलनेके लिये भेजा। उसे यह ख्याल नही था, कि भतीजेको खुलाकू मौतका दण्ड देगा, लेकिन खुलाकूसे सबध कुछ पहले ही खराब हो चुका था। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरोने कुछ छेड़-छाड की, और खुलाकूको उन्हें दंड देनेके लिये सेना भेजनी पड़ी थी। अमीर हारे। उनमे से अमीर निकुदेरके अधीन कुछ मगोल-सेना खुरासानके रास्ते भागी। उसने गजनी और विनिकके पहाड़ोको लेते मुलतान और लाहौरतक अपना अधिकार जमाया। कुमार ततारके मारे जानेके बाद अब दोनों वंशोंमे शत्रुताकी आग जोरसे भडक उठी। बेरेक इस्लामका बादशाह था और खुबिले खानका भाई खुलाकू काफिर। बेरेकने उसके ऊपर इल्जाम लगाया—[1] "उस (हुलाकू) ने मुसलमान नगरोंको नष्ट किया, इस्लामी वंशोंको खत्म किया, अकारण ही खिलाफतका जड़-मूलसे उच्छेद किया।" भतीजेका बदला लेनेके लिये बेरेकने ततारके पुत्र नोगाइको तीन तुमान[2] (तीस हजार) सेना देकर बापके खूनका बदला लेनेके लिये भेजा। वह शिरवान पहुंचा। खबर पाकर खुलाकूने सारे ईरानसे सेना जमा कर तीन तुमान सेना शिरामून नोयन, अबताइ नोयन और समगरके नेतृत्वमें भेजी। २० अगस्त १२६२ ई० को स्वयं खुलाकूने भी अलतगासे प्रस्थान किया। अक्तूबर-नवम्बर १२६२ ई० (जुलहिजा ६६० हि०) मे दोनों ओरकी भारी लड़ाई हुई। अबताइ नोयनने शिरवानसे एक फरसख (कोस) पर सुलतानचुका नदीके किनारे नोगाइको बुरी तरहसे हराया। नोगाइ जान लेकर भागा। इलखानकी सेनाने २० नवम्बर १२६२ ई० (६ मुहर्रम ६६० हि०) आगे प्रस्थान किया। दरबन्दके घाटेमे—जहां काकेशस पहाड तथा कास्पियन समुद्र एक दूसरेके बिल्कुल नजदीक आ जाते हैं—फिर जमकर जबर्दस्त लड़ाई हुई। बेरेककी सेना फिर हारी। खुलाकूकी सेनाने दरबन्द पार हो किपचक भूमिको लूटा-बरबाद किया। तो भी सुवर्ण-ओर्दूके खानकी शक्ति अभी क्षीण नहीं हुई थी। वह सेना एकत्रित करते अवसर ढूंढता रहा। इलखानकी सेना लौटते हुये तेरक नदीके तटपर पहुची। जाडोंके कारण नदीका पानी जम गया था। १३ जनवरी १२६३ ई० को सबेरेसे शामतक इलखानी सेना उसपरसे पार होती रही। यकायक नदीकी जमी बर्फ टूट गई, जिससे बहुत-से लोग पानीमे डूब मरे। खुलाकूकी सेना सुवर्ण-ओर्दू सैनिकोंकी मार खाती पीछे हटी। इसी समय २२ अप्रैल १२६३ को खुलाकू युद्धमें घायल हो गया, जिससे ८ फर्वरी १२६४ ई० को वह मराग-जगानमें मर गया।" लेकिन अब बापके कामको उसके योग्य बेटे अबका खान (आरिक बूगाखान) ने अपने हाथमे ले लिया।

१९ जुलाई १२६५ ई० में अबकाखानने राजकुमार यशमूतके नेतृत्वमे एक बड़ी सेना शिरवानकी ओर भेजी। खान स्वयं जाड़ोंमें माजन्दरानमें रहा। उधर उत्तरसे राजकुमार नोगाइ भी सेना ले शिरवानकी ओर चलकर अकसू नदीके तटपर पहुंचा। यशमूत कुरा नदी पार हो गया। १४ नवम्बर १२६५ ई० को दोनों सेनाओंमें लड़ाई हुई, जिसमें तुगाचारका बाप कायर बूगा मारा गया। सेनापति नोगाइ भी सिरमें आहत हुआ। सुवर्ण-ओर्दूकी सेना तितर-बितर हो शिरवानकी ओर लौटी। अब बेरेक स्वयं तीस तुमान[2] (तीन लाख) सेनाके साथ आया और दक्षिणसे अबकाखान भी मुकाबिलेके लिये चला। दोनों सेनायें कुरा नदीके दोनों तटोंपर आमने-सामने पंक्तिबद्ध हुई। १४ दिनतक यही हालत रही। बेरेक नदी पार होनेका कोई अवसर न देख ऊपर पहाडमे कहीं पार होनेके ख्यालसे नदीके किनारे-किनारे तिफलिसकी ओर चला, लेकिन असफल-मनोरथ हो रास्तेमें ही उदरशूल (कुलंज) की बीमारीसे मर

---

१. "जामे-उत्-तवारीख" (रशीदुद्दीन) २. १ तुमान=१० हजार।

गया। दोनो प्रतिद्वंद्वी बेरेक और खुलाकू मर गये, लेकिन उनकी दुश्मनी खतम नही हुई। बेरेककी लाशको सदूकमे बदकर बा-तूसरायमे ले जा भाईके पास ही दफन कर दिया गया।

बेरेककी सेना खुलाकूसे उलझनेके पहले इस्ताम्बूल (कन्स्तन्तिनोपोल) तककी भी विजय-यात्रा कर चुकी थी, जबकि वहाके राजाने क्रिम नगरको सुवर्ण-ओर्दूके खाकानको प्रदान किया था।

बेरेककी मृत्युके बाद फिर बा-तूकी संतानोमे गद्दी चली गई और तोगोन-पुत्र मङ-गू तेमूर खान बना।

६. मङ-गू तेमूर, मुङ-खे तेमूर (१२६५-८० ई०)

खुबिले खाकानने बेरेकके बाद मुङ-खे तेमूरको खानपदकी यारलिक भेजी। यद्यपि उस समय मङ-गू तेमूर खुबिलेका कृपापात्र था, लेकिन पीछे उसके विरोधी ओगोताइ-वंशी कैदू खानका समर्थक बन गया, जिससे खुबिले उसका विरोधी हो गया। रूसके राजुल मङ-गू तेमूरके आज्ञाकारी सामंत थे। सुवर्ण-ओर्दू की राजधानी सराय (सराय चिक) मे युरोपीय राजा और राजकुमार भी भेट लेकर कोर्निस बजानेके लिये आते थे। अब मगोल-वश सभ्यता और सस्कृतिका प्रतीक समझा जाता था। रूसके राजुल और महाराजुल मंगोल पोशाक और दरबारी रीति-रवाजोंको अपने लिये आदर्श मानते थे। इस आदर्श का अनुगमन १८वी सदीके आरंभतक किया जाता रहा, जब कि प्रथम पीतरने इन पुराने तरीकोको तुच्छ समझ रूसका युरोपीकरण शुरू किया। मङ-गू तेमूरके १५ सालके शासनमे सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति और राज्यविस्तारमे कमी नही हुई। हा, खुलाकू-पुत्र अबकाखानके साथ चलते झगड़ेके कारण वह कोई नया काम नही कर सका। मङ-गू तेमूर अपने न्याय और बुद्धिमानीके लिये प्रसिद्ध था, जिसके लिये ही उसे लोगोने केलेकखानका नाम दे रक्खा था।

७. तुदा-मङगू तोगनपुत्र (१२८०-८४ ?)

तुदा-मङगू तुकूकान (तोगोन) का तृतीय पुत्र तथा मङ-गू तेमूरका भाई था। इसकी रानी तुरे कुतुलुक और दादी बा-तूकी प्रभावशाली रानी बोरकचीन दोनों—अलची तातार कबीलेकी थी। तुदा-मङ-गू निर्बल शासक था। जिससे लाभ उठाकर मङ-गू तेमूरके पुत्रो—अलगू और तुगरल एवं तोगनके ज्येष्ठ पुत्र तरबू (दरतू) के पुत्रो कुनचोग और तुला बुकाने मिलकर खानको पागल कहकर उसे गद्दीसे उतार पाच सालतक सम्मिलित राज्य किया।

यस्सू-मङ-गू (.. ..—१२८९ ई०)—"शजरतुल-अतराक" ने यस्सू-मङ-गूको तुदा-मङ-गूका उत्तराधिकारी कहते—"यस्सू मुङ-गू-खान बिन-तोगान बिन-बातू-खान बिन-जोजी-खान बिन-चंगिस-खान"—पांचवां खान लिखा है। सुवर्ण-ओर्दूके ये पाच साल ऐसे गृह-कलहके थे, जिसमें जहा-तहा अनेक खान बने हों, यह संभव है। इस अव्यवस्थाका अत तोकतोगूके खान बननेके साथ हुआ।

८. तोगताइ, तोकतोगू, मंगूतेमुर-पुत्र (१२८९-१३१३)

सेनापति नोगाइ अपने ओर्दूकी इस दुरवस्थाको चुपचाप देख नही सकता था। अंतमें उसकी नजर मङ-गू तेमूरके पुत्र तोकतोगूके ऊपर पड़ी। तोकतोगूकी मां उलजइ खातून केलमिश अकाखातूनकी पोती या नतिनी थी। अराजकताके समय राजकुमारोकी हत्या आम बात थी, जिसके डरके मारे तोकतोगू भाग गया। बेरेकचरके पुत्र बिलिकचीने उसकी सहायता की। उसने बा-तू और बेरेकके समयके प्रसिद्ध सेनापति नोगाइको बुलवाया। अका (ज्येष्ठ) कहकर तोगताइने बहुत लल्लो-चप्पो करके उसे अपनी ओर कर लिया। नोगाइका ओर्दू उजी (द्नियेपर) की उपत्यकामे रहता था। वही सेना और सेनपोको एकत्रित कर नोगाइने समझाते हुये कहा, कि मुझे सायन (बा-तू) खानने आज्ञा दी थी, कि उलुस (ओर्दू) को छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना। नोगाइको अपने विरुद्ध होते देख तरबू और मङ-गू-तेमूर के पुत्र पितामह नोगाइके साथ हो गये। नोगाइने कहा—अपने झगड़ेका फैसला उलुसको छिन्न-भिन्न करके नही, बल्कि कूरिल्ताई (महाससद) के निश्चयके अनुसार करो। तोगताइने इसी बीच सेना जमा कर इतिल (वोल्गा) उपत्यका मे पहुंच राजधानीको ले लिया। लेकिन नोगाइ तोगाताइके हाथमें खेलना

नही चाहता था। तोगताइने उसे बहुत सी भेंट-पूजा देकर अपनी ओर मिलानेका असफल प्रयत्न किया, तो भी अभी दोनोका सबध बहुत बिगड़ा नही था। इसी बीच धर्मको लेकर दोनोमे भयानक अनबन हो गई।

नोगाइके साथ संघर्ष—तोगताइका ससुर सलजीदइ बुरगान प्रसिद्धककुरत कबीलेका पुराना अमीर था। उसकी बीबी केलमिश अकाखातूनकी पुत्री अलजई खातून तोगताइकी प्रभावशाली रानी थी। केलमिश अकाने अपने पुत्र याइलगका ब्याह नोगाइकी पुत्री कबकसे करना चाहा। नोगाइने इसे स्वीकार किया और दोनोका ब्याह हो गया। ब्याहके थोडे ही समय बाद कबक खातून मुसलमान बन गई। उसका पति तथा ससुर-परिवार बौद्ध (उइगुर) था, इसलिये कबकके साथ याइलग और उसके माता-पिता घृणा करने लगे। लडकीने अपने मा-बाप और भाईको इसके बारेमे कहा। नोगाइ बेटीका अपमान नहीं देख सका और उसने तोगताइसे माग की—यदि मेरे और अपने बीच पिता-पुत्रका सबध कायम रखना चाहता है, तो सलजीदइ करजूको मेरे हाथमें दे दे। तोगताइ अपने ससुरके साथ ऐसा बर्ताव कैसे कर सकता था? उसने समझानेकी कोशिश की—"वह मेरा पिता और संरक्षक रहा है। पुराना अमीर है। कैसे उसे शत्रुके हाथमे दे दूं?" नोगाइकी बीबी चबी बडी चतुर स्त्री थी। उसके तीनों पुत्र—जूके, तेके और तूरी—सरकारी सेनाके कुछ हजार आदमियोको बहका कर इतिल (बोलगा) पार भाग गये। तोगताइने नोगाइसे हजारी सेनाको लौटा देनेके लिये कहा, लेकिन उसने तबतक वैसा करनेसे इन्कार कर दिया, जबतक कि सलजीदइ या उसका पुत्र याइलग उसके पास नही भेज दिया जाता। अब सीधे संघर्ष होना निश्चित हो गया।

तोगताइ नोगाइकी शक्तिको जानता था। उसने उससे भिड़नेके लिये अक्तूबर-नवम्बर १२८९ ई० (६९८ हि०) में उजी (द्नियेपर) के तटपर तीस तुमान (तीन लाख) सेना जमा की। उस साल जाड़ोमें द्नियेपरकी धार नहीं जमी, इसलिये सेनाको पार ले जाना सभव नही हो सका। नोगाइ अपनी जगह बैठा रहा। सन् १३०० ई० के बसतमें तोगताइके ओर्दूने तान नदीके तटपर गर्मी बिताई। सीधी लड़ाई करनेकी जगह खुर्राट सेनापति कल-बल-छलसे काम लेना चाहता था। ऊपरसे उसने खानको कहला भेजा—मैं चाहता हूं, कुरिल्ताई बुलाकर फैसला किया जाय। लेकिन, दूसरी ओर धोखा देकर वह तोगताइके ऊपर आक्रमण करना चाहता था। खानको यह पता लगते देर न हुई। उसने जल्दी-जल्दी सेना जमाकर तान-उपत्यकाके बखतियारी (तजीमारी) स्थानपर लड़ाई की। तोगताइको हारकर सरायकी ओर भागना पड़ा। इसी समय अमीर माजी, सुतान (सुबान) और संगुर तीन अमीर नोगाइका साथ छोड़ अपने खानके पास चले गये। तोगताइ फिर तैयारी करने लगा। उसने बहुत कालसे दरबंदके घट्टपाल रहते आये बलग-पुत्र तमातोकतूको बुला भेजा और उसके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना नोगाइके विरुद्ध भेजी। नोगाइको लड़नेकी हिम्मत नही हुई। वह उजी (द्नियेपर) नदीकी ओर लौट गया। क्रिम नगरमें पहुंचकर उसने बहुतसे लोगोंको दासके रूपमें बेंचनेके लिये बंदी बनाया। लोगोंने तोगताइके पास संदेश भेजा—"हम इलखान (तोगताइ खान) के सेवक और अनुचर हैं। यदि स्वामीकी आज्ञा हो, तो हम नोगाइको पकडकर भेज दें।" नोगाइके पुत्रोंको इसकी भनक लग गई और उन्होंने एक हजार सेना उनके ऊपर भेजी। हजारी सेनापतिने नोगाइके दूसरे पुत्र तेकेको खान बनानेका लोभ देकर धोखा रचा। इसपर तेकेने आक्रमण कर हजारी सेनाको हराया और उसके अमीरका सिर कटवा लिया। नोगाइ दलके भीतरके झगड़ोंकी खबर तोगताइको बराबर मिल रही थी। वह साठ तुमान (६ लाख) सेनाके साथ उजी पार हो तरकू (बरकू?) नदीके तटपर पहुचा, जहांपर कि पहले नोगाइका ओर्दू रहा करता था। नोगाइके पास तीस तुमान थे, लेकिन वह स्वयं बीमार था। उसने आदमी-द्वारा तोगताइके पास संदेश भेजा—"तेरे सेवक (मैं) ने नहीं जाना, कि स्वयं स्वामी पधारा है। उसकी सरदारी तथा सेना तेरी (इलखानकी) है। सेवक बूढा निर्बल आदमी है। उसने सारे जीवन तेरे पिताकी सेवा की...।" ऊपरसे इस तरहकी बातें करते भी नोगाइने अपने पुत्र जूकेको एक बड़ी सेना ले तरकू नदी पार हो तोगताइपर आक्रमण करनेके लिये कहा। यह मालूम होनेपर तोगताइने भी प्रहार करनेका हुकुम दिया। युद्धमें नोगाइ और उसके पुत्रोंकी पूरी तौरसे हार हुई। हजार सवारोंके साथ

नोगाइके पुत्र भागकर केलारो और बाश्किरोमें चले गये। घायल नोगाइ सत्तर सवारोके साथ भागा जा रहा था, जब कि तोगताइके रूसी सैनिकोने उसे रास्तेमे पकड़ लिया। नोगाइने कह दिया—"मै नोगाइ हूं, मुझे तोगताइ खानके पास ले चलो।" रूसी सैनिक उसे ले चले, लेकिन नोगाइ रास्तेमे ही मर गया।

विजयके बाद तोगताइ बा-तूसराय लौटा। नोगाइ-पुत्रोको कही त्राण नही दिखाई पड़ा। यह हालत देखकर उसकी मा चबी और तूरीकी मां बाइलकने सलाह दी, कि खानके शरणमे चले चलो। इससे नाराज होकर पुत्रोने उनको मार डाला।

नोगाइ केवल एक सफल महासेनापति ही नही था, बल्कि वह कुटिल नीतिका पक्का खिलाड़ी था। शायद धर्मकी बात बीचमे न आ गई होती, तो बात यहातक न पहुचती। १३वी सदीके अंत होते-होते मंगोल-सरदार और सैनिक बौद्ध धर्मको पूरी तौर से अपना चुके थे और इस्लामके प्रति उनका रुख सहानुभूतिका नही था, यद्यपि राजकाजमें अब भी वह तटस्थताका व्यवहार करते थे। वह नही चाहते थे, कि राजवंश और सामंतवंशमे अरबोंका धर्म फैले। यद्यपि सुवर्ण-ओर्दू और खुलाकूके वंशमें घोर शत्रुता थी, लेकिन खुलाकूका इस्लामके ऊपर अत्याचार और खलीफा-वशका उच्छेद करना मंगोलोंमें अभिमानकी बात समझी जाती थी। वह क्यो पसद करते, कि उनके घरमे ही विभीषण पैदा हो।

नोगाइने जब तोगताइ खानसे झगड़ा मोल लिया, तो उसने अपने पुराने शत्रु तथा बापके घातक खुलाकू-वंशसे भी सहायता लेनेकी कोशिश की। उसने खुलाकूके पुत्र अबका खानके पास अपने पुत्र तुरी तथा पत्नी चूबी (चबी) के साथ अपनी एक लड़कीको भी ब्याहके लिये भेज दिया। अबकाने भी तुरीको अपनी कन्या प्रदान की। वह कुछ समयतक ईरानमे रहकर नोगाइके पास लौट आये। झगडा और बढ़नेपर नोगाइने ईरानके खान गजन (१२९५-१३०४ ई०) से मदद मागी, लेकिन गजन इसके लिये तैयार नही था। उसने मदद देने हीसे नही इन्कार कर दिया, बल्कि तोगताइको संदेह न हो, इसके लिये जाड़ा अर्रान (दक्षिणी काकेशस) में न बिता बगदादमें बिताया। वह बराबर नोगाइको तोगताइसे मिलकर रहनेके लिये कहता रहा।

तोगताइने तुलाबुगाका पक्ष लेनेके अपराधमें अपने भाई तुगरलको मरवा दिया था। फिर भाईकी विधवाको अपनी रानी बना तुगरलके बेटे उज्बेकको खतरनाक चेरकासोके देशमे भेज दिया। चौबीस वर्षके संघर्षमय जीवनके बाद उसके हृदयमे पश्चात्ताप होने लगा था। उसने यह बात अपनी रानीको बतला दी और दो बेगोंको राजकुमार उज्बेकको बुलानेके लिये भेजा। अभी उज्बेक नही आया था, इसी बीच (९ जुलाई १३१२ ई० *) इतिल (वोल्गा) नदीमे नौका-विहार करते तोगताइ डूबकर मर गया। तोगताई-पुत्र तुगल जानता था, कि उज्बेक अपनी मांके प्रभावसे गद्दीका मालिक बन जायगा, इसलिये उसने उसके मारनेका षड्यंत्र रचा। उज्बेकको यह बात मालूम हो गई। सरायमें आनेके बाद उसने महलमें घुसकर तुगलको मार डाला।

९. उज्बेक-खान तुगरल-पुत्र (१३१३-४० ई०)

उज्बेकका शासन इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है, कि इसके समयसे सुवर्ण-ओर्दू पूरीतौरसे मुसलमान बनने लगा।

(१) आपसी संघर्ष—उज्बेकके शासनारंभके समय जो षड्यत्र हुआ था, उसके बारे मे "तारीख-हैदरी" (हैदर राजी १६११–१८ ई०) के अनुसार तोगताइके बाद अमीरों और नोयनोंने बादशाह चुननेके बारेमे एक सभा की, जिसमे वह उज्बेकको गिरफ्तार कर उससे पूछनेवाले थे, कि क्यों तुमने छिङ-गिस्के यस्सकको छोड़कर अरबोके धर्मको अपनाया। इसी समय एक अमीरने आखसे इशारा किया, और उज्बेक पेशाब-पाखानेका बहाना करके सभासे निकलकर भाग गया। फिर सेना जमाकर लड़कर उसने बीस राजकुमारों और तोगताइके दो पुत्रोका कतल कर १३२२ ई० (७२२ हि०) में अपने राज्यको निष्कंटक किया। तबसे जू-छि खानाका उलुस "उज्बेक-उलुस" कहा जाने लगा। आरंभिक सहायताओके लिये उज्बेकने कुतुलुक तेमूरको खुरासान बख्श दिया।

* "जेल-जामे-उत्-तवारीख"—अबूसईद

खानके अपने परिवार तथा अमीरोंके परिवारोमे अब धर्मको लेकर झगड़ा और भी ज्यादा बढ चला। नोगाइकी लडकीका मुसलमान होना एक अलग-थलग घटना नही थी। हमे मालूम है, सुवर्ण-ओर्दू और दूसरे मंगोल खानोकी सेनाओमे भी मंगोल-सैनिक दालमे नमकके बराबर थे। सारे मध्य-एसिया और उसके उत्तरके घुमतू तुर्क एक बार अवश्य मगोलोके खिलाफ खूब लडे, किंतु परास्त होनेके बाद वह लुढकती बर्फकी गेदकी तरह मगोल ओर्दूका अग बनते गये। विजयोमें उनका पहले हीसे बहुत हाथ था, और उनकी लूटको वह अपना उचित हक समझते थे। तब भी मगोल और अ-मगोलमें अंतर रक्खा जाता था, यह हम चीनके बारेमे लिखते वक्त बतला चुके है। यद्यपि मगोल खान दूसरोकी लडकिया लेनेमें एत-राज नही करते थे, उनके हरम देश-देशकी सुन्दरियोंसे भरे थे, लेकिन वहा भी प्रधानता मगोल रानियोकी ही थी—बापकी ओरसे छिङ-गिस्का रक्त और माकी ओरसे शुद्ध मगोल सामतका रक्त होना आवश्यक समझा जाता था। शक्तिशाली खानों के समय चाहे बहुसंख्यक तुर्क सैनिक इस भेदभावको बर्दाश्त करते हो, लेकिन अब परिवर्तित अवस्थामे वह बराबरीका दावा करने लगे थे। समरकद हो या तबरेज, सराय-बातू हो या काश्गर, सभी जगह मगोलोकी अलग सत्ता बनाये रखनेकी बराबर कोशिश की गई, किंतु आखिर वह बूद बनकर तुर्कसमुद्रमे मिल गये और उनके शासनके अंत होनेके कुछ ही समय बाद यह जानना भी मुश्किल हो गया, कि कौन मगोल है। और तो और, स्वयं "शरजतुल-अतराक" जैसे इतिहासकारने भी तुर्क और मंगोलका भेद भुलाकर मगोल-वंश-वृक्षको तुर्क-वंश-वृक्ष लिखा।

अपने बौद्ध पक्षपाती सेनापतियोंको हराकर उज्बेकने यह दिखला दिया, कि अब मंगोलो की नही, बल्कि तुर्कोंकी तूती बोलेगी। १३१५ ई० मे सुवर्ण-ओर्दूके विद्रोही सेनापति बाबाने अपने ओर्दूके साथ ईरानमें जा उल्जैतू खान (१३०४–१७ ई०) के पास शरण ली। अभी ईरानी इलखान मुसलमान नही हुए थे, इसलिये उलजैतू बाबाकी मददके लिये तैयार था। बाबाने ईरानसे ख्वारेज्मके ऊपर आक्रमण किया और उज्बेकके कृपापात्र कुतुलुक तेमूरको मार भगाया। चगताइ खान इस्सन "जेल-जामे-उत्तवा-रीख" के अनुसार बाबा ओगुलकी घटना सितबर १३१५ ई० (जमादी II अतिम ७१५ हि०) को हुई, जब कि वह अपने तुमान (दस हजार सेना) के साथ उज्बेकसे नाराज होकर खुलाकू-वंशी खान उलजैतू के पास चला गया। फिर वहासे डेढ़ हजार सवारोंको लेकर उज्बेकके सामंत कुतुलुकके ऊपर प्रहार करने ख्वारेज्म गया। कुतुलुककी हार हुई और उसकी सारी सेना बाबा ओगुलकी ओर हो गई। ख्वारेज्मके शहरों—जमशवर, गरबीन, हज़ारास्प, हजारजमीन, कात, केरमारोन, शावकान आदिको लूटकर उसने उजाड़ दिया, लोगोंपर बड़े जुल्म किये। बाबा ओगुलके सैनिकोंने पतियोंके सामने उनकी बीबियोंके साथ व्यभिचार करनेमें भी आनाकानी नहीं की। ७०० के करीब इमाम और अशैरफ (कुलीन लोग) जान बचानेके लिये मीनारपर चढगये थे। बाबाने लकड़ी जमाकर आग लगानेका हुकुम दिया। सासतसे मरनेकी जगह बापोंने अपने बेटोको मीनारसे नीचे गिरा दिया। बाबाके हाथमें पचास हजार कैदी और लूटकी अपार संपत्ति आई। जब इसकी खबर चगताइ खान एसेनबुगाको खोजन्दमें मिली, तो उस (इस्सन बुगा या यस्सावुर १३०९–१८ ई०)ने अपने पड़ोसमें बाबाकी सफलता देखना पसंद नही-किया। वह बीस हजार सवारोंके साथ एक महीनेके रास्तेको हफ्तेमें पूरा करके ख्वारेज्म पहुंचा। बाबा ओगुलसे जबर्दस्त लड़ाई हुई, जिसमें उसके बहुतसे आदमी मारे गये। बाबाने बदियोंको छोड दिया। लूटकी संपत्तिसे भी उसे हाथ धोना पड़ा और वह कुछ सवारोंके साथ जान बचाकर मेर्वकी ओर भागते चंद शाहजादोंके साथ उलजैतूके पास पहुंचा। चगताइ और बा-तूके वशोंमें अब दोस्ती हो गई थी।

अपने ख्वारेज्मके उज्बेकका बहुत नाराज होना स्वाभाविक था। उसने इसमे उलजैतूका हाथ समझा। फिर दोनों ओरसे दूतोंका आना-जाना होने लगा। यह खबर जब चगताइ खान इस्सनबुगा ने सुनी, तो उसने उज्बेकको अपनी ओर खीचनेका प्रयत्न करते हुये सदेश भेजा—"तेमूर कआन (चीन) कहता है, कि उज्बेक क्या बादशाह है? मै उसकी बादशाही दूसरे उलुस (ओर्दू) को दे दूंगा।" इस पर उज्बेक भी कआनसे बिगड़ उठा।

संघर्षकी खबरसे पहले ही सितंबर १३१५ ई० (जमादी अंतिम ७१५ हि०) को चीनसे कआनका महादूत कियात-वंशी अकबुका ईरानकी राजधानी तबरेजमें पहुंचा। अमीर हुसेन गूरगान ईरानी-खानका

प्रसिद्ध अमीर था। वह उस समय उज्बेकके सीमातके प्रदेश अर्रानसे तबरेजमे आया हुआ था। उसने महादूतकी जियाफत की और खानेके समय प्यालेको बैठे-बैठे अकबुकाके हाथमें देना चाहा। अकबुका इसपर नाराज हो दुत्कारते हुये बोला—"तू सामत और दुर्गपाल होते मेरे सामने बैठा चाहता है, कि मै तेरे हाथसे प्याला ले लू। तू छिङ-गिसी यास्सा और पुराने शिष्टाचारको भूल गया?" अमीर हुसेनने भी उसका सीधा जवाब दिया—"अमीर इस समय दूत होकर आया है, न कि छिङ-गिसी यास्साका शिक्षक बनकर।" महादूत चुप हो गया।

कआनके दूत ने सुलतानियोमे जा उलजैतू खानसे कआन का सदेश कहा—"यदि बाबा ओगुल स्वयं ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया, तो उसे मेरे पास भेज दो।" खानने कहा—"मुझे खबर नही, मै ऐसे बुरे कामकी हरगिज इजाजत नही दे सकता था।" उलजैतू नही चाहता था, कि बौद्ध धर्मके पक्षपाती बाबाका समर्थन कर उज्बेक खानको जहाद घोषित करनेका मौका दे। आखिर वह स्वयं इस्लामके केंद्र (ईरान, इराक, शाम) का शासक था, जहादकी हवा उसके देशमें भी घातक साबित होती। उसने उज्बेकके दूतके सामने बाबाको मरवा डाला और भारी भेंटके साथ स्नेहपूर्ण संदेश देकर महादूतको लौटा दिया।

१३१७ ई० (७१८ हि०) में उलजैतू मरा। उस समय अभी उसका उत्तराधिकारी अबू-सईद छोटी उमरका था। यह खबर जब दश्ते-किपचक गई, तो उज्बेकके मुहमें पानी भर आया। बेशुमार सेनाके साथ वह दरबंदके रास्ते ईरानकी ओर बढा। खान अबू-सईद (१३१७-३४ ई०) भी अपने अमीरोके साथ कराबागकी ओर चला। अमीर चोबान एक बड़ी सेना ले गुर्जिस्तान (जार्जिया) के रास्ते उज्बेकके मुकाबिलेके लिये बढा। अमीर ईसन कुतुलुक भी एक बड़ी सेना ले तबरेजसे अर्रान (शिरवान) की ओर रवाना हुआ। दरबंदसे खबर आई, कि उज्बेक दश्तेखिजिर (खजारोंका मैदान) पार हो आगे बढ दरबंद पहुच गया है। शिरवानको लूटते-पाटते उज्बेक कुरा नदीके तटपर पहुंचा। कुरा नदी जहा चीनके व्यापारके लिये कास्पियन समुद्रतटसे कालासागरके पास तक व्यापार-धाराका काम देती थी, वहा वह खुलाकू और बा-तू-वंशोंके संघर्षका मुख्य स्थान रही। अमीर चोबानने उज्बेकके ऊपर इतने कौशलसे आक्रमण किया, कि उसे हार खानी पड़ी।

अमीर चोबान हुसेनका सितारा अब बहुत ओजपर चढा। अबू-सईदकी नाबालिगीका लाभ उठाकर उसने सारे राज्यको अपने हाथमें ले लिया। उसका मन बहुत बढ़ गया, और वह उज्बेकको और भी कडा सबक सिखानेकी तैयारी करने लगा। भारी सेना जमाकर फिर वह शिरवान पहुंचा। सेनाके एक भागको दरबद पार तेरक नदीकी ओर भेजा और स्वय अपने पुत्रोंके साथ पहलेके परिचित गुर्जिस्तानके रास्ते आगे बढ़ा। लेकिन अबके उज्बेकके सामने उसकी नहीं चली और उसे खाली हाथ लौटना पड़ा। चीनमें कआन [बोयन्-थू—१३११—२० ई० या गेगेन १३२०—२३ ई०] को खुलाकू-वश और बा-तू-वशके खानोमे इस पारस्परिक खूनी संघर्षोसे बहुत चिता हो रही थी। उसने अपना एलची (जनदूत, महादूत) भेजा, जो पहले उज्बेकके पास गया। फिर उसके एलचीको भी साथ लेते बगदादमें अबूसईदके पास पहुचा। अमीर चोबानने उनका बड़ा सत्कार-सम्मान किया और चीनी राजदूतको हमदानके रास्ते बिदा किया और उसके कराबाग पहुंचनेसे पहले ही जाकर आरामका सब तरहसे प्रबंध किया। कआनके एलचीपर इसका बहुत प्रभाव पड़ा और उसने अपने मालिकसे जाकर अमीर चोबान हुसेनकी बड़ी तारीफ की। कआनने खुश होकर अमीर चोबानको चारों उलुसों (बातू, खुलाकू, चगताइ और चीन) का अमीर बनाते हुये उसके नाम चार यारलिक (शासन-पत्र) भेजे। अमीर चोबानका जिस समय इस तरह सम्मान और शक्तिवर्धन हुआ, उसी समय उसके अपने पुत्र हसन और तालिश बापसे नाराज हो ख्वारेज्म भाग गये, जहासे वह उज्बेक खानके पास पहुंचे। उज्बेकने उनका बड़ा सम्मान किया और अच्छे-अच्छे दर्जे दिये। पीछे हसन चेरकासों द्वारा युद्धमें मारा गया और तालिश अपनी मौत मरा।

अक्तूबर १३३० ई० (७३१ हि०=१५ अक्तूबर १३३०—३ अक्तूबर १३३१ ई०) को अमीर हुसेन (चोबान) के पुत्र अमीर शेख अलीकी पुत्री अनुशिरवान खातूनका ब्याह उज्बेकके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दिनीबेकके साथ हुआ।

(२) **युरोपपर अभियान** (१३२३-२४)—ईरानमें फंसनेसे पहले उज्बेक युरोपकी खबर लेना चाहता था। ईरानके साथ बराबर अनिर्णीत युद्ध होते रहनेसे बहुत लाभ नही था, जब कि युरोपके समृद्ध नगर लाभके खास साधन थे। १३२३ ई० में उज्बेककी सेनाने लिथुवानियापर आक्रमण किया। कन्स्तन्तिनोपोलके विजंतीन "सम्राटो" के लिये भी यह बहुत संकट का समय था। मंगोलोंको प्रसन्न रखनेके लिये कन्स्तन्तिनोपोलके सम्राटो और उनके सरदारोने अपनी सुन्दर कन्यायें भेट की, तो भी वह जान नही बचा पाये। १३२४ ई० मे मंगोल अद्रियानोपोलपर एक लाख बीस हजार सेनाके साथ चढ आये। उन्होंने थ्रेस प्रदेश (युरोपीय तुर्की और बुल्गारिया) को चालीस दिनोतक लूटा, बहुत-सी संपत्ति और दासोकी तरह बेचने के लिये भारी सख्यामे बदी उनके हाथ आये। जब थ्रेसवालो ने चोरोंकी तरह आकर हमला करनेकी निदा की, तो मगोल-सेनापति तासबुगा (ताशबेग) ने जवाब दिया—"हम ऐसे शासक के अधीन है, जिसकी आज्ञा जब होती है, उसी वक्त हम आगे बढ़ते, पीछे हटते अथवा उसी जगहपर जमे रहते है।"

(३) **मास्को राजुल**—रूसी राजुलोके अब भी अलग-अलग राज्य थे। मंगोलोंने शासनके सुभीतेके लिये मास्कोके महाराजुलको सबका मुखिया बना दिया था, किंतु वह यह नही चाहते थे कि, सारा रूस एक राजनीतिक इकाई बन जाये। सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। इस्लामने शक्तिशाली बनानेकी जगह आपसी झगड़े पैदा करके मगोलोंको निर्बल करना शुरू कर दिया, जिससे रूसी फायदा उठा सकते थे और मास्कोके महाराजुल जार्जने फायदा उठाया भी। उसने अपने चचा त्वेर्के महाराजुल मिखाईलके खिलाफ खानका कान भरा और उसे २२ नवम्बर १३१९ ई० को अपने प्राणोसे हाथ धोना पड़ा। उज्बेक बौद्धोंका शत्रु था और इस्लामका कट्टर पक्षपाती, लेकिन ईसाई पादरियोके साथ उसका बर्ताव अच्छा था। मास्कोके ऊपर उसकी विशेष कृपा थी। मास्कोके राजुलने र्याजनके राजुलको अपने अधीन बनाया। चचेरे भाई दिमित्र (त्वेर) ने इसीमें अच्छा समझा, कि दो हजार रूबल* वार्षिक पर अपने महाराजुल पदसे इस्तीफा दे दे, लेकिन वह बापके हत्यारेको क्षमा नही कर सकता था, इसलिये २१ नवम्बर १३२५ ई० मे उसने मास्को-राजुलके पेटमें तलवार घुसेडकर उसका बदला लिया। इवान खलीता (१३२५-४१ ई०) अब मास्कोका राजुल बना। वह उज्बेकका और भी कृपापात्र था। उसके बाप यूरीकी हत्याको उज्बेकने एक राजभक्तका बलिदान माना। लेकिन इवान केवल राजभक्त नहीं रहना चाहता था, वह घृणास्पद मंगोलोंके जुयेको हटाकर सारे रूसको एकताबद्ध करना चाहता था। इसीके शासनकालसे मास्को सारे रूसकी राजधानी बनने लगा, और इसीके समय तातारों (मंगोलों) को निकाल बाहर करनेके लिये रूसमे संगठन होने लगा। लेकिन साथ ही, इसी वक्त दक्षिणी और उत्तरी रूसमे भेदकी खाई ज्यादा हो चली। इवानने ब्लादिमिरको केवल कुछ समयके लिये ही राजधानी माना, तब भी वह अक्सर मास्कोमें रहता था। थोड़े ही समय बाद उसने राजधानीको बिल्कुल मास्कोमें बदल दिया। यही नही उसने रूसी ईसाई सप्रदाय (ग्रीक चर्च) के महासंघराज (मेत्रोपोलितन) को भी अपना केंद्र ब्लादिमिरसे हटाकर मास्को लानेके लिये तैयार किया, और ४ अगस्त १३२६ ई०को मेत्रोपोलितन मास्को चला आया। इवानने मास्कोमें पत्थरका पहला गिर्जा बनवाया। उसने खानके दरबारकी कई यात्रायें की। १३३३ ई० में उज्बेकने उसे बहुतसे सम्मान प्रदान किये। अगले साल १३३४ ई० में वह फिर खानके ओर्दूमें था। इवानका प्रतिद्वंद्वी राजुल अलेक्सान्द्र (त्वेर) जगह-जगह धक्के खाता उकता गया। उसने सोचा—"ओह, अगर मैं इसी तरह निर्वासित रहूंगा, तो मेरे बच्चे उत्तराधिकारविहीन रह जायेंगे।" अन्तमें उसने उज्बेकको यह कहकर आत्म-समर्पण किया—"महान् खान, मैं तुम्हारे क्रोधका पात्र हूं। मैं अपने भाग्यको तुम्हारे हाथोंमें देता हूं। भगवान् और तुम्हारा हृदय जो चाहता हो, वही मेरे साथ करो। तुम्हें मुझे क्षमा करने या दंड देनेका अधिकार है। क्षमा करनेपर मैं तुम्हारी दया-के लिये भगवान्से प्रार्थना करूंगा और दंड देना है, तो उसके लिये मैं अपने सिरको अर्पण करता हूं।" उज्बेकने उसे क्षमा कर दिया और त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का राज्य देकर सम्मानित किया।

* उस समय रूबल तीन-चार इंच लंबा एक अंगुल चौड़ा चांदीका टुकड़ा होता था।

लेकिन चालाक इवान इतनेसे हार माननेवाला नही था। उसने तरह-तरहकी चुगलियां खाई। अलेक्सांद्रको फिर बुलाया गया और २८ अक्तूबर १३३९ ई० को पुत्र-सहित उसे मार डाला गया। उज्बेकद्वारा कत्ल किये गये रूसी राजुलोंमे ये दोनों छठे और सातवे थे।

एक तरफ इवान खानकी चापलूसी करनेमें सभी दरबारियोंका कान काटता था, दूसरी तरफ वह नही चाहता था, कि उसकी जाति मगोलोके सामने इस तरह सिज्दा करते नाक रगड़ती रहे। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था, कि जबतक अनेको राजुलोमें बटी रूसी जातिको एक नही किया जाता, तबतक मगोलोका जुआ हटाना संभव नही। अलेक्साद्रको खतम करवानेसे पहले १३३३ ई० में सुज्दलके राजुलके निस्संतान मरनेपर उसके राज्यको उसने अपने राज्यमे मिला लिया। वह दृढ़ शासक था। उसने अपने राज्यमे व्यवस्था स्थापित की, और सबको आज्ञा पालन करनेके लिये मजबूर किया। रूसियोंने देखा: महाराजुल और दूसरे राजुलोके राज्यो मे कितना अंतर है। उसने पहलेसे मौजूद दुर्ग (क्रेमल, क्रेमलिन) को फिरसे बनवाया, मास्कोको लकड़ीके प्राकारसे घिरवाया। क्रेमलिनके अतिरिक्त उसने कई गिर्जे बनवाये, जिनमे संत मिखाइल राजदेवदूत भी एक है, जिसमे आगे रूसी राजुल दफन किये जाने लगे। शाति और सुव्यवस्थाके कारण मास्कोका व्यापार भी बढ़ चला। उत्तरके देशोंके माल हान्स-सघके व्यापारी लाते और दक्षिणके मालको अजोफ समुद्रके रास्ते गेनोवाके व्यापारी। उसने मोलोगा नदीके मुहानेपर खोलोपगोरोदकमें पहला व्यापारी मेला लगवाया, लोगोके ठहरनेके लिये सत्रह यात्रिगृह बनवाये। इस मेलेसे साढ़े तीन हजार चांदीका रूबल इवानको मिला। देश और महाराजुल दोनोकी संपत्ति और समृद्धि बढ़ रही थी। इवानने अपने रुपयेसे नवगोरोद, व्लादिमिर, कोस्त्रोमा और रोस्तोफमे मिल्कियत खरीदी। खानके लिये अपनी प्रजासे कर उगाहना आसान काम नही था। कर उगाहनेवाले अधिकारी ही बीचमे बहुत-सा पैसा खा जाते थे। इवान तुरंत कर बेबाक करनेके लिये तैयार था, फिर खानको और क्या चाहिये? १८ वी सदीमें भारतमे प्रचलित नीतिको दुहराते उसने कर उगाहनेका अधिकार इवानको दे दिया। रूसी जनताको भी यह पसंद आया, क्योंकि तातारोंके नामसे रूसियोंमें आतक छा जाता था। खानके कर उगाहनेवाले जब हथियारबद मंगोलोके साथ करके लिये घूमते, तो लोगोंका प्राण निकलने लगता। इवान अब इस कामको बड़ी चतुरतासे करने लगा, जिसके कारण रूसियोंके एकताबद्ध होनेमें बड़ी सहायता मिली। उसने क्रेमलिनसे घोषणा की, कि अबसे हमारे परिवार तथा प्रजाके भीतरके झगडोको हमारे बायर (अमीर) निपटाया करेगें। अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके ऊपर वह जरा भी दया दिखानेके लिये तैयार नही था। एक ओर रूसमें वह यह चाल चलते अपनेको मजबूत करनेके लिये साम और दाम दोनों तरीकोंको अख्तियार कर रहा था, दूसरी ओर वह जानता था, कि उज्बेकको भी अपने हाथमे रखनेकी आवश्यकता है। वह बीच-बीचमें दौड़कर खानके दरबारमें पहुंचता और उसे बड़ी-बड़ी भेटों और चापलूसियोंसे मुग्ध किये रहता। महाराजुल और खानमें कभी वैमनस्य नही हुआ, तथा दोनो एक ही साल (१३४० ई०) मरे।

इसमे शक नहीं, उज्बेक अपने ओर्दूको मुसलमान बनानेमें ही बड़ा सहायक नही हुआ, बल्कि चाहे अनिच्छासे ही सही सारे रूसपर मास्कोके एकाधिकारको कायम करानेमें भी उसका बड़ा हाथ था। उज्बेककी इस कार्रवाईसे मास्कोके महाराजुलकी ही शक्ति नही बढी, बल्कि रूसी चर्चने भी उससे लाभ उठाया। रूसियोंके ऊपर अब चर्चका एकच्छत्र प्रभाव था। चर्चकी संपत्ति विशाल हो गई, उज्बेकके दिये हुये गावोने चर्चकी भू-संपत्तिको और बढ़ा दिया। जैसे मास्को-महाराजुलके हाथमें शक्तिका केंद्रीकरण हुआ, उसी तरह चर्चके महासंघराजने पादरियोंपर अपना एकाधिपत्य जमाया, जिसके लिये कि रोमन कैथलिक चर्चने पहले हीसे उदाहरण स्थापित कर दिया था।

महाराजुल और महासंघराजके लिये उज्बेकने छूट कर दी थी। व्यापार और लोगोंके परिश्रमसे समृद्ध रूसकी संपत्ति उसे चाहिये थी, जो बिना तरद्दुदके खानके पास पहुंच रही थी। पर जहातक रूसी जनसाधारणका संबंध है, उसकी अवस्था पशुओंसे भी बदतर थी। मंगोल सैनिकों और अफसरोके सामने पहले हीसे जहां उन्हें दांत निकालना और पूछ हिलाना पड़ता था, वहां अब वह महा-

राजुलके बायरोके भी शिकार थे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार-"क्रिमिया और कूबानके यहूदी सारी जातिके जीवन-रक्तको जोकोंकी तरह पी रहे थे।

१३३४ ई० मे ईरानपर फिर आक्रमण करनेके लिये उज्बेकने अभियान किया। अबू-सईद मुकाबिलाके लिये आनेवाला था, लेकिन इसी बीचमे वह मर गया। उसके उत्तराधिकारी अरपा खानने आगे बढ़कर सामना करना चाहा, लेकिन दोनो ही पक्ष अपने ऊपर पूरा भरोसा नही रखते थे, इसलिये उन्होने बिना लड़े ही लौट जाना पसद किया।

उज्बेकका शासन-काल किपचक (सुवर्ण-ओर्दू) के इतिहासमे समृद्धिकी चरम सीमाका है। उज्बेकने अपने राज्यमे शाति और व्यवस्थाको इतनी अच्छी तरहसे कायम किया था, कि पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारो तरफसे व्यापारियोका ताता लगा रहता था। उसकी सेना भी बडी जबर्दस्त थी। लेकिन उससे भी अधिक वह अपनी कूटनीति और भेदनीतिसे काम लेता था। ईरानके खुलाकू-वशसे झगडा चलते रहनेके कारण युरोपके देश उसकी चोटसे बहुत कुछ बचे रहे। छिङ-गिस् खानके समयसे ही मगोल अंतर्राष्ट्रीय व्यापारको प्रोत्साहन देते आये थे। काला सागरके तटपर जहा कभी ग्रीक और रोमक व्यापारियोके बड़े-बडे दुर्गबद्ध केंद्र थे, अब वहा वेनिस, गेनोआ और दूसरे स्थानोके युरोपीय व्यापारी उसी कामको कर रहे थे। अगस्त १३३५ ई० में उज्बेकके प्रतिनिधि कुतुलुक बेगने वेनिसके वाणिज्य-दूतके साथ संधि की और अस्पताली गिर्जेके पीछे बाजारके लिये वेनिसके व्यापारियोंको जगह दी। विक्रयके ऊपर ३ सैकडा कर सरकारको मिलना निश्चित हुआ था।

तीस साल राज्य करनेके बाद १३४२ ई० मे उज्बेक मरा। उज्बेकके सिक्कोंपर उसका नाम निम्न रूपमे लिखा मिलता है---"नयाजुद्दीन उज्बक खान", "महम्मद उज्बक खान", "उज्बक खान आदिल"।

(४) **इस्लामसे सहानुभूति**-"शजरतुल् अतराक" के अनुसार उज्बेक खानने मुसलमान होनेसे पहले आठ साल राज्य किया और मुसलमान होनेके बाद तीस सालतक। लेकिन इस बातमें सदेह है, जैसा कि पहलेके वर्णनसे मालूम है। उज्बेक खानको आठ सालतक काफिर रखनेसे इस लेखकका मतलब यही मालूम होता है, कि कुतुबुद्-दुनिया (जगत्-ध्रुव) महात्मा जगी अताके उत्तराधिकारी महात्मा सैयद अताकी महिमाको बढ़ाया जाय। वह यह भी लिखता है, * कि उज्बेक अपने सारे उलुसके साथ सैयद अताके हाथ मुसलमान हुआ। तबसे किसीके पूछनेपर उसके उलुसके लोग अपने सरदार (बादशाह)के उलुसका नाम लेते हैं, इसीसे उलुसका नाम उज्बेक-उलुस पड़ गया।

१३१४ ई० में ही उज्बेकने बेमुल्कके राजा और कठपुतली खलीफा नासिरके पास मिस्रमें भेंटके साथ पत्र भेजा था, जिसमें उसने लिखा था---"मेरे राज्यमें अब सिर्फ मुसलमान हैं। गद्दीपर बैठते ही मैंने उत्तरी कबीलोंको कह दिया, कि या तो इस्लाम स्वीकार करो या लडाई लो। जिन्होंने स्वीकार नही किया, उन्हें मैंने लड़कर अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया·····।" लेकिन उज्बेकके राज्यमें रूसी भी थे, जो मुसलमान नही हुये, इसलिये उज्बेकके अपने राज्यमे सिर्फ मुसलमानोंके होनेकी बातका यही अर्थ है, कि अब सुदूर उत्तरके थोड़े-से बाशिदोंके सिवाय उसकी सारी एसियाई प्रजा इस्लामको स्वीकार कर चुकी थी।

उज्बेकने इस्लामिक शासकोंके साथ घनिष्ठता स्थापित करनेकी बड़ी कोशिश की। उसने अपनी एक लड़कीका ब्याह मिस्रके शासक मलिक नासिरसे किया था। मुस्लिम इतिहासकारोंका कहना-"वह बड़ा बहादुर और दयालु था", जो उज्बेकके अपने कार्योंसे गलत साबित होता है। उसका राज्य ६०० फरसख (योजन) लबा था, यह ख्वारेज्मसे पोलैन्दकी सीमाकी दूरीसे मालूम है।

(५) **इब्न-बतूता**--मशहूर पर्यटक इब्न-बतूता १३३३ ई० में क्रिमिया होते दश्ते-किपचक (सुवर्ण-ओर्दू भूमि) पहुंचा। वह इस देशके बारेमें लिखता है-"वृक्ष-वनस्पतिहीन मैदान है, जहां न पहाड़ हैं न

* "हर कसे कि अज ईशां मीपुरसद कि ई आयन्दा कीस्त। नाम सरदार व पादशाह खुदारा कि उज्बक बूद, मी-गुफ़्तंद, बदां सबब अजआंजमा मरदुम् आमद मौसूम ब-उज्बक शुदअंद।"
---शजरतुल्-अतराक ग्र० ओ० पृष्ठ २६६।

जंगल। लोग कंडेको ईंधनके तौरपर एस्तेमाल करते है। खानकी राजधानी (सराय) एक चलती-फिरती नगरी है, जिसमे सडके है, मस्जिदे है, भोजनगृह है, जिनका धूआ उनके चलते-फिरते समय ऊपर उठता रहता है। उज्बेक दुनियाके सात बडे राजाओमे है--कन्स्तन्तिनोपोलका तकफीर (सम्राट्), मिस्रका सुल-तान, उभय-ईराकका राजा (इलखान), तुर्किस्तान-अतर्वेदका शासक, भारतका महाराजा और चीनका फगफूर (भगपुत्र, देवपुत्र)।" बतूताने खानके बारेमे लिखा है--"प्रत्येक शुक्रवारको नमाजके बाद खान एक सुनहले चँदवेके नीचे सोने-चादी और कीमती जवाहिरोसे जड़े सिहासनपर बैठता है। उसकी बगलमे उसकी एक-एक तरफ दो-दो चारों बीबिया बैठती है। सिहासनके सामने उसके दो पुत्र खडे होते है--एक दाहिने और एक बाये। खानके सामने उसकी लड़कियां बैठ गई। जब कोई रानी आई तो खानने खड़ा हो उसका हाथ पकड़कर बैठनेका स्थान बतलाया। वह कभी परदा नही करती। इसके बाद बड़े अमीर आये, जो कि सिहासनके दाहिने और बाये कुर्सियोपर बैठते है। उनके बाद खानके भतीजे तथा दूसरे राजवशी शाहजादे खड़े हुये। उसके बाद बड़े अमीरोके पुत्रोने अपने दर्जेके अनुसार स्थान ग्रहण किया। जब सब बैठ गये, तो दूसरे लोग भीतर आकर खानको सलाम करके अपने दर्जेके अनुसार अपनी जगहोंपर जा बैठे। शामकी नमाजके बाद पटरानी लौट चली। उसके पीछे सुंदर-सुदर दासिया और परिचारिकायें चल रही थी। वह गाड़ियोपर बैठी थीं। आगे-आगे सवार और पीछे-पीछे सुदर ममलूक (राजदास) रथका अनुगमन कर रहे थे। सुलतान (खान) की बीबियोंका बहुत भारी सम्मान किया जाता है। उनमेसे प्रत्येकका अलग महल होता था, जिनमे उनके अपने अनुचर और सेवक रहते है। ओर्दूमे आकर हरएक भेट करनेवालेसे आशा की जाती है, कि वह खानकी हर एक रानीके सामने जाकर सम्मान प्रदर्शित करेगा।

बुल्गार नगरी (कजा[illegible]) सुवर्ण-ओर्दूकी दूसरी राजधानी होनेके कारण अपने पुराने वैभवसे वंचित नही हुई। उसकी प्रसिद्धि सुनकर इब्न-बतूता खानके शिविरसे दस दिनके रास्तेको तीन दिनमे पारकर वहां पहुंचा। उसने लिखा है--"यहा रात इतनी छोटी होती थी, कि रात्रिकी नमाज आरम्भ करनेसे पहले बहुत थोड़ा समय मुझे शामकी नमाज पढ़नेके लिये मिला। मध्य-रात्रिके बाद जल्दी ही सुबहकी लाली छा गई।..अधेरेकी भूमि यहासे चालीस दिनके रास्तेपर और उत्तरमे है, जहा कुत्तोंवाली बेपहियेकी गाड़ियोंपर यात्रा की जाती है। सारा रास्ता बर्फसे ढंका रहता है, जिसपर आदमी या जानवरका पैर नही टिकता। कुत्तेका नाखून बर्फमे चुभकर उसे फिसलनेसे रोकता है। इस अधकार-भूमिमें व्यापारी छोड़ कोई दूसरा आदमी नही जाता। व्यापारी सैकड़ों बेपहियेकी गाडियोमे रसद, पानी, ईंधन आदि लेकर जाते है। वहां न वृक्ष है न पत्थर न घोड़े। उनका पथ-प्रदर्शक एक अनुभवी कुत्ता होता है, जिसके लिये हजार दीनार देना पड़ता है। नेता-कुत्तेके खड़ा होते ही सारे कुत्ते खड़े हो जाते है। नेता-कुत्तेका मालिक भी उसे कभी दड नही देता। खानेके समय कुत्तोंको पहले खाना दिया जाता है। वहा व्यापार बदलेन द्वारा होता है। व्यापारी अपने मालको निश्चित स्थान-पर रखकर हट जाते है। दूसरे दिन जानेपर अपने मालकी जगह उन्हे सेबल, एरमिनके मृग-छाले और सिंजाबके समूर मिलते है। वह यदि संतुष्ट हुये, तो ले आते है, नही तो छोड़कर हट आते है, फिर और माल बढ़ाकर रक्खा जाता है। न पसंद आनेपर व्यापारीका माल छोड देते है। व्यापारियोंको भी यह मालूम नहीं है, कि यह देनेवाले कौन है--आदमजाद या राक्षस।"

लम्बे दिनोका वर्णन तेमूरलंगकी विजय-यात्रामे भी आता है। कजान ५६ उत्तरी अक्षाशके पास होनेसे वहा दिन और रातका बहुत अधिक बड़ा होना स्वाभाविक है। यह उस समयके सभ्य जगत्का सीमात नगर था, जिसके बाद साइबेरियाकी जन-जातियोका देश शुरू होता था, जिनके वंशज कोमी और खान्ती आदि अब भी वही रहते है, लेकिन अब वह बतूता और दूसरोके देवदानव नही, बल्कि सभ्य और शिक्षित आदमजाद हैं।

उज्बेकने ग्रीक राजा अन्द्रोनिकसकी लड़की (बेइलुन खातून) से ब्याह किया था। इस ब्याहको रूसके महासंघराज थेओगोनोसने कन्स्तन्तिनोपोल जाकर स्वयं करवाया था। इसी रानीके साथ बतूता उसके बापके घर भी गया था। बतूता बातूसरायसे ख्वारेज्म और अफगानिस्तान होते भारतकी ओर

आया। उसने लिखा है, कि किपचक-तुर्कोका सबसे बड़ा नगर ख्वारेज्म है, जिसपर उज्बेकका शासन है, जिसका अमीर खानके उपराजके तौरपर वहा रहता था। बतूताने ख्वारेज्मकी बड़ी प्रशंसा की है—"ख्वारेज्मियो जैसे संस्कृत और उदार आदमी मैंने कही नही पाये और न उनके-जैसे परदेशीके साथ स्नेह रखनेवाले। अगर कोई मस्जिदमें नमाजके समय अनुपस्थित होता, तो मस्जिदके सामने ही इमाम उसे पीटता। इस कामके लिये हरएक मस्जिदमें एक कोड़ा रहता है।" उज्बेकके इस्लामिक धर्मराज्यका यह अच्छा नमूना है—लोगोसे जबर्दस्ती अल्लाहकी बंदगी करवाई जाती थी। यद्यपि पुराने मुसलमानोंके साथ इस तरहकी कडाई थी और-अपनी प्रजाको उज्बेकने जबर्दस्ती मुसलमान बनाया, लेकिन जहातक ईसाई प्रजाका सम्बन्ध था, वह उनके साथ धर्मान्धता नही दिखलाता था।

१०. दिनीबेग, तिनीबेग, उज्बेक-पुत्र (१३४२ ई०)

उज्बेकके बाद उसका पुत्र दिनीबेग गद्दीपर बैठा। उसके दो और भाई जानीबेग तथा खिज़िरबेग थे। जानीबेगने भाईके खिलाफ विद्रोह किया। लड़ाईमे दिनीबेगकी हार हुई। जानीबेगने उसे पकडकर मार डाला और खुद गद्दीपर बैठ गया। अपने दूसरे भाई खिज़िरबेगसे भी खतरा देखकर उसे भी उसने मरवा दिया।

११. जानीबेग, उज्बेक-पुत्र (१३४२—५७ ई०)

जानीबेगने सोलह साल राज्य किया। बातू-वंशका यह अन्तिम शक्तिशाली खान था। नियम और व्यवस्थाका वह अपने बापकी तरह ही बहुत पाबन्द था। इसीके समय खुलाकू वंशके पतनसे ईरानमे अशाति और अव्यवस्था मची हुई थी, जिसके कारण बहुत से धनीमानी तबरेज सराह, अर्दबील, बेलगान, नखचवान आदि शहरोंको छोड़-छोडकर इधर आ बसे। अभी भी सुवर्ण-ओर्दू केवल एसिया हीतक सीमित नहीं था। १३४३ ई०में खानकी सेनाने पोलैंदपर आक्रमण किया—उसी साल पोलैंद टिड्डियोंका शिकार हो चुका था। लूट-पाट करते हुये किपचकोंने लुबलिन नगरको जा घेरा, लेकिन वह उसे सर नही कर सके।

१३४६ ई०में मास्कोका महाराजुल सिमओन (१३४२—५३ ई०) जानीबेगके दरबारमें पहुंचा। उसने भारी भेंट खान और उसके परिवारके सामने पेश की। जानीबेगने भी प्रसन्न होकर महाराजुलको बहुत उपहार और खलअत दी। लिथुवानिया अब भी ईसाई नही हुआ था। अब भी वहां कुछ पुराने वेदोंकेसे देवताओंकी पूजा होती थी। वहांका राजा ओलगर्द मास्को-महाराजुलका भारी प्रतिद्वंद्वी था। ओलगर्दपर जर्मनोंने आक्रमण शुरू कर दिया। उसने अपने भाई कोरिअदको खानके पास मदद मांगनेके लिये भेजा। सिमओनने चुगली खाई, जिसपर खानने लिथुवानी कुमारको उसके हाथमें दे दिया। उधर महाराजुलका दूसरा प्रतिद्वद्वी पोलैंदका राजा कसिमिर था, जिसने १३३९ ई०में गलिसियाको लेते पडोसके वोल्हुनिया प्रदेशको भी अपने हाथमें कर लिया था। रूसी महाराजुल इसे कैसे पसंद करता? वह सनातनी ईसाई सम्प्रदाय (अर्थोदक्स चर्च) का अनुयायी था और कसिमिर कट्टर रोमन कथलिक। कसिमिर स्लाव ईसाई पादरियोंको अपने धार्मिक रीति-रवाजोंको छुड़ाकर जबर्दस्ती कैथलिक बनाता था। इसके कारण लोग उससे बिगडकर लिथुवानियोंके पक्षपाती हो गये और उन्होंने रूसी महासघराजको भी प्रेरित किया, कि महाराजुल सिमओनको कहकर लिथुवानी कुमार कोरिअदको मुक्त करा दें। इसके लिये उन्होंने मुक्ति-धन भी दिया। महाराजुलने अपने वंशकी राजकुमारी दुलियानाको लिथुवानियाके काफिर राजा ओलगर्दसे इस शर्तके साथ ब्याह दिया, कि उसकी संतान ईसाई बनाई जाये। ओलगर्दने इस प्रकार शक्ति-संचय करके पोलोंको वोल्हुनियासे मार भगाया। १५ फर्वरी १३४७ ई०में जानीबेगने वेनिसियोंके साथ सधि की और उन्हें तानामें बाजारके लिये एक जगह प्रदान की।

(१) **प्लेग महामारी**—१३४५ ई०में एसिया और युरोपके देशोंमें भयंकर काले प्लेगकी महामारी आई थी। इसका आरम्भ चीनमें हुआ था, जहा उससे एक करोड़ तीस लाख आदमी मर गये। कास्पियन समुद्रके दोनों तरफके प्रदेश इस प्लेगके मारे उजाड़ हो गये। तुर्किस्तान, ख्वारेज्म, सराय—सबमें हाहा-

कार मच गया। आरमेनिया, अबखाजिया, चिरकासके लोग, क्रिमियामें बसे यहूदी, गेनोवा और वेनिस-वाले भी तबाह हो गये। आगे वह ग्रीस, सिरिया (शाम) और मिस्रमें भी फैली। गेनोवावाले व्यापारियो-के जहाज उसे अपने साथ इताली, फ्रांस, इंगलैंड और जर्मनीमे ले गये। लंदनमे इसके प्रकोपसे एक कब्रिस्तानमे पचास हजार मुर्दे गाड़े गये। पेरिसके आतकित लोग गुस्सेके मारे यहूदियोका संहार करने-के लिये तैयार हो गये। वह समझते थे, प्लेग लानेवाले यही यहूदी हैं। १३४९ ई० में वह स्कंदनेवियामे पहुंची, फिर प्स्कोफ और नवोग्रादके रूसी नगरोमे भी। प्स्कोफके एक-तिहाई आदमी मर गये, शहरका शहर बीमार हो गया था। पैसा खर्च करनेपर भी धनियोको नर्सें नही मिलती थी। भयके मारे बीमार मां-बापको छोड़ बच्चे भाग जाते थे। लोग बहुत अधिक धार्मिकता दिखलाने लगे थे और धनी लोग धार्मिक कार्योंमें बड़ी उदारतासे खर्च करते थे। उस सालके जाडोंमे प्लेग तो बद हुई, लेकिन उसके बाद पेचिश (हैजा) तथा खूनके कैकी बीमारी शुरू हुई, जिसमे आदमी मुश्किलसे दो-तीन दिन जी पाता। घुमन्तुओपर प्लेगका प्रभाव और भी भयंकर हुआ था।

१३५१ ई०में भारी अकालसे पीड़ित ब्रातिस्लावापर मगोलोने आक्रमण किया। वहाके राजुलने हुगरीके राजा लुईसे मदद मागी और उसकी सहायतासे वह मंगोलोको भगानेमे सफल हुआ—पोल राजा कसिमिरने भी इस समय उसकी सहायता की थी। द्नियेपर नदी अभी भी कुछ समयके लिये मंगोलोके हाथमे थी, लेकिन गेलेसिया पोलोंके हाथमें चली गई थी। लघुरूस (आधुनिक उक्रइन) लियुवानियाके हाथ में तबसे १६वी सदी तक रहा। इस प्रकार लघु-रूसी छिन्न-भिन्न होकर शक्तिहीन हो रहे थे। पडोसी युरोपीय राजाओं तथा मंगोलोंके अत्याचारोंसे पीडित पूर्वी स्लावोंकी सहानुभूति अब और अधिक मास्कोकी ओर होती जा रही थी। इसके दो परिणाम हुये—(१) कितने ही लोगों ने द्नियेपर और दोनके तटपर जा घुमन्तू राज्यके रूपमें वहां अपने जापोरोशियान और दोन कशाकके दो गणराज्य स्थापित किये, और (२) दूसरे लोगोंने हुंगरीके रोमन कैथलिकोके अत्याचारसे भागकर पहिले मंगोलोंकी भूमिमें, फिर वहा भी पीड़ित होनेके बाद मोल्दाविया और वलाचियामें जाकर अपनी रियासते कायम की।

मास्कोके महाराजुल सिमओनने अब पहली बार "सर्वरूसमहाराजुल" की उपाधि धारण की। १३५३ ई० में उसके मरनेके बाद उसके भाई इवानको जानीबेगने उसका उत्तराधिकारी बनाया।

१३५५ ई०में ईरानके इलखान-वंशका नाश हो चुका था। इससे फायदा उठाकर सेनापति चोबान तेमूरताशके पुत्र मलिक अशरफने आजुरबाईजानपर अधिकार कर लिया। मलिक अशरफके अत्या-चारोसे लोग परेशान हो देश छोड़कर भागने लगे। ख्वाजा शेख कही (कुजी) शीराजकी ओर भागा और वहासे फिर शामको। दूसरे प्रसिद्ध सत ख्वाजा सदरुद्दीन अर्दबेली ने गेलानका रास्ता लिया। काजी मोहीउद्दीन बुरदइ सरायबरका भागा और वहा अपने उपदेशोंके लिये मशहूर हुआ। उसके उपदेशोमें जानीबेग भी शामिल होता था। उस वक्तकी मलिक अशरफ गरदी (राक्षसी) का बड़ा साफ चित्र शेखशादीने खीचा था, जिसे "तारीख शेख-उवेस" (ज० ओ० पृष्ठ २३०) के लेखकने उद्धृत किया है—"ईरानसे ..चगताइ देशमें जा उसने उस देशको अपने अधीन किया। कुछ समय अपनी जगह रही। फिर कहते है, तीन रोजसे अधिक कहीं नही बैठी और तरक नदी पार हो दरबन्द आई। वहांसे शिरवान पहुँची। उसने अपना एलची मलिक अशरफके पास भेजकर कहलवाया कि मैं खुलाकूके उलुसको जब्त करनेके लिये आ रही हूँ, तू चोबानका पुत्र है, जिसका नाम चारों उलुसोंमें तथा यारलिकमें था। अब तीन उलुस मेरे हुकूममें हैं। मैं चाहती हूं, कि जूजी (तूती) के उलुसका अमीर तुझे बनाऊं, इसलिये खड़ा हो जा और मेरा स्वागत कर।' मलिक अशरफने जवाब दिया—'हे उलुस-बरकाके बादशाह, मेरा सम्बन्ध अबका (हलाकू-पुत्र) के उलुससे नही है। यहांका बादशाह गजन है, जिसके अमीरका पद मेरे पास है।"

(२) **ईरानपर आक्रमण**—मोहीउद्दीनन एक दिन अपने उपदेशके बीचमें तबरेज और मलिक अशरफ-के अत्याचारोंका ऐसे शब्दोमें चित्रण किया, कि श्रोता रोने लगे, जानीबेग स्वयं रो पड़ा। मोहीउद्दीनने यह भी कहा, कि बादशाहको हस्तावलम्ब देना चाहिये, जिसमें प्रजाके ऊपर होते इन अत्याचारोंका

अन्त हो। अगर बादशाह ऐसा नही करता, तो कयामतके दिन अल्लाह उससे जवाब तलब करेगा। जानीबेगके मनमें बातके समानेके लिये मोहीउद्दीनके उपदेशसे भी ज्यादा ईरानके समृद्ध राज्यका लोभ था।

जानीबेगने एक महीनेमें सौ तुमान (दस लाख) सेना तैयार कर ली और वह सन् ७५८ हिजरीमें (२५ दिसम्बर १३५६ ई०--१३ दिसम्बर १३५७ ई०) तबरेजकी ओर रवाना हुआ। कुरा नदी पार करनेकी खबर मलिक अशरफके पास पहुची, तो पहले उसने इसपर विश्वास नही किया, फिर अपने सैनिकोको जमा किया। लेकिन उसके अत्याचारोंके कारण लोग अब उसकी आगमें कूदनेके लिये तैयार नही थे। वह शम्बेगाजानी पहुंचा। इससे पहले उसने अपनी खातूनो (रानियो), लड़कियों, खज़ाने, सोना-चांदी और जवाहर तथा दूसरी चीजोको आलिंजकके किलेमें भेज दिया था, जिन्हे उसने चार सौ ऊंटो और हजार खजानेके ऊटोंपर लदवाकर मगवा लिया। शम्बेगाजानीमें बहुतसे लोग जमा हुये थे, जिनसे एक बडी सेना तैयार करके उसने कूजानकी ओर भेजा। फिर खबर मिली, कि बादशाह जानीबेग अर्दबील पहुच गया। लोग कह रहे थे---बादशाहके फौजकी रिकाब लकड़ोकी हैं, उसके घोडोकी लगामें रस्सियोकी है।

जानीबेगके बारेमे पहुचती इन खबरोंको सुनकर मलिक अशरफ बहुत डर गया। उसने ख्वाजा लूलू साजलू और ख्वाजा शकर खाजिन (कोषाध्यक्ष) को बुलाकर कहा--"खातूनो (रानियो) और खजानोंको लेकर ख्वाजा रशीदके चश्मेपर पहुचाओ और वहां मेरा इन्तजार करो। मैं उजान जा रहा हू। अगर मनोरथ सफल हुआ, तो तबरेज आना। अगर बात उल्टी हुई, तो खुईकी ओर जाना, मैं वहां आकर मिल जाऊंगा।" उन्हे भेजकर वह खुद उजानकी ओर रवाना हुआ। पहले दिन मेहरानरूद नदीके तटपर मुमताबादमे डेरा डाल उसने दो दिन विश्राम किया। कितने ही अमीर, जो सावाकी ओर चले गये थे, यहां मलिक अशरफके पास आ गये। उसने उन्हे सोना, घोड़ा, हथियार आदि देकर रवाना किया। अखीजूक सेनप भी उनमेंसे था, जो अगले दिन कूच करके सईदाबाद (अबदाबाद) गया। उसने वहां लोगोंसे सैनिकोंके लिये अपने घरोंको खाली कर देनेके लिये कहा। उसके नौकरोंमें दो हजार मर्द थे। वह खाने-पीने-रहनेकी तैयारी कर रहे थे, तभी जबर्दस्त आंधी-पानी आई।

उजानमें अशरफके भेजे हुये सैनिक एकत्रित हो गये थे, इसी समय जानीबेग सराहकी ओरसे आ पहुंचा। विरोधी सेनाको देखकर उसने हुकुम दिया, कि छिङ-गिस्के शिकार खेलकी तरह इन्हे चारों ओरसे घेर लो। अशरफके अमीरोंने जब यह हालत देखी, तो वह अपनी जान लेकर भाग निकले। मलिक अशरफ अब भी सईदाबादके पुश्तेपर खड़ा था। इसी समय शेख जलकी (बालखजी) ने उसके कानमें कुछ कहा। उसने समझ लिया, कि लड़नेमें कोई फ़ायदा नहीं और वह तबरेजकी ओर भाग चला। उस रात वह शम्बेगाजानीमे ठहरा, फिर सबेरे अपनी खातूनोंके साथ खजानेको लिये रवाना हुआ। लेकिन खजानेपर उसके रखवाले ही हाथ साफ करने लगे। खातूनें भी इधर-उधर बिखर गईं। मलिक अशरफ यह हालत देखकर खुईकी ओर चला। महम्मद बालखजीका घर इसी इलाकेमें था। उसने एक ओर मलिक अशरफका स्वागत करते हुये अपने घरमें उसे ले जाकर ठहराया और दूसरी ओर जानीबेगके पास इसकी खबर भेज दी। जानीबेगने अमीर बयासको इस कामके लिये भेजा, लेकिन घरको घेरकर ढूंढनेपर अशरफ वहां नही मिला। इसपर अमीर बयास और उसके साथी ख्वाजा महमूदने लोगोंकी सभी चीजें जब्त कर ली। फिर अमीर बयास मलिक अशरफको पकड़नेके लिये तबरेज गया। सड़कसे गुजरते वक्त लोगोने उसके ऊपर राख फेंककर बड़ी बेइज्जती की, और उसे ख्वाजा शेख कुजीकी मां मोवैयदबेके घर ले गये। अमीर काऊस शिरवानी वहां मौजूद था। मौलाना मोहीउद्दीन बेरदईके हाथको चूमकर अशरफ रोने लगा। काऊसने उसे ढारस दिया। इसके बाद उसे बादशाह जानीबेगके पास ले गये। बादशाहने पूछा--"इस देशको तूने क्यों बरबाद किया?" उसने जवाब दिया--"नौकरोंने बरबाद किया, उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।"

बादशाह जानीबेग उजानसे हश्तरूद (अष्टनद) की ओर रवाना हो क्युकू (कूकौ) के नजदीक पहुंच वहांसे लौट पड़ा। उस साल लोगोंने खेती बहुत की थी। जब यह बड़ी सेना उधरसे गुजरी, तो

खेतोंमे एक बाल भी न रह गई। कविके कथनानुसार "ज़ालिम गया और उसका ज़ुल्मका कायदा रह गया। आदिल गया और उसके नेक नामकी याद रह गई।"

जानीबेगने चाहा, कि मलिक अशरफको मृत्यु-दड न दे अपने साथ अपने देश ले जाये, लेकिन काऊस और काजी मोहीउद्दीनने बतलाया—"अगर वह जिदा रहेगा, तो इस मुल्कके लोग कभी चैनसे नहीं रह सकेगे।" जानीबेगको उनकी सलाह माननी पड़ी। मलिक अशरफको घोडेसे नीचे उतारते समय उसकी दोनों तरफ तलवारे खडी कर दी गई, जो उसकी बगलो में घुस गईं। उसके शिरको काटकर तबरेज ले जा मस्जिद-मरागियानके दरवाजे पर टाग दिया गया। तबरेज-निवासी खुशी मनाते दान-पुण्य करने लगे। जानीबेग दस हजार सवारोके साथ वहा दौलतखाना मे उतरा। एक रात रहकर सबेरेकी नमाज उसने मस्जिद ख्वाजा अलीशाहमे पढ़ी। उसके साथ आये हुये सैनिक सड़कों और नदियोके किनारे ठहरे थे। इनमेसे कोई किसी मुसलमानके घरमे नही घुसा।

अशरफकी लोलुपतापर एक पद्य मशहूर है—

"देखो कैसे अशरफ गदहा अपने भाग्यको उघाड़ रहा है।

अपने लिये मृत्यु और जानीबेगके लिये अपना सोना बटोरता॥"

इस प्रकार १३ सालमे अशरफने ज़ुल्म और अत्याचार करके जो खजाना जमा किया था, उसे जानीबेग ले गया।

ईरानमें इस प्रकार व्यवस्था कायम कर जानीबेग अपने बडे बेटे बरदीबेगको पचास हज़ार सेना देकर वहाका शासक नियुक्त कर अली अशरफकी लड़की सुलतानबख्त और उसके पुत्र तेमूर-ताशको साथ ले किपचकभूमि लौटा। महमूद दीवानने बड़ा महोत्सव मनाते बरदीबेगको तब्रेजके तख्तपर बैठाया। अमीर जारुकके पुत्र सराय तेमूरको वजीर बना महमूद भी जानीबेगके पीछे-पीछे रवाना हो गया।

जानीबेग लौटकर बीमार पड़ गया। मरणासन्न देखकर उसके खैरखाहोंने बरदीबेगके पास इसकी खबर भेजी। बरदीबेग जानता था, कि तब्रेजका तख्त किसी समय भी हमारे हाथसे छिन जायेगा, इसलिये तथा सबसे बड़ा पुत्र होनेके ख्यालसे भी वह तब्रेजसे जल्दी-जल्दी दरबन्दकी ओर रवाना हुआ और दस सेवकोंके साथ आधी रातको चुपचाप तुगलुबाईके घरपर पहुंचा। संयोग ऐसा हुआ, कि जानीबेग बीमारी से अच्छा हो गया और उसे खबर मिली, कि बरदीबेग आ गया है। उसने तोगाय तुबलु खातूनसे इसके बारेमें पूछा। खातूनने बेटेकी मुहब्बतसे झूठ बोल दिया। जानीबेगने तुबलुबाईको एकान्तमें बुलाकर चाहा कि उससे भेद लें। तुबलुबाई झूठ बोल बाहर आ बरदीकी सलाहसे उसी समय लोगोंको लेकर भीतर घुसा, और एक फर्राश द्वारा जानीबेग खानको २१ जुलाई १३५७ ई० को उसके बिस्तरेपर मरवा डाला।

रूसी उसे "भला" जानीबेग कहते थे, जिससे मालूम होता है, कि रूसियोके साथ उसका बर्ताव अच्छा रहा। इसका यह भी अर्थ है, कि मास्कोके महाराजुलोंको अपनी शक्ति बढाने और सारी रूसी जातिको एकताबद्ध करनेके मनसूबेमें जानीबेगकी ओरसे कोई बाधा नहीं हुई। जानीबेगके सिक्के १३४० से १३५७ ई० तकके मिलते हैं, जो सराय गुलिस्ता, नई सराय, नयागुलिस्तां, नया ओर्दू, ख्वारेज्म, मोक्सी, बरचिन और तब्रेजकी टकसालोंमें ढाले गये थे।

जानीबेगके इस्लामप्रेमको मुस्लिम इतिहासकारोंने स्वीकार किया है। उज्बेकके मरनेके चदही महीने बाद गद्दी संभालते उसने अपने बापके कामको आगे बढ़ाया और सारे उज्बेक-उलुसको मुसलमान बनाया, तमाम बौद्ध मंदिरो (बुत-खानों) को धराशायी कराया, बहुत-सी मस्जिदों और मदरसों को बनवा मुसलमानोके फायदेके लिये सभी तरहकी बातें की। चारों तरफसे मौलवी और विद्वान् उसके यहां आते थे। दश्ते-किपचकके अमीरोंके पुत्र इस समय बहुत विद्याव्यसनी हो गये थे। अनुनीम अस-कन्दरके अनुसार "उनकी महिमा आज भी मजलिसों और महफिलोमें गाई जाती है, और उस मुल्कका हरएक रस्म-रवाज इस्लामी देशोंके बाशिन्दों जैसा है।"

१२. बरदीबेग जानी-पुत्र (१३५७-५९ ई०)

बरदीने अपने बापको ही मरवाकर सतोष नहीं किया, बल्कि जिस बिस्तरेपर वह मारा गया था, उसीपर उसने बापके घातक फर्राशको बैठा आज्ञा माननेसे इन्कारियोको मरवाने का इरादा किया। तुगलुबाईने उसकी बातको पसन्द किया और आज्ञा स्वीकार करानेके बहाने वह सारे ही बारह शाह-जादोंको वहा जमा करवा मरवाने लगा। बरदीका आठ महीनेका एक सहोदर भाई था। तायदोलू खातूनने उसे गोदमे लिये आकर बहुत मिन्नत की, कि इस मासूम बच्चेको क्षमा कर दे। बेरदीबेगने उसे हाथसे छीन जमीनपर पटककर वही मार दिया। उसने तीन साल तक दृढ़तापूर्वक शासन किया।

जहातक रूसी राजुलोका सम्बन्ध है, महाराजुल इवान (मास्को), राजुल वासिली (त्वेर), उसके भतीजे व्सेवोलोद (खोल्म) के पदोके लिये बरदीबेगने अपनी स्वीकृति दी।

१३५९ ई० में मास्कोका महाराजुल इवान मर गया, इसी साल किलदीबेग (कुलफा) ने बरदीबेगको कत्ल कर दिया।

१३. किलदीबेग, कुलफा (१३५९ ई०....)

किलदीबेगने बरदीबेगके कत्लके साथ उसके शुरू किये वशोच्छेदके कामको पूरा कर दिया। अब कोक (सुवर्ण)-ओर्दू राजवंशका एक भी नामलेवा नही रह गया। सारे ओर्दू में गड़बड़ी मच गई। अमीरोंने अधिकारको अपने हाथमें रखनेके लिये बेरदीबेगके हत्यारेको जानीबेगका पुत्र कहकर गद्दीपर बैठाया। हर अमीर अपनी शक्तिको बढ़ानेके लिये पीठ पीछे षड्यत्र रच रहा था। इसी षड्यत्रमें अमीर यर्गाल-बुगा, अमीर अहमद और अमीर नाङ-गू-दाई निर्वासित हुये। इसी समय सरकारके एक बड़े अधि-कारी नग्लसबाई (?) ने किलदीबेगको मार एक दूसरे आदमीको गद्दीपर बैठाया, जो कि तीन रोज बाद मारा गया।

१४. नौरोजबेग, १५. चेरकेसबेग (१३७४ ई०)

ये दोनों भी इसी तरह कुछ दिनोके लिये सिंहासनपर बैठे। फिर कोक (सुवर्ण) ओर्दूके अमीरोंने श्वेतओर्दूके खान चिमताईके पास जा गद्दी संभालनेके लिये बहुत निमंत्रण और आवेदन किया, लेकिन उसने उसे न स्वीकार कर अपने भाई ओर्दाशेखको भेजा।

१६. ओर्दाशेख

श्वेत-ओर्दूका यह राजकुमार बातूके सिंहासनपर बहुत दिनोंतक नहीं टिक सका। किसीने "कैसे ओक-ओर्दूके सिंहासनपर अक-ओर्दूका आदमी बैठेगा" कह एक रात तलवारसे ओर्दाशेखका काम तमाम कर दिया। इसपर अमीरोने कुछ बेगुनाह आदमियोंके ऊपर अपराध लगाकर मरवाया।

१७. खिजिर ससीबूगा-पुत्र

अब ओर्दाशेखके भाई खिजिर ओगलानको गद्दीपर बैठाया गया, जो भी नौ महीना राज्य करनेके बाद खतम हुआ।

आगे इतिहासकार अनुनीम अस्कन्दरने निम्न खानोंका होना बतलाया है—

१८. कुलफा, ससीबूगा-पुत्र

खिजिरके एक साल भी बादशाही न करके मर जानेके बाद उसके भाई कुलफाको गद्दीपर बैठाकर नौ महीने बाद उसे भी कत्ल कर दिया गया।

१९. तेमूरखोजा, ओर्दाशेख-पुत्र

फिर तेमूरखोजा अमीरोंका खिलौना बना। वह बड़ा ही व्यभिचारी निकला। लोग दो साल तक उसे बर्दाश्त करते रहे। एक रात किसी स्त्री के साथ बलात्कार करनेके लिये घरमे घुसा देख, पतिने अनजाने ही उसे तलवारके घाट उतार दिया।

२०. मुरीद ओर्दाशेख-पुत्र

इसने तीन सालतक राज्य किया, लेकिन अब इन खानोमें बदचलनी विशेषकर अप्राकृतिक व्यभिचारका मर्ज बहुत फैल गया था। अपने अमीरुल्-उमरा (अमीरोंके अमीर) मोगलबक-पुत्र इलियासके सुंदर लड़केपर मुग्ध हो मुरीदने चाहा, कि बापको मारकर उसका स्थान बेटेको दे दे। यह भेद मुरीद-खानकी खातूनको मालूम हो गया। उसने ईर्ष्या या बेवकूफीसे यह खबर इलियासके पास भेज दी। उसने अवसर न दे खानको ही मार डाला।

२१. अजीज तेमूरखोजा-पुत्र

इसकी आदत भी अपने पूर्वगामियों जैसी थी और इसने प्रसिद्ध संत सैयद अताके वंशवाले एक लडकेको भ्रष्ट किया। भेद खुलनेपर पश्चात्ताप करके उस लड़केसे इसने अपनी लड़की ब्याह दी; लेकिन तीन साल बाद फिर वही चाल चलने लगा, जिसके कारण उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा।

२२. हाजी खां एर्जन-पुत्र

श्वेत-ओर्दूके खान एर्जन (१३१९-४४ ई०) के पुत्रको अब बलिका बकरा बनानेके लिये लाया गया। वह कुछ दिनों तक अच्छा रहा, फिर खानदानी बदचलनी का भूत इसके सिरपर भी सवार हुआ। एक बार तोबा की, लेकिन फिर वही रफ्तारे-बेढंगी। अन्तमें वह आधी रातको अपने सोनेके वस्त्रोंमें ही मार डाला गया।

अनुनीम अस्कन्दरके अनुसार हिजरी सन् ७५१* से ७६५ के बारह सालोंमे आठ बादशाह हुये। इसके बाद श्वेत-ओर्दूके खान उरुसखानने श्वेत-ओर्दू और कोक-ओर्दूको इकट्ठा करके शासन करना शुरू किया, जिसका परिणाम तोकतामिशके रूपमें एक बार जू-छिके वंशका चरम उत्कर्ष तथा तेमूर-लगके प्रहारके कारण उसका सत्यानाश हुआ।

सुवर्ण (कोक)-ओर्दूके रूपमें मंगोल-शक्ति आधे युरोपतक छा गई। रूसके तो सभी शासक उसके अधीन दाससे थे। यद्यपि मंगोलोने अपने इन अधीन लोगोपर बहुत अत्याचार किये, लेकिन तब्रेज और दूसरी जगहोंके निर्मम हत्याकांडोंके सामने वह कुछ नही थे। मगोलोके शासनके साथ ही वाणिज्य और शिल्पकी बड़ी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जहां मंगोल शासकोंको बहुत लाभ हुआ, वहां मास्कोको आगे बढ़नेका मौका मिला और धीरे-धीरे पुरानी बुल्गार नगरीका स्थान मास्कोने ले लिया। व्यापार द्वारा प्राप्त प्रचुर धन-राशिके बलपर मास्कोके महाराजुलोने सुवर्ण-ओर्दूके खानोको अपने वशमें कर अपनी शक्ति बढ़ाई, रूसका एकीकरण करना शुरू किया और अन्तमें रूसकी शक्तिके उत्कर्ष तथा जू-छि-वंशके आंतरिक कलहके कारण सुवर्ण-ओर्दूका अस्तित्व खतम हो गया। इसी कालमें मास्कोके महाराजुलोंने खानकी ओरसे कर उगाहनेका अधिकार पा अपनी ओरसे इस कामपर अपने अधीनस्थ बायरोको लगाया—रूसी प्रजा अब बायर, महाराजुल और खान तीनोंके उत्पीड़न तथा शोषणके नीचे दबकर कराहने लगी। उसका स्वतंत्रता-प्रेम और जनतात्रिकताकी भावना लुप्त हो चली, और अत्याचारके मारे कितने ही रूसी भाग-भागकर दूसरी जगहोमे जाकर बसने लगे।

* ७५१ हि० (११मार्च १३५०–२७फर्वरी १३५१ ई०), ७६५ हि० (१०अक्तूबर–२७ सितंबर १३६३ ई०)

सुवर्ण-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष
(१२२४–१३७४ ई०)

अध्याय ३
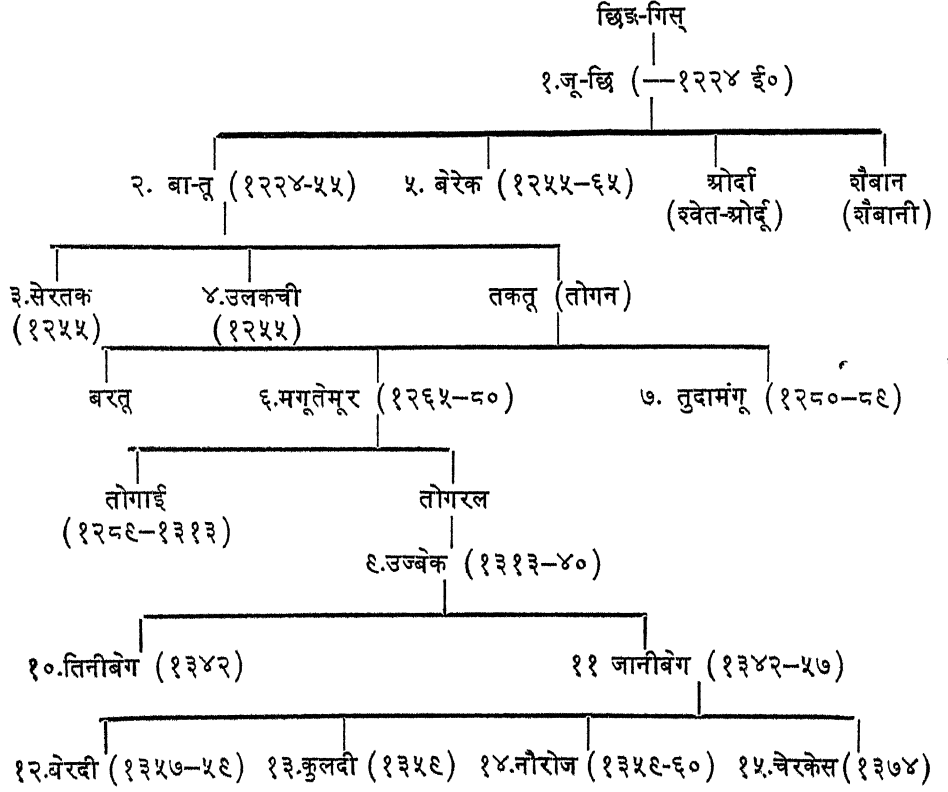
श्वेत-ओर्दू

(१२२४-१४२५ ई०)

१. जू-छि (तू-शी) खान

छिङ-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके बारेमे हम पहले बतला चुके हैं। उसके मरनेके बाद उसका सिंहासन ज्येष्ठ पुत्र ओरदाको न मिलकर बा-तूको मिला। ओरदाको बापके राज्यका पूर्वी भाग मिला, लेकिन उसने अपने वंशको बा-तूके सिंहासनके अधीन माना। ओरदाका उलुस श्वेत-ओर्दू (अक-ओर्दू) नामसे प्रसिद्ध हुआ, जिसके खान निम्न प्रकार थे :—

		काल
१.	जू-छि, छिङ्-गिस्-पुत्र	–१२२४ ई०
२.	ओरदा जू-छि-पुत्र	१२२४ ,,
३.	कोनिचि ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र	–१३०१ ,,
४.	बायन कोनिचि-पुत्र	१३०१ ,,
५.	ससीबूगा बायन-पुत्र	१३६६ ,,
६.	एर्जन ससीबूगा-पुत्र	१३६६–४४ ,,
७.	मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र	१३४४ ,,
८.	चिमतई एर्जन-पुत्र	१३४४–१३६१ ,,
९.	उरुस चिमतई-पुत्र	१३६१–७० ,,
१०.	तोकताकिया उरुस-पुत्र	१३७० ,,
११.	तेमूरबेग उरुस-पुत्र	१३७०–७५ ,,
१२.	तोकतामिश तुलि-पुत्र	१३७५–९७ ,,
१३.	नूजी ओगलान	१३९५
१४.	तेमूरकुतुलुक, तेमूरबेग-पुत्र	१३९५–१४०० ,,
१५.	शादीबेग, तेमूरबेग-पुत्र	१४००–८ ,,
१६.	पूलाद तेमूरबेग-पुत्र	१४०८–१० ,,
१७.	तेमूर कुतुलुक-पुत्र	–१४११ ,,
१८.	जलालुद्दीन तोकतामिश-पुत्र	१४११–१२ ,,
१९.	करीमबरदी तोकतामिश-पुत्र	१४१२–
२०.	कपक, किब्रेक	......
२१.	चिङ-गिज	१४१७ ,,
२२.	जब्बारबरदी तोकतामिश-पुत्र	,,
२३.	मुहम्मद	१४२२–३८ ,,
२४.	बोराक, बुराक, बुर्राक	१४२५–२८ ,,
२५.	सैयत अहमद	....
२६.	दरबीस	....
२७.	किबेक	–१४२२
२८.	उलुग मोहम्मद	१४३७

२. ओरदा, एसन, एछन जू-छि-पुत्र (१२२४–)

ओरदाके राज्यके भीतर सिगनाक, तरस, उतरार जैसे प्रसिद्ध वाणिज्य-नगर थे। इसके ओर्दूके दक्षिण और दक्षिण-पूर्वमें चगताई, पूर्वमे ओगोताई तथा पश्चिममें बा-तूका ओर्दू था, जिसका कि यह अंग माना जाता था। उत्तरमे वह साइबेरियाके भीतरतक घुसा हुआ था। ओरदाका ओर्दू (पशुपाल सैनिक परिवार-समूह) गर्मियां बलकाश समुद्रके पासकी चरागाहोमे बिताता और जाड़ोमें सिर नदीपर चला आता था। ओरदाका पुत्र कूली खुलाकूके ईरान-विजयमें शामिल होनेके लिये ख्वारेज्मसे दहिस्तान और माजदरान गया था।

३. कोनिचि, कोची ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र (–१३०१ ई०)

मंगोल इतिहासकर रशीदुद्दीन*(१२४७–१३१७ ई०) के अनुसार यह ओरदा (श्वेत) उलुसका बहुत समयतक शासक रहा। अरगून खान (१२८४–९२ ई०) और गजनखान (१२९५–१३०४ ई०) के साथ इसका बहुत अच्छा सम्बन्ध था और उनसे सौगातो और दूतोका आदाना-प्रदान होता था। कोनिचि असाधारण मोटा था, कोई घोड़ा उसे ढो नही सकता था, इसलिये वह गाड़ी पर एक जगहसे दूसरी जगह जाता था। इसके पुत्रोंमें मुख्य चार थे—बायन, बचकरतइ, चगुनबुका, मकुदई। मारको पोलोने इसके बारेमें लिखा है :—

"सुदूर उत्तरमें एक खान है, जिसका नाम कोनिचि है। वह तारतार (मंगोल) है और उसके सारे लोग तारतार है, जो नियमपूर्वक तारतार धर्मको मानते है। यह बड़ा ही पाशविक धर्म है, लेकिन वह उसका उसी तरह पालन करते हैं, जैसे कि छिङ-गिस् और दूसरे मुख्य तारतार। खान किसीके अधीन नही है, यद्यपि वह छिङ-गिस् खानके शाही वंशका तथा महान् कआन (कुबिले खान) का नजदीकी संबंधी है। इस खानके पास न नगर है न महल। वह और उसके लोग सदा या तो खुले मैदानोंमें रहते है या बड़े पहाड़ों और उपत्यकाओंमे। वह अपने जानवरोंके दूध और मासपैर गुजारा करते हैं। उनके पास अनाज नहीं होता। खानके पास बहुसंख्यक लोग है, लेकिन वह किसीके साथ युद्ध नहीं करता। उसकी प्रजा बड़ी शातिसे रहती है। उनके पास भारी संख्या में पशु—ऊंट, घोड़े, बैल, गाय, भेडे आदि हैं।

"उनके देशमें तुम्हे बीस मुट्ठीसे अधिक लम्बे तथा बिल्कुल सफेद विशालकाय भालू मिलेंगे। वहां बड़ी-बड़ी काली लोमड़िया, जंगली गदहे और भारी संख्यामें सेबल होते हैं। यही सेबल वह जन्तु हैं, जिनके चमड़ेकी बहुमूल्य पोशाक बनती है, एक-एकका दाम हजार बेजंत (सिक्के) होते है। वहापर वेयर (समूरी जतु) भी बहुतायतसे होते है और फरऊनी चूहे भी। इन्हीके शिकारपर लोग सारी गर्मियां जीते हैं। वस्तुतः वहा सब तरहके जंगली जानवर बहुतायतसे होते हैं, क्योंकि उनका देश बहुत दुर्गम और वन्य है।

"इस खानका देश ऐसा है, जहां घोड़े नहीं जा सकते, क्योंकि वहांपर बहुतायतसे झीलें और चश्मे हैं, साथ ही बहुत बर्फ, कीचड़ और दलदल भी है, जिसपर घोड़े नहीं चल सकते। यह कठिन मुल्क तेरह दिनोंके रास्तेतक फैला हुआ है। हर दिनकी यात्राके बाद एक टिकान है, जहांपर कि सब तरहका इंतिजाम है। प्रत्येक टिकानपर घर बने हुये हैं, जिनमें चालीस कुत्ते तैयार रहते हैं। यह कुत्ते आकारमें गदहोंसे कम नही होते। यही कुत्ते एक टिकानसे दूसरी टिकानतक सवारी-गाड़ियोंको खींचते हैं। इनकी गाड़ियां बिना पहियेकी होती हैं।..गाड़ीके ऊपर भालूका चमड़ा रखकर सवार बैठ जाता है। हरेक गाडीको ६ कुत्ते खींचते हैं।..कुत्तोंका कोई कोचवान नहीं होता।..अगली टिकानपर नये कुत्ते और गाड़ी तैयार मिलती हैं।..

---

* "जाम-उत्-तवारीख" ज़० ओ० पृष्ठ ४२

"तेरह दिनकी यात्राके अन्तपर आसपासके पहाड़ो और उपत्यकाओ के रहनेवाले लोग बड़े शिकारी होते हैं। वह उन बहुमूल्य छोटे-छोटे जन्तुओंको पकड़ते हैं, जिनसे कि उनको भारी लाभ होता है। यह जन्तु है--सेबल, एरमिन, वेयर, एरकुलिन, काली लोमड़ी तथा और बहुत-से प्राणी। इन्हीके चमड़ोंका बहुमूल्य समूर बनाया जाता है। शिकारी जाल इस्तेमाल करते है..। उस प्रदेशमे सर्दी इतनी अधिक है, कि लोगोके सारे निवास धरतीके भीतर होते हैं, वह सदा भूधरे हीमें रहते है।"[1]

मार्को पोलोने यहां जिस देशका वर्णन किया है, वह साइबेरिया है, इसमे सन्देह नही। उसे यह खबर कुबिलेके दरबारमे गये कोनिचिके दूतमंडलसे मिली होगी।

इतिहासकार अबुल्-फेदाके अनुसार कोनिचि बामियान और गजनी तथा कुछ काबुलके पासवाले प्रदेशोका भी शासक था। खुलाकूके ईरान-विजयके समय उसकी मददके लिये आये अक-ओर्दूवालोने यह स्थान अपने हाथमे कर लिये थे, इस प्रकार अक-ओर्दूका यह दक्षिणी भाग उत्तरी भागसे बिल्कुल अलग-थलग था, बीचमें चगताई-वशकी भूमि थी। ओरदा-पुत्र कुलीने खुलाकूकी मदद करते समय अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिमवाले इस प्रदेशपर अपना शासन स्थापित करके भी उसे श्वेत-ओर्दूके अधीन ही रखा। खुलाकूको पीछे कुलीसे इतना भय लगा, कि उसने उसे जहर दिलवा दिया।

१२९३ ई० मे कोनिचि (कुबी) का दूतमंडल इलखान (ईरानी शासक) जयखातूके दरबारमे आया था। कोनिचि हिजरी सन् ७०१ (१३०१-१३०२ ई०) मे मरा।

४. बायन कोनिचि-पुत्र (१३०१-९..)

बायनको पिताका राज्य कुछ संघर्षके बाद मिला। शायद इसे उत्तरवाला भाग ही मिला, बामियान-गजनाको उसके भाई कुबलुक (क्यूलुक) ने ले लिया। बायनके हाथमें यह दक्षिणी भाग न जाने पाये, इसके लिये चगताई खान दावा और ओगोताइखान कैदूने भी कुबुलुककी मदद की थी। बायनका दूसरा भाई मङ-ताई था। इसकी बीबी नुकुलुन खातून प्रभावशाली कंकुरत कबीलेकी थी। पिताके मरनेपर मगोल प्रथाके अनुसार तीन सौतेली माये तरकुजिन, जिकथुन् और अलताचू भी इसकी बीबिया बनीं। इन चारोके अतिरिक्त उसकी तीन और बीबियोंका भी पता लगता है। श्वेत-ओर्दूका दूसरा खानजादा-कुतुकू-पौत्र, तेमूरबूका-पुत्र कुबुलुक (कोबलेक, क्यूलुक) से बायनका जबर्दस्त संघर्ष रहा। १३०९ ई० में कुबुलुकने दक्षिणी राज्य (बामियान-गजना) छीना था। थोड़े दिनो बाद बायनने फिर उसपर अधिकार कर लिया। कैदू और दावा कुबलुककी पीठपर थे और बायनका राज्यकेंद्र चगताई राज्यके पार दूर पड़ता था, तो भी ख्वारेज्मसे इलखानके इलाकामें होते श्वेत-ओर्दूकी सेनाये गजनी पहुंच सकती थी। सुवर्ण-ओर्दूके साथ बायनका बहुत अच्छा संबंध था, लेकिन तोगताइ खान नोगाइकी लडाइयोमे फंसे होनेसे कोई बड़ी मदद करनेमे असमर्थ था। बायनने इलखान गजनको मदद देनेके लिये लिखा, और उसने मदद भी दी। समकालीन इतिहासकार रशीदुद्दीन लिखता है--"हमारे काल में अठारह बार बायनने कुबुलुकसे लड़ाई की।" कुबुलुकके साथ हो कैदू और दावाकी भी सेनायें लडती रही। कैदूके मरनेके बाद जब उसका पुत्र चापर ओगोदाइ-उलुसका खान बना, तो तोगताईने उसे कई बार लिखा, कि दावा खानको कुबुलुककी मदद करनेसे रोको, लेकिन बापकी तरह वह भी कुबुलुककी पीठपर था। उसने जवाब दिया--"गजनसे लड़ते समय कुबुलुकने हमारी सहायता की, इसलिये हम उसकी मदद करते हैं।" हिजरी सन् ७०२[2] में बायनने अपने बापके समयके अमीर केलस तथा तुकतेमूरके नेतृत्वमें एक बड़ी भेट भेज, गजनको कहलवाया कि हम चापर और दावाके विरुद्ध लड़ने जा रहे हैं, तोगताई खान हमारा सहायक है। उसने दो तुमान (बीस हजार) सेना हमारे पास भेजी। सेना आगे बढ़ी, लेकिन कैदू और चगताईके उलुसोंने बीच में पड़कर कआनकी सेनासे उसे

१. यूल-सम्पादित मार्को पोलो २. ४१०-१२ । २. २६ अगस्त १३०२--१४ जुलाई १३०३ ई०।

मिलने नहीं दिया। कुबुलुकने उनकी सहायतासे हमारा कुछ इलाका छीन लिया। ओरदा-उलुसका अधिक भाग हमारे साथ है, आदमियोंकी हमें कमी नहीं है। हा, पैसेकी जरूरत है। इसपर गजनने बायन और उसके खातूनोके लिये बहुत-से बहुमूल्य उपहार तथा काफी सोना भेजा।

१३०९ ई० मे कुबुलुक शक्तिशाली था। उसने उसी समय गजना और बामियानको छीन लिया था। उसके बाद उसका पुत्र कसतिमूर वहां का शासक बना। श्वेत-ओर्दूके लोग बायनके भाई मुङ-ताईकी ओर थे।

५. ससीबूगा बायन-पुत्र (१३१९ ई०)

बायनके बाद उसका पुत्र ससीबूगा सिरपारवाले राज्यका स्वामी बना और गजना बामियान अब कोनिचि-पुत्र मुङ्-ताईके हाथमे चला गया। ससीबूगाकी मा कुतुलुन (नुकुलुन) खातून थी। काजी अहमद गफ्फारी (मृत्यु १५७७-७८ ई०) ने अपने ग्रंथ "नस्खजहानारा" मे ससीको नौकाका पुत्र बतलाया है और कहा है, कि वह अपने भाईके बाद गद्दीपर बैठा, लेकिन रशीदुद्दीन जैसे समसामयिक तथा मगोल-वंशके एक प्रामाणिक इतिहासकारके सामने गफ्फारीकी बातका मूल्य नहीं है।

६. एर्जन, एविजन, ससीबूगा-पुत्र (१३१९–४४)

एर्जनका पचीस सालका शासन श्वेत-ओर्दूकी शक्ति और समृद्धिकी चरमसीमाका था। अपनी योग्यताके कारण वह उज्बेक खानका बहुत ही कृपापात्र था। राज-काजमें चतुर होते हुये, वह बड़ा विद्याप्रेमी था। उसने उतरार, सावरान, जद, वारजकंद नगरोंमें बहुतसे मदरसे, खानकाहे (मठ) और मस्जिदें बनवाई। मार्को पोलो द्वारा वर्णित, कोनिचिकी बर्बर प्रजाके समयसे अब अक-ओर्दू कहासे कहां चला गया था? छिङ-गिस्के तारतारो के पुराने धर्म छोडकर अब वह कट्टर मुसलमान हो चुके थे। इतिहासकार अनुनीम अस्कन्दरके[1] अनुसार "एर्जनने सारे तुर्किस्तान (अक-ओर्दू) को स्वर्गोपम (खुल्दबरीं) बना दिया"। श्वेत-ओर्दूको ऐसी समृद्धि फिर स्वप्नमें भी नही मिली। उज्बेकके खानने एर्जनको गद्दीपर बैठाया था। पीछे इसके लड़के खिजिर ओगलान और खुलफा उज्बेकके सिंहासनपर बैठे, यह हम पहले बतला चुके हैं।

पचीस साल राज्य करनेके बाद ७४५ हि०[2] में एर्जन मरा और सिगनाक नगरमें इसकी कब्र बनाई गई।

७. मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र (१३४४ई०–)

यह भले बापका नालायक लड़का निकला। अपने लोभ और बदमाशीके कारण ६ महीने मुश्किलसे राज्य कर पाया। इसके बाद दो सालतक अलताईके पहाड़ो और किरगिजों की भूमिमें मारा-मारा फिरता रहा। मरनेके बाद इसे भी सिगनाकमे दफनाया गया।

८. चिमताई एर्जन-पुत्र (१३४४–६२ ई०)

जानीबेगने इस भलेमानुस खान को गद्दीपर बिठाया। सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनके खाली होनेपर वहांके अमीरोंने बहुत चाहा, कि चिमताई बातूके सिंहासनपर बैठे, लेकिन उसने कबूल नहीं किया। इसीके समय बरदीबेग, जानीबेग और किलदीबेगके दुराचार और अन्यायपूर्ण शासन हुये थे। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरो (शासको) के चरम पतनको देखते हुये उसने अपने सिंहासनपर ही संतुष्ट रहना पसन्द किया। बहुत जोर देनेपर उसने अपने भाई ओरदा शेखको वहां भेज दिया।

९. उरुस खान चिमताई-पुत्र (१३६१–७० ई०)

यह बड़ा ही मनस्वी खान था। सुवर्ण-ओर्दूकी नैयाके डगमगानेके समय इसने अपने बापपर बहुत जोर दिया, कि कोक-ओर्दूको भी अक-ओर्दूमें मिला लिया जाय, लेकिन चिमताईने नहीं माना। अब

---

१. ज० ओ० पृष्ठ २७०। २. १५ मई १३४४–३ मई १३४५ ई०।

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने संकल्प किया, कि सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूको मिलाकर छिङ-गिस्के पुत्र जुछि और पौत्र बा-तूके समयके वैभवको पुनः स्थापित किया जाय। इसने गद्दीके महोत्सवके समय ही जल्से मे अपने इन विचारोको प्रकट किया। अमीरोने उसे पसद किया। उन्हे बड़े-बडे इनाम दिये गये। लेकिन उसके अपने वशके तुका-तेमूर परिवारवाले तुईख्वाजा (तुलीख्वाजा)ने इसका विरोध किया, जिसके लिये उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पड़ा—तुइख्वाजा मनकिशलकका शासक था। पिताकी इस हत्याका बदला लेनेकी भावनाने उसके पुत्र तोकतामिशको उत्तेजित किया। लेकिन, अभी वह कम उमरका था, इसलिये क्या कर सकता था? तोकतामिश एक बार ओर्दूसे भाग गया, लेकिन लौटके आनेपर उसकी उमरका ख्याल करके क्षमा कर दिया गया। जब उरुस खान कोक-ओर्दूका भी स्वामी बन गया,तो तोकता मिश फिर भागकर विश्वविजेता तेमूरलंग(१३०७–१४०४ ई०)के पास गया। उस समय तेमूरलंग चगताई ओर्दूके दक्षिणी राज्यको अपने हाथमे करके उत्तरी राज्य(मुगोलिस्तानपर) पांचवां आक्रमण करना चाहता था। तेमूरने अपने सेनापति तेमूर उज्बेकको खानजादा तोकतामिशका स्वागत करनेके लिये भेजा। समरकन्द पहुचनेपर तेमूर उज्बेकने खानजादेको तेमूरके सामने पेश किया। तेमूरने तोकता-मिशका राजसी स्वागत करते हुये सोना, जवाहरात, हथियार, बहुमूल्य पोशाक, घोड़े, ऊट, तम्बू-ध्वजा-पताका, नगाड़े तथा दास-दासी प्रदान किये और बिदा करते वक्त उसे "पुत्र" कहकर सम्बोधित किया। तेमूरने उसे साबरान, उतरार, सिगनक, सैरान, सेराय तथा किपचकके दूसरे नगरोका स्वामी(शासक) बनाते यायिक (उराल)और सिर नदीके बीचके प्रदेशका राज्य प्रदान किया। यह भूभाग उरुस खानके अधीन था, इसलिये यह मान-प्रदान केवल मौखिक ही हो सकता था। उरुस खान चुप नही रह सकता था। उसने अपने पुत्र कुतुलुकबूगाको तोकतामिशका मुकाबिला करनेके लिये भेजा। कुतुलुकबूगा लड़ाईमे घायल होकर दूसरे दिन मर गया, तो भी तोकतामिशकी हार हुई और उसे फिर भागकर तेमूर लग की शरण लेनी पड़ी। लंगड़े तेमूरने फिर उसका पहले ही जैसा सम्मान करके फिर नई सेना दी। उरुस खानके ज्येष्ठ पुत्र तेगूताकियाने फिर तोकतामिशको हराया। तोकतामिश बड़ी मुश्किलसे सिर नदी तैरकर पार हुआ। उसका पीछा करते हुये कजनजी बहादुरने तीरसे उसके हाथको घायल कर दिया था। घासमें पड़े तोकतामिशको अकस्मात् तेमूर लंग द्वारा दिये मंत्री इतिगू बेरलसने देखा। फिर वह उसे लेकर बुखारामें तेमूरके पास पहुंचा। तेमूरने फिर उसे और भी बड़े साजोसामान तथा सेनाके साथ भेजा। इस समय यदकू (मङगुत या तिमिर कुतुलुकका पुत्र) तोकतामिशका समर्थक बनकर बुखारा चला आया था। उसने खबर दी, कि उरुस खान बड़ी सेना लेकर लड़नेके लिये आ रहा है। केपेक मङगुत और तुलजियानने तेमूरके दरबारमें जाकर उरुस खानके सदेशको कहा—"तोकतामिश मेरे पुत्रको मार-कर तुम्हारी शरणमें चला आया है। तुम मेरे शत्रुको मेरे हाथमें अर्पण कर दो, यदि इन्कारी हो तो मै युद्ध घोषित करता हूं। हमे अब युद्धक्षेत्र चुनना होगा।"

तेमूर लगने उत्तर दिया—"तोकतामिशने अपनेको मेरी शरणमें दे दिया है। मै उसकी रक्षा करूगा। जाकर उरुस खानसे कह दो, कि उसकी ललकारको ही स्वीकार नही करता, बल्कि मै और मेरे सिपाही सिहकी तरह—जो कि जंगलमें नही बल्कि युद्धक्षेत्रमे बास करते है—लड़नेके लिये तैयार है।"

तेमूर लंगने अमीर यदकूकोइको समरकन्दका शासक नियुक्त कर १३७६ ई०के अन्तमे प्रस्थान कर उतरारके मैदानमें डेरा डाला। उरुस खान अपनी सेनाके साथ वहांसे चौबीस फरसक दूर सिगनाकमें था। एक जबर्दस्त आंधी-पानी आया, जिसके बाद भयकर सर्दी हो गई। इसकी वजह से तीन महीनेतक कोई सैनिक कार्रवाई नही हो सकी। फिर तेमूरने कताई बहादुर और मोहम्मद सुल-तानशाहको रातमें आक्रमण करनेका हुक्म दिया। जबर्दस्त संघर्ष हुआ। उरुस खान-पुत्र तेमूर मलिक ओगलानने तीन हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया। कताई बहादुर और एरेक तेमूर मारे गये, तेमूर मलिक भी आहत हुआ। तेमूर लंगकी विजय हुई। उसने अबू-मोहम्मद सुलतानशाह और अमीर मर्बशेरको भी पता लगानेके लिये भेजा।

लड़ाई आगे नही हो सकी। उरुस खान दश्तेकिपचक लौट गया और तेमूर लंग केश (शहरसब्ज) की ओर। नौ साल राज्य करनेके बाद १३७० ई० में उरुस खान स्वाभाविक मृत्युसे मर गया।

अनुकूल समय देखकर तेमूर फिर दश्तेकिपचककी ओर रवाना हुआ। उसके सेनाग्रका सेनापति तोकतामिश था, जो बड़ी तेजीसे बढते हुये पंद्रह दिनमें सैरामकामिश (हरिनोंके नरकट) मे पहुच गया और एकाएक आक्रमण करके उसने शहरको लूट लिया। वहासे उसे बहुतसे घोड़े, ऊंट और भेड़े हाथ लगी।

१०. तोग्ताकिया, उरुस-पुत्र (१३७०--...)

पिताकी जगहपर यह गद्दीपर बैठा, लेकिन दो ही महीने बाद मर गया। इसके बाद इसके भाई तेमूरबेग (तेमूर मलिक) को गद्दी मिली।

११. तेमूरबेग, तेमूरमलिक उरुस-पुत्र, मोहम्मदखान-पुत्र (१३७०-७५ ई०)

यद्यपि सिंहासनके लिये उसका प्रतिद्वंद्वी तेमूर लग जैसे विख्यात विजेता की सहायता-प्राप्त तोकतामिश था, लेकिन तेमूरबेगको इसकी परवाह नही थी। वह हद दर्जेका ऐशपसंद था, रात-दिन शराबमें मस्त रहता। उसके अत्याचारोंसे लोग परेशान थे। तो भी तोकतामिशने इसके ऊपर आक्रमण करके फिर एक बार हार खाई। लेकिन तेमूरबेकके अत्याचारोंसे उसके बड़े-बड़े अमीर भी परेशान थे। उनको विश्वास होने लगा था, कि इसके रहते श्वेत-ओर्दूको अच्छे दिनोंकी आशा नहीं हो सकती। एक प्रसिद्ध अमीर औरंग तेमूरने तेमूर लंगके पास भागकर उसे और उभाड़ा। तेमूरने अबके गयासुद्दीन, तरखन, तोमन तिमूरके बख्शी खोजाके साथ भेजा। जागीर मांगनेपर न देनेसे नाराज होकर एक और अमीर उज्बेक तेमूर भी तेमूर लंगके पास भाग आया, जिसने उससे कहा--"तेमूर मलिक दिन-रात शराबमें मस्त पड़ा रहता है। पहर भर दिनतक सोता रहता है, जो कि भोजनका समय है। किसीकी हिम्मत नही, कि उसे जगाये। लोग अब उससे उकता गये हैं, और चाहते है, कि तोकतामिश आवे।" उस समय तोकतामिश सिगनकमें था। तेमूरने तोकतामिशको खबर दी। तेमूरबेकने जाड़ों (१३७७ ई०) को करातागमें बिताया। १३७७ ई० में तेमूर लगने तोकतामिशको हमला करनेके लिये हुक्म दिया। इसी जाड़ेमें तेमूरबेकका एक बडा भारी दरबारी कापबहादुर भी उसका साथ छोड़कर तोकतामिशके पास चला आया। तोकतामिशने आक्रमण करके तेमूरबेकको पूरी तौरसे हरा दिया और उरुसखोजा द्वारा विजयका समाचार तेमूरलगके पास भेजा। तेमूरने भारी खुशी मनाई, उरुसखोजाको खलअत और सुनहला कमरबन्द दिया, लौटनेके समय धन और घोड़े प्रदान किये।

जाड़ोंमें फिर तोकतामिश सिगनकमे रहा तेमूरबेकका पीछा करते पश्चिमी किपचकके मेमक स्थानकी ओर बढ़ा।

इसपर भी तेमूरबेकको होश नहीं आया। वह ७८५ हिजरी (६ मार्च १३८३--२३ फर्वरी १३८४) मे निर्णायक लड़ाई लडनेके लिये करातालकी ओर बढ़ने लगा। तेमूरबेकने गद्दीपर बैठते समय बेवकूफीसे अक-ओर्दूके एक तुमान (सेराय सोलकुल) को अपने चचेरे भाई मोहम्मद ओगलानको दे दिया था। अब उसने मोहम्मदको तोकतामिशके विरुद्ध लडनेके लिये कहा। मोहम्मद जानता था, कि ओरदा-उलुस तोकतामिशके पक्षमें है। उसने तेमूरबेकको मना किया, जिसपर तेमूरबेकने उसे तोकतामिशका पक्षपाती कहकर भरी सभामें मरवा डाला और वहीं उसने सौगंद खाई, कि जो भी मेरी इच्छाके विरुद्ध जायेगा, उसकी यही हालत होगी।

तोकतामिश और तेमूरबेकमे करातालके पास ममाइमें लड़ाई हुई। तेमूरबेकने हारके साथ प्राण भी गंवाये। इसी लड़ाईमें एक स्वामिभक्त अमीर बलिजक पकड़कर विजेता तोकतामिशके पास लाया गया। तोकतामिश बलिजककी ईमानदारीपर पूरा विश्वास रखता था। उसने उससे कहा--"अगर तू मुझे अपना बादशाह मान ले, तो मैं तेरे सम्मान और अधिकारको जरा भी कमी नही करूंगा, बल्कि राज्यकी बागडोर तेरे हाथमें सुपुर्द कर दूंगा।" बलिजकने जवाब दिया--"मैंने अपने जीवनका सबसे अच्छा भाग तेमूरबेककी सेवामें बिताया। मैं इसे सहन नहीं कर सकूंगा, कि उसके सिंहासनपर कोई दूसरा बैठे। जो तुझे तेमूरबेककी गद्दीपर बैठा देखना चाहे, उसकी आंखें फूट जायं। अगर तू मेरे ऊपर

कृपा करना चाहता है, तो मेरा सिर काटकर तेमूरके सिरके नीचे रख दे, और उसकी लाशको मेरी लाशपर लिटा दे, जिसमें उसका कोमल शरीर धूलमें न लिपटे।" तोकतामिशने उसकी इच्छा पूरी की।

१२. तोक्तामिश तूलि-पुत्र (१३७५-९७ ई०)

तोकतामिश बापकी हत्याका बदला ले सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूके सम्मिलित सिंहासनपर बैठा। उसकी मां कुतन कुनचेक प्रसिद्ध कक़ुरत कबीलेकी अमीरजादी तथा मनस्विनी स्त्री थी। इतिहासकार अनुनीम असकदर के अनुसार तोकतामिश बहुत ही मुस्तैद, प्रतापी, सुदर तथा स्वभावसे भी सुदर बादशाह था। वह अपने न्याय और सदाचारके लिये प्रसिद्ध था। अस्कन्दरके अनुसार उसमे दोष यही था, कि उसने अपने उपकारक तेमूरलंगसे कृतघ्नता की। तेमूरबेकपर विजयप्राप्त करते ही तोकतामिशने अपने सारे उलुसको सुव्यवस्थित किया।

तोकतामिशने बेरेकसरायको अपनी राजधानी बनाया। बा-तूने अस्त्राखानके पास वर्तमान सेली-त्रेन्नोय गांवकी जगह अपनी राजधानी—बातू-सराय बनाई थी। उसके भाई बेरक (१२५५-६६ ई०) ने बोल्गाकी शाखा अखतूबे नदीके तटपर आधुनिक स्तालिनग्रादके समीप सराय-बेरेकके नामसे नई नगरी बसाई, लेकिन बातू सरायसे हटाकर बेरेक सरायमे राजधानी ले जाना उज्बेक खानका काम था। तोकतामिशके समय सुवर्ण-ओर्दू राज्य एक बार फिर ख्वारेज्मसे पश्चिममे रूसी राजुलोके भीतर, तथा क्रिमिया, काकेशसके दरबन्द तथा बाकूतक फैल गया। पश्चिममे राज्यसीमा द्नियेस्तर नदी, और पूरबमे तबोल-इरतिश-संगम एवं मध्य सिर-दरिया थी। तोकतामिशने सत्रह साल (१३९२ ई०) तक अच्छी तरह शासन किया, फिर इतिहासकारोके अनुसार उसे शरारत सूझी और वह तेमूरलगसे छेड़खानी कर बैठा।

१३८० ई० मे तोकतामिशके क्रिमिया-शासक रमजनने वेनिसगणके प्रतिनिधि अन्द्रेय वेनेरिसके साथ व्यापारिक समझौता किया।

मास्को-ध्वंस (१३८२ ई०)—तोकतामिश जू-छिके पुत्र ओरदाके वंशका नही था, बल्कि उसका पूर्वज छिङ-गिस्वशी राजकुमार तुका-तिमुर था। ममाइ (करातालके पास) की विजयके बाद वह पूर्वी और पश्चिमी दोनो किपचको—सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दू—का स्वामी बना। विजयकी खबर सुनते ही रूसी राजुल जल्दी-जल्दी अपनी भेंट और तलवार चढ़ानेके लिये उसके दरबारमे पहुंचे। मास्को-महाराजुल दिमित्रिके दो कवचधार कुतुलुकबुगा और मोकस दूसरे खड्गधारियोके साथ भिन्न-भिन्न राजुलोकी राजधानियोंमें खानकी सुनहली मोहरलगी यारलिकके साथ गये। लेकिन तोकतामिश इतनेसे सतुष्ट नही होनेवाला था। वह कर लेते हुए खानोकी प्रभुताको पूर्ववत् स्थापित करना चाहता था, जिसे उठा फेकनेकी रूसी राजुलोने इधर कोशिश की थी। उसने खानजादा अकखोजाको सात सौ सिपाहियोके साथ यह कहला भेजा, कि रूसी राजुल भेंट और तलवार ही नही भेजे, बल्कि खुद बेरेक-सरायमे हाजिरी देनेके लिये आयें। अकखोजाने स्वय निज्नीनवोगोरद (निचला नवीन नगर) में ठहर दूसरे दूतको सदेशके साथ मास्को भेजा। हालहीमे दोनके तटपर महाराजुल दिमित्रिको जो विजय प्राप्त हुई थी, उससे गर्व करते उसने जानेमें आनाकानी की। सालभरकी तैयारीके बाद उसे एकाएक खबर मिली कि सेना पार करनेके लिये तारतारोंने बुल्गारोकी नावें पकड़ ली है, र्याजनका राजुल पथप्रदर्शक बन उन्हे ओका नदी पार करानेके लिये रास्ता दिखला रहा है। इस खबरको सुनकर बहुतसे राजुलोंने हिम्मत हार दी। महाराजुलके धर्मपिता निज्नीनवोगोरदके राजुल दिमित्रिने अपने दो पुत्रोंको खानके दरबारमें भेज भी दिया। उस समय खानका शिविर सिरनागमें था, जहा वह तोकतामिशसे मिले।

मास्को-महाराजुल दिमित्रि राजधानीको बायरोके हाथमे छोड सेना-संग्रहके लिये कोस्त्रोमाकी ओर गया। ओका नदीपर अवस्थित सेपूकोफ नगरको लेकर तोकतामिश मास्कोपर चढ़ा। गिर्जोंके घंटे बजाकर नागरिकोंको इकट्ठा कर एक बड़ी सभा की गई, पुराने रूसी रवाजके मुताबिक प्रति-

किया। अपने एक मुरजा (मिर्जा) के द्वारा उसने दिमित्रिके पास सहृदयता दिखलाते हुये संदेश भेजा—अब भी तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर पहलेकी तरह काम करो। दिमित्रिने अपने पुत्र वासिलीको भेजा। मास्कोके नष्ट हो जानेपर मूल्यवान् भेट कहासे भेजी जा सकती थी ? तो भी तोकतामिशने वासिलीके साथ अच्छा बरताव किया। उसने महाराजुलकुमारको दरबारमें जामिनके तौरपर रक्खा और मास्कोके ऊपर नये कर लगाये।

खानोंकी शक्तिको क्षीण हो जानेपर रूसका प्रतिद्वन्द्वी लिथुवानियाका राजा समझा जाता था। अबतक लिथुवानी ईसाई धर्मको न स्वीकार कर वैदिक देवताओंके भाईबन्दोंको ही अपना इष्टदेव मान रहे थे। उनकी वीरताके कारण ईसाई समुद्र इन काफिरोके द्वीपको अपने भीतर बर्दाश्त कर रहा था। एक इतिहासकार लिखता है—"बहुतसे लोग शायद यह नही जानते, कि १४ वीं सदीके अंततक मध्य-युरोपके इतना नजदीक विलेनुस नगरीमे काफिरोंका धर्म राजधर्म था।" *लिथुवानी राजा लादि-स्लाउस (ह्लादश्रवा) ने पोल-राज्यकी उत्तराधिकारिणी कुमारी हेदविगके साथ ईसाई धर्म स्वीकार करते हुये ब्याह किया। इसी समय राजाके साथ उसके साथियोने भी बपतिस्मा लिया। युरोपके धर्मपरिवर्तनवाली कहानी लिथुवानियामें भी दुहराई गई और बिलनामें काफिरोंकी जितनी मूर्तिया और पवित्र वृक्षस्थल थे, सबको एक ओरसे ईसाई पादरियोने नष्ट कर दिया। पुराने पुरोहितोको उनकी मृगछालाकी पोशाकके बदलेमे सफेद पोशाक बांटी गई। लिथुवानियाके राजाको इसकी जरूरत क्यो पडी ? अपने पड़ोसियो को देखते हुये ग्रीक और रोमन सस्कृतिसे लिथुवानियाके सरदार भी प्रभावित हुये बिना नही रहे। भीतर ही भीतर संस्कृतिके साथ धर्मका भी प्रभाव उनमेसे कितनो हीपर पड़ता जा रहा था, जिससे आगे चलकर काफिर और ईसाईका सवाल सिहासनके लिये खतरेका कारण हो सकता था। उधर लादिस्लाउसने देखा, कि ईसाई धर्म स्वीकार करनेपर मैं पोल राज-कुमारीके साथ पाणिग्रहण कर पोलन्दका भी स्वामी बन जाऊंगा, इसलिये हजारो वर्षोसे चली आई लिथुवानी सभ्यता और धर्मके बहुतसे चिह्नोंको मिटा देनेमे उसने हाथ बटाया। महराजुल दिमित्रिका तोकतामिशके साथ फिर अच्छा संबंध स्थापित हो गया, इसलिये लिथुवानियन राजाके आक्रमण करने-पर उसे तोकतामिशका एक भारी सहारा मिल गया। १३८९ ई० मे दिमित्रिके मरनेपर उसका पुत्र वासिली महाराजुल बना।

पश्चिमकी दिग्विजयके बाद तोकतामिशने अपने राज्यके पूर्वी भागकी व्यवस्थामें हाथ लगाया। उसने विरोधियोको बडी निष्ठुरतासे पीस डाला, जिसमे उसकी अपनी बीबी तावलुइने भी अपने प्राण खोये। तेमूर लगसे झगड पडना अकारण नही था। जू-छिके समयसे ही ख्वारेज्म उसके उलुसका था, जिसे तेमूरने जबर्दस्ती छीन लिया था। उरुस खानके समय, जो राज्यमें गडबड़ी मची थी, उससे फायदा उठाकर हुसेन सूफी यङ-हदाई-पुत्र (ककुरत) ने ख्वारेज्मके कात और खीवा जिले हडप लिये। तेमूरने देखा, कि हुसेनकी पीठपर कोई नही है, इसलिये 'ख्वारेज्म जगताई-उलुसका है' कहकर उसे मागा। तेमूर यद्यपि एक बड़ी सल्तनतका स्वतत्र शासक था, लेकिन उसने जगताई वशके खानको समरकंदकी गद्दीसे नही उतारा और अपने लिये केवल अमीरकी साधारणसी पदवी स्वीकार की थी। इस प्रकार उसने जगताई खानकी ओरसे ख्वारेज्मपर दावा किया। हुसेन सूफीने उसका जवाब दिया—"तलवारसे जीता तल-वारसे ही लौटाया जा सकता है।" तेमूर दौड़ पड़ा। कातमें कुछ थोड़ेसे प्रतिरोध के बाद शहरपर तेमूर लगका अधिकार हो गया। निर्मम हत्या हुई, स्त्री-बच्चों सहित बहुतसे लोग दास बनकर बिकने के लिये बंदी बनाये गये। हरे-भरे ख्वारेज्मको तेमूरकी आगमें जलना पड़ा। कातसे हुसेन सूफी भाग गया, और थोड़े दिनों बाद मर गया। तेमूर लगने दया दिखाते हुये हुसेन सूफीके पुत्र युसुफ सूफीको इस शर्तपर वहाका शासक बनाया, कि वह अपनी चचेरी बहिन तथा सुन्दरताके लिये सर्वत्र प्रसिद्ध सेविनबेईको तेमूर-पुत्र जहांगीरके साथ ब्याह दे। युसुफने पहले तो बात मान ली, लेकिन जल्दी ही उसने शर्तको तोड़कर कातको लूटना और लोगोंको भगाना शुरू कर दिया। दंड देनेके लिये १३७२ ई० मे तेमूर फिर

---

*ज० ओ० पृ० ३३७

आया। युसुफने आत्मसमर्पण किया। सेविनबेइ (खानजादी) का ब्याह जहांगीरके साथ हुआ और युसुफको क्षमा मिली। दो साल बाद १३७४ ई० मे फिर तेमूरको कातके रास्ते ख्वारेज्मकी ओर बढना पड़ा, लेकिन अपने किसी अमीरकी ओरसे समरकदपर खतरा होनेकी खबर सुनकर वह लौट गया। इसी साल उसने तोकतामिशको किपचकोंका खान स्वीकृत किया था।

जिस समय तेमूर-लग उतरारमे उरुस खानसे लड़नेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय युसुफ सूफीने बुखारा जिलेपर आक्रमण करके लूट-मार मचानी शुरू की। तेमूरने उसे हिदायत करनेके लिये दूत भेजा, जिसे युसुफने जेलमे डाल दिया। इसके बाद एक दूसरे दरबारी दूतको तेमूरने रेशमपर ताजी कस्तूरीसे लिखा शासनपत्र देकर भेजा। युसुफने इस दूतकी भी वही गति की। बुखाराके पास उसने कुछ तुर्कमानोके ऊट लूट लिये। १३७८ ई० के बसतमे राजधानीके सामने पहुचकर युसुफने कहा—"इतने मुसलमानोको मरवानेकी जगह यही अच्छा है, कि आओ हम दोनो द्वद्व-युद्ध करके हार-जीत का फैसला कर लें।" तेमूर ने इसे स्वीकर किया। मित्रोके वर्जित करनेपर भी शाही कवच और शिरस्त्राण पहनकर तेमूरने द्वद्व-युद्धके लिये नगरद्वारसे बाहर जा युसुफको ललकारा, लेकिन वह लड़नेके लिये सामने नही आया। उसी समय तेरमिजसे कुछ ताजे खरबूजे (सरदे) आये, जिनमे से कुछको सोनेकी थालमें रखकर, तेमूरने अपने दुश्मनके पास भेजा, लेकिन युसुफने उन्हे मोरीमे फेंक दिया और लानेवालेको थाल बख्श दिया। फिर दोनोमें घमासान लड़ाई शुरू हुई। नगरका मुहासिरा करके युसुफने उस समयके पुराने ढगके तोप-खानेसे प्राकारको तोडनेकी कोशिश की। मुहासिरा तीन महीने छ दिन रहा। युसुफ सूफी इसी बीचमें असफल होकर मर गया। तेमूरके हाथ भारी हीरा-मोतीका खजाना आया। उसने सभी शरीफो, हकीमो और विद्वानोको स्त्रियो-बच्चोंके एक बडे समूहके साथ ख्वारेज्मसे पकड़कर केश (शहरसब्ज) भेज दिया। इस प्रकार १३७९ ई० में ख्वारेज्मपर तेमूर-लगका अधिकार हुआ।

पूरब और पश्चिमकी सफलताओके कारण तोकतामिशको अपनी शक्तिपर विश्वास हो गया था। इधर युसुफ सूफीकी लड़ाइयोंसे वह यह भी समझता था, कि तेमूर-लंग अजेय नहीं है। जू-छिके सिंहासनका मालिक और छिङ्-गिसी शाहजादा होकर वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था, कि ख्वारेज्म एक मामूली तुर्क सरदारके हाथमें चला जाय। वह जानता था, कि चगताई खान केवल गुडिया बनाकर समरकदके सिंहासनपर रखा गया है। तोकतामिशने ख्वारेज्म मागा, लेकिन मुंहसे वैसा न कहकर भी तेमूर-लंगका जवाब भी हुसैन सूफी जैसा ही था—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तोकतामिश तेमूरके विरुद्ध सिर-दरिया पार हो सीधे समरकंदकी ओर बढ सकता था, अथवा ख्वारेज्मपर आक्रमण कर सकता था, लेकिन उसे तेमूर-लगका निर्बलस्थान वहां नही मालूम हुआ। उसने खुलाकूकी राजधानी तबरेज—जोकि अब तेमूर-लगके हाथमें थी—को लक्ष्य कर काकेशीय दरबन्दके रास्ते अभियान किया। उसके साथ बेक बुलाद, ऐसाबेक, यागलीबेक, गजनशी आदि बारह ओगलान (राजकुमार) थे, जिनका मुखिया पुलादबेक था। तोकतामिशकी सेनाने सिरवान होते हुये आजुरबाइजानके भीतर घुसकर तबरेजको घेर लिया। लोगोंको जब यह खबर मिली, तो वे अपने कूचों और मुहल्लोंमें दरख्तोंको डाल मोर्चाबंदी कर हथियारबंद हो अपने-अपने मुहल्लोंकी हिफाजत करने लगे। आक्रमणकारियोंने नागरिकोके प्रतिरोधको बहुत मजबूत देखा। वह शम्बेगाजानीमें उतरे और कमजोर स्थान ढूंढ़नेके लिये आठ दिनतक नगरका चक्कर लगाते रहे। जब कोई वैसा स्थान या अवसर नहीं मिला, तो उन्होंने आदमी भेजकर अमीर वलीको सुलह करनेके लिये बुलाया। अंतमें तै हुआ, कि अमीर वली शहरसे दो सौ पचास तुमान सोना दिलवा दे, जो कि तोकतामिशकी सेनाके घोड़ोंकी नालों का दामभर ही था। बृहस्पतिवार १३८५-८६ ई० (७८७ हि०) को शहरके मालिकों और ख्वाजाओंको जमाकर निश्चय किया गया कि हर मालिक एक तुमान नकद दे। ढाई सौ तुमान भेज देनेके बाद लोग निश्चित हो गये। उन्होंने तैयारी ढीली कर दी और बहुतोंने हथियार भी उतार दिये। इसी समय तोक-तामिशकी सेना शहरके ऊपर टूट पड़ी और कतल तथा लूटका बाजार गरम हो गया। प्रतिरोधकी शक्तियां तितर-बितर हो गई थी। तोकतामिशकी सेनाने तेमूर-लंगके तबरेजको आठ दिनतक लूटा और

कतल किया, जिसमे करीब एक लाख आदमी बड़ी निर्दयतासे मारे गये। किपचकोने किसीपर दया नही दिखलाई। उन्होने लोगोको नंगा मादरजाद करके सडको, कूचो, मुहल्लोमे बर्फपर बैठा दिया। स्त्रियो, लडकियो और छोकरोमे जिन्हे सुन्दर देखा, उन्हे लिया, बहुतसे आदमियोंको भी बदी बनाया, फिर धरोमे आग लगा दी। तोकतामिशने मास्कोमें जो किया था, उसीकी आवृत्ति उसकी सेनाने तबरीजमें की, और यही बात पीछे तेमूर-लगने दिल्लीमे दुहराई। एक इतिहासकार ने लिखा है:—"काफिरोने लोगोपर वह जुल्म किया, कि लिखनेवाला यदि एक सालतक लिखता रहे, तो नही पूरा कर सकता। इस शहर और इन मुसलमानोपर क्या-क्या नही बीती ?"

अमीर वली सुलतानियासे जा चुका है, यह सुनकर उनको उसपर विश्वासघाती होनेका संदेह हुआ। तोकतामिशी सेनाने सुलतानिया और दूसरी जगहोको भी उसी तरह लूटा-पाटा। इसके बादभी तबरीजके लोगोमे कुछ सुगबुगाहट देख फिर दो दिन दो रात उसे कतल और लूटका शिकार बनाया। फिर कितने ही किपचक नखजवानकी ओर अर्रानके प्रदेशमे जा लूट-मार करने लगे, कुछ इसी कामके लिये कराबाग चले गये। जाड़ा खतम होने से पहले ही दो लाख बदी बना तोकतामिश आये रास्ते लौट गया। तेमूर इस समय ईरानके झगडोमे फसा था, इसलिये आजुरबाइजानके सर्वसहारकी बातको सुनकर भी दिल मसोसकर रह गया। तोकतामिश अपने साथ प्रसिद्ध कवि कमालको लेता गया था, जिसने चार सालतक राजधानी बेरेकसारायमे रहकर उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

तेमूरके साथ लड़ाइयां

प्रथम युद्ध—ईरानके झगड़ेसे छुट्टी पाकर १३८७-८८ ई० (७८९ हि०) के बसंतमे तेमूर-लंग उरुस नदीके तटपर था, जबकि उसने सुना कि तोकतामिश दूसरी बार दरबदकी ओरसे आकर आक्रमण करना चाहता है। तोकतामिशके अमीरोने मना किया, कि तेमूर अब भीतरी झगड़ोसे छुट्टी पाकर मुकाबिलेके लिये तैयार है, इसलिये लड़नेके लिये नही जाना चाहिये। लेकिन, तोकतामिशने उनकी बात नहीं मानी। खुलाकू-वशियो और बातू-वशियोके पुराने युद्धोकी तरह फिर उत्तरसे तोकतामिशी सेना कुरा नदीके तटपर पहुंची और दक्षिणसे तेमूर भी वेरदआ होते वहां पहुचा। उसने नदीपार की खबर जाननेके लिये गुप्तचर भेजे, जिन्होंने लड़ाई करके भारी क्षति उठाई। फिर कुमकके लिये आई तेमूरी सेनाने तोकतामिशकी विजयिनी सेनापर आक्रमण करके उसे बुरी तरह हराकर दरबंदतक उसका पीछा करके बहुतसे बंदी बनाये। तेमूरने कृतघ्नताके लिये बहुत फटकारकर तोकतामिशके बंदी अमीरों-को खलअत और धन देकर घर भेज दिया।

इस विजयके बाद तेमूरने सरकश तुर्कमान सरदार करामोहम्मदसे लोहा लिया और फिर फारस-पर आक्रमण कर उसे अपने राज्यमे मिला लिया। इसी समय डाकियाने आकर खबर दी, कि तोक-तामिश अतर्वेद (मावरा-उन्नह्र) की ओर बढ़ रहा है। तोकतामिशने सिगनकसे प्रस्थान कर सावरानपर आक्रमण किया, लेकिन तेमूरी सेनापतिके जबर्दस्त प्रतिरोधके कारण उसे मुहासिरा उठा लेना पड़ा। इसके बाद तोकतामिश दूसरे इलाकोंको तबाह करने लगा। प्रतिरोध करनेके लिये तेमूर-पुत्र शाहजादा उमरशेख मिर्जाने एक बड़ी सेना ले सिर-दरिया पार हो आगे बढ़ते उतरारसे पांच फरसक पूरब युकलिक स्थानमें तोकतामिशकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन उसे हार खानी पड़ी। अंदिजानमे पहुंचकर उसने अपनी बिखरी सेनाको फिरसे एकत्रित किया। इसी समय पता लगा, कि मुगोलिस्तानके शासक अंका-तूराने भी विश्वासघात करके चढ़ाई कर दी है और वह सैराम तथा ताश्कंदके नजदीक पहुच गया है। उमरशेखने अकातूराको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। तोकतामिशके किपचक समृद्ध सोग्द-देशको लूटनेके लिये आगे बढ़ रहे थे, जिनका एक दल बुखाराके सामने पहुंच गया था, जिसने वहांके सुन्दर प्रासाद जेदगिर-सरायको जला दिया। तेमूर उनकी ओर लपका। नजदीक आनेपर शत्रुकी सेना-मेंसे कुछ दश्तेकिपचक (कजाकस्तान) की ओर कुछ ख्वारेज्मकी ओर भागे। तेमूरने अपने अफसरों—बेरातखोजा और कुकिलताशको युकलिककी पराजयके लिये दंड दिया—"कुकिलताशको दाढ़ी-मूंछ मुंडवा चेहरेको काले-लाल रंगसे रंगा, सिरको स्त्रीकी तरह सजा शहरमें नगे पैर दौड़ाया गया।"

युसुफके मरनेके बाद ख्वारेज्म उसके भाई सुलेमान सूफी तथा बहनोई इलिकमिस ओगलान (किपचक राजकुमार) के हाथमे था। यह दोनो तोकतामिशको अपना प्रभु मानने लगे, इसपर तेमूरने उनके विरुद्ध चढाई की। तेमूरी सेनाके हरावलके सचालक शरणागत श्वेत-ओर्दू राजकुमार तेमूर कुतुलुक ओगलान और कुंजी ओगलान थे। बगदादके और शेदरिस नदीके पार होनेके बाद पता लगा, कि दोनो राजकुमार तोकतामिशके पास भाग गये। शाहजादा मीराशाह (तेमूर-पुत्र)ने पीछा करके उनको पकड लिया। तेमूर ख्वारेज्मकी राजधानी उरगज पहुचा। उसे नगर और निवासियोपर इतना गुस्सा आया था कि उसने नगरको गिरवाकर वहां जौ बुवा दिया और निवासियों को समरकद भेज दिया। फिर तीन साल बाद ही नगरके पुनःस्थापनाके लिये हुकुम दे इस कामपर उसने मुसिकी यङकि कुचीन-पुत्रको नियुक्त किया। मुसिकीने नगरको फिरसे बनवाकर लोगोको बसाया, उरगंज, कात और खीवाके चारो ओर नगर-प्राकार बनवाये।

तोकतामिशने देख लिया, कि अब तेमूर-लंगके साथ मामूली छेडखानीसे काम नही चलेगा। उसने १३८८ ई० (७९० हि०) में अपने महाअभियान शुरू करनेके पहले बहुत भारी सेना जमा की। इस सेनामें चिरकासी, बुल्गार, किपचक, क्रिमियावासी, कफ्फा, अलानिया, अजक, बाश्किर और रूसी सभी जातियोंके सैनिक थे। पता लगनेपर तेमूर भी भारी सेना ले समरकंदसे ६ फरसख पर अवस्थित सगरूज स्थानमें मुकाम किया। वहासे उसने अपने सारे राज्यमें सेना जमा करनेके लिये तवाची भेजे। उस साल जाड़ा बहुत सख्त रहा। चारों ओर जमीन बर्फसे ढंकी हुई थी। पता लगा, कि किपचक हरावल इलिकमिश ओगलानके नेतृत्वमें सिर-दरियापार हो ओतरार (उतरार)के पास अजक-जैरनुकमें डेरा डाले हुये हैं। तेमूरने तुरत हमला करना चाहा, लेकिन उसके अमीरोंने घुटने टेककर प्रार्थना की, कि और सेनाके आनेतक प्रतीक्षा की जाय। तेमूरने नहीं माना। बर्फ कही-कहीं घोड़ोंके छातीतक थी। उसीमें स्थानीय सेना ले वह रात-दिन कूच करने लगा। रास्तेमें उमरशेख मिर्जा अपनी सेना ले आ मिला। पीछेसे रास्ता काटनेके लिये सेना भेजकर दूसरे दिन तैलम्बार पहाड़ पार करनेपर दुश्मन सामने दिखाई पड़ा। भयंकर युद्ध हुआ। तोकतामिशकी बुरी तरह हार हुई। सिर-दरिया पार करके उसने जो गलती की थी,उसके कारण बहुत-से सैनिक डूब गये और अधिक संख्याको तेमूरने घेरकर मार डाला। तोकतामिशका राज्य-सचिव ऐरदीबरदी बंदी बनाकर तेमूरके पास लाया गया। तेमूरने उसका बहुत सम्मान कर बहुत-से उपहार दे लौटा दिया। तेमूरने स्वयं लौटकर फर्वरी ७९१ हि० (३१ दिसंबबर १३८८–२१ नवंबर १३८९ ई०) में समरकंदके पास अकारमें डेरा डाला।

वसंत (१३८९) शुरू होते-होते खुरासान, बलख, कुन्दुज, बतलान, बदख्शा, खुत्तलान, हिसार, सादुमान आदि नाना देशोंसे सेनाये आ पहुंची। खोजन्दके सामने दूसरी भी और कितनी ही जगहोंमें सिर-दरियाके ऊपर नावोंके पुल बनाये गये। १३८९ ई० (७९१ हि०) के प्रारंभमें अभियान शुरू हुआ। आरिस (आर्च) नदीके किनारे दुश्मनके हरावलपर तेमूरी सेनाने एकाएक आक्रमण कर दिया। तोकतामिशकी सेनाने सावरानपर असफल आक्रमण किया और उसे यस्सी (तुर्किस्तान) की ओर हटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। यही खुली जगहमें तोकतामिशकी सारी सेना पड़ी हुई थी। तेमूरको सामने आता देखकर तोकतामिशकी सेना भाग चली। तेमूरने पीछा किया और कुछको पकड़ लिया। अब तेमूर-लंगने अलकुसुनामें जाकर डेरा डाला। तेमूरके सामने इस वक्त दो शत्रु थे, एक तोकतामिश और दूसरा चगताईकी उत्तरी शाखा मुगोलिस्तान (राजधानी अलमालिक) का खान। दोनोंमें मुगोलिस्तानका खान कम बलिष्ठ मालूम हुआ, इसलिये उसीको पहले खतम करनेके ख्यालसे तोकतामिशके पीछे न बढ़कर तेमूर समरकंद लौट आया।

प्रथम महाभियान (१३९०ई०)

तेमूरने अच्छी तरह समझ लिया, कि दश्तेकिपचक (तोकतामिशके राज्य) का अभियान खेल नही है, इसलिये उसने बड़ी तैयारी की—तुर्कों और ताजिकोंकी भारी सेना जमा की, सालभरके लिये

रसद इकट्ठा की। हर एक आदमीको हुकुम दिया कि वह एक धनुष, तीस बाण, एक प्रत्यंचा और एक कमरबंद जमा करे। सारी सेना घोड़सवार थी। हरएक घोड़सवारको एक घोड़ा फाजिल अपने साथ रखना था। दस आदमियोंके ऊपर एक तंबू, दो बेल्चे, एक फरसा, एक हसिया, एक आरा, एक कुल्हाड़ा, एक रुखानी, सौ सुइयां, सवा चार सेर रस्सी, एक बैलका चमडा और एक मजबूत तवा दिया गया। सेनाको सरकारी घोडोके साथ शिरस्त्राण, कवच और नकद पैसा भी दिया गया था। ताश्कद छोड़नेके बाद तेमूरने हुकुम दिया, कि महीनेमे प्रतिव्यक्ति साढे आठ सेर आटा मिलेगा। रोटी, कुल्चा (बिस्कुट) आदि शिविरमे किसीको नही मिलेगा। खानेके लिये जल्दी-जल्दी आटेकी लपसी बना लेनी होगी। तेमूरने वृश्चिक राशिमें समरकंद छोड़ जाड़ेको समरकद जिलेमे ही बिताया। आगेके लिये प्रस्थानसे पहले खोजन्दमे उसने वहाके प्रतापी संत शेख मस्लहतके मकबरेका दर्शन करके उसपर दस हजार दीनार चढाये। ताश्कंदमे तेमूर चालीस दिनतक सख्त बीमार पड़ा रहा। उसकी सेनाके पथप्रदर्शक तमूर कुतुलुक ओगलान, तेमूर मलिकखान, गूनेजी ओगलान, इदिकू उज्बेक थे; जिनमेसे पहले तीन किपचक राजकुमार थे। १९ जनवरी १३९१ ई० को अपनी प्रियतमा भार्या तथा मुगोलिस्तानके हाजीबेक इरखानकी पुत्री चुलपान मलिक आगाके साथ तेमूरने प्रस्थान किया।

कुछ दिनोतक सेना कारासमनमें ठहरी। यहां तोकतामिशके दूत तेमूरके दरबारमें आये। उन्होने शाहबाज और नौ घोड़े भेंटकर दंडवत् पड़ धरतीपर ललाट रगड़कर सम्मान प्रकट करते अपने मालिक-की प्रार्थना दुहराते हुये कहा—"बुरी सलाहमें पड़कर तोकतामिशने विद्रोह किया, अब वह क्षमा मांगता है।" तेमूरने बाजको अपने हाथपर बैठाकर कहा—"सारी दुनिया जानती है, कि मैंने तोकतामिशकी रक्षा की, कितनी कुर्बानियां करके उसे तख्तपर बैठाया, लेकिन मुझे अनुपस्थित देख उसने तबरीजपर आक्र-मण कर दिया। मै अफसोस प्रकट करनेपर क्षमादानके लिये तैयार था, फिर भी उसने दुष्ट काफिरों को साथ ले मेरे सीमांतपर आक्रमण किया। काफिरोंने दूर-दूरतक लूट-मार की। जब मै अपनी प्रजाकी सहायताके लिये पहुचा, तो वह नीचता दिखलाते हुये हट गया। अब वह फिर मुझे झूठे वचनोद्वारा धोखा दना चाहता है। उसने बहुत बार विश्वासघात कर लिया है, अब वह मुझे फिर धोखा नही दे सकता। मै उसे दंड देनेके मंसूबेसे आया हूं, और उसे बिना पूरा किये नही छोडूंगा। तो भी अगर वह ईमानदारीसे अपनी सदिच्छा दिखलाना चाहता है, तो अपने प्रथम-मंत्री अलीबेकको मेरे पास भेज दे। मै राज्यका हित देखते बुद्धिके अनुसार कार्रवाई करूंगा।"

तेमूरने दूतोके लिये भारी दावत दी। उन्हें कमखाबके कफतान (जामे) भेंट किये, साथ ही खास स्थानमें टिकाकर निगाह रखनेके लिये ताकीद भी कर दी।

२१ फर्वरी १३९१ ई० को युद्ध-महापरिषद् बैठी। युद्धके पक्षमें निर्णय करके ज्योतिषियोंसे शुभमुहूर्त ठीक करवाया गया। तोकतामिशके दूत लौटा दिये गये। तेमूरी सेनाने कूच किया। उसकी सेना यस्सी (आधुनिक तुर्किस्तानशहर), कराचुक (तुर्किस्तानसे पांच फरसखपर सिर नदीमे गिरने-वाली नदीके ऊपर), और सावरानके रास्ते आगे बढ़ते उत्तरकी ओर मुड़कर ६ सप्ताह वृक्ष-वनस्पति-हीन मैदानमें चली। बहुतसे घोडे रास्तेमें चारे बिना मर गये। ६ अप्रैल १३९१ ई० को तेमूरी सेना नीले पानीवाली नदी (सरूक उजेन, सरीसू) के तटपर पहुची। नदी बढी हुई थी, इसलिये थके हुये घोड़ोको कुछ दिनो विश्राम दिया गया। २६ अप्रैलको प्रसिद्ध मैदान (कुनचुकताग=लघु-पर्वत) पर पहुंची। दो दिन और चलनेपर इस प्रदेशका सबसे बडा पहाड़ उलुगताग (महापर्वत) आया—पहिले इन पर्वतोंका नाम ओरताग (उच्च पर्वत) और करताग (गदा पर्वत) था। आगूज तुर्कों-के खान अपनी गर्मिया यहीं बिताते थे। इन पहाडोसे बहुत-सी नदिया निकलती है। तेमूर-लंग उलुगतागके ऊपर चढ़ा और वहांपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई० को शिला-लेख खुदवाकर एक पाषाणस्तंभ स्थापित करवाया।

यह शिलालेख आजकल लेनिनग्रादके एरमिताज-संग्रहालयमें है। अभिलेखमें ऊपर तीन पंक्तियां अरबीमें, फिर आठ पंक्तियां उइगुर-लिपि तथा तुर्की भाषामे है। उइगुर लिपिके कायदेके

अनुसार इस लेखकी पंक्तियां ऊपरसे नीचे न हो बायेंसे दाहिने तथा अरबी पंक्तियोंके समानान्तर है। तुर्की भाषामें मूल लेख निम्न प्रकार है:—

१. तरिक येती यूज तोकसन उचन्दा कोइ
२. यिल याजनिंग अरा ए तूरान निंग सुल्तान इ
३. तेमूर बेग इकी युज मिंग सेरगि बिलए इसमी उचुन तोकतामिश कान निंग
४. कनिगा योइरिदी बू येरगे येतिप बेलगू बोलसुन तेप
५. बू ओबा-नी कोपरदी
६. तङ-री निसफत बेरगेई इन्शल्ला
७. तङ-री इस किशीगे रहमत किलगे बिज-नी दुआ बिलाये
८. याद किलगे।

["७९३ हि० सन् (१३९१ ई०) के वसत के मध्यमें तूरान-सुल्तान तेमूरबेग दो लाख सेनाके साथ तोकतामिश-खानसे लड़नेके लिये आया।..यहा पहुचकर (उसने) इस स्तंभ (चिह्न) को स्थापित किया। यदि भगवान् चाहे, तो वह लोगोंको सौहार्द देवे और हमें आशीर्वादपूर्वक याद कराये।"]

आगे प्रस्थान करते सेना दूसरे दिन इलान्चुक (सर्प-सदृश) नदीपर पहुंची। आठ दिन और चलनेके बाद अताकरागुई (अनाकरागुई, करातुरगई) नदीपर पहुंची। अबतक ताश्कंद छोड़े चार मास हो चुके थे। रसद कम होने लगी थी। एक भेडका दाम सौ कुबेक (दीनार) हो गया था, अन्न भी उसी तरह महंगा था। तेमूरी सेना जंगली चिड़ियोंके अंडे, सभी तरहके जानवरोंके मांस, यहांतक कि घास भी खानेके लिये मजबूर हुई। उसके लिये तोकतामिशसे भी अधिक निष्ठुर उसके देशकी प्रकृति साबित हुई। रसदमे सिर्फ आटा, बाजरा और घास मिला हुआ सूप (रस) मिलता था। सिपाहियोंका ही खाना अफसर भी खाते थे। इस बयाबानमें शिकारोंकी कमी नही थी। छिङ-गिस्के महाशिकारकी प्रणाली लोगोंको भूली नहीं थी। ६ मई १३९१ ई० को उसी शिकारको रचा गया। आदमियोंने दूर तककी भूमि घेर ली। घिरावेमें पड़े हरिन तथा दूसरे जानवर बडी संख्यामें मारे गये। वह इतने अधिक फंसे थे, कि उनमेंसे सिर्फ मोटे-मोटे जानवरोंको ही मारा गया। तेमूरकी भारी सेनाके लिये कितने ही दिनोंके वास्ते मांस मिल गया। आगे बढती हुई वह तोबोल नदीके उद्गमके पास पहुंची। वहीं तेमूरने अपनी सेनाकी परेड देखी—भालों, तलवारों, खांडों, गदाओं, चर्मकी ढालोंसे सज्जित बाघका चमड़ा डाले घोड़ोंपर सवार सैनिक अफसर उसके साथ थे। तेमूरने स्वय अपने सिरपर पद्मराग-जटित एक मुकुट पहिना था। उसके हाथमें गदा थी, जिसके सिरे पर बैलका चेहरा था। तेमूरने अपनी सेनामें इनाम बांटा। सेना "सुरिम" (धावो) का नारा बुलन्द करते बाजेकी आवाज-पर अपने बादशाहके सामनेसे सलामी देती निकली।

फिर ज्योतिषियोंने शुभमुहूर्त देखा और १२ मईको मिर्जा मुहम्मद सुल्तान बहादुर (तेमूर-पौत्र) की अधीनतामें हरावल सेना आगे बढी। दो दिन जानेपर दुश्मनका पता उसके छोड़े डेरोंसे लगा, जिनमें अब भी आग मौजूद थी। अन्तमें वह तोबोल (छोटा वृक्ष)—जो कजाकोंकी तौबुल और रूसियोंकी ताबुला नदी है—के तटपर पहुंचे। पार होनेके बाद पता लगानेवाली टुकड़ीने लौटकर बतलाया, कि सत्तर जगहोंमें आग मिली, किन्तु दुश्मनका कहीं पता नहीं। यह सुनकर तेमूर भी जल्दी-जल्दी तोबोलतट-पर पहुंचा। उसके तुर्कमान सरदार शेख दाऊदके दलने लगातार जल्दी-जल्दी दो दिन-रातके कूचके बाद कुछ झोपड़ोंको देखा। वह प्रतीक्षा करने लगे। जब उनमेंसे एक सवार निकला, तो उसे पकड़-कर तेमूरके पास ले आये। पूछनेपर बंदीने कहा—"मैंने एक महीने पहले तोकतामिशके देशको छोड़ा। कुछ दिन हुये दस कवचधारी सैनिक मैंने पासके जगलमें छिपे देखे।" तेमूरने उनके पीछे सिपाही भेजे, जो कुछको मार बाकीको बंदी बनाकर ले आये। उनसे निश्चित खबर पा फिर सेनाने जल्दी-जल्दी कूच करना शुरू किया। २९ मईको तेमूर यायिक (उराल) नदीके तटपर था। नदीके ऊपरकी ओर पार

कर ६ दिन चलनेके बाद सेमुर नदीके तटपर जाकर सेनाने डेरा डाला। वहां पता लगा, कि तोकतामिश-की सेना हाल हीमें यहांसे हटी है। तेमूरने हुकुम दिया—"चुपचाप आगे बढो और रातको आग मत जलाओ।"

४ जून १३९१ ई० को तेमूर इक (शकमाराकी शाखा) के तटपर था। तोकतामिश उस समय केर्क अथवा कोरुक (सूखा)-गुल नामक झीलके ऊपर डेरा डाले बूल्गार (कजान) और अजक क्रिमिया के ओर्दूके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, साथ ही उसने यायिक (उराल) के घाटोपर छापामार तैनात कर रक्खे थे। अब भूमि दलदलवाली थी, जिसमें चलना तेमूरके सवारोंके लिये बहुत मुश्किल था। जल्दी ही खबर आई, कि शत्रुकी तीन पल्टने आगे पड़ी है। तेमूरने युद्धव्यूह रचनेका हुकुम दिया और ढाल, तूणीर और पैसे बाटे। एक बदीसे—जिसे पीछे मार डाला गया—पता लगा, कि तोकतामिश गहरी चाल चलकर अपने शत्रुओंको फसाना चाहता है। सैनिक अफसर मुबश्शिर बहादुरद्वारा पकड़े चालीस बदियोको भी बड़ी निष्ठुरतापूर्वक मारा गया—शायद साथमे बंदी लेकर आगे बढ़ना तेमूर पसद नहीं करता था। इन बदियोने कहा, कि हम केर्कगुलमे तोकतामिशके पास जा रहे थे, लेकिन उसे नही पा सके। अंतमे शत्रुकी एक सेनाका पता लगा। ऐकू तिमूर बरलस अपने दलको लेकर आगे पता लगानेके लिये बढा। शत्रुकी बडी सेना देखकर सात-आठ आदमियोके साथ स्वयं पृष्ठरक्षा करता वह पीछे लौटा। देखते ही शत्रु उसकी ओर दौड़े। एक तीरसे बरलसका घोडा घायल हो गया और दूसरे तीरसे वह स्वय भी आहत हुआ, लेकिन वह खबर देनेके लिये बेतहाशा घोड़ेको दौड़ाता रहा। घोडा गिर गया, तो उसने दूसरे घोड़ेको लिया। उस घोडेको भी शत्रुओने तीरसे घायल किया और वे घेरकर मुबश्शिरका सिर काटकर साथ ले लौट गये, कुछ साथी भी उनके हाथ लगे। इसी समय एक दूसरी तेमूरी सेना आ गई, जिसके कारण शत्रुओने पीछा करना छोड़ दिया।

तेमूरके यहां अमीर-पुत्रोको तरखनकी उपाधि थी, जिन्हे शाही तंबूमे किसी वक्त भी आनेकी इजाजत थी। छिङ्गिस्के समय भी तरखनकी पदवी प्रचलित थी। तेमूरने तरखनो और उनके वशजोंके नौ कसूर माफ कर रक्खे थे।

चलते-चलते तेमूरी सेना ५४° अक्षाशमें पहुची, जहां गर्मियोमे असली रात नही होती और गोधूली-के बाद ही उषा चली आती है। इसके कारण यह सवाल पैदा हो गया, कि रातके अभावमें चौबीस घटेमें पाच बार नमाज पढ़नेकी व्यवस्था कैसे की जाये। इमामने फतवा देकर रातकी नमाजसे लोगोंको छुट्टी दे दी। तोकतामिशकी यही नीति थी, कि पीछे हटते-हटते शत्रुको उसके मुख्य स्थानसे दूर खीचते ऐसी जगह लाओ, जहा रसद-पानी दुर्लभ हो जाय। तेमूरने युद्ध-परिषद् बुलाई और सेनापतियोंसे सलाह करके बीस हजार सेनाके साथ उमरशेख मिर्जाको आगे शत्रुके ऊपर भेजा। इसी समय ५-६ दिन बर्फ पड़ती रही, जिसके कारण सर्दी बहुत बढ़ गई। सोमवार १८ जून (१३९१ ई०) को आसमान साफ हुआ। अब बुल्गारोके देशमे कन्दुर्च स्थानमे पहुचकर तेमूरने अपनी सेनाको व्यवस्थित करते हुये कुरानके फातेहा सूरा (अध्याय) की सात आयतों (पक्तियो) के अनुसार उसे सात डिवीजनोमें बांटा। थकी होनेपर भी सेनाका उत्साह मंद नही था। तेमूरने रिश्वत देकर काम लेना चाहा और तोकतामिशके झंडाबरदारसे ठहरा लिया, कि युद्धके समय वह झंडेको गिरा देगा। जब अमीर अकतागको वामपक्षका सेनापति बन युद्ध छेडनेको कहा, तो उसने तोकतामिशसे मांग की, कि हमारे संबधीके हत्यारे अमीरको इसी वक्त मेरे हवाले किया जाय। तोकतामिशने युद्धके बाद देनेका वचन दिया, लेकिन वह इससे संतुष्ट नहीं हुआ और अपने सारे अकताग (श्वेत-पर्वत) कबीले तथा कितने ही दूसरे आदमियोके साथ चला गया। तेमूरके क्षुद्र-एसियापर आक्रमण करते समय यह अकताग कबीला दोबरूजामें रहता था। हालमें वह दन्यूबपार अद्रियानोपोलमें बस गया था।

युद्ध आरंभ करनेसे पहले तेमूरने घोड़ेसे उतरकर दो रकूअ (नमस्कार) नमाज पढ़ी। सेनाने "अल्लाह अकबर" और "सुरून" का नारा लगाया। ढोल और लोहेके झांझ बजे। इसी समय अलीके वंशज तथा शरीफोके मुखिया सैयद बरकाने विजयकी भविष्यद्वाणी करते सिर नंगा करके हाथ उठा दुआ की। शेखुल्-इस्लाम (इस्लामके महागुरु) अहमदजानके वंशज इमाम ख्वाजा जियाउद्दीन युसुफ

और शेख इस्माईल कुरानकी आयत पढ रहे थे—"ओ मुसलमानो, अल्लाहके आशीर्वादको याद रखो। वही है, जो कि तुम्हारे ऊपर हथियार चलानेवाले शत्रुओंके हथियारोको रोक देता है। अल्लाहसे डरो। विश्वासियोको उसपर विश्वास करना चाहिये।" मुट्ठीभर कंकडियां लेकर दुश्मनकी ओर फेकते हुये इमामने चिल्लाकर कहा—"उनके चेहरे काले हो जाये।" फिर तेमूरकी ओर मुंह करके इमाम बोला—"जहां चाहे जा, अल्लाह तेरी रक्षा करेगा।"

चतुर्थ सेनाके कमाडर अमीर सैफुद्दीनने सबसे पहले आक्रमण किया और शत्रुके वाम-पक्षको तोड़ दिया। तोकतामिशके आदमियोने चारों ओर फैलकर उसे घेरना चाहा, लेकिन उन्हें रोककर पीछे ढकेल दिया गया। वामपक्ष कुछ नष्ट हो गया और कुछ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुआ। इसके बाद दूसरे सेनापति अपनी सेना लेकर आगे बढ़े। भयंकर हत्याकांड होने लगा। तोकतामिशने तेमूरके केंद्र–दक्षिणपक्षके प्रहारको रोकना असम्भव समझकर उसके वाम-पक्षपर प्रचड प्रहार किया। वामपक्ष टूट गया और मुख्य भागसे उसके कितने ही अश अलग हो गये। तोकतामिशने वस्तुत बीचसे चीरकर पीछा जा धरा। बड़ी भयंकर अवस्था थी। तेमूरने आदमियोंको विश्वास पैदा करनेके लिये अपने पोते अबूबकरको हुकुम दिया। उसने गारदके दस हजार सवारोंको ले वहां जा घोड़ेसे उतरकर कहा—"तंबू गाड़ो, आग जलाओ, खाना तैयार करो।" इसका प्रभाव तोकतामिशके ऊपर पड़ा और जब तेमूरकी रिश्वतके कारण उसके झंडाबरदारने झडेको नीचा कर दिया, तो उसकी रही-सही हिम्मत भी टूट गई। वह पीछे हटकर गुरजी या लिथुवा-नियाके राजा वितुत (विथोल्द) के पास भागा। युद्ध तीन दिनतक होता रहा, जिसमें एक लाख किपचक मारे गये। तेमूरको भारी परिमाणमें रसद और दूसरी चीजे मिली।

युद्ध-क्षेत्रमे ही डेरा डलवा विजयके लिये अल्लाहको धन्यवाद देते तेमूरने सेनामें इनाम बांटे और हर दस आदमीमेसे सातको शत्रुका पीछा करनेका हुकुम दिया। वह वोल्गातक गये, जिसमें कतलसे बच गये शत्रुओंमेसे कितने ही डूब गये और थोडेसे ही प्राण बचाकर निकल पाये; जिनके भी बीबी-बच्चे, गुलाम और धन-संपत्ति तेमूरी सेनाके हाथ लगे। तोकतामिशका रनिवास भी पकड़ा गया। तेमूरी-सेनाने अजक (क्रिमिया), सेराय, सेरायचुक, हाजीतरखन (अस्त्राखान) तक लूट-मार और ध्वंसलीला मचाई। सुवर्ण-ओर्दूके लिये यह इतना जबर्दस्त प्रहार था, कि उसके बाद वह फिर अपनी पुरानी स्थिति में नहीं पहुच सका। उसकी जनसंख्या बहुत कम हो गई, वोल्गातट उजाड़ हो गया और शताब्दियोंके परिश्रमसे बनी वहांकी समृद्धि खतम हो गई। तेमूरने उरतुपा (स्तावरोपोल) जिलेके कंदुरताके नजदीक अपना शिविर गाड़ा। योद्धाओंने यहां विश्राम किया। उनके साथ घोड़ों, ऊंटों, ढोरों, भेड़ों और तरुण दास-दासियोंकी भारी संख्या थी। रूप-रंगमें अत्यंत सुन्दर पाच हजार तरुण-तरुणियां तेमूरकी सेवामे गईं। लूटका माल इतना मिला कि सारी सेना संतुष्ट हो गई। उरतुपामें छब्बीस दिन रहकर तेमूरने विजयोत्सव मनाया। यहींपर लघुविजय (फतेहनामा-कुचुक) लिखा गया।

इसके बाद तेमूर समरकंदकी ओर लौटा। अक्तूबरमें वह सावरानमें था, फिर उतरार होत राजधानी समरकंद पहुंचा।

यागलानके लिये उइगुर अक्षर तथा मंगोल भाषा में २० मई १३९३ ई० की लिखी हुई तोकतामिश-की यारलिक (शासनपत्र) मास्कोमें अब भी मौजूद है, जिससे मालूम होता है, कि १३९१ ई० की भारी पराजयके बाद फिर वह अपनेको संभालने लगा था और तीन-चार वर्षोंमें इतना संभल गया, कि तेमूरको फिर उसकी तरफ ध्यान देना पड़ा।

द्वितीय अभियान (१३९५ ई०)—२८ फर्वरी १३९५ ई० को फिर तेमूरने तोकतामिशके विरुद्ध प्रस्थान किया। उसके अन्त:पुरकी कुछ रानियां सुलतानियां (ईरान) भेज दी गईं और कुछ समरकंदमें रखी गईं। शम्शुद्दीन अलमालिगीको दूत भेज तेमूरने तोकतामिशको समझाने-बुझानेकी कोशिश की, लेकिन उसका उत्तर बड़ा उद्धततापूर्ण था। दूत लौटकर काकेशसके सानुओंपर कास्पियन-

समुद्रसे पांच फरसख (लीग) दूर अपने स्वामीसे आकर मिला। उस वक्त वाम-पक्ष समुद्र-तटसे पहाडके ऊपरतक बिखरा पड़ा था। अबकी तेमूरी सेनाने काकेशसके चरणोंमें कास्पियनके पश्चिमी किनारेका रास्ता लिया था। सेनाको दरबंदके दुर्गम घाटीको पार करनेमें दिक्कत नही हुई। तोकतामिशकी प्रजा काइतकने छेडखानी की, जिन्हे तेमूरने भयंकर हत्या करके खतम कर दिया, उनके गावोको नष्ट कर दिया। सेना आगे बढती चली। तोकतामिश तेरेक नदीके किनारे मुकाबिलेकी प्रतीक्षामे बेठा हुआ था, लेकिन तेमूरी सेनाको देखते ही वहासे भाग चला। पहिले कुरापर और तेरेकपर तेमूर तथा तोकतामिश एकत्रित हुये थे। २२ अप्रैल १३९५ ई० को दोनोमे युद्ध हुआ। शत्रुके सेनापतियोके आगे बढ़नेकी खबर पाकर तेमूरने अपनी सत्ताईस सेनाओंके साथ आक्रमण कर शत्रुको पीछे हटा दिया। पीछा करते हुये उसके आदमी अधिक दूरतक चले गये, जिसके कारण तोकतामिशकी सेनाने मुडकर जब हमला किया, तो उन्हे तितर-बितर होकर पीछे भागना पडा। यह खबर सुनकर शत्रुने और भी पीछा किया। तेमूर उनपर बाणोकी वर्षा करने लगा। उसका तरकश खाली हो गया। तलवार और भाला भी टूट गये। इसी समय तोकतामिशके सैनिकोने उसे घेर लिया। इस समय शेख नूरुद्दीन और उसके पचास बहादुरोंने घोडेसे उतरकर बाणवर्षा करके तेमूरको आड़ दिया। दूसरे अमीर भी दुश्मनकी तीन गाड़ियोंको पकडनेमे सफल हुये, जिनकी मददसे उन्होने मोर्चा-बंदी कर दी। सेना आसपास जमा होने लगी, बाजे बजने लगे। शत्रुने समझ लिया, कि उसका प्रधान शिकार कहां है, किन्तु वह इस मोर्चाबन्दीको नही तोड़ सका। इसी सम य शत्रुकेदक्षिणपक्षको तेमूरी सेनाने ध्वस्त कर दिया। तो भी तेमूरके वामपक्षकी स्थिति अच्छी नही थी। शत्रुने उसे तोडकर चारो ओरसे घेर लिया था। अपने कमाडरके हुकुमपर सैनिक घोडेसे उतर अपनी-अपनी ढालोके नीचे घुटने समेटकर बैठ गये। चारो ओरसे वर्षाकी बूदोंकी तरह हथियारोके प्रहार होने लगे। इसी समय जहानशाह बहादुर अपने घोड़सवारोको लेकर दौड़ा, और प्रहार करनेवाली शत्रुसेनाके दोनों पक्षोंपर टूट पड़ा। पलडा पलट गया। वह और उसके साथी दूसरे सेनापतिने मिलकर शत्रुके वामपक्षको मार भगाया। फिर केंद्रके साथ संघर्ष आरंभ हुआ। किपचक सेनापति यागलिबीने तेमूरी सेनापति उसमान बहादुरको द्वंद्वयुद्धके लिये ललकारा। दोनो मैदानमे उतरे। उनके अनुयायियोने भी अपने सेनापतियोका अनुकरण किया। यागलि ी शायद पोलराजा यागेलोन-था। सघर्ष भयंकर हुआ, किंतु अंतमें किपचक सेनाको हारना पडा। तोकतामिश ओगलानो (राजकुमारों) और नोयनो (अमीरो) के साथ भागा। तेमूरी सेनाने उसका पीछा करके भारी सख्यामे किपचकोंको तलवारके घाट उतारा। जो बदी हाथमें आये, उन्हे भी पीछे प्राणोसे हाथ धोना पड़ा। इस विजयसे प्रसन्न हो तेमूरने सिर नगा करके घुटने टेक अल्लाहके सामने दुआ पढ़ी। अमीरोंने तेमूरके ऊपर रत्नोकी बरसा की। तेमूरने लूटके माल और अपने पासके धनमेसे भी सैनिकोमे खूब उदारतापूर्वक इनाम बाटा।

तोकतामिशका पीछा करते हुये वोल्गाके किनारे-किनारे तेमूर उकाकतक गया और वोल्गाके तूरातू घाटपर थोडी देर ठहरा। उसने उरुस खानके पुत्र तथा अपने शरणागत कोइरिअक ओगलान को सुनहली खलअत और कीमती कमरबद प्रदान करके उज्बेक रिसालेके साथ किपचकोका खान बनाया। तोकतामिश वोल्गारोंके जगलोमें भागा। पहले ही अभियानवाले घाटसे वोल्गा-पार हो तेमूर सोने, चांदी, समूर और दूसरे बहुमूल्य मृगछालो, रत्न-मणि, मोतीकी अपार राशि तथा भारी सख्यामे सुन्दर लड़के-लड़कियोंको लिये दनियेपरकी ओर चला। उसके किनारे मङकिरमान स्थानमें जाकर बरकियारोक ओगलानके डेरेपर जा पड़ा और उसे बिल्कुल नष्ट कर दिया। बरकियारोक मुश्किलसे जान बचाकर भागा। पीछा करते तेमूरी सेनाने दोनके तटपर उसके रनिवासको जा पकड़ा, लेकिन बरकियारोक भाग निकला। तेमूरने ओगलानके रनिवासके साथ अच्छा बर्ताव किया, और घोडे तथा दूसरी भेंटे दे उसे बरकियारोकके पास भेज दिया। मीरांशाह अपनी सेना लेकर दूसरी ओर गया हुआ था। उसने एलात्ज किलेको सर किया। मास्कोका तरुण महाराजुल वासिली अपने चचा व्लादिमिरको राजधानी सौंप ओका नदीके पीछे कलोम्नाकी ओर भाग गया। वहासे उसने महासघराजको लिखा, कि कुमारी (मरियम) देवीकी प्राचीन मूर्तिको मास्को ले जाओ, जिसमें देवीके प्रतापसे नगरकी रक्षा हो।

भक्तोकी दो पांतियोके बीचमें मूर्ति लाई गई। लोग चिल्ला रहे थे—"भगवान्‌की मा, रूसको बचाओ।" मास्कोके एसम्प्सन गिर्जेमें कुमारीका बडा स्वागत किया गया। तेमूर दोनसे कुछ दूर आगे बढकर लौट गया। भगवान्‌की मांने मास्कोको बचा लिया, नही तो तेमूरने उसकी वही दशा की होती, जो कि उसने चार वर्ष बाद १३९८-९९ ई० में दिल्लीकी की। तेमूरने कुमारीके प्रतापसे नही, बल्कि शरद् और हेमन्तके कठोर जाड़ेके भयसे वहां और रहना पसंद नही किया। वह दक्षिणमे चलकर अजक (क्रिमिया) पहुंचा। लोगोकी सारी प्रार्थना व्यर्थ गई। उसने मुसलमानोंको अलग करके बाकी लोगोंको एक ओरसे कटवा दिया और शहरमे आग लगवा दी। फिर कूबान और जार्जियामें सत्यानाश मचाते आगे बढा। काकेशसके युद्धको उसने धर्मयुद्ध (जहाद) घोषित किया था। भारतकी भाति ही उसने इस देशको भी काफिरोको मिटाकर शुद्ध करना चाहा। उनकी बस्तियोको तेमूरी सेनाने जला दिया, उनके गिर्जो और मूर्त्तियोको नष्ट कर दिया। हाजीतरखन (अस्त्राखान) नगरमे विश्वासघातकी खबर पा जाडोंमे तेमूर वहा पहुंचा। लोगोने वोल्गाके पानीकी बर्फ जमाकर शहरके चारों ओर प्राकार बना दरवाजे काट रक्खे थे, लेकिन तेमूरके सामने बर्फका मोटा दुर्ग नही ठहर सका। भीतर घुस मनुष्यो, पशुओ और सपत्तिको हटानेका हुकुम दे उसने नगरमे आग लगा दी। वहा से तेमूर किपचकोंकी राजधानी सराय-बेरेकमें पहुंचा। वहा भी नागरिकोंको भेडोकी तरह जबह करके शहरमें आग लगा दी।

इस प्रकार किपचक देशको पूरी तौरसे बरबाद करके तेमूर दरबद और आजुरबाइजानके रास्ते लौटा। वह अपने साथ बहुतसे किपचकोंको भी ले आया था, जिनमे वोल्गारीके पासवाले वोलगातटके निवासी कराकल्पक (काली टोपी) भी थे, जिनकी संताने आज अराल-समुद्रके पास कराकल्पकियों के स्वायत्त-गणराज्यमें बसी हुई हैं।

इसके बाद तेमूर बहुत नही जिया, और १३९९ ई० में मर गया। इसका वर्णन हम यथास्थान करेंगे।

तेमूरके लौट जानेपर तोकतामिश फिर १३९८ ई० मे सरायबेरेक पहुंचा, लेकिन तेमूर कुतुलुकने तबतक उसे संभाल लिया था। कुतुलुकने तोकतामिशको मार भगाया। वहांसे अपनी बीबी, दो पुत्रों, खजाने और बहुतसे अनुयायियोंके साथ भागकर वह कियेफ गया। सुवर्ण-ओर्दूका वह अंतिम महान् शासक था। जिस तरह उसके वैभवका सितारा चमका, उसी तरह वह अस्त भी हो गया।

१३. कोइरिअक ओगलान नूजी, ओगलान, उरुस-पुत्र (१३९६ ?)

नूजी भागकर उस समय तेमूर-लंगके दरबारमं रहता था, जबकि तेमूरने किपचकोपर द्वितीय अभियान किया। एक इतिहासकारके अनुसार तोकतामिशकी पराजयके बाद तेमूरने उसे जू-छिका उलुस ७७७ हि० (२ जून १३७५—२० मई १३७६ ई०) मे दे दिया, लेकिन इस सन्‌में गलती मालूम होती है, क्योंकि तेमूरका दूसरा अभियान १३९५ ई०में और पहला अभियान १३९० ई० में हुआ था।

१४. तेमूर कुतुलुक, तेमूरबेक-पुत्र (१३९५—१४०० ई०)

तेमूर-लगके सबसे पहले आक्रमणके समय ७८९ हि०, (१० जून १३७७ ई०—२९ जून १३७८ ई०) यह तेमूर-लगके साथ था और तोकतामिशकी प्रथम पराजय होनेके बाद ७९३ हि० (९ दिसम्बर १३९० ई०—२८ नवम्बर) में तेमूरने इसे उसके उलुसका खान बनाया। द्वितीय अभियानमें तेमूरके किपचकसे हटते ही तोकतामिशसे इसका सघर्ष हुआ। तोगाई सरदार इदिकू कुतुलुकके पक्षमें था। वह तोकतामिशको तो मार भगानेमें सफल हुआ, लेकिन उसके पूर्वी भागपर कोइरिअक उरुस-पुत्रका अधिकार बना रहा। १३९७ ई०में लिथुवानी राजा वितूतने तेमूर कुतुलुकके ऊपर आक्रमण किया और कई हजार तारतारोंको उनके स्त्री-बच्चोंके साथ पकड़ ले गया। ये तारतार पीछे वोलना और ओकके बीचमें बस गये। ईसाइयोके बीचमें इस्लामको कायम रखना उनके लिये मुश्किल था, इसलिये वह दूसरी पड़ोसी जातियोंमें मिश्रित होकर ईसाई बन गये, और केवल तारतार उनका नामभर रह गया। तेमूर कुतुलुकने बड़ी जल्दी फिर अपनी शक्तिको इतनी मजबूत कर ली, कि उसने वितूतसे

मांग की, कि अपने राज्यके कियेफ नगरमें भागे तोकतामिशको मेरे पास भेज दो। बितूतके इन्कार करनेपर उसने आक्रमण कर दिया और ५ अगस्त १३९९ ई० को लिथुवानी और किपचक सेनाओं मे भारी लडाई हुई। बितूतको अपने बारूदी हथियारोंपर बहुत भरोसा था, जिनका आविष्कार मगोलोंके बारूदी हथियारोके सहारे हालमे ही युरोपमे किया गया था। लेकिन उस समयकी तोपे अभी बहुत आरंभिक अवस्थामे थी, दागनेसे पैदा हुई गर्मीको उनकी धातु बर्दाश्त नही कर सकती थी। कुतुलुककी सेनाने पीछे जाकर लिथुवानी पक्तिको तोड दिया। लेकिन, तोकतामिश वहासे निकल चुका था, बितूतको भी जान लेकर भागना पडा। लिथुवानी सेना नष्ट हो गई। किपचकोने भगोडोका पीछा कर कितनों हीको मारा और कितनोंको बंदी बनाया। तारतारोंने लुत्स्कतक लिथुवानी राज्यको लूटा। उन्होने कियेफ नगरपर भारी जुरमाना लगाया। इसके बाद सात सालतक और तोकतामिश इधर-उधर भटकता फिरा। अन्तमें वह पश्चिमी साइबेरियाके तुमान-जिलेमे शादीबेकके हुकुमसे इदिकूके हाथों मारा गया।

कुतुलुक ८०२ हि० (३ सितबर १३९९ ई०--१२ अगस्त १४०० ई०) में वोल्गाके किनारे कजान नगरमें मरा।

१५. शादीबेक, तेमूरबेक-पुत्र (१४००-१४०८ ई०)

किपचकोका पूर्वी भाग अब भी कोइरिअकके हाथमें था। उसके पश्चिमी भागपर शादीबेक शासन करने लगा। बीचमे हुई गडबड़ीके कारण क्षोभ होकर मास्कोके महाराजुल वासिलीने कई सालोसे कर नही भेजा था। १४०५ ई० में कर उगाहनेके लिये खानका दूत मास्को पहुचा। तेमूर कुतुलुकने लिथुवानी राजाको पाठ पढाकर अपनी काफी धाक जमा ली थी, इसलिये महाराजुलने दूतकी भी भेट-पूजा की और कर भी बेबाक कर दिया। ८०८ हि० (२३ दिसबर १४०५--२१ जनवरी १४०६ ई०) मे शादीबेकका अमीर इदिकू ख्वारेज्मको तेमूरियोसे छीन अमीर अंकाको वहाका राज्यपाल बना लौट गया। शायद इसी साल ईद-रमजानके दिन इराकियोकी एक बड़ी जमात तेमूरी मिर्जा खलील सुल्तानसे नाराज हो गई और समरकंद छोड़कर ख्वारेज्म चली गई। तुगा तेमूरखानके पौत्र दुकमान बादशाहके पुत्र पीरबाद-शाह तेमूरी सुल्तान अबूसईदके डरसे भागकर माज़न्दरान (ईरान) मे भाग गया था। वह वहासे ख्वारेज्ममें आ गया, जब उसने देखा कि वह तेमूरियोके हाथसे निकल गया है। इपीर बादशाहको इराकियोने ख्वारेज्मका बादशाह बनाया और मिर्जा खलीलके दिये हुये धनको उसे भेंट दे वह माजन्दरान चले गये। ख्वारेज्मका हाकिम अब भी अका था।

शादीबेक ८११ हि० (२७ मई १४०८--१५ मई १४०९ ई०) में मर गया।

१६. पूलाद खान, तेमूरबेक-पुत्र (१४०८--१४१० ई०)

भाईकी जगहपर पूलाद गद्दीपर बैठा और अमीर इदिकू सारी सल्तनतका वजीर-आजम बना। उसने अकाको लौटा उसकी जगह बगजलेको ख्वारेज्मका राज्यपाल बनाया।

पश्चिमी राजा कहीं खानोकी शक्तिको कमजोर न समझ ले, इसलिये १४०९ ई०की शरद्में तारतारोने दक्षिणसे दुनियेपरकी ओर बढते लिथुवानियापर आक्रमण किया। मास्कोके महाराजुलने कर बाकी रक्खा था और ऊपरसे तोकतामिशके पुत्रको भी शरण दी थी। पूलादने इस अपराधके लिये दंड देनेके वास्ते एक बडी सेना मास्कोके विरुद्ध भेजी। महाराजुल वासिली केवल तोपों और जाड़ेपर भरोसा कर सकता था, इसलिये रानीको लेकर वह कस्त्रोमा भाग गया। दिसंबर १४१० को तारतार सेना मास्कोके सामने पहुची। तीस हजार सेना महाराजुलके पीछे पड़ी, और उसने पेरियेस्लाव्ल, ज्वालेस्की, रोस्तोफ, दिमित्रोफ, सेरपूकोफ, निजनी-नवोग्राद और गोरदेत्स नगरोको लूटकर जला दिया। एक बार फिर रूसियोको बा-तू और तोकतामिशके दिन याद आने लगे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार--"अभागे रूसी प्रतिरोध करनेकी जगह भेड़ोके झुंडकी तहर भेड़ियोंद्वारा पीछा किये जा रहे थे।" उनमेंसे कुछ कतल किये गये, कुछ तारतार धनुर्धारियोके बाणोसे बिधे। तरुण दास बनाने-बेंचने के लिये पकड़

लिये गये, सयान कपड़े छीनकर नंगे करके जाड़ेमें मरने के लिये छोड दिये गये। आदमियोको एक दूसरेके साथ जजीरोमे बांध दिया गया और एक तारतार चालीससे अधिक आदमियोंको कातूमें रख सकता था। लेकिन, मास्कोका मुहासिरा सफल नही रहा। दूसरा चारा न देखकर इदिकू तीन हजार रूबल जुरमाना लेकर लौट गया। लौटते वक्त उसने र्याजन नगरको लूटा। इदिकूने इसी समय महाराजुलको पत्रमें लिखा था:—

"इदिकू, राजुल-पुत्रों और राजकुमारोंसे सलाह लेनेके बाद वासिलीको अभिनंदन भेजता है। यह मालूम करके, कि तुमने तोकतामिशके पुत्रोको शरण दी है, महान् खानने मुझे आज्ञा दी, कि तुम्हारे विरुद्ध चढाई करू। तुम हमारे व्यापारियोके साथ ही दुर्व्यवहार नहीं करते, बल्कि तुमने हमारे दूतोंका भी बडा अपमान किया है। अपने बूढे आदमियोसे पूछो, कि क्या पहले कभी ऐसा होता था। उस समय रूस अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर था। वह खानका पवित्र सम्मान करता था और नियमपूर्वक कर अदा करता था। हमारे व्यापारियों और दूसरोंके प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था। इसकी जगह तुमने क्या किया? जब तेमूर कुतुलुक सिहासनपर बैठा, तो क्या तुम स्वयं आय या तुमने अपने राजकुमारो या अपने एक बायरको भी भेजा? तेमूरके मरनेके बाद शादीबेकके आठ वर्षोंके शासनकाल में क्या तुमने एक बार भी आज्ञाकारिताका कोई भी काम किया? और अतमें पूलाद खानके तीन वर्षोंके सिहासनपर बैठनेके कालमें क्या तुम या जेठे रूसी राजपुत्रोंमेंसे कोई अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये ओर्दूमें गया? तुम्हारे सारे काम अपराधपूर्ण हुये। जब फेदोर कोसका जीता था, तो सारे रूसी उसकी सलाह मानकर अच्छा बर्ताव करते थे, लेकिन तुम अब उसके पुत्र जानकी बात नही मानते, जो कि तुम्हारा कोषाध्यक्ष और मित्र है। तुम बड़ोंकी सलाह माननेसे इन्कार करते हो, जिसका परिणाम देख ही रहे हो, तुम्हारे देशकी बरबादी हो रही है। अगर तुम इससे बचना चाहते हो, तो अपने सबसे बुद्धिमान् बायरों—इलिया, पीतर, जान निकितिच आदिकी बात मानो और अपने किसी बड़े अमीरके साथ वह भेंट भेजो, जिसे रूस जानीबेकके पास भेजा करता था। रूसी लोगोंकी गरीबीकी बातें बताकर तुमने जो खानको बहलाना चाहा है, वह सब झूठ है। हम तुहारे देशके कोने-कोनेको देख चुके हैं। हम जानते है कि हर दो हलके ऊपर तुम्हे एक रूबल कर मिलता है। यह पैसा कहा जाता है? हम तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहते। तुम क्यों एक अभागे भगोड़ेकी तरह काम कर रहे हो? सोचो और अकलकी बात मानो।"

लेकिन महाराजुलके ऊपर इदिकूके उपदेशका कोई असर नहीं हुआ, क्योंकि वह किपचकोंकी भीतरी हालतको अच्छी तरह जानता था।

८१३ हि० (६ मई १४१०—२४ अप्रैल १४११ ई०) में पूलाद खानको तेमूर खानने मार भगाया।

१७. तेमूर खान, तेमूर कुतुलुक-पुत्र (१४१०-१४११ ई०)

इतिहासकार अब्दुर्रजाक समरकंदी (१४२२ ई०) के अनुसार * यह तेमूर कुतुलुक खानका पुत्र था, लेकिन गफ्फारीने इसे शादीबेकका पुत्र कहा है। शायद यह तेमूर कुतुलुकका ही पुत्र था। पूलाद खानके वक्त राज्यका हर्ता-कर्ता अमीर इदिकू था, इसलिये उसको दबाये बिना तेमूर अपनेका सुरक्षित नही समझता था। इदिकू भागकर ख्वारेज्म जा तैयारी करने लगा। तेमूरने अजक बहादुर और गजनके नेतृत्वमें सेना भेजी। ख्वारेज्म-शहर (उरगंज) से दस दिनके रास्तेपर साम नामक स्थानमें लडाई हुई। ख्वारेज्मका राज्यपाल बगजले मारा गया और इदिकू हारकर ख्वारेज्म भाग गया—यह शायद ८१४ हि० (२५ अप्रैल १४११—अप्रैल १४१ ई०) के आरंभकी बात है। तेमूरके सेनापति दकिना और गजन भी पीछा करते हुये ख्वारेज्म पहुंचे। उन्होंने ६ महीना इदिकूको मुहासिरेमें रक्खा। इसी समय पता लगा, कि तोकतामिश-पुत्र जलालुद्दीनने तेमूरको हराकर गद्दी छीन ली।

---

* "मतल-उस्-सादैन-व-मज्म-उल्-बहरैन्"

१८. जलालुद्दीन, जलाबेर्दी, सेलेनी, तोकतामिशका ज्येष्ठ पुत्र (१४१४ ई०)

जलालुद्दीनने गद्दी सभालते ही ख्वारेज्ममें लडते किपचक सेनापतिके पास पैगाम भेजा, कि इदिकू हमारा दुश्मन है, उसे पकड़ लाओ। फिर उसने दूसरा सदेश भेजा, कि अगर इदिकू अपने पुत्र सुल्तान महमूद तथा उसकी पत्नी (जो कि जलालकी बहन भी थी) को मेरे पास भेज दे और सिक्का तथा खुतवा मेरे नामसे जारी करे, तो उससे लडाई मत करो। अमीर गजन भी जलालुद्दीनका बहनोई था। उसने सुलह करनी चाही। उधर दकिना तेमूर खानका बहनोई था, इसलिये उसने दूसरे सदेशकी ओर ध्यान नही दिया। इसी समय तेमूरखानके फिर लौट आनेकी खबर मिली। गजनने दकिनाको शराब पिला मतवाला कर अपने नौकर जान ख्वाजाको भेज तेमूरको मरवा दिया। यह खबर सुनकर जलालुद्दीनने अमीर गजनको बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुये संदेश भेजा, कि गजन खां मेरा अमीर है, उसका हुकुम मानो। अमीर दकिनाने तेमूरके लिये लोगोंको बहकाया। लेकिन ख्वारेज्मका मुहासिरा और जोरका हुआ। अमीर खिजिर ओगलान राजकुमार होनेसे दर्जेमें सबसे बड़ा था। उसके बाद दकिना फिर गजनका दर्जा था। किपचक सेनापतियोंने अमीर इदिकूसे सुलह कर लेना ही अच्छा समझा, क्योकि जलालुद्दीन खानकी वैसी ही आज्ञा थी। अमीर इदिकू सुलह करनेके बाद शहरसे बाहर निकल आया। खूब एक दूसरेकी जियाफतें होने लगी। सेनापति मुहासिरा हटाकर किपचक भूमिकी ओर लौटे जा रहे थे। इसी समय बलूकिया गावमें उनकी कजुलई बहादुरसे मुलाकत हुई। उसने बिना सर किये ही लौटनेकी बात लेकर ताना मारा—"ख्वारेज्मको दखल किये बिना कैसे लौटे जा रहे हो?" अमीरोंने कहा—"हमने सात महीना मुहासिरा करके युद्ध किया, लेकिन शहर सर नहीं कर सके, तेरे पास तो चार हजारसे बेशी मर्द भी नही है। लौटनेकी सलाह हुई। हमने सुलह कर ली। इदिकू अपने पुत्रको खानके पास (जामिन) भेजेगा।"

कजुलईने उत्तर दिया—"मैं अकेला ही इदिकूके लिये काफी हू" और वह गर्वके साथ ख्वारेज्मकी ओर चल पड़ा। अमीर इदिकूको भी खबर लग गई। सेना कम होनेसे वह चालसे काम लेना चाहता था। वह दिनमें छिपा रहता और केवल रातको सफर करता। नजदीक आनेपर इदिकूने अपनी सेनाको दो भागोमे बांटकर एक भागसे कहा, कि तुम थोडा लड करके पीछे हटो और रास्तेमें पुराने नम्दोंके बंधे बोगचोंको फेकते आओ। युक्ति काम कर गई। कजुलईकी सेना बोगचोंको बटोरनेके लिये बिखर गई, इसी समय इदिकू टूट पडा। कजुलई मारा गया। इदिकूने उसके सिरको झडे-पताके आदिके साथ ख्वारेज्म भेजा। कजुलईके भगे हुये आदमियोंने जब अपने सेनापतिके झडेको चलते देखा, तो समझा कि वह विजय-यात्रा करते हुये ख्वारेज्म जा रहा है, तो वह छिपी जगहोंसे आकर वहा पहुंचे और इदिकूके जालमें हजारो आदमी फंस गये।

इतिहासकार गफ्फारी (मृत्यु १५७६ ई०) के अनुसार * "जलालुद्दीन और करीमबरदी कपक जब्बारबर्दी, मोहम्मदखान और दूसरे राजकुमारो जैसोने कुछ समयतक हकूमत की।" इस तरह अब किपचककी राजावली जल्दी-जल्दी बदलते खानोंके कारण गड़बड़ीमे पड़ गई। कुछको छोड़-कर यह कहना मुश्किल है, कि कौन खान किसके बाद गद्दीपर बैठा।

१९. करीमबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१४ ई०)

करीमबर्दी कुछ दिनोंतक गद्दीपर रहा। शायद इसे जब्बारबर्दीने मार डाला, जिसका भी शासन थोड़े ही दिनोंतक रहा।

२०. चिङ-गिज ओगलान (१४१४ ई०)

समरकंदीके अनुसार चिङ-गिज ओगलानको जब्बारबर्दीने हराकर स्वयं गद्दी संभाली।

* "नस्ख-जहानारा"।

२१. जब्बारबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१७ ई०)

इसीके समय ८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२–२ अप्रैल १४१५ ई०) में तेमूर-लंगके पुत्र शाहरुख ने ख्वारेज्मके ऊपर सेना भेजी, जिसमें खुरासानके अमीर अली, और अमीर इलियासखोजा दोनो सेनापति थे। अन्तर्वेदसे भी पांच हजारकी सवार सेना ले सेनापति मूसा आया। दोनों सेनायें ख्वारेज्म-में आकर मिल गईं। इस समय इदिकूका पुत्र मुबारकशाह ख्वारेज्मका राज्यपाल था, जिसने सेनाकी खबर पाकर डरके मारे बापके पास भाग जाना पसन्द किया। मुल्लाओं और नगरके बड़े-बड़े लोगोने नगरको शाहरुखकी सेनाके हाथमें समर्पण कर दिया। दूसरे सेनापति लौट गये, अमीर शाह-मुल्क कुछ समयतक देशके सुप्रबन्धके लिये ठहरकर ८१४ हि० (३ अप्रैल १४१३—२२ मार्च १४१४ ई०) को राजधानी हिरात चला गया।

२२. दर्विस खान

शायद यह उरुसखान-वशज था। इसने थोड़े ही दिनो राज किया।

२३. चकरा खान (१४१६ ई०)

यह उरुस खानका वंशज था। यह कुछ समयतक तेमूर-पुत्र मीरांशाह और पौत्र अबूबकरके दरबारमें रहा था। अमीर इदिकूने इसे किपचक बुलाया। अबूबकरने ६ हजार सवार साथ कर दिये, जिनके साथ सिल्ट बरगर नामक एक युरोपीय सैनिक भी था। गुरजी, शेरवान, दरबंद, अस्त्राखान होते यह सेना सेतजुलेत सराय (?) पहुंची। वहां कितने ही ईसाई रहते थे, जिनका एक विशप भी था। सिल्ट बरगर ने लिखा है, कि वहांके पादरी लैटिन जानते थे, लेकिन प्रार्थना और गीत तारतार भाषामें करते थे। इदिकूके साथ चकरे और सिल्ट बरगर भी इपबिस (सिबिर) की ओर गये—यहीं साइबेरिया नाम का सबसे पुराना उल्लेख मिलता है। सिल्ट बरगरका कहना था, कि साइबेरियामें तीस दिन लंबा एक पहाड़ है (शायद उसका अभिप्राय उराल पर्वतसे है)। उसके आगे निर्जन भूमि पृथिवीके छोरतक चली गई है। इस पहाड़के निवासी जंगली तथा दूसरोंसे भिन्न हैं। केवल उनके हाथ और चेहरोंपर केश नही होते, नहीं तो सारा शरीर केशोंसे ढंका होता है। वह पहाड़ोंमें जानवरोंका शिकार करते हैं और पत्ता तथा घास जो भी मिलता है, उसीपर गुजारा करते हैं। इलाकेके शासकने इस जंगली जातिकी एक स्त्री, एक पुरुष एवं गदहेसे-बड़े-नहीं एक जंगली घोड़े तथा दूसरे जानवर इदिकूके पास भेजे थे। मार्कोपोलोकी तरह सिल्ट बरगरने लिखा है, कि वहां कुत्ते है, जो गाड़ी खींचते है। इन गाड़ियोंमें समूरी छाले भरे रहते है। ये कुत्ते गदहोंके बराबर होते हैं और जगली लोग इन्हें खाते भी हैं। निवासियोको ऊगिने (उगरी) कहा जाता है। जब उनमें कोई अविवाहित तरुण मर जाता है, तो उसे बढिया कपड़ा पहनाते है, भोज करते है, फिर लाशको अर्थीपर रखकर ऊपर सुन्दर चंदवा टांगकर जलूस निकालते है। आगे-आगे तरुण-जन सुन्दर पोशाक पहने चलते हैं, पीछे-पीछे मां-बाप और दूसरे संबंधी रोते हुये अनुगमन करते है। खाने-पीनेकी चीजोको कब्र पर ले जा वहीं श्राद्ध-भोज करते हैं। चारों ओर बैठे तरुण खाते-पीते हैं, और संबंधी रोते रहते हैं। उस भूमिके आदमी रोटी नहीं खाते, मटर छोड़कर वहां कोई अनाज नही होता।

चकरा नौ मास ही गद्दीपर रहा, फिर उलुक मोहम्मदने आक्रमण करके उसे भगा इदिकूको भी बंदी बना लिया।

२४. किबेक, कपक, तोकतामिश-पुत्र (१४२२ ई०)

उलुक मोहम्मद स्वयं गद्दीपर न बैठकर दूसरोंको राजा बनाता रहा, इसीसे किबेकको भी पश्चिमी किपचककी गद्दीपर बैठनेका मौका मिला। इसी समय अपने पिता कोइरियकके मरनेपर बोरक पूर्वी किपचक- सिंहासनपर बैठा। १४२२ ई० में उसने किबेकको हराया, लेकिन दूसरे साल नई सेना एकत्रित कर किबेक फिर लड़नेके लिये लौटा।

२५. उलुक मोहम्मद खान

यह तूका-तेमूर-परिवारका और उरुसखानियोंका विरोधी था। इसीने बोरकखानको हराया।

२६. सैयद अहमद खान

शायद यह उलुक मोहम्मदके बाद गद्दीपर बैठा। बच्चा ही था, जबकि अमीरोंने इसे खान बनाया, जिस पदपर वह सिर्फ पैंतालीस दिन रहा।

१७ मार्च १४१६ ई० को मुगीसुद्दीन उलुगबेक (शाहरुख-पुत्र) का डेरा खोजन्द नदी (सिरदरिया) के तटपर शाहरुखिया नगरके सामने था। इसी समय ख्वारेज्मसे खबर मिली, कि जब्बारबर्दीने चिङ-गिज ओगलानको भगा उज्बेक—उलुसको अपने हाथमें कर लिया है। मिर्जा उलुगबेक सिर-दरिया (सेहून) पर पुल बनवा सफर महीने (३१ मार्च—२८ अप्रैल १४१६ ई०) के अन्तमें समरकंद पहुंच गया। उज्बेक-देश (दश्तेकिपचक) से भागकर आये ख्वाजा लाकके पुत्रोने प्रार्थना की, कि उज्बेक-देश बरबाद हो रहा है, उसे बचायें।

२७. मोहम्मद खान तोकतामिश-पुत्र (१४२२–१४२५ ई०)

शायद ८२२ हि० (२८ जनवरी १४१९—१६ जनवरी १४२० ई०) मे (छिङ-गिस् ओगलानका संबंधी) बोराक ओगलानने उज्बेक (किपचक) राज्यसे भागकर मिर्जा उलुगबेक गूरगानके पास आ "हस्तचुम्बन" का सौभाग्य प्राप्त किया। उलुगबेकने उसपर बहुत कृपा दरसाई। कुछ समय वह समरकदमें उसके पास रहकर फिर अपने देश लौट गया। मिर्जा उलुगबेक भी ताशकंदसे आगे कूच करके बुरलकके पास पहुंचा। वहां उसे उज्बेकोंकी ओरसे भागकर आये बलखू नामक आदमी ने उज्बेक-राज्यकी बरबादीकी खबर दी, जिसका समर्थन वहांसे आये व्यापारियोंने भी किया। इससे मालूम होगा, जू-छि-उलुस या दश्तेकिपचक अब उज्बेक देश कहा जाने लगा था।

अब्दुर्रजाक समरकंदी शाहरुखके समय "वकाया-निगार" (घटना-लेखक) था। उसने ८२४ हि० (६ जनवरी—२५ दिसंबर १४२१ ई०) के "वकाया" (घटनाओं) को लिखते हुये बतलाया है—"सुल्तान केशजीने कराबाग (ईरान) से दश्तेकिपचकमे जा मुहम्मदखानकी अधीनता स्वीकार की। खानने उसके साथ बड़ा अच्छा बरताव किया और शाहरुखकी सल्तनतके प्रति अपना सद्भाव प्रकट किया। सुल्तान केशजी वहासे जीकदा महीने (२८ अक्तूबर—२६ नवम्बर) को लौटा। यद्यपि उत्तरी घुमन्तुओं-में आपसमें खूनी गृह-कलह छिड़ा हुआ था, लेकिन उसके कारण दक्षिणके ग्रामों-नगरोंके निवासी निश्चिन्त नही रह सकते थे।" गृह-युद्धोके कारण भी उत्तरके घुमन्तुओंका टिड्डीदल दक्षिणकी ओर प्रस्थान कर सकता था। समरकंदीने ८८५ हि० (२६ दिसंबर १४२१—१४ दिसंबर १४२२ ई०) के "वकाया"में फिर लिखा है—"दश्तेकिपचकसे उज्बेक विलायतके बादशाह मुहम्मदखानके पाससे आलमशेख ओगलान और पूलाद अपने साथ शिकारी बाज, घोड़े आदि उपहार लेकर आये। शाहरुखने प्रति-उपहार रूपमें उन्हें सोना, घोड़े, कुलाह, कमरबंद आदि खानके लिये तथा एलचियोके लिये भी उचित इनाम दिये।" इससे मालूम होता है, कि मुहम्मदखान और शाहरुख दोनों आपसमं अच्छा संबंध बनाये रखनेकी कोशिश कर रहे थे। ८२६ हि० (२ नवम्बर १४२६–२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है—शाहरुख कुछ दिनों ग्रीष्म-निवासके वास्ते वदगिस इलाकेमें गया था, इसी बीचमें शाहरुखका नौकर ख्वारेज्म-राज्यपाल (अमीर) ने ख्वारेज्मसे आकर निवेदन किया, कि बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूको अपने हाथमें कर लिया, उज्बेक उलुसका अधिकांश बोरककी ओर हो गया। लेकिन जान पड़ता है, १४२५ ई० मे भी अभी मुहम्मदखानके शासनका बिल्कुल अंत नहीं हुआ था, क्योंकि ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६–२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया"मे लिखा है, कि ८२८ हि० (२३ नवम्बर १४२४—१२ नवम्बर १४२५ ई०) में बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूपर अधिकार कर लिया। सारा उलुस उसके अधीन हो गया।

खानोंके इस परिवर्तनसे मालूम होगा, कि अब तोकतामिशके पुत्रों और पौत्रोंका आपसमें संघर्ष चल रहा था। एकबार फिर उरुसके पौत्र बोरकने सिंहासनपर अधिकार जमाया।

बोरक खान, बुर्राक, कुंइजी-पुत्र (१४२५–२८ ई०)—बोरकको यह सफलता दक्षिणमें मिली थी। तोकतामिशके बाद उसकी संतानों और तेमूरकी संतानोंमे आपसमें पैतृक वैमनस्य चलता रहा। दक्षिणने उरुसखानकी संतानोंका पक्ष लिया और मिर्जा उलुगबेककी सहायतासे बोरकको सफलता मिली। लेकिन सफल घुमन्तू सरदार कभी कृतज्ञता माननेके लिये तैयार नहीं होते, यह बात किसीसे छिपी नहीं है। राजगद्दी संभालनेके बाद ही ८२६ हि० में वह मिर्जा उलुगबेककी सीमापर अवस्थित सिगनाक नगरमे आया। इससे पहले ८२३ हि० (१७ जनवरी १४२०—५ जनवरी १४२१ ई०) में वह उलुगबेकके पास शरणार्थीके तौरपर आया था और उलुगने उसे शिक्षा और सहायता देकर विलायत-उज्बेक भेजा था।

तोकतामिशकी तरह बोरक खानने दक्षिणकी ओर मुंह फेरनेसे पहले रूसकी ओर विजय-यात्रा की थी। १४२६ ई० मे तारतारोंने र्याजन नगरको लूटा। तीन साल बाद कजानके तारतारोंने गालिच, कोस्त्रोमा आदि नगरोंको बरबाद किया। १४३०ई० मे तारतार राजकुमार हैदर लिथुवानिया के भीतर घुस गया और उसने तीन सप्ताह मुहासिरा करनेके बाद मत्सेन्स्कको सर किया। रूसी आगे बढ़कर रोकनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे। १४३७ ई० में कुचुक (छोटे) मुहम्मदने उलुक मोहम्मद खानको मार भगाया। उलुकने रूसमे जाकर शरण ली, लेकिन कुचुकने उसे वहांसे निकलनेके लिये मजबूर किया। उलुक बुल्गारोंकी भूमिमें चला गया, वहां कजान नगरको उसने फिरसे बसाया और कजानके खान-वंशकी स्थापना की। इससे मालूम होगा कि अभी किपचकोंकी शक्ति बिल्कुल खतम नहीं हुई थी।

बोरक खानने सिगनाकमे आकर मिर्जा उलुगके पास यह कहकर एलची भेजा—"आपकी सहायता और शिक्षासे मुझे सिंहासन मिला, इसके लिये मैं बहुत-बहुत कृतज्ञ हूं, लेकिन सिगनाक हमारे श्वेत-ओर्दू वंशकी राजधानी है, उसे हमे दे दिया जाय।" इधर वह उलुगखानसे चिकनी-चुपड़ी बातें कर रहा था और उधर उसके आदमी सिगनाक इलाकेपर हाथ सफा करनेमें लगे थे। वहांके तेमूरी हाकिम अमीर अरसलन ख्वाजा तरखनने उलुगबेकके पास खबर भेजी, कि ओगलानके नौकर (अफसर) इलाकेको बरबाद कर रहे हैं, अपनेको पूरा हाकिम समझकर सरकारका मजाक उड़ा रहे हैं। उलुगबेकने भारी सेना जमा करके उधर कूच करनेका निश्चय किया, लेकिन उसके बाप शाहरुखने युद्धकी बरबादीको बतलाते हुये उसे वैसा करने से रोकते हुये भी राजकुमार (मिर्जा) मुहम्मदकी अधीनतामें सेना दे अंतर्वेदकी ओर भेजा। जोकीने १५ फर्वरी १४२७ ई० को समरकंदकी ओर प्रस्थान किया और वहां जाकर बड़े भाईकी सेनासे मिल गया। संयुक्त-सेनाने आगेकी ओर कूच किया। इतनी भारी सेनाको देखकर बोरक एक बार डर गया, लेकिन वह अपने पूर्वजों की भूमि लेने आया था, क्या मुंह लेकर पीछे लौटता? किपचक-सेना एकाएक शत्रुके ऊपर टूट पड़ी। मिर्जा उलुगबेगको अपनी संख्याका अभिमान था, लेकिन किपचकोंने उसके छक्के छुड़ा दिये। पासा पलटने लगा। सैनिक उलुगबेकके घोड़ेकी बाग पकड़कर उसे मैदानसे बाहर लाये। सारी सेना हारकर समरकंदकी ओर भागी। उज्बेकोंके हाथमें भारी संपत्ति आई। इतनी घबराहट मच गई, कि लोग समरकंद नगरके दरवाजोंको बंद करने लगे। उन्हें बहुत समझा-बुझाकर रोका गया। बोरककी सेनाने तुर्किस्तान और अंतर्वेदके सारे इलाकोंको लूटा और बरबाद किया। यह खबर खुरासानमें शाहरुखके पास पहुंची।

इस घटनाने साबित कर दिया, कि लद्धड़ सामंतशाही चुस्त घुमंतुओंके सामने निर्बल साबित होती है। शाहरुखको अब होश आया, जब खतरा सामने दिखाई पड़ा। लेकिन, उज्बेकोंके तेमूर-वंशका स्थान लेनेमें अभी पौन सदीकी देर थी, जबकि तेमूरी शाहजादा बाबरको मध्य-एसियाई अंतर्वेद छोड़कर भारतीय अंतर्वेदका रास्ता नापना था। शाहरुखको एक बड़ी सेना लेकर समरकंद आया देख

बोरकको वहांसे हटना पड़ा। शाहरुख इस अभियानसे ६ अक्तूबर १४२७ ई०को खुरासान लौटा। दक्षिणमें इस तरह सफल हो बोरक अपने पूर्वी पड़ोसी चगताईवंशकी उत्तरी शाखाके राज्य मुगोलिस्तान-पर जा पड़ा। ८३२ हि० (११ अक्तूबर १४२८—२९ सितंबर १४२९ ई०) में उलुगबेकने अपने बाप शाहरुखके पास हिरात खबर भेजी, कि बोरक और मुगोलिस्तानके सुल्तान महमूदमें भारी युद्ध हुआ, जिसमें सुल्तान महमूदने बोरकको कतल कर दिया।

२८. मुहम्मद सुल्तान, तेमूरखान-पुत्र, तुगलक-तेमूर-पौत्र (१४२५-३८ ई०)

बोरकके बाद मुहम्मद सुल्तान गद्दीपर बैठा। ख्वारेज्मका तेमूरियोंके हाथमें जाना किपचकोंको बहुत खटकता था, आखिर जू-छिके राज्यका आरंभ ख्वारेज्मको लेकर हुआ था। मुहम्मदने ८३४ हि० (१९ सितंबर १४३०—८ सितंबर १४३१ ई०) के अंतमें अपनी सेना ख्वारेज्मपर भेजकर वहा बहुत लूट-पाट मचाई, लेकिन वह उसे ले नहीं सका। मुहम्मद सुल्तानने अपनी राजधानी क्रिममें बनाई थी।

२९. दौलत बर्दी

बोरक जिस वक्त अपने पूरबके पड़ोसियोंसे लड़ने गया था, उसी समय मुहम्मद पश्चिमी किपचकका खान बन बैठा, लेकिन जल्दी ही दौलत बरदी तोकतामिश-पुत्रने उसे हटा दिया। वह तीन दिन ही शासन करने पाया था, कि बोरक खान फिर आ गया।

३०. कादिर बर्दी

शायद यह तोकतामिशका पुत्र था, जिसे इदिकूने मारा। इदिकू भी लड़ाईमें या सिर-दरियामें डूबकर मरा।

३१. शादीबेक

गयासुद्दीन शादीबेकने भी थोड़े ही समय शासन किया। मुहम्मद सुल्तान तेमूर-खान-पुत्रके समयसे ही किपचककी राजनीतिक अवस्था इतनी अस्त-व्यस्त रही, कि राजावलीका ठीकसे पता नहीं लगता।

३२. सैयद खान, सैदक खान

इसने कुछ दिनोंतक शासन किया, फिर जानीबेकका पोता और सैयद खानका पुत्र कासिम खान गद्दीपर बैठा।

३३. कासिम खान, सैदक खान-पुत्र (१५०९–१५२३ ई०)

दश्ते-किपचकका खान होते ही कासिम खानको सैबक खानसे मुकाबिला करना पड़ा। ९१५ हि० (२१ अप्रैल १५०९–९ अप्रैल १५१० ई०) में सैबक खानने चढ़ाई करके कासिमको हराया। ९३० हि० (१० नवम्बर १५२३–२८ अक्तूबर १५२४ ई०) में कासिम खान मरा।

३४. अकनजर, हकनजर खान, कासिम-पुत्र (१५२३)

बापके बाद अकनजरको गद्दी मिली। अब श्वेत-ओर्दूके दो टुकड़े हो गये थे, जिनमें एकका शासक अकनजर था, और दूसरेके जू-छि-पुत्र शैबानके वंशज।

श्वेत-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष

(....—१२२४–१४१०....ई०)

छिङ-गिस्
- १. जू-छि (–१२२४ ई०)
  - बा-नू
  - बेरेक
  - २. ओर्दा (१२२४—....)
    - ३. कोनिचि (.१३०१)
    - ४. बायन (१३०१–..)
    - ५. ससीबूगा (...–१३३९)
      - ६. एर्जन (१३३९–४४)
        - ८. चिमतइ (१३४४-६१)
          - ९. उरुस (१३६१-७०)
            - १०. तोकताकिया (१३७०)
            - ११. तेमूरबेक (१३७०–७५)
              - १४. तेमूर कुतुलुक (१३९५-१४००)
              - शादीबेग (१४००-८)
              - पूलाद (१४०८-१०)
      - ७. मुबारक खोजा (१३४४)

अध्याय ४
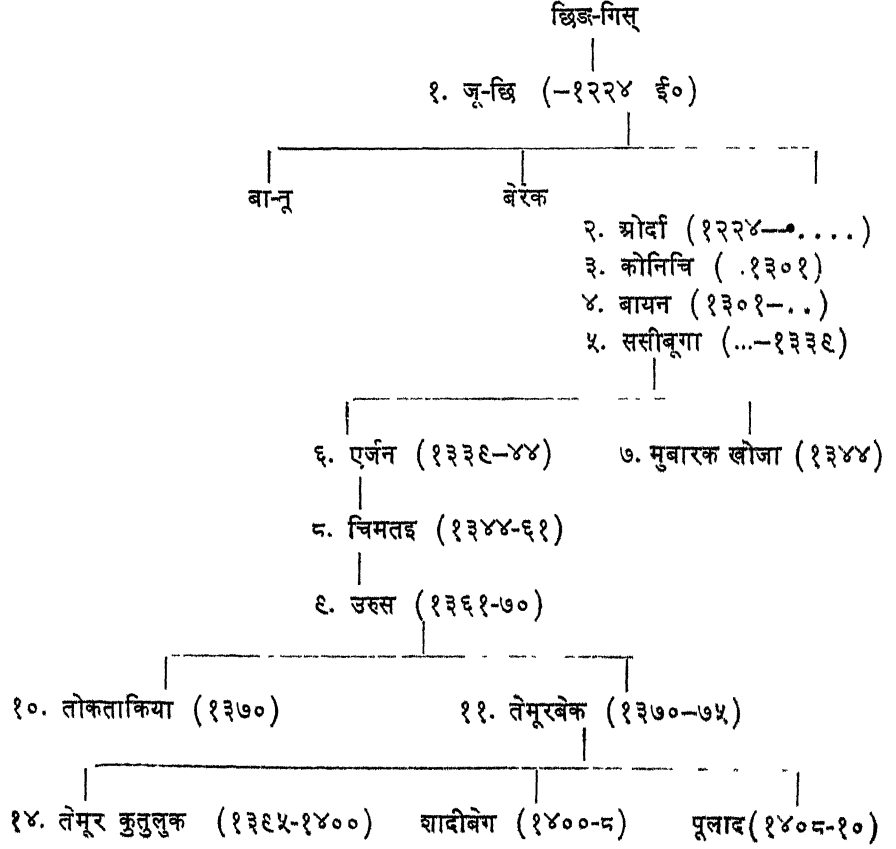
रूस (रूरिक-वंश)

(९११–१५९४ ई०)

अवतरणिका

मध्य-एसियाके इतिहासको स्पष्ट करनेके लिये चीन और ईरानके तत्कालीन इतिहासके साथ रूसके इतिहासकी भी कुछ परिचय आवश्यक है, क्योंकि शताब्दियोंतक वह एक दूसरेको प्रभावित करते रहे हैं। ईरान जहां अपनी भाषा और संस्कृतिसे मध्य-एसियाके साथ समीपता स्थापित करता है, वहां चीन काफी समयतक उसके ऊपर सीधे राजनीतिक प्रभाव रखता रहा। रूसका प्रभाव यद्यपि आरंभमें अधीन-जातिके सिवा और रूपमें नहीं देखा जाता, किन्तु आगे वह बढते-बढ़ते सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाता है। हालकी दो शताब्दियोंमें तो मध्य-एसियामें बहुतसे परिवर्तन लाते रूस आज एक नये संसारका निर्माण कर रहा है। ऐसी स्थितिमें रूसी इतिहासपर सिंहावलोकन किये बिना हम मध्य-एसिया की कितनी ही बातोंको समझ नहीं पायेंगे।

(क) शक-सरमात

शकोंके विशाल देश (शकद्वीप)के बारेमें हम पहले कह आये हैं और यह भी बतला आये है, कि शक और सिथ एक ही थे। इन्हींकी कालासागर और कास्पियन समुद्रके उत्तरमें रहनेवाली शाखा सरमात कही जाती थी। आगे यह नाम भूलसा जाता है, और ईसाकी प्रथम शताब्दीमें वेनिद (वेन्द) और अंत दो नये लोग हमारे सामने आते हैं, जो शक-सरमात-वंशके ही हैं।

वेन्द—वेन्दका शब्दार्थ है जलनिवासी या नदीनिवासी। यह विस्तुला नदीसे द्नियेपर और द्नियेस्तर नदियोंके ऊपरी भागोंमें रहते थे, यही पश्चिमी स्लावों (पोल, चेक, स्लावक) के पूर्वज थे।

अन्त—अन्तका शब्दार्थ है सीमांतवासी। ईसाकी प्रथम शताब्दीमें यह द्नियेस्तरसे दोनतककी भूमिमें रहते थे।

पूर्वी और पश्चिमी स्लावोंके अलावा शक-सरमातोंकी एक दक्षिणी शाखा भी थी, जिससे दक्षिणी स्लाव (युगोस्लाव) खोरबात, सर्ब (मकदूनी) और वोल्गारी स्लाव जातियां निकलीं। रूसी विद्वान् अ० अ० शाह्मातोफके अनुसार सारी रूसी जातियां—रूसी, उक्रइनी और बेलोरुसी—अंतोंकी संतान हैं, लेकिन अकदमिक म० स० ग्रुसेव्स्की अंतोंको केवल उक्रइनोंका पूर्वज मानते है।

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें चीनसे पश्चिमी देशोंका जो व्यापार-मार्ग खुला था, वह भारत और ईरानतक ही सीमित नहीं था, बल्कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें ही दक्षिणी रूस भी इस व्यापारिक क्षेत्रके भीतर था—ख्वारेज्मसे रूसका बहुत घनिष्ठ व्यापारिक संबंध था। उस समय वोल्गा नदीका नाम फिन भाषामें रा था, जिसे तुर्कोंने इतिल बनाया और फिर तटपर बुल्गारोंके रहनेके कारण वोल्गा नाम पड़ा। हूणोंकी बाढ़के आनेसे पहले ईसाकी प्रथम शताब्दीमें उरालके पास तुर्क जातियां रहती थीं—चुवाश, याकूत (साइबेरिया) और आधुनिक तुर्क एक ही जातिके हैं।

रूसियोंका संबंध अंतोंसे है। यह अंत ईसाकी चौथी सदीमें दुनियेस्तरसे दोनके आगेतक फैले हुये थे। इनके पश्चिमी पड़ोसी गाथ क्रिमियामें तथा दुनियेस्तरके पश्चिममें रहते थे। अंतोंका सबसे पुराना उल्लेख हमें केर्चमें प्राप्त एक अभिलेखमें मिलता है। चौथी सदीमें हूणोंकी बाढ आकर अतोंको उत्तरकी ओर ढकेलती गाथोके ऊपर आ पड़ी। ३७६ ई० में हूण-राजा बलम्बरने गाथ-राजा बीनीतरको लड़ाईमें मार उसकी खोपड़ीका प्याला बनाया। हूणोंद्वारा भगाये गये गाथ अपने पड़ोसी अंतोंके ऊपर पड़े। इस सघर्षमें अत-राजा बोग अपने पुत्रों और सत्तर सामंतोंके साथ मारा गया।

हूणोंने कुछ समयतक दन्यूब और तिसिया नदीके बीचमें अपना राज्य कायम किया। पांचवीं सदीके पूर्वार्धमें इनके राजा अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के प्रतापसे सारा पूर्वी युरोप कांपता था।

हूणोंके बाद पांचवीं सदीमें आवारोंकी बाढ़ पूरबसे पश्चिमकी ओर चली। तुर्कोंके प्रहारके मारे उनके पहलेके स्वामी अब जान बचानेके लिये पश्चिमकी ओर भागे। इसीपर तुर्कोंके राजा सिलजीबुलने कहा था—"वह (आवार) चिड़िया नहीं है, जो कि हवामें उड़ जायेंगे। तुर्कोंकी तलवारोंसे भागकर, मछली नहीं है, कि गहरे पानीमें चले जायेंगे।......जायेंगे पृथ्वीपर ही। जब मैं हेफतालोंसे लड़ाई खतम कर लूंगा, तब आवारों पर पड़ूंगा, तब वह मेरे हाथसे नही निकल सकेंगे।" आवारोंने दक्षिणी रूसमें पहुंचकर कान्स्तन्तिनोपोलमें रोमके सम्राट्के पास अपना दूत भेजकर शरण मांगी। ५६२ ई० के आसपास सम्राट् योस्तीनियनने उन्हें बसनेके लिये भूमि दी। काला सागरके पश्चिमी

किनारेपर पुरानी स्किफिया (शक)-भूमिमें पहुंचकर इस्त्रा (दन्यूब) के तटपर जा उन्होंने विश्राम किया ।

आवारोंकी बाढ आनेपर फिर हूणोंकी तरह अपने लिये खतरा देखकर अंतोने सुलह करनेके लिये उनके पास अपने राजा मेज़्मिर इदरी-पुत्र तथा केलायस्त आदि सरदारोंको समझौता करनेके लिये भेजा, लेकिन आवारोंने उन्हें मार डाला। रोमने आवारोंको शरण दी थी, क्योंकि उसके लिये इस टिड्डीदलसे बचनेका कोई दूसरा रास्ता नही था। आवार रोमन-साम्राज्यके भीतर लूट-मार करना अपना हक समझते थे। पूर्वी-रोमन (विजन्तीन) सम्राट् मावरिक (५८२–६०२ ई०) के समय अंत विजन्तीनकी सैनिक सेवा करते थे। उस समय स्लावोंका यह सबसे शक्तिशाली कबीला था। सम्राट् फोक (६०२–६१० ई०) और हेराकिल (६१०–६४१ ई०) के समय भी अत शक्तिशाली बने रहे, यद्यपि अब विजन्तीन सम्राटोके ध्यान को इधरसे हटाकर सासानियो (ईरानियों) और अरबोके संघर्षोंने अपनी ओर खीच लिया था। ७वी सदीमें इस प्रकार हम अंतोंको विजन्तीनके घनिष्ठ सबंधमे देखते है। निश्चय ही अंतोका ऊपरी वर्ग (सैनिक और शासकीय प्रधान) ग्रीसकी पिछली सस्कृतिसे बहुत प्रभावित थे। १०वी-११वीं शताब्दीके कियेफके रूसी लोग अंतोंके खूनके ही नही, बल्कि उनकी संस्कृतिके भी उत्तराधिकारी थे। अंत कृषि जानते थे, लेकिन अधिक उत्तरवाले उनके लोग पशुपालनपर ज्यादा ध्यान देते थे। दासता भी उनमें प्रचलित थी। अकदमिक न० स० देर्झाविनके अनुसार[१]—"१०वीं सदीके कियेफ रूस (और कियेफ राजुल) उसी भाषाको बोलते थे, जिसे कि छठी सदीके अत लोग, उसी पेरुनको पूजते और उसी पुराने पंथपर चलते थे, जिसपर छठी सदीके अंत।"—उनके देवताओंमें स्वारोग, सरोग-पुत्र स्वारोजिक (स्वारोचिष), दाज़्बोग (सूर्य, यह भी स्वारोग-पुत्र) मुख्य थे। देवियोंमें लादा (ह्लादा), वेस्ना (बसंता), देवा और जीवा प्रधान थी ।

१०वीं सदीके अरब लेखक मसऊदीके अनुसार—"उनमें कुछ ईसाई भी हैं, कुछ काफिर, जो सूर्यकी पूजा करते हैं।" इसके दो शताब्दी बाद प्रायः १२०० ई०में इब्राहिम वेसिफ शाह-पुत्र लिखता है—"इनमें कुछ ईसाई और दूसरे सूर्य या नभकी पूजा करते है।" ६४६ ई०में लिखते हुये कान्स्तन्तिन वगरया नरोद्नी उनके अग्निपूजक होनेकी भी बात करता है। १२वीं शताब्दीमें लिखते हुये किरि-लिता तुरेव्स्कीने उन्हें वृक्ष, नदी, पर्वत और ज[illegible] की पूजा करनेवाला बतलाया है ।

१० वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें रूसके पड़ोसी खाजार, महा-बोल्गार और विजन्तीन थे, जिनके साथ वह व्यापार करते थे। अरब लेखक इब्न-हौकल (६७६-६७७ ई०) भी खाजारों और वोल्गारोंके साथ रूसोंके व्यापारकी बात कहता है ।

(ख) रूसोंके पड़ोसी मंगोलायित

बोल्गार—हूणोंके आनेसे पहले ही उरालके पास मंगोलायित जातिके लोग बसते थे, शायद बोल्गार उन्हींमेंसे थे। चौथी सदीमें हूणोंके वोल्गासे पश्चिम पहुंचनेके तुरत ही बाद वोल्गार, कास्पियन समुद्रके पश्चिमोत्तरीय मैदानोंमें देखे गये, लेकिन वहां वह ज्यादा दिनोंतक नहीं ठहर सके, क्योंकि दूसरे घुमंतू उनकी जानके गाहक बन गये । इन्ही वोल्गारोंमेंसे कुछ भागकर पश्चिममें दन्यूबो-के किनारे पहुंचे, जहां स्थानीय स्लावोंमें वह घुल-मिलकर अपनी रूपरेखा और भाषाको भी खोकर अब बुल्गारिया-निवासियोंके नामपर ही अपना चिह्न छोड़ गये। दूसरा भाग वहांसे वोल्गातटपर गया, जहां उसने वोल्गार-राज्यको स्थापित किया और 'रा' और इतिल नामसे मशहूर नदीको वोल्गा नाम दिया। यह बोल्गार निम्न और मध्य-वोल्गाकी उपत्यकाओंमें पहले निरे घुमक्कड़ पशुपाल रहे, फिर एक अरब-लेखकके अनुसार वह जौ-गेहूंकी खेती भी करते थे । इनकी राजधानी कामा और वोल्गाके संगमसे कुछ नीचे बड़ी ही समृद्ध व्यापारिक नगरी थी, जहां हर साल रूस, काकेशस, बिजन्तीन और मध्य-एसियाके व्यापारी आते थे। वोल्गार अपनेसे उत्तरवाले देशको "अंधकार भूमि"

१ "स्लावियाने व्-द्रेव्नोस्ती" पृ० १८ ।

कहते थे। वहांसे वह अपनी चीजोंसे बदलकर समूर लाते थे। मुसलमान व्यापारियोंके संपर्कमें आनेसे इनमे मुस्लिम संस्कृति और धर्म फैला और १० वी सदीतक वोल्गार शासक और सरदार मुसलमान बनकर अरबोकी नकल करना अभिमानकी बात समझने लगे। उस समयतक वह अपना सिक्का भी ढालने लगे थे।

१०वी सदीके आरभमें इब्न-फज़लान एक अरब दूत-मंडलका सदस्य बनकर वोल्गारोंकी भूमिमें गया था। उसने अपनी यात्राका एक बडा ही सुन्दर वर्णन छोडा है। वोल्गार राजधानीसे नातिदूर दूत-मंडलका स्वागत करते हुये उसे एक विशाल तथा अच्छी तरह सुसज्जित तंबूमें ले जाया गया, जिसमें अर्मनी गलीचे बिछे हुये थे। रूमी कमखाबसे ढँके सिहासनपर खान बैठा था। उसके दाहिनी ओर सरदार बैठे थे। मासके टुकड़ों और मधुकी शराबसे मेहमानोंकी जियाफत की गई। इब्न-फज़लानने वहां रूसी व्यापारी भी देखे। वह बड़े ही लबे-तगड़े तथा हर वक्त कटार, छुरी और तलवार लटकाये फिरते थे।

यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि वोल्गार और खाजार राज्योके स्थापित होनेके बाद वोल्गातट युरोप और एसियाके व्यापार-मार्गका महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया। वोल्गाका ऊपरी भाग पश्चिमी द्विना नदीके पास पहुंच जाता है, जो कि बाल्तिक समुद्रमें गिरती है। इसी तरह फिनलन्दकी खाड़ीके लिये भी जलपथ थोडी ही दूरपर मिल जाता है। इन नदियोंके बीचके स्थल-मार्ग दुर्गम पहाड़ोंके नहीं थे, इसीलिये व्यापारी इस स्थल-मार्गपर अपनी नावोंको ढकेल कर ले जाते थे। ८ वीं-१० वीं शताब्दियोंमे व्यापारके लिये यहां भारी संख्या में अरब व्यापारी आते थे, जो मांस खरीदनेके बदले भी अपने छोटे-छोटे चांदीके सिक्के देते थे। ये अरब सिक्के उस समय पूर्वी युरोप, बाल्तिक-राज्यों, स्कँडिनेविया और जर्मनीतकमें प्रचलित थे।

खाज़ार—६ठी–८वी सदी में मंगोलियासे अराल और कास्पियन समुद्रतक जो घुमन्तू तुर्क रहते थे, इन्हींमें खाजार भी थे। ६ठी सदीमें वोल्गारोंकी तरह खाजार भी काकेशसके उत्तरमें चरवाही करते थे। ७ वीं सदीमे इन्होंने निम्न वोल्गा-उपत्यकामें अपना राज्य स्थापित किया। अब वह अर्ध-घुमंतू हो गये—जाड़ोमें नगरोमें रहते और गर्मियोमें अपने ऊंटों, घोड़ों, भेड़ोंको लिये मैदानोंमें चरवाही करते। पशुपालन ही उनकी मुख्य जीविका थी, इसके अतिरिक्त थोड़ी-सी खेती और अंगूरकी बागबानी भी कर लेते थे। इनका शासक एक खाकान होता था, जो राजकाजमें सीधे भाग न लेकर देवतासा माना जाता था। उसके सहायक और सरदार शासनका काम देखते थे। पहले इनकी राजधानी बलांजर (दक्षिणी दागिस्तान) थी, लेकिन ७२२-२३ई०में अरबोंने आक्रमण करके इनकी राजधानीको जब ध्वस्त करदिया, तब इन्होने वोल्गा और सागरके संगमपर वोल्गाके डेल्टामें इतिलको अपनी राजधानी बनाया। व्यापारकी भी भावी सुविधा होनेके कारण इतिल एक बड़ी नगरी बन गई। खाकानका ईंटका महल एक द्वीपमें था, जिसको नावोंके पुलद्वारा किनारेसे मिला दिया गया था। नगर-प्राकारके बाहर लकड़ीके घर तथा घुमन्तुओके तबू रहते थे। इन्हींमे ख्वारेज्मी, अरब, ग्रीक, यहूदी, भारतीय आदि व्यापारी आकर रहते थे। इतिलकी बाजारोंमें सारी दुनियाका माल भरा रहता था। ख्वारेज्मके पास होनेके कारण वहांवालोंका यहांके व्यापारमें विशेष हाथ था। उस समय खाजार-खाकान और उसके सरदार मुसलमान नही यहूदी थे। दोनके तटपर खाजारोंका एक और भी बड़ा व्यापारिक नगर सरकेल था। इस नगरके निर्माणमें विजन्तीन (रोम) इजीनियरोंने सहायता की थी। उत्तर और पूरबके घुमंतुओंसे रक्षा करनेके लिये नगर दृढ़ प्राकारोसे घिरा था। दक्षिणमें वर्तमान मखचकलासे नातिदूर समंदर नामका एक और भी मशहूर शहर था, जिसके पास अंगूरोंके बहुतसे बाग थे। ६वीं शताब्दीमें खाजार अपने उत्कर्षकी चरम सीमापर पहुंचे थे। अजोफ-समुद्रके तटतक तथा क्रिमियाका भी कुछ भाग खाजारोंके शासनमें था। द्नियेपर और ओकाकी उपत्यकाओंमें रहनेवाली स्लाव जातियां इन्हें कर देती थीं। उत्तरमें इनकी सीमा मध्य-वोल्गामें बोल्गारोंसे मिलती थी। कास्पियन समुद्रका नाम खाजार समुद्र (बहीरा खाजार) इन्हींके कारण पड़ा, जिसे पीछे मुसलमानोंने हजरत खिजिरके नामसे जोड़कर खिजिर-समुद्र बना दिया।

पेचेनेग—खाजारोंके पड़ोसी पेचेनेग भी तुर्की जातिके थे, जो ९वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें यायिक (उराल) और इतिल (वोल्गा) नदियोंके बीचमें घुमक्कड़ी करते थे। ९वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें दूसरे घुमंतुओंके साथ संघर्ष होनेके कारण यह पश्चिममें जा दोन और दुनियेपरके बीचकी भूमिमें घूमने लगे। इनकी संख्या काफी थी। मंगोलियाके हूणोंके समयसे ही हम देखते है, कि घुमतुओंके ऊपरी वर्गमे सस्कृतिका अभाव होना आवश्यक नही है—पेचेनेगके सोने-चांदी के बर्तन, कमरबद आदि पुरातत्त्वकी सामग्रियां जो खुदाइयोंमें मिली है, उनसे यह बात सिद्ध होती है। पेचेनेग अपने पड़ोसी स्लावोंको सबसे ज्यादा हानि पहुंचाते थे।

(ग) कियेफके राजुल

पुराने अतोंके वशज ८वी-९वीं शताब्दीमें छिन्न-भिन्न हो गये। बेटा होनेपर उसके हाथमें वह तलवार पकड़ाते थे, किंतु बिखरी हुई तलवारें शक्तिहीन साबित हो रही थीं। ९वीं शताब्दी-के उत्तरार्धमें एक बड़ी निराशाजनक स्थितिमें रूस लोग रह रहे थे, यद्यपि उनकी वीरतामें जरा भी कमी नही आई थी। बिखरी हुई तलवारें इकट्ठा करनेवाले व्यक्तिकी प्रतीक्षा हो रही थी। ऐसे व्यक्तिके आनेके लिये रास्ता भी साफ था। रूसके भीतरसे कई वणिक्पथ पूरबमें चीन, दक्षिणमें बिजन्तीन और ईरान, पश्चिममें युरोपकी ओर जाते थे। स्कॅंडेनेवियाके व्यापारी बहुमूल्य रेशम, समूरी छाल, अंबर तथा दूसरी चीजोंका व्यापार करने आते थे। बाल्तिक समुद्रसे पश्चिमी द्विना होकर वोल्गा नदीसे मिलनेवाले रास्तेकी बात हम कर चुके हैं। स्कॅंडेनेवियावाले फिनलंद खाड़ीसे नेवा नदीको पकड़ उसके उद्गम इल्मन झीलमें पहुंच लोवात नदीद्वारा ऊपरकी ओर चलते। वहांसे उन्हे पश्चिमी द्विना नदी पर पहुंचनेमें थोड़ी दूरतक नावको स्थलमार्गपर घसीटना पड़ता। इल्मनसे दूसरी नदी द्वारा वह थोड़ा स्थलमार्ग पारकर वोल्गा नदीके वणिक्पथपर पहुंच जाते। इसी तरह दुनियेपर पहुंचनेका भी जल-स्थल-मार्ग था। इन वणिक्पथोंपर जहां व्यापारियोंके सार्थ चलते थे, वहां कुछ लोग व्यापारके साथ लूट-पाट भी भारी लाभका साधन मान उससे बाज नहीं आते थे। पश्चिमी युरोपमें स्कॅंडेनेवियाके निवासी नार्समेन उस समयके बड़े साहसी यात्री थे, जो व्यापारके साथ लूट-मारको भी अपना पेशा बनाये हुये थे। वह सशस्त्र संगठित दलोंमें ही रूसमें व्यापार करनेके लिये आया करते। उन्होंने ९वीं शताब्दीमें रूसके भीतरसे जानेवाले मार्गोंको अपना क्रीड़ाक्षेत्र बनाया। नार्समेन वरंगीके नामसे अधिक प्रसिद्ध थे। अपने कोनुंग (राजकुमारों) के नेतृत्वमें लूट-मारके लिये उन्होंने अपने सैनिक दल संगठित किये थे। वह स्लावों और दूसरे लोगोंके ऊपर आक्रमण करके उनकी मूल्यवान् चीजोंको जहा लूट लेते, वहां स्त्री-पुरुषोंको पकड़ ले जाकर कन्स्तन्तिनोपोलके बाजारोंमें अथवा वोल्गारों और खाजारोंकी राजधानियोंमें बेंच देते।

१. रूरिक

इन्ही वरंगियोंमेंसे कुछने ग्रीक जानेवाले मार्गमे अपनी गढ़ियां बना ली, वह स्थानीय स्लावोंपर शासन करते हुये उनसे कर उगाहने लगे। कितनी ही बार स्लाव बिगड़कर वरंगी कोनुंगोंको मार डालते, फिर कोई स्थानीय स्लाव राजुल राज करने लगता। परंपरा कहती है, कि ९वी शताब्दीके मध्यमें रूरिक (रौयरिक, रोरिक) नामक एक साहसी वरंगीने नवोगोरदमें अपना अड्डा जमाया। नवोगोरद कालासागर और दुनियेपर नदीसे उत्तर जानेवाले रास्तेपर एक बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान था। रूरिकका भाई सिनेउस ब्येलोओजेरो (श्वेत सरोवर) पर जम गया। फिनलंदकी खाड़ीसे वोल्गा और उरालवाला वणिक्पथ वहींसे होकर जाता था। तीसरा भाई त्रुवोर इज्बोरस्क नगरपर डट गया, जो कि बाल्तिकसे आनेवाले रास्तेका केंद्रीय नगर था। इन तीनों भाइयोंके अतिरिक्त दो और वरंगी कोनुंग अस्कोल्द और दिरने कियेफ नगरको अपने हाथमें किया। ग्रीसके पथपर कियेफ बहुत महत्त्वपूर्ण नगर था। इसी तरह बाल्तिकसे पश्चिमी द्विनाके मार्गपर भी वरंगियोंने अपनी गढ़ियां बना रक्खी थीं। वरंगी आकर स्लावोंकी भूमिमें अधिकतर लूट-मार करते, फिर धनको लेकर अपने देश लौट जाते। उनमेंसे कितने ही रूस-राजुलोंके अनुचर अथवा स्वतंत्र सरदार बनकर भी बस गये। वरंगियोंसे

स्लावोंका नाकोंमें दम था, पर वह संख्यामें पीछेके मंगोलोंकी तरह बहुत थोड़े थे। वरंगी सरदार स्लावों-मेंसे भी अपने अनुचर भरती करते थे। रूसमें स्थायी तौरसे बसनेवाले ये वरंगी स्लाव-समुद्रमें बहुत जल्दी ही अपने नामोंको मिटा रूस बन गये, रूसी भाषा बोलने तथा पेरुन और स्वारोगकी पूजा करने लगे। रूरिक, उसके भाइयों तथा साथियोंकी भी यही हालत थी।

रूरिक-वंशावली—रूरिकके वशमें निम्न राजा हुये :—

क कियेफ	**काल**
१. रूरिक	९०० ई०
२. ओलेग, रूरिक-पुत्र	–९११ ,,
३. ईगर, रोरिक-पुत्र	९११-४५ ,,
४. ओलगा, ईगर-पत्नी	९४५-५७ ,,
५. स्व्यातोस्लाव I ईगर-पुत्र	९५७-७३ ,,
६. व्लादिमिर I स्व्यातोस्लाव-पुत्र	९७८-१०१५ ,,
७. स्व्यातोपोल्क I व्लाद्दिमिर-पुत्र	१०१५-१९ ,,
८. यारोस्लाव I व्लादिमिर-पुत्र	१०१९-५४ ,,
९. इज्यास्लाव I यारोस्लाव-पुत्र	१०५४-७३ ,,
स्व्यातोस्लाव II यारोस्लाव-पुत्र	१०७६ ,,
इज्यास्लाव I (पुनः)	१०७३ ,,
१०. स्व्यातोपोल्क II इज्यास्लाव-पुत्र	१०७३-१११३ ,,
११. व्लादिमिर II मनोमाख	१११३-२५ ,,
ख. रोस्तोफ-सुज्दल	
१२. यूरी I दीर्घबाहू, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र	–११५७ ,,
१३. अंद्रेयी, बगोल्यूबोव्स्की यूरी-पुत्र	११५७-७४ ,,
१४. व्सेवोलोद I यूरी-पुत्र	११७६-१२१२ ,,
१५. यूरी II व्सेवोलोद-पुत्र	१२१२-१२३८ ,,
१६. यारोस्लाव II व्सेवोलोद-पुत्र	१२३८-४६ ,,
स्व्यातोस्लाव III व्सेवोलोद-पुत्र	१२४७-४८ ,,
अंद्रेयी II यारोस्लाव-पुत्र	१२४९-५२ ,,
१७. अलेक्सान्द्र नेव्स्की यारोस्लाव-पुत्र	–१२६३ ,,
ग. मास्को ज़ार	
१८. दानियल	१२६३-१३०३ ,,
१९. यूरी III दानियल-पुत्र	१३०३-२५ ,,
२०. इवान I खलिता, दानियल-पुत्र	१३२५-४१ ,,
२१. सेमेओन, इवान-पुत्र	१३४१-५३ ,,
२२. इवान II इवान-पुत्र	१३५३-५९ ,,
२३. दिमित्रि इवान II-पुत्र	१३५९-८९ ,,
२४. वासिली I अंध, दिमित्रि-पुत्र	१३८९-१४२५ ,,
२५. वासिली II अंधवासिली-पुत्र	१४२५-६२ ,,
२६. इवान III वासिली II-पुत्र	१४६२-१५०५ ,,
२७. वासिली III इवान III-पुत्र	१५०५-३३ ,,
२८. एलेना, वासिली III-पत्नी	१५३३-३८ ,,
२९. जार इवान, वासिली III-पुत्र	१५३८-८४ ,,
३०. फ्योदोर, इवान IV-पुत्र	१५८४-९८ ,,

२. ओलेग रूरिक-पुत्र (९११ ?)

१० वीं शताब्दीके आरंभमें रूरिक-पुत्र ओलेग द्नियेपर-उपत्यकाके कुछ भागोंका स्वामी था। पुराने इतिहासकार लिखते हैं, कि ओलेग पहले नवोगोरदके स्लावोंपर शासन करता था, किन्तु पीछे वह द्नियेपर-उपत्यकामें चला गया और स्मोलेन्स्क क्रिविचीको जीतकर नीचेकी ओर बढते अपने दोनों देशभाइयों अस्कोल्द और दिरको मारकर उसने कियेफपर अधिकार कर लिया ; जहासे पड़ोसके द्रेव्ल्यान लोगोंको अपने अधीन करते हुये खाजारोंके अधीनस्थ सेवेरियान और रादिमिची स्लावोंको अपने अधीन किया। इस प्रकार ओलेग नवोगोरद और कियेफ दोनोंका स्वामी बन जानेके बाद द्नियेपर वणिक्पथका भी स्वामी हो गया। धीरे-धीरे और कितने ही छोटे-छोटे राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर कर वह "रूसका महाराजुल" बनकर दूसरे राजुलोंपर शासन करने लगा। कियेफके महाराजुलके अधीन हो अब द्नियेपर-उपत्यका और इल्मन-सरोवरके स्लाव एकताबद्ध हो गये। इस एकताबद्ध राज्यको रूस कहा जाने लगा। यह कहना मुश्किल है, कि रूस किस भाषाका शब्द है। जो भी हो १०वीं शताब्दीके आरंभमें बहुत-से स्लाव कबीलोंको, जो कियेफके शासकके अधीन एकताबद्ध हुये थे, उनको यही नाम दिया गया, और इतिहासमें उन्हें "कियेफ रूस" कहा जाने लगा।

यद्यपि कियेफ राजुलोंकी अधिकांश प्रजा स्लाव थी, लेकिन उनमें कुछ मेरिया, वेसी और चुद जैसी अरूसी कबीले भी थे। अभी ये जातिया आर्थिक तौरसे अधिक विकसित नही थीं। पशुपालन, शिकार, कुछ कृषि और मामूली दस्तकारी उनकी जीविका थी। अभी वह एक दूसरेके ऊपर आर्थिक तौरसे इतने निर्भर नहीं थे, कि उनका एक घनिष्ठ संघ बन जाता। ये पूर्वी स्लाव कृषि-समूहों (वेर्ब) में जीवन बिताते अभी भी जनयुगके रीति-रवाजोंको पकडे हुये थे। उनकी भूमि साझेमें हुआ करती थी, लेकिन रूरिकोंके अधीन एकताबद्ध होनेपर व्यापारका सुभीता और भी बढ़ा, जिससे उनके भीतर धनी-गरीब होने लगे। गरीब अपने धनी बंधुओंके कमकर बनने लगे। भूमिपर भी वैयक्तिक अधिकार माना जाने लगा। इस प्रकार उनके भीतर सामंती संबंध कायम हो गया।

आगे कियेफ-राज्यने पूर्वी युरोपमें विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त किया। विजन्तीन (पूर्वी रोम) का प्रभुत्व सारे कालासागर और उसकी तटवर्ती भूमिपर था। अल्प-विकसित जातियां कभी अपने लूट-मारसे उसको चिढ़ाती थीं और कभी विजन्तीनके शासक स्वयं लूट-मार करनेपर उतारू हो जाते। ऐसे ही किसी आक्रमणके बदलेमें ८६० ई० में स्लावोंने बंज (ओक) वृक्षोंको खोखला करके अद्नोदेरेव्की (एकदारुक) नावोंका बेड़ा तैयार किया और कान्स्तन्तिनोपोल बंदरगाहके छोर (सुवर्ण-शृंग) पर पहुंचकर राजधानीके लिये खतरा पैदा कर दिया। तूफानने स्लावोंकी एकदारुक नावोंको तितर-बितर कर दिया, नहीं तो इसमें संदेह नहीं, कान्स्तन्तिनोपोल उनकी दयाका भिखारी होता। ९११ ई० में फिर उन्होंने अपनी प्रभुता दिखलाकर अपने अनुकूल संधि करवाई।

९१३-९१४ ई० में स्लावों (रूसों) ने अब कास्पियनके किनारोंपर भी आक्रमण शुरू कर दिया। इसके लिये वह अपनी नावोंको अजोफ सागर होते दोन नदीमें ले जाते और उसी जगहपर अपनी नावोंको कंधोंपर उठाकर वोल्गामें पहुंचाते, जहां दोनों नदियां एक दूसरेके बहुत समीप पहुंच गई है और जहा १९५२ ई० के वसंतमें यातायातके लिये बड़ी नहर चालू हो गई। रूसलोग वोल्गासे नीचे कास्पियन समुद्रमें जा काकेशसकी बस्तियोंमें लूट-मार करते। कितनी ही बार खाजार भी उनको अछूता नहीं छोड़ते, और रूसोंको भारी हानि उठानी पड़ती।

ओलेगका शासन काफी लंबा था, संभवतः १०वीं शताब्दीके उत्तरार्धके आरंभतक। अपने चालीस सालके राज्यमें उसने रूसको एक-राज्य बनानेका ऐतिहासिक काम पूरा किया। उसके कामका कितना महत्त्व है, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्सने "१८वीं सदीमें गुप्त कूटनीति" (अध्याय ५) में उसका उल्लेख करते हुये कहा है:—

"रूसके प्राचीन नक्शे हमारे सामने उससे कहीं अधिक विशाल युरोपीय क्षेत्रको प्रदर्शित करते हैं जिसका कि वह आज गर्व कर सकता है। ९वीं शताब्दीसे ११वीं शताब्दीतक उसका लगातार बढ़ाव इसी-

की ओर संकेत करता है। हम ओलेगको अट्ठासी हजार आदमियोंके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन संधि करनेको मजबूर करते देखते हैं। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्व्यातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—'ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुएं, चावल, फल और शराब भेजते हैं; हुंगरी ढोर और घोड़े देती है, रूससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते हैं।' व्लादिमिर क्रिमिया और लिवानिया (बाल्तिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उसी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोलियनने जर्मन सम्राट् से किया।"

मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रूस १० वी शताब्दीमें कहांसे कहां पहुंच गया।

३. ईगर रूरिक-पुत्र (९११–४५ ई०)

१०वी शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमें उसका भाई ईगर कियेफका महाराजुल बना। उसने अपने भाईकी सफलताओंको आगे बढ़ाकर और भी कितने ही राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी बुग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिलाफ विद्रोह करनेवाले द्रेव्ल्यानोंको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०में ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रूसोंने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी बस्तियोंको ध्वस्त किया, लेकिन अंतमें ग्रीक बेड़ेने उन्हें अपने बंदरगाहसे कालासागरकी ओर खदेड दिया। वहांसे जाकर रूसोंने क्षुद्र-एसियाके तटको लूटा—बरबाद किया। बड़ी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहांसे उसे हटानेमें सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी बिल्कुल आरंभिक अवस्थामें थे, जबकि "ग्रीक
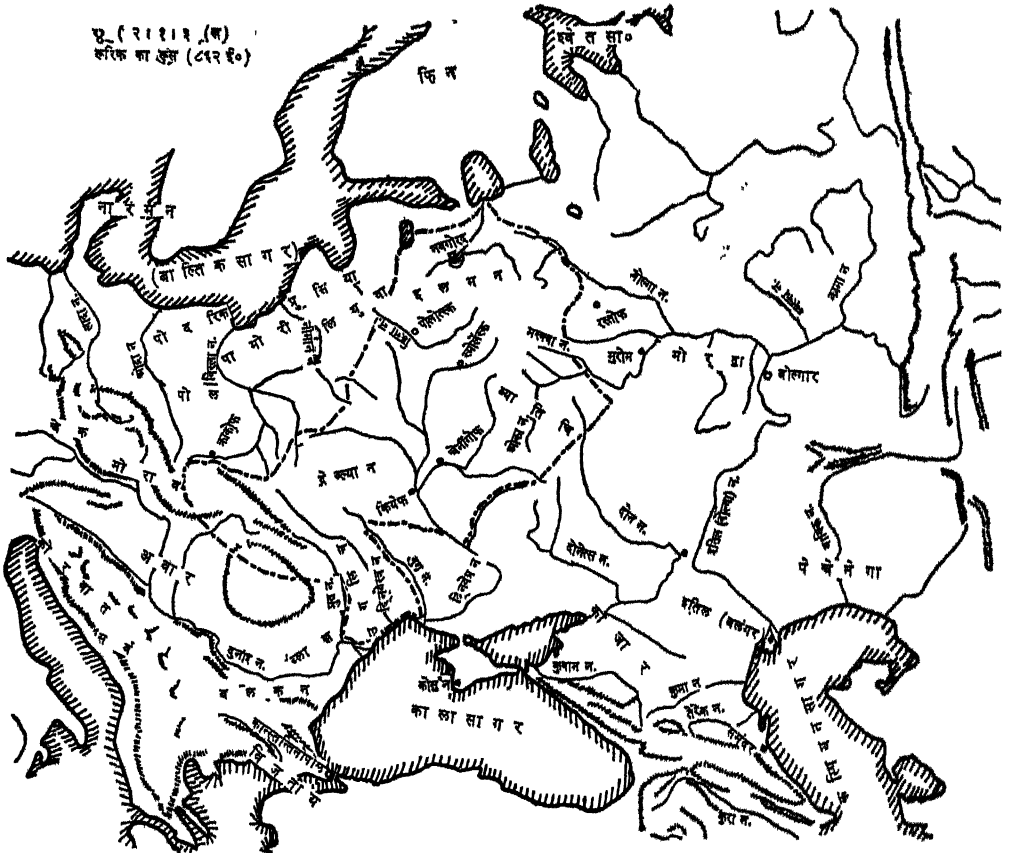
अग्नि" के नामसे प्रसिद्ध एक तरहका भभकनेवाला तरल पदार्थ ग्रीक अपने शत्रुओंपर फेकते थे। "ग्रीक अग्नि" के सामने ईगरके सैनिक बेड़ेको बहुत बुरी तरहसे हारना पड़ा। आगसे बचनेके लिये बहुतसे रूस * पानीमें कूदकर डूब मरे। बचे-खुचे पोत अपने देशकी ओर लौटे। यद्यपि ग्रीकोंने उस समय रूसोंको हरा दिया, लेकिन इन अर्ध-घुमंतू लडाक् जातियोंके लिये एक बारकी हार कोई महत्त्व नहीं रखती। इसलिये ग्रीक सरकारने ९४५ ई०मे ईगरके साथ एक नई संधि की, जिसमें व्यापारिक संबंध स्थापित करनेके साथ उभय पक्षके शत्रुओंके विरुद्ध सैनिक मित्रताकी शर्तें भी स्वीकृत की गई थी।

३३२ हिजरीके आरंभ (४ सितंबर ९४४ ई०)में रूसोने कास्पियन तट्ट-भूमिको अपना लक्ष्य बनाया था। कास्पियन तटको लूटते हुये वह कुरा नदीके भीतर घुस गये और ऊपरकी ओर बढते उन्होने बरदआ नगरीको ले लिया। यहासे वह आसपासके इलाकोंमें लूट-मार करने लगे। लेकिन यहांका जलवायु अनुकूल न होनेसे बीमारीके कारण बहुतसे रूस मर गये, उनकी सख्या कम हो गई। इसी समय अरब फौजोंने उन्हें एक किलेमें घेर लिया। बड़ी मुश्किलसे रातके अंधेरेमें वह नावोंमें पहुंच अपने प्राणों और लूटे धनको बचाकर भागनेमें सफल हुये।

कियेफ रूसके राजुलोंने दूसरोंके धनको लूटना और पुरुष-स्त्रियोंको पकड़कर दास बनाना अपने वैध शासनका एक अंग मान लिया था। वह पिछले सालकी जमा की हुई लूट और बंदियोंको नावोंपर चढाकर द्नियेपर नदीसे कालासागरकी ओर भेजते। द्नियेपरके जलप्रपात रास्तेमे पड़ते, जिनपर नावें टूटकर चकनाचूर हो जातीं, इसलिये ऐसी जगहोंपर उन्हें बल्लोके सहारे कंधेपर उठाकर आदमी ले जाते। लूटके मालके लिये यहां पड़ोसी लुटेरे पेचेनेगोंके आक्रमणका भारी डर रहता और कितनी ही बार उनकी अन्यायोपार्जित संपत्ति पेचेनेगा (तुर्की) घुमन्तुओंके हाथमें चली जाती। द्नियेपरके मुहानेमें पहुंचकर यात्री आरामकी सांस लेते और भगवान्‌से कृतज्ञता प्रकट करते। वहां एक छोटे द्वीपपर अवस्थित बंज (ओक) वृक्ष-देवताको भेंट-पूजा चढ़ाते। फिर कालासागरके पश्चिमी किनारेसे होते वह कान्स्तन्तिनोपोल जारग्राद (राजनगरी) जाते। वहां वह अपने दासों, समूरी छालों और दूसरी चीजोंको बेंचकर बदलेमें कपड़ा, शराब, फल तथा शौकीनीकी दूसरी चीजें खरीद लेते।

अपनी प्रजासे कर उगाहनेमें इन राजुलोंका व्यवहार बहुत कठोर होता था। इसके लिये लड़ाकू द्रेव्लयान (दीहाती) अक्सर विद्रोह कर उठते थे:—"अगर भेड़ियेको भेड़ोंके गल्लोंमें आनेका चस्का लग गया, और वह न मारा गया, तो वह सारी भेड़ोंको निगल जायेगा"—कहते हुये ३१ अगस्त ९४५ ई० को उन्होंने अनुचरोंसहित ईगरको मार डाला।

अभी रूस ईसाई नहीं हुए थे। इसी समय ईगरके शासनकालमें ही ९२२ ई० में मुसलमान पर्यटक इब्न-फज्लानने वोल्गाके किनारेके नगरोंकी यात्रा की थी। उसने रूसोंके बारेमें लिखा है:— "मैंने रूसोंको उस समय देखा, जबकि वह अपने पण्य द्रव्योंको लेकर इतिल (वोल्गा) के किनारे आये थे। मैंने उनके जैसे सर्वांगपूर्ण आदमी कहीं नहीं देखे। वह खजूरके वृक्षकी तरह (सीधे तथा) लालवर्णके होते हैं। वह न कुर्ता पहनते हैं, न कफतान (जामा), बल्कि उनमेंसे पुरुष एक तरहका चोंगा जैसा कपड़ा पहनते हैं, जिसे एक बगलसे डालकर अपनी एक (दाहिनी) बांह खुली रखते हैं। हरएक आदमी अपनी तलवार, छुरे और कटारको नहीं छोड़ता। इनकी तलवारें लम्बी तथा लहरदार होती हैं। पैरसे कंधेतक उनके शरीरपर हरे वृक्षों, मूर्त्तियों और दूसरी चीजोंके चित्र बने होते हैं। उनकी प्रत्येक स्त्रीके नितम्बके पास पतिकी संपत्तिके अनुसार लोहे, तांबे, चांदी, सोनेकी डिबिया लटकती रहती है। हरएक डिबियामें एक छल्ला होता है, जिससे बंधी छुरी नितम्बपर लटकती है। वह अपने कंठमें सोने और चांदीकी मालायें पहनती हैं। हरएक पुरुष जब दस हजार दिरहमका सौदा कर लेता है, तो अपनी स्त्रीके लिये एक माला और बीस हजार दिरहमका सौदा करनेपर दो माला खरीद देता है। हर दस हजार दिरहम सौदेकी वृद्धिके साथ मालाकी संख्या भी बढ़ती रहती है, जिससे स्त्रीके पास बहुत-सी मालायें हो जाती हैं। उनके यहां मिट्टीकी बनी हुई हरी गुरियाको सबसे अच्छा अलंकार समझा

* आजके रूसी नामसे भिन्न कियेफके इन पुराने लोगोंको "रूस" कहा जाता था।

जाता है। यह मिट्टी जहाजोपर होती है, जिसको वह बहुत दाम देकर खरीदते हैं—एक गुरियाका दाम एक दिरहम। ....अल्लाहके सृष्टि करनेके समयसे ही ये गंदे हैं, पाखाना-पेशाबके समय सफाई नहीं करते, बिल्कुल जगली गदहो जैसे। वह अपने नगरसे आकर इतिल (वोल्गा) के घाटपर उतरते हैं—इतिल बड़ी नदी है। नदी-तटपर बहुतसे लकड़ीके घर बने हैं, जिनमे वह ठहरते है। एक-एक घरमे दस-बारह आदमी या कम-वेसी जमा हो जाते है। प्रत्येकके पास मोढा होता है, जिसके ऊपर वह बैठता है। हरएकके पास अपनी सुन्दरी दासी होती है, जो उसके सामान को देखती है। कभी-कभी वह एक दूसरेके खिलाफ लड़नेके लिये जमा हो जाते है और कभी व्यापारके लिये निकलते है।....प्रतिदिन सबेरे दासी बडी डोलमे पानी भरकर ला अपने स्वामीके पास रख देती है। स्वामी उसमे अपना मुह, हाथ, बाल और सिर धोता है। उसीमें पोटा-खखार फेंकता है।......जब वह अपना काम कर लेता है, तो दासी डोलको उठा ले जाती है और उसीमे अपने स्वामीकी तरह मुह धोती-धाती है। इसी तरह उसी बाल्टीके पानी को घरमें रहनेवाले सब इस्तेमाल करते है।....अपने मुंह-बालको धोते है।

"नावसे आनेपर उनमेंसे हरएक अपनी रोटी, मांस, दूध और पानकी चीजें लेकर बड़े जंगलमें चला जाता है, और पृथ्वीपर बने मनुष्य जैसे चेहरेके सामने.....भेंट-पूजा रखकर कहता है-"स्वामी, बग (भगवान्), अपने सामान और दास-दासीके साथ, सबोलके समूरी छालोंके साथ मैं दूरसे आया हू।" इस प्रकार अपने सभी सौदोका नाम गिनाकर फिर कहता है "—मै तेरे पास यह भेंट ले आया हूं।" फिर वह भेंटको देवताके सामने रखते कहता है—"मै चाहता हूं, कि तू मेरे व्यापारमें सोना-चांदीके पैसों-को देनेमे सहायता करे।" व्यापार अच्छा होनेके बाद फिर वह प्रार्थना करता है—"मेरे स्वामीने मेरी इच्छा पूरी की, मुझे जरूर उसकी भेंट-पूजा करनी चाहिये।" फिर वह कितने ही बैलों और भेड़ोंको ले जाकर बलि चढ़ा कुछ मास उसी बड़े वृक्षके नीचे छोड़ देता है, बैलों और भेड़ोंके गलेको उसी वृक्षके नीचे काट-कर जमीनपर रख आता है। जब रात आती है, तो कुत्ते आ उन्हें खा जाते हैं। तब वह फिर कहता है—"मेरा बग (भगवान्) मेरे ऊपर प्रसन्न है, उसने मेरी सारी बलि खा ली!" उनमेंसे जब कोई बीमार पड़ता है, तो उसके लिये एक ओर झोपड़ी बनाकर वहां उसे रख देते हैं। बीमारके लिये थोड़ी-सी रोटी और पानी रखनेके सिवा न कोई वहा जाता है और न उससे बातचीत करता या मिलता-जुलता है। अगर वह अच्छा हो जाता है, तो साथमें जाता है, अगर मर जाता है, तो उसे जला देते हैं। यदि वह दास होता है, तो उसे धरतीपर छोड़ देते हैं, जहां उसे कुत्ते और गिद्ध खा जाते हैं।......

...मुझे बतलाया गया, कि वह मरनेके बाद अपने सरदारोंकी बहुत धूमधामसे अंत्येष्टि-क्रिया करते हैं। ...मैंने उसे देखना चाहा। मुझे उनके एक बड़े आदमीके मरनेकी खबर मिली। मैं उसे देखने गया। उन्होंने अर्थीपर ढांककर मुर्देको दस दिनोंतक रक्खा। इसी बीच मुर्देके कफन सीने और दूसरे काम होते रहे। अंत्येष्टि यही है, कि गरीब आदमीके लिये वह छोटी-सी चिता बना उसपर लाशको रखकर जला देते है। धनी आदमी होनेपर उसकी सम्पत्तिको इकट्ठा करके उसके तीन भाग करते है, जिसमेंसे एक भाग परिवारको मिलता है, दूसरे भागसे वह कपड़ा-लत्ता खरीदते है और तीसरे भागसे श्राद्धके दिनके खान-पानकी चीजें लाते हैं। अपने स्वामीके मरनेके बाद उसकी दासी साथ जलती है। वह उसे रात-दिन शराब पिलाकर मस्त रखते है, जिससे कोई-कोई हाथमें प्याला लिये ही मर जाती है। जब कोई सरदार मर जाता है, तो उसका परिवार मृतपुरुषके दास-दासीसे पूछता है—"तुममेंसे कौन स्वामीके साथ मरेगा?" उनमेंसे कोई कह उठता है—"मैं"। जब एक बार 'मै' कह दिया, तो उसके लिये मरना अनिवार्य हो गया, वह अपनी बातसे मुकर नहीं सकता।...अधिकतर साथ जलनेका काम दासियां करती हैं। जब वह आदमी मरा, जिसके बारेमें मुझे बतलाया गया था, तो उसकी दासियोंसे पूछा गया—"कौन उसके साथ मरेगा?" उनमेंसे एक दासीने कहा—'मैं'। उन्होंने उसी समय उसके ऊपर दो दासियां नियुक्त कर दीं, जिसमे वह उसकी रखवाली करें।..मृतकके लिये वह दूसरे काम करने लगे। उन्होंने कफन तैयार किया और जो दूसरी आवश्यक चीजें थीं, उन्हें भी तैयार किया। दासी रोज खूब आनन्दसे खाती-पीती। जब दाहका दिन आया, तो मैं भी नदीपर गया, जहां चिता तैयार थी।....चिताके ऊपर बहुत-सी लकड़ियां रक्खी थीं। उसीके ऊपर लाकर अरथीको रख दिया गया। फिर वह मेरी समझमें न आनेवाली

भाषामें कुछ कहते हुये एकके-पीछे एक चलने लगे। लाश अब भी अर्थीमें पड़ी थी। फिर उन्होंने मोढ़ा ला चितापर रख उसे ग्रीक रेशमी कपड़े, तकिये आदिसे ढांक दिया। फिर एक बूढ़ी स्त्री आई, जिसे कि वह लोग मृत्युका देवता (यमदूता) कहते हैं। वह मोढ़े पर बैठ गई। उसीके कहनेके अनुसार सिलाई तथा दूसरे काम होते हैं। वही दासीको मारती है।..उन्होंने उसे चितापर बैठा दिया, फिर मरनेवालेके पहने हुए कपडेको वहां रक्खा।....उसीके सामने उन्होंने मद्य, फल और वाद्ययंत्र (बलालैका) रक्खा। सफेद चेहरा हो जानेके सिवा मुर्देमें कोई परिवर्तन नहीं दीख पड़ता था। उन्होंने उसके ऊपर रेशमी कुर्ता, जामा, संदली, जरीदार जूता आदि रक्खा, सिरके ऊपर रेशमकी बड़ी टोपी रक्खी।......फिर चितापर उसके कपड़ोंको बिछाकर तकिया रक्खी। फिर पान (मद्य), फल रख दिया। कुत्तोने आ चिताको गिरा-पड़ा दिया। फिर मृत पुरुषके सारे हथियारोंको उन्होंने क्रमसे उसके पास सजा दिया। फिर उसके दो घोड़ोंको लाकर उन्होंने वहीं तलवारसे मारकर उनके मांसको चितापर रख दिया। फिर वह दो बैल लाये। उन्हें भी उसी तरह मारकर चितापर फेंक दिया। फिर मुर्गी-मुर्गा लाये, उन्हें भी मारकर वहीं डाल दिया। फिर मरनेके लिये तैयार दासी लाई गई,..... जिससे हरएकने कहा—"अपने स्वामीसे कहना, कि हमने केवल उसके प्रेमसे यह सब किया।" दासीने अपना पैर चितापर रख अपनी भाषामें कुछ कहा। उसे हटा दिया गया। फिर उसने वही किया, जो कि पहली बार किया था। फिर उसे तीसरी बार हटाया गया। उसने फिर वही किया।...फिर उसे उन्होंने मुर्गी दी जिसे उसने सिर मरोड़कर फेंक दिया। उन्होंने मुर्गीको उठाकर उसी चितामें डाल दिया। मैंने दुभाषियेसे पूछा, कि उस दासीने क्या कहा? उसने जवाब दिया—'उसने पहली बार कहा—'हां, मैं अपने बाप और अपनी मांको देखती हूं।' दूसरी बार उसने कहा—'हां, मैं देखती हूं अपने मरे हुये बंधुओंको, मानों वह (यहां) बैठे हुये है।' फिर उसने तीसरी बार कहा—'हां, मैं देखती हूं अपने स्वामीको, जैसे वह बड़े सुन्दर हरे-भरे राइ (स्वर्ग) में बैठे हैं, उनके साथ पुरुष और बच्चे भी हैं। वह मुझे बुला रहे हैं। मुझे उनके पास ले चलो।' पीछे उसे चितापर ले गये, और चीजें निकालकर उस यमदूता बुढ़ियाको दे दीं, जो दासीको मारने जा रही थी। फिर बुढ़ियाने पैरोंके कड़ोंको निकालकर, उनमेंसे दोको दासीको दे दिया।...फिर उसे चिताके पासकी झोपड़ी में ले गये, जहां पुरुषोंने उसे प्यालेमें शराब लाकर दिया। उसने उसे पिया। दुभाषियेने मुझसे कहा, 'वह अपनी सहेलियोंके साथ प्रार्थना कर रही है।' फिर उसे दूसरा प्याला दिया गया। उसने उसे ले पीते हुये एक लम्बी गीत गाई। लेकिन बुढ़िया प्याला पीनेसे रोककर उसे वहां ले गई, जहां उसका स्वामी लेटा हुआ था। मैं देख रहा था, कैसे वह छटपटा रही थी।.....उसने अपने सिरको चौतरे और चिताके बीचमें किया, और बुढ़ियाने गलेसे पकडकर उसे चौतरेपर पहुंचाया।....फिर पुरुषोने लकडियोंको पीटना शुरू किया, जिसमें कि (दासी का) रोना-चिल्लाना सुनाई न दे, और आगे दूसरी दासियां डरकर अपने स्वामीके साथ मरनेसे इन्कार कर दें।....फिर मरनेवाली दासीको लाकर उसके स्वामीकी बगलमें रख दिया—दोने उसके पैरोंको पकड़ रखा था, दोने उसके हाथोको, यमदूता बुढ़ियाने उसे गलेसे पकड़ा था। पुरुषोंने उसे तान रक्खा था। बुढ़ियाके सामने बड़ा खांडा रक्खा था, जिसे उसने दासीकी पसलियोंके बीचमें घुमेड़ दिया। दो पुरुषोंने भी उसपर प्रहार किया। अभी भी वह मरी नहीं थी। फिर मृत पुरुषके बहुत नजदीकके संबंधीने आकर एक जलती लकड़ी उठा उससे चितामें आग लगा दी।....फिर दासीको उसके स्वामीके पास ले आकर रख दिया गया। इसके बाद लकड़ीके टुकडोंको लिये लोग आये और उन्हें चिताके काठपर फेंक दिया। आग पहले घासमें लगी, फिर चितामें, फिर लाशमें। आग जलने लगी। इसी समय जोरकी हवा चली, जिससे आगकी लपटें धांय-धांय करके बलने लगीं। मेरे पास एक रूस पुरुष खड़ा था। उसने मुझसे कुछ कहा। मैंने दुभाषिये से पूछा—'उसने क्या कहा।' दुभाषियेने जवाब दिया—'वह कहता है, अरबके लोग (मुसलमान) मूर्ख हैं। वह जिस आदमीसे प्रेम करते हैं, उसे ले जाकर जमीनमें गाड़ देते हैं, जहां उसे कीड़े-मकोड़े खा जाते हैं। हम (रूस) तो उसको आगमें जला देते हैं और वह तुरन्त राइ (स्वर्ग) में चले जाते हैं।' फिर उसने मुस्कराते हुये लम्बी हंसी हंसते कहा-'देखो, इसीसे खुश होकर भगवान्‌ने हवाको भेजा है।...फिर नदीके तटपर सजाई चिताकी जगहपर श्वेत सफेदा-वृक्षके टुकड़ेपर उस पुरुष और रूसोंके राजाका नाम लिखकर रख दिया गया।'

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि भारतमें सतीप्रथा शकोके साथ ईसवी-सन्‌के आरंभमें आई। हमारे शक तथा रूसी एक ही वशके थे, यह हम बतला चुके है। इसीलिये दोनोंकी सतीक्रियामें कितनी ही समानता देखकर आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नही है।

४. ओलगा, ईगर-पत्नी (९४५-५७ ई०)

ईगरका उत्तराधिकारी उसका पुत्र स्व्यातोस्लाव छोटा बच्चा था, इसलिये राज्यका शासन उसकी मा ओलगाने संभाला। ओलगा स्लाव थी, इसलिये रूरिककी तीसरी पीढीमें स्व्यातोस्लाव भाषा और आकृति सबमें स्लाव था।

५. स्व्यातोस्लाव I, ईगर-पुत्र (९५७-७३ ई०)

स्व्यातोस्लावने अपने बाप-दादोंके विजय और वीरतापूर्ण कामोंको और आगे बढ़ाया। उसका सारा जीवन अभियानोंमें बीता। वह कभी अपनी यात्राओंमें रसदकी गाड़िया नहीं ले जाता, अपने घोडेकी जीनका तकिया बनाकर धरतीके ऊपर सो जाता और आधे पके हुये घोड़ेके मांसको खाता। स्व्यातोस्लावने कभी धोखा देकर शत्रुपर आक्रमण नहीं किया। जब किसीके विरुद्ध चढाई करता, तो पहलेसे दूतद्वारा संदेश भेज देता—'मै तुम्हारे विरुद्ध कूच करना चाहता हूं।'

स्व्यातोस्लावसे पहले ही द्‌नियेपर-उपत्यका और इल्मन सरोवरका प्रदेश कियेफ राज्यमें सम्मिलित था। स्व्यातोस्लावने पहले द्‌नियेपरसे पूरबमे रहनेवाली स्लाव-जातियोंकी ओर ध्यान दिया और ओका-उपत्यकाके व्यातिची लोगोंको जीतनेके बाद दूसरोंके ऊपर आक्रमण किया। १० वीं शताब्दीके साठवें सालके आसपास उसने वोल्गाके किनारेके बुल्गारों और खाजारोंको हराया, फिर उत्तरी काकेशसपर आक्रमण कर वहांके कसोबी (चिरकास) और यासी (ओसेती) जातियोंकी भी वही हालत की। ९६७ ई० में उसने दन्यूबतटवासी बुल्गारोंके ऊपर चढ़ाई की, जो अब नामके ही बुल्गार थे, नहीं तो भाषा, आकृति आदिमें उसी स्लाव जातिके थे, जिसका कि उनका विजेता। इस आक्रमणका यही कारण था, कि बुल्गार अपने पड़ोसी ग्रीक (पूर्वी रोम) सम्राट्‌पर बराबर आक्रमण करते उन्हे जबर्दस्त हारपर हार दे रहे थे। ग्रीक रोकनेमें असमर्थ थे, इसलिये उन्होंने स्व्यातोस्लावको मददके लिये बुलाया। उसने बुल्गारोंको पूरीतौरसे हराकर दन्यूबतटपर अवस्थित बुल्गारियाकी राजधानी पेरेया (स्लावेत्स) में स्थायी तौरसे अपनी छावनी स्थापित करनेकी योजना बनाई। स्व्यातोस्लावने कहा—'यहां यह मेरे देशका केंद्र है। यहां सभी अच्छी चीजे—सोना, कीमती कपड़े, शराब और फल ग्रीकोंकी ओरसे प्रवाहित होते रहते हैं, चेकों तथा मगयारोंके देशोंसे चांदी और घोडे एवं रूसोंके देशसे समूरी छाल, मधु, मोम और दास-दासियां आती है।"

स्व्यातोस्लावके रूपरंगके बारेमे ग्रीक ऐतिहासिकोंने लिखा है—"वह कदमें मंझोला—न बहुत बड़ा न बहुत छोटा था, उसकी भौहें घनी, आंखें नीली, नाक छोटी, दाढ़ी मुंडी और सिर घुटा था। केवल खोपड़ीके ऊपरी भागमें लंबे बाल थे।....उच्च कुलका परिचायक बालोंका एक गुच्छा (शिखा) उसके सिरमें एक ओर था। उसकी गर्दन मोटी, कंधा चौड़ा, सारा शरीर सुन्दर सुडौल था।.....उसके एक कानमें सोनेका मणिजटित कुंडल था।.....उसकी पोशाक एक सफेद स्वच्छ कुर्तेके सिवा और कुछ नहीं थी।"

रूरिक-संतानोंके शासनके समय रूसके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें निम्न राजुल थे—नवोगोरद, रस्तोफ-सुज्दल, मुरमो-र्याजन, स्मोलेन्स्क, कियेफ, चेर्नीगोफ, सेवेर, पेरेयास्लाव्ल, वोलिन्स्क, गालिस्स, पोलोत्स, तूरोफ-पिन्स्क, जिनके नीचे कितने ही छोटे-छोटे ठाकुर होते थे। कालासागरके पासवाला मैदान उस समय तुर्कोंके हाथमें था, जो पेचेनेग, तुर्की, वेरेन्दे, चेर्नीक्लोबुक (कराकल्पक) जैसे भिन्न-भिन्न कबीलोंमें बंटे थे—पेचेनेगोंका देश कियेफकी भूमिसे एक दिनके रास्तेपर पड़ता था।

६. व्लादिमिर, स्व्यातोस्लाव-पुत्र (९७३--१०१५ ई०)

स्व्यातोस्लावको अपने अभियानोंसे फ़ुर्सत नहीं थी। अपनी अनुपस्थितिमें राज्यका भार उसने अपने तीन पुत्रोंपर छोड़ रक्खा था। ज्येष्ठ पुत्र यारोपोल्क पोलेयानोंकी भूमि---जिसमें कियेफ नगर भी था---का शासन करता था। ओलेगके अधीन द्रेव्ल्यानोंकी भूमि थी, और नवोगोरद व्लादिमिरको मिला था। बापके मरते ही तीनों भाइयोंमें झगड़ा शुरू हुआ। यारोपोल्क और ओलेग युद्धमें काम आये, और पूर्वी स्लावोंकी भूमि व्लादिमिरके शासनमें एकताबद्ध हो गई। इसके बाद व्लादिमिरने गालिच (हालिज) के प्रदेशको अपने राज्यमें मिलाया और विरोध करनेवाले पोलोंके ऊपर आक्रमण किया। व्लादिमिरने अपने पड़ोसी लिथुवानियोंपर भी आक्रमण किये, लेकिन उसका ध्यान सबसे अधिक पेचेनेगोंकी ओर था, जो कि उसकी दक्षिणी सीमापर आक्रमण करते रहते थे। उसने इन घुमंतुओंसे प्रतिरक्षाके लिये जगह-जगह गढिया बनवाईं और वहां अपने लड़ाकू लोगोंको लाकर बसा दिया।

ईसाई-धर्म स्वीकार---अभी तक कियेफ़ रूस अपने पूर्वजोंके धर्मपर ही आरूढ़ थे। यद्यपि उनका व्यापारिक और सैनिक तौरसे भी ग्रीसके साथ घनिष्ठ सबंध था, जिसके कारण ईसाई पुरोहित भी अपने व्यापारियोंके साथ उनके यहां आया करते थे। ईगरके समय भी कियेफमें ईसाइयोंके कुछ गिर्जे थे। पहले ही निकोलाइ ख्रिसोवेर्द (९७९--९९१ ई०) ईसाई-प्रचारक बनाकर स्लावोंमे भेजा गया था। इसमें संदेह नहीं कि आभिजात्य वर्गमें कितने ही ईसाई-धर्मको स्वीकार कर चुके थे, तो भी अभी अपने जनयुगके (कबीलाशाही) पूर्वजोंके धर्मको रूस छोड़ना नहीं चाहते थे। जनयुगका धर्म अपने-अपने कबीलों देवताओं और रीति-रवाजोंके साथ घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध रहता है। जब राज्योंकी सीमा कबीलोंको तोड़कर आगे बढ़ती है, तो राज्य की एकतामे कबीलाशाही धर्म बाधक होता है, फिर किसी सामन्ती धर्म को स्वीकर करनेकी जरूरत पड़ती है, ता कि वह राजा और भिन्न-भिन्न कबीलोंवाली प्रजाके भीतर पहिले के रक्तसंबधके टूटनेपर अपने (धर्म) द्वारा एक नये संबंधको स्थापित करे। स्लावोंसे बाहरभी राज्यविस्तार होनेके कारण अब व्लादिमिरको एक व्यापक धर्मकी अवश्यकता पड़ी। इसके लिये उसका ध्यान यहूदी धर्मकी ओर भी गया था---हमें मालूम है, कि खाजार खगान यहूदी धर्मके माननेवाले थे। पुरानी ऐतिहासिक परंपरासे मालूम होता है, कि ९८६ ई० में व्लादिमिरने यहूदी धर्म स्वीकार करना इन्कार कर दिया। रूसोंके सगे भाई बुल्गारियावाले ईसाईधर्मको स्वीकार कर चुके थे। काला समुद्रके उत्तरी और पूर्व-उत्तरी तटपर क्रिम, खोरसुन आदि नगरोंमें धनी ईसाई ग्रीक व्यापारी रहते थे, जिन्होंने वहा अच्छे-अच्छे गिर्जे बना रक्खे थे। व्लादिमिरने रोम-दरबार की तड़क-भड़क, उसके कला-कौशल और विचार-धारा को भी देखने-सुननेका मौका पाया था। अपने पास-पड़ोसकी गौरांग जातियोंमें इस्लामको न फैला देखकर उसकी ओर उसका आकर्षण नहीं हो सकता था। इन सामान्ती धर्मोंके मुकाबिलेमें स्लावोंका पुराना धर्म ओझा-सयाना-पुरोहितोंका धर्म था, इसमें पुराने जनयुगीन ठाकुरोंकी प्रतिष्ठा अधिक थी, जो नवजात उच्चवर्ग के लोगोंको सम्मान नहीं देना चाहते थे, जो कि उनके लिये प्राचीन कालसे सुरक्षित था। इन्हीं नये अ-कुलीन ठाकुरोंने पहिले ईसाईधर्मकी ओर हाथ बढ़ाया। कहा जाता है, ईगरकी विधवा ओलगाने भी ईसाई-धर्म स्वीकार किया था, जो असंदिग्ध नहीं है। ९८७ ई० में विजन्तीन साम्राज्यके भीतर एक बड़ा विद्रोह उठ खड़ा हुआ था। इसी समय उत्तरसे दन्यूबके बुल्गारोंने भी हमला करना चाहा, जिसपर विजन्तीन सरकारने व्लादिमिरको सहायताके लिये बुलाया और ९८८ ई० मे व्लादिमिरके साथ संधि की। व्लादिमिरने ग्रीक-सम्राट्की बहिन अन्नासे ब्याह करनेकी इच्छा प्रकट की। सम्राट्ने इस शर्तपर ब्याह करना स्वीकार किया, कि व्लादिमिर ईसाई-धर्मको स्वीकार करे। उस समय कान्स्तन्तिनोपोलमें दो सम्राट् राज्य कर रहे थे, अन्ना दोनों हीकी बहिन थी। विद्रोह-दमन करनेके उपहारस्वरूप अन्ना मिलनेवाली थी, लेकिन जब काम निकल गया, तो सम्राटोंने अपने वचनको पूरा करनेमें ढिलाई दिखानी शुरू की। इसपर व्लादिमिरने आक्रमण करके क्रिमिया प्रायद्वीपके खेर्सोनेस (खोरसोन) नगरको घेर लिया, और विजन्तीनको अपना वचन पालनेके लिये मजबूर किया। उसी समय व्लादिमिरने ग्रीक-चर्चकी पद्धतिके अनुसार बपतिस्मा ले राजकुमारी अन्नासे ब्याह किया। ९८८ ई० में खोरसोनसे रानी अन्नाके साथ कियेफ लौटने पर उसने कियेफके सारे लोगोंको जबर्दस्ती द्नियेपर नदीमें

डुबकी लगवा ग्रीक-पादरियोंद्वारा उन्हे बपतिस्मा दिलवाया। धर्मान्धिताके पागलपनमें पुराने स्लाव-देवताओंकी मूर्तियां—जो अधिकतर काठकी होती थी—जला दी गई। महादेवता पेरुनकी एक मूर्ति द्नियेपरमे फेंक दी गई। इसी तरह जबर्दस्ती बपतिस्मा दिलवा थोड़े ही दिनोंमें प्रायः सारे नागरिक रूस ईसाई बना दिये गये, लेकिन गावोमे पेरुन-पूजकोंकी समाप्ति इतनी जल्दी नहीं हो पाई।

७ स्व्यातोपोल्क I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१५-१९ ई०)

व्लादिमिरके मरते ही उसके पुत्रोमें गद्दीके लिये जो भयंकर संघर्ष शुरू हुआ, उसमें स्व्यातोपोल्कनें अपने भाइयो—बोरिस, ग्लेब और स्व्यातोस्लाव—को मारकर कियेफकी गद्दी ले ली। इसपर पिताके समयसे ही नवोगोरदका शासक व्लादिमिर-पुत्र यारोस्लावने नवोगोरदवालोंकी मददसे स्व्यातोपोल्कपर आक्रमण किया। स्व्यातोपोल्क हारकर अपने ससुर पोलन्दके राजुलके पास भाग गया। दामादकी मदद करनेके लिये पोलन्द राजुल वोलेस्लाउस्ने रूसपर आक्रमण किया और पश्चिमी बुगके किनारे यारोस्लावको हरा कियेफमे दाखिल हो अपने दामादको गद्दीपर बिठाया। पोलोनें इतने हीसे संतोष न कर देशमे लूट-पाट मचानी शुरू की, जिसका प्रतिरोध रूसोंने भी बहुत जोरसे किया। जब लूट-पाटकर नगरो और गावोंमें जाडा बितानेके लिये पोल इकट्ठा हुये, तो लोगोंने विद्रोह करके उन्हें मार डाला। बची-खुची सेनाके साथ वोलेस्लाउस् पोलन्द भागा। पोलोंकी सहायतासे वंचित स्व्यातोपोल्कको यारोस्लाव और उसके नवग्रादियोके हाथ हार खानी पड़ी और भागते समय वह मारा गया।

८. यारोस्लाव I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१९—५४ ई०)

यारोस्लाव अब कियेफ और नवोगोरदका महाराजुल बना, लेकिन अभी भी एक प्रतिद्वंद्वी उसका भाई म्स्तिस्लाव मौजूद था, जोकि काकेशसके समीप तमन प्रायद्वीपमें तमूतरकानका शासक था। उसने आक्रमण करके यारोस्लावसे सेवेर्स्क भूमि तथा चेरनीगोफ नगरको छीन लिया। द्नियेपर नदी दोनों भाइयोंकी सीमा बनी। १०३६ ई० में भाईके मर जानेपर सेवेर्स्क प्रदेशको फिर यारोस्लावने कियेफ-राज्यमे मिला लिया। यारोस्लावके समय ईसाई धर्मने कियेफ-रूसोंपर पूर्ण विजय प्राप्त की, ईसाई-चर्च (धर्मसंघ) का संगठन हुआ, और कान्स्तन्तिनोपोलके महासंघराजने रूसोंके लिये एक संघराज नियुक्त किया। कियेफके पास पेचेर्स्क-मठ इसी समय बना, जिसने शासकवर्गमें शिक्षा फैलानेमें बड़ा काम किया।

कियेफ-राज्य अब युरोपके महत्त्वपूर्ण राज्योमेंसे था। ग्रीक-संबंधके कारण उसका सांस्कृतिक तल भी ऊंचा हो गया था। यारोस्लाव-परिवारका संबंध अब पश्चिमी युरोपके राजघरानोंसे होने लगा था। यारोस्लावकी बहिन पोल-राजासे ब्याही थी। उसके दामादोंमें फ्रांस, नार्वे और हुगरी (मगयार) के राजा थे। यद्यपि यारोस्लावने पोलन्दकी सहायतासे सिंहासन पाया था, लेकिन अब वह इतना शक्तिशाली था, कि पोलन्दके भीतरी मामलोमें दखल देता था। वोलेस्लाउस्के मरनेके बाद पिताके राज्यसे छीने गये गालिच प्रदेशको उसने फिर ले लिया। १०४३ ई० में उसने अपने पुत्र व्लादिमिरके नेतृत्वमें एक असफल अभियान कान्स्तन्तिनोपोलके विरुद्ध भेजा। पश्चिमकी ओर बाल्तिक प्रदेशपर जर्मन आक्रमण करने लगे थे। यारोस्लावने प्रतिरक्षाके लिये यूरियेफ (एस्तोनियामें तरतू) नगरको बसाया, और बाल्तिकके लोगोंको अपने अधीन कर लिया। उसने वोल्गाके किनारे अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगर बसाया। दक्षिणमें पेचेनेगोसे उसका संघर्ष बराबर जारी रहा।

यारोस्लावके समयमे ही पहला कानून-ग्रंथ (विधान-संहिता) "यारेस्लाव्स्की-प्राव्दा" के नामसे संपादित हुआ, जिसपर ईसाई बिजन्तीन कानूनोंका प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडता है। इसी प्राव्दा (सत्य) द्वारा जनयुगसे चले आते खूनका बदला लेना सारी जातिके लिये आवश्यक होनेकी जगह परिवारके सदस्योंतक ही सीमित करते हुये कहा गया—"अगर कोई आदमी दूसरेको मार डाले तो भाई का बदला भाई ले, बापका बदला पुत्र, पुत्रका बदला भाई-भतीजा-भांजा भी। अगर कोई बदला

लेनेवाला न रह जाय, तो मरे हुये आदमी के लिये चालीस ग्रिवना (दो सौ ग्रामकी चांदीकी सिल्ली) देना होगा।" यारोस्लावके पुत्रके शासनकालमे बदला लेनेके विधानको ही उठा दिया गया, और इस प्रकार जनयुगकी एक पुरानी प्रथाको सामंतयुगने समाप्त कर दिया।

सुव्यवस्थित रूसी चर्चके स्थापित हो जानेपर अब बाकायदा पुस्तकें भी लिखी जाने लगी, बाइबल तथा दूसरे धार्मिक ग्रंथोंके साथ-साथ ग्रीक इतिहास-ग्रंथोंका अनुवाद करते, रूसी लिखित साहित्यका आरंभ किया गया। यारोस्लावके समयमे ही रूसका इतिहास लिखनेका प्रथम प्रयत्न किया गया, जिसे कि उसके मरनेके बाद पेचेर्स्क-मठने सपादित किया। इसको "आरंभिक-इतिहास" (नचल्नया लेतोपिस्) कहते है। इसमे राजुलोकी जीवनिया, और बहुत-सी कहानिया जमा की गई है। मूल पुस्तक अपने १११६ और १११८ के सशोधित सस्करणोके रूपमे "पुराने वर्षोका इतिहास" के नामसे अब भी मौजूद है। यारोस्लावके समयमे ही कियेफमें ग्रीक वास्तु-शास्त्रियोंकी देख-रेखमे सोफिया-गिर्जे का निर्माण हुआ। विजन्तीन ढाचेको लेते हुये भी इसमें रूसी वास्तुकलाका सम्मिश्रण किया गया। ११ वी शताब्दी-की रूसी कलाकी यह सर्वोत्कृष्ट इमारत है। गिर्जेके भीतरकी दीवारोपर सुन्दर भित्ति-चित्र और फर्श-पर बढ़िया पच्चीकारीका काम है। उस समयके विदेशी यात्री कियेफके वैभवको देखकर उसे "कान्स्तन्तिनोपोलका प्रतिद्वंद्वी" कहते थे। कियेफके नमूनेको लेकर यारोस्लावके पुत्र व्लादिमिरने नवो-गोरदमे भी उसी तरहका सोफिया-गिर्जा बनवाया।

आर्थिक ढांचा—यह कह चुके हैं, कि ९वी शताब्दीसे पहले रूस कृषिजीवी थे, यद्यपि नगरो और द्नियेपर-उपत्यकासे दूरके जंगलोंमें रहनेवाले अब भी पशुपालनपर अधिक निर्भर करते थे। अभी भी उनका राजनीतिक ढांचा बहुत-कुछ जनयुगीन था, और राजुलोंको अपने लोगोंकी रायका बहुत ख्याल रखना पड़ता था। न पसंद आनेपर लोग साफ जवाब देते थे—"राजुल, हम तो नही जाते, तू अपनी लडाई जाके लड़।" लेकिन ११ वी शताब्दीमें पहुचते-पहुचते जनयुगीन ढाचेके स्थानपर सामंती ढांचा कायम हो गया था, जिससे जहां सामंतोंकी शक्ति बढी, वहा साधारण जनतामे सांपत्तिक विषमता भी बढ़ी। कुछ लोगोंके पास भूमि और संपत्ति अधिक आ गई, और इस प्रकार बहुत खेतोंवाले धनी जमींदारोंका एक वर्ग पैदा हो गया, जिन्हें **बायर** कहा जाता था। ये राजुलोंके बड़े सहायक थे। इनके अतिरिक्त मठोंके पास भी बहुत धन-धरती हो गई। उनके महंत भी बायरोंकी तरह राजुलोंके समर्थक थे। अबतक धरतीपर जो वैयक्तिक नही बल्कि पंचायती अधिकार चला आता था, वह खतम होने लगा। बड़े-बड़े शहरोंके आसपास राजुलों, बायरों और मठोंके गांव बस गये थे। दास अभी तक लूटकर बेंचनेके ही काममे आते थे। खेतोंमें काम करनेके लिये गरीब किसान और मजदूर ज्यादा लाभदायक समझे जाते थे, जिन्हें कि कर्ज खिला या दूसरी तरहसे जमीदार अपना बधुवा बना लेते थे। लेकिन अभी ११वीं शताब्दीमें भी अधिकाश किसान समूहबद्ध होकर रहते राजुलोको केवल कर दे दिया करते थे। ११ वी शताब्दीके अन्ततक यह स्वतंत्र किसान-समूह बहुत-कुछ अपने अधिकार खो चुके थे। बहुत दबानेसे जातीय स्वतंत्रताकी भावना जब कभी जाग उठती, तो वह राजुलों और बायरोंके खिलाफ विद्रोह कर उठते, या अन्यत्र भाग जाते। भागा हुआ किसान पकड़नेपर दास बना दिया जाता।

"रुस्कया प्राव्दा"—यारोस्लावके समय निर्मित विधान (प्राव्दा) के आधारपर ही उसके पुत्रों और पौत्रोंके समय "रुस्कया प्राव्दा" (रूसी विधान) के नामसे एक विधान-सहिता बनी, जिसमें उन विधानोंको खासतौरसे स्थान दिया गया, जिनके द्वारा जनसाधारणको जमींदारों (बायरों) और सामतों की संपत्तिपर हाथ बढ़ानेसे रोका जाता था—खेतकी मेंड़ तोड़ने और पशुओंके चुराने आदिके अपराधमें जुर्मानोंका विधान किया गया। बायरका अपने दास और अर्धदास रियायापर क्या अधिकार है, इसे भी उसमें बतलाया गया। जनयुगसे खूनके बदलेमें खूनीसे सारे कबीलेको बदला लेनेका जो अधिकार चला आता था, और जिसे यारोस्लाव-प्राव्दाने केवल परिवारके व्यक्तियोंतक ही सीमित कर दिया था, उसकी जगह अब "रुस्कया प्राव्दा" ने "विरा" (अर्थदड) का विधान करते उसका परिमाण चालीस ग्रिवना निश्चित कर दिया—बायरको मारनेपर यह जुर्माना दूना (अस्सी ग्रिवना) देना पड़ता, लेकिन

दासके मारनेपर विरा न दे केवल दास-स्वामीको पचास ग्रिवना दे देना पर्याप्त समझा जाता था। "रुस्कया प्राव्दा"में यह भी कहा गया है—"अगर किसी आदमीपर तलवारसे प्रहार किया गया हो लेकिन वह मरा न हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना, और घावकी चिकित्साके लिये आहत आदमीको एक ग्रिवना पानेका अधिकार होगा। अगर एक दात तोडदिया गया हो और मुंहसे खून निकला हो, तो जुर्माना बारह ग्रिवना और दातके लिये एक ग्रिवना देना होगा।" मधु अब भी आयका एक अच्छा साधन समझी जाती थी और चीनी-गुडके अभावमे रूसोके लिये वही एकमात्र मिठाईकी चीज थी। शराब बनानेमें भी उसका बहुत व्यवहार होता था, इसीलिये "रुस्कया प्राव्दा" ने विधान किया था—"अगर कोई आदमी ऐसे वृक्षको काटे, जिसमें जगली मधु-मक्खियां रहती हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना और आधा ग्रिवना वृक्षका (दाम) देना होगा।"

पहले चीजोंके विनिमयका माध्यम जंगलके इलाकोमे पशु-चर्म और खेतवाले इलाकोंमे पशु था। इसीलिये पुराने समयमें पैसेको "स्कोत" (पशु) या "कुनी" (चर्म) कहते थे। रूसोंके पास अपना सिक्का नही था। अरबों, ग्रीको या पश्चिमी युरोपवालोंके सिक्के उस समय रूसोंमें भी चला करते थे। ११ वीं शताब्दीके आरंभमे ग्रीक सिक्कोंकी नकल करते कियेफ रूसोंने भी थोड़ेसे अपने-अपने सिक्के ढाले, जिनके ऊपर राजुलका चेहरा बना रहता—सिक्कोंका रवाज अधिकतर नगरोंमें था।

९. इज्यास्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०५४—७३ ई०)

यारोस्लावके मरनेके थोड़े ही दिनों बाद रूसोंकी एकता भंग होने लगी और यारोस्लावके पुत्र स्वतंत्र रूपसे अपने-अपने प्रदेशोंपर शासन करने लगे। सबसे बड़ा लड़का इज्यास्लाव कियेफ और नवो-गोरदका स्वामी बना। दुनियेपरके वणिक्पथपर ये दोनों बहुत महत्त्वपूर्ण नगर थे, इसलिये इज्यास्लावका स्थान बहुत महत्त्व रखता था। दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लावको चेर्नीगोफका इलाका मिला और व्सेवोलदको पेरेयास्लाव्ल और रोस्तोफ-सुज्दल। दूसरे इलाके दूसरे राजकुमारोंके हाथोंमें चले गये। पहले तीनों बड़े लडके आपसमें मेलसे रहते, मिलकर शत्रुओंसे देशकी प्रतिरक्षा करते थे, कभी-कभी इकट्ठा होकर राजकाजकी बातोंमें सलाह भी करते थे। १०६८ ई० में जब कियेफके कारीगरों और किसानोंने विद्रोह किया, तो उन्होने इकट्ठा होकर अपने बापकी "प्राव्दा" का संशोधन और परिवर्धन किया। यारोस्ला-वके पुत्रोंके सबसे भयंकर शत्रु थे तुर्कजातीय पोलोवत्सी—अपनी भाषामें इनका नाम दूसरा ही होगा, लेकिन रूसी उन्हें इसी नामसे पुकारते थे। यारोस्लावके शासनके खतम होनेके समय ११ वीं शताब्दीके मध्यमें ही पूरबसे आकर पोलोवत्सियोंने आक्रमण करके कालासागरके उत्तरवाली मैदानी भूमिपर अधिकार कर लिया और वहां रहते पेचेनेगोंको पश्चिममें दन्यूबकी ओर भगा दिया। पोलोवत्सी घुमंतू पशुपाल थे। उनके बहुतसे छोटे-छोटे कबीले थे, जिनके अपने-अपने खान (राजा) हुआ करते थे। पशुओंपर निर्भर होनेके कारण वह एक जगहसे दूसरी जगह घूमा करते और समय-समयपर रूसोंकी भूमिपर चढाई कर उनके पशुओं और पुरुष-स्त्रियोंको पकड़कर लौट जाते। उनका आक्रमण बड़ा ही भयंकर और अचानक होता। ग्रीक लेखक उनके बारेमें कहते है—"पोलोवत्सी पलक मारते-मारते प्रकट होकर लुप्त हो जाते हैं। आक्रमण खतम होते ही लूटके मालसे लदे अपने घोड़ोंको कोड़ोंसे मारते वह आंधीकी तरह निकल जाते हैं, मानो वह उड़ती हुई चिड़ियाको पकड़ना चाहते हैं। तुम्हारे आंख उठाकर देखनेसे पहले ही वह निकल चुके रहते हैं।" १०६८ ई० में इज्यास्लाव अपने दोनों भाइयों स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदके साथ पोलोवत्सियोंको दबानेके लिये गया, लेकिन बुरी तरहसे हारकर उन्हें युद्ध-क्षेत्रसे भागना पड़ा। इज्यास्लाव कियेफ पहुंचा। पोलोवत्सियोंके आक्रमणों और लूटमार से संत्रस्त किसानोंने इकट्ठे हो इज्यास्लावसे मांग की, कि हमें हथियार दो और साथ चलकर शत्रुओंसे लड़ो। इज्यास्लावको भय लगने लगा, कि कहीं वह हथियार मेरे ही विरुद्ध न उठाये जायं। उसके इन्कार करनेपर लोगोने राजुलके महलको लूट और बरबाद कर, उसकी जगह उसकेद्वारा जेलखानेमें बंद कोलोत्सके राजुल व्सेस्लावको मुक्त कर कियेफका राजुल घोषित किया। इज्यास्लाव भागकर पोलंद पहुंचा, जहांसे पोल राजा वोलेस्लाउस्की सहायता ले कियेफ लौटा। व्सेस्लाव विश्वासघात करके

चुपचाप रातको पोलोत्स्क भाग गया। इज्यास्लावने लोगोंसे भारी खूनी बदला लिया। पोल सैनिक कियेफ राज्यके नगरोंमें जगह-जगह छावनी डालकर रहने लगे। उन्होंने अपने अत्याचारोंसे इतना तंग किया, कि लोगोंने जानपर खेलकर उनकी हत्या कर डाली।

पोलोवत्सी जैसे जबर्दस्त शत्रु सिरपर थे, तो भी यारोस्लावके बेटोंकी एकता देरतक नहीं रह सकी। विदेशियोंसे मदद लेकर इज्यास्लावने फिरसे सिंहासनपर अधिकारकर जनताके ऊपर जो अत्याचार किये, उनसे लोगोंमें उसके प्रति भारी घृणा पैदा हो गई। इससे फायदा उठाकर १०७३ ई० में स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदने आक्रमण करके इज्यास्लावको कियेफसे भगा दिया। अब स्व्यातोस्लाव कियेफकी गद्दीपर बैठा।

स्व्यातोस्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०७३--१११३ ई०)

स्व्यातोस्लाव थोड़े ही दिनोंतक भाईको सिंहासनसे वंचित रख सका। इज्यास्लाव भागकर जर्मन-सम्राट् और रोमके पोपके पास मदद मांगने गया, और अंतमें पोलोंकी मददसे उसने फिर अपने सिंहासनको प्राप्त किया, लेकिन वह थोड़े ही समय बाद अपने भतीजोंसे लड़ते हुये मारा गया।

यारोस्लावके पौत्रोंमें भी बराबर संघर्ष जारी रहा—कभी कोई किसीको भगाता और कभी कोई फिरसे अपने राज्यको प्राप्त करता। आपसकी लड़ाई और पोलोवत्सियोंके आक्रमणोंसे देशकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। इसीलिये १०९७ ई० में कुछ प्रभावशाली राजुलोंने ल्यूबेकमें जमा होकर सोचा—"हम क्यों रूस-भूमिको नष्ट कर रहे हैं?" उन्होंने कहा—"हम आपसमें एक दूसरेके साथ विश्वासघात करनेका उपाय सोच रहे हैं। पोलोवत्सी हमारे देशका तहस-नहस करते इस बातसे प्रसन्न है, कि हम आपसमें लड़ रहे हैं। आओ, आजसे हम मेलसे रहें।" उन्होंने अंतमें यह निश्चय किया, कि हरएक राजुल अपने पैतृक राज्यको अपने पास रक्खे। अब कियेफ इज्यास्लावके पुत्र स्व्यातो-पोल्कके हाथमें रहा।

१०. स्व्यातोपोल्क II, इज्यास्लाव-पुत्र

जब एक दूसरेके हित परस्परविरोधी हों, तो इस तरहके भावुकतापूर्ण आदर्शवादी फैसले देर तक कैसे माने जा सकते थे? हमने भिन्न-भिन्न देशोंमें ऐसे अवसरोंपर राजुलों और राजाओंकी परिषदें होतीं, और उन्हें अच्छे निर्णयों पर पहुंचते देखा है। पर आर्थिक स्वार्थोंकी चट्टानोंके ऊपर उनके चकनाचूर होते भी देर नहीं लगती। स्व्यातोपोल्कको कियेफका अधिकार मिला और उसके चचेरे भाई व्लादिमिरको उसके पिता व्सेवोलदका पेरेयास्लाव राज्य मिला।

११. व्लादिमिर मनोमाख, व्सेवोलद-पुत्र (१११३-२५ ई०)

व्लादिरमिर विजन्तीन-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख का धेवता था। इस सम्बन्धका उसे अभिमान भी था, इसीलिये वह व्लादिमिर मनोमाख (एक-राजा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। परिषद्के उठते देर नहीं हुई, कि फिर राजुलोंमें झगड़ा शुरू हो गया। स्व्यातोपोल्कने अपने एक राजुल भाई वासिल्कोको धोखेसे पकड़कर उसके प्रतिद्वंद्वी दाविद ईगर-पुत्रके हाथमें दे दिया, जिसने उसे अन्धा करके जेलमें डाल वासिल्कोके नगरोंपर अधिकार कर लिया। इसपर व्लादिमिर मनोमाखने दूसरे राजुलोंका नेतृत्व करके वासिल्कोके छुड़ानेके लिये आक्रमण कर उसे मुक्त कर दिया। ११०० ई० में राजुलोंकी दूसरी परिषद् हुई, जिसमें उन्होंने दाविदको व्लादिमिरके सिंहासनसे वंचित कर दिया। आपसी संघर्षके समय पोलोवत्सियोंकी खूब बन आई, और वह रूसकी भूमिमें बहुत भीतरतक लूट-मार करने लगे। परिषद्में मनोमाखने मिलकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान करनेका प्रस्ताव किया, जिसे मानकर सभी रूसी राजुलोंने व्लादिमिर मनोमाखके नेतृत्वमें पोलोवत्सीके ऊपर चढ़ाई की। सामूहिक शक्तिके सामने पोलोवत्सी बुरी तरहसे हारे, और विजेता रूस ढोरों, घोड़ों, ऊंटों, लूटके माल तथा बन्दियोंके साथ लौटे। ११११ ई०में उन्होंने फिर एक अभियान किया, जिसमें वह पहलेसे भी अधिक सफल रहे।

स्व्यातोस्लाव १११३ ई० मे मरा, उसके बाद ही कियेफमें विद्रोह उठ खड़ा हुआ, जो नगरसे दीहातमें फैलने लगा। साधरण जनताके इस विद्रोहका कारण बायरों और सूदखोरोंका अत्याचार था। विद्रोहियोंने शहरमें उनके घरोंको लूटकर नष्ट-भ्रष्ट किया। इसके कारण बायर, महन्त और छोटे-मोटे सामन्त डरने लगे। कियेफके धनियोने व्लादिमिर मनोमाखके पास संदेश भेजा—"आओ राजुल, कियेफमें। अगर तुम नही आओगे, तो यह समझ रक्खो, कि और भी बहुत बुरी बातें होंगी—साधारण लोग बायरो और मठोको तग करेंगे।"

व्लादिमिरने अपने अनुचरोसहित आकर विद्रोहको दबा दिया, लेकिन केवल बलपूर्वक दबानेसे काम नही चल सकता था, इसलिये उसने जनसाधारणके ऊपर होने अत्याचारोंको भी कम किया। कियेफ ले लेनेके बाद व्लादिमिरने देशको और अधिक छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना चाहा, और दूसरे राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। जो नही मानते, थे, उन्हे उनके नगरोंसे वचित करनेकी उसमे क्षमता भी थी, इसलिये सभी राजुलोंने उसे अपने ऊपर माना। व्लादिमिरने एक बार फिर अपने पुरखोंके वैभवको स्थापित कर दिया। युरोपके दरबारोंमे भी व्लादिमिरकी बडी धाक थी। ग्रीक-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख उसका नाना ही था। उसकी एक पोती एक ग्रीक राजकुमारसे ब्याही थी। व्लादिमिरकी बहिन जर्मन-सम्राट्से ब्याही थी, और व्लादिमिर स्वयं इंगलिश-राजाका दामाद था। उस समय विजन्तीन-राज्यमें जो गृह-कलह चल रहा था, उसमें भी उसने दखल दिया। व्लादिमिरकी सेना दन्यूबके किनारेतक पहुंची, और वहा अपने दावेको प्राचीन रूस-भूमि (इस्माईल) पर स्थापित किया।

व्लादिमिर बडा ही निर्भीक और बहादुर पुरुष था। उसने अपने पुत्रोंको फटकारते हुए एक बार लिखा था—"अपनी जान बचानेके लिये शत्रुके सामनेसे मैं कभी नहीं भागा और खतरेका सदा निर्भयतापूर्वक सामना करता था। बच्चो, न तुम सेनासे डरो और न पशुसे। तुम्हारा काम पुरुषोचित होना चाहिये।...मैंने रात या दिन, सर्दी या गर्मी कभी अपनेको आराम लेने नही दिया।" वह शिकारका बड़ा शौकीन था, जिसमे कई मर्तबे उसने अपनेको खतरेमें डाला। दो मर्तबे जंगली बैलने उसे अपनी सींगपर उठा लिया, एक बार हरिनने सींगसे घायल किया, एक बार एक जगली सूअरने उसकी बगलसे लटकती तलवारको तोड़ दिया, एक भालूने उसके कपड़ोंको फाड़ डाला और एक भयंकर जानवरने एक बार हमला करके उसे और उसके घोड़ेको गिरा दिया।

व्लादिमिर केवल एक निर्भीक योद्धा ही नही बल्कि शिक्षित पुरुष भी था। राजपरिवार-में शिक्षा और संस्कृतिका अधिक प्रसार होनेसे उसे भी शिक्षित होना ही था। उसका पिता व्सेवोलद एक शिक्षित व्यक्ति था, जो पांच विदेशी भाषाओंको जानता था। स्वयं सुशिक्षित व्लादिमिरने विद्याके महत्त्वको दिखलाते हुए एक बार अपने पुत्रोंको लिखा था—"जो तुम जानते हो, उसे न भूलो, और जो नही जानते, उसे पढ़ो।" वह बड़ा स्वाध्यायप्रेमी था। अपनी सैनिक यात्राओंमें भी वह सदा अपने पास पुस्तकें रखता था। उसने "बच्चोंकी शिक्षा"के नामसे एक दिलचस्प पुस्तक लिखी थी।

व्लादिमिर कियेफ-रूसके शासनकी अन्तिम चकाचौंध करनेवाली ज्योति था। देशमें जो बिखराव प्रारम्भ हो गया था, उसे व्लादिमिर थोड़े ही समयतक रोक सका। उसके मरते ही फिर रूस-भूमि अनेक छोटी-छोटी रियासतोंमें बंट गई, जगह-जगह स्वतंत्र राजुल शासन करने लगे। इनमेंसे कुछ महत्त्वपूर्ण रियासतें थीं—कियेफ, चेरनीगोफ, गालिच, स्मोलेन्स्क, पोलोत्स्क, तुरोफ-पिन्स्क, रोस्तोफ-सुज्दल, र्याजन्, नवोगोरद और व्लादिमिर-वोल्हुन्स्क। ये सभी राजुल स्व्यातोस्लाव-पुत्र व्लादिमिरके वंशज थे। कियेफ अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता था, इसलिये वह राजुलोंकी छीना-झपटीका बराबर अखाड़ा बना रहा। सैनिक जीवनसे अनभ्यस्त विलासी राजुल अब कियेफका कोई मान नहीं रखते थे। जहां व्लादिमिर मनोमाख अपने घोड़े, बाज और रसोईका भी काम

अपने नौकरोंपर न छोड़ अपने हाथों करनेके लिये तैयार रहता, वहा इन राजुलोंका जीवन आरामपसंदीका था। इन्ही बातोंके कारण राजुलोकी शक्ति भी कम हो गई, और धनी बायर अब राजुलोंको अपनी बात माननेके लिये मजबूर कर सकते थे, इसीलिये हर बातमे वह उनकी सलाह लेते थे। राजुल अगर कोई बात अपने योद्धाओंकी सम्मति बिना करते, तो वह जवाब देते— "राजुल, तूने हमारी रायके बिना यह निश्चय किया, इसलिये हम तेरे साथ नहीं जायेंगे।" इस समय पुराने समयकी प्रभावशालिनी संस्था 'वेचे' (पचायत) का भी महत्त्व बढ गया था— वेचे नागरिकोकी पंचायत थी, जिसपर बायरों और धनी नागरिकोंका भारी प्रभाव था। जब किसी बातका निर्णय करना होता, तो घंटा बजाकर या चिल्लाकर नागरिकोंको वेचे (सभा) के लिये जमा किया जाता। अगर वेचे प्रस्तावको स्वीकार करती, तो लोग चिल्लाकर कहते— "हम सब चलेंगे और हमारे बच्चे भी।" लेकिन कभी-कभी नगरके लोग राजुलकी लड़ाईमे शामिल नही होना चाहते, तब कहते—"राजुल, मेल करो, नही तो अपनी विपता आप संभालो।" इस प्रकार १२ वी शताब्दीमें कोई राजुल वेचेकी रायके बिना किसी शत्रुके साथ युद्धसे अपनी प्रतिरक्षा करनेकी हिम्मत नही रखता था। राजुलके सिंहासनपर बैठनेके समय वेचे पहिले उससे अपनी शर्त्तें मनवाती। ऐसे भी अवसर आये, जब कि नापसन्द होनेपर वेचेने राजुलको निकाल बाहर किया और किसी दूसरे राजकुमारको यह कहकर निमन्त्रित किया—"आ राजुल, हम तुझे चाहते हैं।"

उस समय एक तरफ वेचेका अधिकार बढ़नेसे बायरों और धनिक नागरिकोंके हाथोंमें अधिक शक्ति आ गई थी, तो दूसरी तरफ बाहरी शत्रुओंसे अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिये रूसमें कोई मजबूत संगठित शक्ति नहीं रह गई थी। इसी समयकी स्थितिमें एक अज्ञात कवि ने "ईगर-सेना-गाथा" लिखी थी।

ईगर-सेना-गाथा—कालासागरके उत्तर एक मगोलायित घुमंतू कबीला पोलोवत्सी ९वीं-१०वी शताब्दी में रहता था। कियेफ-रूसोंके साथ इसका बहुत दिनोंतक संघर्ष रहा। रूसी भाषाका आदिकाव्य "ईगर-सेना-गाथा" इन्हीं संघर्षोंके संबंधमें लिखा गया है। पोलोवत्सी इतने प्रबल थे, कि रूस उनसे अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ थे, जिसका एक कारण यह भी था कि, रूस स्वय बहुतसे छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बंटे थे, जिनमें आपसमें बराबर लड़ाई होती रहती थी। पोलोवत्सी जब हमला करने आते, तो काफी प्रतिरोध नही कर सकते थे। इन युद्धोंका सबसे ज्यादा सत्यानाशी प्रभाव गांवोके किसानों-पर पड़ता था। "सभी नगर और गांव निर्जन हो गये थे। हम उन खेतोंपरसे गुजरे, जिनमें कभी घोड़ो और ढोरोंके झुंड तथा भेड़ोंके गल्ले चरा करते थे। लेकिन, वहां सभी चीजें वीरान पड़ी थीं। अनाजके खेतोंमें जंगल जम गया था, जिसमें वन्य पशु रहा करते थे।" पुराने इतिहास-लेखकका कथन पोलोवत्सी-आक्रमणोके असरको बतलाता है। पोलोवत्सी भारी संख्यामें रूसोंको बंदी बनाकर अपने साथ ले जाते थे। "आफतके मारे, भूख-प्याससे काले पड़े वे अभागे अपरिचित देशकी ओर वस्त्रहीन नंगे पैर कदम बढा रहे थे। उनके पैर कांटोंसे छिल गये थे। आंखोंमें आंसू भरकर वह एक दूसरेसे कहते थे—"मैं अमुक और अमुक नगरका हूं।" दूसरा जवाब देता—"मैं अमुक और अमुक दीहातका हूं।" रूसी भाषाके इस कलापूर्ण अमर लघु-काव्यमें राजकुमार ईगरका पोलोवत्सी घुमंतुओंके साथके संघर्षका वर्णन है। १२ वीं शताब्दीके अंतमें किसी अज्ञात लेखकने इसे लिखा था। सेवेर्स्क राजुलोंने तंग आकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान किया, जिसका नेता राजुल ईगर स्व्यातोस्लाव-पुत्र था। जब रूस-राजुलोंसे उसने अपने साथ आ मिलनेके लिये कहा, तो सेवेर्स्क राजकुमारोंने इन्कार कर दिया। पीछे उन्होंने अपना स्वतंत्र अभियान किया, जिसमें वह बुरी तरहसे हारे, ईगर बंदी हुआ। कविने रूस-भूमिके महान् वीरके तौरपर ईगरका चित्रण किया है—"सैनिक उमंगोंसे भरे उसने अपने सैनिकोंका नेतृत्व करते हुये रूस-भूमिकी रक्षाके लिये पोलोवत्सियोंके ऊपर अभियान किया।" ईगरने अपने सैनिकोंसे कहा—"भाइयो और योद्धाओ! बंदी बननेसे मर जाना अच्छा है। मैं चाहता हूं अपने भालेको पोलोवत्सी मैदानके छोरसे तोड़ डालूं। रूसजन! मैं चाहता हूं, तुम्हारे साथ अपने सिरको गिरा

आनाकानी नहीं करता था, शायद इसीलिये उसका नाम "दोल्गोरुकी"–दीर्घबाहू पड़ा। जहां पीछे मास्को नगर बसा, वहीं बायर कुचकाका गांव था। यूरीने उस गांवको ले मास्को नदीके किनारे वही अपने लिये एक महल बनाया, जहांपर ११४७ ई०में उसने अपने मित्र चेर्नीगोफके राजुलका स्वागत किया था। यह गांव सुज्दल और चेर्नीगोफ दोनों रियासतोंकी सीमापर था। यूरीने पहले मास्कोके चारोंतरफ एक लकड़ीकी दीवार बनवाई, जिसे ११५६ ई० में दुर्गके रूपमे परिणत कर दिया। यूरी अपने समयका सबसे अधिक शक्तिशाली रूसी राजुल था। उसने वोल्गा-तटवाले बुल्गारोको कई बार लड़ाईमे हराया और पुराने नगर नवोगोरदको अपने राज्यमें मिला लिया। कियेफपर भी अधिकार करके कियेफ-राजुल बनकर वह ११५७ ई० में मरा।

१३. अन्द्रेइ बगोल्युवोव्स्की, यूरी-पुत्र (११५७–७४ ई०)

यूरीके पुत्र अन्द्रेइके शासनकालमें रोस्तोफ-सुज्दलकी शक्ति और बढी। उसने पडोसके कितने ही राजुलोंको अपना सामंत बनाया। ११६९ ई० मे उसने अपने सामन्तोकी सेनाके साथ कियेफ-पर आक्रमण किया और तीन दिनोंतक उस प्राचीन नगरीको लूटा। अगले साल अन्द्रेइने नवोगोरदके ऊपर अपनी सेना भेजी, लेकिन नवोग्रादियोंने उसे बहुत हानि उठाकर खाली हाथ लौटनेके लिये मजबूर किया। नवोगोरद अन्नके लिये सुज्दलपर निर्भर था। अन्द्रेइने वहा अन्नका जाना रोक दिया, जिसके कारण नवोगोरद आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर हुआ। ११६९ ई० की लूट और ध्वंसलीलाके बाद कियेफ शताब्दियोंतक संभल नही सका, लेकिन सुज्दल-राज्यका नगर व्लादिमिर अन्द्रेइकी राजधानी बनकर खूब फलने-फूलने लगा। अन्द्रेइने अपनी नई राजधानीका निर्माण पश्चिमी युरोपके कलाकारों और वास्तु-शास्त्रियोंके परामर्शानुसार बड़े भव्यरूपमें किया। इसी समय व्लादिमिरमे प्रसिद्ध उपेन्स्की गिर्जा बनाया गया, जिसके चित्रोंमें पाश्चात्य कलाका प्रभाव दिखाई पड़ता है। व्लादिमिर नगरके पास बोगोल्युबोवो (भगवत्-प्रिय) उसकी दुर्गबद्ध जमींदारी थी, जहांपर अन्द्रेइ अक्सर रहा करता था; इसीलिये उसको "बोगोल्युबोव्स्की" कहा जाने लगा। वह बायरोंकी शक्तिको बढ़ते नही देखना चाहता था, इसीलिये उसने कुचका जैसे कितने ही बायरोंको मार भगाया और अपने दरबारियोंमें साधारण जनोंको रक्खा। लोग कहते थे—"राजुलकी जमींदारीमें घासके चप्पलमें घूमना बायरकी जमींदारीमें सुन्दर जूता पहनके घूमनेसे अच्छा है।" अन्द्रेइने जनसाधारणसे आये अपने दरबारियों और नगर-निवासियोंकी सहायताके आधारपर रूसी रियासतोंको संगठित करनेकी कोशिश की, लेकिन अभी उनके आर्थिक संबंध इतने दृढ़ नहीं थे, कि यह संगठन मजबूत होता। इसीलिये बायरोका उच्छेद करना उसके लिये संभव नहीं हुआ। तो भी बायरोंको वह बहुत असंतुष्ट कर चुका था। उन्होंने षड्यंत्र करके ११७४ ई० में बोगोल्युबोवोके प्रासादमें चुपकेसे घुसकर अन्द्रेइको मार डाला। इसके बाद भारी लूट-पाट मची। बायर बहुत नाराज थे। वह केवल अन्द्रेइकी हत्यासे ही संतुष्ट नहीं हुये। उन्होंने उसके भाइयोंको भी वंचित करके उसके भतीजोंको शासन करनेके लिये निमंत्रित किया। लेकिन व्लादिमिरके नागरिकों और अन्द्रेइके छोटे दर्जेके अनुचरोंने बायरोंकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। बायरोंने धमकाया—"हम व्लादिमिरको जलाकर खाक कर देंगे या वहां अपने पसद्निक (नगरपाल) अनुशासन करने के लिये भेजेंगे।" तो भी वह अपने मनोरथमें सफल नहीं हुये। नागरिको और साधारण जनताकी सहायतासे अंद्रेइका भाई व्सेवोलद यूरी-पुत्रने बायरोंको हराकर उन्हें अपनेको राजुल स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।

१४. व्सेवोलद, यूरी-पुत्र (११७६–१२१२ ई०)

व्लादिमिर (क्ल्याज्मातटी) राजधानी बननेके बाद अब रोस्तोफ-सुज्दल राज्यका नाम व्लादिमिर राज्य हो गया। व्सेवोलदने "व्लादिमिर-महाराजुल"की उपाधि धारण की। उसने नवोग्रादवालोंसे अपने पुत्रों और भतीजोंको शासकके तौरपर स्वीकर करवाया। स्मोलेन्स्कके राजुलोंने भी उसकी अधीनता स्वीकार की। र्याजानके न माननेपर राजुलको जेलमें डाल अपने पुत्रको वहां

ले जाकर बैठा दिया। जब लोगोंने इसका विरोध करना चाहा, तो उसने र्याज़नका बहुत तहस-नहस किया। उसकी इतनी तत्परता देखकर भी "ईगर-सेना-गाथा" के कविने व्सेवोलदके लिये कहा—

"महाराजुल व्सेवोलद अपनी नावोंके पतवारोंसे,
तू वोल्गाके पानीको बिखरा नहीं सकता,
और न अपने सैनिकोंके शिरस्त्राणोंसे दोनको उलीच सकता।"

वोल्गाके बुल्गार अब भी शक्तिशाली थे, जिनसे व्सेवोलदने कई लडाइयां लड़ीं। पोलोवत्सीके खिलाफ भी उनकी भूमिमे उसने एक बहुत बड़ा अभियान किया। व्सेवोलदने सुदूर गुरजी (जार्जिया) के राजाके साथ सबंध स्थापित किया और वहाके कारीगरोको बुलवाकर राजधानीमे द्मित्रोफ़ गिर्जा बनवाया। व्सेवोलद पिताकी तरह ही बायरोंसे घृणा करता था। अपने बहुतसे पुत्रोंके कारण लोगोंने व्सेवोलदका नाम "बोल्शोये ग्नेज़्दा" (भूरिशः कुलाय) रख दिया था। व्सेवोलदके मरनेके बाद उसके हर एक पुत्रको अलग-अलग ठकुराइयां मिली, जिनकी संख्या पुत्रोंके समय पाच और पौत्रोंके समय बारह हो गई। इनमे परिवारके ज्येष्ठ व्यक्तिको व्लादिमिर नगरका राज्य तथा "व्लादिमिर-महाराजुल" की उपाधि मिलती।

१५. यूरी व्सेवोलद-पुत्र (१२१२–१२३८ ई०)

व्सेवोलदके मरनेके बाद व्लादिमिरके राजुलोंने ओका और मध्य-वोल्गाके बीचमें रहनेवाले रूसी-भिन्न जातियोंकी भूमिको हड़पना शुरू किया। केवल मोर्दावी कितने ही समयतक और अपनी स्वतंत्रता कायम रख सके। महाराजुल यूरीने १२२१ ई०में ओका और वोल्गा नादियोंके सगमपर निज़्नीनवो-गोरद (निचला नवोगोरद, वर्त्तमान गोर्की) नगर और दुर्गकी स्थापना की। यहांसे रूसी राजुल मोर्दावियोंकी भूमिमें लूट-मार करते थे। मोर्दावियोंने अपने राजा पुरगसके नेतृत्वमें जबर्दस्त प्रतिरोध किया और एक बार उन्होंने निज़्नीनवोगोरदपर आक्रमण करके उसकी बाहरी बस्तियोंको जला दिया।

यूरीको प्रभुता दिखलानेका अब मौका नहीं रह गया था, क्योंकि गद्दीपर बैठनेके समय (१२१२ई०) जो मंगोल तूफान सुदूर चीनमें अपनी प्रलयलीला मचा रहा था, वह अब उसके घरमें पहुंच गया। यूरी अपनी सेनाके साथ वोल्गाके उत्तरमें सित नदीके करीब वोल्गाकी एक शाखाके किनारे एक बड़े मैदानमें पड़ा हुआ था। उसको खबर मिली, कि बुल्गार राजधानीको मंगोल नष्ट-भ्रष्ट कर चुके। मंगोलोंका मुकाबिला करनेके लिये रूसी राजुलोंका एक होना आवश्यक था, जिसके लिये वह तैयार नहीं थे। र्याज़न मंगोलोंका पहला शिकार होना था, जिसके बाद यूरीकी बारी थी, लेकिन यूरीने र्या-ज़नको सहायता देनेसे इन्कार कर दिया। मगोलोंने र्याजनको दखलकर उसको भूमिसात् कर दिया। फिर व्लादिमिरपर आक्रमण करके उसे नष्टकर आसपासकी ठकुराइयोके लोगोंको अपनी तलवारोंसे घासकी तरह काट डाला। एक महीनेके भीतर उन्होंने १४ नगरोंको दखल किया और जलाया, मास्को भी जिनमेंसे एक था। अब (१२३८ ई०) में बा-तूके मंगोल सित नदीके पासवाले मैदानमें अवस्थित यूरीकी सेनापर पड़े। यूरी लड़ाईमें काम आया। बा-तू नवोगोरदकी भूमिपर भी बढ़ना चाहता था, लेकिन रास्तेके जंगलों और दलदलोंने उसे आगे बढने नहीं दिया। इसके बाद मंगोलोंने कियेफ और सुदूर पश्चिममें गालिच-वोलोह्रुस्कके राज्यको लेते पोलन्द तथा पूर्वी युरोपके और भी कितने ही राज्योंका ध्वंस किया। रूसियोंके ऊपर अब मंगोलोंका कठोर शासन स्थापित हो गया, लेकिन मंगोल जानते थे, कि सीधे शासन करनेसे किसी रूसी राजुलद्वारा शासन करना बेहतर है, इसलिये उन्होंने यूरीके भाई यारोस्लावको व्लादिमिरका महाराजुल मान लिया।

१६. यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्र (१२३८–४६ ई०)

महाराज़ुलको नियुक्त करनेपर ही संतोष न कर बा-तूने रूसके मुख्य-मुख्य नगरोंमें अपने नगरपाल

(वसकाकी) नियुक्त किये। मंगोल कर उगाहनेमें कितनी निर्दयता करते थे, इसे एक जनगीत बतलाता है—

यदि किसी आदमीके पास पैसा नहीं,
तो उससे वह उसका बच्चा लेते।
यदि आदमीके बच्चे न होते,
तो उससे उसकी बीबी लेते,
यदि आदमीके गृहिणी न होती,
तो उससे वह उसके शरीरको ही लेते।

एक समकालीन लेखक मंगोल अत्याचारके बारेमें लिखता है:—"हमारे पुरखो और भाइयोंके खूनसे भूमि पानीकी तरह भींग गई, हमारे बहुतसे भाई और बच्चे बंदी बनाकर (तारतार) ले गये, हमारे गांवोमे जगल लग गये, हमारी कीर्त्ति धूमिल हो गई, हमारा सौंदर्य नष्ट हो गया, हमारा धन गैरोकी संपत्ति बना, हमारे श्रमका फल काफिरोंके हाथमें चला गया, हमारा देश विदेशियोके हाथमे पड़ गया।" ऐसी स्थितिमें यदि रूसमें विद्या और संस्कृतिका ह्रास हुआ, तो कोई आश्चर्य नहीं। रूसी नगरोंकी होली मचाते समय मंगोलोंने प्राचीन रूसी साहित्य और कलाकी भी होली मचा दी।

लेकिन सब तरहसे रूसियोको निरीह और निर्बल बनाते हुये भी मंगोलोंने उनके हाथमें एक बड़ा हथियार दे दिया था, वह था व्लामिदिरके महाराजुलोंको दूसरे रूसी राजुलोंके ऊपर मानना। यह काम उन्होंने किसी परमार्थ बुद्धिसे नहीं किया था, बल्कि इस प्रकार समयपर नियमपूर्वक करकी भारी राशिको प्राप्त करना उनके लिये बहुत आसान हो गया था। मंगोल खान अपने इसी स्वार्थके कारण व्लादिमिरके शासकको "व्लादिमिर और सारे रूसका महाराजुल" स्वीकार करते हुये उसे **यारलिक** (अधिकार-पत्र) देते थे। कर उगाहनेके लिये जो एकता कायम हुई थी, वह मंगोल-शक्तिके क्षीण होनेके समय एक सबल राजनीतिक शक्तिमें परिणत हो गई।

नवोगोरद—पूर्वी स्लाव अभी भी जनयुगीन समाजहीमें थे, जबकि कियेफ-रूसकी स्थापना हुई थी। वस्तुत: भिन्न-भिन्न परिस्थितियोंके कारण पूर्वी स्लावोंका सामाजिक विकास अपने पश्चिमी पड़ोसियोंके बराबर नहीं हो पाया था। इसमें अपने शक पूर्वजोंके समयसे ही चली आती उनकी स्वच्छद लड़ाकू वृत्ति भी काम कर रही थी। वह पशुपाल-जीवनको पूरीतौरसे छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। यद्यपि ईसवी-सन्‌के आरंभ और बादकी चार शताब्दियोंमें हूणोके पहुंचनेसे पहिले ही निम्न द्नियेपर आदि प्रदेशोंमें स्लावोंने नागरिक-जीवन स्वीकार कर लिया था, और महाराजुल व्लादिमिरके ईसाई-धर्म स्वीकार करनेसे बहुत पहले ही ग्रीक संस्कृतिसे उनके पूर्वज अंतोंका घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया था, लेकिन अभी अधिकांश रूस जनयुगके मनोभावोको ही अपनाये हुये था। रूसी भाषाका हमारी संस्कृत और प्राकृत भाषाकी तरह संश्लेषणात्मक रह जाना—शब्द और धातुकी रूपावलियोंका संस्कृत जैसे चलना—भी शायद उसी सामाजिक मंद परिवर्तनके कारण हुआ। हमारे यहा ईसाकी ६ठी-७वीं शताब्दीमें भाषा जहा श्लिष्ट रूपको छोड़, विश्लिष्ट बन चुकी थी, वहां रूसी भाषा आज भी बहुत-कुछ श्लिष्ट है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि रूसके सामाजिक संगठनमें जनयुगीन जनतान्त्रिकताके भाव बहुत पीछेतक काम करते रहे। कियेफ रूसकी शक्तिके निर्बल होनेपर छोटे-छोटे राजुलोंके साथ **वेचे**का प्रभाव भी इसी बातको बतलाता है। जहां दूसरे राज्योंमें यह साधारण जनोंकी जनतांत्रिकता अपने राजुलोंको अधिक स्वछंदता न देनेका कारण बनी, वहां नवोगोरदके नागरिकोमें इसने आभिजात्यवर्गके गणराज्यका रूप लिया और समय-समयपर होनेवाला वहांका राजुल पूरी तौरसे गणसभा—वेचे—के हाथमें था। नवोगोरदकी परिस्थिति ही ऐसी थी, जिसने उसे एक गणतांत्रिक नगरके रूपमे विकसित होने दिया। यह स्लावोंकी एक बहुत पुरानी नगरी वोल्गाके उद्गमके पास इल्मन सरोवरसे पूर्वीय वणिक्पथके ऊपर बसी हुई थी। वहां हाट और मेलेका मैदान था। इसी मैदानमें नगरकी **वेचे** बैठा करती थी। पासके मुहल्लेमें मुख्यत: व्यापारी, शिल्पकार और मजदूर बसते थे। नगरके पूर्वकी ओर—सोफिइस्कया—में एक दुर्ग था, जिसमें प्रसिद्ध सोफिया गिर्जा खड़ा था। यहीं नवोगोरदका बड़ा पादरी (बिशप) रहता था।

नवोगोरद नगरसे नवोगोरद-राज्य आरभ हो जाता था, जो ओनेगा और लदोगा सरोवरों एवं फिनलन्दकी खाडीतक फैला हुआ था। नवोगोरदके बायरों और व्यापारियोके जहा-तहा गांव और खेतियां (कर्मान्त) थी। उन्होंने पूरबमें उरालकी पहाड़ियोंतककी आदिम जातियोको अपने अधीन कर रक्खा था, जिनसे वह करके रूपमें बहुमूल्य समूरी छालें और चादी वसूल करते थे। व्यापार, जंगल और शिकारकी उपज नवोगोरदकी समृद्धिके कारण थे। अनाजके लिये उन्हे अपने पडोसी सुज्दलपर निर्भर रहना पडता था। नवोगोरदका संबंध बाल्तिक समुद्रके वणिक्पथसे था, जिसके जरिये वह युरोपके साथ व्यापार करते थे। जर्मन और स्वीड् व्यापारी भी इस व्यापारमे उनके सहभागी थे। वर्षमें दो बार जर्मन "अतिथि" व्यापारके लिये नवोगोरद आया करते थे। गर्मियोके "अतिथि" फिनलन्द खाडीसे नेवा नदी होकर नाव द्वारा आते, और जाड़ोके "अतिथि" बाल्तिक तट (लिवोनिया) से बर्फपर फिसलनेवाली बिना पहिये की गाडियो (स्लेज) द्वारा आते। उत्तरी युरोप और नवोगोरदसे व्यापार करनेवाली जर्मन नगरियों को १४ वीं सदीमे हंसे कहा जाता था। नवोगोरदके व्यापारी रूसकी चीजोंको इन हंसीय नगरियोंके माध्यमद्वारा जहां युरोपमे पहुचाते, वहा स्वय युरोपीय वस्तुओको उनसे लेकर वह रूसके नगरोंमें फैलाते। शिकारपर जीवन बितानेवाली सुदूर उत्तरकी नेन्सी नामसे प्रसिद्ध जातियोंसे (जिन्हें नवोगोरदीय लोग समोयित कहते थे) कीमती समूर मिलते थे। समोयित अधिक उत्तरके तुंद्रा-क्षेत्रमें रहते थे। उनमे दक्षिण तायगा भूमिमें कोमी शिकारी रहते, उत्तरी उराल की ढलानों पर युग्रा कहे जानेवाले लोग रहते थे---जो कि आजकलकी मान्सी (वोगुल) और खान्ती (ओस्तियाक) जातियां हैं। इनकी भूमि (जिसे बुल्गार "अंधकारभूमि" कहते थे), अपने समूरी जानवरोंके लिये प्रसिद्ध थी। तुंद्रावाले लोगोंकी मुख्य जीविका थी बारहसिंगा पालना, जल-पक्षियों और ध्रुवकक्षीय लोमड़ियों का शिकार करना। इन पिछडी हुई जातियोंके निरंकुश राजा थे नवोगोरदीय बायर और व्यापारी। उनके अत्याचारोंसे कभी-कभी मजबूर होकर वह विद्रोह भी कर बैठती थीं। ११८७ ई० में युग्रा लोगोंने नवोगोरदके कर उगाहनेवालेको मार डाला, जिसपर कई सालतक नवोगोरदसे उनपर सैनिक अभि-यान भेजे जाते रहे।

नवोगोरद नगरका सबसे प्रभुताशाली वर्ग था बायरोका। सबसे अच्छी भूमि और विजित क्षेत्र इनके हाथमें थे, जिनमें वह अपने अर्धदासों और किसानोंकी मददसे अधिया (पोलोविना) पर खेती कराते थे। बायर अपने असामियोंको गांव छोड़कर जाने नहीं देते थे। हस्तशिल्प भी यहांपर बहुत उन्नत था, लेकिन शिल्पकार भी बायरों और व्यापारियोंके अधीन थे। गरीब मजूरोंका काम था माल ढोना और नावें खेना। इस प्रकार इस गणराज्यकी संपत्तिके मालिक थे बायर और व्यापारी। काले (चोर्नियें) गरीब लोग उनके लिये अपना जीवन और श्रम भेंट करते थे। रूसी नगरोंकी तरह नवोगोरदमें भी एक राजुल रहता था, लेकिन यहांकी वेचेकी शक्ति सबसे अधिक थी। १२ वी शताब्दी के प्रथम पादमें बायरों और व्यापारियोंद्वारा नियंत्रित वेचेने इस बातका रवाज किया, कि वहां के सभी मुख्य-आफिसर नवोगोरदकी बायरोमेंसे चुने जायें। व्लादिमिर मनोमाखके पौत्र व्सेवोलदके राजुल होनेके समय ११३६ ई० में वेचेने विद्रोह कर दिया, क्योंकि व्सेवोलद कुछ अधिक स्वतंत्रतासे काम लेना चाहता था। विद्रोहियोंने दो महीनेतक व्सेवोलद और उसके परिवारको बंदी रख फिर मुक्त कर दिया। तबसे वेचेकी शक्ति सर्वोपरि हो गई। यद्यपि नवोगोरद अपने यहां सदा एक राजुल रखता था, लेकिन जब कभी भी राजुल कुछ स्वतंत्रता दिखलाने लगता, तो उसे बोरिया-बिस्तर बांधके निकल जाना पड़ता। वेचेके सन्निपातके लिये लोगोंको घंटे बजाकर सूचना दी जाती, सभी लोग मैदानमें इकट्ठे होते। कभी-कभी एक ही समय वेचेकी बैठक तोरगोवया और सोफिस्कया दोनों जगहोंपर होती, दोनोंके निर्णय कभी-कभी एक दूसरेसे भिन्न होते, ऐसी अवस्थामें दोनों वेचेका वोलखोफ पुलके आरपार झगड़ा होता। इस प्रकार ज़ारके निरंकुश शासनके स्थापित होनेसे पहले ही नवोगोरदमें एक सबल प्रजातांत्रिक सस्थाका शासन था।

जर्मन व्यापारी बाल्तिकतटके रास्ते व्यापार करनेके लिये नवोगोरद आते थे। १२वीं शताब्दी-में उन्होंने पश्चिमी द्विना नदीके मुहानेपर अपनी एक व्यापारिक बस्ती स्थापित की, जो कि दूसरेकी

भूमिपर अनधिकार-चेष्टा थी। उन्होंने व्यापारके साथ-साथ ईसाई-धर्मके प्रचारका भी आड़ लिया जिसमें उन्हें रोमके पोपकी सहायता प्राप्त थी। लोग पूर्वजोंकी पुरानी संस्कृतिके प्रतीक अपने धर्मको छोड़कर ईसाई बननेके लिये तैयार नही थे, इसपर पोपने उनके विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दिया। उत्तरी जर्मन व्यापारियोंने लिवोनिया (बाल्तिकतट) के विजय करनेका इसे अच्छा मौका देख इसके लिये जहाज दिये। बड़ा पादरी नियुक्त होकर जब अपने धर्मयोद्धाओके साथ लिवोनिया आया, तो वहाके लोगोंने कहा—"अपनी सेना लौटा दो। हमें तलवारसे नहीं, बल्कि शब्दोंसे समझाओ।" लेकिन वह तो तलवारसे ईसाई-धर्मका प्रचार करने आये थे। उनके पास देशियोंकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हथियार थे। लड़ाईमें उन्होंने लिवोनियावालोंको हराया, लेकिन बड़े पादरीका घोड़ा उसे शत्रुके दलमें ले गया, जहा प्रथम बिशपको धर्म-प्रचार करते हुये शहीद बननेका मौका मिला। जर्मनोंने सारे देशको लूट-मारकर बर्बाद कर दिया। नये बिशप अलबर्टने पश्चिमी द्विनाके मुहानेके पास १२०१ ई० में रीगा नगरको बसाया। वहा जर्मन उपनिवेशियोंको बसाकर व्यापार और धर्म-प्रचार किया जाने लगा। अगले साल (१२०२ ई० में) खड्गवीरके नामसे पोपने एक नई धर्मसेना संगठित करनेकी आज्ञा प्रदान की। यह वीर अब खुलकर देश-विजय करने लगे। लोग विरोध करते, तो वह ग्रामों और नगरोंको जला देते, सभी पुरुषोंको मार डालते और स्त्रियों और बच्चोंको दास बनाकर बेंच देते। लोग भागकर जंगलोंमें चले जाते, जहां यह धर्मसैनिक उनको शिकार करते पकड़ते। एक जर्मन सम-सामयिक लेखकके अनुसार—"वह उन्हें पीटते हुये गांवमें ले आते। भगोड़ोंका पीछा करते रास्तोंसे होते उनके घरोंमें घुस उन्हें बाहर घसीटकर मार डालते। जो अपनी छतों या लकड़ीके टालोंपर चढ़कर आत्मरक्षाका प्रयत्न करते, उन्हें पकड़कर काट डालते। गांवसे भागते हुये लोगोंको उनके खेतों में भी पीछा करते। वहांसे यदि पवित्र देववनोंकी तरफ भागते, तो वह देववृक्ष उनके खूनसे लाल हो जाते। ....पांचसौसे अधिक आदमी लड़ाईके स्थानमें और बहुतसे खेतोंमें, रास्तोंपर तथा दूसरी जगहोंमें मारे गये।" ईसाके धर्मके प्रचारका कैसा सुंदर तरीका था!

जर्मन धर्मयोद्धा इसलिये भी सफल हो रहे थे, क्योंकि लिवोनीय लोगोंमें एकता नही थी। बिशप अलबर्टके मरनेके बाद लिवोनी धर्मयोद्धाओंको कई बार बुरी तरहसे हार खानी पड़ी, जिससे उनका धार्मिक उत्साह कम होने लगा। इसी समय एक दूसरी जर्मन धर्मसेना—त्युतोनिक आकर मौजूद हुई। यह धर्मसेना १२वीं शताब्दीमें फिलस्तीनमें मुसलमानोंके साथ लड़नेके लिये स्थापित की गई थी, जिसे पोपने इस नये धर्मक्षेत्रमें भेज दिया। जब लिथुवानी जातिके प्रसी कबीलोंकी भूमि—नीमेन और बिस्तुला नदियोंके द्वाबे—में इन त्युतोनिक धर्मयोद्धाओंके पैर पड़े, तो वहा कार्ल मार्क्सके अनुसार—"१३वी शताब्दी के अन्तमें यह समृद्ध देश निर्जन भूमिमें बदल गया, गांव और जुते हुये खेतोकी जगह जगल और दलदल आ मौजूद हुये। लोगोंमेंसे कितने ही मार डाले गये, कितनोंको बदी बनाकर ले गये और बाकी लिथुवामें भागनेके लिये मजबूर हुये।"

१२३७ ई० मे लिवोनी खड्गवीर और त्युतोनिक धर्मसेना बाल्तिक प्रदेशको जीतनेके लिये एकताबद्ध हो गई।

१७. अलेक्सान्द्र नेव्स्की, यारोस्लाव-पुत्र (१२६३ ई०)

जर्मन धर्मयोद्धाओंके अतिरिक्त स्वीड व्यापारी भी नवोगोरदकी भूमिपर आंख गड़ाये हुये थे। जर्मन धर्मवीर बाल्तिक तटको दखल कर रहे थे, और स्वीड व्यापारी फिनलन्दकी खाड़ीपर हाथ साफ करना चाहते थे, जिसमें कि वह पूर्वी युरोपके व्यापारके एकमात्र स्वामी बन जायें। १२४० ई० में स्वीड राजा कौन्ट बर्गरके नेतृत्वमें नेवाके ऊपर स्वीडोंने आक्रमण किया, लेकिन नेवाके मुहानेपर उनके उतरते ही नवोगोरदके महाराजुल अलेक्सान्द्रने उनपर भीषण प्रहार किया। इस समयतक बा-तू खानका राज्य पूरी तौरसे स्थापित हो चुका था, और महाराजुल अलेक्सान्द्रने बा-तूकी कृपा प्राप्त कर ली थी। राजनीतिक चाल हीमें नहीं, बल्कि सैनिक कौशलमें भी अलेक्सान्द्र असाधारण पुरुष था। एक समकालीन लेखकके अनुसार—"विजय करते हुये वह अजेय था।" अलेक्सांद्रके नेतृत्वमें नवोगोरदके सैनिकोंने

अद्भुत वीरताका परिचय दिया। स्वीड पूरी तौरसे पराजित हुये और वह अपने जहाजोंपर बैठकर भाग निकले। नेवा-तटपर हुई इसी विजयके उपलक्षमें अलेक्सांद्रका नाम अलेक्सांद्र नेव्स्की पड गया। आज भी सोवियत रूसके दूसरे नम्बरके सबसे बड़े नगर लेनिनग्रादके प्रसिद्ध राजपथका नाम नेव्स्की है।

अलेक्सांद्रने और भी लडाइयां लड़ीं, लेकिन इसके पहले एक बार उसे वेचेका कोपभाजन हो नवो-गोरदसे निर्वासित होना पड़ा था। पर जब बाल्तिक-तटसे जर्मनोंने आक्रमण किया, तो वेचेने फिर उसे बुला लिया, और कई लडाइयोमें उसने जर्मनोंको बुरी तरहसे हराया, जिनमें ५ अप्रैल १२४२ ई० को लड़ी गई "बर्फकी लडाई" निर्णायक साबित हुई। नवोगोरदके लोगोंने पांच सौ जर्मन धर्मवीरोंको मारकर उन्हे सात मीलतक खदेड़ा और पचास बंदी बनाये। इस युद्धमे हारनेके बाद जर्मन वीरोंने फिर रूसी भूमिकी ओर हाथ बढानेकी हिम्मत नही की।

नवोगोरदवालोंने ही अपनेसे पश्चिम बाल्तिकके रास्तेपर प्स्कोफ नगर स्थापित किया था, जो १४वीं शताब्दीमें नवोगोरदसे स्वतत्र हो एक गणराजीय नगरमें परिणत हो गया। स्वतंत्र गणनगर होते हुये भी नवोगोरद और प्स्कोफके लोग अपनेको व्लादिमिर-महाराजुलके अधीन मानते थे। १४वीं शताब्दीके प्रथम पादमें व्लादिमिर-राज्यके भीतर एक और घरेलू संघर्ष त्वेर तथा मास्कोके राजुलोंके बीच शुरू हो गया। यह दोनों नगर ऐसी जगह स्थित थे, जहांपर मंगोल मुश्किलसे पहुच पाते थे, इसीलिये दूसरी जगहोंके भी कितने ही शरणार्थी यहां आकर बस गये थे, जिसकी वजहसे दोनों नगरोंका आर्थिक विकास बड़ी तेजीसे हुआ। त्वेर ऊपरी वोल्गा तथा उसकी शाखा त्वेरत्साके संगमके पास बसा हुआ था। नवो-गोरदसे वोल्गा होकर कास्पियनतक जानेवाले वणिक्पथको त्वेरसे होकर गुजरना पड़ता था। इसी व्यापारके कारण त्वेरके नागरिक बड़े समृद्धिशाली हो गये थे।

मास्को नगर वोल्गामें गिरनेवाली ओका नदीकी शाखा मास्क्वाके तटपर अवस्थित था। ऊपरी वोल्गासे ओकाकी ओर सीधा आनेवाला वणिक्पथ मास्कोकी भूमिसे गुजरता था। यहांसे निम्न-वोल्गाकी ओर भी आसानीसे जाया जा सकता था, साथ ही दोनका ऊपरी भाग नजदीक होनेके कारण अजोफ और कालासागर होते पूर्वी युरोपका वणिक्पथ भी यहांसे खुला हुआ था—क्रिमिया और कालासागरके तट-पर इतालीके व्यापारियोंने अपनी बहुतसी व्यापारिक बस्तियां बसा रक्खी थीं। इन्हीं कारणोंसे मास्को-को विकासका त्वेरसे भी अधिक सुभीता प्राप्त था।

ग. मास्को महाराजुल

१८. दानियल, अलेक्सान्द्र नेव्स्की-पुत्र (१२६३–१३०३ ई०)

१३वी शताब्दीके आरम्भमें मास्कोकी एक छोटीसी रियासत थी, जिसमें मास्को नगर तथा रूजा और ज्वेनीगोरदके दो और छोटे-छोटे कस्बे सम्मिलित थे। लेकिन अब उसपर अलेक्सान्द्रका पुत्र दानियल राज्य कर रहा था, जो अपने पिताकी तरह ही योग्य और महत्त्वाकाक्षी था। १३०१ ई० में उसने मास्क्वा और ओकाके संगमपर अवस्थित कलोम्ना नगरको ले लिया। १३०२ ई० में उसे पासके पेरेयास्लाव्ल राज्यका उत्तराधिकार मिला, जिसके कि अधीन पहिले मास्को था। अब मास्को ज्यादा बढ़ गया था, तो भी अभी वह त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का मुकाबिला नहीं कर सकता था, विशेष-कर इसलिये भी कि मंगोल खानने वहांके महाराजुल मिखाइल यारोस्लाव-पुत्रको १४ वीं शताब्दीके आरम्भमें ही "व्लादिमिर-महाराजुल" स्वीकार कर लिया था। किसी रूसी राजुलको अधिक शक्तिशाली न होने दिया जाये, इसके लिये मंगोल खानोंकी यह नीति थी, कि वह कभी एकका समर्थन करते और कभी दूसरेका। उज्बेक खानने व्लादिमिरके महाराजुलको अधिक शक्तिशाली देख मास्कोके राजुल यूरी दानियल-पुत्रका पक्ष लेना शुरू किया।

१९. यूरी III दानियल-पुत्र (१३०३–२५ ई०)

यूरीके ऊपर उज्बेक खानकी इतनी कृपा थी, कि उसने अपनी बहिनको यूरीसे ब्याह दिया और त्वेरके महाराजुलसे लड़नेके लिये मंगोल सेना साथ कर दी। उज्बेकखानको मुस्लिम इतिहासकार

पक्का मुसलमान कहते है, तो भी राजनीतिमें वह इस तरहके ब्याहको बुरा नही समझता था। यह भी याद रखनेकी बात है, कि पश्चिमके मंगोल शासकोंमें सभी मुसलमान नही हुये, बल्कि कितने ही ब्याह-शादीके सम्बन्धसे ईसाई होकर रूसियोंके भीतर हजम हो गये। मगोलोंकी सहायताके बाद भी यूरीकी हार हुई और उसकी रानी—उज्बेककी बहिन—बंदिनी बनी, और उसी अवस्थामे मर भी गई। यूरीने खानके सामने त्वेर-महाराजुल मिखाइलके ऊपर इल्जाम लगाया, कि उसने उसे जहर देकर मरवा दिया। खानने मिखाइलको मृत्युदड दिया और यूरीको महाराजुलका पद प्रदान किया। इसी समयसे मास्कोका सितारा चमकने लगा। यूरी बहुत दिनोंतक इस पदका उपभोग नही कर सका और वह मिखाइलके एक पुत्रद्वारा मारा गया। उज्बेकने यूरीके हत्यारेको मरवा डाला, लेकिन मास्कोको अधिक शक्तिशाली न होने देनेके लिये अबकी महाराजुल-पदको उसने मिखाइलके पुत्र अलेक्सांद्रको प्रदान किया। पर, रूसके आर्थिक जीवनमें मास्कोकी जैसी स्थिति थी, उसके कारण पासा पलटा नही जा सकता था।

२०. इवान I खलीता, दानियल-पुत्र (१३२५–४१ ई०)

मास्कोमें यूरीका स्थान उसके भाई इवान I ने ले लिया, जिसका नाम खलीता (पैसेका थैला) पड़ गया था, क्योकि उसके पास बहुत पैसा था। इवान खलीता ही नही था, बल्कि वह बड़ा चतुर और कुटिल शासक भी था। मास्कोकी शक्ति बढ़ानेके लिये वह हर तरहके हथियारोंको इस्तेमाल करनेके लिये तैयार था। उस समय रूसी संघराज ब्लादिमिर नगरमें रहता था–कियेफके नष्ट हो जानेके बाद संघराजकी गद्दी यहीं चली आई थी। यूरीने कोशिश की थी और इवान खलीताने भी कोशिश करके संघराज पीतरको इस बातके लिये राजी कर लिया, कि वह अपनी गद्दीको ब्लादिमिरसे मास्को ले आये। तबसे मास्को रूसके सबसे बड़े धर्माचार्यकी राजधानी बन गया, जिससे मास्कोकी शक्ति बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली। अब धार्मिक बहिष्कारकी धमकी देनेसे छोटे-मोटे राजुल भी मास्कोकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार हो जाते। धर्मराजका कोश भी मास्को-राजुलकी सहायता करनेके लिये तैयार था। इवान खलीता मंगोल खान, उसकी खातूनों और अनुचरोंपर सोनेकी वर्षा करनेके लिये तैयार रहता था, फिर वह क्यों न उसके पक्षमें होते? १३२७ ई० में खानने अपने दूत चोलखानको एक बड़ी मंगोल सेनाके साथ त्वेरके विरुद्ध भेजा। मंगोलोंने नगरको लूटना शुरू किया, इसपर लोगोंने विद्रोह कर दिया और चोलखान तथा उसके सैनिक खतम कर दिये गये। इवान खलीताने दौड़कर खानके पास पहुंच त्वेरको दंड देनेके लिये अपनी सेवायें पेश की। खानने उसे एक बड़ी मंगोल सेना दी। इवानने त्वेरपर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। त्वेरके महाराजुल अलेक्सांद्रने भागकर प्स्कोफमें शरण ली। संघराजने प्स्कोफवालोंको धार्मिक बहिष्कारकी धमकी दी। उनसे सहायता न पा महाराजुल लिथुवानिया भाग गया। पीछे वह त्वेर लौटा और खानने भी उसे क्षमा कर दिया, पर पीछे फिर इवान खलीताकी चालोंमें पड़कर खानने उसे ओर्दूमें बुलवाकर मार डाला। मास्को-राजुलका मनोरथ सिद्ध हुआ और १३२८ ई० में उसे महाराजुलका पद मिल गया। यही नहीं, सारी रूस भूमिसे कर उगाहनेका इजारा भी खानने खलीताको दे दिया। खलीता समयसे पहले ही नगद कर बेबाक करनेके लिये तैयार रहता था, फिर खान क्यों नहीं वैसा करता? इवान खलीताने अपने शत्रुओंको दबाने तथा मास्कोकी शक्तिको बढ़ानेमें किपचक (मंगोल) खानका खूब इस्तेमाल किया। उसके मरते समयतक मास्को राज्य काफी विस्तृत हो चुका था, और उसका प्रतिद्वंद्वी त्वेर अपनी समृद्धिके बहुतसे साधनोंको खो चुका था। अब सारी मास्क्वा-उपत्यका (कलोम्नासे मोजाइस्कतक) मास्को-महाराजुलकी थी—मास्को-साम्राज्यकी नींव पड़ गई।

२१. सेमेओन, इवान I-पुत्र (१३४१–५३ ई०)

खलीताके मरनेके बाद महाराजुल पद उसके पुत्र सेमेओनके हाथमें रहा।

२२. इवान II, इवान I-पुत्र (१३५३-५९ ई०)

भाईके बाद इवान I गद्दीपर बैठा, फिर उसका पुत्र दिमित्रि मास्कोका स्वामी बना।

२३. दिमित्रि दोन्स्की, इवान II-पुत्र (१३५९-८९ ई०)

महाराजुलको तरुण देखकर पड़ोसी राजुलोंने मास्को-राज्यपर हाथ फेरना चाहा, लेकिन दिमित्रिके पीठपर अब संघराज अलेक्सी और मास्कोके बायरोंका हाथ था। जिनके प्रयत्नसे खानने दिमित्रिको महाराजुलका पद प्रदान किया। बायरोंने बालक दिमित्रिको घोड़ेपर चढ़ाकर प्रतिद्वंद्वी सुज़्दल राजुलपर आक्रमण कर दिया और हाथसे निकल गये व्लादिमिर-नगरपर फिर अधिकार कर लिया। दिमित्रिके ३९ वर्षके शासनमें मास्कोकी शक्ति बहुत बढी, जिसमें एक कारण (मंगोल सुवर्ण-ओर्दूकी) शक्तिका कमजोर होना भी था। १३६६ ई० मे दिमित्रिने मास्कोको पत्थरकी दीवारोंसे दुर्गबद्ध किया, इसके पहले उसके चारो ओर बजकी लकडीका नगर-प्राकार था। उसने त्वेर, र्‌याज़न और निज्नीनवोगोरदके राजुलोपर जबर्दस्त आक्रमण किये, जिसपर उसके शत्रुओंने लिथुवन राजा ओलिगर्दसे मदद ली, और तीन बार मास्कोके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन मास्को अजेय साबित हुआ। पादरी, संघराज अलेक्सी और बायर सब तरहसे मदद देनेके लिये तैयार थे। मास्कोने कोमी जातिके लोगोंको अपने अधीन कर उन्हें ईसाई बनानेका प्रयत्न किया। ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ मास्कोकी शक्ति बढती गई। शक्तिके मदमें मास्कोने मंगोलोंसे भी छेड़-छाड़ शुरू की। अब मंगोलोंका सुवर्ण-ओर्दू छोटे-छोटे खानोंमें बंट चुका था, जिनमे सबसे शक्तिशाली ममाईखान था। मास्कोकी इस छेड़खानीको मंगोल कैसे बर्दाश्त करते? ममाईने १३७८ ई० में र्‌याज़नपर आक्रमण करनेके लिये एक तारतार सेना भेजी, जिसका लक्ष्य था मास्कोकी ओर बढना। लेकिन ममाईकी सेनाको वोझा नदीके किनारे भारी हार खानी पड़ी। ममाईने अब लिथुवानी राजा जागिएलोसे समझौता किया और स्वयं एक बड़ी सेना लेकर लड़नेके लिये आगे बढ़ा। र्‌याज़नके राजुलने अपने प्रतिद्वंद्वी मास्कोके महाराजुलके विरुद्ध ममाईसे मेल कर लिया। उधर महाराजुल दिमित्रिने भी डेढ़ लाखकी सेना एकत्रित कर ली थी। जातीयताके जोशमें आकर भारी संख्यामें रूसी राजुलके झंडेके नीचे इकट्ठा हो गये थे। यही नहीं, राजा ओलिगर्दके दो लिथुवानी राजकुमार भी बेलोरूसी और लिथुवानी सैनिकोंके साथ ममाईसे युद्ध करनेके लिये आये। दिमित्रिने अपनी सेनासहित ओकापार हो दोनके किनारे पहुंच युद्ध-परिषद् बुलाई। कुछ लोगोंकी राय थी "दोनके पार जाओ राजुल" और दूसरे कह रहे थे "मत जाओ, वहां बहुत शत्रु हैं।" दिमित्रि मना करनेवालोंकी बात न मान दोनपार हो गया। ८ सितम्बर १३८० ई० को कुलिकोवोका भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। कुलिकोवोका युद्धक्षेत्र नेप्र्याद्वा नदी और दोनके संगमपर अवस्थित था। युद्ध भीषण हुआ, कई मीलतककी धरती खूनसे लाल हो गई, जहां जगह-जगह लाशें पड़ी थीं। तारतारोंको पहले कुछ सफलता हुई, लेकिन इसी समय छिपे हुये रूसी सैनिकोंने अपना पीछा करते तारतारों पर पीछेकी ओरसे आक्रमण कर दिया। ठीक समयपर हुये इस जबर्दस्त प्रहारसे तारतारोंकी पूरी हार हुई। वह जान बचानेके लिये भाग निकले और रूसी सवारोंने पीछा करके उनके शिविरको भी ले लिया। दोनतटपर हुये इसी युद्धके विजयके उपलक्षमें दिमित्रिको "दोन्स्की" (दोनवाला) कहा जाने लगा।

इस लड़ाईके थोड़े दिनों बाद तोकतामिशसे लड़ते हुये ममाई मारा गया। उसके बाद तोकतामिशने १३८२ ई० में एकाएक मास्कोपर आक्रमण कर दिया। महाराजुल दिमित्रि तैयार नहीं था, इसलिये सेना भरती करनेको वह उत्तर चला गया। बायरोंने भी जान लेकर भागना चाहा, इसपर मास्कोमें विद्रोह हो गया। स्वतंत्रता-प्रेमी नगरवासियोंने क्रेमलिन (दुर्ग) के फाटकपर पहरेदार बैठा दिये, जिसमें महाराजुलानी और संघराजके अतिरिक्त कोई नगरसे बाहर न जाने पाये। तोकतामिशकी सेनाने क्रेमलिनपर आक्रमण किया। नागरिकोंने उसका पूरा प्रतिरोध किया। तीन दिनतक लड़ाई करनेके बाद भी सफलता न देख तोकतामिशने छलसे लोगोंको भुलावा दे नगरके दरवाजेको खुलवाया और उसे लूटकर जला दिया। इसके बाद रूसी लोग फिर किपचकोंको कर देने लगे। यद्यपि कुलिकोवोके युद्धने रूसियोंको मंगोलोंके जूयेसे मुक्त नहीं कर दिया, किन्तु उनके मनमें अब यह भाव पैदा हो गया था, कि हम मिलकर मंगोलोंसे अच्छी तरह मुकाबिला कर सकते हैं।

२४. वासिली I, दिमित्र-पुत्र (१३८९–१४२५ ई०)

पिताके कामको पुत्रने और आगे बढ़ाया। वासिलीने निज्नीनवोगोरदको ले लिया।

२५. वासिली अंध II वासिली I-पुत्र (१४२५–६२ ई०)

वासिलीके पुत्र वासिलीको अपने मनोरथमें अधिक सफलता प्राप्त करनेमें सबसे भारी बाधा पारिवारिक सघर्ष था। उसका चचा यूरी स्वयं महाराजुल बनना चाहता था। खानने वासिलीको जब यह पद प्रदान किया, तो दोनोमें खुला सघर्ष शुरू हो गया, जो बीस सालतक जारी रहा। इस संघर्षमें कितनी ही बार मास्को एक हाथसे दूसरे हाथमे जाता रहा। एक बार वासिली तीर्थयात्राके लिये त्रोयत्सा गया हुआ था, उसी समय उसके प्रतिद्वद्वी राजुल शेम्याकाके सिपाहियोंने उसे पकड़कर मास्कोमें ले जा अधा कर दिया, जिसके कारण उसका नाम त्योम्नी (अंध) पड गया। वासिलीने फिर जल्दी ही अपने राज्यको प्राप्त कर लिया, और उसके बाद उसकी शक्ति फिर बढ़ी।

१४ वीं सदीके अन्तमें रूसमें ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ विद्याका प्रचार भी कमसे कम उच्च वर्गमें काफी था, लेकिन अंध वासिली "निर्ग्रंथ और निरक्षर" था, जिससे सिद्ध है, कि अभी रूसी सामन्तवर्गमें विद्याकी उतनी अवश्यकता नही मानी जाती थी।
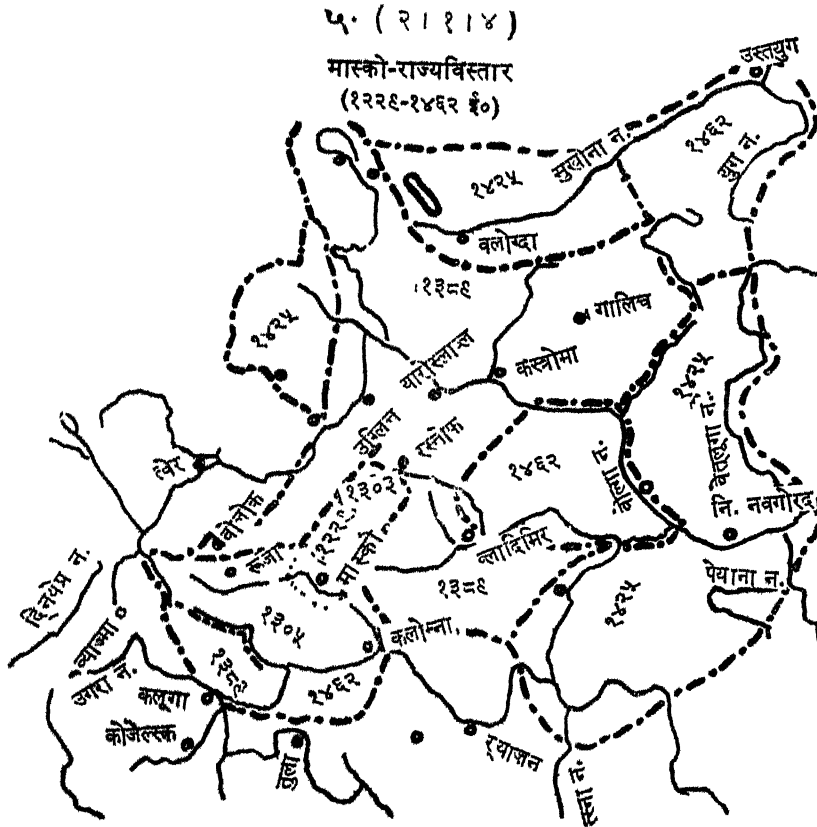
२६. इवान III, वासिली अंध-पुत्र (१४६२–१५०५ ई०)

पीढ़ियोंसे धीरे-धीरे संचित होती मास्को-राजशक्ति अब बिल्कुल स्पष्ट दिखने लगी। इवान III ने सारे उत्तर-पूर्वी रूसका एक सुसंगठित राज्य बना लिया। नवोगोरद अभीतक मास्कोसे अपनेको स्वतंत्र

बनाये हुये था, इसपर इवान III ने एक बड़ी सेना लेकर उसके ऊपर आक्रमण किया और हरानेके बाद नगरको स्वतंत्र छोड उसके अधीनस्थ प्रदेशोको अपने राज्यमे मिला लिया। मास्कोने पेर्मको अपने राज्यमें मिलाकर अपनी सीमा उराल प्रदेशतक बढ़ा ली और वहाकी धातुकी खानोंमें काम करने के लिये चतुर शिल्पी भेजे। नवोगोरदके भीतर फिर आपसी संघर्ष शुरू हुआ, और अन्तमें उसने १४८७ ई० में इवानको अपने "गसूदर" (स्वामी) के तौरपर स्वागत किया। नवोगोरदकी बोलीमें "गसूदर" का अर्थ साधारण सामन्ती भूमिपति भी होता था। इवान उनका साधारण भूमिपति बननेके लिये तैयार नही था। उसने पूर्ण प्रभुताकी माग की। इन्कार करनेपर सेना लेकर चढ़ आया और लम्बी बातचीतके बाद जनवरी १४७८ ई० में नागरिकोंने उसकी सारी शर्तोंको मान लिया। १४८५ ई० में इवानने त्वेरको भी पूर्ण तौरसे अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, र्याज़नका राज्य भी मास्कोका करद बन गया। यद्यपि रूसीजन अब मास्कोके अधीन एक हो चुके थे, लेकिन उनके सजातीय बेलोरूसी और उक्रइनी अब भी लिथुवानिया और पोलन्दके हाथमें थे, जिनको एकताबद्ध करनेमें अभी सदियोके सघर्षकी अवश्यकता थी।

तारतार (मंगोल)-शासनकी समाप्ति (१४८० ई०)—नवोगोरद जैसे शक्तिशाली राज्यको ले लेनेके बाद अब इवान सुवर्ण-ओर्दूकी ओर बढ़नेके लिये स्वतन्त्र था। आपसमें लड़ते ओर्दूके अनेक खानोंने पहिले हीसे उसके लिये रास्ता साफ कर दिया था। इवानने क्रिमियाके खान मेंगली गिराईसे मेल किया—वहां वह प्रतिवर्ष दूतमंडलद्वारा खान, उसकी खातूनों और मुख्य दरबारियोंको भेंट भेजा करता था। सुवर्ण-ओर्दूकी कमजोरीको देखकर इवानने उसे कर देना बन्द कर दिया। सुवर्ण-ओर्दूके खान अहमदने लिथुवानियाके राजाकी सहायतासे मास्कोको कर देनेके लिये मजबूर करना चाहा, लेकिन सफल नहीं हुआ, इसपर तारतार और रूसी सेनायें युद्धके लिये ओकाकी शाखा उग्रा नदीके आरपार खड़ी हुईं। दोनोंमेंसे कोई नदी पार करनेकी हिम्मत नहीं करता था। अहमद कर देना स्वीकार कर लेनेपर लौट जानेके लिये तैयार था। जब उग्राकी धारा बर्फ बनकर जम गई, तो चतुर इवानने अपनी सेनाको पीछे हटा एक अधिक अनुकूल स्थान पकड़नेका हुकुम दिया। अब भी खान आक्रमण करनेमें हिचकिचा रहा था। एक ओर सर्दी और धूपसे खानकी सेना परेशान थी और दूसरी ओर इवानके सहकारी मेंगली गिराईने हमला करके उसे खतरेमें डाल दिया था। लिथुवानियाका राजा भी अहमदको बीच हीमें छोड़कर चला गया। अहमदको मास्कोकी सीमासे हटनेके सिवा और कोई रास्ता नही रहा। बिना युद्धके इस दिनके हटनेके साथ ही दो शताब्दियोंसे चला आता रूसियोंके ऊपर मगोलोंका शासन हटता गया, और बा-तूका सर्वशक्तिमान् सुवर्ण-ओर्दू १५०२ ई० में क्रिमियाके तारतारोंद्वारा पराजित होकर निम्न-वोल्गाकी अस्त्राखानकी छोटीसी रियासतके रूपमे बच रहा।

तारतारो (मंगोलों) के जूयेसे मुक्त होनेके बाद इवानने अब फिनो, स्वीडों, जर्मनों, लिथुवानियों और तुर्कोंके हाथमे पडी प्राचीन रूसी भूमिके उद्धारका संकल्प किया।

तुर्की—तेमूरके युद्धोंमें परास्त होकर भागे क्षुद्र-एसियाके तुर्कोंने युरोपके तटपर पहुंचकर कान्स्तन्तिनोपोलके पूर्वी रोमन राज्यके अवशेषको खतम कर दिया। धीरे-धीरे बढ़ते हुये इन्हीं तुर्कोंने बलकान भूमिको लेते कालासागरसे उत्तरमें भी अपना हाथ फैला दिया। इस प्रकार तेमूरके बाद तुर्कीके रूपमें एक शक्तिशाली राज्य पूर्वी युरोपमें आकर उपस्थित हो गया। इवानने पहले और शत्रुओंसे भिड़नेके लिये तुर्कीके साथ समझौता कर लिया—वह पहला युरोपीय राजा था, जिसने तुर्कीके अस्तित्वको १४९२ ई० में स्वीकार किया। उसने बाल्तिक-तटसे होनेवाले खतरेकी रक्षाके लिये नारवा नदीपर इवानगोरद (इवान-नगरी) का दुर्ग स्थापित किया। यह बाल्तिककी ओर बढ़नेका रूसका पहला कदम था। लिथुवानिया जैसे प्रबल प्रतिद्वंद्वीको पछाड़नेके लिये इवानने लिवोनीय धर्म-सेनासे समझौता किया। पीछे जर्मन धर्मसैनिकोंके विरुद्ध उसने लिथुवानियासे संधि की और चेर्निगोफ नगरके साथ सेवेर्स्क प्रदेशको लेते हुये उसने अपनी सीमाको कियेफके नजदीकतक पहुंचा दिया। पूरबमें कजानके खानको

भी इवानने अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उसने उरालकी ओर भी कई अभियान भेजे। १५०० ई० में इवानकी सेनाने उराल पर्वतश्रेणी अर्थात् युरोपकी सीमासे पार हो एसियाकी सीमामें पैर रक्खा। वहाके निवासी नेन्सी अब मास्कोके करद बन गये। राज्यविस्तारके प्रयत्नमें कितनी ही बार उसे बाधाका भी सामना करना पड़ा, लेकिन बाधाओंके होते भी इवान आगे बढनेमे सफल रहा। सैनिक-शक्ति तो उसकी प्रबल थी ही, किन्तु उससे भी अधिक उसकी कूटनीति काम कर रही थी। क्रिमिया और साइबेरियाके तारतारोंको सुवर्ण-ओर्दूके अवशेषसे भिडाकर उसने अपना काम निकाला।

मास्को नगरी जहा एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानी हो गई थी, वहा वह व्यापारका भी सबसे बडा केंद्र थी। जाड़ोमें बर्फ बनी हुई मास्क्वा नदीके ऊपर व्यापारी अपनी दूकाने रखते थे। एक युरोपीय यात्रीने उस समयका वर्णन करते हुये लिखा है—"सारे जाड़ेभर अनाज, मास, सूअर, ईंधन, भुस और दूसरी आवश्यक चीजें बेचनेके लिये वहा लाई जाती है। नवम्बरके अन्तमे मास्कोके पास-पड़ोसके लोग अपनी गायो और सूअरोंको मारकर नगरमें बेंचनेके लिये लाते है। यह बडा आनन्दका दृश्य होता है, जबकि बर्फके ऊपर चमड़े निकाले हुये जानवरोंको बहुत भारी परिमाणमे अपने पैरोंपर हम खड़ा देखते है।"

इवान III ने मास्कोको एक बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तिमे परिणत कर दिया। उसने शासन, सेना, और कोशको जहां केंद्रित कर दिया, वहां सैनिक हथियार और कौशलमें भी बहुत वृद्धि की। इवानने पश्चिमी युरोपसे कारीगरोको बुला तोपें ढलवाकर रूसी तोपखानेको मजबूत किया। उसकेद्वारा स्थापित रूसी तोपखाना तबसे ही दुनियाका सबसे शक्तिशाली तोपखाना बन गया, जिसे सोवियत-कालमें भी रूसने अक्षुण्ण रखा—हिटलरकी सेनाओंको भगानेमें रूसी तोपोंका काफी हाथ रहा। इवानको अब सभी राजा अपनी उच्च बिरादरीमें सम्मिलित करनेके लिये प्रस्तुत थे। जर्मन-सम्राट्ने राजाकी उपाधि देनी चाही, लेकिन इवानने "मुझे उसकी अवश्यकता नही" कहकर लेनेमे इन्कार कर दिया। पोपने भी उसकी ओर मित्रताका हाथ बढ़ाया। वेनिसके धनी गणराज्य तथा पश्चिमी युरोपके दूसरे व्यापारी कालासागर और क्रिमिया होते मास्को पहुचने लगे। इवानने पश्चिमी युरोपसे तोप ढालनेके लिये ही कारीगर नही मंगवाये, बल्कि वास्तुशास्त्री तथा शिल्पशास्त्रियोको भी बुलाया।

इवानके प्रभावको बढानेके लिये इसी समय एक और भी अच्छा मौका मिल गया। ईसाई धर्म कैथोलिक और अर्थोदक्स दो सम्प्रदायों (चर्चों) में विभक्त है, जिसमें कैथोलिक पोपका केंद्र रोम नगर है और ग्रीक अर्थोदक्स चर्चका महासंघराज कान्स्तन्तिनोपोलमे रहता था। १४५३ ई० म तुर्क सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोलपर अधिकार करके पूर्वी रोमक (विजन्तीन) साम्राज्यको खतम कर दिया। तुर्कोंका राज्य कालासागर-तट, काकेशस और बलकानमें दन्यूब नदीके किनारे वीना नगरके पासतक फैल गया। वेनिस और पोपकी मध्यस्थतासे इवानन अन्तिम ग्रीक सम्राट्की भतीजी सोफिया पालेओलोगससे व्याह किया। वेनिस और रोमको आशा थी, कि इस प्रकार वह इवानकी शक्तिसे तुर्कों-को खतम करनेमें सफल होंगे, लेकिन इवान किसीका हथियार बननेके लिये तैयार नहीं था। क्रिमियाके खानोंद्वारा इवानने तुर्कोंके साथ सम्बन्ध स्थापित किया। ईरानसे भी उसने सम्बन्ध स्थापित किया। इस प्रकार मास्कोके व्यापारी कान्स्तन्तिनोपोल और ईरान तककी यात्रा करने लगे। इन्हीं व्यापारियों मे त्वेर (कलिनिन) नगरका अफनासी निकितिन भी था, जिसने १४६७–७२ ई० में ईरानके रास्ते समुद्रद्वारा भारतकी यात्रा की थी। अफनासीने अपना यात्राविवरण "खोजेनिये ज़ा-त्रि-मोर्या" (तीन समुद्रों पारकी यात्रा) लिखकर हमारे लिये छोड़ा है।

अफनासीकी भारतयात्रा—त्वेरके रूसी सौदागर निकितिन अफनासीने "तीन समुद्रों पारकी यात्रा" की थी। वह वास्को-द-गामाके भारत पहुंचने (१४९८ ई०) से ३२ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें आ बहमनी (बीदर) सुल्तान मुहम्मदशाह III (१४६२–८३) के राज्यमें ६ वर्ष (१४६६-७२ ई०) तक रह रूस लौट स्मोलेन्स्कमें मर गया। उसके यात्रा-विवरणके कुछ अंश हैं:—

मैं पवित्र स्पा (त्राता) के गिर्जेसे महान् राजुल मिखाइल बोरिसपुत्र और त्वेरके प्रधान पादरी गेनान्दीकी कृपामयी अनुमति प्राप्तकर रवाना हुआ। बोल्गा नदीसे चलकर पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेबके "जिवो नचाल्नया त्रोइत्जा" (जीवनप्रदायक त्रिमूर्ति) के पवित्र मठमें पहुंचा। साधु मकरी और उसके भाईने मुझे आशीर्वाद दिया। (फिर) मैं उगलिच गया। उगलिचसे कोस्त्रोमा (त्वेर) के राजुल अलेक्सान्द्रके पास पहुचा। सारे रूसके शासकने मुझे स्वतंत्र जीवन प्रदान किया। इसी तरह मुझे निज्नीनवोगोरदमें उपसरक्षक मिखाइल किस्लेफ़ और जकात-अफ़सर इवा साराके पास जानेकी अनुमति मिल गई।

अबसे पहले ही वासिली और पापी (मैं) चल पड़े थे। फिर भी मुझे (निज्नी) नवोगोरदमें शाह शिरवानके तातार राजदूत हसनबेगके लिये प्रायः दो सप्ताह रुकना पडा। वह महाराजुल इवाके पास नब्बे बाज लेकर आया था। मैं जहाजपर चढ़ उसके साथ बोल्गाकी राह चला और कुशलपूर्वक कजान, उर्दा, ओगलान, सराइ और बरेकेजाम लाघ गया।

हम बुजान नदीमें पहुंचे। वहां हमें तीस बदमाश तातार मिले। उन्होंने हमें गलत खबर दी, कि बुजानमें कासिम खां तीन सौ तातारोंके साथ पडा सौदागरोंकी राह देख रहा है। शिरवानके राजदूत हसनबेगने उनमेंसे प्रत्येकको तीन-तीन मलमलके थान दिये, जिसमें वे हमें अस्त्राखानके आगेतक पहुचा दें। मैं अपना जहाज छोड़कर अपने साथियोंके साथ राजदूतके जहाजपर सवार हो गया। हम अस्त्राखान लांघ रहे थे, (आकाश में) चाद चमक रहा था; इसी समय वहांके हाकिमने हमें देख लिया। उसके तातारोंने चिल्लाकर कहा—भागना मत! और उसने हमारे पीछे अपने सिपाही छोड़ दिये। बुगून पहुचते-पहुंचते उन्होंने हम पापियोंको पकड़ लिया, और हममेंसे एकको गोली मार दी। हमने भी उनके दो आदमी मार डाले। हमारे छोटे जहाजको वहां रोककर उन्होंने लूट लिया और मेरा सारा सामान नौकाके साथ ही उनके कब्जेमें चला गया।

बड़ी नौकासे (भागकर) हम समुद्र-तटतक पहुंचे, लेकिन (हमारी) नाव बोल्गाके मुहानेपर जमीनपर चढ़ गई। तातार वहां हमें आ पकड कर और नावको पानीमें खीच ले गये। उन्होंने (हम) चार रूसियोंको कैद कर लिया और बाकियोंको समुद्रकी ओर भगा दिया। वह हमें बहाव्के विरुद्ध जाने नहीं दे रहे थे, जिसमें हम उनके खिलाफ खबर न दे दें।

अब हम दो नावोंमें दरबन्द (कास्पियन) समुद्रकी ओर चले। एकमें राजदूत हसनबेग, हम रूसी और कुछ ईरानी—कुल दस आदमी थे और दूसरीमें छ मास्कोके और छ त्वेरके निवासी चल रहे थे। इस सामुद्रिक यात्रामें हम तूफानमें पड गये और तटसे टकरा जानेसे छोटी नावके लोगोंको केताकोंने पकड लिया।

जब हम दरबन्द पहुचे, तो मालूम हुआ, कि हम तो राहमें लुट गये, लेकिन वासिली बिल्कुल सही सलामत पहले ही दरबन्द पहुंच गया है। मैंने वासिली पापिन और शिरवान शाहके राजदूत हसन-बेगने—जिसके साथ कि हम आये थे—बडा अनुनय-विनय किया कि वे तर्कीमें केताकोंद्वारा गिरफ्तार हमारे आदमियोंको छड़ानेका प्रयत्न करें। हसनबेग बीच-बचाव करनेके लिये पहाड़पर जाकर पुलादबेगसे मिला। पुलादबेगने शिरवान शाहबेगके पास एक तेज दूत भेजकर कहलाया कि तर्की (किला) से टकराकर एक रूसी नावके टूट जानेपर केताकोंने उसे पकड़ लिया, उसके आदमियोंको गिरफ्तार कर लिया और उनकी चीजें लूट ली। शिरवान शाहबेगने अपने संबंधी खलीलबेगद्वारा कहलवाया—'खबर मिली है, कि मेरी नाव तर्कीके पास टकराकर टूट गई, तुम्हारे आदमियोंने नावके आदमियोंको पकड़ लिया और उनकी चीजोंको लूट लिया। कृपा करके मेरी खातिर उन पकड़े आदमियोंको मेरे पास भेज दो और उनकी चीजें भी इकट्ठी कर दो, क्योंकि वे लोग मेरे पास भेजे गये थे। अगर तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो, तो मेरे पास आओ; मेरे भाई, मैं कोई चीज देनेसे तुम्हें इन्कार नहीं करूंगा। अब कृपया मेरे लिये इन आदमियोंको मुक्त कर दो।' खलीलबेगने तुरंत मुक्तकर दरबन्द फिर वहांसे शिरवान शाहके आवास 'कोइतुल' में भेज दिया।

हम कोइतुलमें शिरवान शाहके पास पहुंचे। हमने उससे बड़ी मिन्नत की, कि वह हमपर दया करे और हमारे रूस लौटनेमें मदद करे; पर हमारी सख्या बहुत थी। उसने हमें कुछ न दिया। बहुत रो-धोकर हममेंसे हर एकने अपनी राह ली। जिनको रूसमें काम था, वह रूस चले गये, कुछ उधर जिधर उनकी आंखें ले गई गये, कुछ शेमाखमें ही पड़े रहे और कुछ काम करने बाकू चले गये।

मैं फिर दरबन्दसे बाकू गया, जहां कभी नही बुझनेवाली अग्नि (ज्वालामाई) सदा जलती रहती है। बाकूसे मैं समुद्रकी राह चपकुर जा वहा छ महीने रहा। फिर जाकर माज़न्दरानके मुल्कमें सारामें एक महीने रहा। उसके बाद मैं आमूल गया और वहां एक महीने रहा। फिर आमूलसे मैं देमाबन्द गया और देमाबन्दसे रै (तेहरान)। यही मुहम्मद (पैगम्बर) के पोते और अलीके बेटे शाह हुसैनकी हत्या हुई थी और उसके शापसे सत्तर नगर नष्ट हो गये थे। रैसे मैं गज़ान आया और वहां एक महीना रहा। गजानसे नाइन और नाइनसे येज्द (उयेज्द), जहा मैं एक महीना ठहरा। येज्दके बाद मैं सिर्दजान आया और फिर तारूम, जहा मवेशियोंको चारे 'अल्वीन' के बदले खानेको खजूर देते है।

तारूमसे मैं लार गया और लारसे बन्दर। यही ओरमुज्द (ओर्मुज) का बन्दर है। फिर भारतीय सागर, जिसे फारसीमें हिन्द-समुंदर कहते हैं। ओरमुज बन्दरसे समुद्र केवल चार मील है।

हिन्दू मांस नहीं खाते, न तो बांझ मवेशीका, न भेड़का, न मुर्गे-मुर्गियोंका और न मछलीका। वह सूअर भी नहीं खाते, यद्यपि देशमें सूअरोंकी बहुतायत है। दिनमें वह दो बार भोजन करते हैं, और रातमें कुछ नहीं खाते। वह शराब नहीं पीते और न दूसरा ही ऐसा पेय, जो नशा कर दे। वह मुसलमानोंके साथ नहीं खाते-पीते। उनका भोजन अच्छा नहीं होता। वह आपसमें भी एक दूसरेके साथ नहीं खाते-पीते, (यहांतक कि) अपनी पत्नियोंके साथ भी नहीं (खाते)। वह चावल और रोगन (घी) मिली खिचड़ी और अनेक प्रकारकी सब्जियां खाते हैं, जिन्हें वह रोगन (घी) या दूधके साथ पकाते हैं। वह दाहिने हाथसे खाते हैं, बांयें हाथसे कुछ नहीं खाते। वह चम्मचका इस्तेमाल नहीं जानते। सफरके समय हर आदमी अपना भोजन (खीर) आप पकाता है। भोजनके समय वह पर्दा कर लेते हैं, जिसमें मुसलमान उनका खाना न देख ले। अगर मुसलमान खाना देख ले, तो हिन्दू उसे नहीं खायेंगे। खाते समय वह अपनेको कपड़ेसे भलीभांति ढांक लेते हैं, जिसमें कोई उन्हें देख न सके।

रूसियोकी ही भांति हिन्दू भी पूर्वकी ओर मुंह करके प्रार्थना करते हैं। वह दोनों हाथ ऊपर उठाकर सिरपर रख लेते हैं, फिर जमीनपर पड जाते हैं, यही उनका प्रणाम (साष्टांग प्रणाम) करना है। भोजनके पहले उनमेंसे कुछ (लोग) अपने हाथ-पांव धोते है और कुल्ला करते है। देवालयोंमें कोई दरवाजा नहीं होता, उनका रुख पूर्वकी ओर होता है—कुछ मूर्तियोंका मुख उत्तरकी ओर भी होता है। जब हिन्दुओंमें कोई मर जाता है, तो उसके शरीरको जलाकर राखको पानीमें डाल देते है। जब किसी औरतके बच्चा होता है, तो पति उसे ले लेता है। लड़केका नामकरण पिता करता है और लड़कीका माता। उनके आचार-व्यवहार अच्छे नही हैं और न उनमें कोई शर्म है। मिलते और अलग होते समय वह ईसाई साधुओंकी भांति अपने दोनों हाथ जमीनकी ओर कर लेते है, कुछ बोलते नही।

दाबुलसे कालीकट २५ दिनका रास्ता है, कालीकटसे सिंहल (लंका) १५ दिनका। सिंहलसे जावत (जावा) १ महीनेका, जावतसे पेगू (बर्मा) २० दिनका, पेगूसे चीन और महाचीन फिर एक महीनेका। यह सारी यात्रा समद्रकी राह है। चीनसे खिताईकी यात्रा खुश्कीसे छ महीनेकी और समुद्रसे चार दिनोंकी है। भगवान् मेरी रक्षा करे।

बीदरमें तीन दिनों तक चांद प्रायः पूरा चमकता है। हिन्दुस्तानमें गर्मी बहुत नही है। ओर्मुज और बह रैनमें—जहां मोती निकलती हैं—बडी गर्मी पड़ती है, जद्दा, बाकू, अरब, मिस्र और लारमें भी। खुरासानमें गर्मी इतनी ज्यादा नहीं, लेकिन चगताई (मध्य-एसिया) में बहुत है। शीराज, यज्द और कजानमे गर्मी है, पर वहां जोरकी हवा चलती है। गीलानमें बड़ी गर्मी है, बहुत पसीना निकलता है। बाबुल, खुम्स और दमश्क भी गरम हैं। अलेफ इतना गरम नहीं। शेबास्त और जार्जियामें सभी कुछ बहुतायतसे मिलता है। वैसे तुर्कीमें भी सब चीजोंकी बहुतायत है। रूमानियामें फल बहुत हैं और खानेकी सभी चीजें

सस्ती है। पोदोलियामें फल सब जगहोंसे अधिक होते हैं। भगवान् रूसकी रक्षा करे, भगवान् उसे बचाये। इस ससारमें रूसके समान (अच्छा) कोई दूसरा मुल्क नहीं, यद्यपि वहांके बायर अच्छे नही है। परन्तु रूसकी भूमि बनाई जा रही है, उससे बडी भलाई होगी। मेरे भगवान्, भगवान्, भगवान्, भगवान् (बोग् मोइ)।

हे मेरे भगवान्, मेरी आशायें तुझपर लगी है। मेरे भगवान्, मेरी रक्षा कर ले। मैं नहीं जानता कि हिन्दुस्तानसे किधरको जाऊं। ओर्मुजसे खुरासानको राह नहीं, चगताईके लिये रास्ता नही और बहरैन और यज्दके लिये भी कोई मार्ग नही। सर्वत्र विद्रोह हो रहे हैं, सर्वत्र बादशाह भगाये जा रहे है, मिर्जा जहान शाहको उजून (हसन) बेग ने मार डाला है, सुल्तान अबू-सईदको जहर दे दिया गया है। उजून (हसन) बेग अब शीराजमे है, पर उस मुल्कने उसको स्वीकार नहीं किया है। यादगार मोहम्मद उसके पास नही जाता, वहा जानेमें उसे खतरा मालूम होता है। और कोई राह नहीं। (मेरे) मक्का जानेका मतलब है मुसलमान हो जाना। ईसाई होनेकी वजहसे मक्का जानेमें (मेरी) खैरियत नहीं, क्योंकि वहां जाते ही मुसलमान बना लिया जाऊंगा। हिन्दुस्तानमें रहनेका मतलब है, अपने पास जो कुछ है, सबको खर्च कर डालना, क्योंकि यहांका रहन-सहन महंगा है। मै अकेला हूं, पर मेरा रोजाना खर्च ढाई अल्तीना (अशर्फी) है। यहां मन भरकर शराब मैंने कभी नहीं पी।

हम मस्कत पहुंचे। वहीं मैंने पासख (ईस्टर) त्योहार मनाया। फिर तीन दिनोंमे ओर्मुज पहुंचा। २० दिन ओर्मुज ठहर मै लार गया और वहां तीन दिन रहकर बारह दिनकी यात्राके बाद शीराज पहुंचा, जहां सात दिन रहा। शीराजसे पद्रह दिनकी यात्रा कर अबरकुन पहुंचा और वहां दस दिन ठहर, नो दिनमे येज्द पहुंचा, जहां ८ दिन रहा। येज्दसे पाच दिनमें अस्पहान पहुंचा, और वहा छ दिन ठहरा। वहांसे काशान जा पांच दिन रहा। काशानसे कुम गया। कुमसे सबा, सबासे सुल्तानिया और सुल्तानियासे तब्रीज। तब्रीजसे मैं हसनबेगके कबीलेमें पहुच, उनके बीच १० दिन ठहरा। वहासे कहीं जानेका रास्ता न था, लड़ाई चल रही थी। हसनबेगने तुर्क सुल्तानके विरुद्ध अपनी ४० हजार सेना भेजी थी। सेनाने सिवास और तकातपर कब्जा कर लिया, तकातमें आग लगा दी। उन्होंने अमसपर भी अधिकार कर लिया, अनेक गाव लूट लिये, फिर वह किरमानकी ओर बढ़े। मैंने सेनाका साथ छोड़ आरजिंजान (अर्जेरूम) की राह ली और वहासे त्रेपोजान्द जा पहुंचा।

पक्रोफ़के दिन ही मैं त्रेपोजान्द पहुचा और पांच दिन वहां ठहर, एक जहाजपर जा कफाका किराया ठीक कर लिया, तथा कफामें जकात कर देनेके लिये कुछ सिक्के बदले।

त्रेपोजान्दमें फौजदार और शासकके भाईने मुझे बड़ा नुकसान पहुंचाया। वह मेरा सारा सामान पहाड़के ऊपर अपने महलमे उठा ले गया, और चूंकि मै हसनबेगके कबीलेकी ओरसे जा रहा था, इसलिये छिपी चिट्ठियोके लिये मेरी तलाशी ली।

भगवान् की दयासे मै अब तीसरे समुद्र (कालासागर) में दाखिल हुआ, जिसे ईरानी 'इस्तम्बूलका समुन्दर' कहते हैं। जहाजसे पांच दिन चलकर हम बोनद पहुंचे। वहां हमें तेज (दक्खिनी) हवा मिली, जो हमें त्रेपोजन्दकी ओर ढकेल ले चली। मौसमकी परेशानी के कारण हमें प्लातानमें रुक जाना पड़ा। वहांसे दो बार हमने चलना चाहा, पर मौसमके कारण रुकना पड़ा। भगवान् ही (सबका) मूल और रक्षक है, उसे छोड़ हम और किसी भगवान्को नहीं जानते। अन्तमें (समुद्र) पारकर हम बालक्लोफ़ पहुंचे, फिर वहांसे गुरजोफ, जहां हम पांच दिन ठहरे।

भगवान्की दयासे हम समुद्र पारकर, फिलिपोफकी शामसे नौ दिन पहिले कफा पहुंच गये। भगवान् ही बनानेवाला है। उसकी मर्जीसे मैंने तीन समुन्दर पार किये, आगेकी भगवान् जाने। दयालु भगवान्के नामपर, महान् प्रभु और लघु प्रभु, ईसा और पवित्रात्मा शान्ति। भगवान् बड़ा है, प्रभु महाप्रभुके बराबर कोई दूसरा भगवान् नहीं। भगवान्की महिमा, उसका आशीष। उस जैसा दूसरा नहीं, वह सर्वज्ञ है, दृश्य-अदृश्य सबका वही राजा है, ज्योति है, रक्षक है और प्रभु है। वह श्रेष्ठ और महान्

है, स्रष्टा और चित्रकार है। वह सारे पापोंका क्षमा करनेवाला है। वही सभी वस्तुओंको बढानेवाला है, हमारी अन्तरात्माओंको जानने और स्वीकार करनेवाला है। वही आकाश और पृथ्वीमे व्याप रहा है, सबकी रक्षा कर रहा है, वही सर्वोच्च, सर्वमहान्, सर्वदर्शी, सर्वश्रोता है। वह न्यायकारी, समीचीन और शालीन है।
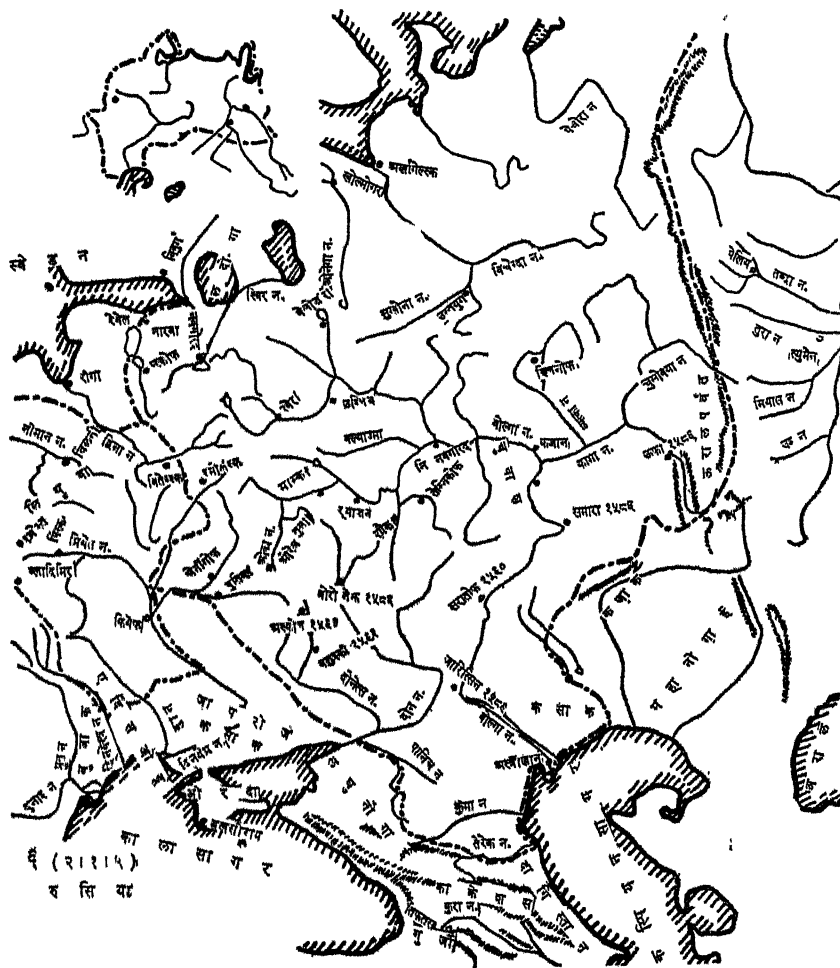
कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोंके हाथमें चले जानके बाद और ग्रीक राजकुमारीसे ब्याह कर लेनेपर इवान अपनेको ग्रीक सम्राटोंका सीधा उत्तराधिकारी मानने लगा। उसने विजन्तीन राजमुद्रा—दो शिर-वाले बाज—को अपनी राजमुद्रा बनाई। दरबारके समय वह रत्नजटित सिंहासनपर एक मुकुट धारण करके बैठता था, जिसे "मनोमाख" मुकुट कहते थे, और जिसके बारेमे परम्परा कहती है, कि उसे व्ला-दिमिर मनोमाखने अपने नाना ग्रीकसम्राट् कन्स्तन्तिन मनोमाखसे पाया था।

इवानने अपनी राजधानीको भी अब राजसी ढंगसे सजाना शुरू किया। पहले मास्कोके सारे घर लकड़ीके होते थे, राजप्रासाद भी लकड़ीका था। इवानके समयसे पत्थरके मकानोंकी वृद्धि होने लगी। इतालियन वास्तुशास्त्री रिदाल्फो दि फ्योरावेन्तेको बुलाकर उसने नये वास्तु-साधनोंका प्रयोग कराया। विदेशी शिल्प-शास्त्रियोंने इवानके लिये जो इमारतें बनाई थीं, उनमेंसे कुछ—क्रेमलिनकी दीवारें और मीनार, पत्थरके गिर्जे, पाषाण-प्रासाद तथा सुंदर ग्रानोवितया पलाता—अब भी मौजूद हैं। इवान अब अपनेको सचमुच ही अभिमानी ग्रीकसम्राट् मानता था। जरा भी आज्ञा-

उल्लघनपर वह बायरोंको मृत्यु या निर्वासनका दंड देता था। बायर कहते थे—"जबसे महाराजुलानी सोफिया अपने ग्रीकोंके साथ आई, तबसे सभी बातें उलट-पुलट गईं।"

२७. वासिली III, इवान III-पुत्र (१५०५—३३ ई०)

वासिलीके शासन का वही समय है, जब कि भारतमें बाबर और हुमायूं राज्य कर रहे थे। इस समय रूस बड़ी तेजीसे अपना राज्यविस्तार और शक्ति-संचय कर रहा था। जो रियासतें बापके समय अब भी स्वतत्र थी, उन्हें वासिलीने मास्कोमें मिला लिया—प्स्कोफ १२१० ई० में मास्कोके अधीन हुआ। इसीके शासनमें १५२१ ई० मे र्‌याज़न भी मास्कोका अभिन्न अग हो गया। १५१४ ई० में तीन बार तोप दागनेके बाद स्मोलेन्स्ककी अकल ठिकाने आ गई और वहांके बिशपने नागरिकोंके साथ महाराजुल के शिविरमे आकर प्रार्थना की—"नगरको मत नष्ट करो, शांतिपूर्वक इसे ले लो।" अब वासिली III रूसभूमिके सारे राजाओंका राजा था। समकालीन विदेशी भी लिखते हैं—"वासिलीकी शक्ति सारी दुनियाके राजाओसे बढकर है, वह सबके जीवन और सम्पत्तिका पूर्णतया स्वामी है।" मास्कोवाले खुले आम कहते थे—"हमारे राजाकी इच्छा भगवान्‌की इच्छा है।" बायर भी उसके सामने भीगी बिल्ली बन गये थे। वह जिसको कान पकड़कर निकाल देता, वह चूतक करनेकी हिम्मत नहीं रखता था। वासिलीने नीचे तबकेके कितने ही आदमियोंको अपना विश्वासपात्र बनाया था, जिसमेंसे दो-तीन सब बातोंमे उसके सलाहकार थे। उसके समकालीन साधु पिलोतेइने लिखा था—"मास्को दुनियाकी महान् राजधानियो--प्राचीन रोम और द्वितीय रोम कान्स्तन्तिनोपोल—का उत्तराधिकारी है, मास्को तीसरा रोम है, और चौथा कोई नही होगा।"

२८. येलेना वासिली III-पत्नी (१५३३—३८ ई०)

वासिलीने मरते वक्त सिंहासनका अधिकारी अपने तीन वर्षके पुत्र इवानको छोड़ा था। उसके बाल्यकालमें शासनकी बागडोर उसकी मां रानी येलेना वासिलियेफ-पुत्री ग्लिन्सकी-वंशजाके हाथमें रही। वासिली III ने बायरोंकी स्वेच्छाचारिताको बहुत दबाकर देशकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेवाले इस वर्गको अधिकारच्युत कर डाला था। अब बायरोंने फिरसे अपने स्थानको प्राप्त करना चाहा, लेकिन येलेना गुड़िया रानी नहीं थी। उसने बायरोके हर प्रयत्नको व्यर्थ किया। पर राजा और बायर (सामन्त) एक ही वर्गके हैं, दोनोके स्वार्थ एक तरहके है, शादी-ब्याह आदि सम्बन्ध भी उनका आपसमें होता है, इसलिये उन्हें कहातक अलग रक्खा जा सकता था? रानी अभी मुश्किलसे पांच वर्ष शासन कर पाई थी, कि बायरोंने उसे जहर देकर मार दिया।

२९. इवान IV, वासिली III-पुत्र (१५३८—८४ ई०)

राजमाताको मारकर बायरोंने शक्ति अपने हाथमें ले ली और आठ वर्षका बालक इवान खिलौनेकी तरह गद्दीपर बिठा दिया गया। लेकिन बायरोंमें भी निजी स्वार्थान्धता इतनी थी, कि वह आपसम बराबर लड़ते-झगड़ते रहे। पहले राजुल शुइस्की और बेल्स्कीके बीचमें भयंकर संघर्ष हुआ और शुइस्कीके अनुयायियोंनें क्रेमलमें घुसकर अपने विरोधी राजुल बेल्स्कीको गिरफ्तार कर लिया। शुइस्कीके हाथमें भी शक्ति देरतक नहीं रही। ग्लिन्स्कीवंशने—जिसकी पुत्री राजमाता येलेना थी--अन्द्रेइ शुइस्कीको १५४३ ई०मे मार डाला। बायर तीन वर्षतक शासन करते रहे। वह केन्द्रीकृत सरकारके विरुद्ध थे और चाहते थे, कि देश फिर छोटे-छोटे राजुलोंमें बंट जाये। शासन क्या था, अपने भाई-भतीजों-भांजों और सहायकोंमें नगरों और इलाकोंको बांटना, जो जनसाधारणकी लूटका एक खुला तरीका था। घरके भीतरकी कमजोरी देखकर सुवर्ण-ओर्दूकी शाखाओं—क्रिमिया और कजानके तारतारों—ने फिर रूसभूमिमें लूट-मार मचानी शुरू की। बायर अपनी स्वार्थपूर्तिमें इतने संलग्न थे, कि वह बच्चे महाराजुलके खाने-कपड़ेतकका भी ध्यान नहीं रखते थे। तरुण इवानने अपनी मांके समयके दरबारको भी देखा था। उस समय राजसिंहासनका कितना सम्मान था? अब उसके मालिक इस बच्चेकी कोई पर्वाह नही करता था। केवल विशेष उत्सवोंके समय उसको सिंहासनपर बैठाकर सम्मान-प्रदर्शनका

अभिनय किया जाता था। बालक इवान मेधावी था। छोटी उमरसे ही उसने लिखना-पढना सीख लिया था। उसे किताबोंके पढ़नेका बड़ा शौक था। स्वयं सुशिक्षित संघराज मकरीने इवानके ऊपर बहुत प्रभाव डाला था। लड़कपनसे ही अपनी आखोंके सामने बायरोंको लूटते, खून-खराबी करते देख, स्वयं उपेक्षित हो इवानके स्वभावमें क्रूरता भी सन्निविष्ट हो गई थी।

ऐसे होनहार बालकको बहुत दिनोंतक गुडिया बनाके नहीं रक्खा जा सकता था, विशेषकर जब कि बायरोंमे स्वयं आपसी खूनी संघर्ष चल रहे थे। सत्रह वर्ष की उमर (१५४७ ई०) में इवानने सिंहासनको संभालते हुये पूर्वजोंकी "महाराजुल" उपाधिसे सन्तुष्ट न हो जारकी उपाधि स्वीकार की। इवान IV पहला रूसी जार था—जार-क्ज़ार-कैज़र-कैसर अर्थात् रोमक सम्राट्का ही बिगडा रूप है।

बायरोने अपनी सामन्ती जागीरदारियां फिरसे स्थापित कर ली थीं। उसके कारण लोगोंकी बुरी हालत थी। उन्होंने १५४७ ई० मे मास्कोमें ग्लिन्स्की दलके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी समय भारी आग लग जानेसे नगरका बहुत-सा भाग जल गया था, जिसके कारण लोगोंकी हालत और भी खराब हो गई और वह ग्लिन्स्कियोंकी स्वेच्छाचारिताके खिलाफ उठ खड़े हुये। वह ज़ारकी नानी अन्ना ग्लैन्स्कयाके ऊपर जादूसे नगरमें आग लगानेका दोष लगाते थे। विद्रोहमे ग्लिन्स्की वंशका एक आदमी मारा गया और बाकी जान लेकर भाग गये। ज़ार स्वयं वोरोब्योवो गाव (वर्तमान लेनिन-पर्वत) में भागकर जा छिपा।

जब विद्रोह दबा दिया गया, तो साधारण जनताकी संतान एक चतुर ओर ईमानदार अफसर अलेक्सी अदाशेफ शासनका मुखिया बना। अदाशेफने अपने साथ एक प्रभावशाली दरबारी पादरी सेल्वेस्तर तथा कुछ शक्तिशाली बायरोंको मिला इज्ब्रान्नया रादा (वृत-परिषद्) बनाई, जिसकी रायके विना तरुण ज़ार कोई निर्णय नहीं कर सकता था।

राज्य-विस्तार—इवान IV के शासनारम्भके समय उत्तर-पूर्वी रूस एकताबद्ध हो चुका था। अब रूसका विस्तार आसपासकी जातियोंको जीतकर ही किया जा सकता था। वासिली III के समयमें क्रिमियाके खानकी मददसे कजानके तारतारोंने अपनेको स्वतन्त्र कर लिया था, इसलिये इवानको कजानके खानसे सबसे पहले भुगतना था, जिसके लिये तारतारोंने रूसी भूमिपर लूट-मार मचाकर बहाना भी पैदा कर दिया था। कजान मध्य-वोल्गाके ऊपर एक महत्त्वपूर्ण नगर था, जिसके विरोधी शक्तिके हाथमें रहनेपर वोल्गा-कास्पियनका वणिक्पथ खतरेमें पड़ जाता था और पूर्वमें उराल तथा आगेके विस्तारकी गुंजाइश नहीं रह जाती थी। उधर तुर्कोंने कालासागरको अपनी झील बनाकर काकेशसतक अपनी बांह फैला ली थी। अस्त्राखान और कजानके खान भी हमेशा तुर्कोंकी ओर आशा लगाये रहते थे। इस प्रकार पूरबसे रूसको खतरा भी था। इवानने पहले कजानको खतम करनेका निश्चय किया। १५५० ई० का महाभियान असफल रहा, इसपर उसने १५५१ ई०के वसंतमें मारियोंकी भूमिमें वोल्गाके पहाड़ी किनारेपर स्वीयाजस्क नगर बनाया, जो कि कजानके सामने पड़ता था। मारी लोग अबतक कजानको कर देते थे, अब वह जारको कर देनेके लिये मजबूर हुये। स्वीयाजसकका दृढ़ दुर्ग बन जानेके बाद रूसी कजानको घेर सकते थे। कजानके तारतारोंने जबर्दस्त प्रतिरोध किया, लेकिन रूसियोंके पास डेढ़ लाख सेना थी, दूसरे उनके पास शक्तिशाली तोपखाना भी था। नगरके भीतर तीस हजार तारतार सेना थी। कुछ महीनोंतक तारतारोंने प्रतिरोध किया, लेकिन जब शक्तिशाली तोपोंने नगरके प्राकारको उड़ा दिया, तो वह कहांतक प्रतिरोध करते? अन्तमे २ अक्तूबर १५५२ ई०को रूसी कजानको दखल करनेमें सफल हुये। कजानके पतनके साथ तातारोंका प्रतिरोध खतम नहीं हुआ। वह कई सालोंतक लड़ते रहे, उनके सहायक तारतार ही नहीं, मारी, उदमुत, चुवाश और मोर्द्वा जैसी रूसीभिन्न जातियां भी थीं। कजानके उच्छेदके बाद पहलेके खान और सामन्तोंकी अधिकांश सम्पत्तिको इवानने अपने अफसरों और पादरियोंमें बांट दिया और लोगोंको अर्धदास बना दिया। कितने ही जारभक्त तारतार सामन्त अभी भी अपनी भूमिके मालिक रहे। इस प्रकार वोल्गाकी जनता चक्कीके दो पाटोंके नीचे पिसने लगी। कजानके विजयके बाद बाश्किरोंने भी इवान-

की अधीनता स्वीकार की। फिर उनसे भी पूर्व साइबेरियाके खान यादगारने १५५५ ई० में मास्कोको कर देना स्वीकार किया। अगले साल १५५६ ई० में अस्त्राखानकी बारी आई। मास्कोकी सेनाको वहांसे खानको भगानेमें कठिनाई नहीं हुई। अस्त्राखान नगर ले लेनेके बाद सारी वोल्गा नदी रूसके हाथमें थी। कास्पियनके तटपर बसा अस्त्राखान अब मध्य-एसिया और ईरानके साथ होनेवाले व्यापारका केंद्र बन गया। उत्तरी काकेशसके छोटे-छोटे अमीर बराबर आपसमें लडते रहते थे, जिससे इवानको मौका मिला, और उसने तेरेक नदीके किनारें एक किला बनवाना चाहा। लेकिन इवान अभी तुर्कीसे झगड़ा नहीं मोल लेना चाहता था, इसलिये तुर्कीके दबाव देनेपर उसने नगर बनानेका ख्याल छोड़ दिया। तो भी रूसी कसाक (स्वतत्र किसान) नहीं रुके और वह तेरेकके तटपर बराबर बने रहे। तारतार सवार लूट-मारको आमदनीका एक वैध साधन मानते थे, खासकर काफिरोके विरुद्ध वैसा करना तो पुण्यका काम था; इसलिये घोड़ोंपर चढे वह बराबर इस ताकमे रहते थे, कि कैसे रूसकी भूमिमें घुसकर वहा लूट-मार मचाई जाये। इसके लिये मास्कोको मैदानी जगहोमें जगह-जगह फौजी चौकियां—स्तानित्सा (थाना)—स्थापित करनी पड़ीं। स्तानित्सामे एक ऊंचा मीनार या वृक्ष होता था, जिसपर बैठा एक सैनिक बराबर देखता रहता। जैसे ही दूर धूल उठती दिखाई पड़ती, वह उतरकर घोड़े-पर चढ़ दूसरी स्तानित्सामे खबर देता, वहांसे दूसरा सवार तीरकी तरह निकलता, इस प्रकार बहुत जल्दी ही खबर मास्कोतक पहुंच जाती, और प्रतिरोधका उचित प्रबंध कर दिया जाता।

कास्पियनतटको लेकर अब रूस केवल स्थलशक्ति नहीं रह गया था, किन्तु कास्पियन वस्तुतः एक महा-सरोवर है, जिसका महासमुद्रोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कमीको दूर करनेके लिये बाल्तिक समुद्र-तटपर अधिकार करना जरूरी था, जिसमें कि रूसका पश्चिमी युरोपके देशोंसे सीधा संबंध हो जाये। जब बाल्तिकतट (लिवोनिया) की ओर इवानने हाथ बढाया, तो लिवोनियाके पड़ोसी लिथुवानिया, स्वीडन और डेन्मार्क चुप रहनेवाले नहीं थे। पर जारकी शक्ति (मन और जनका बल) इतनी बढ चुकी थी, कि समुद्रपारसे आकर लिवोनियाको मदद देना मुश्किल था। जर्मन धर्मसेनाने अच्छी तरह डटकर प्रतिरोध किया, लेकिन ब्रूनेवाल्डमें उसे जो हार खानी पडी, उसके बाद वह फिर संभल नहीं सकी। जनवरी १५५८ ई० में इवानने लिवोनियाके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। कितने ही महीनोंकी लड़ाईके बाद लिवोनियाका बहुत ही महत्त्वपूर्ण बदरगाह रीगा रूसियोंके हाथमें चला गया। उसके बाद यूरियेफ नगरकी बारी आई और आगे १५६१ ई० तक सारी लिवोनिया इवानके हाथोंमें थी। सामने खतरेको देखकर पड़ोसी राज्य रेवेल (तल्लिन) ने स्वीडन और डेनमार्कको अपना संरक्षक बनाया और अवशिष्ट लिवोनियाने पोलराजा तथा लिथुवानियाके शासककी शरणमें जाना पसन्द किया। इस तरह लिवोनिया कई राज्योंमें बंट गया। अब रूसको पोलन्द, स्वीडन और डेन्मार्कके साथ बीस वर्षतक लड़ना था।

लिवोनियामें बराबर सफलता ही नहीं होती रही, बल्कि कभी-कभी रूसियोंको वहां हानि भी उठानी पड़ी थी। ऐसे समयमें बायर फिर अपना सर उठाना चाहते थे। वह जारके हाथमें सारी शक्ति नहीं रहने देना चाहते थे। इवान इस तरहके घरेलू झगड़े पसन्द नहीं कर सकता था, उसने १५६५ ई० में शासन-प्रबंधको नये तरहसे संगठित करना चाहा। बायरोंपर उसको विश्वास नहीं था। एक दिन यकायक वह अपने विश्वास-पात्र शरीर-रक्षकोके साथ मास्को छोड़कर वहांसे सौ किलोमितरपर अवस्थित दुर्ग-बद्ध अलेक्सेन्द्रोवा-स्लवोदोवा गांवमें चला गया। वहांसे उसने संघराजको पत्र लिख बायरोंकी विश्वास-घातकी तालिका बनाकर भेजते हुये सिंहासन छोड़ देनेकी घोषणा की। इसपर मास्कोके नागरिकों, पादरियों और कितनेही बायरोंने जारके पास जाकर मास्को लौटचलनेके लिये बड़ी प्रार्थनाकी। इवानने स्वीकार किया, और मास्को लौटकर उसने विश्वासघाती बायरोंको दंड दे राष्ट्रीय सभा (ज़ेम्स्की सबोर) की बैठक बुलाई। उसके साथ ही उसने "ओप्रेच्निना" (पृथक् राज्य) के नामसे अपने विश्वास-पात्रोंका एक और संगठन तैयार किया, जो जारके हुकुमको बजा लानेके लिये बराबर तैयार रहती थी। इवानने अपने सारे राज्यको दो भागोंमें विभक्त किया—ज़ेम्स्चिना (भूमिक) जिसका शासन बायरोंकी दूमा (संसद्) जारके अधीन रहकर करती थी और ओप्रेच्निना, जो सीधे जारके अधीन

थी। ओप्रेच्निनावाली भूमिमें राज्यके सबसे अच्छे तथा केंद्रीय प्रदेश थे, जिनका सैनिक और आर्थिक महत्त्व सबसे ज्यादा था। स्वय मास्को नगरको भी इसी तरह दो हिस्सोंमें बांट दिया गया था। जेम्स्चिना भागमें बायर और ओप्रेच्निना भागमें वेवोद (राजपुरुष) दोनों साथ-साथ काम करते थे। ओप्रेच्निनाकी राजधानी अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोवोदोवा थी, जहापर जार अपनेको अधिक सुरक्षित समझता था। ओप्रेच्निनाका काम था सामन्तो (बायरों) की शक्तिको कमजोर करना और छोटे-छोटे भूमिपति-सरदारोंका एक वर्ग तैयार करना।

जार इवान निरकुशताको राजाका आवश्यक अधिकार समझता था। उसका कहना था—राजशक्ति भगवान्‌की ओरसे मिली है। जारकी आज्ञाका उल्लघन करना महापाप है। जारकी सभी प्रजा उसकी सेवक है, उसको अपनी प्रजाको क्षमा करने या मारनेका अधिकार है। जारकी शक्तिको सीमित करना अपराध ह, क्योंकि इसके कारण देशकी प्रतिरक्षा खतरेमें पड जाती है।

इवान अपनी शक्तिको इस तरह दृढ करते हुये रूसकी आर्थिक और सैनिक शक्तिको मजबूत करता जा रहा था। इसी समय १५७१ ई० में क्रिमियाके खान दौलत गिराईने एकाएक आक्रमण कर दिया और प्रतिरोधका मौका दिये बिना क्रेमलिन छोड़ सारे मास्कोको जलाकर भारी संख्यामें बंदियों-को दास बनाकर बेचनेके लिये पकड़ ले गया। दूसरे साल १५७२ ई० में जब फिर उसने अपनी लूटमार-को दुहराना चाहा, तो ओका नदीपर ही जेम्स्की वेवोदोंने रोककर मास्कोको बचा लिया। जेम्स्की वेवोद बायर थे। उनकी इस सेवाको देखकर जारको अब ओप्रेच्निना की अवश्यकता नही मालूम हुई और उसी साल उसने उसे तोड दिया। इवानने रूसमें एक धर्म, एक नाप-तोल और एक भूमि-नाप स्थापित कर रूसकी एकताको और आगे बढ़ाया।

१५७६ ई० में पोलन्दके राजा सिगिस्मंद अगस्तसके मरनेके बाद स्तिफन बथोरी राजा निर्वाचित हुआ। उसने जर्मन और हुंगेरियन सैनिकोंकी भरती तथा तोपखानेके विकासद्वारा अपनी शक्तिको बढ़ाकर १५७९ ई०में रूसके जीतनेके लिये अभियान किया। १५८१ ई०में एक लाख सेनाके साथ उसने प्स्कोफको घेर लिया, लेकिन सारी शक्ति लगाकर भी वह उसे ले नहीं सका। इवानको केवल पोलन्दसे ही लड़ना नहीं था, बल्कि स्वीडनने भी इसी समय लिवोनियाके लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्वीडिश सेनाको आसानीसे सफलता मिली। यद्यपि इवान अपने राज्यकी प्रतिरक्षामें सभी जगह असफल रहा, लेकिन प्स्कोफके प्रतिरोधने उसे अवसर दे दिया, कि अच्छी शर्तोंके साथ अपने शत्रुओंसे समझौता कर ले। इवानने लिवोनियाको छोड़ दिया और बथोरीने रूसी नगरोंपरसे अपना अधिकार हटा लिया। इसी तरह स्वीडनके सामने भी उसे समझौता करना पडा। इस प्रकार उसका पचीस साल (१५५८–८३ ई०) का संघर्ष अधिकतर बेकार गया, जब कि १५८४ ई० मे इवान मरा।

इवान सुशिक्षित, दूरदर्शी और कुशल शासक था। वह अच्छा लिख लेता था। लेकिन, कभी-कभी उसपर सनक सवार हो जाती, तो वह क्रूरकर्मा सिद्ध होता, जिसके ही कारण लोगोंने उसका नाम ग्रोज्नी (क्रूर) रख दिया था। एक बार क्रोधांध हो उसने अपने बेट राजकुमार इवानपर डडा चला दिया, जिससे वह मर गया। इवानका शासन रूसके इतिहासके लिये बड़ा महत्त्व रखता है, और देशके शक्तिशाली और एकताबद्ध करनेमें उसकी सेवाओंको आज भी बड़े आदरसे याद किया जाता है।

येरमकद्वारा साइबेरिया-विजय—इवानके शासनका एक महत्त्वपूर्ण काम है, रूसका साइबेरियाकी ओर विस्तार। हम कह आये हैं, कि वासिली III और उसके पिताके समय ही रूसका विस्तार उरालकी जनजातियोंकी ओर हो चुका था। साइबेरियाकी बहुमूल्य समूरी छालें सोना-जवाहरके दाम बिकती अपना विशेष आकर्षण रखती थीं। इसलिये बहुतसे साहसी रूसी शिकारी और व्यापारी उरालकी ओर जा बसे थे, इन्हींमें नवोगोरदसे आया एक व्यापारिक परिवार स्त्रोगनोफ भी था। वस्तुतः स्त्रोगनोफका पूर्वज पहले सुवर्ण-ओर्दूका एक तारतार मिर्जा (राजपुरुष) था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर उसका नाम स्पीरिदोन पड़ा। चौकठेमें मंढ़ी गोलियों (अबकस) द्वारा गिनती करनेका

रवाज चीनमे पहिलेहीसे था, रूसमे इसका रवाज स्पीरिदोनने ही चलाया। मुसलमानसे ईसाई होनेके कारण मंगोलोंने उसे पीट-पीटकर मार डाला, इसी कारण उसके परिवारका नाम स्त्रोगोन (पीटन) पडा। स्पीरिदोनके पौत्र तथा कोस्मेसके पुत्र लूकसने जार वासिली अंधको कजानके खानसे छुड़ानेमें पैसेसे सहायता की थी, इसलिये उसे नमककी खानोंकी इजारादारी मिल गई; जिससे वह बहुत धनी हो गया। वासिलीने ग्रेगोरी और याकूब दो स्त्रोगोनोफ-भाइयोंको कामा नदीके पासवाले प्रदेशमे चुसोवयाके तटपर अपनी रक्षाके लिये दुर्ग बनानेका अधिकार दे दिया था, जिसमें कि वह साइबेरियनों और नोगाई तारतारोसे अपनी रक्षा कर सके। स्त्रोगोनोफ अपने पास सैनिक और तोपें रख जारकी ओरसे इलाकेका शासन-प्रबंध भी करते थे। उन्हे गांवोंके बसाने, नमककी खानोंको चलाने तथा कर देकर मछली और नमकको बीस वर्षतक बेचनेका ठेका मिला था। स्त्रोगोनोफने १५५८ ई०मे चुसोवया नदीपर कंकोरका कसबा बसाया, १५६४ ई०में केरगेदानका किला और कुछ ही साल बाद सेल्बा नदीके किनारे कितनी ही और बस्तियां बसाईं। अंग्रेज ईस्ट इंडिया कम्पनीकी तरह अनेक व्यापारियोंकी कम्पनीकी जगह यहां एक परिवारको व्यापार, राज्यशासन और देश-विजयका अधिकार दे दिया गया था। ईस्ट इंडिया कम्पनीकी तरह कितने ही साहसी तरुण और गुंडे स्त्रोगोनोफके राज्यकी ओर भी आकृष्ट हुये थे। १५७२ ई० मे स्त्रोगोनोफोंने एक विद्रोहमें चेरेमिसों, ओस्तियाकों और बाश्किरोंको जीतकर वहां जारका राज्य घोषित किया। स्त्रोगोनोफोंकी इस तरह साइबेरियामें प्रगतिको वहाका राजा कुचुम खान (१५५५–९५ ई०) अपने लिये खतरेकी बात समझता था, जो जारकी अधीनता स्वीकार करनेवाले यादगार खानको हटाकर अब स्वयं खान बना था। उसने जुलाई १५७३ ई० में बहुतसी रूसी बस्तियोको नष्ट करनेके लिये अपने भाई अलताकुलके पुत्र महमेतकुलको भेजा। महमेतकुल जारकी प्रजा बने ओस्तियाकोंको मार उनके बीबी-बच्चोंको पकड़ ले गया। उसने एक रूसी त्र याक चेबाकोफको भी मार डाला। नोगाई मिर्जा दीन अहमदकी पुत्रीसे अपने बेटे अलीका ब्याह करनेके कारण कुचुमको बहुत अभिमान हो गया था। स्त्रोगोनोफोंने जार इवानसे आक्रमणकारियोंको दंड देनेकी स्वीकृति पानेके साथ निम्न बातोंकी भी आज्ञा मांगी—तोबोल नदीके तटपर बस्तिया बसा नगर और दुर्ग बनाना, तोपखानेका उपयोग तथा सैनिकोंकी भरती करना; एक सीमित समयतकके लिये लोहा, रांगा, सीसा, गंधककी खानोंमें काम जारी करना। जारने प्रार्थनाको स्वीकृत करतें हुये ३० मई १५७४ ई० को आज्ञा दी, कि वह हमारी प्रजा ओस्तियाकों और वोगलोंकी रक्षा करें, और इर्तिश-उपत्यकाके तारतार खानोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करे। राजाज्ञामें स्त्रोगोनोफोके लिये यह भी रियायत दी गई थी, कि वह बुखारावालों और कजाकोंके साथ बिना शुल्क दिये व्यापार कर सकते हैं। जारने अधिकार तो मुंहमांगेसे भी अधिक दे दिया, लेकिन उसे काममे लानेकी दोनों भाई-स्त्रोगोनोफोंमे शक्ति नही थी। ६ सालके भीतर ही दोनो भाई मर गये और उनकी अपार सम्पत्तिका मालिक छोटा भाई सिमाओन स्त्रोगोनोफ-परिवारका मुखिया हुआ, जिसके सहायक याकूब-पुत्र माखिम और ग्रेगोरी-पुत्र निकितस् थे।

काकेशसके उत्तरमे दोन नदीके तटपर बसे स्वतंत्र लड़ाकू किसान—कसाक—ईरान और बुखाराके तरफसे आनेवाले व्यापारियोंके कारवांको लूटना अपना अधिकार समझते थे। उनकी हिम्मत इतनी बढ़ गई थी, कि एक बार उन्होंने ईरानी शाहके पास भेंट लेकर जाते जारके दूतमंडलको भी लूट लिया। उनके मारे निम्न-वोल्गा-उपत्यकामें आतंक छाया हुआ था। १५७७ ई० में इवानने उनके विरुद्ध सेना भेजकर उन्हें तितर-बितर कर दिया। इस समयके भागनेवाले कसाकोंकी एक टुकड़ी अपने आतमन (सर्दार) येरमक तिमोवियेफके नेतृत्वमें कामा नदीकी ओर गई। येरमक (येरमोलाई, हेरमोलोस) को माखिम स्त्रोगोनोफने अपने नये बसाये नगर ओरेलमें इस ख्यालसे नौकर रख लिया, कि उसके दलका उपयोग साइबेरियाके खानके विरुद्ध करेंगे। स्वामीकी आज्ञा पा येरमक अपने आदमियोंके साथ ८ अक्तूबर १५७८ ई० में प्रस्थानकर चुसोवया नदीके किनारे-किनारे चल ८ अक्तूबर १५७८ ई० को सिलवा तक पहुंचा। वहां उसने एक दुर्ग बनाया, जिसका नाम पीछे येरमकोवो-गोरोदिश्चे पड़ा। जाड़ोंमें

येरमक वहीं ठहरा। उसने अपने तीन सौ कसाकोको वोगुलोंके देशमें भेजा, जो कि साइबेरियन खानकी सीमातकका पता लगा लूटके मालसे लदे लौट आये। येरमकके साथ तीन ईसाई पुरोहित और एक साधु भी थे, इसलिये उसे साधारण डाकू नहीं कहा जा सकता। येरमककी इन सफलताओं को देखकर स्त्रोगोनोफने उसे तीन तोपें, प्रत्येक सैनिकके लिये डेढ सेर बारूद, डेढ़ सेर सीसा, तीन पुड (सवामन) आटा, दो पुड बकला, एक पुड बिस्कुट, एक पुड नमक, ढाई पुड मक्खन दिया—आदमी पीछे नमक लगाया हुआ एक सूअर, हर सौ आदमीपर एक पवित्र मूर्तिके साथ एक झंडा भी दिया। रात-दिन तैयारी करनेके बाद कुछ रसदको वही छोड़ येरमकका दल चल पडा। येरमक अपने साथियोके मनोविनोदके लिये बाजे ले जाना नही भूला। कसाक सेनाका मुख्य-सेनापति येरमक था और दूसरे सेनापति थे इवान कोल्जोफ, इवान ग्रोसा तथा वोगदान ब्रियास्गा। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे-छोटे और भी अफसर थे। कसाक सैनिकोंका संगठन शतिक और दशकके रूपमें था। उस समय रूससे ओब नदीकी ओरके रास्ते क्रमशः निम्न प्रकार विभक्त होते थे:—

(१) विम नदी—वुचेगदा—विश्चेरा नदी (कामकी शाखा)—लोसवा नदी—तावदा नदी—तोबोल नदी—ओब।

(२) विम नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—पेचोरा नदी—शोकुर नदी—सिगवा (लपिना)-ओब नदी।

(३) वुचेगदा—इशमा नदी—आलेस नदी—इलिश नदी—सोसवा नदी—ओब नदी।

(४) वुचेगदा—इशमा नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—उसा नदी—सोव नदी—ओब—नदी।

इन रास्तोंमें सबसे अधिक प्रचलित था—सिगवा और सोसवा होकर जानेवाला रास्ता।

इतिहासकार मूलरके अनुसार येरमककी सेनामें पांच हजार आदमी थे, जब कि साइबेरियन पंवाड़ा उनकी संख्या आठ सौ चालीस बतलाता है। इस सैनिक टुकड़ीने रूसके लिये उस विजयका आरम्भ किया, जिसने कुछ ही समयमें सारे साइबेरियाको जारके चरणोंमें डाल दिया।

५ जुलाई १५७६ ई० (भारतमें अकबरके शासनकाल) में येरमक-सेनाने प्रस्थान किया। कुछ जिरियानी लोग उनका पथप्रदर्शन कर रहे थे। चुसोवया नदीकी ऊपरी धार उथली और धीमी थी। येरमक-दल अपनी छोटी नावें लेकर इसी धारसे उत्तरकी ओर बढ़ा। सेराब्रेंकाके तटपर वह जाड़ोंके लिये रुक गये। यहांके निवासी वोगलोंने रूसियोंके साथ अच्छा बर्ताव किया, लेकिन कसाकोंने उन्हें निष्ठुरतापूर्वक लूटकर इसका बदला दिया। उनके इस अत्याचारके कारण आगेके सारे कबीलोंमें आतंक और घृणा पैदा हो गई। १५८० ई०के वसंतके आनेपर येरमक-दल फिर आगे चला। उरालकी नाटी पहाड़ियोंको पारकर वह वरंदाके पनढरपर पहुचा, जो कि ध्रुवीय महासागर तथा कास्पियनमें जानेवाले जलका विभाजक है। जहापर वह जाड़ोंके लिये ठहरे, वहांसे दस वर्स्त (कोश) चलनेपर लड़ाई शुरू हो गई, साथ ही बीमारीने भी शत्रुका काम किया; जिसके फलस्वरूप अब केवल सोलह सौ छत्तीस कसाक बच रहे। लेकिन येरमक और उसके साथी हिम्मत हारकर पीछे लौटनेवाले नहीं थे। वह १२ मई १५८० ई० को रवाना हो जल्दी ही तगिल नदीके तटपर पहुंच गये। पहिलेकी नावोंको वह पीछे छोड़ आये थे, इसलिये कुछ सप्ताह ठहरकर यहां उन्होंने नई नावें बनाईं, जिनपर चढ़कर वह तुरा नदीके तटपर पहुंचे। यहां एक तारतार सरदार पेपंच (पंस) रहता था, जो पड़ोसी वोगलों-का भी शासक था। उसने तीर-धनुष चलाया, लेकिन बारूदी हथियारोंके सामने तीर-धनुष क्या करते? उसके आदमी भाग गये और येरमक-दलने उनके डेरोंको दखल करके लूट लिया। कसाक लूटते-पाटते तुराके किनारे-किनारे आगे बढ़े। चिङ्गी (त्यू-मेन) नगरको उन्होंने बड़ी आसानीसे ले लिया। इस उपजाऊ इलाकेमें उन्होंने शरद्-निवास करके चारों ओर लूट और छालेके रूपमें कर वसूल किया। येरमकने एक टुकड़ीको कुचुमखानके सीमांत तुरा-तोबोलके संगमपर बसे तुरखन किलातक भेजा। वहां एक तरखन (राजकुमार) रहता था। उस समय कुचुमखानका तहसीलदार कुतुगाई भी तरखनके पास आया हुआ था। कसाक आक्रमण कर कुतुगाईको अपने साथ पकड़ ले गये। येरमकने बहुत खातिर करके उससे बहुतसी बातोंका पता लगाया, और उसे इनाम तथा खान, उसकी खातूनों और कुमारोंके

लिये भेंट देकर बिदा किया। येरमककी चालको कचुमने समझ लिया और रूसी पोशाकमें लौटे कुतुगाईकी बातोंपर विश्वास न कर सेना जमा करनी शुरू की।

मई १५८१ ई० में येरमक-दलने तुरासे आगे प्रस्थान किया। थोडा ही आगे जानेपर ६ तारतार-राजकुमारोंके अधीन आई सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। विजय कसाकोंके साथ रही। उन्होंने बड़ी निष्ठुरतापूर्वक शत्रुओंको कतल किया। लूटका जो माल हाथ आया, उसे बाकी बचे हजार कसाक साथ नही ले जा सकते थे। उन्होंने बचे मालको जमीनमें गाड़ दिया और फिर नावपर तोबोल नदीसे आगे बढ़े। नदीके ऊँचे किनारोंपर भुर्ज वृक्षोंके जगल थे, जिसमे छिपकर तारतार लड़ते, लेकिन बन्दूकोके सामने उन्हे भागना पडता। आगे बढ़नेपर तोबोलनदी जहां पतली हो गई वहां तारतारोंने जंजीर बाधकर नावोंको रोकनेकी कोशिश की। येरमक वहां १६ जुलाईको पहुचा। तारतार यसाउल अलीशेरकी एक भी न चली और येरमक उन्हें मारता-पीटता आगे निकल गया। अन्तमें वह तोबोल और तावदा नदीके संगमपर पहुंचे, जहांसे कि रूसका व्यापार-मार्ग जाता था। प्रस्थान करते वक्त येरमक-दलने यहींतक आनेका निश्चय किया था। लेकिन येरमक उतनेसे संतुष्ट होनेवाला नहीं था। आठ दिन वहां ठहरकर उसने कुचुमके राज्यके बारेमें और जाननेके वास्ते फिर आगेके लिये प्रस्थान किया। कुचुमने तारतारों, ओस्तियाकों और वोगुलोंकी एक सेना जमा कर उसे महमेतकुलके अधीन प्रतिरोध करनेके लिये भेजा, राजधानी सिबिरकी रक्षाके लिये नई खाई बनवाई और पास-पड़ोसके तारतार अमीरोंको भी अपने नगरोंको दुर्गबद्ध करनके लिये कहा। चुवास-पर्वतके पास इर्तिश नदीपर कुचुमने मोर्चाबंदी कराई। येरमक जब तावदासे आगे बढ़ते मिर्जाबाखान-गांव (बाखान्स्की-युर्त्त) में पहुंचा, तो महमेतकुल वहां लड़नेके लिये तैयार था। यद्यपि महमेतकुलके पास दसगुने (दस हजार) सवार थे, लेकिन पांच दिनके युद्धके बाद उसे बुरी तरहसे हारना पड़ा। येरमकके सारे अभियानका यही सबसे बड़ा युद्ध था। बारूदी हथियारोंके सामने तीर-धनुषकी क्या पेश जाती? तारतारोंने कुछ नीचे तुरबाके संगमपर फिर असफल प्रतिरोधकी कोशिश की। इसके आगे तोबोल और इर्तिशके सगमसे १६ वर्स्त पहले एक सरोवरपर फिर कुचुमके दर्बारी कराचिनके नेतृत्वमें तारतार जमा थे। उनकी संख्या देखकर कसाक कुछ भयभीत हो लौटनेकी सोचने लगे, लेकिन एक वोगोल बूढ़ेने तारतारोंकी कमजोरीको बतलाकर उनकी हिम्मत बढ़ाई। इस प्रकार येरमक-दल लड़ते-लड़ते आगे बढ़ता गया। १२ अगस्त १५८१ ई० तक अब उनके पास लूटमें बहुत भारी परिमाणमें सोना, चांदी, मोती, जवाहिर, पशु, अनाज और मधु आ गया था। इसी समय ग्रीक ईसाई सम्प्रदायके अनुसार चौदह दिनका व्रत आया। येरमकने चौदह दिनकी जगह चालीस दिन व्रत रखनेका हुकम दिया।

२६ सितम्बरको फिर कसाकोंने प्रस्थान किया। अब वह इर्तिश नदीमें जा रहे थे। उन्होंने तारतार-कुमार अतिककी बस्ती (साउस्त्रोफनी) को आसानीसे ले लिया। सामान नावोंपर लदा था। संख्या भी कम हो गई थी। वह सोचने लगे लौटें या आगे बढ़ें। अन्तमें उन्होंने आगे बढ़नेका ही निश्चय किया। अब वह खानके राज्यके गर्भमें पहुंच रहे थे। कुचुम अपने लोगोंके साथ चुवासके दुर्गबद्ध प्रदेशमें प्रतिरोधके लिये तैयार था। कुचुमका आक्रमण इतना जबर्दस्त था, कि येरमक और कोल्जोफ भी "भगवान् बचाये" चिल्लाते आगे बढ़े। तारतार अपने (शायद अंधे) सरदार को घेरे हुये खड़े थे, इमाम और मुल्लाह "या मुहम्मद" पुकार रहे थे। कसाक मोर्चेके तीन खुले स्थानोंकी ओर दौड़े। महमेतकुल लड़ाईमें घायल हुआ था, जिसे इर्तिशपर नावद्वारा पहुंचाया गया, बाकी सेना हताश हो भागने लगी—भागनेवालोंमें सबसे पहले ओस्तियाक सरदार थे, उनके बाद तारतार। कुचुम कुछ खजानेके साथ इर्तिशकी शाखा इसिम नदीकी ओर भागा। इस युद्धमें एक सौ सत्तर रूसी मारे गये, जिनके लिये बहुत पीछेतक तबोल्स्क नगरके गिर्जामें विशेष प्रार्थना की जाती थी। कुचुमने कजान या बुखारासे लोहेकी दो तोपें मंगवाई थीं, जिन्हें भागते वक्त उसने इर्तिशमें फेंक दिया था। कसाकोंने निकालकर उन्हें विजयकी सौगात बनाया। चुबाश, विजिक, सुसगन, अबालक नगरोंके तारतार-अमीर कुचुमके साथ भाग गये। कुचुम भागते समय थोड़ी देरतक तोबोल नदीके तटपर अविस्थल यालुतुरामें ठहरा था।

७ नम्बर १५८१ ई०को येरमक सदलबल राजधानी सिविरमें दाखिल हुआ। वहांकी छोटी कोठरियोंमें मुश्किलसे खान और उसके अनुचर रह सकते थे। राजधानीकी एक ओर इर्तिश नदी और दूसरी ओर सिविरका नामकी एक छोटी नदिका बह रही थी, बाकी दो तरफ धुस्सकी मोरचेबंदी थी। मकान सारे लकड़ीके थे, इसलिये पीछे उनका कोई अवशेष नहीं रह गया। खानकी राजधानीमें समूरी छाल तथा दूसरी बहुमूल्य वस्तुयें भारी परिमाणमें मिली, लेकिन आहारकी कोई चीज नही प्राप्त हुई।

विजयके तीन दिन बाद देमियान्का नदीसे होते एक ओस्तियाक सरदार येरमकके पास सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये आया। वह अपने साथ समूर, मछली तथा दूसरी खाद्य वस्तुयें ले आया था। येरमकने थोड़ासा कर लेकर खातिर-सम्मान प्रदर्शन करके उसे लौटा दिया। धीरे-धीरे भय छूट गया और इर्तिश तथा तोबोल-उपत्यकाओंके और बहुतसे कबीले भेंट ले-लेकर पहुंचने लगे। लेकिन, अभी सिविरखानने हथियार रख नहीं दिया था। अन्नके अभावमें मछली रूसियोंका प्रधान खाद्य थी। बीस रूसी मछली मारने गये थे। महमतकुलने एकाएक आक्रमण करके उन्हे मार डाला। येरमकने पीछा करके महमतकुल और उसके आदमियोंको इर्तिश नदीके तटपर अवस्थित शम्सिन्स्की गांवमें पकड़कर घोर बदला लिया। कुछ ही आदमी अपने सरदारके साथ वहांसे बच निकले। इस विजयके बाद अमीर इशबरदीने येस्केल्विनियान (तावदा) झीलसे आकर अधीनता ही नहीं स्वीकार की, बल्कि और छोटे-छोटे राजाओंसे अधीनता स्वीकार करानेमे रूसियोंकी सहायता की। सुकलेन (शायद वोगल) सरदारने भी छालोंके रूपमें कर प्रदान किया।

सिविर-विजयकी खबर देनेके लिये येरमकने अपने साथी इवान कोल्जोफको मास्को भेजा, जिसके साथ कुचुमके अधीनता स्वीकार करनेका पत्र भी था। कोल्जोफ जाड़ेके मध्यमें बर्फवाला जूता पहने, समूरके कोटसे शरीर ढांके लम्बी-पतली बेपहियेकी गाड़ीको कुत्तों और बारहसिंगोंसे खिंचवाते इशबरदीको पथप्रदर्शक बना तावदासे पहाड़ोंके रास्ते होते चेरदिन पहुंचा।

इससे कुछ पहले चेरदिनको एक वोगल सरदारने लूटा था। वहांके कमांडर वासिली पेलेपेलिज्ञिनने ज़ारके पास शिकायत भेजी थी, कि स्त्रोगोनोफोंने दोनवाले विद्रोही कसाकोंको शरण दी है, जिन्होंने वोगलोंको लूटा, उसीसे नाराज होकर उन्होंने हमारे ऊपर आक्रमण किया। इसपर जार इवानने नाराज हो २८ नवम्बर १५८२ ई० को स्त्रोगोनोफोंके पास सख्त पत्र लिखकर येरमक तथा उसके साथियोंको बुरा-भला कहा था। लेकिन इसके थोड़े ही समय बाद जब कोल्जोफने अपने साथियोंके साथ मास्को पहुंचकर सिविर-विजयकी खुशखबरी दी, तो जारने अपनी बातको वापस ले लिया और दो मूल्यवान् कवच, एक चांदीका प्याला, अपने पहननेका एक समूरी चोगा, तथा कितने ही और कपड़े येरमकके लिये और दूसरे इनाम उसके साथियोंके लिये भेजकर कोल्जोफको लौटाया।

महमतकुल अभी भी हाथ नहीं आया था। १५८२ ई० के शुरूमें पता लगते ही येरमकने साठ सैनिकोंको उसपर अचानक हमला करनेके लिये भेजा। इर्तिशके किनारेसे नातिदूर तुलार झीलके पास, जहां पीछे कुलारेस्कया स्लोवोदा गांव बसा, एक जगह डेरा डाले पड़े महमतकुलपर कसाक टूट पड़े। अपने बहुतसे आदमियोंको मरवाकर महमतकुल बंदी बना। कुचुमके विरुद्ध महमतकुल अच्छा जामिन मिला, यह समझकर येरमक बहुत खुश हुआ, और उसने उसे बड़ी खातिरके साथ सिविर नगरमें अच्छी तरह रखा। कुचुम भागकर इशिम नदीकी ओर चला गया। वहीं सिविरके पुराने खान बेग-फुलातके पुत्र सैदियतने बुखारासे लौटते समय कसाकोंसे मेल करके अपने पिताके शत्रुपर आक्रमण कर दिया। तबतक सबसे शक्तिशाली अमीर मिर्जा कराचा भी कुचुमका साथ छोड़ चूलिम्स्कोये सरोवर-पर चला गया था। सैदियतके आक्रमणने कुचुमकी हालत और बुरी कर दी।

१५८२ ई० के बसंतमें येरमकने पचास सैनिकोंके साथ बोगदान ब्रियास्गाको इर्तिशके तारतारों तथा ओस्त्रियाकोंसे कर उगाहनेके लिये भेजा। तारतारोंने प्रतिरोध किया। उनकी गढ़ी अरिन्दु-

सियंकाके तटपर थी। कसाकोंने आक्रमण करके उसे तोड दिया। यह तारतार अभी भी मुसलमान नहीं थे। वह अपनी खून लगी तलवारको चूमते थे। सैनिकोंने वहांसे बहुतसे छाले और रसद येरमकके पास भेजी। फिर आगे बढ़ते हुये कितने ही और कबीलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। तुरतेस नदीके तारतार तथा पड़ोसी उबाती तारतारोंने भी अधीनता स्वीकार की। इर्तिशके किनारेके उग्रोंने भी कर देना स्वीकार किया। कसाक-टुकड़ी इर्तिशके साथ-साथ ओब नदीतक जा फिर सिबिर-नगरमें लौट आई। रास्तेमे उन्हें कितनी ही बार लड़ना पड़ा, लेकिन उनका एक भी आदमी नुकसान नही हुआ।

१५८२ ई० की गर्मियोंको येरमकने सिबिरमें बिताया। फिर महमतकुलके साथ बहुतसी भेंट और शुल्ककी वस्तुयें देकर उसने मास्को दूतमंडल भेजा। १५९३ ई० में ब्रियाजगाने जो रास्ता पकड़ा था, उसी रास्ते वह इर्तिशके नीचे ओबकी ओर चले। आगे तावदा नदीके तारतारोंसे भारी लड़ाई हुई, झील लाशोंके मारे गंदी हो गई, इसीलिये उसका नाम पगन्नुये ओजेरो पड़ा।

जारने नवविजित सिबिर (साइबेरिया) देशपर शासन करनेके लिये पांच सौ कसाकोंके साथ सेमिओन दिमित्रि-पुत्र वोल्खोव्स्कीको २२ मई १५८३ ई० को मास्कोसे रवाना किया। वह नवम्बरमें सिबिर पहुंचा। इसके बाद ही साइबेरियामें अकाल पड़ गया। येरमकका अभियान इतना निष्ठुर और ध्वंसकारी था, कि वहां अन्न मिलना मुश्किल हो गया। कितने ही कसाक भूखके मारे मर गये। उसके बाद चर्मरोगने आफत ढाई। वोल्खोव्स्की स्वयं मौतका शिकार हुआ। मिर्जा कराचाने कजाकोंसे सुरक्षित रखनेके बहाने कोल्जोफ और उसके चालीस साथियोंको बुलाकर मार डाला। तारतारों और ओस्तियाकोंने अब आम विद्रोह कर दिया, जिसके कारण कितने ही कर-उगाहनेवाले कसाक मार डाले गये। कराचाने अन्तमें सिबिर नगरको भी घेर लिया। येरमकके ऊपर नगरकी रक्षाका भार छोड़कर अधिकांश कसाकोंने रातके वक्त सोसकानमें पड़े कराचाके डेरेपर छापा मारकर उसे दखल कर लिया। मारे जानेवालों में कराचाके दो पुत्र भी थे, लेकिन कराचा भाग निकलनेमें सफल हुआ। फिर सेना जमा करके तारतारोंने हमला किया। उस वक्त दुश्मनकी गाड़ियोंसे मोरचाबंदी करके रूसियोंने उनका मुकाबिला किया। काफी हानि उठानेके बाद तारतार भाग गये। अब रूसियोंकी धाक चारों ओर जम चुकी थी। पास-पड़ोसके तारतारों और ओस्तियाकोंने समझ लिया, कि प्रतिरोध करनेसे कोई फायदा नहीं हो सकता, इसलिये उन्होंने अधीनता स्वीकार की, सिबिरमें अब खाने-पीनेकी चीजें काफी आने लगीं।

साइबेरियाका नाम इसी सिबिर नगरके कारण पड़ा, यद्यपि रूसी भाषामें सिविरका अर्थ उत्तर (दिशा) भी है। सिबिर नगर साइबेरियाके कीमती समूरोंके व्यापारका बड़ा केंद्र था, इसलिये वहां बुखाराके व्यापारी भी आया करते थे। मुमकिन है, साइबेरियाके समूर और अल्ताईके सोनेके लिये मध्य-एसियासे यहां आनेवाला मार्ग वही पुराना वणिक्पथ हो, जिससे बुखाराके वाणिज्य-सार्थ यहां आया करते थे। बुखाराके कारवांके आनेका समय था। पता लगा, कुचुम उसपर हमला करना चाहता है। येरमकने कारवांकी रक्षार्थ डेढ़ सौ सैनिक भेजे और स्वयं भी वगाई नदीके संगमतक गया। कारवां नहीं आया। येरमक अपने दलको लेकर वेगुइशेव्स्कोये सरोवरपर अवस्थित तारतार-राजकुमार वेगुइशके गढ़पर आक्रमण किया, प्रतिरोध करनेमें प्रायः सारे तारतार मारे गये। इसके बाद येरमकने शमसा और कियांचिक, साला, कोर्दकपर चढ़ाई की। सालामें थोड़ा-सा प्रतिरोध हुआ। कोर्दकके आदमियोंने भागकर जंगलमें शरण ली। तेबेन्दा (तुर्वेदा) के तारतार-राजा येलिगइने अपनी सुंदरी लड़कीका येरमकसे ब्याह करना चाहा, किन्तु येरमकने विवाहसे इन्कार करते हुये उसे अभय वचन दिया। कुचुम इसी लड़कीको अपने लड़केके लिये चाहता था। इशिमके संगमकी लड़ाईमें पांच कसाक मारे गये। बाकी दल इर्तिशके साथ-साथ आगे चला। अउसकाकुल झीलके ऊपर प्रसिद्ध तारतार किला कुल्लरा था, जो कल्मक मंगोलोंसे सीमाकी रक्षाके लिये बनाया गया था। उसके ऊपर पांच रोज घेरा डाल लौटते वक्तके लिये छोड़े कसाक-दलने इर्तिशसे पूरब कुलारचोक झीलके ऊपर अवस्थित ताशदकान नगरपर आक्रमण किया, जो

बिना लड़ाईके ही सर हो गया। फिर शिस् और इर्तिशके संगमपर बसे तारतारोंके अन्तिम गांव शिसतमकपर पहुंचे। कसाक गरीबोंसे कर नहीं थोड़ी-सी भेंट लेते थे, जिसका प्रभाव साधारण जनतापर अच्छा पड़ रहा था। जब वह लौटनेके लिये ताशदकान पहुंचे, तो बुखाराके कारवाके आनेकी खबर मिली। उससे मिले बिना ही कसाक-दल येरमकके नेतृत्वमें सिविरकी तरफ लौटा। वह अपने पहलेके एक डेरे—येरमकोवा पेरेकोफ—के पास एक भीटे (ज़रेवो गोरोदिची) पर पहुंचे, जिसके बारेमें तारतारोका कहना था, कि यह उसी कूसिम-तुरा (कुमारी दुर्ग) का अवशेष है, जिसको कि कुमारियोंने अपने लहंगेमें मिट्टी ढो-ढोकर बनाया था। दुश्मनसे अब कसाक निश्चित हो गये थे, इसलिये बिना सतरी रखे ही उन्होंने वहां डेरा डाल दिया। कुचुमके चरने तीन बन्दूकों और कितने ही कारतूसोंको ले जा कसाकोंके बारेमे उसे खबर दे दी। वह अपने आदमियोंके साथ आकर उनपर टूट पडा। येरमक शत्रुओंकी पांतीको चीरता नदीके किनारे उस स्थानपर पहुंचा, जहांपर अपनी नावोंके होनेकी उसे आशा थी। नाव न पाकर वह नदीमें कूद पड़ा। जारने जिस कवचको उसकी रक्षाके लिये भेजा था, वही उसके मरनेका कारण बना—कवचके बोझके मारे १७ या १८ अगस्त १५८५ ई० को येरमक नदीमें डूबकर मर गया। इस प्रकार एक क्रूर किन्तु साहसी पुरुषकी जीवन-यात्रा समाप्त हुई।

येरमकका शव अबालकसे १२ वर्स्तपर २५ अगस्तको येपंचिन्स्की नामक तारतार गावमें मिला। कवचका एक भाग और ओस्तियाकोंकी देवमूर्तिसे बेलोगोर्स्कके लिये एक घंटा बनाया गया और दूसरे भागको मिर्जा कैदोलको दिया गया। येरमकका चोगा राजकुमार सैदियतको मिला, और तलवार तथा कमरबन्द मिर्जा कराचाको। मुल्लोंने पूजाके डरसे येरमककी कबरको छिपा दिया।

इस लड़ाईसे सिर्फ एक आदमी बच निकला, जिसने सिविरमें जाकर खबर दी। तारतारोंसे भयभीत नेताविहीन एक सौ पचास भूखे कसाक २७ अगस्त १५८४ ई० को सिविर छोड़कर लौटनके लिये मजबूर हुये। कुचुमने उन्हें नहीं छेड़ा और अपने पुत्र अलीको भेजकर सिविरपर फिरसे अधिकार कर लिया। जल्दी ही पुराने खानवंशके राजकुमार सैदियतने अलीको मार भगाया। साइबेरियाका अभियान निष्फल नहीं हुआ, और न रूसियोंका पैर तोबोल नदीके तटपर सिविर नगरतक ही आकर रुक गया।

३०. फ्योदर, इवान IV-पुत्र (१५८४-९८ ई०)

इवान iv ने क्रोधांध हो अनजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र इवानको मार दिया। क्रूर इवानके मरनेके समय उसके दो पुत्र जीवित थे, जिनमेंसे फ्योदर उसकी पहिली बीबी अनस्तासिया रोमनोवासे था और दूसरा शिशु दिमित्रि उसकी अन्तिम स्त्री मरिया नागायासे। अनस्तासिया रोमनोफ वंशकी थी, जो कि जल्दी ही रूरिक-वंशका स्थान लेनेवाला रूसका अंतिम राजवंश बनने जा रहा था। फ्योदर रूसका जार बना और जारकुमार दिमित्रि अपनी मां और नानावंश (नगाय) के साथ उगलिच नामके छोटेसे नगरमें एक छोटी-सी जागीर देकर निर्वासित कर दिया गया। दिमित्रि बहुत दिनोंतक नहीं जिया, और १५९१ ई०में मर गया। फ्योदर चिररोगी, बहुत दुर्बलबुद्धि किंतु साधु स्वभावका आदमी था। वह अपना सारा समय भगवानकी भक्तिमें बिताता। गिर्जेके घंटोंको बजाते उनकी टुन-टुनकी आवाज सुननेमें उसे बड़ा आनंद आता था। लोग खुलेआम उसे मूर्ख कहते थे। राज्यका शासन जारके संबंधियों और उसके कृपापात्र बायरोंके हाथमें चला गया, जिनमें बायर बोरिस फ्योदर-पुत्र गदुनोफ जल्दी ही सबसे अधिक प्रभाव-शाली बन गया। गदुनोफ-परिवार पुराने रूसी राजुल-वंशोंमेंसे नहीं था, इसलिये वह उच्चकुलीन होनेका दावा नहीं कर सकता था। लेकिन इवान iv के अन्तिम दिनोंमें बोरिसका प्रभाव बहुत बढ़ गया था, जिसमें उसकी बहिन इरिनाका जार फ्योदरसे ब्याह होना भी एक कारण था। वैसे बोरिस गदुनोफ बड़ा ही योग्य और गुणीपुरुष था, यद्यपि उसने ईसाई-धर्मके अनुसार पुस्तकोंकी शिक्षा अच्छी तरह नहीं पाई थी। कुलीन बायर पुराने रीति-रवाजोंका पालन करना आवश्यक समझते थे, किंतु बोरिस उनकी पर्वाह नहीं करता था। वह विदेशियोंसे मिलने-जुलनेमें जरा भी आनाकानी नहीं करता था।

अपने बहनोईकी ओरसे शासनका भार संभालते ही उसका पहला काम था, अपने काममें बाधा देनेवाले बायरोंको दरबारसे निकाल बाहर करना। वह स्वयं विदेशी राजदूतोंसे मुलाकात करता और अपने घरमें राजदरबार जैसा ठाट रखता था। गदुनोफ ग्रीक चर्चके महत्त्वको समझता था। इस चर्चका सबसे बड़ा महन्त या महासंघराज कान्स्तन्तिनोपोलमें रहता था, जो कि १४५३ ई० में सुल्तान मुहम्मद उसमानअली तुर्कके हाथमें चला गया था। यह कैसे पसंद किया जा सकता था, कि ईसाई-धर्मके एक बड़े सम्प्रदायका महागुरु ईसाई-विरोधी सुल्तानके मातहत रहे। १६ वीं सदीके अन्तमें महासंघराज जब-तब मास्को आने लगा था, जहां उसे बहुत भेंट-पूजा मिलती थी। इसी तरहकी एक यात्रामे महासंघराज जेरेमिया जब मास्को आया, तो गदुनोफने उससे रूसी चर्चके लिये एक पृथक् संघराज होनेकी स्वीकृति ले ली। १५८९ ई० में इस प्रकार बना प्रथम रूसी संघराज योब गदुनोफका अनुगामी था।

जार फ्योदरके शासनके अन्तिम वर्षोंमें सारा शासनयंत्र बोरिस गदुनोफके हाथमें चला गया। गदुनोफकी सफलताओंने भी उसके प्रभावको बढानेमें सहायता की। लिवोनियाके युद्धमें रूसके हार खानेपर बाल्तिक तटको स्वीडनने दखल कर लिया था, जिसके कारण पश्चिमी युरोपसे रूसका सीधा संबंध नहीं रह गया था। गदुनोफने इसके लिये १५९० ई० में स्वीडनसे लड़ाई शुरू की, और १५९५ ई० की संधिके अनुसार स्वीडनको मजबूर होकर फिनलन्द खाड़ी और लदोगा-सरोवरके तटके भूभाग (इवान-गोरद, याम, कोपोरये, करेला) को दे देना पड़ा। उस समय राज्यके सामने किसानोंकी एक बड़ी समस्या थी—रूसी किसान भूमिपतियोंके शोषण और अत्याचारके कारण अपने गावोंको छोड़ दक्षिण-पूर्व और उत्तरकी सीमांत-भूमिमें बसते जा रहे थे, जिसके कारण खेतोंका जोतना मुश्किल हो गया था। उन्हे मजबूर करके रखनेके लिये स्वीडनसे युद्ध होते समय (१५९२-९३ ई०) ही किसानोंकी गणना की गई थी। उस वक्त जो किसान जिस जमींदारके अधीन दर्ज किये गये थे, उन्हें १५९७ ई० की राजघोषणाके अनुसार वहीं रहनेके लिये मजबूर किया गया।

१५९८ ई० में जार फ्योदरके मरनेके साथ प्राचीन रूरिक-राजवंश समाप्त हो गया। जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय परिषद्) ने १५९८ ई० में बैठक करके बोरिस गदुनोफको नया जार चुना।

रूरिक-वंशने रूसके लिये बड़ा ही ऐतिहासिक काम किया। इसीके शासनकालमें जनयुगके अवशेषोंको खतम करके रूसमें एक शक्तिशाली सामन्ती व्यवस्था कायम की गई, फिर रूसके भिन्न-भिन्न टुकड़ों-में बंटी रियासतोंको इकट्ठा करके बृहत्तर रूस देशके निर्माण करनेका प्रयत्न किया गया। इसमें मंगोलोंने आकर दो शताब्दियोंतक कुछ बाधा जरूर डाली, लेकिन अन्तमें फिर एकीकरणका काम बहुत जोरसे शुरू हुआ और रूसकी सीमाएं उत्तरमें फिनलन्दकी खाड़ी, पश्चिममें बाल्तिक-समुद्र, दक्षिणमें कास्पियन सागर और पूरबमे सिबिर नगरतक फैल गईं। दक्षिणी सीमा कालासागरतक पहुंच जाती, लेकिन कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोंने (१४७५ ई० में) क्रिमियाके खानको अपने अधीन करके उधरका रास्ता रोक दिया। यद्यपि आगेकी पौन शताब्दी रूसके लिये बहुत अच्छी साबित नहीं हुई, लेकिन साथ ही एक बार जहांतक वह अपने पैरोंको रख चुका था और जहां जनताका स्वार्थ सहायता देनेके लिये मौजूद था, वहांसे उसे पीछे हटाया नहीं जा सकता था। रूसको और आगे ले चलनेका काम अब प्रथम पीतरको करना था, जो कि औरंगजेबका तरुण समकालीन था। अकबरकी मृत्युसे सात वर्ष पहले फ्योदरका देहान्त हुआ। देशके एकीकरण और दृढ़ताके लिये जैसे अकबरने भारतमें काम किया था, वही काम रूरिक-वंशके १६ वीं शताब्दीके जारोंने किया। अकबरके कामको औरंगजेबने बेकार कर दिया, लेकिन रूसके सौभाग्यसे उसे जार पीतर जैसा दूरदर्शी शासक और चतुर सेनानायक मिला, जिसने रूसके पिछड़ेपनको हटानेका काम बड़ी सफलतापूर्वक किया।

रूरिक-वंशवृक्ष
(.....९११-१५९८ ई०)

१. रूरिक (.....९११-?)
- २. ओलेग (९११ ई०)
- ३. ईगर (....९४५) = ४. ओलगा (९४५-५७)
  - ५. स्व्यातोस्लाव I (९५७-७३)
    - यारोपोल्क
    - ओलेग
    - ६. व्लादिमिर I (९७३-१०१५)
      - ७. स्व्यातोपोल्क (१०१५-१९)
      - ८. यारोस्लाव (१०१९-५४)
        - ९. इज्यास्लाव (१०५४-७३)
          - १०. स्व्यातोपोल्क (१०७३-१११३)
        - स्व्यातोस्लाव II (मृ० १०७६)
          - ओलेग (मृ० १११५)
            - स्व्यातोस्लाव (मृ० ११६४)
              - ईगर (वीर) (मृ० १२०२)
        - व्सेवोलद
          - ११. व्लादिमिर II मनोमाख (१११३-१५)
            - मिस्तस्लाव
            - १२. युरी I दीर्घबाहु (सुज्दल) (-११५७)
              - १३. अन्द्रेइ (११५७-७४)
              - १४. व्सेवोलद (११७६-१२१२)
                - १५. युरी II (१२१२-३८)
                - १६. यारोस्लाव II
                  - १७. अलेक्सान्द्र नेव्स्की (–१२६३)
                    - १८. दानियल (मास्को) (१२६३-१३०३)
                      - १९. युरी III (१३०३-२५)
                      - २०. इवान I खलीता (१३२५-४१)
                        - २१. सेमयोन (१३४१-५३)
                        - २२. इवान II (१३५३-५९)
                          - २३. दिमित्रि (१३५९-८९)
                            - युरी
                            - २४. वासिली I (१३८९-१४२५)
                              - २५. वासिली II अंध (१४२५-६२)
                                - २६. इवान III (१४६२-१५०५)
                                  - २७. वासिली III (१५०५-३३) = २८. येलेना (१५३३-३८)
                                    - २९. इवान IV जार (१५३८-५४)
                                      - ३०. फ्योदर (१५८४-९८)
                  - यारोस्लाव (त्वेर) (मृ० १२७२)

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४–१७४७ ई०)

अध्याय १

चगताई-वंश

(१२२२–१३७० ई०)

छिङगिस्के मरने के बाद उसका राज्य चार उलुसोमे विभक्त हुआ—(१) जू-छि-उलुस या सुवर्ण-ओर्दू (किपचक-राज्य), जिसके बारेमें अभी हम कह चुके है, (२) ओगोताई-उलुस, चगताईके उत्तर-पूर्वमें था, जिसके खान एमिल और कुबानमे रहते थे, (३) तूलुइ-उलुस, जो कि ओगोताई उलुसके उत्तरमें था और (४) चगताई (जगताई, जगदाई)-उलुस जिसके हाथमें अन्तर्वेद, सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान था। इन चारों उलुसोंके अतिरिक्त कुबिलेइ खानके अनुज खुलाकूने ईरान, इराक, शाम और आजुरबाइजानमें अपना एक अलग राजवंश कायम किया था। छिङ-गिस्ने ही अपना राज्य चार भागोंमें विभक्त करके चारों पुत्रोंको दे दिया था, लेकिन साथ ही चारों उलुसोंके खानोंको एक कआन (महाखान) के अधीन रहनेकी व्यवस्था भी कर दी थी। यह व्यवस्था बहुत-कुछ १३वी शताब्दीके अन्त (कुबिलेके मृत्युके समय १२९४ ई०) तक चलती रही, जिसमें सबसे अधिक बाधा ओगोताइ और चगताई-उलुसोंकी ओरसे दी गई।

१. जगताई, छिङ-गिस्-द्वितीय पुत्र (१२२७–४२ ई०)

छिङगिस्ने अपने द्वितीय पुत्र चगताई (जगताई, छगताई) को जो भूभाग दिया था, उसमें अन्तर्वेद (आमू और सिर-दरियाके बीचका भाग), काशगर, बदख्शां, बलख—अर्थात् उइगर और, अल्ताई और हिन्दूकुश पर्वतमालाओंके बीचके देश शामिल थे। चगताई-भूमिमें आजकल चीनी-तुर्किस्तान, सोवियत कजाकस्तान-किर्गिजस्तान-उज्बेकिस्तान-ताजिकिस्तान-तुर्कमानिस्तान और अफगानिस्तान शामिल है। चगताईवंशने ७७१ हि० (१३७० ई०) तक १४६ वर्ष राज्य किया, फिर उसका स्थान तेमूर और उसके वंशजोंने लिया। लेकिन, तेमूरकी संतानोंने अबू-सईद (१४५१–६९ ई०) तक चगताई-वंशके किसी व्यक्तिको गुडिया खान बनाकर कायम रक्खा। जिस तरह अब्बासी खलीफोंकी राजशक्ति खतम हो जानेपर भी बगदादमें उन्हें कठपुतली खलीफा बनाकर कायम रक्खा जाता रहा, उसी तरह छिङ-गिस्के वंशकी पवित्रताका खयाल करके चगताई खानोंको समरकन्दकी गद्दीपर रखा जाता रहा। चगताई-उलुस १२२७ ई० से १३१८ ई० तक रहा। उसके बाद राज्यशक्तिको हथियानेके लिये मंगोल और अ-मंगोल, स्वदेशी और विदेशी दलोंका झगड़ा उठ खड़ा हुआ, जिसमें अन्तर्वेदमें स्वदेशी तुर्कोंका पलड़ा भारी हो गया और इस प्रकार अन्तर्वेद (मावरा-उन्-नह्र) और मुगोलिस्तानके दो राज्य पैदा हो गये। चगताई खानकी राजधानी अल्मालिक इलि-उपत्यकामें वर्तमान कुलजा नगरके पास थी।

छिङ-गिस्के अन्तःपुरमें पांच सौ खातूनें (रानियां) और बेटियां थी। हरेक बड़े विजयमें हाथ लगी सुंदर राजकन्याओंमेंसे एकको हरएक सेनापति अपने कआनके पास भेजना आवश्यक समझता था। बापकी तरह उसके लड़कोंके भी बड़े-बड़े रनिवास थे, तो भी प्रमुख रानियां (खातूनें) मगोल-वंशकी ही होती थीं।

चगताई खान अपने पिताके यस्सा (नीतिशास्त्र) का पंडित तथा उसपर अक्षरशः चलनेवाला माना जाता था। यस्साके अनुसार घरेलू जानवरोंको जबह (हलाल) करना या दिनमें बहते पानीमें नहाना वर्जित था। जगताईने यस्साके विरुद्ध आचरण करनेपर एक मुसलमानको मृत्युदंड दे दिया था। उसका शासन दृढ़ किंतु न्यायानुमोदित था। उसके राज्यमें डाकका बहुत अच्छा प्रबन्ध था। यद्यपि वह जबर्दस्त

पियक्कड़ था, किंतु राजकाजके देखनेमें गफलत नहीं करता था। लोग उसके कठोर नियमोंको भी मानते, क्योंकि वह भरसक अन्याय नहीं होने देता था। उसके यहा सभी धर्मों और जातियोंके लोग समान थे। समान दृष्टिसे देखे जानेका यह अर्थ नही था, कि मगोलोंके समान ही दूसरे लोगोंको भी माना जाता था। उसकी प्रजामें अधिकाश मुसलमान थे, इसलिये उसने मुसलमानोंको बड़े-बड़े दर्जे दिये थे; तो भी बड़े पदोंपर मगोलोंके बाद तुर्कोंको अधिक देखा जाता था। इसका कारण भी था--केवल दक्षिणके थोड़ेसे अशको छोड़कर उसकी प्रजा अधिकांश तुर्क थी। तुर्कों और उनके सरदारोंने तुर्क जातिके इतिहासमें प्रवेश करनेके समय (६ठी सदीके मध्य) से ही सैनिक जीवनको नहीं छोड़ा और वह अब भी जब-तब घुमन्तू जीवनका भी अभिनय करते थे, क्योंकि मध्य-एसियामें घुमन्तू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझा जाता था। चगताई और जू-छिके उलुस तुर्कोंके ऊपर शासन करते थे। अंतमें इन उलुसोंके मंगोल भी इन्ही तुर्कोंमें विलीन हो गये। लेकिन, चगताई खानके लिये अभी वह समय दूर था। चगताईने यलजपुत्र मसूदबेगको अन्तर्वेदका शासक नियुक्त किया था, जो कि तुर्क मुसलमान था। मसूद पहले चीनमें भी शासक रह चुका था। उस वक्त राज्यमें व्यक्ति-कर आमदनीका एक बड़ा स्रोत था, जो सम्पत्तिके अनुसार प्रतिव्यक्ति एकसे सात तंका (१.१० जूयेनी) होता था। सभी धर्मोंके पुरोहित करसे मुक्त थे।

अपने गुरु तातातुगाकी शिक्षासे चगताईने फायदा उठाया था। गुरुने शिक्षा दी थी---शासकको न्यायपरायण और उत्साही होना चाहिये। समरकन्द तथा बुखाराकी जगह अल्मालिकको राजधानी बनाना चगताईके बाद उसके वंशजोंको भी पसंद आया, क्योंकि वहां उनके बहुसंख्यक घोड़ों और पशुओंके चरानेके लिये विशाल चरागाहें थीं। अभी राजशक्ति मंगोल तलवारोंके ऊपर निर्भर थी, जो ऐसे खानको कभी नहीं पसन्द करते, जो पूर्वजोंके जीवनको छोड़कर नगरके विलासी जीवनमें फंस गया हो। मंगोलोंका शासन आर्थिक शोषणका था ही, इसलिये सारी निष्पक्षता दिखलानेपर भी मुल्ला मंगोल काफिरोंके विरुद्ध लोगोंको भड़का दिया करते थे, जिसके कारण विद्रोह हो जाना आसान था।

बुखारा-विद्रोह (१२३२ ई०)---१२३२ ई० में बुखारामें मंगोलोंके विरुद्ध जो विद्रोह हुआ, उसका नेता एक छलनी बनानेवाला महमूद था। वह बुखारासे तीन लीग (योजन) दूर तारावमें पहले-पहल १२३२-३३ ई० (६३० हि०) में प्रकट हुआ। उसने दावा किया--अल्लाने मुझे दिव्य शक्ति देकर भेजा है। पहले शायद भूत भगानेका काम करके उसने अपने प्रति लोगोंके मनमें विश्वास पैदा किया। मुसलमान हो जानेपर भी पुराने भूत-प्रेत लोगोंके मनसे गये थोड़े ही थे---मुसलमान भी जिन, शैतान आदिपर विश्वास करते थे। महमूदकी दिव्यशक्तिको पहले उसकी बहिनने स्वीकारा, फिर उसके दूसरे कितने ही अनुयायी बने। सब जगह हल्ला हो गया है, कि संत महमूदके पास जो जाता, उसकी बीमारियां छूट जाती है। फिर अंधे-लूले-लंगड़े बड़ी भारी संख्यामें उसके पास पहुंचने लगे। जब २०वीं शताब्दीके मध्यमें उड़ीसाके नैपालबाबाके पास लोग रेलों-मोटरों-विमानोंसे दौड़ने लगे, तो आजसे सवा सात सौ वर्ष पहलेके अतर्वेदके लोगोंका ऐसा करना कौनसी आश्चर्यकी बात थी? महमूदका यश तारावसे चलकर राजधानीमें पहुंचा। मुल्ला शम्शुद्दीन महमूदने पहले हीसे भविष्यद्वाणी लिख छोड़ी थी, कि मुसलमानोंका मुक्तिदाता तारावमें पैदा होगा। धर्मांध महमूदने जल्दी ही देखा, कि उसके अनुयायियोंकी संख्या बहुत अधिक हो गई है और वह मंगोलोंके विरुद्ध उठ खड़े होने के लिये उसकी आज्ञा भर चाहते हैं। इस परिस्थितिको देखकर बुखाराके राज्यपाल और दूसरे अधिकारी घबड़ा उठे। उन्होंने उस समय खोजंदमें अवस्थित मसूदबेगके पास सलाहके लिये खबर भेजी और इधर नये पैगम्बरको दुआ देनेके लिये बुखारा बुलवाया। मौका पाते ही उस पागलको मरवा डालनेका निश्चय किया गया था, किंतु महमूद उतना पागल नहीं था। उसे षड्यंत्रका पता लग गया। उसने साथ चलते रक्षी मंगोलोंकी ओर मुंह करके एकाएक उनके विश्वासघातके लिये भर्त्सना करते कहा--मैं तुम सबको इसी समय अंधा कर देता हूं। मंगोल रक्षियोंके दिलमें इसका भारी भय छा गया। उन्होंने इसे उसकी दिव्यशक्तिका प्रमाण समझा। बुखारामें महमूदका स्वागत

राजसी ढंगसे हुआ। उसे सल्जूकी सुल्तान संजरके बनवाये महलमें ठहराया गया। दर्शन करनेवालों की भारी भीड़ लगने लगी। लोग यह सोचकर अपनी जीभ निकाले खड़े होते, कि महमूदके थूककी एक बूंद हमारे मुंहमे चली जाये और हम सारे रोगों और आफतोंसे मुक्त हो जायें। बुखाराके मुल्लों और अमीरोंने इस अद्भुत संतको अपनी दूकानदारी और अधिकारके लिये खतरनाक समझा। उन्होंने मंगोलोंको उसे मार डालने की सलाह दी। सब होते भी महमूदको उनके फंदेसे निकलकर पड़ोसके पहाड़में भाग जानेमें कोई अड़चन नहीं हुई। लोग पैगम्बरके पीछे-पीछे चले। किसानोंने हल्ला उड़ाया, कि पैगम्बर हवासे उड़कर उस पहाडमे चला गया। लोगोंकी भक्ति और भी बढ़ गई। महमूदने जब देखा, कि शासक उसका प्राण लेनेके लिये तैयार है, तो उसने हथियार उठानेके लिये हुकुम देते हुए कहा "अब समय आ गया है, कि काफिरोंको कतल कर दिया जाय।" थोड़े ही समय बाद महमूद पैगम्बर और सुल्तानके रूपमें एक भारी अंधविश्वासी भीड़को लिये बुखारामें दाखिल हुआ। उसने मुल्ला शम्शुद्दीन महमूदको बुखाराका सदरे-जहान नियुक्त किया, और लोगोंको हुकुम दिया, कि धनियों तथा

७·(२।२।१२) चगताइ राज्य
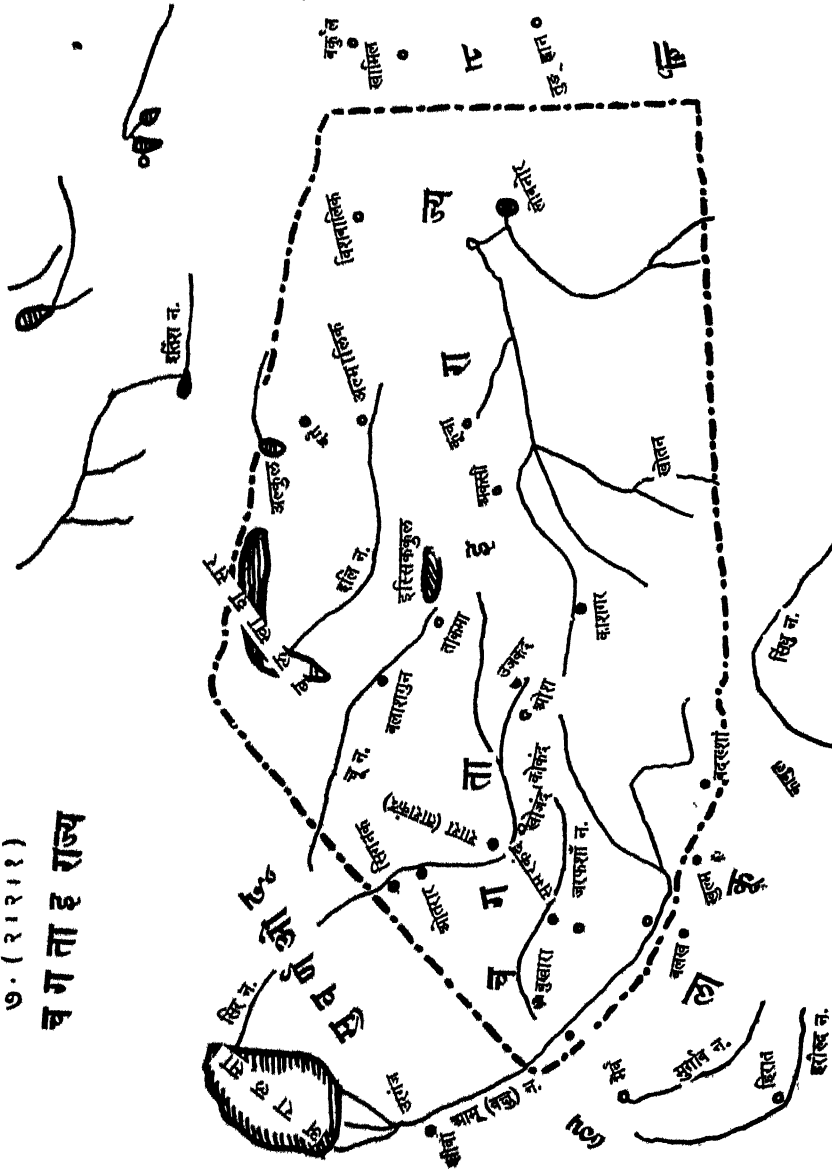
अमीरोंको लूटो। अपने भक्तोंको उसने विश्वास दिलाया--"मेरे पास एक गुप्त सेना है, जो हवामें मेरे हुकुमकी प्रतीक्षा कर रही है। देखो उन हरितवस्त्रधारियोंको और उन दूसरे श्वेतवस्त्र-धारियोंको; जैसे ही मै संकेत करूंगा, वह हमारी मददके लिये उतर आयेंगे।" भीड़मेंसे एक आदमीने कहा, "हां, मै देख रहा हू।" फिर सभीने वही बात दुहराई। महमूदने अगले जुमा (शुक्रवार) को अपने नामका खुतबा पढ़वाया। उसने धनियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली। बुखाराकी सुंदरियां बहुत भारी संख्यामें उसके घरमें चली आईं। बुखाराके धनी-मानी करमीनाकी ओर भाग गये, और वहांसे मगोल सैनिकोंको लेकर फिर बुखारा आये। महमूद अपने एक शागिर्दके साथ निहत्था ही उनसे मिलने चला गया। अंधविश्वासियोंकी भारी भीड़ भी पीछे-पीछे थी। इसी समय अकस्मात् धूल लिये आंधी उठी, जिसमें आदमी एक-दूसरेको देख नही सकते थे। चमत्कारोंपर विश्वास करने-वाले मंगोल डरके मारे भागने लगे। बुखारियोंने पीछा करके उनमेंसे बहुतोंको मारा, लेकिन इसी समय उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, कि उनका पैगम्बर मारा जा चुका है। महमूदका स्थान उसके भाई ने लिया, लेकिन वह एक ही सप्ताह शासन कर सका। इसी समय मंगोल सेनापति इल्दिर नोयन और जेङगिन कुरजी काफी सेना लेकर आ पहुंचे। पहले ही आक्रमणम महमूदके अनुयायी भाग खड़े हुए। मसूदबेगने मंगोलोको नगर लूटनेसे तबतक रोके रखा, जबतक कि खानके पाससे आज्ञा न आ जाय। चगताईने लूटनेकी आज्ञा नहीं दी।

मंगोलों और उनके सरदारोंके बारेमें कितने ही लोग ख्याल करते हैं, कि वह बर्बर थे, लेकिन एक युरोपीय लेखक बम्बेरीका कहना है--"मंगोलोंका संबंध ऐसी जातियोंसे हुआ था, जो सभ्यताके उच्च तलपर थीं। अपनी जन्मभूमि (मंगोलिया) की तरहकी खुली जगहोंके लिये उनके दिलोंमें भारी प्रेम था। नगरों और बस्तियोंको वह भ्रष्टाचार और नामर्दीका स्रोत मानकर बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।" उनके लिये आदर्श जीवन था पशुपालोंका--अर्थात् अपने पशुओंको लिये सफेद नम्देके तम्बुओं में खुली जगहोंमें रहना। बस्ती और नगरके वासियोंको वह तबतक छेड़ना नहीं चाहते थे, जबतक कि वह आज्ञाकारी रहें। बल्कि, ऐसे लोगोंके लिये वह युद्धध्वस्त नगरोंको फिरसे बसानेमें सहायता और प्रोत्साहन देते थे। इराक के जैसे कितने ही शहर उनकी लड़ाइयोंके कारण उजड गये थे, लेकिन मंगोलों ने वहांके लोगोंको घुमन्तू जीवनकी ओर लौटानेका प्रयत्न नहीं किया। काशगर प्रदेशकी अवस्थामें कुछ भेद था। मंगोलोंने जल्दी ही इस प्रदेशको अपने हाथमें कर लिया था। तरिम-उपत्यका उस समय उइगुरोंकी थी, जो बौद्धधर्मी रह संस्कृतिमें अधिक विकसित हो चुके थे। वह अब घुमन्तू नहीं बल्कि बस्तीमें रहना पसन्द करते थे, और उन्होंने चीनी तुर्किस्तानके नागरिक जीवनको स्वीकार कर लिया था। उइगुरों (कराखानियों) के उत्तराधिकारी कराखिताई भी जल्दी ही नागरिक जीवनके प्रभावमें आ गये थे। लेकिन, जिस तरह पश्चिमी तुर्किस्तानमें नगरोंके जीवनको फिरसे स्थापित करनेमें चगताइयों ने सहायता की, वही बात पूर्वी तुर्किस्तानमें नहीं हुई। वहां उजड़े हुए नगर फिर नहीं बस सके, न टूटी नहरें फिरसे जारी की जा सकी, जिसके कारण हरे-भरे गांव और सुंदर नगर बालुकासमुद्रमे डूब गये।

मंगोलोंके शासनकालमें दूसरी विद्याओंका प्रचार और विकास रुक गया, हां, इस्लामिक धर्म-शास्त्र और उससे भी ज्यादा सूफी-संतोंका प्रभाव अवश्य बढ़ा। इस समयसे सूफी-संतों (खोजों,शेखों) का प्रभाव इस भूमिमें इतना जबर्दस्त स्थापित हो गया, जितना किसी दूसरे इस्लामी देशमें देखा नही जा सकता। इसी समयसे इन संतोंके परिवारोंने स्थायी तौरसे देशका धार्मिक और सांस्कृतिक नेतृत्व अपने हाथोंमें ले लिया। संतों और सूफियोंकी ओर लोगोंका इतना झुकाव शायद इसीलिये हुआ कि मंगोलोंने विजयी इस्लामको धूलमें मिला दिया था। संसारमें किसी ओरसे आशा न रह जानेपर अब लोगोंका ध्यान सूफियोंके चमत्कारपूर्ण रहस्यवादी उपदेशों और विचित्र जीवनोंकी ओर खिच गया।

चगताईके शासनके आरम्भ होते ही मंगोलोंद्वारा ध्वस्त नगरों और गांवोंको फिरसे आबाद करनेके लिये सबसे जरूरी बात थी, भयभीत किसानों और कारीगरोंको समझा-बुझाकर काममें लगाना। हम देख चुके हैं, नगरोंके भीषण नर-संहारके समय भी मंगोलोंने कारीगरोंको प्राण-दान देकर

उनके दिलमे विश्वास कायम करनेकी कोशिश की थी। चगताई-शासकोंके सहानुभूतिपूर्ण भावने भी लोगोंके दिलमें विश्वास पैदा किया। मसूदबेग चगताई खानका परम विश्वासपात्र अधिकारी था, तो भी उसके अधीनस्थ नगरोंमें कितने ही मंगोल शासक भी नियुक्त थे, जैसे समरकन्दका शासक जोङ-सान ताउ-फू और बुखाराका बुका-बोशा, जिनमें पहला शायद चीनी था। चगताईका वजीर हेजिर तुर्क था। मसूदने लोगोंकी सहानुभृति प्राप्त करनेके लिये मदरसे भी कायम किये। १२३४ ई० मे बुखाराके मसूदबेग और शेरकुली मदरसोंमें हजार विद्यार्थी पढ़ते थे।

गर्मियोंमें चगताई खानका निवास कूयाश (सूर्य) अलमालिकके पास कोक (नील) पर्वत मे रहता था। जाड़ोंमे वह मेराउरिक (? मेराउजिक)–इलामें रहता, जो इलिके तटपर था। कूयाशके पास चगताईने कुतुलुग (पवित्र) गांव बसाया था। चीनी पर्यटक चान-चुनके अनुसार चगताई का ओर्दू इलि नदीके दक्षिणी किनारेपर—शायद उसी जगह जहां कि उसके उत्तराधिकारीका ओर्दू—उलुस-इफ या उलुस-इकमें था। चगताईका इल-अलरगू (सबसे बडा नगर) अलमालिक था। चगताई-की उइगुर प्रजामें अब भी कुछ बौद्ध थे, और कुछ ईसाई। इन दोनों हीके साथ मुसलमानोंकी सख्त दुश्मनी थी। अभी सप्तनदके मुस्लिम जिलोंमें भी काफी गैर-मुस्लिम रहते थे—उदाहरणार्थ, चू-उपत्यकाके नेस्तोरी। १२५३ ई० में जब रुब्रिक इधरसे गुजरा, तो कयालिकसे उत्तर तीन फ्रासीसी मील (ल्यू, १३॥ वर्स्त) पर उसने एक गांव देखा, जिसके सारे निवासी ईसाई थे और वहांपर उनका गिर्जा भी था। इस्सिकुल सरोवरके तटपर भी इसी नामके एक नगरमे १४वी सदीमें अर्मनी साधुओंके मठ थे। मार्को पोलोके अनुसार चगताई स्वयं ईसाई था। जो भी हो, मुसलमानोंको जानवरोंके हलाल करने और बहते पानीमें नहानेके लिये मृत्युदंड देना, उन्हें भड़कानेके लिये काफी था। इसी भावको प्रकट करते चगताईकी मृत्युपर किसी मुसलमानने पद्य लिखा था—

"जिसकी डरसे कोई पानीमें नहीं उतरता था,
वह डूब गया गहरे समुद्रमें।"

आज्ञाका विरोध करनेके लिये चगताईके हुकुमसे ६२६ हि० (३० XI १२२८–२१ X १२२६ ई०) में मुल्ला अबू-याकूब-यूसुफ सैकाकी मारा गया, जिसकी कब्र १६वीं सदीमें भी तेकेस नदीके तटपर मौजूद थी। लेकिन, यह सब होते हुए भी चगताई मुसलमानोंका द्वेषी नही था, यह इससे भी सिद्ध है, कि उसके बहुतसे राजविभागोंके प्रमुख मुसलमान थे। सबसे शक्तिशाली और धनी व्यापारी कुतुबुद्दीन खवास-आमिद था। ख्वारेज्मशाह मुहम्मदकी एक कन्या कुतुबुद्दीनसे ब्याही थी और दूसरी चगताईके हरममें थी।

चगताईने अपने जीवनमें ही ओगोताई कआनकी सम्मतिसे अपने पोते करा हुलाकूको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। वह दिसम्बर १२४१ ई० में मरा।

चगताई-वंशमें निम्न खान हुये—

१. चगताई, छिङगिस्-पुत्र	१२२७-४२ ई०
२. करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र	१२४२-४६ "
३. येस्सू मङ्गू, चगताई-पुत्र	१२४६-५१ "
करा हुलाकू (पुनः)	१२५१ "
४. ओरगाना खातून, कराहुलाकू-पत्नी	१२५१-५६ "
५ अलगू, अरिकबुगा, बेदार-पुत्र	१२५६-६५ "
६. मुबारकशाह करा हुलाकू-पुत्र	१२६६ "
७. बोराक इसुनदावा-पुत्र	१२६६-७१ "
८. निकपाई सरवान-पुत्र	१२७१-७४ "
६. तोका तेमूर कदमी-पुत्र	१२७४-८२ "
१०. दुवा, दावा, बोरा-पुत्र	१२८२-१३०७ "

११. कुंजेक, कोन्चोग्, दुवा-पुत्र	१३०७-८ ई०
१२. तलिकू, खिजिर, कदमी-पुत्र	१३०८-९ "
१३. केबेक, दुवा-पुत्र	१३०९ "
१४. एसेन्बुका, ईसनबुका, दुवा-पुत्र	१३०९-१८ "
केबेक (पुनः)	१३१८-२६ "
१५. इलिकदई, इलिचिगिदई, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१६. दुवा तेमूर, दुर्रा तेमूर, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१७. तरमा शेरिन्, संजर, दुवा-पुत्र	१३२६-३४ "
१८. बजन, बोजन, दुवा-तेमूर-पुत्र	१३३४ "
१९. जेङ्किस खलील, एबुगेन-पुत्र, दुवा-पौत्र	१३३४-३८ "
२०. येस्सुन तेमूर, एबुगेन-पुत्र	१३३८-४० "
२१. अली सुल्तान, ओगोताई-वंशज	१३४०-४२ "
२२. मुहम्मद पुलाद, कोन्चोग-पुत्र	
२३. काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र	१३४६ "
२४. दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज	१३४६-४८ "
२५. बायनकुली, सूरगू ओगलान-पुत्र	१३४८-५८ "
२६. तेमूरशाह	१३५८— "
२७. इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र	—१३६३ "
२८. काबिलशाह	१३६३-६९ "

२. करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र (१२४२—४६ ई०)

छिङ्गिस् जिस वक्त हिन्दूकुश-पर्वतमालाके अजेय दुर्ग बामियान पर आक्रमण कर रहा था, उसी समय उसका अत्यन्त प्रिय पौत्र मोतुगान मारा गया। शायद बापके मारे जानेपर छिङ्गिस्का भारी शोक करना करा हुलाकूके लिये चगताईके प्रेम और उत्तराधिकार पानेका कारण हुआ। गद्दीपर बैठते समय करा हुलाकू छोटा था, इसलिये राजकाजका भार अभिभाविकाके रूपमें उसकी दादी एबु-सकिनने अपने हाथमें लिया। अभिभाविकाने पहिला काम यह किया, कि हकीम मजीदुद्दीन और अपने पतिके कृपापात्र वजीर हेजिरको हकीमसे मिलकर चगताई खानको मरवानेके इल्जाममें मरवा डाला। उसने अपने बहनोई हबश अहमदको अपना वजीर बनाया। अभी अवस्था ठीक नहीं हुई थी, कि इसी समय ओगोताई कआन मर गया और कूयुकने जबर्दस्ती कआनपदको ले लिया। उसने अपने सभी विरो-धियोंको उनके पदसे निकाल दिया, जिनमें एब्रुसकेन भी थी। कूयुकने ६४५ हि० (८ V १२४७—२८III १२४८) मे इस्सुनको चगताई-उलुसका खान नियुक्त किया, जिसके कारण केवल अलमालिकमें ही नही, सारे चगताई-उलुसमें गड़बडी फैल गई। मसूदबेगको भी भागकर बातूके पास शरण लेनी पड़ी। कआनका निर्वाचन १२४६ ई० तक नहीं हो सका था। कूरिल्ताई (महासंसद) की बैठकमें ओगोताईके पुत्र कूयुक (गूयुक) को कआन चुना गया। कूयुक ईसाई-धर्मका पक्षपाती तथा चगताईकी तरह ही इस्लाम-विरोधी था। अब साम्राज्यमें ईसाईयोंका मान बहुत बढ़ गया था। गूयुक कआनने करा हुलाकूको हटाकर जगताई-पुत्र येस्सू-मुङ्खे (येसू-मङ्गू) को खान बनाया।

३. येस्सू मङ्गू, येसू-मुङ-खे (१२४६-५१ ई०)

येसू-मुङ-खे सदा शराबमें मस्त रहता था, राजकाजका काम उसकी रानी तुगाशी देखती थी। सौभाग्यसे उसे खवास हबश जैसा योग्य खवास-अमिदा (वजीर) मिला था। खवास हबशने जगताई खानके हरएक पुत्रके साथ अपने एक-एक पुत्रको लगा रक्खा था। येसू-मुङ्खेके दरबारमें विद्वान् बहा-उद्दीन मेर्गलानी रहता था। उसका पिता फरगानाका शेखुल्-इस्लाम और मां कराखानी वंशजा थी। गूयुकके समय बातू भारी सेनाके साथ पश्चिममें दिग्विजयके लिये भेजा गया था। इसी समय हुलाकू-

को दक्षिणमें दिग्विजयके लिये भेजा गया। अभी यह दिग्विजय-सेना कयालिक नगरसे सात दिन पर अवस्थित (सप्तनदके दक्षिणके अलाताऊ पर्वतके पास) अलाकामकमे थी, कि गूयुक कआनके मरनेकी खबर मिली। अब तुलुइका ज्येष्ठ पुत्र तथा कुबिलेईका बड़ा भाई मुङ्खे (मङ्-गू) कआनकी गद्दीपर बैठा। ओगोताईके पौत्रोंने इसका विरोध किया। वह समझते थे, कि गूयुकके बाद अब उनके उलुसका कआन होना चाहिये। इस विरोधमें येसू-मङ-गू भी ओगोताईके पौत्रोंके साथ था। १२५१ ई० में राजधानी कराकोरममें कूरिल्ताई बुलाई गई, जिसमें मुङ-खेके गद्दीपर बैठनेका बडा विरोध हुआ। मगोलोंमें भीषण सघर्ष शुरू हो गया। सतहत्तर बड़े-बड़े सरदार मारे गये, और बहुतसे खानजादे दूर-दूर निर्वासित कर दिये गये, जहां कितनेही मर गये। चगताई-गद्दीसे वंचित करा हुलाकूने मुङ-खेका पक्ष लिया। कआन अब भला येसू-मङगूका क्यो पक्ष लेने लगा? करा हुलाकूने अपने भाई बुरीके साथ एक बडी सेना ले चढ़ाई की। येसू-मङगू, तुगाशी खातून और बुरी आसानीसे पकड़ लिये गये। तुगाशी करा-हुलाकूको दे दी गई। येसू-मङगू और बुरी भागकर बातूके ओर्दूमें चले गये, जहांपर बुरीको मृत्युदंड दिया गया, और उसके बारह भाइयोंके साथ येसू-मङगूको भी उसकी जन्मभूमिमें भेज दिया गया। येसूको फिर खानका स्थान मिलनेवाला था, किन्तु वह रास्ते हींमें मर गया। तुगाशी खातूनपर मुकदमा चलाकर उसे घोड़ेके नीचे रौंदवाकर मरवाया गया।

करा हुलाकू (पुनः १२४६ ई०)

करा हुलाकूके राज्य संभालनेपर हबश आमिद फिर वजीर हो गया। उसने बहाउद्दीनको जेल-में डाल दिया। बहाउद्दीन ने कवितामें बहुत स्तुति की, लेकिन सब बेफायदा। रानी एरगेनाने नमदेमें लपेट ठोकरें लगवाती उसकी हड्डी तुड़वाई। करा हुलाकू अधिक दिन नही जी सका। उसके बाद उसकी रानी ओरगाना (एरगेना) ने गद्दी संभाली।

४. एरगेना, ओरगाना, करा हुलाकूपत्नी

एरगेना मंजुलता, सौंदर्य, और प्रतापमें अपने समयकी तीन अद्वितीय मगोल-राजकुमारी बहिनोंमेंसे थी, जिनके बारेमें कहा जाता था, कि दुनिया का कोई चित्रकार उनके रूपको अपनी तूलिकासे चित्रित नहीं कर सका—तीनों बहनें चगताई, बा-तू और खुलाकू-वंशी खानोंकी रानियां थीं।

मुङखे कआनद्वारा पश्चिमके दिग्विजयार्थ भेजी गई सेनाओंमेंसे कराकुरम और बिशबालिगसे आनेवालियोंको चगताई-भूमिमें मिलना था। वहांसे कयालिक और ओतरारके बीच पहुंचनेपर ओरदा (जूछि-पुत्र) के पुत्र खंकिरिन (खूकिरान) को इस भारी सेनाका संचालक बनना था। लेकिन अब बातू और मुङखे कआनमें मतभेद हो गया था। मुङखेने इसी बातको साधु रुबरिकसे कहा था—"जैसे सूर्य अपनी किरणोंको सर्वत्र फैलाता है, उसी तरह मेरी और बातूकी राज्यशक्ति भी देश-देशमें फैली हुई है।" यह कहना इसी बातको सिद्ध करता है, कि अब कआनका बातूपर कोई दबाव नहीं था। कआन और बातूकी सीमा तलस (तरस) से थोड़ा पूरबमें मिलती थी।

प्रधान-वजीर हबश हमीद (अमीद) और उसका पुत्र नासिरुद्दीन राजकाजमें ओरगानाकी सहायता करते थे। रानीकी योग्यतासे कोई इन्कार नहीं करता। इतिहासकार वस्साफके अनुसार ओरगाना स्वयं बौद्ध थी। १२८४ ई० में ओरगाना अल्मालिकमें ही थी, इसी समय कआनका अनुज तथा रानीका बहनोई खुलाकू पश्चिमी एसियाके दिग्विजयके लिये आते हुए उससे मिला। वहासे खुलाकू की सेना सप्तनद और सिर-उपत्यका होते १२५५ ई० के वसंतमें समरकन्द पहुंची। इससे दो साल पहले (१२५३ ई० में) साधु रुबरिक सप्तनदसे गुजरा था। उसने अपने यात्रा-विवरणमें इस प्रदेशका अच्छा वर्णन किया है। लड़ाईके ध्वंसके रूपमें उसने इलितटपर मिट्टीकी दीवारोंवाले अनेक खंडहर देखे थे। उससे कुछ दूरपर एक प्रसिद्ध नगर इलानबालिक था, जहांसे १२५५ ई० में अर्मनी राजा गयतोन गुजरा था। उसने लिखा है—पहाड़से निकलकर बहुतसी नदियां बलकाश झीलमें गिरती हैं। यहींपर कयालिक नामका बड़ा नगर था। जहां बहुतसे व्यापारी रहते थे। यहांकी मैदानी भूमिमें पहले बहुतसी बस्तियां थीं, जिन्हें तातरोंने ध्वस्त कर दिया। सप्तनदके उत्तरी भागमें अब

झगड़ा डलवा दिया। बेरेकने किसी ज्योतिषीसे सुना था, कि कैदू बहुत भारी आदमी होगा, इसलिये वह उसकी सहायताके लिये तैयार होगया। जू-छि उलुसकी मददसे कैदू काफी शक्तिशाली हो गया, और उसने अलगूकी एक बडी सेनाको हराकर नष्ट कर दिया। अलगूने दूसरी जबर्दस्त सेना भेजी, जिसने ओतरारके पास बेरेक खानको हराया—यह १२६५ ई० के अन्त या १२६६ ई० के आरम्भ की बात है। इन आरम्भिक लड़ाइयोंके बाद अलगूको सफलता मिलने लगी और वह अपने सभी इलाकोंको अपने हाथ में करनेमें सफल हुआ।

६. मुबारकशाह, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६ ई०)

इतिहासकार जमाल करशीके अनुसार ओरगाना-पुत्र मुबारकको १२६६ ई० में आह्नगर उपत्यकामें खान बनाया गया। चगताई खानोंमें वह पहला मुसलमान था, यद्यपि अभी खानोंका इस्लाम अधिकतर दिखावेके लिये था। सारी प्रजाके मुसलमान होनेके कारण ऐसा करनेमें लाभ था। मुबारकको बहुत कोमलप्रकृति और न्यायप्रिय कहा जाता है। कुबिलेने उसको चगताई खान स्वीकार कर भी उसके सौतेले भाई बोराकको उसका उपराज बनाया, जिसमें कहीं मुबारककी शक्ति ज्यादा न बढ़ जाये। इस समय अब चगताई-राज्यके भीतर मुल्की,गैरमुल्की, मगोल-अ-मंगोलका सवाल छिड गया था, जिसके उठानेमें बोराकका भी हाथ था। निम्न सिर-उपत्यका भी अब कैदूके हाथमें चली गई थी। कैदूके चालीस पुत्र अलग-अलग सेनाओंके सेनापति थे। लूटप्रेमी, घुमन्तू मगोल और तुर्क बड़ी संख्या में कैदूके झंडे के नीचे चले गये थे। कैदू अन्तर्वेद ही नहीं, कुबिलेके राज्यको भी लेना चाहता था। कुबिलेने उसके विरुद्ध अपने पक्षको मजबूत करनेके ख्यालसे बोराकको मुबारकका उपखान बनाकर अल्मालिक भेजा था, लेकिन बोराकने शुरूसे ही कैदूके साथ सहानुभूति दिखलानी शुरू की। दोनोंने बुखारा और समरकन्दके हथियार बनानेवाले (वस्साफ) के अनुसार ६६१ हि० (१५ XI १२६२–६ X १२६३ ई०) में सोलह हजार कारीगरोंको भेंड़ोंकी तरह आपसमें बांट लिया। इनमेंसे पांच हजार बातूको, तीन हजार हुलाकूको और बाकी कआनको मिले। उज्गंद और पूर्वी तुर्किस्तानमें भी बोराकको सफलता मिली। इन सफलताओंके बाद अब मुबारकको गद्दीपर बनाये रखनेकी जरूरत नहीं थी, इसलिये सितम्बर १२६६ ई० में उसे बन्दीखानेमें डाल दिया गया, और सौतेले भाई बोराकने सीधे गद्दी सभाल ली।

७. बोराक, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६-७१ ई०)

कैदू कुबिलेके विरुद्ध सफल नही हो रहा था, जूछि-उलुस भी प्रबल था, इसलिये वह चगताई–राज्य से ही कुछ छीन सकता था, इसीलिये बोराक और कैदूमें पूर्वी सिर-उपत्यका और सप्तनदके लिये झगड़ा हो गया। १२६८ ई० में जूछि-उलुसके खान मङगू-तेमूरकी सहायतासे कैदूने सिर-उपत्यकाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन उसके कुछ ही समय बाद कैदू और मङगू तेमूरमें लडाई हो गई। इस अवसरसे फायदा उठाते हुए बोराक भी कैदूके ऊपर चढ़ दौड़ा, । दोनोंमें सेहून (सिर-दरिया) के तटपर लड़ाई हुई। कैदू और किपचक-सेनाकी हार हुई। बहुतसे लोग मारे गये या बन्दी बने, भारी सम्पत्ति लूटमें मिली। यह खबर सुनकर मङगू-तेमूरने अपने चचा बेरकेचरको पांच तुमान (पचास हजार) सेना देकर भेजा। उसने बोराकको बुरी तरह हराया। वह समरकन्दकी ओर भी बढ़ना चाहता था, लेकिन कैदूने उसे मना कर दिया।

इस युद्धमें हारकर बोराक अन्तर्वेदकी ओर भागा। उसकी सेना बिना लूटका माल पाये ही लौट रही थी, इसलिये उसे संतुष्ट करना आवश्यक था। बोराकने इसके लिये बुखारा और समरकन्दके लोगोंको केवल शरीर ले नगरसे बाहर निकल जानेका हुकुम दिया, जिसमें कि सेना नगरको लूटकर अपना मनोरथ पूरा कर सके। लोगोंके बहुत रो-धोकर बिनती करने, भारी कर देने तथा हथियार बनानेवाले सिकलीगरोंके रात-दिन हथियार बनानेके लिये वचन देने पर बोराकने अपने इरादेको छोड़ दिया। बड़े जोरसे तैयारी होने लगी और बोराक जल्दी ही फिर लड़नेके लिये तैयार हो गया।

कैदू केवल योग्य सैनिक ही नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। वह अरिकबुगाकी गलतीको दुहरा नहीं सकता था। वह जानता था कि मेरा सबसे जबर्दस्त शत्रु कुबिले खान है,

इसलिये उसने शान्तिसे काम लेना चाहा और मेल करानेके लिये बोराकके लंगोटियायार किपचक श्रोग-लानको उसके पास भेजा। बोरकने अपने मित्रका खूब स्वागत किया। दोनोंने एक दूसरेको प्याला दिया; सलाह हुई, कि जूछि, चगताई और कैदूके उलुसोंके बीच मित्रता स्थापित करनेके लिये एक कूरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई जाय ।

६६७ हि० (१० IX १२६८–१ VIII १२६९ ई०) के वसंत (मार्च-अप्रैल १२६९ ई० में) तलस और केंजककी मैदानी भूमिमे कूरिल्ताई एकत्रित हुई। कैदू और बोराक दोनों अपने-अपने रक्त तथा सुवर्णसे मिश्रित मदिराको एक साथ शान्तिचषकमे पीकर एक-दूसरेके अंदा (परम मित्र) बने। कूरिल्ताईमें कैदूने कहा था—"हमारे महान् पितामह (छिङ-गिस्) ने दुनियासे युद्ध किया....तलवार और वाणके बलपर विशाल राज्य स्थापित किया।......जब हम अपने पुरुखाकी ओर देखते हैं, तो हम सब भाई भाई हैं। लेकिन हममें कुछ भी मेल नही।" इसके जवाबमें बोराकने कहा—"बात ठीक है। मै भी उसी बृक्षका फल हूं। मेरे पास भी थोड़ा-बहुत यूर्त (ओर्दू) है।.. ....चगताई और ओगोताई (कैदूका पिता-मह) छिङ-गिस् खानके ही पुत्र थे। ओगोताई कश्रानसे कैदू, चगताईसे मै, जेठे भाई जूछिसे बेरकेचर और मङगू-तेमूर और कनिष्ट भाई तू-लुईसे हुलाकू और कुबिले हैं।

"हमारे समयमें पश्चिमांतका स्वामी मङगू-तेमूर खताई-माचीनका राजा कुबिले खान है, जिसके राज्यकी लम्बाई-चौडाईको भगवान् ही जानता है। पश्चिमातमें आमूसे सिरिया और मिस्रतक पिता-द्वाराअर्जित राज्यका खान अबका है। दोनोंके बीचमें हमारा राज्य, तुर्किस्तान और किपचक है। मुझे अपना कसूर नहीं मालूम होता।' इसपर कैदू और बोराक दोनोंने कहा—"सत्य तुम्हारी ओर है। अब यही निर्णय है, कि आजके बाद हम एक दूसरेके विरोधी नहीं बनेंगे.........।"

इस प्रकार गरमागरम भाषण करते और भावुकता दिखलाते हुए मंगोल-राजवंशियोंने आपसमें मेल किया। उनके लाखों घोड़ों और पशुओंके लिये चरागाहोंकी अवश्यकता थी, जो गर्मीकी अलग और जाड़ेकी अलग होती थीं। गर्मीके दिनोंमें ओर्दू ऊंची ठंडी जगहोंमें जाकर अपने तम्बू लगाता और जाड़ेके दिनोंमें ऐसी जगहपर, जहां हवा और सर्दी कम होती तथा कुछ घास-चारा भी मिल सकता था। कूरिल्ताईने याइलक (गरम चरागाह) और किशलक (सर्द चरागाह) निश्चित कर दिये गये। कैदूके ओर्दूको सप्तनदमें स्थान दिया गया। मुस्लिम इतिहासकार कैदूकी न्यायप्रियताके बड़े प्रशं-सक हैं—कैदूने सफल युद्ध करके अपने राज्यमें व्यवस्था कायम की थी।

कूरिल्ताईके फैसलेका प्रभाव ज्यादा दिन नहीं रहा। जब आर्थिक स्वार्थ एक-दूसरेके विरोधी हों, तो स्थायी मेल कैसे हो सकता है? बोराकको इस बंटवारेके कारण अन्तर्वेदका एक-तिहाई हिस्सा—खोजंदसे समरकन्दके पासतककी भूमि—कैदूको देना पड़ा। बोराक इस क्षतिको पूर्ण करनेके लिये आमूके दक्षिण (हुलाकूके राज्य) खुरासानपर चढ़ा। लूट-पाटके मारे किसान भागने लगे। गांवोंके उजड़ जाने पर भारी अकालका सामना करना पड़ता, इसलिये दोनो खानोंने वजीर मसऊदबेगको भेजकर किसानों को सान्त्वना देनेका प्रयत्न किया। वक्षुतट इसवक्त बड़ी बुरी अवस्थामें था। बोराक अबका खान (ईरान) पर चढ़ दौड़नेके लिये उतावला हो रहा था। मसऊदने ऐसा न करनेकी सलाह दी, तो गुस्सेमे आकर बोराकने उसे सात कोड़े लगवाये, जिसके लिये पीछे उसे खेद हुआ। तो भी उसने अपना संकल्प नहीं छोड़ा। रुपये-पैसे का हिसाब करनेके बहाने मसऊदबेग अबका (इलखान) के पास गया, लेकिन उसका असली उद्देश्य था इलखानकी सैनिक स्थितिका पता लगाना। इलखानको पता लग गया। बड़ी मुश्किलसे मसऊदबेग जान बचाकर भाग सका। इस तरह असफल होनेपर चगताई खानने ईरानमें रहते चगताई-राजकुमार निकूदरको फोडनेके लिये एक गुप्तचर भेजा। अतमें अपने पुत्र बेग-तेमूरको एक तुमान सेना के साथ राजरक्षाके लिये भेजा। कैदूने भी कितने ही राजकुमारोंको सेना देकर बोराककी सहायताके लिये भेजा, जिनमें मोतूगन-पौत्र बुरी-पुत्र अहमद, चगताई-पौत्र सरबान-पुत्र निकबेई ओगुल, और ओगोताई-पौत्र कैदू-पुत्र बालिगू (यालगू) थे। सभी लोग वक्षु (आमू दरिया) पार होनेके लिये तेरमिजकी ओर रवाना हुए। दूसरी सेना गू-युक कश्रान-पौत्र, हुकुरखान-पुत्र चुबाद, तथा कैदू-पुत्र किपचकके साथ खीवामें वक्षु नदी पार होनेके लिये भेजी गई। एक और भी सेना मङकिशलकसे होते कोकाजू

कुचुकके नेतृत्वमें रवाना हुई। अपने पुत्र बेक तेमूरको दस हजार सेना दे बोराक अन्तर्वेदमें छोड नावोंके पुलसे वक्षु पार हुआ। उसका कैम्प मेर्वमें पड़ा, जहांसे उसने अपने सैनिकोंको कुबिले कआनके भतीजे खुलाकू-पुत्र अबकाके सारे देशको लूटकर बरबाद करनेका हुकुम दिया। उस समय खुरासान का राज्यपाल अबका-पुत्र अरगून था। बोराककी सेना खुरासानमें दाखिल हुई और उसने बदख्शां, कीसिम, शापूरगान, तालिकान, मेर्व-शायान, तथा नेशापोर (२८ अप्रैल १२६९ ई०) तकके प्रदेशको लूटा और उजाड़ा। थोड़ेसे प्रतिरोधके बाद सारे खुरासानपर बोराकका अधिकार हो गया। उसका मुका-बिला करनेके लिये अबका आजुरबाइजानसे चला। हेरातके पास दोनों सेनाओंमें लडाई हुई, जिसमें बोराकको हार खानी पड़ी। अबकाने पराजित सेनाका पीछा किया। शायद सारी चगताई सेना नष्ट हो जाती, लेकिन सेनापति जलेरताईने बडे कौशलसे उसे नष्ट नहीं होने दिया। अबकाने अन्तर्वेदके बहुत से इलाकोंको लूटा। उस वक्त मंगोलोंके सामने मुसलमान चापलूसी करते कहांतक गिर गये थे, इसका उदाहरण यह घटना है—अबकाने खाते समय एक बार अपने वजीर शम्शुद्दीनकी ओर चाकूके नाकपर सूअरका मांस रखकर बढ़ाया। वजीरने जमीन चूमकर इस अत्यन्त हराम भोजनको खा लिया। इसपर खानने अपना प्याला उठाकर उसकी तरफ किया। उसके न लेनेपर अबकाने कहा—"इसने प्याला लेने से इन्कार करके मुझे नाराज नहीं किया, लेकिन यदि इसने मांसको लेनेसे इन्कार किया होता, तो मैं उसी चाकूसे इसकी आंखें निकाल लेता।"

जिस समय बोराकने खुरासानपर सफल आक्रमण किया, यदि उसी समय उसके मित्रोंमें फूट न हो गई होती, तो शायद अबकाको इतनी आसानीसे सफलता न मिलती। बोराकका अदा (परम मित्र) किपचक ओगलान चगताई सेनापति जलेरताईके किसी बर्तावसे असतुष्ट हो साथ छोड़कर चला गया। बोराकने उसे दंड देनेका वचन दिया भी, किंतु किपचक ओगलान नहीं रुका। गू-युक कआनके पुत्र जवात ने भी इसी समय साथ छोड़ दिया। अबकाने एक और चाल चली। उसने बोराकके तीन दूतोंको पकड़ सासत देकर उनसे यह स्वीकार करवाया, कि हम अपने खानकी ओरसे गुप्तचरका काम करने आये हैं। वह मृत्युकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि इसी समय धूलिधूसरित धावनने आकर खबर दी—"मेरे स्वामी! दरबन्द (कास्पियन) की ओरसे शत्रुओं (किपचकों) ने भारी संख्यामें आकर देशपर धावा बोल दिया है, पश्चिमी प्रदेश तलवार और आगसे ध्वस्त किये जा रहे हैं।" अबका यह खबर सुनकर आजुरबाइजानकी ओर चला गया और बोराकके दूतोंको भागनेका मौका मिल गया। बोराक विजयसे कुछ निश्चितसा हो गया; किंतु, फिर अचानक लौटकर अबकाने हेरातके पास बोराकको जबर्दस्त हार दी। बोराक इस लड़ाईमें घायल हुआ। अपनेको खतरेमें डालकर सेनापति मेरगुल और जलेरताईने बोराकको निकालकर वक्षुपार न कराया होता, तो बोराककी जान न बचती।

इस भीषण पराजय और मित्रोंके विश्वासघातके बाद बोराक ६६९ हि० के वसंत (मार्च-(अप्रैल १२७१ ई०) में मर गया।

८. निगपई, सरवान-पुत्र (१२७१–७४ ई०)

नये खानके शासनकालमें भी चगताई और ओगोताई उलुसोंका झगड़ा जारी रहा। कैदूने निग-पईको खान बनाया, इसपर बोराक और अलगूके पुत्रोंने विद्रोहकर दिया। इस संघर्षमें जरफ्शा-उपत्यका के सारे नगर नष्ट हो गये। निगपई पीछे कैदूके विरुद्ध हो गया और उसके साथ लड़ते हुए १२७४ ई० में मारा गया।

९. तोका तेमूर, कदमी-पुत्र (१२७४–८२ ई०)

निकपाई और तोका तेमूरका नाम कितनी ही वंशावलियोंमें नहीं मिलता, जिसका कारण यही हो सकता है, कि उनका शासन गृह-युद्धोंके समयका था, जिसमें एकसे अधिक राजकुमार तख्तके दावेदार थे।

१०. दुवा, तुवा, दावा, बोराक-पुत्र (१२८२–१३०७ ई०)

चगताइयोंमें दुवा बहुत शक्तिशाली खान, और कैदूका पक्का साथी था। उसके लिये इसने कैदूसे खानोंसे बहुतसी लड़ाइयां लड़ीं। प्रसिद्ध इतिहासकार शम्शुद्दीन जुवैनी इसका वजीर था। अबका

की सेना लूट-पाट करते ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VI १२७३ ई०) में बुखारा पहुंच महान् नगरको लूट वहांके नागरिकोंमेंसे पचास हजारको बन्दी बना जब लौट रही थी, तो सेनापति चापरने आक्रमण करके उनमेंसे कितने ही बन्दियोंको छुड़ा लिया। तीन साल बाद फिर अबकाने आकर देशको बरबाद किया, जिसका सुधार दुवाके शासनकालमें मसऊदबेगके योग्य प्रबन्धके कारण हो पाया। श्वेत-ओर्दूके बायन खानसे भी दुवाका विशेष झगड़ा था, क्योंकि वह कैदू और दुवाके विरोधियोंका पक्षपाती था। १३वीं सदीके प्रथम वर्षमें इन दोनों दलोंने अठारह लडाइयां लड़ी। बायनके पीठपर तेमूर कआन था, सुवर्ण-ओर्दू और इलखान (ईरान) भी बायनके दलमें सम्मिलित थे—दुवाके विरुद्ध उत्तर-पश्चिममें तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू) और बायन (श्वेत-ओर्दू) की सेनाये थीं, दक्षिण-पश्चिममें गाजनखान (ईरान) और दक्षिण-पूर्वमें बदख्शांका शासक भी चीन-सम्राट् (कुबिले) के पक्षपाती थे। इतने जबर्दस्त शत्रुओंसे घिरे रहने भी देशकी समृद्धि ओर राज्यकी शक्तिको बनाये रखना दुवा की योग्यताका परिचायक था।

कैदूके चालीस पुत्र थे, यह हम कह आये हैं। उसने छिङ-गिस् खानकी तरह अपने राज्यको अपने ४० लड़कोंमें बांट दिया था—बड़ेको चीन सीमान्तपर, बेकेचेरको जूछि सीमांतपर. सैरवानको अफगानिस्तानमें सर्वज्येष्ठ पुत्र चापरको सबसे अधिक संघर्षके स्थान सप्तनदमें रक्खा था। कैदूकी-पुत्री खुतुलुन चागा भी बडी ही वीर तरुणी थी। अपने पिताके अभियानोंमें भाग लेनेके कारण उसने ब्याह नही करना चाहा। कैदू उसे बेटी नहीं, बेटेकी तरह प्यार करता था। उसने उसे स्वयंबर चुननेके लिये कहा। जब कोई वर नहीं मिला, तो गाजन खान (ईरान) को देना चाहा, लेकिन खुतुलुन चागाने यह पसन्द नहीं किया और अपने पिताके बड़े दरबारी एक चीनीको अपना हाथ दिया। कैदू करशीके अनुसार १३०१ ई० में (दूसरोंके अनुसार १३०३ ई० के वसंतमें) लड़ाईमें मरा। उसका मृत शरीर चू और इलि नदियोंके बीचके ऊंचे पहाड़ सिबालिकमें दफनाया गया।

कैदूके मरनेके बाद अब दुवा सबसे प्रभावशाली खान था। उसने १३०३ ई० के वसंतमें चापर को कैदूका उत्तराधिकारी बनाया, जिससे कैदू-पुत्रोंमें झगडा उठ खड़ा हुआ। बाहर भी शत्रुओंका भय था ही। तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू खान) ने बायनके शत्रु कुइलुकको समर्पण करनेकी माग की। इन्कार करनेपर उसने दो तुमान सेना दे बायनकी पीठ ठोंकी। फर्वरी १३०३ ई० के आरम्भमें बायनका दूत दुवा और चापरके साथ मिलकर लड़ाई करनेकी बात तै करने बगदाद गया।

दुवा एक कुशल सैनिक ही नहीं था, बल्कि कैदूकी तरह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि शक्ति छिन्न-भिन्न करनेवाले विरोधी तत्त्वोंसे उसे लड़ना पड़ रहा था, लेकिन वह समझ रहा था, कि यदि लड़ाई इसी तरह चलती रही, तो कुछ ही समयमें अन्तर्वेद, सप्तनद, किपचक और ईरान-इराक से छिङगिस-वंशका नाम मिट जायेगा। इसीलिये वह सोच रहा था, कि कआनकी अधीनतामें सभी उलुसोंका एक संघ बनना चाहिये। उसने इसके लिये एक योजना बनाई—(१) सभी आपसमें शांतिसे रहते कआन (चीनके मंगोल सम्राट्) को अपना प्रभु मानें, (२) सभी देशोंमें व्यापारकी स्वतन्त्रता हो। उसने इस योजनाको सबसे पहले कआन तोग्तोगूके पास भेजा, जिसने उसे बहुत पसन्द किया। इसके बाद अगस्त १३०४ ई० में चापर और दुवाके दूत योजनाको लेकर ईरान गये। वहां तथा पीछे जूछिके दरबारमें भी इस योजनाका स्वागत नहीं हुआ, शायद उन्होंने इसे दुवाकी एक चाल समझा।

चगताई राजकुमार अपने युर्तोंको लेकर चरागाहोंमें घूमा ही करते थे, जहां किसी छोटीसी बातको भी लेकर झगड़ा हो पड़ना स्वाभाविक था। १३०५ ई०में अन्तर्वेदमें चापरका कुछ चगताई राजकुमारोंके साथ झगड़ा हो गया। उसके लिये तरुणोंके लड़कपनपर अफसोस प्रकट करते लोग समझौता करानेके लिये ताशकन्दमें जमा हुये। ओगोताईके राजकुमार जोचोकबालिकमें चापरके भाई शाहके युर्तपर टूट पड़े। उस समय दुवाका सेनापति दक्षिण-सप्तनदके अरपा-उपत्यकामें हेमंत-वास कर रहा था। शाह अपने सात हजार आदमियोंके साथ भागकर अपने भाई बेकेचरके पास पहुंचा। विरोधी राजकुमारोंने तलस-द्रोणीके पासवाले नगरोंको लूटा। चापरको यह खबर कआनकी सेनासे लड़ते इर्तिश अलताईके पास मिली। वहांसे हार खाकर वह तीन सवारोंके साथ भागकर दुवाके पास गया।

रशीदुद्दीनके अनुसार दुवा १३०६ ई० में मरा और वस्साफके अनुसार १३०७ ई० में।

११. कुंजेक, कुंचोक, दुवा-पुत्र (१३०७-८ ई०)

दुवाके मरनेपर बरकुलसे बुलाकर कुंजेकको अलमालिकके पास सेवकुन स्थानमें गद्दीपर बिठाया गया। यह युलदुजमें मरा। इसके समयमें भी गृह-युद्ध जारी रहा, और बुरीबाशीके पास तथा सिर-उपत्यकाके पूर्वी भागोंमें कई लड़ाइयां हुई। अपने प्रतिद्वंद्वी ओगोताई राजकुमार कुरसेवेसे लड़कर भागते समय कुंजेक मारा गया।

१२. तलिकू, तलिक, खिजिर, कदमी-पुत्र (१३०८-१० ई०)

बुरीको १२५१ ई० में कतल किया गया था, यह हम बतला चुके है। उसीका पुत्र तलिकू अब गद्दीपर बैठा। इस समय जल्दी-जल्दी खानोंका बदलना यही बतला रहा था, कि अब सत्ता दरबारियों-के हाथमें थी और खान उनके खेलके मुहरे थे। मुस्लिम दरबारियो और प्रजाको प्रसन्न करनेके लिये तलिकूने खिजिरके नामसे अपनेको मुसलमान घोषित किया, जिससे मंगोल राजकुमार नाराज हो गये—अबतक मंगोलोंने बौद्ध धर्मको जातीय धर्मके तौरपर स्वीकार कर लिया था, इसलिये वह नही पसन्द कर सकते थे, कि उनका खान मुसलमान बन जाये। इसी भावनासे प्रेरित हो तीन सौ सवारोंके साथ दुवा-पुत्र केबेकने रातको भोजके समय खेमेंमें घुसकर खानको मार डाला। वस्साफके अनुसार तलिकू ७०८ हि० (२१ VI १३०८—१२ V १३०६ ई०) में गद्दीपर बैठा, दूसरे इतिहासकारोके अनुसार ७०६ हि० (११ VI १३०६—२ V १३१० ई०) में गद्दीपर बैठा, तथा ७१० हि० (३१ V १३१०-२१ IV १३११ ई०) में उसकी मृत्यु हुई।

१३. केबेक, दुवा-पुत्र (१३१० ई०)

केबेक बहादुर और स्पष्टवादी खान था। चापरने पिताकी शत्रुताको उसके पुत्र केबेकतक कायम रक्खा, लेकिन उसे हार खानी पड़ी। अब चगताई-उलुस अस्त-व्यस्त हो चुका था। चापरने त्युकमे, बइ-केचर और उरुस-पुत्रोंके साथ मिलकर केबेकके ऊपर चढ़ाई की, लेकिन उसे इलि नदीके पश्चिममे परा-जित होना पड़ा। फिर इलिके रास्ते जाकर उसने त्युकमेको हराकर उसके युर्तको छिन्न-भिन्न कर दिया। त्युकमेने पूरबमें भागकर कआनके पास चीनमें जाना चाहा। भागते समय त्युकमेकी भिड़ंत केबेककी सेनासे हो गई, जिसमें वह मारा गया। राजकुमारोंके इस घरेलू सघर्षोंके कारण कृषि और व्यापारको भारी क्षति हुई। केबेकने इस संघर्षको बन्द करनेके लिये ७०६ हि० (११ vi १३०६—२ v १३१० ई०) में कूरिल्ताई बुलाई और उसके इस निर्णयको स्वीकार किया, कि गद्दी उसके भाई एसेनबुकाको दी जाय, और वह कआनके अधीन रहे।

१४ः एसेनबुगा, ईसनबुका, दुवा-पुत्र (१३१०-१८ ई०)

कैदूका विशाल राज्य अब छिन्न-भिन्न हो गया था, और उसका अधिकांश चगताई-उलुसके हाथमें चला आया था। कैदूके पुत्रोंमेंसे शाहके पास कुछ इलाके रह गये थे। एसेनबुगाने राज्यके भीतर और बाहर शान्ति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। इसके लिये उसने १३१२ ई० में उज्बेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) के साथ मित्रता स्थापित की, जो १३१५ ई० तक रही, जबकि चगताई और जूचि दोनों उलुसोंने अपने शत्रु उलजैतू (ईरान) पर आक्रमण किया। चगताई सेनाने इलखानी सेनाको हराकर हेरात तक उसका पीछा किया। चार महीनेतक यह प्रदेश चगताइयोंके हाथमें रहा और उनकी सेनाने वहां बहुत अत्याचार किये।

क़आन बयन्तुका ओर्दू जाड़ोंमें कोबुक-तटपर और गर्मियोंमें एसुन मोरान (इर्तिश-शाखा) पर रहता था। ऐसे ही समय एसुन मोरानके पास उसका चगताई उलुससे झगडा हो पड़ा। कआनकी दूसरी सेना उस समय चालीस दिनके रास्ते पर थी। तोकाजीके नेतृत्वमें कआनकी सेनाने एसेनबुगाके हेमंत-वास (इस्सिकुलके समीप) और ग्रीष्मवास (तलसके समीप) को लूटा-पाटा। इस समय (१३१२ ई०) एसेनबुगाकी उज्बेक खानके साथ मित्रता थी। जब कआनकी सेनाके आक्रमणकी बात एसेनबुगाको मिली, तो वह खुरासान छोड़कर उत्तरकी ओर लौटा। लेकिन इलखान उल्जैतू खुदाबन्दा

एसेनके अत्याचारोंको कैसे भूल सकता था ? एसेनबुगासे नाराज उसका मुसलमान हुआ भाई यसाउर उस समय ईरानमे रहता था। उल्जैतूने उसे सेना देकर ७१६ हि० (२३ iii १३१६–१४ ii १३१७ई०) में वक्षुपार भेजा। एसेनबुगाकी भारी हार हुई और वह अन्तर्वेद छोड़कर भाग गया। उल्जैतूकी सेना-ने देशमें लूट-मार मचाई, और उसने बुखारा, समरकन्द और तेरमिजके निवासियोंको बीच जाड़ेमें जबर्दस्ती दूसरे स्थानोंमें भेज दिया, जिसके कारण उनमेंसे हजारों मर गये।

एसेनबुगा १३१८ ई० मे मरा। प्रसिद्ध पर्यटक इब्न-बतूताके अनुसार वह शामानी (बौद्ध) धर्मको मानता था, यद्यपि मुसलमानोंके साथ उसका बर्ताव अच्छा था।

केबेक पुनः (१३१८–२६ ई०)

केबेकने इसलिये गद्दी छोडी थी, कि चगताई-उलुसके आपसी झगड़े मिट जायें और राजशक्ति मजबूत हो, लेकिन ऐसेनबुगाके अत्याचारोंने अवस्था और शोचनीय बना दी। केबेक फिर गद्दीपर बैठा, लेकिन वह एकता स्थापित करनेमें सफल नहीं हुआ। चगताई-उलुस अब दो भागोंमें बंट गया। अन्तर्वेदमे मुसलमान (तुर्क) अमीरोंका प्रभाव अधिक था और पूर्वी भागमे मगोल अमीरोंका। पूर्वी भाग—सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान—मुंगोलिस्तान के नामसे इसी समय अलग होने लगे, जिसका प्रथम खान एसेनबुगा-पुत्र तुगलुक तेमूर हुआ। केबेकद्वारा गद्दीसे वंचित होनेका बदला एसेनबुगाके पुत्रने इस बंटवारे द्वारा लिया। अब भी केबेकके शासनमें अफगास्तिान, अन्तर्वेद और सप्तनदका बहुतसा भाग था। केबेकने अपनी राजधानी नखशेबमें रक्खी, और वहांसे ढ़ाई फरसख* पर अपने लिये एक करशी (महल) बनवाया, जिसके ही कारण पीछे नकशेबका नाम करशी पड़ गया। इब्न-बतूताके अनुसार केबेकको उसके भाई तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिङ) ने मार डाला।

१५. इलिकदई, इलचीगिदई, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

केबेकके बादके खान जल्दी-जल्दी बदलते रहे या वजीरोंके हाथकी गुडिया बने रहे। इसी समय कैथलिक मिश्नरियोंने ईसाई-धर्मके प्रचारमें बड़ी सरगरमी दिखलाई।

१६. तुवा-तेमूर, दुवा-तेमूर, दुरी तेमूर, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

खान बननेसे पहले यह एक पूर्वी जिलेका ठाकुर था। वहीं रहते १३१५ ई० में इसके पास चीन-से सहायता आई थी। गद्दीपर यह कुछ ही महीनों रह पाया, क्योंकि इसके भाईका हत्यारा तरमाशेरिन राज्यपर घात लगाये हुए था।

१७. तरमाशेरिन, धर्म-छे-रिङ, दुवा-पुत्र (१३२६–३४ ई०)

धर्म-छे-रिङ संस्कृत धर्म और तिब्बती छेरिङ (दीर्घायु) दो शब्दोंसे मिलकर बना है। इसका नाम ही बतलाता है, कि चगताई-वंशपर बौद्ध-धर्मका कितना प्रभाव था, लेकिन तरमाशेरिनने अपनेको कट्टर मुसलमान सिद्ध करनेकी कोशिश की। राजवशका डूबता सितारा मुसलमान बनकर अवलम्ब ढूंढ़ रहा था। तरमाशेरिन १३२६ ई० के अन्तमें गद्दीपर बैठा और खान बनते देर नहीं लगी, कि उसने मुसलमान बन अलाउद्दीन नाम धारणकर धार्मिक कर्तव्यपालन करनेके लिये अफगानिस्तान और पंजाब तक जहाद (धर्मयुद्ध) शुरू कर दिया, लेकिन इसी समय अलमालिक और राज्यका पूर्वी भाग हाथसे निकलकर मुगोलिस्तानके खानके हाथमें चला गया। मुगल-राजकुमारोंका प्रभाव अब खतम हो चुका था। दरबारमें तुर्क मुसलमान अमीर सर्वेसर्वा थे। यह मंगोलोंकी संस्कृतिपर इस्लामकी विजय थी। लेकिन वहां केवल इस्लाम और गैर-इस्लाम धर्मका ही झगड़ा नहीं था, बल्कि युद्धजीवी घुमन्तू और कृषि-व्यापार-जीवी स्थायी निवासियोंका भी द्वंद्व चल रहा था। युद्धजीवी घुमन्तुओंमें मंगोल ही नहीं बल्कि भारी संख्यामें तुर्क भी शामिल थे।

खुरासानपर तरमाशेरिनने ७२५ हि० (१८XII १३२४—८XI १३२५ ई०) में आक्रमण किया था, लेकिन नये गाजीको गजनीमें जबर्दस्त हार खाकर वक्षुपार भागना पड़ा। इब्न-

* १ फरसख=६ वर्स्त=१२ ली=३ मीलके करीब।

बतूता दो महीनेतक बुखारामें तरमाशेरिनका मेहमान रहा। वह इसे बडा ही पक्का मुसलमान कहता है। अपने समसामयिक दिल्लीके सुल्तान मुहम्मद तुगलकके साथ इसका बहुत अच्छा सबध था और तुगलककी इस्लाम-भक्तिका वह अनुकरण भी करना चाहता था। इब्न-बतूताने लिखा है—एक बार किसी धार्मिक भूलके लिये मुल्लाने तरमाको लोगोके सामने फटकारा। खानने उसे बुरा न मान आंसू बहाते हुए तोबा किया। इब्न-बतूताके अनुसार उसने अपने सिहासन और प्राण इस्लामके लिये न्योछावर कर दिये थे।

इस्लामकी इतनी अधभक्ति देखकर मगोल-राजकुमार चुप रहनेके लिये तैयार नही थे, आखिर उन्हे भी धर्म-भक्ति करनेके लिये तिब्बतसे बौद्ध-धर्म मिल चुका था। १३३४ ई० में दुवा तेमूरके पुत्र बूजनके नेतृत्वमे विद्रोह हुआ—इब्न-बतूताके अनुसार बूजन मुसलमान था, जो सदिग्ध है। तरमा हारकर भारतकी ओर भागा जा रहा था। बलखके राज्यपाल तथा केबेकके पुत्र यङगीने उसे पकड़कर बूजनके पास भेज दिया, जिसने उसे समरकन्दके पास कतल करवा दिया।

१८. बूजन, बोजन्द, दुवा तेमूर-पुत्र (१३३४ ई०)

अपना-अपना मतलब सिद्ध करनेके लिये दरबारमें अब इस्लामी और इस्लामविरोधी दो दल हो गये थे। बूजन इस्लामविरोधी दलका अगुवा था—इन्हें मंगोल और गैर-मंगोल दल कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। बूजन ईसाइयो और यहूदियोंका अधिक पक्ष करता था—बौद्धोंका उसके राज्यमें अभाव-सा था। इसके अल्पकालीन शासन में ईसाइयों और यहूदियोंके मन्दिर अधिक बने, प्रचार भी बढ़ा। इससे पहले १३२९ ई० में ही दोमनिकन साधु थामस मन्तजोला अन्तर्वेदमें कैथलिक धर्मका प्रचार करने आया था। मंगोल-शासक मुस्लिम धर्मांधतासे भय खाते चाहते थे, कि उनकी प्रजापर मुल्लोंका एकाधिपत्य न रहे; इसीलिये वह बौद्ध-धर्मके साथ-साथ ईसाई धर्मको भी प्रोत्साहन देते थे। बूजन अपने प्रतिद्वंद्वी बहुतसे अमीरों और राजकुमारोंको जरा-जरासे संदेहपर बहुत क्रूर दंड देता था। इसके कठोर शासनसे लोग तिलमिलाकर विद्रोह कर बैठे, जिसमें प्रसिद्ध ताजिक नेता हुसेन कर्तने प्रमुख भाग लिया। अरपाखानसे खुरासानको छीननेके लिये बूजन जब बुखारामे था, उसी समय अन्दखोई और शापूरगान (सिबोरगान) के तुर्क कबीलोंने अरलत और एवरदीको लूटा। तुर्कोंने अपने सजातीय तथा अत्यन्त प्रभावशाली अमीर कजगनसे सहायता ली। हेरातके शासक मलिक हुसेन तथा वजीर अलाउलमुल्क खुदाबन्दजादा (तेरमिज)ने भी उनकी सहायता की। लड़ाईमें बूजन पकडा गया और उसे उसके शत्रुओंके हाथमें दे दिया गया। इब्न-बतूताके अनुसार यसाउर-पुत्र खलीलने बूजनको मार डाला और १३३४ ई० में ही जेकिश (चेंगिज) ने उसका स्थान लिया।

१९. जेंकिश (जिकशी), खलील, दुवा-पौत्र, एबुगेन-पुत्र (१३३४–३८ ई०)

यह भी इस्लामी पार्टीका नही बल्कि मुसैबीके अनुसार बौद्ध था। मंगोलोंने किसी दूसरेको खान बनाया, जिसपर जेंकिश ताराजमें मंगोलोंको हराते अलमालिक पहुंचकर गद्दीपर बैठा। फिर आगे बढ़ते उसने बिशबालिग और कराकोरम (मंगोलिया) को ले लिया, जिसपर कआन (चीन-सम्राट्) को दबकर सुलह करनी पड़ी। अलमालिकमें वजीर अलाउलमुल्क खुदाबंदजादाको शासनके लिये छोड़कर वह समरकन्द लौट आया, लेकिन पीछे संदेह हो जानेपर उसने अलाउलमुल्कको मरवा डाला। बिशबालिक और कराकोरमके विजयकी बात कहांतक ठीक है, इसे नहीं कहा जासकता, लेकिन १३३२ई०में जेंकिशने चीन-दरबारमें भेंट भेजी थी। वह अधिकतर अलमालिकमें रहता था। कैथलिक मिश्नरी वहां बड़े जोरसे धर्म-प्रचार कर रहे थे। कैथलिक चर्चने फ्रासिस्कन साधु निकोलाई (मिखाइल) को चीनका आर्चबिशप (लाट-पादरी) बनाकर भेजा था। अलमालिकमें जेंकिशके दरबारमें उसका बड़ा सम्मान हुआ। कुछ ही समयमें राजधानीमें पादरियोंका भारी जमाव हो गया—बरगंडीका रिचार्ड, अलकसंदरियाका साधु फ्रांसिस्क, रायमुन्द और इसी तरह कितने ही और धर्म-प्रचारक वहां मौजूद थे। खानका सात वर्षका पुत्र बपतिस्मा लेकर योहन बना। स्पेनिश साधु पसखालिस १३३८ ई० में धर्म-प्रचारार्थ उरगंजसे अलमालिक जा पांच महीने रहा।

आगे जेकिश और मलिक हुसेनमें लड़ाई हुई। हुसेनने उसे पकड़कर क्षमा कर दिया। उस समय जेंकिश हेरातमें था, जबकि १३४७ ई० के बसंतमें बतूता वहांसे भारतके लिये प्रस्थान कर रहा था।

२०. येस्सुन तेमूर, एसुन, एबुगेन-पुत्र (१३३८–४० ई० ?)

थोड़े दिन राज्य करनेके बाद ओगोताई-राजकुमार अली सुल्तानने इसे हटाकर इसका स्थान लिया। इससे थोड़े समय पहले सप्तनंदमें ईसाइयोंपर भारी अत्याचार हुए और आठ शताब्दियोंसे चला आया नेस्तोरीय सम्प्रदाय वहांसे सर्वदाके लिये उच्छिन्न हो गया।

२१. अली-सुल्तान, ओगोताई-वंशज (१३४०–४२ ई० ?)

अली-सुल्तान मुस्लिम पार्टीका था, किंतु इसके जुल्मसे ईसाई ही नहीं मुसलमान भी पनाह मांगते थे।

२२. मुहम्मद पुलाद, पोलाद, कुंजेक-पुत्र (१३४२ ई० ?)

अली-सुल्तानको हटाकर कुछ समयतक यह चगताई खान रहा।

२३. काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र (७३३–४७ हि०* ?)

यह भी बड़ा अत्याचारी था। इसके डरके मारे दरबारी पहले अपनी वसीयत करके तब खानके पास जाते थे। इसके १३-१४ सालके शासनमें चारों तरफ आतंक फैला रहा। प्रभावशाली वजीर कजगनने इससे पिंड छुड़ानेके लिये विद्रोह कर दिया। पहली लड़ाई ७४४ हि० (२६ मई १३४३—१५ अप्रैल १३४४ ई०) अथवा मीरखोजन्दके अनुसार १३४५ ई० में हुई, जिसमें खान जीता और अमीर कजगन की एक आंख तीर लगनेसे फूट गई। सफल होनेपर भी खान शत्रुओंका पीछा नहीं कर सका। उसने जाड़ा करशीमें बिताया। सख्त जाड़े और हिमवर्षाके कारण घोड़े और बोझा लादनेके बहुतसे पशु मर गये। ७४७ हि० (२४ अप्रैल १३४६–१५ मार्च १३४७ ई०) में फिर लड़ाई हुई, जिसमें खानकी हार हुई और उसका अत्याचारी शासन खतम हुआ।

२४. दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज (१३४६–४८ ई०)

अमीर कजगनको एक गुड़िया खानकी जरूरत थी। उसने ओगोताई दानिशमन्द ओगलान (राजकुमार) को लाकर गद्दीपर बिठाया। दो साल बाद उससे मन ऊब गया, फिर उसने बायन कुल्लीको गद्दीपर बिठाया।

२५. बायन कुल्ली, सुरगू ओगलान-पुत्र, चगताई-वंशज (१३४८–५८ ई०)

कजगनके अनुकूल होनेसे यह दस सालतक खान बना रहा। अमीर कजगन एक तो स्वदेशी तुर्क था, दूसरे बड़ा ही चतुर और न्यायप्रिय भी, इसलिये वह बहुत जनप्रिय था। कजगनके मरने-पर उसका लड़का अब्दुल्ला वजीरआजम (महामंत्री) बना, जिसने बायनको कुंदुजमें शिकार करते समय कतल करवा दिया—अब्दुल्ला बायनकी बीबीका यार था। अब अब्दुल्लाने तेमूरशाह ओगलान-को गद्दीपर बिठाया।

२६. तेमूरशाह (१३५८—ई०)

छिङ-गिस् वंशकी इतनी धाक और पवित्रता स्थापित हो गई थी, कि खानके सिंहासनको कोई लेनेकी हिम्मत नहीं करता था। स्वयं तेमूरलंगने भी खान बनना नहीं चाहा और विश्वविजयी होनेके बाद भी वह "अमीर तेमूर" या "सुल्तान तेमूर" ही बना रहा। अब्दुल्लाका प्रभाव बापके बरा-बर नहीं था। तेमूरशाहको जिस तरह गद्दीपर बिठाया गया, उससे दरबारी नाराज हो गये। अमीर बायन सुल्दूज अब्दुल्लाके विरुद्ध चढ़ाई करनेके लिये जब समरकन्दकी ओर जा रहा था, तो रास्तेमें केश (शहरसब्ज) का शासक हाजी बिरलस भी उसके साथ हो लिया—यही हाजी सैफुद्दीन बिरलस तेमूर

* २२ IX १३३२–१३ VIII १३३३ ई० से २४ IV १३४६–१५ III १३४७ ई०

लंगका चचा था। अब्दुल्ला हारकर अन्दराब (अफगानिस्तान) की ओर भागा, और उसने अपना बाकी जीवन वहीं बिताया। चगताई-शासनकी बागडोर अब अत्यन्त अयोग्य भारी पियक्कड़ सेलदूज तथा हाजी बिरलसके हाथोंमें थी। सारे राज्यको अमीरोंने अपनी-अपनी रियासतोंमें बाट लिया, जिसमें केश (शहरसब्ज) और आसपासका इलाका बिरलसको मिला। चारों ओर गृहयुद्ध और अराजकताका दौरदौरा था।

२७. इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र (–१३६३ ई०)

तेमूरशाहकी जगह इलियास गद्दीपर बिठाया गया। चगताई-वंशकी पश्चिमी शाखाकी जहां यह अवस्था थी, वहां उत्तर-पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खान अभी इतने शक्तिहीन नही हुए थे। अन्तर्वेदकी अवस्थाके बारेमे सुनकर अलमालिकका खान तुगलक तेमूर एक बड़ी सेना लेकर समरकन्दकी ओर चला। आपसमें लडते छोटे-छोटे अमीर भला उसका मुकाबिला कैसे कर सकते थे? हाजी सैफुद्दीन बिरलस (तेमूरका चचा) बिना लड़े ही खुरासानकी ओर भाग निकला। उसके भाई तुरगाई बिरलसके तरुण पुत्र तेमूर लंगने चचासे राय लेकर तुगलक तेमूरसे भेंट की। तरुणसे खान इतना प्रभावित हुआ, कि उसने केशके निवासियोंपर अत्याचार नही किया। तुगलक तेमूरने अन्तर्वेदको जीत कर अपने पुत्र इलियास खोजाको समरकन्दमें उपराज घोषित कर तेमूर लंग बिरलसको विश्वास-पात्र जान वजीर (अमात्य) नियुक्त किया। तुगलक तेमूर काश्गरकी ओर लौट गया। अमीरोंके आपसी झगड़ोंमें पड़ना तेमूरने पसन्द न कर बुखारा तथा खीवा होते कास्पियनतटवर्ती रेगिस्तानोंका रास्ता लिया। इस निर्जन भूमिमें वह कितने ही समयतक मारा-मारा फिरता रहा। अन्तमें वह अपने केश लौटे कुछ साथियोंको लेकर वक्षु नदीके दक्षिण चला गया। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३–३० अगस्त १६४६ ई०) में कुंदुजके पास दानियालकी सेनाको हराकर तेमूर उसका पीछा कर रहा था, इसी समय तुगलक तेमूर खानके मरनेकी खबर आई और इलियास खोजा समरकन्द छोड़कर बापकी गद्दी संभालने अलमालिक चला गया। तेमूर लंगने तुरंत अन्तर्वेद लौट सरदारोंकी कूरिल्ताई बुलाकर काबिलशाहको खान घोषित किया।

२८. काबिलशाह (१३६३–६९ ई०)

काबिलको छिङ-गिस्-वंशका अन्तिम चगताई खान तो नहीं कह सकते, क्योंकि तेमूरके वंशने भी अबू-सईदके समय (१४६७–६४ ई०) तक छिङ-गिसी राजकुमारोंको बराबर समरकन्दकी गद्दीपर गुड़िया खान बनाये रक्खा। ८ अप्रैल १३६७ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) तक काबिलशाह बहुत कुछ अपने पूर्वजों जैसा ही खान रहा। उसके बाद तेमूरने बाकायदा अपनेको शासक घोषित किया, यद्यपि उसने खान-परंपराका उच्छेद नहीं किया।

चगताई-अर्थनीति—मंगोल-शासन घुमन्तू सैनिक सामन्तोंका शासन था, जो अपनेसे भिन्न जातियोंके लिये निरंकुश था, किन्तु जहांतक मंगोल सामन्तों और राजकुमारोंका संबंध था, खानके लिये बहुमतकी इच्छाका उल्लंघन करना आसान काम नहीं था, क्योंकि सेना उनकी थी। मंगोल शासक नागरिकों और ग्रामीणोंकी गाढ़ेकी कमाईको उड़ाना अपना हक समझते थे। पहले कितने ही समयतक इनके भीतर सैनिक जीवन कायम रहा, किंतु आगे विलासिता बढ़नेके कारण उसका ह्रास होने लगा। इसके साथ ही राजपरिवार और सामन्त-परिवारोंकी संख्या बढ़नेके कारण प्रजाका शोषण-उत्पीड़न और भी भयंकर होने लगा। उनके सहकारी तुर्क घुमन्तू थे, जो देशमें शताब्दियों पहलेसे अपना प्रभाव जमाये हुए थे, और छिङ-गिसकी सेनामें दूध-पानीकी तरह मिल गये थे। वह अब अपने स्वार्थोंको हाथ से जाने देनेके लिये तैयार नहीं थे। मंगोल-राजपरिवार और मंगोल अमीर-परिवारोंकी निर्बलताके समय तुर्कोंने शासनकी बागडोर भी अपने हाथमें संभाल ली। प्रजाका शोषण पूर्ववत् जारी रहा, तो भी अन्तर्वेदकी सम्पत्तिका महास्रोत—अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य और सुंदर दस्तकारी—सूखा नहीं था।

साहित्य—मंगोलोंके सर्वसंहारी प्रहारके बाद साहित्यकी और धाराएं रुकसी गईं, लेकिन धर्मशास्त्र (शरीयत), धार्मिक साहित्य, सूफी साहित्य, मदिरावाद फूलता-फलता रहा। मुल्लों और

सूफियोंकी मंगोल-दरबारमें बड़ी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी बढ़ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नहीं पड़ा था। कुछ परिवारोंने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुश्तैनी गद्दी बना ली, और उनका सम्मान पैगम्बरोंकी तरह होने लगा। इन परिवारोंमें सिताजी और खावन्द बहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन सिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२–२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (९ XI १२३०–३० IX १२३१ ई०) में खोजन्दमें आकर बस गया था, और मंगोलोंके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। बुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्शुद्दीन-पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-संग्रह) मौजूद हैं। इसने "मिन्हाजुल्-मुजक्करीन" के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अबकाकी सेना-द्वारा ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VII १२७३ ई०) में बुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमालुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने "बोस्ताने-मुजक्करीन" लिखा। तरमाशेरिनके बाद मंगोल-राजवंश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मंगोलोंके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ़ ईंटकी अलग मस्जिद बनाकर रहना आसान नहीं था। मंगोल-राजवंश बौद्ध-संतों और लामाओं की अंधभक्ति सीख चुका था, अब वही अन्धभक्ति उनकी सूफियोंके प्रति हो गई। मानके बढ़नेके साथ सूफियोंकी संख्या भी बहुत बढ़ी। मुल्लाओंका गढ़ बुखारा अब सूफियोंका भी गढ़ बन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

"बुखारा मीरवी.........दीवाना।
लायक जजीरे-जिंदानखाना।"

(बुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जंजीर जैसा है।)

चगताई-वंशवृक्ष—
(१२२२–१३७० ई०)

छिङ-गिस्
१. चगताई (१२२७-४२ ई०)
मोतुगान, सरबान, ३. येस्सुमंगू (१२४६–५१), बेदार, इसुनदावा

ओगोताई
सरबान — ८. निकबेइ (१२७१-७४)
बेदार — ५. अलगू (१२५९-६५)
इसुनदावा — ७. बोरक (१२६६-७१) — १०. दुवा (१२८२-१३०७)
मोतुगान — २. कराहुलाकू (१२४२-४६) = ४. ओरगाना (१२५१-५९); बुरी
कराहुलाकू — ६. मुबारक (१२६६); कदमी
बुरी — अहमद
९. तोकतेमूर (१२७४-८२); १२. तलिकू (१३०८-९)
दुवा — ११. कोन्चोग (१३०७-८); १३. केबेक (१३०९); १४. एसेनबुका (१३०९-१८); १५. इलिकदई (१३२६); १६. दुआतेमूर (१३२६); १७. तरमाशेरिन (१३२६-३४); एबुगन
कोन्चोग — २२. मु० पूलाद — मुहम्मद
दुआतेमूर — १८. बूजन (१३३४)
१९. जेङकिश (१३३४-३८); २०. येस्सुन (१३३८-४०)
ओगोताई — २१. अली-सुल्तान (१३४०–४२)

अध्याय २

हुलाकू-वंश

(१२५६–१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोंको विजय करके अपने वंशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के बाद इसकी राजधानी तब्रीज हो गई। सभी मंगोल खानोंके ऊपर कआन (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोंके खानोंको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मंगोल-राजवंशके लिये रूढ़ हो गया।

इलखानोंकी नामावली निम्न प्रकार है—

१. हुलाकू, तूलुइ-पुत्र	१२५६–६४ ई०
२. अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४–८२ „
३. अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२–८४ „
४. अरगून, अबका-पुत्र	१२८४–९२ „
५. गैखातू, अबका-पुत्र	१२९२–९५ „
६. बैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ „
७. गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५–१३०४ „
८. उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४–१७ „
९. अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७–३५ „
१०. अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५–३६ „
११. मूसा, अली-पुत्र	१३३६–३७ „
१२. मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७–३८ „
१३. सातीबेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८–४० „
१४. शाहजहां तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० „
१५. सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०–४४ „
१६. नौशेरवां	१३४४ „

१. हुलाकू, खूलागू, तूलुइ-पुत्र (१२५६–६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिङ-गिस्के पुत्र तूलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कआनों मुङखे और कुबिलेइका अनुज था। मुङखेने १२५२ ई०में जो कूरिल्ताई बुलाई थी, उसमें ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाड़ोंमें पहुंचा। फर्वरी १२५४ ई०में चगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० में अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुंचा और २ जनवरी-को उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमें पहुंच हसन बिन-सब्बाहके गढ़ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुल्मुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योंको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रबन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोंसे राजाओं और राजमंत्रियोंको भी प्राणोंका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेड़ता नहीं था। हुलाकूने

इस गढ़को तोड़कर उसे हमेशाके लिये नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, और उसके बाद इस्माईली फिर अपने लिये वैसा सुदृढ दुर्ग नहीं बना सके। इसी इस्माईली सम्प्रदायके गुरु हमारे यहांके आगाखान हैं, या यों कहिये, हुलाकूकी आंधीमें उड़े पत्तोंमेसे एक हैं। मार्च १२५७ ई० को हुलाकूने हम्दानके लिये प्रस्थान किया। छिङ-गिस्की दिग्विजयमें उसके सेनापति हम्दानतक ही आ पाये थे। यहांसे हुलाकूको उस रास्तेपर जाना था, जिसपर मंगोल घोडोंकी टाप नही पडी थी। ईरानके जिस भागको छिङ-गिस्के सेनापतियोंने जीता था, उसपर भी अभीतक मगोल शासन पक्का नही हो पाया था। हुलाकू अब इस कामको बड़े दृढ़तासे करता चल रहा था। १८ जनवरी १२५८ ई०को वह खलीफाकी राजधानी बगदादके पूर्वमें था। ४ फर्वरीको उसने बुर्जेअली किलेको ध्वस्त किया। खलीफा पूरी तौरसे पराजित हो १० फर्वरीको हुलाकूके शिविरमें कोरनिश करने गया। यद्यपि खलीफाकी राजशक्ति तीन शताब्दियों पहले ही खतम हो चुकी थी, लेकिन इस्लामके पोपके तौरपर उसका सम्मान अब भी बहुत अधिक था। देश-देशके स्वतन्त्र सुल्तान उसके पास बडी-बड़ी भेंटें भेजकर उसके दिये चार अक्षरोंके नामोंको बड़े अभिमानपूर्वक अपने नामके साथ जोड़ते थे। खलीफाका हुलाकूके दरबारमें सलाम बजाने जाना वैसा ही था, जैसा कि हालमें सूर्यदेवीके पुत्र जापानके मिकादोका अमेरिकन जेनरल मैकआर्थरके सामने दंडवत् करना। लेकिन हुलाकू सांपको पालनेके लिये तैयार नहीं था। वह समझता था, खलीफा मुसलमानोंको भड़का सकता है, इसीलिये बड़े लड़केके साथ खलीफाको उसने २० फर्वरी को मरवा दिया।

बगदादपर अधिकार करके विजित देशकी व्यवस्थाके लिये कुछ समयतक हुलाकू रुका, फिर वह पश्चिमकी विजय-यात्राके लिये निकला, और २५ जनवरी १२६० ई० को जाकर उसने हलब (अलेप्पो) पर अधिकार किया। शाम (सिरिया) की राजधानी (दमिश्क) की ओर बढ़नेपर उसका मुकाबिला मिस्रके ममलूक सुल्तान सैफुद्दीन फीरोजसे पड़ा। हुलाकूके सेनापति कीतू-बुगाने मिस्रियोंके पास निम्न शब्दोंमें अन्तिमेत्थम् भेजा—

"तुमने सुना होगा, कैसे हमने एक विशाल साम्राज्यको जीता, कैसे हमने पृथिवीकी गंदगियोंको हटाकर शुद्ध किया, और अधिकांश लोगोंको कत्ल कर डाला। तुम्हारा काम है, भागना और हमारा काम है पीछा करना—जहां भी तुम जाओ, जिस रास्तेसे भी जाओ, वहां तुम्हारा पीछा करना। तुम कैसे हमसे बच सकते हो? हमारे घोड़े बड़े तेज हैं, हमारे वाण बड़े तीक्ष्ण हैं, हमारी तलवार वज्र जैसी है, हमारे हृदय पहाड़की तरह कठोर है, हमारे सैनिक बालूके कणोंकी तरह असंख्य है। किले हमें रोक नहीं सकते, न हथियार ही। हमारे विरुद्ध तुम्हारी प्रार्थनाओंको भगवान् नहीं सुनेगा। तुम हीन उपायोंसे अपनेको बचाना चाहते हो और शपथ-पूर्वक की हुई प्रतिज्ञाओंको तोड़ते हो। विद्रोह और अव्यवस्था तुम्हारे भीतर फैली हुई है। अपने अभिमानके लिये तुम्हें अब भयंकर दण्ड मिलनेवाला है। अन्यायी अपने भाग्यसे शिक्षा लेने जा रहे हैं। हमारे साथ युद्धका मंसूबा रखनेवाले अब पछतानेवाले हैं। जो हमारी शरणमें आना चाहते हैं, केवल उन्हींकी रक्षा होगी। अगर तुम हमारी आज्ञा और पेश की हुई शर्तोंको मानोगे, तो हमारे वैभवमें भागीदार बनोगे; यदि प्रतिरोध करोगे, तो नष्ट हो जाओगे। आत्महत्या मत करो। जिसे पहलेसे सजग कर दिया गया है, उसे अपने लिये सावधान रहना चाहिये। तुमसे कहा गया है, कि हम काफिर हैं, पर हम तुमको पापी समझते हैं। जिस भगवान्की आज्ञाएं अमिट हैं, जिसका फैसला पूर्णतया न्यायानुमोदित है; वही तुम्हारे ऊपर हमें विजयी बना रहा है। हमारी आंखोंमें तुम्हारी सबसे जबर्दस्त सेनायें भी आदमियोंकी एक छोटीसी टुकड़ी है। तुम्हारे प्रसिद्ध वीरोंको भी हम तुच्छ समझते हैं। तुम्हारे राजाओंको हम घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जवाब देनेमें जल्दी करना। ऐसा न हो, कि युद्ध तुम्हारे ऊपर आग लगा दे और तुम्हारे ऊपर अपनी चिनगारियां फेंकने लगे। हमारा कहा न करोगे, तो जो भयंकर सत्यानाश तुम्हारा होनेवाला है, उससे कहीं त्राण नहीं पा सकोगे और तुम अपने देशको रेगिस्तान बना दोगे। हम पहलेसे चेतावनी देकर तुम्हारी भलाई करना चाहते हैं, तुम्हें तुम्हारी नीचतासे डराना चाहते है। अब तुम ही एकमात्र (हमारे) शत्रु रह गये हो, जिसके विरुद्ध हमें कूच करना है। तुम्हारे और जो लोग भी दैवी आदेशका अनुगमन करते हैं, मौतसे

डरते हैं; उनके लिये भी सुरक्षाका यही रास्ता है, कि वह कआनकी आज्ञाको माने। मिस्रको कहो—हुलाकू इस भूमिके बड़ोंको अपमानित करने आ रहा है, वह बच्चोंको वहां भेज देगा, जहां बूढे गये हैं।"

इसका जवाब सुल्तान फीरोजने इस प्रकार दिया—

"ओ तरुण, तुमने अभी-अभी अपना जीवन आरम्भ किया है, इसीलिये तुम जीवनकी ओर इतना कम ध्यान देते हो। तुमने अभी दस दिनोंकी ही समृद्धि और सौभाग्यका उपभोग किया है। ऐसा होनेपर भी तुम सारी दुनियासे अपनको बड़ा समझते हो और अपनी आज्ञाको भवितव्यताकी आज्ञा मानकर उसे अनिवार्य समझते हो। तुम क्यों मुझसे ऐसी माग कर रहे हो, जिसे कि तुम पा नही सकते? क्या तुम अपनी चालाकी, अपनी सैनिक शक्ति और अपनी हिम्मतसे एक भी तारेको बन्दी बना सकते हो? तुम शायद नही जानते, कि पूरबसे पश्चिमतक अल्लाके बन्दे, धर्मात्मा पुरुष, राजा-रक, बच्चे-बूढे, सभी इस (मेरे) दरबारके दास है, वह मेरी सेना है। जब मै अलग-अलग प्रतिरोधियों को इकट्ठा हो जानेकी आज्ञा दूगा, तो पहले ईरानके मामलेको ठीक करूंगा, फिर तूरान (तुर्किस्तान) पर चढ़ूंगा और वहां हरएक आदमीको उसके पदपर स्थापित करूगा। इसमें संदेह नही, कि मेरे इस कामके परिणाम-स्वरूप पृथिवीपर अशांति और गड़बडी फैलेगी, लेकिन यह सब मै बदला लेनेके लोभसे नहीं करता और नही लोगोंकी वाहवाही लूटना चाहता हूं। मै इसके लिये उत्सुक नही, कि सेनाके बजते बाजोंके साथ आदमी मारे जाय।........मैं दुआ या शापको भी नही पसन्द करता। मेरे, कआन और हुलाकू—सबके पास एक-सा ही दिल है, एक-सी ही भाषा है। अगर मेरी तरह तुम भी मित्रताका बीज बोना चाहते हो, तो मेरे सेवकोंकी खाइयों और मोर्चाबन्दियोंसे तुम्हारा क्या काम है? भलाईके रास्तेको पकड़ो और खुरासान लौट जाओ। यदि तुम लड़ना ही चाहते हो, तो मेरे पास हजारो सेनाये है, जो कि बदला लेनेके समय आनेपर समुद्रको सुखा देंगी।"

३ सितम्बर १२६० ई० को मगोल और ममलूक सेनाओंमें भीषण लड़ाई हुई। यद्यपि ममलूक सुल्तान-खलीफाने अपने लिखे अनुसार ईरान और तूरान (मध्य-एसिया) की ओर पैर नहीं बढ़ाया, लेकिन हुलाकूकी सेनाको उसने पूरी तौरसे हराकर अफ्रीकामें बढ़नेका रास्ता बन्द कर दिया। हुलाकू की विजयिनी सेनाको ही मिस्रियोंने नहीं रोका, बल्कि तैमूरलंगकी विजययात्रा भी यही आकर खतम हो गई। नील-उपत्यका एक छोटासा देश है। वह कैसे विश्वविजेताओंकी सेनाओंको रोक सका, इसका कारण उतनी उसकी अपनी शक्ति नहीं थी, जितनी कि बडीसे बड़ी सैनिक शक्तिका भारी बिखरावके कारण अन्तमें क्षीण हो जाना—तरिम, चू, मुरगाब, जरफशां (सोग्द) और खुद हमारे यहां की प्राचीन सरस्वती (-घग्घर) भारी जलप्रवाहको लेकर चलती है, लेकिन अन्तमें उनके पानीको सोखते हुए रेगिस्तान उन्हें अपनेमे लीन कर लेता है।

मिस्रकी ओर आगे न बढ़ सकनेपर हुलाकू लौट पडा। तब्रेजको लेकर १२ सितम्बर (१२६० ई०)को उसने आगेकी विजययात्रा शुरू की, और दियारबेकर, जंजीरा, रोहा (एदेस्सा), अर्रान और निसिब्नीके नगरोंपर अधिकार किया। रोहाके पास हुलाकूने मंगोल सैनिक शक्तिका एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया, जिसे देखने के लिये रोम और अर्मनीके राजा भी उपस्थित थे। दमिश्कपर अधिकार करनेके बाद हुलाकूने दुनियाका सबसे पहला कागजी नोट (चाउ) जारी किया, दूसरे इतिहासकारोंका मत है, कि वह पहलेपहल १२ अप्रैल १२९४ ई० को तब्रेजमें जारी किया गया।

विजयोंके बाद हुलाकूने मरगाको अपनी राजधानी बनाया, जिसे उसका लडका तब्रेजमें ले गया।

हुलाकू और उसके चचेरे भाई बरका खान (१२५५—६५ ई०) का पहले मेल था, उसके बाद दोनोंमें झगड़ा होनेका कारण बरकाने हुलाकूके इस्लाम और खिलाफतके ध्वंस करनेकी बात बतलाई, लेकिन वस्तुतः झगड़ा काकेशसपर अधिकारका था।

काकेशसकी ओर बढ़ते हुए अब जूछि-उलुसकी सीमा नजदीक आ गई तो अनिश्चित विजित देशोंके लिये दोनोंमे झगड़ा शुरू हो गया। यह बतला आये हैं, कैसे ११ नवम्बर १२६२ ई० को जूछि-उलुसके खान बेरकसे मुकाबिला करनेके लिये हुलाकूकी सेना दरबन्द पहुंची, लेकिन वहीं बरकाके सेनापति नोगाईने उसे हराकर पीछे हटा दिया। बरका और मिस्र-सुल्तान फीरोज दोनों हुलाकूके शत्रु

थे। "शत्रुका शत्रु मित्र"की नीतिके अनुसार सुवर्ण-ओर्दू और मिस्रमें मेल-जोल करनेका प्रयत्न होने लगा। १२६३ ई० के शरद्में बरकाका दूतमंडल मिस्रके सुल्तानके पास पहुचा।

मिस्र और दरबन्दकी हारोंके बाद हुलाकूने समझ लिया, कि हमारे राज्यका जितना विस्तार हो सकता है, उतना हो चुका। इसीलिये अब वह शासन-प्रबन्धमें लग गया। १२६४ ई० में उसने कई शासन-सुधार किये। १९ रबी II ६६३ हि० (८ फर्वरी १२६४ ई०)को हुलाकू जगात (मेरगास) में मर गया।

हुलाकूकी पटरानी ओइरोत (मंगोल)-राजकुमारी कूबेक (ओलेज) खातून थी।

हुलाकूके अलमौतके किलेके ध्वस्त करते समय इस्माईली पोप अलाउद्दीन मुहम्मदने मुहक्किक नासिरुद्दीन तूसी (१२०१–७४ ई०)को अपने बन्दीखानेमें डाल रखा था। तूसी बहुमुखी प्रतिभाका धनी था। हुलाकूने उसकी कदर की। तूसी हुलाकू और उसके बेटे अबका खानके शासनकालमें बहुत सम्मानित रहा। उसने "जिजे इलखानी" नामसे एक पंचाग बनाया।
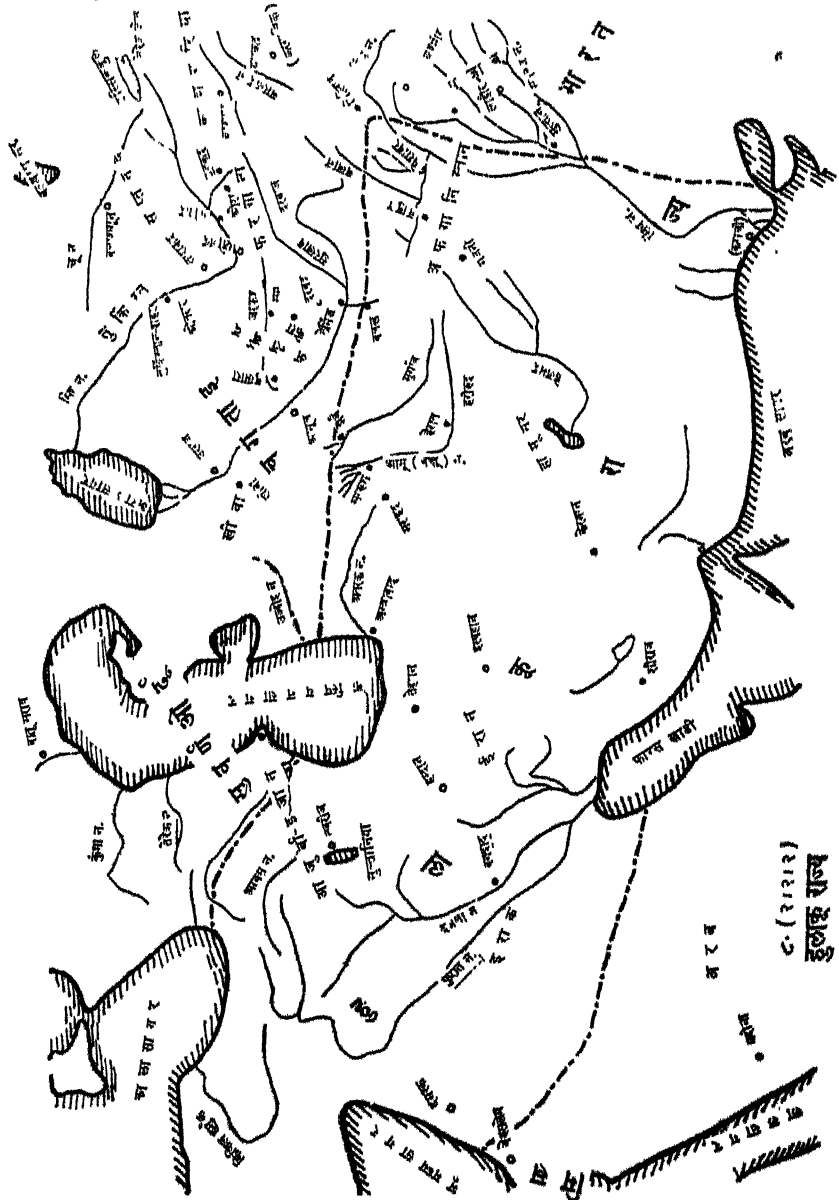
२. अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र (१२६४–८२ ई०)

अबका बापकी तरह ही एक कुशल सैनिक और शासक था। बापके समय बेरका खानसे जो झगडा हुआ था, वह इसके समयमें भी जारी रहा। बेरकाके उत्तराधिकारी बातू-पुत्र मङ्गू-तेमूर (१२६५–८० ई०) के साथ भी इसकी लडाइयां होती रही। नोगाई-द्वारा पिताकी हारका बदला लेनेके लिये अबकाने राजकुमार यशमुतके अधीन एक बड़ी सेना ले १६ जुलाई १२६५ ई०को प्रस्थान किया। कुरा-तटपर पहुंचकर दोनों ओरकी सेनायें दाव पेंच ढूढ़ने लगी, और लड़ाई नही हो पाई।

२६ नवम्बर १२७० ई०को कुबिलेका भेजा यारलिक (शासन-पत्र) जगातमें मिला। अबका बराबर अपने चचा कुबिलेका पक्षपाती रहा, जब कि चगताई और ओगोताई-वंशके खान उसके प्रतिद्वंद्वी थे। जगताई-खान बोरक अबकासे खुरासान को छीनकर बहुत दिनोंतक अपने अधिकारमे नही रख सका। अबकाने खुरासानका बदला ६७२ हि० (२६ VII १२७२–१६ VI १२७३ ई०)में अन्तर्वेद तथा बुखाराको लूटकर लिया।

फारसीका महान् कवि (मुशर्रिफुद्दीन) **सादी** (११८४–१२९२ ई०) हुलाकू और अबका-के समयमें ही हुआ था, जिसने अपने दो महान् ग्रन्थों "बोसतां" और "गुलिस्तां" को १२५७-५८ ई० में लिखा था। लेकिन, सादी-जैसा स्वतन्त्रचेता पुरुष मंगोलोंका दरबारी नही हो सकता था। सर्वश्रेष्ठ सूफी कवि मौलाना जलालुद्दीन **रूमी** (१२०७–७३ ई०) भी हुलाकू और अबकाके समयमें ही हुआ था। रूमी वस्तुतः रूममे नहीं बल्कि १२०७ई० में बलखमे पैदा हुआ था, जहासे वह अपने बापके साथ नेशापोर (खुरासान) गया और अन्तमें मक्का और दूसरी जगहोकी यात्रा करते बापके साथ क्षुद्र-एसियाके कोन्या (इकोनियम्) नगरमें रहने लगा। इसकी प्रसिद्ध कृति "मस्नवी" (कथाकाव्य) में सत्ताईस हजार शेर हैं, जिसका स्थान दुनियाके महान् काव्योंमें है। सादी और रूमी हुलाकू-अबकाके कालकी उपज हैं, इसलिये उनकी कविताओंपर उस समयकी स्थितिका प्रभाव पड़ना जरूरी है। सादीने वैरागियों और दरबेशोंकी जिंदगी पसन्द की, और मौलाना रूमीने वेदान्ती रहस्यवाद स्वीकार किया, इसका कारण मंगोलोंकी ध्वंसलीलासे पैदा हुआ निराशावाद था।

३. अहमद तगूदर, निकोदर, हुलाकू-पुत्र (१२८२–८४ ई०)

अबकाके मरनेपर उसके भाईने गद्दी संभाली। उसने अपनी अयोग्यताको ढंकनेके लिये इस्लाम स्वीकार किया, जिसपर मंगोल बिगड़ गये और अबकाके पुत्र अरगूनने उसे मार डाला।

४. अरगून, अरगोन, अबका-पुत्र (१२८४–९२ ई०)

हुलाकूके समयसे ही राज्यका वजीर-आजम ख्वाजा शम्शुद्दीन चला आता था। उसके प्रभावको न सहकर अरगूनने ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) में उसे मरवा दिया। अरगूनको परेशान करनेके लिये बाप-दादोंके समयसे ही किपचकोंके साथ झगड़ा चला आ रहा था। २१ सितम्बर १२८६ ई० को अरगूनका शिविर मेरागमें पड़ा था। छिटपुट झड़प होती ही रहती थी। इसी बीच २६ मार्च १२९० ई० को दूतोंने आकर खबर दी, कि किपचक-सेना आगे बढ़ती दरबन्द[1] आ पहुंची है। किपचक और इलखानके झगड़ोंमें दरबन्दका ज्यादा महत्त्व था। किपचकोंके आनेकी खबर पाकर अरगूनने तुकाल, शिकतुर नोयन और कुंजुकबलके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना २७ मार्चको रवाना की। इस सेनामें तुगाचार और दूसरे मंगोल अमीर भी थे। २१ अप्रैल (१२९० ई०) को सेनाका हरावल करासू नदीपर पहुंचा। मेगलान बुका आदिके नेतृत्वमें उत्तरसे दो तुमान (बीस हजार) किपचक-सेना आ रही थी। इलखानियोंने नदी पारकर उसपर आक्रमण किया। दुश्मनके तीन सौ सवार मारे गये और कितने ही बन्दी बने। ३ मई १२९० ई० को अरगून विलियासुवरमे पहुंचा। अन्तमे राजकुमार बैदूने विद्रोह करके इसे मार डाला।

---

१ दरबन्द (द्वारबन्ध) दो थे, जिनमें एक मध्य-एसियामें तेर्मिजके उत्तरके पहाड़ोंका लौहद्वार था, और दूसरा बाकूसे उत्तर काकेशस पर्वत तथा कास्पियन समुद्रके मिलनस्थानपर।

सादी शराजी इसीके समय (६६१ हि०) मरा। सादीने हिंदुस्तान, काश्गर और पश्चिममें मिस्रतककी यात्रा की थी। हुलाकूके गीराजके राज्यपाल अलाउद्दीन और उसके भाई दोनों वजीरआजम शम्शुद्दीन सादीके बड़े भक्त थे, जिनके कारण सादीका परिचय अबकासे हुआ था, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि अरगूनसे भी उसका परिचय था। सादीका बादशाहोंसे ज्यादा मेल-जोल न था, तो भी उसने लिखा है—

बादशह सायये-खुदा बाशद्।
साया बा ज़ात आश्ना बाशद्।

(राजा भगवान्की छाया है। छाया है यदि वह भगवान्में परिचित हो।)

अल्लामा कुतुबुद्दीन (मृत्यु १३११ ई०) तब्रेजी अपने समयका बड़ा विद्वान् था। अरगूनका कृपापात्र कवि **औहदी** (मृत्यु १३३७ ई०) इसी समय हुआ था। यही समय था, जब कि भारतमें अमीर खुसरो-जैसा फारसीका महान् कवि पैदा हुआ। खुसरोका बाप छिङगिसी हमलेके मारे बहुतसे दूसरे तुर्कोंकी तरह मध्य-एसियासे भागकर भारत चला आया था। अमीर खुसरो जब मुल्तानके हाकिम सुल्तान मुहम्मदके दरबारमें था, उसी समय ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) अरगून खानके एक सेनापति तैमूर खानने बीस हजार सवार लेकर पंजाबपर हमला किया, और लाहौर, दीपालपुरको लूटते-मारते वह मुल्तानकी ओर बढ़ा। मुकाबिलेके लिये गया सुल्तान मुहम्मद मंगोलोंके सामने हारा और मारा गया। अमीर खुसरो और उनके साथी दूसरे कवि हसन देहलवी भी अपने स्वामीके साथ इस संघर्षमें शरीक थे। मंगोल दोनोंको बन्दी बनाकर बलख ले गये। अमीर खुसरो दो सालतक बलखमें रहा, जिसके बाद उसे छुट्टी मिली और वह लौटकर दिल्ली चला आया। इस घटनाका बड़ा ही करुणापूर्ण वर्णन अमीर खुसरोने अपनी कवितामें किया है, जिसको हम पहिले उद्धृत कर चुके हैं।

५. गैखातू, अबका-पुत्र (१२९२–९५ ई०)

अरगूनके बाद बेटेको वंचित कर भाईको गद्दी मिलना यही बतलाता है, कि अभी सैनिक जन-तन्त्रताका मंगोलोंमें बिलकुल उच्छेद नहीं हुआ था। गैखातूका समकालीन किपचक खान तोकताई बड़ा ही शक्तिशाली था, लेकिन पीढ़ियोंसे लड़ते-लड़ते तंग आकर अब वह चाहता था, कि काकेशसके लिये चलती रहनेवाली लड़ाई बन्द की जाय। उसने कोनिचि ओगलान (राजपुत्र) को शांतिदूत बनाकर १३ जुलाई १२९३ ई० को भेजा। २८ मार्च १२९४ ई० (२८ रबी II ६९३ हि०) को तोकताईका भेजा दूसरा दूतमंडल भी आया, जिसके मुखिया राजकुमार कलिनतई और उलाद थे। दलननोरमें उनसे बातचीत कर २ अप्रैल १२९४ ई०को गैखातूने बड़े सम्मानके साथ उन्हें बिदा किया। किपचकोंकी ओरसे अब इलखानको कुछ निश्चितता-सी थी।

६. बैदू, तरगई-पुत्र (१२९५ ई०)

बैदू अधिक दिनोंतक शासन नहीं कर पाया और जल्दी ही उसे हटाकर गाजनने सिंहासन दखल कर लिया।

७. गाजन, अरगून-पुत्र (१२९५–१३०४ ई०)

गाजन इस्लामका धर्मराज कहा जाता था। इसमें शक नहीं कि उसके समयसे ईरानके मंगोल-राजवंशपर इस्लामका प्रभाव बहुत जोरसे पड़ने लगा। किपचक खानसे फिर झगड़ा शुरू हो गया। ३ मई १३०१ ई०को तोकताई खानका दूत आया, लेकिन सुलह नहीं हो सकी। इसपर गाजन एक बड़ी सेना ले शिरवान और गुर्जिस्तान होते दरबन्द पहुंचा। तोकताईको उसकी सेनाके सामने हारकर भागना पड़ा। इलखानके प्रतिद्वंद्वी मिस्रके सुल्तान-खलीफाके साथ किपचक खानका संबंध अच्छा था, यह बतला चुके हैं। मिस्रका सुल्तान केवल राजा ही नहीं बल्कि खलीफा (धर्मगुरु) भी था। किपचक खानने उसे अपनी लड़की दी थी। गाजनने अर्रानसे काजी नासिरुद्दीन तब्रीजी और काजी कमालुद्दीन मोसलीको दूत बनाकर तोकताईके पास भेजा। मिस्री दूतमंडल हिल्लामें आकर गाजनसे बातचीत कर रहा था। इसी समय २१ जनवरी १३०२ ई०को तोकताईके भी दूत तीन सौ सवारोंके साथ आ पहुंचे।

गाजन किपचक-दूतमंडलसे बहुत अच्छी तरह मिला। तोकताई अपने प्रभावशाली वृद्ध सेनापति नोगाईके झगड़ेसे निबट चुका था, और अब अर्रान और आजुर्बाइजानको लेना चाहता था। उसका कहना था—पितामह छिङगिस्ने यह प्रदेश बातू खानको दे दिया था। लेकिन, गाजन तलवारसे जीते इलाकेको बात-से कैसे लौटा सकता था? उसने धमकी दी——यदि हमारी बात नही मानोगे, तो तुम्हारे विरुद्ध करा-कोरमसे क्रिमियातककी सारी शक्ति तथा दस तुमान (एक लाख) सेना डेरोंमें तैयार खड़ी है। गाजनने यह भी कहा—हुलाकूके समयसे ही यह भूमि हमारी है। भूमि लौटानेकी बात तलवारकी भाषामें ही हो सकती है।

३० जनवरी १३०३ ई०को नववर्षका पर्व आया। राज्यके वजीर, अमीर, गुरजी (जार्जिया) अर्मनी, रोमके राजा एव खुरासान-मिस्र-सिरिया आदिके लोग भी भेट लेकर आये। तीन दिन तीन रात बडे धूमधामसे महोत्सव मनाया गया। दान-इनाममें इस्लामके सुल्तानने बड़ी उदारता दिखलाई। इतिहासकार वस्साफ गाजनको इस्लामका सुल्तान कहता है, लेकिन इस्लामका सुल्तान बननेसे पहले गाजनने ईरानमें एक बड़ा बौद्ध बिहार बनवाया था। पर, जब उसने देखा, चीन और मंगोलिया यहांसे बहुत दूर हैं, इसलिये वहां सर्वत्र प्रचलित बौद्ध-धर्म इस्लामी ईरान-इराकमें कोई सहायता नही दे सकता, तो वह मुसलमान हो गया।

गाजनके समय रशीदुद्दीन फज्लुल्ला (१२४७–१३२८ ई०) गणित, दर्शन और चिकित्सा-शास्त्रका उच्च कोटिका विद्वान् था। अबकाका वह विश्वासपात्र दरबारी था। गाजनने उसे अपना वजीर बनाया। अबूसईदने थोड़े दिनोंके लिये उसे हटा दिया था, पीछे उल्जैतूको विरेचनमें जहर देकर मारनेका अपराध लगा, उल्जैतूके पुत्र इब्राहिमने उसे मरवा दिया। रशीदुद्दीन अपने समयका बहुत बडा इतिहास-कार भी है। उसकी पुस्तक "जामे-उत्-तवारीख" एक विशाल और बहुमूल्य इतिहासग्रंथ है।

८. उल्जैतू, मुहम्मद खुदाबन्दा, अरगून-पुत्र (१३०४–१७ ई०)

इलखानोंने बगदादके खलीफाको खतम किया, लेकिन मिस्रके खलीफाका वह कुछ बिगाड़ नहीं सके। बगदादका खलीफा सुन्नियोंका धर्मगुरु था, और मिस्रका खलीफा शियोंका। उल्जैतूने इस्लाम-प्रेम दिखलानेके लिये अपना नाम मुहम्मद खुदाबन्दा रखा। ईरान अभी शियोंका नही हुआ था, लेकिन उल्जैतूने अपनेको शिया दिखलानेके लिये शियोंके बारह इमामोंके नामवाले सिक्के चलाये। उल्जैतूका अपने प्रतिद्वंद्वी किपचकखानों तोकताई और उज्बेक (१३३३–४० ई०)से मुकाबिला था। १३१६ ई०में किपचक-राजकुमार बाबा ओगलान भागकर उल्जैतूकी शरणमे आया। उसने उसे सहारा दिया। बाबा तुरंत ही अपनी सेना लेकर ख्वारेज्मपर चढ़ गया, जो उज्बेकखानके राज्यमें था। इसके लिये उज्बेकने दूत भेजा और किस तरह बाबा ओगलान ख्वारेज्मसे मारकर भगाया गया, यह हम पहले कह आये हैं।

मंगोलोंके शासनकालमें जिस तरह शरीयतके विद्वानों और सूफी कवियोंकी कृतियां अधिक प्रचलित हुई थीं, उसी तरह फारसी गद्य-कथासाहित्यके विकासका भी यही समय था। तुगराई (मृत्यु १३२४ ई०) मशहदी इस समयका बहुत बड़ा कथाकार था, जिसके "मिरातुल्-मफतूह", "कुंजुल् मआनी", "चश्मये फैज" आदि कितने ही कथाग्रन्थोंका बहुत मान हुआ।

९. अबूसईद, उल्जैतू-पुत्र (१३१७–३५ ई०)

अबूसईद कम उमरमे ही गद्दीपर बैठा था, इसीलिये शासनका सारा प्रबन्ध उसके सेनापति अमीर चोबानके हाथमें था। चोबानने उज्बेक खानकी सेनाको खदेड़कर दरबन्दके पार तेरेक नदीतकके प्रदेशको लूटा था, इसलिये उसका प्रभाव बहुत अधिक हो गया था। उसके नौ पुत्रोंमें सबसे बड़ा अमीर हसन खुरासान और माजंदरानका राज्यपाल था, और हसनका बड़ा पुत्र तालिश अस्पहान पारस-केर-मानका। हसन और तालिशका बापसे झगड़ा हो गया, जिससे चोबानने उनपर आक्रमण कर दिया। हसन और तालिश दहिस्तानके रास्ते ख्वारेज्म भागे। वहाके राज्यपाल अमीर कुतुलुक तेमूरने उनका स्वागत करते उज्बेकखानके पास भेज दिया। उज्बेकने उनकी बड़ी खातिर की। चेरकासियोंके खिलाफ उज्बेक खानकी ओरसे लड़ते हुए हसन घायल हो गया। उज्बेकने बड़ी चिकित्सा कराई, लेकिन वह न बचा। उसका लड़का बहुत दिनोंतक जीता रहा।

७३५ हि० (१ सितम्बर १३३४–२३ जुलाई १३३५ ई०)में उज्बेकखानकी सेनाने फिर दश्तेखाजार—कास्पियनके उत्तर-पश्चिमतटके मैदानी प्रदेश—के रास्ते अर्रान और आजुर्बाइजानपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्थान किया। अबूसईद भी खबर सुनकर मुकाबिलेके लिये चला, किन्तु कराबाग-में ३१ अक्तूबर १३३५ ई० (१० रबी I ७३६ हि०) को इस "दीनदार नेककिर्दार बादशाहके प्राण-पंछीने शरीरके पिजडेसे उड़कर उत्तम स्वर्गको घर बनाया।" उज्बेकखानने अपनी सेनासहित आगे बढ़ कुरा नदी तकके सारे इल्खानी प्रदेशको बरबाद कर दिया। तारीफ यह कि मुसलमान इतिहासकारोंके लिये अबूसईदकी तरह उज्बेक खान भी धर्मराज था। दरबारी कवि औहदीने अपने संरक्षक अबूसईदकी तारीफमें अपनी मस्नवी "जामेजम"मे लिखा है—

दो जहां रासिलयें-ईद ज़दन्द।
सिक्क बर-नाम बूसईद ज़दन्द॥
दर्-चमन गुफ्त बुलबुल ओ कुमरी।
मदहि-गुल गुली उलुल्-अमरे॥

(दोनों लोकोंकी खुशीका पारितोषिक किया, अबू-सईदके नामपर सिक्का चलाया। उपवनमें बुलबुल और कुमरीने इस फूलकी तारीफ की।)

अबूसईदके मरनेपर भारी शोक मनाया गया। मस्जिदोंके मीनारोंको शोक-प्रकाशक कपड़ोंसे ढांक दिया गया था।

अबूसईदके बाद हुलाकू-वंशका पतन बहुत जल्दी-जल्दी होने लगा और ग्यारह वर्षोंके भीतर ६ खान गद्दीपर बैठे।

अबूसईदके समय "तारीखे गुजीदा" नामक इतिहासके बहुत सुंदर ग्रंथका लेखक हम्दुल्ला मुस्तौफी (मृत्यु १३४६ ई०) हुआ था। मुस्तौफीने अपने ग्रंथको प्रसिद्ध इतिहासकार रशीदुद्दीनके बेटे गयासुद्दीनको समर्पित किया था। इस ग्रन्थके उद्धरण फज्लुल्ला-पुत्र अब्दुल्ला शीराजी (मृत्यु १३२८ई०) ने अपने ग्रंथ "तारीखे वस्साफ" में दिये हैं। दिल्लीके फारसी कवि अमीर खुसरो (१२५३–१३२५ ई०) का यह समकालीन था।
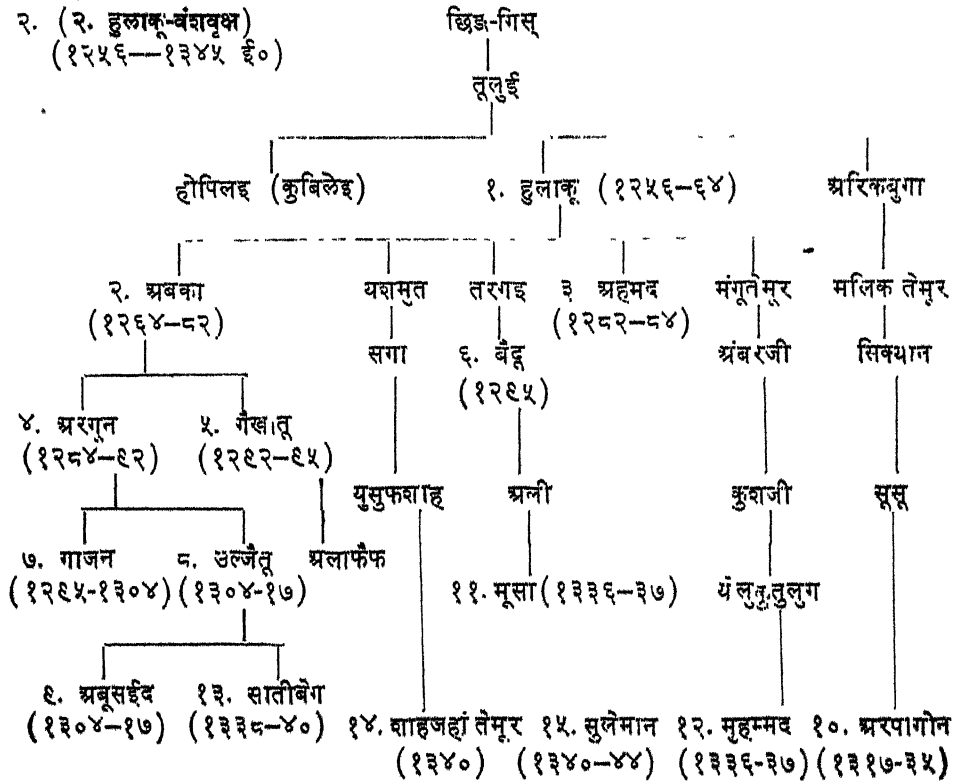
अबूसईदके बाद अब छिङगिसी राजकुमार पूरी तौरसे मुसलमान थे। मंगोल अब संस्कृतिहीन नहीं थे, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, न्यायप्रियता आदि गुणोंके कारण उनकी संस्कृति उच्च स्तरकी थी; किन्तु इस्लामके समुद्रमें उनका कोई बस नहीं चला। दरबारियोंने जब शक्ति हथिया ली, तो गुड़िया खानको कभी अपने शक्तिशाली वजीरोंको प्रसन्न करनेके लिये और कभी प्रजाके प्रभावशाली वर्गको अपनी ओर करनेके लिये इस्लाम लाना जरूरी था। अन्तमें मंगोल-वंशकी समाप्ति होकर इसकी जगह पांच छोटे-छोटे राजवंश कायम हुये, जिनका अन्त तेमूरलंगने अपने दिग्विजयमें किया। यह पांचों खानदान थे—(१) जलायर, (२) मुजफ्फरी, (३) सर्वदारी, (४) बनीकर्त्त और (५) चोबानी। जलायर सुल्तान ओवेसके बाद सुल्तान अहमद हुआ, जिसे १३८० ई०में तेमूरने खतम किया।

हजारा—मंगोलोंके शासनकालमें जो मंगोल इधर आकर रह गये थे, उनमेंसे कुछ तो साधारण तुर्क जन-समूहमें विलीन हो गये, किन्तु कुछ घुमन्तू हिन्दूकुश (हिन्दूकोह)की उपत्यकाओंमें जाकर कृषक और पशु-पालका जीवन बिताने लगे। इनके पचीस कबीले थे, जो आजकल हजाराके नामसे अफगानी-ताजिकों और वक्षु-उपत्यकाके दक्षिणवाले तुर्कोंके बीचमें रहते हैं। इनकी भाषा तुर्की नहीं, एक तरहकी फारसी है, लेकिन बाबरके समयतक यह मंगोल-भाषा बोलते थे। अबुलफजल (अकबरके प्रधान-मंत्री)ने इन्हें मङगू खानका वंशज कहा है, और यह भी उल्लेख किया है, कि इनकी स्त्रियां पुरुषों जैसी ही लड़नेमें बहादुर होती हैं। अफगानिस्तान और सोवियत मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमानोंके महासमुद्रके बीचमें अपनेको शिया बनाये रखना हजारोंकी विशेषता है। विद्वानोंने इनकी भाषामें कितने ही मंगोल शब्द भी ढूंढ़ निकाले हैं।

साहित्य—इलखानियोंके समयमें फारसी गद्य-पद्य-साहित्यकी रचनायें बढ़ीं, यद्यपि इस साहित्यमें निराशावादकी ही प्रधानता है। इस कालकी कविता तीन श्रेणियोंमें बांटी जा सकती है—सूफी रहस्यवाद, गजल (प्रेम-पद्य), कसीदा (स्तुतिप्रशंसा) और उपदेश।

इनमें सूफी कवि थे—फरीदुद्दीन अत्तार (१११९-१२२९ई०)—जिसे प्रथम मंगोल आक्रमणमें एक मंगोल सैनिकने मार डाला, सादी, औहदी, इराकी और मगरदी।

गजलके कवि थे—मौलाना रूमी, सादी और हाफिज।

कसीदाके कवि—कमाल इस्माईल और सुलेमान सावजी।

उपदेशात्मक रचना करनेवालोंमें निपुण थे—सादी और इब्न-यमीन।

अध्याय ३

तेमूर-वंश

(१३७०–१५०० ई०)

१. तेमूरलंग (१३७०–१४०५ ई०)

तेमूरके पिता तुरगई बरलसको अमीर कजगनने केश (शहरसब्ज) और नख्शेब (करशी) के इलाके दिये थे। अपने स्वरचित जीवनचरित्र "तुजुकाते-तेमूर"[1] में तेमूरने लिखा है—"बारह वर्षकी उमरमें ही मुझे अपनी असाधारण बुद्धि और दिमागी शक्तिका पता लगने लगा, और मैंने अपनेको अध्ययन और आत्मसंयमका अभ्यासी बनाया। ...अठारह सालकी उमरमें मैं खेलों और बहादुरीके विनोद-कार्योंमें अपनी चतुराईके लिये कम अभिमान नहीं रखता था। मैं अपना समय कुरान पढ़ने, शतरंज खेलने तथा बहादुरोंके अनुरूप दूसरे खेलोंमें बिताता था।" १३५६ ई० में तेमूरके पिताने उसे अमीर कजगनके पास दूत बनाकर भेजा। कजगन उससे इतना प्रसन्न हुआ, कि उसने अपने लड़के सेला-खानकी बेटी ओलजे तुरकान खातूनसे उसका ब्याह कर दिया और "मिंगबाशी" (सहस्रपति) का पद दे हुसेन कर्त (खुरासान) के विरुद्ध अभियानमें जाते समय तेमूरको अपने साथ ले गया। अभियान सफल रहा, किंतु इसी समय कजगनकी हत्या कर दी गई और थोड़े ही समय बाद तेमूरका पिता भी मर गया। अमीर कजगनके पौत्र अमीर हुसेनके साथ तेमूरकी मित्रता हो गई। अभी वह अमीर कजगनकी हत्याका बदला लेनेकी सोच रहे थे, कि मुगोलिस्तानका खान तुगलक (ध्वजाधारी) अन्तर्वेदपर चढ़ दौड़ा।

हम कह आये हैं, कैसे अन्तर्वेदके चगताई-राज्यकी डांवाडोल स्थितिको देखकर जाते (सीमांती) मुगोलिस्तानके खान तुगलक (ध्वजाधारी) तेमूर[2] ने ७६१ हि० (२३ XI १३५९—१३ X १३६० ई०) में काश्गरके रास्ते आकर आक्रमण किया। खोजन्द नदी पार कर लेनेपर अमीर बायजीद जलायर उससे आ मिला। दोनों शहरसब्ज (केश) की ओर बढ़े। तेमूरलंगके चचा हाजी बिरलसने पहले मुकाबिला करनेका ख्याल किया, लेकिन फिर उसे व्यर्थ समझकर खुरा-सानकी ओर भागना ही अच्छा समझा। चचाकी सलाहसे तेमूरलंग किस तरह लौटकर समरकन्दमें प्रधान बना, इसके बारेमें हमने अन्यत्र बतलाया है। तेमूर और उसके वंशज अपनेको छिङ-गिस्-वंशी सिद्ध करनेकी बहुत कोशिश करते हैं। भारतमें तो उसके वंशजोंने अपने खानदानका नाम ही मुगल रख दिया। लेकिन, वस्तुतः वह छिङगिस्-वंशज नहीं थे। कुछ इतिहासकारोंने उन्हें चगताई-सेनापति कराचार नोयनके वंशका बतलाकर मंगोल सिद्ध करनेकी कोशिश की है, लेकिन वस्तुतः बिरलस तुर्क थे। हां, वह उन तुर्कोंमेंसे थे, जो कि मंगोलोंके मध्य-एसियाकी ओर बढ़नेके समय उनकी सेनामें बहुत भारी संख्यामें शामिल हो गये। वह मंगोलोंके विश्वासपात्र सरदारोंमेंसे थे, लेकिन जब मंगोल-शक्ति निर्बल हो गई, तो वह उनके तुर्क-प्रतिद्वंद्वी बन गये। अमीर कजगनके बाद इनका जोर अन्तर्वेद और तुर्किस्तान (मध्य-सिर-उपत्यका) में बढ़ा। मंगोल-राज्यकी बंदर-बांटके समय तेमूरका पिता हाजी तुगाई बिरलस तुर्कोंकी कोरकान (गूरगान) शाखाका मुखिया और केश (शहरसब्ज) इलाकेका स्वामी बन गया, जिसके मरनेपर उसका उत्तराधिकारी उसका भाई हाजी बिरलस हुआ—

१. "तुजुकाते–तेमूर" (तेमूरके नियम) तुर्कीमें लुप्त तथा फारसी अनुवादमें ही प्राप्य है।

२. जन्म ७३० हि० (२५ X १३२९—१५ IX १३३० ई०), गद्दी ७४८ हि० (१३ IV १३४७—३ III १३४८ ई०), मुसलमान ७५४ हि० और मृत्यु ७६४ हि० (२१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०)

हाजी बिरलसको किन्ही-किन्हीं इतिहासकारोंने तेमूरलंगका भाई भी लिखा है। तेमूरलंगके बापका स्थान हाजी बिरलसने लिया, इसमे कोई मतभेद नही है। यहीं केश नगरमें ५ शाबान ७३६ हि० (१६ मार्च १३३६ ई०)को तेमूर पैदा हुआ। बचपनसे ही उसमें नेतृत्वके लक्षण दिखलाई पड़ने लगे। लडकोंकी पंचायत और शिकारमे निपुणता दिखलाकर साबित कर रहा था, कि वह एक कुशल शासक और सैनिक होगा। तुगलक तेमूरने तेमूरलगके आनेपर उससे प्रभावित हो उसे केशका हाकिम बना दिया। जब खान काश्गर लौट गया, तो अमीरोंमें झगड़ा बढ़ चला। अगले साल ७६२ हि० (११ XI १३६०--२ X १३६१ ई०)में खान फिर अन्तर्वेद आया और अमीरों-को भगाकर उसने समरकन्दपर फिर अधिकार कर वहांका शासन अपने पुत्र इलियास खोजा ओग-लानके हाथमे दिया और तेमूरलंगको उसका मुख्य-पारिषद् (अतालीक) नियुक्त किया। लेकिन तेमूरकी दूसरे अमीरोसे नहीं पटी और वह अमीर कजगनके पौत्र तथा अपने साले अमीर हुसेनकी खोजमें भाग निकला।

समरकन्दसे भागनेके बाद तेमूर कराकुमके उसी रेगिस्तानकी ओर गया, जो कि उत्तराभिमुख वक्षुसे कास्पियन समुद्रतक फैला हुआ है। यहां उसे बहुत तकलीफ उठानी पडी। निर्जन मरुभूमिमें खानेका भी ठिकाना नहीं था। तेमूर अपने तुजुकातमें लिखता है—मै और मेरी पति-परायणा पत्नी ओल्जाई अमीर हुसेनसे मरुभूमिमें मिले और फिर महीने भर रात-दिन रेगिस्तानमें भटकते रहे। कितनी ही बार हमें अन्न और जल भी मुयस्सर नही हुआ। अन्तमें एक तुर्कमानने हमें पकड़कर बन्दी बना लिया और ओल्जाईको एक ऐसी पशुशालामें ले जाकर बन्द कर दिया, जो पिस्सुओं और खट-मलोंसे भरी थी। तेमूर किसी तरह साले और बीबीके साथ वहासे भागकर केश पहुचा। थोडे ही दिनों-में उसके पुराने साथी उसके पास जमा हो गये, जिनके साथ वक्षु पार हो वह दक्षिणके इलाके (पुराने वाह्लीक)में चक्कर काटता रहा। अन्तमें लूट-पाट करनेके लिये सीस्तानके ऊपर आक्रमण किया और बलूचियोंसे एक किला छीन लिया। लेकिन जल्दी ही लोगोंने उसके ऊपर आक्रमण किया, जिसमें उसके पैरमें चोट लग गई और वह जिन्दगीभरके लिये लंग (लंगड़ा) हो गया। मंगोलों और तुर्कों-में तेमूर नाम बहुत अधिक पाये जाते हैं, जिनसे अलग करनेके लिये वह इतिहासमें तेमूर-लंग (तेमूर लंगड़ा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। तेमूरके साले हुसेनने इसी समय बलखपर अधिकार कर लिया। तेमूर भी वही चला गया। धीरे-धीरे तेमूरके पंद्रह सौ अनुयायी हो गये। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३—३० अगस्त १३६४ ई०) में इलयास खोजाकी सेनाके साथ उसकी प्रथम भिड़ंत वक्षुके बांयें तटपर कुंदुजके नजदीक हुई। यद्यपि इलियासकी सेना पांचगुनी थी, लेकिन तेमूरने उसपर पूर्णतया विजय प्राप्त करके सेनाको नदी पार भगा दिया। इसी समय पिताके मरनेकी खबर सुनकर इलियास बापकी गद्दी संभालने अलमालिककी ओर दौड़ा, और तेमूर बहुत आसानी-से जेतों (मंगोलिस्तानियों)को अन्तर्वेदसे निकालनेमे सफल हुआ। अब तेमूर अपनी जन्मभूमि-का स्वामी था, लेकिन प्रतिद्वंद्वियो और बाधाओंकी कमी नही थी; इसलिये उसने प्रभावशाली सरदारों की एक कूरिल्ताई बुलाई, जिसमे रिक्त सिंहासनपर काबिलशाहके बैठानेका निर्णय हुआ। तेमूर-वंशने अबूसईदके समय (१४५१-५२ ई०)तक मंगोल खानोंको समरकन्दकी गद्दीपर बनाये रक्खा, जो यही बतलाता है, कि अन्तर्वेदके लोगोंमें छिङगिसी राजवंशके साथ एक विशेष तरहका लगाव स्थापित हो गया था। खानकी जगह संभालनेपर तेमूरको भारी विरोधका सामना करना पड़ता।

जाड़ा बीतते ही इलियास खोजा एक बड़ी सेना लेकर फिर अन्तर्वेदकी ओर आया। तेमूरका शिविर उस समय चिनास और ताशकन्दके बीचमें था। हुसेनने सिर-दरियाको पार कर लिया। लड़ाईमें दो हजार आदमियोंको मरवाकर हुसेन अपनी राजधानी सालीसराय (नदीके परले तट-पर) चला गया और तेमूर करशीकी ओर भागा। जेतोंने फिर समरकन्दको ले लिया। इसी समय तेमूरकी मददके लिये जेतोंके घोड़ोंमें महामारी फैल गई, जिससे बहुत सारे घोड़े मर गये और उन्हें अपना सामान पीठपर ढोनेके लिये मजबूर होना पड़ा। वह अन्तर्वेद छोड़कर चले गये। तेमूरके लिये यह बहुत अच्छा अवसर मिला था, किन्तु इसी समय हुसेनसे उसका बिगाड़ हो गया, जिसके

कारण उससे पूरा फायदा नहीं उठा सका। हुसेनने पहले धोखेसे तेमूरको खत्म करवाना चाहा, जब उसमें सफलता नहीं मिली, तो उसके खिलाफ अमीर मूसाको सेना देकर भेजा। मूसा बलखसे वक्षु पार हो उत्तरकी ओर बढ़ा, लेकिन तेमूरने उसे हरा दिया। फिर हुसेन स्वयं सालीसरायसे एक भारी सेना लेकर चला। तेमूर करशी होते बुखारा लौटा फिर अन्तर्वेद छोड़ ख्वारेज्मकी ओर भाग गया। हुसेन अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था। तेमूरने जाड़े भर तैयारी की। वसंत शुरू होते ही एक छोटी किन्तु बहुत ही सुशिक्षित और बहादुर सेनाके साथ आक्रमण कर उसने ताशकन्द ले लिया, फिर समरकन्द और करशीसे अपने प्रतिद्वंद्वीकी सेनाको चीरते वह जलायर अमीर कैखुसरोसे जा मिला। कैखुसरोने अपनी लड़कीका तेमूरके पुत्र जहांगीरसे ब्याह कर भारी सेनासे उसकी मदद की। तेमूरने पीछे मुड़कर हुसेनको वक्षुपार मार भगा दिया। जेतोके सामन्त अमीर जलायरसे तेमूर-का मेल हुसेनके लिये बहुत भयंकर था और अन्तमें उसने बहनोईसे संधि कर ली। हुसेनको तेमूर ने उसके विद्रोही सामन्त बदख्शांके हाकिमको दबानेमें सहायता भी दी। लेकिन, जब तेमूरके ऊपर जेतोंने प्रहार किया, तो हुसेनने विश्वासघात किया, और अन्तमें हारकर तेमूरके हाथमें बन्दी हुआ। तेमूर उसे मारना नहीं चाहता था, लेकिन उसके अमीरोंने बहुत जोर दिया और अन्तमें ७७१ हिं० (५ VIII १३६९—२६ VI १३७० ई०)में उसे अपने बहनोईको मरवाना पड़ा।

अब तेमूरका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं रह गया था। इसी समय १३६९ ई०में बलखमें उसने एक बड़ी कूरिल्ताई बुलाई, जिसमें चगताई-राज्यके सभी अमीर, तेमूरके गाढ़े दिनों और तरुणाईके साथी तथा उसके पुराने प्रतिद्वंद्वी भी शामिल हुए। सबने तेमूरको अपना शासक स्वीकार किया और मंगोलों तथा उनके पूर्वजोंके समयसे चली आई प्रथाके अनुसार ८ अप्रैल १३६९ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) को तेमूरलंगको एक सफेद नम्देपर बिठाकर उसे चारों ओरसे पकड़कर उठाया, और धर्मगुरु सैयद बरकाद्वारा अल्लाहकी दुआ पढ़े जानेके बाद अमीर घोषित किया। वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशपर अपना दृढ़ शासन स्थापित कर तेमूरने समरकन्दको अपनी राजधानी बनाया।

७८२ हि० (७ IV १३८०—२६ II १३८१ ई०) में तेमूरने अपने पुत्र मीरांशाहको खुरा-सानपर अधिकार करने के लिये पहले भेज फिर स्वयं भी वहां पहुंचा। इस समय ईरान कई राजवंशों में बंटा हुआ था। उत्तरमें सर्बदार-वंश था, जिसके—(१) अब्दुर्रजाक (१.५ वर्ष दो मास), (२) मसऊद (७ वर्ष), (३) शम्शुद्दीन, (४) तोगान तेमूर, (५) कस्साब हैदर, (६) यहिया करती, (७) हसन दमगानी, (८) अली मोवैयद अब्दुर्रजाक—आठ शासकोंने उत्तरी ईरानपर पैंतीस साल शासन किया। अन्तिम शासक अब्दुर्रजाकने तेमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। खुरासानमें हिरातको राजधानी बना कर्तवंश शासन कर रहा था। तेमूर इसी वंशके खिलाफ चढ़ा। राजधानी-के पास भारी लड़ाई हुई। कर्तोंके नगर काबूशान, तूस, नेशापोर, सब्जवार ध्वस्त होकर ईंटों और मिट्टीके ढेर रह गये। खुरासानके बाद तेमूरने सीस्तान, बलोचिस्तान और अफगानिस्तानपर आक्रमण किया। इस प्रकार १३८६ ई० (७८८ हिं०)में वह ईरानपर आक्रमण करनेके लिये स्वतंत्र था। अस्पहानका सारा इलाका और पारस मुज्जफरी-वंशके हाथमें था। इराक और आजुरबाइ-जानके इलाके अब भी इलखानी अमीर चोबानके वंशके हाथमें थे। बगदादने बिना प्रहारके ही अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार खिलाफतकी राजधानी तेमूरके हाथमें आ गई।

ईरानपर विजय प्राप्त करनेके बाद तेमूर समरकन्द लौटा। समरकन्दका भाग्य जाग उठा। तेमूरने अपने दरबारको बड़े ही धूमधामके साथ सजाया। समरकन्दमें एकसे एक सुंदर महल, मस्जिदें और मदरसे बनवाये, जिनके बनानेके लिये रोम, ईरान और भारततकके वास्तु-शास्त्री और शिल्पी बुलाये गये। लाखोंकी संख्यामें देश-विदेशोंके दास-दासियोंमेंसे काफी समरकन्दमें लाये गये, जिनके कारण समरकन्दके शिल्प और उद्योगको आगे बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली।

तोकतामिशपर आक्रमण—इसी वक्त पहलेके आश्रय-प्राप्त किपचक खान तोकतामिशसे तेमूरका झगड़ा हो गया और उसे अपने उत्तरी शत्रुकी शक्तिको तोड़नेकी आवश्यकता पड़ी। तोकतामिश सिरद-रियाके रास्ते सफल न होनेपर १३८५ ई०में काकेशसके रास्ते तब्रेजपर जा पड़ा, और इलखानियोंके

समयसे चले आते इस समृद्ध नगरको लूटकर बर्बाद कर दिया। इसका बदला लेनेके लिये १३८७ ई० में तेमूरने काकेशसके रास्ते दरबन्द पहुच तोकतामिशको बुरी तरह हराया। १३८८ ई० (७९० हि०)में तोकतामिशने सिरदरियाकी ओरसे भारी आक्रमण किया। तेमूरको उसके लिये ७९२ हि० (२० XII १३८९—१० XI १३९० ई०)मे प्रथम महाभियान करना पड़ा। वह सिर-दरियाके पार हो उत्तरमे बढने-बढ़ते ६ अप्रैलको वोल्गारोंकी भूमिमे अवस्थित कूचुकताग (लघु-पर्वत) मे पहुचा। फिर उलुगताग (महापर्वत)पर चढकर उसने आसपासकी भूमिका अवलोकन किया। यहीपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई०को एक शिलालेख लिखकर स्थापित किया।

आगे तोकतामिशको तेमूरने कैसे हराया, इसका वर्णन हम पहिले कर चुके है *।

उस करारी हारके बाद भी तेमूरके हटते ही तोकतामिश फिर सबल हो उठा, जिसके लिये तेमूरको २५ फर्वरी १३९३ ई०में दूसरा महाभियान काकेशसके रास्ते कास्पियनसे पश्चिम-पश्चिम करना पड़ा। १३ अप्रैलको वह तेराक नदीपर पहुंच गया। तोकतामिशको हारकर पीछे भागना पडा। तेमूर उसका पीछा करके आगे वोल्गाके किनारे-किनारे सराय पहुचा। नगरवासियोंको घर छोड़ बाहर निकल जानेका हुकुम दे उसे खूब लुटवाया। फिर मास्कोकी ओर जाना चाहता था, जिसके लिये भगवान्की मां (मरियम)का बडा जुलूस निकाला गया, बड़ी पूजा-प्रार्थना की गई, और भगवान्की मांने मास्कोको बचा लिया। तेमूरने क्रिमियाके बड़े नगर अजाकको भी लूटा। सोना, चांदी और रतन लदवाये तथा सुदर दास-दासियोंके समूहको लिये वह दरबन्दके रास्ते लौटा। तेमूरकी विजय-यात्राओंमें छिङ्गिसूकी विजय-यात्राने प्रेरणा दी थी, लेकिन जहा छिङ्गिस् हर एक विजयपर अपना दृढ़ शासन स्थापित करता था, वहां तेमूरके बहुतसे अभियान केवल लूटमारके लिये होते थे।

७९९ हि० (५ X १३९६–२६ VIII १३९७ ई०)में पांच सालकी अनुपस्थितिके बाद तेमूर राजधानी समरकन्द लौटा। वक्षु-तटपर अपनी खातूनों, पुत्रियों-पौत्रियों तथा राज-कुमारोंके साथ पहुंचनेपर लोगोंने उसका अपार स्वागत किया। खुशीमें उसने सोना और जवाहर लुटाये। तेमूर साठ वर्षका हो चुका था। इसी समय उसने तौकेल खानमसे शादी करके उसे "दिलकुशा" प्रासाद प्रदान किया। अभी भी उसकी लूटसे तृप्ति नहीं हुई थी, और अब उसकी नजर सिधु और गंगाकी ओर थी।

भारतपर आक्रमण—८०० हि० (२४ IX १३९७—१५ VIII १३९८ ई०)को उसने भारतके लिये प्रस्थान किया। उसका पौत्र पीर मुहम्मद पहले ही आकर मुल्तानका मुहासिरा किये हुये था। तेमूर बलख और हिन्दूकोहके रास्ते काबुल पहुचा। ८०१ हि०के पहले दिन (१३ सितम्बर १३९८ शुक्र) उसने सिंध नदीको पार किया। रास्तेमें नगरोंको लूटता और लोगोंकी लाशों-से सडकोंको पाटता जब सतलजके किनारे पहुंचा, तो पीर मुहम्मद भी उससे आ मिला। फिर भारतकी राजधानी दिल्लीकी बारी आई। बंदियोके मारे जल्दी चलनेमें रुकावट हो रही थी, इसलिये उनसे छुट्टी पानेके लिये उसने एक लाख बदियोंको कतल करवा डाला। यह इतना अमानुपिक कार्य था, जिसे करनेकी हिम्मत कुछ जल्लाद नही कर सकते थे, इसलिये सारी सेनाको हुकुम हुआ, कि हर एक आदमी इस काममें सहायता करे। इतिहासकार नासिरुद्दीन इसका बडा करुणापूर्ण वर्णन करता है। उसके लिये अपने पंद्रह हिन्दी दासोका मारना बहुत मुश्किल हो गया था। जो जरा भी ढिलाई करता, उसे पीटा जाता। अपने व्यापार और राजसी वैभवके लिये प्रसिद्ध दिल्लीने अपना खजाना तेमूरके लिये खोल दिया, लेकिन तेमूरने दया नही दिखलाई। वही हालत मथुराकी हुई—वहाके मदिर ध्वस्त कर दिये गये और मूर्तिया तोड़ दी गई। रास्तेमें हर एक आदमीको मारते और लूटनेसे बची हर एक चीजको नष्ट करते तेमूर हरिद्वारकी ओर पहाड़के भीतरतक घुस गया। उसके इतिहासकारोंने गढवालके पर्वतवासियोंके भीषण प्रतिरोधका वर्णन किया है, लेकिन तब भी वहांकी राजधानी तेमूरके हाथसे बच न सकी। कुछ लोगोंका मत है, कि तेमूर देहरादून-

* विशेषके लिये देखो पृष्ठ ५६-६२

की तरफ गया था, लेकिन उस समयके अलकनन्दा और भागीरथीके प्रदेशोंका केन्द्र दूनकी उपत्यका नहीं, बल्कि श्रीनगरके आसपास कहींपर था। वहांसे उसे लूटमें बहुतसा धन मिला था।

यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि तेमूरकी भारतपर चढ़ाई केवल लूट-पाटके लिये हुई थी। भारतसे अपार सम्पत्ति और लाखों दास-दासी लेकर तेमूर उसी साल (१३९८ ई०) समरकन्द लौट गया।

सिरिया-विजय करते समय वहाके शासक मिस्रके ममलूकोंको हुलाकूकी तरह तेमूर भी नहीं दबा पाया। दुबारा हमला करके वह उनके हाथसे दमिश्कको ही छीन सका।

सिरिया-विजयके बाद ८०५ हि० (१४०३ ई०)के वसतमें क्षुद्र-एसियाकी विजयके लिये तेमूर सिवास और कराशहर होते यनकुरु (अंगोरा)के मैदानमें पहुंच सुल्तान बायजीदसे भिड़ा। उसमानअली तुर्कसेना तेमूरके सामने पूरी तौरसे पराजित हुई। सुल्तान बायजीद अपने रनिवासके साथ तेमूरका बंदी बना। अब सारे क्षुद्र-एसिया (भूमध्य-सागरसे काला-सागरके तटतक)का स्वामी तेमूर था। यहांसे लौटकर जब तेमूर समरकन्द गया था, उसी समय स्पेनके राजा तृतीय हेनरीका दूत दोन रुय गोनजा-

लेज दे क्लावियो समरकन्दमें उसके दरबारमें पहुंचा। क्लावियोने अपनी यात्राका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। तेमूरका दरबार उस समय एक बड़े ही विशाल और कीमती तम्बूके भीतर लगा हुआ था। उसकी रानियां बिना किसी परदेके तेमूरके पास तख्तपर बैठी थी। यही नही, तेमूरकी खातूनों (रानियों)ने अपनी मद्य-गोष्ठीमें क्लावियोको अलग निमंत्रित करके सम्मानित किया था। इससे स्पष्ट है, कि तेमूरके समयतक अभी मध्य-एसियाके तुर्क राजपरिवारमें परदा-प्रथा जारी नही हुई थी, लेकिन उसके वंशजोंने भारतमें पहुचकर जल्दी ही उसे अपना लिया।
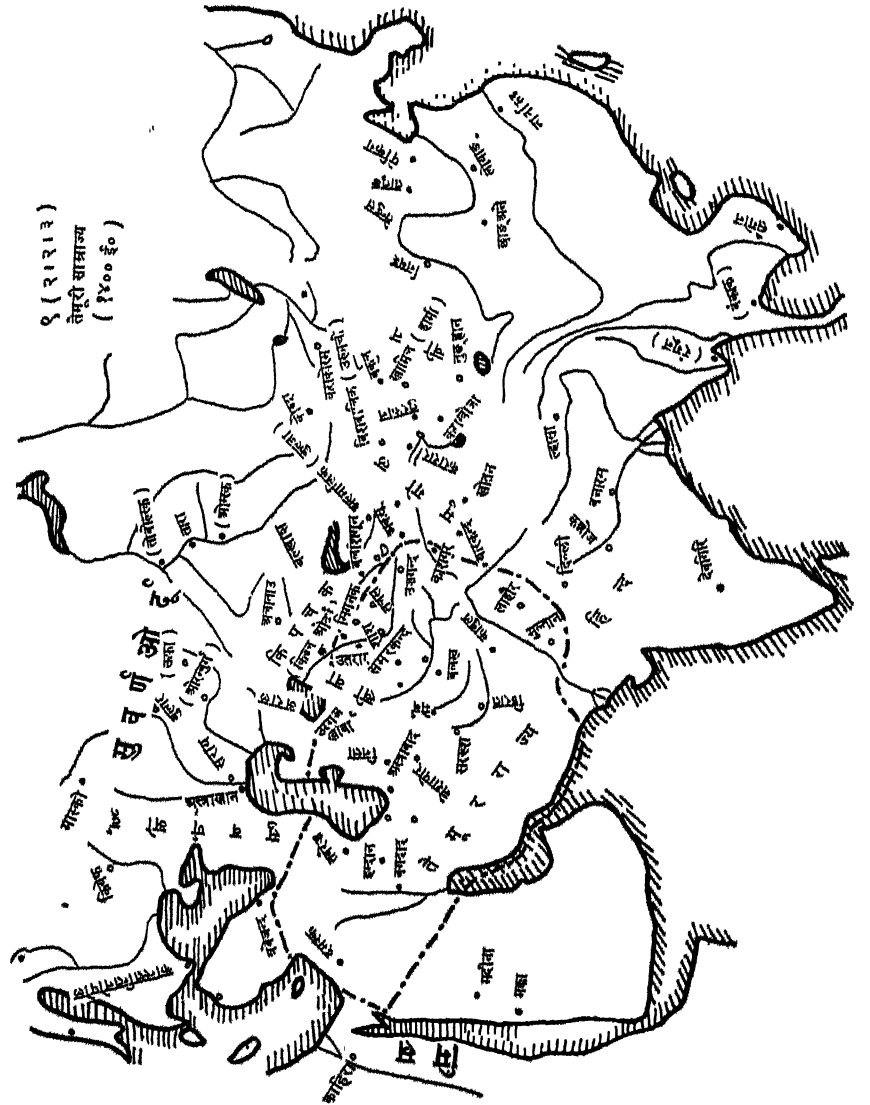
जनवरी १४०५ ई० (८०७ हि०—१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)मे फिर तेमूर अपनेको विजय-यात्रासे रोक नही सका। पश्चिममें उसके घोडोंकी टाप रूसकी भूमितक पहुंच चुकी थी; लेकिन जबतक पूरबमें चीन-विजय न कर ले, तबतक वह छिङ्गिस्के समकक्ष कैसे हो सकता था? इसीलिये जाडेमें ही उसने अभियान कर दिया। लेकिन, फरवरीमे सिरतटपर ओत-रारमें पहुंचकर बीमार हो १७ फरवरीको वही मर गया। चरित्रलेखक अहमद अरबशाह-पुत्रने जाडेके मुंहसे तेमूरके बारेमें कहलवाया है—

"ओ क्रूर अत्याचारी, अपनी गतिको रोक! कबतक तू दुःखी दुनियाको अपनी तलवार और आगसे नष्ट करता रहेगा? अगर तू शैतान है, तो यह भी समझ ले, कि मै भी एक शैतान हूं। हम दोनों बूढ़े है, हम दोनोंके सामने एक ही लक्ष्य है, और वह है दासोंको अपने जूए के नीचे लाना। अगर तू मानव-जातिका उच्छेद करना जारी रक्खेगा और दुनियाको निर्जन और ठंडी बनाएगा, तो समझ ले मेरी सांस उससे भी कही अधिक ठंडी और ध्वंसकारी है। तू अभिमान करता है अपनी उस असंख्य सेनापर, जो कि तेरा हुकुम बजा लानेके लिये दौड़ पड़ती है और जिसके द्वारा तू सभी चीजोंको नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है; तो मेरे इन जाड़ेके दिनोंको भी याद कर, जो कि सर्वशक्ति-मान्‌के श्वासोंकी मददसे हर चीजके नष्ट करनेकी क्षमता रखते है।....मैं किसी बातमें तुझसे कम नहीं। जरा देर ठहर! बदला लेनेके लिये मै अभी पहुच रही हूं और तेरी सारी आग और क्रोध मेरी बर्फीली आंधी द्वारा लाई ठंडी मौतसे तुझे नहीं बचा सकते।"

तेमूर अपने बारेमें "मेन् तिङ्री-कुली तेमूर" (मै भगवान्‌का दास तेमूर) लिखता था; लेकिन जिस भगवान्‌का दास तेमूर था, वह अवश्य ही निष्ठुर रहा होगा। छिङ्गिस् और उसके उत्तरा-धिकारियोंने भी तलवार और आगसे दुनियाको जीता था, लेकिन अनावश्यक हत्याके वह इतने पक्षपाती नहीं थे, जितना कि खूनका प्यासा तेमूर। ईरानी शियोंको दासके तौरपर बेचना, एक बड़ी समस्या थी, क्योंकि मुसलमानको दास नही बनाया जा सकता। इस समस्याको मुल्ला शमशुद्दीनके इस फतवाने हल कर दिया—शिया मुसलमान नहीं है, बल्कि काफिरोंसे भी बदतर है।

यदि तेमूर चाहता, तो अपनेको खान (बादशाह) क्या खलीफा घोषित कर सकता था। तेमूर-की सेना उसके कौशल और सार्वत्रिक विजयोंके कारण उसपर इतना विश्वास रखती थी, और उसके हुकुमकी इतनी पाबन्द थी, कि अपार सम्पत्तिके लूटनेमें लगी होनेपर भी तेमूरके ना करनेपर अपने हाथोंको तुरंत रोक देती थी। ऐसी अंधभक्त सेनाके बलपर पैगम्बर बनना उसके लिये बिल्कुल आसान था। कवियोके प्रति तेमूरकी विशेष सहानुभूति नहीं थी, लेकिन वह दरबारमें कवियों, गायकों, सूफियों-का सत्कार करता था। नकशबन्दी दरवेशोंके सम्प्रदायका संस्थापक ख्वाजा वहीउद्दीन [मृत्यु ७९१ हि० (३१ XII १३८८—२१ XI १३८९ ई०)], ख्वाजा अहरार, ईशान मखदूम कासानी और सूफी अल्लामदारपर उसकी बड़ी आस्था थी। कवियों और सूफियोने उसके खूखार सैनिकोंके मनको नरम करनेमें शायद ही कुछ काम किया हो।

वोल्फके अनुसार तेमूर "लम्बे-चौड़े कदका आदमी था। उसका सिर असाधारण तौरसे बडा तथा ललाट चौडा था। रंग उसका बहुत ही सुन्दर लाली लिये हुये गोरा था। उसके लम्बे बाल जन्मसे ही (ईरानी) पुराण-प्रसिद्ध जालकी तरह सफेद (ब्लौड) थे। अपने कानों में वह दो बहुमूल्य हीरे पहना करता था। उसके चेहरेपर हमेशा गंभीरता और एक तरह की उदासी छाई रहती थी। उसे

हास-परिहास और चुहल बिल्कुल पसन्द नहीं थी, खास करके झूठका तो वह बहुत भारी शत्रु था। झूठकी जगह वह अपनी रायके विरुद्ध सचको ज्यादा पसन्द करता था। तेमूर जिस बात या लक्ष्यको पकड़ लेता या आज्ञा दे देता, उसे फिर उलटता नहीं था। अतीतके लियें उसे कभी अफसोस नही हुआ और न अनागतकी आशामें उसने कभी आनन्द मनाया। उसे कवि और विदूषक पसन्द नही थे। उसे प्रिय थे चिकित्सक, ज्योतिषी, धर्मशास्त्री। वह अक्सर अपने सामने शास्त्रार्थ कराया करता। सबसे ज्यादा भक्ति उसकी दरवेशों (साधु-संतों)के ऊपर थी, जिनके आशीर्वादसे वह अपनी विजयोंकी सफलता समझता था। लिखना-पढ़ना वह जानता था और जीवन-घटनाओंपर उसने अपनी लेखनी चलाई भी है। उसकी स्मृति बहुत तेज थी। वह अरबी नही जानता था, लेकिन तुर्की, मगोल और फारसी भाषायें अच्छी तरह जानता था। वह कट्टर मुसलमान नही था, क्योकि वह छिङ्गिस्के यासा (तुरा) को कुरानके ऊपर मानता था। उसने अपने कानून (तुजुक)को यासासे लेकर बनाया। बाबर और अकबरने भी अपने पुरखा तेमूरका ही अनुकरण किया। प्रसिद्ध ही है, कि भारतीय मुगल राजकुमारोंका खतना नहीं होता था। तेमूर यात्रियों और दरवेशोंसे दूसरे मुल्कोंके बारेमें जहां ज्ञान प्राप्त करनेकी कोशिश करता था, वहां इस कामके लिये उसने खुद भी अपने आदमी दूसरे देशोमें भेज रखे थे।

तेमूरके उत्तराधिकारी—और बातोंमें छिङ्गिस्का अनुकरण करते भी तेमूरने अपने राज्यको नही बाटा। उसने अपने जीवनमें ही अपने पौत्र (जहांगीर-पुत्र) पीर मुहम्मदको अपना उत्तराधिकारी चुना था। तेमूरकी मृत्युके समय वह कधारमें था। उसके आनेसे पहले ही दूसरे पुत्र खलील सुल्तानने सेनाके बलपर अपनेको अमीर घोषित कर दिया। तेमूर-पुत्र शाहरुख हिरात (खुरासान)का शासक था, सिंहासनके लिये उसका भी दावा था। उसे खुरासान, सीस्तान और माजन्दरानका राज्य मिल गया, तो भी वह चुप न हुआ। खलील सुल्तानकी राजगद्दीकी घोषणा सुनकर शाहरुख भी अपने एक सेनापतिको हिरातमें छोड़ वक्षुकी ओर चला। खलील और पीर मुहम्मदने समझौता कर लिया, कि खलीलके बाद पीर मुहम्मद उत्तराधिकारी होगा। दोनोंकी संयुक्त शक्तिके सामने शाहरुख उस वक्त कुछ नहीं कर सका, लेकिन दो साल बाद उसने अन्तर्वेदको खलीलसे छीन लिया, और ८१७ हि० (२३ III १४१४—११ II १४१५ ई०) तक अस्पहान और शीराजतक बढ़कर तेमूरके प्रायः सारे राज्यका शासक बन गया। समरकन्द, बुखारा, हिरात, मेर्व, सब्जवार, शुस्तर, अस्त्राबाद और शीराज-जैसे नगर उसके हाथमें थे।

साहित्य और कला—यद्यपि तेमूरने ललित कलाओंके लिये सहृदय हृदय नहीं पाया था, लेकिन दुनियाके दूसरे बादशाहोंके दरबारी ठाटको बहुत पसन्द करता था, इसीलिये अनिच्छापूर्वक भी उसके द्वारा कलाको प्रेरणा मिली। वास्तुकलाके लिये विशेष तौरसे, क्योंकि उसे महलों, मस्जिदों और अच्छी-अच्छी इमारतोंके बनानेका बड़ा शौक था। समरकन्दमें अब भी उसकी बनवाई कुछ इमारतें मौजूद हैं। उसके समय इस दिशामें जो कार्य आरम्भ हुआ, उसकी पूर्णता उसके लड़के शाहरुख और पोते उलुगबेगके समय हुई। तेमूरने १३७१ ई०में तुरकान आकाका रोजा समरकन्दमें बनवाया था, जो शाहजिंदाके नामसे अब भी एक सुन्दर इमारत है। बीबी खानमकी मस्जिद (समरकन्द में) १३९९-१४१४ई०में तैयार हुई थी, जो आज यद्यपि बहुत टूटी-फूटी अवस्थामें पहुंच गई है, किन्तु है एक सुन्दर इमारत। तेमूरकी अपनी समाधि "गोरे-अमीर" जिसे उसके लड़के शाहरुखने बनवाया, अब भी समरकन्दकी भव्य इमारत है।

तेमूरके कालकी एक बहुत बड़ी देन है अरबी लिपिकी नस्तालीक शैली। अरबके आरम्भिक खलीफोंके समय अरबी भाषा कूफी लिपिमे लिखी जाती थी जिसका स्थान जल्दी ही टेढ़ी-मेढ़ी नस्ख लिपिने लिया। आज भी कुरान और अरबीकी पुस्तकें इसी लिपिमें छपी मिलती हैं। लेकिन तेमूरके दरबारी मीरअली तब्रेजी [जन्म ७८१ हि० (१९ IV १३७९—९ III १३८० ई०)—मृत्यु-८०७ हि० (१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)] ने नस्ख लिपिके टेढ़े-मेढ़े कूबड़ोंको तोड़कर सीधा कर दिया, और उससे एक बहुत ही सुन्दर लिपि "नस्तालीक" निकल आई। अरबी-भिन्न

फारसी आदि भाषाओंके लिए नस्तालीक लिपि बहुत पसन्द की गई। भारतमे भी उर्दू इसी लिपि-मे लिखी जाती है। छापेके जमानेमे टाइपकी सुविधाके कारण "नस्ख" फिर आगे बढ गई—ईरानमें उसीमे पुस्तकें और अखबार छपते है। लोगोंको बहुत अफसोस है, कि टाइपोके बनानेमें सुविधा न होनेके कारण मुद्रण-कलाने नस्तालीकको उपेक्षित कर दिया। लेकिन हमारे यहां उर्दूके लिये टाइपोसे अधिक लिथोका प्रचार है, जिसके कारण उर्दूमे अब भी तेमूरके समयकी देन 'नस्तालीक'का बहुत प्रचार है। नस्तालीकके प्रचारमे सबसे अधिक हाथ हिरातके सुलेखकों-का है, जिन्होंने लेखन-कलाका मान इतना ऊंचा कर दिया, जहांपर उसके बाद फिर वह नही पहुंच सका।

राजावलि—तेमूर-वंशमें निम्न सुल्तान हुए —

१. तेमूर-लंग	१३७०-१४०५ ई०
२. खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र	१४०५–६ ,,
३. शाहरुख, तेमूर-पुत्र	१४०६–४७ ,,
४. उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र	१४४७–४९ ,,
५. अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र	१४४९–५१ ,,
६. अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र	१४५१–५२ ,,
७. अबूसईद, मीराशाह-पुत्र	१४५२–६९ ,,
८. अहमद, अबूसईद-पुत्र	१४६९–९३ ,,
९. सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र	१४९३–९४ ,,
१०. बैसुकर, मुहम्मद-पुत्र	१४९४–९७ ,,
११. सुल्तानअली, मुहम्मद-पुत्र	१४९७–१५०० ,,
१२. बाबर, उमरशेख-पुत्र	१५००–१ ,,

२. खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र (१४०५–६ ई०)

खलील सुल्तानमें बहुतसे गुण थे, लेकिन वह सीमासे अधिक साखर्च था, जिसके कारण खजाना खाली होते देर नही लगी। उसमे दूसरी कमजोरी यह थी, कि वह भी नूरजहां-प्रेमी जहांगीरकी तरह शादमुल्कका गुलाम था। इन कारणोसे जल्दी ही उसके बड़े-बड़े समर्थक उदासीन या अलग हो गये। १४०६ ई०मे खुदादाद और शेख नूरुद्दीनने स्वामीसे विद्रोह करके समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। उस समय तो किसी तरह उसे बचाकर अगले साल नूरुद्दीनके साथ सुलह कर ली; लेकिन, फिर खुदादादने दूसरे अमीरोको मिलाकर समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। बातचीत-के बहाने विद्रोहियोंने सुल्तानको बहकाकर उसे कैद कर लिया और नगरपर उनका अधिकार हो गया। यह खबर सुनकर शाहरुखने अपने सेनापति शादमुल्कको खुदादादको दंड देनेके लिये भेजा। खुदादाद समरकन्द छोडकर भाग गया। शादमुल्क खुले दरवाजों समरकन्दके भीतर घुसा। उसने रानी शादमुल्कके साथ बडा ही घृणाजनक दुर्व्यवहार किया, जो शाहरुखके लिये अच्छा नही था। शाहरुख अपने तरुण पुत्र उलुगबेगको राज्यपाल बना समरकन्दमें रख हिरात लौट गया। खलील उस समयतक भागकर मुगोलिस्तानमे चला गया था, किंतु शादमुल्कका वियोग वह नही सह सका और हिरातमें जाकर उसने अपने भाईको आत्मसमर्पण कर दिया। शाहरुखने उसे सम्मानपूर्वक हिरातका राज्यपाल बना दिया, लेकिन वह उसी साल मर गया।

३. शाहरुख, तेमूर-पुत्र (१४०६–४७ ई०)

तेमूर खानदानका यह सबसे बड़ा और प्रतापी बादशाह था। बहुत दिनोसे हिरातमे रह जानेके कारण उस नगरके साथ इसका इतना प्रेम हो गया था, कि तेमूरकी गद्दी संभालनेपर भी उसने अपनी राजधानी समरकन्दमें नहीं बदली। तेमूरी-वंश और मध्य-एसियाकी कला और साहित्यका

चरम उत्कर्ष शाहरुखके समय हुआ। उसने अपने बड़े पुत्र उलुगबेगको समरकन्द (अन्तर्वेद) का शासक बना दिया था, जिसने वहां अपनी सुरुचि और विद्याप्रेमका परिचय दिया।

अब्दुर्रजाक समरकन्दी शाहरुखका बहुत कृपापात्र इतिहासकार था। इसने "वकाया" लिखना शुरू किया, जिसकी परिपाटी भारतमे भी मुगलवंशने जारी की। तत्कालीन इतिहासके लिये सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओंके ये दरबारी अभिलेख बहुत ही उपयोगी हैं। समरकन्दीके ग्रंथ "मतलऽसादेन" में प्रतिवर्षकी घटनाओंका उल्लेख है। ८१२ हि० (१६ मई १४०९–६ अप्रैल १४१० ई०)की "वकाया" लिखते समय वह कहता है—"उज्बेकमुल्क (किपचक)के स्वामी पुलाद खानका अमीर अदिकू बहादुर और अमीर ईसाके नोकर (अफसर) दूत बनकर आये। उन्होंने शिकारी जानवर और दूसरी चीजें भेंट की। मिर्जा (राजकुमार) मुहम्मद जौकीके लिये लड़कीकी खास्तगारी करते हुये शाहरुखने खानके लिये बहुतसी भेटें और दूतोंके लिये बहुतसे इनाम दिये।" अगले साल भी राजधानी हिरातमें "वलायत-उज्बेक" और "दश्ते-किपचक"से अमीर अदिकू दरबन्दके रास्ते और अमीर शेख इब्राहीम शरवानके रास्ते दूतमंडल लेकर आये।

८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२ ई०—४ मार्च १४१३ ई०)मे समरकन्दी लिखता है—ख्वारेज्मको लेकर शाहरुखका किपचकोंके साथ सघर्ष हो गया। ८२२ हि० (२८ जनवरी—१९ दिसम्बर १४१९ ई०) में किपचक खान बुराकने उलुगबेगके ऊपर आक्रमण किया। तेमूरने जैसे तोकतामिशको संरक्षण देकर आगे बढ़ाया और अन्तमें वह भस्मासुर बनने लगा, वही बात बुराक खानने अपने भूतपूर्व सहायक और संरक्षक उलुगबेगके साथ की। ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६–२३ सितम्बर १४२७ ई०)में बुराक ओगलानने अन्तर्वेदपर भीषण आक्रमण किया। समरकन्दमें लोग इतने डर गये, कि उन्होंने नगरका दरवाजा बन्द करनेका विचार शुरू किया। उलुगबेगके हारकर भागनेकी खबर सुनकर शाहरुख स्वयं एक बड़ी सेना लेकर समरकन्दकी ओर आया और बुराकको अन्तर्वेद छोड़कर भागना पड़ा।

शाहरुखने थोडे ही समयमें तेमूरद्वारा विजित प्रायः सारे साम्राज्यको अपने हाथमें कर लिया। उसके बाद जब-तब ख्वारेज्म या सिर-दरियाकी ओर किपचकों (उज्बेकों)के आक्रमणका मुकाबिला करना पडता था, नही तो वह अपने समयको साहित्य, संगीत और कलाके विकासमें लगाता था। संगीतका वह प्रेमी ही नहीं था, बल्कि उसने इसके लिये स्वयं बहुतसे गीत बनाये थे। ८२०–२३ हि० (१४१७–२० ई०) में शाहरुखके दरबारमें चीनसे एक दूतमंडल आया, जिसके उत्तरमें ८२३ हि० (१७ I–७ XII १४२० ई०)में शाहरुखने अपना दूतमंडल चीन भेजा। शाहरुखका बड़ा लड़का उलुगबेग ज्योतिष और गणितका विद्वान् तथा भारी संरक्षक था। इसी तरह उसका छोटा लड़का बैसुकर पुस्तकों और ललित कलाका बडा प्रेमी था। बैसुंकरने इस दूतमंडलके साथ नक्काश (चित्रकार) ख्वाजा गियासुद्दीनको कर दिया था, जिसमें कि वह चीनी जीवनके हर पहलूको चित्रित करके लाये, तथा चीनी चित्रकलाको नजदीकसे देखे।

८३९ हि० (२७ जुलाई १४३५–१६ जून १४३६ ई०)में ख्वारेज्मकी ओरसे दूतने खबर दी कि किपचक शासक अबुल्खैर ओगलानने अचानक दश्त (किपचक-मैदान)की ओरसे ख्वारेज्मपर आक्रमण कर दिया है और वहांका राज्यपाल सुल्तान इब्राहीम शादमुल्क-पुत्र भाग गया है। शहरको सर करके किपचकोंने उसे लूटा बरबाद किया, फिर अपने देश लौट गये। ८४४ हि० (२ जून १४४०–२३ अप्रेल १४४१ ई०)में अस्त्राबादकी ओरसे खबर आई, कि दश्तकी ओरसे आकर उज्बेक-सेना मुल्कमें लूट-पाट मचा रही है। वहांका शासक अमीर हाजी यूसुफ जलाल कुतलुग कुछ नहीं कर सका। "बकायानिगार" (घटना-लेखक) समरकन्दीने लिखा है—"कहीं-कहीं उज्बेक-सैनिक कजाक होकर (उज्बेक कजाकशुदा) माजन्दरान प्रदेशमें भी घुस आये और वहांसे लौट गये।" १४४० ई०में अभी "कजाक" शब्द एक विशेष जातिका वाचक नहीं हुआ था, बल्कि उज्बेकोंके लुटेरेपनेको दिखलानेके लिये ही यहां कजाक शब्दका प्रयोग हुआ; लेकिन पीछे उज्बेक (किपचक)

तुर्कोंके एक भागको कजाक कहा जाने लगा, जिनके ही नामपर आज सोवियत सघका दूसरे नंबरके सबसे बडे गणराज्यका नाम कजाकस्तान है और आज कजाक शब्द लुटेरेका पर्यायवाची नही समझा जाता ।

अन्तर्वेदपर किपचको (उज्बेको)का आक्रमण १४१२ ई०से ही होने लगा था। उसके बादके अट्ठाईस वर्षोंमें उनके साथ बहुतसे सघर्ष हुये । पहले वह मध्य-सिर-उपत्यका और ख्वारेज्मतक लूट-पाट मचाते थे, पीछे अब माजन्दरानतक हाथ बढाने लगे । यद्यपि अभी अन्तर्वेदके उज्बेकोके हाथो-मे जानेमें साठ वर्षकी देरी थी, किंतु उनका आतक अभीसे छा गया था और १४४० ई०मे शाहरुखने हुकुम दिया था—"हर साल दसहजारी अमीरोंमेंसे कुछ वलायत-माजन्दरानमे जा सजग रहते वास करे।" इसके बाद मिर्जा बैसुकर, फिर मिर्जा अलाउद्दीन दोनो राजकुमारोने भी वहां जाकर डेरा डाला। इसी साल अमीर हाजी युसुफ जलील, उसका भाई अमीर शेख हाजी और दूसरे दसहजारी अमीर अपनी सेना लेकर वहा पहुचे, किंतु यकायक उज्बेक सेना उनके ऊपर टूट पडी और अमीर हाजी युसुफ मारा गया ।

८४५ हि० (२२ मई १४४१ ई०–१२ अप्रैल १४४२)मे शाहरुखने इतिहासकार अब्दुर्रजाक के नेतृत्वमें एक दूतमंडल भारत भेजा। तेमूरियोके कितने उदार विचार थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि शाहरुखने अपने दूतमंडलको दिल्ली या बहमनी रियासतके पास न भेजकर उस समयके दक्षिणके सबसे शक्तिशाली हिंदूराज्य विजयनगरमे भेजा, जिसमे एक सुभीता यह भी था—ईरान शाहरुखके राज्यमे था, जिसका समुद्रके रास्ते भारतके साथ व्यापारिक सबध विजयनगरके समुद्र-तटद्वारा स्थापित था । यह दूतमडल हिरातसे चलकर केरमानके रास्ते ओरमुज्द बदरगाहपर पहुंचा, जहासे जहाजमें बैठकर भारत आया। अब्दुर्रजाकने विजयनगरका बहुत ही सुदर वर्णन "मतलऽसादेन"में किया है ।

राज्यपाल होनेके समय भी शाहरुखने हिरातको बहुत ही समृद्ध और अलंकृत किया था, लेकिन जब उसने उसे तेमूरी राज्यकी राजधानी बना दिया, तो हिरात सारे इस्लामिक जगत्का एक बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र बन गया। विद्वानों और कला-विशारदोका वहां बड़ा सम्मान था । बाबरने अपने ग्रंथमे लिखा है, कि हिरात-जैसा शहर दुनियामें नही है । हिरातमे चित्रकलाकी एक खास कलम—सूक्ष्मचित्र—का आरम्भ किया गया, जो कि शायद पहिले समरकन्दसे वहां आई। हिरात नगरके पश्चिमोत्तरमे शाहरुखने १४१८–३७ ई०मे अपनी रानी गौहरशादका रौजा मस्जिदके साथ बनवाया। यह वहांकी सबसे सुदर इमारत है। शाहजहा भी एक समय खुरासान गया था, जिसका ही प्रधान नगर हिरात है। हो सकता है ताजमहल बनानमे उसे यहाके गौहरशाद-के रौजेसे प्रेरणा मिली हो। इस रौजेका निर्माण कवामुद्दीन शीराजी नामक एक कुशल वास्तुशास्त्री-ने किया था। यही गौहरशाद उलुगबेग और बैसुकरकी मां थी, जिससे शाहरुख बहुत प्रेम करता था। बैसुकरने हिरातमें एक किताबखाना बनवाया था, जिसकी इमारत अत्यन्त सुदर ही नहीं थी, बल्कि वहांपर पुरानी पुस्तकोंका बहुत अच्छा सग्रह था, और कितने ही सुलेखक पुस्तकोंको लिखते रहते थे । हुसेन बैसुंकरने १४३० ई०में "शाहनामा"की एक बहुत ही सुदर प्रति लिख-वाई, जो कि आजकल तेहरानके संग्रहालय मे है ।

४. उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र (१४४७–४९ ई०)

उलुगबेगने अपने पिताके उपराजके तौरपर एकतालीस वर्ष (१४०६–४७)तक समरकन्द-में रहते अन्तर्वेदका शासन किया । ज्योतिष और गणितके विकासमें उसने खासतौरसे सहायता की। तारो और ग्रहोंके ठीक-ठीक वेधके लिए उसने एक बहुत बड़ी वेधशाला समरकन्दके पास कोहक नदीके ऊपर बनवाई, जिसका आरम्भ ८३२ हि० (११ अक्तूबर १४२८— १ सितम्बर १४२९ ई०) में हुआ था। इसके दरबारमें तथा वेधशालाके विद्वान् काजी जादरूम गयासुद्दीन, जमशीद मोहीउद्दीन काशानी, इसराईली (यहूदी) सलाहुद्दीन थे। यहींपर प्रसिद्ध सारणी ८१४ हि० (५ जुलाई १४३७–

२६ मई १४३८ ई०)में तैयार हुई। उलुगबेगकी वेधशालाके ध्वंसावशेष नगरके पूर्वी उपान्तमें चोपान-अता पहाड़ीपर अब भी मौजूद हैं। उसकी ज्योतिष सारणी—"जीजे-उलुगबेग"—सदियोंतक यूरोपमें भी मान्य रही। पूर्वके देशोंमे बनी सभी ग्रह-सारणियोंमें यह सबसे अधिक पूर्ण और शुद्ध थी। इसमें —(१) समय और युग, (२) समय-माप, (३) ग्रह-कक्षा, (४) नक्षत्र-ताराके स्थान दिये गये है। इसका बहुत ही सुदर पहला संस्करण प्रोफेसर ग्रीफ्सने १६४२–४८ई०मे आक्सफोर्ड में छपवाया था। डाक्टर टामस हाइडने १६६५ ई०मे इसका लातिनी अनुवाद प्रकाशित कराया। उलुगबेगकी नक्षत्र (तारा)-सूची इतनी पूर्ण है कि आज भी खुली आखोंसे दिखलाई देनेवाले उतने ही (डेढ़ हजार) तारोंकी सूची बन पाई है समरकन्दको उलुगबेगने मध्य-एसियाकी उज्जयिनी बना दिया था।

उलुगबेगके बनवाये महल , मस्जिद, मदरसे वास्तु-कलाके अत्यन्त सुदर नमूने है। अगर उसके पिताने हिरातको भव्य बनाया, तो उलुगबेगने समरकन्दको भी उससे पीछे नही रहने दिया। उसके महलोंको सजानेके लिये चीनके सुंदर चित्रकारों और कलाकारोंने आकर वर्षों काम किया था। चीनी बरतनोंका उसके पास बहुत ही सुंदर सग्रह था।

८५० हि० (२९ III १४४६—१७ II १४४७ ई०)में पिताके मरनेपर तेमूरी सिंहासनका अब उलुगबेग उत्तराधिकारी था, इसलिये उसे समरकन्द छोड़कर हिरात जाना पड़ा। उलुगबेग सैनिक योग्यता नहीं रखता था, न कूटनीतिका पंडित ही था, इसीलिये वह दो सालसे अधिक शासन नहीं कर सका। जल्दी ही उसके प्रतिद्वंद्वी अलाउद्दौलाने समरकन्दका किला उससे छीन उलुगबेगके पुत्र अब्दुल्लतीफको बंदी बनाया। उलुगबेगने आक्रमण करके मुलहकी सबसे पहली शर्त यह रक्खी, कि अब्दुल्लतीफको भेज दिया जाय। दूसरी शर्तें अलाउद्दौलाने पूरी नहीं की, जिससे फिर लड़ाई शुरू हुई। अलाउद्दौला हारकर मशहद (खुरासान)की ओर भागा। इसी समय तुर्कमानोंने हिरातको और उज्बेकोंने समरकन्दको लूटा। उलुगबेगने वर्षों लगाकर "चीनीखाना" को चीनी कलाकारों द्वारा अलंकृत करवाया था और सुंदर चीनी बर्तनोंका अद्भुत संग्रह करवाया था। उन सबको पल मारते-मारते उज्बेकोंने नष्ट कर दिया। जल्दी ही पुत्रवत्सल पिताके विरुद्ध अब्दुल्लतीफने विद्रोह कर दिया और आक्रमण करके उसे बन्दी बना दिया। उसने इतनी ही नृशंसता नही दिखलाई, बल्कि चुपकेसे एक ईरानी गुलाम भेजकर बापको मरवा दिया।

उलुगबेग बहुत ही कोमल स्वभावका आदमी था, कला और विज्ञानके पीछे तो वह पागल था। उसकी कोमलहृदयताने तोकतामिशकी कहानियोंको जानते हुये भी बोराक ओगलानका संरक्षक बनवाया। उसके विद्या-प्रेमकी प्रतीकके रूपमें बुखारामे उसके हुकुमसे बने एक मदरसेमें बहुत सुंदर अक्षरोंमें अब भी एक छोटासा अभिलेख मौजूद है। "तलबल्-इल्म फरीजत अला-कुल्ले मुव स्लेमुन्व मुस्लेमात" (विद्या पढ़ना हरएक मुसलमान स्त्री-पुरुषका कर्तव्य है)।

साहित्य—खोजा इस्मत बुखारी उलुगबेगका राजकवि था। उसके अतिरिक्त खियाली, बुरन्दक, रुस्तम खूरियानी आदि भी दरबारके पारसी कवि थे—अभी तुर्कीको साहित्यकी भाषा नही स्वीकार किया गया था, तो भी उलुगबेगके पिता शाहरुखने तुर्की गीत बनाये थे। उमरशेख-पुत्र सुल्तान इस्कन्दर और खलील मिर्जा दोनों राजकुमार फारसीके कवि थे। शाहरुखके लड़के बैसुंकरका पुत्र बाबर मिर्जा सुंदर प्रतिभाशाली कवि था जो तरुणाईमें ही मर गया। यह भारतके मुगल-सम्राट् बाबरसे भिन्न था। तुर्कीके कवि सिद्दी अहमद मिर्जाने "लताफतनामा"के नामसे एक मसनवी (कथाकाव्य) लिखी थी। इसी वंशमें आगे पैदा होनेवाला जहीरुद्दीन बाबर तलवारका ही धनी नहीं, बल्कि सरस्वतीका वर-पुत्र भी था।

५. अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र (१४४९-५१ ई०)

पिताके हत्यारे नृशंस अब्दुल्लतीफको निश्चित हो राज्य भोगनेका मौका न मिला। पिता तथा अपने प्यारे सम्बन्धियोंकी निर्मम हत्या सामन्तोंके लिये कोई असाधारण बात नहीं समझी

जाती, इसीलिये सस्कृतमें कहावत मशहूर है—"जनकभक्षा राजपुत्रा." (पिताके भक्षक होते है राज-पुत्र)। अब्दुल्लतीफका एक बड़ा प्रतिद्वद्वी तेमूर-पौत्र मीराशाहपुत्र अबूसईद (सम्राट् बाबरका दादा) था। उसे अब्दुल्लतीफने हरा दिया। किंतु अब्दुल्लतीफके महापापको अधिक दिनोतक बर्दाश्त नही किया जा सकता था। उलुगबेगके एक स्वामिभक्त सेवकने इस आततायीको ८४५ हि० (१४ फर्वरी १४५०–५ जनवरी १४५१ ई०)मे मार डाला।

६. अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र (१४५१–५२ ई०)

साल-साल दो-दो सालके लिये गद्दीपर बैठनेवाले तेमूरी शासकोंने अब बतला दिया, कि वंशकी नैया डावाडोल हो रही है। अब्दुल्लाने उन्ही उज्बेकोंकी सहायतासे समरकन्दको प्राप्त किया, जो कि तेमूरी-वशका स्थान लेनेवाले थे। "वकायानिगार" समरकन्दीने ८५५ हि० (३ फर्वरी १४५१–२५ दिसम्बर १४५३ ई०)में लिखते हुए बतलाया है–"इसी बीच राजसेवकोंने खबर दी, कि उज्बेक बादशाह अबुल्खैर खान (१४२८–६८ ई०)–जो बहुत दिनोसे अपने दरबारका दोस्त और शुभेच्छु है—आज्ञा पानेपर सेवामें आना चाहता है। सुल्तानकी स्वीकृति पाकर अबुल्खैर जल्दी-जल्दी अब्दुल्लाके ओर्दूमें आया। सुल्तानने उसका बडा स्वागत किया। (पीछे) अबुल्खैरने समरकन्द-विजयकी तदबीर अबूसईदको बतलाई। फिर दोनो यस्सी नगरके सीमांतसे ताशकन्द और खोजन्द-के इलाकेमें आये। जब अब्दुल्लाको पता लगा, कि अबूसईद उज्बेक खानकी सेनाके साथ आ रहा है, तो वह एक बडी सेना ले कोहक नदी पार हो आगे बढ़ा। दोनों सेनाएं आमने-सामने खड़ी हुई और दोनोमें २२ जून १४५१ ई० शनिवार (२२ जमादी II ८५० हि०)को भयकर लड़ाई हुई जिसमे अब्दुल्ला मारा गया और भारतीय मुगल-वंश-सस्थापक बाबरका पितामह, अबूसईद विजयी हुआ।

७. अबूसईद, मीरांशाह-पुत्र (१४५२–६९ ई०)

अबुल्खैरको उसकी सहायताके लिये अबूसईदने बहुतसी भेंट दे कृतज्ञता प्रगट की, और अब्दुल्लतीफकी हत्यामें हाथ रखनेवालोंको भी दंड दिया। शाहरुखके मरनेके बादसे ही जो गृह-कलह चल रहा था, उसे दबानेमें अबूसईद सफल हुआ। तेमूरी वंशका यह अन्तिम शक्तिशाली सुल्तान था। जैसा कि पहले बतला चुके है, अभी भी छिङ्-गिस्वंशी खान समरकन्दकी गद्दीपर बैठा करते थे। अन्तर्वेद, पूर्वी ईरान और अफगानिस्तान अबूसईदके राज्यमे थे। वह चतुर सैनिक और कुशल शासक था। इसका समकालीन तुर्कीका सुल्तान मुहम्मद II था, जिसने १४५३ ई०में कान्स्तन्तिनोपल लेकर बलकान (युरोप)मे इस्लामी राज्यकी स्थापना की।

रबी I ८६४ हि० (२६ दिसम्बर—२५ जनवरी १४४९—६० ई०)के आरंभमें इसके दरबार मे कलमकों (मंगोलों) और किपचकोंके दूत आये, जिनका अबूसईदने बहुत सम्मान किया। लेकिन उत्तरके घुमन्तुओंकी मित्रता बादलके छांहसे बढ़कर नहीं होती। ८६९ हि०के जमादी II (फर्वरी १४६५ ई०)के मध्यमे खबर मिली, कि किपचक खान अबुल्खैरके भाई सैयद यक्का सुल्तानको अमीरों (उच्च अफसरो)ने ख्वारेज्ममें पकड़कर हिरात भेज दिया, जहां वह बन्दीखानेमे पडा है। अबूसईदने उसे अपने पास बुलाया, और "उस सदाचारी सुभक्त तरुण"को बहुत सम्मानपूर्वक घोड़ा, सोना, कुलाह और इनाम प्रदान कर वलायत उज्बेकमें भेज दिया। लेकिन उज्बेक घुमन्तू इन उपकारों-को देरतक कैसे याद रख सकते थे, जब कि दक्षिणके समृद्ध नगरोंको लूटकर ही वह मौजका जीवन बिताते अपने सैनिकोमे अनुशासन कायम रख सकते थे। ८७२ हि० (२ अगस्त १४६७—२२ जून ६८ ई०)की घटनाके बारेमें समरकन्दीने लिखा है—मरदुमें-उज्बेक (उज्बेक लोगो)के प्रहारसे अन्तर्वेदको हरसाल जहमत और बर्बादी उठानी पड़ती रही, लेकिन इस साल वहासे ऐसी खबर नही आई। इसी समय ख्वारेज्मसे दूतने आकर कहा, कि किपचकोंकी भूमिसे देरसे कजाक हुये मिर्जा सुल्तान हुसेनने ख्वारेज्मपर आक्रमण किया। तेमूरी अमीर उसके सामने नहीं टिक सके, और मिर्जाने ख्वारेज्म-को पामाल किया। यह खबर सुनकर अबूसईदने अपने सभी उच्च सेनापतियोंको ख्वारेज्म जानेका

आदेश दिया, लेकिन उधर आजुर्थाईजानमें भी उजुन हसनबेगने खतरा पैदा कर दिया था, इसलिये उसी साल अबूसईद सेना लेकर उधर गया और लड़ाईमें बन्दी हुआ। उजुन हसन (१४६७–७८ ई०) ने अबूसईदको शाहरुखकी बेगम गौहरशादके पुत्र यादगार मिर्जाके हाथमें दे दिया, जिसने अपनी मांकी हत्याका बदला लेते अबूसईदको मार डाला। अबूसईदके ग्यारह पुत्रोंमें एक उमरशेख मिर्जा था। इसीका पुत्र बाबर था। जिसने भारतमें मुगल-साम्राज्यकी स्थापना की।

अबूसईदको भी सुन्दर इमारतोंके बनानेका बड़ा शौक था। आज भी उसकी लड़की सुल्तान खाविन्द बिकीके रौजेकी सुन्दर इमारत समरकन्दमे "इशरतखाना"के नामसे मौजूद है।

८. अहमद, अबूसईद-पुत्र (१४६९–९३ ई०)

अहमद एक मामूली बुद्धिका आदमी था, ऊपरसे वह कभी शराबमें मतवाला रहता और कभी भक्ति और खुदाके इश्कमें गर्क। इसके समयमें दरबारी अमीर अक्सर विद्रोह करते रहे। खुरासान बिल्कुल स्वतन्त्र हो गया, जिसपर तेमूर-वंशी सुल्तान हुसेन (१४६९—१५०६ ई०) हिरातसे शासन करता रहा। अहमदने अपने भाई उमरशेखको फरगाना देकर उसे दूसरोंके हाथों में जानेसे बचा लिया। उमरशेखके फरगानामें शासन करते समय ही उसका पुत्र बाबर पैदा हुआ। अहमदके सत्ताईस सालके शासनमें समरकन्दको फिर तरक्की करनेका मौका मिला।

कवि नवाई—हिरातने स्वतन्त्र होकर अपने गौरवको फिर लौटा लिया। हुसेन मिर्जा (१४६९–१५०६ ई०)के शासनकालमें हिरातने साहित्य और कलामें चरम उन्नति की, जिसका बहुत कुछ श्रेय तुर्की साहित्यके कालिदास अली शेर नवाईको है। नवाई १४४१ ई०में हिरातमें पैदा हुआ था। उसके बचपन और जीवनका भी अधिकतर भाग हिरातमें बीता। वह शिक्षा प्राप्त करनेके लिये समरकन्द भेजा गया। वहांका सबसे बड़ा धनी दरवेश मुहम्मद तरखन उसका संरक्षक था। सुल्तान अहमद मिर्जाके समय नवाई बुखारा और समरकन्दका सबसे बड़ा जमींदार था। हिरातमें रहते बचपनमें हुसेन मिर्जा नवाईका सहपाठी था। जब हुसेन मिर्जा हिरातकी गद्दीपर बैठा, तो उसने समरकन्द से सुल्तान अहमद मिर्जाको नवाईको भेजनेके लिये लिखा। समरकन्दमें रहते वक्त नवाईको जिन लोगोंके सम्पर्कमें अधिक आना पड़ा था, उनमें सूफी संत खोजा उबैदुल्ला अहरार मुख्य था। संत-महन्त होनेके साथ खोजा अहरारकी जमींदारीका ठिकाना नही था। कहावत है—कोई आदमी अपने गदहेपर चढ़ा अन्तर्वेदमें उत्तरसे दक्षिणकी यात्रा कर रहा था। सैकड़ों मील चलता गया, लेकिन जब भी किसी लहलहाते खेतके बारेमें पूछता, तो लोग कहते—'यह खोजा अहरारका है।' इसपर मुसाफिरने अपने गदहेको भी खेतकी तरफ हांकते हुए कह दिया—"जा तू भी खोजा अहरारका हो जा।" खोजा अहरारकी महिमा सबसे अधिक इसलिये फैली कि वह अपनी अपार सम्पत्तिका उपयोग परोपकारमें करता था। नवाई भी बहुत भारी जमींदार था, अहरारकी प्रेरणासे उसने भी अपनी सम्पत्तिको वैसे ही कामोमे खर्च करनेका निश्चय किया।

सुल्तान हुसेन सूक्ष्मचित्र, सुलेखनकला, वास्तुकला और संगीतका बड़ा प्रेमी था। अली शेर नवाई तो विद्वानों और कलाकारोंका अपने सुल्तानसे भी बड़ा संरक्षक था। हिरातमें एसियाके ही भिन्न-भिन्न देशों के व्यापरी नहीं आते थे, बल्कि १४९४ ई० में एक फ्रांसीसी कारवां भी आया था। भारत, चीन आदि के व्यापारी तो सदा ही आते रहते, इसलिये यहांपर विद्वानों और कलाकारोंके लिये विचार-विनिमयका अच्छा अवसर मिलता था।

१४६९ ई०में समरकन्दसे लौटनेके बाद १४८७ ई०तक नवाई सुल्तान हुसेनके दरबारका एक बहुत ही शक्तिशाली अमात्य था। दरबार छोड़नेके बाद उसने अपने बड़े-बड़े निर्माण-कार्य आरम्भ करके पूरे किये। उसकी बनवाई सबसे बड़ी इमारत "इखलास" (स्नेह) बीस साल-में तैयार हुई, जो हिरात नगरके बाहर यंजील नहरके किनारे अवस्थित थी। कितने ही हजार आदमी इसके बनानेके लिये रोज काम करते थे। कितनी ही बार नवाई स्वयं मजदूरोंकी तरह काम करता। "इखलास"के भीतर सुन्दर मदरसा, खानकाह तथा मस्जिद बनी हुई थी। खानकाहसे पश्चिम

"खानकाह-शफाइया" (सार्वजनिक अस्पताल) था, जहापर अपने समयके प्रसिद्ध चिकित्सक हकीम गयासुद्दीन मुहम्मद चिकित्सा करते थे। यहाकी बहुतसी इमारतोमें "मदरसा निजामिया" भी था, जिसमे अच्छे-अच्छे अध्यापक नियुक्त थे। नवाईने और जगहोपर भी खानकाहे और मदरसे बनवाये, जिनमे "मदरसा-खुसरविया" मेर्वके अब्दुल्लाखान-किलेमे अवस्थित था। खुरासान और ईरानके दूसरे स्थानोमें मुसाफिरोंके आरामके लिये नवाईने पचास रबाते (धर्मशालाए) बनवाई थी। उसके आश्रित इतिहासकार खोन्दमीरके अनुसार नवाईने हम्माम (स्नानागार) और चौदह मस्जिदे इस्तिखर सेरख्स और अस्त्राबादमे बनवाई थी।

नवाईको जहां अपने परोपकारी कामोंके लिये खोजा अहराससे प्रेरणा मिली थी, वहा उसकी काव्यप्रतिभाको निजामी (११६१—१२०३ ई०) और जामी (१४१४—९२ ई०) की कविताओंसे भारी प्रेरणा मिली थी। जामी नवाईका समकालीन था, और हिरातके पास हीमे रहता था। फारसी भाषाका वह अन्तिम महाकवि था। यद्यपि नवाईने "फानी" (नाशमान)के नामसे फारसीमे भी कविताएं की हैं, लेकिन वह अमर है अपनी तुर्की कविताओके कारण। आजकल मध्य-एसियाकी सबसे प्रगतिप्राप्त उज्बेक जातिका वह परम श्रद्धाभाजन कवि है। उज्बेक राजधानी ताशकन्द मे नवाई नाट्यशालाके नामसे एक बडी ही विशाल और सुन्दर रगशाला स्थापित की गई है। नवाई-की जीवनीको लेकर उज्बेक-लेखक ऐबकने एक उपन्यास "नवाई" लिखा है, जिसपर उसे स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। नवाईने सत्तरसे अधिक पुस्तके लिखी है, जिनमे उसका "खमसा" (पचक) सबसे अधिक प्रसिद्ध है। जिन विषयोको लेकर नवाईने अपने पाच काव्य लिखे, उन्हीपर पहले निजामीने और उसके बाद खुसरो देहलवी (१२५३—१३२५ ई०)ने भी सुन्दर काव्य लिखे हैं—

निजामी (११६१–१२०३)	खुसरो (१२५३–१३२५)	नवाई (१४४१–१५०१)
१. मख्जनुल् - असरार	मत्लउल्-अनवार	खैरतुल्-अबरार
२. खुसरो-व-शीरीं	शीरीं-खुसरो	फरहाद शीरीं
३. सिकंदरनामा	आईने-सिकन्दरी	सद्दे-सिकन्दरी
४. लैला-व-मजनूं	मजनूं-लैला	लैला-मजनू
५. हफ्त-पैकर	हश्त-बहिश्त	हफ्त-किश्वर

नवाईसे पहले तुर्की भाषाने साहित्यमें ऊंचा स्थान नहीं प्राप्त किया था। यद्यपि नवाईने अपनी कृतियोको हिरातमे बैठकर लिखा था, लेकिन हिरातमे तुर्कोंकी काफी सख्या रहते भी, वह खुरासानी ईरानी भाषाका प्रदेश था। पूर्वी तुर्की भाषा (चगुताई तुर्की)मे भी स्थानोके अनुसार भेद हो गया था, और सबसे शिष्ट अन्दिजान (फरगाना)की तुर्की समझी जाती थी। बाबर स्वयं वही पैदा हुआ था। उसने बाबरनामामे नवाईकी भाषाके बारेमें लिखा है*—

"अन्दिजान ऐले नयग लफ्जे कलम बेरल, रास्ते तोर हानी हो जू केम नीर अली शेर नवाई नयग मुसन्निफाते बावजूद हरेदा नशो-नुमा तापैव तोर बोतेल बेल दो।"

(अन्दिजानके लोगोंकी भाषा मीर अली शेर नवाईके ग्रन्थोंकी भाषासे मिलती है, जिसे कि उसने हिरातमें लिखा था।)

अन्दिजान काश्गरसे दूर नही है। तुर्की साहित्यकी सबसे पहिली पुस्तक "कुतदगु-बिलिक" काश्गरमे नवाईसे तीन शताब्दी पहिले लिखी गई थी। "कुतदगु-बिलिक"की भाषा प्राचीन उइगुर भाषासे बहुत घनिष्ठ संबंध रखती है। हम कह आये है, कि उइगुर और तुर्क पहले एक ही जातिका नाम था। प्राचीन उइगुर भाषाके नमूने कितने ही बौद्ध सूत्रोंके अनुवादके रूपमें अब भी प्राप्त हैं। छिङ्गिस् और उसके बेटों-पोतोंके राज्यमे किपचक, ईरान और अन्तर्वेदके सभी जगहके दरबारों और आफिसोमें उइगुर लेखक हुआ करते थे, जिनमें अधिकाश भिक्षु थे, जिसके कारण

* "बाबरनामा" पृष्ठ २ ख (लन्दन १९०६ ई०)

लेखकको बकसी (भिक्षुका उइगुर अपभ्रंश कहा जाने लगा। इसी प्राचीन उइगुर भाषा और लिपि-का प्रचार सारे चगताई राज्यमें हुआ और पीछे इसे चगताई भाषा कहा जाने लगा। जब अन्तर्वेदमें उज्बेकोंका शासन स्थापित हुआ, तो वहांके सभी तुर्क उज्बेक कहे जाने लगे, तबसे इस भाषाका नाम उज्बेकी पड गया। आजकल वह इसी नामसे प्रचलित तथा उज्बेकिस्तान गणराज्यकी राज्यभाषा है। मगोल चगताई तुर्कोंमें विलीन हो गये, इसीलिये पीछे कहा जाने लगा—"तुर्क काम लारी जूज़ी दूरदार युग व जगताई" (जू-छि चगताई तुर्क कौमके थे)।

नवाईका काम सुन्दर इमारतों और उपकारी संस्थाओंके निर्माण तथा काव्योंतक ही सीमित नही था, वह विद्वानों और कलाकारोके लिये कल्पवृक्ष था। एसियाका एक अद्वितीय चित्रकार कमालुद्दीन बेहजाद (मृत्यु १५२१ ई०) नवाईके ही सरक्षणमें आगे बढा, जिसे कि "नजाकते कलम बेनजीर" (तूलिकाकी कोमलतामें अनुपम), "सूरतेहालका मुसव्विर" (यथारूप चित्रण-कर्ता) और "द्वितीय मानी" कहा जाता है। मानी ईरानका पैगम्बर (२१६–२७६ ई०) चित्रकला-में भी अद्वितीय समझा जाता था। मानीकी चित्रकलाके नमूने अब प्राप्त नहीं है। ईसाकी तीसरी सदीके बाद चित्रकलाके एकसे एक दुश्मन दुनियामें आये, जिनके हाथसे मानीके चित्रोंका बच निकलना संभव नहीं था। लेकिन बेहजादके बनाये हुये चित्र अब भी दुनियाके संग्रहालयोंमें मिलते हैं।

सुल्तान अली मशहदी, मीर अली मजनू, मुहम्मद शिकाबी जैसे सब समयके लिये अनुपम सुलेखक नवाईके दरबारमे थे। सुल्तान अलीने नवाईके "खम्से"की एक प्रति १४९२–९ ई०में लिखी थी, जो-कि आजकल लेनिनग्रादके राजकीय लोक-पुस्तकालय (प्राच्य ५६०)में मौजूद है, जिसमें लेखक ने लिखा है–"खम्सा मीर अली शेर नवाई ब-खते किब्लउलकुत्ताब मौलाना सुल्तान अली मशहदी" (मीरअली शेर नवाईका पंचक, लेखकशिरोमणि मौलाना सुल्तान अली मशहदीके अक्षरोंमें) सुल्तान अलीको बुढ़ापेमें भी अपनी लेखनीपर कितना अभिमान था, यह उसकी प्रतिलिपि की हुई एक पुस्तक के अन्तमें मौजूद निम्न पद्यसे मालूम होगा—

मरा उम्र शस्त व-से. शुद बेशकम्।
हनोजम् जवांनस्त मुश्की कलम्॥
तवानम् हनोज अज खफी-वो-जली।
नविश्तन् कि अल्-अब्द सुल्तान् अली !॥

(मेरी उम्र कम-बेशी तिरसठ हो गई, किन्तु अभी भी मेरी काली कलम जवान है। अब भी मैं सूक्ष्म और स्थूल हस्ताक्षर सुल्तान अलीके साथ लिख सकता हूं।)

नवाईका देहान्त २ जनवरी १५०१ ई०को हुआ।

९. सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र (१४९३–९४ ई०)

भाईके मरनेके बाद पांच तरुण भतीजोंको मारकर मुहम्मद समरकन्दकी गद्दीपर बैठा। यह बड़ा क्रूर, पियक्कड़ और व्यभिचारी था, जिसके कारण उसके अमीर विरुद्ध हो गये और थोड़े ही समय बाद इसकी शायद अकाल-मृत्यु हो गई।

१०. बैसुंकर, मुहम्मद-पुत्र (१४९४–९७ ई०)

बापके मरनेपर मसऊद, सुल्तान अली और बैसुंकरमें तख्तके लिये झगडा हुआ, और अन्तमें अठारह सालकी उम्रमें बैसुंकर सुल्तान बना। अहमदके समयसे ही उत्तरके उज्बेक और देशके भीतर अमीर बहुत शक्तिशाली होने लगे। बैसुंकरकी तरुणाईसे उनको और भी आगे बढ़नेका मौका मिला, जिसमें आपत्ति करनेपर अमीरोंने करशीसे उसके भाई सुल्तान अलीको बुलाया। बैसुकर भाग गया, किंतु पीछे फिर अमीरोंने उसे ही बुलाकर गद्दीपर रहने दिया। सुल्तान अली बुखाराकी ओर भागा और फिर युद्धकी तैयारी करनेके बाद बुखारासे समरकन्द आया। दूसरा भाई मसऊद भी उसकी

सहायतार्थ दक्षिणसे आया। उमरशेख-पुत्र बाबर मिर्जा इस समय खोकन्द (फरगाना)का स्वतन्त्र शासक था। उसकी भी नजर समरकन्दपर थी। चारों ओरसे निराश होकर बैसुकर अपने भाई मसऊदकी शरणमें [९०३ हि० (३० VIII १४९७—२१ VII १४९८ ई०)] भागा, जिसके पास ही रहते ९०५ हि० (८ VIII १४९९—२८ VI १५०० ई०)मे वह गुमनाम मरा।

११. सुल्तान अली, मुहम्मद-पुत्र (१४९७–१५०० ई०)

तेमूरी राज्यको बाबर और सुल्तान अलीने आपसमे बाट लिया। दोनों ही कम उमरके थे, इसलिये शासनकी बागडोर अमीरोंके हाथमे थी। सुल्तान अली तीन साल ही राज्य कर पाया, कि एक सौ चालीस वर्ष पुराने तेमूरी वंशके दीपकको उज्बेकोंके खान शैबानीने बुझा दिया। बाबरने वंशकी नैयाको डूबनेसे बचानेकी कोशिश की, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

१२. जहीरुद्दीन बाबर, उमरशेख-पुत्र (१५००–१ ई०)

हम कह चुके है कि अहमदके समरकन्दकी गद्दी संभालनेके समय उसका भाई उमरशेख फरगानाका शासक रहा। बाबर वहीपर १४८१ ई०में पैदा हुआ और बापके बाद फरगानाका शासक बना। शैबानीके समरकन्दपर पैर जमानेसे पहले बाबरने भी समरकन्दकी ओर हाथ फैलाया था, लेकिन उज्बेक सेनाने उसे हरा दिया। समरकन्द लेकर मुहम्मद शैबानी निश्चित नहीं रह सका। एक बार बाबरने समरकन्द, मियानकुल और करशीसे उसे भगा दिया, लेकिन बुखारासे उज्बेकतक भी चिपटे रहे। अगले साल ९०७ हि० (१७ VII १५०१—७ VI १५०२ ई०)में शैबानीने बड़े जोरका आक्रमण किया, और बाबरके पैर उखड गये। समरकन्दसे भगाये जानेपर वक्षुपार हो बाबरने कुदुज ले लिया। ईरानी शाह इस्माईलकी मदद लेकर और किस तरह बाबरने बारह सालतक तेमूरकी भूमि लेनेका प्रयत्न किया, इसे हम आगे बतलायेंगे। कुंदुजसे ही बीस हजार सेना जमा करके बाबरने ९०९ हि० (२६ VI १५०३—१६ V १५०४ ई०) मे काबुलको दखल कर लिया और वहांसे भारतपर आक्रमण करके १५२६ई०मे लोदियोंसे दिल्लीका तख्त छीनकर मुगल-वंशका संस्थापक बन गया। जो बाबर मुट्ठीभर उज्बेक घुमन्तुओके सामने सारे प्रयत्न करनेके बाद भी टिक नही सका, वही बाबर हिंदुस्तानको जीतनेमें सफल हुआ; यह यही बतलाता है कि उस समयकी परिस्थितिमे सैनिक तौरसे घुमन्तू जितने मजबूत थे, उतने स्थिर बस्तीवाले नही। साथ ही हिंदुस्तानकी लडाईने कभी लोकयुद्धका रूप नही लिया, लडनेवाले मुट्ठीभर सामन्त और उनके अनुचर थे, अधिकाश जनता शासकोके अत्याचार और स्वेच्छाचारसे तग होकर इतनी निराश थी कि वह यही कहती थी—"कोउ नृप होय हमहिं का हानी।"

साहित्य और संस्कृति—अब भी तेमूरवशी छिङगिस्के "यासा" (विधान) और तेमूरके "तुजुक" (व्यवस्था)को मानते थे, और मुसलमान होते हुये भी धर्माध नही थे। तेमूरवंशके रूपमें मध्य-एसियामे तुर्कजाति गौरवके शिखरपर पहुची। इस समय बडे-बडे विद्वान् और कलाकार पैदा हुए। तेमूर स्वय कलम चलाना जानता था। उसका पुत्र शाहरुख सुन्दर गीतोका लेखक था। उलुगबेग गणित और ज्योतिषका विद्वान् तथा सरक्षक था। उसका छोटा भाई बैसुकर पुस्तको और चित्रकलाका प्रेमी था। बाबर कवि-लेखक, शासक-योद्धा था। इस कालमें बुखारा, समरकन्द और मेर्वमें बडे-बड़े धर्मशास्त्री (फकीह, दार्शनिक और कवि हुये, जिनमे फारसीका कवि जामी (१४१४–१४९२ ई०) और तुर्की साहित्यका सर्वश्रेष्ठ कवि नवाई (१४४१–१५०१ ई०) भी थे। तुर्की भाषाका मान सबसे अधिक इसी समय हुआ। अरब खलीफोके समय अरबी भाषा सरकारी भाषा थी। ताहिरियोने अरबीकी जगह फारसीको दी, तबसे फारसी ही राजकाज और साहित्यकी भाषा समझी जाने लगी। तेमूरियोंने यद्यपि फारसीको स्थानच्युत नही किया, लेकिन तुर्कीका सम्मान जरूर बढ़ाया; जिसमें नवाई और बाबरका हाथ बहुत अधिक था। बाबरकी देखादेखी जहांगीरने भी तुर्कीमें "तुजुक जहांगीरी" लिखी, लेकिन शायद वह आखिरी मुगल था, जो कि भारतमें अच्छी तुर्की बोल-लिख सकता था। तुर्की वैसे सभी मध्य-एसियाके तुर्कोंकी भाषा थी,

लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा, अन्दिजान और काश्गरमें बोली जानेवाली तुर्कीको ही साहित्य-की भाषा माना गया। तुर्की भाषाके सबधमे यह कहा जा सकता है कि जितना ही पूरब जायें, उतना ही वह अधिक शिष्ट रूपमे मिलती है। यहां तुर्की भाषासे हमारा मतलब पूर्वी तुर्कीसे है, जिसे पहले चगताई और आजकल उज्बेकी कहा जाता है। यारकन्द काश्गरकी भाषाका भी इसी भाषा-से संबंध है। पश्चिमी तुर्कीमें तुर्कमानी, आजुरबाईजानी और उसमान अली (तुर्की राज्यकी) भाषाएं सम्मिलित है, जो आपसमें भेद रखते हुये भी एक दूसरेसे बहुत समानता रखती है।

तेमूरी-वंशवृक्ष—
(१३७०–१५०० ई०)

अध्याय ४
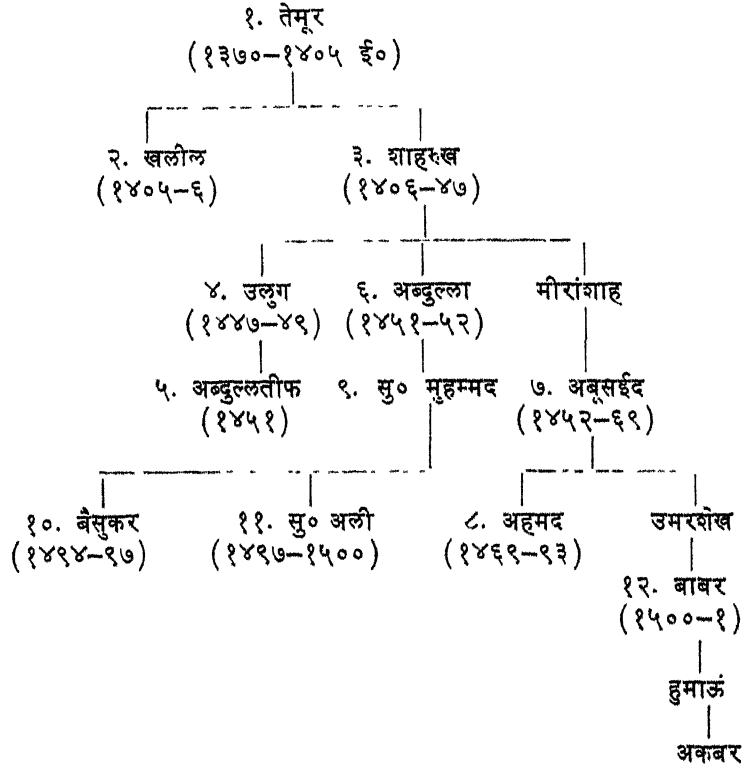
शैबानी-वंश

अबुल्खैर---तोकतामिशके सुवर्ण-ओर्दूके गौरवको पुन. जागृत करनेका प्रयत्न विफल होनेपर तूरान-अधित्यका (किरगिज-स्तेपी)का स्वामी बुराक खान हुआ, जिसने तेमूरियोको बहुत तंग किया। उसके बाद अबुल्खैर [जन्म १४१३ ई० (८१६ हि०)] का प्रताप बढा। इसका पौत्र तथा अन्तर्वेद-विजेता शैबानीके नामसे मशहूर है। वह जू-छिके पुत्र शैबानके वशका था।

शैबानी-वंश यद्यपि छिङ्गिस्-पुत्र जू-छिके पांचवे लडके शैबानके नामसे प्रख्यात हुआ, लेकिन वह मुहम्मद शैबानीके अन्तर्वेद जीतनेसे पहले किपचक या उज्बेक नामसे प्रसिद्ध था। उज्बेक खान (१३१३–४० ई०) सुवर्ण-ओर्दूका एक शक्तिशाली शासक तथा इस्लामका धार्मिक धर्मराजा था, इसीलिये जू-छिका उलुस, विशेषकर बा-तू-वशकी प्रजा पीछे उज्बेकके नामसे प्रसिद्ध हुई है, यह हम बतला चुके है। जू-छि-उलुस आरम्भ हीमे बा-तू और ओर्दाके उलुसोंमे विभक्त हो गया था, जिसमे बा-तूका उलुस सुवर्ण-ओर्दू और ओर्दाका श्वेत-ओर्दूके नामसे पुकारा जाता था। उज्बेक सुवर्ण-ओर्दूका खान था, इसलिये सुवर्ण-ओर्दवालोंका ही नाम उज्बेक पडना चाहिए, लेकिन पीछे इसका उतना ध्यान नही रखा जाता रहा, और सारे जू-छि-उलुस या किपचक-जातिको उज्बेक कहा जाने लगा। हम यह भी देख चुके है, कि इन्ही उज्बेकों या किपचकोको लूट-मार करनेके कारण अन्तर्वेदी कजाक कहने लगे, जिससे आगे किपचकोकी एक शाखा कजाक नामसे प्रसिद्ध हुई। जू-छिकी सातवी पीढ़ीमे अबुल्खैर किपचकोंका जबर्दस्त खान हुआ, जिसने अन्तर्वेदकी राजनीतिमे दखल दिया। बाबरके दादा अबूसईदको तख्तपर बैठानेमें उसका मुख्य हाथ था। उज्बेक-राज्यका संस्थापक वस्तुतः यही अबुल्खैर था। अभी बीस सालका भी नही हुआ था, कि उसने तेमूर-पुत्र शाहरुखके कुछ इलाकोको छीन लिया। उज्बेक गद्दीका मालिक बननेसे पहले उसे सुवर्ण-ओर्दूके मुखिया मुस्तफा खानको हराना पड़ा, जिसमें मिली भारी लूटकी सम्पत्तिको अपने अमीरों और सैनिकोमे बांटकर वह सर्वप्रिय हो गया। निम्न-सिर-दरियाके तटपर अवस्थित सिगनक किपचकोके हाथसे निकल गया था। अबुल्खैरने उसके ऊपर आक्रमण किया और शाहरुखके स्थानीय राज्यपालको आत्मसमर्पण करना पड़ा। फिर अबुल्खैर आगे बढ़कर अककुरगान, अरक, सूजक और उजकन्द ले सूजकपर बख्तियार सुल्तान, सिगनकपर मनाहदान ओगलान और उजकन्दपर बखसमबी मंगुतको शासक नियुक्त किया। उसने जाड़ा सिर-उपत्यकामे बिताते १४४८ ई०के बसंतमें इलाककी ओर बढनेकी तैयारी की। इसी समय पता लगा, कि शाहरुख मर गया, और उलुगबेग गद्दी संभालने खुरासानकी ओर गया है। समरकन्दको अरक्षित-सा देख अबुल्खैरने उधर कूच कर दिया। समरकन्दके राज्यपाल जलालुद्दीन वायजीदने बहुत-सी भेंट देकर अबुल्खैरके पास कहलवाया---"उलुगबेग सदा खानके साथ अच्छा संबध रखता था, इसलिये यही अच्छा है, कि खान हमारी भेंट स्वीकार करके लौट जाय।" अबुल्खैर बिना समरकन्दको लूटे ऐसा करके अपने अमीरों और सैनिको को सन्तुष्ट नही रख सकता था। समरकन्दपर अधिकार कर विशेष तौरसे "चीनी-खाना"की चित्रशालाकी दीवारोंपर सुन्दर-सुन्दर पच्चीकारी किये चित्रोको उज्बेकोंने अपनी गदासे मारकर तोड़ दिया। सोनेके कामको उन्होंने सोनेके लोभसे कुरेदकर निकाल लिया। इस प्रकार "कई वर्षोंके परिश्रमके बाद बने हुये कलाके कामोंको कुछ घंटोमे उन्होंने नष्ट कर दिया।"

शाहरुखके उत्तराधिकारियोंमें उसका पौत्र अब्दुल्ला मिर्जाने आपसी झगडोमे हारकर तुर्किस्तानकी ओर भाग यस्सी (तुर्किस्तान शहर)के किलेपर अधिकार कर लिया। अबुल्खैर

कर जबर्दस्त सघर्ष हुआ। बूदगकी कजाकोके खानो—गिराई और जानीबेगसे भी बहुत प्रतिद्वद्विता थी, जो कि सिर-उपत्यकामें रहते थे। कजाकोकी मददके लिये मुगोलिस्तानका खान यूनस आया। युद्धमे बूदगने हारकर अपना शिर कटवाया। इसी बूदग (बदाग)का पुत्र था अबुल्-फतह मुहम्मद शैबानी, जिसने अन्तर्वेदमें शैबानी-वशका शासन स्थापित किया। जिस समय उज्बेक दक्षिणमें मध्य-एसियाकी ओर बढ रहे थे, उसी समय रूस, तारतारों (मंगोलो)के जूयेको फेंककर मजबूत हो रहा था। मुहम्मदने पहले-पहल १५०० ई० (९०६ हि०)में अन्तर्वेदको जीता, किन्तु इसी समय उन्नीस वर्षकी आयुमे बाबरने आकर उसे बुखारा छोड सब जगहोसे खदेड दिया। अगले साल १५०१ ई० (९०७ हि०)मे बाबरको मुहम्मद शैबानीने सारे अन्तर्वेदसे भगा दिया और १५०५ ई० (९११ हि०)तक फरगाना भी बाबरके हाथसे जाता रहा, यही नही, ख्वारेज्म, हिमार (ताजिकिस्तान) और मेर्वको भी शैबानीने ले लिया।

राजावलि—शैबानी-वशके खानोंकी नामावली निम्न प्रकार है —

१.	मुहम्मद शैबानी, बूदग (बदाग)-पुत्र	१५००–१२ ई०
२.	कूचुनजी, अबुल्खैर-पुत्र	१५१२–३० ,,
३.	अबूसईद, कूचुनजी-पुत्र	१५३०–३२ ,,
४.	उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र	१५३२–४० ,,
५.	अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र	१५४० ,,
६.	अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र	१५४०–५१ ,,
७.	नौरोज अहमद, सूयुनजी-पुत्र	१५५१–५६ ,,
८.	पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५५६–६१ ,,
९.	इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र	१५६१–८३ ,,
१०.	अब्दुल्ला II, इस्कन्दर-पुत्र	१५८३–९६ ,,
११.	अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र	१५९६–९७ ,,
१२.	पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५९७–९९ ,,

१. मुहम्मद शैबानी, बदाग-पुत्र (१५००–१२ ई०)

मुहम्मदका जन्म १४५१ ई०मे हुआ था। बापके मारे जानेपर उसके नाना उइगुर शेख हैदरने उसका पालन-पोषण किया था। उस समय किपचक-भूमिकी शक्ति निर्बल थी। उसके शासक थे–सैदिक, ऐबक (शैबानी ओर्दूके खान हाजी मुहम्मदका पुत्र), अरबशाहकी संतानें, श्वेत-ओर्दूके खान बोराकके पुत्र जानीबेग और गिराईबेग उसके बाद मंगित या नोगाई खान या यमगुरची, अब्बास और मूसा। नानाके मरनेपर मुहम्मद और उसके भाई महमूदको अमीर कराचिनबेगने अपने संरक्षणमे ले लिया। हैदरको ऐबकने हरा दिया, इसपर अमीर कराचिन अस्त्राखानी कासिमखानके दरबारमें भाग गया, जहां उसके साथ मुहम्मद और महमूद दोनों भाई भी गये। कासिमखानने अपने अमीरुल्उमरा तेमूरबेग नोगाईके संरक्षणमें दोनों भाइयोंको दे दिया। जिस समय सुवर्ण-ओर्दूके ऐबक खानने अस्त्राखानको भी आ घेरा उस समय मुहम्मद और महमूद तरुण थे। दोनोंने कराचिनके साथ लडते हुये शत्रुओंकी पांती तोडकर निकल भागनेमें सफलता पाई। फिर मुहम्मद अपने पुराने देश निम्न-सिर-उपत्यकामें लौटा। लोग खानपुत्रोंके झंडेके नीचे आकर खड़े होने लगे। मुहम्मद कजाकोंके खान जानीबेग-पुत्र इराचीके साथ सावरान के पास लडा, किन्तु असफल हो उसे बुखाराकी ओर भागना पड़ा। तेमूरी अहमद मिर्जाके राज्यपाल अमीर अब्दुल अली तरखनने उसे बुखारामे बडे सम्मानके साथ रक्खा। फिर अहमद मिर्जाने अपने पास बुलाकर उसका बहुत अच्छी तरहसे आतिथ्य किया। दोनों भाई दो सालतक बुखारामें रहे। इस बीचमें वह अन्तर्वेदसे अच्छी तरह परिचित हो गये। इसके बाद अब्दुल अलीको साथ लिये दोनों खानजादे अपनी जन्मभूमिकी ओर बढ़े। अरतक किलेके पास जानेपर खोजा बेगचिकने—जो कि अपने कबीलेका मुखिया तथा किपचकोंके सबसे पुराने अमीरोंमेंसे था—किलेकी कुंजी लाकर

मुहम्मदके हाथमें दे दी। इस आरम्भिक सफलताके बाद मुहम्मद सिगनक शहरकी ओर बढ़ा। वहा उसे मंगित (नोगाई) सरदार मूसाका दूत मिला, जिसने उसे दश्तेकिपचकका खान बननेके लिये अपने स्वामीकी ओरसे निमंत्रण दिया। मुहम्मद उसके पास गया और मूसाके प्रतिद्वंद्वी कजाक खान बेरेंदकको हरानेमें मुहम्मदने सहायता की, पर अब मूसा बहानेबाजी करते कहने लगा, कि मंगित लोग राजी नही हैं। निराश होकर मुहम्मद शैबानीने दश्तेकिपचकसे लौट सूजकपर अधिकार कर जानीबेग-पुत्र मुहम्मद सुल्तान (कजाक)से कई लडाइया लडी, लेकिन अतमें हारकर उसे मंगिशलक (कास्पियनतट) होते ख्वारेज्मकी ओर भागना पडा। खुराशानके शासक सुल्तान हुसेन मिर्जाके राज्यपाल अमीर नासिरुद्दीन अब्दुल खालिक फीरोजशाहने उसे बहुत-सी मूल्यवान् भेटे प्रदान की। ख्वारेज्मसे कराकुल होते मुहम्मद बुखारा पहुचा और फिर अली तरखनके साथ समरकन्द। अन्तर्वेदके बादशाह अहमद मिर्जाकी मुगोलिस्तानके खान महमूद खानसे ताशकन्द-शाहरुखियाके लिये लडाई हो रही थी, जिसमे अहमद मिर्जाके साथ १४८८ ई०मे मुहम्मद शैबानी भी शामिल हुआ। सिर-दरियाकी शाखा चिर (चिरचिक)के तटपर दोनों सेनाओकी भिड़त हुई। शैबानीने अपने उपकारमे विश्वासघात करते शत्रुके साथ चुपके-चुपके सलाह कर ली थी, कि यदि मुझे अपना सिहासन मिल जाय, तो मैं अपने सपक्षियोंमे गडबडी पैदा करके उनका साथ छोड़ दूंगा। अगले दिन मुगोलिस्तानी सेना चिर (चिरचिक) नदी पार हुई—पैदल सेना आगे-आगे थी, और रिसाला पीछे-पीछे। शैबानीने अपनी योजना पूरी की। सुल्तान अहमद मिर्जा हारा और उसके बहुतसे आदमी भागते हुये नदीमें डूबकर मर गये। मुगोलिस्तानी खानने पारितोषिकके रूपमें मुहम्मद शैबानीको तुर्किस्तान शहर दे दिया। लेकिन तुर्किस्तान शहर श्वेत-ओर्दूके खानोंका था, इसलिये कजाक खान जानीबेग और गिराईका मुगोलिस्तान-के खान महमूदके साथ झगडा होना जरूरी था। महमूदने शैबानीकी सहायता की, अबुल्खैरके पुराने सैनिक भी मुहम्मद शैबानीके झंडेके नीचे आ जुटे थे। मुहम्मदके उज्बकोंने जानीबेग और गिराईके कजाकोंसे लोहा लिया। आसपासके कई किलोंको हाथमें करके शैबानी सिगनकपर चढा, जहां कजाक खान बेरेंदकसे भिड़ंत हुई। इसी समय पता लगा कि फीरोजशाह ख्वारेज्मसे खुरासान गया हुआ है। फिर क्या, मुहम्मद शैबानी ख्वारेज्मपर चढ़ दौड़ा। कई दिनोंके आक्रमणके बाद भी वह सफल नही हुआ। इसी समय फीरोजशाह लौट आया। शैबानीने ख्वारेज्म छोड़कर बुलदुमके किले-पर आक्रमण किया, जिसका ध्वंसावशेष खीवासे ८८ वर्स्त (२४¾ फरसख) पर अब भी मौजूद है। इसके बाद बेजिर (बेसिर) शहरको जा लिया, किन्तु खुरासानी सेनाने आकर उसे वहांसे भगा दिया। फिर मुहम्मद शैबानी कितने ही नगरोंको लूटते-पाटते इलाक और अस्त्राबादतक गया। इसी समय मुगोलिस्तानके खान महमूदका निमंत्रण मिला और वह ओतरार (उतरार) चला गया।

सावरानके लोगोंका वहांके दारोगा (राज्यपाल) कुल मुहम्मद तरखनके साथ झगड़ा हो गया। उन्होंने उसे निकाल बाहर कर नगरकी कुंजी मुहम्मदके भाई महमूद शैबानीको दे दी, और सारे तुर्किस्तान (मध्यसिर-उपत्यका)के लोगोंने दोनों शैबानी भाइयोंको अपना शासक मान लिया। इसी समय कजाकोंने आक्रमण करके महमूदको पकड़कर कजाकसरदार कासिम—जो कि महमूदका मौसेरा भाई था—के हाथमें दे दिया। कासिमने कुछ दिन रखकर सैनिक पहरेमें उसे सूजकके लिये रवाना किया, किन्तु रास्तेसे महमूद भाग निकला, और उसने उगुजमान पहाड़पर जाकर भाईसे भेंट की। फिर दोनों भाई ओतरार गये। थोड़े ही समय बाद कजाक खान बेरेंदकने ओतरारपर आक्रमण किया, लेकिन कुछ दिनों बाद सुलह हो गई।

मुहम्मद इधरसे छुट्टी पा यस्सी (तुर्किस्तान) जा वहांके दारोगा मुहम्मद मजीद तरखन * को कैद कर ओतरार लाया, लेकिन मुगोलिस्तानके खान महमूदने आकर उसे छुड़ाकर समरकन्द भेज दिया। अभीतक महमूद खान (मुगोलिस्तानी) मुहम्मद शैबानीपर बहुत विश्वास रखता था; लेकिन अब उसे मालूम हो गया, कि वह बड़ा ही अविश्वसनीय और खतरनाक आदमी है; इसीलिये वह

* तरखन = राजकुमार (तुर्की)

उज्बेकोका साथ छोड़ कजाकोंकी ओर हो गया। कजाकोंने यस्सीको लेना सम्भव नही समझा, इसलिये ओतरारपर आक्रमण करके महमूद सुल्तानको घेरना चाहा, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। फिर दोनो दलोंमे सुलह हुई और कजाक खान बेरेदकने अपनी दो बहिनोंमेसे एकको मुहम्मद शैबानी और दूसरीको उसके पुत्र मुहम्मद तेमूरको दिया। मुहम्मद शैबानी जैसे भी हो तैसे अपना मतलब सिद्ध करनेवाला आदमी था, उसे वचन, शपथ या उपकारका कोई ख्याल नहीं था। अपने राज्यविस्तारमें उसने किसी भी तरीकेको इस्तेमाल करना उठा नही रक्खा। ईमानदारी तो उसे छू नही गई थी। महमूद खानने उसकी बहुत सहायता की थी, लेकिन उसके मनमे भी उसने सदेह पैदा कर दिया। तो भी मुगोलिस्तानी खान समरकन्द और बुखाराके जीतनेकी अपनी योजनामे शैबानीका उपयोग करना चाहता था। लेकिन उससे शैबानीकी शक्तिके बढ़नेमें ही सहायता मिली।

१४९७ ई०मे बाबरने समरकन्दको लेनेके लिये आक्रमण किया, उस समय महमूद शैबानी बाबरके प्रतिद्वंद्वी सुल्तान बैसुकर मिर्जाके बुलानेपर ओतरारसे गया। सुल्तान महमूद शैबानीको जीजकमें पहुंचकर हार खानी पडी, तब उसका भाई मुहम्मद शैबानी मदद करने आया। अबकी बार एक हजार जेतो (मुगोलिस्तानी खानकी सेना)ने धोखा दिया, और मुहम्मदको भी मुंहकी खानी पड़ी। शैबानीके लिये ईमान-धर्मकी पाबन्दी जरूरी नही थी, लेकिन सूफियों और शेखोंकी करामातपर उसका बहुत विश्वास था। एक बार उसने शेख मसूरको भोजन कराया। जब वह दस्तरखानके कपड़े को बीचसे उठा रहा था, तो शेखने कहा—"तुझे मालूम नहीं, कि इस कपड़ेको बीचसे खींचकर नही, बल्कि चारों कोनोसे मोडकर उठाया जाता है। इसी तरह देशको उसकी राजधानीपर दखल करके नही, बल्कि उसके सीमान्तोंपर अधिकार करके जीता जाता है।" इस गुरुमन्त्रके बाद मुहम्मद शैबानी अपने अनुयायियोंको लेकर अतर्वेदके समृद्ध और सुखी इलाकोके ऊपर चढ़ दौड़ा जिसका कि कोना-कोना वह अपने भगोड़े जीवनमे देख चुका था। लूटका माल मिल रहा था; इसलिये घूमन्तू सैनिकोंकी क्या कमी हो सकती थी? शैबानीकी सेनामें दश्तेकिपचकके सभी इलाकोंके उज्बेक शामिल थे, पीछे खीवासे भी कितने ही मंगित आ मिले। तुर्किस्तान और ओतरारके शासक उसके दो चचा कूचुनजी और सुईउनिच थे, जो अपने संबंधी हमजा सुल्तान और महबूब सुल्तानके साथ एक बड़ी सेना लेकर भतीजोंके दलमे शामिल हो गये। उत्तरमें घुमन्तुओंकी इतनी जबर्दस्त शक्ति तैयार हो रही थी, और उधर दक्षिणमें तेमूरी सुल्तान आपसमें दंगल लड रहे थे। गृह-युद्धके भड़कानेमें बाबरका मुख्य हाथ था। बापसे मिले फरगानापर संतुष्ट न रहकर उसने १४९७ ई०मे समरकन्दको आकर ले लिया; लेकिन थोड़े ही दिनों बाद उसे छोड़ना पड़ा और वहांका शासन महमूद मिर्जा-पुत्र सुल्तान अलीके हाथमें चला गया। एक उज्बेक रखेली जूरे-बेगी आगा सुल्तान अलीकी मां थी, शायद इस कारण भी दूसरे शाहजादे उसे गद्दीपर देखना नही चाहते थे। लेकिन अब तेमूरी सुल्तान दरबारियोके हाथके कठपुतली भर रह गये थे, इसलिये असली शक्ति सुल्तान अलीके हाथमे नहीं थी, बल्कि चार सौ सालोसे शेखुल्-इस्लाम होते आये वंशके मुखिया खोजा अहिया सर्वेसर्वा था।

मुहम्मद शैबानीको तेमूरियोंकी भीतरी कमजोरियां अच्छी तरह मालूम थी। अन्तर्वेदके और स्थानोंकी लूट-मारसे शक्तिशाली बन वह १५०० ई० (९०६ हि०)में समरकन्दपर पहुंचा। दस दिनतक उसने नगरको घेरे रक्खा। शेखके पुत्रने दरवाजेसे निकलकर शैबानी सेनाको हरा पीछे ढकेल दिया, लेकिन शैबानीने मौका पा चहार-राह दरवाजेसे नगरमें घुसनेमे सफलता पाई और बिना प्रतिरोधके ही वह बागेनौके ग्रीष्मप्रासादमें पहुंच गया। अब उसे नगरके भीतर रह गये शत्रुओंसे लड़ना था। युद्ध मध्याह्नमें शुरू हो आधी राततक जारी रहा। मुहम्मद शैबानीने बीरता दिखलाने-में खतरेकी बिलकुल परवाह नहीं की। दूसरे दिन खबर मिली, कि अब्दुल अली तरखनका पुत्र और कितने ही और तरखन (राजकुमार) बुखारासे सहायताके लिये आते दबूसियाका मुहासिरा किये हुये हैं। यह खबर सुन उज्बेकोंने समरकन्दके मुहासिरेके लिये थोडीसी सेना छोड़ पहले तरखनोंकी ओर मुंह मोड़ और उन्हें हराकर वे बुखाराके ऊपर जा धमके, जिसके सर करनेमें बहुत कठिनाई नही

हुई। शैबानीने वहां कुछ सेना और अपने अन्तःपुरको रखकर कराकुलपर आक्रमण किया। इसी समय बुखारावालोंने उज्बेक-सेनाको मार डाला। खबर मिलते ही शैबानीने तुरन्त लौटकर बुखारा शहरपर अधिकार करके वहांके नागरिकोसे बहुत सख्त बदला लिया। फिर वह समरकन्दपर आया, जिसके विजयमें अली मिर्जाकी अपनी मां—जोकि उज्बेक जातिकी थी—ने विश्वासघात किया। बाबर उसके बारेमें लिखता है—"अपनी जड़ता और मूर्खताके कारण उसने शैबानी खानके पास गुप्त रीतिसे संदेश भेजकर प्रस्ताव किया, कि यदि तुम मेरे साथ ब्याह करो, तो मेरा लड़का इस शर्तपर समरकन्दको समर्पण कर सकता है, कि जब तुम अपनें पैतृक राज्यको प्राप्त कर लोगे, तो इस नगरको मेरे बेटे सुल्तान अली को दे दोगे।" इसी कारण चहार-राह दरवाजा अरक्षित मिला। जब शैबानी बागे-मैदानमें पहुचा, तो सुल्तान अली मिर्जा बिना किसीसे कुछ कहे कुछ अनुचरोंके साथ चहार-राह दरवाजेसे निकलकर शैबानीसे मिला। शैबानीने उसकी कोई इज्जत न कर उसे निचले आसन पर बैठाया। सुल्तान अलीके जानेकी खबर सुनकर खोजा अहिया भी पहुंचा, लेकिन शैबानीने चार सौ वर्षोंके शेखुल्-इस्लाम-वंशका कुछ भी ख्याल न कर उठकर उसका स्वागत भी नहीं किया, और खूब कड़े-कड़े शब्दोंमें उसे फटकारा—"अभागी दुर्बल स्त्रीने पति पानेके लालचसे अपने खानदान और लडकेकी इज्जतको धूलमें मिला दिया, लेकिन उसके साथ भी अच्छा बर्ताव नहीं हुआ, क्योंकि शैबानी उसको अपनी रखेलिनोंके बराबर भी नही समझता था।" १५०० ई० (९०६ हि०)में समरकन्दको सर करनेके बादसे शैबानीका सन-जलूस (अभिषेक-संवत्) चला। तीन-चार दिन बाद सुल्तान अलीको उसने मरवा डाला, फिर खुरासानकी ओर यात्रा करते समय तुरन्त ही उसने विश्वासघाती खोजा अहिया और उसके दो पुत्रोंको कत्ल करवा दिया।

शैबानी और उसके अमीरोंको समरकन्द जैसा समृद्ध-सुन्दर नगर मिला, "लेकिन उसके सैनिकोंका नागरिक जीवनसे प्रेम नही था। नगरमें कुछ दिनो रहनेके बाद शैबानीने अपने सात-आठ हजार सैनिकोंके साथ खोजा-दीदारके पास जा डेरा लगाया।" दो हजार सैनिक शहरके आसपासमें छावनी डाले पडे रहे और नगरके भीतर सिर्फ छः सौ सैनिक रह गये थे। १९ सालके बाबरको जब यह पता लगा, तो उसने दो सौ चालीस आदमियोंको लेकर बड़े साहसका काम करना चाहा। नगरके सैनिकोंको सजग देखकर उसे कितनी ही बार अपने इरादेको रोकना पड़ा। लेकिन एक रात खोजा अब्दुल मकरम सत्तर या अस्सी आदमियोंको लिये मोगाकपुल होते प्रेमियोंकी गुफाके सामनेसे नगर-प्राकार फांदनेमें सफल हुआ और पीछेसे जा फीरोजा दरवाजाके रक्षक सिपाहियोंके ऊपर टूट पड़ा। इस आक्रमणमें दरवाजेके गारदका कमांडर फाजिल तरखन मारा गया। मुकरमके आदमियोंने कुल्हाड़ेसे ताला तोड दरवाजा खोल दिया। अब बाबर भी शहरके भीतर दाखिल हुआ। इस समयके बारेमें बाबर लिखता है—"नागरिक गहरी नींदमें थे, लेकिन दूकानदारोंने जब अपनी दूकानोंसे झांककर देखा और उन्हें असली बातका पता लग गया, तो उन्होंने शुक्रिया अदा करनेके लिये भगवान्से प्रार्थना की। नगरके बाकी लोग भी जल्दी जाग उठे और अपने लोगोंकी सहायता पा हमने पागल कुत्तेकी तरह उज्बेकोंको हर एक कूचे और सड़कमे पत्थरों और लकड़ियोंसे पीट-पीटकर मारा।" चार-पांच सौ उज्बेक सैनिक मारे गये। उज्बेकोंकी ओरसे नियुक्त नगर-कोतवाल जानेवफा जान बचाकर शैबानीके पास भागा। बाबर मदरसा-उलुगबेगकी ओरसे होते मेहराबोंवाली शाला (उलुगताक)में जाकर बैठा। नागरिकोंने नये तेमूरी बादशाहको बधाई दी। दूसरे दिन मालूम हुआ, कि आहनीदरवाजा (लौहद्वार) अब भी शत्रुओंके हाथमें है। बाबर पन्द्रह-बीस आदमियोंके साथ उधर दौड़ा, लेकिन उसके पहुंचनेसे पहले ही नगरके गुंडोंने उन्हें बाहर निकाल दिया था। जब मुहम्मद शैबानीको यह खबर मिली, तो डेढ़ सौ सवारोंके साथ आकर उसने दरवाजा आहनीपर आक्रमण करना चाहा, लेकिन उसे व्यर्थ समझकर वह लौट गया। समरकन्दपर अधिकार हो जानेके बाद आसपासके बहुतसे इलाकोंसे उज्बेक मार भगाये गये। सोग्द और मियानकुलपर बाबरका अधिकार था, और खोजार तथा करशीपर बाकी तरखन (बुखारा-राज्यपाल)का। मेर्वसे लौटकर शैबानी-सेनाने सिर्फ बुखाराको अपने हाथमें लौटा पाया।

उस साल तो यही मालूम हो रहा था, कि बाबर फिर तेमूरकी कीर्तिको जगाके रहेगा, लेकिन शैबानी भी चुप रहनेवाला आदमी नही था। उसने तैयारी करके १५०१ ई०के बसन्तमे कराकुल और दबूसिया ले लिया। अप्रेल या मई १५०१ ई०मे शैबानीसे लड़नेके लिये बाबरने सरेपुलके पास जाकर मोर्चाबन्दी की। उसके शिविरसे शैबानीका शिविर चार मीलपर था। चार-पांच दिनोतक दोनों दलोंमें मामूली झडप होती रही। यद्यपि अभी मददके लिये आनेवाली सेनाकी प्रतीक्षा करनेकी जरूरत थी, लेकिन ज्योतिषियोंका बतलाया मुहूर्त बीता जा रहा था, इसलिये सहायता आनेसे पहले ही बाबरने युद्ध छेड़ दिया। उज्बेकोंकी युद्धविद्यामें एक ज्यादा प्रचलित चाल थी "तुलुगमेह" अर्थात् शत्रुके पार्श्वोंको प्रहार करके मोड़ देना, दूसरी चाल थी सरपट दौड़ते वाण-वर्षा करना, इसके लिये सेनानायक और सिपाही दोनो पीछा किये जानेपर सरपट लौट पड़ते। शैबानीकी सेना बाबरसे कही अधिक थी। इसी समय मुगोलिस्तानकी-सेनाने बाबरके साथ धोखा दे दिया। बाबरकी पूरी हार हुई। वह अपने दस-पन्द्रह अनुयायियोके साथ कोहक नदीकी धारमें कूद पडा। सवार और घोडे दोनो बख्तरदार थे, जिसके कारण उनके शरीरपर भारी बोझा था, तो भी किसी तरह भागकर वह रातसे पहले ही समरकन्द पहुंचे। बाबरने इस समयके अपने उतावलेपनके ऊपर एक शेर लिखा—

"जो उतावला होकर जल्दीमें अपनी तलवारपर हाथ रखेगा,
वह उस हाथको अफसोस करते हुये अपने दांतोसे काटेगा।"

उलुग-मदरसेमें चादर-सफेदके नीचे ठहरकर बाबर शहरके बचानेकी तैयारी करने लगा। नगरके बहुतसे निकम्मे और फजूलके "गाजी" हर मुहल्ले और कूचेसे बडी संख्यामे आकर मदरसेके फाटकपर "पैगम्बरकी जय" करते उतावलापन दिखला रहे थे। तजर्बेकार लोग रोकनेकी कोशिश करते, तो उन्हे वह गाली सुनाते। बात न मानकर वह गये और उज्बेकोंसे खूब पिटे। बाबरने पीछे हटते समय रक्षा करनेके लिये सेना भेजी, लेकिन तबतक गाजियोंकी भीड़ पिटकर तितर-बितर हो चुकी थी। अब सिपाहियोंको नगरके मुहासिरेकी लडाई लड़नी थी। बीच-बीचमे सैनिक बाहर निकल छापा मारकर कितने ही शिर काट लाते। मुहासिरेके कारण नगरमे बाहरसे खूराक आनी बन्द हो गई, जिसके कारण भीषण भुखमरी और अकाल पडा। गरीब लोग कुत्तों और गदहोका मास खाने लगे। घोडोंको वृक्षोंका पत्ता खिलाया जाता। ऐसी स्थितिमें कितने दिनोतक अपनेको रोके रखता, समरकन्दको आत्मसमर्पण करना पड़ा। बाबरकी बडी बहिन खानजादा विदेशी लुटेरे शैबानीके हाथमे पडी। अपनी मां और कुछ दूसरी औरतोंको साथ लिये बाबर आधी रातको नदीको पारकर समरकन्दसे भाग निकलनेमें सफल हुआ। जीजकमें पहुंचनेपर उसे एक नई दुनिया जान पड़ी, जब समरकन्दकी भुखमरीके बाद उसे बढ़िया मोटा मास, बारीक आटेकी अच्छी तरह पकी हुई रोटी, मीठे तरबूजे और स्वादिष्ठ अंगूर भारी परिमाणमे मिले—चरम अकालसे वह चरम सुकालमे पहुंच गया था। अब सोग्द (अन्तर्वेद)का स्वामी शैबानी था। उसने मुगोलिस्तानी खान महमूदको अंगूठा दिखला दिया, जिसने जाकर ताशकन्द-शाहरुखियाको हाथमें किया। जाड़ोंमें सिर नदीके जम जानेपर उसे आसानीसे पार हो शैबानीने ताशकन्द शाहरुखियाको लूटा। १५०२ ई०मे मुगोलिस्तानी राज्यपाल सुल्तान अहमद तम्बोलने अपने मालिकसे विद्रोह करके शैबानीको सहायताके लिये बुलाया। शैबानीने पहुंचकर महमूद खानको बुरी तरहसे हराया, और उसके साथ आया बाबर मिर्जा जान बचाकर फरगानाके दक्षिणवाले पहाड़ोमे भाग गया। मुगोलिस्तानी खानको दौलत सुल्तान खानम (अपनी बहिन), तथा अम्बा सुल्तान खानम, कुरुज खानम आदि कई राजकुमारियोको जून १५०३ ई०में भेट देनी पडी। शैबानी फरगानाके मुख्य नगरोंमें उज्बेक छावनिया रखकर लौट आया।

१५०५ ई०तक सारा फरगाना, ख्वारेज्म और हिसार (ताजिकिस्तान) आदिके इलाकोंपर भी शैबानीका अधिकार हो गया। अब वह अपनी सारी सेना ले तेमूरके द्वितीय पुत्र उमरशेखके वंशज हुसेन बेंकरासे खुरासान छीननेके लिये दक्षिणकी ओर बढ़ा। पहले साल वह बलख नगरतक अपना अधिकार करके समरकन्द लौट गया। हुसेनने अपने पड़ोसी ईरानी शाह इस्माईल और बाबरसे भी

मदद मांगी। बाबर ९०९ हि० (१५०३–४ ई०)में काबुलका राजा बन चुका था। वह भी हुसेनकी मददके लिये खुरासान आया, लेकिन तबतक हुसेन मर चुका था, और उसके दोनों बेटोंमें राज्यके बटवारेको लेकर भयंकर फूट पैदा हो गई थी। शैबानी जैसे भयंकर शत्रुको शिरपर देखकर भी ऐसा करना बाबरको बहुत बुरा लगा—"दस फकीर एक चट्टानपर बैठ सकते हैं, किंतु दो राजाओंके लिये सारा भूमंडल छोटा है।" बाबर निराश होकर लौट गया। ९१२ हि० (१५०७ ई०)के बसन्तमें शैबानी फिर सेना ले वक्षु पार हुआ, और रास्तेके इलाकोंको जीतते जूनमें मुरगाब नदी भी पार हो गया। खुरासानकी राजधानी हिरात नगरी तुरन्त उसके हाथमें आ गई। वहांका किला कुछ देर-तक प्रतिरोध करता रहा, लेकिन दो-तीन सप्ताह बाद किलेने भी आत्मसमर्पण किया। शैबानीने हिरातके साथ इतनी मेहरबानी की, कि एक लाख तंका कर लेकर कला और विज्ञानके इस महान् केन्द्रको अपने लुटेरे उज्बेकोंके हाथो बरबाद होने नही दिया। शैबानीने अपनी सेनाके साथ शहरके बाहर डेरा डाला। हुसेन बेकराके बेटे मुजफ्फर हुसेन मिर्जाकी बीबीके सौंदर्यको सुनकर अट्ठावन वर्षका शैबानी उसपर मुग्ध हो गया। उसने उसे अपने हरममें दाखिल किया। हिरातके राजभवनसे उसे भारी परिमाणमें सोने-चांदीके बर्तन, बहुमूल्य लाल, हीरे, मोतियां तथा दूसरे रत्न प्राप्त हुये।

उसकी सेनाने बाकी तेमूरी राजकुमारोंको हराते सारे खुरासानको अपने हाथमें कर लिया। बाबर शैबानीसे हारा और जला-भुना हुआ था, इसलिये उसे अपने शत्रुमें केवल दोष ही दोष दिखलाई पड़ते थे। शैबानी कवि था, और उसकी कवितायें बुरी नहीं होती थीं, लेकिन "बाबरनामा"में बाबर लिखता है—"बिल्कुल अज्ञ होते भी उसने ढिठाई दिखलाते हुये काजी अख्तियार और मुहम्मद मीर युसुफ (खुरासानके प्रसिद्ध मुल्ला) जैसे विद्वानोंके सामने कुरानकी व्याख्या करते व्याख्यान दिया। उसने कलम उठाकर सुलेखक मुल्ला सुल्तान अली और चित्रकार बेहजादके लेखों और चित्रोंका संशोधन किया। ....वह अपने उबा देनेवाले शेरोंको मेम्बरसे पढ़कर सुनाता था, और उन्हें उसने लिखवाकर चारसूमें टंगवा दिया था।" आधुनिक कालके तुर्की साहित्यके एक विद्वान् वाम्बेरीने शैबानीकी कविताके बारेमें लिखा है—"शब्द और अर्थ दोनोंकी दृष्टिसे शैबानीकी कविता पूर्वी तुर्की साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतियोंमें है, और उससे पता लगता है, कि शैबानीको तुर्की, फारसी और अरबीका ज्ञान बहुत अच्छा था।"

शैबानीने बाबरका पीछा भी करना चाहा, लेकिन कंधार नगरके मुहासिरेमें असफल रहनेके कारण वह काबुलकी ओर नहीं बढा। १५०८ ई०में उसने मुगोलिस्तानके खान महमूदको ताशकन्दमें जाकर हराया। खानने फरगानाके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन अपने पांच पुत्रोंके साथ प्राण खोनेके सिवा उसे कुछ हाथ नही लगा।

पूर्वी और दक्षिणी प्रतिद्वंद्वियोंसे निपटनेके बाद भी अभी उत्तरमें कजाक खान कासिमके दो लाख सैनिक मौजूद थे। जाड़ोंमें दोनोंके ओर्दू घास-चारेके सुभीतेवाले स्थानमें डेरा डाला करते थे। शैबानीका ओर्दू उस समय कुरुकमें था। १५०९-१०ई०के जाड़ोमे एक दिन कासिम खान अपनी सेनाके साथ आ पहुंचा। उज्बेकोंने अपने लूटके मालको छोड़ दौड़कर शैबानीको खबर दी। शैबानीने तुरन्त पीछे हटनेके लिये नगारा बजवाया और जाड़ोंके अन्ततक उज्बेक बड़ी अस्तव्यस्त अवस्थामें समरकन्द पहुंचे।

यह कह चुके हैं कि मंगोल कबीलोंके अवशेष हजाराके नामसे अफगानिस्तानके पश्चिमी पहाड़ोंमें रहते थे। शैबानी १५१० ई०में उनपर आक्रमण करनेके लिये हिंदूकोहके भीतर घुस गया। लेकिन लौटते वक्त हेलमन्दकी उपत्यकामें उसे आदमियों और पशुओंकी बड़ी क्षति उठानी पड़ी। खुरासानमें पहुंचनेपर उसके पास दो सेनाएं आ गईं और उसने क्षतिग्रस्त सेनाको तुर्किस्तान जानेकी छुट्टी दे दी।

शैबानीका प्रतिद्वंद्वी ईरानी शाह इस्माईल सबसे अधिक शक्तिशाली था। उसने आजुरबाइजानी तुर्क-वंश (श्वेत-मेश)का उच्छेद करके सारे ईरानपर अधिकार करते हुये सफावी-वंश (१४९९–१५२४ ई०)की स्थापना की थी। वह कैसे देख सकता था, कि पूर्वी ईरान-खुरासानपर उज्बेकोंका

अधिकार हो। ९१६ हि० (१० IV १५१०–१ III १५११ ई०)में उसने खुरासानपर आक्रमण किया। उस समय उज्बेकोकी सेना हिरातमें एकत्रित हुई थी। शैबानीकी सेना इस्माईलकी अपेक्षा कम थी। वह हिरातमे छावनी छोड़ मेर्वकी ओर लौटा। मशहदकी तीर्थयात्रा समाप्त कर शाह इस्माईलने उज्बेकोंका पीछा किया। तूकेराबादके पास दोनो सेनाओंमें जबर्दस्त लडाई हुई, शैबानी हारा और शाहकी सेना उसे मेर्वकी दीवारोंतक खदेड ले गई। शैबानी मेर्वमे दुर्गबद्ध हो गया और शहरके आस-पास शाह इस्माईलने घिरावा डाल दिया। इस तरहकी कायरता दिखलानेके लिये शाहने शैबानीको फटकारते हुये चिट्ठी लिखी। यद्यपि शैबानी इस तरहकी व्यर्थकी वीरता दिखलानेका नही, बल्कि कल-बल-छलका पक्षपाती था, लेकिन उस वक्त अपने बीस हजार घुडसवारोको लिये इस्माईलकी चालीस हजार सेनाके साथ लडनेके वास्ते मैदानमे चला आया। लोगोंने उसे प्रतीक्षा करनेकी सलाह दी, लेकिन उसने नही माना और सामने और पीछे दोनों तरफसे आक्रमण कर दिया। इसमे शक नहीं, उज्बेकोने युद्धमे बड़ी बहादुरी दिखलाई, लेकिन सख्यामे दूने सफावी भी लड़नेमे निर्बल नही थे। उज्बेक-सेना छिन्न-भिन्न हो गई, शैबानी पांच सौ सवारोके साथ भागकर पशुओके एक हातेमे जा छिपा। दूसरी तरफ द्वार न होनेसे नदी-तटकी ओर प्राकारसे उज्बेक सैनिक एक दूसरेके ऊपर कूदे, खानको कूदनेमें चोट आई। दुश्मनोंने उसके शरीरको आदमियोके ढेरमेसे निकालकर मार डाला, और शैबानीका सिर काटकर शाहको भेट किया। उसने आज्ञा दी, कि शैबानीके शरीरको टुकड़े-टुकडे करके राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंमे प्रदर्शित किया जाय। इस्माईलने उसके चमडेमे भूसा भरकर तुर्क-सुल्तान बायजीदके पास भेज दिया। बायजीद सुन्नियोका सबसे बडा नेता था, और इस्माईल शियोका, इसलिये उसने तुर्क-सुल्तानके पास सुन्नी भाई तथा महान् उज्बेक-नेताकी इस दुर्गतिको दिखलाना चाहा। शैबानीकी खोपड़ीमे सोना मढवाकर इस्माईलने शराबके प्यालेके तौरपर प्रदर्शन कराया।

इसमें शक नही, शैबानी उत्तरी घुमन्तुओंका अन्तिम सबसे बड़ा विजेता था, जिसने मध्य-एसियामे एक बडे राज्यकी स्थापना की। लेकिन इसी समय ईरानमे सफावी जैसा शक्तिशाली वंश स्थापित हो गया, जिसने ईरानको शिया घोषित करके पूर्वी और पश्चिमी सुन्नी देशोंके बीचमे पच्चरका काम किया। वक्षु (आमू-दरिया)तक इस्माईलने बढकर फिर उसे एक बार ईरान और तुरानके बीचकी सीमा बनाई।

२. कूचुनजी (१५१२–३० ई०)

शैबानी घुमन्तू राजवंश था, इसलिये हजारो वर्षसे स्थापित अपनी पुरानी व्यवस्थाके अनुसार उसके हरएक राजकुमारको छोटे-छोटे प्रदेशका राजा बनाया जाता था। वह अपने ऊपर एकको खान मानते थे। खानके मरनेपर वंशके सभी कुमार मिलकर उसका उत्तराधिकारी खान तथा आवश्यकता होनेपर कलगा (युवराज) चुनते थे, इसमें योग्यतासे अधिक रिश्ते और उमरमें सर्वज्येष्ठका ख्याल काम करता था।

मेर्वमे शैबानीकी जो दशा हुई, उसकी खबर सुनकर बाबर काबुलसे अपने पूर्वजोके देशकी ओर चला; लेकिन नेताके मर जानेसे शैबानी-सेना नष्ट नही हो गई थी। जानीबेग सुल्तान उस समय उपराज था, जिसके झंडेके नीचे फिर बड़ी सेना इकट्ठी हो गई। इसी सेनाने मुगोलिस्तानका कत्ले-आम किया था, जिसमे "तारीख रशीदी"का लेखक इतिहासकार हैदर बाल-बाल बचा था। बाबर अपनी सेना ले आमू पारकर खुत्तलके प्रधान शहर दश्तेकुलाकमें पहुंचा। यहां वक्षुके पास फिर दोनों सेनाओमें झडप हुई, लेकिन शक्ति आजमा लेनेपर दोनोने लडनेकी हिम्मत नहीं दिखलाई। बाबर वक्षु पार हो कुंदुज लौट गया और शैबानी-सेनापति हमजा सुल्तान हिसारको। मेर्वसे शाह इस्माईलने शैबानीकी बीबी खानजादा बेगमको भेज दिया था, जो अपने भाई बाबरसे जा मिली। बाबरने इसके लिये इस्माईलको बहुत धन्यवाद देते हुये अन्तर्वेद जीतनेके लिये उससे सैनिक सहायता मागी।

शाह इस्माईलकी भेजी सेनाको भी साथ ले बाबर फिर पहाड़ी रास्तेसे आमू दरिया पारकर उत्तरकी

ओर बढ़ा। आमूकी एक शाखा सुरखाबपर पुलेसंगीनको हमजा सुल्तान दखल किये हुये था। बाबरको मालूम हो गया, कि दुश्मन बहुत शक्तिशाली है, तो भी साहस करके पुलकी आशा छोड़ नदी पार करनेकी कोशिश की। लेकिन, जल्दी ही उसे एक दुर्गम रास्तेसे आबदराकी ओर लौटना पड़ा। उज्बेक उसका पीछा कर रहे थे। आधी रातको खबर लगी, कि उज्बेक नजदीक आ गये हैं। बाबरने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया और हमजा सुल्तान तथा मेहदी सुल्तान बाबरके बन्दी बने। बाबर चगताइयोंकी पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खानका नाती था, इसलिये चगताई-वंशज होनका दावा करता था। उसने इस सफलताके बाद और भी आगे बढ़कर दरबन्दे-आहनी (लौहद्वार)तक उज्बेकोंका पीछा किया। यार मुहम्मद नज्म-शानी (द्वितीय तारा)ने करशीको लूटा और लोगोंको कत्ल किया। अब पामीरमे हिसार और खुत्तलान, खोजर तथा आमूके दक्षिण कुंदुजके प्रदेश बाबरके हाथमें आ गये। दर्रा-खैबरसे दरबन्दतकके प्रदेशको कुछ समयके लिये अपने हाथमें करके बाबरको प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी, लेकिन वह जबतक समरकन्दमे पहुचकर तेमूरके तख्तपर नही बैठता, तबतक अपनी सफलतासे सन्तुष्ट नहीं हो सकता था। उसके इस मनोरथको पूरा करनेके लिये शाह इस्माईलने भारी सेना भेजी। उज्बेक सेनापति उबैदुल्लाने करशीमें मोर्चाबन्दी कर रखी थी, बाकी उज्बेक समरकन्द भाग गये थे। बाबरने साठ हजार सयुक्त सेनाके साथ आक्रमण करके उबैदुल्लाको हराकर बाकी उज्बेकोंको भी किजिलकुमके रेगिस्तानमें भगा दिया। दूसरे उज्बेक सुल्तानोंको जब पता लगा, तो सामने होकर लडनेकी जगह उन्होंने तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)की ओर भागना ही अच्छा समझा। बाबर अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था।

८ अक्तूबर १५११ ई०को समरकन्दमें बाबर तेमूरके सिंहासनपर बैठा। इस वक्त उसे कितनी प्रसन्नता हुई होगी, इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं। उसे क्या पता था, कि यह आठ महीनोंकी चांदनी है। हां, उसके बाद उसे एक और भी विशाल और वैभवशाली साम्राज्यको भारत में स्थापित करनेका मौका मिलेगा। इस समय "बाबरका राज्य" तारतारी रेगिस्तानोंसे गजनी और काबुलतक था, जिसमें कुंदुज, हिसार, समरकन्द, बुखारा, ताशकन्द, सेरम, खाकन्द (फरगाना) आदि नगर सम्मिलित थे। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि खुरासान अब शाह इस्माईलका था।

लेकिन शाहकी मदद बाबरके लिये बहुत महंगी पड़ी। उसने शाहके नामका खुतबा पढवाया। एक शिया बादशाहके नामका खुतबा पढ़े जाते देख सुन्नी अन्तर्वेद कैसे सन्तुष्ट हो सकता था? बाबरने स्वयं ईरानी पोशाक धारण की, और अपनी सेनाको भी वैसा ही करनेका हुक्म दिया। खासकर ईरानी टोपी धारण करनी अनिवार्य कर दी, जिसमें शियोंके बारह इमामोंके चिह्न बने हुये थे, और पोशाकमें एक लम्बी लाल पट्टीको लगानेके लिये कहा, जो कि बीचसे होकर पीठके पीछे लटकती थी, जिसके कारण ईरानियोंको किजिल-वास (रक्त-केश) कहा जाने लगा। बाबर जरूर समझता होगा, कि शिया-धर्म, शियोंकी वेश-भूषा तथा शिया इस्माईलको अपना प्रभु स्वीकारकर वह सुन्नियोंका कोप-भाजन बनेगा, लेकिन उसके लिये और कोई रास्ता नहीं था। प्रजाके असन्तोषकी खबर उज्बेकोंको लगी, और १५१२ ई०के वसन्तमें एक उज्बेक-सेना ताशकन्दकी ओर बढ़ी, दूसरी रेगिस्तानके रास्ते उबैदुल्लाके नेतृत्वमें यतीकुदुप (सप्तकूप) होती बुखाराकी ओर। ताशकन्दमें मुकाबिला करनेके लिये बाबरने सेना भेज दी, और स्वयं उबैदुल्लाकी ओर चला। कुलमलिकमें दोनोंमें जबर्दस्त संघर्ष हुआ, लेकिन यह चमत्कारसे कम नहीं था, जो कि १८ अप्रैल १५१२ ई०में बाबरकी चालीस हजार सेनाको तीन हजार उज्बेकोंने हरा दिया—अर्थात् एक उज्बेक दस बाबरी सैनिकोंसे भी अधिक युद्धक्षमता रखता था। पीछे भारतपर विजय प्राप्त करनेके समय हर एक बाबरी सैनिक शायद हिंदुस्तानी सैनिकोंसे दसगुणीसे अधिककी क्षमता रखता था। इसमें कारण नागरिक विलासितापूर्ण जीवन तथा पारस्परिक फूट हो सकती थी।

कुलमलिकमें हारनेके बाद बाबरके लिये समरकन्दमें भी शरण नहीं थी। अब वह शाह इस्माईलके पास जानेके लिये दरबन्दकी ओर चला। दरबन्दमें भी मोर्चाबन्दी हो चुकी थी। शाह इस्माईलने

यार मुहम्मदके नेतृत्वम साठ हजार तुर्कमान भेजे, जिन्होंने उज्बेक सेनापति हमजाको हराकर लौहद्वार (दरबन्द) पार हो खोजार (गुजार), करशीको लूटा। करशीमे पन्द्रह हजार नागरिकोंको बिना यह ख्याल किये कत्ल कर डाला गया, कि वह उज्बेक है या स्थानीय नागरिक, बूढ़े-बच्चे है, या स्त्री। इसी कत्ले-आममें कवि बीनाई भी मारा गया। शिया अपनी धर्मान्धताका परिचय दे रहे थे। बाबर समझ गया, कि अब उसे अन्तर्वेद क्षमा नही कर सकता ; इसलिये अपनेको उसने अलग कर लिया। इसके बारेमें हैदरने लिखा है—"इस्लाम (सुन्नी-धर्म)का प्रभाव कुफ्र और अविश्वासके ऊपर विजय पाने लगा, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। आक्रमणकारी बुरी तरहसे हारे, और उनमेंसे अधिकांश युद्धक्षेत्रमे मारे गये। गिज्दुवानके वाणोंने करशीके खूनका बदला लिया। मीर नजीम तथा दूसरे सभी तुर्कमानोके मुख्य सेनानायक नगरमे भेज दिये गये।"

मीर नजीमके दबदबेके बारेमें वही इतिहासकार लिखता है—उसके रसोईखानेमें प्रतिदिन सौ भेंडें, असंख्य मुर्गे-मुर्गियां, हंस, बतके और चालीस क्वार्त (५६० सेर ?) दालचीनी, केसर और दूसरे मसाले इस्तेमाल होते थे। उसके खानेकी तश्तरियां या तो बिलकुल सोनेकी थीं या बहुत मूल्यवान् चीनी मिट्टीकी। अब बाबरने सदाके लिये अन्तर्वेदसे बिदाई ली, और वह काबुल लौट गया।

जिस वक्त दक्षिणमें बाबर-इस्माईल और उज्बेकोंका इस तरह संघर्ष हो रहा था, उसी समय मुगोलिस्तानके खानने पूरबसे अन्दिजानके रास्ते प्रधान उज्बेक-सुल्तान सुयुन्जिक खानके ऊपर आक्रमण किया और जरफ्शां-उपत्यकामे समरकन्दसे चालीस मील पूर्व बिशकन्द (पजकन्द) में उसे पूरी तौरसे हरा दिया। यह वह समय था, जब कि बाबर ईरानी सेना लेकर समरकन्दकी ओर बढ़ रहा था।

१०. (२।४।५)

शैबानी–अस्त्राखाती (१५००-१७४७)
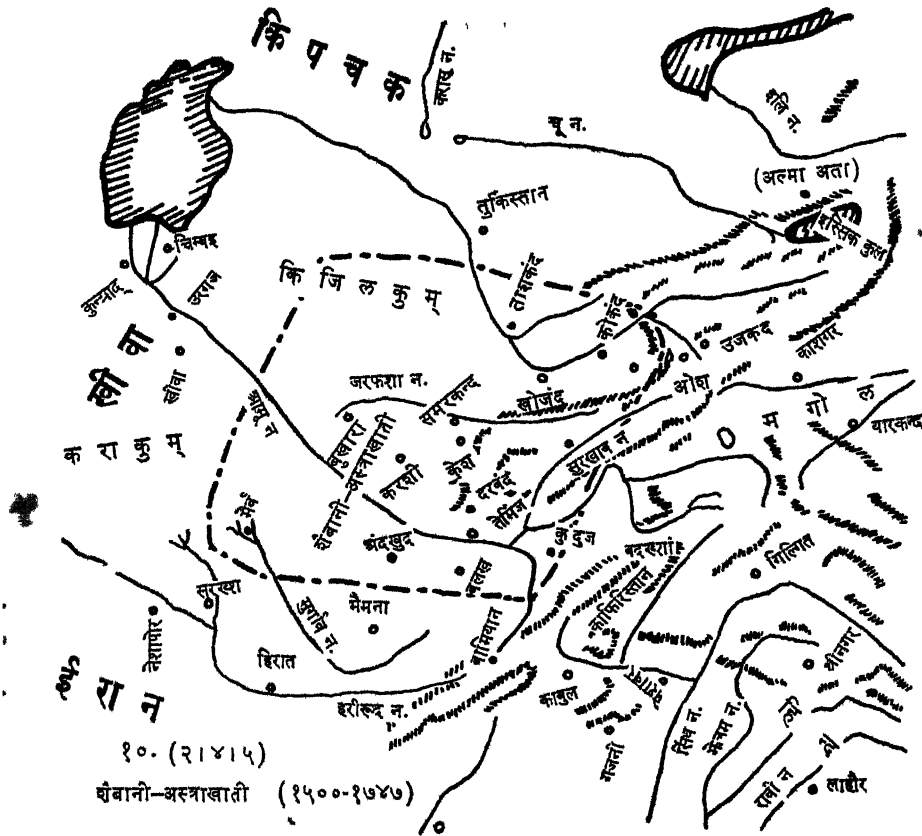
बुखारासे उत्तर गिज्दुवानमें शाह इस्माईलके सैनिकोंका जानीबेग-सुल्तानने किस तरह मुकाबिला किया, इसे "तारीख रशीदी"में मिर्जा हैदरके शब्दोंमें सुनिये—

"उज्बेक सुल्तान उसी रातको किलेके भीतर प्रविष्ट हुये, जिस रात तुर्कमान (इस्माईलके सैनिक) और बाबर घुसे थे। तुर्कमान और बाबर महलके सामने छावनी डालकर मोर्चाबन्दीके यंत्रोंको ठीक-ठाक करनेमें लगे हुये थे। सूर्योदयके समय उन्होंने उपनगरमें अपनी सेनाओंको शत्रुकी ओर मुह करके खड़ा किया। दूसरे पक्षने भी लडाईकी तैयारी की। उज्बेकोंके उपनगरमें होनेसे युद्धक्षेत्र बहुत संकरा था। उज्बेक-पैदल-सेनाने चारों ओरसे वाणोंकी वर्षा करनी शुरू की, और जल्दी ही इस्लामकी ताकतने कुफ्र और नास्तिकताके हाथको तोड़ दिया, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। इस्लामके विजयी वीरोंने धर्मविद्वेषियोंके झंडेको गिरा दिया। तुर्कमान पूरी तौरसे हारे, उनमेंसे अधिकांश लडाईके मैदानमें मारे गये। करशीमें तलवारसे जो घाव हुये थे, उनको बदलेके वाणोंकी सिलाईने सी दिया। विजेताओंने मीर नजीम और सभी तुर्कमानोंको नरकमें भेज दिया, बादशाह (बाबर) निराश और दुःखी हो हिसारकी ओर लौटा।"

बाबरका यह अन्तिम प्रयत्न था। उसने काबुल लौटकर अब अपनी शक्तिको हिन्दुस्तान जीतने में लगाया।

गिज्दुवानके युद्ध ९१८ हि० (१९ III १५१२–७ II १५१३ ई०)के बाद शैबानी सुल्तानोंने अपने तुरा और यास्साक (कानून)के अनुसार मुहम्मद शैबानीके चचा कूचुनजीको अपना खान बनाया और सूयुन्जिक कलगा (युवराज)के पहले ही मर जानेके कारण जानीबेग कलगा बनाया गया। लेकिन वह भी पहले ही मर गया। जानीबेगने शैबानी सुल्तानों (राजकुमारों)में इलाके बांट दिये, जिसमें कूचुनजीको समरकन्द, सूयुन्जिकको ताशकन्द, उबैदुल्लाको कराकुल-करशी-बुखारा और जानीबेगको समरकन्द-मियानकुल-कर्मीना मिला।

ताशकन्दपर आक्रमण करनेवाली सेनाका संचालक सूयुन्जिक था। उसने नगरपर अधिकार कर लिया। १५१२ ई०में सुल्तान सईद खान मंगोलिस्तानीने पांच हजार सेना ले फरगानासे होकर सूयुन्जिकके ऊपर आक्रमण किया। विशकन्दमें हार खाकर सुल्तान सईद अन्दिजान पहुचा। गिज्दुवानमें भारी विजय प्राप्त करनेके बाद सूयुन्जिकने सईदकी ओर मुह किया, लेकिन सईदने अन्दिजान, अक्सी और मरगिनानमें मजबूत सैनिक छावनियां रख दक्षिणके पहाड़ोंका रास्ता लिया। सईदने कजाकोंके शक्तिशाली खान कासिमको सहायताके लिये बुलाया, जो कि शैबानियोंका भी शत्रु था। दश्तेकिपचकके गर्भमें रहनेवाले इस खानके पास बड़ी भारी सेना थी। वह सईद खानकी मददके लिये दक्षिणकी ओर चला। सैरामके राज्यपालने बिना लड़े ही किलेकी कुंजी कासिमके हाथमें दे दी। फिर कजाकसेना रास्तेके नगरों और गांवोंको लूटती-पाटती ताशकन्दकी ओर चली। १५१३-१४ ई०में सूयुन्जिक कजाक खानके प्रतिरोधमें ही लगा रहा। १५१५ ई०में कासिमने किसी दूसरी दिशामें लूट-पाट करनेके लिये अभियान किया, तब कजाकोंसे छुट्टी पा उज्बेक फरगानाकी ओर मुड़े। सुल्तान सईद खान बिना मुकाबिला किये ही काश्गरकी ओर भाग गया, जहां उसने कई साल शासन किया। फरगानापर फिर उज्बेकोंका अधिकार हो गया।

गिज्दुवानकी विजयमें शाह इस्माईलकी सेनाकी जो गति हुई थी, उससे उज्बेकोंकी हिम्मत बढ़ गई और उन्होंने एक बार बलखतक घुसकर खुरासानमें लूट-पाट की; लेकिन जब शाह इस्माईलकी सेनाके प्रहारका भय लगा, तो वह पीछे हट आये। शाह इस्माईल १५२३ ई०में मर गया, और उसका बालकपुत्र तहमास्प (१५२४–७६ ई०) तख्तपर बैठा। इस समय फिर उज्बेकोंको मौका मिला और १५२५ ई०में उबैदुल्ला एक बड़ी सेना ले मेर्व जीतते खुरासानकी ओर बढ़ा। अप्रतिरक्षित मशहद नगरने आत्मसमर्पण किया। उबैदुल्ला तूसको भी लेते अस्त्राबाद पहुंचा, और अपने पुत्र अब्दुल अजीजको वहांका शासक बना बलखकी ओर लौटा। आजुरबाईजानसे सेना आई, लेकिन उसे उज्बेकोंने बोस्तामनमें हरा दिया, और अस्त्राबाद अब्दुल अजीजके ही हाथोंमें रहा।

उबैदुल्लाने जाड़ोंको गोरियान (गोरी सुल्तानोंकी मूलभूमि)में बिताया। ९३४ हि० (२७ सितम्बर १५२७–१७ अगस्त १५२८ ई०)में उसने सात मासतक हिरातका मुहासिरा किया। शाह तहमास्प एक बड़ी सेना ले उसके मुकाबिलेके लिये आया, जिसे देख उबैदुल्ला हट गया।

फिर उसने ईरानी शाहसे मुकाबिला करनेके लिये भारी तैयारी शुरू की, और डेढ़ लाख सेना लेकर दक्षिणकी ओर चला—छिङ-गिस्के बाद इतनी बडी सेना वक्षु पार नही हुई थी। यद्यपि ईरानी सेना-मे पचास हजार ही आदमी थे, लेकिन वह बडे तजर्बेकार और अनशासन-संपन्न थे। उन्होने (टर्कीके) उस्मानी तुर्कोंके साथ अनेक सफल लडाइया लडी थी। युरोपने मंगोलोंसे सीखकर बारूदके हथियारोमें बहुत तरक्की कर ली थी। उस्मानी तुर्कोंने उनसे तोप और पलीतेकी बन्दूकोका इस्तेमाल सीखा था। उस्मानी तुर्कोंके प्रतिद्वन्द्वी सफावी इन नये शक्तिशाली हथियारोके बिना कैसे सफलता पा सकते थे ? आविष्कारोके इतिहाससे मालूम है, कि युद्ध-सम्बन्धी आविष्कार सबसे जल्दी प्रचलित हो जाते है। तहमास्पकी सेनामे दो हजार तोपची और छ हजार बन्दूकची थे। उज्बेकोंकी सेना यद्यपि तीनगुनी थी, लेकिन उनके हथियार वही पुराने—तीर-धनुष और तलवार-भाले थे। शाह तहमास्प मशहद और हिरातके रास्ते जामके समीप पहुंचा—मुख्य सेना मशहदमे डेरा डाले पड़ी थी। बीस हजार ईरानी सवारोको दुश्मनकी छावनीका पता लगानेके लिये भेजते हुये हिदायत दी गई, कि कोई आदमी अपनेको खाइयोसे बाहर न दिखलाये। इधर मत्रशास्त्रियोको लगा दिया गया था, कि वह जादू करके शत्रुको ऐसा बना दे, कि उनमेंसे एक भी बच निकलने न पाये। अभी तैयारी पूरी नही हुई थी, कि शाह तहमास्पने युद्ध करनेकी ठान ली। २५ सितबर १५२६ ई० को जाममे दोनों सेनाये एक दूसरेसे भिड़ी। यह ६ मुहर्रम करबलामे इमाम हुसेनकी शहादतका दिन था, इसलिये शिया शाहने इसी पवित्र दिन युद्ध छेडना अच्छा समझा। बीचमें तोपोको रक्खे बीस हजार चुनी हुई सेना खडी थी, जिनके साथ शाह भी था। उज्बेक पार्श्वोपर आक्रमण कर दोनो छोरोंको पीछे ढकेल पीछेसे भी डेरोंको लूटने लगे। लेकिन पार्श्वोंके इस प्रकार ढकेल दिये जानेपर भी केंद्र मजबूत रहा। ठीक समय-पर तोपोंको बाधनेवाली जजीरे गिरा दी गई और वह आग और गोले उगलने लगी। तिगुना जनबल रखते हुये भी उज्बेक घास-मूलीकी तरह कटने लगे। युद्धक्षेत्रमें उनके पचास हजार आदमी काम आये, लेकिन उन्होंने बीस हजार अपने शत्रुओंका भी संहार किया। उज्बेकोकी भारी हार हुई।

तहमास्पके विजयसे बाबर प्रसन्न नहीं शंकित हो उठा। उसे डर लगा, कही वह खुरासानसे हमारे राज्यकी ओर भी न बढ आये। बाबरने अपने बेटे हुमायूंको पचास हजार सेना देकर आगे बढ़नेका हुक्म दिया—हुमायू उस वक्त पिताकी ओरसे बदख्शाका राज्यपाल था। बेटेको इस तरह रवाना करके बाबर स्वयं मुगोलिस्तानी राजकुमार सुल्तान वेसके साथ समरकन्दकी ओर चला। वेसके भाई शाह कुल्लीने हिसारको ले लिया। तुरसुन मुहम्मद सुल्तानने तेर्मिज और कबादियानपर हाथ साफ किया। जिस समय हुमायू इस प्रकार, कूचुनजी खानको तहस-नहस करनेमें व्यस्त था उसी समय बाबर आगरामें कूचुनजीके दूत अमीन मिर्जाकी बडी आवभगत कर रहा था। भोजके बाद सिरकमाश मलमलका जामा, और बहुमूल्य बटन, सोना तथा दूसरी चीजे भेटमें पा ३१ जनवरी १५२६ ई०को उज्बेक-दूत बाबरसे बिदा हुआ। दूत अमीन मिर्जाको एक खांडा, एक कमरबन्द, एक हाथीका अंकुश तथा कई हजार तका इनाम मिला था। इसी तरह दूतकी बीबी मेहरबान खानम और उसके पुत्र पूलादको भी बाबरने भेंट-इनाम देनेमें बडी उदारता दिखलाई। दूतको क्या पता था, कि जिस समय पिता उसकी इतनी खातिर कर रहा है, उसी समय उसका बेटा (हुमायूं) उज्बेकोंके राज्यमें आग और तलवारका जौहर दिखला रहा है।

लेकिन इस भीषण संग्रामके खतम करनेका समय यकायक आ गया, जब कि १५३० ई०मे कूचुनजी मर गया और उसी सालके दिसम्बरमें बाबरकी प्रार्थना स्वीकृत हुई—हुमायू बीमारीसे बच गया, लेकिन उसके बदलेमें अल्लाने बाबरको बुला लिया।

३. अबूसईद खान (१५३०-३२ ई०)

कूचुनजी (अबुल्खैर-पुत्र)के राज्यकालमें ही उसके उत्तराधिकारी (कलगा) चुने गये सूयुन्जिक तथा जानीबेग खोजा (मुहम्मद-पुत्र) मर गये, इसपर कूचुनजीके पुत्र अबूसईदको खान चुना गया। पिताकी भांति इसने भी अपनी राजधानी समरकन्दमे रक्खी। लेकिन, उज्बेक सैनिक-

शक्तिका संचालक अब उबैदुल्ला था, जो बुखारामें रहता था। ईरानियोंसे एक बार बुरी तरहसे हार खानेके बाद भी उबैदुल्ला फिर खुरासानकी ओर बढ़ना चाहता था, मगर अबूसईद और दूसरे सुल्तान (राजकुमार) इससे सहमत नहीं थे। बारूदके हथियारोंने इन घुमन्तुओंकी हिम्मत तोड़ दी थी। ईरानका मछलीवाला झंडा एक बार फिर सारे खुरासानपर फहराने लगा। तहमास्पने अपने भाई बहराम मिर्जाको अपना उपराज बनाकर खुरासानका शासक बनाया। उबैदुल्ला सेनाका प्रधान-सेनापति था, इसलिये उसने राय न होनेपर भी १५३१ ई०में मशहदकी ओर अभियान किया, लेकिन वहांसे हार खाकर भागनेके सिवाय कुछ हाथ नहीं लगा। घुमन्तू टिड्डी दलकी तरह हारसे भय खाकर सदाके लिये पीछे नहीं भाग सकते। १५३२ ई०में उज्बेक-सेनाने हिरात, मशहद, अस्त्राबाद और सब्जवारतकके सारे प्रदेशको डेढ़ सालतक लूटा-बरबाद किया। घिरावेमें पड़े हिरात शहरके लोगोंने अन्नाभावमें कुत्ते-बिल्लियोंको खाकर खतम कर दिया। शहर आत्म-समर्पण करनेकी सोच रहा था, इसी समय तहमास्पको पश्चिममें उस्मानी तुर्कोंसे छुट्टी मिल गई और वह खुरासानकी ओर बढ़ा, जिसपर उबैदुल्ला लौट गया। ९३९ हि० (३ VIII १५३२-२४ VI १५३३ ई०) में अबूसईद मर गया।

४. उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र (१५३२-४० ई०)

विजेता मुहम्मद शैबानीका भतीजा उबैदुल्ला खान बनकर और भी निरंकुश हो गया। १५३५ ई० में उसने फिर खुरासानमें लूट-मार करनेके लिये सेना भेजी, और अगले साल खुद खुरासानकी ओर बढ़ा। चार मासतक हिरातपर उसका अधिकार रहा, जिसमें उसने शियोंपर बहुत अत्याचार किये। शाह तहमास्पका पूरबमें ही जबर्दस्त शत्रु नहीं था, पश्चिममें उस्मान अली तुर्कोंसे उसका संघर्ष चलता रहता था, जिसमें राजनीतिके साथ-साथ शिया-सुन्नीका झगड़ा भी शामिल हो जानेसे युद्धका रूप बहुत भीषण होता था। जब वह अपनी अधिकांश सेना ले पूरबकी ओर बढ़ता, तो पश्चिमका शत्रु प्रहार करने लगता, और जब वह पश्चिमकी तरफ मुंह करता, तो पूरबकी ओरसे प्रहार होने लगता। जब शाह तहमास्प खुरासानमें उबैदुल्लाके खिलाफ सेना लेकर आया, तो उबैदुल्ला देश लौट गया। तोपों और बंदूकोंके डरके मारे अब उज्बेक जमकर लड़नेकी हिम्मत नहीं करते थे, लेकिन खुरासानमें लूट-मार करनेके लिये वह दो-तीन बार और जाते रहे।

इसी बीच खीवा (ख्वारेज्म) में उज्बेकोंका एक और स्वतंत्र राज्य कायम हो गया, जिसके कारण वहां गड़बड़ी फैल गई। उससे फायदा उठा उबैदुल्ला अपने अमीरोंके साथ उरगंजके ऊपर चढ़ा। ख्वारेज्मके राजकुमार मङ्गिशलककी ओर भाग गये। उरगंज पहुंचकर उबैदुल्लाने उन्हें पकड़नेके लिये सेना भेजी और अवानेक खान अपने सारे लोगोंके साथ वेजिरसे उत्तर बेगातकिरी स्थानमें पकड़ा गया। उबैदुल्लाने अवानेकको उमरगाजीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर अपने बापकी हत्याका बदला लिया। उबैदुल्लाने ख्वारेज्मको अपने पुत्र अब्दुल अजीजके हाथमें दे दिया। वहांके निवासी सरतों (फारसी भाषाभाषियों) और तुर्कोंको उबैदुल्लाने नहीं छेड़ा। उज्बेकोंको चार भागोंमें बांटकर उसने बुखारा (उबैदुल्ला), समरकन्द, ताशकन्द और हिसारके सुल्तानोंको दे दिया। लेकिन अवानेक खानका पुत्र दीन मुहम्मद अब भी अपनी रियासत देरूनका स्वामी था। उसके पास उरगंजसे भी कितने ही भगोड़े आ गये थे। दीन मुहम्मदने खीवापर धावा कर दारोगा (राज्यपाल) और उसके आदमियोंको हराकर मार दिया। हजारास्पका दारोगा भी जान लेकर भागा। अब्दुल अजीजकी भी हिम्मत उरगंजमें रहनेकी नहीं हुई, और वह भी वहांसे खिसका। खबर सुनकर उबैदुल्ला चार हजार सेना लेकर पहुंचा, जिसके मुकाबिलेके लिये दीन मुहम्मद भी अपने तीन हजार सैनिकोंके साथ तैयार था। अमीरोंने मना किया, लेकिन दीन मुहम्मदने नहीं माना। घोड़ेसे उतरकर उसने अपने कुर्तेपर मिट्टी फेंकते हुये कहा—"मेरे अल्लाह, मैं अपना आत्मा—प्राण तेरे हाथोंमें देता हूं और अपना शरीर धरतीको।" फिर उसने पीछे मुंह फेरकर कहा—"मैं अपनेको मरा हुआ समझता हूं। तुममेंसे जिसको अपना प्राण मुझसे ज्यादा प्यारा हो, वह मेरे साथ आगे न बढ़े; जिसको नहीं वह आये।"

यह कहकर दीन मुहम्मद फिर घोड़ेपर चढा। उसके सैनिक भी उत्साहसे भरे उसके पीछे-पीछे चले। पहली भिडतमे ही उन्होंने दुश्मनोको भारी क्षति पहुंचाई। दोनों उज्बेक जातिके ही लोग थे, इसलिये समझौतेकी बात चलने लगी। इसी बीच ९४६ हि० (१९ V १५३९–८ IV १५४० ई०)में उबैदुल्ला मर गया। इतिहासकार हैदरके अनुसार पिछले सौ सालोमे उबैदुल्ला जैसा बादशाह नही हुआ था। वह बडा ही सदाचारी, नम्र, धार्मिक, संयमी, न्यायपरायण, उदार और वीर पुरुष था। उसने अपने हाथसे कई कुरानकी प्रतिया लिखी। तुर्की-अरबी-फारसीका वह कवि तथा संगीतज्ञ था। उसके समयमे राजधानी बुखारा हुसेन मिर्जाके हिरातकी याद दिलाती थी।

५. अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र (१५४० ई०)

यह थोडे ही समय बाद मर गया, और फिर उसका भाई गद्दीपर बैठा।

६. अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र (१५४०–५१ ई०)

१५२६ ई० में बलख जीतनेके बाद उसे जानीबेगके पुत्र पीर मुहम्मदके बेटेको दे दिया गया था। अब्दुल्लतीफके समय १५४७ ई०में अपने भाई हुमायूसे विद्रोह करके बाबर-पुत्र कामरान काबुलसे बलखकी ओर भागा। पीर मुहम्मदने उसका स्वागत किया और उसे सेना देकर लौटाया। कामरानने गोरी और बकलानपर अधिकार कर लिया। इस समय पीर मुहम्मद उसके साथ था और यहींसे सेना देकर लौट गया। प्रतिद्वन्द्वी भाईकी इस तरह सहायता करनेके लिये बादशाह हुमायूं बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने बलखके विरुद्ध अभियान किया। हुमायू इस वक्त अन्दराब, तालिकान होते नारीडांडेको पार हो निलबरकी सुन्दर उपत्यकामे होते बकलान पहुंचा और सेनाको ऐबकके ऊपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया——बलख-राज्यमें ऐबक एक बहुत ही उर्वर और समृद्ध इलाका है। ऐबक ले लेनेके बाद खोल्म होते हुमायूकी सेना आगे बढ़ी, लेकिन प्राकृतिक और मानवी प्रतिरोध इतने कड़े हुये, कि उसे लौटना पड़ा। हुमायूके लौट जानेपर कामराननें बदख्शांपर असफल आक्रमण किया। अब्दुल्लतीफके शासनकालमें की यही एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ९५९ हि० (२९ दिसंबर १५५१–१८ नवम्बर १५५२ ई०)मे अब्दुल्लतीफ मर गया।

७. नौरोज मुहम्मद, सूयुंनजी-पुत्र (१५५१-५६ ई०)

उज्बेक और उस्मानअली तुर्क-राज्योंके बीचमे सुन्नियोंकी घृणाके पात्र सफावी शियोका राज्य था, जिनसे दोनों लड़ते रहते थे। इसके कारण दोनो सुन्नी तुर्क-शासकोंके बीचमे अब बहुत घनिष्ठता स्थापित हो चुकी थी, जिसे ब्याह-शादीद्वारा भी दृढ करनेकी कोशिश की जाती थी। नौरोजके शासन कालमे दोनों राज्योंमे दूतोका बहुत दानादान होता रहा।

८. पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५५६-६१ ई०)

पीरमुहम्मदके शासनके बारेमें यही कहा जा सकता है, कि अभी शैबानियोंकी शक्तिका ह्रास होना शुरू नही हुआ था।

९. इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र (१५६१-८३ ई०)

इस्कन्दरके शासनकालमें राज्यका सर्वेसर्वा उसका पुत्र अब्दुल्ला था। अब्दुल्लाने १५५६ ई० में बुखाराकी शाखाको खतम कर दिया। फिर ९६८ हि० (२२ IX १५६०–१३ VII १५६१ ई०)में उसने अपने पिताको "खाकानेजहां" (दुनियाका राजा) घोषित किया। ९८६ हि० (१० III १५७८–२९ I १५७९ ई०)में उसने समरकन्दकी शाखाको भी खतम कर दिया, जिससे पहिले १५८१

ई०मे बाबाजान सुल्तानपर उसने विजय प्राप्त कर ली थी। अब्दुल्ला असाधारण आदमी था, इसमें सन्देह नहीं। जीजकसे समरकन्दकी ओर आनेवाले रास्तेमें जीलानउति डाडेपर एक चट्टानके ऊपर उसने एक अभिलेख खुदवाया है—"रेगिस्तानको पार करनेवालों और जलथलके यात्रियोको मालूम होना चाहिये, कि ९७९ हि० (२६ मई १५७१–१५ अप्रैल १५७२ ई०)में खलाफतके सहायक, महाखाकान सर्वशक्तिमान् महाखान इस्कन्दरखान-पुत्र अब्दुल्लाके तीस हजार सैनिकों, और बोरका खानके पुत्रों दरवेशखान-बाबाखान आदिकी सेनाओंके बीचमें युद्ध हुआ। उसकी सेनामें सुल्तानके पचास सम्बन्धी और तुर्किस्तान-ताशकन्द-फरगाना-दश्तेकिपचकके चालीस हजार योद्धा थे। तारोंके सौभाग्यसूचक समायोगसे शाहकी सेनाको विजय प्राप्त हुई। उपर्युक्त सुल्तानोंमें बहुत-से मारे गये, और बहुतसे बन्दी हुये। इस एक महीनेके भीतर इतना खून बहा, कि जीजक नदीके पानीके ऊपर खून तैरता रहा।. . . .।"

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि चट्टानोंपर अभिलेख खुदवानेवाले मध्य-एसियामें बहुत कम ही खान और सुल्तान हुये।

९८७ हि० (२८ II १५७९–१९ I १५८० ई०)में बाबाखानने ताशकन्द ले अपने भाई दरवेशको मार डाला। अब्दुल्लाको यह खबर खोकन्दके इलाकेमें मिली। उसने पहुंचकर ताश-कन्दके पास बाबाको हराकर भगा दिया। अब्दुल्लाको सूचना मिली, कि वह कजाकोंके बीच जाकर छिपा है। इसपर उसने उसे पकड़नेके लिये तलस और सैरामतक सेना भेजी। १५७९-८० ई०में कजाकोंने यस्सी और सरवान ले लिया, फिर सरवान-सुल्तानके नेतृत्वमें बुखारातक और बादमें समरकन्दतकके इलाकेको लूटा। इसी बीच बाबाका कजाकोंके साथ झगड़ा हो गया और वह उनके कई सरदारोको मार, उनके खान सिगाईको हराकर भारी लूटके मालके साथ ताशकन्द लौटा।

बाबाने फिर अब्दुल्लाकी नींद हराम कर दी और १५८१ ई०में वह उसके विरुद्ध उजकंदतक पहुंचा। जब उसका डेरा करातउमें पडा हुआ था, उसी समय सिगाई खान उसके पास आया, जिसे उसने खोजन्द शहर प्रदान किया। कजाकोंसे और घनिष्ठ मित्रता करनेके लिये बखारामें एक बहुत बड़ा जल्सा मनाया गया, जिसमें अब्दुल्लाके पुत्र अब्दुल-मोमिन और सिगाईके पुत्र तवक्कलने खेलमें अपनी सिद्धहस्तता दिखलाई। १५८३ ई०में अब्दुल्लाने फरगाना और अन्दिजानको जीता, जिसमें कजाक तवक्कल खान उसका सहायक रहा। बाबा सुल्तानके पतनके बाद तुर्किस्तान और ताशकन्दने अब्दुल्लाकी अधीनता स्वीकार की। इसी साल पिताके मरनेपर अब्दुल्ला शैबानी-तख्तपर बैठा।

१०. अब्दुला II, इस्कन्दर-पुत्र (१५८३–९६ ई०)

अब्दुल्ला अकबरका समकालीन था। बापके समयमें भी सारा राजकाज तथा दिग्विजय अब्दुल्ला ही करता रहा। अब्दुल्लाकी सबसे बड़ी इच्छा थी, मुहम्मद शैबानीके साम्राज्यकी सीमाओं-तक अपने राज्यको पहुंचाना, जिसमें वह बहुत कुछ सफल भी हुआ। शैबानियोंका वह सबसे बड़ा खान था। इस्कन्दरके मरनेके वक्त वह खोजन्दमें था। वहीं शैबानी-सुल्तानोंने उसे अपना खाकान चुना, और मक्काके जमजमके पानीमें भिगोकर पवित्र किये गये सफेद नम्देके ऊपर बैठाकर उसे अपने कंधोंपर उठाया। इस प्रकार छिङ्-गिस् और उसके पहलेसे चली आई नम्दारोहण (सिंहासनारोहण) की रसम अदा की गई। अमीर वहांसे जमीन गये, जहासे गद्दी पानेकी खबर दी गई। अपने पिताके समयमें ही अब्दुल्लाने कजाक-मरुभूमिसे काबुलकी सीमातकके बहुतसे प्रतिद्वंद्वियों और शत्रुओंको परास्त किया, और छोटी-छोटी रियासतोंमें बंटे उज्बेक-राज्यको एकताबद्ध किया था। उसके राज्यकी सीमा उत्तरमें सिर नदीसे आगेकी मरुभूमितक तथा पूरबमें काश्गर और खोतनतक थी।

दक्षिणमे अकबर और सफावी शाहके साम्राज्य उसके आगे बढ़नेमे बाधक थे, लेकिन बलख और बदख्शाको उसने दिल्लीसे छीन लिया था ।

शाह तहमास्पके मरनेपर अब्दुल्लाकी शक्ति और भी अधिक बढ़ी। ख्वारेज्म आपसी फूटसे अस्त-व्यस्त था, जिसका अन्त करनेवाला शाह अब्बास (१५८७–१६२९ ई०) ईरानके अत्यन्त शक्ति-शाली शाहोमेसे था। १५८५ ई०में शाह अब्बासको उस्मानी तुर्कोंकी लडाईमे फसा देखकर उज्बेकों-ने हिरातपर आक्रमण कर दिया और नौ महीनेके मुहासिरेके बाद उसपर अधिकार कर लिया। इस लडाईमें राज्यपाल अलीकुल्ली खान शामलू और कितने ही दूसरे ईरानी सेनापति काम आये । सुन्नी-उज्बेक शियोंको काफिरोसे भी बदतर मानते थे, इसलिये उन्होने हिरातियोके साथ बहुत कठोर बर्ताव किया। सदियोंसे शिया-सुन्नी मुल्ला कलमकी लड़ाई लड रहे थे, और उनके सुल्तान अपनी तल-वारों द्वारा एकको मिटाकर इस भेदको मिटाना चाहते थे । तरुण शाह अब्बास जब कजवीनसे अपनी सेना लेकर खुरासानकी ओर बढा, तो अब्दुल्ला चुपकेसे मेर्व होते बुखारा लौट गया । मशहद पहुचने-पर अब्बासको पता लगा, कि तुर्कोंने गुरजी (जार्जिया)पर आक्रमण कर दिया है। अब्बास जल्दी-जल्दी उधर लौटा, लेकिन लडाईमे उसकी हार हुई। इसकी खबर पाते ही अब्दुल्ला मशहदपर चढ दौडा। उसके हरावलका नेतृत्व अब्दुल-मोमिनके हाथमे था, जिसने मशहदपर भारी अत्याचार किये । अब्दुल-मोमिन बडा ही बर्बर, क्रूर, महत्त्वाकाक्षी आदमी था। वह एक बड़ी सेना लिये दीन मुहम्मदके साथ जल्दी-जल्दी आगे बढा। हिरातका राज्यपाल तथा अब्दुल्लाका विश्वासपात्र सेवक कुलबाबा कोकलताश भी उसके साथ था। इस सेनाने पहले नेशापोरपर आक्रमण किया। कुछ थोडेसे आदमी पकडकर छोड़ दिये गये । नेशापोरको लूटकर वह शियोंके पवित्र नगर मशहदपर चढे—लूट-मारके भयसे बहुतसे गावके लोग भी मशहदको सुरक्षित समझ वहा चले आये थे। इतने आदमियोके लिये अन्न कहासे मिलता ? अकाल पड़ गया। पहले ही प्रहारमे नगरपर उज्बेकोका अधिकार हो गया, और वहांके राज्यपाल उम्मत खान उस्ताजलूका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया। अब्दुल-मोमिनके सैनिकोंने शहरके भीतर जाकर देखा, कि "बहुसख्यक स्त्री-पुरुष, संत और विद्वान्, सभी इमाम रजाके रौजेके बाहरी आंगनमे इस आशासे जमा हो गये हैं, कि स्थानकी पवित्रताके कारण शायद उन्हें प्राणदान मिल जाय। लेकिन, उज्बेक शिया-पवित्रस्थानको कब माननेवाले थे ? उन्होने बिना किसी विचारके जो भी चीज सामने आई, उसे काटा और नष्ट कर दिया।" पैगंबरके नातीकी संतान इमामरजाके वशजोंको भी उन्होंने नहीं छोड़ा—वह बेचारे अपने पूर्वज शहीदकी कब्रसे लिपटे हुये थे। कहा जाता है, अब्दुल-मोमिन स्वय उस समय मीर अलीशेखके महलसे तमाशा देख रहा था, जब कि उसके आदमी अपनी तलवारोंको इन निरपराध स्त्री-पुरुषोंके खूनसे रंग रहे थे । न जाने कितने अच्छे-अच्छे विद्वान् और धर्मशास्त्री भी इस हत्याकांडमें मारे गये। हजारो आदमियोके करुण क्रदनसे भी उज्बेकों का दिल नही पसीजा। सिर्फ सडको और आंगनोंको ही नही, बल्कि पवित्रतम स्थानों और मस्जिदों-को भी उन्होंने खूनसे रंग दिया । मशहदके हत्याकाडमे अलीके वशजोंकी कब्रोंको भी अब्दुल मोमिन ने नही छोड़ा, और उन्हे तोड़-फोड़कर नष्ट कर दिया। तीन शताब्दियोंसे तीर्थयात्री और दूसरे धार्मिक लोगोंने जो मूल्यवान् भेंटे—अतिविशाल सोने और रूपेके दीपस्तम्भ, बहुमूल्य धातुओं और रत्नोंसे जटित कवच, दुर्लभ रत्न, तथा दूसरी कितनी ही अनमोल चीजें—इमामरिजाकी समाधिपर चढाई थी, उन सबको विजेताओने लूट लिया। यही नहीं, उन्होंने वहांके विशाल पुस्तकालयको भी ध्वस्त कर दिया, जिसमें पुराने सुल्तानोके दान दिये कितने ही प्रसद्धि कुरानके अत्यन्त सुन्दर कलापूर्ण हस्तलेख थे। "शियोंकी पुस्तकें" कहकर उन सबको घसीटकर सड़कोंपर ले गये और फाड़कर उन्हें पूरी तौरसे नष्ट कर दिया। सुन्नी विजेताओंने मुर्दोके ऊपर भी रहम नही किया। इमाम रजाके पास सोये शाह तहमास्पकी लाशको जलाकर उन्होने हवामे उडा दिया।

शाह अब्बास उस समय बीमार था, इसलिये तेहरानसे नही आ सका। जैसे ही स्वस्थ हुआ, वह तैयारी करने लगा। लेकिन अधिकाश खुरासान—हिरात, मशहद, सेरख्स, मेर्व, खाप, जाम, फूसङ, गोरियान—अब्दुल्लाके हाथमें करीब-करीब उसकी मृत्युके समयतक रहा।

१५८६ ई० में ही अब्दुल्लाको खुरासानकी ओर गया जानकर उत्तरसे कजाकोंने लुटेरोंके घर-को लूटनेका निश्चय किया और तवक्कल खान तथा उसके भाई इशिमके नेतृत्वमें वह अन्तर्वेदपर चढ़ आये। लूटकर जब वह रेगिस्तानकी ओर लौट रहे थे, तब अब्दुल्लाके भाई उबेदुल्लासे उनका मुकाबिला हुआ।

जिंदगीभर संघर्ष करते हुये भी अब्दुल्लाका जीवन असफल रहा, ऊपरसे अन्तमें पुत्र अब्दुल मोमिन-के बर्तावोंने उसे और दुःखी बना दिया। उत्तरके कजाक उसे दम नहीं लेने दे रहे थे। १५९६ ई०में उनके खान तवक्कलने फिर चढ़ाई की, और ताशकन्दको लूटा, फिर ताशकन्द एवं समरकन्दके बीचमें अब्दुल्लाको बुरी तरह हराया। उधर शाह अब्बास ख्वारेज्मके उज्बेकोंसे दोस्ती कर उनकी मददसे मेर्व, मशहद और हिरातको छीननेके लिये तैयार था। इस प्रकार अब्दुल्लाने अन्तमें अपनी आंखोंके सामने ही अपने कियेपर पानी फिरते देखा और ६ फर्वरी १५९७ ई०को अर्थात् अकबरसे आठ वर्ष पहले बेटेके हाथों प्राण खोया।

११. अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र (१५९६–९७ ई०)

अब्दुल्लाके मरते ही देशमें अराजकता फैल गई। पिताको मारकर तख्त लेनेकी इच्छा रखनेवाले पुत्रने गद्दी संभालते ही पहले पिताके विश्वासपात्र सेवकोंको मरवाना शुरू किया, जिसके कारण दरबारी उसके खूनके प्यासे हो गये। उसे चारों ओर षड्यंत्र ही षड्यंत्र दिखाई देता था। जुलाई १५९७ ई०में गर्मीसे बचनेके लिये वह रातमें यात्रा कर रहा था। मशालची और कितने ही सवार उसके साथ थे। उरातिपा और जमीनके बीचमें एक संकरा दर्रा आया, जिसमें मशालचीके साथ सिर्फ दो सवार एक साथ गुजर सकते थे। इसी समय इस आततायीके ऊपर बाणोंकी वर्षा होने लगी। मोमिन घायल होकर गिर पड़ा, और हत्यारोंने तुरन्त उसका शिर काट लिया। दूसरे दिन पीछेसे आनेवालोंने पोशाकसे उसके धड़को पहचाना। इस प्रकार छ महीना शासन करनेके बाद इस राक्षसने सचमुच ही नरकका रास्ता पकड़ा।

१२. पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९७–९९ ई०

अब्दुल मोमिनके मरनेपर तख्तके बहुतसे दावेदार उठ खड़े हुये, लेकिन शैबानी-वंशके अन्तिम खान बननेका सौभाग्य पीर मुहम्मदको हुआ। जुलाई १५९८ ई०में शाह अब्बासने हिरातके पास कूलेसालारमें उज्बेकोंको करारी हार दी, और उनसे सब्जवार, मशहद और हिरात छीन लिया। देशकी इस अवस्थाकी खबर कजाकोंको भी मिले बिना नहीं रही, और तवक्कल अपने सत्तर-अस्सी हजार सवारोंके साथ तुर्किस्तान-शहर, अक्सी, अंदिजान, ताशकन्द, समरकन्दको लूटते-अधिकार करते बुखारा पहुंचा। पीर मुहम्मद पंद्रह हजार सैनिकोंके साथ नगरमें घिर गया। बारहवें दिन फाटकसे बाहर निकल उसने कजाकोंको बुरी तरह हराया। लुटेरोंके विरुद्ध लोग एक हो गये थे। मियानकुलके उजुनसकालमें दुश्मनोंसे फिर मुकाबला हुआ। बाकी मुहम्मद भी युद्धके आरम्भके समय भाग ले रहा था, लेकिन इसी समय खुरासानमें अब्बास द्वारा उज्बेक-सेनाके घोर पराजयकी खबर पहुंची। कजाकोंसे महीनेभर केवल जब-तब झड़प करते रहनेके बाद युद्ध हुआ, जिसमें दोनोंकी बहुत क्षति हुई। तवक्कल घायल न हो जाता, तो शायद उज्बेकोंका उसी समय खातमा हो जाता। तवक्कल ताशकन्द लौटकर मर गया, और एक नक्शबन्दी शेख (साधु)ने बीचमें पड़कर कजाकों और उज्बेकों-में सुलह करवा दी। बाकी मुहम्मदको समरकन्द मिला, लेकिन वह तो पीर मुहम्मदसे तख्त छीनना चाहता था। पीर मुहम्मद समरकन्दमें लड़ते वक्त मारा गया, और बाकी मुहम्मदकी इच्छा पूर्ण हुई। बाकी मुहम्मद अब्दुल्ला II की बहिन जोहरा खानम तथा जानीबेग सुल्तानका बेटा था। पीर मुहम्मद-के साथ शैबानी-वंशका अन्त हुआ।

इतिहास-लेखक बेम्बरीके अनुसार शैबानियोंके कालमें पूर्वी और पश्चिमी इस्लाम पूरी तौरसे अलग हो गया, और उसने वह रूप लिया, जो उसका आज भी मोजूद है। ईरान, चीन (मिङ-क्याग) और हिन्दुस्तान पूर्वी इस्लामके अन्तर्गत हुये और पश्चिमके देश पश्चिमी इस्लाममें। चीन और मध्य-एसियाके मुसलमानोमे साधु-संता, जादूगरो और ज्योतिषियोका बहुत ज्यादा मान था। यदा-तासी (जादूके पत्थर)से वह वायु-जल-नियन्त्रण, रोगमुक्ति और युद्धमें विजय प्राप्त करना चाहते, इस्लामसे भी अधिक उसके सतो और सूफियोंपर विश्वास रखते थे। मगोलोंके शासनकालमे मुट्ठीभर मुल्लो और सूफियोके खानदानोंने धर्मकी इजारादारी अपने हाथमें ले ली थी, जिनके सामने अत्यन्त शक्तिशाली और स्वेच्छाचारी सुल्तान भी शिर झुकानेके लिये तैयार थे। यह लोग राजा और प्रजा दोनोंके भक्तिभाजन थे—साधारण जनता समझती थी, कि उनके पास दिव्य शक्ति है। उनके प्रति सुल्तान और खान केवल भारी सम्मान ही नही दिखलाते थे, बल्कि अपनेको उनका तुच्छ सेवक साबित करनेकी कोशिश करते थे। मखदूम आजम मौलाना खोजकी काशानी—प्रसिद्ध खोजा अहरारका शिष्य—अपने त्याग और वैराग्यपूर्ण जीवनके लिये बहुत माननीय समझा जाता था, और अपनी दिव्य शक्तिके कारण लोगोंमे सम्मान ही नही भयकी दृष्टिसे भी देखा जाता था। वह २१ मुहर्रम ९४९ हि० (७ मई १५४२ ई०) मे मरा। उसकी समाधि देहबिदमें है, जहापर हालतक लोग भारी सख्यामे तीर्थयात्राके लिये जाते थे।

साहित्य-संस्कृति—शैबानी-कालमे तुर्की भाषा और साहित्यका सर्वत्र प्रचार हुआ। कितने ही कवि अब केवल तुर्की (उज्बेकी)मे ही कविता करते थे, यद्यपि अन्तर्वेदके गाव-गांवमे भी ताजिकोके रहनेसे पुरानी भाषा फारसीका इतना प्रचार था, कि प्रायः सभी तुर्क स्त्री-पुरुष द्विभाषी थे। इन कवियोमे सबसे प्रसिद्ध उज्बेक-राजकुमार मुहम्मद सालेह था, जिसके पिताको तेमूरियोंने ख्वारेज्म-के राज्यसे वंचित कर दिया था वह तरुणाईमे ही शैबानियोके दरबारमें चला आया। अपने महाकाव्य "शैबानीनामा"द्वारा किसी-किसीके मतमे वह नवाईसे भी बड़ा कवि है। इस समयके दूसरे बड़े कवि थे—अमीर अली कियातिब, प्रथम शैबानी-राजकवि मुल्ला नीरक, मुल्ला मुशफिकी (मृत्यु १५८५ ई०), काजी पायन्दा, जमीनी, वजीर। पायन्दाने कुल्बबाबा कोकलताशकी प्रशसामें एक काव्य लिखा, जिसमे बिंदीवाले अक्षरों (बे, ते, जीम, चे, खे, जाल, जे, शीन, ज्वाद, जोय, गैन, फे, काफ और नून) का प्रयोग नही किया। शीरी खोजा उबैदुल्लाकालीन, और खैर हाफिज [मृत्यु ९८१ हि० (१५७३-७४ ई०)] इस कालके मशहूर सगीतकार और गायक थे—खैर हाफिज अब्दुल्लाके दरबार-मे था।

शैबानीकालमे खान, खानजादों तथा अमीरोने मस्जिदों, मदरसों और रौजोंको बनानेमें होड़-सी लगा रक्खी थी। वजीर कोकलताशने १५२७ ई० (९३४ हि०)में समरकन्दमे अपने नामकी विशाल मस्जिद बनवाई, जिसके सगमर्मरके मेम्बर (वेदी) को कूचुनजी खानने प्रदान किया। अब्दुल्ला खानका बनवाया मदरसा बोल्शेविक क्रांतिके पहलेतक मौजूद था। इसके विशाल फाटकपर कुरानकी आयतें लिखी हुई है, जिसके एक-एक अक्षर दो फिट लम्बे हैं। अब्दुल अजीज खानने अरबोके वक्तकी बनवाई मोगक मस्जिद (पारसी मदिर)की मरम्मत करवाई और बुखारासे थोडी दूरपर अवस्थित खोजा बहाउद्दीनके सुन्दर मकबरेको बनवाया। अबसईदने समरकन्दमे एक बडा मदरसा बनवाया। करोड़पति मीर अरबने बुखारामें एक मदरसा स्थापित किया, जिसके बारेमे हालके लेखकोने लिखा है—"यह सारे मध्य-एसियाका सबसे अधिक धर्मस्व-संपत्ति रखनेवाला मदरसा है।"

इस समयके सुल्तानोंमे सभी जगह कवि होनेकी बड़ी लालसा थी, और उनमेंसे कुछको कविकर्ममें सफलता भी मिली। इस्माईल, तहमास्प, अब्बास फारसीके कवि थे। मुहम्मद शैबानी, उबैदुल्ला, अब्दुल्ला II भी कवि थे। बाबर, हुमायू और अकबरने भी कविता की, जिसमे बाबर तो तुर्की भाषा का आज भी एक श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

शैबानी-वंशवृक्ष——
(१५००—९९ ई०)
अबुल्खैर
शाहबुदाग
खोजा मुहम्मद
२. कूचुनजी
(१५१२-३०)
सूयुनजी
महमद सु०
१. मुहम्मद
(१५००-१२)
जानीबेग
७. नौरोज
(१५५१-५६)
३ अबूसईद
(१५३०-३२)
५. अब्दुल्ला I
(१५४०)
६. अब्दुल्लतीफ
(१५४०-५१)
४. उबैदुल्ला
(१५३३-४०)
८. पीर मु०
(१५५६—६१)
९. इस्कदर
(१५६१-८३)
सुलेमान
१२. पीर मु० (१५९८-९९)
१०. अब्दुल्ला II
(१५८३-९६)
गुहरा---जानीबेग
११. अब्दुल्मोमिन (१५९६-९७)
दीन मु०
बाकी मु०
वली मुहम्मद

अध्याय ५
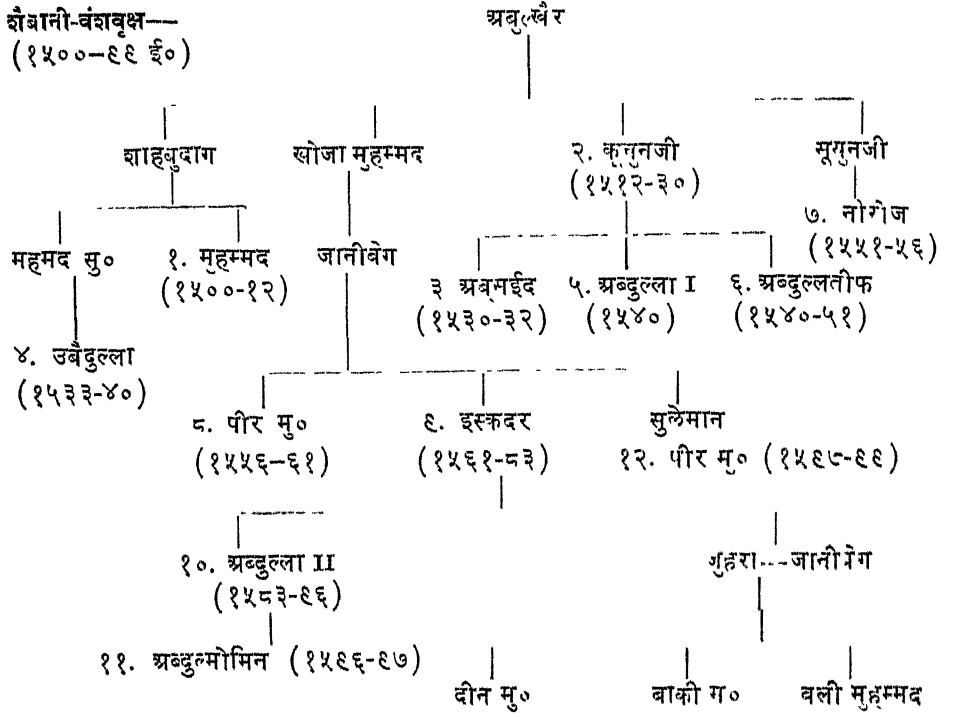
अस्त्राखानी (१५९९--१७४७ ई०)

१. दीन मुहम्मद (१५९८ ई०)

सुवर्ण-ओर्दूकी राजधानी सरायबरका जब ध्वस्त हो गई, और जू-छिका उलुस कई टुकड़ोंमे बंट गया। उस वक्त उनके एक खानकी राजधानी वोल्गा और कास्पियनके सगमपर अस्त्राखान थी। सुवर्ण-ओर्दूके प्रसिद्ध खान कूचुक मुहम्मदका पुत्र अहमद उसका उत्तराधिकारी बना। कूचुकका दूसरा पुत्र चुवाक सुल्तान था, जिसका पुत्र मंगिशलक और पौत्र यार मुहम्मद थे। जब रूसियोंने अस्त्राखानको भी छीन लिया, तो यार मुहम्मद खानने भागकर बुखारामे इस्कन्दर खानके पास शरण ली। अस्त्राखानी और शैबानी दोनों ही जू-छिके वंशज थे। इस्कन्दरने यार मुहम्मदका बहुत सम्मान किया और उसके लडके जानीबेग सुल्तानके साथ अपनी लडकी जोहरा खानमका ब्याह कर दिया। जानीबेग ९७५ हि० (८ जुलाई १५६७–२८ मई १५६८ ई०) की विजय-यात्राओंमे अपने साले अब्दुल्लाके साथ रहा। अब्दुल्लाके समय उसके भाजे दीन मुहम्मदने खुरासानके कई शहरोपर शासन किया, अन्तमे वह निसा और अबीबर्दका राज्यपाल बना। अब्दुल मोमिनने उसके पिता जानीबेगको जेलमें डाल दिया था, इसपर विद्रोह करके दीन मुहम्मदने हिरात लेनेका असफल प्रयत्न किया। अब्दुल मोमिनके मरनेके बाद ईरानी फिर खुरासानको जीतनेका प्रयत्न करने लगे। इसने भी हाथ-पैर फैलानेकी कोशिश की। अब्दुल मोमिनके बाद शहर-शहरमें खान (राजा) बनते जा रहे थे। दीन मुहम्मदने भी मक्का-मदीनासे लौटे अपने दादा सुल्तान यार मुहम्मद-के नामसे खुतबा और सिक्का चलाना चाहा। मेर्वमे कासिम सुल्तानने अपना राज्य कायम किया, लेकिन जल्दी ही वह मार डाला गया। मेर्वको भी दीन मुहम्मदके छोटे भाई वली मुहम्मदने बड़े भाईके नामसे दखल कर लिया। जुलाई १५९८ ई०में नूर मुहम्मदको हराकर शाह अब्बासने हिरात ले लिया। दीन मुहम्मद हारकर भागा जा रहा था, लेकिन शाही कपडोंके कारण पहचाना गया और काराई घुमन्तुओंने उसे मार डाला। बाकी मुहम्मदने तवक्कलसे लडकर पराजित होते समय खबर दी और उसे समरकन्दका राज्य मिला।

शायद हिरातमें कुलेसालारके निर्णायक युद्धके समय ही यार मुहम्मद और जानीबेग मारे गये, यद्यपि इससे पहले ही हिरातमे यार मुहम्मदने अपनेको खान घोषित कर दिया था। दीन मुहम्मदके मरनेपर उसके स्वामिभक्त नौकर खाकी यसाउलने खानम और उसके दोनों बच्चों इमामकुल्ली और नादिर (नासिर)को अपने घोड़ेकी पीठपर दोनो ओर रखकर सरपट भागते हुये उनकी जान बचाई। नादिर मुहम्मदके पैरमें गोली लग गई, जिससे वह जन्मभरके लिये लंगडा हो गया। बाकी मुहम्मद और वली मुहम्मद अन्तर्वेदमे थे। बाकी मुहम्मदने राज्य संभाला। इतना कहनेसे यह मालूम होगा, कि यद्यपि बाकी मुहम्मदके गद्दी सभालनेके बाद एक नये अस्त्राखानी राजवंशकी स्थापना हुई, किन्तु वस्तुत: दोनों ही राजवंश उज्बेक जातिके ही थे। सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी मुसलमान खान उज्बेकके नामसे किपचकोंकी यह संज्ञा हुई, यह हम कह आये है। शैबानी और अस्त्राखानी ही नही, बल्कि दोनोंके उत्तराधिकारी तथा अन्तिम राजवंश मगीत भी उज्बेक ही था। बोल्शेविक क्रांतिने मंगीत-वंशका उच्छेद करके वहां सोवियत गणराज्य कायम कर देशको उज्बेकिस्तान नाम दिया।

राजावलि—इस वंशमें निम्न खान हुये:—

१. दीन मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५६८	ई०
२. बाकी मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र, इस्कन्दर-नानी	१५६६–१६०५	"
३. वली मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१६०५–८	"
४. सैयद इमामकुल्ली, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६०८–४२	"
५. नादिर मुहम्मद, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६४२–४७	"
६. अब्दुल अजीज, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६४७–८०	"
७. सुभानकुल्ली, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६८०–१७०२	"
८. मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०२–७	"
९. उबैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०७–१७	"
१०. अबुल्-फैज मुहम्मद, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७१७–४७	"
११. अब्दुल मोमिन, अबुल्फैज-पुत्र	१७४७	"
१२. उबैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र	१७५१	"
१३. अबुलगाजी, इब्राहीम-पुत्र इमामकुल्ली-वंशज		

२. बाकी मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९९-१६०५ ई०)

हम बतला चुके है, कि कैसे दीन मुहम्मदने पहले ही खुरासानमें अपनेको स्वतन्त्र खान घोषित किया। अब्दुल मोमिनके मारे जानेके बाद उसने अन्तर्वेदकी ओर पैर बढाया और वहांका शासक बन गया। वस्तुतः बाकीने ही अस्त्राखानी वंशकी नीव रक्खी। उसने हिसारके पहाड़ी इलाके (ताजिकिस्तान)को सर किया और इसके भाई वली मुहम्मदने बलखको ले लिया, जिसे कि पीर मुहम्मदके भाई इब्राहीमने ईरानसे आकर हथिया लिया था। इब्राहीमके शिया होनेसे लोग नाराज थे, साथ ही वह पियक्कड़ और बहुत क्रूर भी था। उसे हटा उबैदुल्लाको बैठाया गया, जिसे वली मुहम्मदने हिसारसे आकर भगा दिया। काराई तुर्कमानोंने उसके भाई दीन मुहम्मदको मारा था, उसका बदला लेनेके लिये बाकी मुहम्मदने १६०२ ई०में कुंदुजपर हमला किया। उज्बेकोंने अपने पुराने शत्रुओं (तुर्कमानों)से बड़ा ही निष्ठुर बदला लिया। बहुत-से तुर्कमान भागकर कुंदुजके किलेमें बन्द हो गये। किला बहुत मजबूत था। उज्बेकोंने बारूद लगाकर दीवारके एक बड़े भागको उड़ा दिया, जिसके साथ सैकड़ों तुर्कमान भी चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ गये। फिर आक्रमण करके किलेको ले उज्बेकोंने किसीको जीवित बन्दी नही बनाया। तुर्कमानोके काराई कबीलेको इस लड़ाईमें बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, जिसके बाद वह फिर अपनेको संभाल नही सके—काराई तुर्कमान शाह अब्बासके सहायक थे। उज्बेकोने शापूरगान और अन्दखूईको ले बिलुक-अकचीतक देशको लूट-मारकर उजाड़ दिया। ईरानी इनके मुकाबिलेके लिये आये, लेकिन बलखके पास बाबर अब्दुलके मकबरेके नजदीक उनमें महामारी फैल गई। ऊपरसे उज्बेकोंने दोनों ओरसे हमला कर दिया। शाह अब्बास बड़ी मुश्किलसे कुछ हजार आदमियोंके साथ जान बचाकर भाग सका।

१६०५ ई०में बाकी बीमार पड़ा और असाध्य रोगसे मुक्ति पानेके लिये एक प्रसिद्ध संत शेख आलिम अलीजानकी शरणमें गया। शेखने उसे वक्षु (आमू-दरिया) की ताजी हवा सेवन करनेकी सलाह दी। बाकी मुहम्मदको खटोलेमें लिटा नावपर ले गये। वह कई दिनोंतक नदीकी हवा खाता घूमता रहा। अन्तमें रजब १०१४ हि० (१२ नवम्बर–१२ दिसम्बर १६०५ ई०) में अर्थात् अकबरकी मृत्यु-महीने रजब १०१४ हि० में मरा।

३. वली मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१६०५–८ ई०)

यह बड़ा ही शराबी और व्यभिचारी था, ऊपरसे लोग इसके वजीर शाहबेग कोकलताशके जुल्मोंसे भी परेशान थे, इसलिये इसके भतीजे सैयद इमामकुल्लीके नेतृत्वमें विद्रोह हो गया। वली ईरानकी ओर

भागा। शाह अब्बाससे अस्सी हजार सेनाकी मदद ले वह फिर वक्षुकी ओर चला। मखदूम आजमके वंशज खोजा मुहम्मद अमीनसे इमामकुल्लीको सहायता प्राप्त हुई। खोजा (संत)ने अपने सूफियोंके चोगेके ऊपर धनुष-बाण लटकाकर पहला तीर छोड़ा, फिर दुआ पढ़कर मुट्ठीभर मिट्टी शत्रुओंकी ओर फेंक दी—जिसका अर्थ था, शत्रु अंधे हो जायं। तुमुल युद्ध हुआ। मामियान सरोवरके किनारे इस युद्धमें वली मुहम्मदने तख्त गंवा अपनेको भतीजेके हाथमें बंदी पाया। शायद भतीजा चचाको छोड़ भी देता, लेकिन शेखका हुक्म था, इसलिये कत्ल किये बिना कैसे रह सकता था? वली मुहम्मद-के पुत्र रुस्तम और रहीम ईरान भाग गये।

४. सैयद इमामकुल्ली बहादुर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६०८-४२ ई०)

यह जहांगीर और शाहजहांका समकालीन था, और भारतीय मुगल-साम्राज्यसे इसकी सीमा मिली हुई थी। जिस वक्त अब्दुल मोमिनने मशहदमें कत्लेआम किया था, उसी समय इमामरजाके वंशजोंके मुखिया अबूतालिबने दीन मुहम्मदके घोड़ेकी लगाम पकड़कर अपने परिवारके लोगोंके प्राणोंकी भिक्षा मांगी। दीन मुहम्मद उनके बचानेके लिये उसी मुहल्लेमें ठहरा और उसने अबूतालिबकी बेटी जोहरा बानूसे ब्याह किया। इसी जोहरा बानूसे इमामकुल्ली और नजर (नादिर मुहम्मद, नासिर) मुहम्मद पैदा हुये। यद्यपि बापकी ओरसे यह उज्बेक या छिङ-गिस्के वंशज होनेका अभिमान कर सकते थे, लेकिन पैगंबर मुहम्मदकी बेटीकी संतान होनेके कारण आगे अब अस्त्राखानी खानोंने अपने नामके साथ सैयद लगाना शुरू कर दिया। इमामकुल्लीका दीर्घकालीन शासन अन्तर्वेदकी उन्नति और समृद्धिका समय था। उसके शासनकी यह एक और भी विशेषता थी, कि इसने बिना किसी युद्ध और विजयकी लूट-पाटके अपने राज्यको खुशहाल बनाया। अपने भाई नादिर (नजर) को इसने बलखका राज्यपाल बनाकर मुगल-साम्राज्य की सीमापर रख दिया। इमामकुल्ली दृढ़ शासक होते हुये भी बड़ा ही धार्मिक, शिक्षित, सत्संग-प्रेमी और स्पष्ट वक्ता था। राजधानी बुखारा इस समय धन-जन, कला-सौंदर्यसे भरी फल-फूल रही थी। इमामकुल्लीका पडोसी शाह अब्बास शक्तिशाली होते हुये भी एक बार भारी मुहकी खा चुका था। हां, उत्तरके कजाक और कल्मक अब भी खतरनाक थे, जिसके लिये इमामकुल्लीको १६१२ ई०में कजाकों और कल्मकोंको हरानेके लिये सिर-दरियाके उत्तरमें अशगरा और करातान-तक जाना पडा। उसने अपने इकलौते पुत्र इस्कन्दरको ताशकन्दका राज्यपाल बनाया। कुछ ही समय बाद वहां विद्रोह हो गया, जिसमें पुत्र मारा गया। विद्रोहको दबानेके लिये इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको भी बलखसे बुला लिया, और सारी सेना लेकर ताशकन्दको घेर लिया। ताशकन्दियोंने प्रतिरोध करनेका निश्चय किया। इकलौते बेटेकी मृत्युसे पागल इमामकुल्लीने शपथ कर ली थी, कि मैं तबतक हत्याकांडको बन्द नहीं करूंगा, जबतक कि ताशकन्दियोंका खून मेरी रिकाबतक न पहुंच जाये। नगर सर होनेपर लूट-मार शुरू हुई। कुछ घंटोंके कत्लके बाद लोगोंने खानको बहुत समझाया, लेकिन वह तो प्रतिज्ञा कर चुका था। तब मानवरक्त-से भरे एक हौजमें घोड़ेपर चढ़कर वह खडा हुआ। खून रिकाबतक पहुंच गया, खानकी प्रतिज्ञा पूरी हुई, और निर्मम हत्या बन्द हुई। लेकिन यह विजय स्थायी नहीं थी। कुछ ही सालों बाद कजाकोंने ताशकन्दको फिर अपने हाथमें कर लिया। इमामकुल्लीने भी सबर्द्को बेकार समझकर कजाकखान तुरसुनसे सुलह करके १६२१ ई०में ताशकन्दको उसके हाथमें दे दिया।

इमामकुल्लीके ऊपर इकलौते पुत्रकी मृत्यु और ताशकन्दमें बही खूनकी नदीका, जान पड़ता है, बड़ा भारी प्रभाव पड़ा था। वह कितनी ही बार शाही लिबासको छोड़ फकीरोंका चोगा पहिन बुखारामें घूमता था। उस समय उसका वजीर नजर दीवानबेगी और उसका भक्त अब्दुल वसी भी साथ रहता था। इस प्रकार वह अपनी आंखों प्रजाकी दशा देखना चाहता था। कवि "तुराबी" और मुल्ला "नखली" उसके बडे कृपापात्र थे। खान खुद भी कवि था। एक तरुण मुल्ला किसी सुन्दरीपर मुग्ध हो गया। त्योहारके लिये प्रेमिकाके पास सुन्दर पोशाक भजकर उसने अपने प्रेमका परिचय देना चाहा, लेकिन मुल्लाके पास इतना धन नहीं था। सोचा "माले-काफिरां हस्त बर-मोमिन

हलाल" (काफिरोंका माल मुसलमानोके लिये हलाल है)। उस समय क्या बोल्शेविक क्रांतिके होनेतक हिन्दू जौहरियों और महाजनोंकी कितनी ही दूकानें बुखारामें थी। मुल्लाने हिन्दू जौहरीकी दूकान तोड़नेका निश्चय किया और अपने दो नौकरोके साथ वहां पहुंचकर आसानीसे दरवाजेको खोल लिया। फिर रत्नोंकी एक पिटारीके साथ निकलकर सड़कपर आया। इसी बीच आहट पा हिन्दू जौहरी जाग उठा और हल्ला मचाते हुये जाकर उसने मुल्लाकी गरदन पकडी। उधर मशाल हाथमें लिये पहरेदार भी पहुच गया। मुल्लाने तुरन्त मारकर मशालको गिरा दिया, और अंधेरेमें बोल उठा—"ओह, नजर दीवानबेगी, तुमने बडा मूर्खतापूर्ण मजाक किया।" जवाब मिला—"आला हजरत (परमभट्टारक), मै नही, यह अब्दुल वसी कुरजी था।" पहरेवालेको जब मालूम हुआ, कि खानका दल भेस बदले आ पहुचा है, तो वह डरकर भाग निकला। हिन्दू जौहरीने खानसे प्रार्थना करने पहरेवालेके कर्त्तव्य न पालन करनेकी शिकायत की। पूछ-ताछ करनेपर मुल्लाके प्रेम और साहसकी सारी बातका पता लग गया। खानने जौहरीके मालको लौटवा दिया, लेकिन मुल्लाकी दिक्कतोंको देखकर उसे दंड न दे इतना पारितोषिक दिया, जिसमें वह अपनी प्रेमिकाको भेंट भेज सके।

१६२० ई०मे रूसी जार मिखाइल फ्योदर-पुत्र (मृत्यु १६४५ ई०)ने इमामकुल्लीके पास यह सिखलाकर अपना दूतमंडल भेजा, कि किसीको भेंट-बखशीश न देना, खानके तख्तके पास बुलानेपर ही जाना, यदि दूसरा दूत हो, तो उसके आसनके नीचा होनेपर ही अपने आसनपर बैठना। जारका दूत बुखारा पहुंचा। महलके एक अफसरने जारके पत्रको लेना चाहा, लेकिन रूसी दूतने उसे देनेसे इनकार किया। जारकी ओरसे अभिनन्दन भेंट करते हुये जब जारका नाम लिया गया, तो खान उठकर खडा नही हुआ। इसपर दूतने कहा—"सभी राजाओंका कायदा है, जारका नाम लेनेपर खड़े हो जानेका।" इमामकुल्लीने इस ढिठाईका जवाब नरमीसे दिया—"बहुत दिनों बाद रूसी राजदूत आया है, इसलिये मै वैसा करना भूल गया, मेरी मंशा अनादर करनेकी नहीं थी।"

इमामकुल्लीने जहां जारके साथ दौत्य-सम्बन्ध स्थापित किया था, वहां उसने अपने सिंहासना-रोहणकी सूचना देनेके लिये जहांगीरके पास भी अपना दूत भेजा था। इसीसे जहांगीरने इमाम-कुल्लीकी बेगमका भी कुशल-मंगल पूछा, जो कि मुस्लिम शिष्टाचारके विरुद्ध था। लेकिन जहांगीर मुस्लिम शिष्टाचारका उतना प्रेमी नहीं था, उसका वंश मुस्लिम शरीयतसे ज्यादा छिड्ड-गिसी यासाको मानता था। उसने मुस्लिम सुल्तानों और इस्लामिक रवाजोंको धत्ता बताने हुये अपने सिक्कोंपर मूर्तियां अंकित कराई थीं। जहांगीरको बुखाराके दूतने इतना ही जवाब दिया, कि मेरा मालिक सांसारिक इश्कसे मुक्त है, वह इस दुनियाकी चीजोंसे प्रेम नही करता। इसपर जहांगीरने तुरन्त जवाब दिया—"तुम्हारे खानने कब इस दुनियाको देखा, जो कि उसे इतना वैराग्य हो गया?" इमामकुल्लीका दूत वैद्य था। परिहास करनेके बाद भी जहागीरने उसे बहुत-सा सोना, जवाहर तथा जरीके काम किये हुये एक तम्बूको देकर बिदा किया। बहुत जोर देनेपर शिकारके समय खान दूतसे मिलनेके लिये राजी हुआ। दूतने सुनहले तम्बूमें सारी भेंटोंको सजा दिया। इमामने शिकारसे लौटते वक्त एक नजर डाली, फिर रहीम परवानेजीकी ओर मुंह करके बोला—"ले जा, इस सबको हमने तुझे दे दिया।" दूसरे दिन भारतीय दूतने दरबारमें एक तलवार पेश करते हुये खानसे कहा—"अक-बर शाहको दो बढ़िया तलवारें मिली थीं, जिनमेंसे एकको सम्राट्ने अपने लिये रख लिया है, और दूसरेको उसने अपने भाईके पास मित्रताके चिह्नके तौरपर भेजा है।" खानने हाथमें लेकर तलवार-को मियानसे निकालना चाहा, किन्तु वह नहीं निकली, इसपर उसने कहा—"तुम्हारी तलवारोंका निकालना बहुत मुश्किल है।"

दूतने जवाब दिया—"केवल यही ऐसी है, क्योंकि यह शांतिकी तलवार है, अगर यह युद्धका हथियार होती, तो अपने मियानसे तुरन्त निकल पड़ती।"

"नखली" और "तुराबी" दोनों दरबारी कवियोंमें प्रतिद्वन्द्विता रहा करती थी। खानने उनके बारेमें हिन्दी दूतकी राय पूछी, जिसने तुरन्त जवाब दिया—"ओ खान, तुराब (मिट्टी)से ही

नख्ल (खजूर) उगती है।" इस तरह उसने दोनों कवियोंको प्रसन्न रखनेकी कोशिश की। जहांगीर-का दूत १०३६ हि० (२२ सितम्बर १६२६ ई०—१३ अगस्त १६२७ ई०)में बुखारासे लौटा। इसके बाद ही जहांगीर मर गया और शाहजहा गद्दीपर बैठा। मुगल बाबरके समयसे ही अपने पूर्वजोकी भूमिकी ओर चाहभरी दृष्टिसे देखा करते थे। इसी इच्छाको पूरी करनेके लिये शाहजहा एक बडी सेना ले काबुलसे आगे बढा। खबर पाकर इमामकुल्ली भी अपने भाई नादिर, दस भतीजों-के साथ एक बडी सेना ले बलख पहुचा। सभी पैदल थे, सिर्फ इमामकुल्ली घोडेपर सवार था। लोग भेंट करनेके लिये आये। इमामके लिये रास्तेमें पावड़े बिछा दिये गये। बड़ा स्वागत हुआ। फौजी तैयारी करते इमामकुल्लीने दादखां हाजी मंसूरको दूत बनाकर शाहजहाके पास काबुल भेजा। शाह-जहाने कहा—"मै तो सिर्फ सूबोको देखनेके लिये आया हू।" नादिरकी शियोंसे मित्रता थी, जिससे ईरानके साथ उसका अच्छा सम्बन्ध रहा, तो भी मेर्वके लिये एक बार उसने असफल कोशिश की। १६२१ ई०में भी नादिरने पायन्दा मिर्जाको दूत बनाकर उसके द्वारा पचास तुर्किस्तानी घोड़े मुगल-दरबारमे भेजे थे। अड़तीस सालके शासनके बाद इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको बलखसे बुलाकर राज्य सौंप दिया। इस समय वह बीमारीके कारण अन्धा हो गया था। जुमाकी नमाजके बाद उसने अपने सामने भाईके नामका खुतबा पढवाया और फिर अन्तिम जीवन बितानेके लिये मदीनेका रास्ता लिया। सारे लोग यह दृश्य देखकर रो रहे थे।

५. सैयद नादिर मुहम्मद, नाजिर, नासिर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६४२–४७ ई०)

नादिरके खजानेमें अपार धन था, जो आठ हजार ऊटोका भार (चालीस हजार मन) आंका जाता था। उसकी घोड़सालमें आठ हजार घोडे थे। उसके पास कीमती छाले पैदा करनेवाली अस्सी हजार कराकुल भेंड़े थी, कीमती गुलाबी साटनसे भरी चार सौ सन्दूकें थी। इतनी सम्पत्ति उसे मिली थी। वह उसे बाटकर नाम कमाना चाहता था, लेकिन भाईने प्रजारजनद्वारा जितनी कीर्ति अर्जित की थी, वह उसे मिलनी संभव नही हुई।

नादिर-पुत्र अब्दुल अजीजने पिताके रुष्ट होनेपर उसे मनानेके लिये क्षमापत्र लिखा। दूसरा भाई सुभानकुल्ली समझाने गया। विद्रोह दबानेके लिये भेजा गया पुत्र कुतुलुक सुल्तान विद्रोह करके कुंदुजके किलेमें दुर्गबद्ध हो गया। पिताकी आज्ञा पा किला सर करके सुभानने उसे मरवा डाला। इसपर नादिरने कहा, कि मैंने मारनेके लिये नही कहा था। सुभान महत्त्वाकाक्षी था। वह चाहता था कि मुझे "कलाखान" (महासेनापति)की पदवी प्राप्त हो। न मिलनेपर बापसे बागी हो उसने बापके खिलाफ दिल्लीके बादशाह शाहजहासे मदद मागी। शाहजहाने अपने दोनों पुत्रो मुरादबख्श और औरंगजेबको एक बड़ी सेना देकर भेजा। खुसरू सुल्तानने बलखमें प्रतिरोध करना चाहा, लेकिन उसे बन्दी बनाकर भारत भेज दिया गया। किसीने इसी बीच नादिरको बतलाया, कि हिन्दी सेना तुम्हारी मददके लिये नही, बल्कि बलखपर अधिकार करने आई है। इसपर नादिर रातको ही अपने खजानेको जमा करके शापूरगान और अन्दखुदकी ओरसे भागकर शाह अब्बास II के पास चला गया। उसकी मा इमामरजाकी संतान थी, इसलिये अब्बासने उसका बड़ा सम्मान किया। उधर चगताई (शाहजहाकी) सेना आगे बढ़ती गई, और उसने वक्षुके दक्षिणके नगरोंमें अपने शासक नियुक्त किये। सारे उज्बेक भागकर वक्षुपार चले गये। दो सालतक आमू दरिया (वक्षु) और हिन्दूकोहके बीचके प्रदेशपर शाहजहाका शासन रहा। भारत जैसे गरम मुल्कके सैनिक यहांकी सर्दीके मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकारने लिखा है—"जो घरसे बाहर निकलते, वह ठडा होकर मर जाते, और जो भीतर रहते, वह अपनेको गरम करनेके लिये आगके सामने झुलसते रहते।" भारतीय सेनाने, इसमें शक नहीं, हिन्दूकोह पार करके इस इलाकेको बहुत बरबाद कर दिया, जिसके कारण बलखमे अकाल पड़ गया। १०६० हि० (४ जनवरी १६५० ई०—२५ नवम्बर १६५० ई०)के जाडोंमें एक खरबार (गदहेका बोझ) अनाजका दाम हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाड़ा बहुत ही सख्त था। अन्तमें जब हिन्दी सेनाको लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा,

तो एक ओर हिन्दूकोह (हिंदूकुश)के ऊंचे दर्रोंकी सर्दीने भारी संख्यामें बलि लेनी शुरू की और दूसरी ओर उज्बेक सैनिकोंने उन्हें गिद्धकी तरह नोचना शुरू किया। हजारोंकी संख्यामें लोग रास्तेमें मर गये। अगले साल "तारीख रकीमखानी"का लेखक जब दूत बनकर इसी रास्ते भारतकी ओर आ रहा था, तो उसने सब जगह भारतीयोंके कंकालोंके ढेर देखे।

सेना लौटानेसे पहले शाहजहांने नादिरको अपना राज्य संभाल लेनेके लिये कहा। नादिर लौटा, लेकिन उसके बेटोंमें झगड़ा हो गया, जिसपर नाराज हो नादिरने राज्यको नाठकार* मदीनेका रास्ता लिया। वह रास्ते ही में मर गया, पर उसकी लाश मदीनेमें उसके भाईके पास दफनाई गई।

नादिर खानके प्रिय पुत्र कासिम सुल्तानके बारेमें इतिहासकारोंका कहना है, कि अस्त्राखानियो-में कोई इतना बहादुर, बुद्धिमान्, उदार और साहसी नहीं हुआ। वह अच्छा कवि और सुन्दर गद्य-लेखक था। एक हजार शेरोंका उसका दीवान (कविता-संग्रह) मौजूद है, जिसमें उसने सायब इस्पहानीका अनुसरण करते बहुतसी रचनायें की हैं। "तुराबी" और "नखती" दोनों इस समयके कवि थे, इसे हम बतला आये हैं।

बुखारामें अब युरोपके नये हथियारोंका प्रचार हो चला था, लेकिन [illegible]के बाद विज्ञानकी ओर बढ़नेका कोई प्रयत्न नहीं हुआ। अब तो वहां धर्म और मुल्लोंने अपना एकच्छत्र राज्य कायम कर दिया था। शैबानियोंके शासनके अन्तिम कालमें युरोपीय व्यापारी अन्थनी जेंकिन्स १५५८-५९ ई० में बुखारा पहुंचा था, इससे पहले पोलो भ्रातृ-युगल तीन साल (१२६४–६७ ई०) बुखारामें रहे थे, जब कि चगताई खानोंका राज्य था और बुखाराकी कोई प्रधानता नहीं थी। बुखारा पहले भी समय-समयपर अन्तर्वेदकी राजधानी रहा, किन्तु अस्त्राखानियोंके शासनके आरम्भ होनेके साथ-साथ वह अब स्थायी राजधानी बन गया।

६. सैयद अब्दुल अजीज, नादिर-पुत्र (१६४७–८० ई०)

गद्दी संभालनेके बाद अब्दुल अजीजने अपने भाई बलख-शासक सुभानकुल्लीको रास्तेका कांटा समझ हटाना चाहा। इस कामके लिये उसने अपने दूसरे भाई (कवि) कासिम मुहम्मदको भेजा। लेकिन कासिमको हारकर हिसारकी ओर भागना पड़ा, और सुभानकुल्लीको सबराज कबूल करके समझौता करना पड़ा। ख्वारेज्म बहुत समयसे अस्त्राखानियोंके अधीन रहता चला आया था, लेकिन १६६३ ई०में अबुलगाजीने स्वतन्त्र होनेका निश्चय कर लिया। वह निम्न-वक्षु-उपत्यकामें बुखारियोंको भगाते हुये अन्तर्वेदके भीतर घुस आया। करमीनामें अब्दुल अजीजने उसे हराया। अबुलगाजीने घायलकी हालतमें नदी तैरकर अपनी जान बचाई। लेकिन [illegible] एक हारसे हार माननेवाले थोड़े ही होते हैं? अबुलगाजीने दूसरी बार तैयारी की, और अबकी लूटते-पाटते वह बुखाराके दरवाजेतक पहुंच गया। उसका उत्तराधिकारी और पुत्र अनुशा खान और भी साहसी निकला। उसने १०७६ हि० (१४ VII १६६५–४ VI १६६६ ई०)में एक बड़ी सेना लेकर चढ़ाई की। उस वक्त अब्दुल अजीज करमीना गया हुआ था। उसकी अनुपस्थितिमें अनुशाने बुखारापर अधिकार कर लिया। अब्दुल अजीज भी कम साहसी नहीं था। वह केवल चालीस अनुयायियोंके साथ बुखाराके अर्क (किले)में घुस गया और लोगोंको युद्ध करनेके लिये तैयार किया। ख्वारेज्म वालोंके सभी विरुद्ध हो गये और सामूहिक शक्तिके बलपर अब्दुल अजीजने अनुशाको बुरी तौरसे हराया। अब्दुल अजीज शरीरमें महाकाय था, लेकिन जूता उसके पैरोंमें चार सालके बच्चे जैसा लगता था। युद्धमें वह बड़ा ही साहसी और काममें तत्पर रहता था। अपने पूर्वजोंसे उसने भी शेखों और सूफियोंकी आदत सीख ली थी, और कितनी ही बार दूसरे सांसारिक कामोंको छोड़कर एकांतमें ध्यान और भजन करने लगता। उसने भी अन्तमें अपने भाई सुभानकुल्लीको तख्त देकर मदीनेका रास्ता लिया।

---

* बांटमें सुभानकुल्लीको बलख और खोजा सालूको ऊपरी-वक्षु-प्रदेश मिला।

प्रसिद्ध सुलेखक मुल्ला हाजी इसके यहां सात सालतक रहा, और उसने खानके लिये "हाफिज" का दीवान उतारा।

७. सैयद सुभानकुल्ली, नादिर-पुत्र (१६८०–१७०२ ई०)

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने अपने पुत्र इस्कन्दरको "कलाखान" बनाया, लेकिन दो वर्ष बाद उसके भाई ममूरने जहर देकर उसे मरवा दिया। पिताने फिर तीसरे पुत्र उबैदुल्लाको बनाया, उसे भी दूसरे बेटेने कत्ल करवा दिया। बेटोके इस विद्रोहसे वह बहुत परेशान था। उसके मंत्री मुकीम खानने व्यापारियों और कारीगरोपर भारी टैक्स लगाकर चीन और युरोपके कारीगरोद्वारा बनाई सुन्दर कलाकी चीजो और गोटेवाले मखमल लिये। चार महीने बाद वह भी षड्यत्रका शिकार हुआ। फिर चौथे पुत्र मसूरको राज्यपाल बनाया।

इसी समय खीवासे भी झगडा उठ खडा हुआ। खीवाके अमीरने १०६५ हि० (२० XII १६८३–६ XI १६८४ ई०)मे बुखारापर चढ़ाई की। सुभानकुल्लीके सेनापति मुहम्मद बीने उसे मार भगाया, लेकिन दूसरे साल फिर उसने आक्रमण किया। इसके बाद ११०० हि० (२६ X १६८८–१६ IX १६८६ ई०)में खीवाका खान बुखाराके दरवाजेतक पहुच आया था। अब भी मुहम्मद बीने उसे बुरी तरहसे हराकर पीछे भगाया। कुछ समयके लिये खीवाने सुभानकुल्लीकी अधीनता भी स्वीकार की।

ख्वारेज्मका खान अनुशा बड़ा शक्तिशाली शासक था। उसे भगानेमे मदद देनेके लिये सुभानकुल्लीने अपने बेटे सादिकको बुलाया, लेकिन उस वक्त उसके शासित इलाके (बलख)मे भी भीतरी-बाहरी झगडे थे, इसलिये वह वहा लौट गया। इस बेहुक्मीके लिये सुभानने अपने बेटेको दड देना चाहा, इसपर उसने बगावतका झडा खड़ा कर दिया। उसने इससे पहले अपने दो भाइयो अब्दुल गनी और अब्दुल कयूमको मारकर औरगजेबके पास मैत्री करनेका प्रस्ताव किया। यह खबर सुनकर १६८५ ई०में सुभानकुल्ली अपने पुत्रके विरुद्ध खानाबाद पहुचा, जहासे उसने बहुत स्नेहपूर्ण पत्र भेजकर उसे क्षमा कर देनेका वचन दिया, किन्तु जब पुत्र आया, तो उसके पैरोंमे बेड़ी डलवा कालकोठरीमे बंद कर दिया, जहा वह तीन महीने बाद (१६८६ ई०मे) मर गया।

इस समय तुखारिस्तानके दो कबीलो मेमना-अन्दखुदवाले मिंग, और बलखके पासके किपचकोंमें बड़ी लड़ाई थी। सुभानकुल्लीने मशहदकी तीर्थयात्रा करनेकी सोची। इसी वक्त खीवाके खान अनुशाके बुखाराकी ओर लूटपाट करनेकी खबर आई। सुभानकुल्ली आया और उसके सेनापति मुहम्मद बीने खीवाकी सेनाको बुरी तरह हराया। अनुशा अपने ही लोगोद्वारा मारा गया, और उसका पुत्र एरेग सुल्तान ख्वारेज्मकी गद्दीपर बैठा।

औरगजेबको दिये वचनके अनुसार सुभानकुल्लीने महमूद जान बीके नेतृत्वमे खुरासानपर एक सेना भेजी, जो देशको लूटकर बहुतसे स्त्री-बच्चोको बदी बना लौट आई। इसी बीचमे एरेगकी सेनाने फिर बुखारापर धावा किया। दस दिनतक बुखारावालोने मुकाबिला किया, लेकिन जबतक बदख्शा-बलखका राज्यपाल महमूद बी अतालीक नही पहुंचा, तबतक ख्वारेज्मियोंको दबाया नही जा सका। अतालीकके आनेपर ख्वारेज्मियोंकी हार हुई और खीवाके आदमियोने षड्यंत्र करके एरेग खानको मार डाला। सुभानका शासन खीवावालोने स्वीकार किया। १६८७ ई०मे वहा उसके नामका खुतबा और सिक्का चला और सुभानने शाहनियाज इशिक आकाको वहांका राज्यपाल नियुक्त किया। सुभानका तुर्कीके सुल्तान अहमद II (१६६१–६५ ई०)के साथ भी दौत्य-संबंध था, जिसके पास प्रशंसा करते हुये उसने अपने पत्रमे लिखा था—"फेक काफिरो और अभागे अधर्मियो (किजिलबासों) को भूतलसे नष्ट कर देने-जैसे अल्लाहके महान् काममे आप लगे है।" मुस्लिम जगत्मे इस समय बुखाराका नाम बडे गौरवसे लिया जाता था। औरगजेबने सुभानकुल्लीके पास दूतके साथ एक हाथी और कितनी ही और मूल्यवान् भेटें भेजी। तुर्कीका सुल्तान अहमद II उसे प्रशंसापूर्ण पत्र लिखते समय "भाई"के नामसे सबोधित करना नही भूलता था।

सुभानकुल्लीको पढ़ने-लिखनेका भी शौक था। उसने ग्रीक-चिकित्सकों—गेलन और हिप्पोक्रेत—तथा बूअली सेनाकी पुस्तकोंके आधारपर तुर्की भाषामें वैद्यकपर एक पुस्तक लिखी, जिसमें रोगमुक्तिके एक बड़े साधन गडा-ताबीजको लिखना वह नहीं भूला।

अस्सी सालकी उमर हो जानेपर उसने अपने पुत्र मुकीमको बलखसे बुलाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, और १११४ हि० (२८ V १७०२–१८ IV १७०३ ई०) में मर गया।

८. मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७०२–७ ई०)

मुकीम खानको गद्दी सभालते ही अपने बड़े भाई उबैदुल्लाके विरोधका सामना करना पड़ा। मगीत कबीलेका शक्तिशाली सरदार रहीम बी बड़े भाईका समर्थक था, इसलिय पांच सालतकके बडे सघर्षके बाद मुकीमको अपने हाथमें शक्ति लेनेमें सफलता मिली।

९. उबैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७०७–१७ ई०)

अब अस्त्राखानी वंशमें भी गुड़िया सुल्तान होने लगे। उबैदुल्ला, मंगीत-सरदार रहीम बीके हाथका कठपुतली था।

१११५ हि० (१७ V. १७०३–४ IV १७०४ ई०)में कंकुरत कबीलेवालोंने उबैदुल्लाके शहर खानाबादपर आक्रमण किया। अतालीक महमूद बी उनसे लड़ने गया, जिसमें उसका भाई अब्दुल्ला मारा गया। महमूद बीने इस खतरनाक कबीलेको पूरी तौरसे दंड देनेके लिये आज्ञा मांगी, क्योंकि उन्होंने वक्षुकी भूमिमे लूट-मार मचा रक्खी थी। मकीम खानकी आज्ञा पा महमूद बी जल्दी-जल्दी कूच करते हुये तीन दिनमें कबादियान किलेपर पहुंचा, जिसे कि कंकुरतोंके सहायक दुश्मन कबीलेने दखल कर रक्खा था। महमूद बीके सामने उन्होंने आत्मसमर्पण किया। कबादियानमें एक सेना रख महमूद बी कंकुरतोंके विरुद्ध चला, जो अपने डेरे और चीज-वस्तुओंको छोड़कर भाग गये। महमूदने बहुतोंको मारा, लेकिन दुश्मनोंके पामीरके पहाड़ोंमें भागकर छिप जानेपर पीछा करना आसान नहीं था। अतालीक महमूद बीने धन ले लडकों-बच्चोंको छोड़ दिया। फिर उसने तंगि-दीवान और बदे-हरमकी ओर उनका पीछा किया और कराई किलेमें डेरा डाल चारों ओर सेना भेजकर कंकुरत कबीलेको नष्टप्राय कर दिया। जब वह बलख लौटा, तो मुकीमने उसे और उसके साथियोंको बहुत मूल्यवान् खिलअत तथा दूसरी भेंटें प्रदान कीं।

१०. अबुल्फैज, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७१७–४७ ई०)

उबैदुल्ला खान अतालीक रहीम बीसे झगड़ पड़ा, जिसके लिये उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। रहीमने उसकी जगह अबुल्फैजको खान बनाया। उज्बेकोंने इसके समय भी खुरासानपर आक्रमण करना जारी रक्खा। ऐसे ही एक आक्रमणमें उन्होंने नादिर (पीछे दिल्ली लूटनेवाले महान् विजेता नादिरशाह)को पकड लिया था। १७१८ ई०में उज्बेकोंने अब्दाली-अफगानोंके सरदार आजादुल्लासे मेल करके खुरासानको लूटा। सेफे-कुल्ली खानके अधीन तीस हजार ईरानी सेना आई, जिसने खुरासानमें बारह हजार उज्बेक-सेनाको हराया, लेकिन उसे खुद उज्बेकोंके मित्र अफगानोंसे हारना पड़ा।

१७३६ ई०में ईरानी सेनापति नादिरशाहने गुरजी (जार्जिया)में उसमानी तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर उत्तर-पूर्वकी ओर नजर फेरी, और उसके पुत्र रजाकुल्ली खानने अबुल्फैजकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन इसी समय इलबर्स खीवासे अपने उज्बेक भाइयोंकी सहायताके लिये आ गया, जिससे उनकी जान बच गई।

१२३६–३८ ई०में नादिरने कंधारका मुहासिरा करते समय अपने पुत्र रजाकुल्लीको बादगियों और मरचो (मरवेचकों)के रास्ते अफगानोंके दोस्त अलीमरदांखां (अन्दखुद)के खिलाफ

भेजा। पड़ोसी घुमन्तुओंने अलीमरदांका साथ छोड़ दिया और रजाकुल्लीने उसे बन्दी बनाकर बापके पास भेज दिया। रजाकुल्लीने शापूरगान और अक्सी ले बलखको भी जीत लिया, फिर वक्षुपार हो अबुल्फ़ैजकी शक्तिको नष्ट करना चाहा, लेकिन इसी समय ख्वारेज्मके खान इलबर्सने आकर फिर अपने भाई उज्बेकोंको बचा लिया। हार खानेके बाद नादिरने रजाकुल्लीको इस बहानेसे बुला लिया—"उच्च तुर्कमान कुलों तथा छिङ-गिस् खानकी सतानोके पैतृक-देशोंपर हाथ नही मारना चाहिये।"—यह अंगूर खट्टे-जैसी बात थी।

नादिर दिल्ली लूटनेके लिये चला गया और लौटते समय पेशावरमे उसे अबुल्फ़ैजका पत्र मिला, जिसमें लिखा था—"मै पुराने वशकी अन्तिम सतान हू। मै तुम्हारे जैसे शक्तिशाली बादशाहका विरोध करने की काफी शक्ति नही रखता, इसीलिये मै अलग रहकर तुम्हारी भलाईके लिये दुआ करता रहता हूं। तो भी, यदि तुम मुलाकात करके मुझे सम्मानित करना चाहते हो, तो मै एक अतिथिके तौरपर तुम्हारा उचित सत्कार करूगा।" अबुल्फ़ैजने अपने दोस्त खीवाके खानको भी वैसा ही करनेको कहा। लेकिन नादिरशाहने इस चापलूसीभरी बातको बडी घृणाकी दृष्टिसे देखा। दिल्लीसे तीन सौ हाथियों, मोती-हीरा-जटित तम्बू, बहुत-सी सम्पत्ति और शाहजहाके प्रसिद्ध सिहासन तख्त-ताऊसके साथ लौटकर नादिर कुछ दिनों हिरातके पूर्वके पहाड़ों (कोहिस्तान) मे ठहरा। यहींसे उसने रूसी साम्राज्ञी एलिजाबेथ (१७४१-६१ ई०) तथा अबुल्फ़ैजके पास कुछ भेटे भेजी।

नादिरने अब इलबर्सके सत्यानाश करनेका निश्चय किया। वह बुखाराके सीमान्तपर वक्षुतटके करकी स्थानमें पहुचा, जहापर अस्त्राखानियोंका सर्वेसर्वा रहीम बी भेंट लिये उपस्थित था। वहासे नादिर चारजूय गया। तीन दिनमें वक्षुपर नावोंका पुल बनवाकर बहुतसी सेनाको खजानेकी रक्षाके लिये छोड़ वह बुखारासे एक मजिल पहले कराकुलमें पहुंचा। अबल्फ़ैजने सुन्दर अरब घोडोंकी भेंट लिये अपने अमीरों और मुल्लाओंके साथ स्वागत किया। नादिरशाहने खानको बैठनेके लिये स्थान देते उसे "शाह" के नामसे सम्बोधित किया। अबुल्फ़ैजने अपनी बेटीको नादिरशाहसे ब्याहा और नादिरने अपनी बहिनको अबुल्फ़ैजके भतीजेके लिये दिया। रहीम बीको नादिरशाहने खानकी उपाधि देकर छ सौ तुर्कसेनाका नायक बनाया। इस तरह बुखाराको अपने अधीन कर वह खीवाकी ओर बढ़ा। इलबर्सने अधीनता स्वीकार करानेके लिये आये नादिरके दूतको मरवा दिया था। नादिर अब उसके ऊपर चढ़ा। इलबर्स खानकाहके किलेमे घिर गया। तीन दिनकी गोलाबारीके बाद इलबर्सने अपनेको नादिरके रहमपर छोड दिया, और खूनखार नादिरने उन्तीस प्रधान अफसरोके साथ उसे कत्ल करवा दिया। चारजूय लौटकर नादिरने अपनी नव-विवाहिता बीबीको उसके पिता-के पास भेज दिया। मेर्वके रास्ते जब वह खुरासानमें पहुचा, तो वही २३ जून १७४७ ई०को उसके एक अनुचरने उसे मार डाला।

नादिरशाहकी मृत्युकी खबर पाकर अब रहीम बीने अबुल्फ़ैजको गद्दीपर बैठाये रखनेकी जरूरत नही समझी, और उसे पैमनारमें मीर अरबके मदरसेमें कैद कर दिया। ईरानी इसपर क्षुब्ध हुये, तो रहीमने कहा—"मै तो मामूली उज्बक हू। नदिरशाहने तो न जाने कितने बड़े-बड़े खानदानी राजाओंको लूटा-मारा।" ईरानी सेना जब रहीम खानको घेरनेका मसूबा बाधने लगी, तो रहीमने गिलजई अफगानोंका कान भरा—नादिरने तुम्हारे देश कन्धारको अब्दालियोंके हाथमे दे उन्हें भूमि, स्त्री और वेतन देनेका वचन दिया है। उन्होंने उसकी बात मान ली। रहीम बीने उसी रात अबुल्फ़ैजको मार डाला। दूसरे दिन ईरानियोंने रहीम बीसे सुलह कर ली। अपने तोपखानों, तम्बुओं और रसदके सामानको छोड़ जानेके लिये रहीम बीने उन्हे अच्छी भेंट देकर देश लौट जानेकी छुट्टी दे दी। इस प्रकार कुछ ही महीनोमें रहीम बीने ईरानियोंके प्रभुत्वको बुखारासे खतम कर दिया।

११. सैयद अब्दुल् मोमिन मुहम्मद, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अबुल्फैजको मारकर अभी रहीम बी सीधे गद्दीपर बैठनेके बारेमें निश्चय नहीं कर पाया था। उसने अपने दामाद तथा निहत खानके पुत्र अब्दुल् मोमिनको गद्दीपर बैठा दिया। एक दिन मीठे खरबूजे कपड़ेसे ढांककर खानके पास आये थे। बीबीने पूछा—"क्या है?" उसने जवाब दिया—"तुम्हारे बापका शिर है, जिसने मेरे बापको मारकर देशपर अधिकार कर लिया है।" बीबीने यह बात बापसे कह दी और रहीमने अब्दुल् मोमिनको कुंयेंमे ढकेलकर मरवा दिया।

१२. सैयद उबैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अफगान—अफगानोंका उत्कर्ष इसी समय होने लगा। महमूद बीके समय सुलेमान पर्वत-श्रेणीमें उनका एक छोटा-सा कबीला था, जिसने अपनी शक्ति बढाते-बढाते एक समय वक्षुसे सिन्ध-तटतककी भमि ले ली। जातिकी तौरपर सिन्ध-तटतक अब भी पख्तून (अफगान्) रहते हैं, लेकिन पश्चिममें काबुलके पासकी कोहदामन-उपत्यकासे ही ताजिकों, फिर हजारों और अन्तमें उज्बेकोंके इलाके आ जाते है। तो भी वक्षु (आमू)के तटतक अब भी अफगानिस्तानकी राज्यसीमा है। १८वी सदीके आरम्भमें अर्थात् औरंगजेब और उसके कुछ उत्तराधिकारियोंके समयतक उज्बेकोंसे बचनेके लिये अफगान भारत और ईरानके बादशाहोंकी प्रजा बनकर उन्हें कर देते थे। लेकिन जब सफावी-वंश (१४९९–१७२२ ई०)का सितारा डूब गया, तो गिलजई कबीलेके सरदार महमूदके नेतृत्वमें अफगानोंने अस्पहानतकपर आक्रमण करनेका प्रयत्न किया, जहासे नादिरने उन्हें मार भगाया। इस अन्तिम एसियाई महान् विजेताके पतन, भारतीय "मुगल"-साम्राज्यके क्षीण होने एवं उत्तरमें बुखाराके उज्बेकोंमें फैली गड़बड़ीसे फायदा उठाकर अफगानोंने वक्षु और सिंधके बीचके नादिरके जीते हुये देशको हड़प लिया। अहमदशाह दुर्रानी (अफगान-सरदार)ने नादिर-वंशज तथा तेमूरके पौत्र शाहरुख मिर्जासे मेल करके ११६६ हि० (८ XI १७५२–२९ IX १७५३ ई०) में वक्षुसे दक्षिणवाले इलाकेको बुखारासे छीन लिया, जिसमें मैमना, अन्दखूई, आकचा, शापुरगान, शेरपुल, खुल्म, बलख, बदख्शां और बामियान अवस्थित हैं। विजेता अफगान सेनापति बेगीखान पीछे सदर-आजम अहमदका उत्तराधिकारी बना। १२०३ हि० (२ X १७८८–२३ VIII १७८९ई०) में तेमूरशाहको बहावलपुरके अभियानमें फंसा देख उज्बेकोंने वक्षु पार हो अपने बहुतसे इलाकोंको फिर ले लिया। १२०८ हि० (९ VIII १७९३-३० VI १७९४ ई०) में तेमूरशाह मर गया, जिसकी जगहपर उसका पुत्र शाहजमां काबुलकी गद्दीपर बैठा। इसीके समय बुखाराके मंगीत अमीर मासूम-ने हमला किया, और बलख घिरा रहा। शाहजमां उस समय भारत और खुरासानके अभियानोंमे व्यस्त था, किन्तु जब उससे उसने छुट्टी पा ली, तो मासूमने लड़नेकी जगह उससे सुलह करना ही अच्छा समझा। शाहजमाके प्रतिद्वन्द्वी भाई शाह महमूदको अमीर मासूमने १२१४ हि० (५ VI १७९९-२६ IV १८०० ई०)में बखारामें शरण दी।

बेगीखानको वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशके जीतनेके उपलक्षमें सदर-आजमकी उपाधि मिली। अमीर मासूम और बेगीखान मंगीती अमीर शाह मुरादकी भी उपाधि थी, जो कि रहीम बीका भतीजा था।

अस्त्राखानी कालकी इमारतोंमें मदरसा-शेरदिल भी है, जो १६१० ई०में बना था।

१३. सैयद अबुल्गाजी, इब्राहीम-पुत्र (१७४७ ई०)

रहीम बीके हाथका यह अन्तिम अस्त्राखानी कठपुतली खान था, जिसके बाद रहीमने स्वयं गद्दी संभाल ली।

अस्त्राखानी-वंशवृक्ष—
(१५१५–१७४७ ई०)

अध्याय ६
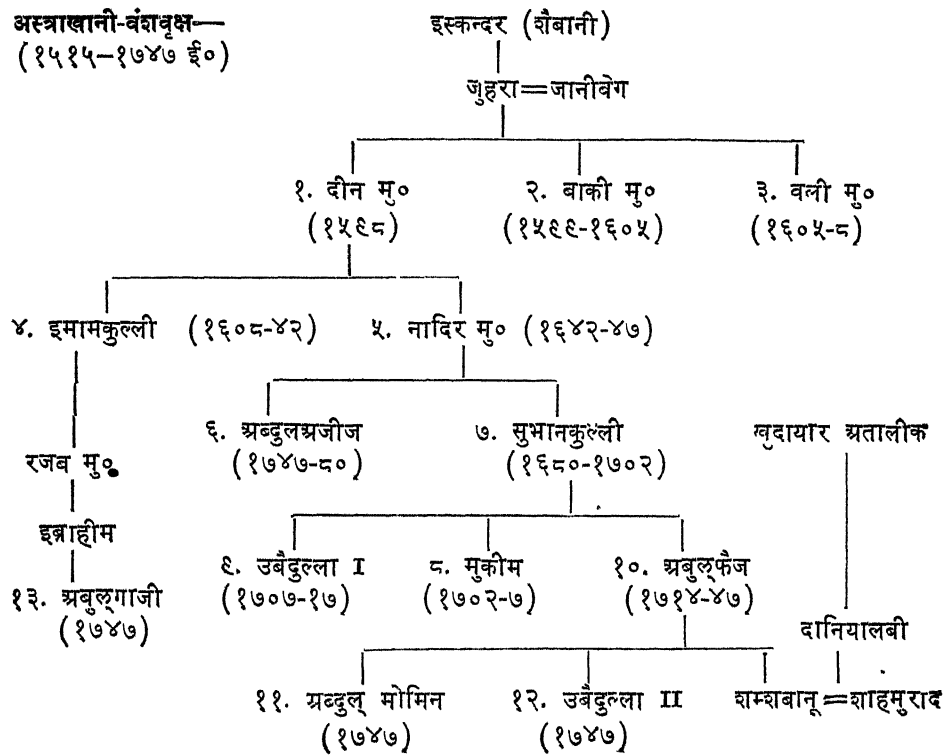
खीवा-खान

(१५१५–१७१४ ई०)

ख्वारेज्म अब अपनी राजधानी खीवाके नामसे प्रसिद्ध होने लगा था। ख्वारेज्मकी भूमि पश्चिममें कास्पियन और दक्षिणमें खुरासानसे अलग करनेवाले रेगिस्तान कराकुम और पूर्वमें बुखारासे अलग करनेवाले रेगिस्तान किजिलकुमसे घिरी हुई बालुका-समुद्रमें द्वीपकी तरह है—उत्तरमें अराल समुद्रके दोनों तरफ भी मरुभूमि है। इस अपार बालुका-राशिके भीतर रहते भी ख्वारेज्म हमेशासे बडा ही उर्वर और समृद्ध देश, तथा युरोपके साथके व्यापारका केंद्र रहा। रेगिस्तानोंके कारण ही दक्षिण और पूर्वके राज्योंकी अपेक्षा इसका सम्बन्ध वोल्गा-उपत्यकासे अधिक रहा। सदियोंतक जू-छि उलुसने इसपर शासन किया। बहुत पीछे सफावियोंने मौका पाकर खीवाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन, जब उज्बेकोंने मुहम्मद शैबानीके नेतृत्वमें अन्तर्वेदको जीता, तबसे उज्बेकोंकी ही प्रधानता खीवापर भी हो गई। १५१० ई०में शैबानीको हराकर शाह इस्माईलने ख्वारेज्मको बांटकर वहां अपने तीन राज्यपाल नियुक्त किये—(१) खीवा-हजारास्प, (२) उरगंज, (३) वेसिर (वेजिर)। ख्वारेज्ममें सुन्नी धर्मकी प्रधानता थी, और सफावियोंने शिया-धर्मको राजधर्म घोषित किया था। इससे फायदा उठा उमर गाजीने शियोंके विरुद्ध ख्वारेज्मियोंको उभाड़ना शुरू किया और दो साल बाद ही हुशामुद्दीन कतल नामक एक धार्मिक नेताने वेसिरके लोगोंको समझाकर उज्बेक खान बरकाके पुत्र इलबर्सको लाकर गद्दीपर बैठा दिया।

बरका खान जू-छि-पुत्र शैबानके प्रपौत्र पूलाद खानके पुत्र अरबशाहकी संतानोंमें से था। अबुल्खैरके दादा इब्राहीम ओगलानका भाई यही अरबशाह सुवर्ण-ओर्दूके छिन्न-भिन्न टुकड़ोंमेंसे एकका खान था—अरबशाह और इब्राहीम दोनोंने बापकी सम्पत्तिको आपसमें बांट लिया, इस प्रकार अरबशाह भी एक छोटासा खान (राजा) बन गया। इब्राहीमके पोते अबुल्खैरने अपनी शक्ति कितनी बढ़ाई, इसका वर्णन हम तेमूरी-वंशके वर्णनमें कर आये हैं। अरबशाहके बेटे हाजी तुली (तुगलक हाजी) का एक ही पुत्र तेमूरशाह था, जो कि कल्मकोंके युद्धमें मारा गया। उइगुरोंके सरदारने तेमूर-शेखकी खानमसे बिदाई देते समय पूछा, तो खानमने कहा—"मुझे तीन महीनेका गर्भ है।" इसपर उइगुर घुमन्तू थम गये। यह खबर पाकर कुछ दूर चले गये नेमन कबीलेवाले भी ठहरकर बच्चेके पैदा होनेकी प्रतीक्षा करने लगे। छिङ-गिस्के पवित्र खूनकी इतनी महिमा थी, कि अपने भावी खानकी आशामें उन्होंने अपने लाखों पशु-प्राणियोंके साथ वहां ठहर जाना आवश्यक समझा। छ महीने बाद खानमको बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम यादगार रक्खा गया। उइगुरोंने दूसरे कबीलोंके पास सूयुनजी (भेंट) भेजनेके लिये न्योता भेजा। नेमन काला घोड़ा भेजकर यादगारके ओर्दूमें लौट आये। उनके आनेपर मांने गोदमें ले बापके तम्बूमें खानके आसनपर बच्चेको बिठा दिया। उइगुरोंने अधिक सम्मान दिखलानेके लिये अपने स्थानको खानके दरबारमें नेमनोंको दे दिया। इसी तरह और भी कितने ही कबीले खबर पाकर अपने खानके पास लौट आये, लेकिन उइगुर और नेमन यही दोनों उज्बेक कबीले खानके कराची (बिपत-संपतके साथी) रहे।

बड़ा हो यादगारने अपने उलुसका अच्छा नेतृत्व किया। उसके चार पुत्र हुये—बरका (बेरेका), अबलेक, अमीनेक और अलक। १५वीं सदीका समय था, लेकिन अभी भी मंगोल भाषा बिल्कुल विस्मृत नहीं हुई थी, यह खानजादोंके नामसे पता लगता है। अमीन अरबी नहीं मंगोल-भाषाका शब्द है, जिसे अरबीमें जान, फारसीमें होश, और उज्बेकी तुर्कीमें तिन कहते हैं। "शैबानीनामा"में चारों पुत्रोंको बरका, अबलक, अबका और इलवानेक कहा गया है। बरका शरीरमें बहुत ही शक्ति-

शाली था। उसके समयमें अबुल्‌खैर दश्ते-किपचकका सबसे शक्तिशाली खान था। उसने १४५५ ई०में बरकाके नेतृत्वमें एक सेना बुखाराके खान अब्दुल्‌लतीफके पुत्रकी मददके लिये भेजी। उज्बेक अपने सहयोगी बुखारियोंसे झगड़ पडे, और सोग्द इलाकेके लूटके मालको ऊंटोंपर लादे लौट गये। कुछ समय बाद दो नोगाई खानों मूसाबेग और कुजाश मिर्जाके बीचमें लड़ाई हो गई। कुजाशके जीतनेपर मूसाने बरकासे सहायता मांगी—नोगाई-वंश ज्यादा सम्माननीय समझा जाता था। बरकाने इस शर्त्तपर सहायता देनी स्वीकर की, कि मेरा पिता यादगार खान बनाया जाये और मूसा उसका प्रधान बेक (अमीर) बने। मूसाने स्वीकार किया। सफलताके बाद यादगारको सफेद नम्देके ऊपर उठाकर बाकायदा खान घोषित किया गया। यादगार खान अभियानपर चला। उसके हरावलका नायक मूसाबेग था। जाडेके दिन थे। जमीन बर्फसे ढँकी थी। घास-चारेका ठिकाना नहीं था। घोड़े दुबले होते गये और रसद खतम हो गई। लौट चलनेकी बात कहनेपर बरकाने इन्कार कर दिया। एक पहाडीपर चढ़कर देखा, तो (उश्तउर्त) के परे एक उपत्यकामे कुजाश मिर्जाके तम्बू दिखाई पड़े। बरकाने तुरन्त आक्रमण कर दिया। कुजाश पकडकर मारा गया, और उसके डेरे लूट लिये गये। बरका सुल्ताननें कुजाशकी लडकी मलाई खानजादाके साथ ब्याह किया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद यादगार मर गया। अबुल्‌खैरकी मृत्यु भी इससे थोड़ा ही पहले हुई थी। अबुल्‌खैरकी मृत्युके बाद उसके उज्बेक जहां-तहां बिखर गये। उज्बेक कहावत है—"अगर तुम दुश्मनको अपने बापके घरकी ओर दौडते देखो, तो तुम्हें उसके साथ होकर लूटमें भागीदार बनना चाहिये।" बरका भला अबुलुखैरके धन और शक्तिकी लूटमें क्यो पीछे रहता ?

कुछ सालों बाद अबुल्‌खैरका पौत्र प्रसिद्ध विजेता मुहम्मद शैबानीका डेरा निम्न सिर-उपत्यकामें बरका सुल्तानके पास पड़ा था। उसने अपने आदमियोको हुक्म दिया—"रातको घोड़ोंपर चढकर जाओ, और सूर्योदयके वक्त बरकाके तम्बूपर टूट पडो, दूसरी किसी चीजका ध्यान न करके सिर्फ उसको पकड़ लाओ।" बरका अपने तम्बूमें था। उसने घोड़ोंके टापकी आवाज सुनी, और उसी समय कंधेपर एक समूरी चोगा डालकर नंगे पैर सरकंडेके जंगलोंमें घुस गया। बर्फ पड़ी हुई थी। एक सरकंडेने उसके पैरको घायल कर दिया, लेकिन वह उसकी परवा न कर सिर-दरियाके किनारे उगनेवाले उन्ही सरकंडोंके घने जंगलमे छिपा रहा। शैबानीके आदमी इधर-उधर पूछ-ताछ करने लगे, जिसपर उइगुर कबीलेके एक ईनक (सरदार) मुंगाने कह दिया, कि मैं ही बरका हूं। उसे पकड़कर मुहम्मद शैबानीके पास ले गये। शैबानी बरकाको अच्छी तरह पहचानता था। उसने मुंगासे पूछा, कि तुमने झूठ क्यों कहा। इसपर मुंगाने जवाब दिया—"मैंने उसका बहुत नमक खाया है। मै उसकी विपत्ति-संपत्तिमें साथी रहा हूं। मैंने सोचा, यदि मैं उसका पीछा करनेवालोंमेंसे कुछको इस तरह फंसा रक्खूं, तो उसे भागनेका अच्छा मोका मिलेगा। बाकी, अब जो तुम्हारी मर्जी हो, मेरे साथ करो।" शैबानीने प्रसन्न हो उसे इनाम देकर छोड़ दिया। उधर शैबानीके कुछ आदमी खूनसे पता पा बरकाको पकड़ लाये। शैबानीने उसे मार डाला, और उसके शिविरको लूट लिया। बरकाकी विधवा खातून अबुल्‌खैरके द्वितीय पुत्र खोजा मुहम्मद सुल्तानकी बीबी बनी। उसे पहले ही गर्भ था, जिससे जानीबेग (अब्दुल्ला खानका दादा) पैदा हुआ। बरकाके पहले हीके दो पुत्र इलबर्स और बलबर्स थे, जिनमें बलबर्स दोनों पैरोसे लुंज था। इन्हीं दोनों भाइयोंमेंसे एक इलबर्सको हुशामुद्दीनने वेसिरकी गद्दीपर बैठाया।

राजावलि—बरका-वंशी खीवा-खान निम्न प्रकार हुये—

१. इलबर्स, बरका-पुत्र १५१५ ई०
२. सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र
३. हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र
४. सोफियान, अमीनेक-पुत्र
५. बुजुगा, अमीनेक-पुत्र
६. अवानेक, अमीनेक-पुत्र

७. काल, अमीनेक-पुत्र	१५३९–४६ ई०
८. अकताई, अमीनेक-पुत्र	१५४६ "
९. दोस्त, बुजुगा-पुत्र	१५५६ "
१०. हाजी मुहम्मद, अकलाई-पुत्र	१५५६–१६०२ "
११. अरब मुहम्मद, हाजी मुहम्मद-पुत्र	१६०२–२१ "
१२. इसफन्दियार, अरब-पुत्र	१६२२–४२ "
१३. अबुल्गाजी, अरब-पुत्र	१६४३–६३ "
१४. अनुशा, अबुल्गाजी-पुत्र	१६६३–८६ "
१५. एरेग, अनुशा-पुत्र	१६८६–८७ "
१६. शाहनियाज	१६८७–१७०२ "
१७. अरब मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७०२ "
१८. हाजी मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७१४ "
१९. यादगार, अनुशा-पुत्र	

१. इलबर्स, बरका-पुत्र (१५१५ ई०)

इलबर्सको बुलाकर इधर छिपा रक्खा गया और उधर षड्यन्त्रियोंने घृणास्पद शिया ईरानियोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हे मार डाला, केवल एक ईरानी भागकर जान बचा पाया। दूसरे दिन ईरानी राज्यपालके महलमे लाकर इलबर्सको खान घोषित किया गया। उज्बेक और सरत (फारसीभाषी) दोनों ही सुन्नी होनेसे शियोंके साथ घृणा करते थे। उन्होने इस समय बड़ा उत्सव मनाया। इसके बाद यगी शहर और तेरसेकने भी इलबर्सकी सेनाके सामने शिर झुकाया। इलबर्सने अपने भाई बलबर्सको "बिलिकिच"की उपाधि दे यगीशहरका शासक बनाया। उरगजमें अभी ईरानी राज्यपाल सुल्तानकुल्ली अरब शासन कर रहा था, लेकिन तीन ही महीने बाद इलबर्सने सुल्तानकुल्लीको भी महलमें पकडकर सभी नौकरोके साथ मार डाला। हजारास्प और खीवाकी छावनियोंने वहाके सरतोंसे राय पूछी, तो उन्होंने रहनेके लिये जोर दिया। दश्तेकिपचकसे अब इलबर्सने अपने भाई-बंधोंको बुलाया और बूढ़े उइगुरकी बात नही मानी—"उज्बेकोंमें बादशाहकी महिमा अपने अधीनोंके प्रेमपर निर्भर करती है।" यादगारके सभी पुत्र मर चुके थे, किन्तु अबलेक खानका एक पुत्र और अमीनेक खानके छ पुत्र अपने परिवारों और ओर्दूके साथ आकर उरगंजमें बस गये। इलबर्स स्वयं वेजिरमें रहता था। उसके भाई-बधोने खीवा और हजारास्पको इतना लूटा और बरबाद किया, कि इन शहरोको और कातको भी ईरानी छोड़ गये। १५२३ ई०में शाह इस्माईल मर चुका था। खुरासान पर्वतश्रेणीके उत्तरवाले महीने और देरूनतक उसके सभी राज्यपाल अपने स्थानोंको छोड़कर भाग गये। उज्बेकोके लिये खुरासानियों और तुर्कमानोंके ऊपर लूटके अभियान करनेकी छूट मिल गई। इन अभियानोमे लुज बलबर्स रथपर चढ़कर अगुवा बनता था। किजिल-बासोंपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्षमे इलबर्सके सात पुत्र गाजी (धर्मयोद्धा) कहलाये।

२. सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र

इलबर्सके मरनेपर दोनों भाइयोंके पुत्रोंमें सबसे बड़ा सुल्तान हाजी गद्दीपर बैठा, किन्तु राज्यकी सारी शक्ति उसके चचेरे भाई सुल्तान गाजीके हाथमे रही। सुल्तान गाजी बहुत ही धनी और स्वेच्छाचारी था। एक साल राज्य करनेके बाद सुल्तान हाजी मर गया, और उसके बाद यादगार-वंशकी ज्येष्ठतम सतान होनेसे हसनकुल्लीको खान बनाया गया।

३. हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र

उरगंजको इसने अपनी राजधानी बनाया। इलबर्स और अवानेकके पुत्रोने इसके ऊपर आक्रमण किया, और मुहासिरेके कारण उरगजमे भुखमरी शुरू हो गई। चार महीने बाद उसने आत्म-समर्पण किया। हसनकुल्लीपर अगकनाईके वधका दोष लगाया गया था, जिसके लिये उसके ज्येष्ठ पुत्र बलाल सुल्तानको मारकर बदला लिया गया। हसनकी विधवा और दूसरे पुत्र समरकद भेज दिये गये।

४. सोफियान, अमीनेक-पुत्र

अमीनेक (अवानेक)का पुत्र सोफियान उरगंजमे खान बना। खानजादोंमें रियासतोंका फिरसे वितरण किया गया, जिसमें बरका सुल्तानके पौत्रोंको वेजिर, यगीशहर, तेरसेक, देरून, खुरासान और मंगिशलकके तुर्कमान मिले। अवानेक खानके चार पुत्रोंको खीवा, हजारास्प, कात, बलदुमाज, नीकीची सूबुई (नदी-तटका इलाका), बगाबाद, निसा, अबीबर्द, चिहारदेः, मेहीनेः, जेजेः तागबुई (पहाड़ी इलाका), और साथ ही आमू, बलखान और देहिस्तानके तुर्कमान भी मिले। उस समय अबुल्गाजीके अनुसार वक्षु नदी बलखानमे कास्पियन समुद्रमें गिरती थी, और आजकल जहां विकराल रेगिस्तान खड़ा है, वहा बहुतसे समृद्ध ग्राम और नगर बसे हुये थे। पांच शताब्दियों बाद, अब फिर कास्पियन समुद्रकी और वक्षुकी एक धारा मनुष्योंके हाथोंद्वारा मोडी जा रही है, जिसके कारण फिर इस मृत भूमिमें जीवन संचार होनेवाला है। बलखानके नजदीक रहनेवाले इरसारी तुर्कमानोंने कुछ

समयतक सोफियानको कर दिया, इसके बाद खानकी ओरसे कर उगाहनेके लिये जब आदमी भेजे गये, तो उन्हें इन घुमन्तुओंने मार डाला। इसपर सोफियान एक बड़ी सेना ले इरसारियों तथा पड़ोसी खुरासानके सलूरियोंके डेरोंपर आक्रमण करके लूट-मार करते बहुतसे स्त्री-बच्चों और सम्पत्तिको अपने साथ ले गया। उस समय कितने ही तुर्कमानोंने चू-तटकी निर्जल-अधित्यका (प्लेटो) में शरण ली थी। उन्हें चारों ओरसे घेर लिया गया, जिसके कारण बहुतसे प्यासके मारे मर गये। अवानेक-पुत्र अगताईको उन्होंने वचन दिया, कि हम तुम्हारी सतानके सदा भक्त रहेंगे। अगताईने बीचमें पड़कर प्रत्येक मारे गये कर-उगाहकके लिये हजार भेड़ें अर्थात् कुल चालीस हजार भेड़ें दड देनेपर समझौता करा दिया। इरसारियोंने सोलह हजार, खुरासानी सलूरियोंने सोलह सौ, और तेके-सारिक-यामूत——इन तीन कबीलोने आठ हजार भेड़े दी। कुछ समय बाद तुर्कमानोंकी जनगणना करके उनके ऊपर निम्न प्रकार कर लगानेका निश्चय हुआ——

इतशकी सलूर (भीतरी सलूर)	१६०००,	तथा उसके ऊपर	१६००	खानकी रसोईके लिये।
हसन कबीला	१६०००	और	१६००	” ” ”
अरबाजी (भीतरी सलूर)	४०००	और	४००	” ” ”
गोकलान	१२०००	और	१२००	” ” ”

अदकली (खिजिर), अली, तीबेची } इन तीनों वक्षु-तटवासी कृषक कबीलोंको अपनी उपज और भेड़ोंमेंसे कुछ कर और अदकली (सैनिक) भी देने पड़े।

सोफियानके मरनेपर खीवा उसके पुत्रोंको वोरिशके रूपमें मिला।

५. बुजुगा, अमीनेक-पुत्र

भाईका स्थान जिस वक्त बुजुगाने लिया, उस वक्त बुखाराके उबैदुल्ला खान और ईरानी शाह तहमास्पके बीचमें सघर्ष हो रहा था। ख्वारेज्मी भी इससे फायदा उठानेके लिये पील-कुपरुकीतक जा खोजन्द और अस्पेराई (अस्त्राबादके समीप)पर टूट पड़े। शाह तहमास्पके ऊपर पश्चिममें उसमान-अली तुर्क भी प्रहार कर रहे थे। दुश्मनोंमें फूट डालनेके लिये शाह तहमास्पने छिङ-गिस् खानके खूनसे सबध जोड़नेके लिये बुजुगा खानसे पुत्री मांगी। खानने अपनी पुत्री न होनेसे अपनी भतीजी तथा सोफियान खानकी पुत्री आइशाको देना चाहा। विवाहपत्र लिखवानेके लिये लड़कीका भाई आगिस सुल्तान गया। शाहने उसका कजवीनमें स्वागत-सत्कार किया और खोजन्द-शहर (ईरान)को उसे जागीरमें दिया। उसने सोनेके नौ डले, चांदीके नौ डले, अच्छी जातिके सुसज्जित नौ घोड़े, रेशमके ऊपर सोनेके काम किये नौ तम्बू तथा समुचित कालीन और तकिये, एक हजार थान रेशम, आदि बुजुगा खानके लिये भी भेट भेजे। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिये ख्वारेज्मी उज्बेकोंने ईरानी सीमापर लूट-मार बन्द कर दी। काफी दिनोंतक राज्य करनेके बाद बुजुगा मर गया और उसकी जगह उसका भाई अवानेक खान बना।

६. अवानेक, अमीनेक-पुत्र

बुजुगाके तीनों पुत्रों दोस्त मुहम्मद, ईस मुहम्मद और बुरुममेंसे पहले दोनोंको कातकी जागीर मिली। अवानेककी दो बीबियां मंगीत कबीलेकी थीं, और एक दासी थी। दासीसे उसका पुत्र दीन मुहम्मद हुआ, जो लड़कपनसे ही युद्धके खेल खेला करता था। उस समय अस्त्राबादके पासका इलाका उरगंजके उज्बेकोंके हाथमें था। दीन मुहम्मद बीस सालका हो गया। उसने इस इलाकेको अपने लिये मांगा। न देनेपर उसने चालीस सहायकोंके साथ जाकर एक तुर्कमान बेक (सरदार)के ऊंटों और भेड़ोंको लूट लिया। तुर्कमान बेकने अपने स्वामी मुहम्मद गाजी सुल्तान इलबर्स-पुत्रको इसकी खबर दी। मुहम्मद गाजीकी बहिनकी शादी हाल हीमें अवानेक खानसे हुई थी। उसने छापा मारकर दीन मुहम्मदको पकड़, लूटे मालको छीन, कुछ दिनों बंदी रख उसे हाथ-पैर बांधके घोड़ेपर सवार करके बापके

पास भेज दिया। लेकिन दीनू (दीन मुहम्मद) ऐसा-वैसा आदमी नही था। उसके लिये उसके साथी अपना खून-पसीना एक करनेके लिये तैयार थे। उन्होंने रास्ते हीमें दीनूको छुड़ा लिया। दीनूने बाप और सौतेली मा तमगाज चुराको झूठी चिट्ठी लिखी, कि तमगाजकी बहिन बहुत बीमार है। बहिन और बहनोईकी चिट्ठी पाकर मुहम्मद गाजी आया, तो पता लगा, चिट्ठी जाली थी। बहिनने भाईको बहुत सावधान कर दिया। इसी समय दीनूके आदमियोके पैरकी आहट सुनकर मुहम्मद गाजी अस्तबलमें रक्खी सूखी लीदके ढेरमें जा छिपा, किन्तु आदमियोंने उसे पकड लिया और उसकी गर्दन काट दी। यह खबर वेजिरमें गई। निहत सुल्तानके भाई सुल्तान गाजीसे मिलने अली सुल्तान गया था। उसने भाईके वधका गुस्सा अली सुल्तानको मारकर निकाला—"खूनका बदला खून" घुमन्तू कबीलोंका एक सर्वोपरि विधान है। इलबर्सका ओर्दू वेजिरमे रहता था और अवानेकका ओर्दू उरगजमें। खानने अपने कबीलेवालोंको मना किया, लेकिन वह अली सुल्तानके खूनका बदला लेनेके लिये अधीर थे। दोनोंका किर-मंगिशलकके छोरपर अवस्थित कुमकंदमें युद्ध हुआ, जिसमे अवानेककी जीत हुई। इलबर्सके खानदानको मारकर सामानको लूट लिया गया। सुल्तानकी बेवा उलुग तूबे अपने लड़को और लडकियोंके साथ बुखारा जानेके लिये छोड दी गई, जहापर बलबर्स सुल्तानका भी परिवार पहलेसे ही रहता था। अब सारा ख्वारेज्म अवानेक खानके लडकोंका था। खानने अपने लिये उरगंज रख बाकी अपने बेटे-पोतोमे बाट दिया। दीन मुहम्मदको सुल्तान गाजीवाला देरून इलाका मिला।

सुल्तान गाजीके दो पुत्र उमर गाजी और शेर गाजी बुखारामे रहने लगे थे। उमरने बापके खूनका बदला लेनेके लिये उबैदुल्ला खानसे सैनिक सहायता ले अवानेकपर आक्रमण किया, और उसे मारकर पितृ-ऋण चुकानेमें सफल हुआ।

इस झगड़ेके बाद भी देरूनका इलाका दीन मुहम्मदके हाथमे रहा, जहा अवानेकके दो बेटे भी ख्वारेज्मसे भागकर आ गये थे। दीन मुहम्मदने खिजिर कबीलेकी शाखा अदकालीके बेक (सरदार) को सैनिक सहायता देनेके बदले तरखून (राजकुमार) की पदवी और सेनामें वामपक्षमें स्थान पानेका सम्मान प्रदान किया, तथा अदकालियोंको उज्बेकोंमें गिने जानेका प्रलोभन दे अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार एक हजार अदकाली सैनिक मिले। तीन हजार और सैनिकोंको जमाकर दीन मुहम्मदने खीवापर चढ़ाई कर दी, और बुखारासे आई उबैदुल्लाकी सेना को हराकर १५३९ ई०के आसपास परिवारकी रूठी लक्ष्मीको मना लिया।

७. काल, अमीनेक-पुत्र (१५३९–४६ ई०)

लेकिन ख्वारेज्मका खान अब भी अवानेकका भाई काल खान हुआ, जिसने सात वर्षतक शासन किया। उसके समयमें ख्वारेज्म कितना धनधान्यपूर्ण था, वह इस कहावतसे सिद्ध है—"कालें खानने गद्दी पकड़ी, एक पैसेमे रोटी तगड़ी।"

८. अकताई खान, अमीनेक-पुत्र (१५४६ ई०)

नये खानने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया। काल खानके पुत्रोंको कात नगरकी, उसी तरह सोफियान खानके पुत्रों यूनस और पहलवान-कुल्लीको भी जागीर मिली थी। लेकिन, बुजुगा खान, अवानेक खान और अकताई खानके बेटोंने मिलकर अपने इन संबंधियोको भगा दिया और वह बुखारामें शरण लेनेके लिये मजबूर हुये। छिने हुये इलाकेकी बाटमें अवानेक खानके पुत्र अली सुल्तानको देरून दिया गया, उसके भाई महमूदको उरगंज, हाजिमको बगाबाद, दीन मुहम्मदको निसा और अबीबर्द, और बुजुगाके दोनों पुत्रों ईश और दोस्तको खीवा-हजारास्प मिले। सोफियानके पुत्र यूनसने नोगाइयोंके प्रसिद्ध सुल्तान इस्माईलकी लड़कीसे ब्याह किया। वह अपने चालीस अनुचरोंके साथ बुखारा जा रहा था। तुतूक उस समय निर्जन था और लोग उरगंजके पास डेरा डाले हुये थे। इसी समय यूनसको अपने पूर्वजोंकी सम्पत्तिको लौटानेका ख्याल आया, और रातमें अपने साथियोंके साथ महलमें घुसकर उसने राज्यपाल सरी मुहम्मद सुल्तानको पकड़ पहरेमें अकताई खानके पास वेजिरमें

भेज दिया। सैनिक और नागरिक महमूदसे परेशान थे, इसलिये उन्होंने यूनसका स्वागत करते हुये उसे खान घोषित कर दिया। अकताई सेना लेकर आया, लेकिन उसे हारकर भागना पडा। यूनस और अकताईकी पुत्रीके बेटे कासिम सुल्तानने पीछा करके नानाको पकडकर उरगंज लेजा चुपकेसे अकताईको इस तरह मार डाला, कि उसके शरीरपर कोई घावका चिह्न नही दिखाई पड़ता था—मालूम पड़ता था, जैसे वह स्वाभाविक मृत्युसे मरा हो। निहतकी लाशको उसके परिवारके पास वेजिरमें भेज दिया गया। मृत खानके पुत्रोंने बदला लेनेके लिये उरगंजपर चढाई की, और यूनसको बुखारा भाग जाना पड़ा, लेकिन किसी अनुचरने छिपे हुये कासिम सुल्तानको पकड़ा दिया। उरगंज शत्रुओंके हाथमें गया, और कासिम कत्ल कर दिया गया। सोफियान खान और काल खानके वंशका उच्छेद हो गया और अवानेक खानके लडके खुरासान भाग गये। फिर बटवारा हुआ, अकताई खानके परिवारको वेजिर और उरगज मिले, और बुजुगा खानके पुत्रों ईस, दोस्त और बुरुमको खीवा, हजारास्प और कातके इलाके।

९. दोस्त खान, बुजुगा-पुत्र (१५५६ ई०)

दोस्त बड़े ही नरम स्वभावका आदमी था। भाई ईसने उरगंज मांगा, और अपने लिये सिर्फ खीवा-को रखनेके लिये कहा। दोस्तके देनेपर भी हाजिमने इन्कार कर दिया। इसपर ईसने हाजिमको वहांसे हटानेके लिये हमला कर दिया। सात दिनतक मुहासिरा करनेपर भी सफलता नहीं मिली। इसपर खिसियाकर उसने उइगुर और नेमन कबीलेके आदमियोंको छोड़ बाकी सभी बंदियोंको बड़ी निष्ठुरतासे मार डाला, और फिर खीवा जाकर इन कबीलोंके उज्बेकोंको वहांसे भगाकर उनका स्थान दुश्मन कबीलेको दे दिया। कुछ समय बाद १५५६ ई०में वह फिर उरगंजपर चढा, और सात दिनके असफल मुहासिरेके बाद धोखेसे सरतोंके मुहल्लोंमें घुस गया। अकताईका पुत्र नेमन उइगुर कबीलेवालोंके साथ वेजिरकी ओर हट गया। कुछ समय बाद हाजिम मुहम्मदने अपने भाइयों तथा अवानेक-पुत्र अली सुल्तान एवं दीन मुहम्मद-पुत्र अबुल्सुल्तानकी सहायतासे उरगंजपर आक्रमण किया। चार महीनेके मुहासिरेके बाद किला तोड़नेके लिये आक्रमण करते समय ईस सुल्तान मारा गया। कुछ सैनिकोंने खीवामें जा दोस्त मुहम्मदको भी मार डाला। ईसके दो लड़के वहांसे भागकर बुखारा जा वहीं मरे। खीवा-राजवंशमें राजपरिवारोंका कत्लेआम और उच्छेद आम बात थी। अब बुजुगा खानका वंश समाप्त हो गया। यह घटना ९६५ हि० (२४ X १५५७–१४ IX १५५८ ई०) की है।

१०. हाजी मुहम्मद, हाजिम, अकताई-पुत्र (१५५६–१६०२ ई०)

हाजिम अकबरका समकालीन था। खान घोषित होते समय इसकी उमर उन्तालीस सालकी थी। इसने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया, और अली सुल्तानको उरगज, हजारास्प तथा कात मिले। हाजिमके भाई महमूदको आधा खीवा, उलुग-तूबे-ताश-कूनिशके तुर्कमान, दूसरे भाई तेमूरको आधा खीवा मिला। दीन मुहम्मदके पोते नूर मुहम्मदके इलाके मेर्वपर हमला किया करते थे। दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द मिला था, यह हम बतला आये हैं, जहांसे वह बराबर ईरानके शियोंपर जहाद किया करता था। शाह तहमास्पने सेना भेजकर अबीवर्दको छीन लिया। दीन मुहम्मद इसपर सीधे कजवीन चला गया। वह साहसका पुतला था। शत्रुके हाथ मारे जानेका उसे कोई डर नही था। फिर शाहकी जाली चिट्ठी लाकर उसने अबीवर्दको खाली करवा लिया। फिर एक-एक करके किजिल-बास (शिया) बादशाहके अनुयायियोंको मारा। तहमास्प उसे दंड देनेके लिये आया, तो दीन मुहम्मदने चालीस-पचास आदमियोंके साथ सीधे शाहके पास जा उसके दामन को चूमा। शाहने अपना एक हाथ उसकी गर्दनपर और दूसरा हाथ छातीपर रखकर देखा, उसकी सांस बिल्कुल स्वाभाविक-सी चल रही है। इसपर उसने आश्चर्य करते हुये कहा—"जरूर यह (हृदय) पत्थरका है।"

फिर दीनूके सम्मानमें शाहने एक बडी दावत की और क्षमा करके अबीवर्द भी उसे प्रदान कर दिया।

बुखाराके खान उबैदुल्लाने मेर्वमें योलुम बीको अपना राज्यपाल नियुक्त किया था। लोगोंने विद्रोह कर दिया, इसपर तीस हजार सेना लेकर उबैदुल्ला आया। योलुमने दीन मुहम्मदसे मदद मांगी। दीन मुहम्मद अपने सवारोके साथ उस जगह पहुचा, जहांपर मुरगाब नदी बालुका-राशिमें अन्तर्धान हो जाती। उसने अपने सवारोंको दोनों बगलोंमे वृक्षकी डालिया बाधकर धीरे-धीरे चलनेके लिये कहा। धूलसे आसमान छा गया। बुखारी सेना उसे देखकर डर गई। एक ओरसे दीन मुहम्मदकी भारी सेना और दूसरी तरफ योलुमकी फौज, दोनोके बीचमें पड़कर मरनेकी जगह बुखारियोंने घर लौट जाना ही अधिक पसन्द किया। दीन मुहम्मदने इस प्रकार मेर्वपर अधिकार करके अपनेको वहाका खान घोषित किया, और वही रहते चालीस वर्षकी उमरमे ९६०हि० (१८XII१५५२–८ XI १५५३ ई०) मे मरा। उसने अपने द्वितीय पुत्र अबुल मुहम्मदको अपना कलखान (युवराज) बनाया था, जो उसके बाद मेर्वकी गद्दीपर बैठा।

एक समय अबुल मुहम्मदके पुत्र जलालने खुरासानपर आक्रमण किया। प्रतिरोधके लिये ईरानियोंने मशहदमे सेना जमा की। दोनों ओरकी सेनाओंमे लडाई हुई, जिसमे अपने दस हजार उज्बेकोके साथ जलाल मारा गया। अबुल मुहम्मदको अपने इकलोते पुत्रके मारे जानेका भारी सदमा हुआ, जिसका इलाज हकीमोंने दूसरा पुत्र प्राप्त करना बतलाया। मेर्वकी एक लोली (डोम या रोमनी) स्त्री बीबीजेह तम्बुरिन बजा और चित्र खीचकर जीविका कमाती थी। उसने ब्याह नही किया था, किन्तु उसके पास चार सालका लड़का था। उसी लड़केको लाकर घोषित कर दिया गया कि, यह अबुल मुहम्मदका लड़का है। अबुल मुहम्मदने उसका नाम नूर मुहम्मद रखा। यही नूर मुहम्मद अबुलके मरनेके बाद मेर्वके गद्दीपर बैठा। कितने ही सालों बाद हाजिमके पुत्रोंने यह कहते हुये उसपर आक्रमण किया—"हम लोली (वेश्या) के लडकेको नही मान सकते।" इसपर नूर मुहम्मदने बुखारावालोके पास सदेश भेजा—"मै तुम्हारी ओरसे राज्यपाल होनेके लिये तैयार हू।" अब्दुल्ला खानने आकर मेर्वको तो ले लिया, लेकिन साथ ही नूर मुहम्मदको अंगूठा दिखला दिया। नूर अब उरगजमे हाजिमकी शरणमें गया। अवानेक-पुत्र अली सुल्तानको उरगंज-हजारास्प-कातके अतिरिक्त निसा, अबीवर्द और तागबुई भी मिले थे। वहासे वह बसत और गर्मियोंमें बराबर खुरासानपर आक्रमण करके पीलकुरुकी, तरशीज, तरबेत, जाम और खारकारमें लूट-मार मचाया करता था। अली सुल्तानसे नूर मुहम्मदमे जुरजान, जार्जरूम, कराइलू और अस्त्राबादको जीत लिया। अब उसके पास चालीस हजार सेना थी। वह अपने प्रत्येक उज्बेकको प्रतिवर्ष सोलह भेड़े देता था, जिसके लिये तुर्कमानोसे कुछ कर लेता, कुछ ईरानकी लूटमेंसे, और एक पचमाश भाग अपने पाससे भी देता था। एक बार उसने ईरानियोंकी पंद्रह हजार सेनाको हराकर पाच हजार घोड़े पकड़े थे। ईरानको इन्ही चढ़ाइयोंमे ९७६ हि० (२६ VI १५६८–१७ V१५६९ ई०)मे अली सुल्तानके मारे जानेके बाद उसका पुत्र सजर निसामें उसका उत्तराधिकारी हुआ, किन्तु पच्चीस वर्षकी आयुमें ही निस्संतान मर गया। अली सुल्तानके मरनेपर हाजिम खानने वेजिरको अपने भाई मुहम्मद सुल्तानको दे दिया और स्वयं जाकर उरगंजमें रहने लगा। तुर्कीके सुल्तान—जो सुन्नियोंका खलीफा भी था—का दूत मिलकर शियोंपर हमला करनेकी प्रेरणा देनेके लिये हिन्दुस्तान गया था। अब वह उसी बातके लिये बुखारा आया। बुखारासे वह उरगंज और मगिशल्कके रास्ते जब लौट रहा था, उसी समय हाजिमके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने उरगजमें उसे लूट लिया और मुश्किलसे यात्रा भरके लिये थोड़ासा पैसा छोड़ दिया। बुखाराका खान अब्दुल्ला इसपर नाराज हो गया। उधर कास्पियनके पश्चिमी तटका इलाका शिरवान तुर्कीके सुल्तानके हाथमे था। अन्तर्वेदके व्यापरियोंको उरगंजसे आगे मंगिशलक पहुंच जहाजसे कास्पियन पार कर शिरवानके रास्ते यात्रा करनी पड़ती थी, क्योंकि कास्पियनका दक्षिणी तट शियोंके हाथमें था, जहा सुन्नी व्यापारियोंके जान-मालकी खैरियत नहीं थी। उक्त घटनासे एक साल पहले हाजी किरतास एक बड़े कारवा और मक्काके तीर्थयात्रियोके साथ उरगज पहुंचा। उसे भी पुलाद सुल्तानके पुत्र बाबा सुल्तानने लूटकर

हाजिम मुहम्मद १०११ हि० (२१ VI १६०२–१२ V १६०३ ई०) में मरा।

जेन्किन्सनकी यात्रा—हाजिम मुहम्मदके शासनकालमें अंग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन खीवासे गुजरा था। उसके यात्रा-विवरणसे उस समयकी बहुतसी बातोंपर प्रकाश पडता है। जेन्किन्सनने १३ अप्रैल १५५८ ई०को अपने मालके साथ मास्को छोड़ा और १४ जुलाईको वह अस्त्राखान पहुचा। अपने मालके ढोनेके लिये वहां उसने बनी-बनाई नाव खरीदी, और कास्पियन समुद्रके उत्तरी तटसे होते यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके मुहानोंको बाई ओर छोडते वह २७ अगस्तको मगिशलकमें उतरा। उसके साथ और भी कितने ही ईरानी तथा तारतार व्यापारी अपनी नावोमे चल रहे थे। मगिशलकके राज्यपालने ऊंटोंका इन्तिजाम कर दिया। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उसे काफी भेट-पूजा देनी पड़ी। जेन्किन्सन अब अपना माल ले स्थल-मार्गसे वेजिर पहुचा। वह लिखता है—लोग बड़े नोचनेवाले है। मुझे प्रत्येक ऊंटके लिये तीन रूसी चमडे और चार लकड़ीके बर्त्तन देने पडे, राज्यपालको अलग नौ चमडे और चौदह दूसरी चीजें भेंट देनी पड़ी। जिस कारवामे जेन्किन्सन चल रहा था, उसमें हजार ऊट थे। पाच दिनकी यात्राके बाद वह मंगिशलकके उस इलाकेपर पहुंचा, जिसपर तेमूर सुल्तानका अधिकार था। सुल्तानने बड़ा अच्छा बर्ताव किया और जेन्किन्सनको मास और घोडीका दूध दिया। उसने उससे पंद्रह रूबलकी चीजे ली, लेकिन उसके बदलेमें एक घोडा इनाम दे अपने तम्बूमें अंग्रेज व्यापारीकी जियाफत भी की। वहासे रेगिस्तानके भीतर बीस दिनका रास्ता चलना पडा। खानेके लिये एक घोड़ा और एक ऊंट मारना पड़ा। पानी कभी दो दिनपर मिलता था, सो भी खारा-सा। अब कारवां कास्पियनकी एक खाडीपर पहुचा, जहाके तुर्कमान सरदारने धमकाकर पैसा वसूल किया। जेन्किन्सन लिखता है कि, इस समय (१५५८ ई०) वक्षु (आमू-दरिया) यहींपर कास्पियन-समुद्रमे गिरती है।

६ अक्तूबरको रवाना होकर तीन दिनकी यात्राके बाद वह शहर वेजिर (सेलीजर) में पहुचा। अजीम (हाजिम) खान अपने तीन भाइयोंके साथ यहीं रहता था। जेन्किन्सनने ९ अक्तूबर (१५५८ ई०)को खानसे भेंट की, और भेंटके अतिरिक्त रूसके जारका पत्र भी उसे दिया। खानने घोड़ेके मांस और दूधसे दावत कर, रास्तेके लिये सुरक्षा-पत्र भी दिया। वेजिरका दुर्ग एक ऊचे पहाड़पर था। खानका घर बहुत ऊबड़-खाबड और दुर्बल मिट्टीका था। लोग बहुत गरीब थे। दक्षिण का इलाका अधिक उर्वर था। उसने लिखा है—"यहां एक बढिया फल दोनी (तरबूजा) होता है, जो बहुत बडा और उसमें पानी भरा होता है। लोग खानेके बाद पेयकी जगह इसे खाते है। एक और भी फल है, जिसे खरबूजा कहते है, और वह खीरेके जैसा बड़ा पील रंगाका तथा मीठा होता है। एक और भी अनाज जेगुर (बाजरा) होता है, जिसके डठल बेतकी तरह ऊचे होते है और उसके सिरेपर चावलकी तरह दोनोंके गुच्छे लगते है, मानो छोहारोंके लच्छे है। सिचाईके लिये वक्षुसे इतना पानी ले लिया गया है, कि नदी अब कास्पियनतक नही पहुचती।"

वेजिरसे दो दिन चलनेके बाद जेन्किन्सन उरगंज पहुंचा। यहा भी कर देना पड़ा। जेन्किन्सनने हाजिमके भाई अली सुल्तानसे भेंट की, जिसने गृहयुद्ध करते सात वर्षोमें चार शहर लिये और खोये। युद्धके कारण यहा बहुत कम व्यापारी आते थे, इसलिये मालकी बिक्री अच्छी नहीं थी। जेन्किन्सन केवल चार केरसियोको बेच सका। यहासे कास्पियनतकका प्रदेश तुर्कमानोका देश कहा जाता था, और शासक थे हाजिम खान और उसके भाई। "जो भिन्न-भिन्न माताओ और कुछ दासियोके पुत्र होनेसे एक-दूसरेसे ईर्ष्या करते, एक-दूसरेको खतम करनेकी कोशिश करते है।" आपसके युद्धमें उनमेंसे हारकर कोई बच निकलता, तो आमतौरसे साथ ही उसके अनुचर भी रेगिस्तानमें चले जाते, और रास्तेके पानी लेनेके पड़ावोंपर छापा मारते। इसी प्रकार वह कारवाको लूटते रहते, जबतक कि फिर वह घरेलू सघर्षके लिये अपनेको काफी मजबूत न कर लेतें।

उरगंज छोड़कर वक्षुके किनारे-किनारे सौ मील चलनेपर जेन्किन्सन एक स्थानपर पहुंचा, जिसको वह आरदोक कहता है—यहां तेज प्रवाहवाली धारा थी, जो कि वक्षुको छोड़नेके बाद हजार मीलपर उत्तरमे जा भूमिमें विलीन हो जाती है, फिर प्रकट होकर खिताई समुद्रमें जाकर

मिलती हैं। आगे जेन्किन्सनको कात नगर मिला। वहाके लोग हाजिमके भाई सरामेत सुल्तानकी प्रजा थे। जेन्किन्सनने सुल्तानको अपने प्रत्येक ऊंट मालके लिये एक रूसी लाल चमड़ा और दूसरे कर दिये। सुल्तानने उसके साथ प्रतिरक्षी भेज दिये। "प्रतिरक्षी भी खाऊमल थे। तीन दिन जानेके बाद उन्होंने और आगे जानेके लिये भारी रकम मांगी और न देनेपर वह लौट गये। फिर कारवांके खोजे (स्वामी) वही मुकाम करनेपर जोर देकर भेड़की पसलीकी हड्डीसे शुभाशुभ सगुन विचारने लगे। वह इस हड्डीको जलाकर उसकी राखकी स्याही बनाकर कुछ अक्षर लिख रहे थे।......इसी समय एक निर्वासित राजकुमारने अपने कुछ अनुयायियोके साथ जबर्दस्त आक्रमण किया, लेकिन व्यापरियोंने भी उसका मुकाबिला किया।" जेन्किन्सनके पास कुछ बन्दूकें थी, जिन्होंने इस समय बडा काम दिया। लोगोंने अपने पशुओं और सन्दूकोंका मोर्चा बना लिया, और उसके पीछेसे गोलिया दागी जाने लगी। रातके वक्तमें डाकू सुल्तानने संदेश भेजा, कि हम मुसलमानोको छोड़ देंगे, यदि तुम अपने क्रिस्तान साथियोको हमारे हाथमे दे दो। लेकिन उसका कोई फल नही हुआ अन्तमें कुछ भेंट और एक ऊट देकर जान छुडानी पड़ी। यात्री फिर वहासे बुखारा गये। जब व्यापार करके जेन्किन्सन उरगज लौटा, तो रूसके जारके पास जानेवाले हाजिम खानके चार दूत भी उसके साथ हो लिये। १५६५ ई०में जार फ्योदरके पास खीवासे नये राजदूत भेजे गये थे।

११. अरब मुहम्मद, हाजिम-पुत्र (१६०२–२१ ई०)

अरब मुहम्मद जहांगीरका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अस्फन्दयारको हजारास्पकी जगह कातका इलाका दिया। कुछ समय बाद १६०२ ई०में यायिक-तटनिवासी हजार रूसी कसाकोंने आकर उरगंजको लूटा और हजारसे अधिक नागरिकोंको मार डाला। वह लूटे मालको हजार गाड़ियोंपर ले चले। अरब मुहम्मदने उनके रास्तेको काट दिया, जिससे कसाक रेगिस्तानमें भटक गये, जहां पानीके अभावके कारण उन्होंने पशुओंका खून पी प्यास बुझाई। पांच दिनतक उन्हें खून भी नहीं मिला और ऊपरसे उज्बेक चारों ओरसे आक्रमण कर रहे थे। एक बार उज्बेक पीछेसे उनकी गाडियोंके मोर्चेके भीतर घुस गये और उन्हे टुकड़े-टुकडे कर डालनेमें सफल हुये। सिर्फ एक सौ कसाक किसी तरह बचकर अरालके किनारे पहुंचे। उन्होंने तूकके किलेके पास अपना किला बनाया और कुछ समयतक वह मछली खाकर जीते रहे। अन्तमें अरब मुहम्मदने उनके किलेको दखल कर लिया।

पूर्वसे कल्मक-मंगोल अरालकी ओर पैर फैलाते हुये अब यहां भी आकर आक्रमण करने लगे। वह खोजाकुल और शेख जलील पर्वतके बीचमें पहुंचकर तूकतक उज्बेक डेरोंको लूटकर बूरीचीके रास्ते लौट गये। अरब मुहम्मदने पीछा करके माल और बंदियोंको छुड़ा लिया, लेकिन कल्मक हाथ नहीं आये। कुछ समय बाद नेमन कबीलेवालोंने इलबर्स खानकी संतान खुसरो सुल्तानको अपना खान बननेके लिये बुलाया, जिसने षड्यत्र किया, लेकिन परदा खुल जानेपर खुसरो और षड्यत्री नेता मारे गये। दो साल बाद फिर षड्यंत्र हुआ। इसके दस साल बाद (१६१५ई०) कल्मकोंने आकर बड़ी लूट-मार मचाई। सोलह साल राज्य करनेके बाद १६१८ ई०में हबश इलबर्सके दो सोलह और चौदह सालके पुत्र अरब मुहम्मदसे विद्रोह कर खीवासे उरगंजपर चढ़ आये। छोकरे भला इतनी हिम्मत कैसे करते, असलमें यह काम उनके अनचरोंका था, जिनकी संख्या लूटकी लालचसे बहुत बढ़ गई थी।

खीवाके खानोंमें इस तरहका विद्रोह और वंशोच्छेद असाधारण घटना नहीं समझी जाती थी, यह हम देख चुके है।

१०१३ हि० (३० V १६०४–२० IV १६०५ ई०)में (इतिहासकार अबुलगाजीके जन्मके एक साल पहले) अरब मुहम्मदने एक नहर खुदवाई, जो तूक, उरगंज होती अराल समुद्रमें गिरती थी। तुला (अक्तूबर-नवम्बर)मासके आते ही इस नहर को बन्द कर दिया जाता, और फसलके कट जानेपर फिर खोल दिया जाता था। कुछ सालों बाद यह एक तीरकी मारसे अधिक चौड़ी कर दी गई।

इस नहरके कारण खेतीको इतना फायदा हुआ, कि गेहूं बहुत सस्ता हो गया। सारे इलाकेमें गेहूंकी फसल खड़ी दिखलाई पडती थी। दोनों खान-पुत्रोंने अन्न-भंडारोंको खोलकर अनाजको गरीबोंमें बांटना शुरू किया। अन्तमें उन्हे वेजिर शहर और उस इलाकेमें रहनेवाले तुर्कमानोंको देकर समझौता किया गया। दोनों चार हजार अनुयायियोंके साथ बापसे मिलकर वेजिरमे जा पाच साल तक शातिपूर्वक रहे। छठे साल (१६२० ई०) जब खान उरगंजमें था, उसी समय इलबर्सने आक्रमण करके खीवा ले अपने पाच सौ आदमियोको भेजकर बापको भी बन्दी बना लिया। खजाना लूटकर उसने "कुत्तों और चिड़ियोमे बिखेर दिया, और बेगोंको निकाल बाहर किया।" इसके बाद वह वेजिर लोट गया। अब अस्फन्दयार और अबुलगाजी (प्रसिद्ध इतिहासकार) बापके सहायक बन गये, और दोनोंने मिलकर इलबर्स सुल्तानके ऊपर आक्रमण किया। इलबर्स फिर (उश्त-उर्त)की ओर भागा, और उसका माल-असबाब लूट लिया गया। अबुलगाजीने बापको बहुत समझाया, कि विद्रोहियोको इसी वक्त नष्ट कर देना चाहिये, लेकिन बापका सहालकार अतालीक हुसेन हाजी भीतरसे विद्रोहियोंके पक्षमें था। उसने वैसा नही होने दिया। अस्फन्दयार भी बहुत आगे बढ़ना नही चाहता था। हबश और इलबर्स दोनों अबुलगाजीके भारी शत्रु थे। इस अपूर्ण अभियानके बाद अरब मुहम्मद खान खीवा लौटा, अस्फन्दयार हजारास्प गया और अबुलगाजीको कात मिला। पाच महीने-बाद अब खानको अक्ल आई, और उसने अपने पुत्रोंको खुले तौरसे आक्रमण करके दंड देना चाहा। अली सुल्तानकी खुदवाई नहर तस्ली-यामिशके तटपर लड़ाई हुई। खान हारकर बदी बना। हबशने बापको अधा कर तीन बीबियों और दो छोटे पुत्रों-के साथ उसे छोड दिया। अब हबश अस्फन्दयारके पीछे पडा। अबुलगाजी डरके मारे कात होने बुखारा भाग गया। अस्फन्दयार अपने दूसरे दो भाइयो शरीफ और ख्वारेज्मशाहके साथ हजारास्पमे किलाबन्द हो गया—यह १०३० हि० (२६ XI १६२०–१७ X १६२१ ई०)की बात है। चालीस दिनके मुहासिरेके बाद दोनों पक्षोंमे समझौता हुआ—अस्फन्दयार मक्का चला जाये, शरीफ मुहम्मदको कात मिले और ख्वारेज्मशाह तथा अफगान दोनो छोटे भाई बाप-माके साथ खीवामें रहे। अगले साल (१६२२ ई०) इलबर्सने बाप, अपने भाई ख्वारेज्मशाह और अस्फन्दयारके दो पुत्रोंको मरवा डाला और दूसरे भाई अफगानको मरवानेके लिये हबशके पास भेज दिया—लेकिन हबशने उसे रूस भेज दिया, जहां वह १६४८ ई०मे मरा। हाजिम सुल्तानकी लडकी अलतून खानिम—अफगानकी विधवा—ने कासिमोफमें अपनी बनवाई तकियामें पतिके शवको दफनाया।

१२. इस्फन्दयार, (अस्फ०) अरब-पुत्र (१६२२–४२ ई०)

यह शाहजहाका समकालीन था। ख्वारेज्ममे तुर्क और सरत दो जातियां बसती थीं। सरत पुराने बाशिन्दे ईरानी जातिके थे, और तुर्क जातिमें तुर्कमान पुराने कंगलियो या गूजोकी सतान थे, जिनका सलजूकों और उसमानअली तुर्कोंसे निकटका सम्बन्ध था। उज्बेक वहां मुहम्मद शैबानीके साथ आये थे। सरतोंका शासन उठे युग बीत गये थे, लेकिन तुर्कमानोंके पूर्वज सलजूक बहुत दिनोसे इस भूमिके शासक थे, इसलिये वह अब भी अपनेको स्वामी समझते थे। इसीलिये उनसे तथा नये स्वामी उज्बेकोंसे बराबर संघर्ष होता रहता था। यदि खान तुर्कमानोंका पक्ष करता, तो उज्बेक नाराज होते, उज्बेकोका करता, तो तुर्कमान शत्रु बन जाते। अरब मुहम्मदने यही गलती की थी, कि उसने दोनोंको संभालकर नही रक्खा। बापकी पराजयके बाद अस्फन्दयार शाह अब्बासके पास ईरान भाग गया और उससे सहायता लेकर देरून और बलखान पर्वतको लेनेमें सफल हुआ। यहीं तेके, सारिक और यामूत तुर्कमान कबीलोके तीन सौ जवान उससे आ मिले। उसने रातके वक्त वक्षु-तटपर तूक किलेके सामने पड़े हबशके डेरेपर छापा मारा। लेकिन हबश प्राण बचाकर इलबर्सके पास जानेमें सफल हुआ। इलाकोंका फिरसे बटवारा हुआ, जिसमे हबशको उरगंज और वेजिर (वजीर) और इलबर्सको खीवा-हजारास्प मिला। शरीफ और अबुलगाजीके अनुचरोने भी मदद दी थी, किन्तु हारकर अस्फन्दयारको मंगिशलक भागना पड़ा। अपने सहायक तीन हजार

तुर्कमानोंको लेकर फिर वह उरगंज पहुंचा, जहां बीस दिनतक लड़ाई होती रही। इलबर्स अन्तमें पकड़कर मार डाला गया। हबश पहले कराकल्पकोंमें भागा, फिर यम्बाके नोगाइयोंमें पहुंचा, जिन्होंने उसे पकड़कर अस्फन्दयारके पास भेज दिया और उसने भाईके खूनसे हाथ रग लिया। अस्फन्दयार उज्बेकोंके विरुद्ध तथा सरतों और तुर्कमानोंका पक्षपाती था। सरतोंसे लड़ाईमे मदद नहीं मिल सकती थी, किन्तु बड़े-बड़े धनी व्यापारी इन्हींमे थे, जिनसे धनकी बडी मदद मिलती थी।

१३. अबुलगाजी, अरब-पुत्र (१६४३–६३ ई०)

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक अबुलगाजी १०१४ हि० (१९ V १६०६–९ IV १६०५ ई०)में पैदा हुआ था। उसके बाप अरब मुहम्मद खानने उसी साल उरालके काफिर कसाक-रूसियोंको हराया था, इसीलिये बच्चेका नाम अबुल-गाजी (काफिरोसे लडनेवाला) रक्खा गया। इलबर्सके साथ बापकी लड़ाईमें वह दक्षिणपक्षका कमाडर था, जिसमे एकके बाद एक उसके तीन घोडे मारे गये। बापकी हार होनेपर वह एक अनुचरके साथ भाग निकला। शत्रु उसका पीछा कर रहे थे। आकर एक बाण मुंहमें लगा, जिससे जबडेकी हड्डी टूट गई। लेकिन वक्षु-तटके घने फरास (झाऊ)के जंगलोंमें वह छिपनेमें सफल हुआ। फिर अपने कवच और हथियारोंको फेंककर घोडेपर नदीमें कूद पड़ा। प्यासा घोडा पानी पीनेके लिये जरा रुकना चाहता था, लेकिन पीछा करनेवाले शत्रु बाण छोड़ रहे थे। कोडा नही था, कि घोड़ेको मारकर आगे बढ़ाये। घावके कारण मुहमें खून भरा हुआ था, अपने भारी कवचके कारण घोडा पानीमें डूबने लगा और नाक-कान ही थोड़े-थोड़े बाहर निकले हुये थे। इसी समय अबुलगाजीको बूढ़े सैनिककी बात याद आई—"चारजामेसे उतर एक पैरको रिकाबमें और दूसरेको घोड़ेकी पूंछपर डाल चारजामेके पिछले छोरको एक हाथसे पकड़े—दूसरे हाथसे लगामका इशारा करते चले, तो पानीसे भी बोझ हलका करनेमें सहारा मिलता है।" उसने ऐसा ही किया और वह सहीसलामत नदी पार हो गया। वह कात पहुचा। वहासे कितने ही आदमी, नये घोड़े और रसद ले वह समरकन्द पहुंचा, जहां इमामकुल्ली खानने उसका अच्छा स्वागत किया। इसके दो साल बाद भाई अस्फन्दयार खान घोषित हुआ। अबुलगाजी और शरीफ फिर देश लौट आये। अबुलगाजीको उरगंज और शरीफको वज़ीरके इलाके मिले। अस्फन्दयारने अपने पास खीवा, हज़ारास्प और कातको रक्खा। लेकिन देरतक शाति कहां रह सकती थी? जल्दी ही भाइयोंमें फिर झगड़ा उठा। अस्फन्दयार सरतों और तुर्कमानोंका पक्षपाती था, और उसके दोनों भाई उज्बेकोंके। फसल कट जानेके बाद १६२४ ई०में अबुलगाजी अस्फन्दयारसे मिलने खीवा गया। तीन दिन रहनेके बाद घोड़े कस लिये थे, इसी समय खानने हुक्म दिया, कि सभी नेमनों और उइगुरोंको कत्ल कर दिया जाय। बातकी बातमें सौ उज्बेक मार डाले गये। इतना ही नहीं हजारास्प और खस्तमीनारेसीमें डेरा डाले सभी खानभक्त उज्बेक बूढ़े-बच्चोंतक मार डाले गये, किसी नैमन और उइगुरको जीता नहीं छोड़ा गया। शरीफको इन दोनों कबीलोंको कत्ल करनेके लिये उरगंज भेजा गया, और अबुल-गाजीको मार डालनेकी गरजसे खीवामें रोक लिया गया। इसी समय उज्बेकोंने धमकी दी, कि यदि अबुलगाजीको नही छोड़ा गया, तो हम राज्य छोड़कर चले जायेंगे। छोड़ दिये जानेपर अबुलगाजीने उरगंज पहुंचकर उसे जनशून्य-सा पाया। वक्षु नदी पहले पाससे बहती थी, अब उसने अपनी पुरानी धार छोड़कर नई धारा पकड़ ली थी। अबुलगाजी तूकके किलेमें ठहरा, जहां शरीफ भी उससे आ मिला। दोनों भाइयोंके आसपास भारी सख्यामें उज्बेक जमा हो गये। उन्होंने तुर्कमानोंपर आक्रमण करनेका विचार किया, लेकिन इसका पता तुर्कमानबेक मुहम्मद हुसेनको लग गया, और वह अपने अनुयायियोंके साथ अस्फन्दयारके पास चला गया। अब दोनों भाई उज्बेकोंको लिये खीवापर चढ़े। खाईकानाक नहरके ऊपर बने ताशकुफ्रुक (पाषाणपुल)पर कितने ही भूखसे अधमरे तुर्कमान मिले, जिन्हें उन्होंने मार डाला। लेकिन इसी समय कल्मक-मंगोल उनके ऊपर आ पड़े और वह कितने ही उज्बेकोंको पकड़ ले गये। कल्मकोंका आतंक इतना छाया हुआ था, कि अबुलगाजीके कितनेही सहायक साथ छोड़ गये। खीवाके तुर्कमानोंको हिम्मत और मदद मिल गई। उन्होंने चदमीके पास

छ दिनतक युद्ध किया, लेकिन कोई फैसला नही हुआ, इसपर घर लौट जानेकी सलाह हुई। इसी समय अस्फन्दयारने तुर्कमानोंको बढावा दिया। यद्यपि तुर्कमानोंकी सख्या उज्बेकोंसे दसगुनी थी, लेकिन तो भी युद्धका परिणाम अनिश्चित ही रहा। अस्फन्दयारने गर्मिया खीवामें बिताईं, अबुलगाजी और शरीफ उरगंजमें रहे। १६२८-२९ ई०मे एक पुच्छलतारा निकल रहा था, जिसे भारी असगुन माना जाता था। उज्बेकोमेंसे कुछ अन्तर्वेदकी ओर भाग गये और कुछ तुर्किस्तानमे, इस प्रकार उनके निम्न तीन बड़े-बड़े भाग हुये—(१) बुखाराकी ओर जानेवाले, (२) मगीतों (नोगाइयों)मे जानेवाले, (३) कजाकोंमें जानेवाले। अबुलगाजी उज्बेकोंके उस गिरोहके साथ था, जो कजाकोंकी भूमिमें गया और शरीफ बुखारावालोंके साथ। तीन साल बाद (१६३१-३२ ई०) उनमेंसे दो हजार परिवार फिर ख्वारेज्म लौट आये, जिनमें आठ सौ बुखारावाले परिवार भी आकर मिल गये। अब यह लोग अरालमें सिरके गिरनेवाले इलाकेमें पशुचारण करने लगे। अस्फन्दयारने उन्हें चैनसे नही रहने दिया और आक्रमण करके उनका नाम-निशान मिटा दिया।

अबुलगाजी कजाकखान इशिमके पास जाकर रहने लगा। वहां उसका परिचय राजकुमार तुरसुनसे हुआ, जिसके साथ वह दो साल ताशकन्दमें जाकर रहा। इशिमने तुरसुनको उसी समय मार डाला, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुल्लीके पास बुखारा जाने दिया। यहा उसे अस्फन्दयारके अत्याचारोंसे ऊब गये ख्वारेज्मी तुर्कमानोंका निमंत्रण मिला और वह खीवा पहुचा। अस्फन्दयार हजारास्प लौट गया था। इसी बीच शरीफ भी अबुलगाजीसे आ मिला और दोनोंने मिलकर अस्फन्दयारपर आक्रमण करके उसे हरा दिया। लेकिन इतनेसे सघर्ष खतम नही हुआ। फिर कितनी ही लड़ाइयां और लूटपाट होती रही। एक बार अबुलगाजीको खुरासानमे बेगलरबेगने पकडकर हमदानमे शाह अब्बास I के पौत्र शाह शफीके पास भेज दिया, जिसने उसे अस्पहानमें नजरबन्द कर दिया—अबुलगाजीको दस हजार तंका पेंशन और रहनेके लिये मकान मिला था। १६३०-४० ई०तक अबुलगाजी इस तरह ईरानमें बंदी रहा। उसने धीरे-धीरे आठ घोड़े खरीदकर भिन्न-भिन्न जगहोंमें छिपा रक्खे। यही उसके कुछ विश्वासपात्र नौकर भी आ मिले। अबुलगाजी स्वयं एक नौकर-का साईस बना। घोड़े तैयार कर लिये गये थे। नगाड़खानेमे जिस वक्त मध्य-रात्रिका नगाड़ा बज रहा था, उसी वक्त वह सड़कसे होकर निकल पड़ा। द्वारपर पहुचकर उसने चिल्लाकर कहा—"खोलो दरवाजा"। दरवाजा खुल गया और अबुलगाजी अपने साथियोंके साथ चलता बना। बोस्तामके पास जब वह एक कब्रिस्तानसे गुजर रहा था, तो वहा कोई मुर्दा दफन किया जा रहा था। अबुलगाजीने वहीं एक गरीब सैयदसे बातचीत करके रसद तथा तीन घोडोके बदलनेका प्रबन्ध किया। गलतीसे उसने मर्वका रास्ता पूछ लिया, जिससे लोगोंको संदेह हो गया, कि यह भगोड़े उज्बेक कैदी है। प्रत्युत्पन्नमति अबुलगाजीने झट बहाना कर दिया, कि हम शाहके चिरकासी मुहम्मद कुल्लीबेग है—और एक प्रसिद्ध मुल्ला—से मिलने जा रहे है। इस तरह चिरकामी मुहम्मद कुल्लीबेग बनकर अबुलगाजीकी जान बची। आगे जाकर जब वह रेगिस्तानके छोरपर पहुचे, तो मगिशलकके कितने ही भगोड़े तुर्कमान आ मिले। उनसे मालूम हुआ, कि वोल्गाकी ओरके कल्मकोंने आक्रमण किया था, वह बहुतसे पशुओंको लूट ले गये। अबुलगाजीने अपना परिचय दिया। तुर्कमानोंने उसे अपने पास जाड़ा बितानेके लिये निमंत्रित किया। जाड़ोंके बाद वसंतमें अबुलगाजीको तेक्के (तुर्कमान) कबीले—जो कास्पियनके पूर्वी तटके पासके बलखान पहाडमे रहते थे—के पास जानेको कहा। वहा जाकर अबुलगाजीने दो साल बिताये। फिर वह मंगिशलक पहुचा, जो कि अब कल्मकोके अधीन था। कल्मक सरदारको जब बात मालूम हुई, तो उसने अबुलगाजीको बुलाकर सालभर नजरबन्द रक्खा। अन्तमें १६४२ ई०मे वह उरगंज लौटनेमें सफल हुआ। इसके छ महीने बाद अस्फन्दयार मर गया, शरीफ मुहम्मद दो साल पहले ही मर चुका था, इसलिये ख्वारेज्मकी गद्दी अब अबुलगाजी बहादुरके लिये हाजिर थी।

जहां खूनखराबी और लूट-मारको खेल समझा जाता हो, और हर एक बातका फैसला केवल तलवारसे किया जाता हो, वहां जीवन कैसे व्यवस्थित रह सकता है? आश्चर्य तो यह है, कि इतनी

मारकाट रहनेपर भी रूसके साथ होनेवाला व्यापार अब भी बन्द नहीं था। व्यापार सचमुच ही बडी-बडी लड़ाइयोंके भीतरसे भी अपना रास्ता निकाल लेता है। दोनों लड़नेवाले सरदार भेंट-पूजा लेकर व्यापारीका रास्ता छोड़ देते हैं। ख्वारेज्ममें बड़ी अशान्ति थी, जब कि अस्फन्दयारकी मौतके सालभर बाद अबुलगाजी अरालके उसी इलाकेमें खान घोषित हुआ, जहापर वक्षु अराल-समुद्रमें गिरती है। इस इलाकेमें प्रायः सारे ही उज्बेक बसते थे। ख्वारेज्मके बाकी भागोंमें अस्फन्दयारके दो पुत्रों युशन और अशरफके अनुयायी तुर्कमान रहते थे। खुतबा उस समय बुखाराके खान नादिर महम्मदके नामसे पढा जाता था, जिसके पास अराफ जामिनके तौरपर रहता था। अबुलगाजीने दो बार चढाई करके खीवाके उपनगरको लूटा। नादिर मुहम्मदने खीवा और हजारास्पमें अपने राज्यपाल नियुक्त किये थे और अस्फन्दयारकी विधवाको उसके एक पुत्र और कन्याके साथ करशीमें रहनेके लिये भेज दिया था। बुखारी राज्यपाल वस्तुतः सैनिक कमांडर था, नागरिक शासन अस्फन्दयारद्वारा नियुक्त तुर्कमान अमलोंके हाथमें था। इसी समय बुखारासे खानका पौत्र तथा खुसरो सुल्तानका पुत्र कासिम सुल्तान निगरानीके लिये ख्वारेज्म आया, किन्तु वह तुर्कमान अमलोंसे छेड़खानी नहीं करता था। कासिमके आनेकी खबर सुनकर अबुलगाजीने और सेना जमाकर खीवापर चढ़ाई की। बुखारी सेना बहुत अधिक थी, जिससे लड़नेके लिये अबुलगाजीकी सेना कई टुकड़ियोंमें बंट गई। खीवाके हजार सैनिकोंमें आठ सौ कवच-शिरस्त्राणसे इस तरह ढंकेहुये थे, कि उनकी सिर्फ आंखें दिखलाई पड़ती थीं। अबुलगाजीके आदमियोंमेंसे केवल पांच कवचधारी थे। लेकिन अबुलगाजीने बहुत अच्छी तरहसे व्यूह-रचना की। लड़ाईका फैसला होनेसे पहले ही याकूब तुपितको भेजकर कासिमको बुखारा बुला लिया गया। थोडे समय बाद नादिर स्वयं बुखाराका खान नहीं रहा और उसके बेकों (अमीरों) ने उसके बेटे अब्दुल अजीजको तख्तपर बैठाया। खीवामें नियुक्त बुखारी सेना भी अब भाग गई और १६४४ ई०में अराल-तटसे आकर अबुलगाजीने खीवापर अधिकार कर लिया। अबुलगाजीने सार्वजनिक क्षमादानकी घोषणा करतेहुये भगोड़े तुर्कमानोंको लौटनेके लिये कहा। भगोड़े तुर्कमानोंके सरदार गुलाम बहादुर, दीन मुहम्मद, उनउनबेगी और उरुसबेगीने हजारास्पके पासके रेगिस्तानमें डेरा डालकर अपने अक-शक्कालों (जेठों) को भेज आत्म-समर्पण किया। खानके वचन देकर बुलानेपर वह आये थे, लेकिन जियाफतमें खाना शुरू करनेके समय ही अबुलगाजीके हुक्मसे उनका कत्लेआम शुरू हुआ। तुर्कमान भारी संख्यामें मारे गये, माल-असबाब लूट लिया गया और उनके बीबी-बच्चे दास बना दिये गये। इस हत्याकांडके बाद अबुलगाजी खीवा लौटा, और थोड़े समय बाद उसने तेयेनमें तुर्कमानोंके एक दूसरे समूहपर आक्रमण करके उन्हें लूटा-मारा। यहीं खीवा और बलखके भगोड़ोंने बामे-बुरनियामें पनाह लेनेके लिये एक पत्थरका किला बनाया था। उन्होंने अपने परिवारको कराकश्ती भेज दिया। उनपर भी आक्रमण करके अबुलगाजीने एक-एक आदमीको मार डाला, और लगे हाथों कराकश्तीमें पड़े उनके डेरोंको भी लूट लिया। लेकिन मंगोल कोशोत (कलमक) ख्वारेज्मके लिये अब एक भारी समस्या हो उठे थे। १६४८ ई०में अबुलगाजीने उन्हें हराया, तो भी व्यापार करनेके लिये आये तोरगुत (मंगोल) सरदार बायनको सुरक्षित घर जाने दिया। १६५१ ई०में अबुलगाजी उनके सरदारके साथ बैराज तुर्कमानोंको नष्ट कर औरतों-बच्चोंको पकड़ ले गया। अगले साल तूजके अमीरों और सारिक तुर्कमानोंकी बारी आई, इसी साल तोरगुत (वोल्गा) कल्मकोंने हजारास्पके पास लूट-मार की, जिन्हें अबुलगाजीने भगाकर बहुत दूरतक पीछा किया।

इस प्रकार कुछ सालोंकी सरगरमीके बाद अबुलगाजीने सभी तुर्कमानोंको दबाकर कितने ही समय तक शांतिपूर्वक राज्य किया। १०४६ हि० (५ VI १६३६–२६ VI १६३७ ई०) में उसके भाई शरीफके दामाद सुभानकुलीने अपने भाई अब्दुल अजीज खान (बुखारा) के खिलाफ मदद मांगी। बत्तीस ख्वारेज्मी कुमारोंके खूनका बदला लेनेका यह अच्छा मौका था। अबुलगाजीने मदद दी और उसके सेनापति बेककुली इरनेकने कराकूलके इलाकेको लूट-मारकर उजाड़ दिया और वह बुखाराके पासके गांव सुइउनिचबालातक जाकर कुकेर्देलिक लौट आया। फिर उसी साल बुखारी सेनाको

हराकर कराकुलको जला चारजूयके इलाकेको भी उसने बरबाद किया। कुछ महीने बाद (१६५४-५५ ई०) वह याइजी इलाकेको नेरेजेमतक लूटते कराकुल होते भारी सख्यामे युद्धबदियोंको लिये खीवा लौटा। यह सब देखते हुये भी अब्दुल अजीज खानको सामने आनेकी हिम्मत नहीं हुई। १०६५ हि० (११ XI १६५४–२ X १६५५ ई०) में ही ख्वारेज्मियोंने करमीनापर अधिकार करके लूटा। इन लड़ाइयोंमे अबुलगाजी स्वय शामिल होता था। एक बार खतरेसे बचानेके उपलक्षमें अबुलगाजीने अपने पुत्र अनुशा (अनुशाह) को एक झडा, एक सेना तथा हजारास्पकी कमांड प्रदान की। अबुलगाजीने १६५८ ई०मे बरदंजा इलाकेको लूटा, जिसमे कि बुखारा शहर है। १६६१ ई०में उसने फिर बुखारा इलाकेको लूटा। इस तरह अपने सहधर्मियोंको अनेक बार लूटने-मारनेके बाद उसका ख्याल काफिरोंको लूटकर पुण्य कमानेका हुआ। इसके लिये उसकी नजर ईरानी किजिल-वासों और वोल्गाके पासवाले कल्मकोंपर पड़ी। उसने दूतद्वारा अब्दुल अजीज खानके पास सुलहका प्रस्ताव भेजा, और शासनका काम अनुशाको सौंप दिया। लेकिन उसे पुण्य-अर्जनका अवसर नही मिला और घोर युद्ध तथा अशांतिके बीस सालके शासनके बाद वह १०७४ हि० (५ VIII १६६३–२५ VI १६६४ ई०)में मर गया। एक तरफ वह खूनका प्यासा निपट श्वापद था, तो दूसरी तरफ उसकी लेखनीने एक बड़े ही सुन्दर इतिहास-ग्रथको हमारे लिये छोड़ा। अपने समकालीन औरंगजेबके कितने ही अवगुण उसमें भी थे।

१४. अनुशा मुहम्मद बहादुर, अबुलगाजी-पुत्र (१६६३–८६ ई०)

बापने बुखाराके साथ मैत्री कर ली थी, लेकिन बेटा उसे माननेके लिये तैयार नही था। उसने बुखाराके नजदीक जूयेबारके खोजोंको जाकर लूटा। उस समय अब्दुल-अजीज खान करमीनामें था। खबर सुनते ही वह दौड़ा। आधी रातको जब वहां पहुचा, उस समय नगर ख्वारेज्मियोके हाथमें था। केवल चालीस दासोंको लिये उसने रक्षि-सैनिकोके ऊपर पड़ अपने लिये रास्ता बनाया, और लड़ते-लड़ते वह आर्क (किले)में जा पहुचा। उसने ख्वारेज्मियोके कत्ले-आमका हुक्म दे दिया। उज्बेकों, ताजिकों या विदेशी व्यापारियोंमें जिनके हाथमे भी हथियार था, सभी शत्रुओंके ऊपर टूट पड़े—नगर के बाहर जानेवाले सारे रास्ते बाड़े खड़ी करके बन्द कर दिये गये थे। ख्वारेज्मियोंका भीषण संहार हुआ, लेकिन अनुशा एक छोटी-सी टुकड़ीके साथ भागकर ख्वारेज्म पहुंचनेमें सफल हुआ। इस मारके कारण थोड़ी देरके लिये अनुशाकी हिम्मत टूट गई।

यद्यपि अब्दुल अजीज खानने ख्वारेज्मियोंके आक्रमणका सफल प्रतिरोध किया, लेकिन तब भी १६८० ई०में अब्दुल अजीजको सुभानकुल्लीके लिये गद्दी खाली करनी पड़ी। सुभानका आरम्भिक शासन बेटोंके विद्रोहके कारण कमजोर था, इसलिये अनुशाको फिर हिम्मत हुई, और उसने १६८३ ई०में आक्रमण करके नगरों और गावोंको बुखारा शहरके आसपासतक ध्वस्त कर दिया और बहुत से माल और युद्धबंदियोंके साथ लौट गया। सुभानने हाल हीमें विद्रोह करनेवाले अपने पुत्र सादिकको सहायताके लिये बुलाया, लेकिन रास्तेमें उसने सुना, कि अनुशाने खुरासानपर आक्रमण करके वहां अपने नामका सिक्का और खुतबा चलाया है। हिसार (ताजिकिस्तान) और खोजन्दके अमीर भी अब खुली तौरसे सुभानकुल्लीसे विद्रोही बन गये और उसके कितने ही दरबारी भी अनुशाके पक्षमें हो गये। यह स्थिति देखकर सादिकने बुखारा जानेकी जगह लौटकर बलखकी रक्षा करना अधिक पसन्द किया। इसपर खानने बदख्शाके राज्यपाल महमद बी अतालिकको बुलाया, जिसने गिज्दुवानमें अनुशाकी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया, यह हम पहले बतला चुके हैं। अगले साल (१६८५ ई०) खानको बलखके झगड़ेमें फंसा देखकर बुखाराके द्वारपर अनुशा फिर आया, किन्तु मुहम्मदजान अतालीकने बलखसे आकर फिर उसे हरा दिया। इसके कुछ समयबाद जब सुभानकुल्ली मशहदमें तीर्थ-यात्राके लिये गया था, तो अनुशाने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण किया, लेकिन लोगोंने एक होकर भयंकर हत्याके साथ ख्वारेज्मियोंको हटनेके लिये मजबूर किया—

इस संघर्षमें बहुतसे ख्वारेज्मी नेता भी मारे गये। अनुशा फिर चढ़ाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन अमीरोंने मना करते हुए कहा, कि कल्मक बड़ी सेना लेकर हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहे है, उनसे लड़नेके लिये एरेंक (औरग) को सेनाका संचालक बनाकर भेजो। सेना हाथमें आते ही एरेंकने बापको पकड़ लिया और लाल लोहेसे दागकर उसे अधा बना तख्तसे उतार दिया।

१५. मुहम्मद एरेंक, औरंग, अनुशा-पुत्र (१६८६-८७ ई०)

ख्वारेज्मके दरबारमें भी कितने ही अमीर सुभानकुल्लीके पक्षमें थे । एरेंकने सुभान-कुल्लीके पक्षवाले अमीरोंको देश-निकाला दे दिया, फिर बुखारी सेनाको खुरासानमें गई जानकर बुखारापर चढ़ाई की। सुभानकुल्लीने दस दिनतक नगरकी रक्षा की, फिर महमूद बी अतालीक आ गया, जिसने बुखाराके नगर-प्राकारके नीचे ख्वारेज्मियोको हरा उनमेसे बहुतोको बन्दी बना लिया। इस बीच सुभानपक्षी अमीरोने उरगंजमें षड्यंत्र कर रखा और लौटते ही एरेंकको जहर देकर मार डाला।

१६. शाहनियाज खान (१६८७-१७०२ ई०)

ख्वारेज्मके खानोंका वंश गोत्र-बधके लिये हदसे अधिक बदनाम हो गया था, जिसके कारण वहांके अमीर उन्हें पसन्द नहीं करते थे, इसलिये एरेंकके मरनेके बाद विद्रोहियोंने सुभानकुल्लीके पास कोई शासक प्रदान करनेके लिये अपना शिष्टमंडल भेजा। सुभानकुल्लीने शाहनियाज इशिक आकाको राज्यपाल बनाकर भेज सिक्का तथा खुतबा अपने नामसे जारी कराया। सुभानका शासन कई सालोंतक रहा। उसने १७०० ई०में रूसी जार पीतर I के पास दूत भेजकर प्रार्थना की, कि हमारे देशको अपने संरक्षणमें ले लो। उसी साल ३० जुलाईको पत्रद्वारा पीतरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। १७०२ ई०में सुभानकी मृत्युके बाद, जान पड़ता है, शाहनियाजका शासन भी खतम हो गया।

१७. अरब मुहम्मद II, अनुशा-पुत्र (१७०२ ई०)

१७०२ ई०में पीतर I ने एक मित्रतापूर्ण संदेश भेजकर अरब मुहम्मद और उसके लोगोंको अपनी प्रजाके तौरपर स्वीकार किया, इस प्रकार हम देख रहे हैं कि औरंगजेबके शासनके अन्तिम समयमें रूसी जारकी बांह ख्वारेज्मतक पहुच चुकी थी।

१८. हाजी मुहम्मद बहादुर, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

इसके बारेमें इतना ही मालूम है, कि १७१४ ई०में इसका दूत पीतरबुर्गमें पीतर I के दरबारमें पहुंचा था।

१९. यादगार, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

यह १७१४ ई० में मरा था। जान पड़ता है, यह अधिक समयतक राज्य नहीं कर पाया। इसके साथ बेरेका खानकी संतानोंका शासन ख्वारेज्ममें खतम हो गया, और उनका स्थान बाहरसे नये-नये आते खानोंने लिया।

खीवाखान-वंशवृक्ष
(१५१५–१७१४ ई०)
जूछि
शैबान
यादगार
बेरेक
अबलेक
अमीनेक
बलबर्स
१. इलबर्स (१५१५)
३ हसनकुल्ली
२. सु० हाजी
४. सोफियान
५. बुजुगा
६. अवानेक
७. कल
८. अकताई (१५४६)
९. दोस्त (–१५५६)
दीन मु० (१५३९–४६)
१०. हाजी मु० (१५५६–१६०२)
११. अरब मु० (१६०२–२१)
१२. इस्फन्दयार (१६२२–४२)
१३. अबुलगाजी (१६४३–६३)
१४. अनुशा (१६६३–८६)
१५. एरेक (१६८६–८७)
१६. शाहनियाज (१६८७–१७०२)
१७. अरब मु० (१७०२)
१८. हाजी मु० (१७१४)
१९. यादगार (१७१४)
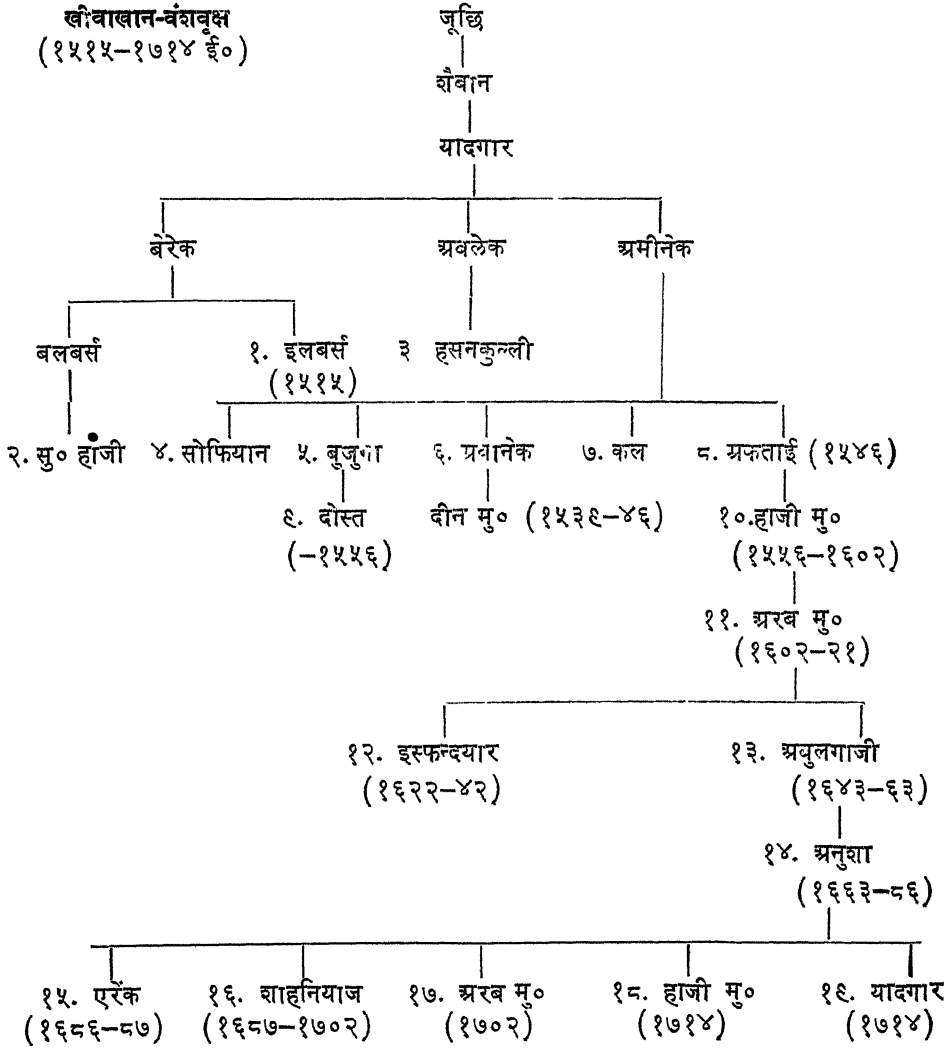
भाग ३

उत्तरापथ

अध्याय १

रूसका प्रसार

(१५९८–१८०१ ई०)

१. बीचके जार

१. बोरिस गदुनोफ (१५९८-१६०५ ई०)

१६वी सदीके अन्ततक रोरिक-वंशके नेतृत्वमें रूसका किस तरहसे एकीकरण और प्रसार हुआ, इसके बारेमें हम कह आये है। रूरिकवंशी अन्तिम जार फ्योदोर इवान-पुत्रके मरनेके साथ १५९८ ई०में रूरिक-वंशके खतम होनेपर बोरिस गदुनोफ जार बना। विवाह-संबंध तथा फ्योदोर-के समय शासनकी बागडोर हाथमें रखनेके कारण गदुनोफको कठिनाई नही हुई और १५९८ ई० में "जेम्स्की सबोर" (राष्ट्रीय परिषद्)मे एकत्रित सामन्तों और व्यापारियोके बहुमतने बोरिस गदुनोफको मास्कोका जार निर्वाचित किया। बोरिसने इवानIVकी नीतिपर चलते हुये देशमे व्यवस्था कायम रखनेकी सफल कोशिश की। पुराने राजुलों और सामन्तोंके परिवार हमेशा देशको विकेन्द्रित करनेकी कोशिश करते थे, इसलिये इवानIIIकी तरह गदुनोफको भी उन्हें कड़ाईसे दबाना पड़ा। निकिता रोमन-पुत्र और उसके परिवारवाले—जो पीछे रोमनोफके नामसे प्रसिद्ध हुये—गदुनोफके लिये सबसे अधिक चिंताके कारण थे। रोमनोफोंका संबंध जार फ्योदोरसे था, और नागरिकोंमें उनके मुखिया फ्योदोर निकित-पुत्रके बहुतसे अनुयायी थे। गदुनोफने गुप्त सूचनाओंके बलपर उनपर षड्यंत्र करनेका आरोप लगाया, और सभी भाइयोंको उत्तरकी ओर निर्वासित कर दिया। फ्योदोर रोम-नोफ इसी समय पापा फिलारेतके नामसे साधु बन गया। अपने भूमिपति शत्रुओंको गदुनोफने दबा दिया, लेकिन इसी समय किसान-विद्रोहके रूपमे दूसरा भारी खतरा उठ खड़ा हुआ।

१६०१ ई०में रूसमें अकाल पड़ गया—पहले बहुत वर्षा हुई, फिर शरद्के आरंभ हीमें पाला पड़ा, जिसके कारण सारी फसल बरबाद हो गई और वसंतमें खेतोंमें कोई अनाज नही पैदा हुआ। वसंतकी बोआईके लिये किसानोंके पास बीजतक नही रह गया। लोग भूखके मारे घास और भोजपत्रकी छाल खा रहे थे। कोई-कोई गांव तो सारा-का-सारा मर गया। मास्कोकी सड़कोंपर भी बिना दफनाई लाशे पड़ी हुई थीं। यह भयंकर अकाल तीन वर्ष (१६०१–१६०३ ई०)तक रहा। तालुक-दारों, मठों और व्यापारियोके पास भारी परिमाणमे गल्ला था, लेकिन उन्होंने उसे महंगे भावों-पर बेचकर धन जमा करना पसंद किया। सामतों और जमीदारोंने उस समय खाना देनेसे इन्कार करके अपने सेवकोंतकको भी भगा दिया। भुखमरोंके विद्रोहका भय देखकर गदुनोफने हुक्म दिया, कि सरकारी बखारोंको खोलकर लोगोंमें अनाज बांटा जाय, लेकिन बांटने वालोंने उसमें भी अपने लिये खूब पैसे बनाये। सरकारके पास इतना गल्ला भी नहीं था, और जिनके पास बहुत गल्ला था, वह मूल्यके और भी अधिक बढ़नेकी आशासे अपनी बखारोंको खोलना नहीं चाहते थे। "मरता क्या न करता"के अनुसार अब भूखसे मरते किसानों और अर्धदासोंने अपनी टुकड़ियां बना जमींदारों और बनियोंको लूटना शुरू किया। उनमेंसे कुछ दोन-उपत्यका और ब्रयांस्कके जंगलों-में चले गये। १६३० ई०में खलोपको कसलोपके नेतृत्वमें किसानोंकी एक बड़ी टुकड़ी राज-धानी (मास्को)के पास पहुंची, जिसकी जारकी सेनासे एक भयंकर लड़ाई हुई, जिसमें जारका वोयवद (राज्यपाल) इवान बसमानोफ मारा गया। बड़ी मुश्किलसे जारकी सेनाने राजधानीसे विद्रो-

हियोंको भगा पाया । खलोपको कसलोप आहत होकर पकड़ा गया, लेकिन जल्दी ही मर गया । बहुतसे किसान और अर्ध-दासोंको जारके वोयवदोंने मास्कोकी ओर आनेवाली सड़कोंके किनारेके वृक्षों-पर लटकाकर फांसी दे दी ।

इसी समय प्रतिद्वंद्वी पोलन्दने रूसकी इस हालतसे फायदा उठाया और पोल-राजा सिगिस्मंद III ने एक मिथ्या दिमित्रि को अपने हाथका हथियार बनाना चाहा । रोमन कैथलिक धर्मराज पोपको जब यह खबर मिली, तो उसने भी दिमित्रिका समर्थन किया । अफवाह फैलाई गई, कि जार-पुत्र दिमित्रि उगलिचमें मारा नहीं गया, बल्कि वह भागकर पोलन्द चला गया। बोरिस गदुनोफ जिस समय गद्दीपर बैठा, उसी समय उक्रइनके पान (सामन्त) आदम विस्नियो-वियेच्कीके गढ़में एक आदमी प्रकट हुआ, जिसने अपनेको इवान IVका पुत्र दिमित्रि घोषित किया। मास्को-सरकारको जब यह पता लगा, तो उसने उसके बारेमें कहा—यह दिमित्रि एक भूतपूर्व साधु ग्रिगोरी ओतरेपयेफ है, जो कि कस्त्रोमाके एक छोटेसे सामन्ती घरानेमें पैदा हुआ । ग्रिगोरी जवानीमें कितने ही मठोमें घूमता रहा, फिर उसने अपना कुछ समय मास्कोमें बिताया, और अंतमें दूसरे तीन साधुओंके साथ पोलन्द भाग गया । आधुनिक इतिहासकारोंका कहना है, कि मिथ्या दिमित्रि कौन था, इसका पता लगाना मुश्किल है ।

पोल अमीरोंने मिथ्या दिमित्रिके प्रकट होनेकी खबरका बड़ा स्वागत किया । उसे विस्-नियोवियेच्कीके एक संबंधी तथा सम्बोरके वोयवोद यूरी म्निस्जेफके पास पहुंचाया गया । १६०४ ई०के वसंतमें राजा सिगिस्मंदIII ने राजधानी क्राकोमें दिमित्रिका स्वागत किया । उस समय तुरंत रूसके साथ खुली लड़ाई करना पसंद नहीं किया गया, लेकिन इस बातकी कोशिश की गई, कि दिमित्रिके पक्षपाती उसकी सेनामें आकर शामिल हों । पोल अमीरोंको रूसके धनका लोभ था, इसलिये वह दिमित्रिकी हर तरहसे सहायता करनेके लिये तैयार थे । दिमित्रिने पोप, पोलन्दके राजा तथा अमीरोंको बहुत बड़े-बड़े वचन दिये । पोपको खुश करनेके लिये उसने कैथलिक-धर्म स्वीकार किया और सभी रूसियोंको कैथलिक बनानेका बीड़ा उठाया । पोल-राजाको उसने स्मोलेन्स्क नगर तथा चेर्निगोफके इलाके (सेवेर्स्क)को देनेका वचन दिया । म्निस्जेफ परिवारको उसने नवगोरद और पुस्कोफ प्रदेशका शासक बनानेका वादा करते कहा, कि जारके खजानेसे जो कुछ भी पैसा और रतन-जवाहर मिलेगा, वह तुम्हारा होगा । इस शर्तपर यूरी म्निस्जेफने अपनी लड़की मरीनाका ब्याह मिथ्या दिमित्रिसे करना कबूल किया—मरीना रूसी जारित्सा (जारानी) बनती । दिमित्रिके लिये सारी तैयारी सम्बोरमें होने लगी । तैयारीके बाद १६०४ ई०के शरद्के अन्तमें चार हजार पोल-सेना तथा कई सौ रूसी कसाकोंके साथ दिमित्रिने कियेफके पास द्नियेपर नदी पार किया । बिना प्रतिरोध किये ही कितने ही नगरोंने दिमित्रिकी अधीनता स्वीकार की । बोरिस गदुनोफके शासनसे असंतुष्ट अकालके मारे कितने ही भगोड़े किसान, अर्ध-दास तथा छोटे-छोटे सैनिक भी उसके झंडेके नीचे जा खड़े हुये । बहुतसे किसान सचमुच ही उसे इवानIVका पुत्र समझने लगे । उनको यह भी विश्वास था, कि वह हमें अर्ध-दासतासे मुक्त कर देगा । १६०४ ई०के अन्तमें मास्कोकी सेना दिमित्रि द्वारा घेरे गये नवगोरद-सेवेर्स्कको मुक्त करनेके लिये पहुंची । मिथ्या दिमित्रिने चाहा, कि बिना लड़े सेवेर्स्ककी ओर चला जाय । जनवरी १६०५ ई०में वह सेवेर्स्कके पास दोबरोनीची गांवमें हारकर अपने बचे-खुचे आदमियोंके साथ पुतिवलकी ओर भाग गया । विजय प्राप्त करनेके बाद भी गदुनोफकी हाल बेहतर नहीं हुई । विद्रोहियोंके नये-नये दल आकर आक्रमण करते रहे । जारकी सेना क्रोमीके किलेको घेरे हुई थी । दोनके कसाक दिमित्रिकी ओर होकर लड़ने लगे । इसी समय जारकी सेनाने भी दिमित्रिके विरुद्ध लड़नेसे इन्कार कर दिया और बहुतसे सिपाही मैदान छोड़कर घर चले गये । इसी अवस्थामें अप्रेल १६०५ ई०में गदुनोफ एकाएक मर गया । सामन्तोंने तुरन्त उसके सोलह वर्षके पुत्र फ्योदोरको जार घोषित कर दिया ।

गदुनोफके शासन-कालमें ही १५९८ ई०में साइबेरियामें जाकर रूसी प्रवासियोंके बसने-का पहिला उल्लेख मिलता है । जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेके बाद ये लोग उगलिचसे भागकर पूर्वमें

चले गये थे। साइबेरियामें रूसियोंकी कुछ बस्तियां बल्कि पहले ही १५८७ ई०में तबोल्स्क नगरकी स्थापनाके समयसे बसने लगी थी। १६०४ ई०में तोम्स्क नगर भी स्थापित हो गया।

२. फ्योदोर, बोरिस-पुत्र (१३ अप्रेल–१ जून १६०५ ई०)

फ्योदोरको गद्दी नही बल्कि थोड़े दिनोके लिये खाली सिहासनपर बैठकर रूसकी राजावलीमे नाम लिखवानेका मौका मिला। गदुनोफके हटते ही मिथ्या दिमित्रिका रास्ता खुल गया। क्रोमामे जो बची-खुची सरकारी सेना रह गई थी, वह भी पीतर बसमानोफकी अधीनतामें दिमित्रिकी ओर चली गई। सामन्त पहिले हीसे गदुनोफसे घृणा करते थे, क्योकि वह राजुलोके अस्तित्वको खतरेमें डाले हुये था। राजुल वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीने पहले उगलिचमे जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेकी गवाही दी थी। अब उसने अपनी बातसे इन्कार करते कहा, कि गदुनोफ जार-पुत्रको मारना चाहता था, किंतु वह जान बचाकर भाग गया। वह जिंदा है और अब राजधानीकी ओर आ रहा है। दिमित्रिके दूतोके मास्को पहुचनेपर अमीरोने जार फ्योदोर और उसकी मांको मार डाला। दिमित्रिने बिना किसी विरोधके जून १६०५ ई०मे अपने सहायक पोलोके साथ रूसी राजधानीमें प्रवेश किया––यह अकबरकी मृत्युका साल था।

३. दिमित्रि, मिथ्या (१६०५–६ ई०)

दिमित्रिने जारके पुराने सिहासनपर बैठते ही अपने असली रूपको दिखलाना शुरू किया। पहले उसने असंतुष्ट किसानोंको विश्वास दिलाया था, कि हम तुम्हारी हालत बेहतर बनायेंगे, लेकिन अब उसने फिर जमीदारो और सामन्तोकी पूर्व-स्थितिको मजबूत करना शुरू किया। ऊपरसे जो पोल अमीर और दूसरे अनुचर आये थे, वह अपनेको रूसियोंका विधाता समझते उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार करते दोनों हाथोंसे नोंच-खसोट कर रहे थे। दिमित्रिके चारों तरफ भाड़ेके विदेशी नौकर भरे हुये थे। दिमित्रि स्वयं बहुत भारी परिमाणमें पैसा पोलन्द भेज रहा था। अब लोगोकी आंखे खुली और मास्कोके नागरिकोंने खुल्लमखुल्ला शिकायत करनी शुरू की। १६०६ ई०के वसतमें दिमित्रिकी बीबी मरीना आई, जिसके साथ पोल अमीरोंका एक बड़ा दल बहुतसे अनुचरोंको लिये आया। मरीनाके साथ दिमित्रिका विवाह-महोत्सव बड़े ठाट-बाटसे मनाया गया, कई दिनोंतक मौज होते रहे। शराबमें मस्त उसके विदेशी सहायकोंने इस समय और भी गजब ढाया, जिससे जनता क्रोधमे पागल हो गई। राजुल वासिली शुइस्कीने इस अवस्थासे फायदा उठा षड्यंत्र रचा और १७ मई १६०६ ई०को घण्टेकी आवाजके सकेतको सुनते ही लोग मुकाबिलेके लिये खडे हो चिल्ला उठे––"चलो लितवों पर! लितवोकी क्षय!!"––रूसी उस समय पोलोको लितवा कहते थे। मिथ्या दिमित्रिको जब खतरेकी खबर मिली, तो महलके सामने काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। जान बचानेके लिये खिड़कीसे कूदा, जिसके कारण वह बुरी तरह घायल हो गया। लोगोंने पहुंचकर उसे तुरन्त ही मार डाला। कुछ दिनो बाद मिथ्या दिमित्रिके शरीरको जला उसकी राख एक तोपमें भरकर उसे उसी ओर मुंह करके दाग दिया गया, जिधरसे वह आया था। सारे नागरिक शहरमे ढूढ़-ढूढ़कर पोल अमीरों और दरबारियोंको मारने लगे। पत्थर, छुरा, डडा जो कुछ भी हाथ आया, उसीसे उन्होंने हथियारबंद पोलोंपर आक्रमण किया। दो हजार पोल मारे गये और बाकियोने मोर्चाबंदी छोड़ आत्म-समर्पण कर दिया। बायरोंको डर लगा, कि विद्रोही जनसाधारण कही उनके विरुद्धभी कुछ न कर बैठे, इसलिये उन्होंने सबसे पहले सिंहासनपर किसीको बैठाकर राजशक्तिको मजबूत करना जरूरी समझा। उन्हें राष्ट्रीय परिषद् (जेम्स्की सबोर)को बुलाने, की हिम्मत नही हुई। डर रहे थे, शायद अधिकांश नागरिक और अमीर भी विरोध करें, इसलिये पुराने राजुलवंशी वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीका नाम बिना निर्वाचनके ही १९ मईको क्रेमलिनके सामने जमा हुये लोगोंके बीच जारके तौरपर घोषित कर दिया।

इस गड़बड़ीके समयके जार निम्न थे—

१. बोरिस गदुनोफ	१५९५–१६०५ ई०
२. फ्योदोर, बोरिस-पुत्र	१३ अप्रेल-१ जून १६०५"
३. दिमित्रि (मिथ्या)	१६०५–६ "
४. वासिली, इवान-पुत्र शुइस्की	१६०६–१०"
५. व्लादिस्लाव, सिगिस्मंद-पुत्र	१६१०–१३ "

४. वासिली शुइस्की, इवान-पुत्र (१६०६-१० ई०)

शुइस्कीने बायरोको वचन दे दिया था, कि मै तुम्हारी सम्मतिसे राज्य करूंगा, और क्रास (सलेब) के ऊपर कसम खाई थी, कि बिना बायरोंकी दूमा (संसद)की रायके मृत्युदंड नही दूगा, न दंडित-पुरुषके संबंधियोंकी सम्पत्ति जब्त करूंगा। रूसके भिन्न-भिन्न नगरोंमें उसके जार होनेकी घोषणा की गई। धनी बायरोंने सबसे अधिक लाभके पदोंपर झपट्टा मारा, और उन्होंने फिर मनमानी करनी शुरू की। पुराने राजुलवंशों और नये जमीदार-धनियों—बायरों—के स्वार्थ एक नहीं थे। सामन्त कब बरदाश्त करने लगे, कि सभी बड़े-बड़े पदों को बायर दखल कर लें। जल्दी ही विद्रोह उठ खड़े होनेकी शंका होने लगी। बायरोंने प्रतिरक्षाके लिये क्रेमलिनमें तैयारी शुरू की, उसकी दीवारोंपर तोपे लगा दी, और खाइयोंके ऊपरके पुलोंको हटा दिया।

किसान-विद्रोह (१६०६-८ ई०)—किसानोंने विद्रोह किया, लेकिन वह संगठित नहीं था। जहां-तहां छिटपुट लोग सरकारके विरुद्ध आक्रमण कर रहे थे, जिससे सरकारी सेनाको अच्छा मौका मिला, और एक जगहके विद्रोहको दबा देनेपर दूसरी जगहके विद्रोहको दबाना आसान था। सबसे ज्यादा खतरनाक और जबर्दस्त विद्रोह था मजदूरों, अर्ध-दासों और कसाकोंका, जिसका नेता इवान बलोत्निकोफ (१६०६-७ ई०) था। अपनी जवानीके समय बलोत्निकोफ एक बायरका अर्ध-दास था, जिसके अत्याचारोंसे परेशान हो वह दोन-उपत्यकाके कसाकोंमे भाग गया, जहां वह तार-तारोंके हाथमें पड गया। उन्होंने उसे दास बनाकर तुर्कोंके हाथमें बेंच दिया। कुछ दिनों तक बलोत्निकोफ दूसरे बंदियोंकी तरह पैरोंमें बेड़ी पहने नावकी पतवार चलाता रहा, लेकिन थोड़े ही समय बाद वह तुर्कोंकी दासतासे मुक्त होनेमें सफल हुआ। तुर्कीसे युरोपके भिन्न-भिन्न देशोंमें कितने ही साल घूमनेके बाद रूसी सीमांतके भीतर लौट आया। इसी समय शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ था। बलोत्निकोफने विद्रोही सेनाका नेतृत्व स्वीकार किया। सम-सामयिक लेखक उसकी असाधारण शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि और बहादुरीकी प्रशंसा करते हैं। विदेशी लेखक उसे "युद्धवीर" कहते थे। युद्धोंमें उसने अपनी सैनिक प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया था। जहां-कहीं भी बलोत्निकोफकी सेना जाती, किसान अपने जमींदारोंके विरुद्ध होकर उसकी सेनामें आ मिलते। शहरके गरीब भी उसकी तरफ हो जाते। बलोत्निकोफकी सेना पुतिवलसे जल्दी-जल्दी क्रोमी, सेरपुखोफ और कलोम्ना होती मास्कोकी ओर बढी। अक्तूबर (१६०६ ई०)के मध्यमें बलोत्निकोफ मास्कोके सामने पहुंचा। राजधानीके चारो तरफ प्रतिरक्षाके लिये तेहरी पत्थरकी दीवार तैयार की गई थी। बलोत्निकोफ उसे सर नहीं कर सका, फिर मुहासिरा करके बैठ रहा। उसने नागरिकोंसे अपील करते पत्र लिखकर लोगोंमें बंटवाया, किसानों और अर्ध-दासोंको कहा—अपने बायरों और जमीदारोंको खतम कर डालो, मैं तुम्हें राजुलोंकी भूमि प्रदान करूंगा। बलोत्निकोफकी सेनामें कुछ असंतुष्ट राजुल भी थे, जिन्होंने इस खतरेको देखा। रयाजनके सामंत तथा ल्यापुनोफ-भ्रातृयुगल बलोत्निकोफका साथ छोड़कर शुइस्कीकी ओर हो गये। इसपर जारकी सेनाकी हिम्मत और शक्ति बढ़ी, जिसके साथ ही कितने ही और अमीर जारकी ओर हो गये। बलोत्निकोफको बची-खुची सेना लेकर दक्षिणकी ओर हटना पड़ा। उसने जाकर कलूगामें छावनी डाली। १६०७ ई०के बसंतमे जारकी सेनाने कलूगाको घेर लिया, लेकिन इसी समय विद्रोहियोंकी एक नई सेना बलोत्निकोफकी मददके लिये आ गई और शुइस्कीकी सेनाको बुरी तरहसे हार घेरा उठाकर भागना पड़ा।

बलोत्निकोफ आगे बढ़कर तुला पहुचा, जहां कसाकोंका एक नया दल उससे आ मिला। इसी दलमे पीतर नामक एक आदमी था, जो अपनेको जार फ्योदोर (इवान-पुत्र) का बेटा कहता था, यद्यपि वस्तुतः फ्योदोरका कोई बेटा नही था। गर्मियोंमे शुइस्की एक बड़ी सेना जमाकर चार महीनेतक तुलामें बलोत्निकोफपर आक्रमण करता रहा। जारके सेनापतियोंने देखा, कि बलोत्निकोफको जल्दी हराया नही जा सकता और जाड़ोमें घेरा रखना मुश्किल होगा, इसलिये उन्होंने पासकी उपा नदीके ऊपर एक ऊंचा बांध बांध दिया, जिससे नदीका पानी इकट्ठा होकर जोरसे शहरके भीतर बढ़ा, जिससे बलोत्निकोफकी रसद और बारूद बह गई। इसपर समर्पणकी बात होने लगी। जार वासिलीने वचन दिया, कि मैं सभी विद्रोहियोंको क्षमा कर दूगा, लेकिन उसने अपनी वचनका पालन नही किया। इवान बलोत्निकोफको उत्तरमे करगोपोलकी ओर भेजकर अंधा करके डुबा दिया गया, और बहुतसे दूसरे विद्रोहियोको खलोपी (गृहदास) और अर्धदास बनाकर अमीरोको दे दिया गया। बलोत्निकोफ मारा गया, उसके सैनिक तितर-बितर हो गये, लेकिन शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह नही दबा। वोल्गा-उपत्यकाके मोर्द्विन और मारी (चेरेमिसी) विद्रोही बने और उन्होंने रूसी किसानों और अर्ध-दासोंको साथ लेकर निज्नी-नवोगोरदको घेर लिया। उस समय तो जारकी सेना उन्हें हटानेमे सफल हुई, लेकिन १६०८ ई०की शरद्में सारी मध्य-वोल्गा उपत्यका विद्रोही बन गई।

इधर देशके भीतर इस तरहकी विद्रोहाग्नि जल रही थी, उधर पोल भी चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने यह अफवाह फैलाई, कि मास्कोमें खिड़कीसे कूदकर मरनेवाला आदमी वस्तुतः दिमित्रि नही था, बल्कि दूसरे आदमीने अपनी जान देकर जार दिमित्रिके भागनेमें सहायता की। यह अफवाह यद्यपि दिमित्रिके मरनेके दिनसे ही उड़ाई जाने लगी थी, लेकिन उसका प्रभाव उस समय अधिक नहीं पड़ा। १६०८ ई०के वसंतमें एक नया जार-पुत्र मिथ्या दिमित्रि II मास्कोके सीमांतपर प्रकट हुआ। उसके साथ पोलंदकी सरकारी सेना और दूसरे बहुतसे सैनिक थे। लिथुवानी सामन्त यान सपिएहा ७५०० पैदल और सवार सेना लेकर आया, हेतमन रोजिन्सकी भी चार हजार आदमियोंके साथ पहुंचा। इसी तरह दोन और जापोरोज्ये कसाक भी मिथ्या दिमित्रि IIके साथ आ मिले। बोल्खोफके पास १६०८ ई०के बसंतमें जारकी सेनाने हार खाई और दिमित्रि IIकी मुख्य सेना कलूगा और मोजाइस्कके रास्ते मास्कोकी ओर बढी। उन्होंने मास्कोपर अधिकार करनेकी विफल कोशिश की। इसके बाद पोलोंने राजधानीसे थोड़ी दूरपर मास्क्वा नदीके ऊचे तटपर अवस्थित तुशिनो गांवमें मोर्चाबंदी करके डेरा डाला, जिसके ही कारण लोगोने मिथ्या दिमित्रि IIको "तुशिनो जार" अथवा "तुशिनोका चोर" कहना शुरू किया। मास्कोकी स्थिति बहुत बुरी हो गई थी। नगरमें आहारका अकाल था। कितने ही बायर और राजुल शुइस्कीके पतनको निश्चित समझकर मिथ्या दिमित्रिके पास चले गये। मास्कोपर घेरा डालकर मिथ्या दिमित्रिकी सेनाने आसपासके महत्त्वपूर्ण स्थानोंपर अधिकार करना शुरू किया। राजधानीसे सत्तर किलोमीतरपर अवस्थित त्रोइत्स्क-सेर्गियेफ मठ (आधुनिक जागोर्स्क) को पोलोने लेना चाहा। लेकिन रक्षाके लिये पासके किसान भी मठकी ऊंची दीवारोंके भीतर पहुंचे हुये थे। मठने अपनी तोपो और सैनिकोंके बलपर पोलों और दिमित्रिकी सेनाको मार भगाया। ऊपरी वोल्गाके नगरोंमे उसे जरूर सफलता मिली, क्योंकि वहांके लोग जार और बायरोंसे इतनी घृणा करते थे, कि उन्हें मिथ्या दिमित्रि सच्चा दिमित्रि मालूम होता था।

लेकिन दिमित्रिको जितनी सफलता होती जाती थी, उतना ही उसके सहायक पोलोंका अत्याचार और अपमानजनक बर्ताव बढ़ता जाता था। वह नगरोंमें पहुंचकर व्यापारियोंके मालको छीनते, किसानों और कारीगरोंपर भारी कर लगाते, जरा भी आनाकानी करनेपर उनके घरों और खेतोंकी फसलको जला देते। कितने ही रूसी बायरों और जमींदारोंकी सम्पत्तिको क्षति-पूर्तिके तौरपर उन्होंने छीन लिया। लोग उनके विरुद्ध खड़े होनेके लिये मजबूर हुये। छिटफुट होते विद्रोह १६०८ ई०में देशव्यापी गोरिल्ला-युद्धके रूपमें परिणत हो गये।

शुइस्कीने देखा, कि वह अकेला दोनो ओरकी मारको नही बर्दाश्त कर सकता, इसलिये उसने स्वीडेनके राजा चार्ल्स नवमसे मददके बदलेमें संधि द्वारा करेला (केखहोल्म)के नगर और आसपासके प्रदेशको स्वीडेनको दे दिया। चार्ल्सने इसके बदलेमे पोलोको भगाने तथा जारकी शक्तिको मजबूत करनेके लिये सहायता देनेका वचन दिया। स्वीडेनने १६०९ ई०के बसंतमें पंद्रह हजार सेनाके साथ जेकब देलागारदीको भेजा। इस सेनामें स्वीड्, जर्मन, अंग्रेज, फ्रेंच और दूसरे कितने ही देशोंके भाडेके सैनिक थे। शुइस्कीका भतीजा राजकुमार स्कोपिन-शुइस्की भी अपने रूसी सैनिकोंको लिये इस सेनाके साथ हो गया। सेना रास्तेमे कितने ही नगरो और कस्बोंको मुक्त करती तुशिनोंकी ओर बढी। पोल भी आखिरी दाव लगानेके लिये तैयार थे। १६०९ ई०के ग्रीष्ममे भिन्न-भिन्न पोल सेनाओंने जगह-जगहपर आक्रमण करके लूट-मार की, और इसी सालकी शरद्में पोल राजा सिगिस्मदIIIने एक बड़ी सेना ले रूसके भीतर घुसकर स्मोलेन्स्क नगरपर घेरा डाल दिया। सीधे रूस और पोलन्दके बीच खुलकर लडाई होने लगी। सिगिस्मंदको अब मिथ्या दिमित्रिIIकी अवश्यकता नही थी। जनवरी १६१० ई०मे मिथ्या दिमित्रिII पोल सहायतासे वचित होकर तुशिनोसे कलूगाकी ओर भागा। उसके साथ अब भी कुछ पोल इस आशासे चल रहे थे, कि शायद मास्कोका सिंहासन आखिरमे उसको ही मिले। दिमित्रिका पक्ष लेनेवाले रूसी बायरो और राजुलोंने आशा छोड़कर सिगिस्मंदके साथ समझौता करना चाहा, और पोल राजाके पुत्र व्लादिस्लावको मास्कोका जार स्वीकार करते हुये ४ फर्वरी १६१० ई०में संधि की। सिगिस्मदने अपने पुत्रकी ओरसे वचन दिया, कि वह अमीरों और जमीदारोंके अधिकारोंपर प्रहार नही होने देगा और भगोडे किसानोंको उनके पास लौट जानेके लिये मजबूर करेगा।

५. व्लादिस्लाव सिगिस्मंद-पुत्र (१६१०-१३ ई०)

मार्च १६१० ई०मे रूसी-स्वीडिश सेना मास्कोके भीतर दाखिल हुई। उधर मास्कोपर अधिकार करनेके लिये एक पोल सेना पहुची, जिसके विरुद्ध शुइस्कीने अपने भाई दिमित्रि शुइस्कीके नेतृत्वमे एक सेना भेजी। जून १६१० ई०में क्लुशिनो गांवके पास दोनों सेनाओंमें लड़ाई हुई, लेकिन लड़ते समय जर्मन और स्वीड भाड़ेके सैनिक रूसियोंका साथ छोड़कर पोलोंकी ओर मिल गये—उन्हें तो पैसेसे काम था। पोलोंने स्वीडोंको स्वतन्त्रता-पूर्वक लौट जानेकी इजाजत दे दी। जुलाई १६१० ई०में मास्कोके नागरिकोंमें भूखे मरनेकी और शक्ति नही रह गई, और उन्होंने वासिली शुइस्कीके खिलाफ विद्रोह कर दिया। बायरों और राजुलोने वासिलीको पकडकर उसे साधु बननेके लिये मजबूर किया, जिसमे कि वह राजकाजमें दखल न दे सके। शासन-भार अब सात बड़े-बड़े बायरोंकी बनी सरकारके हाथमे चला गया, इसीलिये इस सरकारको सेमी-बायर्-श्चिना (सात बायर शासन) कहा जाता था। बायरोने अपनी स्थितिको मजबूत नही देखी, इसलिये उन्होंने इस शर्तपर व्लादिस्लावको मास्कोका जार बनना स्वीकार किया, कि वह बायरोके साथ मिलकर शासन करे। विश्वासघातियोंने समझौता करके पोल-सेनाको मास्कोके भीतर आने दिया। संघराज फिलारेत तथा कुछ और बायरोका एक प्रतिनिधि-मंडल स्मोलेन्स्ककी दीवारोंके बाहर सिगिस्मंदIII से मिलकर संधि करनेके लिये गया। लेकिन, पोलोंने इन देशद्रोहियोंको उनके कियेका अच्छा मजा चखाया और सबको पकड़कर पोलन्द भेज दिया। इन प्रतिनिधियोंने मास्कोमें गुप्त रीतिसे चिट्ठियां भेजकर अपनी हीन स्थिति और पोलोंके विश्वासघातके बारेमें सूचित करते कहा, कि पोलोंकी अधीनता स्वीकार मत करो, आपसमे इसके बारेमे राय करो तथा हमारे पत्रको "नवोगोरद, वलोग्दा और निजनीमें भेज दो, जिसमें सब इस बातको जान लें।" पोल राजाकी मंशा वस्तुत. स्वयं मास्कोका जार बननेकी थी।

मास्कोके भीतर पहुंचकर फिर पोलोने मनमानी शुरू कर दी, और जरा भी विरोध करनेपर लोगोंको तुरंत गिरफ्तार करके बंदीखानेमे डाल दिया जाता। पोल अमीरोंने क्रेमलिनमें जारके खजानेको लूट लिया। उधर अपने राजाके नेतृत्वमें एक पोल सेना स्मोलेन्स्कको घेरे रही।

उत्तरमे स्वीडोंने फिनलन्द-खाड़ीके दक्षिणी तटपर अधिकार करके नवोगोरदको खतरेमे डाल दिया। व्यापारियो और कारीगरोंकी हालत बुरी हो गई थी, क्योंकि नगरोंके भीतर आपसी व्यापार बिल्कुल बंद हो गया था। जमीदारों और अमीरोकी हालत भी खराब थी, क्योंकि उनके खेतोंमे काम करनेके लिये आदमी नहीं रह गये थे।

मास्कोमें पोलोने बहुत कोशिश की, कि लोग पोल-राजाकी राजभक्ति स्वीकार करे, लेकिन वह इसके लिये तैयार नही थे। जिन बायरोंने विश्वासघात करके पोलोंको बुलाया था, उनके खिलाफ घृणाजनक पत्र प्रसारित हो रहे थे। रूसी चर्चका प्रधान संघराज हर्मोगेनने भी इसी समय पोलोंके विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये और १६१० ई०के अन्तमें उसने भिन्न-भिन्न नगरोंमे अपनी घोषणा भिजवाकर कहा, कि राजधानीकी मुक्तिके लिये रूसी जनताको आगे बढ़ना चाहिये। संघराजकी घोषणाने लोगोंको और भी उत्तेजित कर दिया। जब इसकी खबर पोलोंको मिली, तो उन्होंने संघ-राजको जेलमे डालकर तरह-तरहकी यातना देनी शुरू की, लेकिन उसने हिम्मत नही छोड़ी।

व्लादिस्लावको जारका सिंहासन तो मिला, लेकिन उसे और उसके बापको रूसियोंने चैनसे रहने नहीं दिया। मास्कोको मुक्त करनेके लिये सारे देशमें तैयारी होने लगी। जनवरी १६११ ई०मे र्‍याजनके वोयवोद (राज्यपाल) प्रोकोपी ल्यापुनोफने मास्कोकी मुक्तिके लिये स्वयंसेवकों-का संगठन शुरू किया, जिसमें पहिले मुख्यतः दक्षिणी जिलोंके अमीरोंकी सैनिक टुकड़ियां शामिल हुई। ल्यापुनोफने कसाको और अर्धदासोंको भी पैसे और मुक्तिका लोभ देकर अपनी ओर खींचा। शक्ति बढाकर एक सैनिक टुकड़ी राजकुमार दिमित्रि मिखाइल-पुत्र पजार्स्कीके नेतृत्वमे पोलोंके ऊपर प्रहार करने लगी। इस सेनाका हरावल ठीक समयपर मास्कोके पास पहुंचा, और पोल तथा देशद्रोही बायरोंने मास्कोमे आग लगा दी। जलते हुये घरोंके बीच लड़ाई जारी रही, पर अंतमें धूयें और आग-की ज्वालाने रूसी सेनाको शहरसे बाहर निकलनेके लिये बाध्य किया। राजकुमार पजार्स्की इसी लड़ाईमें घायल हुआ। कुछ महीनेतक मास्कोके बाहर रहकर फिर कोशिश की, लेकिन वह राज-धानीको मुक्त नही करा सके। ३० जूनको सेना-संगठनके बारेमें कसाकों और सामन्तोंने आपसमें समझौता किया, जिसमें सामन्तोंका प्रतिनिधि ल्यापुनोफ था और राजकुमार दिमित्रि त्रुबेत्स्की तथा अतमन इवान जारुत्स्की कसाकोंके प्रतिनिधि थे। समझौता ठीकसे चला नही, दोनों पक्षोंमे जब-तब झगडा हो उठता। ३० जूनको वह यहांतक बढ़ा, कि कसाकोंन प्रोकोपी ल्यापुनोफको मार डाला, जिसके बाद स्वयंसेवक-संगठन छिन्न-भिन्न हो गया। सामन्त अपने सैनिकोंको लेकर चले गये और सिर्फ कसाक सैनिकोंका एक भाग मास्कोके सामने रह गया।

उधर स्मोलेन्स्कके प्रतिरक्षियोंने करीब-करीब दो सालतक पोलन्दकी भारी सेनाका मुका-बिला किया। पोल राजाने तोपोंके गोलोंसे सफलता न पाकर बड़े-बड़े वादोंसे फुसलाना चाहा, लेकिन स्मोलेन्स्कके नागरिक इसके लिये तैयार नहीं थे। जून १६११ ई०के आरम्भमें पोल किलेकी दीवारको एक जगह उड़ानेमें सफल हुये, नागरिकोंने जलते हुये नगरकी सड़कोंमें आखिरी लड़ाई लडी। बहुतोंने शत्रुके हाथमें पड़नेकी जगह आगकी ज्वालामे कूदकर जान दे दी। सत्तर मन बारूदके एक ढेरमें आग लगा दी गई, जिससे रूसियोंके साथ बहुतसे पोल भी चिथड़े-चिथड़े उड़ गये। बहुत थोड़ेसे प्रतिरक्षी पोलोंके हाथ बंदी हुये। जिस समय स्मोलेन्स्कको पोलोंने लिया, उसी समय स्वेडोंने उत्तरमें नवोगोरद नगरपर अधिकार किया।

कसाकों और सामन्तोंके झगड़ेके कारण यद्यपि सैनिक स्वयंसेवकोंका संगठन छिन्न-भिन्न हो गया था, लेकिन रूसियोंने पोलोंके विरुद्ध अपनी तलवार मियानमें नही रक्खी। निजनी-नवोगोरदने फिरसे स्वयसेवकोंके संगठनमें आगे बढ़कर काम किया और मास्कोकी लड़ाईमें घायल प्रसिद्ध वीर राजकुमार दिमित्रि पजार्स्कीको सेनाका संचालक बननेके लिये निमंत्रित किया। चारों ओर फिर एक नया उत्साह दिखाई देने लगा। मास्कोमें पोलोंको जब पता लगा, कि हमारे विरुद्ध एक बड़ी भारी सेना जमा हो रही है, तो उनमें घबराहट मच गई। उनसे भी ज्यादा

भयभीत थे देशद्रोही बायर। उन्होंने लोगोंसे बहुत कहा, कि पोल राजकुमार व्लादिस्लावकी अधीनता स्वीकार करो, लेकिन लोग इसके लिये तैयार नही हुये।

१६१२ ई०के वसतमें स्वयंसेवक-सेना निजनी-नवोगोरदसे यारोस्लाव्ल पहुंची। सब जगह लोग बड़े उत्साहके साथ स्वागत करते आ-आकर उसमें भर्ती हो रहे थे। यारोस्लाव्लमें सेना चार महीने रही। यहांपर उन्होंने राष्ट्रीय सरकार संगठित की और शासन-प्रबधके भिन्न-भिन्न विभाग कायम किये। स्वयंसेवकोंमे भिन्न-भिन्न नगरोंके अमीर, तथा सभी वर्गोंके आदमी, कसाक, किसान और स्त्रेलेत्सी (धनुर्धर) ही नही, बल्कि तारतार, मारी और चुबाश जैसे अ-रूसी जातियोके भी लोग सम्मिलित थे। सेनाने अपना केद्र यारोस्लाव्लमे रक्खा, लेकिन उसकी टुकड़िया चारों तरफ फैलकर देशको पोलोंसे स्वतन्त्र करने लगी। पोल आकर रूसके भिन्न-भिन्न इलाकोंमें फैल तो गये थे, लेकिन उनको देशका परिचय कम था, इसलिये हर जगह ग्रामीणोंको पथ-प्रदर्शनके लिये मजबूर करते। कितने ही पथ-प्रदर्शकोंने उन्हे ऐसी जगह पहुंचा दिया, जहा वह रूसी स्वयंसेवकों के हाथमें पड़कर नष्ट हो गये। ऐसे ही पथ-प्रदर्शकोंमे कस्त्रोमाका एक किसान इवान सुसानिन था। उसने पोलोंका पथप्रदर्शन करते उन्हें इसुपोव्स्कोयके दलदलमें डाल दिया। पोलोने सुसानिनको मार डाला, लेकिन वह स्वयं दलदलमे मरनेसे नही बचे। पीछे इवान सुसानिनका पद्य-नाटक (ओपेरा) बना, जो आज भी रूसियोमे बहुत जनप्रिय है।

१६१२ ई०के अगस्तके अंतमें स्वयंसेवक-सेनाका मुख्य अंग मास्कोकी दीवारोंके नीचे पहुंचा। यद्यपि उसका जबरदस्त प्रतिरोध हुआ, लेकिन वह मास्को नदीके तटपर पहुचे बिना नहीं रहा। स्वयसेवकोंका एक मुख्य सेनापति कुजमा मीनिन चार सौ आदमियोंके साथ नदीके पार हो पोलोके पक्षपर प्रहार करने लगा। पोल इसकी आशा नही रखते थे, इसलिये पहली ही चोटमें भागकर अपने डेरोंमें घुस गये। चार सौ गाड़ियोंमें भरी उनकी रसद कुजमाके आदमियोंके हाथमें पडी। मास्कोमे डेरा डाले पड़ी पोलसेनाको अब न कहींसे अन्न मिलता और न बाहरसे सहायता आनेकी आशा थी। अन्तमें लड़ाई और भूखकी मारसे परेशान हो २६ अक्तूबर १६१२ ई० को क्रेमलिनके फाटककर लड़ाई करते उन्होने आत्म-समर्पण किया और मास्को मुक्त हो गया।

२. रोमनोफ़-वंश (१६१३-१९१७ ई०)

मास्कोको मुक्त करनेके बाद जारके निर्वाचनके लिये राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सबोर)को बुलाया गया। सभामें सबसे ज्यादा जनप्रिय बायर रोमनोफ थे, जिनकी लड़कियां जार इवान IV और फ्योदोरको ब्याही थी। सामन्तों और बायरोंको उनसे भूमि, किसान तथा दूसरी चीजों के मिलनेकी आशा थी। रोमनोफ-परिवारका प्रधान व्यक्ति फिलारेत था, जो कि रस्तोफका संघराज किन्तु अब पोलंदमे बंदी होकर चला गया था। वह साधु भी था, इसलिये जार नही बन सकता था। १६१३ ई०के आरम्भमें राष्ट्रीय सभाने उसके सोलह वर्षके पुत्र मिखाइलको जार निर्वाचित किया, जो बुद्धि और आचरण दोनोमें दुर्बल था।

रोमनोफ-वंश रूसका अन्तिम राजवंश था, जो कि अकबरकी मृत्युके सात साल बाद अस्तित्व-में आ १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रान्तितक शासन करता रहा। इस वंशके अंन्तिम आठ जार नाममात्र के ही रोमनोफ थे, वह वस्तुतः जर्मन थे, जिसके कारण दरबारमें हमेशा जर्मनोंकी तूती बोलती रही। इस वंशमें निम्न जार हुये—

१. मिखाइल, फिलारेत-पुत्र	१६१३–४५ ई०
२. अलेक्सान्द्रI, मिखाइल-पुत्र	१६४५–७६ "
३. फ्योदोर, अलेक्सान्द्रI-पुत्र	१६७६–८२ "
४. इवानV, अलेक्सान्द्रI-पुत्र	१६८२–९६ "
५. पीतरI, अलेक्सान्द्रI-पुत्र	१६९६–१७२५ "
६. एकातेरिनाI, पीतर I-पत्नी	१७२५–२७ "

७. पीतर II, अलेक्सान्द्र-पुत्र	१७२७–३० ई०
८. अन्ना, इवान V-पुत्री	१७३०–४० "
९. इवान VI, अन्ना-पुत्र	१७४०–४१ "
१०. एलिजाबेथ, पीतर I-पुत्री	१७४१–६१ "
११. पीतर III, पीतर I-नाती	१७६१–६२ "
१२. एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी	१७६२–९६ "
१३. पावल I, पीतर III-पुत्र	१७९६–१८०१ "
१४. अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र	१८०१–२५ "
१५. निकोलाइ I, पावल I-पुत्र	१८२५–५५ "
१६. अलेक्सान्द्र II, निकोलाइ I-पुत्र	१८५५–८१ "
१७. अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र	१८८१–९४ "
१८. निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र	१८९४–१९१७ "

१. मिखाइल, फिलारेत-पुत्र (१६१३--८५ ई०)

वस्तुतः शासनसूत्र मिखाइलके नामसे अब उसकी मां और संबंधियोंके हाथमें था। नई सरकारको देशमें व्यवस्था कायम करनेमे काफी दिक्कतका सामना करना पड़ा। अस्त्राखानमे भागे हुये जारुत्स्कीने अपनेको जार दिमित्रि घोषित किया, लेकिन उसको सहायता नही मिली और अन्तमे लोगोंने उसे और उसकी स्त्री मरीनाको पकडकर सरकारके हवाले कर दिया। जारुत्स्कीको मास्कोमे फांसी हुई, मरीना जेलमें मरी और उसका बच्चा भी फासीपर चढ़ा दिया गया। यद्यपि पोलन्दसे संघर्ष कम हो गया, लेकिन रूसकी भीतरी कमजोरियोंको देखकर स्वीडों-ने नवोगोरदपर अधिकार करके संघर्ष जारी रक्खा। उनसे छुटकारा १६१५ ई०मे प्स्कोफमें उनके प्रसिद्ध योद्धा राजा गस्ताव अदल्फसको हराकर ही हुआ। रूसी भी लड़ाई बढ़ाना नही चाहते थे, क्योंकि उसके कारण देशका व्यापार तथा सारा आर्थिक जीवन चौपट हो गया था, लोगोंकी हालत बुरी थी। इंगलैण्ड और हालैंडको बीचमें डालकर १६१७ ई०के आरम्भमें, स्तोल्वोवोकी सधि हुई, जिसके अनुसार स्वीड सेनाने यद्यपि नवोगोरद और उसके इलाकेको खाली कर दिया, लेकिन फिनलन्द-खाडीका सारा तट तथा कितने ही नगर अपने हाथमें ही रखे, इस प्रकार रूस बाल्तिक समुद्रसे वंचित रहा। व्लादिस्लाव अभी भी रूसी सिहासनकी आशा नही छोडे था। १६१८ ई०में वह एक बार मास्कोतक पहुंचा, लेकिन वहांसे मार भगाया गया। आखिर उसने भी १६१८ ई०के अन्त मे साढ़े चौदह सालके लिये मास्कोके साथ संधि कर ली, लेकिन स्मोलेन्स्क और आसपासके इलाके तथा सेवेर्स्क (चेरगीनोफ)के इलाकेको पोलोंने नही छोड़ा। इस संधिके बाद जारका पिता फिलारेत रोमनोफ बंदीखानेसे मुक्त हुआ। मास्को पहुंचनेके तुरन्त ही बाद उसे सारे रूसी चर्चका महा-संघराज बना दिया गया और अबसे जीवनभर (१६१९–३५ ई०) वही रूसका वास्तविक शासक था। सभी राजादेश जार और उसके बापके नामसे निकाले जाते थे। फिलारेतको महास्वामी ("वेलीकी गसुदार")की उपाधि मिली थी। वह अब धर्म और राज्य दोनोंका कर्णधार था। इस असीम शक्तिको इस्तेमाल करके उसने केन्द्रीय सरकारको बहुत मजबूत किया। मास्कोने १६३२ ई०में स्मोलेन्स्कको लौटानेकी कोशिश की, लेकिन पोलन्दने राजनीतिक चालसे क्रिमियाके तारतारोंको मास्कोसे उलझा दिया, और इस प्रकार उस साल स्मोलेन्स्कका अभियान व्यर्थ गया। १६३३ ई०में महासंघराज फिलारेत मर गया।

इस समय पोलन्दके षड्यन्त्रके कारण मास्कोके दक्षिणी सीमांतको क्रिमियाके तारतारोसे बहुत खतरा पैदा हो गया था। वह जब-तब रूसके भीतर घुसकर गांवो और शहरोंमें लूटपाट मचाते थे। प्रतिरक्षाके लिये दक्षिणी सीमांतकी मोर्चाबंदी अब आवश्यक हो गई थी। तारतार दोनके कसाकों-पर भी हमला करते थे, इसलिये वह भी उनको दबानेके लिये सब तरहसे तैयार थे। क्रिमियाके

तारतारोकी पीठपर उधर तुर्कीका सुल्तान भी था, जिसका अधिकार काकेशससे अजोफ समुद्रके तट तक था। १६३७ ई०में दोनके कसाकोने अजोफके किलेपर आक्रमण किया। दोन नदीद्वारा अजोफ-समुद्रके भीतर पहुंचनेमें तुर्कोंका यह किला भारी बाधक था। दो महीनेके मुहासिरेके बाद कसाकोने किलेको सर कर लिया। तुर्की सुल्तान इसे कैसे बरदाश्त कर सकता था? उसने १६४१ ई०में शक्तिशाली तोपखानेके साथ एक भारी सेना उनके विरुद्ध भेजी। मुट्ठी भर कसाक सेनाने चौबीस बार तुर्कोंके आक्रमणको विफल कर दिया। अन्तमें एक और बड़े आक्रमणके समय उन्हें मास्कोसे सहायता मिली। मिखाइलकी सरकार बिना जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)की सम्मति लिये तुर्कीके साथ युद्ध नही छेड़ना चाहती थी। सभाने उसके लिये स्वीकृति नहीं दी, इसपर सरकारने कसाकोको अजोफ छोड़कर चले आनेकी आज्ञा दी।

यह १७वी सदीका मध्य या शाहजहांका समय था। उस समय भारतके किसानोंकी भी हालत रूसके किसानोंसे बेहतर नही थी। जमीन बड़े-बड़े जमीदारों और सामन्तोंकी थी, जो अपने विलासितापूर्ण जीवनके लिये उनका अधिकसे अधिक शोषण करते थे। किसानोके लिये अपने गांवोंमें अब आशा नहीं रह गई थी। उनमेंसे कितने ही किसानी छोड़कर व्यापारी बन गये और कुछ दूसरी जगहों में भाग गये। १७वीं शताब्दीके ये जमीदार अपने किसानों, अर्धदासो और कारीगरोंके हाथके कामों से संतुष्ट नही थे। राजधानीके धनी अमीर और बायर इतालीके मखमल, इंगलैण्डके ऊनी कपडो और विदेशी समूरी टोपियोंको पहनते थे। उनको बहुमूल्य आभूषणों और विदेशी शराबोंका चसका लग गया था। उनके घरोंमें बहुत तरहकी विदेशी चीजें इस्तेमालमें आती थी और यह सारी विलास-सामग्री किसानोंकी कमाईसे मिले पैसेके बलपर ही खरीदी जा सकती थी। उदाहरणके लिये उस समयके एक बहुत बडे बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफको ले लीजिये। उसके पास तीन सौ गांव थे, जिनमें चालीस हजार अर्धदास रहते थे; जिनसे उसे दस हजार रूबल मासिककी आमदनी थी, जो आजकलके हिसाबसे लाखों रुपया होगा। उसकी बहुतसी बखारें थी, जिनमे लाख पूद (१ पूद=१८ सेर) अनाज भरा रहता था। पोलन्दके साथकी लडाईमें अनाजका भाव महंगा हो गया। उस समय अपने अनाजको बेंचकर मोरोजोफने बहुत पैसा जमा किया। उसकी जमींदारीमें सात सौ नौकर थे, जो किसानोंकी अलग नोच-खसूट करते रहते थे। मोरोजोफके पास इतना पैसा जमा हो गया था, कि उसने उससे लोहेका कारखाना, पोटाश-कारखाना कायम किये और अपने किसानोको वहा जाकर काम करनेके लिये मजबूर किया। उसके पोटाशको विदेशी व्यापारी खरीद ले जाते थे।

अब कारखानोंके बढानेकी अवश्यकता समझी जाने लगी थी। लडाईके लिये लोहेकी सबसे अधिक अवश्यकता होती है, इसलिये लोहेकी उपज बढ़ाने के लिये एक डच व्यापारी एंडरू विनियस को लोह-धूनो (ओर) मे काम करनेका ठेका दिया गया और उसने तुलामें पहला लोहेका कारखाना खोला, जिससे आगे चलकर तुला रूसका लौह-केन्द्र बन गया। उसके कुछ समय बाद एक स्वीडने मास्कोके पास कांचका कारखाना खोला।

कारखानेका रवाज यद्यपि बढ़ने लगा, लेकिन अब भी व्यापार रूसके आर्थिक जीवनमें खास स्थान रखता था, जिसके कारण कितने ही विदेशी राज्योंसे उसका घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ। इसी समय पश्चिमी युरोपसे व्यापार करनेके लिये अर्खन्गेल्स्क प्रधान बंदरगाह बन गया। गर्मियोंमें जब समुद्र बर्फसे मुक्त रहता, तो बहुत-से अंग्रेज, डच और जर्मन जहाज अपना-अपना माल लेकर वहां पहुंचते—जिसमें ऊनी कपड़े, रेशमी कपड़े, मूल्यवान् बर्तन तथा दूसरी विलासिताकी चीजे होतीं। रूसी व्यापारी नावोंमें साइबेरियाके समूर, चमड़े, भांगके कपड़े, पोटाश, शूकरमांस तथा गावों और नगरोंके कारीगरोंकी बनाई और भी कितनी ही चीजें भरकर उत्तरी द्विना नदीसे हो अर्खन्गेल्स्क पहुंचते। वहां दोनों ओरसे क्रय-विक्रय होता। एसियाके साथ व्यापार मुख्यतः अस्त्राखानद्वारा होता था, जहांपर बुखारी और ईरानी व्यापारी पूर्वी देशोंके मालको लेकर पहुंचते थे। इस व्यापारसे लाभ उठानेके लिये हमारे भारतीय व्यापारी और कुछ कारीगर भी अस्त्राखानमें

जा पहुचे थे। इवान IVने भारतीय कारीगरोंको वहांसे मास्को बुलवा मंगवाया था। व्यापारके बढानेके कारण अब नगरोंकी सख्या और समृद्धि बढने लगी और धनी व्यापारियोका एक अलग वर्ग स्थापित होने लगा। देशकी शांति और केन्द्रीकरणने इस काममें बड़ी सहायता की।

चीनतक प्रसार—रूसका विस्तार साइबेरियामें पूर्वकी ओर हो रहा था। ऐसी अवस्थामे चीनके बारेमे ज्यादा जानकारी प्राप्त करना उसके लिये आवश्यक था। बुखाराके व्यापारी जहां एक ओर अपने कारवांको लेकर चीनमें पहुंचते थे, वहा दूसरी ओर वह अस्त्राखान भी आते थे। सम्भव है, उनके साथ कुछ चीनी भी रूसमे पहुचे हों, लेकिन रूस अब पेकिङ्से ज्यादा नजदीकका संबंध स्थापित करना चाहता था। १५६७ ई०में ही पेत्रोफ और यालीसेफ नामक दो कसाकोंको इसलिये भेजा गया, कि वह पड़ोसी लोगोंकी भाषा, रीति-रवाज आदिके बारेमें जानकारी प्राप्त करें। उन्हें विशेषकर चीन-राज्य, मंगोलोंकी भूमि और ओब महानदीके बारेमें जानकारी प्राप्त करनी थी। वह पेकिङ्की ओर बढते हुये कलगनतक पहुंचे। लेकिन देवपुत्र सम्राट्के लिये वह कोई भेंट नहीं लाये थे, इसलिये सम्राट् मू-चुङ् (१५६६-७२ ई०)के दरबारमे गये बिना ही उन्हे लौटा दिया गया। १६०८ ई०मे फिर इसके लिये कोशिश की गई, जिसमें मगोल राजा अल्तनखांकी फिर सहायता ली गई, लेकिन इसका भी कोई परिणाम नही निकला। इसके बाद जार मिखाइलके समय १६१६ ई०में तुमेनेत और पेत्रोफ नामक दो कसाकोंको तोबोल्स्कसे इसी कामके लिये भेजा गया। वह चीन तो नहीं पहुंच सके, लेकिन अल्तन खानके दरबारमे कुछ समयतक रहे और खानने रूसी जारके अधीन होना स्वीकार किया। १६१९ ई०मे पेतलिन और मदोफ् भेजे गये। वह भी अपने साथ भेट नही लाये थे, इसलिये चीनी सम्राट्के दर्शनसे वचित रहे। हां, उन्हें चीनकी ओरसे एक चिट्ठी दी गई, जिसे लेकर वह तोबोल्स्क लौटे, लेकिन उस चिट्ठीको उस समय कोई नही पढ सका, और डेढ़ सौ साल बाद १७७६ ई०मे पेकिङ्मे लाकर एक जेसुइत पादरीकी सहायतासे उस चिट्ठीका अनुवाद कराया गया।

इस प्रकार मिखाइलके समयमे चीनके साथ कोई बाकायदा दौत्य-संबंध स्थापित नही किया जा सका।

मिखाइलके मरनेके बाद उसका पुत्र अलेक्सी सोलह वर्षकी आयुमें गद्दीपर बैठा।

२. अलेक्सी, मिखाइल-पुत्र (१६४५-७६ ई०)

लड़के जारको बाज उड़ाने और दूसरे खेलोका बडा शौक था और राज्यकी सारी शक्ति एक धनी बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफके हाथमे थी, जिसने सभी ऊचे पदोपर अपने भाई-भतीजे-भांजोंको भर दिया। जारके वशसे और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये उसने एक साधारण बायर मिलोस्लाव्स्कीकी एक लड़कीका ब्याह जारू अलेक्सीसे करवा उसकी दूसरी लडकीको स्वय ब्याह लिया। पोलन्दके युद्धके कारण देशकी आर्थिक हालत बहुत खराब हो गई, और साथ ही युद्धमे असफलता भी रही। मोरोजोफको सबसे पहले राजकोषकी स्थिति सुधारनी थी, इसके लिये उसने जहां सैनिकोंका वेतन कम किया, वहां कई कर लगाये, जिनमे सबसे भारी नमकपर था। नमक इतना महगा हो गया, कि लोग मछली सुरक्षित रखनेके लिये उसे खरीदकर नही लगा सकते थे, जिसके कारण हजारों मन मछलियां सड़ने लगी, और मोरोजोफको जल्दी ही इस करको उठा देना पड़ा। इन सब कारणोसे लोगोकी हालतपर इतना बुरा असर पड़ा, कि अलेक्सीके आरम्भिक शासनकालमे कितने ही विद्रोह हुये। १ जून १६४८ ई०को तीर्थ-यात्रासे लौटकर जार मास्को आया, तो लोगोने उसके पास जाकर मोरोजोफकी लूट-खसूटके बारेमें शिकायत की। उस दिन आवेदन-पत्र देनेवालोंको कोड़ोंकी मारसे भगा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन एक जन-समूहने क्रेमलिनके दरवाजेसे राजमहलमें पहुंचकर मांग की, कि नगर-कोतवाल ल्योन्ति प्लेश्चेयेफको हमारे हवाले किया जाय। ल्योन्ति बड़ा ही क्रूर और पाशविक अत्याचारी था। बायर शान्त करनेके लिये आये, लेकिन उन्होने उन्हें भगा दिया। इसके बाद जनताने बायरों और सरकारी अफसरोके घरोंपर आक्रमण किया। एक बड़ा अफसर मार डाला गया, नगरमे जगह-जगह

आग लगा दी गई, सन्त्रस्त जारने प्लेश्चेयेफ और त्रखानियोतोफ दो जालिम दरबारियोंको जनता के हाथमें दे दिया, जो उसी समय मार डाले गये। फिर लोगोंने मोरोजोफके शिरकी मांग की। लाल मैदान*मे भारी भीड उमड आई थी। जारने लोगोके सामने कसम खाकर अपने आदमियो द्वारा कहलवाया; कि मोरोजोफको सरकारसे निकाल दिया जायगा। उसी रातको उसे मास्कोसे निकालकर एक दूरके मठमें भेज भी दिया गया। इसी समय कितने ही असंतुष्ट सामन्त भी आ गये और नागरिकों तथा सामन्तोंने मिलकर जारके पास आवेदन भेजा, कि एक नई विधान-सहिताके बनानेके लिये जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)को बुलाया जाय।

मास्कोके अतिरिक्त दूसरे शहरोंमें भी विद्रोह उठ खड़े हुये थे, इसलिये जारको राष्ट्रीय सभा जल्दी-जल्दी बुलानी पड़ी। सभाके सदस्योमें बहुमत नागरिकों और जनपदीय सामन्तोका था। सभी मांगोंको मान लिया गया और जनवरी १६४९ ई०में नई विधान-संहिता स्वीकार की गई। शाहजहांके कालमे बनी इस विधान-सहिताद्वारा किसानोंके ऊपर सामन्तोंका पूरा अधिकार स्थापित करके उन्हे अर्ध-दास बना दिया गया। नागरिकोंको यह अधिकार मिला, कि सभी बायरों और चर्चकी जायदाद दीहात नही नगरोकी मानी जाय, और उन्हें सामन्तों और अमीरोंकी तरह कर उगाहने और राजसेवाओका अधिकार मिले। १६५० ई०मे नवोगोरद और प्स्कोफमें विद्रोह हो गये, जिनमें प्स्कोफका विद्रोह विशेष तौरसे खतरनाक था। लोगोने जारके वोयवद (राज्यपाल)को हटाकर वहा स्वायत्तशासन स्थापित कर लिया और जारसे माग की, कि वोयवदकी अदालतमे हमारे अपने प्रतिनिधियोंको बैठनेकी इजाजत होनी चाहिये। मास्कोने इसका जवाब दिया—"कभी ऐसा नही हुआ, कि बायरो और वोयवदोके साथ अदालतमें कमेरे (मूजिक) बैठें।" प्स्कोफके विरुद्ध सरकारी सेना गई, लेकिन उसे बुरी तौरसे हारना पडा। पीछे जब वहांके धनियों और अमीरोंने देखा, कि इस सघर्षमें उनका भी ठौर-ठिकाना नही रहेगा, तो उन्होंने विश्वासघात करके जारके निरंकुश अधिकारको फिरसे स्थापित करनेमें मदद दी—१६५० ई०के विद्रोहोंको दमन करनेमे भावी महासंघराज निकोनका खास हाथ था।

शासन-यंत्र—जारका अधिकार असीम था। जो कानून और नियम बनाये गये थे, उनका अन्तिम लक्ष्य यही था, कि अर्ध-दासो और किसानोके ऊपर बायरोंका पूरा अधिकार रहे। जार सबके ऊपर स्वेच्छाचारी शासक ही नही था, बल्कि देशका वह सबसे बडा बायर (जमींदार) भी था। अमीरों और दूसरे जमीदारोंके लिये यह जरूरी था, कि जारकी शक्ति खूब दृढ़ हो, जिसमें वह उनके वर्ग-स्वार्थकी रक्षा कर सके। जारकी इच्छा ही सारे देशके लिये विधान थी। सामन्ती कुलोंके बायर भी अपनेको जारका सेवक कहते थे और गाव या नगरके साधारण लोग तो अपनेको वह भी नही कह सकते थे। वह जारके "नन्हेसे अनाथ" थे। जारको सम्बोधित करनेपर वह अपनेको छोटा बनाते हुये पीतरकी जगह पेतरूशका (पीतरवा), इवानकी जगह इवाशका (इवनवा) कहते थे। जारको वह देवता मानते हुये धरतीपर ललाट रखकर उसे प्रणाम करते।

राज्यके महत्त्वपूर्ण विषयोंपर निर्णय करनेका काम जारके दरबारी बायरोंकी दूमा (परिषद्) करती थी। इस परिषद्में केवल सामन्त (राजुल) और बायर ही सम्मिलित होते थे, लेकिन १७वीं शताब्दीमें साधारण कुलके प्रभावशाली नये धनी भी उसमें सम्मिलित कर लिये गये।

सरकारी दफ्तरोंके कई दर्जे और विभाग थे। एक विभागका नाम "प्रिकाजी" था, जिसका मुखिया एक बायर और जिसके एक-दो सहायक-लेखक (द्याकी) होते। आफिसके साधारण कामोंको पद्याचिये (निम्न-लेखक) करते। सैनिक काम-काजकी व्यवस्था अलग थी। रज्र्याद्नी-प्रिकाज़ (सैनिक आफिस) सेना-संचालन विभागका काम करता था। स्त्रेलेत्स्की आफिसका काम था, स्त्रेलेत्स्की सैनिकोंके कामको देखना, पसोल्स्की प्रिकाज (दूत-कार्यालय) विदेश-विभागका काम देखता। स्थानीय शासन-प्रबंधके मुखिया वोयवोद (राज्यपाल) होते, जो राज्यके नगरोंके शासनके लिये

*लाल या "क्रास्नी" रूसी शब्दका अर्थ सुंदर और रक्त दोनों है, पहिले इसका अर्थ "सुंदर मैदान" लिया जाता था, किन्तु बोल्शेविक क्रांतिके बादमें क्रांतिके प्रिय रंग लालको माना जाने लगा।

बायरों और सामन्तोंमेंसे नियुक्त किये जाते। वोयवोद नगरके सैनिक और असैनिक सभी अधिकारों का प्रमुख था। वही न्याय-प्रबन्ध करता, नगर और उसके इलाकेके लोगोंसे कर उगाहता, एक तरहसे वह अपने इलाकेका स्वच्छद जार था।

चर्च-सुधार—रूस सदियोसे ग्रीक चर्चका पक्का अनुयायी था। चर्चके साधुओ-पुरोहितो. एव मठों-गिर्जोंका जाल गांवोमे भी बिछा हुआ था, लेकिन तबतक अभी उसका पूरी तौरसे केन्द्रीकरग नही हुआ था—यही नही कितने ही कर्मकांड और रीति-रवाजको लेकर चर्चकी कई शाखायें हो गई थी। प्स्कोफमें लोगोंके आन्दोलनको दबानेमे मदद देनेवाला निकोन अब महासंघराज था। निकोन मठोंकी जायदादके साथ अपनी इच्छानुसार जैसा चाहता वैसा करता। उसके पास बहुत भारी निजी सम्पत्ति थी। वह चर्चके भीतर अपनेको सर्वशक्तिमान् जार समझता था। उसके अत्याचारोंके कारग साधु-पुरोहित उसे "जंगली जानवर" कहते थे। निकोनने चाहा, कि भेदोंको मिटाकर सारे चर्चको एक कर दिया जाय। इसके लिये उसने पूजा-पद्धतियों और रीति-रवाजोंमे परिवर्तन करनेकी आज्ञा दी। निकोनके सामने पश्चिमी चर्चके रोमन-पोपका उदाहरण मौजूद था। उसने अपनेको पूर्वी चर्चका पोप बनाना चाहा। ग्रीक और कियेफके सुशिक्षित साधुओं-ने पद्धतियों और क्रिया-कलापोंके संशोधनका काम किया। निकोनने आज्ञा दी, कि पहले जैसे दो अंगुलियोंसे सलेब खींच पूजाकी मुद्रा की जाती थी, अब उसे तीन अंगुलियोसे करना चाहिए। बढते-बढ़ते उसने इस सिद्धान्तको भी चलाना चाहा, कि आध्यात्मिक (धार्मिक) शासन सांसारिक शासनसे ऊपर है: "आध्यात्मिक शासन सूर्यकी तरह है, जब कि सासांरिक शासन चन्द्रमा जैसा है—चन्द्रमा अपना प्रकाश सूर्यसे प्राप्त करता है।" निकोन "महास्वामी" (बैलीकी गसूदर) की उपाधि धारण कर राजकाजमें भी दखल देने लगा—सैनिक अभियानों तकके लिये भी आज्ञा निकालने लगा। उसकी इस अनधिकार चेष्टासे सामन्तों और अमीरोंमें भारी असतोष पैदा हो गया। यद्यपि वह चर्चको मजबूत करनेके निकोनके प्रयत्नको पसद करते थे, लेकिन नहीं चाहते थे, कि महासंघराजके सामने जार अकिंचन हो जाये। होते-होते इस वैमनस्यने भयंकर रूप धारण किया, जिसपर निकोन एकाएक अपने पदको छोड़ एक मठमें एकांतवासी बन बैठा। उसने समझा था, कि दरबारी खुशामद करते उसे फिरसे पद सभालनेके लिये प्रार्थना करेंगे, लेकिन उसे निराश होना पडा। निकोनके कामोंकी जांच करनेके लिए जारने १६६६ ई०में दो ग्रीक संघ-राजोंकी समिति बनाई। समितिने अपना निर्णय दिया, कि निकोनने राजशक्ति हथियानेका प्रयत्न किया। तो भी उसके चर्च-संबंधी सुधारोंको स्वीकार किया गया। निकोनको एक साधारण साधु बनाकर उत्तरके एक मठमें निर्वासित कर दिया गया।

निकोनने जो सुधार किये थे, उससे यद्यपि रूसी चर्चमे एकता स्थापित हुई, लेकिन कितने ही सनातनियोने इन सुधारोंको माननेसे इन्कार कर दिया। उन्होंने "रस्कोल्निकी" (मतभेदी) अथवा पुराणविश्वासी नामसे अलग सम्प्रदाय बना लिया। आज भी रस्कोल्निकी कितनी ही जगहो-में काफी संख्यामें मिलते है। इन विरोधियोंमें एक मास्कोका अव्वाकुम था, जिसे उसके विरोधके लिये पूर्वी साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया, जहां प्रायः दस वर्षोतक जारके वोयवोदोने उसके साथ बड़ा कठोर बर्ताव किया। निर्वासनके बाद अव्वाकुमने रूस लौटकर फिर अपने कामको शुरू किया। अब उसे उत्तरमें पुस्तोजेर्स्क स्थानमें बंदी बनाकर एक अंधेरे तहखानेमें डाल दिया गया। राज्यको इतने हीसे संतोष नही हुआ, बल्कि १६८१ ई०मे अव्वाकुमकी होली जलाई गई। बहुत दिनोंतक रस्कोल्निकी सम्प्रदायका मुख्य केंद्र रूससे बाहर रूमानियामे था। क्रान्तिके बाद ही उनके साथका भेदभाव दूर हुआ, और उनका केन्द्र रूसकी भूमिमें चला आया।

उक्रइनका मिलन—१५६९ ई०में लिथुवानिया और पोलन्दमें एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार दोनों एक हो गये। उसी समयसे उक्रइनका बहुत बड़ा भाग पोलन्दके हाथमें चला गया। उक्रइनी लोग पोल जमीदारों और सामन्तोंके जूयेके नीचे कराह रहे थे। सबसे अच्छी भूमिको लेते बढ़ते-बढ़ते द्नियेपर नदीके बायें तटके गावोंके भी स्वामी पोल बन गये। ऐसे आर्थिक शोषण, राज-

नीतिक अत्याचार और दुर्व्यवहारको उक्रइनी लोग कबतक चुपचाप बर्दाश्त करते ? स्लाव जाति-के होनेपर भी पोल जहां कैथलिक होनेसे रोमके पापाको भगवान्का अवतार मानते, वहां उक्रइनी ग्रीक चर्चके अनुयायी थे। पोल अमीर और जमीदार चाहते थे, कि उनके किसान भी रोमके पापाको मानें, ताकि बिना चूं-चिराके हमारे जूयेको उठाते रहें। इसके लिये भी कोशिश की जाने लगी, कि कैथलिक और ग्रीक चर्चको एक संघमे मिला दिया जाये। योजना यह थी, कि दोनों चर्च पूजा-पद्धति अपनी-अपनी रक्खे, लेकिन रोमके पापाको अपना प्रमुख माने। इस कामके लिये १५९६ ई०मे ब्रेस्त नगरमें एक चर्च-सभा बुलाई गई। सभाका बहुमत इसे नही पसंद करता था, कि ग्रीक-चर्च रोम-चर्चके अधीन हो जाये, तो भी अल्पमतके निश्चयको स्वीकार करते पोल राजा-ने वैसा राजादेश निकाल दिया। इसपर असंतोष बढ़ना ही था। धार्मिक एकताकी आड़में असल उद्देश्य तो था, किसानों और कमेरोंपर अमीरोंका निर्बाध अधिकार स्थापित करना। अत्याचारोंके मारे कितने ही उक्रइनी और बेलोरूसी किसान भागकर निम्न-द्नियेपर-उपत्यकाकी खाली जगहोंमें चले गये, जो ज़ापरोज़े कसाकके नामसे प्रसिद्ध हुये। इसी समय रूसी जमीदारों के अत्याचारोंसे बचनेके लिए बहुतसे किसान दोन-उपत्यकामें भाग गये, जो दोन-कसाक कहलाये। उक्रइनके भगोड़े किसानोने द्नियेपरके जल-प्रपातके पास खोर्तित्सा द्वीपमें अपना एक दुर्ग बनाया। अबतक तुर्क और क्रिमियाके तारतार उक्रइनकी भूमिमें घुसकर लूट-मार करना अपना हक समझते थे, लेकिन अब ज़ापरोजे कज़ाक कालासागरके तटकी उनकी भूमिमें हाथ साफ करने लगे। इनका कोई एक निश्चित निवासस्थान नही था। जब लूट-मारसे काफी माल प्राप्त हो जाय, और थोड़ेसे पशु-पालनसे काम चल जाये, तो स्थायी बस्ती बाधनेकी क्या अवश्यकता ? कही-कही उनके मोर्चाबंदी किये डेरे होते थे, जिन्हें सेच कहा जाता था। बसतके आरंभमें कसाक सेचपर जमा होते। उस समय यह द्वीप जनसंकुल हो उठता। इसी समय कसाक अपना मुखिया (अतमन) तथा दूसरे सेनानायक निर्वाचित करते। सैकड़ों कसाक बीरी (वेद) की लकड़ीकी नावें बनाने या मरम्मत करनेमें लग जाते, हथियारोंको ठीक करते। सब तैयारी हो जानेके बाद इन्हीं नावोंपर चढ़कर वह बड़ी तेजीसे कालासागरमें पहुंच जाते, और फिर तट-भूमिपर लूट-मार शुरू कर देते। कभी-कभी तो वह सुल्तानकी राजधानी कान्स्तन्तिनोपोलतक भी धावा मारते। उनकी नावोंकी गति इतनी तीव्र होती, कि तुर्क संतरी खतरेकी खबर भी नही दे पाते थे। जाड़ोंमें कसाकोंकी सेच जनशून्य हो जाती। उस समय वह अपने लूटके मालको ले जाकर उक्रइन और पोलन्दके नगरोंमें बेंच दूसरी चीजें खरीदते।

१६वी शताब्दीके अन्तमें ज़ापरोज़े कसाकोंकी संख्या काफी बढ गई। पोल राजा स्तेफन बाथोरीने उनकी सैनिक क्षमताको देखकर उन्हें अपना सचिकाबद्ध (रजिस्टरबद्ध) सैनिक बनाना शुरू किया—जिसके कारण ऐसे कसाक "रजिस्टरबद्ध कसाक" कहे जाने लगे। उनको राज्य-की ओरसे कुछ वेतन तथा शहरोंमे रहनेके लिये मकान मिलते थे। रजिस्टरमे नाम लिखे कसाकोंकी संख्या बहुत कम थी। १६वीं सदीके अन्तमें ज़ापरोजे कसाकोंमें भी धनी-गरीबका भेद स्थापित हो गया। राजा उनके सरदार (हेतमन, अतमन) को अपना अफसर बनाता।

धनी-गरीबके भेदने उक्रइन और बेलोरुसियामें जनसाधारणको विद्रोह करनेके लिये मजबूर किया। इन विद्रोहोंमें ज़ापरोजे कसाक प्रायः किसान-विद्रोहियोंका साथ देते—कभी-कभी रजिस्टर-बद्ध कसाक भी उनके सहायक बन जाते। विद्रोही किसान पोल जमींदारोंकी गाडियोमे आग लगा देते, और हाथ लगनेपर उन्हें मार भी डालते। पोल फिर सेना लेकर आते और किसानोंसे बड़ी क्रूरताके साथ बदला लेते। इस वक्त भी कितने ही विद्रोही किसान अपने गावोंको छोड़कर मध्य-द्नियेपर-के घने जंगलोंमे भाग जाते, जहांसे अपने शत्रुओंपर छापामारी करते।

१६३० ई०के आसपास ज़ापरोज़ेकी सेच पोलोंके खिलाफ एक बार फिर उठी, जिसे आसानीसे दबा दिया गया, क्योंकि उनके धनी मुखिया और सरदार विश्वासघात करनेके लिये तैयार थे। पोलोंने जापरोज़े कसाकोंको उक्रइनमें घुसनेसे रोकनेके लिये द्नियेपरके प्रपातके ऊपर कोदकमें फ्रेंच

इजीनीयरके तत्त्वावधानमे एक किला बनवाया, जिसके तैयार हो जानेपर पोल हेतमनने कसाकोंके साथ मजाक करते हुये कहा—"कोदकके बारेमें तुम क्या सोचते हो ?"

"मानव हाथोंने जिसे बनाया, वह मानव हाथोंद्वारा नष्ट किया जायेगा।"—यह जवाब कसाक सरदार बगदान ख्मेल्‌नित्स्कीका था।

कुछ वर्षों बाद सचमुच ही कसाकोंने कोदक दुर्गको नष्ट कर दिया, और १६३८ ई०से पहले पोल सेना उक्रइनके विद्रोहको नही दबा सकी।

१६४८ ई०के बसंतमे फिर लोगोंने पोलन्दके खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोहके आरम्भक ज़ापरोज़े कसाक और उनका नेता बगदान (भग-दत्त) ख्मेल्‌नित्स्की था। बगदान उक्रइनमें बहुत जनप्रिय था। वह शिक्षित था। कियेफकी अकदमीमें उसने पढ़ा था, और लातीनी भाषा भी जानता था। कसाकोंके कितने ही साहसपूर्ण अभियानोंमें उसने भाग लिया था। अभी वह बीस वर्षसे कुछ ही बडा था, कि पोलोंके साथ मिलकर उसने तुर्कोंके खिलाफ लड़ाई लडी थी। उस समय तुर्कोंकी सीमा पोलन्दसे मिलती थी, और कितने ही उक्रइनी गांव तुर्कोंके हाथमें थे, जिनके साथ तुर्क बडा दुर्व्यवहार करते थे। बगदानका बाप चेचोरा जासीके पास तुर्कोंकी लडाईमे मारा गया और बगदान स्वयं तुर्कोंका बंदी बना, जहां उसे दो सालतक रहनेके बाद मुक्ति मिली। बगदान एक अच्छा खाता-पीता समृद्ध जमींदार था, और पोल राजकीय सेनाके रजिस्टरमे भी उसका नाम था। लेकिन, उसके देशभाइयो (उक्रइनियों) के साथ पोलोंका जैसा दुर्व्यवहार हो रहा था, उसके कारण बगदान अपनेको रोक नही सका। पोलोंका शासन मनमानी था। एक दिन एक पोल जमीदारने दखल करनेका सरकारी परवाना ला एकाएक बगदानकी जमीदारीपर अधिकार कर लिया, और सारे परिवारको जंजीरोमे बांध दिया। बगदानने जब न्याय करनेकी बात कही, तो पोल जमीदारने बगदानके दस वर्षके लड़केको कोड़ेसे पीटते हुये मार डाला। बगदानने राजाके दरबारमे जाकर न्याय पानेकी कोशिश की, लेकिन वहांसे भी उसे खाली हाथ लौटना पड़ा। जो भी थोडीसी धन-दौलत-जमींदारी उसके पास थी, वह खतम हो चुकी, साथ ही उसके बेटेकी निर्मम हत्या की गई, उसे भी वह भूल नही सकता था। उसने अच्छी तरह समझ लिया, कि इन सारे अत्याचारोंका कारण देशकी परतन्त्रता—उक्रइनका पोलन्दके हाथमें रहना है। उसने अपने कसाक-मित्रोंको जमा करके उनका एक दल बनाया, और फिर उनसे पूछा—

"क्या हम अपने भाइयोंको इस हालतमे छोड़ दें? देशमें सभी जगह मैने अपनी आंखों भयंकर अत्याचार होते देखा है। हमारे अभागे भाई हमसे सहायता मांग रहे है।"

इसके जवाबमे एक बूढ़ं कसाकने कहा—"अब तलवार उठानेका समय आ गया है, पोलोंके जूयेको उतार फेकनेका समय आ गया है।" पोल जमींदारोंको भी इसकी भनक लग गई, और उन्होंने बगदानको जेलमें डाल दिया, लेकिन वह भागकर ज़ापरोज़े पहुंचनेमें सफल हुआ। अब उसने संगठित रूपसे पोल जमींदारोंपर धावा बोलना शुरू किया। पोल अपना सब कुछ छोड़ जान लेकर भागने लगे। यह खबर सुन उक्रइनमें और जगहोमें भी विद्रोह होने लगे। बगदानने सोचा, हमारी शक्ति और भी मजबूत हो सकती है, यदि क्रिमियाके तारतार खानसे मित्रता हो जाये। इसके लिये वह स्वयं क्रिमियाकी राजधानी बक्सीसराय गया। खान उस समय पोल-राजासे बहुत नाराज था, क्योंकि कितने ही वर्षोंसे उसने भेंट नही भेजी थी। खानकी ओरसे बगदानका बडा स्वागत हुआ, और अपने उद्देश्यमें सफल होकर लौटा। खानने बगदानकी मददके लिये अपने एक राजकुमारके नेतृत्वमें तारतार सैनिक भी भेजे। कसाकोंने बगदानका भारी सम्मान करते अपनी सभामें उसे कसाक सेनाका हेतमन (मुखिया) घोषित किया और हेतमनके दर्जेका चिह्न एक बुलवा (गदा) भेंट की।

१६४८ ई०के वसंतसे कसाकोंने पोलोंपर खूब जोरके साथ आक्रमण करना शुरू किया। मईके आरम्भमें बगदानने एक बडी पोल सेनाको हराया, जिसमे कसाकों और तारतारोंको बहुत-सा लूट-का माल मिला। सफलताके साथ-साथ अब बगदानके अभियानोंने उक्रइनी जनताके मुक्ति-युद्धका

रूप लिया। १६४८ ई०के सितम्बरमें पोल सेनाकी पिल्याव्का नदीके तटपर ओर भी भयंकर हार हुई। इस हारके बाद बगदानके लिये पोल-राजधानी वारसाका रास्ता खुल गया था। बगदान उक्रइन-से पोलोको ल्वोफ और जामोस्तयेतक खदेड़कर कियेफ लौटा। लोगोंने उक्रइनके मुक्तिदाताके तौरपर उसका स्वागत किया। तीन सौ वर्षोंतक पोलोंकी गुलामीमें रहनेके बाद कियेफ अब स्वतन्त्र हुआ था। पोल सरकारने उक्रइनकी शक्तिको समझ लिया और सधि कर लेनेमें ही भलाई समझी। बगदानने मांग या प्रतिज्ञा की—"मैं सारी उक्रइनी जनताको पोलोंकी गुलामीसे मुक्त करके ही दम लूगा।" पोल दूतोंके साथ बातचीतका कोई फल नही हुआ, इसपर १६४९ ई०के ग्रीष्ममें बगदानने नया अभियान शुरू किया। क्रिमियाके तारतार अब भी उसके साथ थे, लेकिन पोलोने प्रलोभन देकर खानको अलग कर दिया और बगदानने अपनी शक्तिको देखते हुये सधि करना ही पसंद किया। इस सधिके अनुसार उक्रइनका स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ, जिसका हेतमन बगदान माना गया। रजिस्टरबद्ध कसाकोंकी संख्या छ हजारसे चालीस हजार कर दी गई।

१६४९ ई०की ज्वोरोफकी यह शान्ति-सधि भी उक्रइनको पूरी स्वतन्त्रता नही दिला सकी। पोल इस संधिको अपनी आगेकी तैयारीके लिये सिर्फ बहाना बनाना चाहते थे। १६५१ ई०के आरम्भमे उन्होने फिर पश्चिमी उक्रइनपर आक्रमण कर दिया। उसी सालके बसतमे एक बडी सेना लेकर पोल-राजा स्वय चढ़ आया। पोपने अपने पोल-अनुयायियोंको इस धर्मयुद्धमें भाग लेनेके लिये घोषणा की—उक्रइनियोके साथ युद्ध करनेमें जो भी पाप होगा, हम उसको क्षमा करते हैं। बगदानके साथ क्रिमियाके खानकी सेना थी, लेकिन ऐन-मौकेपर जून १६५१ को बेरेस्तमे तारतारोंने धोखा दे दिया। बगदानने जल्दीसे खानके पास जाकर सेनाको लौटनेके लिये कहा, लेकिन खानने सेना लौटानेकी जगह बगदानको ही अपने पास पकड रक्खा। बिना नेताके भी कसाक और उक्रइनी किसान कितने ही दिनोंतक मोर्चा बांधे पोलोंसे लडते रहे। उन्होंने एक असाधारण शक्ति और हिम्मतके धनी पुरुष बोगुनको अपना नेता चुना। कसाकोने अपने पराक्रमका खूब परिचय दिया। एक घिरी कसाक-टोलीके पास पोलोंने आत्मसमर्पण करनेके बदले प्राणदान देनेका वचन दिया, जिसका जवाब था—"हमे अपने प्राण प्यारे नही हैं। हम शत्रुकी दयाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।" यह कहकर वह एक-दूसरेसे गले मिल पोलोंके ऊपर टूट पड़े। तीन सौ कसाकोमेंसे एक-एक वीर-गतिको प्राप्त हुआ। इतनी वीरता दिखलानेके बाद भी पोल सेनाको रोका नहीं जा सका। महीने भर बाद जब खानने बगदानको छोडा, तो कियेफ पोलोंके हाथमें चला गया था और तारतारोंने देशको लूटकर बरबाद कर दिया था। १६५१ ई० की शरदमें जो संधि करनी पडी, उसके अनुसार सारे संघर्षमे प्राप्त सभी चीजोंको हाथसे खो देना पडा। पोल जमींदार फिर उक्रइन लौटे और विद्रोहमें शामिल होनेके दडस्वरूप किसानोंके ऊपर अकथनीय अत्याचार करने लगे। किसान अपने गांवोंको छोड-छोड़ द्नियेपरके बायें तटपर जमा हो वहांसे रूसी राज्यके भीतर जाकर बसने लगे। पोलोंके अधीनकी उक्रइन-भूमि जल्दी ही जन-शून्य होने लगी, भगोडे उक्रइनी जाकर उत्तरी दोनेत्सकी ऊपरी उपत्य-काकी उर्वर-भूमिको आबाद करने लगे। पोल राजाने क्रिमियाके खानके साथ शांति स्थापित कर उसे चालीस दिनके लिये उक्रइनी जनताको लूटनेकी खुली इजाजत दी थी। क्रिमियाके तार-तारोने लूटते-पीटते हजारों स्त्री-पुरुषोंको ले जा जिन्दगीभर दास रहने के लिये बेच दिया। इन्हीके बारेमें एक उक्रइनी लोकगीतमे कहा गया है:—

"उक्रइनी लोग दुःख भुगत रहे हैं, उन्हें कही छिपनेकी जगह नही,
घुमन्तू सवारोंके ओर्दू बच्चोंके शरीरपर दौड़ रहे हैं,
कोमल शिशुओंको रौंदते,
उनके पीछे हथियार—जंजीरमें बंधे जालिम खानके शिकार।"

१६४८–५१ ई०की लड़ाइयोंसे उक्रइनियोंको इस बातका पता लग गया, कि बिना बाहरी सहायताके पोलोंके हाथसे अपने देशको मुक्त नहीं किया जा सकता। इसीलिये जब १६५२ ई० मे उक्रइनके किसान और कसाक दूसरी बार विद्रोह करनेके लिये तैयार हुये, तो बगदानने
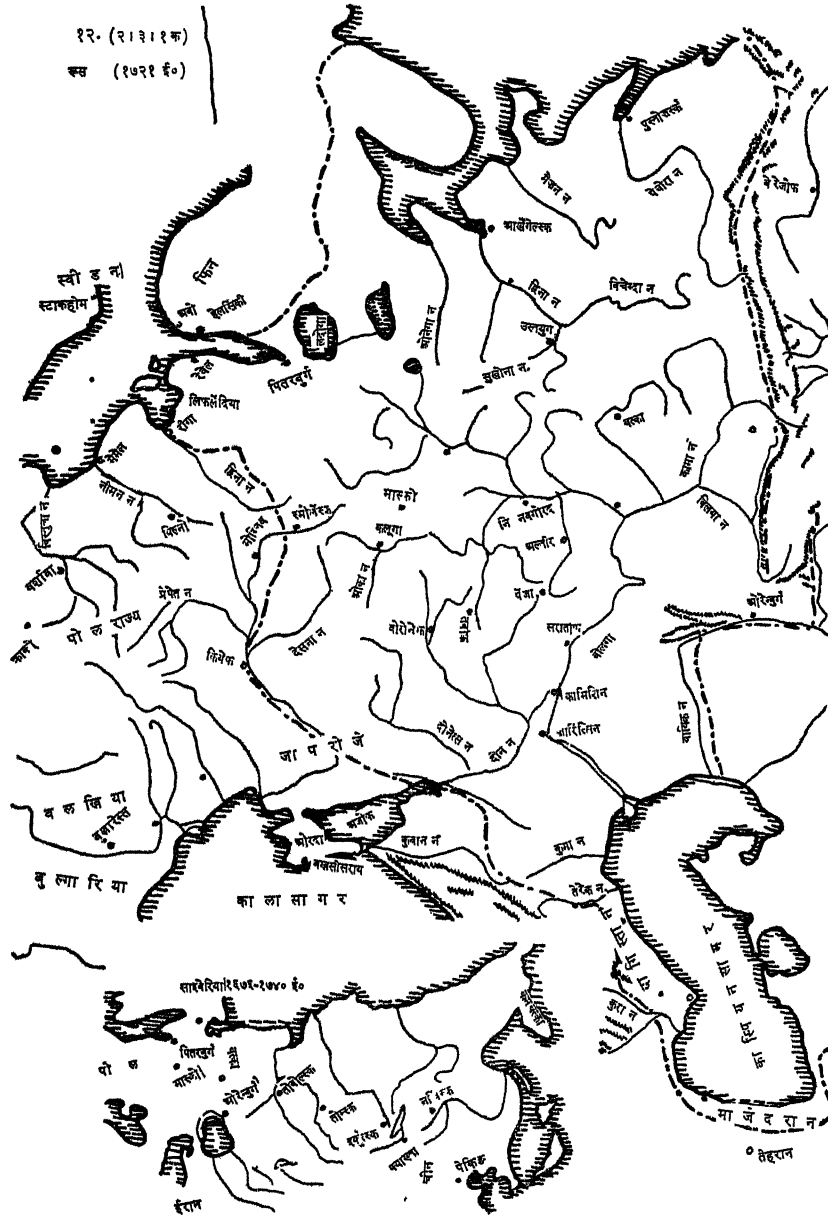
उक्रइनको रूसमें मिला लेनेके लिये मास्को-सरकारसे बातचीत शुरू की। १६५३ ई०के शरद् में मास्कोमे "ज़ेम्स्की सबोर"के अधिवेशनमें निश्चय हुआ, कि उक्रइनको अपने संरक्षणमें ले लिया जाय, और पोलन्दके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की जाय। ८ जनवरी १६५४ ई०में उक्रइनी कसाकोंके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन—रादा—पेरेयास्लाव्लमें हुआ, जिसमें मास्कोके दूत भी शामिल हुये थे। रादाको सम्बोधित करते बगदानने अपने लोगोंकी दयनीय अवस्थाका चित्र खींचते हुये कहा था—

"तुम सब जानते हो, कि हमारा शत्रु हमें पूरी तौरसे मिटा देना चाहता है, जिसमें हमारी भूमिमें रूस (उक्रइनी) नाम फिर कभी न लिया जा सके। इसीलिये तुम चार शासकोंमें से किसी एकको अपने लिये चुन लो: पहला है तुर्कीका सुल्तान, जो कि ग्रीकोंपर जुल्म ढा रहा है, दूसरा है क्रिमियाका खान, जिसने हमारे भाइयोंके खूनसे अनेक बार अपने हाथोंको रंगा है, तीसरा है पोल-राजा, जिसके अमीरोंके अत्याचारके बारेमें कहनेकी अवश्यकता नहीं और चौथा है महारूसका पूर्वी जार।"

हजारों कठोंने एक जवाब दिया :—"हम पूर्वी जारके अधीन रहना चाहते हैं।"

इसके बाद मास्कोसे समझौता हुआ, और रूसने उक्रइनके स्वायत्त-शासनके अधिकारको स्वीकार किया—उक्रइनी सरकारके लिये लोकनिर्वाचित हेतमन (प्रधान) बनाना स्वीकार किया गया। उक्रइनके लिये स्वेच्छाचारी जारका शासन भी पोलोंसे कम कठोर नही था, पर उक्रइनी और बेलोरुसी भाषा, धर्म और सस्कृतिमे रूसियोंके सगे भाई थे, इसलिये उनको यही रास्ता अच्छा लगा। फिर १६५४ ई० में पोलोसे लडाई शुरू हुई, जो बीच-बीचमे रुकती हुई तेरह वर्ष (१६५४–६७ ई०) तक चली। इसी युद्धमे प्राय: सारी बेलोरुसिया भी पोलोंसे मुक्त हो गई। रूसकी विजयिनी सेना लिथुवानियाके मुख्य नगर विलनोमें दाखिल हुई। उधर सारी उक्रइन-भूमिको मुक्त करते हुये बगदान और मास्को के वोयवोद पोलन्दकी सीमाको पार हो लुबलिन नगरको लेनेमें सफल हुये। इसी बीच १६५६ ई० मे स्वीडनके राजा दशम चार्ल्सने भी पोलन्दके ऊपर आक्रमण करके वारसा (वरसावा), क्राको और दूसरे पोल-नगरोंपर अधिकार कर लिया। इस अचानक प्रहारके कारण पोल मास्कोके साथ शांति-भिक्षा मागनेके लिए तैयार हो गये। पर, शाति अस्थायी ही हो पाई, क्योकि पोलन्द सारे उक्रइन और बेलोरुसियापर अपने अधिकारको छोडनेके लिये तैयार नही था। बाल्तिक समुद्रतट रूसके लिये इस समय खतरनाक था—जबतक स्वीडनको समुद्रतटसे भगाया न जाय, तबतक रूस अपनेको-सुरक्षित नही समझ सकता था। इसके लिये १६५६ ई०मे स्वीडनसे लडाई शुरू हो गई, लेकिन कुछ सफलता होनेपर भी युद्ध कई वर्षोंतक अनिर्णायक रूपमे चलता रहा। अन्तमें १६६१ ई०में रूसने अपनी असफलता स्वीकार करते यथापूर्व-स्थितिको मानते करसिकी-सधि-पत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। बगदान १६५७ ई०में मरा। वह यह देखकर प्रसन्न था, कि उक्रइन अब जालिम पोलोंसे मुक्त है।

वोल्गाकी जातियां—१७वीं सदीमें अब भी वोल्गाके दोनों तटोंके घने जंगलों और मैदानोंमें उराल-अल्ताई-वंशकी अ-रूसी जातियां रहती थी। व्यत्का नदीकी पूर्वी वनभूमिमे उदमुर्त (वोत्याक), रहते थे। वोल्गाके बाये तटपर व्यत्का और वेतुल्गा नदियोंके बीचमें तथा वोल्गाके दक्षिणी तटपर, वोल्गा और सुरा नदियोंके बीचमे मारी (चेरेमिसी) लोग रहते थे। मारियोंके पड़ोसमें चुवास और मोर्द्विनी रहते थे, जिनकी बस्तियां निम्न ओका और ऊपरी सुराकी भूमिमें थी। निम्न कामाके दोनों तटोंपर तातारों (तारतारों) की बस्तियां थी। बाशकिर (तुर्क) कामाके दक्षिणी-पूर्वकी भूमि एव ऊफा नदीके किनारे बसते थे। कुछ बाशकिर उरालके परे तबोल् नदीके ऊपरी भागमें भी रहते थे। इन सभी जातियोंको इवान IVने कजानके खानपर विजय प्राप्त करनेके बाद अपनी प्रजा बना लिया था। जारकी सरकार १५५२ ई०तक वोल्गा-भूमिके अपने पराजित लोगोंसे वही कर वसूल करती थी, जो कजानके खान तथा उसके सामन्त उनसे लिया करते थे। जारके कर उगाहनेवालोंका बर्ताव भी इन लोगोके साथ अच्छा नही था, कितनी ही बार वह लोगोके पशुओं और अन्नको जब्त कर लेते। रूसी महन्तों और जमीदारोंने भी वहांकी बहुत-सी उर्वर भूमि और जंगलोंपर अधिकार कर लिया था—इन जंगलोमें भारी संख्यामें कीमती समूरी खालवाले जानवर रहते थे। ग्रीक चर्चने यहांके लोगोंको निकोनके समय जबरदस्ती ईसाई बनानेमे बड़ी सरगरमी दिखलाई। ईसाई पुरोहित मोर्द्विनी गांवोंके किसानोंको जमाकर बपतिस्मा दे उन्हें बाध्य करते, कि वह अपने पवित्र वनों-उपवनों और पितरोंकी कब्रोंपर बने लकड़ीके ढांचोंको जला दें।

बाशकिर लोग मुख्यतः पशुपाल थे। वह समूरी जानवरोंका शिकार, जंगली मधुका संचय और मछुवाही भी किया करते थे। १७वी सदीमें अब वह कहीं-कही खेती करने लगे थे, और जहां-तहां लकड़ीके बने उनके झोपड़े भी खड़े होने लगे थे। ग्रीष्ममें वह अपने ढोरों और घोड़ोंको चराने-के लिये चरागाहोंमें और शरद्के अन्तमे अपने जाड़ेके निवास-स्थानोंमें चले जाते। पहले उनमें अपने छोटे-छोटे कबीलोंका जनसत्ताक संगठन था, लेकिन अब वह पुराने समयसे चला आता संगठन टूटने लगा था। भूमिपर कबीलेका साझी अधिकार हटकर अब उसके बड़े और अच्छे भागपर तरखनों (राजकुमारों) और बातुरो (बहादुरों) का अधिकार हो गया था। इस प्रकार धनी-गरीब-

का वर्ग-भेद उनमें स्थापित हो चुका था। बाशकिर रूसी सरकारको कई तरहके मूल्यवान् समूरी खालोंको करके रूपमे देते थे। १७वी सदीमे अब रूसी महत और जमीदार भी इनकी भूमिमे पहुच-कर घने जंगलों, मछलीभरी नदियो, नमककी खानों, हरे-भरे चरागाहों, तथा खेतीके लिये उपयुक्त बंजर भूमिको अपने हाथमें करने लगे। इसके कारण पशुपाल बाशकिरोको बडी बाधा होने लगी, जिसके लिये असतोष और विद्रोह करनेका परिणाम यही हुआ, कि वहांपर ऊफा जैसे कितने ही दुर्गबद्ध नगर रूसियोने स्थापित कर दिये।

वोल्गा-प्रदेशकी अ-रूसी जातियोमे कलमक (कल्मख) भी थे। कलमक मंगोलोंकी एक शाखा थी, इसे हम आगे बतलायेगे। वह १६३० ई०के आसपास निम्न-वोल्गाकी भूमिमें आये। पहले यह घुमन्तू जाइसन सरोवरके उत्तरकी पहाडियोंमें विचरते थे, जिसे जुगारिया भी कहा जाता है। कलमकोंके कई भिन्न-भिन्न कबीले थे, जिनका अलग-अलग राजा होता था। वैसे सभी कबीले एक-दूसरेसे स्वतन्त्र थे, लेकिन जब सारी जातिके ऊपर कोई खतरा आता, तो सबसे शक्तिशाली जातिके राजाके अधीन वह अपना लडाकूसघ स्थापित कर लेते। १७वी सदीके आरम्भमे कलमकोके एक बहुसख्यक कबीलेका डेरा इर्तिश नदीके ऊपरी भागमे था। इर्तिशके किनारे येरमककी विजयके बाद रूसियोंकी बहुतसी बस्तियां बस गई थी। इर्तिशके इन कलमकोंने रूसी कसबोंपर आक्रमण करना शुरू कर दिया, जिसका बदला भी लिया जाने लगा। फिर दक्षिण-पश्चिमकी ओर बढते १६३० ई०के आसपास उन्होने यायिक (उराल) और वोल्गाके बीचकी भूमिको दखल कर लिया। १६५६ ई०मे कलमकोने रूसकी अधीनता स्वीकार की। १७वी सदीके अन्त तथा १८वी सदीके आरभमे वोल्गा-कलमकोका शासक आयुका बड़ा शक्तिशाली खान था। यद्यपि उसने जारकी अधीनतासे इन्कार नही किया, लेकिन वह अपनेको स्वतन्त्र समझता था, और वोल्गाके किनारेके रूसी नगरोपर आक्रमण करनेसे भी बाज नही आता था। जो कलमक जुगारियामे रह गये थे, उन्होंने १७वी सदीके अन्ततक एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया, जो धीरे-धीरे साम्राज्य-का रूप लेने लगा।

रूसी शासकोंके अत्याचारके कारण वोल्गाके लोग जब-तब विद्रोह कर बैठते थे, लेकिन १६६२ ई०में इस विद्रोहने खतरनाक रूप लिया। उस साल एक ही समय बाशकिर-भूमि और पश्चिमी साइबेरियाके बहुत भागोमें बगावत हो गई। येरमकद्वारा पराजित सिबिरके कूचुम खानके एक वंशजने तातारों, बाशकिरों और पश्चिमी साइबेरियाके वोगुलों (मसियो)के विद्रोहका नेतृत्व किया। विद्रोहियोंने रूसियोके किलेबंद नगरोपर आक्रमण किया, उनके मठो और बस्तियोको नष्ट कर दिया। यह विद्रोह कई सालतक चलता रहा। विद्रोहके दमन कर देनेके बाद जारशाही सरकार ने बाशकिरोंकी और कितनी ही भूमि छीन ली, बाशकिर जवानोको जबरदस्ती सेनामे भर्ती करके क्रिमियामें लडनेके लिये भेजा। इसके कारण १६७५ ई०के आसपास फिर विद्रोह उठ खड़ा हुआ। छिटपुट होते विद्रोहोंको १६८२ ई०मे सैयद सादिर जैसा नेता मिल गया। कलमकोका प्रधान आयु-का खान भी बाशकिरोंकी सहायता करने लगा। लेकिन, अन्तमे बौद्ध कलमकों और मुसलमान बाशकिरोकी प्रतिद्वद्विता इतनी बढ़ी, कि कलमक जारकी ओर हो गये, और विद्रोहको कुचल दिया गया।

राजिन-विद्रोह—जार अलेक्सी (अलेक्सान्द्र)के कालमे रूसकी राजशक्ति और सीमा बहुत बढ़ी, लेकिन देशमें सघर्षों और विद्रोहोंके भीतरसे ही। इन विद्रोहोंमे स्तेपन राजिनके नेतृत्व-मे हुआ किसानोंका विद्रोह बड़ा भयंकर था। भूखे गरीब कसाकोमें अशांतिका होना स्वाभाविक था। इसी अशातिका नेता येरमक था, जिसने साइबेरियामे रूसकी सीमाको बढ़ाया। कसाक स्व-भावतः स्वच्छन्दताप्रेमी तथा लड़ाकू होते है। रूसी वोयवोद उनको नाराज होनेका बहुत मौका दे देते थे। १६६६ ई०मे कसाक आतमन (सरदार) वासिलीने दोनके गरीब कसाकोको मास्को-के विरुद्ध भड़काया और एक बड़ी कसाक सेना ले तुलातक पहुच गया। उसके साथ दक्षिणी जमींदारोंके कितने ही अर्ध-दास किसान भी शामिल हो गये। इसी समय दोनके गरीब किसान विद्रोहियोंको

आतमन स्तेपन तिमोफेयेफ-पुत्र राज़िन-जैसा नेता मिल गया। १६६७ ई०के वसंतमें राज़िन अपने सैनिकोंको लिये दोनसे वोल्गाकी ओर बढ़ा। उसके कसाकोंने जार, महासंघराज और धनी व्यापारियोंकी अनाज तथा दूसरी पण्य वस्तुओंसे लदी बहुत-सी नावोंको पकड़ लिया, जिनमें देश-निकाला पाये पैरोंमें बेड़ी पड़े कितने ही बंदी भी थे। उन्हे मुक्त करके राज़िनने बंदियों, स्त्रेलेत्सी (राज-सैनिकों) और मल्लाहोंसे कहा—"अब तुम सब स्वतन्त्र हो, जहां इच्छा हो वहां जाओ। मैं तुम्हारे साथ जबरदस्ती नहीं करूंगा। जो कोई मेरे साथ रहना चाहता है, वह स्वतन्त्र कसाक माना जायगा। मै केवल बायरों और धनी जमींदारोंसे लड़नेके लिये आया हूं, गरीबों और सीधी-सादी जनताको भाईके तौरपर मैं अपना भागीदार बनानेके लिये तैयार हूं।"

इसके बाद राज़िनके कसाक नावोंपर चढ़कर अस्त्राखानके किलेसे बचते कास्पियनमे गये। फिर अपने पच्चीस नावोंमें जा उन्होंने यायिक (उराल) नदीके तटपर बसे यायित्स्क नामक दुर्गबद्ध नगरपर अधिकार कर लिया। राज़िनने जाड़ोंको यायिकके तटपर बिताया। अगले साल वह समुद्रसे होकर ईरानके तटपर पहुंचा। उसके पास कई हजार कसाक थे। उसने कास्पियन-तटवर्ती काकेशसकी भूमिको लूटा, और ईरानके शाहके पास कई आदमी भेजकर कहलवाया, कि मै और मेरे कसाक तुम्हारे देशमें सदा रहनेके लिये तैयार है, क्योंकि हम मास्कोके बायरोंके अत्याचारको नहीं सह सकते। शाहने राज़िनके दूतोंको पकड़कर मरवा दिया। इसपर कसाकोंने ईरानके नगरोंमें लूट-पाट करनी शुरू की। शाहने पचास नावोंमें सैनिक भरकर भेजे, लेकिन राजिनने उनमेंसे अधिकांशको डुबा दिया। सफलता होनेपर भी इन लड़ाइयोंमें कसाकोंको बहुत क्षति उठानी पड़ी, जिससे उनकी संख्या कम होती जा रही थी। बचे हुओंमें बीमारी फैलने लगी, इसलिये राजिन बायरोंके राज्यसे बाहर ईरानमें रहनेका ख्याल छोड़कर १६६९ ई०की शरद्में फिर अस्त्राखान पहुंचा। उसकी अनुपस्थितिके समय अस्त्राखानकी छावनी और मोर्चाबंदीको बहुत मजबूत कर लिया गया था। राजिनने दोनकी ओर जानेके लिये इजाजत मांगी। अस्त्राखानके वोयवोद जानते थे, कि नगरके अधिकांश लोगोकी सहानुभूति राजिनके साथ है, इसलिये उन्होंने इस शर्तपर उन्हें जानेकी इजाजत दी, कि वह अपने लूटके माल और हथियार समर्पित कर दें। अस्त्राखानके गरीबोंने बडे उत्साहके साथ राजिनका स्वागत किया। वह उसे बत्का (बापू) कहते थे। राजिनके कसाक पहले फटे-चीथड़ोंमें गये थे, लेकिन अब वह गोटेदार रेशमी कपड़े पहने हुये थे। राजिनने खूब दिल खोलकर सोनेकी मुहरों और दूसरी चीजोंको लोगोंमें बांटा। हथियार रखनेसे इनकार करके अपनी हथियारबंद सेनाके साथ राज़िन दोनकी ओर चल पड़ा। अस्त्राखानके निवासियोंमेंसे भी कितने ही उसके साथ हो लिये।

चारों ओरसे दोन-कसाक राज़िनके झंडेके नीचे आने लगे। इसके बाद कई बार जारशाही सेनासे उसने सफल मुकाबिला किया। जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद)के निवासियोंने उसे शहरपर अधिकार करनेमें मदद दी। १६७० ई०के बसतमें राजिन दूसरी बार वोल्गाके किनारे पहुंचा। पहले वह साधारण लुटेरेके तौरपर आया था, यद्यपि उसकी उदारताकी ख्याति उसी समय चारों ओर फैल गई थी; लेकिन अब वह कई हजार अनुशासन-सम्पन्न सेनाका कमांडर था। वह वोयवोदों, अमीरों और धनी व्यापारियोंका दुश्मन था, लेकिन गरीबोंका पक्षपाती और दासोंका हर जगह मुक्तिदाता। राजिनकी दानशीलता, उदारता और गरीबोंके प्रति प्रेम ऐसी आकर्षणकी चीज थी, जिससे वह चारों तरफ मशहूर हो गया। जारित्सिन लेनेके बाद उसने अब रूसके भीतर बढ़नेका निश्चय किया, लेकिन इससे पहले उसने अस्त्राखानपर अधिकार करके निम्न-वोल्गामें अपनी सत्ता जमा लेना आवश्यक समझा। अस्त्राखानके वोयवोदने स्त्रेल्त्सीकी एक सेना राजिनके विरुद्ध भेजी, लेकिन सैनिक अपने अफसरोंको मारकर विद्रोहियोंमें जा मिले। जून १६७० ई०में राजिन अस्त्राखानके पास पहुंचा। पत्थरकी दीवारोंसे घेरकर नगरको बहुत मजबूत कर लिया गया था, दीवारों और मीनारोंपर तोपें लगी थी, लेकिन बहुतसे स्त्रेल्त्सी तथा नगरके लोग राजिनके स्वागतके लिये अधीर थे। गोधूलीके समय घंटे बजने लगे, यह इस बातका संकेत था. कि कसाकों-

ने आक्रमण कर दिया है। कसाक अंधेरेमे चुपचाप किलेके पास आ सीढ़ियां लगाकर दीवार फाद नगरके भीतर कूद पडे। नागरिक भी उनकी मददके लिये दीवारके पास प्रतीक्षा कर रहे थे। नगरके समर्पण करनेकी सूचना तोपोंकी पांच आवाजसे दी गई। राजिनके कसाकोंके साथ अस्त्राखानके गरीब भी शामिल हो गये और उन्होंने वहांके अमीरों तथा प्रतिरोधकोको मार डाला। सबेरा होते-होते अस्त्राखानपर राजिनका पूरा अधिकार था।

राजिनकी विजय-यात्रा अब शुरू हुई। जारके स्त्रेल्त्सी और साधारण लोग राजिनकी सहायता करनेके लिये हर जगह तैयार थे। उसने सरातोफ (पुराना सरातोफ वोल्गाके बायें तटपर था), समारा (आधुनिक कुइबिशेफ)को आसानीसे अपने हाथमे कर लिया, लेकिन सिम्बिर्स्क (आधुनिक उलियानोव्स्क)को लेनेमे बडे जबरदस्त प्रतिरोधका सामना करना पड़ा। उसके आदमी गांव-गांवमे घूमकर राजिनके नामसे कह रहे थे—"सभी उत्पीडितों और गरीबोंको विद्रोहके लिये खडा हो जाना चाहिये।" राजिन यह भी कहता था—"मै महाप्रभु (जार)के लिये देशद्रोही बायरों और अमीरोसे लड रहा हू।" वह नही जानता था, कि जार उसी वर्गका सबसे शक्तिशाली आदमी है, जिसके विरुद्ध उसने जहाद छेड़ी है। प्रायः एक महीनेतक राजिनने सिम्बिर्स्क नगरका मुहासिरा किया। १६७० ई०के अक्तूबरके आरम्भमें नई सेना आ गई, और एक घनघोर लड़ाई हुई। तलवारोकी खपाखपमें वीर राजिन निश्शंक लड़ता दिखाई पड़ता। उसके सिरपर एक गोली लग गई थी, एक पैर भी गोलीसे घायल हो गया था, तो भी वह लड़ रहा था। सारी वीरता दिखलानेपर भी सुशिक्षित सुशस्त्रित बहुसख्यक जार-सेनाके सामने राजिनको हार खानी पडी। वह थोडेसे कसाकोके साथ दोनकी ओर निकल भागा। राजिनके हारनेके बाद भी वोल्गाकी भिन्न-भिन्न जातियो—कलमक, तातार, मोर्द्विनी, मारी, चुवाश और बाशकिर—तथा दाहिने तटके प्रदेशोके रूसी किसानोने विद्रोहको बहुत समयतक जारी रक्खा। जारकी सेना इन विद्रोहियोंसे खूनी बदला लेने लगी। बंदी किसानोको वह पकड़कर अर्जमस नगरमें ले गये, जहां उन्हे बडी सासत देकर मारा गया। नगरके चारों ओर फांसीकी टिकटियां खड़ी कर दी गई थीं। एक विदेशी प्रत्यक्षदर्शीने लिखा है, कि तीन महीनेके भीतर अर्जमसमें ग्यारह हजार आदमियोंको फांसीपर चढ़ाया गया। किसानोके नेताओने अन्तिम समयतक बड़ी निर्भयताका परिचय दिया। जल्लादने एकसे पूछा—

"तुम क्या करना चाहते थे?"

"हम मास्कोको लेना और तुम्हारे सभी बायरो, अमीरो और लिखनीचदोंको मार डालना चाहते थे।"

एक किसान स्त्री-नेता अल्योनाको जलाकर मारनेका दंड दिया गया। वह दडाज्ञा सुनकर जरा भी न घबडाई और मरते समय बोली—

"जैसे मैं लडी, यदि वैसे ही दूसरे भी लड़े होते, तो राजुल यूरी (सेनापति)को हमारे सामनेसे जान लेकर भागना पड़ता।"

१६७१ ई०के आरम्भमें वोल्गाके दक्षिण-तटके विद्रोहियोंको दबानेमे सफलता मिली। अब जारशाही राजिनके पीछे पड़ी थी। अप्रैल १६७१ ई०मे उसे पकडकर मास्को ले गये, जहां राजिनको भीषण सासत दी जाने लगी, लेकिन तब भी उसने मुहसे एक बार भी आह नही निकाली। जून १६७१ ई०में उसको मारनेसे पूर्व जल्लादोंने पहले हाथों और पैरोंको काट दिया, फिर सिरको धड़से अलग कर दिया। जारकी सरकारने राजिनको मारकर संतोषकी सांस ली, लेकिन साधारण जनताके लिये राजिन मरा नहीं। वह समझती थी, कि बायरोने किसी दूसरेको मारा है, राजिन तो अब भी बचकर कही छिपा हुआ है। वह फिर एक बार हम दुखियोंकी मददके लिये आयेगा।

जनताका राजिनके प्रति कितना सद्भाव था, वह लोकगीतोकी निम्न पंक्तियोसे मालूम होगा—

उठ हे सूर्य, हैं मैले-कुचैले,
तू जो कि पहाडोके ऊपर इस प्रकार छाया है,
जो कि हरे उगे हुये पौधोंपर छाया है,
हमारी हड्डियोंको गरमाओ । हम ईमानदार जन है ।
यद्यपि हम गरीब है, किन्तु हम किसीका जूआ नही उठायेंगे,
चोर हम नही हैं, और न भयंकर डाकू,
स्तेपान राजिन हमारा नेता है ।

रूसी भाषाका कालिदास पुशकिन स्तेपन राजिनको रूसी इतिहासका अत्यन्त काव्यमय पुरुष कहता है ।

साइबेरियामें प्रसार—हम पहले कह चुके है, कि कैसे येरमकने सिबिरके खानको हराकर रूसी सीमाको ओब और इर्तिश नदीके तटतक पहुचा दिया । साइबेरियाके जंगलोसे मिलनेवाली समूरी खाले सोनेके भाव बिकती थी, और साथ ही वहांके लोगोंको पकडकर दास बनाकर बेंचना भी आमदनी-का एक अच्छा खासा स्रोत था; इसलिये रूसी व्यापारियो और साहसियोका उधर खिंचना स्वाभाविक था। समूरी खालोंको पहले वह वहाके स्थानीय शिकारियोके हाथसे खरीदते थे। फिर रूसी शिकारियोंने स्वय जंगलोंमें दूर-दूर तक घुसकर शिकार करना शुरू किया । यह शिकारी कभी-कभी ऐसे स्थानो-में पहुंचने लगे, जहापर जारके सैनिक कभी नही पहुंच पाये थे । इसी तरह कुछ पीढ़ियोमें रूसी येनि-सेइसे अखोत्स्क समुद्रतक अपना अधिकार स्थापित करनेमे सफल हुये । जहां नदियोंका सहारा था, वहां शिकारियों और व्यापारियोंकी टोली नावोंपर चढकर जाती, फिर नावोंको आदमियोके कंधों-पर उठाकर एक नदीसे दूसरी नदीमें परिवर्तित कर लेते । जार गदुनोफके कालमें रूसी व्यापारी और शिकारी मंगोलियामे पहुंच चुके थे । गदुनोफके समय वहां एक बड़ा सैनिक अभियान भेजा गया था । स्थानीय शिकारी (नेन्त्सी) इसे बर्दाश्त कैसे करते, लेकिन अपने पुराने हथियारों और बिखरी हुई अल्प-संख्याके बलपर बेचारे सफल प्रतिरोध कैसे करते ? रूसी दूर-दूर जंगलोंमें लकडीके किले बनाकर जम जाते। इस प्रकार उन्होंने निम्न-येनिसेइ-उपत्यकाके मार्गपर अधिकार कर लिया। उसके कुछ समय बाद उन्होने मध्य-ओब और मध्य-येनिसेइमे भी पहुंच १६१९ ई०मे येंनीसेइस्क नगरकी स्थापना की। यहांसे अब वह येवेंकी, बुर्यत तथा उस प्रदेशके दूसरे लोगोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करने लगे । दस वर्ष बाद येनिसेइ नदीके तटपर क्रास्नोयार्स्क नगर स्थापित हुआ, लेकिन यहा किरगिजोंने उनसे जबरदस्त मुकाबिला किया । पर, मुकाबिलेसे डरकर रूसी अपने आगेके प्रसारको रोक नही सकते थे । यनिसेइस्क नगरसे अगारा नदीके किनारे चलते हुये रूसी बैकाल महासरोवरपर पहुच गये । १७वीं शताब्दीके मध्यमे उन्होने अंगाराके बैकालसे निकलनेके स्थानके पास ही इर्कुत्स्कका शरद्कालीन निवास-स्थान बनाया । बुर्यत मंगोल अपनी वीरताके लिये प्रसिद्ध थे । उन्होंने अपनी भूमिपर हस्तक्षेप करते देखकर रूसियोके साथ जबरदस्त संघर्ष किया, जिसमें असफल होकर कितने ही मंगोलिया चले गये, लेकिन वहांके मंगोल-सामन्तोंके अत्याचारके कारण कितनो हीने फिर लौटकर ज़ारके जूयेको अपने कंधेपर रक्खा। इसी समय येनिसेइसे लेना नदीकी ओर जानेवाला महत्त्वपूर्ण रास्ता स्थापित किया गया । रूसियोंने अफवाह सुनी थी, कि लेनाके किनारे समूरी खालोंकी खाने भरी पड़ी हैं, जिसे सुनकर येनिसेइस्क और मंगजेया दोनों जगहोंसे रूसी साहसियोंकी भीड टूट पड़ी । उन्होंने लेना-उपत्यकाके निवासी याकूतोंके ऊपर प्रहार करके उनकी समूरी खालों, पशुओं (बारहसिंगों)पर ही हाथ नहीं साफ किया, बल्कि स्त्री-बच्चोंको भी बेचनेके लिये बंदी बनाया । व्यापारियों और शिकारियोंकी पहुंच स्थापित होते ही येनिसेइस्कके सैनिक अधिकारियोंने लेनाके तटपर याकुत्स्क नामका गढ़ स्थापित किया । कुछ ही समय बाद जारने याकुत्स्कके लिये वोयवोद (राज्यपाल) भेजना शुरू किया । याकुत्स्कमें जम जानेके बाद सैनिक, व्यापारी और शिकारी और भी आगेके अज्ञात इलाकोंकी खोजमें लग पड़े, और उत्तर-पूर्वमें ध्रुवक-क्षीय समुद्रके तट तक याकूगिरों (ओदुलियों)के प्रदेशमें पहुंच करके उनसे कर लेने लगे ।

रूसी शिकारी पहाड़ोंमें जब लेनाके उद्गमकी ओर पहुंचे, तो उन्हें खबर लगी, कि शिल्का और जेयामें अन्न और चांदी भरी पडी है। तुगुस लोगोंने भी इस खबरकी पुष्टि की। इसपर साइबेरियाके वोयवोद गोलोविनने १६४३ ई०में अपने एक क्लर्क बाच्तेयारोफकी अधीनतामें सात आदमियोंको पता लगानेके लिये उक्त दोनो नदियोंकी उपत्यकाओंकी ओर भेजा। बाच्तेयारोफ इस कामके योग्य नही था, इसलिये वह खाली हाथ लौट आया। फिर उसी साल गोलोविनने पोयार्कोफके नेतृत्वमें एक बडी टोली यह कहकर भेजी, कि वहाके लोगोसे जाकर कर उगाहो, और जो देनेसे इन्कार करे,

१३. (२।३।१)
रूसका साइबेरियामें प्रसार (१५८१-१६५० ई०)
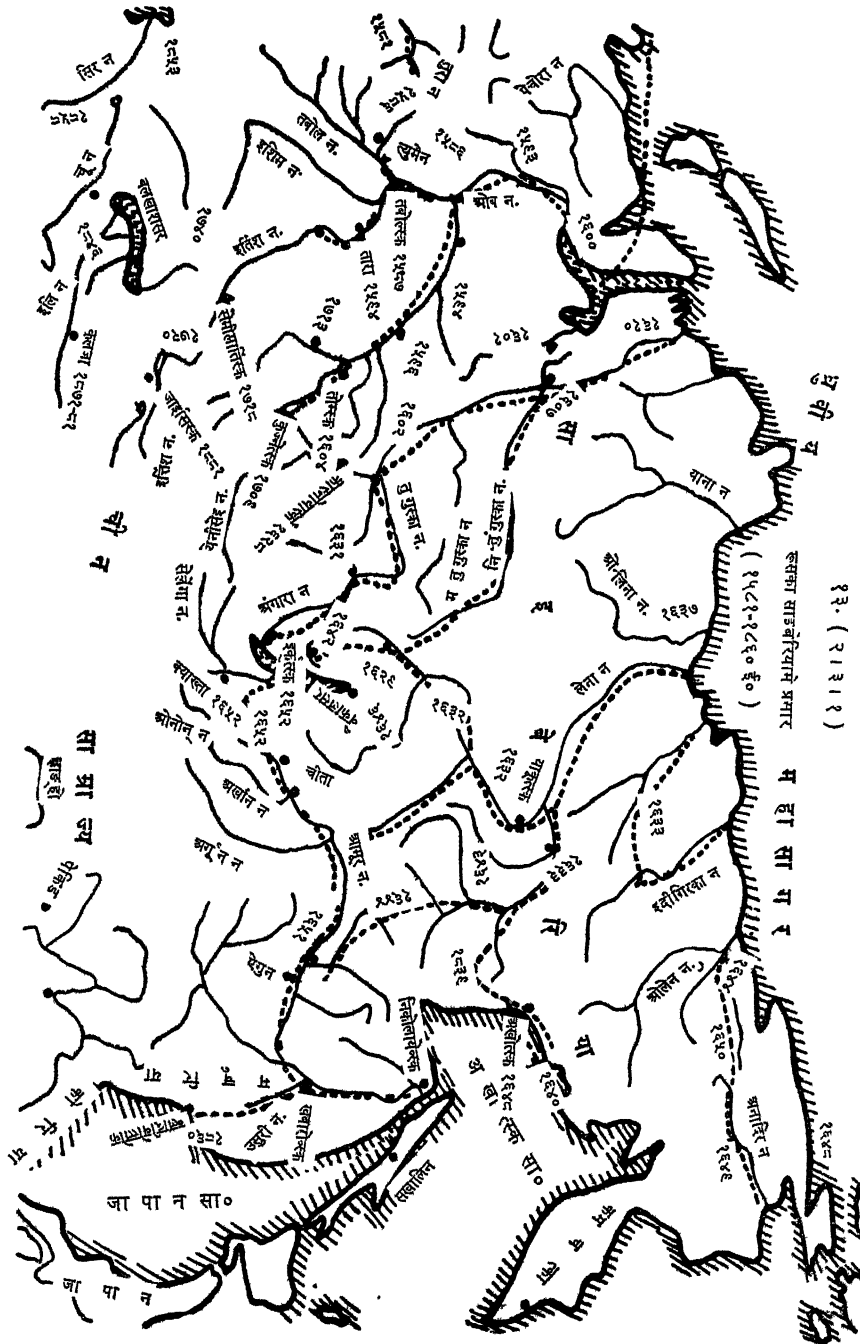
उनसे लड़ाई करो। जेयाके तटपर पहुचनेपर पोयार्कोफको अन्नके लिये निराश होना पड़ा। वहांके लोग अधिकतर चीनसे आये अनाजपर गुजारा करते थे। पोयार्कोफ ने अपने सत्तर आदमियोंको पासमे रहनेवाले दौरी लोगोंकी बस्तियोमें भेजा, लेकिन उन्होंने रूसियोंको अपने गांवोके भीतर आने नही दिया। खाली हाथ लौटनेपर अपने लोगोने उन्हें रसद देनेसे इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ, कि उन्हे अब स्थानीय लोगोंको लूट-मारकर जीवन-यापन करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। वसंतके आनेपर यह टुकड़ी नावपर दसेयानदीके नीचेकी ओर बढ़ी। स्थानीय लोगोंको खूनखार रूसियोंका पता पहले हीसे लग गया था, इसलिये वह उनको आते सुनकर भाग निकले। तो भी तीन गिलियक पकड़े गये, जिनके द्वारा रूसियोंने कर उगाहनेमें सफलता पाई। आगे बढ़ते-बढ़ते रूसियोने आमूर नदीके मुहानेपर पहुच जाड़ा बितानेके लिये वहां डेरा डाल दिया। मंडली जून १६४६ ई०में याकुत्स्क लौटी। अभियान सफल रहा, क्योंकि उन्होंने एक नई भूमिका पता लगाया, लेकिन साथही उनकी यात्राद्वारा लोगोमे बड़ा भयसंचार हो गया। अज्ञात कालसे पूर्वी साइबेरियाकी यह जातियां चीनको कर दिया करती थी, इसलिये अब उन्होंने चीन सरकारतक अपनी गुहार पहुंचाई।

१६४८ ई०में रूसी व्यापारियोके एक समूहने कोलुमा नदीके मुहानेके पूर्व ध्रुवीय समुद्र-तटकी भूमिके बारेमें पता लगानेका निश्चय किया। उन्हें मालूम हुआ, कि समुद्री जानवर वालरस वही जाकर बच्चे देता है। वालरसका दांत बहुत महंगा बिकता था, इसलिये वह उस अज्ञात भूमिकी ओर खिंचे। इसके लिये याकुत्स्कके व्यापारियोंने कसाक सिमाओन देझन्येफके नेतृत्वमें सात नावों के साथ एक अभियान भेजा। यह लोग कोलुमाके मुहानेसे समुद्रके किनारे-किनारे आगे बढ़े। नावें मजबूत नही थी, इसलिये अधिकतर टूट-फूट गईं, तो भी देझन्येफकी कुछ नावोको एक तूफान बहाकर अमेरिका और एसियाको मिलानेवाली समुद्रकी उस पतली धारमे ले गया, जिसका नाम पीछे बेरिंगकी खाड़ी पड़ा। उस समय युरोपमें कोई नहीं जानता था, कि एसिया और अमेरिकाकी सीमाओंको केवल एक पतलीसी सामुद्रिक प्रणाली अलग करती है। आजकल एसियाके उत्तर-पूर्वीय अन्तिम अन्तरीपको देझन्येफ अन्तरीप कहा जाता है। इस प्रकार हम देखते है, शाहजहांके शासनके अन्तिम वर्षोंमें ही रूसी साइबेरियाके पूर्वी छोरतक पहुच गये। जांच-पड़ताल करनेवालोंने लेनाकी शाखा अलदल नदीसे होते अखोत्स्क समुद्रके तटपर पहुंचकर वहां अखोत्स्क (शिकारवाला) गढ़ स्थापित किया, और बेचारे एवेंकी लोगोंने बारूदी हथियारोंके सामने प्रतिरोधको व्यर्थ समझकर अधीनता स्वीकार की।

पश्चिमी संस्कृतिका प्रभाव—१७वीं सदीके रूसमे अभी शिक्षाका प्रसार केवल अमीरों और व्यापारियोंमें था। स्त्रियां सिर नही ढंकती थीं, किन्तु जबतक विवाहित नहीं हो जातीं, तबतक पुरुषोंसे अलग रहती। वह अपरिचितकी ओर देखनेकी हिम्मत नही कर सकती थी। धनियोकी स्त्रिया अपना समय पूजा-पाठ या गोटा बनानेमें लगाती। अमीरोंकी पोशाक बहुत भारी होती थी। बाहरी चोगा एडीतक पहुंचता था, और लम्बी आस्तीन भी छोड़ देनेपर धरतीको छूनेसी लगती थी। उत्सवके समय बहुत मूल्यवान् ऊनी या रेशमी कपडे पहने जाते थे। हीरा-मोती-जटित सोने या चांदीके बड़े-बड़े बटन चोगोंमें लगते थे। सामन्त लोग समूरकी बड़ी लम्बी टोपी पहिनते थे, जो नीचेकी अपेक्षा ऊपर अधिक चौडी होती जाती और इतनी भारी होती थी, कि आदमी सिरको आसानीसे घुमा नहीं सकता था। पुरुष बालोंको काटकर रखते थे, लेकिन दाढ़ीको बड़ी सावधानीसे बढ़ाते थे। बिना दाढ़ीके आदमीको समझा जाता था, कि वह हर तरहके पाप कर सकता है। दाढ़ी मुड़ाना स्वयं भी पाप-कर्म था। लेकिन, १७वीं सदीमें ही पश्चिमी युरोपका प्रभाव धीरे-धीरे रूसके उच्च वर्गपर पड़ने लगा। व्यापारने पश्चिमी यूरोपके व्यापारियोसे रूसका संबंध बहुत घनिष्ठताके साथ स्थापित कर दिया था। अब कितने ही युरोपी रूसमें लोहे, काच आदिके कारखाने स्थापित करने लगे थे। मास्को और दूसरे नगरोंमें बहुतसे ग्रीक, अंग्रेज, जर्मन, डच और पोल व्यापारी तथा शिल्पी रहने लगे थे। उनमेंसे कुछ चंद दिनोके लिए आते और कितने ही रूसी नगरोंके वासी हो गये थे। मास्कोकी सरकार विदेशियोंको—विशेषकर शिक्षितों, सैनिक विशेषज्ञों, डाक्टरों, चित्रकारों तथा

दूसरे कलाकारों-शिल्पियोंको––अपने यहा आकृष्ट करनेकी कोशिश करती थी। सभी विदेशी कामके नही थे। उनमेंसे कितने ही मौज उड़ाने, या गुप्तचरी करनेके लिये आते थे, पर इसमे भी शक नही, कि कितने ही अपनी विद्या और अनुभवसे रूसियोंको लाभ पहुचाते थे। १६वी सदीके अन्तमें ही मास्कोमे विदेशियोके रहनेके मुहल्ले बन गये थे, जिन्हे पीछे "जर्मन (भद्र) बस्ती" कहा जाता था। १७वी सदीके मध्यमे उन्हें यौज़ा नदीके किनारे प्रेयोब्रजेन्स्कोये गावके पासमे परिवर्तित कर दिया गया। कितने ही रूसी इनके सम्पर्कमे आकर युरोपीय संस्कृतिसे प्रभावित होते रहे––यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि आजकी तरह उस समय भी रूसियोंके लिये "यूरोपा" एक दूसरा ही महाद्वीप था। पश्चिमी युरोप संस्कृतिके साथ-साथ विलासितामें भी बहुत आगे बढ़ा हुआ था। मास्कोके अमीर पुरुष-स्त्री भी इंगलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस और दूसरे युरोपीय तथा पूर्वी देशोंमे राजदूत बनकर जाते थे। रूसी व्यापारी भी कोशिश कर रहे थे, कि अपनी पण्य-वस्तुओंको सीधे युरोपके नगरोंमें जाकर बेचे, लेकिन विदेशी व्यापारी इसमें हर तरहकी बाधा उपस्थित करते थे।

उच्च वर्ग ही नहीं रूसी शिक्षित तथा बुद्धिजीवी वर्गपर भी पश्चिमी युरोपका प्रभाव पड़ने लगा था। जार अलेक्सी मिखाइल-पुत्रके समयका एक प्रभावशाली बायर ओरदिन-नाश्चोकिन् युरोपके नमूनेपर शासन-प्रबन्ध सगठित करनेका पक्षपाती था। उक्रइनके रूसमे मिल जानेसे, पोलन्द और पूर्वी युरोपके साथ सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित होनेमें बड़ा सुभीता हुआ। शताब्दियोंके सिद्धहस्त कियेफके मूर्तिकार, चित्रकार तथा दूसरे कलाकार मास्कोमे आकर काम करने लगे। बायरोके घरोंमें उक्रइनी विद्वान् शिक्षकका काम करते थे। एक सुशिक्षित बेलोरूसी साधु सिमेओन पोलोत्स्की जार अलेक्सीके परिवारमे शिक्षक था। पोलोत्स्कीने नाटक और कवितायें लिखी। उसके पद्य बहुत प्रसिद्ध थे। वह साहित्य और काव्यशास्त्रकी भी शिक्षा देता था। बहुतसे विदेशी विद्वानोंने इतिहास, युद्धविज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान तथा दूसरे विज्ञानोंकी पुस्तकें १७वी सदीमें रूसी भाषामे अनुवादित की। यह याद रखना चाहिये, कि यही हमारे यहां औरंगजेबके शासन-का समय था, जिसमे जहादी लड़ाइयां छोड़ विद्या-विज्ञानकी चीजोंकी तरफ कोई ध्यान नही दिया गया था। रूसी शिक्षित अब सिर्फ धार्मिक साहित्य हीसे सतुष्ट नही थे, वह पश्चिमकी धर्मनिरपेक्ष कहानियों और उपन्यासोंको अपनी भाषामे पढने लगे थे। अमीरो तथा व्यापारियोंके दैनिक जीवन और वेश-भूषापर भी पश्चिमका प्रभाव पड़ने लगा था। १७वी शताब्दीके उत्तरार्धमें शराबी साधुओं, लोभी न्यायाधीशों, और घूसखोर अमलो, तथा मूर्ख अमीरोके ऊपर व्यंग्य करते कितने ही प्रहसन लिखे गये थे। संक्षेपमें कहा जा सकता है, कि अब साहित्यमे वास्तविक जीवन––वस्तुवाद––के लानेकी कोशिश की जाने लगी थी। साहित्य हीमे नही, रूसी चित्रमें भी वस्तुवाद घुसने लगा था। प्रसिद्ध कलाकार सिमओन उशाकोफकी कला वास्तविकताका दर्पण-सी थी, जिसमे तत्का-लीन जीवनकी झांकी मिलती थी। उस वक्त भी आजकी तरह बहुतसे कलाकार ऊटपटांग-बेढंगी टेढी-मेढ़ी रेखाओं और रंगोके पीछे इतने पागल थे, जिन्हें कलाका वास्तविकताके पास जाना फोटोग्राफी मालूम होता है। १७वीं शताब्दीमे पहले-पहल मास्कोके दरबारियोंको नाट्यकलाका परिचय मिला, जब महाबस्तीके एक पुरोहित गटफ्रिड ग्रेग्रोरीने जार अलेक्सीके शासनकालमें रूसी विद्यार्थियों और जर्मन नटोंसे एक नाटकमंडली बनाई, और ऐतिहासिक कहानियोंको लेकर रंगमंचपर नाटक खेले। पीछे एक खास मकान बनाकर रूसी भाषामे लिखे नाटकोंका भी अभिनय होने लगा। अभिनयके समय एक खास आसनपर बैठकर जार भी उसे देखता था, लेकिन जारानी अलग एक परदेमे बैठकर ही देख पाती थी। नवीनताकी तरफ अभिरुचि इतनी बढ गई थी, कि महासंघराज निकोनने जल-भुनकर सभी देशी वाद्ययंत्रोंकी होली जला डालनेकी आज्ञा दी।

चीनसे संबंध––जार अलेक्सीने अपना पत्र देकर पेर्फिलियेफको १६५९ ई०मे चीन-सम्राट् शी-चू (१६४४-१६६१ ई०)के पास भेजा। सम्राट्ने उससे मुलाकात की। इसे कहनेकी आवश्यकता नही, कि रूसी दूतको दरबारमें कोतौ (साष्टाग प्रणिपात) करना पड़ा। रूसी दूतको दस पूड (४ मन) चाय देकर बिदा किया गया। चाय शायद यह पहली बार स्थलमार्गसे मास्को पहुंची। इसके बाद १६६९ ई०में अबलिनके अधीन और १६७५ ई०में परशेन्निकोफके नेतृत्वमें रूसी कारवां (वाणिज्य-

चले। चीनियोंके जबरदस्त प्रहारसे रूसी नावोपर चढकर नीचेकी ओर भागे। चीनियोने नदीतटके निवासियोंको गांव छोडकर देशके भीतर चले आनेके लिये कहा, जिसमे रूसी सैनिक उन्हें तकलीफ न दे सके, और स्वयं आहारसे वंचित हो भूखे मरें। बीचके समयमे चीनी दूसरी लडाईकी तैयारी करते रहे। ३० जून १६५८ ई०में सुगारी नदीके मुहानेपर फिर लड़ाई हुई। इस युद्धमे दो सौ सत्तर आदमियोके साथ स्तेपानोफका पता नही लगा, और करीब उतने ही कसाक पहाड़ोमे भाग गये। अब उनका काम चोरी-डकैती (कजाकी) करना रह गया। इस लडाईके बाद नेर्चिन्स्कतक आमूकी धारा शत्रुके खतरेसे मुक्त हो गई। चीनियोने निश्चित हो अपनी सेना लौटा ली। लेकिन इसी समय नेर्चिन्स्कको मदद मिली। इलिम्स्कके कसाक अपने वोयवोदको मारकर भाग गये और उन्होने पहाड़के परले पार सखालिन और यालुम नदियोके सगमपर अलबाजीनका किला बनाया, जिसे चीनी और तातार याकसा कहते थे। अलबाजीनके ये कसाक अपनी शक्ति और इलाकेको बराबर बढाते जगह-जगह गढ़ियोंको कायम करके दौरी और दुचेरी लोगोंसे कर उगाहन लगे।

१६८३ ई०मे अलबाजीनके कसाकोंने बीस चीनी शिकारियोको जीते-जी गाड दिया। यह खबर सुनकर चीन सरकार बहुत नाराज़ हुई। उसने एक चीनी सेना भेजी, जिसने १२ जून १६८५ ई०में अलबाजीनको घेरकर वहां चीनका झंडा गाड दिया। चद ही दिनोके प्रतिरोधके बाद अलबा-जीनियोंने आत्म-समर्पण किया। किलेको बिल्कुल तोड दिया गया। चीनी सेना वहांसे अयहून गई। उनके जानेके बाद कसाकोंने लौटकर जाड़ोमे अलबाजीनको फिरसे तैयार कर लिया। चीनी सेना फिर अयहूनसे आई, और उसने ७ जुलाई १६८६ ई०मे दूसरी बार अलबाजीनका मुहासिरा किया। इसी समय रूससे एक प्रतिनिधिमंडल आया, जिसने सम्राट् खाङ्-सी (शेङ्-चू १६६१-१७२३ ई०) से जारकी ओरसे निवेदन किया, कि जार युद्धसे नही शांतिके साथ मामलेका फैसला करना चाहते है। खाङ्-सीने निवेदनको स्वीकार करके मुहासिरेको उठा लेनेका हुक्म दे दिया। यही समय था, जब कि एलियोत (ओयरोत) और खलखा मगोलोंके बीचमे रूसी सीमांतके पास लड़ाई हो रही थी। चीनियोंने रूसी अधिकारियोंके पास पत्र भेजकर शिकायत की, कि रूसी सीमांतके लोग हमारे यकसा और चूनिपचूको लूटते-मारते, तथा चीनी शिकारियोंके साथ बुरा बर्ताव करते हैं। उन्होने यकसाके वोयवोद अलेक्सीपर इल्जाम लगाया, कि उसके दुर्व्यवहारोसे मजबूर होकर जेनेरलको यकसा मुहासिरा करना पड़ा, जिसमें यकसाको अन्तमे आत्मसमर्पण करना पड़ा। पत्रमे आगे लिखा गया था :—

"तो भी परमभट्टारकने यह समझकर रूसियोंके साथ उनके पदके अनुसार बर्ताव करनेके लिये आज्ञा दी, कि रूसी राजुल वोयवोदके कामको नही पसंद करेगे। यही वजह है, जो यकसाके एक हजार रूसी सैनिकोको बंदी बनानेके बाद उनके साथ कोई बुरा बर्ताव नही किया गया, बल्कि जिनके पास घोड़े, हथियार या रसद नही थी, उन्हे यह चीजें देकर इस घोषणाके साथ लौटा दिया, गया, कि हमारे सम्राट् युद्ध पसंद नही करते, वह अपने पडोसियोके साथ शांतिपूर्वक रहना चाहते है। परमभट्टारककी इस उदारतासे अलेक्सीको बहुत आश्चर्य हुआ, और उसने आंखोमे आंसू भरकर कृतज्ञता प्रकट की।"

कुछ समयतक बातचीत करनेके बाद सम्राट् खाङ्-सीने रूसी और चीनी प्रतिनिधियोंको मिल-कर बात करनेके लिये निपचू स्थान निश्चित किया। ३१ जून १६७९ ई०को चीनी प्रतिनिधिमडल क्या सेना-मंडल निपचू पहुंचा, जिसमें अफसर, सिपाही और नौकर-चाकर लेकर नौ-दस हजार आदमी, तीन-चार हजार ऊट और कम-से-कम पद्रह हजार घोड़े थे। वोयवोदने शिकायत की, कि चीनी सुलह नहीं लडाई करनेके लिये आये है और रूसी दूतमडलने १८ जुलाईतक यह कहते हुये आने-से इन्कार कर दिया, कि दोनो तरफके आदमी समान सख्यामे होने चाहिये। अंतमे चीनियोने निम्न बातें कहकर समझौता किया · रूसी भी उतनी ही संख्यामे आ सकते है, लेकिन बैठकके समय प्रति-निधियोंको तलवार छोडकर दूसरा कोई हथियार साथ नही लाना चाहिये। धोखा न किया जाय, इसके लिये रूसियोंकी तलाशी चीनी, और चीनियोंकी तलाशी रूसी लेवे। बड़े-छोटेका ख्याल हटाने-के लिये दोनों राजदूतोंका तम्बू एक दूसरेसे सटा रहे, जिसमे वह अपने-अपने तम्बूमे बैठकर बातचीत कर सके।

समझौतेके लिये एकत्रित यह सम्मेलन वस्तुतः दोनों राज्योके वैभवका प्रदर्शन था। रूसी तम्बू बहुत साफ-सुथरा था। उसके भीतर तुर्की कालीन बिछा हुआ था। चीनी तम्बू अपेक्षाकृत सादा था, जिसके बीचमें एक लम्बी बेंच रक्खी हुई थी। जब दोनों राजदूत अपने तम्बुओमें पहुचे, तो रंगीन ध्वजा-पताकाये फहरा रही थी, नगारे बज रहे थे। रूसी दूतने पहले घोडेसे उतरकर कुछ कदम आगे बढ़कर चीनी राजदूतसे पहले तम्बूमे पधारनेके लिये प्रार्थना की। बीचमें एक मेज रखकर दोनो राजदूत आमने-सामने बेंचोंपर बैठ गये। अनुचर खडे रहे, और दुभाषिये मेजके छोरपर बैठे। बैठनेके बाद बातचीत शुरू हुई। दोनो ओरसे इतनी बढ-चढकर मांगे पेश की गई, कि उनमेसे कोई उन्हें मान नही सकता था। गरविलोन चीनी दूतमडलका दुभाषिया था। उसके कहनेके मुताबिक "बस इतना ही बढ़े कि दो कदम पीछे हटे।" कई दिनोतक मोल-भाव होता रहा। ऐसा मालूम होने लगा, कि संधि-वार्ता भंग हो जायगी, लेकिन अन्तमे किसी तरह समझौता हुआ। ६ सितम्बरको सधिपत्रका अन्तिम मसौदा तैयार करके ऊंचे स्वरसे पढा गया, और फिर मुहर और हस्ताक्षर करके दोनो पक्षोको एक-एक प्रति दी गई। ९ सितम्बर १६८९ ई०को अन्तमे "दोनों पक्षोके मुख्य प्रतिनिधियोने खड़े होकर सधिपत्रकी प्रतिको हाथमे ले अपने-अपने प्रभुओके नामसे, सारे ससारके प्रभु सर्वशक्तिमान् भगवान्की शपथ लेकर अपने मनकी ईमानदारीका प्रदर्शन किया।" इसके बाद दोनो ओरसे भेंटें दी गई। युरोपके किसी राज्यसे बिल्कुल समानताके तलपर की गई चीनकी यह पहली सधि थी।

साइबेरियामें विद्रोह—बहुत थोडे समयके भीतर ही रूसियोंने उरालसे अखोत्स्क समुद्र तककी भूमिपर अधिकार कर लिया था। रूसी अफसर साइबेरियाके निवासियोंपर भारी कर लगाने लगे, उधर रूसी व्यापारी सस्ती शराब पिलाकर मिट्टीके मोल बहुमूल्य समूरी छालोको लोगोंसे छीनने लगे। लोग विद्रोह करनेके लिये मजबूर होते, दबाये जाते, लेकिन कुछ वर्षों बाद फिर उठ खडे होते। एक बार वह याकुत्स्क नगरको नष्ट करनेमें करीब-करीब सफल हो गये थे। बुर्यत मगोल और एवेकी हथियार रखनेके लिये तैयार नही थे। जार अलेक्सीके शासनकालमें पश्चिमी साइबेरियामें भी एक जबरदस्त विद्रोह हुआ था।

साइबेरियामें रूसी बस्तियां—रूससे अखोत्स्क पहुचनेमे एसियाके सबसे चौडे उत्तरी भागको आरपार करना पडता है। यह प्रदेश इतना सर्द है, जिसके सामने रूसकी सर्दी लडकोंका खिलवाड है; लेकिन तो भी १७वी सदीमे व्यापार और शिकार रूसियोंको उधर खीच ले गये। सरकार सैनिकोंके साथ कितने ही दूसरे लोगोको भी वहा भेजने लगी। थोडे ही समय बाद सरकारने समझा, कैदियोंको वहां भेजकर बसाना अच्छा है। हमें मालूम है, आस्ट्रेलियाको भी बसानेके लिये पहले अंग्रेज कैदी ही भेजे गये थे—वह अंग्रेज कैदियोके लिये कालापानी बना था। बायरों और अमीरोंके लिये विद्रोही गरीबोसे पिंड छुड़ानेका यह अच्छा मौका था। दूसरी तरफ अपने प्रभुओके अत्याचारोंसे पीडित कितने ही किसानोंने भी मुक्त हवामे सांस लेनेके ख्यालसे साइबेरियामे प्रवास करना शुरू किया। पहले वह उरालतक पहुचे, फिर आगे बढने लगे। साइबेरियामे जगह-जगह किलाबदी करके बहुतसे सैनिकोंको रखना पडता था। उनके लिये अन्न भी एक समस्या थी, क्योकि साइबेरियाके अधिकांश कबीले अभी शिकारी अवस्थामें थे, खेतीको एक तरह वहा नये तौरपर शुरू करना था। जो किसान साइबेरिया जाते, उन्हे मुफ्त भूमि मिलती, और बीज-रुपया उधार दिया जाता। इसके बदलेमें वह "प्रभुके लिये" एक निश्चित मात्रामें खेती करके अनाज सरकारको दे देते। रूसके किसानो और साइबेरियाके किसानोंमे यही अन्तर था, कि यहां वह किसी जमीदारके लिये नही, बल्कि जारके लिये काम करते थे। किसानोके अतिरिक्त बहुतसे रूसी व्यापारी भी आकर साइबेरियामें बस गये, जिनमेसे कितनोंने अपनी खेती-बारी कायम कर ली और कुछ सैनिक सेवामें भी दाखिल हो गये। इस तरह १७वी सदीके अन्ततक अर्थात् औरंगजेबके अन्तिम वर्षोंतक साइबेरियामें जगह-जगह रूसी बस्तिया और गाव बस गये थे। रूसियोंने साइबेरियामे उत्पादनको बढ़ाकर औरोंको भी बहुत प्रोत्साहन दिया। धीरे-धीरे खेतीका प्रसार बढा और १७वीं सदीके अन्ततक पश्चिमी साइबेरियाके दक्षिणी जिले कृषिप्रधान हो गये। रूसी प्रवासियोंने एसियाके उत्तरी भागकी खोज-पड़तालमें बहुत काम किया। उन्होने वहां लोहेकी धुनों, और नमककी खानोंका पता लगाकर काम शुरू

किया। रूसी यात्रियोंने अपने यात्रा-विवरण तथा साइबेरियाके नक्शे प्रकाशित किये। रूसी सरकारके लिये साइबेरिया अर्थागमका एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्रोत था। वहांकी बहुमूल्य समूरी छालोंकी पश्चिमी युरोप, चीन और ईरानमें बड़ी माग थी। इस आमदनीसे सरकार अपने सैनिक खर्च और नौकरोंके वेतनोंको देनेमें समर्थ थी।

३. फ्योदोर, अलेक्सी-पुत्र (१६७६-८२ ई०)

जार अलेक्सीके मरनेके बाद उसका पुत्र फ्योदोर गद्दीपर बैठा। इसने दो बार ब्याह किया, जिसमे पहली स्त्री मीलोस्लाव्स्की-कुलकी कन्यासे उसकी सोफिया आदि कई लडकियां तथा दो पुत्र फ्योदोर और इवान हुये। मरनेसे थोड़ा समय पहले जार अलेक्सीने नारुश्किन कुलकी कन्या नतालिया किरिलोव्नासे ब्याह किया। नतालिया जारके एक कृपापात्र बायर अर्तमान मत्वयेफ परिवारमें पाली-पोसी गई थी, जहा उसे पश्चिमी संस्कृतिके घनिष्ठ सबधमे आनेका मौका मिला था। मत्वयेफका घर युरोपीय ढगसे सजा रहता था। उसके पास युरोपीय अभिनेताओंकी एक मंडली थी। १६७२ ई० में नतालियाकी एक पुत्र पैदा हुआ, यही पीछे महान् जार पीतर I हुआ। अलेक्सीके मरनेके बाद फ्योदोर जब गद्दीपर बैठा, तो उसकी उम्र चौदह वर्षकी थी। वह मस्तिष्क और शरीरका बडा ही दुर्बल बालक था। जारके अन्तिम समयमें नतालियाके सबधके कारण नारुश्किनोका प्रभाव बढ़ गया था, लेकिन फ्योदोरके मातृ-कुलके होनेसे मीलोस्लाव्स्कियोने अधिकार अपने हाथमे संभाल लिया। पश्चिमी युरोप और बाहरी देशोंके प्रथम प्रभावके परिणामस्वरूप १६८७ ई०मे मास्कोमे प्रथम स्थायी शिक्षण-सस्था "स्लावानिक-ग्रीक-लातिन-अकदमी"के नामसे स्थापित हुई।

नारुश्किन इसे बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थे, कि मीलोस्लाव्स्की दरबारमें सर्वेसर्वा हो जायें। आखिर उनका भी नाती जार-पुत्र पीतर था। जार फ्योदोर १६८२ ई० मे निस्सतान मर गया, उसके उत्तराधिकारी उसके दो भाई—सहोदर इवान तथा सौतेला पीतर थे। इवान यद्यपि उमरमे बड़ा, लेकिन दिमागसे बहुत कमजोर था। फ्योदोरके शासनकालमे मीलोस्लाव्स्कियोने जो मनमानी की थी, उसके कारण वह अप्रिय-से हो गये थे, इसलिये जारके जीवित-कालमे ही उन्होने नारुश्किनोंके साथ मैत्री स्थापित की। जैसे ही जार फ्योदोर मरा, महासंघराज और बायरोंने छोटे जारकुमार पीतरको जार घोषित कर दिया। महलके सामने जमा हुई भीड़ने बड़ी हर्ष-ध्वनिसे इसका स्वागत किया, लेकिन मीलोस्लाव्स्की कुल इसे माननेके लिये तैयार नही हुआ। उन्होंने स्त्रेल्त्सी (सैनिको)को भड़काया, जिनको कि काफी समयसे वेतन नही मिला था। ५ मई १६८२ ई० को स्त्रेल्त्सी बहुतसी तोपे अपने अधिकारमे कर झडा लिये नगाड़ा बजाते क्रेमलिनके भीतर घुस गये। लोगोंने हल्ला उड़ाया, कि नारुश्किनोने इवानको मार डाला, इसपर पीतरकी मां नतालियाने दोनो भाइयो—इवान और पीतरको लाकर खिड़कीपर खड़ा किया। लेकिन स्त्रेल्त्सियोका क्रोध शात नही हुआ। वह महलके भीतर घुस गये, और सबसे पहले जिस आदमीको उन्होने खतम किया, वह था नारुश्किनोका मुखिया राजुल दोल्गोरुकी। शामतक बायरोंको पकड़-पकड़कर वह मारते रहे। वह बायरोको घसीटते हुये सैनिक मजाक उड़ाते थे—"यह बायर लरमोदानोव्स्की हैं, दूमाके सदस्यके लिये रास्ता दीजिये।" मारे गये आदमियोंमें बायर अर्तमान मत्वयेफ और जारानीके दो बड़े भाई भी थे। अन्तमें जारानीने स्त्रेल्त्सियोंके पैंतीस वर्षके बाकी वेतनको देनेका वचन दिया और उनके आग्रहपर इवान और पीतर दोनोको संयुक्त जार घोषित किया गया—इवानको प्रथम जार माना गया। उनकी नाबालिगीके समय राजभगिनी सोफिया संरक्षिका घोषित की गई।

सोफियाका शासन—सोफियाका सबसे घनिष्ठ मित्र "प्रथम मंत्री" राजुल वासिली गोलित्सिन उस कालके सबसे सुशिक्षित बायरोमे से था। वह चाहता था, कि देशमे नये सुधार किये जाय। लेकिन, अभी रूसको पोलंदसे निबटना था। इसी समय तुर्कीके साथ पोलदका वैमनस्य बढा, जिससे उसे रूसके साथ समझौता करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। तुर्कीके विरुद्ध पोलद और वेनिस (इताली) को मदद देनेके लिये आस्ट्रियाने संधि की थी। तुर्कीके साथ युद्ध छिड़ा हुआ था। मित्र-शक्तियोंने वीनामें तुर्कीकी सेनाको हराया, और सुल्तानको आस्त्रियन राजधानीका मुहा-

सिरा उठाना पड़ा। अभी भी तुर्कीको पूरी तरह दबाया नही जा सका था, इसलिये मित्र-शक्तियोको रूसकी सहायताकी अवश्यकता पड़ी। इस प्रकार १६८६ ई० मे पोल-राजाने मास्को अपना दूतमंडल भेजा, और कुछ समयकी बातचीतके बाद दोनों देशोमे "सनातन" संधि हो गई। पोलंदने कियेफ और उसके पासके थोडेसे इलाकेको रूसको देना स्वीकार किया और रूसने तुर्की सुल्तानके सामन्त क्रिमियाके खानसे तुरत लडाई छेडनेका वचन दिया। १६८७ ई० मे राजुल वासिली गोलित्सिनके अधीन पहली रूसी सेनाने क्रिमियापर आक्रमण किया, लेकिन उसे पूर्णतया असफल होकर लौटना पड़ा। फिर १६८९ ई० के बसंतमे और भी बडी सेनाके साथ गोलित्सिन तातारोके किले पेरकोफ पर पहुंचा, जिसे तातारोने क्रिमियाके स्थलडमरूमध्यके सबसे सकरे स्थानपर बनाया था। गोलित्सिन इस किलेको नही ले सका, और फिर उसे लौटना पडा। इतना धन और प्राण गवाकर असफल होनेका परिणाम सोफियाकी सरकारके लिये अच्छा नही हुआ। लोगोने खुलकर असतोष प्रकट करना शुरू किया।

४. इवान VI, अलेक्सी-पुत्र (१६८२-९६ ई०)

यद्यपि इवान और पीतर दोनो सयुक्त जार घोषित हुये थे, लेकिन संरक्षिका सोफिया इवानकी सहोदरा थी, इसलिये एक तरहसे शक्ति उसके हाथमें होनेसे पीतर उपेक्षितसा था। अपनी माके साथ उपनगरमें पीतरका समय अधिकतर प्रेयोब्रजेन्स्कोयके महलमें बीतता था। वहा जंगलोंमें वह अपने लंगोटिया यारोके साथ सिपाहियोका खेल खेला करता। वह मिट्टीके छोटे-छोटे किले बनाते, फिर उसपर आक्रमण करनेका दाव-पेच लगाते। कुछ सालो बाद पीतरने अपने साथियोकी दो नकली पलटनें बनाई, जिनमेंसे एकका नाम उसने प्रेयोब्रजेन्स्की रक्खा और दूसरेका नाम सेमओनोव्स्की—ये दोनों गांव पास-पासमें थे। एक बार अपने दादाकी चीजोमे पीतरको एक पालवाली विदेशी नाव मिली। पीतरने अब उसे लेकर नौचालनका खेल शुरू कर दिया। मास्कोके एक विदेशी निवासी ब्राटने उसे नौ-सचालन-की शिक्षा दी। ब्रांट पहले नौसेनामे रह चुका था। मास्कोके पास बहनेवाली नदी यउजा (यौजा) छोटी थी, इसलिये पीतर अपनी नावको लेकर इज्माइलोवोके तालाबमे पहुंचा। लेकिन वह भी नावके मोडने-माड़नेके लिये पर्याप्त नही था, इसलिये पीतर अब माकी आज्ञा लेकर पेरेया-स्लाव्लके बडे सरोवरमें गया। उसकी बहिन सोफिया पीतरके इन सैनिक खेलोंमें लगे रहनेको पहले पसंद करती थी, क्योंकि इस प्रकार वह दरबारके षड्यन्त्रोकी ओर ध्यान नही दे सकता था; लेकिन आयुके बढ़नेके साथ-साथ पीतरके नकली सैनिक असली होते जा रहे थे। पीतर सत्रह वर्षका हो गया था। उसके लडकपनके खेलकी दोनों पलटने अब युरोपीय ढंगपर शिक्षित मास्कोकी पलटन बन गई थी। सोफियाको जब खतरेका पता लगा, तो उसने रास्तेके इस काटेको अलग करना चाहा। उसने अपनेको कागज-पत्रोंमें "परमशासक" लिखना शुरू किया। वह स्त्रेल्सियोंको अपनी ओर मिलानेके लिये उनको भोज-भाज देने लगी। पीतर और सोफियाके संबंध बिगड़ते गये। अन्तमे अगस्त १६८९ ई० की एक रातको पीतरको खबर लगी, कि सोफिया आक्रमण करनेके लिये स्त्रेल्त्सियोंको तैयार कर रही है। पीतर तुरन्त घोडेपर सवार हो त्रोयत्स्क-सेर्गियेफके दुर्गबद्ध मठमे पहुंचा। वहींपर उसकी "नकली" पलटन जमा हो गई और एक स्त्रेल्सी पलटनके साथ कितने ही अमीर और कुछ बायर भी आ मिले। स्त्रेल्त्सियोंके भड़कानेका सोफियाका सारा प्रयत्न विफल हुआ। पीतरके समर्थकोंकी संख्या दिनपर दिन बढती गई, और महीने बाद शक्ति पीतरके हाथमें आ गई। सोफियाको मठमें साधुनी बनके रहनेके लिये मजबूर होना पड़ा, और उसके सहायक राजुल वासिली गोलित्सिनको उत्तरमे निर्वासित कर दिया गया।

५. पीतर I, अलेक्सी-पुत्र (१६९६–१७२५ ई०)

औरंगजेबके शासनके अन्तके साथ हम भारतके इतिहासको आधुनिक इतिहासके रूपमें बदलते नही देखते, लेकिन पीतरके शासनके साथ रूस आधुनिक जगत्में प्रवेश करता है। जैसा कि पहले कहा गया, १६८२ ई० में अपने भाई इवानके साथ पीतर भी संयुक्त जार घोषित हुआ। असली राजशक्ति

को हाथमे लेनेमे वह १६८९ ई० मे सफल हो गया था, तो भी अभी उसका भाई इवान १६९६ ई० तक जारके तौरपर मौजूद रहा। पीतरकी मा ऐसे परिवारकी कन्या थी, जिसमे पश्चिमी युरोपके फैशन बहुत कुछ स्वीकृत किये जा चुके थे। मास्कोमें कितने ही पश्चिमी युरोपके व्यापारी, विद्वान् और शिल्पी रहते थे, जिनके मुहल्लोंमे भी पीतर जाया करता था। पश्चिमी युरोपमे उस समय ज्ञान-विज्ञानकी रोशनी फैलने लगी थी, आधुनिक युद्धकला तथा सामरिक यंत्रोंका विकास हो रहा था। पीतर जैसे प्रतिभाशाली तरुणको साफ मालूम होने लगा, कि रूसको महान् बनानेके लिये हमे पश्चिमी युरोपसे बहुतसी बाते सीखनी होगी। उनके सीखनेके लिये सिर्फ बादशाही हुक्मसे काम लेना बेकार समझ, वह स्वय आस्तीन समेटकर सीखनेके लिये दिलोजानसे कूद पड़ा। पीतरके शासनके प्रथम अठारह वर्ष औरंगजेबके अन्तिम वर्ष थे। यह भी उल्लेखनीय बात है, कि पीतरका दूत भारत आकर औरंगजेबसे सूरतमें मिला था। पीतर रूसको जहां एक सुसंगठित शक्तिशाली राष्ट्रके रूप मे बडे तेजीसे परिणत कर रहा था, वहा हिन्दुस्तानी औरगजेबका काम उससे बिल्कुल उलटा था। पीतर ज्ञान-विज्ञान और सहिष्णुता द्वारा रूसका एकीकरण कर रहा था, और औरंगजेब धर्मान्धता द्वारा मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करनेके प्रयत्नमे राष्ट्रको छिन्न-भिन्न कर रहा था। औरगजेबकी अदूरदर्शिताका फल भारतने १७०७ से १९४७ ई० तक भोगा। यही समय है, जब कि पीतरकी जमाई नीवपर रूस दुनियाका अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। यह आश्चर्य करनेकी बात नही है, यदि बोल्शेविक पीतरकी प्रशसा करते नही थकते। वस्तुतः वह रूसके सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माताओमे से था।

बहिन सोफियाके शासनके खत्म होनेके बाद पीतरकी मा नतालिया अभिभाविका बनी। पीतरने माके काममें दखल देना पसद नही किया। वह अपने सैनिक खेलको और गम्भीरताके साथ खेलता रहा। अपने सहायकोकी मददसे एक युद्धपोत बनाकर उसने पेरेयास्लाव्ल सरोवरमे उतारा। थोडे ही दिनो बाद वह उसे लेकर ध्रुवकक्षीय अर्खगल्स्कमे गया, जहांपर पश्चिमी युरोपके बडे-बड़े जहाज आया करते थे। यहां पहलेपहल उसने उन जहाजोको देखा, जो कि महासमुद्रोंको चीरते दुनियाके दूर-दूरके देशोमें जाया करते थे। उसका जिज्ञासु हृदय उन्हे देखकर न जाने किन-किन कल्पनाओमे लीन हो गया। वहीपर एक पुराने स्काट जेनरल पेट्रिक गोर्डनसे उसने परिचय प्राप्त किया। गोर्डनने उसे अपने सामुद्रिक युद्धोकी बाते सुनाई। डच टिमरमानसे वह यहीं गणित और तोप चलानेका ज्ञान प्राप्त करने लगा। प्रतिभाशाली होनेके कारण थोडे ही दिनोमे वह अपने शिक्षककी भी गलतिया निकालने लगा। पीतरकी यह प्रथम तैयारी थी। वह क्रिमियासे गोलित्सिनकी असफलताओका बदला लेना चाहता था। रूसने आस्ट्रिया और पोलदके साथ हो तुर्कीसे लडनेके लिये सधि की थी, किन्तु उसने अभी उसमे पूरा मनोयोग नही दिया था। अजोफके किलेके बारेमे क्रिमियाके खानसे बातचीत चली, लेकिन उसने उसे देनेसे साफ इन्कार कर दिया। अजोफ किलेमे इस समय तुर्कीकी सेना रहती थी। उसपर बिना अधिकार किये रूसी दोन द्वारा कालासागरमे नही पहुच सकते थे। पीतरने अब अपने खेलोको छोडकर वास्तविक युद्धमे उतरनेका निश्चय किया। १६९५ ई० के बसतमे तीस हजार सेना लेकर नावों द्वारा वह ओका नदीसे वोल्गा होकर जहां वोल्गा और दोन एक दूसरेके बहुत नजदीक होती है, (जहा पर १९५२ ई० में वोल्गो-दोन नहर जारी की गई है) वहा नावोको कंधोंपर उठाकर दोन नदीमें पहुचाया गया। इसी समय पीतरने अपने एक पत्रमें लिखा था—"कोजुकोफमें हमे बडा आनन्द आया था (यही मास्कोके उपनगरमे पीतरने सैनिक प्रदर्शन किये थे), और अब हम खेलके लिये अजोफ जा रहे है।" अभी पीतरके पास युद्धपोत नही थे, इसलिये वह समुद्रकी ओरसे किलेको नहीं घेर सकता था। तुर्की सेनाको कुमक मिलनेमें कोई दिक्कत नही थी। उन्होंने शरद् आरम्भ होते-होते रूसियोपर इतने जोरका प्रहार किया, कि उन्हें अजोफका मुहासिरा उठा लेना पड़ा।

इस हारने पीतरके लिये बड़ी शिक्षाका काम दिया। उसने अनुभव किया, कि बिना नौसेना के काम नही चल सकता, इसलिये सारे जाड़ोमें वह सैनिक पोतोके निर्माण करनेमे दिलोजानसे पिल पडा। वोरोनेज नदीके किनारे दोनके संगमसे नातिदूर बंज, देवदारके जंगलोंके नजदीक रहनेसे वहीं पोतोंका निर्माण किया जाने लगा। इस काममे पीतर स्वयं अपने हाथसे आरे खीचने और बसूला चलानेमें

भी पीछे नही रहता था । जारकी इतनी तत्परता देखकर दूसरोंमे क्यों न उत्साह होता ? जाडा खतम हो १६९६ ई० का बसत आया । इसी समय अजोफके पास रूसियोका एक बहुत बडा जहाजी बेडा देखकर तुर्कोको बहुत आश्चर्य और उससे भी अधिक परेशानी हुई। यह कहने की अवश्यकता नही, कि अभी वाष्प-इजनोंका युग नही था। तुर्की सैनिक बेडेमे लडनेकी हिम्मत नही थी । पीतरने जल और स्थल दोनों मार्गोसे अजोफके किलेको घेर लिया । कान्स्तन्तिनोपोलसे कोई मदद नहीं मिली, इसलिये ग्रीष्म के अन्ततक तुर्कोने आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन पीतर जानता था, कि अजोफ ले लेनेसे ही काम नहीं चलेगा। कालासागरके तटपर तुर्कोके और भी कितने ही सैनिक अड्डे थे। अभी तक अधकचरा ज्ञान रखनेवाले युरोपीय लोगोसे पीतरने पश्चिमी युरोपकी बाते सीखी थी, इसलिये वह स्वयं वहां जाकर सीखनेके लिये तैयार हो गया ।

मा राजकाज सभाले हुई थी, इसलिये देशमे पीतरकी उतनी अवश्यकता नही थी । मुस्लिम तुर्कोके विरुद्ध पश्चिमी युरोपके राज्योसे घनिष्ठ सबध स्थापित करनेके उद्देश्यसे मास्कोने एक महादूत-मंडल भेजा, जिसमें भेस बदलकर पीतर स्वयं शामिल हो गया । वह वहांसे अपने साथ विशेषज्ञो, इंजीनियरों, तोपचियों आदिको लाना चाहता था । १६९७ ई० मे दूतमडल मास्कोसे चला था, जिसके साथ पीतर मिखाइलोफके नामसे एक साधारण जहाजी भी था । उसकी मंशा युरोपकी सभी बातोको गंभीरतासे सीखनेकी थी। पीतरने पीछे अपनी मुहरमें खुदवा रक्खा था—"मै गुरुओंकी खोजमें रहने वाला विद्यार्थी हूं।" औरगजेब और पीतरके अन्तरको यहां हम साफ देख सकते है। दूतमंडलके पहले ही पीतरने कोइनिग्सवर्ग नगरमे पहुच तोप चलानेकी कला सीखी । वहासे फिर वह हालैण्डके सारडम नगरमें पहुचा, जो कि अपने पोत-निर्माणके कामके लिये बहुत प्रसिद्ध था । पीतर एक साधारण लोहारके घरमें बसकर मामूली बढ़ईकी तरह जहाजी कारखानेमे काम करने लगा, लेकिन वह अधिक दिनोंतक अपनेको छिपा नहीं सका। बहुतसे डच-व्यापारी रूस गये हुये थे, उनकी आखें साढ़े छ फुटके तगड़े जवानको देखकर कैसे चूक सकती थी ? लोगोंसे बचनेके लिये पीतर वहांसे आम्स्टर्डम चला गया, और वहा एक सबसे बड़े जहाजी कारखानेमे काम करने लगा। यह एक-दो दिनके दिखावेका काम नही था। पीतर चार महीनेतक आम्स्टर्डममे काम करता रहा, तबतक जबतक कि जिस जहाज के निर्माणमे वह स्वयं भी काम कर रहा था, वह पानी मे नही उतार दिया गया। जहाजमे काम करनेके समयके बाद वह दूसरे कारखानों, मिस्त्रीखानों और म्युजियमोंमे जाता, डच वैज्ञानिकों और कलाकारों के साथ बातचीत करता । हालैण्डसे पीतर इगलैण्ड गया । वहां उसने वहांकी शासन-व्यवस्थाका अध्ययन किया। वह एक बार पार्ल्यामेंटके अधिवेशन को भी देखने गया । दो महीनेतक टेम्सतटपर डेप्टफर्डके कारखानेमे पोत-निर्माणकी कलाको व्यवहारिक तौरसे सीखता रहा ।

समकालीन भारतमे क्या हम किसी ऐसे मुगल युवराज या शाहजादेको देख सकते थे ? पीतर अपने और अपने देशके बारेमे 'होनहार बिरवानके होत चीकने पात' की कहावतको सिद्ध कर रहा था।

इगलैण्डसे पीतर आस्ट्रियाके सम्राट्के साथ सैनिक सधिके बारेमे बातचीत करनेके लिये आस्ट्रिया गया। इस सारे पर्यटनसे महादूतमंडलको मालूम हो गया, कि तुर्कोके विरुद्ध कोई बहुत बडा समझौता नही हो सकता। युरोपमें स्पेनके उत्तराधिकारको लेकर अलग ही विरोध शुरू हो गया था, जो कि अन्तमें तेरह साल (१७०१—१७१४ ई०) के युद्धके रूपमे परिणत हो गया । आस्ट्रियाके राजवंशका सारा ध्यान स्पेनकी ओर था। वह तुर्कोके विरुद्ध रूसके साथ समझौता कैसे करता ? उलटे उसने तुरंत तुर्कोके साथ संधि कर ली, जिसमें कि स्पेनकी ओर पूरा ध्यान दे सके । अपनी यात्रामें जहा पीतरने पश्चिमी देशोंकी नई-नई प्रगतिको देखा और उनसे कितनी ही बातें सीखी, वहां उसके दिलमें यह देखकर सुई चुभ रही थी, कि स्वीडनने अब भी बाल्तिक-तटसे रूसको वचित कर रक्खा है। समुद्रका रास्ता रूसके लिये कहीसे नही था। पीतरकी दूरदर्शी आंखे देख रही थी, कि कोई भी राष्ट्र बिना समुद्रके सहारे—बिना समुद्रपर विजय किये—अपनेको सुरक्षित और शक्तिशाली नही बना सकता । युरोपीय शक्तियोंको तुर्कोके विरुद्ध कुछ करनेके लिये नहीं तैयार देख, पीतरने पहले स्वीडनसे बाल्तिक-तटको छीननेका निश्चय किया। तुर्कोकी अपेक्षा स्वीडन ही उस वक्त अधिक निर्बल शत्रु भी था । उसने झट तुर्की और क्रिमियाके खानसे संधि कर ली ।

शायद पीतर अभी और कुछ समयतक विद्यार्थी बनकर पश्चिमी युरोपमें घूमता, लेकिन इसी समय स्त्रेल्त्सियो (गारद सैनिको) के विद्रोहकी खबर मिली। स्त्रेल्त्सी मास्कोमे गारदका ही काम नही करते थे, बल्कि वह अपना अधिक समय छोटे-छोटे व्यापारों और दस्तकारीके कामोंमे भी लगाते थे। पीतरने राजधानीमें लौटकर उनसे मांग की, कि तुम्हे अपना सारा समय सैनिक सेवामे देना होगा। इस विद्रोहसे फायदा उठानेके लिये राज्य-वंचिता साधुनी सोफिया चुपके-चुपके स्त्रेल्त्सियोंसे मिलकर षड्यंत्र करने लगी। १६९८ ई०के ग्रीष्ममे तोरोपेत नगरकी छावनीमें रहनेवाले स्त्रेल्त्सियों की चार पल्टने बलवा कर मास्कोकी ओर चल पडी, लेकिन पीतरके जेनरल गोर्डनने राजधानीके पास उन्हे आसानीसे हरा दिया। यह खबर पीतरको वीनामे मिली। सुनते ही वह बहुत जल्दी मास्कोके लिये चल पड़ा। रास्तेमे वह पोलंदके राजा अगस्तससे मिला। दोनोंने मिलकर स्वीडनके विरुद्ध लड़नेका निश्चय किया। कही लोग राजधानीमें उसके स्वागतके लिये बड़ी तैयारी न कर दें, इसलिये वह एक दिन यकायक पहुचकर महलमें भी न जा प्रेयोब्रजेस्कोय गावके अपने साधारणसे बंगलेमे चला गया। खबर पाते ही दूसरे दिन सबेरे, बड़े-बड़े बायर, अमीर, व्यापारी और नागरिक स्वागत करने पहुचे। पीतरने उनके साथ बड़े प्रेमसे मुलाकात की, लेकिन पुराने दस्तूरके मुताबिक उसने किसीको भी धरती पर मत्था टेककर प्रणाम करने नही दिया। इसी स्वागतके समय पीतरने कितने ही बायरोकी लम्बी दाढ़ियोको कैंची ले अपने हाथसे कतर दिया। पीछे उसने राजादेश निकालकर लम्बी दाढी और ढीलम्ढाल रूसी चोगा पहननेका निषेध कर दिया। स्त्रेल्त्सी-विद्रोहके बारेमे खोज करनेपर पता लगा, कि इसके पीछे सोफियाका हाथ है। जगह-जगहपर फांसीकी टिकटियां खड़ी करके उसने स्त्रेल्त्सियोंके १९५ सरगनोंको नवोदेविची भिक्षुणी मठके जगलोके सामने फांसीपर लटकवा दिया—सोफिया इसी मठमे रहती थी। सब मिलाकर बारह सौ स्त्रेल्त्सियोको प्राणदंड दिया गया। पीतरने मास्कोस्थित उनकी पल्टनको तोड़ दिया, सोफियाको षड्यन्त्र करनेके लिये इतना ही दंड दिया गया, कि अब वह साधुनियोके घूघटको पहिनकर एकान्तवास करनेके लिये मजबूर की गई।

अब पीतरको तन्मयताके साथ स्वीडनसे निबटनेकी तैयारी करनी थी। किसानों, अर्धदासों तथा मुक्त आदमियोंको भर्ती करके उसने एक नई सेना सगठित की। सैनिकोंकी वर्दी उसने पश्चिमी युरोपकी नकलपर बनवाई और सबेरेसे रात होनेतक मास्कोके उपनगरमें यह नये रंगरूट कवायद-परेडमे लगे रहते। तीन महीनेके भीतर बत्तीस हजार सेनाको शिक्षा दी गई—इसी बीच कान्स्तन्तिनोपोलमे दूत भेजकर पीतरने अगस्त १७०० ई० मे तुर्कीके साथ सधि की थी। इस संधिके अनुसार तुर्कीने अजोफपर रूसका अधिकार कबूल कर लिया। इसके बाद तुरंत पीतरने अपनी सेनाको स्वीडन-अधिकृत नारवाके किलेपर प्रहार करनेका हुक्म दे दिया। बाल्तिक समुद्रमे पहुंचनेके लिये नारवाका लेना आवश्यक था। पीतरका मुकाबिला एक नई सेनासे था। उसे रसद और हथियारोंके प्रबंधमे कितने ही दोषोंका पता लगा। सिपाहियोंको पेटभर खाना नही मिलता था, खाइयोंमें सर्दीसे तकलीफ, इसलिये बीमारी फैली। खबर पाते ही स्वीडनके राजा चार्ल्सने सहायताके लिये प्रयाण किया। अन्तमें रूसियोंकी हार हुई, उनके बहुत-से सैनिक तथा सारा तोपखाना स्वीडनके हाथमें पड़ गया। लेकिन, पीतरके लिये हरएक असफलता नई तैयारीका अवसर देती थी। उसने सारी शक्ति लगाकर बड़ी तेजीसे सेनाको फिरसे संगठित करना शुरू किया। तोपोंके ढालनेके लिये उसने गिर्जोंके बहुतसे विशाल घंटोंको गला डाला और एक सालके भीतरही तीन सौ तोपे तथा नारवामें गंवाई सेनासे भी दुगनी सेना तैयार कर ली। पहले बायरोंको जन्मत. जेनरल बननेका अधिकार था, लेकिन अब पीतरने उनके लिये भी बाकायदा शिक्षा लेनेका नियम बना दिया। १७२१ ई० मे—औरंगजेबकी मृत्युके छ साल पहले—रूसी सेना फिर लड़ाईके लिये तैयार थी। शेरेमेतोफके नेतृत्वमे एक रूसी सेनाने स्वीडोंको दो बार हराकर बाल्तिक-तटके लिफलंदिया प्रदेशपर अधिकार कर लिया। १७०३ ई०में रूसी सेनाने मरियतबुर्गको सर किया, अगले साल दोर्पत और नारवा उनके हाथमें थे। इस समय पीतर नेवा नदीके बाम तटपर इंग्रियामें लड़ाईका सचालन कर रहा था। १७०२ ई०की शरद्में नेवा नदीके उद्गम लदोगा-सरोवरके तटपर अवस्थित स्वीडोंके अधिकृत नोटबोर्गपर अधिकार कर

लिया। पीतरने इस किलेका नाम बदलकर श्लुसेल्बुर्ग (कुंजीनगर) रक्खा, क्योंकि यह नेवा नदी होकर फिनलन्दकी खाडीमे पहुचनेकी कुजी थी। १७०३ ई०के बसतमे आगे बढकर समुद्र-सगमसे नातिदूर नेवाके बायें किनारेपर अवस्थित स्वीड किले नेन्स्कान्सपर अधिकार कर इसी जगहपर पीतर और पाल किलेकी नीव रक्खी और कुछ लकड़ीके मकान बनवाये—यहीसे पीतरबुर्ग (आधुनिक लेनिनग्राद) आरम्भ हुआ, जो बोल्शेविक क्रातिके समयतक रूसकी राजधानी रहा। पीतरका एक बहुत बड़ा सकल्प पूरा हुआ—रूसकी सीमा समुद्र-बेलातक पहुच गई।

लेकिन, लड़ाईका मतलब केवल प्राणोंकी ही क्षति नही, बल्कि अपार धनकी भी क्षति है, जिसके लिये किसानोका सबसे अधिक दोहन होना था। पीतरने नगरोमे दाढी रखना निषिद्ध कर दिया था, लेकिन जो दाढी-कर देनेको तैयार थे, वह उसे रख सकते थे—इस करकी रसीदके तौरपर एक तांबेका सिक्का मिलता था। ग्रामीणोको दाढ़ी रखनेकी स्वतन्त्रता थी, लेकिन नगरमे आनेपर उन्हे भी दाढी-कर चुकाना पडता। दाढीको उस वक्त धर्मके साथ सबधित समझा जाता था, इसलिये पीतरके इस कामसे लोगोके नाराज होनेका मौका था, लेकिन वस्तुतः सबसे अधिक असंतोष था आर्थिक कठिनाइयोके कारण। जगह-जगह छोटे-मोटे विद्रोह हुये। एक बड़ा विद्रोह ३० जुलाई १७०५ ई० को अस्त्राखानमें हुआ, जिसमे वोयवोद और कितने ही राजकर्मचारी मार डाले गये। फील्ड मार्शल शेरेमेतोफके नेतृत्वमे पीतरकी सुशिक्षित सेना जब गई, तो विद्रोहियोको क्या आशा हो सकती थी? मार्च १७०६ ई०मे तोपोकी मारके सामने अस्त्राखानको आत्म-समर्पण करना पड़ा, जिसपर आठ महीनेतक विद्रोहियोने अपना शासन स्थापित कर लिया था। अस्त्राखानके विद्रोहके समाप्त होनेके तुरन्त ही बाद दोनमे एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इससे तीन वर्ष पहले १७०४ ई० में बाशकिरोने भी विद्रोह किया था, जिसमें विद्रोहियोके नेताओने क्रिमियाके खान या तुर्कीके खलीफाके अधीन अपना स्वतन्त्र राज्य कायम रखनेका इरादा किया था। पीतरने १७११ ई० तक अपनी शक्तिशाली सेनाके बलपर सभी जगह विद्रोहोंको दबा दिया।

स्वीडनके साथ अभी अन्तिम निर्णय नही हो पाया था। उक्रइनका हेतमन (राजप्रमुख) इवान माजेपा पीतरसे असंतुष्ट हो स्वीडनके राजा चार्ल्ससे सांठ-गांठ कर रहा था, इसलिये भी स्वीडनकी हिम्मत बढ़ी थी। माजेपाने रूसके खिलाफ भड़काकर अपने लोगोंको विद्रोह करनेके लिये तैयार करना चाहा, लेकिन वह उसमे सफल नही हुआ। चार्ल्स अप्रैल १७०९ ई०में सेना लेकर आया और उसने पोल्तावाके किलेको घेर लिया। पोल्तावाले लेनेपर स्वीडनके लिये मास्कोका रास्ता खुल जाता। पीतरको तुर्कीसे भी डर था, तो भी वह अपनी प्रधान-सेना लेकर पोलतावाकी ओर दौड़ा। २७ जून १७०९ ई० को पोलतावाके पास वोर्स्कला नदीके किनारे वह निर्णायक युद्ध हुआ, जिसने रूसके इतिहासको आगे बढ़ानेमें भारी सहायता की। युद्धके दिनसे पहलेवाली शामको पीतरने रूसी सेनाके लिये जो आदेश दिया था, उसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं—

"जवानो, वह घड़ी आ रही है, जो हमारे देशके भाग्यका फैसला करेगी; इसलिये यह मत सोचो, कि तुम पीतरके लिये लड़ रहे हो। तुम लड़ रहे हो उस राज्यके लिये, जो कि पीतरको सौपा गया है, तुम लड़ रहे हो अपने परिवारके लिये, अपनी जन्मभूमिके लिये। अजेय कहे जानेवाले दुश्मनकी प्रसिद्धिसे हिम्मत न हारो, क्योंकि यह प्रसिद्धि झूठी बात है। इस प्रसिद्धिको तुमने कई बार अपने विजयों द्वारा झूठा सिद्ध किया है। जहांतक पीतरका संबंध है, तुम यह गांठ बांध लो, कि उसे अपना प्राण प्रिय नही है।"

लड़ाई शुरू हुई। रूसियोंका प्रहार इतना जबरदस्त था, कि स्वीडोंमे भगदड़ मच गई। वह भारी संख्यामे खेत आये। कुछ थोड़ी-सी सेना ले चार्ल्स और माजेपा तुर्कीकी ओर भागे, बाकी सेनाने आत्म-समर्पण किया, जिसकी सख्या बीस हजार थी। उस समय स्वीडनकी सेना युरोपमे सबसे अच्छी मानी जाती थी। पीतरने उसे हराकर सारे युरोपमे रूसकी धाक जमा दी।

उत्तरमें समुद्रके रास्ते भागना संभव न देखकर चार्ल्स तुर्कीकी ओर भागा था। उसने तुर्कोंको भड़काया, जिसपर तुर्कीने १७१० ई०मे रूसके विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। पीतर तुरंत चालीस हजार सेना ले दन्यूब (दुनाइ) नदीकी ओर चल पड़ा। करीब दो लाख तुर्क सेनाने आगे बढ़कर प्रुथ नदीके

किनारे १७११ ई०में पीतर और उसकी सेनाको घेर लिया। रूसी सेनाकी भीतरी हालत बहुत बुरी थी, लेकिन तुर्की सेनापतिको इसका पता नही था, इसलिये उसने समझौतेकी बात स्वीकार की। पीतर बेवकूफीभरी वीरताका पक्षपाती नही था। उसने अजोफको तुर्कीके हाथमे दे अपनी सेनाको बचा लेनेमे सफलता पाई।

तुर्कीसे छुट्टी पाकर फिर उसने स्वीडनकी तरफ मुह फेरा और १७१४ ई०मे अबकी उसने हंगो अन्तरीप (फिनलन्द)में स्वीडनकी नौसेनापर भारी विजय प्राप्त की। इस नौसैनिक पराजयके बाद स्वीडनने रूससे समझौतेकी बातचीत शुरू की, लेकिन पीछे उसे तोड दिया, जिसपर १७२० ई० में रूसको दूसरी नौसैनिक विजय प्राप्त करनी पड़ी। अब बाल्तिक-तट फिर रूसका हो गया। यही नही, कुछ ही वर्षोके भीतर रूसकी नौसैनिक-शक्ति भी बहुत बढ़ गई। अन्तमें १७२१ ई०मे सधि करके स्वीडनने फिनलन्द-खाडीका तट और रीगा-खाड़ीकी तटभूमि, करेलियाका कुछ भाग—जिसमे बिपुरी भी था—और दूसरे प्रदेश रूसको दे दिये।

पूर्वमें प्रसार—यद्यपि पीतरको स्वीडनके साथ बहुत सालोतक फसा रहना पड़ा, लेकिन उसका ध्यान अपने पूर्वी सीमातसे कभी नहीं हटा। इसके शासनमे १७१५ ई० और १७२० ई०के बीच सारी ऊपरी इर्तिश-उपत्यका रूसके हाथमे चली गई। इसी नदीके तटपर ओम्स्क और सेमीप्लातिन्स्क जैसे कितने ही किले बनाये गये। ऊपरी इर्तिशसे बुखारा और खीवाका वणिक्पथ जाता था। मध्य-एसियाकी ओर भी अपनी विजय-यात्राको बढानेके लिये पीतरने कास्पियन समुद्रको इस्तेमाल किया। १७१६ ई०मे राजुल बेकोविच-चेरकास्कीके नेतृत्वमे एक छोटी-सी सैनिक टुकडी ने खीवाके खानको गद्दीपर बैठनेके लिये मुबारकबादी देनेके बहाने पहुचना चाहा, लेकिन रेगिस्तानमे उसे घेरकर नष्टप्राय कर दिया गया, और इस प्रकार पीतर कास्पियन-तटसे आगे अपनी बाहु फैलानेमें सफल नही हुआ। इधरसे असफल होकर १७२२ ई०मे पीतरने काकेशसके विरुद्ध स्वयं एक अभियान का नेतृत्व किया। काकेशसके सामन्तों—विशेषकर गुर्जी, अर्मेनियाके छोटे-छोटे राजा, व्यापारी तथा ईसाई पादरी—मुस्लिम ईरान या तुर्कीकी जगह ईसाई रूसको अधिक पसद करते थे। ईरानको काकेशसमें हार खानी पड़ी और उसने १७२३ ई०की संधिके अनुसार कास्पियनके अपने बहुत-से तटभागको रूसियोंको दे दिया, जिसमें पश्चिमी तटपर दरबेद, बाकू और पूर्वी तटपर अस्त्राबाद भी शामिल थे, लेकिन रूस इस भूमिको बहुत दिनोंतक अपने हाथमें नही रख सका।

शासन-सुधार—पीतरके सैनिक सुधारों और उसके कारण मिली सफलताओके बारेमें अभी हम देख चुके है। पीतरने व्यवस्थित सेनाको कायम किया, जिसमे बाकायदा रगरूट भर्ती किये जाते, वर्दी और हथियार दे उनको खूब कवायद-परेड कराई जाती। पश्चिमी युरोपमे तोपोंको खीचने के लिये घोडागाड़ियोका इस्तेमाल जब हुआ था, उससे पचास वर्ष पहले ही पीतरका तोपखाना घोड़ों द्वारा खीचा जाता था। राजप्रबन्धमे भी पीतरने कई बड़े-बड़े परिवर्तन किये। १७०८ ई०में उसने राज्यको आठ गुबर्नियों (सरकारों)मे बांट दिया, गुबर्नियाका शासक एक गवर्नर होता था, जो कि सीधे केन्द्रीय सरकारसे संबंध रखता था। पहले गुबर्निया बडी-बड़ी बनाई गई, जिन्हे १७१९ ई०मे बांटकर पचासी प्रदेशोके रूपमें परिणत कर दिया गया। प्रदेशोको फिर कितने ही जिलोंमे विभक्त किया गया। प्रदेशो और जिलोके शासक गवर्नर (राज्यपाल) और वोयवाद होते थे।

यह नही कहा जा सकता, कि पीतर नवीनताका अधभक्त था, लेकिन उसके कितने ही सुधारों से एक प्रभावशाली वर्ग असंतुष्ट जरूर था। पीतरकी पहली बीबी योदोकिया लोपुखनासे उसका एक पुत्र राजकुमार अलेक्सी हुआ था। रुढ़िवादियोने अलेक्सीसे ऊपर आशा लगा रक्खी थी, क्योंकि वह पादरियों और अपने ननिहालके लोगोंकी देखरेखमें पला था। अलेक्सी उतावला हो गया था, कि कब बाप मरे और गद्दी उसके हाथमे आये। पीतरने कई बार अपने बेटेको सावधान किया—"अपने देशके सम्मान और समृद्धिके बढ़ानेमें जो भी बात सहायक हो, उसके साथ प्रेम करो। यदि मेरी सलाह नही मानोगे, तो मै तुम्हें अपना माननेसे इंकार कर दूंगा।" अलेक्सीने बापकी बात नही मानी, और विद्रोह करके आस्ट्रिया भाग गया। आस्ट्रिया भला पीतरका कोप-भाजन बननेके लिये उसके पुत्रको क्यों शरण देनेके लिए तैयार होती? पीतरने पुत्रको वहांसे पकड़वा मंगवाया, खास अदालतमें अभि-

योग चलवाया। अदालतने अलेक्सीको मृत्युदड दिया, लेकिन उससे पहले ही वह जेलमें मर गया। अलेक्सीकी मौतने रूढिवादियोंकी आशापर पानी फेर दिया।

शिक्षा और संस्कृति—पीतर शिक्षाके महत्त्वको अच्छी तरह समझता था। उस समयके भारत-मे अभी प्रेसोंकी छपाईका पता नही था, रूसमे भी अभी उनका प्रचार थोड़ा ही हुआ था। पहलेसे चले आते धार्मिक पुस्तकोंके स्लावानिक अक्षरोंके टाइप छापेकी दृष्टिसे कुछ दोषपूर्ण थे। पीतरने सुधार करके उनको वह रूप दिया, जो कि आज भी रूसीके लिये इस्तेमाल होता है। १७०८ ई०के बाद सिवा गिरजाकी प्रार्थना-पुस्तकोंके सभी पुस्तकें अब नये टाइपमे छपने लगी। शिक्षा-प्रचारके लिये विदेशी पुस्तकोका रूसीमें अनुवाद होने लगा। गणित, पोत-निर्माण, दुर्ग-निर्माण, वास्तु-विद्या, युद्ध-शास्त्र आदि विषयोंपर पश्चिमी युरोपमे लिखे गये कितने ही अच्छे-अच्छे ग्रंथोंके रूसी अनुवाद छापे गये। रूसी इतिहासपर भी कितने ही ग्रंथ प्रकाशित हुये। पहला रूसी अखबार "वेदोमोस्ती" मास्कोमे औरगजेबके मरनेके चार वर्ष पहले (१७०३ ई०) छपना शुरू हुआ, जो पीछे पीतरबुर्ग राजधानीसे निकलने लगा। अभी तक रूसी पचागमें ईसाई पचांगका अनुसरण करते हुये सन् सृष्टि-सवत्सरसे गिना जाता था, और नया वर्ष पहली सितम्बरको आरम्भ होता था। १ जनवरी १७०० ई० को युरोपके कितने ही देशोमे स्वीकृत जूलियस कैसर द्वारा स्थापित जूलियन पंचागको पीतरने मान लिया। लेकिन जूलियन पंचागसे भी अधिक शुद्ध ग्रेगरी पंचाग युरोपके कितने ही देशोमें प्रचलित था, जिसे बोल्शेविक क्रान्तिके बाद ही रूसने अपनाया। पीतरके शासनकालमे मास्को और पीतरबुर्गमें कितनी ही शिक्षण-सस्थायें स्थापित हुई। १७०२ ई०में विदेशी अभिनेताओको निमन्त्रित करके मास्कोमे नये ढगसे रगमचकी भी स्थापना हुई, जिसमें "ओरेशेक विजय"के नाम का एक नाटक पीतरके विशेष आग्रहपर खेला गया था। सभी दिशाओंमें सामाजिक परिवर्तन इस समय बड़ी तेज गतिसे हुआ, लेकिन इसमें सन्देह नही, कि यह परिवर्तन उच्चवर्गके ही भीतर हुआ।

पीतरबुर्ग निर्माण—स्वीडनपर लडाईमे विजय प्राप्तकर नेवाके दाहिने तटपर पीतरने "पीतर और पाल" नामक किलेकी स्थापना की थी। उस समय यहा आसपासमे बहुत घना जंगल तथा जहा-तहा छोटे-छोटे गांव थे। इसी जगह पीतरने अपने नामसे नगर बसाना शुरू किया। पीतरने पहले अपने लिये ही जयाची द्वीपपर एक लकड़ीकी छोटी-सी झोपडी बनवाई, जिसके बाद दूसरे बायरों और व्यापारियोने पासमे घर बनाने शुरू किये।

पोल्तावाकी विजय (जून १७०९ ई०) के बाद पीतरने राजधानीको मास्कोसे पीतरबुर्ग लाने-का निश्चय किया। हजारों किसान और शिल्पकार नगरके बनानेमे लगा दिये गये। दलदली जमीन भी बहुत थी, जिसके भीतर घुटनो तक डूबे काम करना पड़ता था। हजारो मजूर बीमारीसे मरे, उनका स्थान दूसरे हजारोंने लिया। पीतरबुर्गको मास्कोकी तरह नही बनाया जा रहा था। यहां पुरानेको बढ़ाना नही, बल्कि सारे नगरको आरम्भसे ही नया बनाना था, इसलिये इसकी सडकें सीधी बनी। पहले हीसे योजना बनाकर नगर बनानेमे जो सुभीता होता है, वह पीतरबुर्गको प्राप्त हुआ। पीतरने पश्चिमी युरोपकी राजधानियों और मकानोको देखा था, इसलिये वह चाहता था, कि उसकी राजधानीमें ईंट और पत्थरके मकान बने, इसके लिये उसने दूसरे नगरोंमे ईंट-पत्थरके मकानोंका बनाना निषिद्ध करके वहांसे राजों और मेमारोंको बुलवा लिया। नगरको सुदर और कलापूर्ण बनाने-के लिये उसने कितने ही विदेशी वास्तुशास्त्रियोंको भी बुलवाया। जैसे-जैसे पीतरबुर्गका प्रताप बढ़ता गया, वैसे ही वैसे मास्कोकी अवस्था गिरती गई। धनी व्यापारी और बायर नई राजधानीमे चले गये, सरकारी दफ्तर भी मास्कोसे हट गये। पंद्रह-बीस वर्षोंके भीतर ही एक छोटे-से गांवसे बढ़कर पीतर-बुर्ग सत्तर हजार लोगोंका नगर बन गया।

साइबेरिया—पीतरसे पहले ही प्रशान्त-महासागरतक रूसकी सीमा जा लगी थी। युद्धके खर्चके लिये अपार धनकी अवश्यकता थी, जिसके लिये धनके सभी स्रोतोंके पता लगानेकी कोशिश की गई। इसी प्रयत्नमें नई भौगोलिक खोजो और नये प्रदेशोंपर अधिकार प्राप्त करनेका मौका मिला। १६९७-९८ ई०मे एक स्त्रेल्त्सी अफसर ब्लादिमिर अतलसोफके नेतृत्वमें एक छोटी टुकड़ी अनादिर नदीके तटपर अवस्थित अनादिरकी चौकीसे बारहसिंघोसे खींची जानेवाली बेपहियेकी गाड़ी

द्वारा कमचत्काके किनारे पहुंची, और उसने वहाके लोगोसे मुख्यत: समूरके रूपमे कर उगाहना शुरू किया। अत्लसोफ पहला आदमी था, जिसने कमचत्का प्रायद्वीपका पता लगाकर उसके बारेमे लिखा। कमचत्का-निवासी (कमचादल) अभी जनयुगमे रहते थे। वह कबीलेशाही समाजसे ऊपर नही उठे थे। उनके एक-एक जन (कबीले) मे कुछ सौ तम्बू होते थे। मछुवाही उनकी जीविका थी। जनोमे आपसमे बराबर लडाई होती रहती थी। उनके हथियार थे—धनुष-वाण। वह वाणोके फल चकमक-पत्थर या हड्डीसे बनाते थे। अत्लसोफने कमचादलोके बीचमे शासन दृढ करनेके लिये एक रूसी छावनी स्थापित की, जहापर कसाक और सैनिक रहा करते, जिनका काम जारके शासनको मजबूत रखनेके साथ लूटपाटकर अपने लिये धन बटोरना भी था। १७३१-३२ ई०मे कमचादलोने कई विद्रोह किये। इनके नेता वही थे, जो कि रूसमे रहकर बारूदी हथियारोका इस्तेमाल जान गये थे; लेकिन रूसियोंने उन्हे आसानीसे दबा दिया। फिर धीरे-धीरे उनकी जन-व्यवस्था टूटने लगी।

चीनके साथ संबंध—नेर्चिन्स्क की संधिके (सितम्बर १६८९ ई०) साथ चीनका रूससे दौत्य-सबध स्थापित हुआ। उस सधिको प्रमाणबद्ध करने तथा व्यापारिक सबध सुधारनेके लिये मास्कोने १६९२ ई०मे अपने एक जर्मन सेवक येवर्ट यसब्राट इड्सको भेजा। वह अठारह महीनेमें चीचीहार नगरमे पहुचा। चीनी सीमातपर पहुचनेपर एक चीनी मदारिन (अफसर) आठ रक्षक सैनिकों तथा तीन लोहेकी तोपोके साथ स्वागतके लिये आया। चीनी मदारिनने इड्सकी खूब पुरतकल्लुफ दावत की, फिर उसने भी मंदारिनको युरोपीय ढगसे दावत दी। राजधानीमे भी उसका उसी तरह स्वागत किया गया। तीन दिनोतक उसकी जियाफत होती रही। इड्सने इसके बारेमे लिखा है—"मेरे लिये जो मेज रखी गई थी, वह प्राय वर्गाकार थी, जिसके ऊपर एकके ऊपर एक सत्तर तश्तरियां रक्खी गई थी, जो सभी चादीकी थी।" घोडीके दूधकी बनी शराब (कूमिस) को सोनेके प्यालेमे रख-कर दिया गया। अन्तमें १२ नवम्बर १६९२ ई०मे उसे दरबारमे सम्राट् खाङ-सीके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सम्राट्के सामने अपना राजकीय प्रमाणपत्र पेश किया। शायद उसे साष्टाग दडवत् (कौतू) करनी पड़ी, जिसके बारेमे एक अंग्रेजने लिखा है—"राजदूत अपने आसनपर ले जाये गये, इसी समय जब सम्राट् अपने सिहासनसे उतर रहा था, यकायक चीनियोंने अपने घुटनो-को मोड़ सिरको धरतीपर तीन बार टेका। हमें भी प्रतिहारोने वहा ले जाकर उसी तरह प्रणाम करने के लिये मजबूर किया।" इड्सने १९ फरवरी १६९४ ई०में पेकिङ छोड़ा, जिससे पहले फिर उसे सम्राट्से मिलनेका मौका मिला। सम्राट् खाङ-सीने १७१२-१७१६ ई०में तू-ली-शिन्को दूत बनाकर तर्गुत कल्मकोके खानके दरबारमे वोल्गा-तटपर भेजा। उस समय पीतर स्वीडनके साथ लडाई-में लगा हुआ था, इसलिये वह वोल्गाके तटपर आये चीनी दूतको बुलाकर नही मिल सका। इस चीनी दूतमंडलका यद्यपि बाहरी उद्देश्य था आयुका खानके स्वास्थ्यके बारेमे पुछार करना तथा आयुका-के भतीजे राजकुमार ओ-ला-पू-छू-योरको उसके पूर्व पदपर स्थापित करनेकी इच्छा प्रकट करना, लेकिन दूतको यह भी आज्ञा दी गई थी,कि वह मास्को राजधानीमे जाकर जारसे भी मिले। चीन लौटते समय जब तू-ली-शिन् रूसी सीमातपर पहुचा, तो रूसी अफसरने उसे सैनिक सम्मानके साथ सेलिगिन्स्की शहरमे पहुंचा था; जहां वोयवोदने उससे बातचीत की। तोबोल्स्कमे आनेपर साइबेरियाके राज्य-पाल राजुल गजारिन मिला, जिससे तू-ली-शिन्ने राजकाजके बारेमे बहुत देरतक बातचीत की। यहां पर तू-ली-शिन्को सूचित किया गया, कि जार अपनी सेनाके सचालन करनेमे लगा हुआ है, नही तो वह बड़ी प्रसन्नतासे चीनी राजदूतसे मिलता। आयुकासे मिलनेके बाद तू-ली-शिन्ने पेकिङमे लौट कर सम्राट्को एक रिपोर्ट दी, जिसमे लिखा था :

"इस प्रकार उत्तर-पूर्वमें रूसी राज्य अल्पजन तथा बयाबानीसा इलाका है, यद्यपि अत्यन्त प्राचीन कालसे आजतक हमारे चीन-साम्राज्यके साथ उसका सबंध नही रहा, और हमारे इतिहास-लेखकोने भी रूसियोका उल्लेख नही किया और न आजतक कभी एक भी चीनी आदमी वहां पहुंचा, तो भी सभी दिशाओंकी तरह वहा भी हमारे देवोपम सम्राट्की महिमा और महान् गुण प्रभाव डाले बिना नहीं रहे। दुनियाके सभी दसों हजार राज्य सम्राट्की हितकारी सरकारके संरक्षणमें है।....रूस

केवल अब चीनके साथ खुला सबंध स्थापित करने लगा है, लेकिन चालीस या पचास साल पहले भी, जब कि दोनों साम्राज्योकी सीमाये निश्चित नही हुई थी, सूचनाओं द्वारा हमारे साम्राज्यके बहुतसे अच्छे गुण वहां ज्ञात थे ।"

पीतरके प्रथम दूतमंडलने यह भी तै किया, कि रूसी वणिक्-सार्थ थोडे समयके बाद बराबर जाया करे। लेकिन रूसी जबरदस्त पियक्कड थे, जिसके कारण अक्सर झगडे हो जाया करते था, जिससे सम्राट् खाङ-सीने सबध-विच्छेद करनेकी धमकी दी। इसपर १७१९ ई०मे पीतरने इस्माइलोफके नेतृत्वमे एक विशेष दूतमडल भेजा। इस्माइलोफके साथ एक अंग्रेज जान बेल भी था, जिसने उसके बारेमे बहुत सी ज्ञातव्य बाते लिखी है। इस दूतमडलको चीनी सीमाततक पहुंचनेमें सोलह महीने लगे थे । सम्राट्के विशेष प्रतिनिधिने वहा उनका स्वागत किया। बेल्ने अपने विवरणमे लिखा है :

"हमारे पथदर्शकने खेमोमे कुछ स्त्रियोंको चलते देखकर दूत (इस्माइलोफ)से पूछा—यह कौन है और कहा जा रही है ? उसे बतलाया गया, कि वह हमारी मंडलीकी है, और हमारे साथ चीन जा रही है। इसपर चीनी प्रतिनिधिने कहा—पेकिङमे पहले हीसे काफी औरते है । अबतक कोई भी युरोपीय स्त्री चीन नही आई, इसलिये सम्राट्की विशेष आज्ञाके बिना मैं उन्हे ले जानेकी जिम्मेदारी नही ले सकता। यदि आप जवाबकी प्रतीक्षा करे, तो इसके लिये हम एक सार्थ भेजनेके लिये तैयार है, लेकिन सदेशवाहक छ सप्ताहसे पहले नहीं लौट सकता। इसपर यही ठीक समझा गया, कि असबाब को ले आनेवाली गाडियोके साथ स्त्रियोंको सेलिगिन्स्की लौटा दिया जाये ।"

जिस घरमे रूसी दूतमडलको ठहराया गया था, उसको दस बजे रातको सम्राट्की अपनी मुहर लगाकर बद कर दिया जाता था, जिसमे कोई आदमी भीतर-बाहर आ-जा न सके। राजदूतके कहने पर यह नियंत्रण हटा दिया गया। इस्माइलोफने पहले साष्टाग प्रणिपात करनेसे इन्कार कर दिया, लेकिन पीछे उसने इस शर्तपर कबूल किया, कि चीनी दूत भी रूसी दरबारमे वहाकी प्रथाके अनुसार साष्टांग प्रणाम करेगा। बेलने रूसी दूतके दरबारमे जानेका वर्णन निम्न शब्दोंमे किया है :

"हमे प्रायः पाव घंटा प्रतीक्षा करनी पडी। पिछले दरवाजेसे सम्राट् शालमे प्रवेशकर सिहासनपर बैठा। इस समय सभी लोग खडे हो गये। अब महाप्रतिहारने कुछ दूरपर खड़े राजदूतको शालके भीतर आनेके लिये कहा, और उसे एक हाथसे पकड़े तथा दूसरे हाथमे राजकीय प्रमाणपत्र थामे ले चला। सीढ़ियोंपर चढनेके बाद उसने पूर्वनिश्चयानुसार प्रमाणपत्रको वहां स्थित एक मेजपर रख दिया। सम्राट्ने राजदूतको पास आनेका निर्देश किया, और उसी वक्त प्रमाणपत्रको लिये अलोईके साथ वह सिहासनके पास गया। फिर घुटना टेकते हुये उसने पत्रको सम्राट्की ओर बढ़ाया, जिसने अपने हाथसे उसे छू दिया। फिर परमभट्टारक जारके स्वास्थ्यके बारेमे पूछकर राजदूतसे कहा—परमभट्टारक जारके लिये मेरे हृदयमें इतना मित्रतापूर्ण और प्रेमका भाव है, कि मैने उनके पत्रको लेनेमे अपने साम्राज्य की प्रचलित प्रथाके पालन करनेका ख्याल नही किया।

"थोडे समयतक यह भेंट होती रही। उस समय राजदूतके अनुचर शालके बाहर खड़े रहे। पत्रके देनेपर हमने समझा, कि अब काम खतम हो गया। फिर महाप्रतिहारने राजदूतको लौटाकर अनुचरोंको हुक्म दिया कि नौ बार मत्था टेककर सम्राट्के प्रति सम्मान प्रदर्शित करें। महाप्रतिहारने खड़ा होकर तारतार (मगोल) भाषामे "मोरगू" और "बोस" में बोलते हुये आज्ञा दी। मोरगूका अर्थ है सिर झुकाना और बोसका खड़ा होना।"

बेलके लिखनेसे मालूम होता है, कि रूसी दूतमडलको यद्यपि बहुत-से दरबारी अपमानजनक शिष्टाचारोको पालन करनेके लिये मजबूर होना पड़ा, लेकिन उनका सत्कार-सम्मान इतनी अच्छी तरहसे हुआ, कि वह सबको भूल गये। इस्माइलोफके बिदा हो जानेके बाद उसका सचिव देलांग रूसी-प्रतिनिधिके तौरपर पेकिङ (पेचिङ)मे रह गया, लेकिन उसकी स्थिति एक नजरबन्द जैसी थी। जिस वक्त देलांग पेकिङमे था, उसी समय मंगोलोंके एक चीनाधीन कबीलेने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इसपर पेकिङमे किसी भी रूसी कारवांका आना निषिद्ध कर दिया गया। देलांगके साथ असह्य दुर्व्यवहार हुआ, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है :

"मुझे आदेश है, कि हमारे दोनों साम्राज्योंके बीचमें अधिक घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये पूरा प्रयत्न करू, लेकिन मै उन्हे—प्रधान मत्रीको—बतला देना चाहता हूं, कि इस अवसरपर चीनी सचिवालयने (मेरे साथ) जो बर्ताव किया, उससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। (आपको) यह ख्याल दिलसे हटाना नही होगा। परमभट्टारक जारके स्वीडनके साथ हो रहे युद्धको सम्मानपूर्वक समाप्ति पर ही सब कुछ निर्भर करता। शायद जिस वक्त मै यह बाते कर रहा था, उसी समय सचमुच शाति-सधि की जा रही थी। उसके बाद इसमे कोई बाधा नही हो सकती, कि मेरे स्वामी (जार) धीरज खोकर कही अपने हथियारोको इस ओर न घुमा दे।"

लेकिन चीनी प्रधान-मंत्री ऐसी धमकियोंकी कोई पर्वाह नही करता था। अन्तमे देलांगको चीन दरबारसे चले जानेकी छुट्टी मिली और सत्रह महीना रहनेके बाद एक कारवांके साथ वह चीनकी राजधानीसे रवाना हुआ। इस प्रकार पीतरके समय चीन-रूसका संबध अच्छा नही रहा। पीतरके मरनेपर यद्यपि बाहरी शक्तियोंसे संघर्षने भयंकर रूप धारण नहीं किया, लेकिन उसके बादके सैंतीस वर्षो (१७२५-६२ ई०) मे चीन मे छ प्रासादी क्रांतियां हुई। पीतरके उत्तराधिकारियोंमे अन्ना इवान-पुत्री, और पीतर III अयोग्य और विलासी थे। उनके समयमे दरबारियोके हाथमे राज-शक्ति चली गई थी। पीतर II और इवान VI गुडिया जार थे। पीतर I ने १७२२ ई० मे बनाये अपने विधानमे सम्राट्के हाथमे यह अधिकार दे दिया था, कि वह स्वयं अपने उत्तराधिकारीको चुन सकता है। लेकिन वह अन्त तक उत्तराधिकारीके बारेमें किसी निश्चयपर नही पहुंचा। वह मृत युव-राज अलेक्सीके पुत्रको उत्तराधिकारी नहीं बनाना चाहता था, अपनी रानी एकातेरिनाको भी राज देने मे आनाकानी कर रहा था, और अपनी लड़कियो एलिजाबेत या अन्नाके बारे भी उसने कोई निश्चय नही कर पाया था। लेकिन उसके मरनेके बाद दरबारियोके एक प्रभावशाली समुदायने पीतरकी रानी एकातेरिनाको गद्दीपर बैठा दिया।

६. एकातेरिना I, पीतर-पत्नी (१७२५-२७)

अपने दो सालके शासनमें उसने किसी योग्यताका परिचय नहीं दिया। दरबारके एक प्रभाव-शाली सामन्त मेशिकोफने एकातेरिनाको पीतर I के पौत्र तथा अलेक्सीके पुत्र पीतर II को अपना उत्तराधिकारी बनानेके लिये तैयार किया। युवराजसे अपनी लड़कीका ब्याह करके वह अपने प्रभावको बढाना चाहता था।

एकातेरिनाके समय १७२७ ई०मे एक रूसी दूतमंडल सावा व्लादिस्लाव-पुत्रकी अधीनतामे पेकिङ भेजा गया। इस दूतमंडलका काम अबतक गये सभी दूतमंडलोंसे बड़ा ही लाभदायक साबित हुआ। सावाने २७ अगस्त १७२७ ई०को जिस संधिपत्रको स्वीकृत करानेमे सफलता पाई, वह सवा शताब्दियों (जून १८५८ ई०) तक मान्य रहा। इतनी देरतक रहनेवाली संधियां बहुत कम ही देखी जाती है। इसी समय रूस और चीनके बीचकी सीमारेखा पूर्वमें क्याख्तासे ऐगून नदीके मुहानेतक और पश्चिममे क्याख्तासे सुइंयान-पर्वतमालाके एक डांड़े शबिनादाबेगतक निर्धारित की गई। यह भी स्वीकार किया गया, कि हर तीसरे वर्ष रूसी कारवां पेचिङ आ सकते हैं, तथा यह भी कि पेचिङमें एक स्थायी रूसी दूतावास स्थापित किया जायगा, और रूसी अपने धर्मके अनुसार पूजा-पाठ कर सकेंगे। राजदूतके निवासमे रूसी और लातीनी भाषाओके जाननेवाले चार तरुण विद्यार्थी रह सकेंगे, जिनका खर्च चीन बर्दाश्त करेगा, और शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह लौटनेके लिये स्वतन्त्र रहेगे। इस दूत-मिशनके ऊपर चीन सरकारको प्रतिवर्ष हजार चांदीके रूबल और दस मन चावल खर्च करना पड़ता था। रूसी सरकार उसपर सोलह हजार चांदीके रूबल खर्च करती थी, जिसमेसे एक हजार रूबल अलबाजीन कसाकोंकी पेचिङमे रहती तरुण संतानोंकी शिक्षापर खर्च होता था। यद्यपि इस संधिके अनुसार रूसी हर साल अपने कारवांको भेज सकते थे, लेकिन वस्तुतः १७२७ ई० और १७६२ ई०के बीचमें केवल छ कारवां गये। व्यापारके लिये कई तरहके निबंध थे, जिसके कारण निराबाध व्यापार नहीं हो पाता था। बिना एक साल क्याख्तामे रहे कोई चीनी व्यापारी वहां

रूसियोंके साथ व्यापार नही कर सकता था, सरकार उन्हींको लाइसेंस देती थी, जो कि रूसी भाषा लिख-बोल सकते थे। व्यापार बदलेनमें होता था, किसी भी तरहके सिक्केका इस्तेमाल बिल्कुल वर्जित था। चीनी व्यापारी पहले क्याखता जाते और अपने पसदके मालको चुनते, फिर रूसी व्यापारी उसी बातके लिये मैमाचेन आते। अपनी सरकारी द्वारा नियुक्त कमिश्नर (आयुक्तक) चायके माध्यमसे हर एक चीजका दाम निश्चित करते। चीनी व्यापारी चायके बदलेमे ऊनी कपड़े, चमड़े, छालें जैसी चीजें लेते।

७. पीतर II, अलेक्सी-पुत्र (१७२७-३० ई०)

एकातेरिनाके मरनेके बाद मेशिकोफने अपने ही महलमे पीतरको गद्दीपर बैठाया। उस समय वह बारह वर्षका लड़का था। उसके नामपर मेशिकोफ अब शासन करने लगा। धीरे-धीरे मेशिकोफके प्रति लोगोंमे बहुत असतोष पैदा हो गया और उसे पकडकर बेरियोजोफ (साइबेरिया) मे निर्वासित कर दिया गया। अब उसका स्थान दोलगोरुकी राजुल-वशने लिया। उसने अपनी कन्यासे सम्राट्का ब्याह करना चाहा। यह याद रखना चाहिये, कि पीतर ने अपने लिये "सम्राट्" (एम्पेरातोर) की पदवी धारण की थी, जिसका प्रयोग अन्तिम जारतक होता रहा, यद्यपि लोग अधिकतर जारकी उपाधि ही इस्तेमाल करते थे। ब्याहकी तैयारी हो ही रही थी, इसी बीच पीतर II बीमार होकर मर गया। पीतरके साथ रोमनोफ वंशकी पुरुष-संतानोका अन्त हो गया, इसके बाद रोमनोफ कुमारिया तथा उनके जर्मन पतियोकी सताने रूसपर शासन करती रही। ये जर्मन जार पूरीतौरसे रूसियोमे मिल नही सके, उनके दरबारोंमे जर्मनोंका बाहुल्य था।

पीतर IIके समयकी एक उल्लेखनीय घटना है बेरिंगका भौगोलिक अभियान। १७वी सदीके मध्यमे रूसियोने कामचत्का तकका पता लगाकर उसपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था, और सिमओन देजनिओफने चुकोत्स्क प्रायद्वीपका चक्कर लगाकर सिद्ध कर दिया था, कि एसिया और अमेरिकाके बीचमे एक पतली-सी खाड़ी है। लेकिन यह बात १८वी सदीके आरम्भमें भूल गई। अपनी मृत्युसे जरा-सा पहले पीतरने एसिया और अमेरिकाके मिलन-स्थानके बारेमे अधिक खोज-पता लगानेके लिये एक अभियान भेजनेकी आज्ञा दी। इस अभियानका नेता रूसी नौसेनाका एक अफसर तथा डेनमार्क-निवासी वीटस बेरिंग नियुक्त किया गया। पहले अभियान (१७२८-३० ई०)मे बेरिंग (अपने नामसे प्रसिद्ध होनेवाली) खाड़ी तक गया, लेकिन उसने अमेरिकन तटभूमिकी पडताल नही की। दो साल बाद बेरिंग फ्योदोरोफ और ग्वोज्देफ दो रूसी सैनिक और भूगोलशास्त्रियोंके साथ गया। अबके उसने सिर्फ एसिया और अमेरिकाके तटोंपरकी ही जांच-पड़ताल नही की, बल्कि वहांका पहला नक्शा तैयार किया। उसके बाद अमेरिका-तटके अलास्का प्रायद्वीपको रूसियोंने १७९७ ई०मे अपना उपनिवेश बनाया, जिसे कि जारने १८६७ ई०मे अमेरिको के हाथमे बेच दिया।

८. अन्ना, इवान V-पुत्री (१७३०-४० ई०)

पीतर IIके मरनेके बाद कुछ समयतक निजी परिषद् (प्रिवी कौंसिल)ने शासनसूत्र अपने हाथमें लिया। इस परिषद्मे दो पुराने राजुल-वंशों गोलित्सिन और दोल्गोरुकीका प्रभुत्व था। राजुल द० म० गोलित्सिन बहुत भारी जमीदार था, और परिषद्मे उसकी चलती भी काफी थी। वह इंगलैण्ड और स्वीडनकी नकलपर राज्य-व्यवस्था करनेका पक्षपाती था, जिसमे शासनमें जमींदारोंका पलड़ा भारी होता। उसके प्रस्तावपर परिषद्ने पीतर I के भाई जार इवानकी पुत्री अन्ना को राजसिहासन प्रदान किया। अन्नाका ब्याह पीतरने एक जर्मन राजुल (कूरलडके ड्युक)के साथ किया था। ड्युकके मरनेके बाद बराबर वह वही रहती थी। परिषद्के सामन्तोंने कई शर्तें रक्खी, जिसके बारेमें अन्नाने कहा : "मैं सभी बातोंको बिना चू-चिराके माननेका वचन देती हूं।"

दरबारी चाहते भी नही थे, कि अन्ना राजकाजमें अधिक भाग ले, और वह भी अपने आनंद-विलासमें समय काटना चाहती थी, जिसके लिये भारी परिमाणमें धन प्राप्त करना ही उसका

लक्ष्य था। पीतरबुर्गके हेमन्तप्रासादमें अपने चाटुकारोंसे घिरी वह अपना दिन बिताती थी। उसने अपने एक जर्मन दरबारी बीरेनको अपनी तरफसे राजकाज संभालनेका काम दे दिया था। बीरेन एक निर्बुद्धि और अशिक्षित जर्मन अमीर था। उसने सभी प्रभावशाली पदोंपर जर्मनोंको लाकर भरना शुरू किया। वही वैदेशिक विभागका संचालन करते थे, और वही रूसी सेनाके सेनानायक थे। बीरेन रूसियोंको बड़ी तुच्छ दृष्टिसे देखता था। उसने कभी रूसी भाषा नही सीखी। लोगोंसे पैसे ऐंठकर जर्मनीमे वह अपने लिये भूमि खरीदता तथा अपनी बीबीके लिये मूल्यवान् कपड़ों और रत्नोंको जमा करता। अन्नाके शासनके साथ रूसमें जर्मनोंका जबरदस्त प्रवेश शुरू हुआ, जो कि अन्तिम जारके समय हदतक पहुंच गया। रूसियोंके मनमे जर्मनोंके इस बर्तावसे यदि विद्वेष होने लगा, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नही। अन्नाके शासनकालमें कालासागरके तटपर अधिकार करनेके लिये तुर्की और क्रिमियाके साथ लडाई (१७३५-३९ ई०) हुई। रूसने तुर्की सेनाको कई जगह हराया। १७३९ई० मे तुर्कोंके साथ हुई सधिके अनुसार रूसको समुद्रतक द्नियेपर नदीके दोनों तट मिल गये। लेकिन लड़ाईपर जो खर्च करना पडा, उसके कारण देशके जनसाधारणकी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हो गई।

१७३७ ई०मे अन्नाके शासनकालमे चीन और रूसके साथ व्यापारिक संबध अच्छे हो गये थे, इसलिये कारवांके व्यापारकी इजारेदारी किसी व्यापारीको न देकर खुला व्यापार करनेका रास्ता खोल दिया गया। व्यापारियोंको पेकिङ्ग भी जानेकी जरूरत नही थी। रूसी व्यापारी क्याख्ता मे आके ठहरते और चीनी मैमाचिनमें—दोनो ही स्थान सीमांतपर पास-पास थे। चीनी सरकार ने चीनी व्यापारियोंपर कुछ निर्बंध लगा रक्खे थे, जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं, और उसके कारण व्यापारमें कुछ अड़चन होती थी।

९. इवान VI, अन्ना-पुत्र (१७४०-४१ ई०)

अन्नाकी कोई सतान नहीं थी, इसलिये उसकी भतीजी अन्ना ल्योपोल्द-पुत्रीके बेटे इवानको राजगद्दी दी गई। नये जारकी मां एक जर्मन ड्युक (ब्रन्सविक)से ब्याही गई थी। १७४० ई०में अभी तीन महीनेका बच्चा ही था, जबकि इवानको गद्दीपर बैठा दिया गया। जारको कुछ करना-धरना भी नही था, इसलिये उसके बच्चे होनेसे कुछ बनने-बिगड़नेवाला नही था। उसकी मां राजमाता अभिभाविका घोषित की गई, लेकिन उसका शासन एक सालसे अधिक नही रहा। सभी जगह विदेशी जर्मनोंको देख राजधानीमे देशी अमीरोके दिलमें आग लग रही थी। सैनिक अफसरों और सिपाहियों में भी इसके लिये असंतोष फैला हुआ था। फ्रांसके राजदूतने भी षड्यंत्रमे सहायता दी, और २५ नवम्बर १७४१ ई०को पीतर I की पुत्री एलिजाबेत यकायक अपने अनुचरों और गारदकी एक टुकड़ीके साथ महलमें घुस आई। गारदोने तुरन्त अन्ना ल्योपोल्द-पुत्री और उसके परिवारको पकड़ लिया और जर्मनोंके साथ काफी दुर्व्यवहार करके एलिजाबेतको साम्राज्ञी घोषित कर दिया। शिशु सम्राट् इवानको श्लुशेलबर्गके किलेमें बंद कर दिया गया, जंहां उसे एकातेरिना IIके शासनकाल (१७६२-९६ ई०) में मार डाला गया।

१०. एलिजाबेत, पीतर I-पुत्री (१७४१–६१ ई०)

एलिजाबेतके शासनकालमें रूसी सामन्तोंका प्रभाव काफी बढ़ा, और अमीरोके फायदेके लिये कई नियम और विधान बनाये गये। अब केवल पुराने राजुलवंशी ही किसानोंकी बस्ती-वाली भूमिके मालिक हो सकते थे। वह अपने अर्ध-दासोंको बिना अभियोगके साइबेरियामें निर्वासित कर सकते थे, जो आम तौरसे सेनामे भर्ती होकर जाते थे। एलिजाबेतको अपने आनंद-मौजके सिवा किसी कामसे कोई वास्ता नही था। उसके यहां नाच, गाना और शराबकी मजलिसें लगातार होती रहती थीं। एलिजाबेतने अपने भतीजे कार्ल पीतर उलरिचको अपना उत्तराधिकारी बनाया। कार्ल पीतर I की पुत्री अन्ना और उसके पति ड्युक होल्स्टाइनका पुत्र था। पीतर रूसमें फ्योदोर-पुत्र कहा जाता था। वह बहुत ही निर्बलबुद्धि तरुण था। अठारह-बीस वर्षकी उमरमें भी अभी वह खिलौनों-

से खेला करता और उनसे ऐसे बातें करता मानो वह आदमी है। साथ ही अपने जर्मन होनेका उसे हदसे अधिक अभिमान था, और उसी परिमाणमे वह रूस और रूसियोके साथ घृणा करता था। साम्राज्ञी एलिजाबेतने उसका ब्याह एक जर्मन राजकुमारी सोफिया अनहाल्ट-जर्ब्स्तके साथ कर दिया, जो कि रूसमे एकातेरिना अलेक्सी-पुत्रीके नामसे प्रसिद्ध हुई—बिना पिताके नामसे रूसमें किसी स्त्री-पुरुष-को पुकारनेका रवाज नही है, इसलिये हरएकके साथ पितृनाम जोडना ही पडता है। एकातेरिना अपने पति जैसी नही थी। वह बडी योग्य और मेहनती स्त्री थी। उसने रूसी भाषा और रूसी रीति-रवाजोका अच्छी तरह अध्ययन किया। वह रूसी सामन्तो और अमीरोको हर तरहसे अपनी ओर खीचनेकी कोशिश करती थी।

११. पीतर III, फ्योदोर-पुत्र, पीतर I-नाती (१७६१-६२ ई०)

पीतरका शासन बहुत थोडे दिनोंका था। वह अपने समयमें रूसी शासनको प्रुशियाके राजा फ्रेड्रिक (१७४०-८६ ई०) के नमूनेपर बनानेकी कोशिश करता रहा। फ्रेड्रिक बडा ही महत्त्वाकांक्षी शासक था, जिसके कारण उसके पडोसी बहुत चिन्तित रहते। फ्रांस, आस्ट्रिया और सेक्सनीके साथ रूसने भी फ्रेड्रिकके विरुद्ध अपनी एक गुट बना ली थी। इंगलैण्ड फ्रेड्रिकका पक्षपाती था। फ्रेड्रिकने पूर्वी पड़ोसीका बिना ख्याल किये ही, सेक्सनीके ऊपर आक्रमण किया इसपर उसी साल रूसी सेना प्रुशियाके भीतर घुस गई, जिस साल अंग्रेजोंने पलासीकी लडाई (१७५७ ई०) जीतकर हिन्दुस्तानमे अपना दृढ शासन स्थापित किया। फ्रेड्रिकको अपनी सेनापर बड़ा अभिमान था। वह रूसी सेनाको बिल्कुल तुच्छ दृष्टिसे देखता था, लेकिन पहली ही झड़पमें उसे अपनी राय बदलनी पडी। उसने अपने सबसे योग्य सेनापतियोको भारी सेना देकर रूसियोंके विरुद्ध भेजा। अगस्त १७५७ ई० मे जर्मनोंने पहला आक्रमण किया, और यह आक्रमण हिटलरके ब्लित्जक्रीगका प्रथम नमूना था। यकायक आक्रमण करनेके कारण रूसी पहले कुछ तितर-बितरसे हो गये। मालूम होने लगा, जर्मन विजयी होंगे। इसी समय जगलोंमे छिपी हुई रूसी सेना मैदानमे कूद पड़ी। यह ब्लित्जक्रीगका अच्छा जवाब था। रूसियोंने जर्मन सेनापर पूर्ण विजय प्राप्त की। कोय-निग्सबर्गके महादुर्गने बिना प्रतिरोधके ही आत्म-समर्पण कर दिया। यदि रूसी सेनाने इस समय अवसरसे लाभ उठाया होता, यदि रूसके मित्रोंने सुस्ती न दिखलाई होती, तो फ्रेड्रिकका सर्वनाश हुये बिना नही रहता। अपनी सेनाको फिरसे संगठित करके १७५९ ई० मे फ्रेड्रिक ओडेर-पर-फ्रांकफोर्तको खतरेमे डाले हुई रूसी सेनाके मुकाबिलेमें चला। सब प्रयत्न करके भी फ्रेड्रिकको बुरी तरहसे हारना पडा। जर्मन अपने हथियारों और झडोंको छोड़कर भाग गये। फ्रेड्रिक रूसियोंके हाथमे बंदी होते बाल-बाल बचा। फ्रेड्रिक अत्यत निराश हुआ, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है: "मैं अभागा हूं, जो जीनेके लिये बचा हूं, जिस समय मै यह लिख रहा हूं, हरएक आदमी भाग रहा है। इन आदमियोके ऊपर मेरा कोई बस नही है।" लेकिन जिस वक्त फ्रेड्रिक इस तरहसे निराश था, उसी वक्त उसके पश्चिमी शत्रुओंने उसे बचनेका अवसर दे दिया। १७६० ई० मे एक छोटीसी रूसी सेनाने जर्मन राजधानी बर्लिनपर कूच किया। यद्यपि राजधानीमे छब्बीस बटालियन पैदल, छियालीस रिसाला स्क्वाड्रेन और एक सौ बीस भारी तोपे थी, लेकिन जर्मन सेनापतियोंने नगरकी प्रतिरक्षा करना बेकार समझा। रातके वक्त वह अपनी सेना लेकर बाहर चले गये, और सबेरेके वक्त बर्लिनके नगराधिकारियोंने रूसी सेना-पतियोंको मखमलके गद्देपर रखकर नगरकी कुंजी भेंट कर दी। फ्रेड्रिककी दुरवस्था चरम सीमा तक पहुंच गई थी। इसी वक्त दिसम्बर १७६१ ई० मे रूसी साम्राज्ञी एलिजाबेत मर गई। उसके उत्तरा-धिकारी पीतर II ने प्रुशियाके साथ क्षणिक विराम-संधि करके फ्रेड्रिकको बचा लिया। इस युद्धमें अपनी विजयों द्वारा रूसने पश्चिमी युरोपको चकित कर दिया। रूसी सेनापति प. अ. रुम्यान्त्सेफ (१७२५-९६ ई०) के युद्धकौशलका इसमें बहुत भारी हाथ था।

पीतरके दो सालके राज्यमें रूसकी प्रगतिको लाभ नही हानि पहुंची। फिर जर्मन सेना-पतियों और अफसरोंकी सब जगह भरमार हो गई। पीतरकी दिलचस्पी रूसकी अपेक्षा अपने होल्स्टाइन बंशसे अधिक थी। वह होल्स्टाइनके लिये डेनमार्कसे लड़नेकी तैयारी भी कर रहा था। लेकिन अपनी

महत्त्वाकांक्षाओंके अनुसार उसमे योग्यता नही थी। उसकी पत्नी एकातेरिना अलेक्सी-पुत्री जानती थी, कि उसका नालायक पति सिहासनको खोकर रहेगा, इसलिये रूसी दलके षड्यत्रमे वह स्वय शामिल हो गई। गारदके अफसर दो-भाई ओरलोफ षड्यंत्रके मुखिया थे। २८ जून १७६२ ई० के बडे तड़के ही उन्होंने एकातेरिनाको उपनगरके एक प्रासादसे पीतरबुर्गमे लाकर साम्राज्ञी घोषित कर दिया। अगले दिन पीतरने क्रोन्स्तात्मे भाग जानेका व्यर्थ प्रयत्न किया, फिर सिहासनसे बाकायदा इस्तीफा दे दिया। ऐसे नालायक पतिको भी अधिक दिनोतक जीनेका अधिकार देना बुद्धिमानीकी बात नही थी, इसलिये थोड़े ही दिनो बाद वह मार डाला गया।

१२. एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी (१७६२–९६ ई०)

एकातेरिना योग्य और सुशिक्षिता स्त्री थी। जिस वक्त वह गद्दीपर बैठी, उस वक्त राज्यकी अवस्था अस्तव्यस्त हो रही थी, राजकोष खाली था, सैनिकोको सात महीनेसे वेतन नही मिला था। मरम्मत न होनेसे, युद्धपोत और दुर्ग खराब हो रहे थे। जनतामे बहुत असतोष था, विशेषकर* कारखानोमें काम करनेवाले उंचास हजार मजूरो और जमीदारोके डेढ लाख अर्ध-दास कैदियोसे जेल भरे हुये थे। एकातेरिनाने यद्यपि जमीदारोके अधिकारोपर प्रहार नही किया, लेकिन तब भी अपने शासनके आरम्भमे उसने किसानो और जनसाधारणके बोझेको हलका करनेकी कोशिश की। उसे पश्चिमके नये विचारोवाले दार्शनिकोके ग्रथोके पढ़नेका बड़ा शौक था। फ्रेच विचारक वोल्तेरके साथ उसका पत्र-व्यवहार था। उस समय वोल्तेर, मोन्तेस्को, दीदरो और दूसरे फ्रेच विचारक अपनी सशक्त लेखनी द्वारा सामन्तवादी व्यवस्थापर प्रहार कर रहे थे, मिथ्या विश्वासोंको हटाकर बुद्धिवादको आगे बढा रहे थे। एकातेरिना उनके इन विचारोसे अवगत थी। वह वोल्तेर, दीदरो और दूसरोसे पत्र-व्यवहार करके यह दिखलाना चाहती थी, कि जिस आदर्श शासन या नृपतिके बारेमे तुम प्रचार कर रहे हो, वैसी बुद्धिमती और नई रोशनीवाली शासिका मै हू। रूसके किसानोमे उस वक्त भूख और अज्ञानका अखंड राज्य था, लेकिन एकातेरिना वोल्तेरको लिखती थी, कि रूसमे एक भी ऐसा किसान नही है, जो इच्छा होनेपर मुर्गी न खा सकता हो, बल्कि अब तो वह मुर्गीकी जगह टर्कीका खाना ज्यादा पसद करते है। एकातेरिना पाखंडमे बहुत ही चतुर थी। वह राजकाजमे सीधे भाग लेती थी। वह स्वयं कानूनों और राजादेशोका मसविदा बनाती थी। साहित्यमे उसकी दिलचस्पी थी और स्वय एक पत्रिका "सबका थोडा" निकालती थी। एकातेरिनाका शासन सामतो और अमीरोके लिये रूसी इतिहासका सुनहला समय था।

जर्मनी (प्रुशिया) के साथ सात वर्ष (१७५६-६३ ई०) वाला युद्ध समाप्त होनेके बाद एकातेरिनाने राज्य संभाला था। यद्यपि बीचमे उसका नालायक पति आ घुसा था, लेकिन थोडे ही समयमे एकातेरिनाने रूसकी धाकको फिरसे जमा दिया। आस्ट्रिया और फ्रास रूसकी बढ़ती हुई शक्तिको शकाकी दृष्टिसे देखते थे। फ्रेच व्यापारी पूर्वी देशोके व्यापारपर एकाधिपत्य रखना चाहते थे, इसलिये वह नही चाहते थे, कि रूसियोकी शक्ति अधिक बढे। आजकलके अमेरिकाकी तरह उस समयका फ्रांस रूसके चारों तरफ शत्रु-राज्योका घेरा डालना चाहता था। इसके लिये उसने तुर्की, पोलैण्ड, स्वीडन और आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर एक जबरदस्त गुट बनाना चाहा। रूसने भी इसके विरुद्धमे प्रुशिया, इगलैंड और दूसरे राज्योको मिलाकर एक गुट बनानेकी कोशिश की, लेकिन विरोधी स्वार्थोंके कारण दोनों अपने उद्देश्यमे सफल नही हुये। आस्ट्रिया पश्चिमी उक्रइनकी उर्वर भूमिको चाहती थी, प्रुशिया पोलन्दकी निम्न-विस्तुला-उपत्यकापर हाथ साफ करना चाहती थी, और रूस अपने हाथसे छिने बेलोरूसी और उक्रइनी इलाकोको लौटाना चाहता था। इन स्वार्थो के साथ तीनोमेसे कोई नही चाहता था, कि किसीकी शक्ति अधिक बढ़ जाये। शताब्दियोतक शक्तिशाली रहनेके बाद पोलन्द अब निर्बल हो गया था। वहांके अमीरों और सामन्तोंने राजाके अधिकारको बहुत सीमित कर दिया था। उधर कैथलिक पोल ग्रीक-चर्चके अनुयायी उक्रइनों और बेलोरूसियोंके ऊपर तरह-तरहके अत्याचार कर रहे थे। एकातेरिना कैसे चुप रह सकती थी? १७६३ई० मे अगस्तस् IIIके मरनेपर एकातेरिनाके उम्मीदवार स्तानिस्लाउस पोनियातोव्स्कीको पोलन्दका राजा

चुना गया। रूस और प्रुशिया दोनोने मांग की, कि पोलन्दमें ग्रीक-विश्वासियों तथा प्रोटेसटेंटों (सुधार चर्च) को कैथलिकोके बराबर अधिकार दिया जाय। इन्कार करनेपर रूसी सेना पोलन्दके भीतर भेज दी गई। पोलिश ससद्को मजबूर होकर रूसकी मांगको स्वीकार करना पडा। इसी समय एकातेरिना नें पोलन्दको करीब-करीब अपने संरक्षणमें ले लिया। रूसके बढ़े हुये प्रभावको देखकर आस्ट्रिया और प्रुशियाको चिता हो गई। फ्रेड्रिकने समझा, कि रूस सारे पोलन्दको हड़प लेगा, इसलिये उसने आस्ट्रिया, प्रुशिया और रूसके बीच पोलन्दके बंट जानेकी एक योजना बनाई, जिसे तीनों राज्योने स्वीकार किया—प्रुशियाको पोलन्दका बाल्तिक-तट तथा पश्चिमी भाग मिला। इस प्रकार प्रुशियाका पूर्वी भाग, जो अभी तक अलग-अलग था, पश्चिमी भाग (ब्रांडेनबर्ग) से मिल गया। प्रुशियाने डन्जिग और थोर्नको लेना चाहा, लेकिन एकातेरिनाने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाको उक्रइनी-गलिसिया मिली, और रूसको बेलोरूसियाका कुछ भाग। १७७३ ई०में इस प्रकार पोलन्दका पहला बंटवारा हुआ, जो कि बहुत कुछ प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०) तक कायम रहा।

प्रथम तुर्की युद्ध (१७६८-७४ ई०)—फ्रास नही चाहता था, कि रूसकी शक्ति और बढे, इसलिये उसने तुर्कीको भडकाकर लडाई छिडवा दी। १७६८ ई०मे सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोल-स्थित रूसी राजदूतसे मांग की, कि अपनी सेना पोलन्दसे हटा लो। तुर्कीकी इस अनधिकार चेष्टाको रूस कैसे स्वीकार कर सकता था? इसपर रूसी दूतको पकड़कर जेलमे बन्द कर दिया गया। युरोपके लोग समझते थे, कि रूस तुर्की और पोलन्द दोनोंसे एक ही समय नहीं लड़ सकता। क्रिमिया का खान अपनेको तुर्कीके खलीफाके अधीन समझता था। उसने पहल की और १७६९ ई० के वसन्त में क्रिमियाके तारतारोंने दक्षिणी रूसके सीमांती इलाकोंमे लूट-मार मचाई। रूसकी सीमाके भीतर यह तारतारोंकी अन्तिम लूट-मार थी। प्रसिद्ध सेनापति रुम्यान्त्सेफ—जिसने सप्तवर्षीय जर्मन-युद्धमे भारी यश कमाया था—एक बडी सेना लेकर दक्षिणकी ओर बढ़ा। उसने अपने कई योग्य सहायक चुने थे, जिनमें अलेक्सान्द्र वासिली-पुत्र सुवारोफ भी था—सुवारोफ सभी कालके रूसी सेनापतियो का शिरोमणि माना जाता है। रुम्यान्त्सेफ सबसे पहले शत्रुकी सैनिक शक्तिको अधिकसे अधिक ध्वस्त करना चाहता था। १७७० ई० मे उसे पता लगा, कि लारगा नदीसे नातिदूर अस्सी हजार तुर्क-सेना छावनी डाले पड़ी है। रूसी सेनापतिके पास उस समय केवल तीस हजार सैनिक थे, लेकिन उसने आक्रमण कर दिया और तुर्क-सेनाको पूरी तौरसे हारना पड़ा। इसके दो सप्ताह बाद वह एक ओरसे अस्सी हजार तारतारो और दूसरी ओरसे तुर्कीके वजीरकी अधीनतामें डेढ़ लाख तुर्क सैनिकोंके बीचमें घिर गया। लेकिन इससे रुम्यान्त्सेफको घबराहट नहीं हुई। उसने यह कहते हुये पहले स्वयं आक्रमण करनेका निश्चय किया : "छोटी सेनासे बडी सेनाको हराना एक कला और कीर्तिकी बात है, और बड़ी सेनासे अधिक शक्तिशाली शत्रुको हरानेमें विशेष चातुरीकी अवश्यकता नही है।" तुर्की तोपखाने नें जबरदस्त गोलाबारी की और तुर्क सवारोने भारी सख्यामे रूसियोंका प्रतिरोध किया। निर्णयकी जब आखिरी घड़ी आई, तो रूसी सेना घबड़ाने लगी, इसी समय रुम्यान्त्सेफ आ पहुंचा और उसने चिल्लाकर कहा—"डटे रहो लडको" और वह स्वय युद्धके भीतर पिल पड़ा। तुर्कोंकी भारी हार हुई, और द्नियेस्तर तथा दन्यूबके बीचकी भूमि रूसियोके लिये खाली हो गई। रूसी सेना अब दन्यूब महानदके बाम तटपर पहुच गई। इस विजयके लिये रुम्यान्त्सेफको "ज़ा-दुनाइस्की" (दन्यूब-वाला) की उपाधि प्राप्त हुई। स्थलपर इस तरह सफलता प्राप्त करके रूसी नौसेनाने जलमें भी अपनी श्रेष्ठता दिखलाई और उसने सारे तुर्की बेड़ेको नष्ट कर दिया। १७७१ ई० में थोड़े ही समयके भीतर रूसी सेनाने सारे क्रिमिया प्रायद्वीपपर अधिकार कर लिया। रूसी सेना दन्यूबके किनारेपर नही रुकी और उसने कई बार इस महानदको पार करके आक्रमण किया, जिसमें अलेक्सान्द्र सुवारोफने अपने सैनिक कौशलका बहुत अच्छा परिचय दिया। रूस अपनी विजययात्राको और भी जारी रखता, लेकिन एक तो युद्धके अपार व्ययका सवाल था, दूसरे इसी समय पुगाचेफके नेतृत्वमे रूसी किसानोंने जबर्दस्त विद्रोह कर दिया था। एकातेरिनाने १७७४ ई०में जल्दी-जल्दी तुर्कीके साथ संधि कर ली। द्नियेपर और बुगके बीचका प्रदेश रूसको मिला और साथ ही कालासागरमें घुसनेकी केर्चकी खाड़ी भी। अब रूसी जहाज स्वच्छंदतापूर्वक कालासागरमे जा सकते थे, तुर्कीने दरेदानियाल (दरदानेल्स)

और बासपोरसकी खाड़ियोंको भी रूसी जहाजोंके लिये खोल दिया। क्रिमियाके खानको तुर्कोंकी अधीनतासे स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया, और अब उसके ऊपर रूसका प्रभाव बढ चला।

किसान-संघर्ष—रूसी अपने पूर्वजों (शको) के समयसे ही योद्धा-जाति है। सामन्ती अत्याचारोको रूसी किसान और अर्ध-दास आख मूदकर हर वक्त बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नहीं रहते थे। १६वी से १८वी सदीके बीचमें केवल मध्य-एसियामे ही चालीसके करीब विद्रोह हुये। वोल्गा प्रदेशमे रूसी जमीदारो और अफसरोंका अत्याचार बहुत बढा हुआ था। यह वह इलाका था, जहांपर कि रूसियो और एसियाई जातियोके इलाके एक दूसरेके पड़ोसमें पड़ते थे। बाशकिरोंकी भूमिपर रूसी व्यापारियो, कारखानेवालोकी खास तौरसे गृध्र-दृष्टि थी। कल्मक १७७० ई० के आसपास तक निम्न वोल्गाके दोनो तटोंपर रहते थे, लेकिन १७७१ ई०मे शासकोके अत्याचारोसे परेशान तथा चीनके प्रलोभनके कारण वोल्गाके बाये तटवाले कल्मक अपने सारे तम्बुओ और पशुओको लेकर चीनकी ओर चले गये, जिसके बारेमे हम अभी कहनेवाले है—यह कल्मक चीन द्वारा पूर्वी तुर्किस्तानमे बसाये गये। वोल्गाके दाहिने तटपर अब भी कल्मक-मगोल रहते थे। किसानोका विद्रोह पहले-पहल यायिक (उराल) नदीके तटपर बसनेवाले रूसी कसाकोमे फैला। कसाक जिस वक्त भागकर जापरोजे और दोनकी भूमिमे बसे, उस वक्त उनमे उतनी सामाजिक विषमता नही थी, लेकिन अब उनके भीतर धनियों और गरीबोका भारी भेद हो गया था। सरकारी अफसर धनी कसाकोका पक्ष करते थे, और जरा भी विरोध करनेपर उन्हे बड़ी बुरी तरहसे दबा देते थे। १७७२ ई० में यायित्स्क नगरमे कसाकोने विद्रोह करके जेनरल त्राउबेन्बर्ग और कितने ही कसाक आतमनो (सरदारो) को मार डाला। लेकिन सरकारी सेनाने आकर यायिकके कसाकोके विद्रोहको दबा दिया। बहुतसे कसाक मारे गये, और बहुतसे वहांसे बच निकलनेमे भी सफल हुये। तुर्कोंसे लड़ाई हो रही थी, इसी समय दोन और यायिकके कसाकोमें अफवाह उडी, कि जार पीतर II मरा नही है, बल्कि वह हमारे बीचमे छिपा हुआ है। १७७३ ई० के शरद्मे एमेल्यान पुगाचेफ नामक एक कसाकने विद्रोहका नेतृत्व अपने हाथमें लिया। वह उसी जिमोवेइस्क गावमे पैदा हुआ था, जिसे प्रथम किसान-वीर स्तेपान राजिनको पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

पुगाचेफने सप्तवर्षीय युद्धमे भाग लिया था, तुर्कोंके युद्धमे भी लड़ा था। बीमारीके कारण छुट्टी पाकर वह घर आया था, लेकिन उसने फिर लौटकर जाना पसंद नही किया। वह दोन, वोल्गा और यायिककी उपत्यकाओमे घूमता रहा। वहां उसे कितने ही दुर्दशाग्रस्त भगोडे किसान तथा उरालके कारखानोके मजदूर मिले। अपने इस पर्यटनमे उसे लोगोसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका मौका मिला और धीरे-धीरे उसका एक दल बन गया। अपनेको सम्राट् पीतर III कहते हुये वह सितम्बर १७७३ ई० मे यायिकके तटपर पहुंचा। लोग उसके झडेके नीचे आने लगे। पहले वह अपने आदमियोको लेकर ओरेनबुर्गकी ओर गया। गेरिसनको अधिकारमे कर किलेपर अधिकार करनेमे उसे कोई कठिनाई नही हुई। १७७३ ई० के अक्तूबरमे पुगाचेफ ओरेनबुर्गके नगर-प्राकारके पास पहुचा, जहां एक मजबूत किला और काफी सैनिक रहते थे। पुगाचेफ छ महीने उसे घेरे रहा। इस विद्रोहने आसपासके लोगोमे उत्तेजना पैदा की। कजाक (एसियाई) घुमन्तू भी उसकी सेनामे आकर शामिल होने लगे, निम्न वोल्गा और कालासागरके बीचके घुमन्तू कल्मक मगोल भी पुगाचेफकी सेनामें भर्ती होने लगे। तारतार, बश्किर और मारी नौजवान भी यायिकके तटपर पुगाचेफके पास पहुचने लगे। यह विद्रोह हर जातिके केवल किसानो तक ही सीमित नही था, बल्कि इसमे उरालके धातु-कारखानेमे काम करनेवाले मजदूर और दूसरे भी शामिल थे। धीरे-धीरे विद्रोह एक किसान-युद्धके रूपमे परिणत हो गया। पुगाचेफकी सेनामे कल्मको, बश्किरों, तारतारों, कारखानोके मजदूरो और दूसरोकी अलग-अलग पल्टने सगठित थी। उनके पास हथियारोंकी कमी थी। बहुत थोड़ोके पास पलीतावाँली बन्दूके या पिस्तौले थी, बाकी पुराने तरहके हथियारोंसे सज्जित थे। कुछ तोपे पकड़ी गई थी, जिनका एक तोपखाना बना लिया गया था। उरालके लोहेके कारखानोके कारीगरोंकी सहानुभूति होनेके कारण, कुछ नई बंदूकें भी विद्रोहियोको मिल रही थी। पुगाचेफ अपनी घोषणाओंको सम्राट् पीतर III के नामसे निकालता था, किसानो और गरीबोके लिये जितना कुछ उससे हो सकता था, उतना कर

रहा था और उससे भी अधिकका वचन देता था। १७७३ ई०के अन्तमें ओरेनबुर्गको मुक्त करानेके लिये जेनरल कारके नेतृत्वमे एक सरकारी सेना आई, जिसे पुगाचेफने हरा दिया, इसके कारण उसका प्रभाव और बढ गया। सारे रूसके अमीरो, जमीदारों और धनियोंमें आतक छा गया। वोल्गासे सैकडों मील दूर रहनेवाले जमीदार भी हर वक्त भयके मारे कापने लगे। लेकिन मार्च १७७४ ई० में सरकारी सेनाने पुगाचेफको ओरेनबुर्गके पास हरा दिया। अभी भी उसने अपने संघर्षको नही छोड़ा। पहले वह बश्किरोके प्रदेशमे गया। फिर रूसी किसानों, बश्किरो तथा धातु-कारखानेके मजदूरोकी सेना सगठित कर वह कामा नदीकी ओर बढते कजानकी ओर चला, जो कि सारे वोल्गा प्रदेशका शासन-केन्द्र था। पुगाचेफ जुलाई १७७४ ई० मे कजान पहुचा। यहां भी उसे अन्तमे हारना पडा, और वह थोडेसे आदमियोके साथ वोल्गाके दक्षिण तटकी ओर भागा। सरकारी सेनाने पुगाचेफका पीछा करना शुरू किया। वोल्गाके दाहिने किनारेपर उसके पास अब थोडे हीसे आदमी रह गये थे, लेकिन जब वह घने बसे हुये इलाकेमें पहुचा, तो निजनी-नवोगोरदके इलाकेने हथियार उठा लिया। बिना अधिक प्रतिरोधके एकके बाद एक नगरोंने आत्मसमर्पण किया। परन्तु पुगाचेफकी यह सफलता क्षणिक साबित हुई। बाकायदा शिक्षाप्राप्त सरकारी सेनाके सामने किसानोंका दल कैसे डटा रहता? पुगाचेफ पेंजा, सरातोफ और कमिशिन होते अगस्तके अन्तमें जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद) पहुंचा, जहापर सरकारी सेनाने नगरसे नातिदूर पुगाचेफकी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर दिया। तो भी वह अपने कुछ आदमियोंके साथ वोल्गा पार करनेमें सफल हुआ, लेकिन इसके बाद लोगोंका उसकी सफलतापर विश्वास नही रह गया। अन्तमे कसाक ज्येष्ठकोंने उसे पकड़कर सरकारके हाथमें दे दिया। हाथ-पैर बाधकर एक लकड़ीके पिंजड़ेमें पुगाचेफको मास्को ले जा जनवरी १७७५ ई० में फासी दे दी गई। पुगाचेफने भारी जोश और बडी-बडी आशायें रूसकी गरीब जनतामे पैदा कर दी थी, लेकिन उस समय वह बिखरे और अशिक्षित किसानोको ही विद्रोहियोंकी सेनामे शामिल कर सकता था। अभी कारखानेके मजदूरोंकी पल्टन तैयार नही हुई थी, जो अपने सुदृढ संगठनोसे किसान-क्रान्तिको सफल बनाती।

जैसा कि पहले कहा गया, एकातेरिनाके शासनकालमे अमीरों और जमीदारोंका बल और भी अधिक बढ़ गया। १७७५ ई० मे किसान-विद्रोहको दबानेके बाद एकातेरिनाने राज्यके प्रबन्धमें कितने ही नये सुधार किये। सारा राज्य पचास गुबर्नियों (प्रदेशों) में बांट दिया गया—प्रत्येक गुबर्नियामे प्राय. तीन लाखकी आबादी थी। हरेक गुबर्निया फिर कितने ही उयेज्दोंमें बाटी गई, जिसमें प्रायः तीस हजारकी आबादी थी। कभी-कभी दो-तीन गुबर्नियापर भी एक राज्यपाल नियुक्त होता, लेकिन अधिकतर प्रत्येक गुबर्नियाका एक राज्यपाल होता। इसके कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि राज्यपाल या उयेज्दके शासक राजुलों (सामन्तों) और बायरो (अमीरों) मे से ही होते थे। १७८५ ई० मे नगरके शासनके लिये भी नई व्यवस्था कायम की गई, और उसका कार्य-भार नगरपालिकाके ऊपर दिया गया, जिसके सबसे बडे अधिकारी "गरोद्निची" को सरकार नियुक्त करती थी।

वैदेशिक नीति—एकातेरिनाका शासनकाल रूसके भारी प्रसारका काल था। १८वी शताब्दीकी अन्तिम चार दशाब्दिया रूसकी सीमाको अधिक बढ़ाने और मजबूत करनेके लिये विशेष महत्त्व रखती है। एकातेरिनाके शासनकालमें ही तुर्की और स्वीडनके साथ दो-दो जबरदस्त युद्ध हुये। प्रथम तुर्की युद्धके समय १७३४ ई०में क्रिमियाके ऊपर रूसका संरक्षण स्थापित हो गया था। कालासागरपर निराबाध अधिकार करनेके लिये क्रिमियाका रूसके हाथमे जाना आवश्यक था। क्रिमियाके खानोंमें आपसमे उत्तराधिकारके लिये झगड़े होते ही रहते थे। रूसने उससे फायदा उठाया, सेना भेज शगिन-गिराईको पहले खान घोषित किया, फिर १७८३ ई० में शगिनको अधिकारच्युत करके तोरिदाके नाम से क्रिमियाको एक गुबर्निया बना दिया। अब कालासागरके तटकी काली मिट्टीवाली उर्बर भूमि (नवोरोसिया) रूसियोके हाथमें थी, जिसके अच्छे-अच्छे इलाकोको अपने हाथमें करनेके लिये रूसी सामन्त गिद्धकी तरह टूट पड़े। क्रिमिया प्रायद्वीपके भीतर भी उन्होंने वैसा ही किया, और निवासी तारतार पहाड़ोंकी ओर सिमटनेके लिये मजबूर हुये। जेनरल पोतेमकिन एकातेरिनाके कृपापात्रको क्रिमियाका महाराज्यपाल नियुक्त किया गया, जिसने अपना घर भरनेमें कोई कसर उठा

नही रंक्खी। सेनाके लिये भर्ती किये गये रंगरूटोको उसने अपने गांवोंमें बसा दिया। नवोरोसिया और क्रिमियामें नये नगर और दुर्ग स्थापित किये गये। निम्न द्नियेपरके तटपर एकातेरिनोस्लाव्ल (आधुनिक द्नियेपरोपेत्रोव्स्क) की स्थापना हुई, जो कि इस प्रदेशका शासनकेन्द्र बना। क्रिमियामे सेवस्तोपोलमे एक नौसैनिक अड्डा कायम किया गया, द्नियेपर नदीके मुहपर खेर्सोनका किला तैयार हुआ।

क्रिमियाके तातार धर्म और जातिसे तुर्कीके संबंधी थे, इसलिये क्रिमियामे रूस जो कुछ कर रहा था, उसे तुर्की चुपचाप बर्दाश्त नही कर सकता था। रूसियोंको यह मालूम था, इसीलिये आस्ट्रियाके साथ सहायताकी सधि करके एकातेरिनाने भी युद्धकी तैयारी की। फ्रास तुर्कीको भड़कानेके लिये मौजूद था, फिर १७८७ ई० मे द्वितीय तुर्की-युद्ध क्यों न घोषित होता? यह याद रखनेकी बात है कि १८वी शताब्दीके उत्तरार्धसे आज तक तुर्की किसी न किसी पश्चिमी शक्तिके हाथ मे खेलते रूसको आगे बढ़नेका मौका देता रहा। आज जो अमेरिकाके पीठ ठोंकनेपर तुर्की रूसके विरुद्ध ताल ठोक रहा है, उसका एक मुख्य कारण है आर्मेनिया और जार्जिया गणराज्योंके कुछ जिलोको प्रथम विश्व-युद्धके बाद हजारो आदमियोके निष्ठुर हत्याके अनन्तर तुर्कीका दबा बैठना। रूससे सबध जब खराब नही हुआ था, उस समय अमेरिका-इगलैड-फ्रांस आर्मेनियनोके खूनसे रगी उनकी भूमिको लौटा देनेके लिये तुर्कीपर जोर दे रहे थे, लेकिन अब वह उसका नाम भी जीभपर आने नही देते। यह निश्चय ही ह, कि तुर्कीके पेटसे इन जिलोंको उगलवाये बिना सोवियत राष्ट्र चैन नही लेगा।

तुर्कीने इस युद्धका आरम्भ द्नियेपरकी एक शाखापर बनें हुये किनबर्न रूसी किलेपर अधिकार करके किया, लेकिन वहाका सेनप सुवारोफ था। उसने तुर्कोको वहासे मार भगाया। अगले साल आस्ट्रियाने भी रूसकी ओरसे युद्ध घोषत किया। इस समय रूसी सेना तुर्की किले उशाकोफका मुहा-सिरा कर रही थी। रूसको काफी प्राणहानि उठानी पड़ी, लेकिन अन्तमे उन्होंने किलेको सर कर लिया। १७८९ ई०मे दो और लड़ाइयोंमे सुवारोफने तुर्कोंको हराया। आस्ट्रियाने ऐन मौके पर धोखा देकर तुर्कीसे सुलह कर ली, लेकिन रूसियोंने युद्ध जारी रखा। १७९० ई०मे उन्होने दन्यूब (दुनाइ) मुहानेपर तुर्कोंके बहुत ही मजबूत किले इस्माईलको घेर लिया। यहापर भी घनघोर युद्ध हुआ, और अन्तमे इस्माईलके किलेपर रूसियोंका अधिकार होगया। युद्धमें छब्बीस हजार तुर्क मारे गये। सुवारोफ जिस वक्त स्थलपर विजयपर विजय प्राप्त कर रहा था, उसी समय रूसी नौसेनापति अद्-मिरल फ्योदोर उशाकोफने भी तुर्कोंके जगी बेड़े पर कई विजय प्राप्त की। इस्माईलके मुहासिरेके समय समुद्रके रास्ते उसने स्थलसेनाकी बडी सहायता की। सामुद्रिक युद्धमें दो हजार तुर्क मारे या डूब गये, जब कि उशाकोफके केवल इक्कीस आदमी मरे और पच्चीस घायल हुये। इस प्रतिरोधके बाद रूसी सेना इस्माईलमे उतर गई, लेकिन अभी अन्तिम निर्णायक सामुद्रिक युद्ध नही हुआ था, जिसमे तुर्की बेड़ेके बुरी तरह हारनेके तथा इस्माईलपर सुवारोफके अधिकार हो जानेके बाद युद्धमे तुर्कीको हार माननी पड़ी। १७९१ ई० मे यास्सीमें तुर्कीने संधिपत्र लिख क्रिमियापर रूसके अधिकारको स्वीकारकर दक्षिणी बुग और द्नियेस्तरकी बीचकी भूमिको भी रूसके हाथमे दे दिया। इस युद्धके बाद कालासागरका सारा उत्तरी तट रूसका हो गया। लेकिन अब भी वर्तमान मोल्दावी सोवियत समाजवादी गणराज्य तुर्कीके हाथमें ही रहा।

दक्षिणके शत्रुको आगे बढते देखकर स्वीडन कैसे अवसरसे फायदा उठाये बिना रह सकता था? उसने भी १७८८ ई०मे रूसके ऊपर प्रहार किया, लेकिन उसमे उसे सफलता नही मिली, और १७९० ई०मे पुरानी सीमाके अनुसार ही दोनों देशोंमे सुलह हो गई।

चीनसे संबंध—रूस और चीनके बीच मनोमालिन्यका कारण रूस द्वारा एक मगोल भगोड़े राजाको शरण देना था। अमुरसना जुंगर-कलमक राजवंशका अन्तिम राजा भागकर साइबेरियामें चला गया था। चीनी सरकारने उसे समर्पित करनेके लिये रूसको लिखा, लेकिन रूसने वैसा नहीं किया। इसके थोड़े ही समय बाद अमुरसना मर गया। चीनने फिर भी अमुरसनाकी लाश और दूसरे जुगर राजुलोको देनेकी मांग की। न देनेपर नाराज होकर चीनने पेचिङ में रहनेवाले सभी रूसी पादरियोंको जामिनके रूपमें बंदीखानेमें डाल दिया। व्यापारिक संबंधमें गड़बड़ी पैदा होनेमे

एक कारण था तुरगुत मगोलोका १७ वीसदीमें रूसके भीतर वोलगाके किनारे चला जाना। कुछ समय तक तो वह शांतिपूर्वक रहे, लेकिन उन्होने देखा, कि रूस और तुर्कीके चक्कीके दो पाटोंके भीतर उन्हें पिस जाना है। उधर तुलिशिनके दूतमंडलने उन्हें लौटनेका भी बहुत प्रलोभन दिया। तुरगुत मंगोल घुमन्तू थे, लेकिन अपनी पुरानी मंगोल भूमिके साथ उनका बहुत स्नेह था। १७७१ ई०में रूसियों और तुर्कोंके बीचमें जो सघर्ष हुआ, उसमें तुरगुतोने रूसका पक्ष लिया। इसी समय तुर्कोंके साथ लडते उन्हें अपनी शक्तिका भान हुआ, और वह समझने लगे, कि तुर्कों (कजाकों) के बीचसे चीरते-फाडते हम अपनी जन्मभूमिको लौट सकते है। ५ जनवरी १७७२ ई० को एक दिन यकायक सात लाख तुरगुत परिवारोने पूर्वकी ओर प्रस्थान कर दिया। रूसियोने पहले समझानेकी कोशिश की, फिर कुछ सेनाका भी उपयोग किया, लेकिन उस समय वह दक्षिणी शत्रुओंके साथ भी फसे हुये थे, इसलिये पूरी शक्ति नही लगा सकते थे। कजाक-तुर्कोंने अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वियोंको आसानीसे बढ निकलनेका मौका नही दिया। तो भी तुरगुत अपने लाखों ऊंटों, घोडों, भेडों, तम्बुओं और दूसरे सामानके साथ बालबच्चों को लिये, पद-पदपर कजाकोंसे लड़ते आगेकी ओर ही बढते गये। आठ महीनेकी इतिहासकी इस अद्वितीय यात्राके बाद तुरगुत जब इली नदीके तटपर पहुचे, तो सात लाखकी जगह अब वह तीन लाख आदमी रह गये थे। इलीके तटपर चीनने उनका स्वागत किया, और उन्हें पशु, अन्न और पैसेसे मदद देकर पासमे ही अलताई (सुवर्ण) की पहाडी भूमिमे बसा दिया। रूसने कुछ थोड़े-से मंगोलो को शरण दी थी, अब चीनने लाखोंकी सख्यामे चीनी प्रजाको अपने यहां जगह देकर उसका बदला लिया। रूसने भी अब चीनियोंको प्रलोभन देकर अपनी सीमाके भीतर रखना शुरू किया। इसतर दोनों राज्योंके बीच शाति कैसे कायम रह सकती थी? चीन-सम्राट् काउ-चुङ (च्यानलुङ १७३५-९५ ई०) ने विरोध प्रदर्शित करते हुये लिखा था :

"परीक्षण करनेपर हमारे दोनों देशोंके समझौतोके भीतर पता लगा, कि अगर सीमांतपर किसी राज्यका चोर पकडा जाय, तो दोनों ओरके संयुक्त अधिकारियोंके सामने उसके बारेमें जाच-पड़ताल होनी चाहिये और अपराधी साबित होनेपर उसे मृत्युदंड देना चाहिये। इसी विधानके अनु-सार मेरे चौवालीसवे सवत्सरमे तुम्हारे यहांके ग्यारह घोडे चुरानेके कारण दो आदमियोंको मृत्युदंड दिया गया। हमारे महान् साम्राज्यने सधिपत्र और विधानका ईमानदारीसे पालन करनेके लिये ऐसा किया, मित्रता कायम रखनेके लिये ही नही, बल्कि सत्यके प्रेमके लिये भी, जिसका कि हम बहुत सम्मान करते हैं। लेकिन, तुमने चोरोको प्राणदड नही देकर मित्रता और संधिपत्रके विधान और शपथको भंग किया।...यद्यपि हमारे दोनों साम्राज्य एक दूसरेके सीमांतपर है, तो भी हमारा (चीन) साम्राज्य अपनेको बड़ा भाई कह सकता है, क्योकि वह साम्राज्योंमे बड़े भाईका स्थान रखता है। तुम्हारी प्रार्थना पर हमने दो चोरोको दडित किया, लेकिन तुम वही बात हमारे महासाम्राज्यको संतुष्ट करनेके लिये करनेसे इन्कार करते हो।...क्या तुम नही सोचते, कि आनेवाली संताने तुम पर हंसेगी?"

इन झगड़ोको मिटानेके लिये एकातेरिनाने क्रोपोतोफको दूत बनाकर चीन भेजा। बात-चीत होनेके बाद १७२७ ई० के सधिपत्रमे और धारा जोड़ी गई, जिसके बाद फिर व्यापारिक संबंध पहलेकी तरह स्थापित हो गया। यह उल्लेखनीय बात है, कि एकातेरिनाका मंगोलियाके मंगोलोंके साथका बर्ताव वहांके लामाओं और राजुलोंके लिये अधिक अनुकूल था, इसीलिये वहांके लोगोंमें मशहूर था, कि एकातेरिना श्वेततारा देवी (चगान-तारा-एखे) की अवतार है। एकातेरिनाके बाद जब रूसकी गद्दीपर जार बैठेने लगे, तो उन्हें भी मंगोल चगान खान (श्वेत राजा) कहने लगे।

शिक्षा और संस्कृति—केवल राजनीतिक दांव-पेचोंसे ही किसी भी राजशक्तिको एकताबद्ध और शक्तिशाली नही बनाया जा सकता, उसके लिये तो अधिक शक्तिशाली हथियारोंकी अवश्यकता होती है। अपने प्रतिद्वंद्वियोंके मुकाबलेमे अधिक शक्तिशाली हथियारोंको ढूढ़ते हुये आदमी बारूद-के हथियारों तक पहुचा, और उसमें भी एक दूसरेसे बाजी मार ले जानेके लिये उसने नये-नये आवि-ष्कार किये, जिसके लिये आदमीको साइंसकी ओर बढ़ना पड़ा। जिसके साथ ही अब साइंस तथा दूसरी विद्याओंकी प्रगति अनिवार्य हो गई। साइंसके प्रसारके लिये पीतर I ने रूसी विज्ञान अकदमी (रुस्की अकदमी नाउक) कायम करनेके बारेमें सोचा था, जो १७२५ ई० में ही उसके मरनेके

बाद स्थापित हुई। यह हम बतला चुके है, कि पीतरने पश्चिमी युरोपसे कितने ही विद्वानोंको निमंत्रित करके अपने यहां रक्खा था, जिनमे बरनूली और ल्योनहार्ड यूलर जैसे गणितज्ञ भी थे। रूसका पहला विज्ञानवेत्ता मिखाइल वासिली-पुत्र लोमोनोसोफ (१७११-६५ ई०) था। उसके रूपमें रूसकी प्रतिभा विद्याके बहुत-से क्षेत्रोंमे प्रकट हुई। लोमोनोसोफ उत्तरी समुद्रतटके आरखंगेल्स्क नगरसे नीतिदूर समुद्रतटके एक गांव देनिसोव्कामे एक खाते-पीते मछुवेके घरमे पैदा हुआ था। दस वर्षकी उमरमे वह अपने बापके साथ समुद्रमे मछली मारने जाया करता था, लेकिन लोमोनोसोफको जल्दी मालूम होने लगा, कि पढ़ना अच्छी चीज है। आरखगेल्स्कमे कितने ही महीनों तक बहुत लम्बी रातें होती हैं। इन रातोमे वह अक्सर अक्षर, व्याकरण और गणित पढ़ता था, क्योकि इस समय मछुवाही करनेके लिये जाना नही पड़ता था। पास हीके कस्बे खोल्मोगोरीमें एक स्कूल था, लेकिन मछुवेका लड़का होनेके कारण उसे उसमें भर्ती करने से इन्कार कर दिया गया। लोमोनोसोफ विद्याके लिये इतना व्यग्र था, कि एक मछली ले जानेवाली नावपर उसने मास्कोकी ओर प्रयाण कर दिया। अपने किसान या मछुवेके लड़के होनेको छिपाकर ही वह मास्कोकी स्लावानिक ग्रीक-लातिन-अकदमीमे प्रविष्ट हो सका। पांच वर्ष तक बड़ी कठिनाइयोंके साथ उसने वहां अध्ययन किया। बीस साल के तगड़े जवान विद्यार्थीसे उसके सहपाठी बायरों और धनी व्यापारियोंके लड़के परिहास करते रहते थे। पढाई समाप्त करनेके बाद लोमोनोसोफको एक अवसर हाथ आया। सरकारकी ओरसे तीन विद्यार्थी उच्च-शिक्षाके लिये युरोप भेजे जानेवाले थे। लोमोनोसोफ असाधारण मेधावी विद्यार्थी था, और बायरोंके लड़कोंमे से तीन मिल नही रहे थे, इसलिये उसे भी युरोप भेज दिया गया। उसने रसायन, धातुशास्त्र, खनिजशास्त्र और गणित अध्ययन करते हुये चार साल वहांके वैज्ञानिकों और विद्वानो के सम्पर्कमे बिताये। १७४५ ई० मे स्वदेश लौटनेपर उसे प्रोफेसर होनेके साथ रूसी विज्ञान अकदमीका पहला रूसी मेम्बर बननेका अवसर मिला। अब तकके बीस वर्षोंमे रूसी साइंस अकदमीके सदस्य विदेशी विशेषकर जर्मन विद्वान् ही होते थे, जिनमेसे कुछका ज्ञान बहुत ही उथला था। साइंस के क्षेत्रमे लोमोनोसोफने कई नये आविष्कार किये, लेकिन अभी कोई गुणग्राहक नही था। लोमोनोसोफ के कितने ही आविष्कारो और वैज्ञानिक सिद्धान्तोंकी पुष्टि १९वी सदीमे जाकर हुई। लोमोनोसोफने ही तापके यांत्रिक सिद्धान्तको पहलेपहल बतलाया था। रसायनमें भी उसने जो नया सिद्धान्त निकाला था, उसका चालीस वर्ष बाद फ्रेंच रसायनवेत्ता लावाजियेने फिरसे पता लगाया, और आज वह सिद्धान्त उसीके नामसे विख्यात है। भूतत्त्वशास्त्रमें भी लोमोनोसोफने धातुओं और धुनोंकी उत्पत्ति का अध्ययन किया, जिससे भूतात्त्विक खोजोंमें बड़ी मदद मिली। वह पहला आदमी था, जिसने बतलाया, कि पत्थरका कोयला पथराये वृक्षों और वनस्पतियोंका अवशेष है। युरोपमे वह पहला आदमी था, जिसने भौतिक रसायनकी व्याख्या करते हुये कई व्याख्यान दिये। ज्योतिषशास्त्र और नाविकशास्त्रके अध्ययनमें भी उसने बहुत समय लगाया। यंगसे साठ साल पहले उसने पृथ्वीतलके कम्पनकी बातका पता लगाया। हर्शलसे तीस साल पहले उसने बतलाया, कि बुधके चारों तरफ वातावरण है। नान्सेनसे एक सौ पैंतीस वर्ष पहले उसने ध्रुवीय महासागरके बहनेकी दिशाकी सूचना दी। इस प्रकार हम देख सकते है, कि जिन बातोंको हम पश्चिमी युरोप के वैज्ञानिकोंकी मौलिक खोज मानते हैं, वह गलत है। युरोपियनोंने भी विज्ञान की प्रगतिमें बहुत भाग लिया है, लेकिन यह केवल झूठा प्रचार है, कि युरोपीय दिमाग ही सभी बातोंमे मौलिक होनेका ठेका लिये हुये है। रूसी दिमाग बहुत सी बातोंमें उनसे आगे-आगे रहा। और तो और, परमाणु-विदरण का प्रायोगिक सिद्धान्त भी दो रूसी वैज्ञानिकोंने पहलेपहल करके उन्हें छपवा भी दिया था, जिसके सहारे जर्मन और अमेरिकन विज्ञानवेत्ता आगे बढ़े। अपने साम्राज्यविस्तारके लिये जैसे युरोप हथियारोंको चमकाने और लोगोंमें फूट डालने की नीतिको इस्तेमाल करता रहा, वैसे ही अपनी दिमागी श्रेष्ठताका ढिंढोरा पीटकर भी उसने अपनी धाक जमानी चाही।

लोमोनोसोफ प्रयोगका बड़ा भारी पक्षपाती था। उसने तीन हजार प्रयोग करके रंगीन कांच बनानेकी पद्धतिका आविष्कार किया। लोमोनोसोफने ध्रुवीय सागरसे होकर पूर्वी एसियाको अभि-यान भेजनेके लिये नक्शा तैयार किया था। वह केवल शुष्क विज्ञानवेत्ता ही न था, बल्कि कवि और

साहित्यकार भी था। रूसी साहित्यको उसने धार्मिक भाषासे हटाकर जनभाषाकी ओर ले जानेकी कोशिश की। उसने वैज्ञानिक ढंगपर एक अच्छा रूसी व्याकरण लिखा, जो कई पीढ़ियों तक पढ़ाया जाता था। उसकी प्रतिभाके बारेमे रूसके कालिदास अलेक्सान्द्र पुश्किनने लिखा था :

"अपने असाधारण बुद्धि-बलके साथ असाधारण इच्छाबल रखते हुये लोमोनोसोफने विद्याकी सभी शाखाओका अवगाहन किया। उसमें ज्ञानकी असाधारण पिपासा थी। वह इतिहासकार, साहित्यकार, यंत्रशास्त्री, रसायनशास्त्री, धातुशास्त्री, चित्रकार और कवि था।"

लोमोनोसोफके अन्तिम वर्ष एकातेरिनाके शासनकालमे बीते। उसके कार्योंके रूपमें रूसी साहित्य, विज्ञानकी भव्य इमारतकी दृढ़ नींव पडी।

१८वी सदीमे शिक्षाकी ओर शहरोके मध्यवर्गके लोगोंका ध्यान गया था। दूसरी शिक्षण-संस्थाओमे जगह न मिलनेके कारण अध्यापकोने अपने घरोमे छात्रावास-सहित स्कूल खोल रक्खे थे। बायर और धनी लोग अपने लड़कोके पढानेके लिये विदेशी शिक्षक रखते थे। फ्रेंचकी महिमा बढती चली गई थी, और १८वी सदीके मध्य तक अमीरोंके घरोंमे रूसी नही फ्रेंच भाषा बोली जाती थी। हमारे आजके कितने ही हिन्दो-आंग्लियन परिवारोकी तरह रूसी अमीर अपने भावोको अपनी भाषामे मुश्किलसे प्रकट कर सकते थे। वह फ्रेंच बोलनेमें फ्रेंच लोगोंका भी कान काटना चाहते थे। उनके यहां फ्रेंच अध्यापकोकी बड़ी माग थी, और फ्रांसका कोई भी ऐरा-गैरा-नत्थूखैरा आकर रूसमे अमीरों के घरोमें अध्यापक बन जाता था। पुश्किनने अपने लघु उपन्यास "कप्तान कन्या" में इसका बड़ा परिहास किया है। लेकिन, इसका एक अच्छा पहलू भी था। प्रौढ फ्रेंच साहित्यसे रूसी साहित्यको आरम्भमे बड़ी प्रेरणा मिली। उन्हे पढकर रूसी लेखक मोलियेर, वोल्तेरकी नकल करना चाहते थे। पश्चिमी युरोपके साहित्यकी मांग होनेसे उनके बहुतसे ग्रथोंके रूसीमे धडाधड अनुवाद होने लगे। लोमोनोसोफ-समकालीन सुमारोकोफ (१७१८-७७ ई०) रूसी भाषाका पहला ख्यातनामा लेखक है। उसने बहुत-से ग्रंथ फ्रेंच शैलीपर लिखे, जिनमे उसके ऐतिहासिक दु:खात नाटक, प्रेम-गीत और प्रहसन अधिक जनप्रिय हुये। अपने समयके मास्कोके बारेमें उसने लिखा था : "यहांकी सभी सड़कें अज्ञानकी ईटोंसे सात फुट ऊची चिनी गई है, जिनको तोड़नेके लिये एक सौ मोलियरोकी अवश्यकता है।"

रूसी लेखकोंके मैदानमे आते ही फ्रेंच साहित्यका प्रभाव घटने लगा, यह सुमारोकोफके समयमें ही देखा जाने लगा। सुमारोकोफपर फ्रेंच क्लासिक और ग्रीक साहित्यका बड़ा प्रभाव था। वह रूसी साहित्यको भी उसी रंगमे रंगना चाहता था. लेकिन उसके तरुण समसामयिक देनिस फोन-विजिन (१७४५-९२ ई०) ने साहित्यको रूसकी भूमि और रूसके जीवनमें लानेका प्रयत्न किया। १८वी सदीका अन्त होते-होते रूसको गबरील रोमन-पुत्र देर्झाविन (१७४३-१८१६ ई०) के रूपमें एक उच्च कोटिका कवि पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने रूसी वातावरण और रूसी जीवनको अपनाकर अपनी कविताको जनताके समीप ला दिया। इसके बाद रूसी साहित्य युरोपका भिखारी नही रह गया। उसने अपने लेखक और साहित्यकार इतने उच्चकोटिके पैदा किये, जिनका लोहा सभी जगह माना जाने लगा। निकोलाई मिखाइल-पुत्र करमजिन (१७६५-१८२६ ई०) ने अपनी विदेश-यात्राओं द्वारा पश्चिमी युरोपके जीवन और संस्कृतिका चित्र खीचकर रूसी पाठकोंके सामने रखा। करमजिनकी "बेचारी लीजा" कथा एक समय बहुत प्रचलित थी, लेकिन करमजिनने पीछे अपना सारा समय रूसी इतिहास लिखनेमें दे दिया।

एकातेरिनाके शासनकालमे नाट्यकला और संगीतकी भी प्रगति हुई। १७५६ ई० में रानी एलिजाबेतके शासनकालमें "दुःखान्त-सुखांत अभिनयका रूसी तियात्र" के नामसे पीतरबुर्गमें पहली स्थायी नाट्यशालाका उद्घाटन हुआ। सुमारोकोफ उसका पहला संचालक नियुक्त हुआ, और वोल्कोफ तथा उसके साथी पहले अभिनेता। वोल्कोफ १७६२ ई०में मर गया, जब कि रूसी नाट्यकलाकी प्रगतिका द्वार खुल चुका था। राजधानीके अभिनयोको देखकर दीहातके अमीरोनें भी अपने यहां निजी रंग-शालायें खोली। हमारे यहां आज भी सूर, तुलसीके धार्मिक गीतोंका ही संगीतमें प्राधान्य चला जा रहा है, लेकिन रूसमे १८वी सदीमें ही धर्मनिरपेक्ष संगीतका खूब प्रचार होने लगा था। एकातेरिनाके शासन-काल हीमें ओपेरा (पद्यनाटक) का भी प्रचार हो चला।

इसी कालमे चित्रकला और वास्तुकलाने भी रूसमे प्रगति की, जिसमे पश्चिमी कलाकारोकी सहायता लाभदायक सिद्ध हुई। रूसी वास्तुशास्त्री बाजेनोफने कई अच्छी-अच्छी इमारते बनाई। उसकी प्रतिभाकी ख्याति देशकी सीमासे बाहर पहुच गई और फ्रासके राजाने बहुत अधिक वेतन देकर उसे बुलाना चाहा, लेकिन बाजेनोफने अपनी प्रतिभाको अपनी जन्मभूमिकी सेवामे ही लगाना चाहा। उसकी बनाई हुई इमारतोंमे प्स्कोफ-प्रासाद (आधुनिक लेनिन पुस्तकालय) मास्कोमे अब भी मौजूद है।

यांत्रिक आविष्कारोमे भी लोमोनोसोफके दिखलाये रास्तेको रूसियोंने आगे बढाया। इवान इवान-पुत्र पोल्जुनोफ (१७२६-६६ ई०) उरालकी किसी छावनीके एक सिपाहीका लड़का था, जिसने "अग्नि-चालित इजन" का पहलेपहल आविष्कार किया। उस समय तक पानीकी शक्तिको इस्तेमाल करनेवाले कारखाने जहा-तहां बन चुके थे, लेकिन ऐसे कारखाने उन्ही जगहोपर बन सकते थे, जहां बहते पानीकी तेज धारा हो। पोल्जुनोफने वाष्प-चालित यन्त्रोके कारखानोंको किसी भी स्थानपर स्थापित करनेके ख्यालसे अपने अग्नि-चालित इंजनका आविष्कार किया, लेकिन उसे बर्नोल (अल्ताई पर्वत) मे अपने वाष्प-इजनको चलाकर अपना जीवन खतम कर देना पडा। जेम्स वाटको आज वाष्प-इजनका आविष्कारक कहा जाता है। उससे इक्कीस वर्ष पहले पोलजुनोफने दुनियाका प्रथम वाष्प-इजन तैयार किया था। आविष्कारकी प्रतिभा रूसमे मौजूद थी, लेकिन सामन्तशाही रूस ऐसी प्रतिभाओको प्रोत्साहन देनेके लिये तैयार नही था। १८वी सदीके दूसरे रूसी आविष्कारक इवान पीतर-पुत्र कुलिबिन (१७३५-१८१८ ई०) की भी उसी तरह उपेक्षा हुई, जैसी पोल्जुनोफकी। कुलिबिनने अपने बचपनमे ही एक मित्रके घरमे दीवार-घड़ी देखी, और कुछ ही दिनो बाद उसने लकडी की उसी तरहकी घडी बना दी। बापके मरनेपर वह दूकानके कामके साथ-साथ समय बचाकर घड़िया बनाने लगा। उसने और उसके साथियोने पाच वर्ष लगाकर अडेके बराबरकी एक घड़ी बनाई, जिसका उस समय बहुत फैशन चल पड़ा था। कुलिबिनने अपनी घडी एकातेरिनाको भेट की। एकातेरिनाने उसे साइस अकदमीका यांत्रिक नियुक्त किया। कुलविनने नेवा नदीके लिये एक मेहराब-वाले लकड़ीके पुलका नक्शा तैयार किया, लेकिन उसके नमूनेको आखसे देखनेके बाद भी किसीने काममे लानेका ख्याल नही किया। कुलिबिन अन्तमे बडी गरीबीका जीवन बिताते हुये अपने नगर निजनी- नोवगोरद (आधुनिक गोर्की) मे मरा।

रूस प्रतिगामिताका गढ़—एकातेरिनाके समय रूस जिस तरहका रूप ले रहा था, उसके बारे-में हम बतला चुके। रूसमे फ्रेंच साहित्य और विचारोका बड़ा मान था, लेकिन इसी समय १७८९ ई० मे फ्रेंच क्राति हुई, जिसने बतला दिया कि सामन्तशाहीकी नीव बडी निर्बल है। फ्रेंच क्रातिको देखकर युरोपके सभी मुकुटधारी कांपने लगे थे। इसी समय रूसने एकातेरिनाके मुंहसे कहल-वाया—"फ्रेंच राजाका काम सभी राजाओका काम है।" उसने दृढ़तापूर्वक घोषित किया, कि मै कही भी चमारों (मजूरो) को राज्य-शासन करने नही दूगी। इसे सयोगकी ही बात कहिये, कि एकातेरिनाके स्थानपर रूसका सबसे शक्तिशाली शासक योसफ स्तालिन एक चमारका ही लड़का था। सोलहवे लुईको जब फ्रांसमे मृत्युदंड दिया गया, तो सबसे पहले एकातेरिनाने फ्रेंच गणराज्यसे संबंध विच्छेद कर लिया, फ्रासमे रहनेवाले सभी रूसियोको बुला लिया, और क्रातिसे सहानुभूति रखनेवाले फ्रांसीसियोको रूससे निर्वासित कर दिया। एकातेरिनाको "फ्रेंच महामारी" का सबसे अधिक डर था, लेकिन उसके ही शासनकालमे फ्रेंच क्रान्तिकी विचारधाराके पिताओ—वोल्तेर, दिदरो, रूसोकी पुस्तके प्रायः सभी रूसी अमीरोके घरोमे पाई जाती थी, वह उन्हे मूल फ्रेंचमे पढते थे। इन पुस्तकोका प्रभाव रूसियोकी विचारधारापर भी पड़ रहा था, और वह भी समता, भ्रातृभावके पक्षपाती होते जा रहे थे। ऐसे प्रगतिशील तरुणोमे अलेक्सान्द्र रादिश्चेफ पहला आदमी था। वह एक अमीर घराने मे १७४९ ई० में पैदा हुआ था। उसने जर्मनीके लाइप्जिक विश्वविद्यालयमें अध्ययन किया था। समानता और स्वतन्त्रताके विचारोसे भरे हुये रूसोके ग्रथोंने उसपर बहुत प्रभाव डाला, और वह स्वेच्छाचारी शासनको बहुत घृणाकी दृष्टिसे देखने लगा। १७९० ई० मे उसने अपनी प्रथम पुस्तक "पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा" प्रकाशित की। पुस्तककी छ सौ पचास ही प्रतियां निजी तौरसे

छापी गई थी। एकातेरिनाने इस पुस्तकको देखकर कहा—"यह तो पुगाचेफसे भी भारी बदमाश है। इसके लिये दस फांसीकी टिकटियां भी पर्याप्त नही होगी"। उसने रादिश्चेफको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। रादिश्चेफने अपनी पुस्तककी भूमिकामे लिखा था :

"जब मैंने अपने चारो ओर देखा, तो मानवताकी पीड़ासे मेरा हृदय फटने लगा।" जमीदारों के अत्याचारोके बारेमे उसने लिखा था—"यह क्रूर पशु, कभी न अघानेवाली जोकें, किसानोंके लिये वही छोड़ती हैं, जिसे वह लेना नही चाहती।..जमीदार किसानोंके लिये विधान-निर्माता, न्यायाधीश है, जिसके कारण कोई अपने बचावके लिये एक शब्द भी नही कह सकता।" रादिश्चेफ समझता था, कि इन पशु-जोक-जमीदारोका सीधा सबध जारके सिहासनसे है, इसलिये अपनी यात्रामे उसने "स्वतन्त्रता" के नामसे जिस गीतको दिया था, उसमे "लोहेके सिंहासन" को नष्ट करनेके लिये जनता के भयकर बदलेकी बात लिखी थी। सामन्तघरमे पैदा हुआ रादिश्चेफ रूसका पहला क्रांतिकारी, प्रजातंत्र-पक्षपाती तथा प्रगतिशील विचारक था। अदालतने. उसे मृत्युदड दिया, जिसे पीछे दस वर्ष साइबेरिया-निर्वासनके रूपमे परिणत कर दिया गया। एकातेरिनाने रादिश्चेफकी पुस्तककी होली जलवाई। एकातेरिनाके मरनेके बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र पावल I ने जब सार्वजनिक क्षमादान दिया, तो रादिश्चेफको भी साइबेरियासे लौटनेका मौका मिला, लेकिन उसका राजधानीमें आना निषिद्ध था, और अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५ ई०) के समयमें ही उसके ऊपरसे यह निर्बंध हटाया गया। उसने स्वतन्त्रता और समानताके आधारपर राज्यशासनमे सुधार करनेकी योजना बनाई। सत्ताधारी उसे फिर साइबेरियामे निर्वासित करनेकी सोच रहे थे, इसपर रादिश्चेफने विष खाकर १८०२ ई० मे अपने जीवनका अन्त कर लिया। एकातेरिनाके समयके स्वतन्त्र विचारकोंमें निकोलाइ नोविकोफ भी था, जिसने नये विचारोके प्रचारके लिये पुस्तककी दूकान खोली थी। उसने एक प्रहसन और व्यगभरी पत्रिका "त्रूतेन" तथा और भी पत्र निकाले। अपने व्यगोमे वह शासकोकी अच्छी खबर लेता था, और किसानो और अर्ध-दासोंकी पीड़ाको बडे सजीव रूपमे रखता था। उसकी पुस्तक "एक स्वामीका अपने गावके किसानोके साथ पत्र-व्यवहार" मे बड़े ही मार्मिक रूपमे किसानोंकी विपदाका चित्रण किया गया था।

१३. पावल I, पीतर III-पुत्र (१७९६-१८०१ ई०)

पावलके शासनके रूपमे अब हम रूसके उस समयमे आ जाते हैं, जब कि भारतमें रही-सही सामन्तोंकी स्वतन्त्रता भी अग्रेज बनियोंकी ईस्ट इंडिया कंपनी छीन रही थी। एकातेरिना अपने पतिके मरवानेसे ही संतुष्ट नही थी, बल्कि उसकी महत्त्वाकांक्षाने अपने पुत्रके साथ भी सौहार्द स्थापित करने नही दिया। पावलको उसकी दादी एलिजाबेतने पाला था। वह समझता था, मेरी मांने मेरे उचित अधिकारको छीन रखा है। एकातेरिना भी इसे समझती थी, इसीलिये वह पावलको राजकाजमें हाथ डालनेका मौका नहीं देती थी। पावल मांकी ओरसे दी हुई अपनी जमीदारी गत्चिनामे अपना सारा समय सैनिक कार्योमें बिताता था। उसने गत्चिनाको फ्रेड्रिक II के सैनिक नियमोंके अनुसार एक युद्ध-शिविर बना दिया था, जहांपर सैनिकोको प्रुशियन सेनाकी वर्दी पहनाकर डंडोंके हाथों कवायद-परेड कराई जाती थी। सिहासनपर बैठते ही पावलने बापके कदमोपर चलते रूसी सेनाको प्रुशियन सेनाके रूपमें परिणत करना शुरू किया। उस समय राजधानी (पीतरबुर्ग) भी बहुत कुछ एक सैनिक शिविरकी तरह मालूम होती थी। राज्यके सभी विभागोमे उसने कठोर सैनिक अनुशासनके बरते जानेकी मांग की। फ्रेंच-क्रातिकी छाया अभी भी युरोपसे लुप्त नही हुई थी। उसके बारेमें वह अपनी मांसे बिल्कुल सहमत था। विदेशी आकर कही क्रांतिकी महामारी न फैला दें, इसलिये उनके आनेमे उसने निषेध और रुकावट डाल दी। वह रूसी अमीरोको भी युरोपके विश्वविद्यालयोंमें पढ़नेके लिये जानेकी इजाजत नही देता था। बाहरसे हर तरहकी पुस्तकोंका आना उसने बंद कर दिया। उसने जमींदारोके साथ पहलेसे भी अधिक पक्षपात किया—अपने चार वर्षके शासनमे उसने तीन लाखसे अधिक किसानोंको उनके मालिकोका अर्ध-दास बना दिया। इसका परिणाम किसानोंका विद्रोह छोड़ और क्या हो सकता था? ५२ गुबर्नियोंमेंसे बत्तीसमे किसानोके विद्रोह हुये, जिन्हें दबानेके

लिये पावलने अपनी सेनाका बड़ी क्रूरतापूर्वक उपयोग किया। उस समय अर्ध-दासोंके विक्रयके विज्ञापन सरकारी समाचारपत्रमे बराबर निकला करते थे, जिसके कुछ उदाहरण है : "बिक्रीके लिये : दो परिवार अर्ध-दास, जिनमेसे एक कोड़े और जूते बनानेवाला तीस वर्षका विवाहित मर्द है, उसकी स्त्री धोबिन है, जो पशुओंको चरा सकती है। आयु पच्चीस वर्ष। दूसरा परिवार एक गायक-वादक सत्रह वर्षके मर्दका है ..दाम-कामके लिये लिखो, १७-१ अरबत, आप्त. १।"

जिस वक्त पावल गद्दीपर बैठा, उस वक्त १७९५ ई० वाली रूस-इगलैडकी मैत्री-सधिके अनुसार रूस भी फ्रासके विरुद्ध लड़ रहा था। पावलने गद्दी सभालते ही अपने देशको विश्राम देनेका निश्चय किया, और अग्रेज राजदूतको सूचित कर दिया, कि हमारी मांने सेना भेजनेके लिये कहा था, लेकिन उसे भेजा नही जा सकता। इंगलैडने पावलको प्रलोभन देकर लडाईमे रखना चाहा, और कार्सिका द्वीपपर अधिकार करनेके लिये कहा। मिस्र जाते वक्त नेपोलियनने माल्ता द्वीपपर अधिकार कर लिया था, जो कि भूमध्यसागरमे बड़े सैनिक महत्वका स्थान था। पावल भी अपनी मांकी तरह चाहता था, कि भूमध्यसागरमे पैर रखनेका कोई स्थान मिले। माल्ता-धार्मिक-संगठन माल्ताद्वीपका मालिक था, जिसका जारके दरबारके साथ विशेष संबध था। उसने पावलको सहायताके लिये बुलाया। उधर नेपोलियनने जब तुर्कीके अधीन देश मिस्रपर आख गड़ाई, तो तुर्कीने भी अपने पुराने शत्रु रूसके साथ फ्रांसके खिलाफ सैनिक संधि कर ली। अगस्त १७९८ ई० मे कालासागर के रूसी जगी बेड़ेके सेनापति अदमिरल उशाकोफको हुक्म हुआ, और वह सोलह जहाजो, सात सौ बानवे तोपो और आठ हजार नौसैनिकोके साथ तुर्की जंगी बेड़ेकी मददके लिये फ्रासीसियोके खिलाफ चल पड़ा। छ सप्ताहमे उशाकोफने यूनिया (यवन) द्वीपोमेसे चार छाटे-छोटे द्वीपोपर अधिकार कर कोरफू द्वीपको लेनेके लिये प्रयाण किया। उस समय वहां छ सौ पचास तोपोके साथ तीन हजार फ्रेच सैनिक रहते थे। मुकाबिला बहुत सख्त हुआ, लेकिन १८ फर्वरी १७९९ ई० को कोरफूकी फ्रेच सेनाने आत्म-समर्पण कर दिया। कोरफूके जीतनेके बाद रूसी सेना दक्षिणी इतालीके तटपर उतरी। इतालियन जनता नेपोलियनके विदेशी शासनसे घृणा करती थी। रूसियोंने उसकी सहायतासे नेपल्स और रोमपर अधिकार कर लिया। रूसी सामुद्रिक युद्धविद्याका मूलाचार्य उशाकोफ माना जाता है, और स्थलीय युद्धविद्याका सुवारोफ।

१७९९ ई० के आरम्भमे प्रजातत्री फ्रासके विरुद्ध रूस, इगलैड, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपल्स-राज्यकी एक गुट बनी। जनवरी १७९९ ई० में नेपोलियनकी सेनाको हराकर नेपल्सवालोने अपना गणराज्य घोषित किया। पावल नहीं चाहता था, कि नेपल्समे उसके मित्र राजाका इस प्रकार अन्त होकर उसकी जगह इतालीमे पेरिसका एक नया संस्करण स्थापित हो। पावलने नेपल्सके राजाकी मदद के लिये ग्यारह हजार सेना भेजकर हुक्म दिया, कि आस्ट्रियाकी मददके लिये पहिले भेजी गई बीस हजार सेनासे मिलकर आगे बढ़ो। आस्ट्रियन सरकारकी मागपर पावलने सुवारोफको सेनापति नियुक्त किया। सुवारोफ आज सोवियत रूसका भी सबसे अधिक सम्माननीय योद्धा है, जिसने उसके नामसे वीरताका एक उच्च तमगा प्रचलित किया। वह १७३० ई० मे एक सैनिक अफसरके घर मास्कोमे पैदा हुआ था। बचपनमे उसका स्वास्थ्य बहुत खराब और शरीर बड़ा दुर्बल था, इसलिये पिताने उसे लड़कपनमे सेनामे शामिल नही किया, लेकिन लड़केने बचपनेसे ही सैनिक बातोमे दिलचस्पी लेनी शुरू की और बापके पासकी सभी सैनिक पुस्तकोको बडे ध्यानसे पढ डाला। बारह वर्षकी उमरमें उसे रेजिमेंटमे नाम लिखानेका मौका मिला और सत्रह वर्षकी उमरमे कारपोरल (हवल्दार) के तौरपर उसने सैनिक जीवन आरम्भ किया। आगे तुर्की और पोलन्दके युद्धोमे उसने अपने युद्ध-कौशलका परिचय दिया, जिसके कारण उसे फील्ड-मार्शल बना दिया गया। वह गतानुगतिक नही, बल्कि "बेलीकपर चलने-वाला सिह था।" उसने युद्धविद्यामें कई नई बाते निकाली, जिनको आज भी लाल सेना बड़े आदरसे स्वीकार करती है। फ्रेड्रिक II भी एक नये सैनिक विज्ञान और सगठनका आविष्कारक माना जाता है, लेकिन उसका विचार था "सिपाही सिर्फ एक यंत्र है, जिसे नियमोके अनुसार चालित होना चाहिये।" पावल फ्रेड्रिकके ही सैनिक आदर्शको मानता था, लेकिन सुवारोफ इससे बिल्कुल उल्टा था। उसका कहना था "केशचूर्ण बारूदका चूर्ण नही है, झूठे ताले

तोपें नही हैं, लम्बी चोटी तलवारें नही हैं। मैं जर्मन नही, बल्कि जन्मजात रूसी हू।" भला पावल ऐसे आदमीको क्यो पसंद करता? १७९७ ई० में उसने फील्ड मार्शल सुवारोफको उसकी जमीदारीमें निर्वासित कर दिया। लेकिन जब अंग्रेज और आस्ट्रियन मित्रोंने जोर दिया, तो फिर उसने सुवारोफको बुलाकर १७९९ ई० मे फ्रासके साथ लडनेवाली मित्रोंकी सेनाओंका प्रधान सेनापति बना दिया। सुवारोफने साढे तीन महीनेके भीतर श्रेष्ठ फ्रेंच सेनापतियोंकी सेनाओंको बुरी तरह से हरा, सारे उत्तरी इतालीसे फ्रासीसियोको निकाल बाहर किया। आस्ट्रिया सारे इतालीको अपने हाथमें करनेकी घातमें था, इसलिये बहाना बनाकर सुवारोफको स्विट्जरलैण्ड भेज दिया गया। बडे भीषण पहाडी रास्तो और नदियोको पार करते हुये सुवारोफ स्विट्जरलैंडकी ओर गया। एक जगह उसकी बीस हजार सेना साठ हजार फ्रासीसी सैनिको द्वारा घेर ली गई। उस समय रूसियोके पास पर्याप्त रसद, गोला-बारूद और तोपें भी नही थी। इस स्थितिको देखकर उसने अपनी युद्ध-परिषद् मे कहा—"हमें क्या करना होगा? पीछे हटना अपमानकी बात है, मै कभी नही पीछे हटा। आगे श्वाइजकी ओर बढना, असम्भव, वहा मसेनाके पास साठ हजार सैनिक है, जब कि हमारे पास केवल बीस हजार है। साथ ही हमारे पास न रसद है, न गोला-बारूद और न तोपखाना।..हमे किसी तरहसे भी मदद मिलनेकी आशा नही है।. हमारे लिये बस एक ही आशा है,. .अपनी सेनाकी हिम्मत और आत्म-बलिदानकी भावना। हम रूसी है।" इसके बाद फ्रासीसियोके प्रहारको रोकते हुये सुवारोफकी सेनाने ४ अक्तूबर १७९९ ई० की रातको आल्पके हिमाच्छादित शिखरोंको पार करनेके लिये पानिखेर डाडेका रास्ता लिया। पहाड बहुत ऊचे और सीधे खडे थे। सिपाहियोको कितनी ही जगह हाथो और पैरोसे चिपक करके बर्फके ऊपर या सीधी खडी चट्टानोंपर सरकना पडा। एक खडी उतराईमें पकडनेके लिये न कोई पेड था, न चट्टान। सुबारोफके प्रोत्साहनके सामने रूसी सैनिकोंके लिये कोई भी बात असभव नही थी। वह अपनी बन्दूके पकड़े इस भीषण उतराईमे बर्फपर फिसल पडे। डाडा पार करनेके बाद अत मे सुबारोफकी सेनामें पद्रह हजार आदमी बच रहे। आस्ट्रियाने रूसके साथ वचनका पालन नही किया।

सुवारोफने इतालीमें जिस तरह चमत्कारपूर्ण विजय प्राप्त की, उससे इंगलैड, आस्ट्रिया और रूसके बीच मे ईर्ष्या और आशंका पैदा होने लगी। आस्ट्रियावाले गुप-चुप फ्राससे सधि करनेके लिये बातचीत चलाने लगे। इसपर पावलने आस्ट्रियाको लिखा:

"भविष्यमे तुम्हारी भलाईका ख्याल मैं छोड़ दूगा, और केवल अपने और अपने मित्रोंके हितको देखूंगा।" उसने गुस्सामे हो सुवारोफको रूस लौटनेके लिये लिखा: "तुम्हें राजाओकी रक्षा करनी थी, अब तुम्हें रूसके योद्धाओं और अपने राजाके सम्मानकी रक्षा करनी है।"

सुवारोफ बड़ी कठिनाइयोके साथ अपनी सेनाको रूस लौटा ले आया, और उसे रूसकी सारी सेनाका "गेनरलिस्सिमो" (महामहासेनापति) की उपाधि प्रदान की गई। लेकिन थोडे ही समय बाद फिर जारने सुवारोफको उपेक्षित कर दिया; राजधानीमें आनेपर लोग उसका राजसी स्वागत न करें इसके लिये उसका दरबारमें आना मना कर दिया। इसी तरह अपमानित और उपेक्षित रहते १८ मई १८०० ई० को यह महान् सेनापति मरा। लेकिन आजका रूस उसे जितना सम्मान प्रदान कर रहा है, उतनेकी सुवारोफने आशा भी न की होगी।

इसी बीच पावल और इगलैंडके भी संबध बुरे हो गये, जब कि इंगलैंडने माल्तापर अधिकार कर लिया। नेपोलियनने इस सुअवसरसे फायदा उठाते हुये पावलके साथ समझौता करना चाहा, और माल्ताको फिरसे अधिकार करनेपर उसे रूसको देने तथा बदलेमें अपने सैनिकोंको लौटानेकी माग किये बिना सारे हथियारोके साथ रूसी कैदियोको मुक्त कर देनेका वचन दिया। दिसम्बर १८०० ई० मे पावलके साथ नेपोलियनने निजी लिखा-पढ़ी शुरू की, जिसका जवाब पावलने भी इंगलैंडके विरुद्ध जहर उगलते हुये दिया: "इगलैंड अपनी ईर्ष्या, धोखेबाजी और धनसे ही फ्रांसका केवल प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि हीन शत्रु होगा।...धमकी, षड्यंत्र और पैसोंसे इंगलैंडने सभी राज्योंको फ्रांसके खिलाफ खड़ा कर दिया—उसके इस पापमे हम भी सम्मिलित हो गये।" अब फ्रांसकी भी स्थिति बदल गई थी। नेपोलियनने फ्रेंच-क्रांतिका गला दबाते ९ नवम्बर १७९९ ई० की प्रतिक्रांति द्वारा वहां

अपनी सैनिक तानाशाही स्थापित कर दी थी। रूस और फ्रासने चाहा, कि दोनो मिलकर भारतसे अग्रेजोके शासनको खतम कर दे। जनवरी १८०१ ई० मे पावलने दोन-कसाक सेनाको हुक्म दिया, कि वह ओरेनबुर्गसे बखारा और खीवा होते सीधे सिधु नदीकी ओर कूच करे। बिना तैयारी किये हुये इतने बडे अभियानका स्थलमार्गसे भेजना बुद्धिमत्ताकी बात नही थी, इसलिये पावलके मरते ही नये सम्राट् अलेक्सान्द्र I ने अभियानको रोक दिया। अपने अन्तिम जीवनमें पावलको काकेशस और ईरानके रास्ते भारत पहुचनेकी धुन सवार थी। १८ जनवरी १८२१ ई० को उसने गुरजी (जार्जिया) और रूसके स्वेच्छापूर्वक एकताबद्ध होनेकी घोषणा निकाली। अभी हिन्दुस्तानमें अग्रेजोकी जड अच्छी तरह नही जमी थी, इसलिये पावलकी गतिविधिसे अग्रेज बहुत चिंतित थे। पीतरबुर्गमे स्थित अग्रेज राजदूत भी उस षड्यंत्रमे शामिल था, जिसमे पावलको अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। ११ मार्च १८२१ ई० की रातको युवराज अलेकसान्द्रकी शहसे षड्यन्त्रियोने पावलके कक्षमे घुसकर उसे मार डाला।

—

साइबेरियाकी जातियां—यह हम बतला चुके है, कि कैसे येरमकने १६वी सदीमे सिबिर राजधानीको लेते वहाके खानको खतम किया, और राजधानीके नामपर देशको सिबेरिया (साइबेरिया) नाम देते रूसकी सीमाको इर्तिश और तोबोल नदियोके तट तक पहुचा दिया। १७वी सदीमे येनीसेइ नदीके तटसे लेकर अखोत्स्क समुद्र तक सारा पूर्वी सिबेरिया भी रूसके हाथमे चला गया। इस विशाल भूभागमें भिन्न-भिन्न सामाजिक और आर्थिक विकासकी स्थितिकी कई जातियां रहती थी। येनिसेइसे पूर्व अखोत्स्क समुद्र तक इवेकी (तुङ्-गुस) लोग रहते थे, जो कि पुराण-एसियाई जातिसे सबधित थे। उनके अपने बड़े-बडे कबीले थे, जिनके अक्सर आपसमे खूनी झगडे हुआ करते थे। जाडोमे ये लोग सिबेरियाके ताइगामे शिकार करते और गर्मियोमे मछलीके मौसिममे नदियोंके किनारे चले आते। गर्मियोमे उनके तम्बू भोजपत्रके छालसे ढके रहते, और जाडोमे वह चमड़ेके होते। बारहसिगा उनका पालतू पशु था, जिसपर वह अपने सामानको ढोया करते थे। अपने दक्षिणी पड़ोसियोसे उनको लोहा मिल जाता था। कोई-कोई कबीले हड्डियोके बने हुये कवचको भी इस्तेमाल करते। भडकीले रगवाले कपडे और चमकीले आभूषण उन्हे बहुत पसंद थे। वह अपने सारे चेहरे पर गोदना गुदवाते थे। इवेकी बड़े लडाकू लोग थे। उनके ऊपर अपने ओझो-सयानोका बड़ा प्रभाव था। ये ओझा-सयाने देवताओको अपने सिरपर बुलाते, विशेष पोशाक पहिनकर तम्बूरिन बजाते खास नाच नाचते थे।

आमूर नदीके मुहानेपर भी प्राचीन पुराण-एसियाई जातिसे संबध रखनेवाली नीवखी (गिलियक) लोग रहते थे, जिनकी मुख्य जीविका मछुवाही थी।

उत्तर-पूर्वी सिबेरियामे ओदूल (यूकागिर), निमिलन (कोर्याक), लूओराबेतलन (चुकची), इतेल्मेन (कम्स्चदाल) जातियां अब भी बर्बर अवस्थामे रहती थी। उन्हे लोहेका पता नही था। उसकी जगह वह चकमक-पत्थर तथा हड्डियोके हथियारोका इस्तेमाल करती थी। उनके छुरे पत्थरके होते थे, और वाणोके फल चकमकके। लोहेका परिचय उन्हे पहलेपहल रूसियोद्वारा मिला, इसीलिये अपनी जन-कथाओमे वह रूसियोंको "लौह-पुरुष" कहने लगे।

ऊपरी येनिसेइ उपत्यकामे प्राचीन कालसे येनिसेइ-किरगिज नामक एक तुर्की जाति रहती थी, जिन्हें चीनी लोग खकास कहते थे, और आज भी खकास ही कहा जाता है। किरगिज येनिसेइके मैदानोमे घुमन्तू-पशुपालोका जीवन बिताते थे। अल्ताईके पहाड़ोमें भी कितनी ही पहाड़ी जातियां बसती थी, जिनमेसे कुछ लोहधूनसे लोहा बनाकर कई तरहके लोहेके सामानको तैयार करती थी। अल्ताईके इन लोगोको ओइरोत-मंगोलोने अपने भीतर हजम कर लिया, जिससे इस इलाकेका नाम ओइरोतिया पड़ा—आज यह ओइरोत-स्वायत्त-जिलेके नामसे सोवियत सघका एक भाग है।

एवेकियोंकी भूमिके मध्यमे लेना-उपत्यकाके पिछले हिस्सेमे तुर्की जातिके याकूत रहते थे। उनकी परपरासे मालूम होता है, कि एवेकियोंके साथ भारी संघर्षके बाद बैकाल-पार इलाकेके दक्षिणसे आकर वह लेना नदीके तटपर रहने लगे। १७वी सदीमें याकूत अपने पड़ोसियोंकी अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनकी मुख्य जीविका पशुओ और घोड़ोंका पालन थी। वह लकड़ीके झोपड़ोमें रहते थे, जिनको आग

जलाकर गरम किया जाता था। धातुका काम भी वह पुराने ढंगसे जानते थे। उनके बनाये हुये लकड़ी की मुट्ठीवाले छुरे तथा कवच रूसी भी बहुत पसंद करते थे। १७वीं शताब्दीमे जन-व्यवस्था याकूतोमेसे उठने लगी, जब कि उनके सरदारोके पास पशुओके बडे-बड़े रेवड और धन एकत्रित होने लगा। उनके पास साधारण चाकर और दास भी रहते थे। येनिसेइकी शाखा अगारा नदी, बैकाल सरोवर, और ऊपरी लेनाकी भूमियोमे बुर्यत मगोल लोग रहते थे। यद्यपि इनकी मुख्य आजीविका पशु-पालन था, लेकिन वह थोड़ी-थोड़ी खेती और बदलेनके रूपमे कुछ व्यापार भी कर लेते थे। शिकार भी करते थे, लेकिन वह जीविकाका मुख्य साधन नही था। याकूतोंकी तरह बूर्यतोंके भी शासक उनके सरदार होते थे। आमूर नदीके किनारे दौर और दूसरी मचुरियावाली जातियां रहती थी। १७वी सदी मे दौर उच्च सभ्यताके धनी हो चुके थे। वह गावोंमे रहते, कई तरहके अनाजो और साग-भाजीकी खेती करते तथा फलदार बगीचे लगाते थे। पशुपालन तो वह करते ही थे, साथ ही उन्होने चीनसे मुर्गी पालना भी सीख लिया था। जगलमे समूरी जानवरोंका शिकार भी उनके लिये बहुत लाभकी चीज थी। कृषि और समूरी छालके कारण समृद्ध इस इलाकेकी ओर चीनी सामन्तोंका भी ध्यान गया था, और उन्होने वहां अपनी धाक जमा रक्खी थी। प्रतिवर्ष चीनी व्यापारी अपने मालको लाकर यहां मागे दामोमे बेच बदलेमे समूरी खाल और दूसरी चीजे सस्तेमे ले जाते थे। दौरोंमें धनी लोग अब चीनी रेशम पहनते, चीनी बर्तनोका इस्तेमाल करते तथा मकान बनाकर चीनियोकी तरह अपने गवाक्षोको कागजसे ढांकते थे। उनकी पोशाक भी चीनियो जैसी थी। दौरोंके पास कितने ही दुर्गबद्ध नगर थे। किस तरह रूसी कसाको और दूसरे साहस-यात्रियोने पूर्वी साइबेरियामे बढकर आमूरके मुहाने तकके सारे भूभागको जीता यह हम बतला चुके हैं।

येरमक (१५८१ ई०), खबारोफ (१६४९-५४ ई०) और पीछे मुरायेफ (१८४७—.....ई०) साइबेरियामें रूसके प्रसारके सबसे बड़े वाहक थे। येरमक और खबारोफके कामोके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, और यह भी, कि किस तरह चीनके साथ होते सीमांती झगड़ोके बारेमें दोनों राष्ट्रोने प्रयत्न करके समझौता किया।

पावल I १९वी सदीके पहले वर्षमे मरा। उस समयतक रूसके राज्यका विस्तार पूर्वी पोलैंडको लेते प्रशान्त महासागर और बेरिंगकी खाड़ीतक था। उत्तरमें वह ध्रुवीय महासागरसे लेकर दक्षिमें मध्य-एसियाके सीमांततक ही नही, बल्कि कही-कहीं उसके भीतर भी घुसा हुआ था। काकेशस मे गुरजी और उत्तरी आजुर्बाइजान उसके हाथमें थे। रूसी सेनाओंने रोम, आल्प्स और बर्लिन तककी विजय-यात्राये की थी। पावल हिन्दुस्तानसे अंग्रेजोंको भगाकर अपना शासन कायम करना चाहता था। इस प्रकार १८वीं सदीके अन्ततक रूस दुनियाका एक बहुत ही शक्तिशाली देश बन गया था, इसमें संदेह नहीं। अभी इंगलैंड उसके मुकाबिलेमे एक धनी बनियेसे अधिक हैसियत नही रखता था, लेकिन सारी १९वी सदीमे, जहा अंग्रेजोने नई वैज्ञानिक खोजोसे लाभ उठाकर अपने देशको उद्योग-प्रधान बनाते हुये पूंजीवादी शासनकी दृढ स्थापना की, वहा रूसी अभी सामन्तशाहीका मोह छोड़ने के लिये तैयार नही थे, जिसके कारण वह अंग्रेजोके सामने पिछड़ गये—इस पिछड़ेपनको बड़ी तेजीके साथ सोवियतके समाजवादी शासनने दूर किया।

३. (१. जार-वंशवृक्ष)
(१५९८—१८०१ ई०)
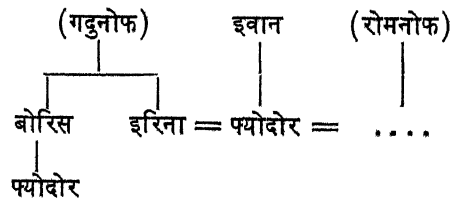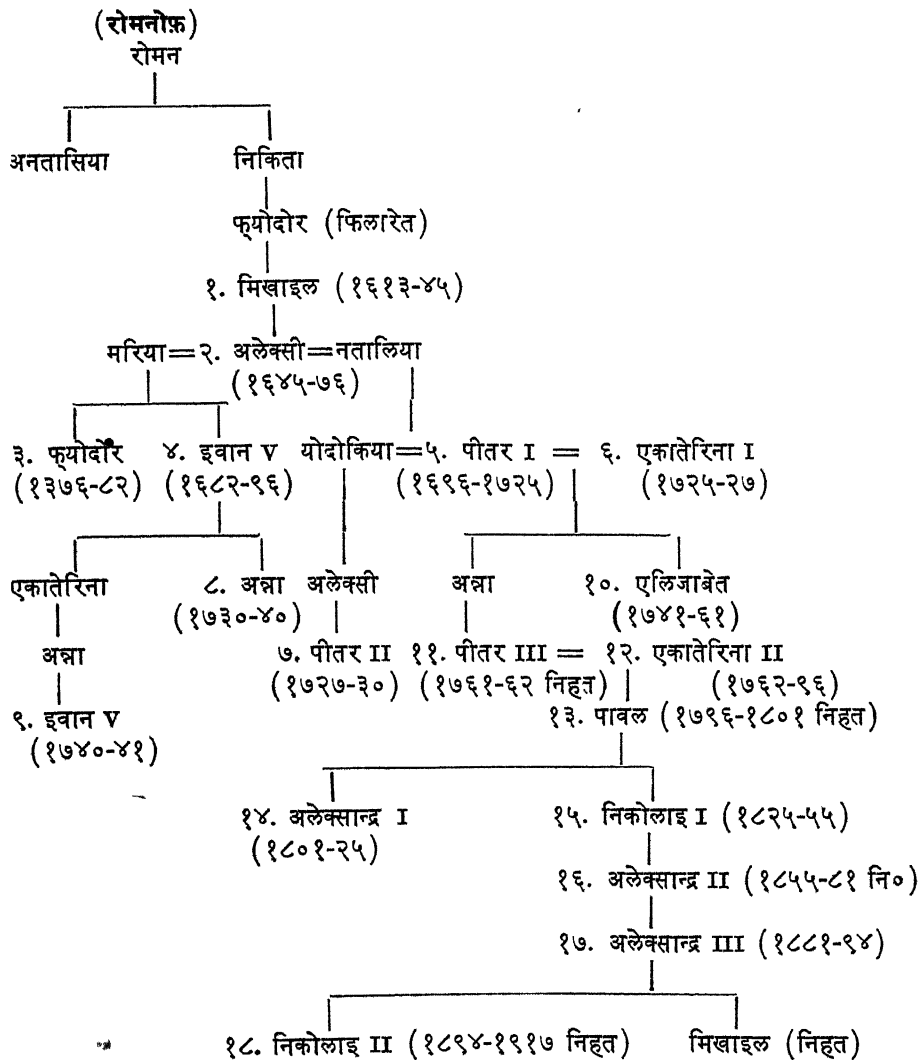
चीन-वंशावली : मिङ और छिङ—रूसके पूर्वकी ओर प्रसारके समय उसका मुकाबिला चीनकी शक्तिसे होने लगा था । मंगोल-वंश (१२०६-१३६८ ई०) के बादकी चीनी राजावली इस प्रकार है :—

मिङ-वंश १३६८-१६४४ ई०—राजधानी नानकिङ (१३६८-१४०२ ई०), पेकिङ (१४०३-१६४४ ई०)

रूसी जार

१. ताइ-चू (चू-युवान-चाङ)	१३६८—९८	ई०
२. हुइ-ती	१३९८—१४०२	"
३. चेङ-चू	१४०२—२४	"
४. जे-चुङ	१४२४—२५	"
५. स्वान्-चुङ	१४२५—३५	"
६. यिङ-चुङ	१४३५—४९	"
७. ताइ-चुङ	१४४९—५७	"
यिङ्-चुङ (पुनः)	१४५७—६४	"

८. सियान्-चुङ	१४६४–८७ "	
९. स्याव-चुङ	१४८७–१५०५ "	
१०. वू-चुङ	१५०५–२१ "	
११. मू-चुङ	१५६६–७२ "	
१२. शेन्-चुङ	१५७२–१६२० "	मिखाइल (१६१३–४५)
१३. कुवाङ-चुङ	१६२० "	
१४. सी-चुङ	१६२०–२७ "	
१५. सू-चुङ	१६२७ "	

छिङ (मं-चू)-वंश १५८३–१९११ ई०—राजधानी ल्यात्र-याङ (१६२१–४३ ई०), पेचिङ (१६४४–१९१२ ई०)

१. ताइ-चू नुर-हा-चू	१५८३–१६२७ "	मिखाइल (१६१३-४५)
२. ताई-चुङ (ह् वाङ-ताई-ची)	१६२७–४४ "	
३. शिः-चू	१६४४–६१ "	अलेक्सान्द्र I (१६४५–७६)
४. शेङ-चू (खाङ-सी)	१६६१–१७२३ "	फ्योदोर (१६७६–८२)
५. शीः-चुङ	१७२३–३५ "	पीतर I (१६९६–१७२५)
६. काउ-चुङ	१७३५–९५ "	एलिजाबेत (१७४१–६१)
		एकातेरिना II (१७६२–९६)
७. जेन्-चुङ	१७९५–१८२० "	पावल I (१७९६–१८०१)
		अलेक्सान्द्र I (१८०१–२५)
८. स्वान्-चुङ	१८२०–५० "	निकोलाइ I (१८२५–५५)
९. वेन-चुङ	१८५०–६१ "	अलेक्सान्द्र II (१८५५–८१)
१०. मू-चुङ	१८६१–७५	अलेक्सान्द्र III (१८८१–९४)
११. तेः-चुङ	१८७५–१९०८ "	निकोलाइ (१८९४–१९१७)
१२. पू-यी	१९०८–११ "	

स्रोत ग्रन्थ

1. History of U.S.S.R. (Ed. A.M. Pankratova, Moscow 1947)
२. ओचेर्क को इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिविरि १७वी-१८वी सदी (मास्को १९४६)
३. यज्ञीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (स. स. विलिन्स्की आदि, मास्को १९१४)
४. यज्ञीकोज़्नानिये
५. इस्तोरिया अेकातेरिनी व्तरोय (२ तोम्, विल्वस्सोफ्, बर्लिन १९००)
६. इस्तोरिया त्सार्त्वोवानिया पेत्रा वेलिकओ (५ जिल्द, ओस्त्रियालो ग्, पेतेरबुर्ग, १८१५-७१)
७. ओ देकब्रिस्ताख् पो सेमेइनीम् वोस्पोमिनानियाम् (स. वोल्खोन्स्की)
८. इस्तोरिया सससर (४ जिल्द, व. इरव्दोनिकस्)
९. क् वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुशि दो व्लादिमिरा (न. वोल्गोन्स्काया, १९१७)

अध्याय २

श्वेत-ओर्दू (२)

(१४२५-१७२८ ई०)

१. बुर्राक, बरका, कोइरियक-पुत्र (—१४२७ ई०)

श्वेत-ओर्दू (अक-युर्त) के बारेमें हम पहले कह चुके हैं। उसी ओर्दूके प्रतापी खान बुर्राकने अपने दक्षिणी पड़ोसियोंकी नाकमें दम कर रक्खा था। बोराक खानकी मृत्यु ८३१ हि० (२२ X १४२७–११ IX १४२८ ई०) में हुई। यही बुर्राक (बोर्राक) या बरका श्वेत-ओर्दूकी नई शाखाका संस्थापक था, जिसकी राजधानी सिर-दरियाके तटपर सिगनक थी। बुर्राक खानके दो बेटों गिराई और जानीबेगमेंसे गिराई बापके मरनेपर गद्दीपर बैठा। इस वंशमें निम्न खान हुये—

१. बुर्राक, बरका, कोइरियक-पुत्र	—१४२७ ई.
२. गिराई, बुर्राक-पुत्र	१४२७— "
३. बेरेंदक, गिराई-पुत्र	—१५०९ "
४. कासिम, जानीबेग-पुत्र	१५०९–१८ "
५. मीमाश, यादिक-पुत्र	१५१८— "
६. ताहिर, यादिक-पुत्र	
७. उजियाक अहमद, उज्बेक, जानीबेग-पुत्र	
८. अकनजर, कासिम-पुत्र	—१५८० "
९. शिगाई, यादिक-पुत्र	१५८०— "
१०. तवक्कल, शिगाई-पुत्र	—१५९८ "
११. इशिम, शिगाई-पुत्र	१५९८–१६३५ "
१२. जहांगीर, इशिम-पुत्र	१६३५–९८ "
१३. तौफीक, तिअबका, जहांगीर-पुत्र	१६९८–१७१८ "

२. गिराई, बुर्राक-पुत्र (१४२७–ई०)

१४९१ ई० में अबुल्खैर शैबानीका किपचक भूमिमें प्रताप छाया हुआ था, जिसके डरके मारे गिराई और जानीबेग दोनों भाई किपचक छोड़ भागकर इस्सिकुल-काश्गर (मुगोलिस्तान)के खान इस्सनबुगाके पास पहुंचे। मुगोलिस्तानी खानने दोनों भाइयोंको चू-उपत्यका और बशीकुजीमें चर-भूमि दी। जब तक १४६९ ई० में अबुल्खैर मर नहीं गया, तब तक दोनों भाइयोंको पश्चिमकी ओर नजर डालनेकी हिम्मत नहीं हुई। अब उनके पास दो लाख व्यक्ति हो गये थे—इनके ओर्दूका नाम उज्बेक-कजाक पड़ा था। दोनों भाइयोंने अपनी पितृभूमिके उद्धारका बीडा उठाया, लेकिन अबुल्खैरके पुत्र भी दबनेवाले नहीं थे, इसलिये जबर्दस्त संघर्ष शुरू हुआ। मुगोलिस्तानके खान महमूदने एक ओर बुर्राकके पुत्रोंकी सहायता की, तो दूसरी ओर अबुल्खैरके पौत्र मुहम्मद शैबानीको भी तुर्किस्तान शहर देकर सहारा दिया। गिराई और जानीबेग इससे रुष्ट हो गये—"शैबानी हमारा शत्रु है, फिर खान क्यों उससे मेल कर रहा है?" अन्तमें दोनों भाइयोंने मुगो-

लिस्तानी खान महमूदसे झगड़ा कर दो लड़ाइयोमे महमूदको बुरी तरह हराया, जिसका बदला महमूद के छोटे भाई अहमदने उज्बेक-कजाकोको तीन बार हराकर लिया—इसी समय इनका नाम उज्बेक-कजाक पड़ा, जिसमे कजाक शब्द साधारण डाकूके लिये नही, बल्कि साहसियोंके लिये मध्य-एसियामें

प्रयुक्त होता था—उज्बेक-कजाक (=श्वेत-ओर्दू) का अर्थ पहले "साहसी * उज्बेक खानके उलुस-वाले" लिया जाता होगा, पीछे कजाक विशेषण नही, बल्कि बुर्राकके पुत्रों गिराई और जानीबेगके अनुयायी श्वेत-ओर्दूका दूसरा नाम ही पड़ गया, जो आज भी प्रचलित है।

३. बेरेंदक खान, गिराई-पुत्र (—१५०९ ई०)

गिराई और जानीबेग कब मरे, इसका ठीक पता नही है। उनके बाद गिराईका पुत्र बेरेंदक उज्बेक-कजाकोंका खान हुआ। उज्बेक खानका पुराना उलुस अब शैबानी और कजाक दो प्रतिद्वंद्वी भागोंमें विभक्त था, जिनका द्वंद्व बेरेंदकके समयमें भी जारी रहा। आगे चलकर मुहम्मद शैबानी

*तुर्की भाषामें "कजाक" बहादुर (वीर) को कहते है।

के किपचक-तुर्क उज्बेक कहे जाने लगे, और बुर्राक-वंशके अनुयायी कजाक। बेरेंदक उस समय सिगनकमें था, जब कि उज्बेक मुहम्मद शैबानीके पास नोगाई खान मूसाका दूत आया था, और उसने दश्तकिपचकका खान बननेके लिये निमंत्रण दिया। मुहम्मद शैबानी वहां गया। मूसाने स्वागत भी किया, लेकिन अब उज्बेकोंका वास्तविक नेता बेरेंदक खान था, जिसे पसद नही था, कि मुहम्मद शैबानी किपचकका भी खान बने। बेरेंदक सेना लेकर आया, लेकिन शैबानीने उसे मार भगाया। पीछे मूसाने अपने वचनको भंग कर दिया और अमीरोंके राजी न होनेका बहाना करके मुहम्मद शैबानीको खान बनने नहीं दिया। १४९४ ई० में मुहम्मद शैबानी और उसके भाई महमूदने सारे तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका) पर अधिकार कर लिया। शैबानीके हटते ही बेरेंदक अपनी सेना लेकर सावरानपर चढ आया। अमीर मुहम्मद तरखनके कहनेपर नागरिकोने महमूद शैबानीको पकड़कर बेरेंदकके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्रके हाथमें दे दिया, जिसने उसे सूजक भेज दिया, लेकिन वह भागकर अपने भाई मुहम्मद शैबानीके पास ओतरार पहुचनेमें सफल हुआ। बेरेंदक सावरान शहरको नही ले सका था•। इसी समय बेरेंदकके कजाक मुगोलिस्तानके खानसे मिलकर ओतरारके विरुद्ध अपना सैनिक प्रदर्शन कर लौट आये। इसपर शाहीबेग कजाकोंके ऊपर चढ दौड़ा। उस समय उनका डेरा अलाताग (वेर्नोये) के पास अलाताउके पहाड़ोंमे था। आखिरमे दोनों पक्षोमे समझौता हो गया। बेरेंदकने अपनी लड़की मुहम्मद शैबानीके पुत्र मुहम्मद तेमूर सुल्तानको प्रदान की। लेकिन घुमन्तुओंका समझौता तोड़नेके लिये ही हुआ करता था। ९१२ हि० (२४ V १५०६–१४ IV १५०७ ई) मे कजाकोने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण कर दिया। शैबानीने उनका जवाब दिया। दो साल बाद १५०९ ई० मे फिर कजाकोंने प्रहार किया। इस समय बेरेंदक किपचकोंका नाममात्रका खान था, असली शक्ति उसके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्र कासिमके हाथमे थी। कजाकोंकी दो लाख सेना उसके पास थी। जाडोमे मुहम्मद शैबानी कुरुकमें ठहरा हुआ था। जाड़ोके अन्तमें यकायक कासिमके चढ़ आनेकी बात सुनकर उसने मुकाबिला करना चाहा, लेकिन बहुत हानि उठाकर उसे वहासे समरकन्द भागना पड़ा, जहांसे भी खुरासानमे हटना पडा। इसी समय कासिमने कजाक तख्त लेकर बेरेंदक खानको समरकन्द भगा दिया।

४. कासिम, जानीबेग-पुत्र (१५०९-१८ ई०)

अब खानकी गद्दी गिराईके वशसे निकलकर जानीबेगके खान्दानमे चली गई। किपचक-भूमि गिराई-जानीबेगके कजाकोके हाथमें थी। धीरे-धीरे दश्त-किपचककी जगह कजाकस्तानका प्रयोग होता जा रहा था। बेरेंदकके शासनकालमे कासिमने अपनी प्रभुता बढा ली थी, लेकिन वह खानके पास यह कहकर नही रहता था—"यदि मैं सम्मान नही दिखाऊंगा, तो खान नाराज होगा, और सम्मान दिखाना मेरी आत्माके विरुद्ध होगा।" उस समय बेरेंदक सिगनक और मुगोलिस्तानके सीमांतपर रहता था। खान हो जानेपर कासिम किपचकोका सबसे शक्तिशाली खान था। उसके पास दस लाख सेना थी। इतनी बड़ी सेना जू-छिके बाद किसी खानके पास नही रही। कासिमके नौ भाइयोमे सबसे अधिक प्रसिद्ध यादिक या उज्बेक सुल्तान था, जिसने मुगोलिस्तानके खान यूनसकी चौथी लड़की सुल्तान निगार खानम् (तेमूरी सुल्तान अबूसईदके लड़के महमूद मिर्जाकी विधवा)से शादी की थी। यादिकके मरनेपर वह कासिमकी भी बीबी बनी। नोगाई शेखमिर्जासे लड़ाई करते वक्त ९३० हि० (१० XI १५२३–२८ X १५२४ ई०) बेटेने कासिमको मार डाला, और अपने बाप यादिकके स्थानको चचासे छीन लिया।

५. मीमाश, बिबाश, यादिक-पुत्र (१५१८—ई०)

मीमाशने मुगोलिस्तानके रशीद खानकी लड़की ब्याही थी। वह लड़ाईमें मारा गया।

६. ताहिर, यादिक-पुत्र

भाईके मरनेपर ताहिर गद्दीपर बैठा। ९२९ हि० (२० XI १५२२–११ X १५२३ ई०)

में उसने स्वयं अपने भाईकी विधवा सुल्तान निगार खानम्को ले जाकर उसके बापके पास पहुंचा दिया। बाप अपनी बेटीको बहुत प्यार करता था, लेकिन बेटी घुमन्तू जीवनसे तंग थी, इसलिये इजाजत लेकर वह अपने भाईके लड़के सुल्तान सईदके पास चली गई। बुवाके संबंधसे खान सईदने उठकर स्वागत करना चाहा, मगर ताहिरने चगताई खानका ख्याल करते हुये उसके सामने कोर्निश की। ताहिरकी बहिन रशीद खानसे ब्याही गई। ताहिरका सितारा गिर चुका था। पड़ोसी सुल्तानोंसे बराबर लडाई-झगड़ा रहता था। ताहिरने अपने भाई अबुल-कासिम सुल्तानको अपने हाथों मारा, जिसपर उसके उलुसके लोगोने साथ छोड़ दिया। वह अकेला पुत्रके साथ किर्गिज (बुरुत) लोगोंमे चला गया। लड़का भी बापसे तंग आ गया, और ९३६ हि० (५ IX १५२९–२७ VII १५३० ई०) में वह भी साथ छोड़ गया। इसी हालतमें बड़ी दुर्गतिके साथ ताहिरकी मृत्यु हुई। कहां ९२४ हि० (१३ XI–४ VII १५१८ ई०) मे उसके पास दस लाख सेना थी और कहां ९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३६ ई०) में उसके कजाकोंका चिह्न नही रह गया। तीस हजार कजाकोंने मुगोलिस्तानमें पहुचकर ताहिरके भाई बुइदशको खान बनाया, लेकिन अब कजाकोंके कई खान थे।

७. उजियाक अहमद, उज्बेग, जानीबेक-पुत्र

किपचक कजाकोंकी इस गड़बड़ीमे जगह-जगह उनके कई खान बन गये थे, जिनमें ही यादिक या सैदिक-पुत्र उजियाक भी था। इसने अधिक दिनों तक शासन नही किया। उस समय दश्त-किपचकमें नोगाइयोकी शक्ति बढ गई थी। नोगाइयोंके अमीर सैदकसे लड़ते हुये उरुक मिर्जाके हाथों उजियाक मरा। उसका पुत्र बुलात (पुलाद, फौलाद) सुल्तान भी अपने पुत्रो सहित नोगाइयोके हाथो मारा गया। उजियाक खान लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरका पूर्वज था—यह अबुल्खैर शैबानी अबुल्-खैरसे अलग था। नोगाइयोंने ९३२ हि० (१८ X १५२५—८ IX १५२६ ई०) मे बहुसख्यक कजाकोंको मार भगाया। १५३३ ई० तक नोगाइयोंकी शक्ति इतनी बढ़ गई, कि उन्होंने ताश्कन्द पर अधिकार कर लिया। नोगाई अमीर यूसुफने १५३७ ई० मे अपने विजयोके बारेमे रूरिकवंशी जार वासिली-पुत्रके पास लिखकर भेजा था।

८. अकनजर, कासिम-पुत्र (—१५८० ई०)

प्रतापी कासिम खानके बेटे अकनजरने कजाकोके रूठे भागको लौटानेकी कोशिश की। अपने विजयोंके कारण अकनजरका यश बहुत दूर-दूर तक फैला। कजाक और किर्गिज उसे अपना खान मानने में गौरव समझते थे। अकसू और मुगोलिस्तानके शासक अब्दुर रशीद खानके पुत्र अब्दुल लतीफ सुल्तान को इसने लड़ाईमे मारा। ताश्कन्दके राज्यपाल बाबा सुल्तान और शैबानी खान अब्दुल्लाके साथ इसकी प्रतिद्वंद्विता थी। बाबा सुल्तान शैबानी अब्दुल्लासे डरकर तलस नदीपार कजाकोंमे चला गया। दूतने आकर यह खबर मुगोलिस्तानके खानको दी। जांच करनेपर मालूम हुआ, कि अकनजर खान जालिम सुल्तान, यादिक-पुत्र शिगाई सुल्तान आदिके साथ तरस नदीपर डेरा डाले हुये है। शिगाई-पुत्र ओन्दन सुल्तानने अब्दुल करीम सुल्तानकी विधवा पत्नीसे ब्याह किया था, और बीबोकी बहिन को जालिम सुल्तानके लिये रख रक्खा था। बाबा सुल्तानके भागकर कजाकोंमे शरण लेनेकी बात भी गलत मालूम हुई, इसलिये गलत खबर देनेवाले गुप्तचरको मार डाला गया। मुगोलिस्तानका खान अपनी सेना ले तलसकी ओर बढ़ा। इसकी खबर पाकर कजाकोने खानके स्वागतके लिये अपना दूत भेज आज्ञा शिरोधार्य करनेकी बात कही। सुलहनामा हुआ, जिसमें यह भी शर्त थी, कि बाबाके एक लड़केको—जो अपने कुछ अनुचरोके साथ कजाकोंमें भाग गया था—पकड़कर जिंदा या शिर काटकर भेजा जाय। कजाकोंके दूतको खानने खिलत और इनाम दिया, तथा प्रसन्न होकर उन्हें तुर्किस्तान के चार शहर भी प्रदान किये। मुगोलिस्तानके खानकी उदारतासे तुर्किस्तानमे कजाकोंके पैर जम गये, और पीछे वह खानके राज्यमें भी लूटमार करने लगे। मुगोलिस्तानी ताश्कन्दका राज्यपाल

कजाकोंको रोकनेमे असमर्थ रहा । उसने यस्सी (तुर्किस्तान) और साबरानके शहरोंको भी उनके हाथमें जाने दिया । बाबा अपने आदमियोंके साथ समरकन्द चला गया । उसने खानके विरुद्ध लड़ने के लिये कजाकोंको मिलानेके वास्ते जानकुली बेगको दूत बनाकर अपने ससुर जालिम सुल्तानके पास भेजा । कजाक इसके लिये तैयार नही थे, बल्कि उन्होने जानकुलीको भी मार डालना चाहा । किसी तरह हत्यारोके हाथसे बचकर उसने बाबाको खबर दी, कि जालिम सुल्तानको तुम्हें मारनेके लिये नियुक्त किया गया है । यकायक जालिम और अकनजरके दो पुत्र काफी सेना ले बाबाकी ओर दौड़े । शराबखानी नदीके तटपर बाबासे उनकी भेंट हुई । उसे अकनजरके पास चलनेके लिये कहा । बाबा जानता ही था, उसके साथ क्या होनेवाला है, इसलिये उसने अपने सैनिकोंको तलवार निकालकर उन्हे काट डालनेका हुक्म दिया । जमीनको उनके खूनसे लाल कर उसने अपने भाई बूजाखुरको अकनजरपर चढ़ाई करनेके लिये कहा—यह १५८० ई० (अकबरके समय) की बात है । शायद इसी लड़ाईमें कई सुल्तानोंके साथ अकनजर मारा गया । अकनजर नोगाइयोंका दुश्मन था । नोगाइयोंपर इस समय रूसियोंका प्रहार हो रहा था, इसलिये अकनजर रूसियोंसे मेल करना चाहता था ।

९. शिगाई, सैदिक (यादिक)-पुत्र (१५८०——ई०)

अकनजरके बाद १५०३ ई० मे मारे गये सैदिकका पुत्र शिगाई गद्दीपर बैठा । यह अनुभवी और राजनीति-पटु खान था । इसने एक बार तलसमे बाबाके ऊपर अचानक असफल आक्रमण किया । १५८१ ई० मे बाबा सिर-दरियाके पास कराताउमे डेरा डाले हुये था । यही उससे मिलनेके लिये तवक्कलके साथ शिगाईका पुत्र आया । दोनोमें मित्रतापूर्ण बातचीत हुई । अब्दुल्ला शिगाईको खोजन्दका राज्यपाल बना तवक्कलको अपने साथ समरकन्द ले गया । तवक्कलने शैबानी खानके यहां निशानाबाजीमें प्रसिद्धि पाई । खानके बागकी बगलमे बन्दूक चलानेका एक भारी खेल हो रहा था, जहां लम्बे खम्भोंपर लटकती सोने-चांदीकी चमकती गोलियोंपर लोग निशाना लगा रहे थे । इस कठिन लक्ष्य-वेधको तवक्कलने करके दिखाया और इस प्रकार उसे अब्दुल्ला खानसे ज्यादा समीपता प्राप्त हुई । इसके बाद ही जनवरी १५८२ ई० में अब्दुल्ला खानने बाबा सुल्तानके विरुद्ध उलुगतागकी ओर अभियान किया । सिर दरियाके बाद अरिसको भी पार करनेपर सुना, कि बाबा दश्तेकिपचककी ओर चला गया है । इसपर अब्दुल्ला अरिस-तटपर अवस्थित कराअसमन (करा-सामा) मे कुछ सेना छोड़ बुगान-चोयान नदियोसे अर्सलनलिकतोईकान (तुर्किस्तान शहरके पास गांव) होते सरीसू पार हो अप्रैलमें उलुगताग पहुंचा । वहा पता लगा, कि बाबा मंगीतों (नोगाइयो) में शरणापन्न हुआ है । बाबाका पीछा करनेके लिये एक सेना छोड़ अब्दुल्ला राजधानीकी ओर लौटा, लेकिन साबरानके मुहासिरेमें दो मासतक रुकना पड़ा । अब्दुल्ला (शैबानी खान) साबरान नदी पारकर शिकार खेलने गया था, जहां उसका पुत्र अब्दुल मोमिन सुल्तान खो गया, जिसे पहुंचा कर शिगाईके छोटे भाई यानबहादुर सुल्तानने शैबानी खानसे बहुत इनाम पाया ।

शिगाई खान अन्तर्वेदके प्रतापी शाबानी खान अब्दुल्लाका पड़ोसी और प्रतिद्वंद्वी था । उसने एक बार फिर किपचकमें शत्रुओंके विरुद्ध अभियान किया । तवक्कलने अपने कजाकोंके साथ शत्रुका पथप्रदर्शन किया, और वह केन्दरलिक नदी पार हो गये । यही जू-छि खानकी कब्र थी, जिसके पास ही उसके कुछ दूत दुश्मनके हाथोंमे पड़कर मारे गये । खबर पा बाबा सुल्तान नोगाइयोंमें भाग गया, और कुछ आदमियोंको शिगाई खानने पकड़कर लूटा । शिगाई खानकी सरगरमीको सुनकर अब्दुल्ला खान फिर उलुगतागकी ओर चला, और ईलांचिक (जिलांचिग) में शिगाईने आकर उससे मुलाकात की, इस प्रकार झगड़ा नहीं हुआ । सिबिरके प्रसिद्ध खान कूचुमके भाई अहमद गिराइने "बुखारा" के अमीर गिराईकी लड़कीको ब्याहा था । उनके बुरे बर्तावके कारण नाराज हो शिगाईने आकर उसे इर्तिशके तटपर मार डाला । जगताई शाहजादी याशिम बेकिमसे उसे तुकाई या तवक्कल पुत्र पैदा हुआ था, जो बापके बाद कजाकोंका खान बना ।

इन लडाइयोंसे मालूम होगा, कि शैबानियोंके प्रतापी खान अब्दुल्लाको उत्तरके घुमन्तू कितना परेशान किये रहते थे। १५९४ ई० में तवक्कलने जार फ्योदोर इवान-पुत्रके पास अपना दूत भेजकर निवेदन किया, कि मैं अपने उलुसके साथ जारकी प्रजा बनना चाहता हूं, मेरे भतीजे उराज मोहमेतको मुक्त कर दिया जाय। मार्च १५९५ ई० में जारने तवक्कलके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया, और कुछ बारूदी हथियार भेजकर उससे कहा, कि बुखाराके खान अब्दुल्लाके साथ शाति रखो, मिविरखान कूचुमको अधीन बनाओ। भतीजेको हम मुक्त कर रहे है। उसकी जगह दरबारमें अपने पुत्रको भेजो।

लेकिन, तवक्कल भला अन्तर्वेदकी लूटसे अपनेको क्यो वचित होने देता? १५९७ ई० में अब्दुल्ला और उसके पुत्र अब्दुल मोमिनके बीचके झगडेकी खबर उसे तुर्किस्तानमे मिली। तवक्कल खान—अब वही खान था—बहुत-से कजाक अमीरो और सैनिकोके साथ ताश्कन्दकी ओर बढा। अब्दुल्लाने तवक्कलको कोई महत्त्व नही दिया, और उसके मुकाबिलेके लिये कुछ सुल्तानों, शाहजादो और पडोसी अमीरोको थोड़ी सेना देकर भेजा। ताश्कन्द और समरकन्दके बीच सख्त लड़ाई हुई, जिसमें अब्दुल्लाकी सेना हारी, बहुतसे सेनापति मारे गये, बाकी बुखारा भाग गये। अब्दुल्ला मुकाबिलेके लिये बुखारासे समरकन्दकी ओर चला, लेकिन बीच हीमें बीमार होकर मर गया। अब तवक्कलकी बन आई। उसने भारी सेना ले तुर्किस्तानसे अन्तर्वेदमें घुसकर अकसी, अन्दिजान, ताश्कन्द, समरकन्द तथा मियानकुल तकके प्रदेशपर अधिकार कर लिया। फिर अपने भाई इशिम सुल्तानको बीस हजार सेना दे समरकन्दमें छोड़ सत्तर-अस्सी हजार सेनाके साथ बुखारापर चढा। पीर मुहम्मद पंद्रह हजार सैनिकोंके साथ बुखाराकी रक्षापर नियुक्त था। उसने शहरके दरवाजोको बन्द कर लिया, और बीच-बीचमे निकल कर कजाकोके ऊपर ग्यारह दिनोतक वह छापा मारता रहा। बारहवें दिन सारी सेना शहरसे बाहर निकल आई। शाम तक भयकर युद्ध हुआ। कजाक हारकर तितर-बितर हो गये। धोखा देनेके लिये डेरोमें आग जली छोड तवक्कल रातको ही चला गया था। इस हारकी खबर समरकन्दमें इशिमको मिली। उसने अपने भाईके पास सदेश भेजा—"तुम्हे बहुत लज्जा आनी चाहिये, कि मुट्ठीभर बुखारियोने इतनी भारी सेनाको हरा दिया। अगर तुम यहां आये, तो हो सकता है, समरकन्दके लोग तुम्हारा स्वागत नही करें। खानको देश लौटना चाहिये, और मैं भी अपनी सेना लेकर उसके साथ मिलनेके लिये आ रहा हूं।" तवक्कल अपने भाईके साथ लौटा। मियानकुल प्रदेशके उजुनसुकाल स्थानमें पीर मुहम्मद पीछा करते हुये सामने आया। एक महीने तक दोनोंकी झड़प होती रही, इसके बाद तवक्कलने धावा बोल दिया। पीर मुहम्मदके संबंधी सैयद मुहम्मद सुल्तान और दूसरा अफसर मुहम्मद बाकी अतालीक काम आये। तवक्कल भी लड़ाईमे घायल हुआ, और लौटते समय १५९८ ई० में ताश्कन्दमें मर गया। उज्बेको और कजाकोके युद्धका कोई फैसला नही हुआ।

११. इशिम, शिगाई-पुत्र (१५९८–१६३५ई०)

भाईके मरनेपर इशिमने कजाकोका नेतृत्व ग्रहण किया। उसने पहले बुखाराके विरुद्ध कोई भारी कदम उठाना नही चाहा। १६११ ई० मे बुखाराके अधिकारच्युत खान वली मुहम्मद और उसके भतीजे इमामकुल्लीके झगड़ेमे इशिम पांच हजार कजाकोके साथ शामिल हुआ। वली मुहम्मद मारा गया। इस संघर्षमे इशिमका भाई सैयदबी भी शामिल हुआ था। उरगंज (ख्वारेज्म) से भागा अबुलगाजी १६२५ ई० मे इशिम खानके पास तुर्किस्तान शहरमे आकर तीन मास तक रहा। ताशकन्दका तुरसुन खान (अकनजर-पुत्र) जब तुर्किस्तानमे आया था, तो इशिमने अबुलगाजीका यह कहकर उससे परिचय कराया—"यह यादगार-खानके वंशज अबुलगाजी हैं। इनसे पहले हमारे यहां ऐसे राजकुमारने शरण नहीं ली, यद्यपि दूसरे बहुत-से राजकुमारोंने शरण ली थी।" तुरसुन खान अबुलगाजीको अपने साथ ताश्कन्द ले गया। दो साल बाद १६२७ ई० मे इशिमने तुरसुनको मार दिया, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुल्ली खानके पास बुखारा जानेकी इजाजत दे दी। कजाकों और बुखाराके खान इमामकुल्लीके बीच झगड़ा-लड़ाई चलती रही। कजाकोंने दो बार १६२१ ई० में बुखारियोंको हराया था। अकनजर खानके पुत्र तुरसुन मुहम्मदने बीचमें पड़कर समझौता करवाया।

अब कजाकोंके भारी शत्रु पूर्वमें जुगारियाके कल्मक (मंगोल) थे, जिनके आक्रमण उनके ऊपर बराबर हो रहे थे। १६३५ ई० में इशिम खानने कल्मक राजा बातुर खुङ तैशीके साथ लडाई मोल लेकर कजाकोंके ऊपर आफतका पहाड़ ढा दिया। कजाक सेनाका सेनापति इशिम-पुत्र यमगीर (जहांगीर) सुल्तान कल्मकोंके हाथमे बंदी बना। इसीके आसपास इशिम मर गया।

१२. यमगीर, जहांगीर, इशिम-पुत्र (१६३५-९८ ई०)

मित्रताका वादा करके जहांगीर मुक्त हो गया, लेकिन कजाकोंका खान बननेके बाद उसने फिर जुंगरो (कल्मको) से छेड़खानी शुरू की। अन्तमे १६४३ ई० मे पचास हजार सेना लेकर बातुर खुङ-तैशी उसके ऊपर पड़ा, और अलतन किर्गिजों और तोकमक कबीलोंको पकड़कर अपने साथ ले गया। इस लडाईमे जुगरोंने कजाक सेनाका इतना सत्यानाश कर दिया, कि जहांगीरके पास सिर्फ छ सौ आदमी रह गये। वह दो पहाडोंके बीच ताकमे छिपा हुआ था, जब कि कल्मकोंने आक्रमण किया। जहागीरने पीछेसे कल्मकोंपर आक्रमण किया। उसँके बारूदी हथियारोंने कल्मकोके बीचमें गजब ढाया। दस हजार कल्मक मारे गये। फिर जल्दी ही बीस हजार सेना जमा करके जहांगीर यलानतुश पहुचा। बातुरको असफल लौटना पडा। अगले साल १६४४ ई० में बातुरने फिर अपने आदमियोंको कजाकोंके साथ लड़नेके लिये जमा किया, लेकिन जहागीरका मित्र खोसोत मंगोल कबीलेके सरदार कुंदेलिग ताईशी बीचमे पडा। इस प्रकार कल्मकों और कजाकोंका युद्ध उस समय बच गया, और जहागीर तुर्किस्तान चला गया।

१३. तौफीक, तवका, तिअबका, जहांगीर-पुत्र (१६९८-१७१८ ई०)

कजाक खानोंमे यह अत्यन्त प्रसिद्ध और जनप्रिय खान था। घुमन्तुओके झगडोंको शातिपूर्वक मिटानेमें इसने बडी सफलता पाई। कमजोर कबीलोंको वह सहानुभूतिसे अपनी ओर मिला लेता, शक्तिशाली कबीलोको इज्जत करना सिखलाता। इसीने कजाकोको तीन ओर्दुओमें बाटा। एक तरह यह बंटवारा बहुत प्राचीन समयसे चला आता था, जब कि इनके पूर्वज आगूज-तुर्क कहे जाते थे। तिअबकाने उनकी जगहपर तीन विभाग किये, और महाओर्दूके लिये तिवोल, मध्यओर्दूके लिये कज्बेक और लघुओर्दूके लिये एतियकको केन्द्र बनाया। तौफीकके जीवनभर कजाक एकताबद्ध रहे। तुर्किस्तान शहर उसकी राजधानी थी।

१६९८ ई० में जुगर राजा छेवङ-अर्बचनने कजाकोंके साथ हुये सघर्षोके बारेमें चीन-सम्राट्के पास लिखा था—"दूसरे कल्मक राजा गंदनने तौफीकके पुत्रको पकड़कर दलाई लामाके पास भेज दलाई लामाके बीचमें पड़नेके लिये कहा, इस पर पुत्रको पांच सौ आदमियोंके साथ छोड़ दिया गया। उस (तौफीक-पुत्र)ने विश्वासघात करके मेरे आदमियोको मार डाला, और सरदार, उसकी बीबी, उसके बच्चोंको एक सौ किबितका (परिवारो) के साथ छीन लिया। यह घटना हुलियान हान (संभवतः कल्मकोंका ग्रीष्म वासस्थान उलुगताग-पर्वतमाला)में हुई। तवकाने इसके बाद अपनी बहिनके साथ बापके पास जाते तोरगुत राजा आयुकापर रास्तेमें हमला किया। फिर हमारे देश से अपने देश लौटकर जाते एक रूसी करवाको लूटा।" यह सब दोष कल्मकोंने तवका (तौफीक) और उसके कजाकों पर लगाया। कल्मकोंके साथ लड़ाई लड़कर कजाकोंने अपना भारी अनिष्ट किया। इसीके कारण वह अपनी पुरानी भूमिसे भागनेके लिये मजबूर हुये, और उनके कबीले भी छिन्न-भिन्न हो गये। अन्तिम दिनोंमे तवका खानका भी जोर कम हो गया। उसके सरदार अपने-अपने कबीलोंको ले स्वतन्त्र हो गये। कजाकोंके तीनों ओर्दू अपने स्वतन्त्र अमीरोंके शासनमे रहने लगे, जिनमें मध्य-ओर्दू बहुसंख्यक और अधिक शक्तिशाली था, यही अपनेको श्वेत-ओर्दूका असली उत्तराधिकारी मानता था। १७१८ ई० मे कल्मकोंके आक्रमणसे परेशान होकर तौफीक खान, खायेप खान और अब्दुलखैर खानने साइबेरियामें जार पीतर I के राज्यपाल राजुल गगारिनके सामने जाकर अपनेको रूसके अधीन कर दिया। तवका १७१८ ई० में मरा।

३. (२. श्वेत-ओर्दू-वंशवृक्ष)
(१४२५-१७२८ ई०)

स्रोत ग्रन्थ

१. तारीखे-रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर)
2. History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ३
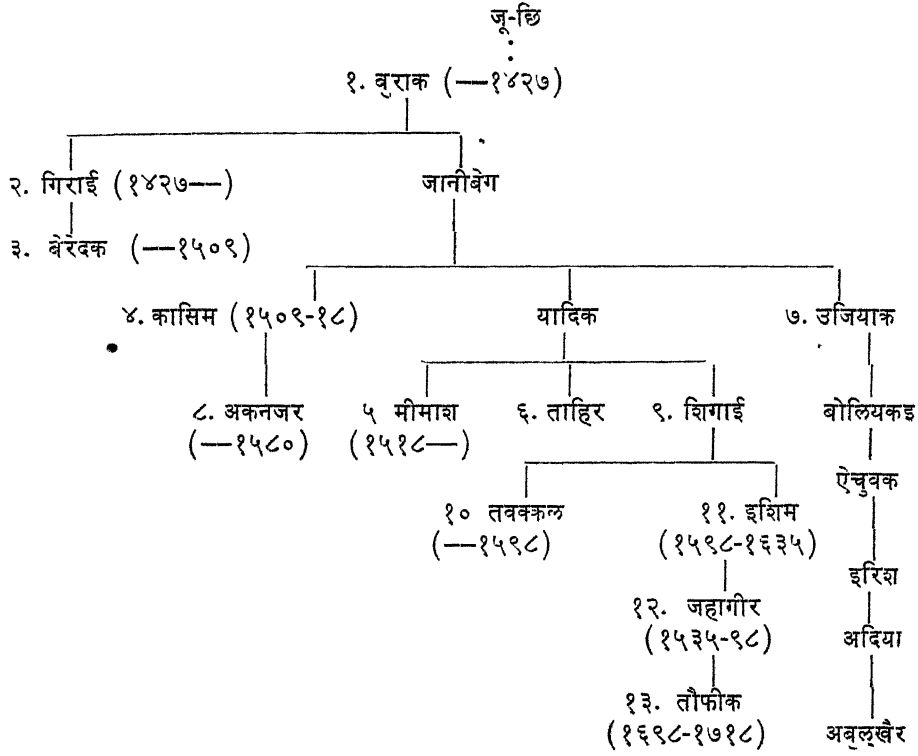
नोगाई

(१३००-१७२४ ई०)

१. नोगाई (–१२९९ ई०)

किपचक भूमिमें प्राचीन समयसे ही वहाके तुर्क कबीलोको अपने सामन्तोके नामपर नया नाम लेते देखा जाता है, इसलिये नोगाई नाम होनेका यह अर्थ नही, कि उनका आरम्भ जू-छि-प्रपौत्र तेवल-पुत्र तारतार-पुत्र नोगाईके समयसे होता है। ईसाकी आरम्भिक सदियोंमे हूणोको हमने बल्काशसे कास्पियनके उत्तरी तट तक फैलते देखा, उनसे पहले यह भूमि शकोकी थी। एक तरह मंगोलायित जातिका इस भूभागमें निवास इसी समयसे आरंभ होता है। तुर्कोकी मारसे जब पूर्वके अवार भागे, तो इनमेंसे कितनोने अवारका नाम कायम रक्खा और कितने ही अपनी बैल-गाड़ियोपर घुमन्तू-जीवन बितानेके कारण कङ या कङ-ली कहे गये। अवारोंने ठप्पा प्राचीन हूणोके इन वशजोपर अपने नामका नही लगाया, लेकिन अवारोके प्रतिद्वद्वी और उत्तराधिकारी तुर्कोने जब चीनकी सीमासे कास्पियनके उत्तर तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया, तबसे इन्हे तुर्क कहा जाने लगा—आज भी इस भूमिके उनके वंशज कजाक तुर्कोकी एक शाखा माने जाते है। मगोलोंके समयमे इन असख्य मगोलायित ओर्दुओंमेसे एकका नाम खानजादा नोगाईके नामसे नोगाई पडा। उससे पहले नोगाई कहे जानेवाले कबीले वोल्गासे पश्चिममे द्नियेपरके पार तक दक्षिणी रूसमे पेचेनगाके नामसे चरवाहीका जीवन बिताते थे। पेचेनगा जू-छिके पुत्र तेवल या तारतारको जागीरमे दिये गये थे, जो पीछे उसके पुत्र नोगाईके हाथमे आये। नोगाई सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी खान बरकाके समय प्रधान-सेनापति था। उसने ईरानके हुलाकू-वंशी खानोंको कई बार काकेशसकी भूमिमें हराया था, यह हम बतला आये है। इसने कान्स्तन्तिनोपलके सम्राट् मिखाइल पलियोलोगस् (१२००-६१ ई०) की लड़की यूफियोसिनेसे ब्याह किया था। मिखाइलकी दूसरी लडकी मरिया हुलाकू खानसे ब्याही थी। नोगाई बहुत प्रभावशाली मंगोल राजकुमार था, यह भी हम बतला चुके है। दोनसे दन्यूब तककी भूमिका वह स्वामी था, और बुल-गारी (वोल्गा) का राजा भी उसके अधीन था। १२९९ ई० के आसपास सुवर्ण-ओर्दूके खान तोकताईने द्नियेपर पार हो ओजीमे जिस तरह बूढ़े नोगाईको घायल किया, और आखिरमे वह मर गया, यह बतला आये हैं। इसीके समयसे पुराने पेचेनगा नोगाई कहे जाने लगे। आगे चलकर इनके दो भाग हुये, जिनमे महानोगाई यायिक (उराल) और यम्बा नदियोके बीचके प्रदेशके दक्षिणी भागमें रहते थे, ये पूरी तौरसे मुसलमान हो गये थे। इनका दूसरा भाग बाश्किरोंके सीमांतपर रहता था, जो बहुत कुछ पुराने मंगोलोके धर्म और रीति-रवाजोंका पालन करते थे। इन्हीमे सिबेरियाके खान थे।

२. चुके, चुको, नोगाई-पुत्र (१३०० ई०)

नोगाईके मरनेपर उसके लड़के चुकेको पकड़नेके लिये तोकताई खानके आदमियोने बहुत कोशिश की, मगर वह हाथ नही आया। पहले वह आस (उबान) मे गया, फिर वहासे बुल्गारियामें अपने बहनोईके पास चला गया, किन्तु १३०० ई० के आसपास उसका शिर काटकर खानके पास भेज दिया गया।

३. बुरी, नोगाई-पुत्र (—१३०१ ई०)

यह इलखान (ईरानी) अबकाका दामाद था। इसने पिताकी हत्याका बदला लेना चाहा, लेकिन तोकताई खानको षड्यन्त्रका पता लग गया, और यह १३०१ ई० मे मारा गया।

४. कराकिजिक, चुके-पुत्र

नोगाईका खानदान एक-एक करके सुवर्ण-ओर्दूके खानोकी कोपाग्निमे भस्म हो रहा था, लेकिन राजकुमार नोगाईके प्रताप और दीर्घकालीन शासनके कारण उसके उलुसका समय-समयपर बिखराव-जमाव होता रहता था, जिसके ही कारण नोगाई कबीलेका नाम इतने समय तक बना रहा।
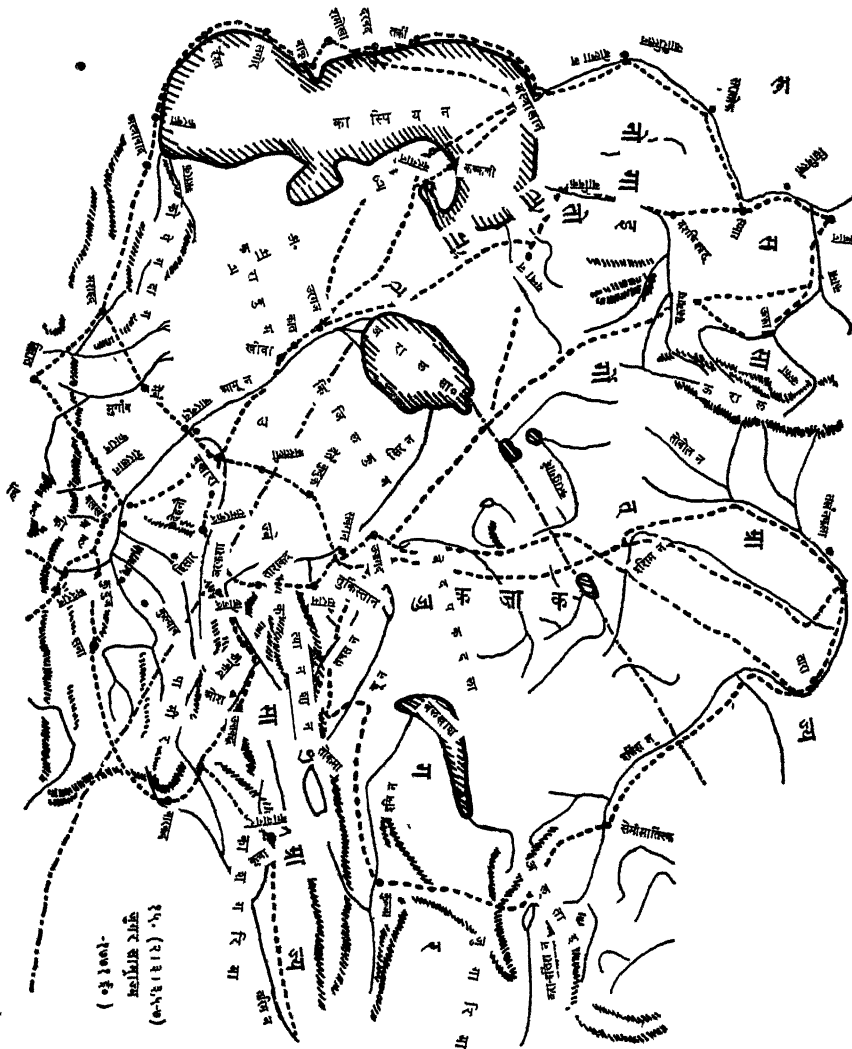
अपने बाप और चचाके मारे जानेके बाद कराकिजिक अपने दो सम्बंधियों तथा तीन हजार अनुयायियोंके साथ साइबेरियाके शमसमान देशके अबादुल स्थानमे गया, जहासे वह तोकताके राज्यमें जब-तब लूट-मार करता रहा। शमसमान लोगोंने कराकिजिक और उसके अनुयायियोंको बड़े सम्मानके साथ रक्खा, और वह गुइउक या यायिक (उराल) नदीकी उपत्यकामें बस गये।

जब बा-तू-वंश निर्वंश हो गया, तो अमीरोंने लाकर शैबानी-वंशज खिजिर खानको सुबर्ण-ओर्दूका खान बनाया, जिसे हटाकर जेक्रियाने अपने पुत्र करा नोगाईको खान बना दिया।

५. करा नोगाई, जेक्रिया-पुत्र

करा नोगाईको करा तोगाई भी कहते हैं। इसके अधीन वोल्गाके पूर्वी इलाकेमें नोगाइयोंके कई कबीले थे। करा नोगाईके बाद फिर नोगाइयोंके खानोंका सूत्र विलुप्त हो जाता है, और तेमूर-लंगके समकालीन इदिकूके समयमें फिर हम उन्हें प्रभावशाली कबीलेके रूपमें देखते हैं।

§२. महानोगाई (१४३१ ई०)

१. नूरुद्दीन, इदिकू-पुत्र (१४३१ ई०)

इदिकूको मगुतोंका बेग कहा गया है, और मगुत नोगाई ही थे, इसमें संदेह नहीं। इदिकू तेमूर-लंगके प्रभावशाली अमीरोंमेंसे था। तोकतामिशके विरुद्ध तेमूरके अभियानमें यह उसका प्रधान-पथप्रदर्शक रहा। तोकतामिशकी हारके बाद इदिकू तेमूरसे छुट्टी लेकर अपने कबीलेमें चला गया। तेमूर कुतुलुक किपचक-खानोंकी गद्दी चाहता था, और इदिकू उसका चाणक्य था। १३९९ ई० में तेमूर कुतुलुकके मरनेपर किपचकके सिंहासनपर इदिकूने तेमूरके भाई सादीबेगको बैठाया। फिर १४०७ ई० में उसे हटाकर पुलादबेगको खान बनाया। १४३१ ई० में तोकतामिश-पुत्र कादिरबरदीमे जो संघर्ष हुआ, शायद उसीमें इदिकू मारा गया। इदिकूके मरनेपर उसके पुत्र गाजी नोरोज ओर मंसूरने रूसमें शरण ली, तथा उसके दूसरे पुत्र कैकुबाद और नूरुद्दीन तूरान (तुर्किस्तान) की ओर भाग गये।

इदिकूके समय तक पुराने नोगाइयोंकी परंपरा जारी रही, और आदिम राजकुमार नोगाई, और अन्तिम इदिकूके कालोंमें नोगाई कबीला शक्तिशाली और बहुसंख्यक रहा। पुराने कबीलेके पतनके बाद उसका अधिकांश भाग यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके बीचमें रहता था। इदिकू-पुत्र नूरुद्दीन उनका खान बना। यही महानोगाई कबीलेका संस्थापक था।

नूरुद्दीनको अपने पिताका उलुस बहुत क्षीण रूपमें मिला था, जिसके अस्तित्वको वह कायम भर रख सका।

२. ओकस, नूरुद्दीन-पुत्र (१४८७ ई०)

१५ वीं सदीके मध्यमें कजाक खानोंके भीतर नोगाइयोंका अब काफी असर बढ़ चुका था। उनके दोनों भाइयों मुहम्मद अमीन और अलीखानके झगडोंमें नोगाई अलीके समर्थक थे। लेकिन, अलीको रूसी पसंद नहीं करते थे। १४८७ ई० में रूसियोंने अली पर आक्रमण करके उसे पकड़ लिया। दो साल बाद १४८९ ई० में त्यूमनके शासक तजार ईवक, मिर्जा ओकास, या तत्पुत्र हसन, मूसा, और यमागुरचीने ज़ारके पास अलीको छोड़ देनेके लिये चिट्ठी लिखी थी।

३. यमागुरची, ओकस-पुत्र (१४९९ ई०)

अब नोगाइयोंका प्रभाव यही था, कि वह कजाक खानोंके आपसी प्रतिद्वंद्वितामें किसी पक्षके सहायक होते रहे। यमागुरची और मूसाने कजाक खान अब्दुल लतीफके ऊपर उसके भाई मुहम्मद अमीनकी ओरसे हमला किया, लेकिन अब्दुल लतीफकी पीठपर रूसी थे, इसलिये उन्हें हारना पड़ा। शायद इसी समय यमागुरची मर गया। १५०५ ई० में हम कजाक खान मुहम्मद अमीनको चालीस हजार कजाकों और बीस हजार नोगाइयोंके साथ रूसी सीमांतपर आक्रमण करते देखते हैं। इसी युद्धमें मुहम्मद अमीन खानका साला मूसा मारा गया।

१५१७ ई० से १५२६ ई० तक वोल्गापारके नोगाई यायिक (उराल) और कास्पियनके तट पर तीन भाइयोंमे विभक्त थे, जिनमे (१) सिदियक खान सेरायचुक नगरका स्वामी था, यायिक्-उपत्यका इसीके हाथमे थी, (२) हसन (गसन) को कामा-वोल्गा और यायिक नदीके बीचका इलाका मिला था, और (३) शेख ममाईको सिबिरवाला भाग तथा पास-पडोसका इलाका।

४. शेख ममाई, मूसा-पुत्र (१५२६ ई०)

इसके बारेमें हमे ज्यादा मालूम नही।

५. युसुफ मिर्जा, मूसा-पुत्र

इसका पता भी इसके पुत्र अली मिर्जाके कारण लगता है।

६. अली मिर्जा, युसुफ-पुत्र (१५५१ ई०)

पासमे होनेके कारण नोगाई रूसके सीमांतमे हर वक्त खतरा पैदा किये रहते थे, जिसके लिये रूसियोंको अपने सीमांतको किलाबंद करनेकी बडी जरूरत पडती। अली मिर्जाने १५५१ ई० में क्रिमियाके खान साहेब गिराईके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन खानने उसे हरा दिया। वोल्गा और दोन पार करके क्रिमियाके पास पहुचना, यही बतलाता है कि अभी सोलहवी सदीके मध्यमे वहां कोई ऐसी शक्ति नही पैदा हुई थी, जो कि अली मिर्जाके रास्तेमें रुकावट पैदा करती। अली मिर्जा कजानमें रहता था। उसके कबीलेने नाराज होकर उसे निकाल यादगारको गद्दीपर बैठानेके लिये बुलाया। मास्कोके जारने इसे पसद नही किया, और अक्तूबर १५५२ ई० मे उसने आक्रमण करके कजानको ले लिया।

७. इस्माईल मिर्जा, मूसा-पुत्र (१५६४ ई०)

इसीके समयमे १५५८ ई० मे अग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन अस्त्राखान पहुचा था। वह लिखता है कि वोल्गाके बायें तटकी सारी भूमि—अस्त्राखानसे कास्पियन-तट होते तुर्कमानोंकी भूमि तकका प्रदेश—मगुतों (नोगाइयों)का प्रदेश कहा जाता है। यहांके लोग मुसलमान हैं। १५५८ ई०में जो भयंकर गृहयुद्ध हुआ था, जिसके साथ ही अकाल-महामारीने आक्रमण किया, उससे उनके एक लाख आदमी मर गये। जेकिन्सन लिखता है–"इस तरहकी महामारी इस भूभागमे कभी नही देखी गई। नोगाइयोंकी भूमि चरागाहोकी भूमि है। इस महामारीके बाद वह उजाड़ हो गई, जिससे रूसियोंको सतोष हुआ, क्योंकि उनके साथ उन्हे बहुत दिनोंसे भयकर लडाइया लडनी पड़ रही थी। जब नोगाई कबीला अच्छी अवस्थामें था, उस समय वह कई भागोंमें विभक्त था, जिन्हें होर्द (ओर्दू या उर्दू) कहते हैं। हरेक ओर्दूका अपना एक राजा होता है, जिसे मुर्जा (मिर्जा) कहा जाता है। सारा ओर्दू उसकी आज्ञा मानता है। इनके न घर है न नगर, बल्कि यह खुली जगहोंमे रहते है। हरएक मिर्जा (राजा) अपने ओर्दू या लोगोंको आसपास लिये हुये रहता है, जहा उनकी बीबियां, बच्चे और पशु भी रहते है। एक चरागाहकी घासके खतम हो जानेके बाद, वह दूसरी जगह चले जाते है। जब वह चलते हैं, तो ऊंटोंसे खींची जानेवाली गाडियोंपर उनके घरकी तरहके तम्बू भी चलते है। इन्ही गाड़ियोंमें उनके बीबी-बच्चे तथा सारी सम्पत्ति लदी रहती है। हरेक अमीरके पास दासियोंके अतिरिक्त चार-पांच बीबियां होती हैं। नोगाई सिक्केका इस्तेमाल नही करते, बल्कि कपडों और दूसरी चीजें अपने पशुओं से बदलते हैं। उन्हे युद्ध छोड़ और किसी विद्या और कलासे प्रेम नही और युद्धमे वह सिद्धहस्त हैं, अधिकतर पशुपालका जीवन बिताते है। उनके पास पशु-धन बहुत अधिक है—वस्तुतः पशु ही उनकी सम्पत्ति है। वह मास अधिक खाते है, जो विशेषकर घोड़ेका होता है। घोड़ीका दूध पीते है, उसका मद्य (कूमिस) भी बनाते है। विद्रोह, चोरी, डकैती और हत्या इनके स्वभावमें हैं। न वह

अनाज खाते है और न रोटी, इसके लिये ईसाइयोका वह उपहास करते हुये कहते हैं—"तुम सरकडेकी फुन्गी खाते हो और वर्षाका पानी पीते हो, फिर क्यों न कमजोर रहोगे ? हम खूब मांस खाते है, दूध पीते है, इसीलिये हम ताकतवर है।" जेन्किन्सन जब पेरे-वोलोग (प्राग्-वोल्गा) में पहुचा, तो वहां उसे एक नोगाई ओर्दू मिला। पेरे-वोलोग पीछे जारित्सिन और आजकल स्तालिनग्रादके नामसे पुकारा जाता है। यहीपर वोल्गा और दोनके बीचमे नावोंको स्थल-मार्गसे पार कराया जाता था। आज वोल्गा-दोन-नहरके हो जानेसे उसकी कोई अवश्यकता नही है। पेरेवोलोगमें मिले नोगाई-ओर्दूके बारेमे जेन्किन्सनन लिखा है—"इसमें घरके आकारवाली गाडियोंको करीब एक हजार ऊंट खीच रहे थे। यह घर एक विचित्र तरहके तम्बू थे, और चलते समय दूरसे नगर जैसे मालूम होते थे।" यह ओर्दू नोगाइयोके राजा (मिर्जा) इस्माईलका था, जो कि जेन्किन्सनके अनुसार "सभी नोगाइयोमे सबसे बड़ा राजा है। उसने बाकी सभीको मार डाला या भगा दिया, अपने भाइयों और बच्चों तकको भी नही छोडा। रूसके सम्राट्के साथ सुलह करके अब वह नोगाइयोंपर शासन करता है, और रूसी भी नोगाइयोंके साथ शांति पा रहे है।" अस्त्राखानमे महामारी और अकालका क्या असर हुआ, इसके बारेमे जेन्किन्सन लिखता है—"वहां बहुत-से लोग भूखसे मर गये। सारे द्वीप (अस्त्राखान) मे मुर्दोंका ढेर मिलता है, जो बिना जलाये हुये जानवर जैसे मालूम होते है। देखकर बडी जुगुप्सा होती है। इन अस्त्राखानी नोगाइयोंमेंसे बहुतोको रूसियोने बेच डाला, और दूसरोंको द्वीप (अस्त्राखान) से निर्वासित कर दिया। अगर मेरे पास एक हजार मुद्रा होती, तो मै सुदर-सुदर तारतार बच्चोंको उनके मा-बापोंसे खरीद सकता था। इंगलैडमे जो रोटी छ पेन्समे मिलती है, उसमे मैं एक लड़के या तरुणीको खरीद सकता था। लेकिन उस समय इस तरहके सौदेसे हमे अधिक अवश्यकता थी खाद्य पदार्थकी।"

इस्माईलके समयमे नोगाइयोंकी यह हालत थी। अस्त्राखानपर रूसियोंने अपनी दृढ प्रभुता जमा ली थी। नोगाइयोंको उनके सामने सिर झुकानेके लिये मजबूर होना पडा था। इस्माईल १५६३ ई० के अन्त या १५६४ ई०के आरम्भमे मरा, अर्थात् उसी समय, जब कि अतितरुण अकबरने भारतमें अपने राज्यको संभाला था।

८. दीनमुहम्मद, इस्माईल-पुत्र (१५६४ ई०)

यह सिबिरके कुचुम खानका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अलीकी शादी दीनमुहम्मदकी लडकीसे की थी। वोल्गा और दोनके पास अभी रूसियोकी बस्तिया नही आबाद हुई थीं, और नोगाई कबीलेका ही यहापर निवास था। उनके पडोसमे क्रिमियाके तारतार थे। वह रूसी ईसाइयोंको मुसलमान तारतारोंके ऊपर इस तरह हावी होते देखना नही पसंद करते थे। दोनोंने मेल करके अपनी संयुक्त सेना ले ७ मई १५८० ई०में अस्त्राखानको घेर लिया, किन्तु चद दिनोंके असफल मुहासिरेके अतिरिक्त उन्हे कुछ हाथ नहीं आया। इस समयतक उराल (यायिक)-उपत्यकामे कसाक रूसी जैसे लड़ाकू लोग आ बसे थे, जिनका नोगाइयोसे झगड़ा होता रहता था। दोनके ऊपरी भागमें भी रूसी कसाक रहते थे। उन्होंने पहुचकर अस्त्राखानपर अधिकार करके सीमांती इलाकोंमें लूट-मार शुरू की। व्यापारियोंको ही नही, जारके दूतमंडलको भी उन्होंने नहीं छोडा। इस प्रकार हम देखते है, कि इस समय निम्न-वोल्गाकी भूमि नोगाइयों, रूसी कसाकों तथा इवान IV के संघर्षोंकी भूमि बनी हुई थी। इवानने एक बड़ी सेना जेनरल इवान मुरश्किनकी अधीनतामे भेजी, जिसने शत्रुओंको हराकर अस्त्राखानको मुक्त किया। इन्हीं दोन-कसाकोंका एक नायक येरमक था, जिसने सिबिर विजय किया, और जिसके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। मुरश्किन द्वारा भगाये हुये कसाकोंका एक भागने कास्पियनके पश्चिमी-तटपर तेरेक नदीकी ओर जा वहां अपना उपनिवेश बसाया। एक और भागने कास्पियन-तटसे होते यायिक (उराल) नदीके मुहानेपर जाकर डेरा डाला। १५८० ई०में इन कसाकोंने अपने बंदियोंसे नोगाइयोंकी राजधानी सरायचुकके बारेमें सुना, और वह उस पर चढ़ दौड़े। शहरपर अधिकार कर

उन्होंने मकानोंमें आग लगा दी। जीते नोगाइयोंपर ही उन्होंने अत्याचार नही किया, बल्कि कब्रोंमेंसे उनके मुर्दोंको भी निकालकर बाहर फेंक दिया।

९. उरुस, इस्माईल-पुत्र (१५८० ई०)

उरुसके पूर्वी सीमातपर सिबिरके खान कुचुमका राज्य था, और पश्चिममें क्रिमियाके खान मुहम्मद गिराई का। इसके सीमातपर रूसके अधीन प्रदेश थे, जिनमें कही-कही रूसियोंकी भी बस्तियां बसती जा रही थी। उरुसने १५८३ ई०मे मुहम्मद गिराई और कुचुम खानकी शहसे कामा-तटके इलाके-में लूट-मार मचाई; लेकिन, इन जगहोमे बसनेवाले रूसी हिम्मतवाले कसाक थे। उन्होने १५८४ ई० मे अपने लिये उरालस्क नगर बसाया। नोगाइयोके आक्रमणका हर वक्त डर लगा रहता था, इसलिये उन्होंने नगरके चारो ओर मिट्टीके धुस खडे कर दिये। पूर्वकी ओर रूसियोके विस्तारमें सबसे पहली और बडी बाधाके रूपमे नोगाई मौजूद थे।

१०. अल्ता, उलिशाइन और यान अरसलन, उरुस-पुत्र (१६०१ ई०)

१६०१ ई०मे नोगाइयोके दो भाग हो गये थे, जिनमेंसे एकका नाम उरुस था, और दूसरेका कस्साई (छोटा)। अल्ता और उलिशाइन दोनो भाई अपने चचा या मामा कस्साईके ऊपर आक्रमण करना चाहते थे। दोनो कबीलोके आपसी सघर्षके मारे ओर्दूके दो भाग हो गये। १६०८ ई०मे उरुस कबीलेने कस्साईके त्यूमन इलाकेमें घुसकर पिशमा-तटकी बस्तियोंको लूटा, लेकिन अन्तमे उन्हें हारकर भागना पड़ा। १६१३ ई० मे अभी भी नोगाई इतने शक्तिशाली थे, कि उन्होने इश्तेराकके नेतृत्वमें सारे उक्रइनको ही नही लूटा, बल्कि ओका नदी पार हो उत्तरमे कलोम्ना, सेरपुकोफ और मास्कोके पास तकके गांवोंको भी नही छोडा। ये घुमन्तू कबीले स्थायी निवासी रूसियोके लिये उस समय भी बड़े खतरेकी चीज थे, जब कि भारतमें जहांगीरका राज्य था।

नोगाइयोमे एक तरहकी आनुवंशिक बीमारी थी, जोकि इसी भूमिमे प्राचीनकालमें रहनेवाले शको (सिथियनो) मे भी पाई जाती थी—जिसका कारण सिरियाकी उरानिया देवीका मंदिर लूटने के लिये देवीका शाप समझा जाता था। ग्रीक लेखक हिप्पोक्रातने सिथियनोंके बारेमे लिखा है—"सिथियनोके भीतर कुछ ऐसे लोग है, जो कि हिजड़े होते है, और स्त्रियोके सभी काम करते है। इसी-लिये उन्हे इनारी (नारी-समान, स्त्रैण) कहा जाता है।" नोगाइयोंमे इस बीमारीका पता आधुनिक कालमे बेइनेग्स नामक एक विद्वान्ने लगाया। कल्परोतने यह भी लिखा है—"यह एक तरहकी अचि-कित्स्य बीमारी है, जोकि किसी साधारण रोग या अधिक उमरके कारण होती है। उस समय मर्दोंके चमड़ेमे झुरिया पड़ जाती है, और उनकी जो चंद बालोंकी दाढी होती है, वह भी गिर जाती है। फिर आदमी बिलकुल स्त्रीका रूप ले लेता है। वह बिल्कुल स्त्रीका-सा मालूम होता है, और स्त्रियोंसे ही मेल-जोल रखता है।"

१८वी सदीके पूर्वार्धमे पहुचकर नोगाइयोंकी शक्ति एक प्रभुताशाली कबीलेके तौरपर खतम हो जाती है, और पीछे इनका नाम भी लुप्त होने लगता है। बुखाराका आखिरी राजवंश मंगीत नोगा-इयोमेंसे ही था, लेकिन अब उनके लिये भी नोगाई शब्द अपरिचित-सा होता जा रहा था। अजोफ सागरके पास रहनेवाले नोगाई कसाई (कसबुलाद)के ओर्दूसे सबधित थे। कसाईको लघु ओर्दूका संस्थापक माना जाता था। कसाईके वशज अरसलनबेग, मुर्जाबेग, मूसाबेग, तोगानबेग, कसबुला, आदि लघु नोगाईके सरदार थे।

३. (३ नोगाई-वंशवृक्ष)
१३००-१७२४ ई०
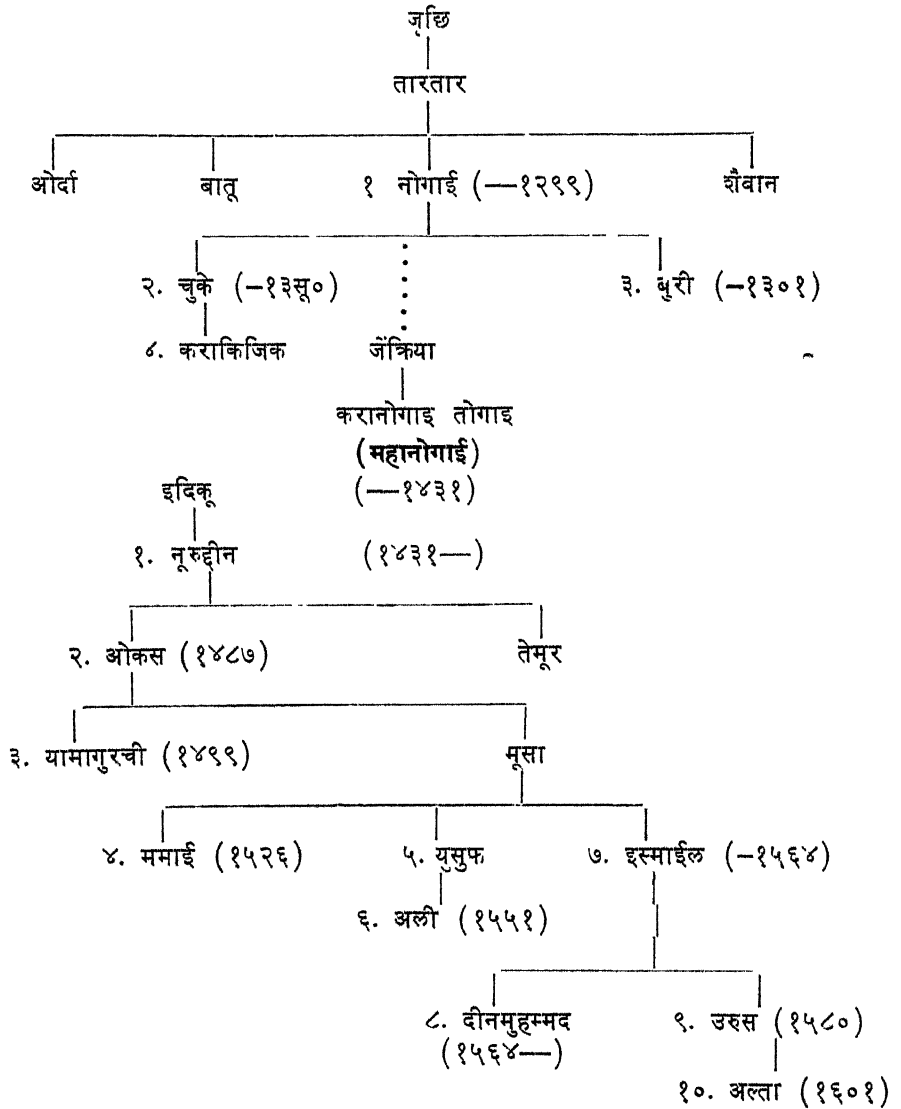
§ ३. कराकल्पक

कराकल्पक आजकल निम्न वक्षु-उपत्यका और अराल सागरके तटपर रहते हैं, जहांपर उनका सोवियत स्वायत्त गणराज्य स्थापित है। यह भी नोगाई ओर्दूकी ही शाखा थे, इसलिये यहांपर उनके इतिहासपर भी एक सरसरी नजर डालना आवश्यक है।

कराकल्पक अराल-समुद्रके पासके मैदानोंमें तथा बुखारा और खीवाके सीमातक आकर बस गये। शायद यह महानोगाइयोंके मुर्जा उरुसके पुत्र अल्ताके साथ संबंधित थे। इनके पड़ोसी इन्हें मङ्गू (चिप्टी नाकवाला) कहा करते थे। परंपरा बतलाती है, कि जब अमीर तेमूर-लंगने उनकी राजधानी वोल्गार नगरको नष्ट कर दिया, तो वह सिर-दरियाके मुहानेपर भाग आये। सूर्यकी धूपसे बचने या शोक प्रकट करनेके लिये इन्होने काली टोपी पहिननी शुरू की, जिसके कारण करा-कल्पक (काली-टोपी) इनका नाम पड़ गया। एक दूसरी भी परपरा है, जिसे कराकल्पकोंके दूत मुरादशेख

और दूमरोने ओरेनबुर्गके रूमी वोयवोदके पास कही थी : कराकल्पक लोग एक समय अस्त्राखान और कजानके बीच वोल्गाके पहाड़ी किनारोंपर रहा करते थे । जब रूसियोने कजान (१५५२ ई०) और अस्त्राखान (१५५६ ई९) के राज्योको खतम कर दिया, तो यह कबीला वहासे भाग आया। वह अपने को कराकिपचक कहा करते थे, और अपना उद्गम नोगाइयोंके अल्ता-ओर्दूसे बतलाते थे, लेकिन पडोसियोने उन्हे काली टोपीके कारण कराकल्पक कहना शुरू किया । मगुत या मंगित नामकी सार्थकना अब भी उनकी चिप्टी नाकसे है ।

१७१५ ई०में यात्री बेल वोल्गाके किनारेपर आया था। वह समाराके बारेमे लिखते हुये करा-कल्पकोका भी उल्लेख करता है · समारा (वर्तमान कुइविशियेफ) को एक खाई और धुस्सोसे किलाबंद किया गया है, जिसमे थोडे-थोड़े फासलेपर तोपोके रखनेके लिये लकड़ीके मीनार बने हुये है । यहा पूर्वके रेगिस्तानमे रहनेवाले कराकल्पको (काली टोपियो)के आक्रमणका डर रहता ह, इसीलिये यह सावधानी रखी गई ।

कराकल्पकोके पहले दो भाग हुये—

(१) **ऊपरी कराकल्पक**—यह सिरके मुहानेसे ताशकन्द तक पाये जाते थे । जाड़ोंमें इनके युर्त (डेरे) किसी निश्चित जगहपर होते, लेकिन गर्मियोमे ये चरवाही करते घूमते-फिरते ह । इनमे खानोकी उतनी नही चलती थी, जितनी कि खोजो (सत-मंहतो) की । इनमेसे अधिकाश १८वीं सदीके अन्तमे लडाकूपन छोड़कर कुछ-कुछ खेती करने लगे । कजाक इन्हे बहुत सताया करते थे, इसलिये तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दके पासवाले कराकल्पकोंने जुगारियोके कल्मकोकी अधीनता स्वीकार कर ली थी ।

(२) **निचले कराकल्पक**—कराकल्पकोंके कुछ कबीले अराल-समुद्रके तट तथा कुबान नदीके दक्षिणके प्रदेशमे रहते थे। १८वी सदीके आरम्भमे रूसियोके साथ इनका सम्पर्क हुआ। १७३२ ई०मे कजाकखान अबुल्खैरने अपने डेरेको सिरदरियाकी उपत्यकामे परिवर्तित कर दिया, और रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अपनेको इस तरह मजबूत करके निम्न-सिर-उपत्यकापर भी दावा किया। रूसी प्रतिनिधि दिमित्री ग्लादिश्येफ समारासे चलकर १७४१ ई०के अप्रल में अबुल्खैरके डेरेमे पहुचा था । उसी यात्रामे उसकी सिर और अदामतके बीचकी भूमिमे घूमनेवाले कराकल्पकोके मुखिया उबैदुल्ला, मुरादशेख, उरसनाक बातिर, तोकुम्बेतबी, उबिलाई सुल्तान और खोजा मरसेनसे मुलाकात हुई। उन्होने निम्न-कराकल्पक ओर्दूके तीस हजार परिवारोकी ओरसे सदाके लिये रूसकी अधीनता स्वीकार करते हुये कसम खाकर कुरानको चूमा। १७४२ ई० में ओरेनबुर्गमे जाकर उन्होने अपनी शपथ दुहराई। कराकल्पक अब इतने विनम्र और आज्ञाकारी साबित हुये, कि ओरेनबुर्गसे ग्लादिश्येफको उन्हे ओरेनबुर्गके पड़ोसमे आकर बसनेके लिये समझानेको भेजा गया। ग्लादिश्येफको वहां काइपखान और उसके तीन पुत्र मिले, जिन्होंने जारकी राजभक्तिकी शपथ ली। लेकिन इसका यह अर्थ नही कि अब वह अबुल्खैरके कजाकोकी अधीनतासे बिल्कुल मुक्त हो गये थे ।

१७४३ ई०मे फिलात गोर्देयेफको दुभाषिया देलनोईके साथ ओरेनबुर्गसे कराकल्पकोंके पास भेजा गया—गोर्देयेफ कराकल्पकोंकी भाषा जानता था। देलनोईको रास्तमे ही नवम्बरमें काइपखान और उरुजकुलके दूत मिले। उसने उन्हे पीतरबुर्ग भेजा, जहा दरबारमे उनकी बडी खातिर हुई और रानी एलिजाबेतने खुद दरबारमे उनसे मुलाकातकर अधीनता स्वीकारकी शपथ स्वीकार कर शत्रुओंसे रक्षा करनेका वचन दिया। लौटती यात्रामे भी ग्लादिश्येफ उनके साथ था। अबुल्खरने स्वय रूसकी अधीनता स्वीकार की थी, लेकिन वह यह नही पसद करता था, कि कराकल्पक सीधे रूसको अपना स्वामी माने। इसी बीचमें उसने अचानक हमला करके कितने ही कराकल्पकोंको मार डाला, और उनके एक खान उरुजकुलको उसके बीबी-बच्चों के साथ पकड़ ले गया। इस तरह कजाक तबतक कराकल्पकोंको सताते रहे, जबतक कि १७४८ ई० मे अबुल्खर मर नहीं गया। कजाकोंकी इन लूटपाटोंके कारण निम्न-सिर-उपत्यकामे कराकल्पकोंकी बहुत सी बस्तिया उजड़ गईं, जहां उन्होंने

नहरें बनाकर अपने खेत आबाद किये थे। कराकल्पकोंके भागनेसे यह सारी बस्तियां उजड़ गईं, और नहरें भी बंद हो गईं। १७४२ ई०में ग्लादिश्येफने उजड़े यागीकन्तकी कुछ पत्थरकी दीवारों और मीनारोंको अच्छी हालतमें देखा था।

बातिरखान, काइप—बातिरखानका भी अबुल्खैरके वंशसे संघर्ष होता रहा। बातिरके पुत्र काइपको खीवावालोंने अपना खान बनाया था, जिसके बारेमें हम आगे कहनेवाले हैं। उसीके साथ बहुत भारी संख्यामें कराकल्पक भी खीवाके राज्यमें जा निम्न वक्षु-उपत्यकामें बसने लगे, और धीरे-धीरे वहां उन्हींकी अधिकता हो गई, जिसके कारण आज वहां कराकल्पक स्वायत्त गणराज्यकी स्थापना हो सकी।

१७५० ई०में अबुल्खैरके पुत्र एरलीने कराकल्पकोंपर आक्रमण किया, लेकिन वह अपने बहुतसे साथियोंके साथ मारा गया। अगले कितने ही वर्षोंतक बातिर और उसके पुत्र काइपका कजाकोंके लघु-ओर्दूके खान नूरलीके साथ संघर्ष होता रहा, इसी कारण कराकल्पक काफी संख्यामें निम्न सिर-उपत्यका छोड़कर ताशकन्दके पास कजाकोंके महाओर्दूकी शरणमें चले गये। कजाकोंकी लूटमारके कारण १८वीं सदीके अन्ततक कराकल्पकोंने निम्न-सिरको बिल्कुल छोड़ दिया, और वह ऊपरकी ओर बढ़ते हुये यानी दरियाके पास चले गये। वहां उन्होंने अपने परिश्रमसे एक बड़ी नहर खोदी, जो पीछे सिर नदीकी एक शाखा बन आजकल यानी दरिया (नवीन नदी) के नामसे मशहूर है। कराकल्पकोंके हट जानेपर निम्न-सिर-उपत्यकामें कजाक आबाद हो गये।

हमने घुमन्तुओंके जीवनके ढंगको देखा। मधु-मक्खियोंकी तरह वह सारे कबीलेके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर थोड़े समयमें पहुंच जाते, और कितनी ही बार अपने नामोंको भी भुलाकर कोई दूसरे नाम ले लेते। कराकल्पकोंके बारेमें १९वीं सदीके मध्यमें बम्बेरीने लिखा था—

"वह वक्षुके परले तटपर गोरलानेके सामने और कुंग्रादके पासतक रहते हैं। वहां पड़ोसमें बहुत जंगल हैं। जंगलोंमें उनके पशुओंके गोठ होते हैं। उनके पास बहुत थोड़े से घोड़े होते हैं, और भेड़ तो मुश्किलसे होती हैं। कराकल्पक तुर्किस्तानमें अपनी अत्यन्त सुंदरी स्त्रियोंके लिये प्रसिद्ध हैं, लेकिन दूसरी ओर वह सबसे बड़े मूर्ख भी कहे जाते हैं। उनके तम्बुओं (परिवारों) की संख्या दस हजार है। चालीस साल पहले उन्होंने कुंग्रतोंके खिलाफ विद्रोह किया था, जिसमें मुहम्मद रहीमखांने उन्हें दबा दिया। आठ साल बाद १८५५ ई०में फिर उन्होंने जरलिगके नेतृत्वमें बीस हजार सवारोंके साथ विद्रोह किया, लेकिन कुतुलुक मुरादने उन्हें पूरी तौरसे हरा दिया।" कुइलवाइन १५५८-५९ ई० में खीवामें गया था। उसके समय पंद्रह हजार कराकल्पक अर्द्ध-घुमन्तू जीवन बिताते हुये रहते थे। राज्यने उनके ऊपर सबसे ज्यादा कर लगा रक्खा था, अतएव बिचारे बहुत गरीब थे।

रूसियोंने जब वक्षुके मुहानेको ले लिया। उस समय कराकल्पकोंके विद्रोहकी अफवाह सुनकर कर्नल इवानोफने उनके बी (सरदार) लोगोंको बुलाया, जिनमें चिमबाई भी था। जब इवानोफने अपने लोगोंकी संख्या-सूची देनेके लिये कहा, तो वह डर गये। इसपर रूसी कसाकोंने घेरकर बहुतोंको गिरफ्तार कर लिया। इस बर्तावमें रूसियोंने कराकल्पकोंके मनमें बुरा भाव पैदा कर दिया, क्योंकि वह अपने बी लोगोंको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते थे।"

स्रोत ग्रन्थ

1. History of Mongol I-III (H. H. Howorth)
2. Bambery

अध्याय ८

मुगोलिस्तानके खान

(१३२१-१५६५ ई०)

चगताई-वशसे किस तरह मुगोलिस्तानके खानोका अलग वश स्थापित हुआ, इसके बारेमें हम बतला चुके हैं। मुगोलिस्तान मुगलोका स्थान था, यह तो इसके नामसे ही पता लग जाता है, लेकिन वस्तुत: जिस भूमिको मुगोलिस्तान कहा जाने लगा, वहा मुगल तो दालमें नमकके बराबर कुछ खान और अमीर परिवारोंके रूपमे ही रह गये थे, जो भी बडी तेजीसे तुर्क बनते जा रहे थे। बाकी साधारण जनता तो तुर्क थी ही। पहिले इसी प्रदेशका नाम कराखिताई भी था, जो कि कराखिताई राजवंश (११२५-१२१८ ई०)का सूचक था। यूनसखानके शासनके आरम्भ ८८९ हि० (३०I-२०XII १४८४ ई०) में जब नगरो और खेतीको प्रोत्साहन दिया जाने लगा, तो वहा पुराने समयके कितने ही नगरो और बस्तियोके ध्वसावशेष मौजूद थे। ऊपरी मुगोलिस्तान पहाडी नदियों और झीलोका प्रदेश था। इसके मैदानी इलाकोमें बहुत अच्छी चरागाहे थी, और पहाडी इलाके जगलों और वृक्षोसे ढकी उपत्यकायें थी। पहाड बहुत ऊचे नहीं थे, इसलिये सर्दी अपनी चरम सीमा तक नही पहुचती थी, और आबोहवा बडी अच्छी थी। असली रेगिस्तान यहा वस्तुत थे ही नही, सिवाय उत्तर-पश्चिमी छोरके। इस भूमिमे नगर या गाव नही, बल्कि खुले मैदान (दश्त) थे। मुगोलिस्तान पहले किर्गिजो और बादमें कजाकोका देश बन गया, तो भी उनके ऊपर मुगोलिस्तानके खान काशगरसे शासन करते थे। १४ वी सदीके पूवार्धके एक इतिहास-लेखकने इस प्रदेशके बारेमें लिखा है—"जबसे इस प्रदेशको तारतारो (मगोलो)की तलवारोंने उजाड दिया, तबसे यहा बहुत कम बाशिदे रह गये। ध्वसावशेषों और करीब-करीब विलुप्त-सी बस्तियोंके सिवा यहां कुछ नही दिखाई पडता। दूरसे आदमीको एक अच्छा बसा हुआ नगर दिखाई पडता है, जिसके चारो तरफ सुदर हरियाली छाई हुई है, लेकिन जब पास जाते है, तो वहां बाशिदे नही बल्कि पूरी तरहसे खाली मकान मिलते हैं। यहाके सारे ही बाशिदे घुमन्तू भेडपाल और चरवाहे हे, जिनको खेती या फसल उगानेसे कोई वास्ता नही।"*

कराखिताइयोंने अपने समय इस भूमिमें बहुतसे नगर बसाये थे, जिन नगरोंमेसे कुछ बालुका-भूमिमे अब भी हों, तो कोई आश्चर्य नही। महारेगिस्तानके पासमे बसे हुये नगरोको यदि मंगोलोंने उजाड़ दिया, तो कभी-कभी बालुका-वृष्टिसे भी उनका सर्वनाश हुआ। स्वेन्-चाङने भी एक बालुका-वृष्टि का वर्णन किया है, जिसके कारण हो-लो-लो-कि-या नगर बालूके नीचे दब गया। डाक्टर बेल्लोने मुगोलिस्तानकी भूमिमे बालुका-वृष्टि द्वारा एक नगरके ध्वस होनेका वर्णन निम्न प्रकार किया है: "मजार हजरत बेगमके पासमे बालुका एक पूरा समुद्र है, जो कि उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पूर्वकी ओर बाकायदा लहरोमे आगे बढ रहा है। बालूके टीले अधिकतर दससे बीस फुट तक ऊचे हे, लेकिन कुछ पूरे सौ फुटकी छोटी पहाड़ीसे दिखाई पड़ते है, कुछ तो और भी ऊचे है। वह एक ऐसे मैदानको ढाके हुये हैं, जहां नीचे जहा-तहां कठोर मिट्टी दिखाई पडती है। यह टीले दो या तीनके समूहमे एकके पीछे एक चले गये है। लहरें वैसी ही मालूम होती है, जैसे बालुकामय तटपर समुद्रके पानीके हट जानेपर मालूम होती हैं। दक्षिण-पूर्वकी ओर इन टीलोकी शकल चद्राकार तथा कुछ खाली ढलानकी तरह होती है।

*"मस्ल-उल्-अबसार" (शहाबुद्दीन)।

रूसी यात्री प्रेजेवाल्स्कीने मुगोलिस्तानकी इसी भूमिको १९ वी सदीमें देखकर लिखा था : "इन निर्जन और निष्ठुर पीली पहाडियोंको देखकर दर्शकके मनमें बडी उदासी पैदा होती है। वहां आकाश और बालू छोड़कर और कुछ नही दिखलाई पड़ता—एक भी वनस्पति, एक भी प्राणीका कही पता नही है। पीले रंग लिये हुये खाकी रंगके गिरगिट कही-कही दिखाई पडते है, जिनके चलनेका चिह्न बालूके ऊपर पड़ जाता है। इस निर्जन बालुका-समुद्रको देखकर दिल भारी हो जाता है, कहीसे कोई आवाज नही सुनाई देती....।"

१६. (२।३।४) मुगोलिस्तान (१३२१-१५६५ ई०)

लेकिन, कभी इस निर्जन भूमिमे हरे-भरे नगर और गाव बसे थे। उन्हीके ध्वसावशेषोमें भारतीय सस्कृतिके चिह्न और भारतीय इतिहासपर प्रकाश डालनेवाली बहुत-सी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिली है।

चगताई खानका राज्य बहुत विस्तृत था। १३२१ ई० मे जब तुर्क और मगोल प्रधानताके पक्षपातियोंमे झगडा बहुत बढ गया, तो मंगोल-दलने चगताई-वशके पूर्वोत्तरीय भागको अपने हाथमें कर लिया। मुगोलिस्तानका प्रथम खान तुगलक तेमूर था, जो कि सयुक्त चगताई राज्यके खान ईसान-बुगाका पुत्र था। मुगोलिस्तानके खानोकी नामावली निम्न प्रकार है :—

१.	तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र	–१३६२ ई०
२.	इलियास, तुगलक-पुत्र	१३६२-८९ ,,
३.	खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र	१३८९-९९ ,,
४.	शमाजहान, खिजिर-पुत्र	१३९९-१४०८ ,,
५.	मुहम्मद, खिजिर-पुत्र	१४०८-१६ ,,
६.	नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र	१४१६-१८ ,,
७.	शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र	१४१८ ,,
८.	बेइस, शेरअली-पुत्र	१४१८-२८ ,,
९.	शातुक, शेरअली-पुत्र	१४२८-३४ ,,
१०.	ईसानबुगा, बेइस-पुत्र	१४३४-६२ ,,
११.	दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र	१४६२-६८ ,,
१२.	यूनस, बेइस-पुत्र	१४६८-८७ ,,
१३.	महमूद, यूनस-पुत्र	१४८७-१५०८ ,,
१४.	मन्सूर, महमूद-पुत्र	१५०८ ,,
१५.	सईद, अहमद-पुत्र	१५०८-३३ ,,
१६.	रशीद, सईद-पुत्र	१५३३-५६ ,,
१७.	अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र	१५९३ ,,
१८.	महमूद	
१९.	इस्माईल	

१. तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र (–१३६२ ई०)

चगताई-वंशके इतिहासमें हम पढ चुके है, कि किस तरह मगोल सरदारोने अपनी प्रभुता और अलग अस्तित्व कायम रखनेके लिये कोशिश करके असफल होनेपर चगताई राज्यके एक भाग को अलग कर अपना अलग खान चुना। इस भागको मंगलई-सूबे या मगोलिस्तान कहते थे—मंगलाका अर्थ सेनाका हरावल भी है। इस भूभागमें कुल्जा, सप्तनद, इस्सिकुल, दक्षिणी सप्तनद तथा काशगरसे कूचा तक सारा पूर्वी तुर्किस्तान शामिल था। मुगोलिस्तानी-वंशके संस्थापनमे सबसे अधिक हाथ अमीर पूलादचीका था। यद्यपि मगोल-अमगोलके साथ मुसलमान और अ-मुसलमानका सवाल भी उठाया गया था, लेकिन उनका पहला खान तुगलुक तेमूर भी अधिक दिनों तक अपनेको रोक नहीं सका, और अपनी प्रजा और अमीरोंकी हमदर्दी प्राप्त करनेके लिये उसे मुसलमान बनना पड़ा। तुगलक तेमूरके जन्मके बारेमें कहा जाता है, कि उसकी मां अपने पतिके मरनेके बाद एमिल खोजा दुवा-पुत्रकी पत्नी बनी। वही तुगलक तेमूर पैदा हुआ। वहासे उसे लाया गया। दूसरी कहावतके अनुसार पुलादचीने उसे पहले खानके वंशसे प्राप्त किया। ईसानबुगाकी प्रिया भार्या सातिलमिश थी, और दूसरी बीबीका नाम मनलिक था। मनलिकको गर्भिणी देखकर उसकी बडी सौतके दिलमे ईर्ष्या पैदा हुई। इसी समय ईसानबुगा मर गया, और मनलिक एमिलखोजाकी पत्नी बन गई। अमीर पुलादची दोगलतको अब एक खानकी जरूरत पड़ी। उसने मनलिक और उसके पुत्रको ढूंढ़नेके लिये ताश तेमूरको कहा। ताशने कहा—"यह बड़ी लम्बी और कठिन यात्रा होगी, इसलिये यात्राकी अच्छी तरह तैयारी करनी पड़ेगी। मै प्रार्थना करूंगा, कि हमे छ सौ बकरियां मिलें, जिसमें कि पहले हम उनका दूध

पीते रहे, पीछे एक-एकको मारकर खाते अपनी यात्रा जारी रक्खे ।" ताश तेमूर अभियानमें सफल हुआ और वह मनलिकके बच्चेको चुरा लाया । फिर वह अक्सू गया, जहापर अमीर पुलादचीने बच्चे तुगलक तेमूरको खान घोषित किया । तुगलक तेमूर केवल मगलाई-सूबेका ही नहीं, बल्कि चगताई राज्यके कुछ और भागोका भी शासक था । कहते है, जब वह कल्मक (जुगारिया) देशमे लाया गया, तो उसकी उमर सोलह सालकी थी । अठारह वर्षकी उमरमें वह खान बनाया गया । जन्म उसका ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३०) मे हुआ था । चोबीस वर्षकी उमरमें वह मुसलमान बना ।

शेख जमालुद्दीन नामक एक सूफी-सत कतकमे रहता था । उसने जुमा (शुक्र) के दिन भविष्यद्-वाणी की थी--"मै तुमसे छुट्टी लेता हू, दूसरी बार हम कयामतके दिन मिलेगे ।" उसने मस्जिदके मुअज्जनको भी साथ चलनेके लिये कहा । तीन फरसक जानेपर मुअज्जन किसी कामके लिये लौटा, और अजानके लिये मीनारपर चढकर उतरा, तो देखा : मीनार चारों ओरसे छिप गया है, बालुका-वृष्टि हो रही थी, और इतने जोरकी कि सारा नगर उससे ढक गया । थोड़ी देरमे धरतीके ऊपर उठे मीनारका थोड़ा ही सा भाग ऊपर निकला था । मुअज्जन मीनारपरसे बालूपर कूदकर भाग निकला । शेख अक्सूके पडोसमें बाइबुलमें पहुंचा । खान तुगलक तेमूरकी शिकार-पार्टी थी, जिसमें उसे जाना जरूरी था । न जानेके कारण उसे पकड़कर खानके पास ले गये । अनजान होनेसे उस ताजिकको सजा नही दी गई । उस समय खान अपने कुत्तोको सूअरका मास खिला रहा था । वह शेखसे वोला---"क्या तू इस कुत्तेसे अच्छा है, या यह कुत्ता तुझमे अच्छा है ?"

शेखने जवाब दिया---"अगर मेरे भीतर ईमान है, तो मै इस कुत्तेमे बेहतर हूं, यदि मेरेमे ईमान (इस्लाम) नही है, तो यह कुत्ता मुझसे बेहतर है ।"

इस बातको सुनकर तुगलक बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने शेखको घोड़ेपर चढाकर लौटाया । शेखकी यही करामात थी, जो कि उसके प्रभावमे आकर खानने इस्लामको स्वीकार किया ।

मगोलोंके समयसे पहले ही इलिश-एमिलमे त्यान्शान तक और बरकुलमे फरगाना और बलकाश तकके प्रदेशको कुकचा-तेङगिज कहा जाता था । इस भूमिमे मगोलोंके आनेसे पहले अच्छी आबादी थी, लेकिन १४ वी सदीके उत्तरार्धमें बस्तीवासी और घुमन्तू संस्कृतियोंका द्वंद्व चल रहा था । तुगलक तेमूरने इस्लामी सरकृतिको स्वीकार कर मंगोलोकी घुमन्तू संस्कृतिको छोड़ दिया । लेकिन उससे दो शताब्दियो पहले यहांके वासी मुसलमान नही, बल्कि बहुत कुछ बौद्ध और कुछ-कुछ नस्तोरी ईसाई थे । चगताईकी एक शाखाके उत्तराधिकारी तेमूरियोंका मुगोलिस्तानी खानोंके साथ बराबर झगडा रहता रहा । तेमूरी इन्हे चिढ़ानेके लिये जे-ते (प्रानवासी) कहा करते थे ।

१३६० ई० मे तुगलक तेमूरका अपने तुर्क-अमीरोके साथ अच्छा संबध था । तुगलक तेमूरने ७६२ हि० (११ XI १३६०---२ X १३६१ ई०) मे अन्तर्वेदपर आक्रमण किया था । उसकी मृत्युके (७६४ हि० २१ X १३६२---११ IX १३६३ ई०) बाद ही उसके पुत्र इलियास खोजाकी सेना अन्तर्वेदसे हटाई गई । तुगलक तेमूरकी कब्र अलमालिकमे अलिमतूसे आठ वेर्स्त (१¼ फरसख) और तरानचिन (तरानचिन्स्की) गांव खारिनमजारसे एक वेर्स्त पर अब भी मौजूद है ।

तुगलक तेमूर मृत्युसे पहले ही पुलादची मर गया था । उसका स्थान उसके अल्पवयस्क पुत्र खुदादादने लिया ।

२. इलियास खोजा, तुगलक-पुत्र (१३६२–८९ ई०)

समरकंदका उपराज रहकर बापकी मृत्युपर कैसे मुगोलिस्तान भागकर इलियासने गद्दी संभाली, इसे हम बतला चुके है । अमीर पुलादचीका भाई कमरुद्दीन इसके समय सर्वेसर्वा था ।

इलियास खोजाने मीराके युद्धमे तेमूरी-सेनापर विजय पाई । एक बार उसने समरकन्दको भी जा घेरा, लेकिन घोड़ोंकी महामारीके कारण उसे वहासे हटना पडा । अमीर पुलादचीके भाई अमीर कमरुद्दीनने शक्तिको अपने हाथमें रखनेके लिये एक दिन तुगलक तेमूरके अठारह पुत्रोंको मरवा

डाला। कमरुद्दीनका भतीजा अमीर खुदादाद अपने पिताके लगाये वंशके साथ सहानुभूति रखता था। उसने तुगलकके एक पुत्र खिजिर (?) खोजाको काशगर-बदख्शाके पहाड़ोंमें भेजकर छिपा दिया।

इलियासने चीनके विरुद्ध भी धर्मयुद्ध छेडा, और कराखोजा तथा तुरफानपर अधिकार कर वहाके लोगोको मुसलमान बननेके लिये मजबूर किया। इन युद्धोके समय इलियासको अनाजकी महिमा मालूम हुई, और उसने अपने भाई खिजिरसे पूछा—"क्या सेनाके लिये खाद्य-सामग्री जमा करनेके वास्ते मुगोलिस्तानमे खेती की जा सकती है?"

तेमूर-लग ७७२ हि० (२६VII१३७०–१६VI१३७१ ई०) में कोचकर तक चढ़ आया था, लेकिन उस समय वह मुगोलिस्तानमे और भीतर बढकर आक्रमण नही कर सका। १३७५ ई०के आरम्भमे वह सैरामसे प्रस्थानकर चारिनतक पहुचा। उस समय कमरुद्दीनका डेरा कोकतेपे पर्वतमे था। तैमूर-लंगके साथ सीधे लडना उसने पसंद नही किया, और बेरकेई गुरयानकी तरफ हटा, जिसके बीच मे तीन बड़ी-बड़ी नदिया पड़ती थी। इन्हीमेसे एकके किनारे पीछा करके तेमूरने उसे हराया और आगे बढ़ते बाइतकमे पहुचा। अपने तीन अमीरोंको उसने इलीके तटपर दंड दिया। तेमूर बाइतकमे ५३ दिन रहा। इस समय उसके पुत्र जहागीरने पहाड़ोमे पीछा करके कमरुद्दीन और मगोल सेनाको उगफेरमर (पूर्वी तुर्किस्तान) मे हराया। बाइतकसे तेमूर करा-कसमक (कस्तेक) डांडा होते हुये अतबाश पहुंचा। वहांसे अरपाकी द्रोणीमें जा कमरुद्दीनकी लड़कीसे अपना ब्याह कर यासी (जासी) डांड़ेसे होकर उजगेन्दको लौट गया। ख्वारेज्मकी चढाईमे तेमूरको फंसा जानकर कमरुद्दीनने १३७६ ई०में उसपर चढाई की, और अतबाश पहुचा। कमरुद्दीनने रास्तेमें उसे जा घेरा, लेकिन सेकिज-इगाचेमें बड़ी बुरी तरहसे हारकर घायल हुआ। इस विजयके बाद तेमूर-लंग अताकुर होते सिर-दरिया लौटा, जहांसे वह समरकन्द चला गया। १३७७ ई०में तेमूरने कमरुद्दीनके विरुद्ध फिर सेना भेजी, जिसने कुरातमे उसे हराया। तेमूर बड़ी सेनाके साथ स्वयं सप्तनदमे पहुंचा था। उसके हरावलने कमरुद्दीनको बुम्सकमें पाया। तेमूर कोचकर तक गया, जहांसे ओईनोग होते उजगन्द लौटा।

१३८३ ई०मे तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढ़ाई की। सप्तनदमे उसने अपनी कुछ सेना भेजी। उसकी सेना अताकुममें थी, जहां हरावल भी शत्रुको छिन्न-भिन्न करके लौट आया। अब दोनों सेनाओंको लेकर तेमूर इस्सिककुल महासरोवर होते कोकतेपे पर्वतमे पहुचा, लेकिन कमरुद्दीनका वहां कोई पता नही था, इसलिये समरकन्द लौट गया।

३. खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र (१३८९–९८)

बापके मरनेके समय खिजिर खोजा बारह वर्षका था। कमरुद्दीनके शासनकालमें खुदादादने उसे काशगर और बदख्शांके बीचके पहाड़ोंमे छिपा रक्खा। फिर बारह वर्षतक वह दक्षिण-पूर्वके सीमांतपर लोब्नोर झीलके पास रहा। जिस तरह उसके बापको खोजकर लाया गया था, उसी तरह खिजिरको भी लोबनोरसे लाकर १३८९ ई०के आसपास खान बनाया गया। इलियास और खिजिर दोनों भाई थे। दोनोंकी बाल्य-कथायें एक दूसरेसे इतनी मिला दी गई है, कि उनके बारेमें कुछ निश्चयपूर्वक कहना मुश्किल है। तो भी इतना मालूम होता है, कि इलियास शायद बहुत दिनों तक कमरुद्दीनके हाथों नही बच पाया। खिजिरसे मुगोलिस्तानकी चरागाहोंमे खेती करनेके बारेमें सलाह लेनेसे पता लगता है, कि इलियास और खिजिर दोनों भाई उस समय साथ रहते थे।

जिस साल खिजिरने गद्दी संभाली, उसी साल तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढ़ाई की। वह अल्कोशिदनासे बुरीबाश और त्यूपेलिक करक होते ओरनाक (ओजनाक या ओरतक) की ओर बढ़ा। अतकानसूरीमें जब पहुंचा, तो गर्मियोंके दिनोंमे अब भी वहां बर्फ मौजूद थी। ताउरा-अतलस और अईगिरके मैदान, उलागचारलिग होते आगे बढ चापरऐगिरमे उसने मुगोलिस्तानी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया। खिजिर खानने अंगा-त्यूरीके नेतृत्वमे तेमूरके खिलाफ सेना भेजी। अंगा-त्यूरी जब उरेंगयारमें पहुंचा, तो तेमूरने उसके विरुद्ध अपनी हरावल सेनाको भेज अपनी सेनाको कई टुकड़ियों मे करके भिन्न-भिन्न दिशाओंमें उसे घेरनेके लिये भेज दिया। तेमूर-लंग स्वयं करागुचुर तरबगताई डांड़ेके पश्चिमी भागकी ओर चला। तेमूर-पुत्र उमरशेख दूसरी सेनाके साथ अंगा-त्यूरीके पीछे कोबुक

डाड़ेकी ओर जा उसे हरानेमें सफल हुआ। अंगा-त्यूरी भागकर ककमा-ब्रूजीमें पहुंचा। तेमूरने करागुचुरमें डेरा डालकर अपनी एक सेनाको इर्तिश-उपत्यकाकी ओर भेजा, और बंदियोंको वहांसे समरकन्द भेज दिया। फिर वह एमिलगूचुरमें खानकी एक चरागाह सराय-ओर्दामें पहुंचा। एमिल-गूचूरमे वह सरायओर्दामे ठहरा। एमिलसे तेमूरने अपनी सेनाको दक्षिणी मुगोलिस्तानपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया। सभी सेनाको आगे युलदुजमें इकट्ठा होना था। युलदुजसे खिजिर खोजाके पीछे उसने उमरशेखके नेतृत्वमे एक सेना चालिश (करासर)में भेजी। फिर पूर्वी तुर्किस्तान हो ८-९ अगस्त १३८९ ई०को युलदुज लौट ३० अगस्तको समरकन्द पहुचा। इस रास्तेसे कारवां दो महीनेमें गुजरता था।

१३९० ई०मे फिर तेमूरने मुगोलिस्तानपर आक्रमण किया। ताशकन्दसे वह कमरुद्दीनका पीछा करते इर्तिशतक पहुचा। उसकी सेना ताशकन्दसे इस्सिककुल (सरोवर), कोकतेपे (पर्वत) फिरे पहाड़ी-दुर्ग अराजातू होते निश्चय ही वर्तमान अल्माअता नगरकी भूमिसे गुजरी। अलमालिक फिर इली नदी और काराताल होते, इचनीबुचनी, उकुर-कितचीके मैदानमेंसे जब तेमूर-लंग इर्तिशके तटपर पहुंचा, तो कमरुद्दीन वहासे उत्तरकी ओर भागकर त्यूलेस देशमे चला गया। इस देशमे समूरी छालवाले जानवर बहुत होते है। लौटते वक्त तेमूर अलतुन-क्युरगे और अरतक-कुल (बलखाश) सरोवरके रास्ते आया। कमरुद्दीन अपने अन्तिम जीवनमे लकवाकी बीमारीसे बेकार हो गया, और लोगोने उसे कुछ रखेलियो और थोड़े दिनोंका खाना देकर जंगलमे छोड़ दिया।

तेमूर-लंगको इन सारे अभियानोंसे बहुत फायदा नहीं हुआ। उसके प्रतिद्वंद्वी घुमन्तुओंको अपने नगरों और गावोंका मोह नहीं था, इसलिये वह तेमूरी-सेनाके सामने भागकर अपनी रक्षा कर लेते, और उसके हटते ही फिर एकत्रित हो तेमूरको परेशान करनेके लिये तैयार हो जाते। इसलिये तेमूरने अब मुगोलिस्तानके साथ अपनी नीति बदलनी चाही। इसकी खबर पाकर १३९७ ई०मे खिजिर खोजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र शमाजहानको दूत बनाकर तेमूरके दरबारमे भेजा। तेमूर-लगने उसके द्वारा उसकी बहिन तवक्कल आगासे ब्याह किया। नई रानीके आनेपर तेमूरने उसका नाम किचिक खानिम (छोटी रानी) रक्खा।

खिजिर खानके समय मुगोलिस्तानके अधिकांश कबीले मुसलमान थे।

खिजिरखान १३९९ ई०मे मरा। उसके बाद उसके चार पुत्रो शमाजहान, मुहम्मद ओगलान, शेरअली और शाहजहानके बीचमें उत्तराधिकारके लिये संघर्ष शुरू हुआ। इस समय उमरशेखका पुत्र मिर्जा अस्कन्दर मुगोलिस्तानकी सीमापर अवस्थित फरगानाका राज्यपाल था। इस झगड़ेसे फायदा उठाकर मिर्जा अस्कन्दरने अक्सू शहरको घेर लिया, जो कि चीनके व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र था। कुछ समयके लिये व्यापारके रास्ते अस्कन्दरके हाथमें आ गये। खिजिरके मरनेपर (१३९९ ई०) मुगोलिस्तानका कुछ भाग तेमूरके राज्यमें सम्मिलित कर लिया गया, जिसमें इस्सिककुल सरोवर-वाला प्रदेश भी था। तेमूर-लंगने क्षुद्र-एसिया (वर्तमान तुर्की)से लाकर काले तातारोंको इस्सिककुलके किनारे बसाया।

४. शमाजहान, खिजिर-पुत्र (१३९९–१४०८ ई०)

भाइयोंके संघर्षमे शमाजहानको सफलता मिली। यह तेमूरके जीवनका अन्तिम समय था। तेमूरके मरनेके साथ ही उसके लड़कोंमें जो झगडा पैदा हुआ, उससे फायदा उठा शमाजहानने १४०७ ई०में चीनकी मदद लेकर अन्तर्वेदपर चढ़ाई की, किन्तु १४०८ ई०में उसका देहान्त हो गया।

५. मुहम्मद, खिजिर-पुत्र (१४०८–१६ ई०)

मुहम्मद इस्लामका बहुत पक्षपाती था। इसीके शासनकालमें अधिकांश मुगल-कबीले मुसलमान हो गये। इसने शाहरुखके पास दूत भेजा था। १४१६ ई०में यह काशगरमें था। चादिरकुलके उत्तरकी ओरकी पहाड़ियोंमे इसकी बनवाई एक रबात (पाथशाला)में बड़े-बड़े पत्थर इस्तेमाल किये गये है। इतिहासकार हैदरका कहना है, कि ऐसे पत्थर कश्मीरके मंदिरोंमें मिलते हैं : रबातका फाटक

चालीस हाथ ऊंचा है। फाटकके भीतर घुसकर दाहिनी ओर घूमनेपर साठ हाथ लम्बा एक रास्ता मिलता है। फिर चालीस हाथका एक गुम्बद है, जो बडा ही सुदर और सुडौल है। गुम्बदके चारों ओर चलनेका स्थान है, जिसके चारों तरफ और रास्तेमे भी कितने ही सुदर कमरे बने हुये हैं। पश्चिम ओर तीस हाथ ऊंची एक मस्जिद है, जिसमें बीससे अधिक द्वार हैं। सारी इमारत पत्थरकी है। दरवाजोंके ऊपर विशाल शिलाखंड रखे हैं, जिन्हे कश्मीरके मंदिरके देखनेसे पहले हैदर अद्भुत चीज समझता था।

डाक्टर लेंडसेलने शायद हैदरलिखित इतिहास 'तारीखे-रशीदी' से उद्धृत डाक्टर बेलोका उद्धरण देते हुये लिखा है—असली बात यह है, कि महमूदखानने "ताश-रबाद" नामक एक प्राचीन हिंदू-मंदिरको मस्जिद बना दिया, जो कि चादरकुलवाले डांड़ेके रास्तेपर काशगर राजधानीको किर्गिजोंसे बचानेके लिये बने दुर्गमें बना था। हैदर ('तारीखे-रशीदी' कार)का कहना है, कि वस्तुतः महमूदखानने बड़े-बड़े पत्थरोंकी यह रबात बनवाई।

यह रबात चादरकुलसे थोड़ी दूर अलमाती, बेरनीसे काशगरको नारिनसे होकर जानेवाले मुख्य रास्तेपर अवस्थित है, जिसे बहुतसे युरोपीय यात्रियोने देखा है। डाक्टर सीलेडने लिखा है—"यात्रीको भारी पत्थरोंसे बनी हुई अड़तालीस कदम लम्बी और छत्तीस कदम चौड़ी इमारतको देखकर आश्चर्य हुये बिना नही रहता। इसकी छत समतल है, जिसके बीचसे पच्चीस फुट ऊंचा आधा नष्टसा गुम्बद उठा हुआ है। दरवाजा काफी ऊंचा और मेहराबी है, जिसके द्वारा भीतर जाया जा सकता है। भीतर खिड़कियां नही हैं। गुम्बदके नीचे एक कमरा या शाला है, जिसकी बगलमे नौ फुट ऊचाईवाली कोठरियां चारों दिशाओंमे लातिनी (रोमन) सलेबकी शकलमे है।....कोठरिया नीचे वर्गाकार और ऊपर गोल है। उनके भीतर पूरा अंधेरा छाया रहता है, सिवाय उन कोठरियोंके जिनकी छते गिर पड़ी है। इनके द्वार इतने नीचे है, कि आदमीको बहुत झुककर भीतर जाना पड़ता है। कोठरियोंके भीतर किसी गवाक्ष या सोने-बैठनेकी जगह नही है। इस इमारतमें रसोईघर या चूल्हेका कही पता नही। इमारत पास-पड़ोसमे पाये जानेवाले पत्थरोंकी बनी हुई है। बीचके हॉलमें पलस्तरका थोड़ा-थोड़ा चिह्न मिलता है, लेकिन किसी तरहकी सजावट नही है।" यह यात्री लिखता है, कि मध्य-एसियाके कारवां-सरायों या रबातोंसे इस इमारतका कोई सादृश्य नही है। कोई-कोई इसे ईसाई-मठ बतलाते है, और कोई-कोई हिंदू (बौद्ध)-विहार। दोनों ही एक समय इस भूमिपर बहुत प्रभावशाली धर्म थे, इसलिये इसका बौद्ध-विहार या नेस्तोरीमठ होना आश्चर्यकी बात नहीं है। महमूदखानने ऐसी विचित्र इमारत स्वय बनाई हो, यह विश्वासकी बात नही जंचती।

६. नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र (१४१६–१८ ई०)

१४१६ ई०में खान बननेपर इसके पास चीन-सम्राट् और शाहरुखके दूत आये। इसका शासन-काल थोड़ा रहा, और १४१८ ई०के आरम्भमें शेरअलीके पुत्र बेइस ओगलानने इसे खतम करके गद्दी संभाल ली।

७. शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र (१४१० ई०)

शेर मुहम्मद शाहरुख मिर्जाका समकालीन था। इसका भतीजा बेइस विद्रोही बनकर कजाकों (लुटेरों) का जीवन बिता स्वतंत्र खान बन गया। बेइसके लूट-मारमें बहुतसे मंगोल तरुण भी शामिल थे, जिनमे इतिहासकार हैदरका दादा मीर सैयदअली भी था। हैदरने बड़े अभिमानके साथ लिखा है—"मै बेइसखानका नाती हूं, और बापकी तरफ अमीर खुदादाद-पौत्र सैयद अहमद मिर्जा-पुत्र अमीर सैयदअली मेरा दादा था। अमीर खुदादादने अपने पुत्र सयद अहमदको काशगरका राज्यपाल बनाकर भेजा था। उस समय वहां खोजा शरीफकी बहुत चलती थी। उसने अधिकार छिन जानेसे नाराज होकर काशगरको उलुगबेगके हाथमे दे दिया। इसपर सैयद अहमद मिर्जाको अपने बेटे अमीर सैयदअलीके साथ काशगर छोड़कर मुगोलिस्तानकी तरफ भागना पड़ा, जहां अहमद जल्दी ही मर गया।"

८. बेइस, शेरअली-पुत्र (१४१८-२८ ई०)

शेरमुहम्मदके समय यह अलग खान बन बैठा, पर चैनसे रहनेका मौका नही मिला। १४२० ई० मे मुहम्मदखान-पुत्र शेरमुहम्मदसे इसका सघर्ष हुआ, और अन्तमे शेरमुहम्मदको समरकन्द भाग जाना पडा। जहा कुछ समय बंदी रखकर उलुगबेगने उसे मुक्त कर दिया और १४२१ ई० मे वह मुगोलिस्तान लौटा। बेइसने अपनेको पक्का मुसलमान साबित करनेके लिये मुसलमानों के ऊपर आक्रमण करनेकी मनाही कर दी थी। लेकिन घुमन्तुओंके लिये लूट-मारका कोई रास्ता तो चाहिये, इसलिये उसने बौद्ध कल्मकोंको अपनी जहादका शिकार बनाया। पर, कल्मक भी बहुत तगड़े थे। कई बार उन्होंने बेइसको हराया। मिंगलकके युद्धमे पकड़कर उन्होंने उसे अपने राजा ईसन थैसीके पास भेज दिया। उसने घोड़ेसे उतरकर थैसीको सलाम नही किया, तो भी मगोलोंको छिङ-गिस्के पवित्र वंशका ख्याल था, इसलिये उन्होंने बेइसको छोड़ दिया। दूसरा युद्ध उसका कब्राका के पास मुगोलिस्तानमे हुआ, जिसमे मुश्किलसे जान बचाकर वह भाग पाया। एक और युद्ध उसने तुर्फानके पास ईसन थैसीसे किया, जिसमे बेइस बंदी हुआ, और उसने अपनी बहिन मखदूम खानिमको देकर छुट्टी पाई। बेइसने कल्मकोंके साथ छोटे-बडे एकसठ युद्ध किये, जिसमें सिर्फ एकमे सफल हुआ। बेइस शरीरसे बहुत बलवान् था। हर साल वह तुर्फान, तरिम-उपत्यका, लोब और कातकके प्रदेशोंमे जंगली ऊंटोके शिकारके लिये जाता। "खान स्वयं गर्मियोंमें अपने दासोंकी मददसे घड़ोंमे पानी निकालकर जमीनकी सिंचाई करता।"

अमीर खुदादाद अब बानवे सालका हो गया था। वह हज करनेके लिये जाना चाहता था, लेकिन मौका नही पा रहा था। इसपर बूढेने उलुगबेगको बुलाया, लेकिन उलुगबेगको मगोलोके हाथो बडी मुसीबत उठानी पड़ी। जब वह मुगोलिस्तानके प्रसिद्ध नगर चूमें पहुंचा, तो अमीर खुदादाद सेना छोड-कर मिर्जा उलुगबेगसे जा मिला। मुगोल हराकर तितर-बितर कर दिये गये। खुदादाद उलुगबेगके साथ समरकन्द पहुचा। तेमूरियोंको छिङ-गिस् खानके तूरा (यासाक)के जाननेकी बडी उत्सुकता थी। शायद उनको मालूम नही था, कि छिङ-गिस्के आदेशों (यासाक)को चीनी और मगोल भाषाओंमें लिखकर पहिले हीसे सुरक्षित रक्खा गया है। उस समय समझा जाता था, कि छिङ-गिस्का तूरा कुछ बडे-बूढ़ोने अपनी स्मृतियोमें सुरक्षित रख छोड़ा है। अमीर खुदादाद छिङ-गिस्के तूराका नही, बल्कि इस्लामका पक्षपाती था। उसने उलुगबेगसे कहा—"हमने कुख्यात छिङगिसी तूराको बिल्कुल छोड़ शरीयतको स्वीकार किया है; लेकिन, यदि मिर्जा उलुगबेग तूराको पसद करते हैं, तो मै उन्हे ऐसे सिखलाऊंगा, जिसमें कि वह शरीयतको छोड़कर तूराको स्वीकार करें।" मिर्जा उलुगबेगने शायद अपनी वैज्ञानिक-बुद्धिसे बूढ़ेको परख लिया हो, इसलिये उसने तूरा सीखनेका ख्याल छोड दिया।

उलुगबेग अपने इस आक्रमणमे चू, और चारिनके रास्ते गया था। खुदादाद जहा उसे आकर मिला, उसी स्थान पर मई १४२५ ई०मे शेरमुहम्मदकी हार हुई। उलुगकी सेनाने शेरमुहम्मदका पीछा इली नदीतक किया, यद्यपि स्वयं उलुगबेग युलदुजमे रहा। वहासे लौटते वक्त रास्तेमें करशी स्थानमें उसने प्रसिद्ध कोक-ताश (नील-पाषाण)को पाया। तेमूर भी इस कोक-ताश (नीलपाषाण)को समरकन्द ले जानेकी बड़ी इच्छा रखता था, जिसको पूर्ण करनेका अवसर उसके पोतेको मिला।

शेरमुहम्मद वस्तुतः बेइसका समकालीन खान था। मुगोलिस्तानका कुछ भाग इसके हाथमे था। उसके मरनेपर उसका राज्य भी बेइसके हाथमे चला गया। बेइस खानको १४२८ ई०में इस्सिककुलके तटपर शातुककी शहसे कत्ल कर दिया गया। उलुगबेग शातुकको खान बनाना चाहता था, इसलिये बेइसके विनाशमें उसकी भी सहमति थी। यह भी कहा जाता है कि बेइस घोड़ा कुदाते हुये स्वयं गिर गया, और गलतीसे अपने ही आदमियोंके तीरका शिकार हुआ।

बेइसके जमानेसे काफिर (बौद्ध) मंगोलों—चोरोस, खोशोत, तोरगोत और खाइत—का पूर्वसे मुगोलिस्तानपर आक्रमण शुरू हुआ। १३९९ ई०में ओइरोत राजा उगेची खासागने मंगोलोंके खान

एलबेकको मार डाला। उसके बाद ओइरोतोंकी प्रधानता शुरू हुई। १४०८ ई०में उन्होंने उलजई-तिमूरको विशबालिकमें कआनकी गद्दीपर बैठाया। इसी समय मुगोलिस्तानके कुछ हिस्सेपर पूर्वी-मगोलोंने अधिकार कर लिया। इन्ही ओइरोतोंको मुसलमान लेखक कल्मख (कलमक) कहते है। मुहम्मदखान उनसे लडनेके लिये तैयार हुआ, और उसका प्रतिद्वद्वी बेइस चीनी लेखकोंके अनुसार पूर्वी तुर्किस्तानसे अपनी मुख्य सेना ले पश्चिममें सप्तनदमें इली-तटपर ईलीबालिक पहुचा।

१५ वी सदीके यात्रियोके अनुसार मुगोलिस्तान उस समय मुख्यत घुमन्तुओंका देश था, जो तम्बुओं मे रहते और घोडोके मास और कूमिसपर गुजारा करते। उनमेसे कुछ बौद्ध ओइरोतोंकी तरफ थे, और कुछ मुसलमानोकी तरफ। इलीके तटपर ही बेइस खानको कई बार ओइरोनोंके सरदार ईसन थैसीसे लड़ना पडा।

९. शातुक, शेरअली-पुत्र (१४२८–३४ ई०)

शातुक समरकन्दमे रहता था, जहासे उलुगबेगने उसे बेइससे लड़नेके लिये मुगोलिस्तान भेजा। मुगोलिस्तानमे शातुकके पक्षपाती अमीर कम थे, इसलिये वह काशगर गया, जहापर खुदादादके पौत्र कराकुल अहमद मिर्जाने उसे हराकर मार डाला। इसपर उलुगबेगने एक सेना भेजी, जो अहमद मिर्जाको पकड़कर समरकन्द ले गई, जहा उसके दो टुकड़े कर दिये गये।

शातुकके मरनेके बाद मंगोल अमीरोंके दो दल हो गये थे, एक बेइसके बड़े लडके यूनसको खान बनाना चाहता था, और दूसरा बेइसके दूसरे पुत्र एसेनबुकाको। दोनो ही अल्पवयस्क थे। एसेनबुकाकी पार्टी ज्यादा मजबूत थी, इसलिये वह गद्दीपर बैठा। यूनस अपने आदमियोके साथ उलुगबेगके दरबारमें चला गया, जिसने उसे ईरान भेज दिया। बाबरके अनुसार यह घटना जून १४३४ ई०की है।

१०. एसेनबुगा, ईसनबुगा, बेइस-पुत्र (१४३४–६२ ई०)

एसेनबुगा अमीरोके हाथका खिलौना था। उसके प्रभावशाली अमीरोंमे खुदादाद-पुत्र मीर मुहम्मदशाह (अतबाश) और मीर करिमबेर्दी थे। करिमबेर्दीने अपने लिये अलाबुगमें एक दुर्ग बनवाया, जहांसे वह उलुगबेगशासित फरगानामे लूट-मार किया करता था। तीसरा अमीर मीर हकबेर्दी बेकिचेक था, जिसने इस्सिककुल सरोवरके एक द्वीप कोइसुइमे अपना गढ बनाया था। कल्मकोंका भी उत्तर-पूर्वसे बराबर आक्रमण होता रहता था। एसेन एक बार स्वय तुर्किस्तान शहर और सैरामपर आक्रमण करने गया।

मुगोलिस्तानी उधर अन्तर्वेदपर लूट-मार करने जाते, तो कल्मक उन्हे लूटते-पाटते इस्सिक्कुलतक पहुचते—कुछ साल पीछे तो वह सिर नदीतक पहुचने लगे।

ईसानबुगाके खान बननेके बाद यूनस तीस हजार परिवारोवाले ओर्दू और ईराजान तथा मीरकतुर्कमानके साथ उलुगबेगके पास पहुंचा था। उलुगबेगने उसे अपने पिता शाहरुखके पास भेज दिया, जिसने यूनसके साथ पुत्रवत् व्यवहार किया। यूनस बारह सालका था, जब कि यज्द (ईरान) मे उसने मौलाना शरफुद्दीन यज्दीसे पढ़ना शुरू किया। मौलानाके मरनेके समय वह चौबीस सालका था। फिर वह यज्द छोड़कर यात्रापर निकला, और इराक, अरब, आजुर्बाइजान होकर शीराजमे रहने लगा। एकतीस सालकी उमर तक वह मुगोलिस्तानसे बाहर रहा।

यूनसके चले जानेपर ईसनबुगा सारे मुगोलिस्तानका खान था। शासन मजबूत हो जानेपर अमीर सैयद अलीने काशगर आनेकी आज्ञा मांगी। यह कह ही चुके है, कि काशगरको खोजा शरीफ काशगरीने उलुगबेगको दे दिया था, जिसकी ओरसे अमीर सुल्तान मलिक दुलादाई राज्यपाल नियुक्त हुआ, उसके बाद हाजी मुहम्मद शाइस्ता फिर पीर मुहम्मद बरलस राज्यपाल हुये। सैयद अलीने खानसे कहा—"मै देखना चाहता हूं, कि क्या मैं अपने परिवारके पुराने इलाकेपर फिरसे अधिकार स्थापित कर सकता हूं, जिससे कि चालीस वर्षसे हम वंचित है। यदि मै सफल नही हुआ, तो आप मुझे धिक्कार सकते हैं।" एसनबुकाने अपनी सहमति दे दी।

इस समय मगल्जाई सूयाह् (काशगरिया) का अधिकांश भाग दोगलतोंके हाथमें था, लेकिन अन्दिजान और काशगरपर समरकन्दके शासक उलुगबेगका अधिकार था । इस्सिक्कुलका पहाडी इलाका सघर्षोंका अखाड़ा बन गया था । बाकी इलाके दोगलत अमीरोके हाथमें थे । अमीर सैयद अली अक्सूसे अपने भाइयोंको भगा वहा अपने परिवारको रख सात हजार सेना लेकर काशगरके ऊपर चढ़ा । पहली ही भिड़न्तमें हाजी मुहम्मद शाइस्ता भाग निकला । मुगोलिस्तानियोने चगताइयों (उलुगबेगकी सेना) का पीछा किया, लेकिन अभी भी काशगरके किलेमे दुश्मन मौजूद था—शाइस्ताने वहा मोर्चाबंदी कर रक्खी थी । अमीर सैयद अलीने नगरपर अधिकार पा आसपासके इलाकोंको उजाड़ना शुरू किया । उलुगबेगके पास समरकन्द गुहार गई, लेकिन वह ऐसी स्थितिमे नही था, कि सेनाकी मदद भेजता । अमीर सैयद अलीने जब तीसरे वर्ष काशगरपर चढ़ाई की, तो लोगोंने तग आकर खोजा शरीफसे कहा—"हमने लगातार तीन वर्षतक फसल गवा दी । अगर इस सालकी फसल भी हाथसे चली गई, तो देशमे भारी अकाल पड़ेगा ।" लोगोंने पीर मुहम्मद बरलसको पकड़कर अमीर सैयद अलीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर काशगरके भीतर प्रवेश किया, और चौबीस सालतक वहां राज्य किया । हैदरके अनुसार उसने कृषि और पशु-पालनके ऊपर बहुत ध्यान दिया । वह तीन पुत्र और दो लडकिया छोड़कर मरा । इन्ही पुत्रोमेंसे एक "तारीखे-रशीदी" का लेखक मुहम्मद हैदर मिर्जा था ।

ईसानबुगाकी तरुणाईके कारण अमीर उसका बहुत मान-सम्मान नही करते थे । उस समय तुर्फानके उइगुरोंके अमीर तेमूरका बहुत मान था, जिससे दूसरे अमीर डाह करने लगे, और एक दिन खानके सामने ही उन्होने पकड़कर तेमूरकी चोटी काट डाली । अमीर सैयद अलीने जब यह खबर सुनी, तो उसने ईसानबुगा खानको अकबाससे ले आकर अक्सूका राज्यपाल बना दिया । चोटी काटनेसे यह मालूम होगा, कि अभी उइगुरोंमें गैर-मुस्लिम (बौद्ध) भी थे । जान पडता है, मुस्लिमोंसे अलग करनेके लिये चुटियाका चिह्न समकालीन भारतमे ही नही, बल्कि मध्य-एसियामे भी था । चीनियोंसे जबर्दस्ती मंचूओंने-चोटी रखवाई थी, किन्तु मंगोल गृहस्थोंकी चोटी तो मैने अपनी आखो १९३५ ई० में खैलरके पास देखी । जब उक्रइनके लोग तुर्की सुल्तानके अधीन थे, उस समय वहां भी चोटी ईसाइयों का और दाढी मुसलमानोंका चिह्न था ।

ईसानबुगाके समय अमीरोकी मनमानी चलती रही । दुगलत कबीलेके मीर करीमबर्दीने मुगोलिस्तानकी सीमांतपर अलाबुगाकी पहाडीपर अपने किले बनाये थे, जहांसे वह फरगना अन्दि-जानकी ओर मुसलमानोंको लूटने जाता । दूसरा अमीर मीर हकबेर्दी बेगजिकने इस्सिक्कुलके टापू कुई-सुईमे किला बनाकर कलमखोसे बचनेके लिये वहां अपने परिवारको रक्खा था । जारा और बारिनष कबीलोंके अमीर ईसान थैशीके पुत्र अमासाजी थैशीका साथ देते थे । ईसान थैशी कल्मक-भूमिका स्वामी था । कालूजी, बलगाजी और दूसरे कितने ही कबीले कजाक-खान अबुल्खैर (तुर्किस्तान) के साथ हो गये थे ।

ईसानबुगाके अक्सूमें जम जानेपर धीरे-धीरे उसके अमीर भी उसके पास जमा होने लगे । खान भी उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था । जब शक्ति मजबूत हो गई, तो ईसानबुगाने ८५५ हि० (१४५४ ई०) में एक साथ ही आक्रमण करके सैराम, तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दको लूट-मारकर बरबाद कर दिया । इस समय बाबरका दादा सुल्तान अबूसईद मिर्जा अन्तर्वेद (पश्चिमी तुर्किस्तान) का बादशाह था । अबूसईदने खानका पीछा किया, और उसे यंगी—जिसे इतिहासकी पुस्तकोंमें तराज कहा जाता है—में जा पकड़ा । मुगल बिना युद्ध किये ही भाग गये । अबूसईद अन्तर्वेद लौट गया, लेकिन जब वह खुरासानकी ओर गया, तो फिर मुगोलिस्तानियोंने हमला कर दिया । ईसानबुगाके अन्दिजानमें पहुचनेकी बात सुनकर अबूसईदके सेनापति मिर्जा अली कूचुकने भीतरी किलेको मजबूत कर दिया था, लेकिन बाहरी किले पर ईसानबुगाका अधिकार हो गया । अन्तमें सुलह हुई । खान सारे अन्दिजान इलाकेपर अधिकार करके लौट गया । सुल्तान अबूसईदको बड़ी परेशानी थी । यदि वह मुगोलिस्तान पर चढ़ाई करता, तो खान अपने देशके दूसरे छोरपर चला जाता, जहांपर उसका पीछा करना समर-कन्दकी सेनाके लिये बहुत मुश्किल था । जब अबूसईदकी सेना लौटती, तो खान उसकी पीठपर होता ।

हर समय मुकाबिलेके लिये सेना भेजना सम्भव नही था। अबूसईदकी जैसी परेशानी घुमन्तुओंके साथ उससे डेढ सहस्राब्दी पहलेके दूसरे राजाओंके सामने भी आती रही।

मुगोलिस्तानमे फंसे होनेके कारण अबूसईद इराकपर चढाई नही कर पाता था। अन्तमे अबूसईदको एक ही रास्ता दिखलाई पड़ा, कि यूनसको ईरानसे बुलाकर उसके भाईके खिलाफ भिड़ा दिया जाय। उसने ऐसा ही किया। इस समय दश्तेकिपचकपर अबुल्खैर खानका मजबूत शासन था। इस कजाक खानसे हारकर जू-छि-वंशज जानीबेग खान और गिराई खान मुगोलिस्तानमे चले गये। अबुल्खैरके मरनेके बाद उसका उज्बेक-कजाक उलुस आपसी झगडोंके कारण छिन्न-भिन्न हो गया, और उनमेंसे अधिकांश जाकर गिराई और ज़ानीबेग खानके ओर्दूमे मिल गये। अब इनकी संख्या दो लाख थी। इसी समय उनके ओर्दूको उज्बेक-कजाकका नाम दिया गया, यह कह आये है। कजाक-सुल्तान ८७० हि० (२४ VIII १४६५- १५ VII १४६६ ई०) से शासन करने लगे, और ९४० हि० (२३ VII १५३३–१३ VI १५३४ ई०) तक उज्बेकिस्तान (किपचक-भूमि)के अधिकांश हिस्सेपर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। गिराई खानके बाद बेरेदक-पुत्र फिर जानीबेग खानके पुत्र कासिम खान हुआ। कासिम खानने सारे दश्ते-किपचकको जीत लिया, यह हम पहले बतला चुके है। हैदरके अनुसार उसकी सेना हजार-हजार (दस लाख) से ज्यादा थी, और जू-छि खान छोड़कर इतना बडा खान उस भूमिमें और कोई नहीं हुआ। कासिमके बाद उसका पुत्र मिमेश खान फिर उसका पुत्र ताहिर खान हुये। ताहिरके समयसे कजाकोकी शक्ति कमजोर होने लगी। ताहिरके बाद उसका भाई बिरलस था, जिसके समय उसका उलुस बीस हजार कजाकोंका रह गया था। ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) मे बिरलसके मरनेपर कजाक बिल्कुल लुप्त हो गये। ईसानबुगाके समयसे रशीद खानके समय (१५३३-६५ ई०)तक कजाकों और मुगलोंके बीच अच्छा संबध रहा।

हैदरकी तरह मध्य-एसियाके किसी कबीलेके लुप्त होनेकी बातका अर्थ यही है, कि उनमें फिर नई गुटबदी हो गई।

अमासची थैची (थैशी) और उजतिमूर थैचीने १४५२ ई० और १४५५ ई० के बीच (दूसरी परंपराके अनुसार १४३७ ई० मे) सिर-दरियाके तटपर उज्बेक-कजाकोंको बुरी तरहसे हराया। इस प्रकार अल्ताईके पासवाले कल्मक अब सिर-दरियाके तटतक पहुंचने लगे। १४५९ ई०के अन्तमें सुल्तान अबूसईदने हिरातमे कल्मक-दूतसे भेंट की। मगोलोके आक्रमणका उत्तर देनेके लिये अबूसईदने मुगोलिस्तानपर चढ़ाई कर उन्हें अशपारमें हराया।

१४५६ ई० मे अबूसईदने यूनसको मुगोलिस्तानमे लाकर बैठाया, किन्तु उसे हारकर फरगाना और सप्तनदकी सीमापर अवस्थित जीतीकेदमें भागना पड़ा, जिसे कि अबूसईदने यूनसको दिया था।

एसेनबुगा १४६२ ई०मे मरा।

११. दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र (१४६२–६८ ई०)

ईसानबुगाके मरनेके बाद सत्रह वर्षकी अवस्थामे उसका पुत्र दोस्तमुहम्मद अक्सूमे बापकी गद्दी पर बैठा। यह बड़ा ही सनकी-सा तरुण था। इसने यारकन्द और काशगरपर चढाई की, और काशगरको लूटकर अक्सू लौट गया। मुहम्मद हैदर मिर्जा (इतिहासकार) इससे नाराज होकर यूनस खानसे जा मिला। थोड़े ही समय बाद दोस्तमुहम्मदने अपनी सौतेली मांपर आशिक हो मुल्लोसे ब्याह करनेके अनुकूल फतवा मागा। इन्कार करनेपर सात मौलवियोंको उसने मरवा डाला। आठवें मौलवी मुहम्मद अत्तारकी बारी आई। शराबमें मदहोश और हाथमें तलवार लिये हुये उसने मौलवीसे पूछा—"मैं अपनी मांसे ब्याह करना चाहता हूं। यह विहित है या नही?" अत्तार अपने समयके पूर्वी तुर्किस्तानका बहुत ही धार्मिक और अत्यन्त विद्वान् दरबेश था, उसने खानसे कहा—"तुम्हारे जैसोंके लिये यह विहित है।" खानने तुरंत ब्याहकी तैयारी कर दी। हैदरके अनुसार स्वप्नमे उसके पिताने उसे फटकारते हुये कहा—"ओ अभागे, एक सौ वर्ष तक मुसलमान रहनेके बाद तू काफिर बनना चाहता है।" मंगोलोंमें सौतेली मांको मां नही मानते थे, और उनमे ऐसा ब्याह होता रहता था। शायद यही समझकर दोस्तमुहम्मदको सौतेली मांके ब्याहको शरीयतसे विहित करानेकी इच्छा हुई।

चिरागकुश (दीपबुझाव) संप्रदाय—दोस्तमुहम्मद खान (१४६१–६८ ई०) की लम्पटताके बारेमे सुनते वक्त यह भी याद रखना चाहिये, कि हैदरके अनुसार दोस्तमुहम्मदसे सौ वर्ष पीछे भी बदख्शांमें एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसे 'चिरागकुश' कहते थे—"इस मतका बदख्शामें सस्थापक शाह राजीउद्दीन था। उसके अनुयायी जिस किसी अजनबीको पा उसे मार डालनेको मुक्तिका रास्ता मानते थे। कोहिस्तान (पामीर)के विधर्मियोमें राजी बडा ही पापी था। बदख्शांके अधिकाश लोग इसके ही अनुयायी है। उनके लिये अपने नजदीकी सबधियोंसे व्यभिचार करना वैध है, उसके लिये विवाह करनेकी भी कोई अवश्यकता नही। अगर कोई किसीके साथ यौन-संबंध करना चाहता, तो बेटा या मा किसीसे भी प्रसग करना बिल्कुल वैध है। उनमे यह नियम है, कि एक दूसरेकी स्त्री और सम्पत्तिका उपभोग करे।" हैदरका यहा अभिप्राय शायद बदख्शाके इस्माइलियोंसे है। इस्माइली शीयोंका एक सम्प्रदाय है। ये लोग छठे इमाम जाफर सादिकके ज्येष्ठ पुत्र इस्माईलको वास्तविक उत्तराधिकारी तथा अन्तिम इमाम मानते है, जब कि दूसरे शीया इस्माईलके भाई मूसा तथा पांच और पीछेके दूसरे—कुल बारह इमामोको मानते हैं। इन्ही इस्माइलियोंके गुरु आगा खां हैं। सोवियत शासनकी स्थापना (१९१८ ई०) से पहिले तक पामीरके इस इलाकेमे 'चिरागकुश' इस्माइलियोंकी काफी सख्या थी—अफगानिस्तानके इलाकेमे शायद वह अब भी हैं।

चालीस सालकी उमरमे छ दिन बीमार रहकर ८७३ हि० (२२ VII १४६८–१२ VI १४६९ ई०) मे दोस्तमुहम्मद मर गया। उसके पुत्र सुल्तान ओगलानको पकड़कर तुर्फान और चालिश (करासर) ले गये। इस समय यूनसको मौका मिला और उसने आकर अक्सूको ले लिया।

१२. यूनस, बेइस-पुत्र (१४६८–८७ ई०)

एसन (ईसन) बुगाके मरनेके बाद वस्तुतः मुगोलिस्तानका राज्य दो भागोंमे विभक्त हो गया था। ८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) तक अक्सू और पूर्ववाले प्रदेशमे एसनबुगाके पुत्र दोस्तमुहम्मदका शासन था, और पश्चिमी भाग पर यूनसका। दोस्तमुहम्मदके बाद केबेक-सुल्तान चार साल पीछे तक राज्य करता रहा, जिसके सिरको काटकर उसके ही आदमियोंने यूनसके पास भेज दिया। इस प्रकार १४७२ ई०में यूनस सारे राज्यका स्वामी बन गया।

यूनसका जन्म ८१८ या ८१९ हि० (१४१५ या १४१७ ई०) मे हुआ था, और जैसा कि पहले बतलाया, बचपनमें ही वह ईरान चला गया, जहां उसे शरफुद्दीन यज्दी जैसे प्रसिद्ध इतिहासलेखक और विद्वान्के पास शिक्षा प्राप्त करनेका अवसर मिला। उसे घुमन्तू-जीवन पसद नही था। दोस्त मुहम्मद खानके मरनेपर यूनसको मैदान खाली मिला। वह अक्सूपर अधिकार करके वहीं रहना चाहता था। शायद वह केबेक-सुल्तान ओगलानके साथ झगड़ा न करता, यदि उसे डर न होता, कि उसके ओर्दूके लोगोंमेंसे कितने ही केबेककी ओर चले जायेंगे।

८ फर्वरी १४६९ ई०मे तेमूरी सुल्तान अबूसईदके मरनेपर उसका राज्य अलग-अलग शाह-जादोमे बट गया—खुरासानका शासक सुल्तान हुसेन मिर्जा हुआ, समरकन्दका अहमद मिर्जा, हिसार-कुंदुज-बदख्शाका सुल्तान महमूद, और अन्दिजान-फरगानाका वली (राज्यपाल) बाबरका पिता उमर शेख मिर्जा। यूनसने मुगोलिस्तान लौटनेपर तीनोंको अपना दामाद बनाया। अपनी लड़की मेहरे-निगार खानम अहमद मिर्जाको दी, कुतुलुग निगार उमरशेख मिर्जाको। इसी कुतुलुग निगार खानमसे बाबर पैदा हुआ। ताशकन्दका वली (राज्यपाल) शेख जमाल सुल्तान अहमद मिर्जा समर-कन्दके अधीन रहा।

यूनसको कल्मकोका झगड़ा उत्तराधिकारमे मिला था। १४७२ ई०मे कल्मक-सेनापति अमा-सांजी (इस्सनपुत्र) थैशीने मुगोलिस्तानमे आकर इली-तटपर यूनसको हराया, जिसपर यूनसकी सेना तुर्किस्तान प्रदेश (सिर-दरिया)की ओर भागी, और वहीं उसने जाड़ा बिताया। मंगोल करातुकाई सिर-तटतक पहुचे। उस समय कजाक खान गिराई (कराई) और जानीबेगको भगाकर अबुल्-खैरका पुत्र बूरुंज ओगलान तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)का शासक था। वह यूनससे लड़ने गया था। उस समय उसे शिकारमे अनुपस्थित पा उसके ओर्दूके साठ हजार परिवारोंको पकड़ लिया। डेरेमें कोई

नही था, इसलिये बिना विरोध हीके बूरुज ओगलानने सबपर अधिकार कर लिया। जब यह खबर यूनसको मिली, तो वह सींग बजवाकर जल्दी-जल्दी लौटा, और जमी हुई सिर नदीके पार हो गया। बूरुजने जब आवाज सुनी, तो उसने भी जल्दीसे घोडेपर चढना चाहा, लेकिन उसकी नौकरानियोंने उसके घोडे और साईस (अखताची) को पकड़े रक्खा। कुछ औरतें अपने घोड़ोंसे उतरकर आईं, और उन्होंने बूरुज ओगलानको पकड़ लिया। इसी समय यूनस खानने आकर अपनी नौकरानीको बूरुजका सिर काट लेनेका हुक्म दिया। उसने तुरंत सिर काट लिया। बिना रानीकी मधुमक्खियोंकी तरह बिना सरदारका उज्बेक-कजाक ओर्दू क्या कर सकता था? बीस हजार घुमन्तुओंमे वहुत कम जान बचाकर भाग पाये।

ताशकंदका वली जमाल सुल्तान यूनसको सिर-उपत्यकामे नही देख सकता था। उसने आक्रमण करके यूनस खानको पकड़कर सालभर बंदी रक्खा, जिसपर सारा मुगोलिस्तानी उलुस शेख जमालके अधीन रहनेके लिये मजबूर हुआ। शेख जमालने यूनसकी बेगम और बाबरकी नानी ईसान दौलत बेगमको अपने एक अफसर ख्वाजा कलानको दे दिया। बेगमने बाहरसे स्वीकृति दे दी थी, लेकिन रातको पास आनेपर उसने ख्वाजा कलानको मार डाला। सालभर बाद अमीर करीमबेर्दी दोगलातके भतीजे अमीर अब्दुल कुद्दुजने शेख जमालको मारकर यूनस खानको मुक्त किया। अब ताशकन्द ओर शाहरुखिया भी बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके हाथमे थे। मुगोलिस्तानी अमीर फिर यूनसके पास लौट आये। उन्होंने खानसे शिकायत की—"खानने हमेशा हमे कृषिवाले प्रदेशके नगरोंमें बसानेकी कोशिश की, जिसे हम लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते है।" खानने अफसोस प्रकट करते हुये कहा—"अबसे मै नगरो और खेतीवाले स्थानोंमें रहनेका विचार छोड देता हूं।"

इस वक्त कल्मक अपने युर्त (ओर्दूवाले देश) को लौट गये थे, इसलिये यूनस खानको मुगोलिस्तानमे मुगलोंके साथ रहनेकी हिम्मत हुई। इसके बाद कई सालों तक खानने घर या नगरमें रहनेका नाम नहीं लिया। काशगरके शासक मुहम्मद रेहर मिर्जाने यूनसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

अपने एक दामाद बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके साथ यूनसका विशेष स्नेह था। भाई अहमद मिर्जा (समरकन्दके सुल्तान) के आक्रमणका भय होनेपर उमरने यूनसको बुलाया। यूनसने फरगानाके सबसे बड़े शहर अक्सीमे आकर डेरा डाला। अहमद मिर्जाने खानसे तीकासगरत्कूके पुलपर लड़ाई की, जिसमे वह खानका बंदी बना, लेकिन खानने अपने दामादको बहुतसी भेंटें देकर छोड दिया। कुछ समय बाद फिर उसने चढ़ाई की, और उमरशेखकी सहायताके लिये खान मर्गिलान पहुचा। इतिहासकार हैदरने मौलाना मुहम्मद काजीके मुहसे सुना था—"एक बार मैं मर्गिलान गया। मैंने सुन रक्खा था, कि यूनस खान मुगल है, और समझा था, कि वह दूसरे रेगिस्तानी तुर्कोंकी तरह बिना दाढ़ी-मूछका (मंगोलायित) आदमी होगा। मैंने उसको देखा, वह बडा ही खुबसूरता था। उसका चेहरा ताजिकोंकी तरह दाढ़ीसे भरा हुआ था। बातचीत और व्यहारमें वह बड़ा ही सस्कृत था, जैसे कि ताजिकोंमें भी बहुत कम पाये जाते है।" मौलानाने सभी सुल्तानोंको पत्र लिखा—"मैंने यूनस खान और मुगलोंको देखा। ऐसे बादशाहकी प्रजाको बंदी बनाकर नहीं ले जाना चाहिये। वह इस्लामके अनुयायी हैं।" इसके बादसे मुगलोको अन्तर्वेद और खुरासानमें ले जाकर दासके तौरपर बेचना बंद हो गया। इससे पहले मुगलोंको भी दूसरे काफिरोंकी तरह दास बनाकर बेंच दिया जाता था। यह मालूम ही है, कि इस्लामी शरीयतके अनुसार मुसलमानको दास नहीं बनाया जा सकता।

अहमद मिर्जा और उमरशेख मिर्जा अर्थात् समरकन्द और फरगानाका झगडा बराबर ही चलता रहा, और उमरशेखकी मददके लिये यूनस को भी बराबर जाना पड़ता था। ऐसे ही एक समयमे यूनसके आनेपर उमरशेखने उसे ओश दे दिया। खानने वहीं जाड़ा बिताया। मुगोलिस्तानकी ओर लौटते समय उसने अपने दूसरे नाती इतिहासकार मुहम्मद हैदर मिर्जाको ओश (ऊश) का शासक बना दिया। शेख जमालकी मृत्युके बाद ताशकन्दको उमरशेखने ले लिया। समरकन्द-शासक अहमद मिर्जा इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता था। खान उमरशेख और अहमद मिर्जाकी सेनायें फिर लड़नेके लिये सिर-उपत्यकामें पहुंचीं, लेकिन हजरत नासिरुद्दीन उबैदुल्ला सूफी (संत)ने बीचमें पड़कर

विवादग्रस्त ताशकन्दको खानके हाथमे देकर झगड़ा शात करा दिया। अभी यूनस ताशकन्दमे ही था, कि उमे लकवा मार गया। दो साल तक इस बीमारीमें पड़े रहकर ७४ वर्ष की उमरमे ८९२ हि० (२८ XII १४८६–१८ XI १४८७ ई०) मे यूनस मर गया। चगताई खानोंमे अधिकाश चालीस वर्षमे अधिक नही जी पाये, और उनमेसे कितने ही स्वाभाविक मौतसे नही मरे, लेकिन यूनस इसका अपवाद था। यूनसकी कब्र ताशकन्दमे ही पूरानवार शेख खावन्दि-तुहूरकी समाधिके पास है।

१३. महमूद, यूनस-पुत्र (१४८७–१५०८ ई०)

बापके मरनेपर ज्येष्ठ पुत्र महमूद *को मगोलोकी रीतिके अनुसार सफेद नम्देपर बैठा कधेपर उठा खान घोषित किया गया। लेकिन महमूदका अधिकार पूर्वी मुगोलिस्तानपर ही रहा। वह बापकी तरह ही सस्कृत और सुशिक्षित था। वह कविता भी करता था, जो बुरी नही होती थी। अन्तर्वेद लेनेकी उसकी बडी इच्छा थी, जिसमे कमजोर तेमूरी-सुल्तानोके मुकाबिलेमें पहिले इसे सफलता भी मिली, लेकिन १५०० ई० मे जब उज्बेक खान मुहम्मद शैबानीने अन्तर्वेदको अपने पजेमे कर लिया, तो उसके लिये फिर मौका नही रह गया। १४८८ ई० मे कुछ सफलता मिली थी। उमरशेखने असलमे महमूदसे ताशकन्द छीननेके लिये सेना भेजी थी। खानने सफलता प्राप्त कर मिर्जाके सभी अनुयायियोको पकडकर मरवा डाला। इसी समयसे बाबरके पिता और मामाका संघर्ष शुरू हुआ, जिसमें मिर्जाकी शक्ति बहुत क्षीण हो गई, और अतमे वह बिल्कुल हार गया। इसपर अहमद मिर्जा डेढ लाख सेना लेकर आया। अहमद मिर्जाके साथ कजाक अबुलखैरका पौत्र और शाहबुदागका पुत्र शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) भी अपने तीन हजार आदमियोंको लेकर गया था। हम पहले बतला चुके है, कि कैसे युद्धके समय शाहीबेग अपने तीन हजार आदमियों के साथ युद्धक्षेत्रसे निकल गया, और मिर्जाकी परताल (रसद) पर टूटकर उसे लूट लिया। इसके कारण अहमद मिर्जाकी सेना भागनेपर मजबूर हुई, लेकिन उसके सामने चिर नदी–जिसे ताशकन्दवाले पराक कहते हैं—थी, जिसमे बहुतसे सिपाही डूबकर मर गये और अहमद मिर्जा किसी तरह जान बचाकर समरकन्द पहुंचा। इतिहासकार हैदरका पिता मुहम्मदहुसेन गूरगानसे महमूद खानका बडा प्रेम था। वह सदा एक ही डेरे या कमरेमे रहते थे। उनके घर बगल-बगलमे होते। वह अपने निजी घरेलू बातो को भी एक दूसरेसे निःसकोच कहते थे। महमूद खानने अपनी बहिन यूनस-पुत्री खूबनिगारसे महमूद हुसेनकी शादी कर दी थी। जब अहमद मिर्जा, उमरशेख मिर्जा और महमूद मिर्जा मर गये, तो उरातेपा भी महमूद खानके हाथमें चला गया, जिसे उसने अपने मित्र और बहनोई मुहम्मद हुसेनको दे दिया।

शाहीबेगने धोखा देकर ताशकन्द विजय करनेमे महमूद खानकी सहायता की थी। अब वह खानका सेवक था। उसकी सहायताके बदलेमे खानने तुर्किस्तान-शहरका इलाका उसे दे दिया, जिसे गिराई खान और जानीबेग दोनो भाई अपना समझते थे। इसके कारण खानसे उनका बिगाड हो गया। उन्होंने कहा—हमारे दुश्मन शाहीबेगको क्यो तुर्किस्तान दिया? इसके बाद उज्बेक-कजाको और महमूद खानमें लड़ाईकी नौबत आगई। दो बड़ी-बड़ी लड़ाइयां हुई, और दोनोमे महमूद खानकी हार हुई। महमूद खानका बर्ताव अच्छा न देख यूनस खानके समयके कितने ही सेनापति उसे छोड गये। खानने पांच अमीरोंको मरवाकर एक नीच कुलके आदमीको अपना सेनापति बनाया।

८९९ हि० (१२X१४९३–२IX १४९४ ई०) मे बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाकी मौत घरके नीचे दबकर हुई। अमीरोंने उसके पुत्र जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबरको फरगानाके तख्तपर बैठाया। अन्दिजानपर कही मुगल हाथ न फेर दें, इसलिये अहमद मिर्जा अपनी सेनाके साथ आया, लेकिन मर्गिलानमें पहुंचकर बीमार हो जानेसे उसे पीछे लौटना पडा, और उमरशेखकी मृत्युके चालीस दिन बाद वह भी चल बसा। सुल्तान महमूद मिर्जाने अब हिसार (ताजिकिस्तान)से आकर समरकन्दकी गद्दी सभाली। छ महीने बाद वह भी मर गया, फिर उसका पुत्र मिर्जा बैसुकर गद्दीपर बैठा। महमूद खानने इस स्थितिसे उत्साहित हो समरकन्दकी ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन हैदरके अनुसार नीच-कुलीन

---

*जन्म ८६८ हि० (१५ XI १४६३—५ VIII १४६४ ई०)

मेनापतियोके कारण कामयायीकी लडाईमे खानको हार खानी पडी । ताशकन्द लौटनेपर अमीरोंने उसे समरकन्द और बुखारा लेनेमे शाहीबेग खानकी सहायता करनेकी सलाह दी, जिसमें वह आराममे ताशकन्दमे रहे । खानको उनकी राय पसद आई । इतिहासकार हैदरके पिता मुहम्मद हुसेनने बहुत रोका, लेकिन शाहीबेगको सहायता दी जाती रही । शाहीबेगके पास पचास हजार सेना हो गई, जिससे उसने समरकन्द और बुखारापर पूरी तौरसे अधिकार कर लिया । उसकी सफलता और लूटके लोभमे चारो ओरमे उज्बेक उसके झडेके नीचे आ गये थे ।

पिताके ताशकन्दमे रहनेपर यूनसका दूसरा पुत्र सुल्तान अहमद [जन्म ८७० हि० (२४ VIII १४६५–१५ VII १४६६ ई०] मुगोलिस्तानमे अपने मुगलों और पशुओंकी चरवाही करता था । पहले दस सालके सघर्षमे उसने इरलातके अमीरोको दबाया । अहमद अपने भाई महमूदकी तरह ही संस्कृत नही था । बाबरके अनुसार वह सचमुच ही रेगिस्तानका पुत्र था—शरीरसे हट्टा-कट्टा और बड़ी हिम्मतवाला । वह मगोलो जैसी वेष-भूषा रखता था । अहमदने दो लडाइयोंमे कल्मक-थैची एसेनकी मेनाको हराया, जिससे कल्मकोपर इसका बहुत रोब था । वह इमे अलाची (बहादुर) कहते थे । अहमदने कजाकोको भी तीन बार हराया । सिर्फ काशगर और यारकन्दमे वह अपने मनसूबेमे सफल नही रहा । मुहम्मद शैबानी (शाहीबेग) ने जब अपने पहिले सरक्षक महमूद खानपर हाथ साफ करना चाहा, तो खानने अपने भाई अहमदको बुला भेजा । भाईका कहना मानकर इसने अपने पुत्र मन्सूरको मुगोलिस्तानमे रक्खा, और दूसरे दो पुत्रोंसहित ताशकन्द आया । १५०३ ई० मे मुहम्मद शैबानीने अकसीकी लडाईमे दोनो भाइयोंको हराया । अहमद अकेले मुगोलिस्तान भागा । शैबानीने महमूदमे ताशकन्द और सैराम छीन लिया । फिर दोनों भाइयोने अक्सू (पूर्वी तुर्किस्तान) मे इकट्ठा जाडा बिताया, जहा ही अहमद लकवाकी बीमारीसे मर गया । महमूदने अक्सू और पूर्वी मुगोलिस्तानको ले लिया । अक्सूमे अपने भाई खलील सुल्तानसे हारकर वह सप्तनदके किर्गिजोंके पास पहुचा । शाहीबेगने महमूद खानपर विजय प्राप्त की, उसी समय अकसीमे दोनों खान-भाई बदी बने, और मुक्त कर देनेपर अहमद खान ९०९ हि० (२६ VI १५०३–१६ V १५०४ ई०) लकवासे मर गया ।

महमूद खानकी हालत अतमे बहुत बुरी हो गई । वह शाहीबेगके दरबारमे दयाकी भिक्षा मागनेके लिये मजबूर हुआ । शाहीबेग (शैबानी)ने जवाब दिया—"एक बार मैंने तुमपर दया दिखला दी, अब दूसरी बार दया दिखलानेपर मेरी हकूमत खतरेमे पड जायेगी ।" उसने जरा भी दया न कर महमूद खान तथा उसके छोटे-बडे सभी बच्चोको खोजन्द नदीके किनारे ९१४ हि० (२ V १५०८–२३ III १५०९ ई०) मे मरवा डाला । अबतक अन्तर्वेद शैबानियोका हो चुका था, यह हमे मालूम है ।

१४. मन्सूर, महमूद-पुत्र (१५०८ ई०)

इसी समय किर्गिजोका नाम पहलेपहल मुगोलिस्तानमे सुनाई पड़ता है । शायद किर्गिज १०वी शताब्दीमे ही यहां पहुच गये थे । हैदर किर्गिजोको मगोलोसे विभिन्न नही समझता । मगोलिस्तानी मगोलों और किर्गिजोके झगडेका कारण वह उनका मुसलमान और काफिर होना बतलाता है । खलीलसे जल्दी ही उसका भाई सईद (जन्म १४९० ई०) आ मिला, जो कि अबतक बापके साथ अन्तर्वेदमे उज्बेकोंका बदी था । सईदकी उमर उस समय तेरह-चौदह सालकी थी । दोनो भाई चार सालतक एक साथ रहे । इसी बीचमे चचासे झगडा हो उठा, और मन्सूर उनसे लडने मुगोलिस्तान गया । यही समय था, जब कि १५०८ ई०मे शैबानीके हुक्मसे महमूद खान और उसके बेटोंको खोजन्द नदी (सिर-दरिया) के तटपर कत्ल किया गया । इसके पश्चात् चारुनचलाक या चारिन (आधुनिकल अल्माअताके पास) मे मन्सूरने अपने भाइयोको परास्त किया । खलील भागकर फरगाना चला गया, जहां उज्बेक शासक जानीबेगने उसे कत्ल करवा दिया । सईद कुछ महीनो नरिनके जगलोमे छिपा रहा, फिर उज्बेकोंके हाथमे पड़कर फरगानामे बद रहा, जहांसे भागकर काबुलमें जा१५०८ ई०के अन्ततक बाबरका मेहमान रहा ।

पिताके मरनेपर अक्सूके खान चचा महमूद खानके साथ मन्सूरका झगडा था । मन्सूरने काशगरसे मुगोलिस्तान लेनेके लिये महमूद खानके खिलाफ जाकर अक्सूमे डेरा डाला । वहा मीर जब्बारबर्दीसे मन्सूरका झगड़ा हो गया । जब्बारने काशगरके हाकिम अबूबकरको बुला भेजा । मन्सूरको अक्सू छोड़कर भागना पडा । उसकी स्थिति बहुत बुरी हो गई । इसपर उसने अपने मामा जब्बारबर्दीसे शपथ-

पूर्वक क्षमा मांगी। जब्बारने मन्सूरके साथ बड़ी उदारता दिखलाई, जिससे उसकी स्थिति अपने बाप सुल्तान अहमद खानसे भी बेहतर हो गई। इसी समय उसे खबर मिली, कि मुगोलिस्तान (सप्तनद) में सुल्तान महमूद, सुल्तान सईद और सुल्तान खलीलमें झगड़ा हो गया है। मन्सूरने मुगोलिस्तान पहुंच अपने चचा महमूदसे भेंट की। वही उसकी अपने छोटे भाइयों—सईदखां और खलील सुल्तान—से भी मुलाकात हुई। उसके बाद ही महमूदखान अन्तर्वेदकी ओर लौटा, जहां मुहम्मद शैबानीसे हारकर उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। अब मन्सूरने अपने भाइयोंपर आक्रमण किया, जो कि मुगोलिस्तानमें मुगलों और किर्गिजोके साथ रहते थे। चारुनचलाकमें लडाई हुई, जिसमे हारकर मन्सूरके दोनों भाई विलायत (अन्तर्वेद) भाग गये। वहांके वलीने सुल्तान खलीलको मरवा डाला, और सुल्तान सईद भागकर काबुलमें बाबरके पास पहुंचा। मन्सूर मुगोलिस्तानमें हाथमें लगे किर्गिजो और मुगलोंको अपने साथ चालिश (कराशर) और तुर्फान ले गया। पीछे उसने कल्मकोंपर सफल आक्रमण किया।

इसी बीच काबुलसे लौटकर सुल्तान सईदने काशगरको जीत लिया। मन्सूरको भारी भय लगने लगा। लेकिन शायद सईदको अन्तर्वेदमें शैबानियोकी शक्तिको देखकर कुछ अकल आई। उसने समझौता करनेके लिये ९२२ हि० (५ II–२६ XII १५१६ ई०) मे अक्सू और कुसानके बीचमें मन्सूरसे भेंट की, और खानकी अधीनता घोषित करते हुये उसके नामसे खुतबा पढ़े जानेका हुक्म दिया। इसके बाद बीस सालतक देशमें शांति रही। चीनमें कामिल (हामी) से लेकर अन्दिजान तक बिना रोक-टोक आदमी यात्रा कर सकते थे, रास्तेमें कोई कर नही लिया जाता था। यात्री हरेक रातको किसी घरमें मेहमान रह सकता था। यह बतलाते हुये इतिहासकार हैदर लिखता है—"अल्लाह दोनो धर्मात्मा भाइयोको स्वर्गोद्यान प्रदान करे।" मन्सूरके हाथमें पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्वी भाग था, जिसकी सीमा चीनसे लगती थी। वह अपनेको इस्लामका गाजी साबित करना चाहता था। इसमें मुख्य कारण लूट-मारका प्रलोभन था, जिसके लिये मिङ सम्राट् शी-चुङ (१५२१-६६ ई०) की सेनाओंसे बराबर उसका धर्मयुद्ध होता रहा। मन्सूरने अरिग (मुगोलिस्तान) में उज्बेक-कजाकोंके साथ जमकर लड़ाई की, जिसमे उसकी हार हुई।

काशगरी अबूबकरकी सेना अमीर वेलीकी अधीनतामें सप्तनद गई, जहां उसे कुछ सफलता हुई। आखिरमें मन्सूरने अपने बडे पुत्र शाह खानको खान बनाया और स्वयं अल्लाकी भक्तिमें लग गया। हैदरके समय ९५१ हि० (१५४५ ई०) में शाहखान तुरफान और चालिशपर शासन कर रहा था। इसी समय बाबरका बेटा हुमायूं हिन्दुस्तानसे भागकर मारा-मारा फिर रहा था। शाहखानका चाल-चलन हैदरको पंसद नही था। उसने लिखा है—"इतिहासकारका धर्म है, कि ठीक या बेठीक जो भी उसे मालूम हो, उसका उल्लेख करे।"

यद्यपि सईदने १५०८ ई० में ही पूर्वी तुर्किस्तानके पश्चिमी हिस्सेका शासन सभाल लिया था, लेकिन उसने बहुत सालो तक मन्सूरको अपना प्रभु माना था। इतिहासकार हैदर सईदका समकालीन था। उसने "तारीखे-रशीदी"में इसके बारेमें बहुतसी बातें लिखी हैं। रशीद खान, जिसके नामसे हैदरने अपने इतिहासको लिखा है, सईद खानका ही पुत्र था। सईद अहमद खानके आठ पुत्रोंमेसे एक था। अपने भाई महमूद खानकी सहायताके लिये जिस वक्त अहमद खान जा रहा था, उस वक्त चौदह सालका सईद भी अपने बापके साथ था। अकसीकी लड़ाईमें एक तीरके लगनेसे उसकी जांघकी हड्डी टूट गई, और वह घायल हो अकसीके वली शेख बायजीदके जेलमें बन्द रहा। दूसरे साल शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ने शेख बायजीद, सुल्तान अहमद तम्बालको उसके सारे भाइयोंके साथ मारकर फरगानाको ले लिया। शाहीबेग सईदको पुत्रवत् मान अपने साथ समरकन्द ले गया। जिस वक्त शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया था, उसी समय सईद निकल भागा और यतीकन्दमें अपने चचा महमूद खानके यहां जाकर कुछ दिन रहा। फिर वहांसे अपने भाई खलील सुल्तानके पास गया, जो कि उस समय किर्गिजोंके ऊपर राज्यपाल था। चार सालतक वह अपने भाईके साथ वहां रहा। जब महमूद ख़ान विलायत (अन्तर्वेद) गया, तब भी दोनों भाई किर्गिजोंमे ही रहे। मन्सूर तुर्फान और चालिशकी सेना लेकर किर्गिजोंके ऊपर चढ़ा, तो दोनों भाई अपने अनुयायियों (मुगलों-किर्गिजों)के साथ मिलकर उससे चारुनचलाकमें लड़े,

और हार खा भागकर अकसी गये, जहां शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी)के चचेरे भाई जानीबेगने सुल्तान खलीलको मरवा दिया। सुल्तान सईद कुछ समयतक अब लूट-मारका जीवन बिताता रहा, फिर मुगोलिस्तान छोड़नेपर मजबूर हो अन्दिजान होते बाबर बादशाहके पास काबुल पहुंचा। बाबरने उसे बड़े आदर और प्रेमसे रक्खा—छिङ-गिस् खानकी औलाद और मुगोलिस्तानके खानका बेटा था, इसलिये मुगलोंके नामपर बावला बाबर क्यो न उसका सत्कार करता ? सईद काबुलमें तीन सालतक बाबरका मेहमान रहा। जब शाह इस्माईल (ईरान) ने मेर्वमें शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) को मार डाला, तो बाबर काबुलसे कुदुज पहुचा। सईद भी इस वक्त बाबरके साथ था। इसी समय इतिहासकार हैदरके पिता सैयद मुहम्मद मिर्जाने शैबानी जानीबेग सुल्तानको अन्दि-जानसे भगाकर उसपर अधिकार कर लिया था। बाबर बादशाहको इसकी खबर लगी, तो उसने सईद और कुछ मुगल अमीरोको अन्दिजान भेजा। सैयद मुहम्मद मिर्जाने जीते देशको उनके हाथमे दे दिया। सईदने खान मुहम्मद मिर्जाको "उलुस-बेगी" (कबीलोका सरदार) की उपाधि प्रदान की। लेकिन काशगरी मिर्जा अबूबकर भी अन्दिजानपर आख गडाये था। दोनोमे लडाई हुई। हैदरके अनुसार सईदने अपनी पन्द्रह सौ सेनासे अबूबकरको बीस हजार सेनाको हरा दिया।

इस समय सप्तनदके उत्तरी भागमे कजाकोके खान कासिम [मृत्यु ९२४ हि० (१३I–४XII १५१८ ई०)] का राज्य था, जो जाड़ोमे करातालमे रहता था। कासिमने १५१० ई० के करीब मुहम्मद शैबानीको हराया, ओर १५१२ ई०मे तलस और सैरामपर अधिकार कर ताशकन्दके किलेको नष्ट कर दिया। हैदरके अनुसार उसके कजाकोकी संख्या दस लाख थी, लेकिन बाबरके अनुसार तीन लाख। १५१३ ई० के वसन्तमें चू नदीके तटपर सईदने कासिम खानसे मुलाकात की। कासिमकी उमर उस समय निरसठ सालकी थी। उसने सईदकी बडी खातिर की। सईद इस वक्त बाबरकी सेवामें था।

बाबरकी इन सफलताओको शैबानी उज्बेक देख नही सकते थे। उन्होने ताशकन्द और समरकन्दके सीमान्तपर भारी सेना जमा की। बाबरने इसी समय (जून या जुलाई १५११ ई०) उन्हे हराकर थोड़े दिनोके लिये समरकन्दके सिहासनपर बैठनेमें सफलता पाई थी, लेकिन उसी सालके वसन्तके आरम्भमें उबैदुल्ला खानने बाबरको हराकर उसे परिवारसहित हिसारकी ओर भगा दिया। अन्तर्वेद उज्बेकोका हो गया, तो भी अन्दिजानपर सईद खानका अधिकार बना रहा। शाह इस्माईलकी कुमकसे साठ हजार सेना लेकर जब बाबरने समरकन्दपर चढ़ाई की, उस समय सईद खान भी अन्दिजानसे उसकी मददके लिये आया था। ताशकन्दके पास शैबानी सूयुनजी (ख्वाजा) खानने सईदको हराकर अन्दिजानसे भागनेके लिये मजबूर किया। इसी समय इतिहास-कार हैदर बाबरसे छुट्टी ले सईद खानकी सेवामें चला गया, और वसन्तमें दश्तेकिपचक (किर्गिज-कजाक) के खान कासिमसे मिला, जिसके पास बाबरके अनुसार तीन लाख सेना थी।

९२० हि० (२६ II १५१४–१७ I १५१५ ई०) मे उज्बेकोकी भारी सेनाने अन्दिजानपर आक्रमण किया। खानने भागकर काशगरियापर चढाई की, मिर्जा अबूबकर काशगरमे किलेबन्द हो गया। यगी-हिसारपर तीन मास घेरा डाल सईदने उसपर अधिकार कर लिया। मिर्जा अबूबकर दक्षिणकी ओर भागा। उसका पीछा करते सईद खानकी सेना तिब्बत (लदाख) के पहाड़ोंके भीतरतक गई। इस प्रकार मई-जून १५१३ ई० (९२० हि०) में सईद खान काशगर-प्रदेशका स्वामी था, और ९२२ हि० (१५१६ ई०) मे, जैसा कि पहिले कहा, उसने बड़ी दूरदर्शिता दिखलाते हुये मन्सूर खानको अपना प्रभु मान लिया।

शैबानियोंसे अन्तर्वेद छीननेका मनसूबा सईदने बाबरसे उधार लिया था, इसीलिये उनसे उसने छेड़खानी जारी रक्खी। सप्तनदसे तोर्गुत डाडेसे होकर काशगरियामें सैतालीस सौ सेनाके साथ घुसकर अबूबकरको भगानेमें उसने पूरी तौरसे सफलता प्राप्त की। काशगर और यारकन्द को लेकर वहां पूरी तौरसे शांति-स्थापन कर १५१६ ई० मे उसने अक्सू और कुचेईके बीच अरबात स्थानमें मन्सूरसे भेंट की। जैसा कि पहिले कहा, दोनोमे पूर्ण मैत्री स्थापित हुई, सईद ने मन्सूरको अधिराज माना, लेकिन शासित प्रदेशोंका बंटवारा तो करना ही था। मन्सूरको तुर्फान, कराशर और पूर्वी तुर्किस्तानका सारा ऊपरी भाग मिला, दूसरे भाई एमिल खोजाको

तुर्फान और अक्सू, तीसरे भाई बाबा सुल्तानको बाई और कूची मिले । काशगर और दक्षिणी सप्तनद सईदके हाथमें रहे । हामी (चीन)से अन्दिजान (फरगाना) तकका वणिक्पथ मुक्त हो गया । अबूबकरसे लडते वक्त किर्गिज मुहम्मदने सईदकी बडी सहायता की थी, इसलिये उसे किर्गिजोंका सरदार बना दिया गया । १५१६ ई० के वसन्तमें फरगानामें उज्बेकोसे लडनेकी तैयारी करनेके लिये सईद मुगोलिस्तान गया । उसने चातिर-कुलके तटपर अपने भाई बाबा अचकसे भेंट की । अरपा-उपत्यकामें मन्सूरको छोडकर सारे भाई मिले, उन्होंने साथ ही शिकार खेला और जाडा बिताया । इसमे सईद अभियानकी बात भूल गया । इसी समय उसके अमीर मुहम्मदकी अधीनतामें किर्गिजोंने जाकर तुर्किस्तान-शहर, ताशकन्द और सैराममें लूटमार की, और शैबानी खानके सौतेले भाई तुर्किस्तान-शासक अब्दुल्लाको बन्दी बनाया । लेकिन मुहम्मदने उसे बहुत-सी भेंट देकर छोड दिया, जिसके कारण उसका सईदसे मन-मुटाव हो गया। १५१७ ई० के वसन्तमें सईद अपनी सेना ले काशगरसे चला । एमिल खोजा भी अक्सूसे सारिग-अत्-आखुरी डाडेसे होते आगे बढा । दोनो सेनायें काफिर-यारिगमें मिल गई, जहासे सईद बेसकाउन-द्रोणी और एमिल खोजा चू-द्रोणीसे आगे बढा। किर्गिज मुहम्मद बेसकाउनके मुहानेके पास डेरा डाले पड़ा था । दोनो भाइयोंके आनेकी खबर पाकर वह तुर्किस्तानकी ओर भागा, और उसके घोडे, भेंडे तथा सारी चीजें शत्रुओंने ले ली । सईदने किर्गिजो को बन्दी नही बनाया । वहासे वह हिसार लौट गया ।

१५१७ ई०में मुहम्मद किर्गिजने तुर्किस्तान और फरगानापर आक्रमण करके मुसलमानोको लूटा, जिसके लिये सईदने चढाई करके मुहम्मद किर्गिजको पकडकर जेलमें डाल दिया, जहा वह पन्द्रह सालतक पडा रहा । इसी साल सईद अपने पुत्र रशीदको लेकर मुगोलिस्तानमें गया। उसने किर्गिजोको दबाकर सारे मुगोलिस्तनपर अधिकार कर लिया । पीछे मगितोंकी शक्तिके कारण उज्बेक-कजाक दश्तेकिपचकमें रहनेकी हिम्मत नही कर सकते थे, इसलिये वह दो लाखकी सख्यामें मुगोलिस्तान में चले आये । उनके साथ लडना असभव समझकर रशीद सुल्तान—जिसे बापने मुगोलिस्तानमें छोड़ रक्खा था—अपने आदमियोको ले काशगर भाग गया । १५१९ ई० (९२५ हि०) और १५२९-३० ई० (९३६ हि०)मे दो बार सईदने बदख्शापर चढाई कर उसका आधा हिस्सा ले लिया।

१५२२ ई० मे मुसलमानोपर आक्रमण करनेका कारण बतलाकर सईदने अपने बेटे रशीद के सेनापतित्वमें फिर किर्गिजोंपर आक्रमण करनेके लिये सेना भेजते समय जेलसे छोडकर मुहम्मद किर्गिजको भी उसके साथ कर दिया था। रशीदने कोचकरकी उपत्यकामें डेरा डाला। अधिकाश किर्गिजोने मुहम्मदकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन उनमेंसे कुछ भाग गये । उस जाडेमें रशीद खान कोचकर हीमें रहा। इसके बाद वह हर साल कुछ समय कोचकर-उपत्यकामें बिताता था । १५२४ ई०में जब खान कोचकरमें था, उसी समय उसके पास उत्तरी सप्तनदके कजाकोके खान कासिम-पुत्र ताहिरका आदमी आया। वह मुगोलिस्तानियोके साथ मिलकर उज्बेकों और नोगाइयो (मगितों) से लडना चाहता था। उसने अपनी बहिन भी रशीद खानको प्रदान की। इसके बाद अधिकाश किर्गिज ताहिरके अधीन हो गये। १५२५ ई० मे खान इस्सिक्कुलके तटपर था, जब कि मुगोलिस्तानके सीमान्तपर कल्मकोके चढ़ आनेकी खबर मिली। इससे पहले १५२२-२४ ई० मे रशीद कल्मकोंके ऊपर सफल अभियान कर चुका था, जिसमे उसे गाजीकी उपाधि मिली थी। अपने परिवारको इस्सिक्कुलके किसी द्वीपमें छोड़कर रशीद कल्मकोके विरुद्ध चलकर दस दिनमें कबीकलर (कबिलककला) पहुंचा। इसी समय ताशकन्दके शैबानी खान सू-युन-चुकके मरनेकी खबर मिली। उज्बेकोके साथ लडनेका यह अच्छा मौका था, इसलिये वह जल्दीसे लौटकर इस्सिक्कुल पहुचा, और वहांसे कोनुर-उलेनके रास्ते फरगाना गया; लेकिन उसे जल्दी ही असफल हो उतुलुक (मुगोलिस्तान) लौटना पडा, जहासे जल्दी ही काशगर गया।

अगले जाड़ोमें ताहिरका डेरा कोचकरके पास था। आधे किर्गिज उसकी ओर थे। रशीद अतवासमें पड़ा था। १५२६ ई० के आरम्भमें रशीदने किर्गिजोंके साथ मेल किया, इसपर कितने ही कजाक सारे काश और कुनगेजतक सप्तनदसे हट गये। किर्गिजोंके डेरे कोचकर और जुगमलेके पास

पडे हुये थे। ताहिरसे बातचीत करनके लिये उसकी सौतेली मा (यूनस की पुत्री) को भेजा, जो कि काशगरमे सईदके पास रहती थी। सईद लौटकर अकसाई पहुचा था, जब कि कजाकों और किर्गिजो के बीच समझौतेकी बातका उसे पता लगा। दोनो घुमन्तू जातियोके मिल जानेका खतरा सईदको साफ मालूम होने लगा, इसलिये वह वहासे बाबाचककी कूचीसेनाको भी ले अककुयाश होते अरिक्ष-लारके रास्ते चला। उसने सप्तनदसे किर्गिजोको भगाकर उनकी एक लाख भेडे पकड़ ली, जिसमे उस स्थानका नाम कोई-चरीकी (भेडोवाला) पडा।

१५२७ ई०के वसन्तके आरम्भमे ताहिर अतवासपर चढ आया, और वहासे उसने किर्गिजोके साथ मिलकर मुगलोको मार भगाया। मुगलोके हट जानेपर अब सप्तनद कजाको और किर्गिजोके हाथमे चला गया, लेकिन दोनो जातियोकी मित्रता अधिक दिनोतक नही निभी। १५२६ ई० मे ताहिरने अपने भाई अब्दुल कासिमको मार डाला, जिसपर कजाकोने उसका साथ छोड़ दिया। १५२९ ई० मे अभी ताहिरके पास बीस या तीस हजार कजाक थे। हैदरके अनुसार ताहिर अन्तमे बडी बुरी अवस्थामे मरा। उसके बाद उसका उत्तराधिकारी उसका भाई बुईदश हुआ।

"(**तिब्बतपर जहाद**)—हैदर कलमका ही नही तलवारका भी धनी था। 'गाजी' बनने की उसकी बडी इच्छा थी, जिसके लिये उसने तिब्बतके भीतरतक आक्रमण किया। अपने इतिहासमे वह लिखता है . ९३४ हि० (२७ IV १५२७–१७८ VIII १५२८ ई०)मे सईद खानने मुझे अपने बेटे रशीद सुल्तानके साथ बालूर (बदख्शां और कश्मीरके बीचमे काफिरोंके देश काफि-रिस्तान) पर आक्रमण करनेके लिये भेजा। यहा हमने सफलतापूर्वक 'धर्मयुद्ध' किया, और विजयी हो बहुत भारी लूटके मालके साथ लौटे।....९३८ हि० (१५ VIII १५३१—५ VII १५३२ ई०) के अन्तमे खान सईदने तिब्बतके काफिरिस्तान (लदाख) के साथ 'धर्मयुद्ध' किया, और मुझे पहले ही सेना देकर भेजा। मैंने बहुतसे किलोको लेकर तिब्बत (लदाख) देशके अधिक भागको अपने अधिकारमे कर लिया था, जब कि खान हमारे पास पहुचा। दोनोंकी सेनामे पांच हजार आदमी थे। यह सख्या इतनी अधिक थी, जिसे सारा तिब्बत मिलकर जाड़ोंमे खिला-पिला नही सकता था। खानने चार हजार सेना और इस्कन्दर सुल्तानके साथ मुझे कश्मीर भेजा, और खुद बल्ती-बालूर और तिब्बत (लदाख)के बीचमे जाडा बिताया। (हैदरका यह बालूर गिलगितका इलाका है, और तिब्बतसे उसका मतलब लदाखसे है)। खान बल्तीमे 'धर्मयुद्ध' मे लगा रहा, फिर वसन्तमे वह तिब्बत (लदाख) लौटा। हैदरने कश्मीरमे पहुचकर वहाकी सेनाको हराया। कश्मीरके राजा मुहम्मदशाहने अपनी लडकी इस्कन्दर सुल्तानको ब्याह दी, और सईद खानके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मजूर किया। कश्मीरसे लूटकी भारी सम्पत्ति ले हैदर वसन्तमे तिब्बत (लदाख) में खानके पास पहुंचा।"

अबकी खानने हैदरको उर-साग (वू-चाङ) की ओर भेजा, अर्थात् हैदर अब मुख्य तिब्बत-की ओर चला। खान उसे इस तरफ रवाना करके काशगर लौट गया। हैदर तिब्बतकी ओर बढते हुए ऐसी जगहपर पहुंचा, जहांपर सास रुकनेका रोग होता है (अर्थात् अधिक ऊंचाईके कारण हवाके क्षीण होनेसे सास अधिक फूलने लगती है)। शायद वह लदाखसे यारकन्दकी ओर जानेवाले बड़े डाड़ोंपर जा रहा था। इसी समय ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२४ VI १५३३ ई०) में ४५ सालकी उमरमें सईद खान मर गया और हैदरके अनुसार इस इस्लामके 'गाजी'को अल्ला-मियांने स्वर्गमें पहुंचाया। हैदरके अनुसार सईदने अपने अभियानोसे राज्यकी सम्पत्ति बहुत बढ़ाई। मुगल, उज्बेक और चगताई तीनों उलुसोमे उसके समान वाण चलानेवाला कोई नही था। वह एकके बाद एक सात-आठ तीर छोड सकता था और सभी लक्ष्यपर जाकर लगते थे। वह बड़े ही सुन्दर नस्तालीक अक्षर लिखता था। उसकी तुर्की और फारसी लिखावटोंमे कोई गलती निकाल नही सकता था। वह तुर्कीमे गद्य-पद्य दोनो लिखता था। हैदरने सिर्फ एक बार उसे फारसीमें कविता करते देखा था। वह सेहतारा और चारतारा अच्छी तरह बजा सकता था—चारतारापर उसका हाथ ज्यादा खुला हुआ था। वह वाण बनानेमें बड़ा चतुर था, और हड्डीकी दस्तकारीका भी अच्छा ज्ञान रखता था। वह बड़ा उदार था।

१६. रशीद, अब्दुर् रशीद, सईद पुत्र (१५३३–५६ ई०)

सईद जब अन्दिजानमे बन्दीखानेमे पडा था, उस समय रशीद माके गर्भमें सात मासका था। वह ९१५ हि० (२१ IV १५०९—१२ III १५१० ई०) मे पैदा हुआ। बाबरके अनुसार उसका पूरा नाम अब्दुर्रशीद था। जिस समय खलील सुल्तानको शैबानी जानीबेगने अकसीमें मरवाया, उस समय खलील-पुत्र बाबा सुल्तान दूधपीता बच्चा था। सईद बाबाको अपने पुत्रसे भी ज्यादा मानता था, और ख्वाजा अलीबहादुरको उसने उसका अतावेग (अध्यापक-सरक्षक) बना दिया था। ख्वाजाका मुगोलिस्तानसे बहुत प्रेम था। उसने सईद खानसे प्रार्थना की, कि मुगोलिस्तान और किर्गिज प्रदेशको बाबा सुल्तानको दे दो, मै स्वय बाबाको अपने साथ ले वहांका सारा प्रबन्ध ठीक-ठाक करूंगा। खान राजी हो गया। बाबा सुल्तानके ससुरने मना किया—"अगर बाबा सुल्तानने एक बार उस देशपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया, तो यहांसे सभी मुगल मुगोलिस्तान चले जायेगे, और खानको हानि पहुचेगी, इसलिये यही अच्छा है, कि बाबाकी जगह रशीदको मुगोलिस्तान भेजा जाय।" इतिहासकार हैदरका चचा बाबाका ससुर था, लेकिन वह रशीदका ज्यादा पक्षपाती था। सईद खानने अपने अधिकृत इलाकोंका एक-तिहाई रशीद सुल्तानको देकर मुगोलिस्तान भेज दिया। ९४४ हि० (१० VI १५३७—१ V १५३८ ई०)में सुल्तानके मुगोलिस्तान पहुंचनेपर मुहम्मद किर्गिजने सभी किर्गिजोके साथ आकर सारे मुगोलिस्तानको अधीनता न स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उज्बेकोंने भी विरोध किया। उज्बेकों और किर्गिजोंके विरोधके मारे रशीदको काशगर लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। अपने सम्मिलिति शत्रुओंके साथ लड़नेमे हानि देखकर रशीदको पीछे उज्बकोके साथ समझौता करना पड़ा।

बाप (सईद खान)के मरनके बाद रशीद मुगोलिस्तानका खान बना। सबसे पहले जो काम उसने किया, वह था अपने पिताके खैरखाहोंका वध। २ अगस्त १५३३ (१० मुहर्रम ९४० हि०) को रशीद सुल्तानके आनेपर हैदरका चचा पिताकी मृत्युपर अफसोस प्रकट करने गया। आते ही रशीदने उसे तथा उसके मित्र अली सैयद दोनोंको मरवा दिया, और हैदरके चचाकी जगहपर मिर्जा अली तगाईको नियुक्त कर यह हुक्म दे काशगर भेज दिया, कि हैदरके चचाके बच्चों और संबंधियोको बिना कोई दया-माया दिखलाये बड़ी क्रूरतासे मारनेमे कोई कसर उठा न रखना। यह खबर सुनकर पूर्वसे मन्सूर खान भी रशीदके ऊपर चढ दौड़ा, लेकिन उसे खाली हाथ लौटना पड़ा। मन्सूरने रशीदको दबानेके लिये और भी प्रयत्न किये, पर उसे सफलता नही मिली। रशीदके अत्याचारोंसे भयभीत हो उसके अमीरोंने विद्रोह किया, किन्तु रशीदने उनका दमन कर दिया। उसने अपनी सौतेली माताओं, बुवाओं और बहिनोंको भी निर्वासित कर दिया, जिनमें उसके बापकी चहेती बीबी जैनब सुल्तान खानम् भी थी। इधर जब उसने अपनोंसे इतना झगड़ा कर रखा था, उसी समय उत्तरमें उज्बेक-कजाक भी उसके दुश्मन थे, फिर अन्तर्वेदके उज्बेक-शैबानियोंसे मेल करनेके सिवा रशीदके लिये और कोई चारा नही था।

८७७ हि० (८ VI १४७२–२९ IV १४७३ ई०)में यूनस खानने करातुकाईमे उज्बेक-कजाकोंको हराया था। लेकिन उसके बाद मुगल उनसे बराबर हार रहे थे, केवल रशीद खानने एक बार उनको हाराया। इस समय अन्तर्वेदके मंगोलवशियोंको चगताई कहा जाता था, और मुगोलिस्तानके चंगेजवंशियोंको मोगल, लेकिन चगताई मोगलोंके प्रति घृणा प्रदर्शित करते हुए उन्हे जांता (सीमांती) कहते थे, और मोगल चगताइयोको करावाना। १६वी सदीके मध्यमें लिखते हुए हैदरने कहा है—"वर्तमान कालमे बादशाहोको छोडकर कोई चगताई नहीं रह गया है। और ये बादशाह हैं बाबर बादशाहके पुत्र। चगताइयोंका स्थान (अब) कुछ दूसरे सभ्य लोगोंने लिया है।" लेकिन रशीदका यह कहना गलत है। तेमूर-वंशज बाबर माकी तरफसे अर्ध-मगोलोंसे संबंध रखते भी बापकी ओरसे तुर्क था, मगोल या मोगल हरगिज नहीं। लेकिन भारतमें सुव्यवस्थापित बाबरका वंश अपनेको मंगोल (मुगल) कहनेके लिये तुला हुआ था, जिसका दुहराना

बाबर और हुमायू का कृपापात्र हैदर अपना फर्ज समझता था। हैदरके लिखनसे मालूम होता है, तुर्फान और काशगरके आसपासमे अब भी तीस हजार मुगल (मंगोल) रहते थे, लेकिन मुगोलिस्तानको उज्बेकों (कजाको) तथा किर्गिजोंने ले लिया था। मगोल (मुगल) शब्दका कितना अनिश्चित प्रयोग उस समय हो रहा था, यह इसीसे मालूम होगा, कि हैदर किर्गिजोंको भी मुगल-कबीलेमेंसे बतलाता है, जो कि "खाकानके साथ बराबर विद्रोह करते रहनेके कारण मुगलोसे अलग हो गये।" हैदरके समय सभी मुगल मुसलमान हो चुके थे, लेकिन किर्गिज अब भी काफिर (बौद्ध) थे। "इसीलिये उनका मुगलोंसे झगड़ा रहता है।" साथ-साथ इस्लामके गाजीका यह भी कहना है—"जो मुगल मुसलमान नही है, उनका हमने अधिक नामोल्लेख नही किया है, क्योंकि काफिर चाहे जमशेद और जोहाबके प्रतापको भी पा जाये, तो भी उसका जीवन याद रखने लायक नही होता।"*

९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३८ ई०)मे रशीदने उज्बेक-कजाकोंको करारी हार दी थी, जिसमे उनके खान ताहिरका भाई तुगुम और सैंतीस सुल्तान मारे गये। कजाकोंका उसने सप्तनदमें उच्छेद-सा कर दिया। अपने बापका अनुकरण करते हुये रशीदने भी अपने बेटे अब्दुल्लतीफ को सप्तनदमे बैठाया, और शैबानी-उज्बेकोंसे मित्रता जारी रक्खी। ९५१ हि० (१५४४-१५४५ ई०) मे इस्सिक्कुलके तटपर ताशकन्दके खान नौरोज अहमद (बराक)से मुलाकात की। इसके कुछ समय ही बाद उज्बेक-कजाकोने फिर सप्तनदपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह याद रखना चाहिये, कि अभीतक उज्बेक शब्द कजाक और शैबानी दोनोके लिए प्रयुक्त होता था, जो कि पीछे स्वयं केवल अन्तर्वेदके शैबानी-अस्त्राखानी-मंगीती खानोंकी तुर्क प्रजाके लिये रूढ हो गया, और कजाक आधुनिक कजाकिस्तानमे रहनेवाले तुर्कोको कहा जाने लगा। किर्गिज भी उस समयतक किर्गिज-कजाक कहे जाते थे, जो अन्तमे किर्गिजके नामसे मशहूर हुये।

रशीदका ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल्लतीफ बापके जीवन हीमें कासिम खानके पुत्र अकनजरके साथ लड़ाई करते मारा गया। अकनजर किर्गिजों और कजाकोंका खान था। अंग्रेज यात्री जेन्किन्सनके अनुसार १५५८ ई०के आसपास कजाकों और किर्गिजोने ताशकन्द और काशगरमें बड़ी लूट-मार की, और चीनसे पश्चिमी-एसियाकी ओर जानेवाले वणिक्पथको काट दिया।

रशीद मुगोलिस्तानी खानोंमें अन्तिम शक्तिशाली खान था।

१७. अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र (–१५९३ ई०)

यह अकबरका समकालीन था और १५९३ ई०में काशगरपर शासन करता था। अब्दुर्रशीदका तीसरा पुत्र अब्दुर्रहीम पिताकी आज्ञाके बिना ही तिब्बतमे जहाद करने गया, जहा वह मारा गया। कश्मीरपर कितने ही समयतक मुगोलिस्तानके खानोका अधिकार रहा, फिर १५८७ ई० के आसपास अकबरने कश्मीरको ले लिया।

१८. मुहम्मद खान (१६०३ ई०)

ईसाई साधु गोयेज आगरासे लाहौर, काबुल, बदख्शां होते १७०३ ई०में यारकन्द पहुंचा। उस वक्त मुहम्मद खान वहांका राजा था। गोयेज सालभर यारकन्दमें रहा। उस समय काशगर राज्यकी राजधानी यारकन्द थी। गोयेज सूचाव (चीन)मे अप्रैल १६०७ ई०मे मर गया।

१९. इस्माईल खान

यारकन्दकी गद्दीपर पीछे इस्माईल बैठा।

बाबर और हैदरकी पलटनमें मुगल नामसे प्रसिद्ध तुर्क भी काफी संख्यामे आये थे। दिल्लीके पास-पड़ोस और रावलपिंडीके इलाकेमें इन मुगलोंकी संख्या काफी थी। पश्चिमोत्तर प्रदेशके रास्तेपर भी वह जहां-तहां बस गये थे, इनमें चगताई (बाबरके अपने भाई-बंधों)की संख्या २३५९३ थी, और बरलसोंकी १२१७३।

---

*इसी जगह हैदरने अपने ग्रंथके बारेमें लिखा है—"यह तारीखे-रशीदी ९५३ हि० के जुल्हेजा महीनेके अन्त (फरवरी १५४७ ई०) मे कश्मीरके नगरमें लिखी गई, जब कि मुझ मुहम्मद गुरगान-पुत्र हैदर मिर्जाको कश्मीरके सिंहासनपर बैठे पांच वर्ष हो गये थे।"

३. (४. मुगोलिस्तानी खान-वृक्ष)
(१३२१–१५६५ ई०)
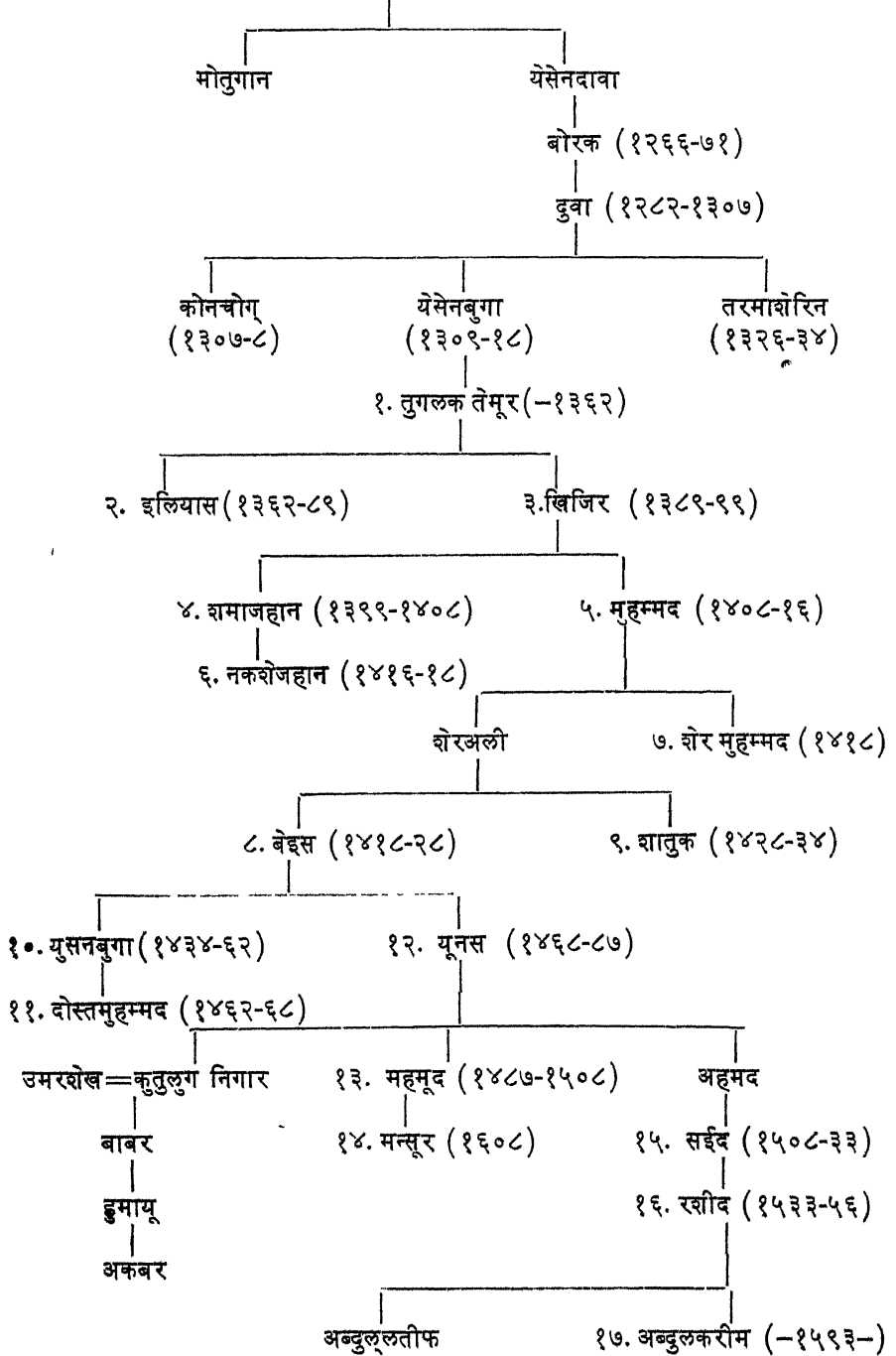
स्रोत-ग्रन्थ

१. तारीख रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत्, लन्दन १८८८)
२. „ (Tr. E. D. Ross, London 1895)
३. ओचर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व. व. बर्तोल्द)

अध्याय ५

सिबिरखान

(१५००–१६५९ ई०)

येरमकके सिबिर नगरके ध्वस और पश्चिमी साइबेरियापर रूसके शासनके स्थापित होनेकी बात कहते हुये हमने सिबिरके खान कूचुमका जिक्र किया था। १७ वी सदीमें साइबेरियामें बसनेवाली जातियोंके बारेमे भी हम बतला चुके हैं।

सिबिरके खान भी अपना सबध छिङ-गिस्-पुत्र जू-छिके पुत्र शैबान खानसे जोड़ते है, जो कि बा-तू खानका भाई था। शैबानके बाद उसके पुत्र बा-तू खान, तत्पुत्र जूजीबुका, तत्पुत्र बादाकुल, तत्पुत्र मंगू तेमूर, तत्पुत्र तुकाबेक, तत्पुत्र अलीओगलान, तत्पुत्र हाजी मुहम्मद खान, तत्पुत्र इलबक (या ईबक), तत्पुत्र मुर्तजा, तत्पुत्र कूचुमखानके पास पहुचकर हम येरमकके समकालमे आ जाते हैं। ७ नवम्बर १५८१ ई० मे कूचुमको ही हराकर येरमकने उसकी राजधानी सिबिरको दखल किया था। कूचुमके बाद उसके पुत्रों अली और इशिमने कुछ समय तक शासन किया। इशिमका पुत्र अबले गिराई और उसके बाद इशिमके भाई चुवाकके पुत्र दौलात गिराईने शासन किया। साइ-बेरिया जैसे सभ्यताके छोरपर बसे देशके बाकायदा इतिहास लिखनेकी सम्भावना नहीं हो सकती थी, इसलिये इन खानोंके बारेमे बहुत बातें हमे मालूम नहीं है। वस्तुतः कबीलेशाही-धर्ममें इतिहास द्वारा अमर होनेकी संभावना न देख शासकोंका सामन्तशाही-धर्मकी तरफ झुकनेका एक कारण यह भी है, कि सामन्तशाही पुरोहित अपने इतिहास-ग्रंथों या पुराणों द्वारा अपने यजमानोंको अमर कर देनेकी क्षमता रखते थे। सिबिरतक इस्लाम पहुंचा तो था, लेकिन अभी वहाके लोगोंपर उसका गहरा प्रभाव नही पड़ा था। बा-तूके वशके खतम होनेपर सुवर्ण-ओर्दूके सिंहा-सनपर शैबानी-वंशज खिजिरखां बैठा, जो कि मङ-गू तेमूरका संबंधी था। खिजिरखांका सिक्का ख्वारेज्ममे भी मिला है, जिससे जान पडता है, शायद ख्वारेज्मपर भी उसका अधिकार था। मङ-गू तेमूरके छ पुत्रोंमे किपचकका खान पुलाद या पोलाद-तेमूर है। इसने किपचक खान अजीजको १३६७ ई० के आसपास मार डाला। पोलादके दो पुत्रोंमे अरबशाहके वंशजोंने ख्वारेज्मपर शासन किया, और इब्राहिमके वशजोने बुखारापर, यह हम बतला आये है। मेङ-गू तेमूरके पौत्र हाजी मुहम्मद खानके पुत्र ईबकसे हम सिबिरके खानोंपर पहुंचते है।

१. इबक, हाजी मुहम्मद-पुत्र (१४९३ ई०)

ईबक या इलबक उस समय हुआ, जब कि जू-छि-उलुस विश्रृंखलित-सा हो चुका था। साइबेरिया और बश्किरोके छोटे-छोटे राजा इसे अपना अधिराज मानते थे। पुराने पंवाड़ोंमें इसे कजानका जार उपक कहा गया है। इसने अपनी बहिनका ब्याह साइबेरियाके शासक मारसे किया था, जिसे झगड़ा हो जानेके कारण पीछे इसने मार डाला। उसके बाद वह त्यूमेन (प० साइबेरिया) प्रदेशका राजा हुआ। ईबक १४९३ ई० के बाद किसी समय मरा।

२. मुर्त्तुजा, ईबक-पुत्र

इसके शासनकालमे उज्बेक-उलुसका अधिकांश भाग मुहम्मद शैबानी और इल्बर्सके नेतृत्वमें अन्तर्वेद और ख्वारेज्ममे चला गया। जिसका कारण था पूरबमें मंगोल राजा अलतन खानके

नेतृत्वमें मंगोलों द्वारा कल्मकोंपर भारी प्रहार पड़नेसे उनका पश्चिमकी ओर भागते हुए उज्बेकोंके ऊपर पडना। उन्हें कल्मकोंकी बाढने डुबाना चाहा, और उधर तेमूरी साम्राज्यके नष्ट-भ्रष्ट होनेके कारण दक्षिणसे न्यौता आया। उज्बेक-उलुसमेंसे जो यहां रह गये, वह मुर्तुजाको अपना खान मानते रहे। मुर्तुजाने नोगाइयोंपर बडा अत्याचार किया, जिसका बदला पीछे उन्होने उसके पुत्र कूचुमको मारकर लिया।

३. कूचुम, मुर्तुजा-पुत्र (१५५५–९५ ई०)

१५५६ ई० मे सिबरके खान यादगारने रूसी जारके पास कर न भेजनेका यह कारण बतलाया था, कि शबानी राजकुमार हमारे देशमे लूट-मार कर रहा है। यह शैबानी राजकुमार कूचुम खान था, जो उस समय सिबिरसे पश्चिमके त्यूमन प्रदेशका शासक था। १५६३ ई० के आसपास कूचुमने यादगारको हटाकर सिबिर राजधानी दखल कर ली। १५६९ ई० मे रूसी उसे सिबिरका जार (राजा) कहते थे, जिसे रूसी जारने एक संधि द्वारा अपने संरक्षणमें ले लिया था। संरक्षणकी एक शर्त यह थी, कि सिबिर खान हर साल सेवलकी हजार छाले और स्क्वाइरलो (गिलहरी) की हजार छाले प्रतिवर्ष भेजा करेगा। इस सोनेके मुहर लगे सधि-पत्रको चाबुकोफ साइबेरिया ले गया। कूचुमकी एक बीबी कजानके किसी छोटे खानकी लड़की थी, जिसके साथ कितने ही रूसी और चुवाश गुलाम भी सिबिर गये थे। उसकी दूसरी दो बीबियां मिर्जा दौलतबेगकी लड़कियां थीं। इस प्रकार सभ्यताके सीमान्तपर बसे होनेपर भी सिबिर नगरीमें सभ्यताके संदेशवाहक स्त्री-पुरुष पहुंच चुके थे। लेकिन कूचुमकी प्रजामे अभी बर्बर अवस्थामें रहनेवाली कितनी ही जातिया थी। इर्तिश और तोबोलके कितने ही तारतार ओर्दू तथा बाराबिनके तारतार भी इसे अपना खान मानते थे। इसीके समय त्यूमनमें रूसियोंके साथ मिला हुआ एक अर्ध-स्वतंत्र राजा रहता था। इस तरह कूचुमका राज्य तूराके मुहानेसे अधिक पश्चिम नहीं था। तरखनके तारतार इसकी अन्तिम प्रजा थे। तोबोलके सबसे नजदीकवाले बश्किर और ओस्तियाक कबीले भी कूचुमके अधीन थे। कहते हैं, कूचुम पहला खान था, जिसने साइबेरियामे इस्लामका प्रवेश कराया, लेकिन अभी वह बहुत फैला नही था। उसने अपने पिता मुर्तुजाको लिखा, जिसपर उसने एक आखुन (बड़े मुल्ला) और कई मुल्लाओंके साथ अपने पुत्र अहमद गिराईको कजानसे इस्लामके प्रचारके लिये कूचुमके पास भेजा। कूचुमने प्रजाको जबर्दस्ती मुसलमान बनानेकी कोशिश की, तो भी वह अभी तारतारोंको पूरी तौरसे मुसलमान बनानेमे सफल नही हुआ था। इर्तिश-उपत्यकाके तारतार अब भी मूर्तिपूजक थे। रूसी यात्री मुलरसे यालीनिश तारतारोंके एक सरदार (बी) ने कहा था: अपनी जवानीसे ही हम अपने मां-बाप, अपनी प्रजा तथा पड़ोसियोके साथ सदा मूर्तिपूजक रहे। तोबोल्स्क और देमियान्स्कोयके बीचके निवासी लेबाउज्की ओर्दूके तारतार तथा तूरिन्स्कके पड़ोसवाले तारतार भी तबतक मूर्तिपूजक रहे, जबतक ओस्तियाकोके साथमे उन्हे ईसाई नहीं बना लिया गया। बारबिन्स्की कबीलेके बहुतसे लोग १८वी सदीतक मूर्तिपूजक रहे, यद्यपि उनके इलाकेमे बहुत पहले कूचुमके समयमें ही मुसलमान पहुच चुके थे। एक दूसरे रूसी लेखक फिशरके अनुसार निजार-उपत्यकाके तूरिन्स्क तारतारोंके कितने ही परिवार १६३९ ई० तक मूर्तिपूजक रहे।

७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमकने किस तरह कूचुमकी राजधानी सिबिरपर अधिकार किया, यह हम बतला चुके हैं। १७ या १८ अगस्त १५८४ ई० को येरमक लड़ाईमे हारकर अपने कवचके भारी बोझके कारण नदीमे डूबकर मर गया, लेकिन उससे रूसी अधिकारको साइबेरियामें क्षति नही पहुंची। येरमक और उसके साथियोंका स्थान दूसरे रूसी बराबर लेते रहे। येरमककी मृत्युके दो साल बाद १५९६ ई० के बसन्तमे वोयवोद वासिली बोरिस-पुत्र सूकिन और इवान म्यास्नोईके साथ तीन सौ रूसी सैनिक आये—उन्होने युगुरके पहाड़ों और ओब नदीके रास्ते चढ़ाई की। १० जुलाई १५८६ ई० को सूकिन तारतारोंके एक पुराने किले चिंगीपर पहुंचा, जो कि तुरा नदीके तटपर था। वहां उसन

त्यूमनके नामसे एक नगर वसाया, जो आजकल पश्चिमी साइबेरियाका एक जिला है। त्यूमन तुरा नदीके दक्षिण तटपर बसा उरालसे पूर्व रूसियोकी प्रथम स्थायी बस्ती थी। रूसियोंने बहुत आसानीसे तुरा, पिशिमा, इसेत, तोदा और तबोलकी उपत्यकाओके तारतारोंको अपना करद बना लिया और कुछ ही समय बाद सैदिक खानको भी अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। सैदिक कूचुमसे पहलेके सिबिर-खानोंका वंशज था।

कूचुम अब भी हाथमें नही आया था। वह भागकर नोगाइयोके भीतर बराबिनके मैदानोमे चला गया, जहासे १५९० ई०मे उसने तोबोल्स्कके पासवाले इलाकेपर आक्रमण किया, और रूसी प्रजा बननेके कारण कौरदक और सालिन्स्कके तारतारोंको लूटा। इसपर तोब्रोल्स्कके नये वोयवोद राजुल (क्न्याज) कोल्जोफ-मोसाल्स्कीने कुछ रूसी और तारतार सैनिकोके साथ अगले साल जुलाई १५९१ ई०मे कूचुमके विरुद्ध अभियान किया, और वह चिलिक झीलके पास इशिमके तटपर कूचुमको हराकर उसकी दो बेगमो, एक पुत्र (अब्रूल्खैर) और बहुतसी लूटी हुई सम्पत्तिको लेकर वह लौटा। १५९४ ई० मे रूसियोंने तारानगरका निर्माण किया, जिसके लिये जारने राजुल अन्द्रेइ वासिली-पुत्र लेज्कोइको वोयवोद नियुक्त किया। वह मास्कोसे एक सौ पैतालीस स्त्रेलत्सी, सौ कजान-तारतार, तीन सौ बाश्किर, पचास पोल और पचास पोळकसाक भरोको साथ लेकर आया था। त्यूमनसे भी उसके साथ कितने ही लोग आये थे, जिनमे लियुवानी, चेरकासी, निर्वासित-कसाक, तथा कुछ साइबेरियाके तारतार थे। इस सेनामे अधिकांश सवार थे। उनके पास तोपखाना और काफी गोला-बारूद था। पहले नगरको तारा नदीके तटपर बसानेका ख्याल था, किन्तु पीछे विचार बदलकर उसे इर्तिशकी शाखा अगरकापर वसाया गया, पर नाम तारा ही रहा। रूसी अब कूचुमको दवानेके लिये उतारू थे। कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये कहा गया, और यह भी वचन दिया गया, कि छोटे पुत्रोंमेंसे एक तथा दो-तीन प्रमुख तारतारोको जामिनके तौरपर मास्को भेज देनेपर बड़े लड़के अबुल्खैर तथा दूसरे सभ्रान्त वदियोंको लौटा दिया जायगा। अब्रुल्खैरने भी जार फ्योदोरकी उदारताकी प्रशंसा करते हुये बापको चिट्ठी लिखी। कूचुमने जवाब दिया—"मैने येरमकको सिबिर नही दिया, यद्यपि उसने उसे जीत लिया। मै शातिसे रहना चाहता हूं, यदि इर्तिशके किनारेको सीमान्त मान लिया जाय।"

१५९५ ई० मे फ्योदोर येलिज्की नया वोयवोद होकर आया। उसने तुरन्त कूचुम और उसके मित्र नोगाई खान अलीके ऊपर चढाई करनी चाही। तोबोल्स्क और त्यूमनसे भी मदद आई, जिसमे पांच तोपे भी थी। पहले जाड़ो मे ९० कसाक-सैनिक भेजे गये, जो अयालिन्स्कके अट्ठाईस तारतारोके साथ लौटे। कूचुम इन कसाकोको अपने रहनेकी जगह ऊपरी इर्तिशमे ले जाना चाहता था। इस समय वह ओबके जलप्रपातसे दो दिन आगे गाड़ियां-नगरमे डेरा डाले पड़ा था। फिर वोयवोदने नया अभियान भेजा, जो कूचुमके रहनेकी जगहको नष्ट करके तारा लौट गया। लेकिन कूचुम अभी दबा नही था। १५९६ ई० के बसन्तमे दोमोशेरोफके अधीन तेतालीस सैनिकोंका अभियान भेजा गया वह २९ मार्चको बरफानी जूतोंपर रवाना हुये। मामूली संघर्षके बाद रास्तेके चमगुल, लुगुई, लुबा, केलेमा, तुराश, बरमा (उलुकबरमा), किरकिपी आदि गांवोंने अधीनता स्वीकार की। इसी समय नोगाई मिर्जा चिन, और कितनोंने भी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कूचुम अब भी प्रतिरोधके लिये तैयार था। अगस्त १५९८ ई० मे ३९७ रूसी सैनिकोंके साथ अन्द्रेइ बोयेकोफ कूचुमके विरुद्ध ओब नदीकी ओर चला। चारों ओर फसले खडे खेतोंके बीचमें कूचुम अपने परिवार तथा पांचसौ अनुयायियोंके साथ छिपा हुआ था। २ सितम्बर को सूर्यास्तसे पहले रूसियोंने आक्रमण कर दिया। सारे दिन लड़ाई होती रही, जिसमें कूचुमका एक भाई, एक पुत्र, राजकुमार इलितन और पाच-छ अमीर, दस मिर्जा और एक सौ पचास सैनिक मारे गये। शामके वक्त नदीकी ओर शत्रु भगे। उनमे एक सौसे ज्यादा नदीमें डूब गये, पचास बन्दी बने, और कुछ लोग नावों द्वारा भागनेमे सफल हुये। वोयकोफको बहुतसे लूटके माल के अतिरिक्त आठ बेगमे, पाच कुमारियां और पांच राजकुमार हाथ लगे। वोयकोफने तारा

५. इशिम, कूचुम-पुत्र (—१६१६ ई०)

१६१६ ई० मे इशिम सलबर और कोशुर दो कल्मक राजकुमारोके साथ ऊपरी ईर्तिशमे सेमीप्लातिन्स्कमें रहता था। वहासे वह साइबेरियाके नगरोंमें ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकडे जानेके बाद इसने अपनेको खान घोषित किया था। १६१८ ई० में कल्मकोंके साथ मिलकर इसने रूसियोपर आक्रमण किया, जिसमे ईर्तिशके मैदानों और तोब्रोल्के बीचमे उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पड़ा। इस लड़ाईमे इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० मे इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मंगोलोने कल्मकोंको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे है। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लड़कीसे ब्याह करके अपने ससुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कल्मकोंका प्रथम सरदार था। इस समय कल्मक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमें रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमे रह रहे थे। १६२२ ई० में इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्तेपर तोबोल-तटपर अवस्थित खामा करागाईमे रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६. अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५–१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कल्मकोंके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कल्मक सरदार कोकशुल, उरलुक और बाइबेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोको कल्मकोका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कल्मकोंके थैशियों (राजाओ) तेलेगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैंची केशेसके साथ मित्रता बढ़ाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रक्खे रहा। १६३२ ई० में वह इसेतके तटपर अलीबयेफ यूर्ति नामक गांवमे था। १६३५ ई० में इसेत-तट, वेर्ख्नें-निजिन्सकया और चूबावोफामें था। इसी साल रूसियोंने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कल्मकोंके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नहीं हुआ। १६३६ ई० में ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कल्मक मारे गये। अबलइ ५४ कल्मकोंके साथ पकड़कर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७. दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामें बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० मे कल्मकोंको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० मे रूसियोने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होंने उनमेंसे बहुतोंको मारा और कितनों को बंदी बनाया। बंदियोंमें तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० में कूचुमवंशी राजकुमारोंकी लूट-मारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कंचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोंके साथ कितने ही कल्मक थैशियोंसे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोंको लूटा, और ३५८ पुरुषों और ३७५ स्त्रियोंको बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बंदियोंमेंसे बहुतोंको जुगारियाके खुन थैशीके बीचमें पड़नेपर छोड़ दिया। अब वस्तुतः सिबिरके खानोंकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरबवाले प्रदेशके स्वामी कल्मक थे। उन्हींमें सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमें उनका नाम नहीं मिलता।

३.(५. **सिबिरखान-वंशवृक्ष)**
(१५००-१६५९ ई०)
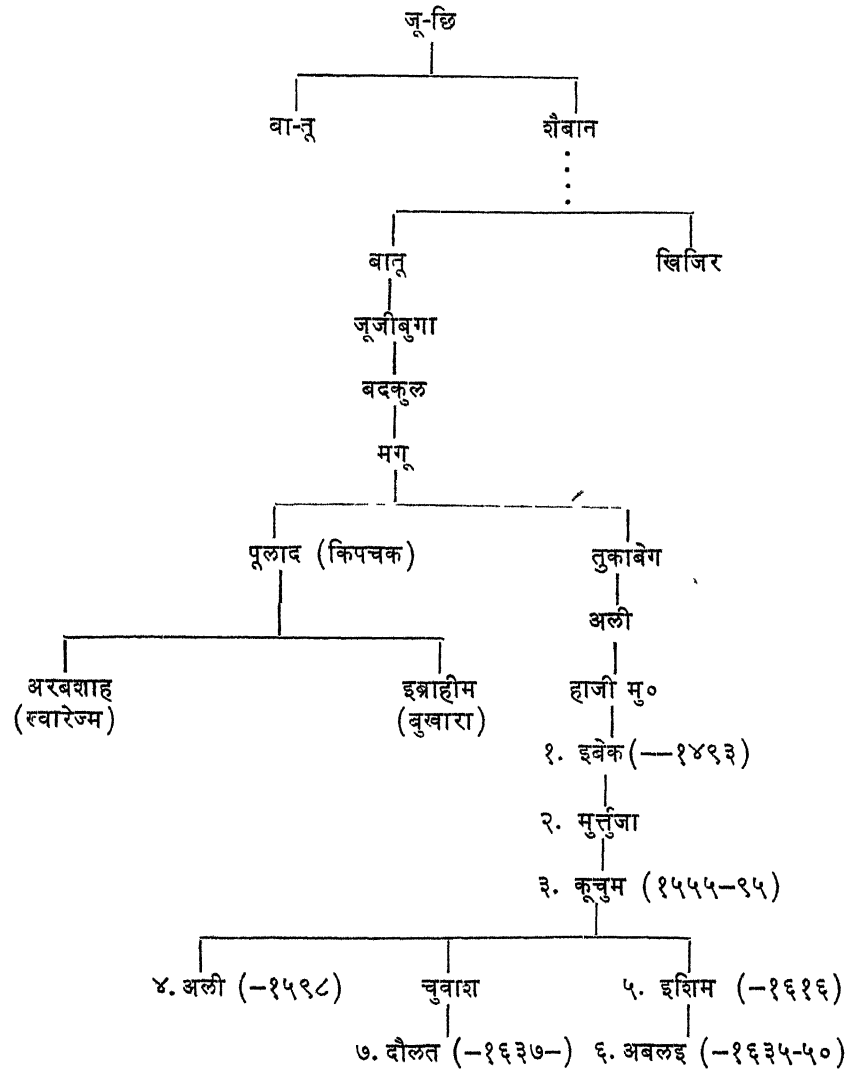
स्रोत ग्रन्थ

१. ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सि इ सिविरि (मास्को १९४६)
२. History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ६

जुङ्गर-साम्राज्य

(१५८२–१७५७ ई०)

कल्मक-मंगोल—मगोलोंकी एक शाखाका नाम कल्मक था। इनका मंगोल नाम तोरगुत था, लेकिन मुसलमान और रूसी लेखक इन्हें अधिकतर कल्मकके नामसे पुकारते है। १६०० ई० (अर्थात् अकबरकी मृत्युसे पांच साल पूर्व) के पहले अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें कल्मक नही थे। पूर्वी मगोलोंके शक्तिशाली राजा अल्तन खानने जब १६२० ई० मे तोरगुतोंको बुरी तरहसे हराया, तो वह अपने सरदारों खराखुला, दालय और मेरेगनके नेतृत्वमें पश्चिमकी ओर भागने लगे और फिर यम्बा नदी, उराल पर्वतमालासे पूर्व और अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें छा गये। १६ वी सदी तक यह भूभाग उज्बेक-कजाकों (शैबानी और कजाक) से नोगाइयोंके हाथमे चला गया था। वह इस भूमिमे अपना घुमन्तू-जीवन बिताते थे। कल्मकोंका उनसे संघर्ष होने लगा। कल्मक लगातार पश्चिमकी ओर बढते बश्किरोंके देशमे पहुंचे। कल्मक राजा उरुसलन थैशीने बश्किरोंसे कर मांगा—बश्किर अभी तक नोगाइयोंके अधीन थे, जिससे नोगाइयोंसे झगड़ेकी नौबत आ गई। इस्माईल-पुत्र दीनेबेइका पुत्र कनाई उस वक्त नोगाइयोंका राजा था। तोरगुत (कल्मक) सरदार उरलुक और उसके पुत्र दाईशिगने नोगाई खानके विद्रोही सलतानियासे मिलकर १६३३ ई०मे कनाईपर चढ़ाई की। कनाई रूसके अधीन था, इसलिये जारकी सरकारने तोबोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी सेनापतियोंको उसकी मदद करनेके लिये हुक्म दिया।

१६४३ ई०मे रूसियोंने आक्रमण करके उरलुक और उसके कुछ पुत्र-पौत्रोंको भी मार डाला। इसके बाद उरलुक-पुत्र येलदेङ और लोब्जाङने यायिक पार कर वोल्गाके मैदानोंमे प्रवेश किया, और नोगाइयोंको किताई-किपचक, मैलबाश और येदिस्सन (एतिसन) के तीन भागोंमे बांट दिया। साथ ही उन्होंने उलाङतुमान (लाल ऊटवाले ओर्दू)के तुर्कमानोंको भी उनकी भूमि येम्बाके दक्षिणी भागसे हटा दिया। अब वोल्गाके दोनों पारका इलाका नोगाइयोंके हाथसे निकलकर कल्मकोंके हाथमे चला गया। इस प्रकार नोगाई अपनी मूल-भूमिसे वंचित हुये। करीब डेढ़ शताब्दियों तक कल्मक इस भूमिमें छाये जरूर रहे, लेकिन अन्तमे फिर कजाक आकर आबाद हो गये, जिसके ही कारण आज यह भूमि कजाकस्तानके नामसे मशहूर है। पश्चिमी मंगोलोंको तोरगुत या कल्मक कहा जाता था, जब कि पूर्वी मंगोल खलखा नामसे प्रसिद्ध थे।

(१) कल्मकोके भीतर ओइरोद, कुरी, तुला, तुमेत, बरगुत, कुरतुतके कबीले थे, जो अंगारा नदी और बैकाल सरोवरके पश्चिममें रहते थे। हो सकता है, पश्चिमी मंगोलोंका कोई मुख्य सरदार कल्मक रहा हो, जिसके नामपर कबीलेका यह नाम पड़ा।

(२) उरियानकुत मंगोल कोस्सागोल (झील)के पास रहते थे।

(३) सुवाइत (सूनित) कबतेरून (कैरून) भी मंगोलोंका कबीला था।

तायनखान (१४७०-१५४४ ई०) के पुत्रोंने आपसमें मंगोलोंका बंटवारा किया था।

कल्मकोके बाद ज्यादा शक्तिशाली खलखा मंगोल थे। आज भी बाह्य-मंगोलिया इन्हींकी है। खलखाके उन्चास झंडे थे, अर्थात् ये उन्चास छोटे-छोटे कबीलोंमें विभक्त था। इनके चार मुख्य भेद थे—(१) जस्सक्तुखानके पश्चिमी खलखा, (२) तुशीयेतूखानके उत्तरी खलखा, जो कि तुला और केरुलोन-उपत्यकाओंमें रहते थे, (३) साइननोयनके मध्य खलखा, और (४) सेतजेनखानके पूर्वी खलखा।

मंगोलराजावलि—चीनसे मंगोल-शासनके उठनेके बाद मंगोलोंकी शक्ति तितर-बितर हो गई थी, जिसको एक बार फिर एकत्रित करके १४७० ई० में तायनखान सारे मंगोलियाका शासक बना। तायनखानका वंश-वृक्ष निम्न प्रकार है:—

३. (६ क. मंगोलिया-वंशवृक्ष)
(१३३२-१६०३ ई०)

तायनखान बहुत शक्तिशाली शासक था, लेकिन उसने बड़ी गलती यह की, कि राज्यको अपने ग्यारह पुत्रोमे बांट दिया। इसके ग्यारह पुत्र थे—(१) तोरोबोलोद, जिसका पुत्र बोदी तायनकी गद्दीपर बैठा, (२) उलुस थैशी, (३) बुर्सबोल, (४) अरसू, (५) अल्शिन, (६) वत्शिर, (७) अरा, (८) गेरेबोल, (९) गेरेसजा, (१०) बुशिगुन, (११) गेरेतू। इस विभाजनके बाद मंगोल शक्ति फिर दुर्बल हो गई, और छिङ-गिस्के वशके दावेदार बहुतसे छोटे-छोटे खान हो गये।

अन्तर्-मंगोलिया—यह तायनखानके बड़े पुत्रोंके हाथमे गई। अन्तर्-मगोलिया मचूरियाके पड़ोस मे थी, इसलिये दोनोकी घनिष्ठता बढी, और अन्तमे मगोलोंकी मददसे मंचू नूर-हाचू या (ताई-चू) ने १५८३ ई०मे अपने मचू (छिङ)-वश (१५८३-१९१२ ई०)की स्थापना की, जिसके द्वारा मगोल सम्राटोके स्थानपर स्थापित मिङ-वंश (१३६८–१६४४ ई०)का उच्छेद हो गया। चीनके ऊपर अधिकार करके मंचुओंने कलके अपने सहायक मंगोलोंके ऊपर हाथ फेरा, और उन्हें अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। इस प्रकार अन्तर्-मगोलिया चीनका भाग बन गई।

बाह्य-मंगोलिया—इसे खलखा भी कहते है। यह तायनखानके छोटे लडकोके ह्राथमें गई। १६८९ ई०मे उनमे और उनके पश्चिमी पड़ोसी ओइरोद—कल्मक—कबीलोंके बीचमें लड़ाई छिड़ गई। अन्तमें खलखा (बाह्य-मंगोलियावालो)को ओइरोदोंसे हारकर अपने कितने ही भूभागको गंवाना पड़ा। कल्मकोंके प्रहारसे मजबूर होनेपर खलखोंने रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपना बचाव करना चाहा, लेकिन इस समय मंगोलियामे तिब्बतके दलाई लामाकी तरह एक बौद्ध संघराज—हू-तुक्-तू—का बहुत प्रभाव था। उसने यह कहकर रूसकी अधीनता स्वीकार करनेसे मना कर दिया, कि वह बौद्ध देश नही है। इसपर खलखोंने चीनकी सहायता चाही। इस समय मंचू-सम्राट् खाङ-सी (शेङ-चू १६६१-१७२३ ई०) चीनकी गद्दीपर था। उसने खलखोंकी मदद की, और ओइरोदों (ओलिओतों)को असानीसे दबा दिया। १६९१ ई०मे खाङ-सीने दोलोन-नोर (दक्षिणी मंगोलिया) मे खलखोंकी एक बड़ी परिषद् बुलाई, जहापर एकत्रित होकर बाह्य-मंगोलियाके राजुलोने चीन की अधीनता स्वीकार करते हुये अभय वर प्राप्त किया। तबसे प्राय. मंचू-वंशके अतिम समय (१९११ ई०) तक बाह्य-मंगोलियाने चीनकी अधीनता स्वीकार कर रक्खी, और प्रतिवर्ष आठ सफेद घोड़े, और एक सफेद ऊंट—नौ श्वेत—करके रूपमे चीन सम्राट्के पास भेजे जाते रहे, और चीनका 'अम्बन' (महामात्य) बाह्य-मगोलियाकी राजधानी उरगा (ताहुरे, आधुनिक उलानबातुर) मे रहता रहा। उसके अतिरिक्त कोब्दो (पश्चिमी मंगोलिया) और उलियस्सुतैमें सैनिक राज्यपाल रहते थे।

कल्मक (जुंगर), ओइरोद (ओलियोत) खलखा मंगोलोंके प्रतिद्वंद्वी थे, इसे हमने अभी देखा। यद्यपि चीनकी सहायतासे खलखोंकी रक्षा हो गई, और कल्मकोंने खलखोंके हाथ बड़ी बुरी तरहसे हार खाई, लेकिन तो भी कल्मकोंकी शक्ति अपनी पश्चिमी और दक्षिणी पड़ोसियोंपर बढ़ती ही गई। पूर्वकी तरफ बढावके रुक जानेपर वह अपने सरदारों खराखुल, ताले और मेरेगनके नेतृत्वमें छू-मिश, ओब और तोबोलकी उपत्यकाओंमे रहने लगे। कल्मक पशुपाल थे, इसलिये चरागाहोंके लिये उनका नोगाइयोसे झगड़ा हो गया। नोगाइयोंके अधीनस्थ बाश्किरोसे कर मागनेपर नोगाइयोंसे संघर्ष हुआ, यह हम बतला चुके हैं।

कल्मकोंकी शक्तिका संस्थापक तूमेतवंशी अल्तन खान (१५०७–८३ ई०) को माना जाता है। इसने १५५२ ई० में ओइरोतोंके नेताके तौरपर कजाकोंके खान तवक्कल शिगाई-पुत्र तथा ताहिर खानके वंशजोंको लड़कर भगा दिया। तवक्कल ताशकन्द पहुंचा, जहांका खान नौरोज अहमद (मृत्यु १५५६ ई०) था। तवक्कलने मंगोलोके विरुद्ध उससे मिलकर लड़नेकी बात की, तो उसने जवाब दिया: हमारे जैसे दस खान भी कल्मकोंका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

इस समय सप्तनद और उसके आसपासकी भूमिमें किर्गिज और कजाक दो घुमन्तू जातियां रहती थी। ९९० हि० (१५८२ ई०) अर्थात् अकबरके समकालीन एक अज्ञात लेखकके अनुसार किर्गिज मंगोलोंके वंशके हैं, और उनके यहां कोई राजा नहीं होता—उसकी जगह उनके नेता बेक होते हैं, जो कि काफिर है। वह पहाड़ोंमें रहते हैं। यदि कोई उनके ऊपर अभियान करता,

तो वह अपने परिवारको पहाड़ोंमे छिपा देते, फिर शत्रुका मुकाबिला करते है। उनकी भूमि बहुत ठंडी होनेसे सहायक होती है, जिसके कारण सफल विजेता भी उन्हें हाथमें नहीं रख सकता।

कजाक—काफिर किर्गिजोंके पड़ोसी कजाक थे, जिनकी संख्या दो लाख परिवार थी। यह मुसलमान तथा केवल इमाम अबू-हनीफाके अनुयायी (हनफी) थे। इनके पास बहुतसे ऊंट थे। यह अपने तम्बुओंको गाड़ियोंपर ले चलते थे। मुसलमान होनेकी वजहसे इनका सबंध बुखारासे बहुत घनिष्ठ था। कजाकोके खान तवक्कलने १५९४ ई० मे जार फ्योदोरके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये अपने दूत मास्को भेजे। उस समय रूसी तवक्कलकको 'कजाकों और कल्मकोंका राजा' कहते थे, जिससे यह पता लगता है, कि १६वी सदीके अन्तमें उसने कल्मकोके विरुद्ध कोई सफलता प्राप्त की थी। अपनी मृत्युके समय तवक्कल तुर्किस्तान-शहर (निम्न सिर-उपत्यका) और काशगरका शासक था। ये दोनो नगर कजाकोके हाथमे प्रायः १७२३ ई० तक रहे। १७ वी सदीमें कजाकोंकी शक्ति बहुत मजबूत थी। उस वक्त वह सप्तनदपर भी अधिकार रखते थे, और उनका केन्द्र तुर्किस्तान और ताशकन्दके नगर थे। उसी शताब्दीके अन्तमें ख्वारेज्म और वोल्गातट तक उनका प्रभुत्व फैला था। लेकिन इसी समय कजाकोके प्रतिद्वंद्वी कल्मकों (जुगरों)की शक्ति बढ़ी। कल्मकोंके राजा निम्न प्रकार थे—

जुंगर-(कल्मक) राजावलि—

१. खराखुल या कराकुल	–१६३४ ई०
२. बातुर थैंची, खराखुल-पुत्र	१६३४–५३ "
३. सेङ-गे, बातुर-पुत्र	१६५३–७१ "
४. गल्दन, गन्दन, बातुर-पुत्र	१६७१–९७ "
५. छेवङ-रब्तन, सेङ-गे-पुत्र	१६९७–१७२७ "
६. गल्दन, छेरिङ-छेवङ-पुत्र	१७२७–४५ "
७. छेवङ-दोर्जे,गल्दन छेरिङ-पुत्र	१७४५–५० "
८. दावा छेरिङ, सेङ-गे-वशज	–१७५५ "
९. अमुरसना, बातुर-थैंची-वंशज	१७५०–५७ "

१. खराखुल, कुतुगैतू अबूदा अबलई-पुत्र, ओनगोजो-पौत्र, अरखान चिङ-सेन-प्रपौत्र (–१६३४ ई०)

तायन खानके समय (१४७०–१५४४ ई०), कल्मकों [१ करइत (केरगुदी), २. जुगर, ३. देरबेत, ४. खोरोत (चोरोस)] की भूमि, त्यानशान-पर्वतमालाके उत्तर तथा बोग्दोउला-पर्वतके पड़ोसमे थी। सोलहवी सदीमें इनका केन्द्र कुल्जाके आसपास इलि-उपत्यकामे था। खराखुल (चोरोस) मगोलोके खान खराखुलने १६३४ ई०के आसपास (शाहजहाके समय) ओइरोतोंको एकताबद्ध करके अपनी शक्तिको बढ़ानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता उसके पुत्र बातुर थैंची (तैची, तैसी, थैशी) को हुई।

२. बातुर थैंची, खराखुल-पुत्र (१६३४–५३ ई०)

१६३४ ई० मे बातुर (बहादुर) ने अपने बापका राज्य पा खुन-थैंचीकी उपाधि धारण की। इसके समय ओइरोतों या जुगरों (वामदल) का राज्य दृढ़ हुआ। इसने १६४० ई०मे कूरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई, जिसमें रूसके राज्यमें रहनेवाले कल्मकोंके भी प्रतिनिधि आये थे। यहां पर बातुरको खुन-थैंची (सारे कल्मकोंका सरदार) बनाया गया। बातुर ऊपरी इर्तिश-उपत्यका तथा जाइसन सरोवरके पासकी भूमिमे चारण करता था। इसने तवक्कल खानके भाई और उत्तराधिकारी कजाकोके खान इशिमसे सफल लड़ाइयां की। १६५३ ई०मे बातुरके मरनेके समय कल्मक एकताबद्ध हो चुके थे।

अल्ताईके उत्तरमें रहनेके कारण बातुरके कल्मकोंको उत्तरी एलियोत (ओइरोत) भी कहा जाता था, और दाहिनेकी ओर प्रवास करनेके कारण जुंगर—सेगोनगर—या वामपक्ष भी। बातुरने तोर्गुतोंके राजा उर्लुककी लडकी ब्याही थी, लेकिन पीछे उर्लुकसे झगड़ा हो गया, जिसके कारण भी तोर्गुत पश्चिमकी ओर प्रयाण करनेके लिये मजबूर हुये। करा-इर्तिशकी उपत्यकामें बातुरके रूसी तथा खलखा पड़ोसी हुये। रूसी अबतक साइबेरियाके खानोंकी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर चुके थे। ताराके आसपासके बराबिंस्की तथा दूसरे तुर्की कबीलोंपर बातुर थैंचीका दावा था। उसके आदमी १६०६ ई० मे कर उगाहनेके लिये इस इलाकेमें गये, तो रूसियोंने विरोध किया, लेकिन वह उन्हे वहांसे भगा नही सके। अगले साल कल्मकोंने कूचुमके पुत्रोंको साथ ले तारासे पश्चिमकी ओर बढते हुए तोबोल्स्क, त्यूमन आदि जिलोपर भी हमला किया। तारा-उपत्यकाके निवासी इर्तिशके मैदानोसे नमक लाकर सारे देशमे बेंचते थे। १६१० ई० मे कल्मकोंने नमककी खानोंको दखल कर लिया। इसपर तारतारों और दूसरे कबीलोंने लडनेकी तैयारी की, लेकिन जब १६१३ ई० मे नमककी खाने उन्हे मिल गईं, तो झगड़ा खतम हो गया। १६१५ ई० मे बातुर थैंची (खराखुल तैंची ?) के दूत तारा गये। और अगले साल थैंची, बातुर और कई दूसरे थैंचियोंने तोबोल्स्कसे आये रूसी कसाकोंके सामने जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली, लेकिन यह शपथ नाममात्रकी थी। कल्मकोंने छेड-छाड जारी रक्खी, और १६१८ ई०में इर्तिश और तोबोलकी बीचकी भूमिमें सिबिर खानके पुत्रोके साथ आये कल्मकोंको रूसियोंने हराकर उनके सत्तर ऊंट और एक बक्सी (भिक्षु)को पकड लिया, जिसे पचास घोड़ा देनेपर छोडा गया।

१६२० ई० मे बातुर तैंची (?) खराखुलने अल्तन खान खलखाकी राजधानीको दखल किया, जो कि उबसा सरोवरके ऊपर थी, लेकिन खलखोंने जल्दी ही कल्मकोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हे हरा दिया। कल्मक तैंचीको अपने एक पुत्रके साथ ओबकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पड़ा। कल्मक तैंचीने चूमिश नदीके तटपर एक दुर्ग बनाया। उसके दूसरे जुगर-कल्मक इर्तिश, तोबोल आदिकी उपत्यकाओंमें चले गये। इसी समय देरबेत-मंगोल भी भागकर साइबेरियामे गये।

धीरे-धीरे बातुरका राज्य बढा। किर्गिज और कजाक खास तौरसे अधीनता स्वीकार करने के लिये मजबूर हुये। कुछ कल्मकोंने किर्गिज और कजाक बंदियोंको रूसियोंके पास भेजकर उनसे अपने बन्दी छुड़ाये। १६२३ ई०मे खलखोने फिर कल्मकोंको हराया। अबतक पिछले चालीस सालोमें खलखोमें लामाओका जोर बहुत बढ़ गया था। इसके बाद उनका प्रभाव जागन नोमेन खान द्वारा कल्मकोंपर भी पड़ने लगा, और जुगर खान खराखुल, दरबेतोके थैंची तालेई और तोर्गुतोके सरदार उर्लुकने अपने एक-एक बेटेको भिक्षु बनाया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ, कि खलखो और कल्मकोके बीच चला आता झगड़ा शांत हो गया।

१६३४ ई० में रूसियोंको नमक न ले जाने देनेके लिये कल्मकोंने दो हजार सेना बैठा दी। रूसी डरके मारे नही गये, तो उन्होंने तारापर चढ़ाई कर दी, लेकिन वहांसे मार भगाये गये। १६३८ ई० में रूसी कसाक यामिश सरोवरपर पहुंचे, जहां कल्मकोके साथ उनकी पंचायत बैठी, जिसमें निम्न शर्तोंपर सुलह हुई—(१) हम रूसी बस्तियोपर आक्रमण नहीं करेंगे, (२) शिकार और मछलीके लिये गये रूसियोके साथ छेड़-छाड़ नहीं करेंगे, (३) नमक ले जानेमें कोई रुकावट नही पैदा कर, उसके ढोनेके लिये अपने पशु भी देंगे। यह एकतरफा शर्तोंकी सुलह थी, जिसमे रूसियोंका ही पलड़ा भारी था। लेकिन कल्मक घुमन्तू ऐसी शर्तोंको माननेके लिये क्यों तैयार होने लगे? सीमान्तपर उनकी लूट-मार बराबर जारी रही।

बातुर थैंचीका डेरा अपनी पुरानी जगह इली नदीके तटपर पड़ा था, जहांसे उसने सन् १६३४ ई० में त्यानशानके दक्षिणके नगरोंपर आक्रमण किया। बातुरकी धर्मभक्तिसे प्रसन्न होकर १६३५ ई०में दलाई लामाने उसे खुङ-थैंशी और एर्दन-बआतुरकी उपाधि प्रदान की। उसकी रूसियोंसे भी दोस्ती थी। उसने अल्ताईके उत्तर ओब-इर्तिशके बीचकी भूमिके अपने उपराज कुला थैंचीको हुक्म दिया, कि तारा (रूसी नगर)से पकड़ लाये परिवारोंको लौटा दो। सौ परिवार—जिसमें रूसी भगोड़े भी शामिल थे—हजार घोड़ोंके साथ रूसियोंके पास लौटा दिये गये। अब रूसियों और बातुर थैंचीमें दूतोंका

दानादान होने लगा। इस समय बातुर एक बौद्ध विहार बनवा रहा था। निश्चय ही विहार अबतक तम्बुओंमें रहे होंगे, लेकिन तम्बुओ वाले विहारोंसे तो कीर्ति स्थायी नही हो सकती थी, इसलिये तिब्बतके विहारोंके अनुकरणपर वह एक भव्य इमारत खड़ी कर रहा था। उसने यह भी देखा, कि घुमन्तूगिरीसे जीविकाका स्थायी प्रबन्ध नही हो सकता, इसलिये वह चाहता था, कि कल्मक खेती करें। कल्मकोंकी एक प्रधान बस्ती थी कुबकसरी। बातुर अपना अधिक समय दे अपने देशको सुन्दर तथा खेती द्वारा समृद्ध करनेमे लगा था। १६४० ई०मे नौ सौ रूबल (चांदी)के रेशम और दूसरे कपड़े मास्कोसे उसके लिये भेजे गये। थैंचीके कहनेके अनुसार वोयवोदको हुक्म मिला था, कि साइबेरियासे सूअर, मुर्गे और कुत्ते भी भेजे जाय। इससे मालूम होता है, कि बातुर अपने लोगोंके आर्थिक ढांचेमे परिवर्तन करना चाहता था।

रूसियोके कारण बातुर थैंचीका बढ़ाव उत्तर (साइबेरिया) मे नही हो सकता था, और पूर्वमे चीनके कारण भी आगे बढनेकी गुजाइश नही थी, इसलिये उसका ध्यान अपने पश्चिमके किर्गिज-कजाकोपर ही जाना स्वाभाविक था। १६४५ ई० में उसने कजाकोंके सबसे बड़े खान इशिम खानको हराया, और उसका पुत्र यंगिर सुल्तान कल्मकोंके हाथमे पडा। लेकिन वह जल्दी ही उनके हाथसे निकल भागा और शक्ति संचय करके १६४३ ई० में उसने बातुरको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। पर इस हारका कोई स्थायी प्रभाव नही पड़ा। इसी समय बातुरका प्रधान शिविर इमिल नदीके तटपर कुबकसरीमे था। यहींपर रूसी राजदूत इलिन उससे मिला। लौटते समय बातुरने पत्र देकर इलिनके साथ अपने दो दूत कर दिये। बातुरके पत्रमे लिखा था:—

"परमभट्टारक महाराज (जार)को बगतिर खुङ थैंची अभिनन्दन करता है। हम अच्छी तरह है, और जानना चाहते है कि आप कैसे है। आप महाराज, और मै खुङ थैंची अबतक शांतिके साथ रहे है। आप मेरे पिता है और मै आपका पुत्र। दूरतम देशोंके लोग हम दोनोंके पारस्परिक अच्छे बर्ताव और सौहार्दको सुन चुके है। मेरे और आपके लोग साथमें व्यापार करते है, और एक दूसरेको नही लूटते, न एक दूसरेसे लड़ते है, बल्कि दोनोंके बीचमे शांति है। लेकिन आपके लोगोने हमारी प्रजापर करसागलेनमें तोम नदीके तटपर आक्रमण किया, और उनमेसे कुछको बन्दी बनाया। अगर महाराज, आपको यह बात मालम है, या आपकी आज्ञासे ऐसा किया गया, तो बिना मुक्ति-धन लिये बदियोंको लौटा दो। अगर ऐसा नही हो, तो अपराधीको हमारे पास जुरमाना देनेके लिये मजबूर करो। आपके आदमी हमारे हरएक बंदीके लिये चार सौ सबले (समूरी छाल) मांगते है, चाहे वह दस सालका बच्चा ही क्यों न हो। यदि आप कृपा करके उन्हे बिना मुक्ति-धनके छोड़नेको आज्ञा नही देगे, तो हमारी मित्रता खतरेमें पड़ जायेगी। हम आपके पास २ पातरके छाले, ६ रुत्थी (धनुर्धरोंके कामका मोटा चमड़ा), और दो घोड़े भेज रहे है, जिनके बदलेमे हम एक कवच, एक बन्दूक, चार लड़नेवाले मुर्गे, आठ लड़नेवाली मुर्गियां चाहते है। यदि परमभट्टारक, आपको किसी चीजकी जरूरत हो, तो पत्रमे लिखें। हमारे दूतोंको मास्को जानेकी इजाजत मिले, जिसमें वह अपने घोड़ोंको साथ ले जा सकें।" इस समय जुगारियामे अकाल पड़ा हुआ था, जिसके कारण बहुतसे कल्मक बरेबास्तेपीमें साइस्सननोर (श्रेष्ठ सरोवर) मे मछली मारकर गुजारा कर रहे थे। इसके पहले इस सरोवरका नाम कीसलपू-नोर था।

शिकायतोका कुछ भी फल न देखकर १६४९ ई० मे खुङ थैंचीके प्रतिनिधि कुला थैंची-पुत्र सकिलने तोम्स्क जिलेपर आक्रमण करके सगर्स्का गांवको उजाड़ दिया। अगले साल रूसियोंने कप्तान क्लपकोफको शिकायत करनेके लिये बातुरके पास कुबकसरीमे भेजा। उस समय बातुर वहां पत्थरोंकी इमारतोंवाले एक नगरके बनानेमे लगा हुआ था। बातचीत करनेपर मालूम हुआ, कि पहले रूसियोने आक्रमण किया था। क्लपकोफके साथ फिर बातुरने अपने दूतोंको भेजकर दो बढई, दो राजगीर, दो लोहार, दो बन्दूक बनानेवाले मिस्त्री, एक तोप, कुछ सोनेके आभूषण, बीस सुअरिया, पांच सूअर, पांच लड़ाई के मुर्गे, दस लड़ाईवाली मुर्गियां और एक घटा मांगा था।

बातुर थैंची बिखरे कल्मकोंको एकताबद्ध करके कल्मक साम्राज्यका संस्थापक तथा जबर्दस्त विजेता ही नही था, बल्कि उसकी जैसी प्रतिभा घुमन्तुओंमें मुश्किलसे पाई जाती थी। अकालोंके

भयसे त्राण पाने और दूसरे अभावोंको हटानेके लिये उसने अपने लोगोंको स्थायी तौरसे बस जाने की प्रेरणा दी, जिसके लिये जुगारिया (कल्मक भूमि) मे जगह-जगह बौद्ध विहार बनवाये। बातुर थैंचीकी भारी मददसे कोकोनोरके खोसोतोंके सरदार गूशी (गूश्री) खानने तिब्बतके छोटे-छोटे राजाओं को खतम करके सारे तिब्बतको एकताबद्ध कर १६४३ ई०मे पांचवें दलाई लामाको प्रदान करके लामा-राज्यकी स्थापना की। बातुर थैंची १६५३ ई०में मरा।

३. सेङ-गे, बातुर-पुत्र (१६५३—७१ ई०)

बातुरका बड़ा लडका सेत्सेन खान या सेङगे इरशि ऊपरी इलिश-उपत्यकामे चारण करता था। वह सेङगेका सलाहकार था। सेङगेका बापके साथ अच्छा संबध नही था। उसने कई बार पिताके रास्तेमे रुकावट डालनी चाही। पिताके मरनेके बाद यह कल्मकोंका थैची बना, तो भी सौतेले भाइयोसे इसका झगड़ा बराबर चलता रहा, जिसमे ही वह १६७१ ई०मे मारा गया।

४. गल्दन, बातुर-पुत्र (१६७१—९७ ई०)

सेंगेके बाद उसका भाई गल्दन बोशोक्तू (बुश्तू) खान गद्दीपर बैठा। गल्दन पहले बौद्ध भिक्षु बन तिब्बतमे अध्ययनके लिये गया हुआ था। लौटकर देश आनेपर भाई सेङगे (सेत्सेन खान) से अनबन हो गई। दोनोमे लड़ाई हुई, और १६७६ ई० के अन्तमे सेत्सेनको ताल्की डांड़े और सेइराम झीलके पास हारकर भागना पड़ा। गन्दनका कजाकों और किर्गिजोसे भी झगड़ा रहा।

तिब्बतमें लूट-मार करनेके कारण गन्दनने अपने चचा शूकेरको किजिलपू सइस्सन (झील) के तटपर हराया। भिक्षुके तौरपर तिब्बतमें रहते समय इसका दलाई लामासे घनिष्ठ संबंध था, इसलिये उसका प्रभाव कल्मकोंपर बहुत जल्दी बढ़ा—जुगर ही नही खोशोत आदि दूसरे कल्मक कबीलोंने भी इसकी अधीनता स्वीकार की, और १६७६ ई०में बापकी तरह इसने भी खुङ-थैचीकी उपाधि धारण की। इसके समय त्यान्शानके दक्षिण (पूर्वी तुर्किस्तान) के शासक खोजा (पीर) थे, जिनमे आपसमे झगड़ा लगा हुआ था। काले पहाड़ियोका नेता काशगरका खान इस्माईल था। उसने सफेद पहाड़ियोंके नेता अप्पक खोजाको देशसे भगा दिया था। अप्पक खोजा पहले कश्मीर गया। औरगजेबको अपने धर्म-बंधुकी मदद करनेकी फुर्सत नही थी। फिर वह तिब्बतमे दलाई लामाके पास पहुंचा। दलाई लामाने खोजाको काश्गर और यारकन्द दिलानेमें मदद करनेके लिये गन्दनके पास लिखा। १६७८ ई०में गन्दनने पूर्वी तुर्किस्तानको जीतकर अप्पकको अपना उपराज बना यारकन्दमें बैठा दिया, और काशगरके खानके परिवारको ले जाकर इली-उपत्यकाके मुसलमान नगर कुल्जामे बसा दिया। तबसे जबतक (१७५५ ई०मे) कि चीनियोंका पूर्वी तुर्किस्तानपर अधिकार नही हो गया—अर्थात् ७७ वर्षोंके लिये—एक बार फिर पूर्वी तुर्किस्तानकी प्राचीन बौद्ध-भूमि कल्मक बौद्धोंके हाथमें जा जुंगर-साम्राज्य-का अंग बन गई। वहांके प्रबन्धका काम गन्दनने खोजाके हाथमे दे रक्खा था, जो प्रतिमास चार लाख तंका कर भेजता था। इसी समय गन्दनने तुर्फान और खामिलको भी जीत लिया, और बुश्तू खान (बोधिसत्व राजा) की उपाधि धारण की, जिसे कि अबतक छिङ-गिस्की सन्तान ही धारण करती थी। गन्दनने चीन-सम्राट्के पास भेंट भेजी, जिसके लिये सम्राट्ने प्रति-भेंटके साथ-साथ राजमुद्रा प्रदान की। १६८२ ई०मे सम्राट् खाङ-सी गन्दन (गल्दन) के पास भारी भेंट भेजते हुये उसके प्रतिद्वंद्वी खलखा राजा तुशियेतूको भी भेंट भेजना नहीं भूला। १६८८ ई०मे गन्दनने खलखोंके तुशियेतू खानपर चढ़ाई की। खलखोमे भगदड़ मच गई, और तुशियेतूकी बीबी और बच्चे भी तीन सौ आदमियोंके साथ जान लेकर भागे। गन्दनको मालूम हुआ, कि उसके भाई सेंङ-गेके मरवानेमें तुशीयेतूका भी हाथ था, इसीलिये उसने दलाई लामाके दूतसे कहा था—"यदि मैं तुशियेतू खानसे सुलह कर लूं, तो मेरे भाईके खूनका बदला कौन लेगा? मैंने निश्चय किया है, कि अपनी सारी सेनाको ले उसके साथ चार-पांच वर्षतक लड़ाई करूं। मै खलखोंको नष्ट करना चाहता हूं और तबतक संतोष नही लूगा, जबतक कि तुशियेतूके भाई चुमसुन तम्पा*को हथकड़ियों-बेड़ियोंमें अपने पैरोंमें पड़ा नहीं देखूंगा।"

लेकिन अब गन्दन दूसरे झगड़ेमें फंसा। उसका भतीजा सेंङ-पुत्र छेवङ अर्बतन बापके सिंहासनका दावेदार था। उसने १६८९ ई०मे चचाको हराया। इस लड़ाईमें गन्दनके लोगोंकी हालत इतनी बुरी हो गई, कि कुछने तो जीवन-रक्षाके लिये आदमीका मांसतक खाया। लेकिन यह अवस्था देरतक नही रही। गन्दन यदि अपने पूर्वी पड़ोसी खलखोंसे लोहा ले रहा था, तो साथही उसने रूसके साथ खूब मित्रता स्थापित की थी। रूसी व्यापारी बराबर उसके राज्य (जुगारिया) मे जाते रहते थे। १६८८ ई० मे गन्दनने दरखन (तरखन, राजकुमार) सइस्सनको दूत बना पत्र और भेटके साथ इर्कुत्स्क भेजा।

चीन चुपचाप यह कैसे देखता रहता, कि उसके अधीन खलखोंसे कल्मकोंकी ताकत अधिक बढ जाये? इसीलिये वह बीचमे कूद पड़ा। रूसी अभी दूर थे, इसलिये वह अपने मित्र कल्मकोंकी अधिक मदद नही कर सकते थे। चीन-सम्राट् खाङ सीने बडी सैनिक तैयारी की। पहले वह स्वयं सेनाका सचालक बनकर आना चाहता था, लेकिन कहने-सुननेपर अपने बड़े भाई ऊ-हो-चे-यू चिङ-वौङको प्रधान सेनापति बनाया। गन्दन भी कोई ऐसा-वैसा प्रतिद्वंद्वी नहीं था। उसने चीनकी राजधानी पेकिङसे अस्सी योजन (लीग) पर जाकर लड़ाई छेड़ी। उसके पास चीनके बराबर सेना नही थी और न तोपे ही। पहले उसके हरावलको बहुत हानि उठानी पड़ी, लेकिन उसकी सेना दलदलके पीछे थी, जहा चीनी सेनाके लिये पहुंचना बहुत कठिन था। लड़ाई रात तक होती रही, और किसी निर्णयपर पहुचे बिना ही दोनों सेनायें लौट गईं। चीनने इस शर्तपर समझौता किया, कि यदि गन्दन इस बातकी शपथ खाये, कि मै सम्राट् और उसके मित्रोंकी भूमि-पर आक्रमण नही करूंगा, तो वह अपनी सेनाके साथ लौट जा सकता है।

गन्दनकी शक्तिको कमजोर करनेके लिये चीनियोंने उसके भतीजे अर्बतनको उसकाया। गन्दनका राज्य इस समय उत्तरमें केरुलोन नदीसे दक्षिणमे कोकोनोर सरोवरतक, और पूर्वमें खलखाकी सीमासे पश्चिममे किर्गिज-कजाकोंकी सीमातक फैला हुआ था। चीनी इतिहासकारों के अनुसार—"वह (गन्दन) कजाकों और तुर्कोको प्रसन्न करनेके लिये अपनेको इस्लामका भक्त बताता था, और तूशियेतू खानके भाई *जेचुन तन्पाके प्रतिद्वंद्वी दलाई लामाके पक्षका समर्थन करते हुये मंगोलोके बीचमें झगड़ा पैदा किये हुये था।" गन्दनने मंचू सम्राट्के भक्त कोरचिन मगोलोके सरदारके पास लिखा था—"हमारे लिये इससे बढ़कर अयुक्त बात क्या हो सकती है, कि जिनके ऊपर एक बार हमने शासन किया, आज उनके ही हम दास बने? हम मगोल है, (बौद्ध) धर्मके नीचे एकताबद्ध हैं, इसलिये आओ हम अपनी शक्तियोंको मिलकर उस साम्रा-ज्यको फिर प्राप्त कर ले, जो कि हमारा है, और हमे पूर्वजोंसे उत्तराधिकारमे मिला है। में अपने विजयके लाभ, यश और आनन्दमेंसे उनको अपना भागीदार बनाऊंगा, जो कि बिपद्मे भागीदार बननेके लिये तैयार है। लेकिन अगर कोई भी मगोल राजा—और मै समझता हूं, कि ऐसे कोई नहीं है—ऐसे है, जो हमारे सबके एकसे दुश्मन मचुओंका दास रहना चाहते हैं, तो सबसे पहले मेरे क्रोधके भाजन वही होगे, चीनको जीतनेसे पहले मै उनका सत्यानाश करके रहूंगा।"

अप्रैल १६९६ ई०मे एक बहुत जबर्दस्त चीनी सेनाने गन्दनके विरुद्ध प्रस्थान किया। इस सेनाके साथ जेसुइत (ईसाई) साधु गेर्बिलोन भी था। सम्राट् खाङ-सी भी सेनाके साथ था। दरबारियोने सम्राट्को रास्तेसे लौटनेके लिये बहुत जोर दिया, लेकिन उसका उत्तर था—"मै यह बात बिल्कुल नही करूगा। क्या मैने अपने पूर्वजोंके सामने शपथपूर्वक अपने अभिप्रायको प्रकट नही किया? क्या हरएक सिपाही यह नही जानता, कि प्रस्थान करनेसे मेरा क्या मतलब था? क्या मेरे पूर्वजोंने खतरे और कठिनाइयोंका मुकाबिला करके सिंहासनको नही प्राप्त किया? शक्तिशाली वीरोंकी सतान होकर खतरेके डरसे औरतकी तरह मै कैसे भाग सकता हूं? ऐसा आचरण करके मै कौनसा मुह लेकर अपने पितरोंसे भेंट कर सकूगा?"

* जे-चुन् तन्-पा=भट्टारक शासन (धर) उर्गाके महालामाकी उपाधि थी।

आगे जानेपर पता लगा, कि गन्दन तुला नदीके तटपर था, जहासे वह केरुलोन नदीके किनारे-किनारे लौट गया। चीनी मुख्य-सेना सम्राट्के नेतृत्वमें केरुलोनके किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढती दोनो ओर सूइलहितू तक गई। लेकिन, अब आदमियोंके लिये रसद और जानवरोके लिय चारा मिलना मुश्किल हो गया, इसलिये चीनी सेनाको मुडकर तोइरिनके उपजाऊ इलाकेमें जाना पड़ा। गन्दनका पीछा करनेके लिये पाच-छ हजार सैनिक छोड़ दिये गये थे। चीनी सेनापति चे-लाइने गन्दनको बहुत मजबूत पाया, इसलिये कुछ गोलियां दागकर वह लौट पडा। गन्दनने उसका पीछा किया, और यह ख्याल नहीं किया, कि दूसरा सेनापति नेयेन्कू काफी सेना लेकर उसकी ताकमें है। तो भी बड़ा जबर्दस्त मुकाबिला किया। यदि तोपचियो और बन्दूकचियोंने गोले-गोलियोकी वर्षा न की होती, तो गन्दन पराजित न होता। अन्तमें कल्मक पीछेकी तरफ भागे। तीस ली (८ मील) तक चीनी सैनिकोने उनका पीछा किया। गन्दनकी रानी गोलीकी शिकार हुई। गन्दन अपनी लड़कियो, एक लड़के तथा कुछ अनुचरोके साथ भागकर पश्चिमकी ओर चला। उसके सैनिकोने चीनी जेनरलके पास आत्म-समर्पण किया। उसके बाद गन्दनके दूतने चीन-सम्राट्के पास पहुचकर कहा—"जल्दी ही मेरा स्वामी भी खलखोंकी तरह साम्राजी सिहासनके पास आ शातिपूर्वक अधीनता स्वीकार करेगा।" खाङ-सीने चिट्ठी लिखकर गन्दनको अस्सी दिनका अवकाश दिया। लेकिन चीनी दूतोंमेंसे केवल एक गन्दनके सामने जाने पाया। उस समय गन्दन खुली जगहमें पत्थरोके ढेरपर बैठा हुआ था। उसने पोची (दूत) को अपने पास आने नहीं दिया। सम्राट्की शुभेच्छाके लिये धन्यवाद दे अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिये दूत भेजनेकी बात कही। कुछ क्षणोकी भेटके बाद गन्दन घोड़ेपर चढ़कर चला गया। चीनी दूतने देरतक प्रतीक्षा की। वह कुछ सैनिक कार्रवाई करना चाहता था, किन्तु असफलतासे निराश और भतीजेके विद्रोहसे हताश हो गन्दनने ५ जून १६९७ ई० को आत्महत्या कर ली। कहते है, छ सप्ताह पहले वह सूर्योदयके समय बीमार पड़ा, और उसी रातको मर गया। यह खबर छ सप्ताह बाद चीन-दरबार को मिली।

गन्दनकी योग्यताके कायल उसके शत्रु भी थे। सम्राट् खाङ-सीने स्वय लिखा था—

"गन्दन एक बडा ही दुर्धर्ष शत्रु था। उसने समरकन्द, बुखारा, बुरुत (किर्गिज), उरगज, काश्गर, सूइरमान (? सैराम), तुर्फान और खामिलको मुसलमानोंसे ले लिया, और बारह सौसे अधिक नगरोंपर अधिकार किया, जो बतलाता है, कि उसकी बांह कितनी लम्बी थी। सातों झडोके खलखोंने व्यर्थ ही अपने एक लाख जवानोंको जमा करके उसका विरोध किया। उन्हे तितर-बितर करनेके लिये गन्दनके वास्ते एक वर्ष पर्याप्त था।"

यदि अपने प्रतिद्वन्द्वियोकी तरह गन्दनके पास भी बारूदके शक्तिशाली हथियार होते, या उदीयमान मंचू-शक्तिके यह आरम्भिक दिन न होते, तो कौन जानता है, उसने फिर छिङ-गिस्का अनुसरण करते हुये चीनके ऊपर मंगोलोकी विजय-ध्वजा न गाड़ी होती?

१६८१-८३ ई०मे गन्दन सैरामपर आक्रमण कर रहा था। १६८३, १६८४ और १६८५ ई० मे किर्गिजों और फरगानियोके ऊपर उसने प्रहार किया। गन्दन प्रथम खुङ-थैची था, जिसने इलीकी उपत्यकामें चारण किया। जाड़ोमें वह कभी-कभी इर्तिशके तटपर रहता था। तुर्क जातियोंमेंसे केवल बुरुत (किर्गिज) १८ वी सदीमे इस्सिक्कुलके पास विचरण करते थे। गन्दनके भतीजे छेत्रङ-रब्तनने १६७८ ई० में चचाको मगोलियामें अभियान करनेके लिये गया देखकर आक्रमण किया था।

५. छेवङ-रब्तन, सेङ-गे-पुत्र (१६९७–१७२७ ई०)

छेवङ औरंगजेबके शासनके अन्तिम दस सालोंके साथ-साथ और भी बीस वर्षतक मध्य-एसियाका शासक रहा। इसने अपने चचा और दादाकी सफलताओको अक्षुण्ण रखते हुये अपने राज्यमें एकता स्थापित की। चीनको अपने रास्तेमें बाधक देखकर थोड़े ही समयमें छेवङ भी चचाकी तरह उसका शत्रु हो गया। तो भी पहले सत्रह सालोतक वह चीनके साथ शांतिपूर्ण बर्ताव करता रहा। १७१४ ई०मे उसने चीन-अधिकृत हामीपर आक्रमण किया। चीनने आलक (अलताऊ) तकके इलाकेको उससे मांगा, जिसे छेवङने देनेसे इन्कार कर दिया। चीनके जैसे बलिष्ठ शत्रुका विरोध करनेसे पहले

छेवङने जरूरी समझा, कि रूसियोंको अपना प्रभु मान लें। इसी संबंधमें बात करनेके लिये कल्मकोंके पास इवान चेरेदोफ १७१९ ई०में भेजा गया इससे पहले १७१७ ई०में छोटी सी नदी खर्किरपर मूजार्तके पास रहते हुये छेवङने तोबोल्स्कके रूसी राज्यपाल वेल्यानोफके पास अपना दूत भेजा था। १७२२ ई० में रूसी कप्तान उन्कोव्स्कीने इलीके दक्षिणी तटपर खुङ-थैचीके शिविरमे मुलाकात की। जिस स्थानपर मुलाकात हुई, वह चारिनसे कुछ वेर्स्तपर था। उन्कोव्स्की सितम्बर १७२३ ई०तक छेवङके दरबार में उसके ओर्दूके साथ ल्यूप और जरगलानकी उपत्यकाओंमें घूमता रहा, लेकिन इसका कोई अधिक फल नही हुआ, क्योंकि १७२२ ई० में मञ्चू-सम्राट् खाङ-सीके मर जानेके कारण अब छेवङको चीनियोमे उतना डर नही रह गया।

१७२३ ई० मे कल्मकोने कजाकोंपर भारी विजय प्राप्त करके सैराम, तुर्किस्तान-शहर और ताशकन्दको ले लिया। कप्तान उन्कोव्स्कीके अनुसार छेवङके पास एक लाख सैनिक थे। वह बहुत ही जनप्रिय था। वह बिना अपने सेनापतियों और सरदारोंकी सम्मतिके कोई निर्णय नही करता था। खुङ थैचीका सौतेला भाई छेरिङ-दोण्डुब (दीर्घायु सिद्धार्थ) उसका एक बडा सरदार और सलाहकार था, जो कि लेप्सा और करातलाके तटपर चारण करता था। इस समय कितने ही कल्मक भी खेती करने लगे थे। खरगोशके मुहानेके नजदीक सरतो (ताजिकों) की कई बस्तिया थीं। शातिकालमे चीनियोके साथ कल्मक व्यापार करते थे, रूसियों तंगुनो (अम्दुओं), अन्तर्वेदियो और भारतीयोके साथ तो वह बराबर व्यापार करते रहते थे।

१७१५-१६ ई०के जाडोमें एक कारवाके साथ स्वीडन-निवासी रेनाड कल्मकोंके हाथमे पड गया। वह प्राय: सत्रह साल (१७३३ ई० तक) उनके देशमें रहा। उसने उन्हे युरोपकी कितनी ही बाते सिखलाई, और उनके बारेमें भी जानकारी प्राप्त की। कल्मक-भूमिकी स्थिति और विचार के बारेमें उसने लिखा है:—(१) सप्तनदका (अलाताउ), तेकुशचिख नदी तथा बलखाशकी तटभूमि, (२) उत्तरमे इलीसे कोकताल और कोकतेरेकके बीच अलतिन-एमेल और कोइबिनके बीचकी भूमि, (३) उत्तरमें केगेनके किनारेमे और चारिनसे पूर्वमें कैननेन पहाडतक, (४) ऊपरी चिलिक-उपत्यका और उसकी पासकी भूमि, (५) त्यूपाके तटमे इस्सिक्कुलके दक्षिणी तट तक पश्चिमी छोरसे उत्तरमे कोइसू और अक्सूके बीच तक, (६) महाकेबिन-उपत्यका चूके संगम करातालतक।

चचाके साथ विरोधका कारण एक यह भी बतलाया जाता है, कि उसे पश्चिमी जुगारियामें अधिकार न देकर उसके भतीजेको नियुक्त किया गया था, तथा त्यान्‌शानके पासवाले नगरोमे भी उसे कुछ अधिकार-वचित किया गया। १६९६ ई० में अर्बतन (रब्-तन) * के पाच सौ सैनिक तुर्फानमें थे। खामिल और आसपासका शासक उस समय अब्दुल्ला तरखनबेग था। १६९७ ई० मे अब्दुल्लाने चीनसम्राट्से यह कहकर मदद मांगी, कि खुङ-थैची हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है। अर्बतनने उसके ऊपर दोषारोप किया, कि अब्दुल्ला कल्मकोंकी सीमाके भीतर घुसकर गन्दनके पुत्र छेर्तन पल्जोर † (सेप्तेन बल्जुर) तथा दूसरे जुगरोको भी पकड़ ले गया, और हमारे दूतोंको रोके रक्खा। चीनने अब्दुल्लासे माग की, कि गन्दनके पुत्रको दिखलाओ और हमारे दूत तथा बंदियोको तुर्फान लौटा दो। अब्दुल्लाने कैदियोंको चीन भेज दिया, जिनमेंसे सत्तर आदमियोको वहां जेलमे डाल दिया गया।

रब्तन कैसे पसन्द करता कि चचाके समयसे उसके करद लोग चीनकी छत्रछायामें चले जाय ? बहुतसे छोटे-छोटे राजाओने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। अर्बतनने तंत्सीलाको हराया, जिसमे उसे चेरेन सन्लुप (छेरिङ मम्डुव्) गन्दन-पुत्र, चोनसी हाई (गन्दन-पुत्री), गन्दनकी स्त्री कुलीन और गन्दनकी चिताभस्म भी मिली। चीन-सम्राट् देख रहा था, कि छेवङ फिर चचाकी तरह जुंगरोको एकताबद्ध करनेमे सफल हो रहा है। उसने रब्तनको रोकना चाहा, और पहले रब्तन को विजयमें प्राप्त वस्तुओंको अपने पास भेजनेके लिये लिखा। रब्तनका जवाब था:— "लड़ाई अब समाप्त हो गई, इसलिये घावोंको भूल जाना चाहिये। हमें पराजितोंपर दया करनी

* रब्-तन=प्रशासन (तिब्बती)

† महाशासन श्रीयोगी (तिब्बती)

चाहिये । उन्हें नष्ट करनेका ख्याल बर्बरोचित होगा, मानवताका यह प्रथम विधान है, जिसे कि एलियोतों (ओइरोतो)ने सदा पवित्र मानकर पाला है।" रबूतनने गन्दनके लडके और पत्नीको भेज दिया, लेकिन लड़कीके बारेमें कहा—'ओइरोतोंमे कायदा नही है, कि अपने शत्रुओंकी लडकीसे बदला ले। और गन्दनकी चिताभस्मसे सम्राट्के विजयमें कोई वृद्धि नही होगी।' इसके बाद चीनसे कई दूत आते-जाते रहे। बहुत दबाव पडनेपर उसने गन्दनकी चिताभस्म और उसकी पुत्रीको चीन भेज दिया। सम्राट्ने भी अपने पुराने शत्रुकी संतानके साथ बडी उदारता दिखलाई, और दोनों बहिन-भाइयोंको क्षमा कर दरबारमें उन्हें ऊंचे पद दिये।

अपने पश्चिमी पडोसियों किर्गिज-कजाकोंके साथ रबूतनने भयंकर युद्ध जारी रखा। १६८८ ई० के अपने एक पत्रमे रबूतनने सम्राट् खाङ-सीको लिखा था, कि कैसे गन्दनने तबक्कल तुर्कके पुत्रको पकड़कर दलाई लामाके पास भेज दिया था। लेकिन मैंने उसके बापकी प्रार्थनापर पांच सौ आदमियोके साथ उसे लौटा दिया, और केवल पांच सौ कृतघ्नोंको ही मारा। लेकिन ये कृतघ्न मेरे प्रदेश हुलीजन ह्वानपर चढाई करके सौ परिवारोंको पकड़ ले गये। मेरे ससुर आयुका खानने मेरी बीबीको मेरे साले सन्तिसत-चापूके साथ जब मेरे पास भेजा, तो तवक्कलने उन्हे पकड़नेकी कोशिश की। उसने रूससे लौटते वक्त हमारे कारवांको भी लूटना चाहा। रबूतनके पास कजाकोंके खिलाफ कार्रवाई करनेके कई कारण हो सकते थे, लेकिन सबसे बड़ा कारण था चचाकी तरह उसकी राज्य-विस्तारकी अभिलाषा। उसने किर्गिज-कजाकोंके मध्य-ओर्दूके बहुत बड़े भागको अपने अधीन कर लिया, और इस्सिक्कुल-सरोवरके पास रहनेवाले बुरुतों (काले किर्गिजों) को भी जीत लिया।

उस समय तिब्बतका गद्दीधारी (छठा दलाई लामा) उसके चचा गन्दनका आदमी था। खोशोत ल्हचन खानने उसे मार भगाया और तिब्बतसे जुगरोके प्रभावको खतम कर दिया। ल्हचनकी सफलतासे अब तिब्बतमें चीनके प्रभावके जमनेकी संभावना हो गई। इसपर रबूतनने कोकोनोरके पासवाले खोशोत मंगोलोंसे मिलकर दो सेनाये भेजी, जिनमेसे एक सीनिङ-फू शहर पर पड़ी, जहांपर कि दलाई लामा नजरबन्द था, और दूसरी सेना पोतलाके विरुद्ध गई। पहली सेना को सफलता नहीं प्रप्त हुई, लेकिन दूसरीने जाकर ल्हासाको ले लिया। ल्हचन खानने पोतला-प्रासादमे शरण ली, लेकिन उसे पकड़कर मार डाला गया। तिब्बतके बहुतसे नगर और गांव उजाड़ दिये गये, मंदिर लूट लिये गये, स्वय दलाई लामाके महल (पोतला) मे बहुत सालोंसे जमा होती सम्पत्तिको भी जुगरोंने लूट लिया। कितने ही विरोधी लामा थैलोंमें बन्द करके ऊंटोंपर लादकर जुंगारिया भेज दिये गये। तिब्बतकी मददके लिये आती एक सेनाको एक दुर्गम डांड़ेपर जुंगरोंने मारकर भगा दिया। १७१७ ई० या १७२२ ई० मे जुंगरोंकी सेनाने तिब्बतमें आकर जो ध्वंसलीला की थी, उसके चिह्नस्वरूप अब भी मध्य-तिब्बतमें बहुतसे उजडे हुये गांवोंकी दीवारें खड़ी मिलती है, जिनकी जुड़ाई और दूसरी स्थितिके देखनेसे पता लगता है, कि जुगरोंके इस भयंकर प्रवाहके बाद फिर तिब्बतकी वास्तुकला अपनी पूर्व-स्थितिमे नही पहुची। चचा गन्दनने जहां तिब्बतकी समृद्धि बढ़ानेकी कोशिश की, वहां उसके भतीजे रबूतनने उसके नाशमें हाथ बंटाया।

रब्तनकी यह कार्रवाई चीनको पसन्द नहीं थी। दो साल बाद चीनने उसे दंड देनेके लिये सेना भेजी, लेकिन वह उसके हाथसे केवल तुर्फानको ही छीन पाई। इससे पहिले १७१७ ई० में करासर नदीतक चीनी सेना पहुंची थी, जहांपर उसे कल्मकोंसे हारना पड़ा। १७१९ ई० में एक दूसरी चीनी सेनाने साइसन सरोवर तक धावा मारा। सम्राट् खाङ-सीके शासनकालके अन्त (१७२३ ई०)तक चीन और जुंगरोंका संघर्ष जारी रहा। उसके उत्तराधिकारी युङ-चेन (शी-चुङ १७२३–३५ ई०) ने सीधे लड़ाईमें भाग लेनेकी जगह अपनी सेनाको हटाकर रेगिस्तानी कबीलोंको आपसमें लड़नेके लिये छोड़ दिया।

रब्तनके शासनके अधिक समयतक पूर्वी तुर्किस्तानपर उसका वैसा ही प्रभुत्व रहा। एक बार वहांके मुसलमानोने विद्रोह किया, जिसपर बड़ी संख्यामें जुंगर-सेना यारकन्द पहुंची, जिसका साथ काले-पहाड़ी नेता खोजा दानियलने भी दिया। काशगरियोंको नगरका द्वार खोलनेके लिये मजबूर होना पड़ा। लोगोंके मनोनीत हाकिमबेगको कल्मकोंने भी अपना हाकिमबेग बनाया, और

वह् काश्गरके खोजा अहमद तथा अपने सहयोगी दानियल खोजाको उनके परिवारोंको बन्दी बनाकर इली ले गये। १७२० ई०मे रब्तनने दानियलको छ नगरोंका शासक बनाकर भेजा। दानियलने अपने लिये एक लाख तंका कर निश्चित किया, जब कि अप्पकके लिये हजार तका मिलना निश्चित था।

रब्तन जुगर-वंशका सबसे शक्तिशाली राजा था। उसकी प्रजा उसे बहुत पसन्द करती थी, क्योंकि उसका बर्ताव उनके साथ बहुत अच्छा था। दलाई लामाने उसे "एर्देनी सूरिकतू बआतुर खुङ-थैशी" की उपाधि प्रदान की थी।

रूसी अठारहवी सदीके शुरूमे साइबेरियाके एक छोरसे दूसरे छोरतक पहुच गये थे। मध्य-एसियाके भी कितने ही खान उनकी अधीनता स्वीकार किये हुये थे, इसलिये इस देशके बारेमे उनको बहुत-सी झूठी-सच्ची खबरे मिली थी। किसीने उन्हे बतलाया था, कि पूर्वी तुर्किस्तानमे सोनकी खाने है। इसपर १७१४ ई०मे साइबेरियाके रूसी राज्यपाल राजुल गगरिनने खुङ-थैचीके पास इस प्रदेशको लेनेके लिये इर्तिशसे यारकन्दतक किला बनानेका प्रस्ताव किया। साथ ही तोबोल्स्कमें वहांसे आई सोनेकी कुछ धूल भी भेजी। जारने इस कामके लिये इवान बुखोल्जको भेजा, जो २९३२ सेनाके साथ जुलाई १७१५ ई०मे तोबोल्स्कसे ताराके रास्ते रवाना हुआ, और इर्तिशसे साढे छ वेर्स्त (१ फर्सख) पर अवस्थित यामिशकी नमकवाली झीलपर पहुंचा। इस झील तथा इर्तिशके बीचमें एक छोटी-सी मीठे जलकी झील प्रयाज्नोये ओजेरो थी, जिससे एक छोटी नदी प्रयाज्नुखा निकलकर इर्तिशमे गिरती थी। इसी नदीके मुहके पास कुछ ऊंची भूमिपर रूसी यामीशेफका मिट्टीका छोटा-सा किला बनाने लगे। इसकी खबर पाकर, रब्तनके भाई छेरिङ दोंडुब्ने आक्रमण किया, और रसदके कारवांको भी लूट लिया। रूसियोके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे, तो भी उन्हे बहुत हानि उठानी पड़ी। उनके पास जब सात सौ आदमी रह गये, तो वह किला तोड़कर उत्तरकी ओर लौट गये। तारासे दो सौ सतहत्तर वेर्स्त (१३ फर्सख) पर ओब नदीके मुहानेपर उन्होने ओम्स्कया-क्रेपोस्त नामक किला बनाया। उसी साल १७१६ ई०मे बुखोल्जको बुला मगाया गया, और पीतर I ने मरिगोरोफकी मातहत दूसरा अभियान यामीसेफको लेनेके लिये भेजा। पीतर I इस योजनामे विशेष तौरसे दिलचस्पी रखता था। १७१७ ई० में स्तूपिनकी अधीनतामें दूसरा अभियान भेजा गया। उसने यामीशेफमें पहुंचकर बाकायदा एक मजबूत किला तैयार किया। १७१८ ई० के वसन्तमें विलियनोफने रब्तनके पास पहुंचकर उसे पीतरका पत्र किया। रब्तनने धमकी देते हुए किला तोड़ देनेके लिये कहा। किलेके तोड़नेकी बात तो दूर रही, स्तूपिनने १६१८ ई०मे यामीशेफसे भी दो सौ अट्ठाईस वेर्स्त (३४ फर्सख) आगे इर्तिशपर एक नया किला सेमीप्लातिन्स्क (सप्तप्रासाद) बनाया। यह किला एक बौद्ध विहारके ध्वंसपर बना, जिसकी नींव खोदते समय बहुतसे तिब्बती हस्तलेख मिले थे, जो युरोपमें जानेवाले सबसे पहले तिब्बती हस्तलेख थे।

पीतरको गति मन्द मालूम हुई, इसलिये १७१९ ई०के आरम्भमें उसने इस कामकी देख-भालके लिये जेनरल लिखारेफको नियुक्त किया, जो भारी सख्यामें अफसरोंको लेकर मई १७२० ई० मे तोबोल्स्क पहुंचा, फिर सेमीप्लातिन्स्क होते ४४० आदमियोंके साथ नावोंपर सैसन झीलकी ओर बढ़ा। रूसियोंकी इस गतिविधिसे कल्मकोंको संदेह होना स्वाभाविक था। रब्तनके पुत्र और उत्तराधिकारी गन्दन छेरिङके नेतृत्वमे बीस हजार कल्मक प्रतिरोधके लिये जमा हुये। दोनों पक्षोंकी संख्यामें बहुत अन्तर था, लेकिन रूसी आधुनिक हथियारोंसे सज्जित थे। उनके पास बहुतसी छोटी-छोटी तोपे थी, जब कि कल्मकोंके पास सिर्फ तलवार और तीर-धनुष थे। तीन दिनकी लड़ाईमे एक रूसी मरा और तीन घायल हुये, जब कि कल्मकोंकी भारी क्षति हुई। अन्तमें दोनोमें समझौता हो गया। सेमीप्लातिन्स्कसे १८१ वेर्स्त (३० फर्सख) पर एक झीलके पास ऊंची जगहपर लिखारेफने उस्तका-मेन्नेगोर्स्कया नामका किला बनाया। लेकिन, यारकन्द की सोनेकी भूमिमे पहुंचनेका यह प्रयत्न यही खतम हो गया। पीतर I के बाद फिर किसीको उसके लिये दिलचस्पी नही हुई।

शासन-व्यवस्था—रूसी दूत उन्कोस्कीने १७२२ ई०में कल्मकोंकी शासन-व्यवस्थाको देखा था। उसने लिखा है, कि खुङ-थैची (महाराजा) के बाद सबड़े बड़ा दर्जा सइस्सनका था, जिस पदपर उस समय राजकुमार छेरिङ दोण्डुब् था। इसके बाद एक परिषद् (सर्गा) थी, जिसके सदस्य

थे—सइस्सन, सम्डुब बआतुर, शरातेञ्जिन, सङ-जी फुनछोक, मोद्बो, बतुमसी, जिम्बिल, सनजक, बसुन, बक्सीगिर तथा पारिपल्क नमिश्का तर्खन जारुक्तू और खुड्तैशीका गच्चिव सोलम्दर्क्सा। इसके देखनेसे मालूम होगा, कि कल्मकोंके ऊपरी शासन-यंत्रमें बहुसंख्यक मुसलमान प्रजाका कोई आदमी नहीं था।

उपज—पिछले तीस वर्षोंमें जुगारियामें खनीमें बहुत प्रगति हुई थी। सदाके घुमन्तू ये मंगोल अपने एक हूण पूर्वजकी तरह अब खेतीकी महिमा अनुभव करने लगे थे। अकालोंने बतला दिया, कि ऐसे समयमें अधिक समयतक जमा रक्खे जा सकनेवाले अनाज ही अधिक सहायक होते हैं। उस समय भी यहा गेहू, जौ, चावल और बाजरा प्रधान फसले थी। फलोंमें मेव, लाल-सफेद अंगूर, खूबानी, तरबूजा-खरबूजा, बड़े कुम्हड़े आदि होते थे। अल्मा-अता (सेबका बाप) के नामसे प्रसिद्ध आजका नगर इसी भूमिमें है, जहाके सेब अच्छे होते थे। इली और चूकी उपत्यकायें बहुत पहलेसे ही कृषि और बागबानी मे प्रधानता रखती थी, इसे हम शकोंके कालमें भी देख चुके है।

ग्राम्य पशुओमें घोड़ा, ऊंट, बैल, बड़ी भेड़ें, बकरिया और खच्चर मुख्य थे, जो अभी भी कल्मकोंके सबसे बड़े धन थे, क्योंकि किसानी-जीवनकी अपेक्षा अभी भी वह पशुपालोके जीवनसे अधिक प्रेम रखते थे।

दस्तकारियोंमें ऊनी कपड़े और चमड़ेका काम कल्मक जानते थे, जिसमें पिछले दो थैचियोंके शासनमें बाहरके दस्तकारोंने आकर अधिक उन्नति कराई। कल्मकोंकी भूमिमें लोहा-तांबा प्रचुर परिमाणमें मिलता था,। यहांकी तांबे और सोनेकी खानोंमें तो नव-ताम्र-युगमें भी काम होता था, यह हम बतला आए है। अब लडाइयोंमें तोपों और बारूदी हथियारोंसे मालूम हो गया था, कि उनके तीर-धनुष आजकलके हथियारोंके सामने बेकार है, और कुछ सौ रूसी-कसाक बीस हजार कल्मक बहादुरोंको घास-मूलीकी तरह काटके रख सकते है, इसलिये वह लोहेकी उपजकी ओर भी विशेष ध्यान देने लगे थे। वस्तुत कल्मक यदि मध्य-एसियामें साइबेरियासे विवनलन् पामीरके पर्वतों, तथा आमू और कास्पियनतक पहुचकर भी वहापर अपना एक स्थायी साम्राज्य नहीं स्थापित कर सके, तो उसका कारण यही था, कि वह उस तरहके हथियार नहीं तैयार कर सकते थे, जैसे कि रूसियों और चीनियोंके पास थे। उन्होंने अगर लोहेके बनानेकी ओर ध्यान भी दिया, तो वह भी कुटीर-शिल्पके तौरपर ही उपजको संगठित करके। कल्मकोंका साम्राज्य घुमन्तुओं का अन्तिम साम्राज्य था, जिसे और सब योग्यता रहनेपर भी निर्बल हथियारोंके कारण सफलता नही प्राप्त हुई। रब्तन और गन्दन दोनोंने अपने लोगोंको पशुपालन-युगसे कृषि-युगमें ला रखनेकी कोशिश की, लेकिन वह अपने समसामयिकोंकी तरह लौह-युगमें नही आ सके।

कहते हैं, उसकी जुगर-सेनाने तिब्बतमें लामाओं और मठोंके साथ जो अत्याचार किये थे, उसीके कारण कितने ही लोग असंतुष्ट हो गये थे, और रब्तन उन्हींके षड्यंत्रका शिकार हो १७२७ ई०में मारा गया।

६. गल्दन (गन्दन) II छेरिङ, रब्तन-पुत्र (१७२७—४५ ई०)

रब्तनके बाद उसका पुत्र गल्दन (गन्दन) छेरिङ गद्दीपर बैठा। इसके समयमें भी कई रूसी राजदूत आये, जिनमें उग्रिउमोफ उसके साथ-साथ १७३२-३३ ई०में जहां-तहां घूमता रहा। अप्रैल और मईमें छेरिङका ओर्दू निम्न इली उपत्यकामें कोजिलेरमें था। मईके अन्तसे सारी गर्मियोंमें वह तेमिरलिक, चेगेन, करकर और तेकेसमें घूमता रहा। सितम्बरसे मार्चके अन्ततक सारे जाड़ोंमें वह इली तटपर रहा। छेरिङकी भी खलखा-मंगोलोंसे लड़ाई जारी रही, लेकिन दलाई लामाने अपने दोनों धर्मानुयायियोंमें इस खून-खराबीको पसन्द नही किया, और १७३४ ई०में उनके बीचमें पड़नेसे लड़ाई बन्द हो गई। छेरिङने मंचू-सम्राट् चि-येन-लुङ (काउ-चुङ १७३५-९५ ई०) की अधीनता स्वीकार की, यह जुंगर-साम्राज्यके लिये अच्छा ही हुआ। १७४५ ई०में छेरिङके मरनेके साथ जुंगर-साम्राज्यकी समृद्धिका समय खतम हो गया।

७. बायन बीजिगन, अदसान खान, छेरिङ-पुत्र (१७४५ ई०)

बायन १७३३ ई०में पैदा हुआ था, और अभी बारह ही सालका था, जब कि उसे बापकी गद्दी मिली। इस अवस्थामें भी वह भारी अत्याचारी, जिससे जनतामें अप्रिय हो गया, इसका कोई अर्थ नहीं है। हां, उसका चचा दोर्जे (दर्गा) लामा गद्दीका अभिलाषी था, लेकिन रखेलीका पुत्र होनेके कारण उसे वंचित कर दिया गया था। दोर्जेको बुखारा और किर्गिजोंके इलाकोंमें बड़ी जागीर मिली थी। उसने सरदारोंको मिलाकर षड्यंत्र किया और बायनको पकड़कर उसकी आंखें निकलवा पूर्वी तुर्किस्तान (सिङक्याङ) के एक नगरमें कैद कर दिया। सभी सैसन (राजकुमार) तथा बहुतसे जुंगर तथा लामा दोर्जेके साथ थे।

८. छेवङ दोर्जे, दरशा लामा, गन्दन छेरिङ-पुत्र (१७४५–५० ई०)

दोर्जे लामाके गद्दीपर बैठनेसे तिब्बतके दलाई लामा भी बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने इसे "एरदेनी लामा बातुर खुङ थैंची"की पदवी प्रदान की। दोर्जे लामाकी बातुरी (बहादुरी) थी अपने वंशके सभी राजकुमारोंको मारकर सिंहासनके सारे खतरोंको खतम कर देना। वैसे जुंगर राजवंशमें बुढ़ापेके लक्षण पहले हीसे दिखलाई पड़ने लगे थे, लेकिन दोर्जेने राज्यके सर्वनाशकी घड़ीको जल्दी लानेमें बहुत काम किया।

९. दावा छेरिङ, सेङ-गे-वंशज (१७५०–५५ ई०)

जुंगर राजाओंके नाम प्रायः सभी तिब्बती भाषाके बौद्ध हैं। दावा छेरिङका अर्थ है, 'चन्द्र दीर्घायु'। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि आजकलकी तरह उस समय भी खलखा, जुंगर (कल्मक) और दूसरे मंगोल बौद्ध-धर्मको अपना जातीय धर्म मानने लगे थे, और तिब्बतके महन्तराज दलाई लामा का इनके ऊपर बहुत प्रभाव था।

दावा रब्तनके भाईका पोता था। अधिकांश जुंगरोंने दोर्जे लामाको नहीं माना था। रब्तनके वंशको दोर्जेने मारकर खतम कर दिया था, लेकिन उसके भाई छेरिङ दोण्डुब्की संतानें अभी मौजूद थी। दावाने तिब्बत आदिके अभियानोंमें सेनाका संचालन किया था, इसलिये अपनेको गद्दीके योग्य समझता था। खोयेत कबीलेके सरदार अमुरसनाने भी दावाके पक्षका समर्थन किया, लेकिन दोर्जे लामा बहुत मजबूत था। उससे हारकर दावा और अमुरसानको कजाकोंके भीतर भागना पड़ा, लेकिन जुंगरोंमें उनके समर्थक कम नहीं थे। जुंगरों और कजाकोंकी मददसे अचानक एक रातको दावाने हमला कर दिया। लडाईमें दोर्जे लामा मारा गया, और दावाने गद्दी संभाल ली। अमुरसना अपनी दूसरी ही योजनायें रखता था। वह गर्मियोंमें इली-तटपर तम्बुओं और राजकीय झंडेको गाड़कर दरबार करता। दावा एक म्यानमें दो तलवारोंको कैसे पसन्द करता? उसके आक्रमण करनेपर अमुरसना चीन भाग गया, और कुछ समयके लिये दावा सारी जुंगारिया और पूर्वी तुर्किस्तानका भी खान हो गया। दावाने छेरिङ द्वारा नियुक्त काश्गरके शासकको इली प्रदेशमें रहनेके लिये मजबूर किया, लेकिन वह बहाना बनाकर काश्गर पहुंच वहां लड़ाईकी तैयारी करने लगा। उधर काश्गरी नेता यूसुफने काफिरोंका जूवा उतार फेंकनेके लिये लोगोंको उस्काया—"इलाकेके नगरद्वारोंपर बाजे बजे, और अपने देशकी स्वतंत्रताको फिरसे प्राप्त करनेके निश्चयके लिये लोगोंने शपथ खाई।" खोजा यूसुफ एक कट्टर मुसलमान था। उसने लोगोंके सामने सुझाव रक्खा, कि नगरके पड़ोसमें डेरा डालकर पड़े हुये तीन सौ कल्मक व्यापारियोंको मुसलमान बना लेना चाहिये। अगर वह इन्कार करें, तो उन्हें मार डालना चाहिये। उन्होंने उनके साथ ऐसा ही किया, और कसाकान (पुलिस अफ़सर) के तौर पर काम करनेवाले जुंगरोंको खानके पास भेज दिया। यारकन्दमें कल्मकोंकी तरफसे नियुक्त शासक हाजीबेगने आंखोंमें आंसू और सिरपर कुरान रखकर क्षमा मांगी, और लोगोंने उसे क्षमादान दे दिया। जब लोगोंने उसे जुंगरोंके दून और अमुचरोंको मार डालनेकी बात कही, तो उसने जवाब दिया—"काफिरको सिर्फ युद्धमें मारा जा सकता है।" एक मजबूत पहरेमें कल्मकोंको शहरसे बाहर

भेजकर उसने हुक्म दिया, कि तुम फिर इस देशमें न आना। खोजा यूसुफने अन्तर्वेदके नगरों—खोकन्द, बुखारा, समरकन्द आदि—से काश्गरियाके स्वतंत्र होनेकी खबर देते हुए सहायता मांगी, अन्दिजानके किर्गिज सरदार किबत मिर्जासे भी मुसल्मानोंकी सहायता करनेके लिये कहा।

दावासे हारकर भागा अमुरसना चीन-दरबारमें पहुंचा था। उसनें अपनेको सिंहासनका वास्तविक अधिकारी प्रमाणित किया। सम्राट्ने उसे च्वाङ-चिन्-वाङ (प्रथम श्रेणीके राजकुमार)की उपाधि प्रदान कर लफ्टनेन्ट-जेनरल (उपमहासेनापति) नियुक्त किया। १७५५ ई०में चीनी सेना लेकर अमुरसना प्रस्थान किया। सेनाको मुश्किलसे कही धनुष खीचनेकी अवश्यकता पड़ी होगी। सभी जगह लोग अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार थे। दावा अपने तीन सौ अनुचरोके साथ मुजार्त डाडेसे होकर उश-तुर्फानकी ओर भागा, लेकिन शहरके हाकिम हाजिमबेगने उसे पकड़कर चीनियोके हाथमे दे दिया, जिसके लिये हाजिमबेगको "वाङ" (राजकुमार) की उपाधि प्राप्त हुई।

१०. अमुरसना, बातुर-वंशज (१७५५–५७)

दावाके गद्दीपर बैठनेके समय भी अमुरसना अपनेको कल्मकोंका राजा समझता था। १७३४ ई० में वह कजाकोकी मददसे, एमिल और ऊपरी इर्तिशकी भूमिको लेनेमे सफल हुआ था।

चीनी सेनाके साथ आकर अमुरसनाने समझा, कि जुगारियाको जीतकर चीनी उसे सारा अधिकार सौंप देंगे। लेकिन उसकी यह आशा सफल नही हुई। दावा और छेरिङको पकड़कर पेकिंग भेज दिया गया था। अमुरसनाको पता लगा, कि उसके साथ भी मंचू-सम्राट् मेरे ही जैसा बर्ताव कर रहा है। असलमे चीनने दावाको अपने हाथमें एक बड़ा हथियार बनाकर रख छोड़ा था, जिसमें कि अमुरसनाके जरा भी विरोध प्रकट करनेपर उसे इस्तेमाल किया जाय। लेकिन दावा बहुत दिनोंतक नही जिया। हाथसे निकल गये पूर्वी तुर्किस्तानको अमुरसनाने फिरसे लेना चाहा और थोड़ेसे संघर्षके बाद उसके कितनेही भागोंको फिर अपने हाथमे कर लिया। चीनी अमुरसनाको कठपुतली बनाकर रखना चाहते थे। इसका विरोध करते इलीमे पड़ी हुई छोटी-सी चीनी सेना और उसके जेनरलको अमुरसनाने मार डाला। इसपर चीनसे नई सेना आई। एकाध बार झड़प हुई। अमुरसनाने देख लिया, कि उसके लिये चीनी सेनाका सामना करना आसान नही है। १७५७ ई०मे—जिस सालमे अंग्रेजोंने पलासीकी लड़ाई जीतकर भारतमें अपने राज्यकी दृढ़ नीव रक्खी—दो चीनी सेनाओंने आकर जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया। इनमेंसे एक उत्तरके रास्ते आई, और दूसरी दक्षिणके रास्ते। कल्मकोंमें उस वक्त आपसमें भारी फूट थी, तो भी अमुरसना हिम्मत करके इलीकी ओर बढ़ा। लोगोंको बड़ी संख्यामें अपने झंडेके नीचे आते देखकर उसे बहुत उत्साह मिला, लेकिन जब चीनकी अपार सेनाको देखा, तो उसके होश उड़ गये, और वह कजाकोंकी ओर भागा। जेनरल चाउ-होइने कुछ सैनिकोको पीछा करनेके लिये छोड़ जुगारियापर चीनी शासनको व्यवस्थापित करना शुरू किया। दूसरा चीनी सेनापति फू-ते अमुरसनाका पीछा करते हुये कजाकोंमे पहुंचा। कजाकोंने चीनकी अधीनता स्वीकार की। कजाक-खान अबले उसे पकड़कर चीनको देना चाहता था, इसलिये अमुरसना वहांसे लोचा (साबेरिया)की ओर भागा। एक बार चीन-सम्राट्को दरबारियोंने कहा—"इली प्रान्तको बिल्कुल छोड़ दिया जाय। हमसे यह बहुत दूर है। वहां जाकर शासन करना आसान नही है, इसलिये जिसकी इच्छा हो वह उसे ले लें।" चीन-सम्राट्ने इस सलाहको नही माना, और चाउ-होइ तथा फू-तेको युद्ध जारी रखते शासनको दृढ़ करनेका हुक्म दिया। अमुरसना अन्तमे साइबेरियामें कुछ समयतक मारा-मारा फिरा, लेकिन इस आफतसे चेचकने उसे जल्दी ही (१७५७ ई०)मे छुटकारा दे दिया। हम बतला आये हैं, कि अमुरसना और उसके अनुयायियोंको साइबेरियामे शरण देनेके कारण रूस और चीनके सबधमें खिचाव पैदा हो गया था। जब रूसियोंने कहा, कि अमुरसना मर गया, तो चीनने उसके शवको मांगा, शव न होनेपर चिताभस्मको भेजनेके लिये कहा। रूसियोंने चीनी अमात्यको अमुरसनाके चिताभस्मको दिखला दिया, किन्तु उसे अपमानपूर्वक बिखेरनेके लिये देनेसे इन्कार कर दिया—"हरएक जातिके अपने रीति-रवाज होते है, जिन्हें वह पवित्र मानती है। जिस अभागे व्यक्तिने हमारे पास शरण ली, वह तुम्हारा दुश्मन मर चुका है। हमने उसके शरीरा-

वशेषको दिखला दिया, इससे अधिक हम कुछ नही कर सकते।" रूसकी भूमिमें पहुंचनेसे पहलेही अमुरसनाकी बीबी बीतेइ—जो गन्दन छेरिङकी पुत्री भी थी—पतिसे आ मिली थी। पतिके मरनेके बाद उसे पीतरबुर्ग भेज दिया गया।

मंचू सैनिकोंने बड़ी निष्ठुरतापूर्वक कल्मकोंका संहार किया। उनके अत्याचारोंके कारण इलीकी सुन्दर उपत्यका उजड़ गई, जहां चीनियोंने अपने कैदियोंके लिये कालापानी स्थापित किया। पांच लाखके करीब ओइरोत (कल्मक) चीनियोके हाथों मारे गये। उनका तहस-नहस करनेके बाद चीनी सेनाने आगे भी अपनी दिग्विजय जारी रक्खी। १७५६-५८ और १७६० ई०मे चीनी सेना कजाकोंके मध्य-आर्दूकी भूमिमे घुसी। अबलै खानने चीनियोके सामने अधीनता स्वीकार की। उसके बाद लघु-ओर्दूके सरदार नूरअलीने भी चीनियोको अपना प्रभु माना। बूरुत (किर्गिज) सरदारोंने भी उनके सामने सिर झुकाया। १७६६ ई०मे चीनने अबलैको वाङ (राजा) की उपाधि दी। अब मध्य-एसियामे सब जगह चीनियोंकी जय-दुंदुभी बजने लगी। नूरअलीने भेंटके साथ अपने दूतमडलको पेकिंग भेजा। खोकन्दके खान एदेनिया बीने भी १७५८ ई०मे वही काम किया।

जुंगर-साम्राज्यके विच्छिन्न होने और चीनियोंद्वारा पांच लाख कल्मकोंके मारे जानेपर जनशून्य सप्तनद भूमिमे फिर कजाक और किर्गिज लौट आये, और कुछ समयतक वह चीनकी प्रजा बने रहे। पीछे सप्तनदका बहुत भाग रूसियोंने ले लिया, और सिर्फ ऊपरी इली-उपत्यका चीनके भीतर बनी रही।

३. (६ ख. जुंगर-वंशवृक्ष)
(१५८२-१७५७ ई०)
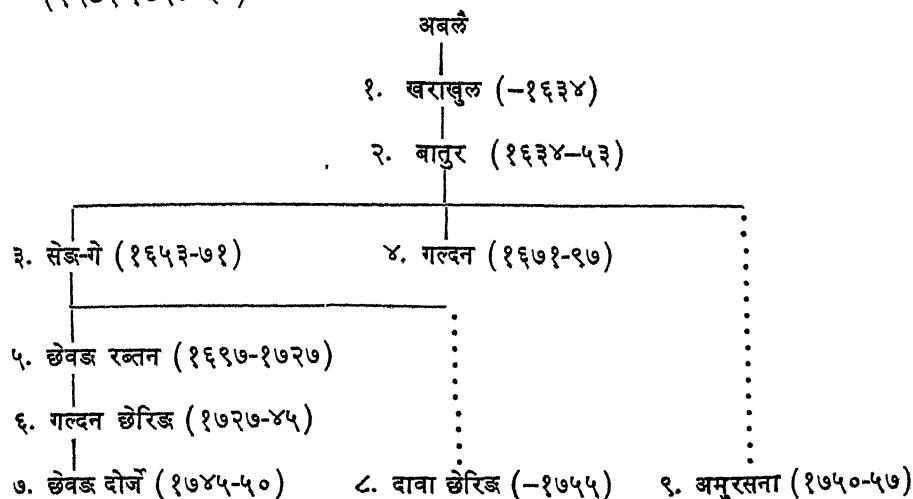
स्रोत ग्रन्थ

१. ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व. व. बर्तोल्द)
२. History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ७

वोल्गा-कल्मक

(१६१६–१७७१ ई०)

हम कह आये हैं कि कैसे १६२० ई०में कल्मकोंने खलखा मगोलोंके हाथों भयंकर हार खाई, और उन्हे पश्चिमकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। उन्हीका एक भाग नोगाइयोंकी भूमि होते पश्चिमकी ओर बढा। इनके नेता उर्लुक (तोर्गुत राजा), और उसके पुत्र दै-शिङने १६३३ ई०मे नोगाई-विद्रोही सल्तानियासे मिलकर कन्हाईपर चढ़ाई की, जिसपर मास्कोने तोबोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी कमाडरोंको कल्मकोके दबानेके लिये हुक्म दिया। इस प्रकार कल्मकोको साइबेरियासे हटना पड़ा। यही उर्लुक वोल्गा-कल्मकों या तोर्गुत-मंगोलोंका प्रथम शासक था। वोल्गाके कल्मकोंकी राजावली निम्न प्रकार है:—

१. खुङ थैची उर्लुक, सुलसेगा-पुत्र	१६१६–४३ ई०
२. दै-शिङ, उर्लुक-पुत्र	१६४३–५६ "
३. फुन्-छोग्, दै-शिङ-पुत्र	–१६७२ "
४. आयुका, फुन्-छोग्-पुत्र	१६७२–१७२४ "
५. छेरिङ-दोण्डुब्, आयुका-पुत्र	१७२४–३५ "
६. दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र	१७३५–४१ "
७. दोण्डुब् थैची, छग्दोर-पुत्र	१७४१–६१ "
८. उबासा, दोण्डुब् थैची-पुत्र	१७६१–७१ "

१ खुङ थैची उर्लुक (१६१६–४३) ई०

वोल्गा-कल्मक राजवंशका वास्तविक सस्थापक सुलसेगा उर्लुकका ज्येष्ठपुत्र खुङ-थैशी (थैची) उर्लुक था। १५६२ ई०मे अल्तन खानके भतीजेके लड़के खुतकताई सेसेनने एर्चिश (इर्तिश) नदीके तट पर चार ओइरोत (कल्मक) कबीलोंकों करारी हार दी, जिसके कारण तोर्गुतोंकी शक्ति क्षीण हो गई, और जुंगरों (कल्मकों) की ताकत बढने लगी। १६०६ ई०में जुगरोंका बड़ा सरदार बातुर बापसे अलग हो इर्तिशपर चला आया। यहांपर उसका मुकाबिला तोर्गुतोंके साथ हुआ, जिसके कारण तोर्गुतोको पश्चिमकी ओर भागना पडा। पहले उन्होने कूचुम खानके बेटोंके साथ मिलकर साइबेरियामें अपनी जड़ जमानी चाही, लेकिन रूसियोंने उनकी एक भी नही चलने दी। फिर कल्मक अरब मुहम्मदके समय ख्वारेज्मके इलाकेकी ओर बढे, और उनका जब-तब ख्वारेज्मी उज्बेकोंके साथ झगड़ा होता रहा—इसके बारेमें हम पहले कह चुके है। १६३२ ई०मे वह अपने थैची उर्लुककी अधीनतामें अस्त्राखानके आसपासमे रहते रूसी प्रतिनिधिका स्वागत करते रहे। १६३९ ई०में तोर्गुतोंने मंगिशलकके तुर्कमानोंको लूटा। १६४३ ई०में उर्लुकके अधीन पचास हजार किबित्का (तम्बू, परिवार) थे। १६४३ ई०मे उर्लुकके खतरेको समझकर रूसियोंने हमला किया, और वह लड़ाईमें मारा गया।.उर्लुकके तीन पुत्र थे—दैशिङ, येल्दिङ और लोब्जङ। बापके मरनेपर भाइयोंमें भी झगड़ा हो गया।

२. दै-शिङ, उर्लुक-पुत्र (१६४३–५६ ई०)

उर्लुकके मरनेके बाद उसके लोग पूरबकी ओर भागे, लेकिन कुछ ही समय बाद एल्देर और लोब्जाङ यायिक (उराल) नदी पार हो वोल्गाके मैदानोंमें चले आये। उन्होंने तीन

कबीलों—किताई-किपचक, मैन्गेबाश और एतीसनको अपने आधीन किया, साथ ही उलान-तुमान (लाल ऊंट कबीला)के तुर्कमानोंने भी इनकी अधीनता स्वीकार की, जो कि उस समय येम्बाके दक्षिणमें रहते थे। अब नोगाइयोंका अधिक भाग कल्मकोंकी प्रजा था। १६५६ ई०मे ही दै-शिङ और उसके पुत्र फुन-छोगने जारको अपना प्रभु स्वीकार किया।

३. फुन-छोग्, दै-शिङ-पुत्र (–१६७२ ई०)

इसके बारेमें इतना ही मालूम है, कि १६७० ई०मे अधिकांश वोल्गा-कल्मक इसके अधीन थे और वह ख्वारेज्मके भीतरतक लूट-मार किया करते थे।

४. आयुका थैची, फुन-छोग्-पुत्र (१६७२–१७२४ ई०)

वोल्गा-कल्मकोंका यह सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था। पीतर का समकालीन रहते हुये इतनी शक्ति-सचय करना इसकी दूरदर्शिता और राजनीतिक चातुरीका परिचायक है।

१६७२ ई०मे यह प्रतापी तोर्गुत (कल्मक) राजा आयुका गद्दीपर बैठा। उसके समय लघु-ओर्दूके नोगाई तथा पहाड़ी चिरकासी क्रिमियाके खानके अधीन थे। आयुकाने उन्हे क्रिमिया-के अधिकारसे छीन लिया, साथ ही नोगाइयोके दूसरे दो ओर्दू कसाई और येदिसनको भी अपने यहा जामिन भेजने के लिये मजबूर किया। आयुका जानता था, कि अपने पड़ोसी मुसलमान कबीलोंकी शत्रुता मोल लेनेके साथ-साथ रूसमे भी बिगाड़ करना अच्छा नही होगा; इसीलिये उसने २६ फर्वरी १६३९ ई०मे अस्त्राखानमे जाकर रूसियोंको अधीनता स्वीकार करनेका वचन दिया। लेकिन तब भी उसका बर्ताव बहुत स्वतत्रतापूर्वक होता था। रूसी डरते थे, कि तोर्गुतोके अतिरिक्त, नोगाइयोके भिन्न-भिन्न ओर्दू भी लूट-मारमे आयुकाके साथ सम्मिलिति हो सकते है, इसलिये उन्होने अधिकतर साम और दानसे ही आयुकापर अकुश रखना चाहा। आयुकाने १६९३ ई०में रूसियोंकी ओरसे जाकर बाश्किरोंको जीता। आयुकाका डेरा अधिकतर कुबनस्तेपीके करातेपे स्थानमे रहा करता था। महानोगाईके थोड़ेसे लोगोको छोड़कर बाकी सभी नोगाई आयुकाके अधीन थे, और उनमेंसे अधिकाशने यायिक और वोल्गाकी स्तेपियोंको छोड़ कुबान और कुमामे डेरा डाला था—महानोगाई अब भी अस्त्राखानके आसपास रहा करते थे। १७२४ ई०में आयुकाके मरनेके समयतक नोगाइयोंकी यही हालत थी। नोगाइयोंके तम्बू मुर्गियोके बड़े टोकरेकी तरह होते थे, जिनमे नीचे गोल ढाचा होता, जिसे बीचमे धुआं निकलनेके लिये छेद छोड़कर ऊंटके बालोंके नम्देसे छा दिया जाता। कच्चे चमड़ेके टुकड़ोंको भी कभी-कभी नम्देकी जगह इस्तेमाल किया जाता था।

१६१३ ई०मे आयुकाने छग्दोरको अपना युवराज घोषित किया। १७२२ ई०में जब पीतर I ईरानके विरुद्ध अभियान लेकर गया था, तो उसने अपने जहाजपर आयुका और उसकी पत्नीका सत्कार-सम्मान एक स्वतंत्र राजाके तौरपर किया। १७२४ ई०में मरनेके समय आयुका ८३ वर्षका था।

५. छेरिङ दोण्डुब्, आयुका-पुत्र (१७२४–३५ ई०, १७४१–६५ ई०)

आयुकाके बाद धर्मपाल-पुत्र छेरिङ गद्दीपर बैठा। यह बहुत ही कमजोर स्वभावका आदमी था। रूसियोंकी कृपा प्राप्त करनेके लिये ईसाई बनकर इसने अपने लोगोंकी सहानुभूति खो दी।

१७३५ ई०मे यह मर गया।

६. दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र (१७३५–४१ई०) और
७. दोण्डुब् थैची छग्दोर-पुत्र (१७४१–६१ई०)

इनके समय कोई उल्लेखनीय घटना नही घटी।

८. उबासा, दोण्डुब् थैची-पुत्र (१७६१–७१ ई०

यह एक लाख कल्मक-परिवारोका राजा था । तुर्कीके युद्धोंमें इसके नेतृत्वमें कल्मक बड़ी बहादुरीके साथ रूसियोकी ओरसे लड़े थे, लेकिन उसके बदलेमे रूसियोंका बर्ताव रूखा देखकर इसने पचास वर्षसे चले आते "स्वदेश चलो"के आन्दोलनका समर्थन किया और वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार तम्बुओंको छोड़कर बाकी कल्मक इसके नेतृत्वमें इली उपत्यकाकी ओर चले गये ।

कल्मकोंका भागना—१७०३ ई०में आयुका खान और जुगर थैची छेवङ-रब्तनसे लड़ाई हुई। वर्तमान कजाकस्तानके पूर्वी भागके स्वामी जुंगर थे, और पश्चिमी भागके तोर्गुत (वोल्गा-कल्मक) । दोनोंकी सीमा मिलती थी, इसलिये इस तरहकी लड़ाई स्वाभाविक थी । वोल्गाके कल्मक भी उसी तरहके कट्टर बौद्ध थे, जिस तरह उनके भाई जुगर। वह तिब्बत तथा ल्हासाको अपनी धर्म-भूमि समझकर तीर्थयात्राके लिये जाया करते थे। आयुकाका भांजा या भतीजा करा-कुचिन छेरिङ अपनी मांके साथ तीर्थयात्राके लिये तिब्बत गया हुआ था । लड़ाईके कारण देश लौटनेका रास्ता न मिलनेसे वह चीन चला गया। चीन-दरबारमें उसका बड़ा स्वागत हुआ। इस समय मंचुओंका सबसे अधिक प्रभावशाली सम्राट् खाङ-सी (१६६१-१७२३ ई०)का शासन था । सम्राट्ने राजकुमार कराकुचिनको उसके अनुयायियोंके साथ शेन्शी प्रदेशके पश्चिमी सीमान्तपर बसा दिया। इसी बीचमे सम्राट्ने निश्चय किया, कि वोल्गाके तटपर भागे हुये मंगोलों (तोर्गुतों)को फिर देशमे बुलाया जाय। कराकुचिनसे बढ़कर इस कामके योग्य और कौन हो सकता था? नौ साल रहनेके बाद १७१२ ई०मे सम्राट्के दूतके साथ वह वोल्गातटपर लौटा । उसने अपने लोगोंके सामने जन्मभूमिमें लौट चलनेका प्रस्ताव रक्खा । यद्यपि इसी समय वह लौटनेके लिये तैयार नहीं हुये, लेकिन यह आन्दोलन कल्मकोंके भीतर चलता रहा। चीन इस काममें तिब्बतके लामाओंसे भी सहायता लेने लगा। अन्तमे वोल्गाके तोर्गुत ओर्दूका मुख्य लामा लोब्जाङ जाजेर अरन्त शिम्बा जैसा योग्य व्यक्ति चीनको इस कामके लिये मिल गया। वह राजकुमार बम्बरका पुत्र था जिसका तोर्गुतोपर उसका बहुत प्रभाव था । पन्द्रह भिक्षु और साथ ही एक टुल्कू (अवतारी) लामा (जिसके शरीरमे किसी बड़े महापुरुषने अवतार धारण किया) के साथ उसने अपने आदमियोंमें बाह्य-धर्मियों (रूसियों) के देशसे स्वधर्मियोंके देश और अपने पूर्वजोंकी जन्मभूमिमें लौट चलनेके लिये प्रचार करना शुरू किया । इस समय आयुकाका पौत्र उबासा तोर्गुतोंका खान था। उसने १७६९-७० ई०के तुर्की-युद्धमे रूसकी ओरसे अपने तीस हजार आदमियोंके साथ भाग ले अपनी बहादुरीका परिचय दिया था, और तुर्कोंको कई जगहोंमें करारी हार दी थी। इन सफल-ताओंके कारण उबासाका आत्मविश्वास और बढ़ गया था, और वह हर बातमें रूसियोंकी नाजबरदारी करनेके लिये तैयार नहीं था । जब रूसियोंने दबानेकी कोशिश की, तो स्वदेश लौटनेकी बातको जोर मिलने लगा। उस समय अस्त्राखानमें रूसी राज्यपाल ब्रिस्तोफ किशिन्स्की था। उसको भनक लग गई, कि तोर्गुत चले जानेकी तैयारीमें है, लेकिन उसने उन्हें समझाने-बुझानेकी जगह कड़े शब्दोंका इस्तेमाल किया—"तुम अपनेको समझते हो, कि हम बहुत भाग्यशाली होकर अपना काम-काज करेंगे, लेकिन तुमको समझ रखना चाहिये, कि तुम जंजीरमें बंधे भालूसे अधिक कुछ नहीं हो। जंजीर पकड़कर तुम्हें जहां ले जाया जाये, वहीं जा सकते हो।" तोर्गुतोंको सचमुच ही एक घेरेमें डाल रक्खा गया था। उनके पूर्वमें यायिक नदीकी उपत्यकामें कितने ही रूसी किले थे, जिनमें कसाक सैनिक थे। पीतर I के बादके रूसी जारोके जर्मन होनेका एक फल यह हुआ था, कि बहुत काफी संख्यामें जर्मनोंको लाकर वोल्गाके दाहिने तटपर बसा दिया गया था । यह जर्मन-उपनिवेश तोर्गुतोंके उत्तरमें पड़ते थे । पश्चिममें क्रिमियाके तारतारोंकी चोट भी कल्मकोंको ही बर्दाश्त करनी पड़ी थी। पिछले सालोंम कुछ अकाल भी पड़ गया था, इन सब कारणोसे 'स्वदेश चलो' आन्दोलनको बड़ी मदद मिली । वोल्गाके दाहिने तटके देर्बेत कबीलेने इस योजनाको पसन्द नहीं किया, और प्रयाणके लिये जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन वोल्गाके न जमनेका बहाना करके उन्होंने साथ नहीं दिया। सारी तैयारी इधर हो रही थी, लेकिन ब्रिस्तोफ जैसे अयोग्य शासकके कारण रूसियोंने उन्हें रोकनेके लिये

कोई तैयारी नहीं की। कल्मकोंके पास दो रूसी तोपें भी थी, जिनको वह पूर्वकी ओर जाते समय अपने कजाक विरोधियोंके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते थे। यह मालूम ही है, कि १७५७ ई०कें विजयके बाद त्यान्‌शान-सप्तनद चीनियोंके हाथमे था, इसलिये तोर्गुतोंको सीमान्ततक पहुंचनेकी ही दिक्कत थी। आगेके लिये उन्हें बहुत-बहुत-से प्रलोभन दिये गये थे।

बड़े लामाने ५ जनवरी १७७१ ई०को प्रयाणका दिन निश्चित किया था। उसी दिन उबासा सत्तर हजार परिवारोंके साथ चल पड़ा। उस समय अधिकांश कल्मक वोल्गाके बाये तटके मैदानोमें जमा थे। सब उबासाके पीछे-पीछे चलने लगे, केवल वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार परिवार रूसमे रह गये। यह पन्द्रह हजार परिवार १९४१ ई० तक संख्यामें कई लाख हो गये थे, और उनका एक स्वायत्त प्रजातंत्र भी स्थापित हो गया था, लेकिन जर्मनोंके प्रहारके कारण द्वितीय युद्धके समय इन्हें वोल्गातट छोड़कर पूर्वमें अपने पूर्वजोंकी भूमिमें जानेके लिये मजबूर होना पड़ा, जहांसे वह फिर लौटकर नही आये। द्वितीय विश्वयुद्धने इस भूभागमें जो परिवर्तन किये, उनसे वोल्गाके जर्मन-उपनिवेश सारे रूसमें बिखर गया, और क्रिमियाके तारतार साइबेरियाकी ओर चले गये।

तोर्गुत (कल्मक) हल्की चीजें ही अपने साथ ले जा रहे थे। जब आगे यात्राकी कठिनाइयां मालूम हुई, तो उन्होंने रूसी तांबेके सिक्कोंको भी फेंक दिया, जिन्हें वर्षों बाद पाया गया। तोर्गुतोंको कजाकोंकी भूमिमेसे जाना था, जो उनके पुराने दुश्मन थे, और जो हर जगह लूट-मार करनेकी कोशिश करते थे। कल्मकोंने स्त्री-बच्चों और अपने पशुओंको बीचमें रक्खा था। चारों ओर हथियारबन्द पुरुष प्रतिरक्षाके लिये तैयार होकर चलते थे। उबासा स्वयं पन्द्रह हजार आदमियोंके साथ यायिकके किनारे पहुंचा, जिसमे कि रूसी कसाकोंसे अपने लोगोंकी रक्षा कर सके। आठ दिनमें तोर्गुत वोल्गासे यायिकके स्तेपीमें पहुंचे। उस समय यायिकके कसाक (रूसी) कास्पियनमे मछली मारने गये हुये थे, इसलिये तोर्गुत असानीसे यायिक पार कर गये। फिर किर्गिजोंकी भूमिमे बर्फपर चलना पड़ा। अभी नदी पार करके बहुत दूर नहीं गये थे, कि मित्रासोफकी अधीनतामें दो हजार कसाकोंने उनका पीछा किया, और वह येकाजुखोरके एक हजार तम्बुओंको लौटानेमें सफल हुये। आगे कल्मकोंकी कठिनाइयां और बढ़ी। बर्फ पिघलनेके कारण कीचड़मे घोड़ों, ऊंटों, पशुओंका चलना मुश्किल था, ऊपरसे घास-चारेकी कमीके कारण वह बहुत दुर्बल होने लगे। गरीब लोगोंको पैदल चलना पड़ता था, जब कि धनी मंगोल सवारियोंपर चल रहे थे। इस विषमताने भी लोगोंके हृदय मे जलन पैदा की। लेकिन जैसे भी हो, अब तो उनके लिये आगे बढ़नेके सिवा और कोई रास्ता नहीं था। दो मासकी यात्राके बाद वह इर्गिच नदी पार हुये। अब उनकी यात्रा सबसे कठिन थी। वसन्तके कारण बर्फ पिघलनेसे सभी नदी-नाले भरे हुये थे, जिन्हे पार करनेके लिये उन्होंने नरकटके मुट्ठोंको बांधकर तैरते पुल तैयार किये थे। इर्गिच और तुरगाई नदियोके बीचमे तोर्गुतोके सबसे अधिक आदमी मरे। तुरगाई पार होकर उन्होंने दोनों तोपोंको छोड़ दिया। इसी समय रूसी सेनाके साथ जेनरल त्राउबेन्बर्ग ओर्स्कसे चला, किर्गिज-कजाक लघु-ओर्दूका खान नूरअली भी कल्मकोंके पीछे पड़ा। वह तुरगाईसे आगे होकर उन्हें रोकना चाहते थे, लेकिन तोर्गुत दस दिन पहले ही आगे जा चुके थे। उन्होंने दूत भेजकर कल्मकोंको लौटनेके लिये कहा, लेकिन कल्मकोने आगे जानेका निश्चय नही छोड़ा। इशिम नदीके तटपर पहुंचनेपर उनकी अवस्था कुछ बेहतर हुई, लेकिन यहापर किर्गिज-कजाकोंसे दो बार संघर्ष हुआ। अब कंगरबेइन, शर्रा-उसुनकी १५० वेर्स्त (२५ फर्सख) चौड़ी स्तेपी जैसी भयंकर भूमि मिली, जिसमें वह तीन दिन चले। यहां पीले रंगका दुस्स्वादु पानी मिला। प्याससे मजबूर होकर उन्होंने उसे पिया, जिसके कारण बीमार होकर कई सौ आदमी मर गये। इस स्तेपीको पार करते ही नूर अली (लघु-ओर्दू) और अबलाई (मध्य-ओर्दू) के कजाकोंने आक्रमण कर दिया। दो दिनतक भयंकर लड़ाई हुई। इसके बाद तोर्गुत बलखासके किनारे पहुंचे, जहां फिर कजाकोसे युद्ध हुये। आठ महीनेकी भयंकर यात्राके बाद १७७१ ई०के मध्यमें इली नदीसे नातिदूर चरापेन स्थानमे वह चीनी सीमाके भीतर घुसे। एक रूसी इतिहासकारने लिखा है—"इस प्रकार आधुनिक

कालकी एक अत्यन्त असाधारण प्रवास-यात्रा समाप्त हुई, रूसी साम्राज्य एकाएक एक ऐसी योद्धा जातिसे वंचित हो गया, जिसका जीवन कास्पियन तटकी स्तेपीके बिल्कुल अनुकूल था, और जिसे घूमन्तू हजारों परिवारोंने अपने असंख्य पशुओंका चारण करके आबाद रखा था, लेकिन अब वह बहुत वर्षोंके लिये निर्जन हो गया।

चीनकी ओरसे उनके स्वागतकी भारी तैयारी की गई थी। एक सालके खाने-कपड़ेका इंतिजाम था। चीनने उन्हे इलीपर बसानेका प्रबन्ध किया था, जहा खेती और पशुचारणके लिये बहुतसी जमीन पडी हुई थी और जिसे १४ ही साल पहले उनके जुगर भाइयोंने खाली कर दिया था। खाने-कपड़ेके अतिरिक्त बहुतसी नकद चांदी भी कल्मकोंको चीनने दी। चीन-सम्राट्ने इस यात्राके स्मारक के तौरपर तोर्गुतोंकी नई भूमिमे इली-तटपर चार भाषाओमें अभिलेख लिखकर पत्थरपर खुदवाया, जिसके कुछ वाक्य है—"यदि वह अपनी इच्छाओंको सीमित रख सके, तो किसी को क्षुब्ध होनेकी अवश्यकता नही, किसीको डरनेकी अवश्यकता नही, यदि वह अपनेको ठीक समयपर रोक सकता है। ये भाव है, जिन्होंने कि मुझे इस काममें लगाया। आकाशके नीचे सभी जगहोंमें समुद्रसे पार दूरतम कोनोंमें ऐसे आदमी है, जो कि दास या प्रजाके नामपर आज्ञा पालन करते है। क्या मै यह मान लू, कि वह सब मेरे अधीन है, और वह मेरे करद है ? यह गलत बात होगी। मै अपने मनमें यही समझता हूं, जो कि बिल्कुल सच है, कि तोर्गुत लोग बिना मेरी ओरसे दवाब डाले अपने आप अबसे मेरे कानूनोंके अधीन रहनेके लिये चले आये है। नि.संदेह दैवने उन्हे ऐसा करनेकी प्रेरणा दी। उन्होने ऐसा करके दैवी आज्ञाका पालन किया। मेरे लिये यह ठीक नही होगा, यदि इस घटनाका एक प्रामाणिक रूपसे स्मारक तैयार न करू।"

वोल्गातटसे चले सत्तर हजार परिवारोंमेंसे केवल पच्चीस हजार परिवार (तीन लाख व्यक्ति) इलीके तटपर पहुच पाये थे। इनमेंसे कितने ही इली-उपत्यकामे. बस गये, और कितने ही जाकर गोबीके पश्चिमी भागमे रहने लगे।

स्रोत ग्रन्थ

१. History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ८
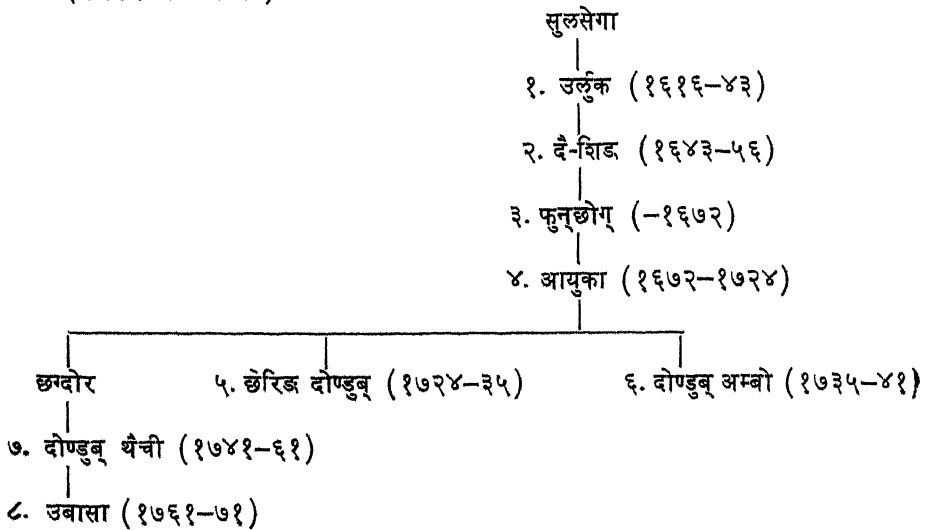
कजाक-ओर्दू

(१७१८–१८१२ ई०)

१८ वी सदीमे जिस तरह किपचकों (जू-छि-उलुस) का एक भाग मध्य-ओर्दू, महाओर्दू और लघु-ओर्दूके रूपमे बट गया, इसके बारेमे हम कह चुके है। इन्ही तीनों ओर्दुओंसे वर्तमान कजाक जातिका विकास हुआ।

क. मध्य-ओर्दू (१७१८–१८१८ ई०

श्वेत-ओर्दू जू-छिके दूसरे पुत्र ओर्दाका उलुस था, इसे हम बतला आये है। सुवर्ण-ओर्दूके प्रभुत्व के समय श्वेत-ओर्दू उसके अधीन रहा, लेकिन बा-तू-वंशके उच्छेदके बाद श्वेत-ओर्दूके खानोंने प्रधानता प्राप्त की। इसी श्वेत-ओर्दूकी एक शाखा मध्य-ओर्दू था, जिससे इसके खान भी जू-छिके पुत्र ओर्दासे अपना संबंध जोडते है। श्वेत-ओर्दूको विच्छिन्न करनेमे नोगाइयोंका भी खास हाथ था, यह भी हम बतला चुके है। मध्य-ओर्दूका प्रथम खान पुलाद (बुलात) श्वेत-ओर्दूका सीधा उत्तराधिकारी था, जिसके वंशके मुख्य खान निम्न प्रकार हुये—

१. पुलाद, बुलात, शेमीअका खान	१७१८–३४ ई०
२. अबुल मोहम्मद, पुलाद-पुत्र	१७३४–४८ ,,
३. अबलइ, शिगाईवंशज	१७४८-८१ ,,
४. वली, अबलइ-पुत्र	१७८१–१८१८ ,,

१. पुलाद, बुलात, शेमीअका खान (१७१८–३४ ई०)

श्वेत-ओर्दूकी शक्तिको चूर्ण करनेमे काफी हाथ जुंगर-कल्मकोंका था। पुलादके समय. इसका ओर्दू अपने चरम उत्कर्षपर पहुंचा हुआ था। जुगरोंने मध्य-ओर्दूके कजाकोंको उनकी अपनी भूमिसे भगा दिया। कजाकों (उज्बेक-कजाको) को केवल सप्तनद ही छोड़कर नही भागना पड़ा, बल्कि १७२३ ई० में जुंगरोंने कजाक खानोंकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको भी दखल कर लिया, जहांपर कि उनके कितने ही खानोंकी समाधियां बनी थी। जुगरोंने ताशकन्द और सैरामको भी लेकर मध्य-ओर्दूको बहुत क्षीण हालतमे छोड़ा। उनमेसे अधिकाश कजाक समरकन्दकी ओर भागे, महा-ओर्दू तथा मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर और लघु-ओर्दू बुखारा और खीवाकी तरफ शरण लेने गया। अभागे भगोड़ोंका अकाल और महामारीने पीछा किया। इस तरहकी भारी आफतमें पडनेपर उज्बेक-कजाकोंने कुछ समयके लिये अपने भीतरी बैरको भुला दिया, और एक बड़ी सभामें जमा होकर उन्होंने अपनी पितृभूमिको काफिरोंसे मुक्त करनेका निश्चय करते हुये लघु-ओर्दूके सरदार अबुल्खैरको अपना प्रधान सेनापति बनाया, और अपनी शपथको पक्का करनेके लिये हूणोंके समयसे चली आती प्रथाके अनुसार एक सफेद घोडेकी कुर्बानी की। कुछ लड़ाइयोंमें सफलता जरूर मिली, लेकिन जुंगर थैची गन्दन छेरिङ्ने उन्हे हराकर भयंकर बदला लिया। कजाकोंने अब पितृभूमिका ख्याल छोड़कर भागनेमें ही कल्याण समझा। लघु-ओर्दूने पश्चिमकी ओर वोल्गा-कल्मकों (तोर्गुतों) को भगाते जाकर येम्बा तथा यायिक (उराल)की उपत्यकाओंमें विचरण करना शुरू किया। मध्य-ओर्दूने उत्तरकी ओर भागकर पहले ओरी और उई नदियोंकी उपत्यकाओंमें जा वहांसे बाश्किरोंको भारी

सख्यामे भगा दिया। पीछे बाश्किर उरालके कसाको (रूसियो)से मिलकर इनके बगलमे कांटे बन गये । चारों ओरसे खतरा ही खतरा दिखलाई देनेपर मध्य-ओर्दूने रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करनेमे खैरियत समझी १७३२ ई०मे शेमीअकाने रानी अन्नाकी वफादारीकी शपथ ली, लेकिन कसाकोंने इसे पसन्द नही किया, जिसके कारण मध्य-ओर्दूमें झगड़ा हो गया । बाश्किरोंपर इन्होंने असफल आक्रमण किया। जिस समय अपनी मूलभूमिको कसाक छोड़कर भाग रहे थे, उस समय महा-ओर्दू अपनी पुरानी भूमिमें जुगरोंकी अधीनता स्वीकार कर किसी तरह रह गया।

जिस समय शमीअका रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपनी रक्षा करनेकी कोशिश कर रहा था, उस समय सारे कजाकोंका सबसे बड़ा नेता तथा लघु-ओर्दूका खान अबुल्खैर भी रूसका खैरखाह था। मध्य-ओर्दूको रूसकी अधीनता स्वीकार करानेमे उसका काफी हाथ था। १७३४ ई०में रूसी सीमान्त (ओरेनबुर्ग) के राज्यपाल किरिलोफको शेमिअकाको खानकी पदवी-दानके लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन पदवी प्राप्त करनेसे पहले ही शेमीअका मर गया। इस पदवीके साथ जो पत्र रूसी रानीने भेजा था, उसमें लिखा था—"हमारी प्रजा शेमीअका खान और मध्य-ओर्दूके किर्गिज-कजाकोंकी सेनाके मखियोंको।"
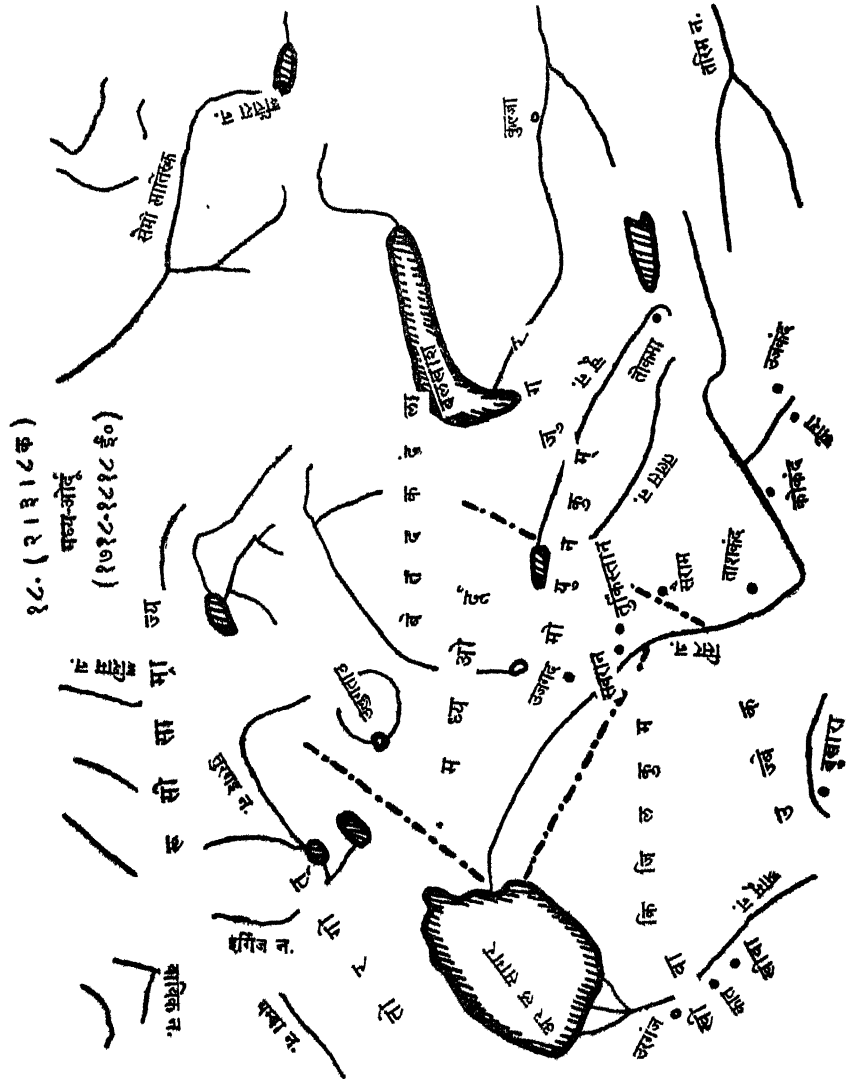
२. अबुल् मुहम्मद, पुलाद-पुत्र (१७३४–४८ ई०)

शेमीअका (पुलाद) खानके मरनेके बाद मध्य-ओर्दूके अबुल् मुहम्मद और उसके बाद अबलइ खान हुये। किसी-किसीके मतमे अबुल् मुहम्मद पुलाद खानका पुत्र था। इस समय किरिलोफकी जगह तातिश्चेफ १७३० ई०मे ओरेनबुर्गका राज्यपाल था। उसने अबुल् और अबलइ दोनोंको ओरेनबुर्गमें बुलाया। स्वय न आकर उन्होने अगस्त १७३८ ई०मे संदेश भेजा, कि हम बहुत दूर इर्तिशके किनारे है, इसलिये अगले साल आकर राजभक्तिकी शपथ लेगे।

लेकिन यह भी बात उन्होंने पूरी नही की। इसी बीचमे १७३९ ई०के आरम्भमें राजुल उरुसोफ ओरेनबुर्गका राज्यपाल होकर आया। मध्य-ओर्दूका अभीतक कोई पक्का खान नहीं चुना गया था, लेकिन अबुल् मुहम्मद उसका सबसे बड़ा प्रभावशाली नेता था। लघु-ओर्दूका खान अबुल्खैर दावा करता था, कि वह हमारे अधीन है। इसके कारण दोनोंमे झगड़ा खड़ा हो गया। १७४० ई०में अबुल् मुहम्मद, अबलइ सुल्तान और दूसरे कितने ही सरदारों और साधारण कजाक मुखियोंके साथ ओरेनबुर्ग पहुंचा। राजुल उरुसोफने उसका उसी तरह सम्मान किया, जैसा कि अबुल्खैरके साथ किया था। उन्होंने राजभक्तिका पत्र अर्पित किया, जिसे एक दुभाषियेने पढ़ा। इसके बाद अबुल् मुहम्मद और अबलइने, एक जरदोजीके खंडपर घुटने टेककर शपथ ली, कुरानको अपने माथेपर लगाया, और शपथपत्रकी मुहरको सिरसे छू कुरानको चूमा। पासके ही तम्बूमे मध्य-ओर्दूके १२८ अमीरोंने उसी तरह जारके प्रति शपथ ली। रस्मकी समाप्ति होनेपर तोपे दागी गईं, और अन्तमें भोज हुआ। वहाके सेनापतिने दूसरे दिन भेट करते समय मध्य-ओर्दूके नेताओंसे कहा, कि अपने देशसे गुजरते समय रूसी कारवाकी रक्षा करना, और मूलरके कारवांकी जो वस्तुएं महा-ओर्दूने लूट ली है, उन्हे लौटवानेका प्रयत्न करना। उसने कजाकों ओर वोल्गा-कल्मकोंके साथ शांति स्थापन करनेकी कोशिश की। लेकिन यदि लूटके मालको लौटाना या लूट-मार बन्द करना हो सकता, तो वह कजाक ही क्यों होते? जिस समय यह कार्रवाई हो रही थी, उसी समय ओरेनबुर्गमे अबुल्खैरके दो पुत्र नूरअली और एरअली मौजूद थे, लेकिन उनको डर लगा, कि अबुल् मुहम्मद कहीं रूसियोंसे चुगली करके हमें कैद न करा दे, इसलिये वह जल्दी-जल्दी वहांसे चले गये।

१७४१ ई० मे बाश्किर विद्रोहियोंके नेता कराशक्काल (काली दाढ़ी) ने भागकर कजाकोंमें पनाह ली, और उसने मध्य-ओर्दूकी एक टोलीको लेकर जुंगरोंको लूटा। जुंगर उनका पीछा करते आ रहे थे, कि रास्तेमे कजाकोके डेरोको पा उन्होंने उन्हें लूट लिया। राजुल उरुसोफने जुंगर- राजा और रूसके बीचमे हुई सुलहका हवाला देकर ऐसा न करनेके लिये कहा। इसपर जुंगरों ने जवाब दिया—"हम नही जानते, कि कजाक रूसी प्रजा है।" अबुल् मुहम्मदने देशमे जुंगरोंसे प्रतिरक्षार्थ एक मजबूत किला बनानेके लिये रूसियोंको लिखा। उधर कजाकोंका आक्रमण जुंगारियाकी सीमान्तपर जारी रहा। १७४१.ई०मे जुंगर-राजा गल्दन छेरिङने मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूको दंड देनेके लिये दो सेनाये भेजी, जिन्होंने अबलइको बंदी बनाकर अपने साथ ले जानेमें सफलता पाई। अबलइ रूसी प्रजा था, इसलिये उसे छुड़ानेके लिये रूससे १७४२ ई०मे मेजर मूलरको जुंगरोंके पास भेजा गया। मुहम्मदने भी दूतमंडलके साथ अपने पुत्रको जामिनके तौरपर भेजा। रूसियोंको यह बात पसन्द नही आई, कि हमारी प्रजा होते हुये कजाक कल्मकोंसे सीधे बातचीत करें। कजाकोंने जुगरोंसे बहुत कहा, कि अब हम लूट-मार नही होने देंगे, लेकिन जुंगर कजाकोंके स्वभावसे अच्छी तरह परिचित थे, इसलिये वह जामिन रखनेपर जोर देते रहे। अबुल् मुहम्मदको अपने लोगोंपर नियंत्रण रखनेके लिये सावधान किया गया, और मामला उस समयके लिये सुधर गया।

अबुल् मुहम्मद यद्यपि अधिकांश कजाकोंके लिये मध्य-ओर्दूका खान था, लेकिन उनकी भारी संख्या तुरसुनखान-पुत्र बुर्ाकको अपना खान मानती थी, जिसने भी इसी समय रूसियोंके जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली थी। १७४३ ई०में उसने अपना दूतमंडलन भेज साधारण संदेशवाहक द्वारा पत्र और सुनहरी समूरी खाल भेजी, जिसे लौटानेपर उसने रूखासा जवाब दिया। उधर मेजर मूलरके प्रयत्नसे १७४२ ई०में जुंगरोंनें अबलेई सुल्तानको छोड़ दिया था।

१७४४ ई०में जुगरोंने साइबेरियामें रूसी सीमाके पास शक्ति प्रदर्शन किया । अबुल्-मुहम्मद और उसके लोग तुर्किस्तानकी ओर खिसक गये, और उन्होंने गन्दन छेरिङके साथ घनिष्ठ मित्रता करनी चाही—अबुल् मुहम्मदका लडका अब भी गन्दनके पास जामिनके तौरपर था । अबुल् मुहम्मदको आशा थी, कि इस तरह वह गन्दनसे मध्य-ओर्दूकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको पा लेगा । लेकिन उसका प्रतिद्वंद्वी बुर्राक सुल्तान भी अपने पुत्रको जुगरोंके पास जामिन दे मध्य-ओर्दूको अपनी ओर करनेकी चेष्टा कर रहा था । इस्लाम और बौद्ध धर्मको लेकर कजाको और जुगरोंका झगड़ा बहुत पुराना था, जिसके कारण यदि रूसियो और जगरों (कल्मकों) में लड़ाई छिड़ती, तो कजाक जरूर रूसियोकी ओर हो जाते । खैर, रूसी सीमान्तके पास प्रदर्शन करके ही जुंगर लौट गये, और लडाई नही हो पाई । इस शातिसे लाभ उठाकर दो सालके बाद फिर मध्य-ओर्दू रूसी सीमान्तपर पहुंचा, और अबुल् मुहम्मद तथा बुर्राक दोनोंने पुनः जार-भक्तिकी शपथ ली । १७४६ ई०मे जुगर आक्रमण करके कजाकोके बहुत-से घोड़े छीन ले गये । यह वही साल था, जिस साल कि जुगर-राजा गन्दन छेरिङ मरा ।

१७४८ ई०मे बुर्राकने लघु-ओर्दूके खान अबुल्खैरको हराया । पीछे रूसी प्रजा करा-कल्पकोंको लूटा । जिसके लिये रूसी दड देते, इसलिये डरके मारे पूर्वकी ओर बढ बुर्राकने ईकान, ओतरार और सिगनकपर अधिकार कर वहा डेरा डाला । अगले साल एक खोजाके साथ-रहते बुर्राक और उसके दो पुत्रोंको जहर खिलाकर मार डाला गया । शायद अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने पिताकी हत्याकी शिकायत जुगरोंसे की । इस समय (१८वी सदीके मध्यमे) मध्य-ओर्दूके अधिकांश सुल्तानों और सरदारोंने जुगरोंके यहा अपने जामिन दे रक्खे, थे, इसीलिये जुगर मध्य-ओर्दूको अपनी प्रजा मानते थे । इसी समय अबुल् मुहम्मद तुर्किस्तानकी ओर गया, जहांपर वह अपनी मृत्युके समयतक रहा ।

३. अबलइ, शिगाई-वशज (१७४८–८१ ई०)

अबुल् मुहम्मदके दक्षिणकी ओर, चले जानेपर मध्य-ओर्दूके कुछ सरदारोंने मृत बुर्राकखान के भाई सुल्तान कूचुकको अपना खान चुना, लेकिन रूसियोंने उसे स्वीकार नहीं किया । इस पर वह जुगरोंकी ओर झुके । शिगाई खानके वंशज अबलइकी दूसरी ही नीति थी । उसका कबीला अधिकतर रूसी सीमाके पास रहता था, इसलिये वह रूसियोका अधिक पक्षपाती था—खासकरके तबसे, जब कि मध्य-ओर्दूने १७५१ ई०मे उलुकतागमें जुगरोंसे करारी हार खाई । १७५४ ई०में उनके ऊपर जुंगरोंका इतना अधिक दबाव था, कि बहुत-से अमीरोंने रूसियोसे आज्ञा मागी, कि हमारे बीबी-बच्चोंको अपने यहां शरण दो, और सीमान्तपर जमीन दो, तो हम खेती करके अपने गांव बसा लेंगे । इसपर कितने ही कजाकोंको उइस्कके पास बस जानेकी इजाजत मिली, और उचित जामिन दे देनेपर कितनों हीको हटकर रूसी सीमान्त रेखाके पीछे आनेकी भी इजाजत मिल गई । लेकिन इसी समय जुगर-साम्राज्यको चीनियोंने नष्ट कर दिया, जिसमें अबलइका भी काफी हाथ था । साम्राज्यके पतनमे अमुरसना और दावा छेरिङ (१७५०–५५ ई०) का झगड़ा मुख्य कारण था, इसे हम पहले बतला आये हैं । चीनियोंकी सहायतासे अमुरसना खान बना था, लेकिन वह चीनियोंके हाथकी गुड़िया नहीं बनना चाहता था, इसलिये बिद्रोही बना, और भारी चीनी सेना आनेपर उसने कजाकोंमें भागकर शरण ली । अबलइ खानने घोड़े और संरक्षक दिये, और गिरफ्तार करनेके लिये वचन देकर चीनी सेनापतियोंके पता पूछनेपर बहाना कर दिया, कि अमुरसना रूसियोंके पास भाग गया । इसपर नाराज हो चीनी जेनरल तलतंगा कजाकोंके देशमे घुसा । फिर कजाकोने उसे भुलावेंमें डाला । उधर मंगोलों और मंचू सैनिकोंको अपने जेनरलका आचरण बुरा लगा, इसलिये उनमेंसे बहुतेरे साथ छोड़कर चले गये, और जेनरलको पीछे हटना पड़ा । इन लड़ाइयोंमें सबसे बहादुर चीनी सेनापति हो मारा गया, और वही हालत कल्मक सेनानायकों—नीमा, पयार, सीला और मंगलिक आदिकी हुई, जो कि अमुरसनाके विरुद्ध हो चीनकी ओरसे लड़े थे । इस हारकी खबर मिलनेपर चीनसे एक

नई सेना आई, जिसने कजाकोंको हरा उनके बहुत-से मुखियोंको पकड़कर पेकिंग भेज दिया, जहा उन्हे प्राणदंड दिया गया।

जुगरों जैसी अजेय शक्तिको इतनी आसानीसे खतम करते चीनियोंको कोई दिक्कत नहीं मालूम हुई, यह देखकर अबलई रूसका पक्ष छोड चीनकी ओर झुका, और कुछ समय बाद उसने चीनी सम्राट् चियान-लुङ (काउ-चुङ १७३५—९५ ई.) की अधीनता स्वीकार की। सम्राट्ने इतने प्रभावशाली खानको अपना सामन्त बनते देखकर उसे राजा (वाङ) की उपाधि भेजी। अगले साल १७५७ ई० मे जब उसे अपने ओर्दूके साथ चीनी प्रजा घोषित करनेकी आज्ञा आई, तो अबलइने टालमटोल कर दिया।

१७५८ ई०मे मध्य-ओर्दूके एक भागके कजाक रूसी सीमापर आक्रमण कर दोनों ओरके करद २२० तारतारोंको पकड़ ले गये, और इनका दूसरा भाग पूर्वकी ओर बढकर जुगर उच्छेद-से खाली पडी भूमिको आबाद किया। अबलइ जहा एक ओर चीनियोंको विश्वास दिलाता था, कि मै सम्राट् का करद सामन्त हूं, वहा दूसरी ओर उसने रूसको भी विश्वास दे रक्खा था, कि मै यह सब कुछ ऊपरी मनसे कर रहा हूं, समय आनेपर मै रूसकी ओरसे चीनके साथ लड़ूंगा। रूसी रानीने बडी प्रशसा करते हुये उसके लिये एक बहुमूल्य समूरी छाल भेजी। मध्य-ओर्दूका अधिकांश अबलइको अपना खान मानता था। रूसी नही चाहते थे, कि अबलइका प्रभाव और शक्ति अधिक बढे। उन्होंने तब भी कूटनीतिसे ही काम लेना चाहा, और कहा, कि लघु-ओर्दूके नूरअली खानकी तरह तुम भी अपने पुत्रको जारके दरबारमे जामिन भेजकर सम्मान प्राप्त करनेकी प्रार्थना भेजो। अबलइने इसे पसन्द नही किया।

१७६० ई० मे मध्य-ओर्दूके कजाकोने चीनकी प्रजा बुरूतो (जगली किर्गिजों) पर आक्रमण किया। चीनियोने इसपर विरोध प्रकट करते हुए अपनी सेना अबलइको दंड देनेके लिये भेजी। तीन ही वर्ष पहले जुगरोंकी क्या दशा हुई, यह कजाक देख चुके थे, इसलिये उन्होंने तुरन्त चीनियोकी अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन साथ ही रूसको प्रसन्न रखनेके लिये भी कितने ही बाश्किर और बराबिन तारतार बदियोंको उनके पास लौटा दिया। रूसी चाहते थ. कि अबलइका सबंध चीनसे न हो। १७६२ ई० मे उन्होंने हुक्म दिया, कि कजाक बड़ोंमे भेंट बाटनी है, सीमान्तके पास घोडोंके लिये अस्तबल, गाडियोंके रखनेके लिये गाड़ीखाने, चारो ओर प्राकार और दूकानसे घिरा एक छोटा महल खासकरके खानके लिये बनाना है। वह महल पेत्रोपावलोव्स्कके सामने बना भी दिया गया है। रानी एकातेरिना II की गद्दीके समय अबलइ, ऐंचुवक और लघु-ओर्दूके नूरअलीने भी राजभक्तिकी शपथ ली, यद्यपि अबलइ अब भी चीनियोकी अधीनताको मानता था। इस प्रकार उसकी चाल दोरगी थी।

चीनी सेना जुगरोंको हरानेके बाद पश्चिमकी ओर बढती गई। उसने खोकन्द और ताशकन्दपर आक्रमण किया। इसपर वहाके शासकोंने अफगानिस्तानके अमीर अहमदसे इस्लामके नामपर मदद मांगी। काश्गर और यारकन्द आदिके लोगोने भी जाकर काबुलपतिके पास गुहार की। अहमदशाह अब्दाली भारतमे भारी विजय (१७५६ ई०) प्राप्त करके काफी नाम कमा चुका था, इसलिये वह उत्तरसे आई गुहारको ठुकरा कैसे सकता था? उसने काफी सेना अन्तर्वेद की ओर भेजी। ताशकन्द और खोकन्दके बीचमे चीनी सेनासे बातचीत चलती रही, फिर सारे मध्य-एसियामें जहाद (धर्मयुद्ध) की घोषणा कर दी गई। उधर चीनियोने अबलइको सनद देकर इलीपर बसनेकी इजाजत देते हुये, दुश्मनोसे रक्षाका भार अपने ऊपर ले लिया। अबलइने अपने समुर सुल्तान अहमद, कुछ कजाक अमीरों और उनके लड़कोको जामिन बनाकर चीनियोके हाथमे दिया, और इस प्रकार अबलइ मुसलमानोके जहादमे शामिल नही हुआ।

रूसियोने कोल्चक्ली नदीपर १७६४ ई०मे एक छोटासा किला सेमीप्लातिन्स्क बनाया था, जो कजाकोके साथ व्यापार करनेका केन्द्र था। अबुल्मोहम्मद-पुत्र अबुल्फैज, तथा तुर्किस्तानके पुलाद खानके भाई अबुल्फैजके कहनेपर ही रूसियोने यह किया था। अबुल्फैज मध्यओर्दूके सबसे अधिक शक्तिशाली कबीले नैमनका मुखिया था। जुगारियामें रहनेके कारण अब वह चीनियोंपर अधिक

निर्भर करता था। रूसियोंने अबलइको सेमीप्लातिन्स्कमें व्यापार करनेकी आज्ञा दे दी। कजाकोंने खेती सीखनेकी इच्छा प्रकट की, तो समुचित जामिन लेकर दस खेती सिखानेवालोंको भी रूसियोंने भेज दिया। इतिहासके आदिकालसे अबतक खेतीसे अछूते कजाक जुगंरोंकी भांति अब खेतीके महत्त्वको समझने लगे।

अब हम उस समयमें पहुंचते हैं, जब कि १७७० ई०में वोल्गा-तटसे तोर्गुत (कल्मक) भगे थे। कल्मकोंका रास्ता अपने पुराने दुश्मन कजाकोंकी भूमिके बीचसे था। रूसियोंने भी उन्हें भड़का रक्खा था, इसलिये अबलइ और उसके आदमियोंने सुल्तान अबुल्फैजकी तरह कल्मकोंपर आक्रमण करके बहुत लूट-मार की, और उनमेंसे भारी संख्याको अपना बन्दी बनाया।

१७७५ ई०मे अबुल्फैज तथा मध्य-ओर्दूके और कितने ही सरदारोंने साइबेरियाकी सीमापर जाकर रूसी प्रजा होनेकी आज्ञा मांगी—प्रजा होनेका मतलब था वार्षिक पेंशन और भेंट-इनाम-की प्राप्ति। रूसियोंने कहा—"तुम तो पहले हीसे हमारी प्रजा हो।"

अबलइ अपनी चालाकी-चतुराईके बलपर बहुत शक्तिशाली बन गया, और बराबर रूस और चीनके बीचमें अपने दावपेच चलाता रहा। तो भी चीनकी ओर उसका झुकाव अधिक था, वह चीनी भाषा बोल भी सकता था। अपनी शक्तिको १७७१ ई०के बाद उसने अपनेको देश खुल्लमखुल्ला खान (राजा) कहना शुरू किया। कहासे यह पदवी मिली, पूछनेपर वह बड़े अभिमानके साथ जवाब देता—तोर्गुतोपर विजय प्राप्त करनेसे अबुल्मुहम्मदके मरनेपर तुर्किस्तान और ताशकन्दके कजाकोंने मुझे अपना खान निर्वाचित किया। अपने पूर्वजोंकी भांति वह भी चाहता था, कि मैं भी कजाकोंके सबसे बड़े संत खोजा अहमदकी समाधिके पास रहूं। रूसियोंने दबाव दिया, कि अपने पुत्रको जामिन भेजकर जारसे खानकी पदवी प्राप्त करो। इसपर १७७७ ई०मे उसने अपने पुत्र तोगुमको खान-पदवी प्राप्त करनेकी प्रार्थनाके साथ पीतरबुर्ग भेजा। दरबारमें उसका अच्छा स्वागत हुआ, और २२ अक्टूबर १७७८ ई०को कुछ और भेंटोंके साथ खानकी उपाधिका शासनपत्र ओरेनबुर्ग के राज्यपालके पास भेज दिया गया। अबलइको सूचित किया गया, कि उपाधि प्राप्त करनेके लिये त्रोइतस्क या साइबेरियाके किसी दूसरे रूसी नगरमे आओ। अबलइने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर उसे उसके डेरेमे एक रूसी अफसरके सामन शपथ दी गई। लेकिन अबलइ चीनियोंको नाराज नही करना चाहता था, इसलिये, उसने रूसी रानीकी भेजी हुई भेटको स्वीकार नहीं किया। चूंकि रूसियोंने बुरूतों (जंगली किर्गिजों)के विरुद्ध मदद देनेसे इन्कार कर दिया था, इसलिये अबलइने अपने पासके रूसी बंदियोंको वहीं लौटा दिया, और उन तुर्कमानोंको भी, जिन्हें कि तोर्गुत अपने साथ ला महायात्रामे कजाकोके देशमें छोड़ गये थे। इसपर रूसियोंने नाराज हो अबलइकी पेंशन बन्द कर दी, और कुछ कजाक सुल्तानोंको भी उसके विरुद्ध उकसाया, जिन्होने उसे पकड़कर रूस ले जानेका असफल प्रयत्न किया। अबलइ बुरूतोंके विरुद्ध सफल अभियान करके तुर्किस्तान-शहर लौटा। उसने अपने लड़के हादिलके लिये तलस नदीके तटपर एक प्राकारबद्ध महल बनवाया। पास हीमें महाआर्दूके कजाको–जो कि इस समय अबलइकी प्रजा थे—के कहनेपर एक शहर भी बसाया, जहां कराकल्पक किसान आकर आबाद हो गये। बन्दी बनाकर लाये बुरूतोको वह मध्य-ओर्दूके देशके उत्तरमें ले गया, जहां वह पीछे यानी-किर्गिज (नये किर्गिज)के नामसे प्रसिद्ध हुये। १७८१ ई०में अबलइ रूसी सीमान्तकी ओर जा रहा था, इसी समय ७० वर्षकी उमरमें उसका देहान्त हो गया। उसकी कब्र तुर्किस्तान शहरमें बनाई गई। चीनमें खबर मिली, तो वहांसे एक विशेष अफसर भेजा गया, जिसने परिवारको जमाकर राजसी ढंगसे अबलइकी अन्त्येष्टि-क्रिया कराई।

४. वली, अबलइ-पुत्र (१७८१–१८१८ ई०)

अबलइके मरनेपर मध्य-ओर्दूको महा-ओर्दूवाले बुरी तौरसे हराकर भारी सख्यामें उनके पशुओं को छीन ले गये। मध्य-ओर्दूकी शक्ति अब बिखरने लगी। उसके उत्तरी भागने अबलइ-पुत्र वलीको अपना खान चुना, और प्रार्थना करनेपर रूसने उसे स्वीकार भी कर लिया। १७८२ ई०में लेफ्टेनेन्ट-जेनरल याकोबने बड़ी धूमधूमसे पेत्रोपावलोव्स्कमें वलीको खान घोषित किया, लेकिन मध्य-ओर्दूके

सबसे प्रभावशाली कबीले नैमनने वलीको न मंजूर कर अबुल्मुहम्मद-पुत्र अबुल्फज (मृत्यु १७८३ ई०) को अपना खान चुना, जिसे चीनने मंजूर कर लिया। लेकिन नैमनोंमें भी सब एकराय नही थे। अबुल्फैजका पुत्र बुपू और दामाद खान खोजा बुर्राक-पुत्र इससे सहमत नही हुये। नैमनोंमें काफी संख्या खान खोजाकी पक्षपाती थी, जिसे स्वीकार करते हुये चीनियोंने अपना शासनपत्र भेजा। वलीको छोड़कर अबलइके सारे संबंधी रूस नही, बल्कि चीनके पक्षपाती थे। वलीके एक भाई जिगिसने १७८४ ई०मे सेना ले जाकर ताशकन्दमे एक विद्रोहको दबाया। उसके दूसरे भाई सुल्तान तीजकी बुरूतोसे भारी दुश्मनी थी। बुरूत लडाकू चीनी सेनाको भी अनेक बार पराजित कर चुके थे। सुल्तान तीजको भी उन्होने एक वार हराकर पकड़ लिया, और उसने अपने कई गुलामोंको देकर छुट्टी पाई। वलीका बड़ा भाई बेर्दी खोजा चीनी सीमान्तपर रहनेवाले मध्य-ओर्दूके कजाकों का शासक था। इसे भी लड़ाकू बुरूतोसे पाला पड़ा था, और इसने उन्हें कई बार हराया। १७८५ ई०मे ऐयागुज नदीके तटपर इसने बुरूतों (जंगली किर्गिजों)के विरुद्ध अपनी सबसे बडी और अंतिम विजय प्राप्त की। लेकिन उस समय वह चीनी सेनाके सहायकके तौरपर लड़ रहा था, जिससे उत्साहित हो अपनी छोटी सेनाके साथ जब वह यिदिस्से नदीके तटपर पहुंचकर कुमक आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय बुरूतोंने आक्रमण करके उसे पकड़ लिया। तीजको अब प्राणों की आशा क्या हो सकती थी? उसने एक रक्षरक्षीको मार डाला, जिसपर बाकी टूट पड़े, और उन्होंने उसे हाथ-पैर अलग-अलग काट, पेटको चीरकर उसीके भीतर हाथों-पैरोंको डालके मारा। पीछे तीजके भाई अककियक और उसके पुत्रो लेपेस तथा चोकाने युद्धमें हराकर बुरूत सरदारके पुत्रको पकड़ा, और उसे घर ले जाकर बेर्दी खोजाकी स्त्रियोंको दे दिया, जिन्होंने उसे पीट-पीटकर मार डाला।

१७८६ ई०मे रूसियोने अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया।

इस समय मध्य-ओर्दूके उत्तरी भागमें शांति छाई हुई थी। इनके पड़ोसी थे महा-ओर्दू, लघु-ओर्दूके कजाक, रूसी, ताश्कन्द-तुर्किस्तान राज्यके शांतिप्रिय निवासी। दूसरे पड़ोसी लड़ाकू बाश्किर, त्रोइत्स्कके पासमे रहते थे। दूसरी ओर बुरूत भी चैनसे रहने देना नहीं चाहते थे। मध्य-ओर्दूकी स्थिति इस समय दूसरे दोनों ओर्दुओंसे कुछ बेहतर थी। महा-ओर्दू और लघु-ओर्दूकी अपेक्षा वह अधिक संस्कृत और स्थायी जीवन बिता रहा था, तथा अपने खानों और सुल्तानोकी बात मानते थे। वलीने भी अपने पिताकी तरह शक्ति-संचय करनेमें सफलता प्राप्त की। अस्त्राखानसे तोर्गुतोद्वारा छीने गये तुर्कमानोंको लौटानेसे इन्कार करके उसने रूसियोंको नाराज कर लिया। रूस-पक्षपाती अमीरोंका भी वह दमन करता था। १७८९ ई०में महा-ओर्दूके एक सुल्तान तुगुमके साथ वलीके ओर्दूके भी कितने ही लोग रूसमे चले गये, और रूसियोने उन्हे उस्त-कामेन्नोगोर्स्कके किलेके पास जगह देकर बसा दिया। १७९३ ई०मे जेनरल स्त्रान्दमानने जबर्दस्ती तुर्कमानोंको वलीके हाथसे छुडाया, जिसकी शिकायत कजाक खानने रूसी रानीके पास की। बापकी तरह यह भी दुरंगी चाल चल रहा था। १७९५ ई० में इसने एक पुत्रको चीनमें अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा था। प्रजाको इसने अपने जुल्मोंसे इतना नाराज कर दिया था, कि १७९५ ई०मे मध्य-ओर्दूके दो सुल्तान, उन्नीस जेठे, ४३३०८ अनुचरों तथा ७९००० दूसरे कजाकोने रानी एकातेरिनाIIसे प्रार्थना की, कि हमें वलीके पंजेसे छुड़ाकर रूसी प्रजा बना लो। खानने इसपर क्षमा मागी। १७९५ ई०में बाश्किरोंके पड़ोसी मध्य-ओर्दूके एक दलने चेलियाबिन्स्क और त्रेस्ने उराल्स्कमे जाकर लूट-मार की।

१७९८ ई०मे पावलके शासनकालमे कजाकोंके आपसी झगड़ोके मिटानेके लिये पेत्रो- पालोव्स्कमे रूसियों और कजाकोंकी एक सम्मिलित अदालत बैठी, लेकिन उसने अपना काम १८०६ ई०में शुरू किया। वली १८१८ ई०मे मरा। अन्तिम वर्षोमे कजाकोंमें उसकी चलती नहीं थी, और कितने ही अमीर उसकी आज्ञा माननेसे इन्कार करते थे। इसपर जार अलेक्सान्द्रI (१८०१-२५ ई०)ने बोराक-पुत्र बूकेइको मध्य-ओर्दूका द्वितीय खान १८१६ ई०मे नियुक्त किया। बूकेइ भी १८१८ ई०मे मर गया, जिसके साथ ओर्दूके खानोंकी परम्परा खतम हो गई, और उनके कजाक सीधे रूसी प्रजा हो गये, जिनके शासनके लिये रूसियोंने एक विशेष प्रबन्ध कर रक्खा था।

ख. लघु-ओर्दू (१७४४–१८१२ ई०)

तेअवका, तौफीक या तवक्कल खान (१६९८-१७१८ ई०)के बाद श्वेत-ओर्दू तीन भागोंमें विभक्त हो गया था, जिनमे लघु-ओर्दूके अमीर थे—यादिक खानके भाई उजियक सुल्तानके वशज। तेअवकाने अदिया (आइतिक)को लघु-ओर्दूके शासनका भार सौपा। इस प्रकार अदिया लघु-ओर्दूका प्रथम खान था। लघु-ओर्दूके खानोंके नाम निम्न प्रकार है :—

१. अदिया, जानीबेग वशज, ईरिश-पुत्र	—१७१७ ई०
२. अबुल्खैर, अदिया-पुत्र	१७१७–४९ "
३. नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र	१७४९–९० "
४. एरअली, अबुल्खैर-पुत्र	१७९०–९४ "
५. इशिम, नूरअली-पुत्र	१७९४–९७ "
६. एचुवक, अबुल्खैर-पुत्र	१७९७–१८०५ "
७. जन्ती उरा, एचुवक-पुत्र	१८०५–९ "
८. शेरगाजी, एचुवक-पुत्र	–१८१२ "

१. अदिया, एतीयक, इरिश-पुत्र (–१७१७ ई०)

श्वेत-ओर्दूके अन्तिम खान तेअवका (तौफीक)ने इसे लघु-ओर्दूका शासक बनाया था, लेकिन अदियाके समय अभी लघु-ओर्दू अपने स्वतत्र अस्तित्वको कायम नही कर पाया था। यह काम उसके पुत्र अबुल्खैरने किया।

२. अबुल्खैर, अदिया-पुत्र (१७१७–४९ ई०)

१७१७ ई०मे अबुल्खैर भी तौफीक और काइपके साथ जुगरोके विरुद्ध सहायता मागनेके लिये रूस गया था। बापके मरनेपर काइपके साथ अबुल्खैरकी प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई। १७१७ ई०में रूसियोसे भी उसका झगडा हो गया, उसने कजान प्रदेशमे नवोशेरिमन्स्कतक लूट-मारकरके बहुतसे बन्दी पकड़ लिये। जुंगरोंने भी लघु-ओर्दूकी लूट-मारोंसे तग आकर १७२३ ई० में उन्हें तुर्किस्तान-ताश्कन्द-सैरामसे भगा दिया। तबतक अबुल्खैरने तुर्किस्तान शहरमें रहते अपनी शक्ति भी बहुत बढ़ा ली थी। आपसी झगडोंसे जुंगरोंको लाभ और अपने वशका नाश देखकर उसने एक महापरिषद् बुलाकर फैसला कराना चाहा, जिसने अबुल्खैरको अपना मुखिया चुनकर सफेद घोड़ेकी कुर्बानी दी। लघु-ओर्दूने उसके नेतृत्वमें कई बार जुगरोंको छोटी-मोटी हार दी, लेकिन इससे उनके राजा छेवङ अर्पचन (रब्तन)का कुछ बिगड़नेवाला नहीं था। जब जुगरोने जोरका प्रहार किया, तो लघु-ओर्दूको पश्चिमकी ओर भागना पडा, और उन्होंने यम्बा नदीको पार हो तोर्गुतों (वोल्गा-कल्मकों)को भगाकर यायिक(उराल)तक की भूमिको ले लिया। अब तोर्गुत उनके विरोधी हो गये और बादमे उरालके कसाक भी दुश्मन बन गये। इन दोनोंके प्रहारसे इन्हें इतनी हानि उठानी पड़ी, कि १७२६ ई०में इनके प्रतिनिधियोंने जाकर रूससे संरक्षण पानेकी प्रार्थना की, लेकिन उसमें वह सफल नही हुये। यद्यपि ओर्दूका बहुमत तैयार नही था, तो भी अबुल्खैरने इसीमे खैरियत समझकर १७३० ई०में ऊफाके वोयवोद बूतुर्लिनके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र भेजा। दूत जुलाई १७३० ई०को ऊफा पहुंचे, जहांसे उन्हें पीतरबुर्ग भेज दिया गया। दूतोंने दरबारमे कल्मकों (तोर्गुतों), बाश्किरों और उरा-कसाकोंके साथ लड़ाई करनेका वचन दिया—हम रूसके शत्रुओंसे लड़नेके लिये सदा तैयार है, और यदि खीवा, कराकल्पक तथा अरबी कबीलोंको दबानेके लिये हमें सैनिक दिये जायं, तो हम उनपर अभियान कर सकते हैं। उन्होंने अपने ओर्दूकी ओरसे रूसी प्रजा होनेको स्वीकार किया, पीतरबुर्गमें इसके लिये बड़ी खुशी मनाई गई, क्योंकि बिना एक गोली दागे रूसको इतने नये प्रजाजन मिल गये। बाश्किर जब-तब रूसियोंके विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।

खीवावालोंने हाल हीमे रूसी राजदूत राजुल बेकोविच-चेरकास्कीको मार डाला था, उसको भी बदला लेनेका मौका मिल रहा था। रानी अन्नाने सहायता और संरक्षण देनेका वचन-पत्र दिया। दूत जब अपने देशको लौटे, तो कजाक भूमिका नक्शा बनानेके लिये दो इजीनियर अफसर भी साथ कर दिये गये। सारा ओर्दू विरोधके लिये खडा हो गया। फिर एक बड़ी परिषद् बुलाई गई, और किसी तरह झगडा शांत हुआ। १७३२ ई०म लघु-ओर्दूके अबुल्खैर और मध्य-ओर्दूके शेमीअका खान दोनोंने राजभक्तिकी शपथ ली। अबुल्खैरने दश्तकिपचकको छोड सिर-दरियाके मुहानेपर अपना डेरा डाला वहाके कराकल्पकोको भी अपने अधीन करके रूसकी प्रजा बनाया।

जनवरी १७३४ ई०मे अबुल्खैरका पुत्र एरली सुल्तान और भी कितने ही कजाक-मुखियोंके साथ पीतरबुर्ग गया। रानीने उसका स्वागत करके बहुत इनाम दिया। एरलीने अबुल्खैर-परिवारमे खानकी पदवी पानेकी प्रार्थना की, और यह भी कहा, कि ओरी और उराल नदियोके संगमपर रूसी किला बनाया जाय, अपने आसपाससे जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अबुल्खैरको मिले, तथा सैनिक सहायताके लिय कल्मकों और बाश्किरोंकी तरह समूरी छालके रूपमे भेट दी जाय। शर्ते मानना आसान था, लेकिन कजाक-जैसे कबीलोके लिये उनका पालन करना बहुत मुश्किल था। एक और भी बात थी: कजाकोंमे मुखिया या खानकी उतनी चलती नही थी। लोग जनतत्रताके अत्यन्त पक्षपाती थे, इसलिये खान द्वारा स्वीकृत शर्तं-को माननेके लिये मजबूर नही थे। प्रसिद्ध भौगोलिक किरिलोफको कुछ इंजीनियरोंके साथ किला बनाने तथा नक्शा तैयार करनेके लिये भूमापक बनाकर भेजा गया। तीन अफसर, कुछ मिस्त्री और नाविक नाव बनानेके लिये, एक खनिज इंजीनियर, कुछ तोपची-अफसर, एक वनस्पतिशास्त्री, एक चित्रकार, एक डाक्टर, कजाकोंकी भाषा सीखनेके लिये कुछ तरुण विद्यार्थी किरिलोफके नेतृत्वमे भेजे गये। कजान पहुंचनेपर एक रेजिमेट पैदल सेना, कुछ तोपखाना भी साथ हुआ। ऊफामे कसाकोंकी एक पैदल बटालियन साथ हो गई। तेवकेलेफ नामक एक बाश्किरको कर्नलका दर्जा दे दुभाषिया नियुक्त किया गया। ऊफाकी आमदनी इस अभियानके खर्चके लिये निश्चित कर दी गई। किरिलोफको आज्ञा दी गई थी, कि ओरीके मुहानेपर नगर बसाकर लोगोंको वहा बसनेके लिये आकृष्ट करे, तथा अबुल्खैरको खान उपाधिका शासन-पत्र प्रदान करे। शेमीअका, महा-ओर्दूके दूसरे मुखियों और कराकल्पकोंके मुखियोंको किरिलोफसे मिलनेके लिये हुक्म दिया गया था। यह भी हुक्म था, कि मध्य-ओर्दू और महा-ओर्दूके मुखियोको राजभक्तिकी शपथ लेनेके लिये कहे, एरलीको अच्छे रक्षियोके साथ उसके बापके पास भेजे, कजाकोंको भेंट-रिश्वत या कड़े हाथोसे शान्त रक्खे, नये नगरमे उनके अमीरोको घर और मस्जिद बनाने और आसपासमे उनके पशुओंके चरनेकी इजाजत दे, उराल (यायिक) नदीको सीमा मानकर कजाकोको उसके पार होनेसे मना करे, झगड़ोंको तै करनेके लिये रूसियों और कजाक-बड़ोकी सम्मिलिति अदालत स्थापित करके देशके रीति-रवाजके अनुसार फैसला कराये। किरिलोफ १७ जुलाई १७३४ ई०को पीतरबुर्गसे चला।

उसी साल अबुल्खैरने अपने पुत्र एरलीको फिर भेजा। किरिलोफ आगेके कामके लिये नेता था। १५ अगस्त १७३५ ई०मे ओरी और उराल नदियोके संगमपर उसने ओरेनबुर्गकी नीव डाली। रूसके इस प्रकार लगातार आगे बढनेको देखकर इस भूमिके घुमन्तू कबीले कैसे संतुष्ट रह सकते थे? उनमेसे कुछने विद्रोह भी किया, लेकिन तोपों और बन्दूकोंके सामने उनका क्या बस चलता? दीवारोके तैयार हो जानेपर १७३६ ई०के वसन्तमे अबुल्खैरको आनेके लिये निमंत्रण दिया गया, और ताशकन्दके व्यापारियोंको भी ओरेनबुर्गकी मंडीमें व्यापार करनेकी सलाह दी गई। इस समय सबसे ज्यादा विद्रोही थे बाश्किर, जिनके विरुद्ध रूसियोंको सेना भेजनी पड़ी, और नये किले भी बनाने पड़े, जिनमे उराल नदीके तटपर गुर्लिन्स्क, ओजेर्नया, स्रेदनी, बेर्देस्कोइ और किरिलोफ थे। समारा नदीके ऊपर भी कुछ किले बनाये गये, लेकिन रूसियोंको अपने हितके लिये इससे भी ज्यादा आवश्यक यह था, कि वोल्गा-कल्मकों, बाश्किरों और कजाकोंके आपसी झगड़े बराबर बने रहें।

किरिलोफ अप्रैल १७३७ ई०में मर गया। इसी समय रूसी व्यापारियोंका एक कारवां ताशकन्द जानेवाला था, जिसके साथ कप्तान येल्तन गया, जो पीछे भारतपर आक्रमण करने-

वाले नादिरशाहका नौकर हो गया। रूसकी ओरसे येल्तनको अराल समुद्रमें नौसंचालन तथा सिरके मुहानेपर कैदियोंके लिये नगर बसानेके बारेमें विवरण देनेके लिये भेजा गया था। किरिलोफके मरनेके बाद उसकी जगह तातीशेफ नियुक्त किया गया। बाश्किर विद्रोहियोंको दबानेके लिये अबुल्खैरको उनपर मनमानी करनेकी छूट दे दी गई थी। उसने बाश्किरोंमें विद्रोही और और अविद्रोही का फर्क किये बिना सबके ऊपर भारी अत्याचार किये। उसीके बाद वही काम कजाकोंने कल्मकोंपर आक्रमण करके किया, और वह कल्मकोंको ही नही, बल्कि रूसियोंको भी बन्दी बनाकर ले गये। बन्दी बनाकर ले जानेका मतलब था अन्तर्वेदमे उन्हें दासोंके बाजारमे बेच डालना। इसके कारण रूसी नाराज हो गये, और अबुल्खैरको, नूरअलीको जामिन बनाकर हटनेका हुक्म दिया। डरके मारे अबुल्खैर नही आया। अगस्त १७३८ ई०में वह आनेको राजी हुआ। उसके आनेपर रास्तेकी दोनों तरफ पांती बाधे सेना खड़ी थी। जब वह उस तम्बूमे आया, जिसमे रूसी रानी अन्नाका चित्र रखा हुआ था, तो नौ तोपे दागकर उसके लिये सलामी दी गई। तातीशेफको सम्बोधित करते हुये उसने कहा—"परम-भट्टारिका महारानी उसी तरह दूसरे राजाओमे श्रेष्ठ है, जैसे सूर्यका प्रकाश तारोंमें। यद्यपि दूर होनेसे मै उन्हे नही देख सकता, लेकिन उनके हितकारी प्रतापको मै अपने दिलमें महसूस करता हूं। उनके प्रकाशद्वारा रोशनी पाकर मै रानीकी अधीनता और एक राजभक्त प्रजाकी तरह अपनी आज्ञाकारिताको घोषित करता हूं। मै अपने परिवार और अपने ओर्दूको परमभट्टारिकाके संरक्षणमें एक शक्तिशाली बाजके पंखके नीचे जैसे रखता हूं, और सदाके लिये अधीन रहनेकी प्रतिज्ञा करता हूं। साथ ही महान् जेनरल मैं तुम्हारी ओर भी अपनी मित्रताका हाथ फैलाता हूं।" फिर अबुल्खैरने हाथमें कुरान लेकर वफादारीकी कसम खाई, और रूसी बंदियोंको लौटानेका वादा किया। यही नही, उसने अपनी स्त्री पपाइको भी दरबारमे भेंट-स्वरूप भेजनेकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकार अबुल्खैर जैसे शक्तिशाली घुमन्तू खानको अपने अधीन पाकर रूसियोको भारी प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी।

१७३९ ई०मे तातीशेफकी जगह राजुल उरुसोफ वोयवोद होकर आया। आते ही उसने सुना, कि लघु-ओर्दूवालोंने दो रूसी कारवानोंको लूट लिया। १७४० ई०मे अबुल्खैरने अपने तीन हजार कजाकोंको वोल्गा-कल्मकोको लूटनेके लिये भेजा। इसी बीचमे कुछ समयके लिये अबुल्खैर खीवाका खान भी बन गया था, लेकिन नादिरशाहने उसे वहां टिकने नही दिया। इस समय उसकी पूर्वी सीमान्तपर जुगरोका प्रताप छाया हुआ था। अबुल्खैर उन्हे भी खुश रखना चाहता था। जुगर कजाकोंके बार-बारके आक्रमणसे तग आ गये। उन्होंने दो बड़ी-बड़ी सेनाये मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूके विरुद्ध भेजी, और अबुल्खैरसे जामिन भेजनेके लिये कहा।

रूसी राज्यपाल नेप्लुयेफने इसे उचित नही समझा, कि रूसी प्रजा होते हुये अबुल्खैर जुंगरोंके पास जामिन भेजे। १७४२ ई०में शपथ लेते वक्त अबुल्खैर और दूसरोंने यह वचन दिया था, कि हम जुंगरोसे छेड़छाड नही करेंगे। अबुल्खैरने अपने पुत्रके स्थानपर किसी दूसरेको रूसी राज्यपालके यहां जामिन रखना चाहा, लेकिन रूसियोंने इसे नही माना। इसपर उसने कजाकोंको भड़काया, और १७४३ ई०मे दो हजार कजाक आकर नये बसे शहर ओरेनबुर्गको लूट वहांके निवासियोंको पकड़ ले गये। इन कजाकोंका नेता अबुल्खैरका संबंधी दरवेशअली सुल्तान था।

अभीतक अबुल्खैर पर्देकी आड़में शिकार खेल रहा था, लेकिन १७४४ ई०में उसने नकाब उठा फेका। अब उसके आदमी खुलकर रूसी कारवांको लूटने लगे। अन्तमे २४ अप्रैल १७४४ ई०को रूसियोंने कल्मक राजा दोण्डुब् थैचीको बारूद और शीशाके साथ पत्र लिखकर हुक्म भेजा, कि तुम अपने आदमियोंको जमा करके कजाकोंपर हमला करो, जो भी लूटमे हाथ आये, वह तुम्हारा होगा। लेकिन यह पत्र भेजा नही जा सका, क्योंकि इसी समय जुगर-कल्मकोंका साइबेरियापर आक्रमण होनेवाला था, जिसमें अबुल्खैरके कजाकोंकी सहायता आवश्यक थी। अब भी अबुल्खैरकी लूट-मार बन्द नही हुई। उसके आदमी फर्वरी १७४६ ई० और जनवरी १७४७ ई०मे जमे हुये कास्पियनपरसे होकर वोल्गा-कल्मकोंको लूटने गये। बहुत इधर-उधर करनेके बाद १७४८ ई०की गर्मियोंमें अबुल्खैरन खोजा अहमदकी जगहपर अपने पुत्र ऐचुवक तथा कुछ दूसरे कजाक अमीरोंके लड़कोंको जामिन देना स्वीकार किया, और यह भी वचन दिया, कि मै अपने पासके रूसी बंदियोंको लौटा दूंगा, और मेरे

आदमी फिर साम्राज्यपर आक्रमण नही करेगे। इधर वह रूससे इस तरहकी प्रतिज्ञायें कर रहा था, और उधर चुपचाप जुगरोके खुङ-थैंचीको अपनी लड़की देनेकी बात चला रहा था।

अपने स्थानपर लौटनेके बाद लोगोको जमाकर अबुल्खैरने कराकल्पकोंपर चढाई की, लेकिन मध्य-ओर्दूके शक्तिशाली कबीले नैमनका एक अत्यन्त प्रभावशाली खान बुर्राक कराकल्पकोको अपनी प्रजा कहता था। अबुल्खैरकी रूसने जो आवभगत की थी, उससे भी बुर्राक जल-भुन गया था। दोनोकी लडाई हुई, जिसमे अबुल्खैरको हारकर भागना पड़ा। बुर्राक-पुत्र शिगाईने दौड़कर उसे घोड़ेसे उतार भाला घुसेड़ दिया, इसी समय बुर्राक आ पहुचा, जिसने अपने हाथों अबुल्खैरको खतम किया। फिर वह कराकल्पकोको लूटने गया, लेकिन कराकल्पकोके रक्षक अब रूसी थे, जिनके डरके मारे उसने तुर्किस्तान लौट इकान, सिगनक और ओतरारपर अधिकार किया। पर जैसा कि पहले कहा, अगले ही साल १७४९ ई०मे दो पुत्रों सहित उसे जहर देकर मार डाला गया—कहते है, इसमें जुगर खुङ-थैशी छेवङ दोर्जेका भी हाथ था, जिसके पास अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने बापकी निर्मम हत्याकी शिकायत की थी। अबुल्खैरकी कब्र उत्किया नदीकी शाखा कादिर नदीके पास अक्षांश ५०.३० देशान्तर ८१-०१० मे मौजूद है।

३. नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र (१७४९–९० ई०)

अबुल्खैरके मरनेके बाद राज्यपाल नेप्लुयेफके प्रयत्नसे अबुल्खैर-पुत्र नूर अलीको खान चुना गया। वह लघु-ओर्दू और मध्य-ओर्दू दोनोंका खान बनना चाहता था, पर रूसियोंने २६ फरवरी १७३९ ई० को शासनपत्र भेज उसे किर्गिज-कजाकोका खान बनाया। नूरअलीकी मां पपाईका प्रभाव कजाकों और पीतरबुर्ग दोनोमे था। ओरेनबुर्गमें नूरअलीको बड़े ठाट-बाटके साथ खान घोषित करनेकी रसम अदा हुई। उसे दरबारी खिलअत, टोपी और तलवार दी गई, फिर घुटने टेककर उसने राजभक्तिकी शपथ ली। ओर्दूमे लौटनेपर जुगर खुङ-थैचीका दूत आ मिला, जिसने उसकी बागदत्ता बहिनको मागा। उसने यह भी कहा, कि खुङ-थैंची तुर्किस्तान शहरको तुम्हें देनेके लिये तैयार है, जहापर तुम्हारे बाप-दादोंकी हड्डियां कलिममे गड़ी हुई है। लेकिन नूरअलीके सुल्तान और ओर्दूके मुखिया रूसियोंको नाराज नही करना चाहते। रूसी जुगरोंकी ताकतको समझते थे, जिनके प्रभुत्वको महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दू मानता था, और दोनों मध्य-एसियाई उनके हाथोसे बाहर जानेकी शक्ति नही रखते थे। इसलिये उन्होंने खुङ-थैचीको नूरअलीका बहनोई बननेसे रोका। १७५० ई०मे बहिन मर गई, सदेह था, वह स्वाभाविक मौतसे नही मरी। अबुल्खैर और काइपमे प्रतिद्वद्विता चलती रही। काइप-पुत्र बातिर (बहादुर)को लघु-ओर्दूके एक भागने अपना खान चुना। फिर बातिर-पुत्र काइप II खीवाका शासक चुना गया। बातिरने खीवासे बुखारा जानेवाले कारवांकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेनेकी मांग की, जिसे कुछ अंशमें रूसियोंने मंजूर भी कर लिया, इसपर नूरअली नाराज हो गया। नूरअलीके भाई ऐचुवकने १७५० ई० के वसन्तमे शांतिप्रिय कबीला अरालीपर आक्रमण किया, जो कि खीवाके खानके अधीन था। इसका बदला लेनेके लिये खीवा-खान काइपने खीवामे व्यापारके लिये गये नूरअलीके लोगों तथा उसके दूतको बन्दी बना लिया, और लूटे माल तथा बन्दी अरालियोंको लौटा दिया। एचुवकके दूसरे भाई एरलीने कराकल्पकोंपर हाथ मारा, लेकिन यहां मुकाबिला निर्बलोंसे नहीं था, इसलिये एरलीके अधिकांश आदमी मारे गये, और स्वयं एरली भी कितने ही महीनोंतक कराकल्पकोंका बन्दी रहा।

नूरअली नही पसंद करता था, कि खीवाके कारवांसे बातिर छेड-छाड़ करे। १७५३ ई० में उसने एक रूसी कारवांको खीवा जाते वक्त लुटवा लिया, ऐसी ही और भी कितनी ही मनमानियां की, जिसकी शिकायत करनेपर उसने जवाब दिया—"बातिर और उसके पुत्र काइपने जो अत्याचार किये, उन्हीके कारण ऐसा हुआ। वह रूसके इलाकेपर हमला करना चाहते हैं, यदि मुझे दस हजार सेना और तोपखाना मिले, तो मैं चन्द दिनोंमे उन्हें दबा सकता हूं। रूसियोंने इसे स्वीकार नहीं किया। खीवावालोंके साथ झगड़ा होनेपर रूसियोंने नूरअलीको खीवापर आक्रमण

करनेके लिये उकसाया। नूरअलीने अपने ओर्दूके मुखियोको राय लेनेके लिये बुलाया, लेकिन दुआ देनेवाले खोजा (सैयद)के बीचमें पड़ जानेपर खीवा और लघु-ओर्दूका झगडा रुक गया।

१७५५ ई०में बाश्किरोंने रूसियोके खिलाफ विद्रोह कर दिया। मुल्ला बातिर शाहने उन्हें काफिरों (रूसियो)के विरुद्ध भड़काया, और कजानके तारतारों तथा कजाक-ओर्दूसे भी जहाद करनेके लिये कहा। उनमेसे कुछने रूसी बस्तियोको लूटा-मारा। इसपर राज्यपाल तथा कमांडर नेप्लुइयेफने कजाकोके शत्रुओ—दोन-कसाक, कल्मक, मेश्केरियक, तेपियर आदि कबीलोसे सहायता ली। ओरेनबुर्गके अखुन (जिलेके अमीर शरियत या धर्माचार्य)ने फतवा दिया, कि रूसियोके मार भगानेके बाद कजाकोंको बाश्किर खतम कर डालेगे, इसलिये रूसके खिलाफ नही लड़ना चाहिये। रूसी राज्यपालने फतवाको कजाकोंमे बटवाया। रूसी दरबारकी सहमतिके साथ उसने कजाक खान और सुल्तानोंको वचन दिया, कि उनके बीचमे रहनेवाले सभी बाश्किर औरतों और बच्चोंको हम इस शर्तपर तुम्हारे हवाले कर देगे, कि तुम उनके पुरुषोंको सीमान्तसे बाहर भगा दो। इस समय विद्रोहके कारण बहुत भारी सख्यामे बाश्किर भागकर यायिक (उराल) नदीके पार चले गये थे। लोभी कजाक ऐसे मौकेसे फायदा उठाये बिना कैसे रह सकते थे, उन्होने इन सभी अभागे लोगोंको पकड लिया। बाश्किर मरदोमे प्रतिरोध करनेकी शक्ति नहीं थी, उनमेसे कितने ही मारे गये, और कितनो हीको कजाकोने पकडकर रूसियोंके हाथमे दे दिया, और कुछ देश लौट बदला लेनेकी तैयारी करने लगे। रूसियोने उन्हें भीतर-भीतर सहायता दी। फिर बाश्किर बड़ी संख्यामें यायिक पार हो कजाकोंके ऊपर पड़े। रूसी दोनो जातियोमे दुश्मनीकी आग भड़काकर चैनकी वंशी बजाने लगे। बश्किरों और कजाकोंका झगड़ा अब ीढ़ियोके लिये जारी हो गया। अपनी सीमान्तकी रक्षाके लिये जारशाहीने क्या-क्या तरीके इस्तेमाल किये, इसका एक उदाहरण देखिये—अभी रूसी इतने साधन-सम्पन्न नही थे कि सीमान्तपर अपने बलपर शांति स्थापन कर सकते। नूरअलीने इसकी शिकायत जब रूसियोके पास की, तो उन्होंने जवाब दिया—"बाश्किर भगोड़ोको शरण देनेका यह फल है।" जब बाश्किरो और कजाकोंका खूनी संघर्ष काफी हो चुका, और दोनो जातिया खूब कमजोर हो गई, तो नेप्लुइयेफने यायिक नदीको दोनोके बीचमें सीमा निश्चित करके उसे पार करना निषिद्ध कर दिया। थोड़े दिनोंके लिये झगडा रुक गया, लेकिन कबीलोकी बदला लेनेकी प्रवृत्ति कितने दिनोंतक रुक सकती थी? फिर वह एक दूसरेके इलाकेमें घुसकर लूट-मार करने लगे, यदि सरदार रोकना चाहता, तो उसे काफिर रूसियोका आदमी कहकर बदनाम करते। इसी बीचमे प्रुशिया (जर्मनी) के साथ रूसका सप्तवर्षीय युद्ध छिड़ गया, इसलिये रूसियोंका सारा ध्यान उधर खिंच गया।

१७५७ ई०मे कल्मक शासक दोण्डुब्-थैंचीने नूरअली और क्रिमियाके खानसे कहा, कि आओ मिलकर रूसियोंके ऊपर हमला करे। लेकिन इसी समय चीनियोंने आक्रमण करके जुंगर-साम्राज्यको खतम कर दिया, और विजयी चीनी सेनाके कारण रूसी सीमान्त खतरेमें पड़ गया। नूरअली रूसियोंकी शहरपर चीनियोंसे लडनेके लिये तैयार था, लेकिन चीनी सेना जुंगरोंके प्रभावक्षेत्रसे आगे नही बढी।

१७५९ ई०में ओरेनबुर्गमें नया रूसी राज्यपाल था, जिसने नूरअलीके साथ उचित शिष्टाचार नही दिखलाया, जिसपर कजाकोने फिर लूट-मार शुरू कर दी, और रूसी भी बदला लेने लगे। एचुवकने जुंगारियामें चले चलनेका प्रस्ताव किया। इसकी भनक मिलनेपर रूसियोंने वार्षिक पेंशन और दूसरे साम-दानके हथियारोंसे कजाकोंको ठंडा कर दिया, और ओरेनबुर्गके हाकिमोंको हिदायत दी, कि कजाकोंके साथ बहुत अच्छी तरह बर्ताव किया जाय, उनमे उदारताके साथ भेटें बांटी जायं, जाड़ोंमें उनके ढोरों और घोड़ोके रहनेके लिये गौशालाये और अस्तबल बना दिये जायं। रूसी समझ रहे थे, कि ऐसा न करनेपर कजाक चीनियोंकी सीमान्तकी ओर चले जायेंगे, और लघु-ओर्दूका यह इलाका तथा मध्य-एसियाका वणिक्पथ निर्जन और उजाड़ हो जायेगा।

१७६२ ई० में एकातेरिना II जब गद्दीपर बैठी, तो उस समय नूरअली, एचुवक तथा मध्य-ओर्दूके अबलई खानने भेंटें भेजीं, लेकिन उसी समय नूरअलीने पेकिंगमें भी एक दूतमंडल भेजा, जिसका

वहां अच्छा स्वागत हुआ। इसपर फूलकर नूरअलीने रूसियोंके साथ अपने लोगोंकी छेड़छाड़को नहीं रोका। इसके बाद उसने वोल्गा-कल्मकोंपर भी आक्रमण किये। उस समय जाड़ोंमे उत्तरी कास्पियन समुद्र जम गया था, इसलिये बर्फपरसे होकर आक्रमण करनेमे उसको सुभीता था। रूसियोंने यायिक नदीकी सीमा निश्चित की थी, लेकिन अब नूरअली उसके पश्चिममें जाड़ा बितानेकी मांग करने लगा। जुगरोके ऊपर विजय प्राप्त करके चीनी सेनाको सामने खड़ी देखकर मध्य-एसियाके मुस्लिम राज्य अपने घरू झगड़ोंको भूलकर थोड़े समयके लिये एक हो गये। नूरअली भी उनके साथ था। १७६४ ई०मे नूरअलीने रानी एकतेरिनाको लिखा, कि मध्य-एसियाके मुसलमानोंने मुझे निमंत्रित किया है। साथ ही उसने रूसी इलाकेमे लूट-मार भी जारी रक्खी। १७६५, १७६६ और १७६७ई०में इस तरहके कई हमले किये। इसके बाद १७७० ई० का वह समय आया, जब कि तोर्गुत-मगोल वोल्गाके तटको छोड़कर पूर्वकी ओर भागने लगे। तोर्गुतोके भागनेमें जहां चीन-सम्राट् और दलाई लामाकी प्रेरणा काम कर रही थी, वहां कजाकोके बार-बारके आक्रमणसे भी वह तग आ गये थे। रूसियोंने तोर्गुतोको रोकनेके लिये नूरअली और उसके कजाकोंको कहा। काफिर तोर्गुतोकी लूट-मार मुसलमान कजाकोंके लिये पुण्य-अर्जनकी बात थी। नूरअली, उसका भाई एचुवक, खीवा का भूतपूर्व और अब लघु-ओर्दूका एक खान काइप अपने आदमियोके साथ अभागे प्रवासियोंपर टूट पड़े। इन भयंकर दुश्मनोंने चीनी सीमान्ततक उनका पीछा किया। कभी-कभी कल्मकोने भी उन्हे हराया—सागिजके पास कजाकोको भारी हार खानी पडी, लेकिन मुगजर पहाड़ और इशिम नदी के तटपर कजाकोंने अधिक सफलता पाई।

१७७३-७४ ई०मे पुगाचेफके नेतृत्वमे वोल्गाके किसानोने विद्रोह कर रक्खा था, यायिकके कसाक और बाश्किर भी उसके साथ थे। दोनो ही कजाकोके शत्रु थे, इसलिये वह विद्रोहमे शामिल नही हुये; हां, देशकी गड़बडीसे लाभ उठाकर रूसी बस्तियोंको लूटनेमें वह पीछे नही रहे, जिसके लिये १७७४ ई०मे रूसियोने भी इनकी खूब मरम्मत की। इसी समय नूरअलीके पुत्र पीरअलीको खीवा और सराइचुकके बीचके तुर्कमानोंने अपना खान चुना, और उसने खीवा जानवाले कारवांसे कर लेना शुरू किया। कजाकोंने जो लूट-मार की थी, उसका बदला लेनेके लिये १७८४ ई०मे ३४६२ रूसी सैनिकोंने यायिक पार हो असली लुटेरोंको न पा दूसरे ४३ कजाकोको पकड़ लिया, जिसपर सिरिमके नेतृत्वमे कजाकोने भी जवाब दिया। अगले साल (१७८५ ई०) मे दो डिवीजन रूसी सेना यम्बाकी ओर बढ़ी, जिसने २३० औरत बच्चोंको पकड़ लिया, और कजाकोंने मजबूर होकर उनके बदलेमे रूसी बंदियोको लौटाया। कजाकोके साथके झगड़ेको मिटानेके लिये १६ आदमियोंकी एक विशेष अदालत बैठाई गई, जिसमे ओरेनबुर्गका सेनापति, दो सरकारी, दो व्यापारी, दो किसान इस प्रकार सात रूसी और एक सुल्तान तथा छ मुखिया—सात कजाक, एक बाश्किर और एक मेशकेरी प्रतिनिधि थे। इस अदालतने शांति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। रूसियोंने यह भी देखा, कि लड़ाकू कजाकोंको केवल तलवारके बलपर नही दबाया जा सकता, इसलिये १७८५ ई०मे ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमें कजाकोंके लिये मदरसा, मस्जिदे और कारवासराय बनानेका हुक्म दिया। रूसियोके सामने वही समस्या थी, जो कि हिन्दुस्तान छोडकर जानेतक पश्चिमोत्तर सीमान्तपर अग्रजोके सामने।

१७८५ ई०मे नये राज्यपाल बैरन इगेल्स्त्रोमने कजाकोको दबानेके लिय एक नया तरीका इस्तेमाल किया। उसने लघु-ओर्दूके तीन टुकड़े—सेमीरोद्सक, बेउलिन और अलीमुल—करके उनपर अलग-अलग खान नियुक्त किये, और लघु-ओर्दूके खान पदको उठा देना चाहा। साथ ही कजाकोंकी महापरिषद् बुलानेका अधिकार खानके हाथमे न रख सुल्तानों और जेठोके हाथमे दे दिया। लेकिन इस तरह महापरिषद् बुलानेपर अपमान समझकर कोई कजाक सुल्तान उसमे शामिल नही हुआ, तो भी परिषद् जमा हुई, और उसका सभापति डाकू नेता सिरिम बातिर बना, जो कि आनुवंशिक कुलीनताका विरोधी था। उसने जोर देकर कहा—हमे खानकी जरूरत नही। कुल नहीं योग्यताको देखना चाहिये। रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करना ही हमारी भलाईका एकमात्र रास्ता है। उसने रूसियोंसे मांग की, कि अबुल्खैरके वशको खान-पदसे वंचित कर दो। रूसियोंने आंशिक रूपसे उसकी बात मान भी ली। १७८६ ई०मे उसका अच्छा परिणाम भी दिखाई पड़ा, जब कि पहलेकी अपेक्षा अधिक पशु

सीमान्तके मेलोंमे बिकनेके लिये आये और १७८६ और १७८७ ई०में पहलेकी अपेक्षा कम रूसी कजाकोके बन्दी बने । कजाकोने पहलेके रूसी बदियोंको भी भारी सख्यामे छोड दिया । १७८४ ई०में यायिक (उराल) नदीके पश्चिममें पैंतालीस हजार कजाक परिवारोने आरामसे जाड़ा बिताया। बातिर (सिरिम) ओरेनबुर्गके राज्यपालका बड़ा ही विश्वासपात्र आदमी हो गया। नूरअलीने उसे विश्वास-घाती बनानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन उसका कोई फल नही हुआ । नूरअली इसपर ठडा पड गया। उसने रूसी बंदियोंको लौटा दिया। अन्तमे रूसियोने उसे परिवार-सहित ऊफामें और एचुवकको उराल्स्कमे भेज दिया।

नूरअलीके ज्येष्ठ पुत्र एरलीको १७८१ ई०मे कराकल्पकोंने अपना खान बनाया था। वह उनके साथ निम्न सिर-उपत्यकामे रहता था। वह थोड़ी-सी सेना लेकर अपने पिताके दुश्मन सिरिम बातिरके ऊपर चढा। इसी समय लघु-ओर्दूके कुछ कबीलोंने भूतपूर्व खीवा-खान काइपको अपना खान बना लिया था, कुछने नूरअली या दूसरेके लिये राज्यपाल इगेल्स्त्रोमके पास आवेदनपत्र दिया था, लेकिन इगेल्स्त्रोम काइपके पक्षमे था, जिससे रानी एकातरिना सहमत नही हुई। वह चाहती थी, कि खानका पद उठा दिया जाय। मध्य-ओर्दूका आग्रह था, कि नूरअलीको फिर खान बना दिया जाय। बेउलिन कबीलेका मुखिया सिरिम बातिर दो सहायकोके साथ ओर्दूके एक भागका नेता था। रूसियोने इन्हें सरकारी पदाधिकारी-सा बनाकर नकद और अनाजके रूपमे वेतन मुकर्रर कर दिया। कजाक-ओर्दूमे यह सब होते देख पीढियोसे चले आते खान्दानी अमीर अधिकार-वचित होनेके कारण भीतर ही भीतर जले-भुने हुये थे। इसी समय तुर्कीके साथ रूसियोकी लड़ाई छिड़ गई, बुखाराने अपने खलीफा और धर्मभाइयोंका साथ दिया और कजाकोंको भी रूसियोके खिलाफ भड़कानेकी पूरी कोशिश की—"बहादुर योद्धा, बेग और मुखिया सरतइबेग, सिरिम बातिर, शुकुरअली बेग, सादिरबेग, बोर्राक बातिर, देदाने बातिर आदिको मालूम हो, कि हम ने तुर्कीके बादशाह, और अल्लाके खलीफासे सुना है, कि सात ईसाई राज्योंके साथ काफिर रूसी तुर्कोंके विरुद्ध एक हो गये है। कजाकोंको चाहिये, कि उन्हें दड देनेके लिये सच्चे मुसलमानोका साथ दे।" बुखारा सारे मध्य-एसियाकी काशी थी, जहाके मदरसोंमे पढनेके लिये कजाक-कबीलोके तरुण भी आया करते थे। सिरिमने जवाब दिया, कि मैं और मेरे लोग इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे है, कि कब बुखारा और दूसरे मध्य-एसियाई लोग रूसियोपर आक्रमण करे, तो हम उनका साथ दे। कजाकोंके भीतर क्या हो रहा है, इसका पता रूसियोको भी था। कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू की। उन्होने अपने जेठोंकी बात नही मानी। जेठोंका काम था ओरेनबुर्ग जाकर अपनी तनखा ले आना। रूसियोकी परेशानीसे फायदा उठाकर कितने कजाको और उनके सुल्तानोंने फिरसे खानके नियुक्त करनेके लिये कहा। १७९० ई० में नूरअली ऊफामे रहते हुये मर गया, तबतक रूसी रानी खानके पदको फिरसे कायम करनेके पक्षमें हो चुकी थी।

४. एरली, अबुल्खैर-पुत्र (१७९०–९४ ई०)

जनवरी १७९० ई०में रानीके हुक्मसे नूरअलीके भाई एरलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया गया। १७९१ ई० मे सिरिम बातिरने यम्बाके मुहानेपर सारे लघु-ओर्दूकी परिषद् बुलाई, जिसमे यह प्रस्ताव रक्खा, कि सभी कजाक एक होकर रूसियोंपर आक्रमण करे, लेकिन अबुल्खैरके वंशजोंने अपने खान्दानके दुश्मन सिरिमकी बातको विफल करनेकी पूरी कोशिश की। ६ सितम्बरको उसी साल नूरअलीके पुत्र तुर्किस्तान-खान पीरअलीने रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये अर्जी दी। काइप-पुत्र अबुल्गाजीने उसे यह कहकर बहुत भड़काया, कि तुम्हें न चुनकर एरलीको खान बनाना अन्याय है। उसने कुरानके वाक्यको उद्धृत करते हुए यह भी समझानेकी कोशिश की, कि किसी मुसलमानका हिजरत कर ईसाईकी प्रजा होना धर्मविरुद्ध है, इसलिये हमें रूसी प्रदेश छोड़ देना चाहिये। बुखाराका खान मेरा दोस्त है, वहां हमें रहनेको जगह मिल जायगी। इस सबका परिणाम यही हुआ, कि कजाकोंने लूट-मार बढ़ा दी। एरली खानने रूससे सेनाकी मदद चाही, लेकिन वह न मिली। जून १७९४ ई०मे एरली मर गया।

५. इशिम, नूरअली-पुत्र (१७९४–९७ ई०)

लघु-ओर्दूके अधिकांश जेठे सहमत नही थे, तो भी रूसियोने इशिम सुल्तानको खान बनाया। सिरिम बातिरने एकाएक नवम्बर १७९७ ई०मे क्रास्नोयार्स्कके दुर्गपर आक्रमण करके इशिमको मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। सिरिमके अनुयायी कजाक बराबर ऐसा ही करने लगे, जिसका बदला यायिकके कसाकोंने १७९७ ई० और १७९८ ई० मे आक्रमण करके उनके बहुतेरे आदमियोंको मार हजारो घोड़ोंको लूट कर लिया। कुछ ही समय बाद बाश्किरोंने भी कजाकोंको लूटना-मारना शुरू किया।

६. ऐचुवक, अबुल्खैर-पुत्र (१७९७–१८०५ ई०)

इशिमके मारे जानेके बाद लघु-ओर्दूके शासनका भार एक परिषद्के हाथमे दिया गया, जिसका प्रधान ऐचुवकको बनाया गया। इस परिषद्मे ओर्दूके प्रत्येक कबीलेके दो-दो प्रतिनिधि थे। इस समय बैरन इगेल्स्त्रौम फिर राज्यपाल होकर आया था। लघु-ओर्दूकी सरकारका केंद्र खोब्दा नदीपर रखना निश्चित हुआ। ओर्दू इस प्रबंधसे सतुष्ट नही था। उन्होने फिर अपने लिये खानकी मांग की। रूसियो ने ऐचुवकका समर्थन किया, रूपये-पैसोके बलपर ऐचुवक खान निर्वाचित हो गया और जार पावलने भी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी। ऐचुवक बूढा था। वह कजाकोंको काबूमें नही रख सकता था। ओर्दूमें अब बिखराव शुरू हुआ। उनमेसे कुछ कबीले मध्य-ओर्दूमे मिल गये, कुछने सिर नदीके तटपर जा कराकल्पकोंको दबाकर काइप-पुत्र अबुल्गाजीको अपना खान चुना। कुछने उस्तउर्तके अधिकांश भागपर अधिकार करके वहासे तुर्कमानोको भगा दिया। नूरअली-पुत्र बकेइ ऐचुवकके परिषद्का सभापति था। उसने गुर्जी-अस्त्राखानके महाराज्यपाल क्नोरिंगके पास प्रार्थनापत्र भेजा, कि हमे कल्मकोंद्वारा परित्यक्त भूमि (यायिक-वोल्गाके बीचके इलाके रिन्पेस्की) में रहनेकी इजाजत दी जाय। उनमें व्यवस्था कायम रखनेके लिये सौ कसाक नियुक्त कर ११ मार्च १८०१ ई०के उकाज (राजादेश) द्वारा सरकारने मंजूरी दे दी। ये कजाक मुख्यतः बाउलिन कबीलेके थे, जिनकी संख्या दस हजार थी। नई भूमिमे आकर वह खूब फलने-फूलने लगे, और सात-आठ सालके भीतर ही उनके पास पहलेसे दस गुना पशु हो गये, जब कि यायिक पारवाले उनके भाई फूट और भूखकी मारसे अपने बच्चोंको रूसियोके हाथ बेच रहे थे।

१८०५ ई० मे बुढापेके कारण ऐचुवकने अपने पदको छोड दिया।

७. जन्ती उरा, ऐचुवक-पुत्र (१८०५–९ ई०)

नया खान थोड़े ही समयतक रहा, जिसके बाद नूरअलीके एक पुत्रने उसे कत्ल कर दिया। दो सालतक लघु-ओर्दूका कोई खान नही बनाया गया। इसी समय १८१०ई०में ओरेनबुर्ग प्रदेशके इलेत्स्क इलाकेमें—जहांपर कि नमककी बड़ी अच्छी खाने थीं—लाकर बहुत भारी संख्यामें रूसी बसा दिये गये। कजाकोके बीचमें रूसियोंकी बस्तियोंको बसा-बसाकर जारशाही अपने शासनको दृढ़ करती थी, यह हम प्रशान्त महासागरतक फैली हुई रूसी बस्तियोंसे जानते हैं। इस बातमें उनकी नीति, भारतमे अग्रेजोंसे भिन्न थी। अग्रेज हिन्दुस्तानमें केवल अपने शासकों, सैनिकों और कुछ व्यापारियोंको रखकर शासन और शोषण जारी रखना चाहते थे, जब कि रूसी अपने अधीन पूर्वी देशोमे भारी संख्यामे रूसी किसानों और मजदूरोंको लाकर बसाते जाते थे।

८. शेरगाजी, ऐचुवक-पुत्र (१८१२–४४ ई०)

भाईकी जगहपर शेरगाजी लघु-ओर्दूका खान बना। इसी समय यायिक और वोल्गाके बीचमें बसे बुकेई-कबीलेका भी एक खान बुकेई था। १८२४ ई०मे उसके मर जानेपर बुकेईके ज्येष्ठ पुत्र जहांगीरको खान नियुक्त किया गया। शेरगाजीके ओर्दूके भी तीन टुकड़े हो गये थे, जिनपर

तीन सुल्तान शासन करते थे। किर्गिज लोगोंमें अपने राजवंशके प्रति बहुत सम्मान था, और वह काली हड्डीवाले (साधारण जनता) सफेद हड्डी (पुराने राजवश) के जूयेको बडी खुशीसे उठानेके लिये तैयार थे।

अब कास्पियनके पूर्वी तटपर भी रूसने हाथ-पैर फैलाना शुरू किया था। १८३३ ई०मे वहां उन्होंने नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की, फिर मंगुश्लक (मगिश्लक) किलोंको बनाया। १८३५ ई०में यायिक (उराल) और उई नदियोके बीचमें एक नई दुर्ग-पक्ति बनाई, और इसके बीचमे पडनेवाली भूमि ओरेनबुर्गके कसाकोंके इलाकेमे मिला दी गई। कुछ ही साल बाद मध्य-ओर्दूके प्रसिद्ध खान केनीसर कासिमोफने साइबेरियाके कजाकोमे भारी विद्रोह फैलाया, और लघु-ओर्दूके भी कुछ कजाक विद्रोहियोंमे जा मिले। इस विद्रोहने छ सालतक रूसी सरकारको परेशान रक्खा। १८४४ ई०मे रूसी सेनाने कासिमोफका पीछा करके उसे बुरूतों (करा-किर्गिजों)मे भागनेके लिये मजबूर किया, जहां उनसे लडते हुये कासिमोफ मारा गया। इस विद्रोहके दबानेके प्रयत्नके फलस्वरूप तुरगाई नदीपर ओरेनबुर्ग-इर्गिजपर उरालके किले १८४७ ई०मे बने। अगले साल कराबुलात-तटपर उसी नामका एक रूसी किला बनाया गया। रूसी सीमाके भीतर रहनेवाले कजाकोंपर खोकन्दी और खीवावाले लूट-मार किया करते थे, जिसके प्रतिरोधके लिये रूसियोंने १८४७ ई०मे ही निम्न-सिरपर अराल्स्क (भूतपूर्व राइम्स्क)का किला बनाया। इस प्रकार रूस कदम-कदम आगे बढता जा रहा था, फिर भला कजाकोके भीतर शांति कैसे कायम हो सकती थी? जबतक इजत कुतेबेरोफको भगा नही दिया गया, और प्रसिद्ध बातिर जान खोजा मारा नही गया, तबतक दश्त (स्तेपी)मे रूसियों और कजाकोंका संघर्ष जारी रहा, फिर कजाक पूरीतौरसे रूसियोके संरक्षणमें आ गये।

१८६९ ई०मे ओरेनबुर्गके दश्तमे नया शासन-सुधार हुआ, जिसके अनुसार सारे लघु-ओर्दूको उराल्स्क और तुरगाई दो जिलोमे बांट दिया गया। हरएक जिलेमे एक रूसी सैनिक कमांडर रहता था, जिसके अधीन कजाकोद्वारा निर्वाचित कुछ औल-जेठे (डेरेके मुखिया) शासन-प्रबंधमे सहायता देते थे। कजाकोमे इसका भारी असतोष था, कि उनके ऊपर रूसी कसाक शासन करनेके लिये नियुक्त किये गये है। खीवाके खान कजाकोंके खान-वंशके ही होते थे और उनका रूसियोंसे अच्छा संबंध नही था। खीवाके खानने कजाकोके असतोषसे फायदा उठाकर उन्हे भड़काया, जिसके कारण १८६९-७० ई०में सारे दश्तमे विद्रोहकी आग भडक उठी, डाकके रास्ते बद हो गये। कजाकोंने डाककी चौकियोको नष्ट कर दिया, मुसाफिरोंमेंसे पकड़कर कुछको मार दिया और कुछको दास बनाकर बेच दिया। इसके लिये रूसियोंने घोर दमन किया, और कबीलोंको जबर्दस्ती जहा-तहां भेज दिया। लेखक इमाइलर १८७३ ई०में तुर्किस्तानमे कजाक राजुल छिङ-गिस्के साथ रहा, जो कि बुकेइयेफ ओर्दूके अन्तिम खानका पुत्र था। पिताके मरनेपर जारने उसे राजुलकी रूसी उपाधि प्रदान की थी, लेकिन वह पक्का मुसलमान था, और हाल हीमे मक्कासे लौटकर आया था। समारा जिलेमे उसे जमींदारी मिली थी। इमाइलरके अनुसार वह बड़ा ही संस्कृत, भद्र पुरुष था। उसका अधिक समय फ्रेंच उपन्यासोके पढ़नेमे लगता था। लघु-ओर्दू १९वी सदीके चतुर्थ पादतक पहुंचते-पहुचते अपने स्वभावमें कितना परिवर्तन कर चुका था, इसका उदाहरण यह राजुल था। लेकिन यह परिवर्तन अमीरों और राजवंशियोंतक हीमे सीमित था, अभी साधारण कजाक-जनता बहुत-कुछ पुरानी दुनियामे रहनेकी कोशिश कर रही थी, और बोल्शेविक क्रातिके बाद ही उसमे वास्तविक सामाजिक क्राति हुई।

ग. महा-ओर्दू (१७४०—६० ई०)

मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दू रूसी सीमांतके पास रहते थे, इसलिये उनका संबध बहुत पहले ही से रूसियोंके साथ हो गया था, लेकिन महा-ओर्दू बहुत दूर रहता था, इसीलिये रूसियोंके साथ संबंध बहुत कम रहनेके कारण उनके इतिहासके बारेमे भी हमे बहुत अधिक मालूम नही है। महा-ओर्दूके कई कबीले थे, जो अपने अलग-अलग सुल्तान, बेग या खानके अधीन रहते थे। यह कहनेकी अवश्य-कता नहीं, कि सारे कजाक-ओर्दुओंकी तरह यहांपर भी छिङ-गिस् खानके खूनसे संबंध रखनेवाले ही शासकके तौरपर पसंद किये जाते। महा-ओर्दू पहले जुंगरोंके अधीन था, पीछे उन्होंने चीनियोंकी

अधीनता स्वीकार की। यद्यपि नाम महा-ओर्दू था, लेकिन सख्या और प्रभाव दोनोंमे यह श्वेत-ओर्दूके मध्य और लघु-ओर्दूसे निर्बल था। तौफीक (तियाअवका) खानने श्वेत-ओर्दूको तीन हिस्सोंमें बांटकर तिउलको महा-ओर्दूका शासक नियुक्त किया था। १७२३ ई०में जब जुंगरोंने कजाकोकी भूमि और तुर्किस्तान शहरको ले महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दूके कितने ही कबीलोंको अपने अधीन किया, तो बाकी बचा हुआ महाओर्दू और मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर चला गया। पीछे कितने ही कजाक उत्तरकी ओर चले गये, लेकिन महा-ओर्दूवाले जुगरोंकी प्रजा बनकर अपने पुराने देशमे बने रहे। महा-ओर्दूके निम्न खानोंका पता है :—

१. यलबर्स, इलबर्स	१७४० ई०
२. तिउल बी	१७४०–ई०
३. कुसियन बी	१७४२–ई०

१. एलबर्स (–१७४० ई०.)

१७३८ ई०मे महा-ओर्दूके खान एलबर्सने रूसियोसे उनकी प्रजा बनकर व्यापार करने की इजाजत मांगी, जब कि मालूम हुआ, कि ओरी नदीपर किलाबंद नगर बन गया है, और मध्य तथा लघु-ओर्दूके लोग व्यापार करके बड़े मौजमे रह रहे है। एलबर्स इस प्रकार ओरेनबुर्गके साथ व्यापार करनेके लाभको देखकर ही रूसी प्रजा बननेके लिये तैयार हुआ। पीछे राजादेश तैयार हो ओरेनबुर्गके अभिलेख-गृहमे आकर यो ही पड़ा रहा। इसी समय जुगर-राजा गन्दनने महा-ओर्दूके प्रत्येक कजाकपर एक छाल कर लगाया। १७३९ ई०मे मूलरके नेतृत्वमें एक रूसी कारवां जा रहा था, जिसे महा-ओर्दूके कजाकोने लूटा। मूलरने ९ नवम्बर १७३९ ई०को ताशकन्द पहुंचकर एलबर्ससे इसकी शिकायत की, और लूटे मालको लौटानेके लिये कहा। खानने जवाब दिया—"मैंने दुर्घटनाकी खबर पहले ही सुनी थी, अल्लाका शुक्र करो, जो कि जिन्दा बच गये। मैंने गिरोहके नेता कोगिलदेसे माल लौटानेके लिये कहा है, और माल न लौटानेपर उसे दंड देनेकी धमकी दी है। लेकिन मुझे मालके लौटनेकी बहुत कम आशा है।" उस समय ताशकन्दका शासक सईद सुल्तान था, लेकिन कजाक और उनका खान करीब-करीब स्थायी तौरसे ताशकन्दके इलाकेमें डेरा डाले ताशकन्दियोंको मनमाना लूटा करते थे। मूलरके

कारवाके प्रस्थान करनेके चौथे अप्रैल १७४० ई०मे दिन सरत नागरिकोंने एलबर्सको पकड़कर मार डाला, जिसका बदला कजाकोंने शहरको लूटकर लिया। एलबर्सके मरनेके बाद उसका साथी तिउल बी सारे ओर्दूका शासक बना।

२. तिउल बी (१७४०–ई०)

तिउल बीको शायद तौफीक खानने नियुक्त किया था। उसे अधिक दिनोतक शासन करनेका मौका नही मिला, और उसे भगाकर गन्दन कुसियन बी छेरिङ की ओरसे शासन करने लगा। १७३९ ई०मे तिउल बीने रूसियोकी अधीनता स्वीकार करके अपने खोये अधिकारको प्राप्त करनेका असफल प्रयत्न किया।

३. कुसियन बी, कुसियक बी (–१७४२–ई०)

१७४२ ई०मे कुसियन बी अब जुगरोके राज्यपालके तौरपर ताशकन्दपर शासन कर रहा था। इस समय यद्यपि कजाकोकी राजनीतिक प्रधानता नही थी, लेकिन शहरके चारों ओर जिस तरह वह डेरा डाले पडे थे, उससे जान पड़ता था, कि मानो नगरका मुहासिरा किये हुये है और किसी वक्त भी टूट पड़नेके लिये तैयार है। तुर्किस्तान शहरकी भी हालत कुछ समयतक ऐसी ही रही, लेकिन जुगरोंकी शक्ति इतनी मजबूत थी, कि वह उनके व्यापारमे कोई बाधा नही डालते थे। तुर्किस्तान और ताशकन्द नगरोंके बीचके दीहाती इलाकेपर महा-ओर्दूके कजाकोंका स्थायी अधिकार था। जुगरोंके दबानेपर कजाक भागकर फरगानामें चले गये, जहां वह वहांके पुराने बाशिन्दोंपर प्रभुत्व जमाने लगे, यद्यपि उन्हे बराबर जुगरोका भय बना रहता था। जुगरोके अंतिम संघर्षके समय कजाकोंने भी हाथ साफ किया और अमुरसनाके विद्रोह करनेपर ये भी उसके पक्षमे रहे। १७५६-५७ ई०में जुंगर-राज्यके पतनके बाद कजाकोंकी बन आई, और वह जुगरोकी छोडी हुई भूमि सप्तनदमे चले गये। चीनियोने १७५८ ई०में ताशकन्द लेकर जुगरोकी भूमिमे कजाकोके बसनेके लिये प्रोत्साहन दिया।

इस समयतक महा-ओर्दूके कई टुकड़े हो चुके थे, इनमेसे जो जुगारिया लौटे, उनमेसे कुछ चीनकी प्रजा बने हुये थे, और कुछ चीनके विरोधी। दोनो पक्षोमे बराबर लडाई होती रहती थी, फिर इनके पड़ोसी बुरूत (करा-किर्गिज) भी इन्हें चैनसे रहने देना नही चाहते थे। १७७१ ई०मे जब तोर्गुत वोल्गा छोड़कर पूर्वकी ओर भाग रहे थे, उस समय अपने दूसरे कजाक भाइयोंकी तरह इन्होंने भी उन्हें खूब लूटा। एरली सुल्तानने तोर्गुत थैची उबासा (उपासक)को बहुत तंग किया, और इनके कारण उसे अठारह दिनतक एक जगह डेरा डालके पड़ा रहना पड़ा। इसी बीच एरलीने कल्मकोंके धन और सुदर स्त्रियोंका लोभ देकर भारी संख्यामे जहादी जमाकर उन्हे चढ़ाया। कजाकोंकी शक्तिको देखकर उबासा डर गया। एरलीने उन्हे इली-उपत्यकामे चले जानेकी इजाजत दी। तोर्गुत जब निश्चित हो किसी जगह डेरा डाले हुये थे, उसी समय एरलीने आक्रमण करके भारी संख्यामें मंगोलोकी निर्मम हत्या की, और कजाक बहुतसा लूटका माल और स्त्री-बच्चे पकड़ ले गये।

ताशकन्द इलाकेमे कुछ कजाक अब स्थायी तौरसे रहने लगे थे, ताशकन्द-शहर तो उनकी दयाका भिखारी था। वह पास-पड़ोसके लोगोको भी लूटते-उजाड़ते थे, जिसके कारण उनकी प्रजा न होनेपर भी वहांके लोग कर देनेके लिये मजबूर थे। १७६० ई०में लघु-ओर्दूद्वारा सिर नदीके मुहानेसे भगाया कराकल्पकोंका एक समूह इनके साथ आ मिला। सालों अत्याचार बर्दाश्त करते-करते १७९८ ई०मे ताशकन्दके नागरिक अपने शासक यूनस खोजाके अधीन उठ खड़े हुये, और उन्होंने कजाकोसे घोर बदला लिया—कजाकोके सामने उनके भाइयोंका शिर काटकर मीनार (स्तूप) बनवाया। यूनस खानने उन्हें पूरी तौरसे दबाकर तास्कन्दकी क्षतिपूर्तिको भी भरनेके लिये मजबूर किया। हर सौ भेड़ पर एक भेड़ कर वसूलकर उन्हें सेनामे भर्ती होनेके लिये भी मजबूर किया। १८१४ ई०में जब ताशकन्द खोकन्दके खानके हाथमें चला गया, तो ये कजाक भी खोकन्दकी प्रजा हो गये, लेकिन चिमकन्दके पास रहनेवाले कजाकोंमेसे कितनों हीने अपने घरों और बागोंको छोड़कर चीनी सीमाके भीतर जाना पसंद किया। कुछ अपने स्थायी निवासके जीवनको न पसंदकर मध्य-ओर्दूके पास ईतिश-तटपर चले

गये, और कुछ अकताग पहाड़की ओर। उनका एक भाग कितने ही समयतक सेमेरेक (सप्तनद), कुस्मू, और करानालके इलाकोमे स्वतंत्र विचरता रह १८१९ ई०मे रूसके अधीन बना। इस समय उनका शासक मध्य-ओर्दूके खान अबलइका पुत्र सिउक था, जिसकी राजधानी अल्माअता थी, इसे रूसियोंने वेर्नोय (श्रद्धा) नाम दिया था—जो बोल्शेविक क्रांतिके बाद फिर अलमाअता बन आजकल कजाकिस्तान गणराज्यकी राजधानी तथा एक समृद्ध नगरी है। सिउक सुल्तान महा-ओर्दूके सबसे बड़े कबीले दोगल्त (दूलत) का शासक था। रूसी उसे ३५० रूबल पेन्शन देते थे। रूसी अफसर वेनीउ-कोफने एक बार सुल्तानसे कहा—"मै नही समझता, तुम्हारे लोग तुम्हे अपना शासक पाकर खुश है ?" इसपर बूढेने जवाब दिया—"ऐसा मत कहो, मै तो पादिशाह (जार)की आज्ञाके अनुसार अपने लोगोपर शासन करता हू, अल्ला जारकी रक्षा करे।"

रूसी अफसरने फिर कहा—"तुम बडे नम्र हो सुल्तान ? हम सभी सम्राट् (जार)की इच्छाका अनुसरण करना चाहते है, और वेर्नोयेके हरएक आदमीको वैसा करना चाहिये, लेकिन सुल्तान तुम्हारा ओर्दू तुम्हारी बात मानता है ; इसलिये उनका बादशाहका भक्त होना तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है।"

"मेरे लोगोको बादशाहका हुक्म मानना छोडकर और कुछ नही करना चाहिये। जिन्हे बादशाहने हमारे ऊपर नियुक्त किया है, वह उनकी आज्ञा मानते है। हम यहा दो हाथोकी तरह साथ-साथ रहते है—तुम रूसी लोग दाहिने हाथ हो, हम बाये, और राज्यपाल प्रिस्तोफ हमारा सिर है। यह बुरा होगा, यदि बाया हाथ दाहिनेकी आज्ञा नही माने, या दोनो ही सिरके कहेको न मानें।"

महा-ओर्दूके कुछ कजाक-परिवार रानी एकातेरिनाके उकाजे (राजादेश)के अनुसार अपने सुल्तान चुरिगेइके साथ चार हजार परिवारोंको ले १७८९ ई०मे उस्तकामेन्नोगोर्स्कमें बस गये, और १७९३ ई०मे महा-ओर्दूके कितने ही कजाक अपने सुल्तान तुगुमके साथ साइबेरियाके सीमांतपर जा बसे। कजाकोको अपनी ओर खीचनेके लिए चीनी नाममात्रका कर लगाते थे। भेड़ोंपर प्रति-हजार एक और ढोरोपर प्रतिशत एक कर लेते थे। कजाक कितनी ही बार पेकिङ जाते, और उन्हे सम्राट्की ओरसे बहुत-बहुत इनाम मिलते। रूसी भी उनको अपनी ओर खीचना चाहते थे। कजाक अब भी अपने अक्खडपनको छोडनेके लिये तैयार नही थे। सीमांतपर कर मांगनेपर एक चीनी अफसरको एक कजाकने कहा था—"घास और पानी अल्लाने बनाये है, और पशु उसीका दान है। हम उनकी चरवाही करते है, फिर हम क्यों किसीको कर दे ?"

लेकिन कजाक बहुत दिनोतक अपना अक्खड़पन नही चला सकते थे। रूसी गोले-गोलियोंके सामने उन्हे सिर नवाना ही पड़ा। अबलइ-जैसे साहित्य और संस्कृतिके नेताओने रूसियोंसे सीखकर अपनी कजाक जातिमे प्रकाश फैलानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता १९१८ ई०के बाद ही हुई, जब कि बोल्शेविक क्रांतिने उन्हे समानताका अधिकार दे नये भविष्यके निर्माणमे हाथ बंटानेके लिये निमंत्रित किया।

स्रोत ग्रन्थ

१. History of Mongol (H. H. Howorth)
२. Medieval Researches from Eastern Asiatic Sourçes
(E. Bretschneider, London 1888)

भाग ४

दक्षिणापथ

अध्याय १

जारशाहीका अन्तिम प्रमार

(१८०१–१९१७ ई०)

पावल I के शासनके बारेमे कहते हुये हम बतला चुके है, कि १८ वी सदीके अन्तमे रूस अब युरोपकी एक सबसे बडी शक्ति माना जाता था। पावलकी हत्याके बाद उसका लड़का अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा।

१. अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र (१८०१–२५ ई०)

अलेक्सान्द्र अपनी दादी एकातेरिना II की देख-रेखमे युरोपीय शिक्षा-दीक्षामे पला था। एकातेरिनाने एक गणतत्री स्विस-विद्वान् लहार्पको अलेक्सान्द्रका अध्यापक नियुक्त किया था, जो उसके साथ गणतंत्रताकी बातें किया करता था। उधर प्रशिया (जर्मनी) की सैनिक-कला उसके खूनमें थी। पीतर-वंशके समाप्त होनेपर जर्मनीसे लाकर जो जार और उनकी सताने रूसी सिहासन पर बैठाये गये थे, वह अपने जर्मन होनेका अभिमान करते रूसियोंको हीन दृष्टिसे देखते थे। अलेक्सान्द्रकी घनिष्ठता जेनरल अरक्चेयेफसे भी पहले ही स्थापित हो गई थी, जो कि किसानोंकी अर्ध-दासताका जबर्दस्त पक्षपाती था। नये जारके बारेमे लोगोंका कहना था—"वह आधा स्विटजर्लैंडका नागरिक और आधा प्रशियाका जमादार है।" लेकिन अरक्चेयेफ जैसे अर्ध-दासताके पक्षपाती चाहे कितना ही चीखे-चिल्लाये, १९ वी सदीके आरम्भके साथ रूसमे पूजीवादका प्रभाव और कारखानोंका विस्तार जोरसे होने लगा, जिससे खेतीके अर्ध-दासोंकी नही, बल्कि कारखानोके मजदूरोंकी अवश्यकता बढ़ी। व्यापारने नदियों और समुद्रोंके सस्ते जलपथोंके महत्वको बतलाया, जिसके लिये कृत्रिम जलपथोंके बनानेकी ओर ध्यान जाना जरूरी था। १८०३ ई०मे उत्तरी-एकातेरिना-नहर बनाकर कामा और उत्तरी द्वीना नदियोंको मिला दिया गया। अब उत्तरी द्वीनासे नौकाये वोल्गामें आने-जाने लगी। १८०४ ई०मे ओगिन्स्की नहर बनाई गई, जिसने बाल्तिक और काला सागरको मिला दिया। अलेक्सान्द्रके शासनकालके प्रथम दस वर्षोंमे मारीइन्स्क और तिखविनकी नहर-प्रणाली बनकर तैयार हो गई, जिनके द्वारा रूसके भीतरी भागोंका संबध बाल्तिक समुद्रसे हो गया। नहरोंके साथ-साथ व्यापारके सुभीतेके लिये बकोंकी भी स्थापना होने लगी। १७८६ ई०मे पीतरबुर्गमे राजकीय ऋण-बंक स्थापित हुआ था। इससे सरकार और जमीदारोको फायदा था। १८०७ ई०मे मास्कोमें व्यापारिक बंककी स्थापना हुई। अब मास्को, आर्खगेल्स्क, तगनरोग और फ्योदोसिया (क्रिमिया) मे कितने ही बक-केद्र स्थापित हो गये। मालकी माग अधिक होनेसे उद्योग-धन्धोंको बढनेका मौका मिला। १८०४ ई०में चुकदरकी चीनीके सात कारखाने काम कर रहे थे, जब कि १८१२ ई०मे उनकी संख्या तीस हो गई। १८०८ ई० मे पहली सूती कताई मिल स्थापित हुई। १८१२ ई०में जितने कारखाने चल रहे थे, उनमेसे बासठ प्रतिशत व्यापारियोंके थे, और केवल सोलह प्रतिशत के स्वामी जमीदार थे। इस प्रकार अब औद्योगिक पूजीवाद रूसमे पैर बढ़ाता जा रहा था।

शासन-सुधार—१८वी सदीके अन्तमे फ्रासीसी क्राति हो चुकी थी, जिसके प्रभावको दबानेके लिये जार पावलने बडी कोशिश की थी। उसके पुत्रको मालूम हो गया था, कि शासनमें बिना सुधार किये क्रातिको रोका नही जा सकता। जब अलेक्सान्द्र अभी युवराज ही था, तभी उसने

लाहार्पको एक पत्रमे लिखा था--"देशको स्वतंत्रता दूगा, और इस प्रकार में उसे पागलोंके हाथका खिलौना नही बनने दूगा।" गद्दीपर बैठते ही अलेक्सान्द्रने घोषित किया, कि मै अपनी दादी एकातेरिना II के विधानों और उसके भावोंके अनुसार शासन करूंगा। उसने जो सुधार किये, उनके द्वारा दो सौमेसे एक किसान अर्ध-दा-को फायदा हुआ। इन अर्ध-दासोंको मुक्ति पानेके लिये पांच हजार रूबल जमीदारको क्षति-पूर्ति देनी थी। भला इतना पैसा गरीब किसान कहांसे लाते ?

अलेक्सान्द्रके सुधारोंमेसे एक था १८०२ ई०मे आठ मत्रालयोंकी स्थापना। इसके पहले एकातेरिनाके शासकीय विभाग काम कर रहे थे। शिक्षाकी ओर भी नये जारने कुछ ध्यान दिया। १९ वी सदीके आरम्भमे मास्को और दोरपतमे दो विश्वविद्यालय मौजूद थे, १८०५ ई०में खरकोफ और कजानमे नये विश्वविद्यालय स्थापित हुये, और १८१९ ई०मे पहलेसे मौजूद केन्द्रीय-शिक्षण-प्रतिष्ठानको फिरसे सगठित करके पे तर्बुर्ग (लेनिनग्राद) विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। इसी समय शिक्षा-मत्रालयकी स्थापना हुई। लेकिन साथ ही अलेक्सान्द्र शिक्षाके खतरेको भी समझता था, इसीलिये मुद्रणपर अकुश रखनेके लिये पुस्तकोंको छापनेसे पहिले उनके हस्तलेख सेसर को दिखला लेनेका नियम बनाया।

नेपोलियनसे युद्ध (१८०५-७ ई०)--अलेक्सान्द्र उस समय जार हुआ, जब कि १७९२-९३ ई०की फ्रेंच-क्राति समाप्त हो गई थी, और उसके बाद नेपोलियनने मौकेसे फायदा उठाकर अपनी विजय-यात्रा शुरू कर दी थी। वाणिज्य और बाजारके संबंधमे इगलैड और फ्रासकी उस समय बड़ी प्रतिद्वद्विता थी, जिसका प्रभाव तत्कालीन भारतमे भी देखा जा सकता था। रूसका व्यापार अधिकतर इगलैडके साथ था, इसलिये अलेक्सान्द्रने गद्दी सभालते ही इगलैडसे मित्रताकी सधि कर ली, और बापके समयसे जो अग्रेजी जहाज रोक रक्खे गये थे, उन्हे मुक्त कर दिया। लेकिन नेपोलियनकी शक्ति उस वक्त बहुत जबर्दस्त थी। यदि बीचमे ब्रिटिश चैनलकी खाडी न होती, तो नेपोलियनके चंगुलसे इगलैड नही बच सकता था। इसपर भी १८०२ ई०मे आमिनकी सधिद्वारा इगलैडने नेपोलियनसे त्राण पानेकी कोशिश की। लेकिन यह मित्रता या युद्धविराम अधिक समयतक नही टिक सकेगा, यह इगलैड भी जानता था, इसलिये उसने आस्ट्रिया, रूस और स्वीडनसे शत्रुके खिलाफ सैनिक मित्रताकी सधि कर ली। इगलैडको भारत-जैसी धनकी खान और दुनियाका व्यापार मिला था, इसलिये चांदीके भरोसे वह अपनी युद्ध लडनेके लिये दूसरोंको तैयार कर रहा था, जैसे कि, आजकलका अमेरिका। इगलैड और रूसकी इस सधिका एक मतलब यह भी था, कि नेपोलियनको हराकर फ्रांसके पुराने राजवंश बूरबं को फिर गद्दीनशीन किया जाय, और सामन्तवादियोंके शासनको फिरसे स्थापित करके पूजीवादियोंकी सफलताको खतम किया जाय।

अगस्त १८०५ ई० मे रूसी सेनापति कतुजोफकी अधीनतामे एक बडी सेना युरोपमें नेपोलियनके विरुद्ध भेजी गई। उस समय नेपोलियन अपनी डेढ लाख सेनाके साथ इंगलैंडपर आक्रमण करनेके लिये तैयार था। कतुजोफ जिस वक्त जर्मनी (बवेरिया) के नगर ब्रौनौमें पहुचा, तो मालूम हुआ, कि आस्ट्रियाकी मुख्य सेनाने हथियार रख दिये है। नेपोलियनकी विशाल सेनाके पांचवें ही भागके बराबर कतुजोफकी सेना थी, इसलिये लौटनेके सिवा उसके लिये और कोई चारा नही था। लौटनेमे भी जो कौशल रूसी सेनापतियोंने दिखाया, वह अद्वितीय था। रूसी सेनापति बगरातियोनके पास छ हजार सेना थी, जिसे तीस हजार फ्रेंच सैनिकोंने शोनग्रावेनमें घेर रक्खा था। बगरातियोनकी सेना बड़ी बहादुरीसे लड़ी और फ्रेंच-पक्ति तोडकर निकलनेमे सफल हुई। इस वीरताके उपलक्षमें उन सारे सैनिकोंको "पांचके प्रति एक"के अभिलेखके साथ बाहोंपर फीता प्रदान किया गया। सबसे बड़ी लड़ाई ऑस्टर्लिज (बोहीमिया) मे २ दिसम्बर १८०६ ई० को हुई, जिसमे एक ओर नेपोलियनकी नब्बे हजार सेना थी, और दूसरी ओर रूस और आस्ट्रियाकी छियासी हजार। सेनापति इस समय और स्थानको युद्धके लिये उचित नही समझते थे, लेकिन आस्ट्रियाके सम्राट् फ्रासिस I ने तुरत युद्ध आरम्भ करनेके लिये जोर दिया। २ दिसम्बर १८०५ ई० को सबेरे कुहरा पड़ रहा था, जब कि रूसी फौजोने फ्रेंच सेनाके दाहिने पक्षपर असफल आक्रमण किया। रूसी और आस्ट्रियन सेनायें दूर तक बिखरी हुई थी, इसलिये नेपोलियनके प्रत्याक्रमणको वह बर्दाश्त नही कर सकीं, तो भी रूसी

सैनिकोंने लड़ाईमे जो बहादुरी दिखाई थी. उसके बारेमे नेपोलियनने खुद कहा—"आॅस्टर्लिज़ (चेकोस्लावाकिया) मे रूसियोने जैसा भारी पराक्रम दिखलाया, वैसा मेरे विरुद्ध दूसरे किसी युद्धमे नही दिखलाया गया ।"

१८०६ ई० के शरद्मे अलेक्सान्द्रने अपने मित्र प्रुशिया (जर्मनी) की सहायताके लिये सेना भेजी, लेकिन नेपोलियनने येनामे आक्रमण करके प्रुशियन सेनाको तितर-बितर कर दिया । बर्लिनने बिना लड़ाईके ही अपनेको नेपोलियनके हाथमे समर्पित कर दिया, और १८०६-८ ई० मे दो वर्षो तक वह नेपोलियनके सैनिकोके हाथ मे रही । जनवरी १८०७ ई० मे नेपोलियन वरसावा (पोलद) मे दाखिल हुआ । रूसी-सेनाको भी उसने दो जगह जवर्दस्त हार दी, जिसमे १८०७ ई० के ग्रीष्ममे फ्रीड-लैंडकी लड़ाईमे रूसी सेनाका पचमाश नष्ट हो गया । जून १८०७ ई० मे जारके वास्ते इसके सिवा कोई चारा नही था, कि नेपोलियनकी विजय और उसके सम्राट् पदको तिलजितकी सधिद्वारा स्वीकार करे ।

नेपोलियन चाहता था, कि इगलैंड युरोपकी दूसरी शक्तियोसे सहायता न पा सके । इसके लिये उसने दूसरे देशोंका इगलैंडके साथ व्यापार करना मना कर दिया । रूस तकने नेपोलियनकी निषेध-आज्ञाको मानते हुये इगलैडको अपना अनाज भेजना बद कर दिया, लेकिन इससे इगलैंडको नही, बल्कि स्वय रूसके बडे जमीदारोको अनाजके न बिकने या सस्ता हो जानेसे भारी क्षति उठानी पड़ रही थी, जिससे रूसमें आर्थिक सकट पदा हो गया । तो भी रूस नेपोलियनको नाराज करनेकी हिम्मत कैसे कर सकता था ?

इसी बीच (१८०८-९ ई०) रूस और स्वीडनमे लड़ाई छिड़ गई । नेपोलियन रूसकी शक्ति को अपने फायदेके लिये इस्तेमाल करना चाहता था । उसके कहनेपर रूसने इगलैंडके साथ अपना कूटनीतिक सबध तोड़ लिया था, और उसीके शह देनेपर रूसने स्वीडनके खिलाफ यह युद्ध घोषित किया । स्वीडनका यही कसूर था, कि उसने नेपोलियनकी आज्ञा न मानकर इगलैंडके साथ मित्रताका संबंध कायम रक्खा । फरवरी १८०८ ई० मे रूसी सेनाने सीमात पार किया । उस समय फिनलन्द स्वीडनके हाथमें था । १८०८ ई०के अन्त तक फिनलन्दको लेकर रूसी सेना स्वीडनकी भूमिमे दाखिल हो गई । १६ मार्च १८०६ ई० को, जब कि स्वीडनके साथ घनघोर युद्ध हो रहा था, अलेक्सान्द्रने फिन्-ससद्को बोर्गा नगर मे बुलाकर वचन दिया, कि फिनलन्दके विधानको हम पूरी तौरसे मानेंगे । इसी समय फिनलन्द रूसका एक प्रदेश घोषित हुआ, और तबसे बोल्शेविक-क्रांतिके समय (१९१७ ई०) तक वैसा ही रहा । ५ सितम्बर १८०९ ई० को सधि करके स्वीडनने फिनलन्दपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया । नेपोलियनके आदेशानुसार इगलैडके घिरावेमे युरोपके दूसरे देशोने साथ देना स्वीकार किया ।

नेपोलियन जानता था, जब तक रूसको अपने हाथमे नही किया जाता, तब तक उसकी विजय अधूरी रहेगी । बीचके समयमें नेपोलियनने रूसके बारेमें बहुतसी जानकारी प्राप्त की, और आक्रमण करनेके लिये पोलन्दको आधार-भूमिके तौरपर तैयार करता रहा । इसपर जारने नेपोलियनसे मांग की, कि पोल-राज्यको फिरसे जीवित करनेकी कोशिश न करे, और दरेदानियाल तथा कान्स्तन्तिनोपलपर रूसके अधिकार करनेके साथ सहमत हो । नेपोलियनने इसे स्वीकार नही किया । सुलहके लिये नेपोलियन और जारने आपसमे मुलाकात करके भी बातचीत की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ । नेपोलियनने मोल्दाविया और बलाचियाका रूसके हाथमें जाने देना स्वीकार किया । इसी बीच १८१० ई०में उसने हालैंडको अपने राज्यमे मिला लिया, और रूसके विरोधकी कोई पर्वाह नही की । रूस समझने लगा, कि नेपोलियन मौकेकी ताकमे है, इसलिये उसने १८०६ ई०से चली आती तुर्कीकी छेड़छाड़को आगे बढ़ाना चाहा । युरोपके युद्धक्षेत्रमे रूसियोंके हारकी बात सुनकर तुर्कीकी भी हिम्मत बढी, और उसने अपने छिने हुये कालासागर-तटवर्ती पश्चिमी काकेशस-प्रदेशको रूससे ले लेना चाहा । शांति और सुलहकी बात बेकार गई, क्योंकि तुर्की जानता था, कि इस समय रूसकी प्रधान सेना युरोपमे फंसी हुई है । तब भी रूसी सेनाने नवम्बर १८०६ ई० में दन्यूबकी ओर आक्रमण करके बेसराबिया, मोल्दाविया और बलाचियाके तुर्की प्रदेशोंको ले लिया । रूसी प्रगतिको दन्यूब-तटवर्ती तुर्की किलोंने नहीं रोक पाया । ८ मई १८२२ ई०को बुखारेस्तकी संधिके अनुसार

तुर्कीने बेसराबियाके ऊपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और साथ ही खोतिन, बन्दर, अकर-मान और इस्माइलके किलोंको भी उसके हवाले कर दिया। रूसने पोती और अख-कलाकी तुर्कीको लौटा दिये। तुर्कीसे इस तरह छुट्टी पाकर रूस अब नेपोलियनके आक्रमणका जवाब दे सकता था।

नेपोलियन रूसको विश्राम लेने देना नही चाहता था। वह रूसकी ओर अपनी सेना भेजकर मई १८१२ ई०मे स्वय भी ड्रेसडनसे नीमन नदीकी ओर चल पडा। २४ जून (पुराना १२ जून) १८१२ ई० को नेपोलियनने हिटलरकी तरह बिना युद्ध-घोषणाके ही रूसपर आक्रमण कर दिया। नेपोलियनके पास जहां पाच लाख सेना थी, वहा रूसकी कुल सेना एक लाख अस्सी हजार थी। हिटलरकी सेनाकी तरह नेपोलियनकी सेनामे जर्मन, इतालियन, स्वीस, क्रोबात, स्पेनिश आदि युरोपकी सभी जातियोंके सैनिक थे। इतनी बडी सेनाके साथ सामने होकर लड़ना बवकूफी थी, इसलिये रूसी सेनाने कमसे कम सघर्ष करते हुये पीछे हटने को पसद किया। नेपोलियनकी सेना आगे बढती अगस्तमे स्मोलेन्स्क पहुची। उसकी तोपोंने शहरपर तेरह घटे गोलाबारी की, सारा नगर जलने लगा। नेपोलियनके विरुद्ध रूसियों-ने उसी नीतिका पालन किया, जिसे एक सौ तीस वर्ष बाद उन्होने हिटलरी आक्रमणके समय किया। आक्रमणकी गतिको धीमी करनेके लिये कही-कही लडते रूसी पीछेकी ओर हटते गये, और साथ ही नेपोलियनको परित्यक्त भूमिसे खाने-पीने-रहनेकी कोई चीज न मिल सके, इसके लिये अपने घरोंमें अपने हाथसे आग लगाते गये। स्मोलेन्स्कके निवासी भी अपने घरों और सम्पत्तिमें अपने हाथों आग लगाकर वहासे चल दिये। उस समयके रूसमें प्रतिभाशाली पुरुषोंकी कदर बहुत कम होती थी, क्योंकि जार-वंश एक विदेशी वश था, जो रूसियोंसे अधिक अपने जर्मन सबधियोंको मानता था। सुवारोफकी उपेक्षाके बारेमे हम कह चुके हैं। कतुजोफकी प्रतिभाकी भी उतनी कदर नही की गई, लेकिन नेपोलि-यनके इस भयकर आक्रमणके समय जार अलेक्सान्द्रको मजबूर होकर ६७ वर्षके बूढे कतुजोफको सारी रूसी सेनाका महासेनापति नियुक्त करना पड़ा।

राजुलवशी मिखाइल ईलारियोन-पुत्र कतुजोफ सुवारोफका योग्य शिष्य था। २९ वर्षकी उमरमें क्रिमियामे तुर्कीके साथ लडते हुये उसकी एक आख जाती रही। वह सुशिक्षित था, बहुत-सी विदेशी भाषाओंको जानता था, और युद्ध-विद्यापर युरोपकी भिन्न-भिन्न भाषाओंमें जितनी पुस्तके प्राप्य थी, उनका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। १८१२ ई० में महासेनापति नियुक्त करते हुये भी जार अलेक्सान्द्रने अपने एक दरबारीसे कहा था—"लोग उसकी नियुक्ति चाहते थे, इसलिये मैंने नियुक्त कर दिया, लेकिन व्यक्तिगत तौरसे मैंने उससे अपना हाथ धो लिया।" नेपोलियनकी सेनायें अब मास्कोकी ओर बढ रही थी। मास्को उस समय रूसकी राजधानी नहीं था, लेकिन उसका महत्व पीतरबुर्ग राजधानीसे भी अधिक था, क्योंकि वही व्यापारका सबसे बडा केंद्र था। कतुजोफको बगरातियान जैसे दूसरे योग्य सेनापति मिले थे। बगरातियोनने युद्धके बारेमे कहा था—"यह साधारण युद्ध नही बल्कि लोक-युद्ध है।" सचमुच ही सारी रूसी जनता उस वक्त अपने देशके लिये सब कुछकी बाजी लगाकर नेपोलियनके आदमियोंसे लड रही थी। रूसी ही नही, बल्कि बाश्किर, कल्मक, तारतार आदि जातियोंके सैनिक भी साथ-साथ बहादुरी दिखला रहे थे। लड़नेसे भी ज्यादा नेपोलियनकी कठिनाइया इसलिये बहुत बढ़ गई थी, कि रूसी रास्तेके गांवों, नगरों या खड़ी फसलोंमेंसे कोई चीज उसके लिये नहीं छोड़ते थे। २३ सितम्बर १८१२ ई० में नेपोलियनने रूसी सेनापतिके पास इस तरहके "बर्बरतापूर्ण और असाधारण" युद्धके तरीकेका विरोध करते हुये शांति करनेका प्रस्ताव किया। उसने जब इस बातपर जोर दिया, कि "लड़ाईमे युद्धके सर्वस्वीकृत नियमोंको पालन करना चाहिये," तो कतुजोफने जवाब दिया—"लोग तुम्हारे इस युद्धको तारतार (मंगोल) आक्रमण जैसा समझते हैं। इसीलिये वह प्रतिरोधके सभी तरीकोंको इस्तेमाल कर रहे है।" जार और दरबारी चाहते थे, कि नेपोलियनसे जमकर लड़ाई हो, लेकिन कतुजोफका कहना था, काल और देश (दूरी) की सहायतासे ही हम दुश्मनको हरा सकते है। यदि मास्को भी शत्रुके हाथमें चला जाय, तो उसके लिये भी हमे तैयार रहना चाहिये, क्योंकि हमे मास्को नहीं रूसकी रक्षा करनी है। नेपोलियनकी सेनाको भारी क्षति हो रही थी। वह चाहता था, कि कतुजोफ लड़नेके लिये तैयार हो, ताकि युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनाकी रीढ़ तोड़ दी जाय, लेकिन कतुजोफ अपनी निश्चित की हुई जगहपर ही लड़ना चाहता

था। ५ सितम्बर (२३ अगस्त) की रातको सेवर्दिनो गांवमे एक छोटीसी रूसी सेनाने डटकर लड़ाई करके उस युद्धका आरम्भ किया, जो कि ८ सितम्बर (२६ अगस्त) के प्रातःकाल मास्कोसे ९० किलोमीतरपर अवस्थित बोरोदिनो गांवके ऐतिहासिक युद्धके रूपमें हुआ। युद्धक्षेत्रमें ११२ हजार रूसी सैनिक थे, जिनके अतिरिक्त सात हजार कसाक और दस हजार नागरिक सैनिक भी शामिल हुये थे। नेपोलियनके पास अब एक लाख तीस हजार सेना और ५८७ तोपें रह गई थी। युद्धमें बगराति-योन घायल होकर अन्तमें मर गया। बेहोश होनेसे पहले उसके मुंहसे अन्तिम शब्द निकले थे—"हमारे आदमी कैसे है?" उसने "डटे हुये है" जवाब सुनकर प्राण छोड़ा। पीतर इवान-पुत्र बगरातियोन एक गुर्जी-वंशका सैनिक था, जिसे सुवारोफके चरणोंमें बैठकर युद्धविद्या सीखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यद्यपि बोरोदिनो मे रूसी नेपोलियनकी सेनाको हरा नही सके, लेकिन उसके सालों बाद अपने मृत्युसे जरा सा पहले नेपालियनने स्वीकार किया था—"मैंने जितनी लडाइयां लड़ीं, उनमें सबसे भयंकर लडाई वह थी, जो मास्कोके पास हुई। फ्रांसीसियोंने अपनेको विजयके योग्य यदि साबित किया, तो रूसियोंको भी अजेय होनेका अधिकार वहीं प्राप्त हुआ।" रूसी महान् कवि लेर्मन्तोफने बोरोदिनोके बारेमें लिखा था —

> "उस दिन शत्रुने अच्छी तरह समझा
> कि हम रूसी सिपाही कैसे लड़ते है—
> भयंकर हाथसे हाथ
> घोड़े और आदमी एक साथ लड़ते,
> और तो भी तोपोंकी गड़गड़ाहट।
> हमारी छातियां वैसे ही कांप रही थीं,
> जैसे वहां धरती कांपती थी।
> फिर पहाड़ों और मैदानोंमें अधकार छाया,
> तो भी हमे अभी फिर लड़ना था।"

बोरोदिनोमे रूसी सेनामें पराजितकी तरह भगदड़ नही मची, बल्कि वह सुव्यवस्थित रीतिसे मौंजाइस्क होते मास्को पहुची। १४ सितम्बर १८१२ ई० को मास्कोके पास फिली गांवमें कतुजोफने युद्धपरिषद् की। सेनापति लड़नेके पक्षमें थे, लेकिन कतुजोफने यह घोषित करते हटनेका हुक्म दिया—"मास्कोका हाथसे जाना रूसका हाथसे जाना नही है।" १४ (२) सितम्बरके सबेरे रूसी सेना मास्को छोड़कर बाहर जाने लगी। मास्कोके नागरिक भी जो कुछ साथ ले जा सकते थे, उसे लेकर पैदल या गाड़ियोंपर नगरसे निकल पड़े। रातको मास्कोमें आग लग गई। हवा तेज थी, जिसने लकड़ीके मकानोंमें चिनगारी फेंक-फेककर सारे नगरको जला दिया, जिससे फ्रेंच सैनिकोंको खुलकर लूटनेका मौका नही मिला। आग छ दिनोंतक जलती रही। मास्को नेपोलियनके हाथमें था। लेकिन जला-भुना आश्रयहीन मास्को जल्दी ही शुरू होनेवाले जाड़ेसे उसकी सेनाको कैसे बचा सकता था? नेपो-लियनने बहुत कोशिश की, बहुत बार जार अलेक्सान्द्रको संधि करनेके लिये लिखा, लेकिन जारने उसका जवाब भी देना पंसद नही किया। जाड़ा भयंकर रूप लेता जा रहा था, उसके कारण सैनिकोंकी हालत खराब होती जा रही थी। नेपोलियनको अब कतुजोफके युद्ध कौशलका पता लगा, और उसने मास्को छोड़नेका निश्चय कर लिया।

१८ (६) अक्तूबरके सबेरे सात बजे नेपोलियनने मास्कोसे हटना शुरू किया। उसने क्रेमलिनको बारूदसे उड़ा देनेका हुक्म दिया, लेकिन वर्षाके कारण कितने ही पलीते भीग गये थे, इसलिये क्रेमलिनका एक मीनार तथा दीवारका कुछ भाग ही नष्ट हो पाया। नेपोलियनको लौटते समय अब कतुजोफकी सेनाका मुकाबिला करना था, जो बीच-बीचमें फ्रेंच सेनापर भयंकर प्रहार कर रही थी। रास्तेके नगर और गांव बिल्कुल उजाड़ थे। घोड़ोंको मारकर खानेके सिवा नेपोलियनकी सेनाके लिये प्राण बचानेका कोई उपाय नहीं था। भुखमरीके साथ-साथ बीमारीने भी अपना आक्रमण कर दिया था। रास्तेपर पड़ी आदमियों और घोड़ोंकी लाशें नेपोलियनके लौटनेका परिचय दे रही थीं।

सैनिकोंके अतिरिक्त रूसी गोरिल्लोंने नेपोलियनकी सेनाके नाकमें दम कर दिया था। सर्दी अब इतनी बढ़ गई थी, कि भूखे फ्रेंच सिपाही गाड़ियों, घरोंके सामानों या मकानोंमें आग लगाकर उससे बचनेकी कोशिश करते थे। लेकिन यह केवल रूसी जाडा नही था, जिसने कि १८१२ ई० मे शत्रुकी सेनाको नष्ट किया। उस सालका जाड़ा अपेक्षाकृत नरम था, १२ सेटिग्रेड हिमबिन्दुसे नीचे तक ही चार-पाच दिन तापमान गया था। इससे कही अधिक सर्दी १७९५ ई० और १८०७ ई० मे हुई थी, जिसको कि सहते हुये नेपोलियनकी सेनाने हालैड आदिके युद्ध लडे थे। दिसम्बरके अन्ततक जब वह बेरेजिना नदीको पार हुई, तो नेपोलियनकी महासेना अब तीस हजार रह गई थी। नेपोलियन अपनी सेनाको वही छोड़ जल्दी-जल्दी पेरिसकी ओर दौडा। अभी उसे अपने अन्तिम दिन देखने थे। १८१३ ई०की शरद्मे लाइपजिकमे मित्र-शक्तियोंने नेपोलियनको हराया, फिर मित्र-सेनाये जार अलेक्सान्द्र I के नेतृत्वमे मार्च १८१४ ई० मे पेरिसके भीतर दाखिल हुई। क्रांति द्वारा अपसारित बूरबो राजवंशको फिरसे फ्रांसमे प्रतिष्ठापित किया गया, नेपोलियनको एल्ब द्वीपमें निर्वासित कर दिया गया। आगेकी बातोंका फैसला करनेके लिये मई १८१५ ई० मे वीना की काग्रेस हुई, जिसमें पोलन्दके बहुत बड़े भागको "सदाके लिये" रूसके हाथमे दे दिया गया। अभी काग्रेस चल ही रही थी, कि नेपोलियन एल्बसे भागकर पेरिस पहुंचा, और वह फिरसे अपनी खोई शक्तिको हाथमें करने लगा, लेकिन सौ दिन बीतते-बीतते अंग्रेज और जर्मन सेनाओंने वाटरलूके मैदानमे उसे अन्तिम तौरसे हराकर हेलेना द्वीपमें भेज दिया, जहां वह १८२१ ई० मे मर गया। फ्रांसके सिहासनपर अठारहवां लुई बैठाया गया। फ्रेंच-क्रांतिने मुकुट-धारियोंकी जो दुर्दशा की थी, उससे युरोपके सभी राजाओंमे आतक छा गया था। जार अलेक्सान्द्रने फिर ऐसा मौका न देनेके लिये आस्ट्रिया और प्रुशियाके राजाओके साथ मिलकर १८१५ ई० मे पवित्र-संधिके नामसे एक समझौता किया। नेपोलियनके हारनेके बाद अब युरोपमे सब जगह रूसी जारकी तूती बोल रही थी। कार्ल मार्क्सने पवित्र-संधिके बारेमे कहा था—"यह युरोपके सभी राज्योंपर जारकी प्रधानताका ही दूसरा नाम था।"

सुधार—यह बतला आये हैं, कि तरुणाईमे जारको लाहार्प जैसे प्रगतिशील विचारोंवाले अध्यापकके सम्पर्कमे आनेका मौका मिला था। इसके अतिरिक्त अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमे जारपर स्पेरन्स्की जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्तिका भी प्रभाव पड़ा था। स्पेरन्स्की एक गांवके ईसाई पुरोहितका लड़का था। उसकी शिक्षा पीतरबुर्गकी एक धार्मिक पाठशालामे हुई थी। अपनी असाधारण प्रतिभाके कारण वह एक मामूली क्लर्कसे बढते-बढ़ते राज्यसचिव हो गया। तिल्जितकी संधिके बाद स्पेरन्स्की जारका प्रधान सलाहकार था। रूसकी शक्तिको दृढ करनेके लिये उसने यह जरूरी समझा, कि शासनमें सुधार किया जाय। १८०९ ई०में स्पेरन्स्कीने "राज्य-विधानोंका संहितीकरण" के नामसे एक सुधार मसौदा तैयार किया। इस सुधार द्वारा वह चाहता था कि सामन्तशाही राजतंत्रकी जगह बूर्ज्वा राजतंत्र स्थापित हो, तथा "विज्ञान, व्यापार और उद्योग" की रक्षा की जाय। उसने कहा—"दुनियाके इतिहासमे ऐसा एक भी उदाहरण नही मिलता, कि नव-शिक्षित और व्यापारप्रधान जाति अधिक दिनोंतक दासतामे रहे।" स्पेरन्स्कीने सुझाव पेश किया था, कि सभी सम्पत्ति रखनेवाले लोगोंकी एक राज्यदूमा (संसद्) बुलाई जाय, जिसके लिये हरएक बोलोस्त (पर्गना) के सम्पत्तिवाले चुनकर एक बोलोस्त-दूमा बनायें, फिर बोलोस्त-दूमाओंके सदस्य ओक्रुग (जिले) की दूमाके सदस्योंका चुनाव करे, फिर ओक्रुग-दूमाओके सदस्य गुबर्निया (प्रदेश) की दूमाओं-का निर्वाचन करें, और गुर्बनियाकी दूमाये राज्य-दूमाके सदस्योंको निर्वाचित करे। इस प्रकार चार जगहोंसे होकर चुनाव किया जाय। बिना राज्यदूमा और राज्यपरिषद्की स्वीकृतिके कोई विधान पास न किया जाय। शासन-प्रबंध मंत्रियोंके हाथमें रहे, जो दूमाके सामने जवाबदेह हों। इसमें शक नही, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके लिये स्पेरन्स्कीका कानूनी मसौदा प्रगतिशील था। लेकिन सत्ताधारी जमींदार इसे क्यों पसंद करने लगे? वह स्पेरेन्स्कीको "बदमाश", "क्रांतिकारी" और "क्रामवेल" कहकर बदनाम करते। उनके विरोधके कारण मजबूर हो अलेक्सान्द्रने मसौदेको अस्वीकार कर दिया, और उसकी जगह अपने नियुक्त किये सदस्योंकी एक राज्य-परिषद् १८१० ई०में स्थापित की। राज्यपरिषद् का काम जारको केवल सलाह देनाभर था। यह राज्यपरिषद् १८१० ई० से १९०६ ई० तक बनी रही।

मंत्रियोंकी संख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी—पुलिस, संचार और राज्य-नियंत्रण के तीन और मत्रालय स्थापित किये गये। राजुलों और जमींदारोंने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमींदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमें माग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोंकी जगह "पचास अच्छे राज्यपालों" को नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके बड़े युद्धोंके भीतरसे रूसको गुजरना पड़ा।

नेपोलियनके पतनके बाद जार समझता था—युरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्चेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्चेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा :—

वह सारे रूसको अपनी एड़ीके नीचे पीस रहा है,
ढाचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।
जारका राज्यपाल और मुद्राधर स्वामी,
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,
बदला लेनेके लिये, घृणाके लिये भरा,
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,
कौन है यह "सच्चा अनतिशियोक्तिपूर्ण, वीर" ?
एक सिपाही, नही वह तो उसे छू भी नही गया।

उसने सैनिक बस्तियां बसाई थी। किसानोंको जबर्दस्ती इन बस्तियोंमें रहकर जन्मजात सिपाही-का काम करना पड़ता था। रूसके पश्चिमी सीमांतपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोंकी बस्तियां बसी थी। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नही करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्चेयेफने इन विद्रोहोंको बड़ी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोंको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया—"हर हालतमें सैनिक बस्तियां मौजूद रहेंगी, चाहे इसके लिये हमे पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीतर ५० मीलसे ऊपर) लाशोंसे भी ढांक देना पडे।"

काकेशस-विजय—१८०१ ई०में पूर्वी गुर्जीको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममें एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०मे अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओंको जीतकर रूसमे मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०मे त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढ़ाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पड़ा। १८०५ ई० के अन्तमे उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आधार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मांगी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नहीं सका, और १८०६ ई० की शरद्में वह रूसका अग बन गया। इसके बाद उसी समय पड़ोसी कूबाके खानको भी रूसियोंने जीता। रूसियोंने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योंका दो प्रदेश—एलिजाबेतापोल और बाकू—बना दिया। जारके रास्तेमे ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इंगलैंड और फ्रांस उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०मे युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अन्तमें। यह युद्ध कई सालों तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हारें खाई। ईरानने अंतमें दागिस्तान और गुर्जीको रूसके हाथमें देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमे सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथकी लड़ाई मई १८१२ ई० में बुखारेस्तकी संधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये है। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरसे अपने दावेको हटा लिया, जो रूसकी कुतैसी गुबर्निया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०मे खतम हुआ, जिसमे इंगलैंडने भी तत्परता दिखलाई, क्योंकि वह चाहता था, कि रूस इधरसे मुक्त होकर दोनोंके दुश्मन

नेपोलियनके खिलाफ अपनी सारी शक्ति लगाये। १८१३ ई० की गुलिस्तान-सधि के अनुसार आजकल-के रूसी आजुर्बाइजानको ईरानने सदाके लिये जारके हाथमें दे दिया।

वोल्गाके लोग—वोल्गाके बाश्किर, चुवाश, मोर्दवी, तारतार आदि जातियां लड़ाकू स्वभाव-की थीं, इसलिये उन्होंने आसानीसे रूसी जूयेको अपने कंधेपर नही रक्खा। रूसियोंने उनके भीतर अपने शासनको दृढ़ करनेके लिये कई तरीके इस्तेमाल किये। इन इलाकोंकी उर्बर भूमिको रूसी जमीदार अपने हाथमें करके उनपर अपना रोब कायम करते, कहीं-कही रूसी किसानोंको भी ले जाकर उनके भीतर बसाते, जो कि किसानीके साथ-साथ सैनिकका भी काम देते। इसके अतिरिक्त ईसाई पादरियों-को जबर्दस्ती ईसाई बनानेकी भी छूट थी। नये बने ईसाइयोंको काफी प्रलोभन भी दिया जाता था। कितनी ही जगहोंपर प्रत्येक नवईसाईको एक सलेब, एक रूबल और एक सफेद कमीज दी जाती थी। तारतारों और दूसरोंके सरदारों और सुल्तानोंको ईसाई-धर्म न स्वीकार करनेपर कितनी ही बार अपने असामियोंसे वंचित कर दिया जाता था। इनके अतिरिक्त निम्न-वोल्गाके किनारे ले जाकर जर्मन किसानोंको बसा दिया गया। रूसी जार ऊपरसे रूसी थे, नही तो उनकी सारी मनोवृत्ति जर्मन थी, इसीलिये जर्मन शिक्षितों, सैनिकों और दरबारियोंके प्रति ही नही, बल्कि साधारण जर्मनोंके प्रति भी उनका विशेष पक्षपात था। १८ वी सदीके उत्तरार्धमे वोल्गाके दोनों किनारोंपर सरातोफसे और दक्षिण तक जगह-जगह जर्मन प्रवासियोंके गाव बसने लगे थे। १७६३ ई०मे एकातेरिना II ने विशेष राजघोषणा निकालकर बाहरसे रूसमें लोगोंको आनेका निमंत्रण दिया था, जिसके अनुसार बीस हजारसे अधिक विदेशी—अधिकांश जर्मन आकर वोल्गाके किनारे बस गये। इन प्रवासियोंको प्रति परिवार तीस देसियातिन (अस्सी एकड़) जमीन तथा कुछ नकद ऋण भी दिया जाता था। कजाकों और कल्मक घुमन्तुओंको रोकनेके लिये उक्रे-इनसे लाकर बहुतसे कसाकोंको वोल्गाके पूर्वमे बसा दिया गया था। इस प्रकार हम देख रहे है, कि वोल्गा और उसके पूर्वकी एसियाई जातियोंपर अपने शासनको मजबूत करनेके लिये जारशाहीने रूसी ही नही, युरोपके दूसरे देशोंके साधारण लोगोंको भी लाकर बसाना जरूरी समझा। इसपर भी बाशकिर, तारतार, चुवाश आदि जातियां हथियार रखनेके लिये जल्दी तैयार नहीं हुई।

साइबेरियाके लोगोंको जमीदारी या अर्ध-दासता प्रथा क्या है, इसका पता नही था। उनके पड़ोसी कजाक और दूसरी जातियां मौका पाकर उनके आदमियोंको पकड़कर दास बनाकर बेच देती थीं। रूसियोंने उनके भीतर भी पहुचकर अपने शोषणके नये तरीकेको जारी किया। १८१२ ई० से स्पेरेन्स्की जारके मनसे उतर गया था, लेकिन १८१९ ई०मे जारने उसे साइबेरियाका महाराज्यपाल बनाकर भेजा। स्पेरन्स्कीने वहां जाकर कुछ सुधार किये, लेकिन इसी समय साइबेरियाके लोगोंको जबर्दस्ती ईसाई बनानेका काम भी आरम्भ हुआ, जिसमें मिशनरियोंने लोभ, धमकी हर तरहसे काम लिया।

भौगोलिक अभियान—नेपोलियनके युद्धोंमे सम्मिलित होकर रूस और बातोंमे भी दूसरे देशोंसे क्यों पीछे रहने लगा? अब उसने भी अपने भौगोलिक अभियान भेजने शुरू किये। १८०३-६ ई० में आदम क्रूजेन्स्तने जहाज द्वारा पृथिवी-प्रदक्षिणा की। उस समय रूस अपने समूरी छालोंका व्यापार चीनके साथ स्थलमार्गसे क्याखता होकर करता था। क्रूजेन्स्तने सोचा, जलमार्गसे इसे और सस्तेमें किया जा सकता है; इसके लिय १८०३ ई के ग्रीष्ममें उसने एक सामुद्रिक अभियानकी योजना बनाई और वह अतलान्तिक समुद्र पार हो दक्षिणी अमेरिकाका चक्कर काटते प्रशान्त महासागरमें पहुंचा। फिर काम्चत्का और जापानके तटसे वह एसिया और अफ्रीकाके बाहर-बाहर होते अतला-न्तिकमें लौटा। इस अभियानने सखालिन, काम्चत्का, कूरिल और एलूतियान द्वीपोंके किनारोंकी खोज-पड़ताल की, और उत्तरी अमेरिकाके उत्तर-पश्चिमी किनारेको भी देखा-भाला। अपनी पुस्तकमें क्रूजेन्स्तने इस यात्रा का वर्णन किया। १८०९-११ ई० में एक दूसरे अभियानने हेदेनस्त्रोमके नेतृत्वमें ध्रुवीय समुद्र के बीचमें नवसिबेरीय द्वीपोंकी जांच-पड़ताल की। १८१० ई० में इसी अभियानके एक सदस्य सपिरकोफने इन द्वीपोंके सबसे उत्तरवाले द्वीपका पता लगाया, और यह भी दावा किया, कि वहां स्थलमार्ग है, जिसे सोवियतकालीन अभियानोंने ग़लत बतलाया। १८१५-१८ ई० में "रूरिक"

जहाजने काम्चत्का, चुकोतस्क और बेरिंग जलडमरूमध्यके बारेमे विशेष खोज-पड़ताल की। १८२१-२४ ई०मे प्रसिद्ध रूसी नाविक लित्केने कम्चत्का और चुकोत्स्कका पहला नक्शा बनाया। १८२०-२४ ई०में रेगलके नेतृत्वमें एक अभियान गया, जिसने साइबेरियाके उत्तरी तटकी लेनासे बेरिंग जलडमरूमध्य तक जांच-पड़ताल की।

दिसम्बरी-विद्रोह (१८२६ ई०)—नेपोलियनकी पराजयके बाद जारका प्रभुत्व और प्रभाव बहुत बढ़ गया। जारने यद्यपि फ्रेंच-क्रांतिके रूपमे ऊपर आनेवाली नई शक्तियोंको दबानेकी जिम्मे-वारी अपने ऊपर ले रक्खी थी, लेकिन वह विचारोंको कैसे रोक सकता था? अब रूसमे कल-कारखाने भी खुलने लगे थे। १८०४ ई० मे जहां रूस मे २४२७ कारखाने और ९५००० मजदूर थे, वहा १८२५ ई० मे ५२६१ कारखाने और २११ हजार मजदूर हो गये थे। पुराने हस्तशिल्प और कुटीरशिल्पकी जगह अब कारखानोंकी चीजे बाजारोंमे आ रही थी। उधर १८ वी सदीके मध्यसे ही रूसी कुलीन घरानोंमें फ्रेंच भाषा और साहित्यका जोर हो चला था, और फ्रेंच साहित्यके साथ फ्रेंच-क्रातिके विचार देनेवाले साहित्यिकोंकी कृतियोंका भी प्रचार हो रहा था। जार साधारण रूसी जनताका ही देवता नहीं था, बल्कि उसके सामने राजुलों और अमीरोंको भी घुटने टेककर दडवत् करनी पड़ती थी। शिक्षित अमीर तरुण जब फ्रेंच प्रगतिशील साहित्यके प्रकाशमें देखते, तो उन्हें यह असह्य मालूम होता। उनमेंसे कितने ही पश्चिमके देशोंको घूमने जाते, और वहांके जीवनके सम्पर्कमें आते, जिससे उन्हे रूसकी पुरानी जारशाही बुरी लगती। फ्रेंच-क्रातिने फ्रांसमें ही एक नये भावको पैदा नही किया, बल्कि उससे बल्कान, इताली और स्पेन सब जगह जातीय स्वतत्रताकी लहर फैली। दिसम्बरी विद्रो-हियोंके नेता पेस्तेलने लिखा था—"युरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक वही एक बात घटित हो रही है; पोर्तगालसे रूसतक सभी देशोंमे—जिसके अपवाद इंगलैड या तुर्की भी नही है। सुधारकी शक्तियां, कालकी मागे चारों ओर आदमीके दिमागको उत्तेजित कर रही है।" चूंकि शिक्षाका प्रसार अभी अमीरों और कुलीनोंमें ही था, इसलिये नये विचारोंके वाहक भी वही थे। इन्ही क्रातिकारी कुलीनोंने रूसमे परिवर्तन लानेके लिये गुप्त राजनीतिक समितियां सगठित की। ऐसी पहली समिति १८१६ ई० मे स्थापित की गई, जिसका नाम था "पितृभूमिके सच्चे और भक्त पुत्रोंकी सभा", अथवा "मुक्ति-सघ"। कर्नल अलेक्सान्द्र मुरावयोफ इस समितिका संस्थापक था। इसके बीस और सदस्य थे। इसका उद्देश्य था—किसानों को अर्ध-दासतासे मुक्त करना और रूसमे वैधानिक राजतंत्रकी स्थापना। इसके जल्दी ही दो दल हो गये, जिनमे एक दल नरम था और दूसरा गरम। गरम दलवालोंका नेता कर्नल पावल इवान-पुत्र पेस्तेल (१७९३–१८२६ ई०) था। दो साल बाद (१८१८-२१ ई०) "समृद्धि-सघ" के नामसे एक और सभा स्थापित हुई, जिसकी कितनी ही शाखायें जगह-जगह खोली गई। इनमें सबसे अधिक क्रातिकारी दक्षिणी शाखा थी, जिसे कर्नल पेस्तेलने उक्रइनके तुलचिन नगरमे सगठित किया था। समृद्धि-संघने पेस्तेलके प्रभावमे आकर अपनेको गणराज्यके पक्षमे घोषित किया। मास्कोमे जनवरी १८२१ ई० मे संघका सम्मेलन हुआ, जिसमे नरमदली सदस्योंने डरकर संघको बंद कर देनेकी घोषणा की, लेकिन पेस्तेलने इसे नही स्वीकार किया और उसने "दक्षिणी सम्मिलनी" (१८२१-२५ ई०) के नामसे एक नया सगठन स्थापित किया, जिसमे पेस्तेल, दाविदोफ आदि कई प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। पेस्तेल सुशिक्षित तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। समकालीन महाकवि पुश्किनने उसके बारेमे लिखा था—"पेस्तेल पूरे अर्थोंमे चतुर पुरुष है। जहां तक मै जानता हूं, वह सबसे मौलिक विचारोका आदमी है।" पेस्तेल १८१२ ई०मे नेपोलियनकी सेनासे लड़ते बोरोदिनोके युद्ध-क्षेत्रमें घायल हुआ था। १८१३-१५ ई०के विदेशी अभियान मे भी पेस्तेल रूसी सेनाके साथ था। वोल्तेर, दिदेरो, रूसो जैसे बहुत-से युरोपीय विचारकोंके ग्रंथोंका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। पेस्तेलने रूसके वैधानिक सुधारका एक प्रोग्राम "रुस्कया प्राव्दा" (रूसी सत्य अधिकार) के नामसे बनाया था, जिसके अनुसार सशस्त्र क्रांति द्वारा रूसका एक अखड गणराज्य कायम करना था। उसका प्रस्ताव था: राजवंशके सभी आदमियोंको मार डाला जाय, इसके बाद एक कामचालू सरकार घोषित की जाय। शासनके लिये उसने तीन उच्च संस्थाओंका निर्माण होना आवश्यक समझा था: विधान-संस्था—नरोदनये वेचे (लोकसभा), प्रशासन-संस्था—देर्झावनया दूमा

(राज्यदूमा) और निरीक्षक संस्था—वेर्खोव्नी सबोर (उच्चतम सभा)। वोटका अधिकार सम्पत्ति और शिक्षा दोनोंपर निर्भर हैं। सभी नागरिकोंको समान अधिकार और समान स्वतन्त्रताको देते हुये समाजके भीतरके विभाजनको बंद किया जाये। "रुस्कया प्राव्दा" ने घोषित किया था, कि जमीदारोंको बिना क्षति-पूर्तिके दिये किसानों और उनकी जमीनको मुक्त कर दिया जाय। पेस्तेलने जो बात १८१२ ई० मे घोषित की थी, वहा तक अभी १९५५ ई० के भारतीय भूमिसुधारक भी जानेके लिये तैयार नही है।

१८२२ ई० मे पीतरबुर्गमे भी एक क्रान्तिकारी सस्था "उत्तरी सम्मिलनी" स्थापित की गई, जो कि १८२५ ई० तक मौजूद रही। इस सम्मिलनीका मुखिया निकिता मुरावयोफ (१७९८-१८२६ ई०) था, जो कि जारकी गारदका एक अफसर था। १८१२ ई० मे तरुण मुरावयोफ घरसे भागकर सेनामे भरती हो रूसी सेनाके साथ दूसरे देशोंमे लड़ाई लडता रहा। इसने नेपोलियनके खिलाफ लडाइयोंमे भाग लिया था। पेरिसमे रहते उसने निर्वाचन होते देखा। वही उसने क्रांतिकारी पुस्तकोंका भी एक सग्रह किया। देश लौटनेपर वह क्रातिके सगठनमे जुट गया। "उत्तरी सम्मिलनी" के सदस्योंमे कवि कोन्द्राती फ्योदोर-पुत्र रिलेयेफ (१७९५-१८२६ ई०) भी था। १८२३ ई०मे "उत्तर तारा" नामसे एक पत्रिका निकाली, जिसमे उसने जारके कृपापात्र अरक्चेयेफके अत्याचारोंकी खूब खबर ली। जल्दी ही वह और उसका पत्र जनप्रिय हो गया। १८२३ ई० में वह "उत्तरी सम्मिलनी"मे शामिल हो १४ दिसम्बर १८२५ ई० के विद्रोहकी तैयारीमें पूरी तौरसे जुट पडा। वह कहता था—"मै कवि नही, बल्कि एक नागरिक हू।"

नवम्बर १८२५ ई० मे जार अलेक्सान्द्र I एकाएक तगन्रकमे मर गया। इस प्रकार दिसम्बरी विद्रोहकी तैयारी हो जानेपर भी वह अलेक्सान्द्रके समय नही हो सका। अलेक्सान्द्रका कोई पुत्र नही था, इसलिये उसके भाई कन्स्तन्तिनको सिहासन मिलना चाहिये था, लेकिन उसने अलेक्सान्द्रके जीवन-काल ही में अपने अधिकारको त्याग दिया था, इसलिये जारके तीसरे भाई निकोलाइ I को गद्दी मिली।

चीनसे संपर्क—अलेक्सान्द्रको युरोपका ही नही बल्कि पूर्वमे प्रशान्त महासागर तक फैले अपने साम्राज्यका भी ख्याल था। उसने गोलोउकिनके नेतृत्वमे १८०५ ई०मे एक बड़ा दूतमडल पेकिङ् भेजा। सीमांतपर चीनियों ने बहाना बनाकर देर तक दूतमंडलको रोके रक्खा। आगे बढ़नेके पहले रूसी राजदूतसे माग पेश की, कि चीन-सम्राट्के चित्रके सामने साष्टांग दंडवत् (कौतौ) करो। राजदूतने यह कहकर इसे माननेसे इन्कार कर दिया, कि हाल हीमें अंग्रेज राजदूतको कौतौ (साष्टाग दडवत्) करनेसे मुक्त कर दिया गया है। इस बहानेसे उन्होंने रूसी दूतमडलको आगे बढ़ने नही दिया और उसे वहीसे लौट जाना पड़ा। अगले साल १८०६ ई० मे क्रुजेन्स्तर्नकी अधीनतामें दो रूसी जहाजोंने कान्तन पहुच अपने मालको वहा उतारा। इसकी खबर पाकर राजधानीसे हुक्म आया, कि रूसियोंको स्थलमार्गसे ही व्यापार करनेका अधिकार है, उन्हे सामुद्रिक मार्गसे व्यापार नही करने दिया जा सकता, इसलिये उनके जहाजोंको रोक लिया जाये। लेकिन पेकिङकी आज्ञाके आनेसे पहले ही रूसी जहाज वहासे विदा हो चुके थे।

रूसके एसियाके विस्तारमे येरमक (१५७९-८४) और खबारोफ (१६५४) दो प्रमुख व्यक्तियोंके बारेमे हम बतला चुके है। १९ वी सदीमे रूसके प्रभावको साइबेरियामे दृढ़ करनेका काम मुरावेफने किया।

२. निकोलाइ I, प्रावल I-पुत्र (१८२५–५५ ई०)

एंगल्सने "रूसी जारशाहीकी वैदेशिक नीति" पर लिखते हुये १८९० ई० में इस जारके बारेमे कहा था—"एक क्षुद्र मिथ्याभिमानी आदमी था, जिसका दृष्टिक्षेत्र एक जमादार (कम्पनीके अफसर) से अधिक दूर तक नहीं जाता था। वह ऐसा आदमी था, जो कि क्रूरताको शक्ति, हठधर्मीको मनोबल समझता था। सबसे अधिक जो चीज उसको पसंद थी, वह था शक्तिका प्रदर्शन।" निकोलाइ प्रुशियाके सैनिकवादका सभी जारोंसे अधिक पक्षपाती था। उसकी बीबी चार्लोतका बाप

प्रुशियाका राजा फ्रेद्रिक विल्हेल्म III था, जिसका भी उसे और उसकी वीरताको बहुत अभिमान था। सिपाहियोंको निष्ठुरतापूर्वक कवायद-परेड कराके कठपुतली बना देनेको वह सैनिक विज्ञानका बहुत भारी कौशल मानता था। उस क्रूर, मदबुद्धि और अभिमानी आदमीने कभी पुस्तक नही पढी। उसने अरक्चेयेफकी शासन-व्यवस्थाको पूरी तौरसे कायम रक्खा। लेकिन, निकोलाइके लिये सर मुडाते ही ओले पड़े। उसे बापके समयसे भीतर ही भीतर पकती क्रांतिका मुकाबिला करना पड़ा। वह इसके बारेमे कहता था—"षड्यंत्रियों और षड्यत्री नेताओं के विरुद्ध (मेरा) युद्ध अत्यन्त क्रूर और निर्दयता-पूर्ण होगा। मै उसके लिये कोई बात उठा नही रखूंगा। मेरा कर्तव्य है, कि रूस और युरोपको इसके बारेमें शिक्षा दू।"

उसने क्रांतिकारियोंको निर्मम होकर शिक्षा दी भी, जिसमे उसे इस बातका सुभीता था, कि क्रांतिकारी अभी नौसिखिये थे, अभी वह दृढतापूर्वक अपने कामपर डटे नही थे। क्रांतिकारियोंने २६ (१४) दिसम्बरको विद्रोह करनेका दिन निश्चित कर रक्खा था, जिस दिन कि नये जारके प्रति शपथ लेनी थी। उस दिन (२६ दिसम्बर १८२५) सबेरे दिसम्बरी अफसरों द्वारा सचालित रेजिमेट सीनेटके मैदानमे एकत्रित हुई, तीन हजारसे ऊपर विद्रोही सैनिक और नौसैनिक पीतर I के स्मारकके चारों और जमा हुये, लेकिन वह निष्क्रिय रहे, क्योंकि अभी विद्रोहके बारेमे क्रांतिके नेता अनिश्चित-से मालूम होते थे। अन्तिम क्षणमे क्रांतिका अधिनायक सेर्गेइ त्रूबेत्स्की मैदानमे नही आया और विद्रोही बिना नेताके रह गये, जिसके कारण उनका सगठित बल खतम हो गया। निकोलाइ I कायर तो था ही, पहले वह हिचकिचाता रहा, लेकिन जब उसको विद्रोहियोंकी अवस्थाका पता लगा, तो अपने विश्वास-पात्र सैनिकों और तोपचियोंको बारह बजे मैदानमे भेजा। तमाशा देखनेके लिये कितने ही मजदूर, कारीगर और नगरके गरीब मैदानमे जमा हो गये थे। उस समय रूसका सबसे बड़ा गिर्जा ईसाइकी सबोर बन रहा था। मजदूरोंमे भी इतना जोश आ गया था, कि उन्होंने जारके सैनिकोंको अपने पास पड़े लकड़ीके कुदों और डडोंसे मारा। लेकिन मालूम हो गया, विद्रोही आक्रमण करनेके लिये तैयार नहीं है। किसी भी विद्रोहमे आक्रमणकी नीति सबसे लाभदायक होती है, क्योंकि उसमे थोड़ेसे भी आदमी बहुसंख्यक शत्रुको घबराहटमे डाल सकते है। जारके हुक्मपर सवारोंने आक्रमण किया। विद्रोही सैनिकोंने गोलियोंकी वर्षा करके उन्हे भगा दिया। गोलियोंके अतिरिक्त समझा-बुझाकर भी शांत करनेकी कोशिश की गई। आखिर किसी भी निरकुश शासनकी आधारशिला सैनिक अफसर है। जब उनमें विद्रोहकी भावना पैदा हो गई, तो भविष्यके लिये क्या विश्वास किया जा सकता है? ईसाई संघराजने समझानेकी कोशिश की, लेकिन विद्रोही सैनिक उसकी बातको माननेके लिये तैयार नहीं थे। फिर पीतरबुर्गके महाराज्यपाल मिलोरदोजिचने जाकर समझानेका प्रयत्न किया, जिसमे उसे विद्रोही अफसर कखोस्कोने मरणासन्न घायल कर दिया। जारको आता देख उसके ऊपर भी सैनिकोंने बन्दूक दागी। जार बहुत घबरा गया और उसको डर लगा, कि देर करनेमे शायद नगरके गरीब भी इस झगड़ेमें शामिल होकर लूट-मार करने लगे, इसलिये उसने तोप छोड़नेकी आज्ञा दी। सीनेट मैदान, नेवा नदीके बांध और सड़कोंमे चारों ओर लाशे बिछ गई। नेवा बर्फ बनी हुई थी। रातके वक्त बर्फमे छेद करके बहुतसे हत और आहत लोगोंको उसके भीतर डालकर समुद्रकी ओर बहा दिया गया। विद्रोही नेताओंको पकड़ लिया गया।

इस प्रकार पीतरबुर्गमे दिसम्बर की क्रांतिको दबा दिया गया। उक्रइनमे चेर्निगोफकी रेजिमेंटने भी १० जनवरी १८२६ ई० (पुराने पचांगके अनुसार २९ दिसम्बर १८२५ ई०) को विद्रोह किया, लेकिन उसे भी दबा दिया गया। पेस्तेलको किसी विश्वासघातीने पकड़ा दिया था। सेर्गेइ मुराव्योफ-अपोस्तोलने वहां विद्रोहका नेतृत्व किया, लेकिन चेर्निगोफने भी आक्रमण न करनेकी गलती की, जिससे वह जारशाहीको बहुत नुकसान नही पहुंचा सके। "संयुक्त स्लाव सम्मिलनी" के कुछ दृढ़ सदस्य चाहते थे, कि एक विद्रोही रेजिमेट भेजकर कियेफ पर अधिकार कर लिया जाय। इसमें सुभीता भी था, क्योंकि कियेफमें छावनीकी पलटनमे विद्रोहसे सहानुभूति रखनेवाले काफी आदमी थे, लेकिन यहां भी नेताओंने ढिलमिलयकीनीका प्रमाण दिया। निकोलाइ I ने विद्रोहको दबाकर विद्रोहियोंके प्रति क्रूरतापूर्वक बदला लेनेका काम शुरू किया।

२५ (१३) जुलाई १८२६ ई०मे पांच विद्रोही नेताओं--पेस्तेल, कवि रिलेयेफ, काखोवस्की, मुराव्योफ-अपोस्तोल और बेस्तुजेफ-र्‌यूमिनको फासी दे दी गई। फासी देते वक्त रिलेयेफ, कखोवस्की और मुराव्योफ-अपोस्तोलके गलेकी रस्सी टूट गई, जिसपर उन्हें दुबारा फासी दी गई। बहुतसे विद्रोहियोंको कड़ी-कडी सजाये दी गई, और कितनोंको साइबेरियामे आजीवन कालापानीका दंड देकर भेज दिया गया। सिपाहियोंको कितनी यातनाये दी गई, इसका उदाहरण अनोइचेंको था, जिसे अदालतने बारह हजार बेत लगानेकी सजा दी और बेत खाते-खाते वह मर गया।

दिसम्बरका विद्रोह उच्चवर्ग--अमीरों--का विद्रोह था, उसमे साधारण जनताको शामिल करनेकी कोशिश नही की गई, और न ऐसा कोई तरीका इख्तियार किया गया, जिससे जनसाधारण उस ओर खिंचता--भारतमे १८५७ ई०के विद्रोहमे भी कुछ ऐसाही हुआ था। इसीलिये विद्रोहके दबते देर नहीं हुई। लेनिनने उसके बारेमें लिखा था--"क्रातिकारियोंका घेरा बहुत छोटा था। जनसाधारणसे उनका कोई संबंध नही था। लेकिन उनका काम व्यर्थ नही गया। दिसम्बरियोंकी असफलतासे पीछे रूसके क्रांतिकारियोंने शिक्षा ली। उसने प्रगतिशील मस्तिष्कोंमे गर्मी पैदा की, जिसने हर क्षेत्रमें क्रांतिके लिये जगह तैयार की।"

निकोलाइ I को राजकाज सभालते ही जिस तरहके खतरेका मुकाबिला करना पड़ा। वह दिलोदिमागसे कमजोर आदमी था। इसके कारण उसको हर जगह प्राणोंका भय मालूम होने लगा। उसने पुलिस-राज्य कायम करते हुये "तृतीय भाग" के नामसे एक राजनीतिक गुप्त पुलिसका संगठन किया। जैसे ही किसी सैनिक या असैनिक अफसर अथवा सरकारी नौकरपर सदेह होता, उसे नौकरीसे निकाल बाहर किया जाता। उसे शिक्षण-संस्थाओंसे भी भय था, क्योंकि सभी विद्रोही नेता नवशिक्षित थे। इसीलिये शिक्षण-सस्थाओंपर भी पुलिसकी निगाह रहने लगी।

पूंजीवादी विकास--चाहे इंगलैड और फ्रांससे पीछे ही क्यों न हो, किन्तु पूजीवादी उत्पादनके साधनों--कल-कारखानों--के विस्तारको किये बिना रूस सैनिक तौरसे कैसे सबल रह सकता था? पूजीवादी नफेको देखकर कितने ही रूसी इस तरफ झुके। इनमे काफी सख्या उनकी थी, जिन्होंने छोटे-छोटे व्यापारों या दस्तकारियों द्वारा पैसा जमा किया था। पूंजी कम रहनेके कारण अपने कारखानेको बढ़ाने और पूजी जमा करनेके लिये काम भी वह मजूरोंके भीषण शोषण द्वारा करना चाहते थे। निकोल्स्कया फैक्ट्रीका स्वामी मोरोजोफ पहिले अर्धदास किसान था, जिसने १८२० ई० मे जमीदारको क्षति-पूर्ति देकर मुक्ति प्राप्त की थी। फिर वह पशुपाल (चरवाहा), बादमें कोचमैन (कोचवान), फिर मिलमजदूर और दर्जीका काम करता रहा। बादमे उसने दूकान खोली और अन्तमे अपनी फैक्ट्री स्थापित की। १९ वीं शताब्दीके और भी कितने ही रूसी पूजीपतियोंका यही इतिहास था। १९ वीं शताब्दी के पूर्वार्धमें पूजीवादी ढंगके धातु-उद्योगका आरम्भ हुआ। यद्यपि उसकी प्रगति मद रही। उक्रइनमे भी लोह-धून मिली, और वहां भी लोहा बनानेका काम शुरू हुआ था, पर मुख्य लौहकेंद्र एसिया सीमापर उराल रहा, जहांपर मजदूर बहुत सस्ते मिलते थे। १८३० ई०के बाद साइबेरियाकी सोनेकी खानोंमें--पहले पूर्वी साइबेरिया, येनिसेइ-उपत्यका और फिर प्रसिद्ध लेनाके सुवर्ण-क्षेत्रमें--काम शुरू हुआ। १८१५ ई०में रूसकी ४१८९ फैक्ट्रियों और मिलोंमें १७३ हजार मजदूर काम कर रहे थे, जब कि १८५८ ई०में क्रमशः उनकी संख्या १२२५९ और ५५९ हजार हो गई। १८४० ई०के बाद ही वाष्पचालित मशीनोंका उपयोग होने लगा, जिन्हें रूसी उद्योगपति इंगलैड और दूसरे देशोंसे मंगाते थे। १८३५ ई० मे इस कामके लिये जितनी मशीनें मंगाई गई थीं, पचीस साल बाद १८६० ई०मे वह उनसे पच्चीस गुना अधिक मंगाई जाने लगी। अभी तक किसानोंकी अर्धदासता बंद करनेका प्रयत्न आदर्शवादी भावुकतासे प्रेरित होकर किया जाता था, लेकिन अब अर्धदासताका सबसे बड़ा शत्रु औद्योगिक पूंजीवाद आ गया था, जिसको गैरजिम्मेवार अर्धदास मजूरों की नहीं, बल्कि मजूरीके लिये अपनेको बेचनेवाले कुशल कारीगरोंकी जरूरत थी। इसलिये अर्धदासताके विरुद्ध कानून पास करनेसे बहुत पहले ही अर्धदास किसान कारखानोंमें भाग-भागकर मजदूर बनते जा रहे थे।

यातायातका सुभीता पूजीवादके लिये सबसे आवश्यक चीज है, क्योंकि तभी माल एक जगहसे दूसरी जगह सस्तेमें भेजा जा सकता है। अंग्रेज नहीं, बल्कि एक रूसीने सबसे पहले रेल-इंजन बनाया

था, लेकिन सामन्तशाही रूसमे उसकी कदर नही हुई। इंगलैंडने पहले उससे फायदा उठाया। उसने १८२५ ई० में अपनी पहली रेल बनाई, जिसके बीस वर्ष बाद कलकत्तासे पश्चिमकी ओर रेलकी पटरियां ही नही बिछी, बल्कि १८४५ ई० मे भारतमे रेलोंके कामके लिये ईस्ट इंडिया रेलवे कम्पनीकी स्थापना की गई, और १५ अगस्त १८५४ ई० में हवड़ा और हुगलीके बीच रेलका यातायात शुरू हो गया। रूसमे पीतरबुर्ग और जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) के बीच पहली रेलवे लाइन १८३७ ई० मे बनी, जिसके लिये सारा सामान इंगलैंड से आया था। सबसे पहली महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन पीतरबुर्ग और मास्कोकी थी, जो नौ वर्षमे बनकर १८५१ ई० में यात्राके लिये खोल दी गई। तब भी रूसमे रेलोंके प्रसारकी गति बहुत मद ही रही। १८५५ ई० में रूसी रेले फ्रांसकी रेलवे लाइनों का पचमांश और जर्मन रेलोंका षष्ठांश ही थी। अब भापके इंजन और भापसे चलनेवाले जहाजों के महत्त्वको उपेक्षित नही किया जा सकता था, इसलिये रूसमे वाष्पचालित जहाजों के बनानेके कारखाने भी स्थापित हुये। सैनिक हथियार और शक्ति तो लोहेके ऊपर निर्भर करती है, इसलिये उसके उत्पादनकी तरफ जारशाहीका ध्यान जाना जरूरी था। १८ वी शताब्दीके अन्तमें रूस और इंगलैंड दोनों ही अस्सी लाख पूद (१पूद=३६ पौंड=१८ सेर) लोहा पैदा करते थे, लेकिन १९वीं सदीके पूर्वार्धमें जब कि रूसने अपनी लोहेकी उपजको दुगुना ही कर पाया था, इंगलैंडमें १८५९ ई०में कच्चे लोहेकी उपज तीस गुना (२३४० लाख पूद) हो गई थी।

निकोलाइ I के शासनकालमें विद्रोहोंकी कमी नही रही। पोलोंने रूसी शासनके विरुद्ध १८३०-३१ ई०मे विद्रोह किया था। वहांसे विद्रोहकी लहर बेलोरूसिया, उक्रइन और लिथुवानियामे फैली। उक्रइनमे इस विद्रोहने किसानोंके विद्रोहका रूप लिया। १८२६-३४ ई०मे १४५ विद्रोह हुये थे, जब कि १८४५-५४ ई०में उनकी संख्या ३४८ हो गई। जारशाही अत्याचारोंके मारे कभी-कभी सारे किसान अपने गांवको छोडकर भाग जाते थे।

ईरान (१८२६-२८ ई०) और तुर्की-युद्ध (१८२७-२९ ई०)—रूसके खिलाफ ईरान और तुर्कीको उकसाना इगलैंड और फ्रांसकी नीति हो गई थी, और उधर जारशाही भी अपने राज्य-विस्तारके लिये इन देशोंकी ओर हाथ बढ़ा रही थी, इसलिये युद्ध होना स्वाभाविक ही था। १८२६ ई० की गर्मियोंमे रूसके काकेशसमें बढ़ावको देखकर ईराननने लडाई शुरू कर दी। ईरानी सेनाने आजुर्बाइजानको लेकर दागिस्तान और चेचनपर धावा किया, लेकिन १८२७ ई० के वसंतमें रूसी सेनाने ईरानियोंको हरा दिया। १८२८ ई० के जाडोंतक ईरानको नखचेवान और येरिवानके इलाकोंसे भी हाथ धोकर संधि करनी पड़ी। इसी समय रूस पश्चिमी काकेशसके लिये तुर्कीसे भी लड़ रहा था। निकोलाइ I तो कान्स्तन्तिनोपल और दरेदानियलपर भी अपना झंडा गाड़ना चाहता था। यद्यपि रूसके आक्रमणोंका वह फल नही हुआ, जो कि निकोलाइ चाहता था, तब भी १८२९ ई०की संधिके अनुसार कालासागरके सारे काकेशस-तटको रूसने ले लिया, और केवल बातू अब तुर्कीके पास रह गया।

शामिलका विद्रोह—काकेशसमें यद्यपि ईरान और तुर्कीको रूसियोंने दबा दिया, लेकिन वहांके वीर पहाड़ियोंने आसानीसे जारके शासनको नहीं स्वीकार किया। इमाम काजी मुल्लाने १८३२ ई०में ईसाइयोंके खिलाफ मुरीदवादके नामसे मशहूर एक सम्प्रदाय स्थापित किया। आरम्भमें यह एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसने काफिरोंके शासनके स्थापित होनेपर राजनीतिक रूप ले लिया। काजी मुल्लाने स्वयं अपने अनुयायियोंको लेकर रूसी सेनापर जहा-तहां आक्रमण किया। उसके मरनेपर उसका चेला शामिल नेता हुआ, जिसने १८३४ से १८५९ ई०के पच्चीस वर्षोंमें काकेशसमे जारशाही अफसरोंको नाकों चने चबवाये। शामिल बड़ा ही बहादुर और चतुर नेता था। उसने मुरीदोंका सगठन बहुत मजबूत किया। काकेशसकी दुर्गम पहाड़ियोंसे लाभ उठाकर वह रूसियोंके ऊपर आक्रमण करता रहा। पांच वर्षके संघर्षके बाद अगस्त १८३९ ई० मे दागिस्तानके अपने केंद्रको छोड़कर उसने चेचनके दुर्गम पहाड़ियोंका आश्रय लिया। काकेशसके बेग और खान पहले ही जारशाही-के गुलाम बन चुके थे, इसलिये शामिलने उनके खिलाफ भी लड़ाई जारी रखते साधारण पहाड़ियोंको अपनी ओर खींचा। १८५९ ई० मे दागिस्तानके गुनिब किलेमे शामिलने अन्तिम बार रूसियोंका मुका-

बिला किया। २५ अगस्त १८५९ ई०को रूसी सेनापतिने खबर भेजी—"गूनिब हाथमें आ गया, शामिल बंदी कर लिया गया।" शामिलको पकड़कर पीतरबुर्ग भेज दिया गया, जहांसे उसे ले जाकर कलुगामे बसा दिया गया। पीछे वह हजके लिये मदीना जा वही मरा। काकेशसके मुस्लिम-प्रधान इलाकोंमे जारशाहीको चैनसे शासन करनेका मौका नही मिल सकता था, इसलिये एक ओर जहां जारशाही अत्याचारके कारण वाशिंदे अपना गाव और देश छोड़कर भागते जाते थे, या उन्हे खास-खास जगहों से हटाया जाता था, तो दूसरी ओर रूसी किसानों और कसाकोंको ले जाकर उत्तरी काकेशसमे बसाया जाता था।

मध्य-एसियाकी रियासतें—आगे हम बतलायेगे, कि कैसे १८ वी शताब्दीके अन्तमे पश्चिमी मध्य-एसियामे खीवा, बुखारा और खोकन्दकी तीन रियासते कायम हो गई। इन्ही तीनों रियासतोंकी भूमि-पर आगे चलकर उज्बेक, ताजिक, किर्गिज और तुर्कमान गणराज्य बने। तुर्कमानोंकी भूमिको नादिर-शाहके समयसे ही ईरानके अधीन माना जाता था। तुर्कमान घुमन्तू समय-समयपर बुखारा, अफगानि-स्तान और ईरानके भीतर भी जाकर लूट-मार किया करते थे। ये तीनों रियासते भी आपसमे लड़ती रहती थीं। १९ वी शताब्दीके आरम्भमें खोकन्दका खान ज्यादा शक्तिशाली हो गया था, जब कि उसने ताशकन्द जैसे एक बड़े ही महत्त्वपूर्ण व्यापारिक और सैनिक केंद्रको अपने हाथमे कर लिया। ताशकन्दको ले लेनेके बाद कजाकों और किर्गिजोंकी बहुतसी भूमिको भी खोकन्दने ले लिया। खोकन्दियोंने इस भूमिमें जहां बहुतसे सैनिक महत्त्वके किले बनवाये, वहां लोगोंको पक्का मुसलमान बना अपनी ओर खींचनेके लिये भिन्न-भिन्न जगहोंपर कितने ही मदरसे भी स्थापित किये। अकमेचेत (श्वेत-मस्जिद), औलियाअता विशषेकर इसी समय महत्त्वपूर्ण नगर बने। १९ वीं सदीके दूसरे पादमें पहुचते-पहुंचते खोकन्द मध्य-एसियाका सबसे बड़ा राज्य हो गया। वह पश्चिमी चीन और पामीरसे निम्न सिर-दरिया तक फैला हुआ था।

खीवाने भी खोकन्दकी तरह कजाकों, तुर्कमानों और कराकल्पकोंकी भूमिपर अधिकार करके १९ वी सदीके आरम्भमे अपनी सीमाका काफी विस्तार कर लिया था। खोकन्द और खीवाके बीचमें बुखाराका खान था, जिसके हाथमे पहले तुर्किस्तान (निम्न और मध्य सिर-उपत्यका) था, लेकिन खोकन्दने उसे छीन लिया। बुखाराके नीचे रहनेवाले तुर्कमानोमेंसे कितनोंको खीवाने ले लिया था। इस प्रकार बुखारा उतना शक्तिशाली नही था, तो भी शताब्दियोंसे बुखारा इस्लामिक संस्कृतिका केंद्र चला आया था, और वहांकी दस्तकारी और शिल्पकी बडी धाक थी, जिसके द्वारा उसे व्यापारमे काफी नफा रहता था। इन रियासतोंके खान (राजा) और बड़े अमीर अधिकतर उज्बेक थे, उनके बाद मुल्लाओं और खोजों (संतों) का प्रभाव ज्यादा था।

कजाकोंके बारेमे लिखते हुये हम बतला चुके हैं, कि १९वी सदीके पूर्वार्धमे उनके लघु, मध्य और महा-ओर्दूके नामसे तीन ओर्दू थे। १८वीं सदीके पूर्वार्धमें ही लघु और मध्य-ओर्दूने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, और १८२० ई० के आसपास रूसी प्रवासी भी इनकी भूमिमें जगह-जगह बसने लगे थे। १८३५-३७ ई०मे ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल व० अ० पेरोव्स्कीने ओर्स्क और त्रोयत्स्कके बीचमे किलोंकी पंक्ति बना करके जंगल और चरागाहकी दस हजार वर्ग किलोमीतर बड़ी अच्छी भूमि कजाकोंसे छीन ली, जिसके बाद कजाकोंने विद्रोह किया, इसे हम पहले बतला चुके हैं।

१८४५ ई० मे दश्तेकजाकके गर्भमें जारशाहीने नई किलाबदियां तैयार कीं। कजाक लोग सुल्तान केनेसरी कासिमोफके नेतृत्वमे रूसी बस्तियोंपर आक्रमण करते आगे-पीछे हटते जा रहे थे। कासिमोफका पीछा करते रूसी सेना इली नदीकी ओर बढ़ी। अब रूसियोंको उनका रास्ता अल्ताई और त्यान्शानमें चीनी सीमाके पास ले जा रहा था। सबसे पहले रूसियोंका ध्यान खीवाकी ओर गया। यह मालूम ही है, कि खीवा (ख्वारेज्म) बहुत पुराने समयसे रूसके व्या-पारकी एक मुख्य शृंखला थी। खीवामें भी १९ वीं सदीके पूर्वार्धमें बड़ी अव्यवस्था थी, जिससे रूसियोंको आगे बढ़नेका बहाना और सुभीता मिल गया। महाराज्यपाल पेरोव्स्कीने एक छोटीसी सेनाको लेकर १८३९ ई०की शरद्में ओरेनबुर्गसे खीवाके विरुद्ध अभियान किया। इस-सेनामें कसाक, बाशकिर और कितने ही कजाक सवार भी थे। पंद्रह हजार ऊंटोंपर सेनाके लिये रसद चल रही थी। पहला

अभियान सफल नही हुआ। बर्फानी तूफान और सख्त सर्दीने बहुतसे घोड़ों और ऊंटोंको मार डाला, जिसपर पेरोव्स्कीको पीछे हटना पड़ा। इस असफलताके बाद पेरोव्स्कीने अपने इरादेको छोड़ा नही, बल्कि दस्तेकिर्गिजकी तरफसे बढ़नेका निश्चय किया। भूमिके बारेमें पता लगाया, पानीके लिये कूये तैयार किये, जगह-जगह किलें बनाये। इस तरह रास्तेको सुरक्षित करनेकी कोशिश की। सिर-दरियाके ऊपर अरारस्काका किला बनाकर वहां (अराल समुद्रके तटपर) रूसी किसानोंकी बस्तिया बसा दी गई। यही नहीं, बल्कि वाष्पचालित अग्निबोट भी अराल समुद्र और सिर-दरियाके भीतर चलने लगे। इस तरह ओरेनबुर्ग और अराल समुद्रके बीचके रास्तेको यातायातके लिये सुरक्षित कर दिया गया। इतनी तैयारीके बाद १८५३ ई०के वसंतमें पेरोव्स्की एक बड़ी सेनाके साथ सिर-दरियाके द्वारा ऊपरकी ओर बढ़ा, और खोकन्दकी राज्यसीमाके भीतर जाकर उसने अकमेचित किलेको घेर लिया। रूसियोंके सामने खोकन्दी कितने दिनो तक ठहरते ? अकमेचित पेरोव्स्कीके हाथमे आई। उसने सिर-दरियाके ऊपर पांच नये किले बनवाये। रूसियोने पिशपेक, तोकमक आदि कितने ही नगरोंको ले लिया। ये किले किर्गिजिस्तानकी चूइस्क-उपत्यकोमे थी, जिनके शासक यद्यपि खोकन्दी थे, लेकिन निवासी किर्गिज थे। इसी समय किर्गिजोको पश्चिमके नये स्वामियोसे वास्ता पड़ा। तो भी वह १८७० ई०से पहले पूरी तौरसे रूसियोंके अधीन नहीं हो पाये थे। उधर साइबेयिाकी तरफ बढ़ते हुये १८५४ ई०में रूसी वेर्नोयेके किलेको बनानेमे सफल हुये, जहापर पीछे वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) नगर की स्थापना हुई।

इतना कर लेनेके बाद १८५४ ई०मे अब फिर पेरोव्स्की खीवाके खिलाफ चला। खानको संधि के सिवा और कोई रास्ता नही दिखलाई पड़ा, और उसने रूसियोंके पास अपना दूत भेजकर जारकी अधीनता स्वीकार कर खीवामे व्यापार करनेकी रियायते प्रदान की। निकोलाइ I के शासनके अन्तिम वर्षोंतक कजाक और किर्गिजके दस्त-(स्तेपी) पूर्णतया रूसियोंके हाथमे हो गये, और सिर-दरियासे लेकर अल्ताइके उत्तरमे सेमीप्लातिन्स्क तक जगह-जगह रूसी किले बना दिये गये। खीवाका खान अब रूसके अधीन था तथा खोकन्द और बुखाराके खान अब खीवाका अनुसरण करनेके लिये प्रतीक्षा कर रहे थे।

निकोलाइ I के शासनकाल ही मे फर्वरी १८४८ ई०मे पेरिसमे क्रांति हुई। यद्यपि यह प्रथम क्राति जितनी सबल नही थी, लेकिन इसने जारके दिमागमे खलबली जरूर पैदा कर दी। निकोलाइ उस समय नाचमे था, जब कि उसे इसकी खबर मिली। वह गुस्सेमें पागल होकर अपने दरबारियोंसे बोल उठा—"भद्र पुरुषो, अपने-अपने घोड़ोंको कस लो, पेरिसमे क्रांति हो गई है।" पेरिसकी इस क्रांतिके समय ही वीना-आस्ट्रियामें भी क्राति हो गई। दूसरी जगहोंपर भी उसका प्रभाव पड़ रहा था। निकोलाइने इतालीके राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आन्दोलनको दबानेके लिये साठ लाख रूबल दिये। लेकिन निकोलाइको क्या पता था, कि उसी समय एक ऐसी सबल ज्वाला तैयार की जा रही है, जिसका शिकार सबसे पहले रूस और उसका पोता निकोलाइ II होनेवाला है ? पेरिसकी इसी क्रातिके समय मार्क्स अपने क्रांतिकारी कार्यक्षेत्रमे प्रविष्ट हो चुके थे। उन्होंने उस सिद्धान्त और उस सैनिक कौशलका भी पता लगा लिया था, जिसके द्वारा विश्वमे सहस्राब्दियोंसे चला आता मुट्ठीभर धनियोंका राज्य खतम होकर उनकी जगह सर्वहारोंके नेतृत्वमे बहुजनका शासन स्थापित होनेवाला था। कार्ल मार्क्सने पेरिसकी इस द्वितीय क्रातिके एक साल पहले १८४७ ई० मे प्रथम कम्युनिस्ट पार्टीको कम्युनिस्ट लीगके नाम से संगठित किया था। उसीके लिये मार्क्स और उनके साथी एंगल्सने "कम्युनिस्ट पार्टीकी घोषणा" तैयार करके १८४८ ई० मे प्रकाशित की थी। निकोलाइको दुनियाके सबसे अधिक शक्तिशाली क्रांतिके हथियार इस "घोषणाके" बलका पता नही था। वह नही समझता था, कि उसके दरबारी घोड़ोंको कितना ही कसे, वह घोषणाके पथको रोक नही सकेंगे। पेरिसकी द्वितीय क्रांतिके बाद लायोस कोसुतके नेतृत्वमे मगयार (हुंगरी) की जनताने आस्ट्रियाके सामन्ती शासनके विरुद्ध विद्रोह किया। निकोलाइने एक लाख चालीस हजार सेना लेकर अपने सेनापति पस्केविचको उसे दबानेके लिये भेजा, और १८४९ ई०में विद्रोही मगयारोंकी तेईस हजार सेनाने आत्म-समर्पण किया। रूस अब सिद्ध कर रहा था, कि प्रुशिया हो या आस्ट्रिया, फ्रांस हो या इताली, सभी जगह क्रांतिको दबानेका सबसे जबर्दस्त

साधन निरंकुश जारशाही है, इसीलिये तो नहीं क्रांतिने सबसे पहले रूसके जारको ही खतम किया ?

निकोलाइको अपने शासनके अन्तिम कालमें क्रिमियाका युद्ध (१८५३-५६ ई०) देखना पड़ा। इस युद्धके लिये भी फ्रांस और इंगलैंडने तुर्की सुल्तानको उकसाया था, लेकिन उसके आरम्भ करनेका मौका निकोलाइने दिया। फिलस्तीन उस समय तुर्कीके हाथमे था, जिसके कारण ईसाइयोंके योरोशिलम आदि तीर्थस्थान भी सुल्तानके अधीन थे। १८५३ ई०मे एक विशेष दूतमडल कान्स्तन्तिनोपल भेज-कर निकोलाइने सुल्तानसे मांग की, कि फिलस्तीनके बेतलहेमके मंदिरकी कुजी रखनेका अधिकार रूसी चर्चको दिया जाय, लेकिन फ्रांस और तुर्कीके बीच जो सधि हुई थी, उसके अनुसार यह अधिकार कैथलिक चर्चको मिला था। सुल्तान जानता था, कि इस बातमे फ्रांस और इगलैड हमारे समर्थक होंगे, इसलिये उसने रूसकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। दोनों देशोंका दौत्य सबंध तोड़ दिया गया, और जून १८५३ ई०में अस्सी हजार रूसी सेना तुर्कीकी ओर अभियान करते मोल्दाविया और वलाचियामे दाखिल हुई। समझौतेकी कोशिश की गई, लेकिन उसमे सफलता नही हुई। तुर्की सेनाने कालासागरके पूर्वी और पश्चिमी तटोंपरसे होकर आक्रमण शुरू किया। सबसे पहला जबर्दस्त सघर्ष कालासागरके दक्षिणी किनारेपर अवस्थित सीनोपमे हुआ। नवम्बर १८५३ ई०मे रूसी नौसेनापति नखिमोफने एकाएक वहा आक्रमण करके तुर्कीके जंगी बेड़ेको नष्ट कर दिया। अब इंगलैड-फ्रांस और अधिक पर्देकी आड़मे शिकार नही कर सकते थे, इसलिये वह सीधे मैदानमे कूद पड़े। प्रुशिया और आस्ट्रियाने भी गाढ़के समय रूसका पक्ष छोड़ दिया। रूसको इंगलैंड और फ्रासके मजबूत जगी बेड़ेका मुकाबिला करना था, जो उसकी अपेक्षा कही अधिक सबल था। १ अप्रैल १८५४ ई० को फ्रांस और इंगलैंडके जंगी बेड़ेने अदेस्सा नगरपर बम वर्षा की। यही नहीं, उन्होंने उससे बहुत दूर उत्तर श्वेत-सागरके किनारेके रूसी नगर सोलोवेत्स्कपर जहां गोलाबारी की, वहां प्रशान्त महासागरके कामचत्का प्रायद्वीपमे पेत्रोपावलोव्स्क नगरको भी तोपोंका निशाना बनाया। सबसे अधिक संघर्ष हुआ। कालासागरमे। सितम्बर १८५४ ई०के आरम्भमें अग्रेज और फ्रेंच नौसैनिक सेवस्तापोलको पीछेसे लेनेके लिये समुद्र-तटपर उतरे। सेवस्तापोलने बड़ा जबर्दस्त मुकाबिला किया। यद्यपि अन्तमें जीत उन्हींकी हुई, लेकिन एक अंग्रेज कमांडरने इस विजयके बारेमे कहा था—"यदि इस तरहकी एक और विजय प्राप्त हुई, तो इंगलैंडके पास कोई सेना नही रह जायेगी।" सेवस्तापोलने ग्यारह महीनेतक बड़ा जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। इसी समय फर्वरी १८५५ ई०मे निकोलाइ I मर गया। सेवस्तापोलके प्रतिरोधमे भाग लेनेवाले रूसी अफसरोंमे महान् साहित्यकार लेव ताल्स्त्वा (ताल्स्ताय) भी था, जिसने "सेवस्तापोलकी कथायें" को लिखकर इस समयकी रूसियोंकी वीरताका बड़ा सुंदर चित्र खींचा है। इसी समय दाशा सेवस्तापोल्स्कयाने दुनियामे पहिली बार युद्धके घायलोंमे नर्सका काम किया था। अंग्रेज इसका श्रेय फ्लोरेन्स नाइटिंगलको देते है। इसी प्रतिरोधमें अदमिरल नखीमोफ मारा गया। ३४९ दिन तक भारी मुकाबिला करनेके बाद सेवस्तापोलकी सभी चीजोंको नष्ट करते तथा अपने सभी पोतोंको डुबाते रूसियोंने सिर्फ खंडहरोंको शत्रुओंके हाथमें जाने दिया।

निकोलाइके मरनेके बाद १८५६ ई०मे पेरसिमें संधि हुई। अंग्रेज और फ्रेंच विजयी हुये थे, लेकिन वहाके शासक भली प्रकार जानते थे, कि हमारे विरुद्ध होनेवाली जबर्दस्त क्रांतियोंमे जार ही हमारा सबसे बड़ा सहायक होता आया है, इसलिये वह कब पसंद करते, कि जारशाही रूसको अधिक निर्बल कर दिया जाय? तो भी रूसको कालासागरमें अपने जगी बेड़े या तट-भूमिपर किले रखनेके अधिकारसे वंचित कर दिया गया। तुर्की साम्राज्यकी रक्षाकी जिम्मेवारी ले ली गई, और रूस और तुर्कीकी पुरानी सीमायें कायम रक्खी गईं। सर्विया, मोल्दाविया और वलाचियाको युरोपियन शक्तियोंके संरक्षणमें दे दिया गया। दरेदानियल और कालासागरमें सभीको व्यापार करनेका समानाधिकार मिला। क्रिमियाके युद्धमें असफल होकर रूसने युरोपकी राजनीतिमें कायम की हुई अपनी प्रधानताको खो दिया, और अब उसका स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें वह नहीं रह गया, जो कि १८१५ ई०से १८५३ ई० तक था।

साइबेरियामें प्रसार—साइबेरियामें रूसी शक्तिके प्रधान प्रसारक और संस्थापक येर्मक और खबारोफके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। मुरावेफ तीसरा और अन्तिम पुरुष था, जिसने साइबे-

रियामें जारशाहीकी शक्तिको बढ़ाने और मजबूत करनेमे काम किया। ६ सितम्बर १८४७ ई० को जार निकोलाइ तुलाकी ओर गया हुआ था, जहां उसने तरुण मुरावेफको साइबेरियाका राज्यपाल नियुक्त किया। इसके बादके कितने ही वर्षोका साइबेरियाका इतिहास मुरावेफके कामोंका लेखा है। इस समय रूसी नौसेना-मंत्रालय अखोत्स्क समुद्रके दक्षिणी छोरपर तुगरकी खाड़ीमे एक नया बंदरगाह बनाना चाहता था। मुरोवेफने उसे ठीक नही समझा और उसने सुझाव रक्खा, कि ऐसे बन्दरकी स्थापनाके लिये नेवेल्स्कीके नेतृत्वमे अमूरकी खोज-पड़ताल की जानी चाहिये। १८४९ ई० मे इसपर विचार करनेके लिये जारने एक समिति नियुक्त की, लेकिन इससे पहले ही छ हथियारबद नौसेनिक, एक तोपके साथ एक नावपर आमूरकी जांच-पड़तालके लिये चल पड़े थे, जिन्होंने आमूरके मुहानेसे २५ वर्स्त (४ फर्सख) पर जारके नामसे निकोलायेव्स्क नामका एक बन्दरगाह स्थापित किया, और ६ अगस्त १८४९ ई०को पड़ोसके गिलियक लोगोंके सामने रूसी झंडा गाड़कर एक पौड-वाली तोपका गोला दागा। नेवेल्स्कीने जल्दी-जल्दी स्वयं पहुंचकर इस बातकी सूचना मुरावेफको दी। मुरावेफने तुरंत इसकी खबर राजधानीमे भेजी। जब इस कामके लिये नियुक्त समितिके सामने यह बात आई, तो उसने बिना आज्ञाके ऐसा करनेका बहुत विरोध किया, और नेवेल्स्कीको कठोर दंड देनेपर जोर देते तुरत वहासे हट आनेकी सिफारिश की, लेकिन मुरावेफने इसका विरोध किया। जब यह बात जारके पास निर्णयके लिये पहुची, तो उसने समितिकी बात माननेसे इन्कार कर दिया, और कहा—"जब एक बार रूसी झडा गाड़ दिया गया, तो फिर उसे नीचे नही उतारा जा सकता।" युद्ध-मंत्रालय पसंद नही करता था, कि सुदूर-पूर्व साइबेरियामे बड़ी सेना रक्खी जाय। इस समस्याका हल मुरावेफने आसानीसे कर दिया। उसने नेर्चिन्स्कके रूसी किसानोंको कसाक सैनिकोंके रूपमे परिणत कर दिया, और इस प्रकार पूर्वी साइबेरियाके लिये एक सुसगठित सेना मिल गई। यदि साइबेरियामे जगह-जगह रूसियोंकी बस्तियां कायम न हुई होती, तो मुरावेफको यह सुभीता न मिलता।

नेवेल्स्कीको दड क्यों मिलने लगा? वह फिर सुदूर-पूर्वमे अपना काम करने लगा। १८५२ ई० मे प्रशान्त महासागरके भीतर सखालिन द्वीपकी उसने जाच-पड़ताल की, और सखालिनके देकास्त्री और किजी नामके द्वीपोंको अपनी जिम्मेवारीपर दखल कर लिया। ये दोनों द्वीप तारतारी खाड़ीके लिये बड़े सैनिक महत्त्वके थे। नेवेल्स्कीने पोयारकोफ या खबारोफकी नीतिको छोड़कर देशवासियोंको अपने अच्छे बर्तावसे जीतनेकी कोशिश की, जिसमे उसे बहुत सफलता मिली।

२२ अप्रैल १८५३ ई०को एक सम्मेलन हुआ, जिसमें मुरावेफने प्रस्ताव किया, कि आमूरके बारेमे चीनसे फैसला कर डालना चाहिये। अभी यह बात विचाराधीन ही थी, और इसमें मुरावेफके विरोधी कितने ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, लेकिन इसी बीचमें रूस और तुर्कीके बीच १८५३ ई०में क्रिमियाका युद्ध छिड़ गया, जिससे सरकारका सारा ध्यान उधर हो गया, और मुरावेफको पूर्वमें खुल खेलनेका मौका मिल गया। तुर्कीके साथके युद्धमे युरोपमें रूसको बड़ी बुरी तरहसे हारना पड़ा, लेकिन इसी समय प्रशान्त महासागरके तटपर उसे भारी विजय प्राप्त हुई। इस सफलताकी खबर सुनकर निकोलाइ इतना प्रसन्न हुआ, कि ११ जून १८५४ ई०को उसने आदेश दिया, कि सुदूर-पूर्वके सीमांतके सवालोंके बारेमें मुरावेफ सीधे पेकिङ्ग सरकारसे बातचीत कर इन्हे हल करे। इस अधिकारको प्राप्त करके मुरावेफने अब फिर सुदूर-पूर्वमे अपने कामको नये जोशसे आरम्भ किया, जिसका ही परिणाम था, आमूरका प्रथम प्रसिद्ध अभियान। नावोंके बेड़ेको लेकर आगे बढ़नेसे पहले मुरावेफने पेकिङ्ग-को इस बातकी सूचना दे दी थी, और उसने कारण बतलाते हुये कहा था, कि युरोपके युद्धके कारण प्रशान्त महासागरकी अपनी अधिकृत-भूमिकी रक्षाके लिये हमे ऐसा करना आवश्यक पड़ रहा है। १४ मई १८५४ ई० को मुरावेफ आठ सौ सैनिकोंकी एक बटालियन, कुछ कसाक सैनिक, एक पहाड़ी तोपखाना, पचहत्तर नावोके बेड़ेके साथ नौसैनिक जहाज "अरगून" के साथ रवाना हुआ। अट्ठाइसवें दिन मुरावेफ चीनियोंके दुर्गबद्ध नगर ऐगुनमे पहुंचा। यहां उसने स्थानीय चीनी अधिकारियोंसे यह पता लगानेके लिये अपने आदमी भेजे कि उनके पास पेकिङ्गसे कोई हुक्म आया है, या नही। वहां कोई हुक्म नहीं आया था, और न स्थानीय चीनी अधिकारीके पास इतनी शक्ति थी, कि मुरावेफको रोकता। मुरावेफ बिना किसी विरोधके आमूर नदीमे आगे बढ़ता प्रशान्त महासागरमे पहुंचा, फिर काम्स्चत्काके

पेत्रोपावलोव्स्कमें पहुंचकर फ्रेंच और अंग्रेजी नौसनासे सुरक्षित रखनेके लिये उसकी किलाबंदी शुरू की। मुरावेफको इसमें सफलता हुई, और शत्रुओंको असफल लौट जाना पड़ा।

सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रगति—निकोलाइ जैसे अयोग्य और अल्पपठित अल्प-संस्कृत शासकके समय रूसको बड़ी-बड़ी प्रतिभाओंके पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी समय हेर्जन (१८१२-७० ई०), बेलिन्स्की (१८११-४८ ई०) जैसे विचारक, लोबाचेव्स्की (१७९३-१८५६ ई०) जैसे विज्ञानवेत्ता और रिलेयेफ, पुश्किन, ग्रिबोयदेफ, लेर्मन्तोफ (१८१४-४१), वेनेवितिनोफ, कोल्तसोफ, बेलिन्स्की, बरातिन्स्की जैसे प्रतिभाशाली कवि और साहित्यकार पैदा हुये, जिन्होंने उस पृष्ठभूमिको तैयार किया, जिसने रूसको बौद्धिक क्षेत्रमें महान् बनाया। यदि निकोलाइ क्रांतिको फूटी आखों भी नही देखना चाहता था, तो उससे क्या, रूसकी इन प्रतिभाओंने क्रांतिके मार्ग-को साफ करनेका काम शुरू किया। जहां रूसी शिक्षामत्री उबारोफ (१८३३-४९ ई०) इस बातका दावा कर रहा था, कि रूसी लोग स्वाभाविक तौरसे धार्मिक है, वह सदासे जारके भक्त रहते आये है और किसानोंकी अर्धदासताको वह बिल्कुल प्राकृतिक मानते है; वहां अलेक्सान्द्र इव्वान-पुत्र हेर्जन दूसरे ही विचारोंका प्रचार कर रहा था।

हेर्जन (१८१२-७० ई०)—हेर्जनने दिसम्बरी वीरोंकी कुर्बानीका प्रभाव अपने ऊपर स्वीकार करते हुये लिखा था—"पेस्तेल और उसके सहयोगियोंकी हत्याने अन्तमें अपनी बचपनकी नीदसे मेरी आत्माको जगा दिया।" हेर्जन १८१२ ई०में एक धनी रूसी जमीदारके घर पैदा हुआ था। उसके बापने एक जर्मन स्त्रीसे शादी की थी, लेकिन शादी वैधानिक नही हुई थी, इसलिये हेर्जनको बापका कुल-नाम कोबलेफ नही प्राप्त हुआ और उसे एक साधारण-सा नाम हेर्जन (हेर्ज, जर्मनमें हृदय) मिला। हेर्जन मस्तिष्कके साथ बड़ा ही सहृदय पुरुष था। हेर्जनके पिताके पास फ्रेंच और जर्मन पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह था। उसने अपने फ्रेंच अध्यापकसे फ्रेंच क्राति और गणराज्यके प्रति सम्मान करना सीखा। रिलेयेफकी कविता "ध्यान" से वह उसी वक्त प्रभावित हुआ था। वही रिलेयेफ जब फासीपर लटका दिया गया, तो हेर्जनके ऊपर उसकी सदाके लिये अमिट छाप पड़ गई। हेर्जन अपने क्रातिकारी विचारोंको लेकर ज्यादा दिनोंतक निकोलाइके राज्यमें नही रह सकता था। १८४७ ई०मे वह देशसे बाहर गया, और क्रातिकारी फ्रांस और इतालीको अपनी आंखों देखा। १८४८ ई०की क्रातिके समय हेर्जन पेरिसमें था। पश्चिमी युरोपमे क्रांतिकी असफलताको देखकर हेर्जन निराश हुआ, और उसे आशा बंधी, कि शायद रूसी किसान क्रांतिको सफल बनाये। इस प्रकार उसने किसानोंके समाजवादका स्वप्न देखना शुरू किया। हेर्जन कार्ल मार्क्सका समकालीन था। मार्क्सकी तरह ही उसे भी अपनी जन्मभूमिसे भागकर मारा-मारा फिरना पड़ा, और अन्तमे उन्हीकी तरह उसने लदनमें अपना डेरा डाला। १८५३ ई० मे उसने वहा "स्वतंत्र रूसी प्रेस" की स्थापना की, जिससे अपनी क्रांतिकारी पत्रिका "पोल्यार्नया ज़्वेज़्दा' (ध्रुवतारा) का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिकाके मुख्य मुखपृष्ठपर दिसम्बरी शहीदोंकी तस्वीर रहती थी। १८५७ ई०से १८६७ ई०तक हेर्जनने "कोलोकोल" (कलकल) के नामसे एक और भी प्रसिद्ध पत्रिका प्रकाशित की। हेर्जनके विचारोंने रूसी तरुणोंकी समकालीन पीढ़ीपर बहुत प्रभाव डाला, और उसी प्रभावमें आकर बोल्शेविकोंसे पहलेके क्रांतिकारियोंने किसानोंमें क्रांतिका संदेश पहुंचानेके लिये भगीरथ प्रयत्न किये।

व. ग. बेलिन्स्की (१८११-४८ ई०)—बेलिन्स्की हेर्जनका समकालीन था। वह साहित्य-समालोचकके तौरपर लोगोंमे नया भाव पैदा करनेमें सफल हुआ। उसकी आलोचनाओंने रूसी साहित्यमें यथार्थवादकी स्थापना की। उस समय जारशाही सेंसरके कारण कोई भी स्वतंत्रतापूर्वक कुछ लिख नही सकता था। बेलिन्स्कीने अपने मित्र प्रसिद्ध लेखक गोगलको लिखा था—"रूसकी मुक्ति उप-देश या प्रार्थनासे नही हो सकती, बल्कि वह अर्धदासताके उच्छेद तथा लोगोंमें मानवसम्मानके प्रति जागृति और सद्भाव स्थापित करनेसे हो सकती है। बेलिन्स्की अपनी लेखनीसे क्रातिका प्रसार कर रहा था, लेकिन उसके रास्तेमे सभी जगह रुकावटे थी। उसने अपनी इस विवशताको दिखलाते हुये लिखा था—"प्रकृतिने मुझे कुत्तेकी तरह भूकने, सियारकी तरह हुआं-हुआं करनेके लिये मजबूर किया है। कभी-कभी परिस्थितियां बिल्लीकी तरह म्याउं-म्याउं करने और लोमड़ीकी तरह पूंछ हिलानेके

लिये भी मजबूर करती है।" लेकिन वह भविष्यके लिये बड़ा आशावादी था। उसने मरनेसे थोड़ा ही पहले लिखा था—"मुझे अपने उन पौत्रों और प्रपौत्रोंपर ईर्ष्या होती है, जो कि १९४० ई०में रूसको शिक्षित दुनियाका मुखिया बनते, विज्ञान और कलाके सिद्धांतोंको स्थापित करते, और ज्ञानवान् मानव-जातिसे सम्मानकी भेट पाते देखेंगे।" बेलिन्स्कीका भविष्य-कथन सच निकला, इसमे क्या संदेह है? जारकी सरकार उसे जेलमे बंद करने ही जा रही थी, कि ३७ वर्ष की अवस्थामे १८४८ ई०में विसारियोन ग्रेगोरी-पुत्र बेलिन्स्की तपेदिकके हाथों मारा गया।

वैज्ञानिक—वासिली व्लादिमिर-पुत्र पेत्रोफ (१७६२-१८३४ ई०) प्रसिद्ध रूसी भौतिक शास्त्री था, जिसने दुनियामे सबसे पहले (१८०२-३ ई०मे) आधुनिक विद्युत्-रसायनके आधारभूत एलेक्ट्रोलीसिसका आविष्कार किया। उसने डेवीसे कितने ही वर्ष पहले वोल्ताइक आर्क (प्रदीप) का आविष्कार किया। १८३२ ई०मे पीतरबुर्गमें दुनियाका सबसे पहला तार शीलिगने स्थापित करके संचार-मंत्रालय और हेमन्त-प्रासादके बीचमें संदेश भेजकर दिखलाया, लेकिन सामन्तशाही रूसने इन आविष्कारोंको आगे बढ़नेका मौका नहीं दिया। १८३८ ई०मे याकोबी (१८०१—७४ ई०)ने बिजली बनानेका पहला इंजन तैयार किया, और उसकी बिजलीकी नावने नेवाके ऊपर यात्रियोंको ढोया। यह आविष्कार इंगलैंडमे आधी शताब्दी बादमें हुआ, और दुनियाने याकोबीको भूलकर अंग्रेजको इसका आविष्कारक माना। आविष्कार और खोजके क्षेत्रमें रूसी प्रतिभायें इस प्रकार अपने चमत्कारको दिखानेके लिये तैयार थी, लेकिन वहां अभी उनको सहारा देनेवाले नही थे।

साहित्यकार—निकोलाइके कालमें रूसी साहित्य-गगनमें बड़े-बड़े नक्षत्र उदित हुये, लेकिन उनमेसे अधिकांश अकालमे ही कालकवलित हुये, जैसे—

रिलेयेफ (कवि)—जारने १८२६ ई०मे फासी दिलवा दी।
पुश्किन (कवि)—१८३७ ई० में ३८ वर्षकी आयुमे द्वंद्व-युद्धमे मारा गया।
ग्रिबोयेदोफ (कवि)—तेहरानमे हत्यारेके हाथों मारा गया।
लेर्मन्तोफ (कवि)—द्वंद्व-युद्धमे २७ वर्षकी उम्रमें १८४१ ई० मे मारा गया।
वेनेवितिनोफ (कवि)—२२ वर्षकी उम्रमे मारा गया।
कोल्त्सोफ (कवि)—३३ वर्षकी उम्रमे अपने परिवार द्वारा मारा गया।
बेलिन्स्की—३५ वर्षकी उम्रमे १८४८ ई०मे भूख और गरीबीकी बलि चढ़ा।

अलेक्सान्द्र पुश्किन (१७९९-१८३७ ई०)—पुश्किन रूसी साहित्यका कालिदास है। वह "प्रतिभाशाली रूसका सबसे बड़ा कवि और विश्व-साहित्यका प्रतिभाशाली साहित्यकार रूसी यथार्थ-वादका संस्थापक, रूसी साहित्यिक भाषाका निर्माता, रूसी जनताका गर्व और कीर्ति" कहा जाता है। यद्यपि वह उच्चकुलमे पैदा हुआ था, किन्तु गोर्कीके अनुसार "उसके लिये कुलीन वर्गके हितसे ऊपर सारे राष्ट्रका हित था, और उसका व्यक्तिगत अनुभव कुलीनोंके अनुभवसे (कही) विस्तृत और गम्भीर था।" पुश्किन (अलेक्सान्द्र सरगेइ-पुत्र) १७९९ ई०मे मास्कोमें एक सामन्तवंशमें पैदा हुआ था, जिसकी आर्थिक अवस्था उतनी अच्छी नही थी। कुलीन वर्गके लिये स्थापित जास्कोंयसेलोके विशेष स्कूलमे वह भरती हुआ और १८१५ ई०मे जब कि वह अभी सोलह वर्ष ही का था, उसने परतंत्रता और दासताके प्रति अपनी घृणा प्रकट की थी। १८१७ ई०में अठारह वर्षकी अवस्थामे उसने स्कूलकी पढ़ाई समाप्त की। जिस वर्गमे पैदा हुआ था, उसके अत्याचारोंसे वह कितना क्षुब्ध था, यह उसकी निम्न पंक्तियोंसे मालूम होगा—

ओ दुष्कर्मी, स्वेच्छाचारी, सुन मेरी घृणाको
जो कि तेरे, राजदंड और तेरे सिंहासनके प्रति है।
तेरे बच्चोंकी मौत, तेरे अपने काले भाग्यको देख
मै पत्थर जैसे कड़े हृदयकी तरह हर्षित होता हूं।

अपने उग्र विचारोंके लिये रूसी साहित्यके कालिदासको पहले दक्षिण (काकेशस) में निर्वासित किया गया, फिर किशिनेफ और अदेस्सामें निर्वासित करके रखा गया। अदेस्सासे उसे अपने पिताकी जमींदारी मिखाइलोव्स्कयो गांवमें भेज दिया गया और उसके बापको पुत्रपर निगाह रखनेके लिये हुक्म

दिया गया। यहींपर पुश्किनने अपना महान् काव्य 'यूगेनी-ओनेगिन" लिखा, और "बोरिस गदुनोफ" दुःखान्त नाटकको भी यही उसने रचा। कई सालोंतक जारने "बोरिस गदुनोफ" को निषिद्ध कर दिया था। पुश्किन दिसम्बरी क्रांतिकारियोंके साथ बड़ी सहानुभूति रखता था। दिसम्बरियोंको फांसीपर चढ़ानेके थोड़े ही समय बाद जार निकोलाइ I ने पुश्किनको बुलाकर पूछा—"यदि तुम १४ दिसम्बरको पीतरबुर्गमें होते, तो क्या करते ?" पुश्किनने साफ जवाब दिया—"मैं भी विद्रोहियोंमें शामिल हुआ होता।" इसके बादसे जारने पुश्किनकी रचनाओंके सेंसर करनेका भार अपने ऊपर लिया। जहांतक रूसी जाति का संबंध था, पुश्किन निराशावादी नहीं था, लेकिन अपने लिये उसे प्राणोंका जरा भी मोह नही था। उसके ऊपर अत्याचार करनेवालोंमें जार निकोलाइ I वैसे बहुत अल्प-पठित था, लेकिन तब भी शायद वह महान् कविकी अमरताको जानता था, और इसीलिये वह उसके खूनसे अपने हाथको रगना नही चाहता था, लेकिन और तरहसे उसने और उसके दरबारियोंने पुश्किनके जीवनको दूभर कर दिया था। पुश्किन अड़तीस वर्षका था, जब कि अपमान करनेका बदला लेनेके लिये उसने एक सरकारी अफसरको द्वंद्वयुद्धके लिये ललकारा और घायल होकर १८३७ ई०में मरा। पुश्किनकी प्रतिभा सर्वतोमुखीन थी। उसके काव्य और नाटक उतने ही सम्मान और दिलचस्पीके साथ पढे जाते है, जैसे कालिदासके। उसके नाटक आज भी रंगमंचपर बहुत जनप्रिय है। उसने कहानियां और लघुउपन्यास भी लिखे है, जिनमें भाषा और भावोंकी प्रौढता, व्यंग, रसाप्लावन अद्वितीय हैं। उसके समयमे अभी फ्रासीसी भाषा और साहित्यको रूसी लोग उसी दास-मनोवृत्तिसे अपनाये हुये थे, जैसे हमारे देशके नौकरशाह लोग। "कप्तानकी कन्या" मे पुश्किनने उनकी खूब खबर ली है। वह अपनी रूसी जातिका परम भक्त था, लेकिन उस जातिको अपना जौहर पूरी तौरसे दिखानेमे जो बाधाये थी, उनको साफ-साफ कहनेसे बाज नही आता था। साथ ही वह वर्ण और देशके भेदोंको माननेवाला नही था। भारतसे गये सिगानों (रोमनियों) पर उसकी मधुर कविता इसका प्रमाण है।

मिखाइल, यूरी-पुत्र लेर्मन्तोफ (१८१४–४१ ई०) पुश्किनका तरुण समकालीन और महान कवि था, जिसने भी द्वन्द्व-युद्धमे सत्ताईस वर्षकी उमरमें अपने जीवनको समाप्त किया। अपनी प्रभावशाली कविता "एक कविकी मृत्यु" मे पुश्किनकी प्रशसा और उसके हत्या करनेवाले वर्गकी घृणाको बड़े कठोर शब्दोमे प्रकट करनेके लिये उसे काकेशसमे निर्वासित कर दिया गया। पुश्किनके बाद रूसी कवियोमे लेर्मन्तोफका दर्जा है। निकोलाइ I ने उसकी मृत्युकी खबर सुन बहुत खुश होकर कहा—"कुत्ता, कुत्तेकी मौत मरा।"

निकोलाइके समयका दूसरा महान् अमर साहित्यकार निकोलाइ वासिली-पुत्र गोगल (१८०९-५२ ई०) है। उसके उपन्यास "इन्स्पेक्टर-जेनरल", "मृत आत्माये" आदि विश्व-साहित्यके रत्न माने जाते है। "मृत आत्माये" को पढ़कर हेर्जनके अनुसार सारा रूस कांप उठा। गोगल महान् कलाकार है। उसकी जैसी सशक्त लेखनी बहुत कम देखनेमे आती है। यह महान् साहित्यकार भी तेतालीस वर्षकी उमरमें मर गया।

इस समयके महान् कलाकारोंमे क० फ० ब्रूलोफ, अ० अ० इवानोफ अद्वितीय है। इवानोफने अपनी महान् कलाकृति "ईसाका लोगोंमे प्रकट होना" को अपने जीवनके तीस वर्ष लगाकर बनाया। यथार्थवादके साथ आदर्शवाद या अध्यात्मवादका कितना सुन्दर सम्मिश्रण हो सकता है, इसका यह सुन्दर नमूना है। इस चित्रको बनानेके लिये इवानोफने कई साल ईसाकी जन्मभूमि फिलस्तीनमे बिताये।

अभी तक रूसका संगीत लम्बी नाकवालों और गंदे ग्रामीणोंकी कलाके रूपमें विभक्त था। उच्च वर्गके लोग पश्चिमी सगीतको सगीत मानते थे, और समझते थे, कि रूसकी भूमिने संगीतके लिये कोई देन नही छोड़ी है। इसी समय प्रतिभाशाली संगीतकार (उस्ताद) म० ई० ग्लिन्का (१८०९–५७ ई०) पैदा हुआ, जिसने पश्चिमी संगीतका पारंगत आचार्य होते भी रूसी जनसगीतको अपनाया, और घोषित किया, कि हमारी राष्ट्रीय संगीत-कला किसीसे कम नहीं है। ग्लिन्का पहिले ही से प्रसिद्ध संगीतकार हो चुका था, इसलिये उसे तुच्छ नहीं कहा जा सकता था, लेकिन उसकी कलाको तुच्छ करनेके लिये सम्भ्रान्त वर्गने कोई कसर नहीं उठा रक्खी। उसे "गाड़ीवानोंके गीत" का रचनेवाला कहते थे।

ग्लिन्काने इसकी पर्वाह नहीं की। "इवान सुसानिन" जैसे देशके लिये मरनेवाले वीरको चुनकर उसने अपने ओपेरा (पद्यनाटक) को रचा, जिसने जल्दी ही लोगोंको अपनी तरफ खींच लिया। जिस तरह काव्य और साहित्यका पिता पुश्किन माना जाता है, वही स्थान संगीत और रंगमंचमे ग्लिन्काका है। मास्कोका बल्शोइ तियात्र (महानाट्यशाला) यद्यपि १७८० ई०मे स्थापित हुआ था, जब उसे पेत्रोफका तियात्र कहते थे। १८०५ ई०मे नाट्यशाला आगसे नष्ट हो गई, और बीस साल बाद (१८२५ ई०) मे उसे फिरसे बनाया गया। इसके बाद फिर एक बार आगसे नष्ट होनेपर १८५३ ई० मे उसका पुनर्निर्माण हुआ, जब कि "इवान सुसानिन"के निर्माता ग्लिन्काके मरनेमें चार सालकी देर थी। १८२४ ई० हीमे मास्कोमे "माली तियात्र" (लघु नाट्यशाला) की स्थापना हुई, और बड़ी जल्दी ही उसकी ख्याति चारों ओर फैल गई। पुश्किन, लेर्मन्तोफ, गोगल, इवानोफ और ग्लिन्का जैसी प्रतिभाओंको पैदा करनेवाला १९ वीं सदीका पूर्वार्ध रूसकी कला और साहित्यका सुवर्ण-युग था, इसमें संदेह नही।

१६. अलेक्सान्द्र I, निकोलाइ I-पुत्र (१८५५–८१ ई०)

अलेक्सान्द्र जब अभी युवराज ही था, तभी उसने किसानोंकी अर्धदासताको कायम रखकर अमीरोंके हितको अक्षुण्ण करनेकी प्रतिज्ञा की थी, लेकिन अब रूस १९वीं सदीके मध्यको पार कर चुका था। औद्योगिक पूंजीवाद बडे जोरसे अपने प्रभावको बढ़ा रहा था, इसलिये सामन्तवादका अक्षुण्ण रहना सम्भव नही था। उसे मजबूर होकर किसानोंकी अर्धदासताको खतम करते १८५६ ई० मे कहना पडा—"भूमिके स्वामित्वकी वर्तमान प्रथा बिना बदले नही रह सकती। यह बेहतर है, कि किसानी अर्धदासताको नीचेसे अपने आप खतम होने देनेकी जगह ऊपर (सरकारी ओर) से खतम कर दिया जाय।" अलेक्सान्द्रने यद्यपि "१९ फर्वरीके (१८६१ ई०) कानून" द्वारा अर्धदासता प्रथाको खतम किया, लेकिन जमीदारोंके हितोंका पूरी तौरसे ध्यान रखते। किसानोंको पीढ़ियोंसे अपने जोते खेतोंके लिये भारी रकम देनी पड़ी। किसानोंको जो जमीन मिली थी, उसका मूल्य पैंसठ करोड़ रूबल होता था, लेकिन उसके लिये उनसे नब्बे करोड़ दिलानेका निश्चय किया गया। यह रकम सरकारने देना स्वीकार किया, जिसे वह उन्चास सालकी किस्तोंमे किसानोंसे ले लेनेवाली थी। १९०५ ई०तक इस मदमे किसानोंसे दो अरब रूबल लिये गये। १९ फर्वरी १८६१ ई०के भूमिसुधारके कानूनने बहुत मंहगे ढगसे एक करोड़ किसानोंको जमीदारोंकी दासतासे मुक्त किया। किसानी अर्धदासताका खतम करना रूसमें पूजीवादी व्यवस्थाके विजयकी घोषणा थी। लेकिन यह सुधार रूसके अधीन दूसरी जातिवाले प्रदेशोंमे नही स्वीकार किया गया। कल्मकोंके प्रदेशमें पुरानी अर्धदासता प्रथा १८९२ ई० तक रही, और मध्य-एसियामे तो वह बोल्शेविक-क्रातिसे पहले खतम ही नही हुई।

इतनी बड़ी रकमको क्षतिपूर्तिमे चुपचाप किसान कैसे दे सकते थे? इसके लिये किसानोंका संघर्ष होना ही था। किसानोंके पक्षको लेकर इसी समय एक खास आन्दोलन शुरू हो गया। चेर्नीशेव्स्कीने "सव्रेमेन्निक" (समकालीन)के नामसे एक पत्रिका निकाली, जो किसानोंके पक्षका बहुत जोरदार ढंगसे समर्थन करती थी। रूसी सिपाही किसानोंमेसे ही आते थे, इसीलिये चेर्नीशेव्स्कीके मित्र और सहकारी न० व० शेलगुनोफने "सिपाहियोंको" नामसे एक घोषणा लिखी थी। घोषणा छप नहीं पाई थी, कि उससे पहिले ही वह तृतीय विभाग (खुफिया विभाग) के हाथमे पड़ गई। लेकिन रूसी जनताको आगे बढ़नेसे रोका नही जा सका। १८६२ ई०के वसंतमे "तरुण रूस"के नामसे एक घोषणा मास्कोके क्रांतिकारी विद्यार्थी जाइच्नेव्स्कीने प्रकाशित कर हथियार लेकर उठ खड़े हो शासक-वर्गको नष्ट करनेका आह्वान किया। चेर्नीशेव्स्की इस कालके जन-आन्देलनका सबसे बड़ा नेता था। उसकी कलममे अद्भुत ताकत थी। जारशाहीने उसे पकड़कर दो साल तक पीतरबुर्गके पीतर-पावल-दुर्गमे बंद रक्खा, फिर चौदह वर्षके लिये साइबेरिया-निर्वासन (कालापानी) का दंड देनेसे पहले १९ मई १८६४ ई० को सार्वजनिक तौरपर उसे नागरिक मृत्युका दंड दिया। फांसी देनेवालोंने उसे पीतरबुर्गके मितिलन्स्कया चौरस्ते पर ले जाकर फांसीवाले आदमीकी तरह उसे घुटने टिकवाया, और उसकी गर्दनपर एक तलवार रक्खी। जिस समय फांसीकी टिकटीपर इस रसमको अदा करनेके बाद उसे ले जाया जा रहा था, उसी समय भीड़मेंसे एक लड़कीने उस पर कुछ फूल फेंके, जिसके लिये उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

चेर्नीशेव्स्कीको नेर्चिन्स्कके जेलखानेमें रक्खा गया, जहां उसके दंडकालको आधा कर दिया गया, लेकिन कैदकी अवधि पूरा होनेके साथ ही अलेक्सान्द्र II ने उसे फिर सुदूर साइबेरियाके कस्बे विल्युइन्स्कमे बन्दी कर दिया। १८८३ ई०में वहांसे लाकर उसे अस्त्राखानमे रखा गया, और गिरफ्तारीके सत्ताइस वर्ष बाद १८८९ ई०मे उसे अपने जन्मनगर सरातोफमे रहनेकी इजाजत मिली। अब वह साठ वर्षका हो चुका था। जेलमे उसका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया था। अक्तूबर १८८९ ई०मे सरातोफमें उसने अपने प्राण छोड़े। चेर्नीशेव्स्कीकी तपस्या व्यर्थ गई, इसे कौन कह सकता है ? आज उसका सम्मान रूसके घर-घरमे है, और सारे सोवियत संघके स्कूली विद्यार्थी पढते हैं–"न० ग० चेर्नीशेव्स्की महान् रूसी देशभक्त था, जिसने अपने सारे जीवनको अपने देश और जनताके लिये कुर्बान किया।" अभी चेर्नीशेव्स्की जब तरुण ही था, तभी उसने लिखा था–"अपने देशके अनन्त, और सनातन यशके लिये तथा मानवताकी भलाईके लिये काम करनेसे बढकर और कौन-सी बड़ी और सुन्दर बात हो सकती है ?"

चेर्नीशेव्स्की महान् जनतंत्रतावादी और महान् विद्वान् ही नही था, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञानका वह अदम्य प्रचारक था। उसके अर्थशास्त्र संबंधी ग्रंथोंके बारेमे मार्क्स और एगेल्सने लिखा था–– "वह वस्तुतः रूसके लिये सम्मानकी चीज है।"

तुर्की-युद्ध (१८७७-७८ ई०)––क्रिमियाके युद्धमे हारकर रूसने युरोपमें अपने प्रभावको खो दिया था, इसे हम बतला चुके हैं, लेकिन रूसने अपने प्रभावको विशेषकर कालासागर और भूमध्य-सागर तटपर बढ़ानेकी कोशिश बराबर जारी रक्खी। अब रूसके हाथमे एक और हथियार आ गया था––बल्कानके लोग पिछली चार शताब्दियोंसे तुर्की-सुल्तानके स्वेच्छाचारी शासनके नीचे कराह रहे थे। उनमें जातीय स्वतंत्रता की लहर फैली हुई थी, और वह नही चाहते थे, कि एसियाई मुस्लिम सुल्तान उनकी जैसी युरोपीय जातियोंको अपना दास बनाकर रक्खे। इंगलैंड और फ्रास रूसके विरुद्ध तुर्कीकी पीठ ठोंकना अपने हितके लिये आवश्यक समझते थे, इसलिये बल्कानकी जातियोंमें नवजागरणमे वह कैसे सहायक हो सकते थे ? संयोगसे बल्कानकी यह अधिकांश जातियां रूसियोंकी भाति स्लाव थी, इसलिय वह अपने स्लाव-भाइयोंकी ओर आशाभरी दृष्टिसे देखती थी। रूस भी उनका समर्थन कर रहा था। १८७५ ई० मे बोसनिया और हेर्जेगोविना (आधुनिक युगोस्लाविया) मे लोगोंने सुल्तानके खिलाफ आन्दोलन शुरू कर दिया। अगले साल बुल्गारियोंने विद्रोह कर दिया। तुर्कीने बड़ी कठोरता-पूर्वक विद्रोहोंको दमन किया, कहीं-कहीं तो उसने गावके गाव निर्जन बना दिये। तुर्की अपनी पुरानी संधिके कारण समझता था, कि रूस लड़ाईके मैदानमे नही कूदेगा, लेकिन रूसने सर्विया (बोसेनिया), हेर्जेगोविनाके निवासियों और मोन्तेनिग्रोको तुर्कीके विरुद्ध युद्ध घोषित करनेके समय १८६७ ई०के ग्रीष्ममें सहायता देना शुरू किया। रूसमें सब जगह तुर्कीके खिलाफ आन्दोलन ही नही किया जाने लगा, बल्कि एक रूसी जेनरल चेर्न्यायेफ सर्वियन सेनाका संचालन करने लगा। रूसकी सहायता होनेपर भी अक्तूबर १८७६ ई०मे सर्वियन सेनाकी हार हुई। मोन्तेनिग्रोके लोगोंने तब भी अपने संघर्षको अकेले जारी रक्खा। अग्रेजोंकी शहके कारण तुर्कीके सुल्तानने स्लाव विद्रोहियोंके साथ किसी तरहका समझौता करनेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाने तटस्थताकी नीतिको स्वीकार किया था। अन्तमें १८७७ ई०के वसंतमे रूसने तुर्कीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। रूस अब भी क्रिमियाके युद्धके समयके हथियारों और सैनिक विज्ञानसे लड़ रहा था, जब कि जर्मन कल-कारखानोंसे नये तरहके हथियार तुर्की-को मिल रहे थे। तो भी अपनी बहादुरीके कारण १८७७ ई० के ग्रीष्ममें रूसी सेना दन्यूब पार करनेमें सफल हुई। मुकाबिला कठिन था, लेकिन जब रूसी सेनाका कान्स्तन्तिनोपलमे पहुचना निश्चितसा मालूम होने लगा, तो अंग्रेज अपने नौसैनिक बेड़ेको मारमोरा समुद्रमें लाकर युद्ध घोषित करनेकी धमकी देने लगे। आस्ट्रिया और जर्मनीने भी रूसके खिलाफ रुख लिया। बल्कानमें युद्ध जारी रखते हुये रूसी सेनाने काकेशससे भी तुर्कोंके खिलाफ लड़ाई जारी की थी, जहापर तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर रूसियोंने अर्दहान और कर्सके किलोंको ले लिया। अन्तमे फर्वरी १८७८ ई०में सानस्तेपानो (कान्स्तन्तिनोपलके नजदीक) की संधिके अनुसार लड़ाई बंद हुई, और दन्यूबका मुहाना रूसको मिला, बल्कानमें बुल्गारियाकी एक रियासत कायम की गई, तुर्कीको सर्विया, मोन्तेनिग्रो और रुमानिया-

की स्वतंत्रता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। काकेशसमे अर्दहान, कर्स, बायजिद और बातूम के नगर रूसको मिले, साथ ही तुर्कीने एकतीस करोड़ रूबल रूसको क्षतिपूर्ति देना स्वीकार किया। इस प्रकार रूसने अपने खोये हुये प्रभावको फिर सान्स्तेफानो-संधिके अनुसार प्राप्त किया। आस्ट्रिया और इगलैड इस संधिको पसद नही करते थे, इसलिये १८७१ ई०मे बर्लिन-कांग्रेसमे उन्होंने रूसकी जीती हुई जगहोंमेसे कितनोंको छोड़नेके लिये मजबूर किया। बुल्गारियाके दक्षिणी भागको तुर्कीके हाथमे लौटा देना पडा, और उत्तरी भागको भी सुल्तानके अधीन एक रियासतका रूप दिया गया।

राजनीतिक आन्दोलन—चेर्नीशेव्स्कीके किसान-आदोलनके बारेमें पहले बतलाया जा चुका है। रूसमे मार्क्सवादके आनेसे पहले जिस राजनीतिक आन्दोलनने गरीब जनताके भीतर काम किया था, वह नरोद्निक (जनवादी) आन्दोलन था, जो कि इसी समय शुरू हुआ था। यह दल किसान और मजदूर दोनोंमे काम करता था, लेकिन वह मजदूरोंको उतना महत्त्व नही देता था। उसकी सबसे कमजोर बात यह थी, कि वह मार्क्सवादका विरोधी था। हमारे यहाके कितने ही वामपक्षियोंकी तरह नरोद्निक जोर देकर कहते थे, कि (१) रूसके लिये पूर्जीवाद एक आकस्मिक घटना है, इसका यहां विकास नही होगा, इसलिये सर्वहारा यहां न बढ़ सकते न विकसित हो सकते हैं। (२) नरोद्निक मजूर-वर्गको क्रातिका सबसे अग्रणी वर्ग नही मानते थे। वह विश्वास करते थे, कि बिना सर्वहाराकी सहायतासे ही समाजवाद स्थापित हो सकता है। वह मानते थे, कि बुद्धिजीवियोंके नेतृत्वमे किसान ही क्रांतिकारी शक्ति है, और किसानोंका पंचायती जीवन ही समाजवादका अंकुर तथा नीव होगा। नरोद्निक नही मानते थे कि किसानोंकी बिखरी शक्ति सेना और पुलिस द्वारा सुरक्षित और मजबूत शासन-यंत्रको नही उखाड फेक सकती। नरोद्निक तरुण-तरुणी बड़ी कुर्बानीके साथ गावमे किसान बनकर रहते अपने विचारोंका प्रचार करते थे। उन्होंने बहुत कोशिश की, कि किसानोंको भड़काकर जमीदारोंके खिलाफ खडा किया जाय, लेकिन वह उसमे सफल नही हुये। १८७४ ई० मे बहुतसे नरोद्निक किसानों-मे पहुंचे थे, लेकिन १८७६ ई० तक वह भारी सख्यामे पकड़ लिये गये, और बचे हुओंने "जेम्ला-इ-वोल्या" (भूमि और स्वतंत्रता) के नामसे एक गुप्त सगठन किया। इसके संस्थापक ग० व० प्लेखानोफ और उसके साथी थे। मार्क्सवादके विरुद्ध "जेम्ला-इ-वोल्या" सगठनने आगे चलकर बकुनिन (१८१४–७६ ई०) के अराजकतावादको अपनाया, जिसकी मांग थी—सब तरहकी सरकारको तुरंत बद कर दो। नरोद्निकोंने वैयक्तिक हत्यापर भी बहुत जोर दिया, और रूसी जनतापर जुल्मके पहाड़ ढानेवाले जारको उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया। लेकिन यह काम नरोद्निकोंके असफल होनेपर "नरोद्नया वोल्या" (जनता संकल्प) पार्टीने किया। वस्तुतः जारके खूनी अत्याचारोंने अब क्रातिकारियोंके दिलमे भय नहीं रहने दिया था। "नरोद्नया वोल्या" ने जार अलेक्सान्द्र II की हत्याके लिये कई बार प्रत्यन किये। फर्वरी १८८० ई०मे हेमन्त प्रासादमे स्तेपान खलतुरिन नामक एक मजदूर-क्रांतिकारीने बम रक्खा, लेकिन उससे जारको कोई चोट नही पहुंची, और अब वह ज्यादा सावधान रहने लगा। हेमन्त प्रासादको भी खतरेका स्थान समझकर वह वहा अधिक नही रहता था। अन्तमे १ मार्च १८८१ ई०को "नरोद्-नया वोल्या"के सदस्योंने अलेक्सान्द्र II की हत्या करनेमे सफलता पाई, और इसी हत्यामें शामिल होनेके संदेहपर लेनिनके भाईको भी फासीपर चढ़ना पड़ा।

मध्य-एसियामें प्रसार—निकोलाइ I के समयमे किस तरह अराल समुद्रसे अल्ताई तकके प्रदेशको रूस साम्राज्यमे मिला लिया गया, इसे हम बतला चुके है। खीवाके खानने जारको अपना प्रभु मान लिया था, लेकिन खोकन्द और बुखारा अभी जारशाही जूयेके नीचे नही आये थे। १८६५ ई०मे जेनरल चेर्न्यायेफने खोकन्दके खानको हराया, और १८६५ ई०मे ताशकन्द जैसे मध्य-एसियाके आर्थिक केंद्रको अपने हाथमे ले लिया। इसके बाद महाराज्यपाल काफमानने १८६८ ई०मे बुखाराके विरुद्ध अभियान किया, और जारकी सेनाने अमीरको हराकर समरकन्दको ले लिया। इस पराजयके बाद अमीर-बुखारा अब जारका एक सामन्त भर रह गया। १८७३ ई०के वसंतमे रूसी सेनाको फिर खीवा के खानके विरुद्ध जाना पड़ा, लेकिन खानने बिना लड़ाईके ही जारके अधीन होना स्वीकार कर लिया। अमीरों और खानोंके ऐशोआराममे जारशाही उसी तरह कोई दखल नही देना चाहती थी, जैसे भारतके राजा और नवाबोंके मौज-मेलेमे अंग्रेज बाधा नहीं डालते थे। लेकिन वहांकी जनता चुपचाप रूसियोंके

शासन और शोषणको बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थी—रूसी मध्य-एसियाको कच्चे मालकी खान मानते थे। १८७५-७६ ई०मे खोकन्दके मुल्लोंने रूसके विरुद्ध जहाद घोषित की, जिसे क्रूरतापूर्वक दबा देनेमे रूसियोंको देर नही लगी, और साथ ही उन्होंने खोकन्दके खानको खतम करके फर्गानाके नामसे उसे रूसका एक प्रदेश बना दिया। अलेक्सान्द्र II के शासनके अन्तिम कालमें तुर्कमानोंपर भी रूसने अपना हाथ फैलाना शुरू किया। १८८० ई०में जेनरल स्कोबेलेफने तेक्के तुर्कमानोंको अपने अधीन किया, और अगले साल उसने ग्योकतेपेपर अधिकार करके अश्काबादको ले लिया। १८८४ ई० मे अलेक्सान्द्र III के शासनकालमे मेर्वको भी लेकर सारे तुर्कमानोंमे रूसियोंका शासन स्थापित हो गया, और १८८५ ई०मे अफगानिस्तानके किले कुश्कको लेकर रूसने मध्य-एसियाके अपने सीमांतको पूरा कर दिया। इस विजयके बाद अब मध्य-एसियामे रूसी डाक्टर, शिक्षक, विज्ञानवेत्ता और बड़ी संख्यामे मजदूर भी जाने लगे, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके लोगोंपर पडने लगा।

साइबेरिया और चीन—आमूर-उपत्यकामें किस तरह मुरावेफने रूसी सीमाका विस्तार अपने प्रथम अभियान द्वारा किया, इसे हम बतला चुके है। निकोलाइ I मर चुका था, लेकिन मुरावेफने अगले जारके शासनकालमे भी अपने कामको जारी रक्खा। पहले अभियानसे भी बड़े पैमानेपर अगस्त १८५६ ई०मे एक दूसरा अभियान आमूर नदीके साथ-साथ नीचेकी ओर भेजा गया, जिसमें स्त्री-पुरुष सब मिलाकर आठ हजार आदमी थे। अभियानको तीन भागों में विभक्त करके अलग-अलग स्थानोंसे प्रयाण करने का प्रबंध किया गया था। चीनी समझने लगे कि अब रूसी निम्न आमूरको सदाके लिये अपने हाथमें कर लेना चाहते हैं, इसलिये उन्होंने ऐगुनमे आनेपर विरोध प्रकट किया। ९ सितम्बर को मरुन्स्कमें एक सम्मेलन किया गया। मुरावेफ बीमार होनेसे शामिल नहीं हो सका, और उसने अद्मिरल ज्वोइकोको अपने स्थानपर भेजा। रूसियोंका इसी बातपर बराबर जोर था, कि युरोपीय शत्रुओंसे प्रतिरक्षा करनेके लिये हमें आमूरके मुहानेकी अवश्यकता है, जिन स्थानोंको हमने लिया है, अब वह रूसकी सम्पत्ति है, और आमूरके बायें तटपर हमें रूसी बस्तियां बसानी हैं, जिसमें नदीका रास्ता सुरक्षित रहे। रूसी विदेश-विभागने चीनसे बातचीत करनेमें कुछ नरमीसे काम लेना चाहा था, यह बात मुरावेफको पसद नहीं आई, और उसने स्वयं पीतरबुर्ग जाकर चीनके साथ नये संधिके बारेमे बातचीत करनेके लिये अपनेको राजप्रतिनिधि नियुक्त करवाया। मई १८६५ ई० के मध्यमें कोर्साकोफके नेतृत्वमें तीसरा अभियान रवाना हुआ। रूसी जहाजोंके आमूरमें आने-जानेपर चीनी कोई रुकावट डालना नही चाहते थे, लेकिन आमूरके बायें तटपर रूसी बस्तियोंका बसाना वह पसंद नही करते थे। उन्हे यह देखकर भी बहुत बुरा लगा, कि चीन-अधिकृत नगर ऐगुनके सामने दूसरे तटपर जेया नदीके संगमपर पांच सौ रूसी डेरा डाले पड़े हैं। तीसरे अभियानने भी बिना किसी रुकावटके अपनी यात्रा समाप्त की।

१८५७ ई० मे नये अधिकार प्राप्त कर मुरावेफ फिर साइबेरिया लौट एक और बड़े अभियानकी तैयारी करने लगा। अबकी बार वह चाहता था, कि जगह-जगहपर रूसी बस्तियां बसा दी जायं, इसलिये वह अपने साथ अधिकसे अधिक प्रवासियोंको ले आया था। आदमियोंकी कमीको पूरा करनेके लिये उसने जेलोसे एक हजार कैदियोंको मुक्त कर दिया, और वह नई बस्तियोंमें जाकर खेती करनेके लिये तैयार कर दिये गये। उनमेसे जिनके पास बीबियां थीं, उन्हें उन्होंने अपने साथ ले लिया। जिनके पास बीबियां नही थीं, उन्हे मुरावेफने शादी कर लेनेके लिये कहा। एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी प्रत्यक्षदर्शी राजुल क्रोपत्किन ने इसके बारेमें अपने संस्मरणोंमें लिखा है—"मुरावेफने कठोर कैदमें पड़ी सभी कैदी स्त्रियोंको—जिनकी संख्या करीब एक सौ थी—मुक्त करके पुरुष चुननेके लिये कहा। समय बीता जा रहा था, और नदीका पानी कम होता जा रहा था, बेड़ेको जल्दी प्रस्थान करना था, इसलिये मुरावेफने उन्हे जोड़े-जोड़े तटपर खड़ा होनेके लिये कहा, और फिर यह कहते हुये आशीर्वाद दिया—"बच्चो, मैं तुम्हारा व्याह कराता हूं, एक दूसरेके साथ मेहरबानीसे बर्ताव करना। पुरुषो, तुम अपनी बीबियोंसे बुरा बर्ताव नही करना। आओ आनन्दसे रहो।"

फ्रांस और इगलैंड इस समय रूसके मुख्य प्रतिद्वंद्वी थे। वह पेचिङ (पेकिङ) में रूसके खिलाफ अपनी कार्रवाई निराबाध रूपसे करते जा रहे थे, इसलिये रूसको वहां अपने राजदूतके रखनेकी

अवश्यकता थी। जारने अद्मिरल पुतियातिनको चीन दरबारमें अपना दूत बनाकर भेजा। अंग्रेजोंकी तरह रूसियोंकी भी धारणा थी, कि पूर्वी लोग तड़क-भड़क से अधिक प्रभावित किये जा सकते हैं। मुरावेफने चीनियों पर प्रभाव डालनेके लिये रूसी राजदूतके आनेपर क्याखतामें भारी स्वागतकी तैयारी की, नगरमें दीपमाला जलाई गई, रूसी सेनाने कवायद-परेड की। लेकिन चीनियोंपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पेकिङसे हुक्म आनेका बहाना करके चीनियोंने राजदूतको आगे बढ़नेसे रोके रक्खा। पुतियातिनने इसपर आमूर द्वारा ऐगुन पहुंच और वहांसे पेकिङ जानेकी इजाजत मांगी, लेकिन वहां भी चीनियोंने रास्ता नहीं दिया। पुतियातिन जबर्दस्ती जाना चाहता था, लेकिन मास्कोकी आज्ञा बिना ऐसा करना मुरावेफको पसंद नहीं था। इसपर पुतियातिनने समुद्रके रास्ते पेकिङ जानेका निश्चय किया। आमूरके द्वारा २४ जलाई १८५७ ई० को वह उसके मुहानेपर पेइ होमें पहुचा। वहां भी पेकिङ जानेके लिये चीनी अधिकारियोंसे बहुत माथापच्ची की, लेकिन कोई फायदा नही हुआ। वहांसे फिर वह शांघाई पहुंचा, और ब्रिटिश और फ्रेंच नौसेनासे मिलकर उन्हें पेइ-होके मुहानेपर घेरा डालनेका परामर्श दिया। चीन अभी फ्रांस और इंगलैंडको अपने विरुद्ध करके उनकी तोपोंकी मार खा चुका था, इसलिये वह रूसको भी अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहता था।

११ मई १८५७ को मुरावेफ अपने मामूली अभियानोंके दौरानमें ऐगुनमें ठहरा। वहां उसने चीनी सेनापति राजकुमार शानसे भेंट करके अपनी मांग रक्खी। चीनियोंने कुछ आनाकानी करनेके बाद उसे मंजूर किया। छ दिनके भीतर ही बातचीत खतम हो गई, और १६ मई १८५८ ई०को ऐगुन-संधिपर हस्ताक्षर भी हो गया। इस संधि द्वारा चीनने आमूरके बाम तटपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और उसुरीके संगम तक दक्षिण तट चीनका माना गया। उसुरीके संगमसे आगे समुद्र तककी भूमिकी सीमाका निर्णय आगेके लिये छोड़ रक्खा गया। दोनोंने नदी द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार और यात्रा करनेके अधिकारको भी मंजूर किया। मुरावेफने कृपा दिखलाते हुये यह मंजूर किया, कि रूसी तटके ऊपर जेयाके पासमें रहनेवाले मंचू चीनकी प्रजा रहेंगे। इस बड़ी सेवाके लिये जार अलेक्सान्द्र II ने मुरावेफको "काउन्ट (ग्राफ) आमूर्स्की" की उपाधि प्रदान की। मुरावेफने रास्ता साफ कर दिया, इसलिये पुतियातिनको जून १८५८ ई०में तियान्त्सिनकी शांति-मित्रता-व्यापार नौचालन-संधि करनेमें कोई रुकावट नहीं हुई। लेकिन पुतियातिनको ऐगुन-संधिका पता नहीं था। तियान्त्सिनकी संधिने चीनके खुले बन्दरगाहोंमें रूसको व्यापार करनेकी इजाजत दी, और दूसरे राज्योंने जहां अपने वाणिज्य-दूत स्थापित किये हैं, वहां रूसियोंको भी वैसा करनेकी स्वीकृति दे दी। यदि कोई रूसी आदमी चीनमें रहते कोई अपराध करे, तो उसे सबसे समीपवाले रूसी वाणिज्य-दूतके पास या सीमांतके बाहर भेजनेकी बात मानी गई। इस संधिने रूसी ईसाई-मिशनरियों और उनके चीनी अनुयायियोंके लिये भी रक्षाका विशेष अधिकार प्रदान किया। संधिपत्र रूसी, मंचूरी और चीनी तीन भाषाओंमें लिखा गया था और माना गया था, कि यदि किसी वाक्यके बारेमें विवाद हो, तो मंचूरी भाषाका अभिलेख सर्वोपरि प्रमाण माना जायगा।

चीनको नोचनेके लिये इस समय पश्चिमी युरोपके राज्य गिद्धकी तरह चिमटे हुये थे, वह हर तरहसे उसे दबाना चाहते थे। २६ जून १८६० ई०में एक बहाना करके उन्होंने अपनी सेनायें भेज दीं, जो लड़ती हुई पेकिङतक पहुंच गई और वहांके कला और सौन्दर्यके सुन्दर संग्रहालय युवान-मिङ-युवानके प्रासादको लूट लिया। मालूम हो रहा था, पश्चिमी शक्तियां चीनसे मंचू-वंशको खतम करके छोड़ेंगी, लेकिन निरंकुश राजतंत्रको कायम रखना जारशाहीने अपना कर्त्तव्य मान लिया था। इसी समय रूसी दूत इग्नतियेफ मंचू-वंशका संरक्षक बनकर पेकिङ पहुंचा, जिसने पश्चिमी राज्यों और मंचू-वंशके बीचमें संधि करा दी। इग्नतियेफने पश्चिमी सेनाओंके पेकिङ जानेसे पहले ही फ्रेंच दूतसे तियान्त्सिनमें सुन लिया था, कि पश्चिमी शक्तियां पेकिङमें बराबरके लिये अपनी सेना नहीं रखना चाहतीं। उसने चीनके महामंत्री कुङकोसे यह बात छिपाकर बतलाया, कि मैं कोशिश करूंगा, कि अंग्रेज और फ्रेंच सेनायें पेकिङ छोड़कर चली जायं; लेकिन शर्त यह है, कि चीन ऐगुन-संधिको स्वीकार करे, और उसुरी-संगमसे समुद्र तकके भागको रूसको दे दे। पेकिङको शत्रु-सेनाओंसे मुक्त करानेके लिये चीन सब कुछ करनेको तैयार था। २४ अक्तूबरको इंगलैंडके साथ और २५ को फ्रांसके

साथ संधि करानेमें इग्नतियेफने तत्परता दिखलाई। ५ नवम्बरको पश्चिमी सेनायें पेकिङ छोड़कर चली गई। अब अपने इनामके रूपमे इग्नतियेफने १४ नवम्बरको हस्ताक्षरित होनेवाली चीन-रूस-संधिको करवाया, जिसके द्वारा प्रशान्त महासागरके तट तकका एक बहुत भारी भूभाग चीनके हाथसे निकल आया।

येर्मक और खबारोफके साइबेरियामे उठाये हुये कामको इस प्रकार मुरावेफने पूरा किया। यही तीनों साइबेरियाके लिये जारशाही क्लाइव, हेस्टिंग्स और वेल्जली थे।

१७. अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र (१८८१–९४ ई०)

बापकी हत्याके बाद अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा। उसके समयमें घोर अत्याचारके मारे लोग कराहने लगे। अलेक्सान्द्रको हर वक्त मौतका डर लगा रहता था, इसलिये वह पीतरबुर्ग छोड़कर गाचिनामे रहता, जिससे उसके समसामयिक उसे "गाचिनाका बदी" कहा करते थे। शिक्षित लोग सबसे अधिक जारके निरंकुश शासनके प्रति घृणा रखते थे, इसलिये सार्वजनिक शिक्षाका वह सबसे बडा विरोधी था। तोबोलके राज्यपालने जब उसे सूचित किया, कि साइबेरियामें बहुत कम शिक्षित लोग है, तो उसने जवाबमें कहा—"इसके लिये हमे भगवान्‌को धन्यवाद देना चाहिये।" उसका कहना था—"गाड़ीवानों, कोचवानो, नौकरों, धोबियों, छोटे दूकानदारों आदिके बच्चोंको सिवाय विशेष प्रतिभाकी अवस्थाके उस स्थितिसे ऊचे उठनेके लिये प्रोत्साहित नही करना चाहिये, जिस स्थितिमें कि वह पैदा हुये।" अभी तक रूसी विश्वविद्यालयोंको अपने कुलपति (रेक्टर) और प्रोफेसर निर्वाचित करनेका अधिकार था, लेकिन १८८४ ई०मे नया कानून बनाकर जारने उनसे यह अधिकार छीन लिया। अच्छे-अच्छे प्रोफेसर निकाल दिये गये, और स्त्रियोंके लिये उच्च-शिक्षा एक तरहसे वर्जित कर दी गई।

रूस-भिन्न जातियोंका शोषण और कठोर शासन और बढता गया। अलेक्सान्द्र III ने यहूदियोंको भूमि खरीदने और गांवमे बसनेका निषेध कर दिया। १८८७ ई०में माध्यमिक और उच्च-शिक्षण संस्थाओंमे यहूदी विद्यार्थियोंके लिये उसने संख्या निश्चित कर दी। उदमूर्त जैसी कितनी ही जातियोंको ईसाई बनानेके लिये मिशनरियोंको प्रोत्साहन दिया गया। जो उदमूर्त अपने बाप-दादोंके धर्मको छोड़ना नही चाहते थे, उन्हे देवताओंके सामने नर-बलि करनेका अपराध लगाकर कठोर दंड दिया जाता था।

जारशाहीका ध्यान अब मध्य-एसियाकी ओर विशेष तौरसे गया था। वहांसे कपासकी गांठें रूसके कारखानोंमे भेजी जाती थीं। पहले वह ऊटोंपर लदकर आती थीं, अब उसके लिये रेलके बनानेकी अवश्यकता पड़ी। १८८० ई०के बाद समरकन्दको रेलद्वारा कास्पियन-तटसे मिला दिया गया। कास्पियनके दूसरे तटपर रूससे मिलानेवाली रेल इससे पहले ही तैयार हो गई थी। लेकिन रूस जिस तरह मध्य-एसियामे बढ रहा था, उसे अंग्रेज नहीं पसंद करते थे। रूस अब अफगानिस्तानका पड़ोसी था। हमें मालूम है, कि अंग्रेज सरकार रूसका ही डर बतलाकर भारतके वार्षिक बजटका बहुत भारी भाग पश्चिमोत्तर सीमांतकी सैनिक तैयारीपर खर्च करती थी। १८८५-८६ ई० में निश्चित मालूम हो रहा था, कि रूस और इगलैडमें लड़ाई छिड़ जायेगी, लेकिन १८८७ ई०में रूस और ईरानकी सीमा, और १८९५ ई० में रूस और अफगानिस्तानकी सीमाको ठीक कर देनेसे युद्धकी सम्भावना कम हो गई।

जिस वक्त इंगलैंडके साथ रूसके संबंध बिगड़ रहे थे, उसी समय फ्रांसके साथ उसके संबंध अच्छे हो रहे थे, जिसके कारण फ्रांसीसी पूंजी बहुत भारी परिमाणमें रूसमें लग रही थी, और फ्रांसीसी सरकारने जारशाहीकी बात मानकर रूसी क्रांतिकारियोंके ऊपर अपने यहां देख-रेख रखनेका वचन दिया। जर्मनी बिस्मार्कके नेतृत्वमे बहुत एकताबद्ध और शक्तिशाली हो चुकी थी। १८७० ई०में एक बार विजयिनी जर्मन सेना पेरिसमें पहुंच चुकी थी, इसलिये फ्रांस रूसके साथ घनिष्ठता स्थापित करना चाहता था। १८९१-९३ ई० में फ्रांस और रूसके बीच कई संधियां हुईं, और जर्मनीके आक्रमण करनेपर आठ लाख सेना भेजनेका रूसने वचन दिया था।

प्रथम मजदूर आन्दोलन—यद्यपि बकुनिन-जैसे बुद्धिजीवी क्रांतिकारी मार्क्सकी अपेक्षा स्वाप्निक (उटोपियन) समाजवादकी तरफ अधिक आकृष्ट हुये थे, लेकिन रूसके मजदूरोंमें मार्क्सके विचार पहले ही पहुंच चुके थे, जैसा कि मार्च १८७० ई०मे प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय (इन्टर्नेशनल) महापरिषद्में प्रवासी रूसी क्रांतिकारियोंके कार्ल मार्क्सको रूसका प्रतिनिधि बनानेसे मालूम होता है। मार्क्सने उनकी बातको स्वीकार करते हुये जवाबमें लिखा था—"रूसमें जारशाहीका विनाश सिर्फ रूसी जनताके लिये ही आवश्यक नही है, बल्कि युरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति भी उसीपर निर्भर करती है।" हम देख चुके हैं, कि युरोपकी जन-क्रातियोंको दबानेके लिये रूसी जार हमेशा खुलकर अपनी सेना और पैसा देनेके लिये तैयार थे। १८७१ई०में फ्रांसपर जर्मनीके विजय होनेके बाद पेरिसके कमकरोंने "पेरिस कमून"के नामसे विश्वमें प्रथम कम्युनिस्ट सरकार कायम की, रूसी कमकरोंने उसके साथ अपनी सम्मति और सहानुभूति दिखलाई। १८७८ ई०मे पेरिस कमूनके वार्षिकोत्सवके समय अदेसाके मजदूरोंने अपनी सद्भावनाके संदेश भेजे। १८७० ई०के बाद नरोद्निकोंके कार्यक्रमके असफल होनेपर क्रांतिका स्रोत वहीं सूख नही गया, बल्कि अब मजदूरोंने क्रांतिके झंडेको अपने हाथमें लिया। मई १८७० ई० में पीतरबुर्गकी नेवा कपड़ा मिलमें मजदूरोंकी पहिली सबसे बड़ी हड़ताल हुई, जिसको तोड़ने और मजदूरोंको दबानेमें जारशाहीको काफी दिक्कत उठानी पड़ी। यह पेरिस-कमूनकी स्थापनाके एक साल पहिलेकी घटना है। १८७५ ई० में उक्रइनमें कारखानेके डेढ हजार मजदूरोंने हड़ताल की। १८७७ ई०में अदेस्साके रेलवे मजदूरोंने साढ़े तीन सप्ताह तक अपनी हड़तालको चलाया। मजदूरों-की मांग थी—जुरमानोंका कम करना, बच्चोंसे कम घंटे काम लेना। इस तरह हम देखते हैं, कि १८७० ई० के बाद रूसके मजदूरोंमें सामूहिक वर्गचेतना प्रारम्भ हो गई थी। सबसे पहला मजदूर वासिली गेरासिमोफ था, जिसे सिपाहियों और मजदूरोंमे क्रांतिकारी प्रचारके अपराधमें नौ वर्षकी सजा हुई, और वह साइबेरिया (याकुतस्क) में १८९२ ई०में मरा। उस समयका दूसरा मजदूर क्रातिकारी प्योत्र अलेक्सियेफ था। वह स्मोलेन्स्कके एक किसान घरमें पैदा हुआ था, पीछे नरोद्निक दलका सदस्य बना। प्योत्र अपनी शिक्षा और अनुभवसे समझ गया, कि नरोद्निक कार्यक्रमसे सफल क्रांति नहीं हो सकती, इसलिये वह समाजवादी बन कारखानोंके मजदूरोंमें प्रचार करता रहा। मास्कोके मजदूर उसे बहुत प्यार करते थे, और अपने असाधारण स्नेहको दिखलानेके लिये उसे पित्रुस्का कहकर पुकारते थे। प्योत्रको साइबेरिया (याकुतिया) में दस सालकी कालेपानीकी सजा हुई। १० मार्च १८७७ ई०में अदालतमें भाषण देते हुये उसने कहा था—"मजबूत नसोंवाले लाखों मजदूरोंके हाथ उठेंगे, और सैनिकोंकी संगीनोंसे संरक्षित स्वेच्छाचारिताका जूआ चूर्ण-विचूर्ण हो जायेगा।" लेनिनने इसे "रूसी मजदूर क्रांतिकारीकी महान् भविष्यद्वाणी" कहा था। प्योत्र १९८१ ई०में साइबेरियामें डाकुओंके हाथों मारा गया।

प्रथम क्रांतिकारी मजदूर संगठन १८७५ ई०में अदेस्सामें "दक्षिणी रूसी मजदूर संघ" के नामसे युगेनी जास्लाव्स्की द्वारा स्थापित हुआ। इस संघने मार्क्सके प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंको अपनाया था। इस संघके डेढ-दो-सौ धातु-कमकर सदस्य बने थे। इसकी कई शाखायें खुलीं, और करीब साल भर तक जीवित रहकर जारशाही अत्याचारोंने इसे छिन्न-भिन्न कर दिया। जास्लाव्स्की-को दस सालकी सजा दी गई, और वह थोड़े दिनों बाद जेल हीमें मर गया।

दक्षिणके मजदूरोंके संगठनको देखकर पुलिसके हाथों वहांसे भागकर एक मिस्त्री (फिटर) विक्तर अबनोर्स्की उत्तरकी ओर आया, और उसने उस समयके एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्तेपान खल-तुरिनके साथ मिलकर १८७८ ई०में पीतरबुर्गमे "रूसी मजदूरोंका उत्तरी संघ" स्थापित किया। इस संघने हड़तालोंके संचालनका काम भी अपने हाथमें लिया। वह अपना गुप्त प्रेस खोलकर मजदूर क्रांतिकारी पत्रिका "रबोचया जार्या" (कमकरोंकी उषा) का प्रथम अंक निकालने जा रहा था, इसी समय पुलिसने आकर प्रेसको छीन लिया, और पत्रिका निकल नहीं सकी। १८८० ई०में पुलिसने उत्तरी संघको छिन्न-भिन्न कर दिया। विक्तर अबनोर्स्कीको दस सालकी सजा हुई, स्तेपान खलतुरिन इधरसे निराश होकर नरोद्निकोंके आतंकवादमें भाग लेने लगा, और १८८२ ई०में अलेक्सान्द्र II को मारनेके प्रयत्न करनेमें उसे फांसीपर चढ़ा दिया गया।

शिक्षा और संस्कृति——जार शिक्षा और विज्ञानके प्रचारसे कितने डरते थे, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। लेकिन सरकारके सैनिक और असैनिक विशाल यंत्र को चलानेके लिये शिक्षितोंकी अवश्यकता थी, पर वह उसका कमसे कम प्रचार चाहते थे। लेकिन कालबली के सामने जारोंकी क्या चलती ? अब पूंजीवादी युग आरम्भ हो चुका था, जिसके लिये शिक्षाके अधिक व्यापक रूपने फैलानेकी अवश्यकता थी। किसानोंकी अर्धदासताके उच्छेदके बाद गांवोंमें भी शिक्षाकी मांग हुई, और ऐसे ही ग्राम-स्कूलोंके सगठनमे विशेष भाग लेनेवाला लेनिनका पिता इलिया निकोलाइ-पुत्र उलियानोफ (१८३१-८६ ई०) था, जिसने सिबिर्स्ककी गुबर्निया (प्रदेश) में बहुत काम किया। अब १८६० ई०के बाद लड़कियोंके भी स्कूल कायम होने लगे, और पीतरबुर्गमें एक महिला विद्यालय और मेडिकल स्कूल (१८७० ई० के बाद ही) खोला गया।

रूसी सामन्तशाहीकी तरफसे यद्यपि विज्ञान-प्रचारके लिये वैसा कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता था, जैसा कि पश्चिमी युरोपमें देखा जाता था, लेकिन रूसी जातिके पास प्रतिभा मौजूद थी, इसलिये वह ऊपर आनेके लिये प्रयत्न किये बिना नही रह सकती थी। विश्वविख्यात रसायनशास्त्रवेत्ता दिमित्रि इवान-पुत्र मेन्देलेयेफ (१८३४–१९०७ ई०) इसी समय अपनी खोजों द्वारा दुनियाकी विद्वन्मंडलीको चकित कर रहा था। उसकी बनाई "रासायनिक तत्त्वोंकी युगक्रमिक पद्धति" को सारे संसारने स्वीकार किया। लेकिन अलेक्सान्द्र III ने इस विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ताको उसके स्वतंत्र विचारोंके लिये पीतरबुर्ग विश्वविद्यालयसे निकाल दिया। इस कालके दूसरे विज्ञानवेत्ता शरीरशास्त्री इवान मिखाइल-पुत्र सेचेनोफ और वनस्पतिशास्त्रवेत्ता क० अ० तिमिरियाजोफ (१८४३–१९२० ई०) थे। तिमिरियाजोफकी खोजोंका सम्मान सारी दुनियाने उसके जीवनमें ही किया। लेकिन यह दोनों विज्ञानवेत्ता जारके कोपभाजन हुये। तिमिरियाजोफका यह सौभाग्य था, कि उसने बोल्शेविक-क्रांतिको अपनी आंखोंके सामने सफल होते देखा, और कम्युनिस्ट सरकार और रूसी जनताके महान् सम्मानको प्राप्त किया।

साहित्य——इस कालके प्रगतिशील पत्रकारों और समालोचकोंमें दिमित्रि इवान-पुत्र पिसारोफ (१८४०–६८ ई०)का विशेष स्थान है। यह २८ ही वर्षकी उमरमें मर गया, लेकिन इतने ही कालमें उसने स्वेच्छाचारी शासकोंके दिलको दहला दिया। उन्होंने उसे पीतर-पावल-दुर्ग (लेनिन-ग्राद) में १८६२–६६ ई० में बद रक्खा। जेलमें रहते हुये भी पिसारोफकी कलम बंद नहीं हुई।

कवि नेक्रासोफ और समालोचक सल्तिकोफ-श्चेद्रिनके सम्पादकत्वमें "अतेचेस्तव्येन्नीये जापिस्की" (मातृभूमिकी टिप्पणियां) एक प्रभावशाली जनतंत्रवादी पत्रिका निकलती थी, जिसका बहुत प्रचार था, विशेषकर नरोद्निक क्रांतिकारियोंमें। उसके बाद इस पत्रिकाका सम्पादक न० क० मिखाइलोव्स्की हुआ, जो क्रातिका पक्षपाती होते हुये भी अपने अवैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रतिगामी दार्शनिक विचारोंके कारण लेनिनकी कड़ी समालोचनाका पात्र हुआ।

अब रूसके साहित्यकारोंने गोगल और पुश्किनकी कलमको इतना आगे बढ़ाया, कि प्रसिद्ध विचारक एगल्सको लिखना पडा——"रूसी भाषा कितनी सुदर है, इसमें भयंकर भद्देपन को छोड़कर जर्मन भाषाके सभी गुण मौजूद हैं।" इसी कालमें इवान सेर्गेइ-पुत्र तुर्गेनेफ (१८१८--८३ ई०) जैसा रूसका महान् लेखक पैदा हुआ। "एक शिकारीके पत्र" में उसने जमींदारोंके नीचे कराहते अर्धदास किसानोंके जीवनका चित्र खीचा था। "अमीरोंका घोंसला", "रूदिन", "संध्याकों", "पिता और पुत्र" उपन्यासोंमें उसने १८४० और १८६० ई०के आसपासके रूसके सामाजिक जीवनका स्पष्ट चित्र उपस्थित किया है। अपने "धुआं", "बंजर भूमि" में भी उसने उसी तरहमे अपनी लेखनीका चमत्कार दिखलाया है। तुर्गेनेफ किसानोंकी मुक्ति चाहता था, और अर्धदासताके उच्छेदको अवश्यम्भावी बनानेमें उसकी लेखनीने भी काम किया था। इसी समयका महान् साहित्यिक सूर्य फ०म० दोस्तोयेवेस्की (१८२१–८१ ई०) था, जिसका उपन्यास "गरीब लोग" १८४० ई०के बाद निकला और जल्दी ही प्रसिद्ध हो गया। उसके दूसरे कथाग्रंथ "मृतक ग्रह के संस्मरण", "अपर ध और दंड", "मूर्ख", "करमाजोफ भाई" जैसी रूसी साहित्यकी अमर कृतियां इसी समय लिखी गईं। लेव लेव तालस्त्वा (ताल्स्ताय १८२८-१९१० ई०) जैसी प्रतिभा इसी समय प्रकट हुई। उसके ग्रंथ १८५० ई०

बनकर लड़ा, और १९२३ ई० में मरा। १८९१ ई० में पीतरबुर्गमें मार्क्सवादियोंने मई-दिवसके बहानेसे प्रथम गुप्त क्रांतिकारी बैठक बुलाई। इसमें एक बुनकर मजदूर अफनासियेफने उपस्थित मजदूरोंसे पुकारकर कहा—"साथियो, हम जरूर सीखेंगे, जरूर संगठित होंगे, और अपनेको एक मजबूत पार्टीके रूपमे संघबद्ध करेंगे।" लेनिनने पीतरबुर्गके मजदूरोंके इस पहले प्रयासके बारेमें लिखा था—"१८९१ ई०का साल शेलगुनोफकी श्मशानयात्राके प्रदर्शनमे पीतरबुर्गके मजदूरोंके भाग लेनेके लिये विशेष तौरसे उल्लेखनीय है, और वह पीतरबुर्गमें मई-दिवस मनानेके समय दिये गये राजनीतिक व्याख्यानोंके लिये भी विशेष तौरसे उल्लेखनीय है।" न० व० शेलगुनोफ सारे जीवनभर मजदूरों और गरीबोंकी स्वतंत्रताके लिये काम करता रहा। मरनेके समय मजदूरोंने उसे अभिनन्दन-पत्र भेट किया था।

अलेक्सान्द्र III के शासनकालमें पूंजीवादी उद्योगका विस्तार बहुत हुआ, रेलोंका भी प्रसार बढ़ा। लेकिन जारशाही कालमे रूसमें विदेशी पूंजी सबसे अधिक लगी हुई थी, जिसमें भी फ्रेंच और बेल्जियन पूंजीपतियोंका भाग अधिक था। किसानोंकी अर्धदासता खतम हो गई थी, लेकिन अब भी उनका शोषण कम नही हो रहा था।

१८. निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र (१८९४–१९१७ ई०)

रूसका यह अन्तिम जार बहुत कमजोर दिमागका, किंतु बड़ा ही घमंडी और क्रूर था। प्रगतिशील विचारोंके प्रति घृणा उसने अपने बाप-दादोंके खूनसे पाई थी। १८९६ ई०में सिंहासनारोहणके समय मास्कोमें एक महामेलेका प्रबंध किया गया था, जिसमे लाखों आदमी आये, किंतु सरकारकी ओरसे व्यवस्थाका कोई प्रबंध नही किया गया, जिससे हजारों नर-नारी और बच्चे पैरोंके नीचे दबकर मर गये। उस घटनाके दूसरे दिन सबेरे निकोलाइ II अपनी स्त्री और विदेशी अतिथियोंके साथ घटना-स्थलपर आया। लाशोंको हटा लिया गया था और खूनके दागोंपर बालू डाला जा रहा था। इतनी बड़ी दुर्घटना हो जानेके बाद भी उस शामको निकोलाइ अपनी बीबी अलेक्सान्द्राके साथ मस्त होकर नाचता रहा, मानो कुछ हुआ ही नही। इसपर यदि रूसी जनता निकोलाइको "खूनी" की उपाधि दे, तो क्या आश्चर्य ?

मध्य-एसियापर रूसके पूजीवादी विस्तारका खास तौरसे बड़ा प्रभाव पड़ रहा था, क्योंकि रूसी कपड़ामिलोंके लिये कपास वहीसे आती थी। खोकन्दके राज्यको अब फरगाना-उपत्यकाके नामसे कपासकी उपजका केंद्र बना दिया गया था। धनी खेत-मालिक अपने असामियोंसे खेती करवाकर नफा उड़ाते थे, और साधारण जनता भूखों मरती थी। ऊपरसे १८९० ई०के करीब सरकारी कर तिगुना बढ़ गया था। इन अत्याचारोंको बर्दाश्त करते-करते लोग तंग आ गये, और मई १८९० ई० में अन्दिजान नगरमे बलवा हो गया। इसके लिये ईशान (सत, मुल्ला) मुहम्मद अली जैसा एक प्रभावशाली धार्मिक नेता अगुवा बना था। फरगानासे बाहर भी भीतर ही भीतर आन्दोलन और संगठन किया गया था। हथियारोंका भी संग्रह हुआ था, जिसमे अंग्रेजी बन्दूकोंको अफगान व्यापारियोंने विद्रोहियोंके पास पहुंचाया था। १८ मई १८९८ ई० की रातको दो हजार हथियारबंद उज्बेक और किर्गिज अन्दिजानकी छावनीपर चढ आये, और उन्होंने नगरपर अधिकार करना चाहा। "गजवा" (जहाद) की घोषणा पहिले हीसे हो गई थी, इसलिये मध्य-एसियाकी मुस्लिम जनता जारशाहीकी विरोधी तथा विद्रोहियोंकी पक्षपाती थी। लेकिन रूसकी सैनिक शक्तिके सामने ये थोड़े-से लोग क्या कर सकते थे ? मुहम्मद अली और उसके उन्नीस साथी फांसीपर चढ़ा दिये गये, ३४८ उज्बेकोंको लम्बी-लम्बी सजायें हुई। जारशाही पुलिसने लोगोंपर गजब ढाया, तीन उज्बेक गांवोंको उजाड़कर वहां रूसियोंको लाकर बसा दिया, दूसरे गांवोंपर भारी सामूहिक कर लगाये।

लेनिन—रूसकी इस राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमिमें व्लादिमिर इलिया-पुत्र उलियानोफका जन्म २२(१०) अप्रैल १८७० ई०को सिम्बिर्स्क (उलियानोव्स्क) नगरमें एक स्कूल-शिक्षकके घरमें हुआ। व्लादिमिर उलियानोफ लेनिनके नामसे सब समयके विश्वका महान् पुरुष स्वीकृत किया गया है। इलिया उलियानोफ प्रगतिशील विचारोंका बुद्धिजीवी पुरुष था।

उसके सभी बच्चोंने क्रांतिमें भाग लिया। लेनिनके सबसे बड़े भाई अलेक्सान्द्रको जार अलेक्सान्द्र III को १८८७ ई०में मारनेके प्रयत्नका संगठन करनेके लिये फांसीपर चढ़ा दिया गया। अपने प्रिय भाईकी हत्याका प्रभाव लेनिनके ऊपर सदाके लिये पड़ना ही चाहिये था, किन्तु उसकी पैनी बुद्धिने बतला दिया, कि नरोद्‌निकोंका आतंकवाद सफल क्रांतिका रास्ता नहीं है। बिना साधारण जनताके सहयोग और सहानुभूतिके मुट्ठी भर "वीर" दुनियाको नही बदल सकते। "नही, हम उस पथको नहीं लेंगे, वह जानेका रास्ता नही है—" लेनिनने अपने १७ वर्षके भाई वोलोद्या उलियानोफके फांसी-पर चढ़नेकी खबर सुनकर कहा था। १७ वर्षकी उमरमे लेनिन कजानके विश्वविद्यालयमे दाखिल हुआ, लेकिन विद्यार्थियोके राजनीतिक प्रदर्शनमें भाग लेनेके कारण उसे पकड़कर एक गावमें निर्वासित कर दिया गया। पकड़ते वक्त पुलिस अफसरने लेनिनसे कहा था—"जवान, तुम क्यों विद्रोह कर रहे हो ? देख नही रहे हो, तुम्हारे सामने एक दीवार खड़ी है ?" व्लादिमिरने जवाब दिया—"दीवार, हां वह खड़ी है, लेकिन सड़ी हुई दीवार है, जरा-सा धक्का दो और यह गिर पड़ेगी।" अभी वह व्लादिमिर उलियानोफ ही था, पीछे अपने अन्तर्धान जीवनमे उसे लेनिनका छद्म नाम स्वीकार करना पड़ा। विश्वविद्यालयकी शिक्षासे यद्यपि लेनिन उस समय वंचित हो गया, लेकिन उसने अपने अध्ययनको जारी रक्खा, और जब उसे फिर गांव लौट आनेका मौका मिला, तो उसने मार्क्स और एंगेल्सके ग्रंथोंका बहुत गम्भीर अध्ययन किया। समारा जानेपर वहां उसने मार्क्सवादियोंका प्रथम अध्ययन-चक्र संगठित किया। १८९३ ई०की शरद्‌में वह पीतरबुर्ग गया, जहांके मार्क्सवादियोंने जल्दी ही उसे अपना नेता मान लिया। १८९४ ई०में लेनिनने कई व्याख्यान तैयार करके पढे, जो पीछे "जनताके मित्र कौन हैं और वह कैसे समाजवादी जनतांत्रिकोंसे लड़ते हैं ?" के नामसे प्रकाशित हुये। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि इसमें लेनिनने नरोद्‌निकोंकी खबर ली थी। इस आरम्भिक पुस्तकमें ही लेनिनने भविष्यद्‌वाणी की थी—"जनतांत्रिक तत्त्व.का मुखिया बनकर विद्रोह करके रूसी मजदूर स्वेच्छाचारिताका अन्त करेंगे और विजयी कम्युनिस्ट रूसी सर्वहाराको क्रांतिके लिये खुले क्रांतिकारी संघर्ष के सरल पथपर ले जायेंगे।"

नरोद्‌निकोंसे संघर्ष करते हुये पीतरबुर्गके मार्क्सवादियोंने "मजदूर वर्गकी मुक्तिके लिये संघर्ष का संघ" के नामसे एक संगठन स्थापित किया था। लेनिन इस संघका जल्दी ही नेता हो गया, जिसने उस समय मार्क्सवादी क्रांतिकारी विचारोंके प्रचारके लिये बहुत काम किया और प्रचारक्षेत्रको बढ़ाया। उसके कार्यमें बाबुश्किन, शेल्गुनोफ और दूसरे कर्मी साथ दे रहे थे। १८९५ ई०की शरद्‌से पीतरबुर्गके "संघर्ष संघ"ने मजदूरोको सगठित कर हड़तालोंका नेतृत्व करना शुरू किया। १८९६ ई० में राजधानीके तीस हजार जुलाहोंने जारके सिंहासनारोहणके महोत्सवके समय लेनिनद्वारा तैयार की हुई मांगोंके लिये हड़ताल कर दी। मजदूरोंके दबावके कारण जारशाही सरकारको कामके घंटोंको कम करनेका वचन देना पड़ा। रूसके मजदूरोंको अब क्रांतिका क्रियात्मक पाठ मिलने लगा, वह अपनी शक्ति अनुभव करने लगे। इससे पहले ही दिसम्बर १८९५ ई०मे लेनिनको गिरफ्तार करके जेलमें बंद कर दिया गया था। लेकिन जेलकी दीवारें लेनिनके प्रभाव और नेतृत्वको रोक नहीं सकती थीं। १८९७ ई०में सरकारने लेनिनको तीन वर्षका कालापानी देकर पूर्वी साइबेरियामें (१८९७ ई०से १९०० ई०तक) येनिसेई गुबर्निया (प्रदेश) के मिनुसिन्स्की उयेज्द (जिले) के शुशेन्स्कोये गांव में बंद कर दिया। इसी समय १८९९ ई०में उसने अपने महान् ग्रंथ "रूसमे पूंजीवादका विकास" को लिखकर समाप्त किया। जब लेनिन साइबेरियामें बंद था, उसी समय मार्च १८९८ ई० में "रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टी"की प्रथम कांग्रेस मिन्स्क नगरमें हुई, जिसमें "रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टी"की स्थापना घोषित की गई। सरकारने जल्दी ही पार्टीकी केंद्रीय समितिके लोगों और कार्यमें भाग लेनेवालोंको पकड़ लिया, तो भी वह क्रातिकारी आन्दोलनको बंद नही कर सकी। मार्क्सवादी विचारोंकी मजदूरों पर गहरी छाप पड़ती जा रही थी, और वह रूसी साम्राज्यके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंमें भी फैलने लगे। २० वीं सदीके अन्ततक काकेशसको भी इसकी हवा लगी, जहां किसानोंके विद्रोह अक्सर हुआ करते थे। इसी समय योसेफ बिसारियोनोविच जुग-श्विली मार्क्सवादी क्रांतिके प्रभावमें आया, जो कि २१ (९) दिसम्बर १८७९ ई०में गुर्जीके एक

छोटे-से कस्बे गोरीके एक जूते बनानेवालेके घरमे पैदा हुआ था। तरुण योसेफ "होनहार बिरवानके होत चीकने पात" के अनुसार संघर्षमें भाग लेनेके लिये छटपटाने लगा। स्वयं अशिक्षित होते हुये भी योसेफके माता-पिताने उसे शिक्षा देनेकी कोशिश की, और चाहा कि वह ईसाई-धर्मका पुरोहित बनकर सम्मानका जीवन बिताये। लेकिन ईसाई-धर्मकी पाठशालाके वातावरणमें भी मार्क्सवादने घुसकर उसे अनीश्वरवादी बना दिया। १८९८ ई०मे ही योसेफ तिफलिसके समाजवादी जनतांत्रिक संगठनमें सम्मिलित हो गया था, और इसी समय उसे लेनिनकी प्रथम पुस्तक पढ़नेका अवसर मिला। योसेफ जुगेश्विलीने अपने क्रांतिकारी जीवनमें स्तालिनका छद्म नाम स्वीकार किया था, जो कि उसके गुरु-की तरह ही उसका भी नाम बन गया।

संस्कृति, साहित्य और विज्ञान—१९ वीं सदीके अन्त और २० वी सदीके आरम्भतक रूसी प्रतिभाका लोहा दुनियामें सर्वत्र माना जाने लगा, यद्यपि अंग्रेजोंके गुलाम भारतको रूस देशका तब तक पता नहीं लगा, जब तक कि १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रांतिकी खबर बिजलीकी तरह दुनियामें दौड़ने नहीं लगी। इसी कालमे इलिया मेचनिकोफ (१८४५–१९१६ ई०) जैसा महान् प्राणिशास्त्री, इवान पीतर-पुत्र पावलोफ (१८४९–१९३६ ई०) जैसा अद्वितीय शरीरमनोविज्ञानशास्त्री हुये। बिजलीके प्रथम आर्क-लैम्पका आविष्कारक प० य० याब्लोचकोफ (१८४७–९४ ई०) भी इसी समय हुआ, जिसके बिजलीके लैम्पकी कदर देशमे नहीं हुई, तो वह पेरिस चला गया, जहां १८७६ ई०में उसने अपने आविष्कारको पेटेंट कराया, और पेरिसमें पहलेपहल उसकी बिजली-बत्ती जलाई गई। बाहरके लोग अभी भी नही जानते, कि बिजली-बत्तीका आविष्कारक अमेरिकन नहीं, एक रूसी था। एडिसनने बिजली-बत्तीके आविष्कारक होनेका दावा किया, लेकिन उससे पहले एक दूसरे रूसी आविष्कारक लादिगिनने उस तरह की बिजली बत्ती तैयार कर दी थी, इसलिये अमेरिकन अदालतने एडिसनके दावेको मंजूर नहीं किया। हां, लादिगिनके आविष्कारकी कदर उसकी मातृभूमिमें नहीं हुई और उसका विकास अमेरिकनोंने किया। अलेक्सान्द्र स्तेपान-पुत्र पापोफ (१८५९–१९०५ ई०) ने १८९५ ई०में बेतारके तारका आविष्कार किया। बेतारके तारको इतालियन मार्कोनिका आविष्कार बतलाया जाता है, लेकिन उससे पहले रूसी पापोफ और भारतीय जगदीशचन्द्र बोस उसका आविष्कार कर चुके थे। इन दोनों देशोंकी सरकारोंकी जड़ता और पक्षपातके कारण उन्हें आगे बढ़नेका मौका नहीं मिला। पापोफने १८९५ ई०में युद्धमंत्रीके पास अपने प्रयोगोंके लिये एक हजार रूबल अनुदान करनेके लिये प्रार्थना की थी, जिसका जवाब मिला था—"मै इस तरहके ख्याली पुलावके लिये पैसा देनेकी इजाजत नहीं दे सकता।"

साहित्य और कला—इस कालके साहित्य-गगनके महान् नक्षत्र हैं—अन्तोन पावल-पुत्र चेखोफ (१८६०–१९०४ ई०), और अ० म० गोर्की (१८६८–१९३६ ई०)। इन दोनों महान् लेखकोंकी कितनी ही कृतियोंसे भारतीय पाठक भी परिचित हैं। इन दोनों ही को जारशाहीका कोपभाजन बनना पड़ा था। चेखोफ ४४ वर्षकी उमरमे तपेदिकसे मर गया, गोर्कीने नवीन रूसको अपने सामने फलते-फूलते देखा, और उसके निर्माणमे भाग लिया।

इस कालके चित्रकारोंमें रूसी ऐतिहासिक चित्रकलाका सर्वश्रेष्ठ आचार्य व० ई० सुरकोफ (१८४८–१९१६ ई०), छबि-चित्रकलाका महान् निर्माता व० अ० सेरोफ (१८६५–१९११ ई०), प्रकृतिचित्रणका जादूगर ई० ई० लेवितन (१८६१–१९०० ई०) हुये। संगीतके अद्भुत कलाकार प्योत्र इलिया-पुत्र चेकोव्स्की (१८४०-९३ ई०) का समय भी यही है।

२० वी सदीके आरम्भ होते-होते सामन्तवादी जमीदारों और उनके स्वार्थोंकी रक्षाकी कोशिश करते हुये भी रूस पूजीवादी युगमे पूरी तौरसे प्रविष्ट हो गया। लेकिन उद्योगीकरणमें पश्चिमी युरोप के पूजीपतियोंका सबसे बड़ा हाथ था, फ्रांसीसी और जर्मन बंक इसमें खास तौरसे भाग ले रहे थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमी युरोपीय पूंजीपतियोंका एक अरब सुवर्ण रूबल रूसके उद्योग-धंधोंमें लगा हुआ था। यह सब किसी पुण्यके लिये नही किया जा रहा था, इसे कहनेकी जरूरत नहीं। १८९५ ई०से १९०४ ई० तक अपने इस व्यवसायसे विदेशी पूंजीपतियोंने तिरासी करोड़ सुवर्ण

रूबल नफा कमाया, जो कि उतने समयमे लगाई गई पूंजीसे कही अधिक था। जारकी सरकारपर १९०३ ई०मे तीन अरब सुवर्ण रूबलका विदेशी कर्ज था, जिसपर तेरह करोड़ रूबल प्रतिवर्ष सूद देना पड़ता था। रूसी सामन्त और जमीदार अपने पुराने स्व र्थोंको अक्षुण्ण रखनेमे इतने मस्त थे कि उन्हें अपनी पूजीको इकट्ठा करके उद्योग-धंधोंमे लगानेकी उतनी फिक्र नही थी, जितनी कि पेरिस और दूसरी युरोपकी विलासपुरियोंमें गरीबों के गाढ़की कमाईको उड़ानेमें।

लेकिन अब इस पुराने रूसको बदलनेके लिये एक ठोस क्रातिकारी शक्ति पैदा हो गई थी। १९०० ई०के दिसम्बरमें "इस्क्रा' (चिनगारी) के नामसे लेनिनने अपना पत्र निकाला, जिसके सम्पादनमे प्लोखानोफ और दूसरे समाजवादी जनत्रांत्रिक भी सहायता करते थे। बाहर छपकर वह रूसमे गुप्त रीतिसे भेजा जाता था। अपने मुखपृष्ठपर छपे सूत्र "चिनगारी ज्वाला जलायेगी" के अनुसार सचमुच ही रूसमे ज्वाला जलानेमें उसने बहुत काम किया। पीतरबुर्गके एक जुलाहे पाठक ने इसके बारेमे लिखा था—"जब तुम इस पत्रको पढते हो, तो तुम्हें मालूम होता है कि जारशाही सेना और पुलिस हम कमकरों और हमारे बुद्धिजीवी नेताओंसे क्यों इतना डरते है? ......पुराने समयमे प्रत्येक हड़ताल एक बड़ी घटना थी, किन्तु अब हरएक आदमी जानता है कि केवल हड़ताले कुछ नही हैं, हमे इनके लिये लड़ते हुये मुक्ति भी प्राप्त करनी है।" १९०० ई० और १९०१ ई०में भी प्रथम राजनीतिक प्रदर्शन होने लगे, जिनके द्वारा समाजवादी क्रांतिकारियोंके बढ़ते हुए प्रभावका पता लगने लगा। १९०० ई०के मई-दिवसमें खरकोफके मजदूरों और विद्यार्थियोंने लाल झडेके साथ सड़कोंपर जलूस निकाला था, जिसमें वह नारा लगा रहे थे—"स्वेच्छाचारकी क्षय"। १९०१ ई० का मई-दिवस सारे देशमें हड़तालों और प्रदर्शनोंके साथ मनाया गया। १९०२ और १९०३ ई०में और भी राजनीतिक हड़तालें और प्रदर्शन हुये। १९०२ ई०में किसानोंके भी कई आन्दोलन हुये और उनके पथप्रदर्शनके लिये लेनिनने "गांवके गरीबोंसे" नामकी एक छोटी किन्तु बहुत ही प्रभावशाली पुस्तक लिखी। इस तरह क्रांतिकी शक्तियां बढ़ रही थी, लेकिन दूसरी तरफ इन शक्तियोंमें कमजोरी पैदा करने के लिये नरमदली क्रांतिकारी फूट भी पैदा करने लगे थे। गरमदल के क्रांतिकारी प्रोग्रामको लेनिन और उनके समर्थक मानते थे, जिनका समाजवादी जनतांत्रिक पार्टीमें बहुमत था। इसीलिये लेनिन और उसके अनुयायी बोल्शेविक (बहुमतीय) कहे जाने लगे। नरमदली अल्पमतमें होनेके कारण मेन्शेविक (अल्पमतीय) कहे जाने लगे। १९०३ ई०की जुलाई और अगस्तमे ब्रुसेल्स और पीछे लन्दनमें पार्टीकी जो द्वितीय कांग्रेस हुई थी, उसी समय उसके यह दो टुकडे हो गये। अपनी सूझ, तत्परता और त्यागसे बोल्शेविक मजदूरों और दूसरी शोषित जनतामें अपने प्रभावको बढ़ाते गये, जब कि मेन्शेविक बुद्धि-जीवियोंमें अपनी कलाबाजी दिखानेतक ही अपने कामकी इतिश्री समझते थे।

रूस-जापान-युद्ध (१९०४ ई०)—रूसका प्रसार जिस तरह प्रशान्त महासागर तक हुआ, इसे हम बतला आये हैं। अभी तक उसका प्रतिद्वंद्वी चीन था, जिसकी निर्बल और भष्टाचारपूर्ण सरकार रूसके सामने बराबर दबती रही, अब पूर्वी एसियामें जापान-जैसी एक बड़ी शक्ति पैदा हो गई थी। १८९४-९५ ई० में जापानने चीनको हराकर अपनी शक्तिका परिचय दिया था, और क्षतिपूर्तिकी बहुत भारी रकम तथा कोरिया, पोर्ट आर्थर, ल्याउतुङ-प्रायद्वीपके साथ मंचूरियाके सारे दक्षिणी समुद्रतटपर अपने अधिकारको चीनसे मनवाया था। "कंटकेनैव कंटकम्" की नीतिको अपनाते हुये चीन चाहता था, कि जापानको रूससे भिड़ा दिया जाय। १८९६ ई०में जारके वित्तमंत्रीने चीनी पूर्वी रेल बनवानेके लिये चीनके साथ एक सधि की। इससे पहले साइबेरियाकी रेलवे बन चुकी थी। इस रेलको बनाकर जारशाही रूस मंचूरिया और कोरियापर हाथ साफ करना चाहता था। १८९८ ई० में ल्याउतुङ प्रायद्वीप और उसके पार्ट आर्थर बन्दरगाहको भी रूसने ठीकेपर ले लिया, और उसने जल्दी-जल्दी हर्बिनसे पोर्टआर्थर तक रेल बनानेका काम शुरू कर दिया। इस समय गिद्धकी तरह पश्चिमी युरोपकी शक्तियां चीनमें बन्दरबांट कर रही थीं। जर्मन कैसरने क्याउ चाउके बन्दगाहको दखल कर लिया। इंगलैंडने हांगकांगको तो आधी शताब्दी पहले ही ले लिया था, अब उसने वेई-हाइ-वेइ बन्दर-गाहपर भी अधिकार कर लिया। फ्रांस क्या पीछे रहने लगा? उसने भी अपने हिन्दचीन अधिकृत प्रदेशकी सीमाको चीनके भीतर बढ़ाया। संयुक्त राष्ट्र अमरीकाने सबके लिये "खुला दरवाजा"

मांग करके पूंजीपति घड़ियालोंको चीनमें खुल खेलनेकी माग रक्खी। पश्चिमी शक्तियोंकी इस लूटके कारण चीनी जनतामे बहुत असंतोष हुआ, और १९०० ई० में बक्सरका भयंकर विद्रोह हो गया, जिसके दबानेमे पश्चिमी शक्तियोंके साथ रूसने भी भाग लिया। निकोलाइ II की सरकारने कोरियाकी सीमांत नदी यालू-उपत्यकाके जंगलोंकी लकडीका ठेका एक रूसी कम्पनीको दिलवाया, जिसका अर्थ केवल यही था, कि उसके द्वारा रूसी सेनाको आसानीसे कोरियामें पहुंचाया जा सके। पोर्टआर्थरको भी रूसी नौसैनिक अड्डेके रूपमे परिणत कर दिया गया। जापान यह सब देखते हुये चुप नही रह सकता था और न रूसके प्रतिद्वंद्वी अंग्रेज ही मौकेसे चूकनेवाले थे। दूसरोंको लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करना अंग्रेजोंकी पुरानी नीति थी। उन्होंने १९०२ ई० मे रूसके विरुद्ध जापानसे सैनिक-संधि की, जिससे जापानको बहुत बल मिला।

रूसमे अब भी सामन्ती मनोवृत्ति काम कर रही थी, उद्योग-धन्धोंको पश्चिमके पूंजीपतियोंके सहारे खड़ा किया गया था, जो इस बातका पूरा ध्यान रखते थे, कि औद्योगिक वस्तुओंके लिये रूस हमसे स्वतंत्र न होने पाये। और तो और, सैनिक हथियारोंमे भी रूस परमुखापेक्षी था। शासक वर्गकी अदूरदर्शिता और अयोग्यताके कारण किसी क्षेत्रमे भी प्रतिभायें आगे नही बढ़ने पाती थीं। रूसी सेनापतियों और युद्ध-संचालकोंको चुस्ती किसे कहते है, यह मालूम ही नही था। सुवारोफ, कतुजोफके समयसे सैनिक प्रतिभाओंकी उपेक्षा करके खुशामदी ऐरे-गैरे नत्थूखैरे सामन्त-पुत्रों और जारके कृपापात्रोंको आगे बढ़ाया जाता था। रूस अभी युद्धके लिये तैयार नही है, यह जापानियोंको पता था। सारे मंचूरियामें उसके गुप्तचर फैले हुये थे, जिनसे जापानियोंको सारे भेद मालूम थे। इसी समय २६ जनवरी १९०४ ई०की रातको बिना युद्ध घोषित किये जापानी ध्वंसक पोतोंने अंधेरेमे छिपकर पोर्ट-आर्थरपर आक्रमण कर दिया। इस समय मुख्य सेनापति अद्‌मिरल स्तार्ककी जयन्ती मनाते हुये रूसी नौसैनिक अफसर नाचमे मस्त थे। जापानियोंने रूसके सर्वश्रेष्ठ तीन युद्धपोतोंको डुबा दिया, और २७ के सबेरे बम-वर्षा करके उन्होंने चार और युद्धपोतोंको नुकसान पहुचाया। आरम्भ रूसियोंके लिये बहुत बुरी तरह हुआ, और उसके बाद जारशाही सेना हारपर हार खाती गई। अपने हाथियारों और वीरताकी अपेक्षा ईसाकी मूर्तियोंपर मुख्य सेनापति जेनरल कुरोपात्किनका अधिक विश्वास था। उसने गाड़ियोंमे भर-भरकर युद्ध-क्षेत्रमे ले जा इन मूर्तियोंको बंटवाया। रूसी नौसैनिकों और सैनिकोंने लड़नेमे अपनी आनुवंशिक बहादुरीको दिखलाया, लेकिन हथियारोंके अभाव और सेनापतियोंकी अयोग्यताके कारण वह जापानियोंके खिलाफ पासा नही पलट सके। फर्वरी १९०४ ई० मे रूसी ध्वंसक "स्तेरेगुश्चीने" चार जापानी ध्वसकों और क्रूजरोंका मुकाबिला किया, जिसमेंसे एकको उसने डुबा दिया। आत्मसमर्पण करनेके लिये कहनेपर रूसी नौसैनिकोंने साफ इन्कार कर दिया। और जब उन्होंने देखा, कि हमारा जहाज जापानियोंके हाथमें जाना चाहता है, तो गोलोंकी वर्षाके भीतर दो अज्ञात नौसैनिकोंने नीचे जाकर पानी आनेके रास्तेको खोल दिया, और इस प्रकार अपने जहाजके साथ समुद्रतलमे बैठकर उन्होंने अपनी वीरताका परिचय दिया। पोर्टआर्थरने कुछ समय तक जापानी घिरावेमे रहते हुये प्रतिरोध किया, लेकिन उसे अन्तमें आत्मसमर्पण करना पड़ा।

१९०५ ई०में जारशाही रूसने जापानके हाथों बुरी तौरसे हार खाई, लेकिन रूसकी सैनिक पराजयने क्रातिके आरम्भ करानेका काम दिया।

१९०५ ई० की क्रांति—रूस जापान युद्धके कारण रूसकी आर्थिक अवस्था बहुत ही बिगड़ गई। खर्चकी सीमा नहीं थी। बड़े-बड़े सूदपर विदेशसे कर्ज लेना पड़ा, जिसके लिये कर बढ़ाना जरूरी था; इस प्रकार जीवनोपयोगी सभी चीजोंका दाम बढ़ गया। उधर भारी संख्यामें किसानोंकी सेनामें भरती करनेके कारण खेतीको भी बहुत नुकसान पहुंचा। कारखानोंमें पूंजीपतियोंने मजूरी कम करनी चाही, जिसका परिणाम हुआ हड़ताले। नवम्बर और दिसम्बर १९०४ ई०में ही पीतरबुर्ग, मास्को और दूसरे नगरोंमें बोल्शेविकोंने सड़कोंमें जलूस संगठित किये, जिनका नारा था "स्वेच्छाचारिताकी क्षय, युद्ध बंद करो।" लोगोंके असंतोषको शांत करनेके लिये १२ दिसम्बर १९०४ ई०को घोषणा निकालकर जारने कुछ हलके-से अधिकारोंको देनेका वचन दिया।

३ जनवरी १९०५ ई० को पुतिलोफ (आधुनिक किरोफ) कारखानेमें चार मजदूरोंको निकाल दिया गया, जिसका परिणाम हुआ अगले ही दिन बारह हजार मजदूरोंकी हड़ताल। पीतरबुर्गके दूसरे कारखानोंके मजदूरोंने भी उनकी सहानुभूतिमें हड़ताल की और ८ जनवरीको डेढ़ लाख मजदूरोंने काम छोड़कर उसे सार्वजनिक हड़तालका रूप दे दिया। इतनी बड़ी संख्यामें उत्तेजित और बेकार मजदूर कोई और बड़ा कदम न उठा लें, इसके लिये ईसाई पादरी गपोनने सलाह दी, कि मजदूरोंकी ओरसे जारके पास आवेदन-पत्र भेजा जाय। अभी भी जारके प्रति लोगोंकी सद्भावना बनी हुई थी, और वह इसके लिये तैयार हो गये। उधर गपोनने इसकी सूचना खुफिया पुलिसको दे दी थी, और जारशाहीने खुलकर गोली चलानेकी तैयारी कर रक्खी थी। आवेदन-पत्रके कुछ वाक्य थे—"हम पीतरबुर्गके मजदूर, हमारी बीबियां, हमारे बच्चे और हमारे असहाय बूढ़े मां-बाप, हे प्रभु, तेरे पास सहायता और रक्षा पानेके लिये आये हैं। हम गरीबीसे पीड़ित, अत्याचारके मारे असह्य मेहनत के बोझसे दबे जा रहे हैं। हमें अपमान सहना पड़ता है। हमारे साथ मानवोचित बर्ताव नही होता। हमारा धैर्य टूट रहा है, हम गरीबीके दलदलमें और नीचे डूबते जा रहे हैं। हम अधिकार और ज्ञानसे वंचित हैं। स्वेच्छाचारिता और क्रूरताने हमारा गला घोंट रक्खा है। हमारा धैर्य खतम हो रहा है। वह भयंकर घड़ी आ गई है, जब कि इस असह्य पीड़ाको और अधिक सहनेकी जगह मरना हमारे लिये अच्छा है।" इसमें कुछ आर्थिक और राजनीतिक मांगोंके साथ संविधान सभाके बुलानेके लिये मांग की गई थी। बोल्शेविकोंने बहुत समझाया, कि जारके पास प्रार्थनापत्र देनेसे स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती, लेकिन अब भी बहुत-से मजदूर कह रहे थे—"हम तजर्बा करके देखेंगे। जार हमारी उचित मांगोंको अस्वीकार नहीं करेगा।"

२२ (९) जनवरी १९०५ ई० रविवारका दिन था, जब कि एक लाख चालीस हजार मजदूर जारके चित्र, झंडे और ईसाई मूर्तियां लिये प्रार्थनाके गीत गाते हेमन्त प्रासादकी ओर चले। जारकी सरकारको मजदूरोंका स्वागत गोलियों और संगीनोंसे करना था। हेमन्त प्रासादकी सड़कोंपर जगह-जगह पलटन तैनात थी, लेकिन तो भी बहुत-से मजदूर प्रासादके मैदानमें पहुंचनेमें सफल हुये। निहत्थी जनता पर गोलियोंकी वर्षा होने लगी, एक हजार मजदूर मारे गये, दो हजार से अधिक घायल हुये। बोल्शेविकोंने यद्यपि पहले मना करनेकी कोशिश की, लेकिन न माननेपर उन्होंने मजदूरोंका साथ नहीं छोड़ा, और वह भी साथमें जाकर गोलीके शिकार हुये। मजदूरोंने ९ जनवरीके दिनको "खूनी-रविवार" का नाम दिया, उनके हृदयसे आवाज निकलने लगी—"हमारा कोई जार नहीं है।" उन्होंने अपने घरोंमें टांगे हुये जारके चित्रोंको फाड़कर फेंक दिया, और उसके बाद जबतक बोल्शेविक क्रांति नहीं हुई, "खूनी रविवार" मजदूरोंके लिये शहीदोंका स्मारक पर्व-दिन बन गया। बोल्शेविकोंने पुस्तिकायें निकालकर कहा—"हथियार, साथियो।" इसपर मजदूर बन्दूककी दूकानों और मिस्त्री-खानोंपर टूट पड़े, वहांसे उन्होंने हथियार लेकर अपनेको हथियारबंद किया। उसी ९ जनवरीके अपराह्ण में पीतरबुर्गके एक मुहल्ले वासिलियेव्स्की द्वीपमें लोगोंने लड़नेके लिये सड़कपर बाड़े खड़ी कीं। चारों ओर "स्वेच्छाचारिताकी क्षय" की आवाज गूंजने लगी। सड़कोंपर कई जगह पुलिसके साथ जनताकी मुठभेड़ हुई। इस दिन जो पाठ रूसके मजदूरवर्गको पढ़ाया गया, उसके बारेमें लेनिनने लिखा था—"अपने महीनों और वर्षोंके दरिद्र, दुःखी और उदास जीवनमें जिसे नहीं सीख सकते थे, वैसी क्रांतिकी शिक्षा सर्वहारोंने एक दिनमें पाई।" "खूनी रविवार" जारशाहीके लिये जलियानवाला बाग सिद्ध हुआ। हड़तालका जोर और बढ़ा। जनवरी ११ (२४) १९०५ ई०को मास्कोमें भी हड़-ताल हुई, और इसके बाद पोलन्द, फिनलन्द, उक्रइन, काकेशस और साइबेरिया सभी जगह हड़तालों-का तूफान आ गया।

१९०५ ई०के ग्रीष्ममें सर्वहारोंका क्रांतिकारी संघर्ष चारों ओर फैल गया। प्रथम मईके महोत्सव में दो लाख बीस हजार मजदूरोंने पीतरबुर्गमें काम छोड़ दिया। मजदूरोंके संघर्षने किसानोंपर भी प्रभाव डाला और गांवोंमें आन्दोलन बढ़ चला। रूसके केंद्रीय इलाकों, गुर्जी और बाल्तिक प्रदेशोंमें एक ही साथ किसानोंने जबर्दस्त आन्दोलन शुरू किया। फर्वरी १९०५ ई०में कितनी ही जगहोंपर किसानोंने जमींदारोंके खुदकाश्त खेतोंको छीनना शुरू किया, और उस सालके वसंततक रूसकी

देहातमें सर्वत्र किसान-संघर्ष शुरू हो गया। किसानोंने जमींदारोंके महलों और मकानोंको नष्ट कर दिया, उनके खेतों और चरागाहोंपर अधिकार करके मनमाना जोतना शुरू किया। इतने व्यापक पैमानेपर हो रहे विद्रोहको दबाना जारशाहीके लिये आसान काम नहीं था, पर अभी सेनामें उतना असतोष नहीं था।

अब उसमे भी लक्षण दिखलाई देने लगे। १९०५ ई०में ही, जब कि अभी जापानसे लड़ाई चल रही थी, कालासागरके नौसैनिक बेडेमे असतोष फैल गया, और १४ (२७) जून १९०५ ई०को युद्धपोत "पोतोम्किन" के नौसैनिकोंने विद्रोह कर दिया, जिसका तुरन्तका कारण था, सड़े-गले कीडे पड़े हुये अधपके मांसको सिपाहियोंमे परोसना। नौसैनिकोंने उसे खानेसे इन्कार कर दिया। कमांडरने मुखियोंको गोली मारनेका हुक्म दिया, जिसके विरोधमे सारे जहाजके सिपाहियोंने विद्रोह कर दिया। यद्यपि बड़े नौसैनिक अफसरोंने विद्रोही नेता वकुलिन्चुकको मार दिया, लेकिन तुरन्त मत्युशेको नामक दूसरे नाविकने नेतृत्वको संभाला। नाविकोंने बहुतसे अफसरोंको मारकर युद्ध-पोतको अपने हाथमे कर लिया। लाल झंडा उड़ाते हुये जब वह अदेस्सा शहरके सामने पहुंचे, तो वहांके मजदूरोंमें बिजली दौड़ गई, लेकिन नरमदली समाजवादी मेन्शेविकोंने उलटा समझा-बुझाकर लोगोंको रोका। "पोतम्किन" कितने ही दिनोंतक लाल झंडा उड़ाते हुये कालासागरमें इधरसे उधर घूमता रहा, लेकिन जब तटके किसी नगरसे सहायता नही मिली, और उधर गोला-बारूद भी कम होने लगा, तो रूमानियाके तटपर जाकर नाविकोंने आत्मसमर्पण कर दिया। रूमानियन सरकारने पीछे १९०६ ई० में क्रांतिकारियोंको जारकी सरकारके हाथमें दे दिया, जिसने उनमेंसे बहुतोंको फांसीपर चढ़ाया और बहुतोंको कालापानीकी सजा दी। यह पहली बार था, जब कि एक विशाल युद्धपोतके सारे सैनिकोंने जारके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह किया। इतिहासमे हम दूसरे तरहके विद्रोह देख चुके हैं। प्रभुवर्गमें ही किसी एक व्यक्ति या दलके विरुद्धने दूसरे दलका हथियार उठाना पहले भी देखा गया था, लेकिन यह विद्रोह बिल्कुल नये तरहका था, जिसमे दरिद्र और निरीह वर्ग सहस्राब्दियोंसे शासक दलके खिलाफ खुल्लमखुल्ला उठ खड़ा हुआ, मानो जिन ईटोंसे प्रासाद बना था, वही अब प्रासाद को ढानेके लिये हिलने-डुलने लगी।

जापानसे संधि—जारशाही सेनापतियोंकी अयोग्यता और रूसके पिछड़ेपनके कारण जापान हारपर हार दे रहा था। इसी बीच "खूनी रविवार" और मजदूरों, किसानों तथा नौसैनिकोंके विद्रोहोंने ऐसी हालत पैदा कर दी, कि जारशाहीके लिये और अधिक दिनतक जापानके साथ लड़नेका मतलब था घरमें ही तख्ता उलट जाना। चूशिमाकी खाड़ीमे रूसी जंगी बेड़ेका जब जापानियोंने संहार कर दिया, तो विदेशी पूंजीवादियोंको भी भय लगने लगा, कि कही पेरिसकी आवृत्ति बड़े पैमानेपर रूसमें न होने लगे, इसीलिये उन्होंने जारकी सरकारपर युद्ध बंद करके जापानके साथ सुलह कर लेनेके लिये जोर देना शुरू किया, और यह भी कि जारको भीतरी शाति बनानेके लिये कुछ वैधानिक सुधार देकर लोगोंको अपनी तरफ खीचना चाहिये। उधर जापानकी भी भीतरी हालत अच्छी नही थी, क्योंकि युद्धमे अपार धन और जनका सहार हो रहा था, जिससे वहांके लोगोंमें भी असंतोष फैलनेका डर था। जापानके कहनेपर संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्रपति थ्योडोर रूजवेल्टने बीचमें पड़ना स्वीकार किया। जारशाही युद्धपरिषद्ने ६ जून (२४ मई) १९०५ ई०को जारकी अध्यक्षतामें बहुमतसे शांतिके पक्षमे फैसला किया, क्योंकि "हमारे लिये विजयसे भी अधिक महत्त्वकी चीज है घरेलू शांति हम असाधारण स्थितिमे आज पड़े हुये हैं। हमे रूसके भीतर शांतिकी पुनः स्थापित करना है।" जारशाहीने सुलह करना स्वीकार किया। जापानकी शर्तें बहुत कड़ी थी, लेकिन रूजवेल्टने भी दबाव डाला, और अन्तमे ५ सितम्बर (२३ अगस्त) १९०५ ई०को पोर्टस्मिथकी संधिपर हस्ताक्षर हुये। रूसने कोरियामे जापानके सैनिक, राजनीतिक तथा आर्थिक हितों और अधिकारोंको स्वीकार किया। पोर्ट-आर्थर और दलनीके अपने ठेकेवाले प्रदेशको उसने जापानके हाथमें सौंप दिया, सखालिन द्वीपका दक्षिणार्ध और पासके द्वीपोंको भी जापानके हाथमें दे दिया, एवं पूर्वी चीनी रेलको केवल व्यापारिक दृष्टिसे चलाना स्वीकार किया।

जापानने जारशाही गर्वको चूर-चूर कर दिया। इस युद्धमें रूसके चार लाख आदमी हत, आहत

या बंदी हुये और तीन अरब रूबल धनका नाश हुआ। रूसी जनतापर इसका बुरा प्रभाव पड़ना ही चाहिये था, लेकिन जारशाही अब पूरबके झगड़ेसे छुट्टी पाकर क्रांतिको कुचलनेमें समर्थ थी, तो भी संधिपर हस्ताक्षर होनेके सत्ताईस दिन बाद २ अक्तूबर (१९ सितम्बर) १९०५ ई०मे मास्कोके प्रेसकर्मियोंने आम हड़ताल कर दी, जिनका साथ वहाके रोटी बनानेवालों, तम्बाकू-मजदूरों तथा दूसरे कमकरोंने दिया। पुलिस और कसाक सैनिकोंने उनके प्रदर्शनोंको बलपूर्वक छिन्न-भिन्न करना चाहा, इसपर मजदूरोंने भी पुलिसके ऊपर तमंचे चलाये। छ दिन बाद २५ सितम्बर (पुराना पंचांग) को मास्को की एक सड़कपर मजदूरों और जारके कसाकोंमे बाकायदा लड़ाई हुई। दो मजदूर मारे गये, आठ घायल हुये और १९२ गिरफ्तार हुये। ७ अक्तूबरको मास्को-कजान्स्कया रेलवेके मजदूरोंने हड़ताल कर दी, जिनका साथ ८ अक्तूबरको दूसरी रेलोके मजदूरोंने भी दिया। ११ अक्तूबरको रेलवे हड़तालने सारे राष्ट्रमें आम हड़तालका रूप लिया, जिसमे स्कूलके अध्यापक, आफिसोंके कर्मचारी, कानूनपेशा लोग, इंजीनियर और विद्यार्थी भी सम्मिलित हुये। उन्होंने संविधान-सभाके बुलानेकी मांग की। जारने बहुत चाहा, कि गोलियोंकी वर्षासे विद्रोहको दबा दिया जाय, लेकिन वह उसमें आसानीसे सफल कैसे हो सकता था? अक्तूबर महीनेकी इन हड़तालोंने सरकारी शासन-यंत्रको अकर्मण्य बना दिया था।

इसी समय विद्रोहियोंने अपने संगठन, संघर्ष और शासनको चलानेके लिये एक नये यंत्रका आविष्कार किया, जिसने १९०५-६ ई०की क्रांतिमे ही बहुत काम नही किया, बल्कि १९१७ ई०की बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलतामें भी उसका बहुत बड़ा हाथ था। यह संगठन था मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियत। सोवियत शब्दका वही अर्थ है, जो हमारे यहां पंचायतका, लेकिन शासन और सैनिक अधिकारोंके भी हाथमे लेनेसे सोवियतको मामूली पंचायत नही कहा जा सकता। १३ (२६) अक्तूबरको, जब कि हड़ताल चल रही थी, पीतरबुर्गके कमकरोंने अपने कारखानोंमें सभायें कीं, और हड़तालका नेतृत्व करनेके लिये मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतके लिये अपने आदमी चुने। यद्यपि इसका आरम्भ हड़तालकी संयुक्त समितिके रूपमें हुआ था, लेकिन क्रांतिने जल्दी ही उसे शक्तिको संभालनेके लिये मजबूर किया। पीतरबुर्गके मजदूरोंकी देखादेखी रूसके सभी बड़े-बडे नगरोंमें मजदूर प्रतिनिधि सोवियतें १९०५ ई० के अक्तूबरसे दिसम्बर तक कायम होती रही। मास्को सोवियत बोल्शेविकों के प्रभावमें थी, इसलिये वह हथियारबंद विद्रोहकी तैयारीका संगठन बन गई। काकेशस, लतविया और त्वेर एव मास्को गुबर्निया जैसे कितने ही केंद्रीय रूसके इलाकोंमें सैनिक प्रतिनिधि भी सोवियतके सदस्य बने।

रूसके भिन्न-भिन्न जगहोंमें क्रांति और विद्रोहकी जो लहर फैली हुई थी, उसका प्रभाव वोल्गा-प्रदेश तथा दूसरे इलाकोंकी एसियाई जातियोंपर भी पड़े बिना नही रहा। वोल्गासे अल्ताइ और अफगानिस्तानतक जारकी हुकूमत मुसलमानोंके ऊपर थी। वहा अभी राजनीतिक जागृति इतनी नही हुई थी, कि वहांके लोग धर्म और साम्प्रदायिकतासे ऊपर उठते। वोल्गा-प्रदेश और बाशकिरियामें राष्ट्रीयतावादी मध्यमवर्गने मुस्लिम लीग कायम की। लीगने धीरे-धीरे मध्य-एसिया और काकेशस के मुसलमानोंको भी प्रभावित करना शुरू किया। साम्प्रदायिकतापर निर्भर आन्दोलन और संगठनका नेतृत्व मुल्लोंके हाथमें जाना जरूरी था, और मुल्ला रूसियोंके खिलाफ जहाद करनेका ही तरीका पसंद कर सकते थे, लेकिन बहुतसे एसियाई इलाकोंमे रूसी उनके पड़ोसी किसान और मजदूर बनकर बस गये थे, जो विशाल दृष्टिपूर्वक संचलित राष्ट्रीय आन्दोलनमे एसियाई जातियोंके स्वतंत्रताके युद्धमें सहायक बन सकते थे। लेकिन अभी यह काम बारह साल बाद होनेवाला था। १९०५ ई०के अन्तमें तारतार मध्यमवर्गीय राजनीतिक नेताओंने कजानमें प्रथम मुस्लिम कांग्रेस बुलाई, जिसने हमारे यहा के पुराने कांग्रेसियों की तरह जारसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कि मुसलमानोंको भी वही अधिकार मिलने चाहिये, जो कि बादशाहकी रूसी प्रजाको प्राप्य हैं। १९०५ ई०में चुवाशोंमें भी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हुआ, लेकिन वह शुद्ध किसान आन्दोलन था, जो चाहता था, कि किसानोंको धरती और मुक्ति मिले। चुवाश और मारी लोगोंके भीतर हो रहे किसान आन्दोलनको अखिल रूसी किसान संघके सदस्योंने संचालित किया था। किसानोंने जमींदारोंसे जमीन छीनने और अपनी भाषामें स्कूलोंके खोलनेकी मांग की। साइबेरियाके बुरियत मंगोल भी जारशाही अफसरोंके अत्याचारसे तंग आ गये थे, उन्होंने

साइबेरीय जातियोंकी लीग स्थापित की। १९०५ ई० ही में याकूतोमें भी जागृति हुई, और उन्होंने याकूत लीग कायम की, जिसे जारशाहीने जल्दी ही दबा दिया।

दिसम्बरका विद्रोह—रूसी कमकर समझने लगे थे, कि केवल राजनीतिक हड़तालोंसे काम नहीं चल सकता। अक्तूबरकी हड़तालोंके बाद सबसे पहले हथियारबंद विद्रोह करनेवाले थे क्रोन्स्तात् नौसैनिक अड्डेके नाविक और तोपची। २६ और २७ अक्तूबर (पुराना पंचांग) के दो दिन और दो रातोंतक रूसका यह मशहूर नौसैनिक अड्डा विद्रोहियोंके हाथोमें रहा, लेकिन अभी उनका भीतर-बाहरका सगठन इतना मजबूत नही था, इसलिये २८ अक्तूबरको जारशाही सेनाने उसे दबा दिया। दो सौ विद्रोहियो तथा उनके नेताओंको फौजी अदालतद्वारा कड़े दंड दिये गये।

इस समय रूस-अधिकृत पोलन्डमें फौजी कानून घोषित किया गया था। उसके उठा लेने तथा क्रोन्स्तातके नाविकोंको मुक्त करानेके लिये १४(१) नवम्बर १९०५ ई०को पीतरबुगकी मजदूर-प्रतिनिधि—सोवियतने एक आम हड़ताल घोषित की। जारकी सरकारको मजबूर होकर उनकी मांगोंको स्वीकार करना पड़ा, पोलन्दसे मार्शल-ला (फौजी कानून) उठा दिया गया, और क्रोन्स्तात्के नाविकों पर फौजी अदालतमे कोर्ट मार्शल द्वारा फासीका दंड दिलानेकी जगह साधारण सैनिक अदालतमें मुकदमा चलाया गया, जिसने ८३ विद्रोहियोंको छोड़ दिया, १२३ को जेलकी और केवल नौ को कालापानीकी सजा दी। इसमे शक नहीं, पीतरबुर्गके कमकरोंकी हड़तालने क्रोन्स्तातके बहुतसे विद्रोहियोंके प्राणोंकी रक्षा की। क्रातिकी इस दूसरी लहरने कालासागरके नौसैनिकोंको प्रभावित किया। २७ (१४) नवम्बरको क्रूजर "ओचाकोफ" के नाविकोंने विद्रोह किया। "पोतेम्किन" के नाविकोंकी जो गति हुई थी, उससे ये नाविक हताश नही हुये थे। २८ (१५) नवम्बरको दूसरे सैनिक पोतों और सेवस्तापोलके दुर्गमे काम करनेवाले सैनिकों और कमकरोंने ओचाकोफके विद्रोहियोंका साथ दिया। "पोतोम्किन" का नाम "पतेलेइमोन" रखकर जारशाहीने उसे सुरक्षित समझा था, लेकिन पोतेम्किनके ऊपर फिर लाल झंडा फहराने लगा। अभी भी दूसरे युद्धपोत और सैनिक जारशाहीके भक्त थे। २८ (१५) नवम्बर को ही तट और जहाजकी तोपोंने "ओचाकोफ" पर गोलाबारी शुरू की, जिससे उसमें आग लग गई। नाविकोंने समुद्रमे कूदकर बचनेकी कोशिश की, लेकिन उन्हे मशीनगनोंकी गोलियोंसे भून दिया गया। विद्रोहियोंका नेता लफटेनेंट स्मिथ और दूसरे नेताओंको कोर्टमार्शल करके गोलीसे उड़ा दिया गया। इस प्रकार कालासागरका विद्रोह दबा दिया गया।

नवम्बर और दिसम्बरके महीनोंमे अबकी किसानोंके विद्रोहने और भी जोर पकड़ा। युरोपीय रूसके एक तिहाईसे अधिक इलाकोंमें किसान जमींदारोंको भगाकर उनसे खेतोंको छीन रहे थे, उनके मकानों और महलोंको लूटते बरबाद कर रहे थे।

क्रांतिकी प्रगतिको लेनिन अपने निर्वासित स्थान (जेनेवा) से गम्भीरतापूर्वक बराबर देख रहे थे। नवम्बर (१९०५ ई०) मे क्रातिकारी संघर्षका नेतृत्व करनेके लिये उन्होंने रूसमें आना जरूरी समझा। दिसम्बर १९०५ ई०मे फिनलैंडमे तम्मेरफोर्स नगरमे बोल्शेविकोंका एक सम्मेलन हुआ। यहीपर स्तालिनको लेनिनको देखनेका सर्वप्रथम सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेनिनके सुझावपर सम्मेलनने सदस्योंको अपने-अपने इलाकेमें विद्रोह-संचालन करनेका आदेश दिया। लेकिन दिसम्बरके आरम्भ तक जारशाहीने अपनी शक्तिको पहलेसे अधिक दृढ़ कर लिया था। मंचूरियाके युद्धक्षेत्रसे कितनी ही सेनायें लौटकर युरोपीय रूसमे पहुंच गई थी। अबकी मास्कोका नम्बर पहला था। वहांकी सोवियतके नेता बोल्शेविक थे। उन्होंने हथियारबंद विद्रोहकी तैयारी बड़े जोर-शोरसे शुरू की। उनके प्रयत्नसे मास्कोकी छावनीमे भी विद्रोहकी लहर फैल गई, जिसमें रस्तोफ रेजिमेंट पहिले रही। १५ (२) दिसम्बरको सिपाहियोंने अपने अफसरोंको गिरफ्तार कर लिया, और रेजिमेंटके कामके संचालनके लिये सिपाहियोंकी एक समिति निर्वाचित की। लेकिन मास्कोकी दूसरी रेजिमेंटोंने उनका अनुसरण नहीं किया, इसलिये १७ (४) दिसम्बरको इन सैनिकोंको दबा दिया गया। अगले दिन मास्कोके बोल्शेविकोंने एक सम्मेलनमें मास्को सोवियतपर जोर दिया, कि वह हथियारबंद विद्रोहको बढानेके लिये आम हड़ताल घोषित करे। २० (७) दिसम्बरके सबेरे आम हड़ताल शुरू हुई। बन्दूकें-पिस्तोल पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मजदूरोंने अपने मिस्त्रीखानोंमें कामचलाऊ हथियार बनाये। दो हजार मजदूर—जिनमें करीब आधे

बोल्शेविक थे—लड़नेवाले दलमें शामिल हुये। सड़कोंमे प्रदर्शन हुये, और मजदूर मुहल्लोंमें पुलिसके साथ मुठभेड़ हुई। सारी अस्त्राखानी रेजिमेंट अपने पूरे सामानके साथ विद्रोहियोंकी मददके लिये तैयार हो गई, लेकिन जारभक्त कसाकोंने उन्हें घेरकर अपनी बारकोंमे लौटनेके लिये मजबूर किया। दूसरी कितनी ही संदिग्ध रेजिमेंटोंको भी अपनी बारकोंमें ही रखा गया। सचमुच मास्को-स्थित उस समयके पन्द्रह हजार सिपाहियोंमे तेरह सौ नब्बे ही ऐसे थे, जिनपर जारशाही विश्वास कर सकती थी। मास्कोके महाराज्यपालने राजधानीमें सेना भेजनेके लिये संदेशपर सदेश भेजे थे। लेकिन क्रांतिकारी इस स्थितिसे पूरा फायदा नहीं उठा सके। २२ (९) दिसम्बरको सरकारी सेनाका पल्ला भारी हो गया, और उन्होंने जगह-जगह आक्रमण करके विद्रोहियोंको दबाना शुरू किया। स्थितिको प्रतिकूल देखकर मास्कोकी पार्टी कमीटी और मजदूर-प्रतिनिधि सोवियतने ३१ (१८) दिसम्बरकी रातको विद्रोहको बंद करनेका निश्चय किया। सब जगह विद्रोहियोंने लड़ाई बंद कर दी। क्रांतिकारियोंको मौतसे कैसे बचाया जाय, इसका भार उख्तोम्स्की नामक इंजन-ड्राइवरने अपने ऊपर लिया, और ट्रेनमें क्रांतिकारियोंको बैठाकर वह मशीनगनों और राइफलोंकी गोलियोंकी वर्षाके बीचसे ट्रेनको बड़े वेगसे भगा ले गया। इस प्रकार उसने कितने ही क्रांतिकारियोंको फासी पानेसे बचा लिया। जारकी सेनाने मजदूरों और उनके परिवारके ऊपर भयंकर अत्याचार किये, सैकड़ोंको बिना मुकदमा चलाये ही गोलियोंसे ठंडा कर दिया।

मास्कोके बाहर दूसरे कितने ही शहरोंमे भी हथियारबंद विद्रोह हुये। दक्षिणमे गोरलोवकामे विद्रोहियोंने जारके राज्यको खतम करके मजदूर-प्रतिनिधियों का शासन आरम्भ कर दिया। मजदूरोंके पास अपने हाथकी बनाई तलवारों, छुरों तथा थोड़ेसे तमंचोंके सिवा और हथियार नहीं थे, तो भी चार हजार क्रांतिकारियोंने जारके कसाकोंके साथ पांच घंटे तक बड़ी बहादुरीसे लड़ाई की, जिसमे उनके तीन सौ आदमी काम आये। दोनेत्स-उपत्यकामे सभी जगह पुलिस और सेनाके साथ विद्रोहियोंकी लड़ाई हुई। लुगान्स्कमें सशस्त्र विद्रोह और हड़तालका नेतृत्व क० ई० बोरोशिलोफने किया। १९०५ ई० के ग्रीष्ममें बोरोशिलोफको गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन दिसम्बरमें हजारों मजदूरोंने जाकर "अपने लाल जेनरल" को जेलसे छुड़ा लिया। बोरोशिलोफकी संगठन शक्ति और सैनिक सूझ-बूझको देखकर एक सभामें एक मजदूरने कहा—"हम तुम्हे अपना लाल जेनरल नियुक्त करते है।" जिसका जवाब बोरोशिलोफने हंसते हुये दिया—"तुम बहुत दूरकी बातकर रहे हो, मुझे सैनिक विद्याका कुछ भी पता नहीं है।" उस समय सचमुच ही किसको पता था, कि बोल्शेविक-क्रांतिके समय वह अपनी सैनिक प्रतिभाका सुन्दर परिचय देगा, और अन्तमें रूस-जैसी दुनिया की एक शक्तिशाली सेनाका फील्ड-मार्शल और आज सोवियत संघ का राष्ट्रपति बनेगा।"

इसी प्रकार नवोरोसिस्कमें भी मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतने शासन अपने हाथमे संभाल लिया। कालासागर-तटवर्ती नगर सोचीमें भी यही बात हुई। साइबेरियाके क्रास्नोयार्स्क और चीता नगरोंकी सेना विद्रोही मजदूरोंसे मिल गई और यहां सिपाहियोंके भी प्रतिनिधियोंने मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतोंमे शामिल होकर विद्रोहका संचालन किया।

१९०५ ई०का विद्रोह खूनी हाथोंसे दबा दिया गया। प्लेखानोफ अब नरमदली समाजवादी हो गया था। उसका कहना था—"उन्हें हथियार उठाना नहीं चाहिये था।" जिसका जवाब लेनिनने दिया—"इसके विरुद्ध हमें सारी शक्तिके साथ और दृढ़तापूर्वक आक्रमणात्मक रूपमें हथियार उठाना चाहिये था।" दिसम्बरकी क्रांतिके असफल होनेके कारण थे—किसानोंसे मदद नही मिलना, सेनाके भी अधिक भागका जारशाहीके साथ होना, विद्रोहियोंका अच्छी तरह संगठित न होना और एक साथ उठनेकी जगह विद्रोह का भिन्न-भिन्न जगहोंमें भिन्न-भिन्न समयोंमे आरम्भ होना। विद्रोहियोंके पास काफी हथियार नहीं थे, उन्होंने आक्रमण करनेकी जगह प्रतिरोध करना पंसद किया, तो भी इस क्रांतिको असफल नहीं कहा जा सकता, क्योंकि क्रांतिकारियोंने जो भूलें इस समय की थीं, अपनेमें जो कमियां पाई थी, उन्हें हटानेमें सफल होकर ही वह १९१७ ई०की क्रांतिमें विजयी हुये। इसीलिये इस क्रांतिको १९१७ ई० की क्रांतिका रिहर्सल कहा जाना बिलकुल ठीक है।

शासन-सुधार—जारशाहीने क्रांतिको दबा दिया, लेकिन वह जानती थी, कि लोगोंको संतुष्ट

करने या धोखेमें रखनेके लिये कुछ सुधार देना भी जरूरी है। ११ सितम्बर १९०५ ई०को इसीलिये राज्यदूमा (संसद)के चुनावकी घोषणा की गई। लेकिन यह पहिले ही निश्चय कर लिया गया, कि निर्वाचनमे राजभक्तोंका ही पलडा भारी रहे, इसीलिये जहां जमीदारोंको दो हजार मतदाताओं पर एक प्रतिनिधि और नगरोंके सम्पत्तिवालोंको सात हजार वोटरोंपर एक प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार दिया गया था, वहां तीस हजार किसान और नब्बे हजार मजदूर वोटरोंपर एक प्रतिनिधि भेजनेका नियम बनाया गया था। निर्वाचन भी सीधा नहीं था। प्रत्येक गांवके वोटर वोलोस्त (जिले) के लिये निर्वाचक चुनते। ये निर्वाचक हरएक जिलेसे दो प्रतिनिधियोंको कमिश्नरीके लिये चुनते। कमिश्नरियोंके चुने हुये निर्वाचक गुबर्नियों (प्रदेशों)के लिये निर्वाचक चुनते, और गुबर्नियोंके यह निर्वाचक दूमा (संसद) के लिये प्रतिनिधि चुनते। वोट भी गुप्त नही देने थे। जारकी सरकारने इस प्रकार समझ लिया था, कि हम ऐसे आदमियोंको ही संसदमे आने देगे, जो कि हमारी हांमें हां मिलाये। मार्च और अप्रैल १९०६ ई०मे राज्यदूमाके लिये निर्वाचन हुये। उस समय पुलिसके अत्याचारोंसे सब जगह त्राहि-त्राहि मची हुई थी। बोल्शेविकोंने निर्वाचनके बायकाट करनेका निश्चय किया था। इसी समय १९०६ अप्रैलमे स्टाकहोममे समाजवादी जनतांत्रिकोंकी कांग्रेस हुई। जारशाही अत्याचारोंने सबक सीखकर बोल्शेविक और मेन्शेविक दोनों इस कांग्रेसमें सम्मिलित हुये, और समाजवादी जनतान्त्रिक पार्टीके भीतर अलग अलग दो गुटोंको रखते हुये भी वह एक हो गये।

नवनिर्वाचित दूमाके उद्घाटनसे तीन दिन पहले अप्रैल १९०६ ई०के अन्तमें जारशाहीने "आधारिक राज्यविधान" प्रकाशित किये, जिसके द्वारा "सभी रूसोंके सम्राट्में सर्वोच्च परमस्वतंत्र राज्यशक्ति निहित है" को घोषित किया गया। साथ ही दूमापर अकुश रखनेके लिये एक राज्य-परिषद् बनाई गई, जिसकी स्वीकृतिके बिना कोई भी कानून दूमा द्वारा पास होकर जारके पास भेजा नही जा सकता था। परिषद्मे आधे सरकारी उच्च अधिकारी थे, जिनकी नियुक्ति जार करता, बाकी आधेमे स्थानीय बोर्डों (जेम्स्त्वों), अमीरों, पादरियों और विश्वविद्यालयोंके प्रतिनिधि लिये जानेवाले थे।

इतने छद-बदके बाद निर्वाचित दूमा भी पूरी तौरसे जारशाहीके अनुकूल सिद्ध नहीं हुई। उसके ५२४ सदस्योंमे २०४ किसान थे, जोकि वैसे किसान नही थे, जिन्हें जारका मलाहकार प्रधान-मंत्री काउट वित्ते चाहता था। समाजवादी जनतान्त्रिक समूहके अठारह प्रतिनिधि दूमामें पहुंचे थे। वैधानिक जनतान्त्रिक या नरमदलियोंकी सख्या १७९ थी।

यद्यपि विद्रोहका वेग दब गया था, लेकिन वह बिल्कुल खतम नही हुआ था। १९०६ ई०में मईसे अगस्ततक देशके आधे भागमें किसानोंके आन्दोलन और बलवे चलते रहे। दूमा जनताके हितके लिये नहीं बनाई गई थी, इसलिये वह लोगोंको शांत करनेमें कैसे समर्थ होती? जब भूमि-संबंधी समस्याके बारेमे किसान-प्रतिनिधियोंने अपने अनुकूल प्रस्ताव पास करना चाहा, तो घबडाकर सरकारने ८ जुलाई १९०६ ई०को दूमाको खतम कर दिया।

उसी साल दूसरी दूमाका निर्वाचन हुआ। प्रथम दूमाका बोल्शेविकोंने बायकाट किया था, लेकिन प्रथम दूमाके तजर्बेसे उन्हें पता लग गया, कि दूमाको अपने विचारोंके प्रचारके लिये एक अच्छा प्रभावशाली भाषणमंच बनाया जा सकता है, इसीलिये लेनिनके परामर्शके अनुसार बोल्शेविकोंने अबके निर्वाचनमें भाग लेनेका निश्चय किया। वामपक्षी दलने भी भाग लिया, जिसके कारण द्वितीय दूमा जारशाहीके लिये प्रथमसे भी अधिक कड़वी साबित हुई। नरमदली संवैधानिक जनतांत्रिक पहलेकी अपेक्षा आधे ही (१७९ : ९८) आ पाये। किसान गुट तथा नरम समाजवादी क्रांतिकारी जहां पहली दूमामें ९४ थे, वहां अब उनकी संख्या बढ़कर १५७ हो गई। समाजवादी जनतांत्रिक अब अठारहकी जगह पैसठ थे। यद्यपि द्वितीय दूमामें प्रगतिशील विचारोंका प्रतिनिधित्व ज्यादा था, लेकिन अब क्रांतिका वेग उतारपर था, इसलिये वह जनताके किसी भी हितको करनेमें असमर्थ थी, ३ जून १९०७ ई०को प्रतिगामी जारके पिट्ठुओंने कानूनके दिखावेको भी छोड़कर चारों ओर अत्याचार करना शुरू किया। उसी साल १५९ मजदूर सभाओंको भंग कर दिया गया, १९०८ ई०में नौ और १९०९ ई०में छानवे मजदूर-संगठन निषिद्ध कर दिये गये। द्वितीय दूमाकी

खतम कर देनेके बाद भी निकोलाइ II अपनेमें इतनी शक्ति नही पाता था, कि दूमाके बिना ही शासनको जारी रक्खे, इसीलिये वह तृतीय दूमाके निर्वाचन करनेकी घोषणा करनेके लिये मजबूर हुआ। अबकी बार जारशाहीने चुनावके नियम और भी अनुकूल बनाये : जमीदार २३० वोटरोंपर एक, बूर्ज्वा (पूंजीवादी) हजारपर एक, किसान साठ हजारपर एक और मजदूर सवा लाखपर एक प्रतिनिधि भेज सकते थे। रूसी प्रजाको जहां दूमामे अपना प्रतिनिधि भेजनेका इस प्रकार अधिकार प्राप्त था, वहां मध्य-एसियाके लोगोंको एक भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार नही दिया गया था—युरोपीय रूसके जहां ४०३ थे, वहा सीमाती इलाकोंके ३९ ही लिये जानेवाले थे, जिनमें बारह रूसी-पोलन्के प्रतिनिधि थे। इस नियमके अनुसार जो निर्वाचन हुआ, उसमे २०२ अथवा ४६ प्रतिशत सदस्य जमीदारोंके थे। वामपक्षी दलोंको केवल ७ प्रतिशत जगहे मिली थी, लेकिन जारशाही तो दूमाको केवल दिखावेकी चीज रखना चाहती थी। वह दूसरी तरहसे भी विरोधी शक्तियोंको कुचलनेके लिये तैयार थी। विद्रोही किसानोंकी शक्तिको सर्वथा नष्ट कर देनेके लिये उसने यह तरीका निकाला था—गांवकी पचायती सत्ताका नष्ट कर देना, देहातमे भूमिपर सामूहिक अधिकार रखनेकी जगह किसानोंको वैयक्तिक तौरसे खेतोंपर अधिकार देना, एव किसानोंको विद्रोही गांवों और इलाकोंसे ले जाकर दूसरी जगह बसाना। इसकी वजहसे वह कुछ समयके लिये किसानोंकी शक्तिको तोड़नेमें सफल हुई। गांवकी जमीनपर सामूहिक अधिकार होनेपर धनी और गरीब किसानोंके बीच भारी भेद नही कायम किया जा सकता था, लेकिन अब गावोंमें कुलक (धनी किसान) पैदा होने लगे।

जारशाही समझने लगी थी, कि लेनिनके रूपमें उसे एक बड़े शत्रुसे मुकाबला पड़ा है। १९०७ ई०के जाड़ोंमें सरकारने लेनिनकी गिरफ्तारीका हुक्म निकाला। लेनिन फिनलन्दमें गुप्त रीतिसे रहते थे। पार्टीकी सलाहपर लेनिनको देश छोड़ जाना पड़ा। गुप्त रीतिसे जिस जहाज द्वारा उन्हें बाहर जाना था, उसे पकड़नेके लिये पुलिसकी आंख बचाकर फिनलन्दकी बर्फ जमी खाड़ीके ऊपरसे चलना पड़ा। एक जगह कमजोर बर्फके कारण लेनिन मौतसे बाल-बाल बचे। आखिर वह जहाज द्वारा देश छोड़कर प्राय: दस सालके लिये विदेशमें जीवन बिताने चले गये। क्रांतिके असफल होनेका एक प्रभाव यह हुआ, कि क्रांतिके साथ सहानुभूति रखनेवाले बुद्धिजीवियोंमे निराशा और उसीके कारण विचारोंमें गड़बड़ी पैदा हो गई। लेकिन तब भी बोल्शेविकोंने अपनी पार्टीको नष्ट होनेसे बचानेके लिये पूरी कोशिश की। जनवरी १९१२ ई०में बोल्शेविकोंने स्वतत्र बोल्शेविक पार्टी स्थापित करनेके लिये प्राहा (चेकोस्लोवाकिया) मे अपना सम्मेलन किया, जिसका बहुत भारी ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योंकि इसीके निर्णय द्वारा स्थापित बोल्शेविक पार्टीने पांच वर्ष बाद रूसमें सफल क्रांति की। इस वक्त जो केन्द्रीय समिति नियुक्ति की गई थी, उसमे लेनिन, स्तालिन और य० म० स्वेर्द्‌लोफ मुख्य थे। इसी समयसे पार्टीके पुराने नाम "रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टी"के साथ-साथ ब्रेकेटमें "बोल्शेविक" भी लिखा जाने लगा। इसी सम्मेलनके समय से बोल्शेविक नेताओंने दृढ़तापूर्वक कार्य आरम्भ किया। इन नेताओमें लेनिन सर्वोपरि थे। उनके सहायकोंमें याकोब मिखाइल-पुत्र स्वेर्द्‌लोफ भी एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता था, जिसने कजान और उरालमें बहुत काम किया और पीछे साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया था। सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद यही रूसका प्रथम राष्ट्रपति हुआ। मिखाइल वासिली-पुत्र फ्रुजे दूसरा जबर्दस्त बोल्शेविक क्रातिकारी था, जिसने बोल्शेविक क्रांतिके समय अपनी सैनिक सूझ और सगठनका बहुत अच्छा परिचय दिया। आज मध्य एसियाके किर्गिजिस्तान गणराज्यकी राजधानी फ्रुजेके नामपर मशहूर है। सेर्गेई मीरन-पुत्र किरोफ १८ वर्षकी उमरमें बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हुआ, और १९०५ ई०की क्रातिमें उसने जबर्दस्त भाग लिया। क्रांतिके सफल होनेके बाद उसने बहुत-से जवाबदेह पदोंको संभाला, और द्वितीय पंचवार्षिक योजनाके समय दुश्मनकी गोलीका शिकार हुआ। स्तालिनकी जन्मभूमि गुर्जीका ग्रिगोरी कान्स्तन्तिनो पुत्र ओर्जोनीकिद्‌जे १९०३ ई०में बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हुआ। १९०५ ई० की क्रांतिमें इसने बड़ी तत्परतासे भाग लिया। जब क्रांतिके असफल होनेपर गिरफ्तारियां होने लग, तो वह विदेशमें भाग जानेमें सफल हुआ। १९०९ ई०में वह ईरानमें था, और वहांकी क्रांतिमें भी

उसने भाग लिया था। पीछे ईरानमें रहना असम्भव देखकर वह लेनिनके पास पेरिस चला गया। प्राहा (प्राग)के सम्मेलनके बाद वह फिर गुप्त रीतिसे रूसमें लौटकर काम करने लगा। व्याचिस्लाव मिखाइल-पुत्र मोलोतोफ १९०६ ई०में पार्टीमें सम्मिलित हुआ, जब कि अभी वह १६ वर्षका विद्यार्थी था और कालेजकी पढ़ाई समाप्त नही कर पाया था। इसी समय १९ वर्षकी उमरमें उसे बलोग्दामें भेजकर नजरबन्द कर दिया गया, लेकिन तो भी उसने अपने कार्यको जारी रक्खा।

प्रथम क्रांतिके असफल होनेके बाद चारों ओर राजनीतिक शिथिलता छा गई। उस समय गुप्त रहकर क्रांतिकारी आन्दोलनको जारी रखनेवालोंमें मिखाइल इवान-पुत्र कलिनिन और क्लिमेंती एफरेम-पुत्र बोरोशिलोफ भी थे। कलिनिनने कई साल जारशाही जेलोंमें बिताये, और वह कई सालोंतक सोवियतका राष्ट्रपति रहकर मरा। वह एक मामूली किसानका लड़का था, जो चरवाही, साईसीके जीवनसे मजदूर और फिर क्रांतिकारी बना। बोरोशिलोफके बारेमें हम बतला चुके हैं। वह १९०३ ई०मे पार्टीमे शामिल हुआ, और १९०५ ई०में लुगान्स्कके विद्रोहका "लाल जेनरल" बना। उसे पकड़कर १९०७ ई०में तीन सालके लिये साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया, लेकिन वह वहांसे तीन बार निकल भागनेमें सफल हो अपने काममें जा डटा।

वैदेशिक संबंध—उत्पादनके बेहतर साधनोंके कारण पूंजीवादी व्यवस्था सामन्तवादी व्यवस्थासे कहीं अधिक समृद्धि और शक्तिकी वाहक है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम २० वीं सदीके आरम्भमें इंगलैण्ड और फ्रासका रूससे मुकाबिला करके देख सकते हैं। रूस यद्यपि जनसंख्या और प्राकृतिक स्रोतोंमें पश्चिमी युरोपके इन दोनों देशोंके सम्मिलित साधनोंसे भी कहीं बेहतर स्थितिमें था, लेकिन पूंजीवादी प्रगति अतएव उद्योग-धंधोके विकासमे पिछड़ा होनेके कारण वह परमुखापेक्षी था। इसीके कारण जापानके साथ उसे बुरी तौरसे हारना पड़ा। लेकिन इस समय पश्चिमी युरोपमें जर्मनी-आस्ट्रिया और इंलैण्ड-फ्रांसके दो प्रतिद्वंद्वी पैदा हो चुके थे। जबतक जर्मनी छिन्न-भिन्न अवस्थामें था, तबतक फ्रांस और इंगलैण्ड अपने उपनिवेशिक स्वार्थोंके कारण एक दूसरेके शत्रु बने रहे, लेकिन १८७० ई०में संयुक्त जर्मनीकी सेनाये पेरिसमे घुसकर फ्रासको यह समझानेमें सफल हुई, कि अब उसे खतरा ब्रिटिश चेनल पार पश्चिमसे नही, बल्कि पूरबसे है। इसका निश्चय होते ही अब फ्रांस और इंगलैण्ड एक दूसरेके नजदीक हो गये। उद्योग-धंधों तथा दूसरे खर्चोंके लिये जारशाहीको इंगलैण्ड और फ्रांसका मुंह देखना पड़ रहा था। यदि पश्चिमी युरोपके इन दोनों देशों और जारशाही रूसमें मेल न होने देनेका कोई कारण हो सकता था, तो वह था तुर्की और ईरानके भीतर उनका स्वार्थ। लेकिन समझौता करना जरूरी था। बिस्मार्क जर्मनीकी एकता स्थापित करनेके बाद हट गया और अब हिटलरका पूर्ववर्ती कैसर विलहेल्म II सारे विश्वपर नजर दौड़ाने लगा। जिस वक्त पश्चिमी युरोपकी दोनों शक्तियां दुनियाके बाजारों और राजनीतिक प्रभुत्वको आपसमें बांट रही थी, उस समय जर्मनी सोता रहा। सैनिकवाद जर्मनीकी पुरानी परम्परासे चला आया था। सैनिक दृष्टि से मजबूत होनेके लिये भी उद्योग-धंधोंके बढ़ानेकी बड़ी अवश्यकता थी, इसलिये जर्मनीने बड़ी तेजीके साथ अपने कल-कारखानों और वैज्ञानिक खोजोंको आगे बढ़ाया। लेकिन जर्मनीके कल-कारखानोंकी चीजोंको दुनियाके बाजारोंमें भेजकर नफा कमानेमें फ्रांस और इंगलैण्ड पग-पगपर बाधक थे, इसलिये अब उसे अपना रास्ता निकालनेके लिये तलवार छोड़कर दूसरा कोई साधन नहीं रह गया था। कैसर विल्हेल्मने देखा, कि रूसका पश्चिमी गुटमें शामिल होना हमारे लिये अच्छा नहीं है। उधर निकोलोइ II भी देख रहा था, कि जर्मनीसे समझौता हो जानेपर तुर्की और ईरानमें हमारे लिये रास्ता खुल जायेगा। जार और कैसरने ब्योर्कमें एक गुप्त संधिपत्रपर हस्ताक्षर भी किया, लेकिन संधिपत्रपर अमल करनेपर फ्रांस और इंगलैण्डसे वित्तीय सहायता बन्द हो जाती। फ्रांस और इंगलैण्डने १९०६ ई०मे ढाई अरब फ्रांकका ऋण देकर जापानी युद्धके परिणामस्वरूप दिवालिया बननेसे जारशाहीको बचा लिया था। उन्होंने पोर्ट्स-मौथ संधिमें भी शर्तोंको रूसके अनुकूल बनवानेमें सहायता दी थी। फ्रांसका ईरान और तुर्कीके बारेमें भी रूससे समझौता हो गया। ईरानको इंगलैण्ड और रूसने अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्रोंमें बांट लिया—उत्तरी ईरानको रूसके प्रभावमें रखा गया और पेट्रोलवाले दक्षिणी क्षेत्रको

इंगलैण्डने अपने हाथमें रक्खा, बीचके थोड़ेसे भूभागको तटस्थ क्षेत्रके तौरपर रहने दिया गया। इगलैण्ड और रूसके साथ समझौता हो जानेपर फ्रांस और रूसके बीचमें भी समझौता होना आसान था। वस्तुतः यह त्रिगुट समझौता १९०४ ई० ही में हो गया था, जिसके अनुसार इंगलैण्ड, फ्रांस और रूस जर्मनीके विरुद्ध एक होकर तैयार थे। अपने पिछड़ेपनके कारण रूस फ्रांस और इंगलैण्डके लग्गू-भग्गूकी स्थिति रखता था। उसके पश्चिमी दोस्तोंने अब भी रूसी नौसेनाको बासफोरस और दरेदानियाल द्वारा जाने-आनेकी स्वतन्त्रता नहीं दी थी। १९०८ की मई और जूनमें जार और इंगलैण्डके राजा एडवर्ड सप्तमने रेवेलमें मुलाकात कर जर्मनीके विरुद्ध मिलकर तैयारी करनेका समझौता किया। उन्होंने मकदूनियाको तुर्कीसे अलग करनेकी बातको भी मान लिया, लेकिन दरेदानियालके रास्तेको रूसी नौसेनाके लिये मुक्त करनेपर अभी भी समझौता नहीं हो पाया। उधर जर्मनी भी आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर अपने शत्रुओंकी चालोंको व्यर्थ करनेके लिये तैयार था, जिसके लिये सबसे पहले बल्कानमें अपनी स्थितिको मजबूत करना जरूरी था। मई-जूनकी मुलाकात रूसको निश्चित तौरसे पश्चिमी गुटके साथ मिलानेमें सफल नही हो पाई थी, इसीलिये रूस अभी दूसरे पक्षकी ओर भी हाथ बढ़ानेकी कोशिशमें था। १९०८ ई० के वसंतमें आस्ट्रिया और रूसके विदेश-मंत्रियोंने आपसमें बातचीत करके निश्चय किया, कि आस्ट्रियाके बोसनिया और हेर्जेगोविनाके अधिकारपर जारशाही कोई आपत्ति नही करेगी, जिन्हे कि बर्लिन कांग्रेसके समय (१८७८ ई०) से ही आस्ट्रियाने तुर्कीसे छीनकर अपने हाथमें कर लिया था। बदलेमें आस्ट्रियाने दरेदानियालसे रूसी युद्धपोतोंके स्वतंत्रतापूर्वक आने जानेके दावेको मंजूर किया। लेकिन इस बातको इंगलैण्ड माननेके लिए तैयार नहीं था। आस्ट्रियाने उधर अपने वचनको बिना पूरा किये ही बोसनिया और हेर्जेगोविनाके सर्बोंको अपने राज्यमें मिलानेकी घोषणा कर दी। जारशाही बल्कानके स्लावोंको अपने प्रभावक्षेत्रमें मानती थी, जिसके लिये बहुत समयसे बृहत्तर स्लाववादको प्रोत्साहन दे रही थी। १९०८-९ ई०में आस्ट्रियाके इस कामसे युद्ध घोषित होनेमें कोई कसर नही थी, लेकिन जापानसे हार खानेके बाद अभी रूस इस स्थितिमें नहीं था, कि युद्ध छेड़कर आस्ट्रियाको जवाब देता।

जापानसे रूसके हारनेपर एसियाकी परतंत्र जातियोंमें स्वतंत्रताकी भावना बहुत बढ गई, और एक एसियाई जाति द्वारा युरोपके सबसे शक्तिशाली साम्राज्यके पराजित किये जानेके बाद वह यह माननेके लिये तैयार नहीं थी, कि युरोपकी जातियोंको काली जातियोंपर शासन करनेका अधिकार भगवान्की ओरसे मिला है। उधर १९०५-७ ई०में रूसमें क्रांतिकी जो प्रचंड आंधी आई थी, उसके कारण भी उसकी धाक ईरानके ऊपरसे हट गई। स्वतंत्रता-प्रेमी ईरानी देख रहे थे, कि जब तक पुराने शाही शासनमें सुधार नहीं किया जाता, तबतक हम अपने देशको अंग्रेजों और रूसियोंके चंगुलसे नहीं निकाल सकते। २० वीं सदीके आरंभमें ईरानमें जो राष्ट्रीयताकी लहर फैली, उसका परिणाम १९०६ ई०की ईरानी क्रांति थी। शाहने पहले गोलियो और जंजीरोंद्वारा स्वतंत्रताकी भावनाओंको दबाना चाहा, लेकिन अन्तमें उसमें असफल हो जनताकी ससद (मजलिस) को स्थापित करनेकी मांगको स्वीकार किया। लेकिन जारशाही इसे कब पसंद कर सकती थी? १९०८ ई०के ग्रीष्ममें कर्नल ल्याखोफने कसाकोंके ब्रिगेडको लेकर तेहरानमें पहुंच मजलिसपर तोपके गोले बरसाये, और शाहको मजलिस तोड़ देनेके लिये मजबूर किया। नवस्थापित मजलिसके कितने ही सदस्योंको फांसी दी गई, और कितनोंको जेलमें डाल दिया गया। इससे भी शाह लोगोंको दबा नहीं सका, और एक बच्चेको सिंहासनका अधिकारी बना रूसमें भाग गया। क्रांतिकारी ईरानको आगे न बढ़ने देनेके लिये इंगलैण्ड और रूसने मिलकर उसके चारों ओर आर्थिक घिरावा डाल दिया। दूसरी ओर ईरानी प्रतिगामियोंको सहायता और प्रोत्साहन दे १९११ ई०में प्रति-क्रांतिके सफल होनेमें मदद दी। ईरानी क्रांति समाप्त कर दबा दी गई, और उत्तरी ईरानमें रूस और दक्षिणी ईरानमें इंगलैण्डने अपनी-अपनी सेना रखनेके अधिकारको बनाये रक्खा।

ईरानमें जिस समय वहांके मध्यवर्गी राष्ट्रीयतावादी देशको नवजीवन देना चाहते थे, उसी समय पहलेसे चली आती राष्ट्रीय भावनाके प्रसार द्वारा अपनेको मजबूत देख तरुण तुर्कोंने १९०८ ई०में सैनिक विद्रोह द्वारा तुर्कीमें सफलता प्राप्त की। इस सफलताके फलस्वरूप तुर्कीकी सरकारमें वैधानिक

सुधार किये गये, जिन्हें विफल करनेके लिये पहला प्रहार था, आस्ट्रियाका बोसनिया और हेर्जेगोविनाको अपन राज्यमे मिलानेकी घोषणा। तरुण तुर्कोंके प्रयत्नोंसे तुर्की शक्तिशाली बन जाय, इसे रूस भी पसंद नहीं करता था, क्योंकि तब तो दरेदानियालके लिये उसकी आशाओंपर सदाके लिये पानी फिर जाता। रूसकी शह पा १९०९ ई०मे अफ्रीकाके तुर्कीके दो प्रदेशों—सेरेनेइका और त्रिपोलितानियाको इतालीने अपने अधिकारमें कर लिया। रूसने फ्रास और इगलैण्डके अरबीभाषी अफ्रीकी प्रदेशोंपर हाथ साफ करनका भी समर्थन किया। इतनेसे भी तरुण तुर्कोंकी शक्तिको कमजोर न होते देख तुर्कीसे लड़नेके लिये रूसके नेतृत्वम बल्कान-लीगकी स्थापना हुई। इन परिस्थितियोंमें तरुण तुर्कोंके लिये जर्मन साम्राज्यवादकी ओर मुह करनेके सिवा और कोई रास्ता नही रह गया। यह भी याद रखनेकी बात है, कि जिस वक्त पूर्वी युरोपमे यह घटनाये घट रही थी, उसी समय १९११ ई० में चीनकी महाक्रांति हुई—चीनी सामन्तवादी शासकोंने पश्चिमी युरोपके साम्राज्यवादियोंकी नोंच-खसोटसे देशको बचानेमे असफल होकर अपनेको अयोग्य साबित कर दिया था, इसलिये वहाके मध्यमवर्गने राष्ट्रीय मुक्तिके लिये पुरान शासकोंको हटाना जरूरी समझा। भला इतनी बडी बातको पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियां कैसे सह सकती थी? उन्होंने चीनका वित्तीय बायकाट कर क्रातिको निर्बल बना प्रति-क्रातिकारी राष्ट्रपति युवान-शि-काईको क्रातिका गला घोंटनेमें सहायता दी—इस काममें इंगलैण्ड, फ्रास, रूस, जर्मनी और युक्त राष्ट्र अमेरिकाके साथ जापान भी शामिल था।

आपसमे कही मेल और कही बिगाड़के साथ ऐसी घटनायें हो ही रही थीं। दुनियाके सबसे बड़े साम्राज्यवादी देश इंगलैण्ड और फ्रांस देख रहे थे, कि अन्तमें हमे जर्मनीसे निबटना है, जिसके लिये रूसका हमारे साथ रहना आवस्यक है। १९११ ई०में इन तीनों शक्तियोंके मुख्य सेना-संचालकों-का सम्मेलन हुआ, जिसमे फ्रासके प्रतिनिधिने कहा—"रूसी सेनाओंका लक्ष्य यही होना चाहिये, कि जर्मनी अपनी सेनाके सबसे बडे भागको पूर्वी मोर्चेमें फसा रखनेके लिये मजबूर हो।" इसके लिये रूसी सेनाको उसी समय जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये, जिस वक्त कि इंगलैण्ड और फ्रासकी सेनाये पश्चिममे आक्रमण शुरू करे। इतनेसे भी सतुष्ट न होकर १९१२ ई०मे तीनों शक्तियोंके सेना-सचालकोंका जो सम्मेलन हुआ, उसमे फ्रांसने माग की, कि आठ लाखसे कम रूसी सैनिक आस्ट्रिया और जर्मनीके सीमांतपर नही होने चाहिये, और पश्चिममे स्थिति चाहे जैसी भी हो, सेना-चालनके सोलहवे दिन, रूसको आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये। इसके लिये सैनिक रेलोंको बहुत भारी परिमाणमे बढ़ानेकी अवश्यकता थी, जिसके लिये जारशाहीको कर्जा और सामग्री देनेके वास्ते पश्चिमी राष्ट्र तैयार थे। स्तालिनके शब्दोंमे-"जारशाही रूस पश्चिमी साम्राज्यवादके लिये अपरिमित संरक्षित शक्ति थी, यही नही, कि वहां विदेशी पूंजी लगानेका स्वतंत्र अवसर मिला था, जिसके कारण रूसके आधारिक उद्योग-धंधों तथा राष्ट्रीय अर्थनीतिपर साम्राज्यवादियोंका नियत्रण हो गया था—उदाहरणार्थ कोयला, तेल और धातुके उद्योग—बल्कि यह भी कि रूस अपने लाखों सैनिकों द्वारा पश्चिमी साम्राज्यवादियों को मदद कर सकता था।"

औद्योगिक प्रगति—यद्यपि रूसी सामन्त अपने पुराने ढांचेको बनाये रखना चाहते थे, लेकिन बिल्कुल उलटी गंगा तो बहाई नही जा सकती। उद्योग-धंधोंको बढ़ाये बिना सैनिक तौरसे जारशाही मजबूत कैसे हो सकती थी? जापानसे हारकर उसने देख लिया था, कि कमसे कम सैनिक उद्योग-धंधोंको आगे बढ़ाना अनिवार्य है। इससे पूजीपतियोंको सबसे अधिक लाभ था—सेनाके ठेके बहती गगामे हाथ धोना था, नफा नही लूट थी, जिसे हरएक उच्च अधिकारी अपनोंमें बांटना चाहता था। १९०५-१३ ई० के बीच ढाई अरब रूबलका सैनिक ठेका दिया गया, और दो सालके भीतर साढ़े तीन हजार किलोमीतर रेलवे लाइनों तथा इंजनों और डब्बोंके बनानेका ठेका भी पूंजीपतियोंको मिला। इस तरह बड़े-बड़े नफेके साथ बड़े-बड़े ठेके मिले, जिन्हें कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये इजारादारीवाले बड़े पूजीपति सगठनोंकी अवश्यकता हुई, जिसके फलस्वरूप १९००-१० ई० के बीच पूजीपतियोकी कुछ सेंडीकेटोंने खान और धातु-उद्योग अपने हाथमें कर लिये। बारहसे पंद्रह बड़े-बड़े धातु-कारखानोंने मिलकर प्रोदमेतके नामसे अपनी सेंडीकेट कायम की, जिसने देशके सम्पूर्ण धातु-उद्योगका दो-तिहाई अपने हाथमे कर लिया। १९०६ ई०में प्रोद्गोल नामसे संगठित

सेंडीकेटने दोनेत्स-उपत्यकाकी साठ सैकड़ा कोयलेकी खानोंको अपने हाथमें कर लिया। १९०८ई० में स्थापित प्रोद्रूद सेंडीकेटके हाथमें दक्षिणी रूसकी खनिज धूनोंका अस्सी सैकड़ा था। इसी तरह कपड़ेके कारखानोंवालोंकी एक सेंडीकेट १९०८ ई०में मास्कोमें कायम हुई, जिसके हाथमें सैंतालीस कपड़ा मिलें थीं। इन सेंडीकेटोंने उद्योग-धंधोंके अधिक भागको अपने हाथमें ले आपसी प्रतियोगिताको इतना कम कर दिया, कि वह चीजोंके दामको मनमाना रख सकती थीं। जिस समय सेंडीकेटें प्रबल रूप धारण कर रही थीं, और नफेके कारण उनके द्वारा उद्योग-धंधेको बढ़ावा मिल रहा था, उसी समय बंकोंकी शक्तिका बढ़ना स्वाभाविक था, जिन्होंने बहुतसे औद्योगिक कारखानोंको अपने हाथमें कर लिया। सेंडीकेटोंने अपने मत्स्य-न्यायसे जिस तरह छोटी कंपनियोंके अस्तित्वको खतरेमें डाल दिया, उसी तरह अब छोटे बंकोंको निगलकर बड़े बैंकोंने अपनी प्रधानता स्थापित की और दिवालिया बननेके डरसे छोटे-छोटे बक बड़े-बड़े बंकोंके पेटमे चले गये। १९०८ ई०मे पीतरबुर्ग-अजोफ-ओरेल और दक्षिणी बंकोंने मिलकर सयुक्त बंकका रूप लिया। १९१० ई०में उत्तरी बंक रूसी-चीनी और रूसी-एसियाई बंकोंसे मिलकर एक हो गया। अब सात बड़े बकोंके पास रूसकी बंकमें लगी अधिकांश पूंजी चली आई। लेकिन सेंडीकेटों और महाबंकोंका शक्तिशाली होना केवल रूसी पूंजीपतियोंके लाभकी ही बात नही थी, इनकी पूंजीका बहुत अधिक भाग विदेशियोंका था। १९१४ ई०में रूसके अठारह प्रधान बकोंमे ३३५५ लाख रूबलकी पूंजी लगी हुई थी, जिसमें ४२ प्रतिशत (१८५५ लाख रूबल) विदेशी पूंजी थी। विदेशी पूंजीमें भी फ्रांसकी २१.९ प्रतिशत, जर्मनीकी १७ प्रतिशत, और अंग्रेजोंकी ३ प्रतिशत थी। इंगलैण्ड और फ्रांस दोनोंकी सम्मिलित पूंजी विदेशी पूंजीमें सबसे अधिक थी। पूंजीके अनुसार ही रूसमें उनका प्रभाव भी होना आवश्यक था।

१९०५-७ ई०की क्रांतिके देशमें असफल हो जानेपर घरके भीतर जारशाहीके लिये कोई भयंकर खतरा नहीं था। पूंजीके विस्तार और उद्योग-धधोंके प्रसारद्वारा पूजीपतियोंकी पांचों घीमें थीं, चाहे उसके कारण प्रथम विश्वयुद्धके पहले रूसका राष्ट्रीय ऋण ८८ अरब रूबल हो गया था, जिसमें सबसे अधिक वह फ्रांसका कर्जदार था। अभी भी बिजली, इंजीनियरी, तर्बाइन-निर्माण, मशीन-टूल-निर्माण, भारी इंजीनियरी, मोटर-उद्योग और भारी रसायन-उद्योग जैसे आधारभूत उद्योगोंका रूसमें अभाव था, और इन चीजोंके लिये उसे पश्चिमका मुह देखना पड़ता था। तेल-उद्योग अवश्य आगे बढ़ा था, लेकिन उसपर भी विदेशी पूंजीका नियंत्रण था। रूस बड़ी तेजीसे प्रथम विश्वयुद्धकी ओर बढता चला जा रहा था। रूसके राजनीतिक आकाशमें इस समय कोई राजनीतिक परिवर्तनके लिये बड़ी घटना घटनेकी संभावना नहीं थी, चारों ओर राजनीतिक अकर्मण्यता और उदासी छाई हुई थी। इसी समय चार ४ अप्रैल १९१२ ई० में लेनाकी सोनेकी खानोंके मजदूरोंपर गोलियां चलाई गईं, जिसके बारेमें स्तालिनने "ज्वेज्दा" (तारा) नामक बोल्शेविक पत्रमे १९१२ ई० मे लिखा था—"लेना-गोलीकांडने मौन रूपी बर्फको तोड़ दिया, और जनताके आन्दोलनकी नदी फिरसे बहने लगी।"

लेनाकी सोनेकी खानें एक कंपनीके हाथमें थी, जिसकी स्थापना १९०८ ई०में हुई थी, और जिसमें तीन-चौथाई पूंजी अंग्रेजोंकी थी। कंपनीको इस खानसे प्रतिवर्ष सत्तर लाख रूबलका फायदा होता था, और साइबेरियाके ध्रुवीय कक्षाके भीतर दूरके इस भूभागके मजदूरोंका बहुत क्रूरतापूर्वक शोषण होता था। यह सोनेकी खानें रेलसे डेढ हजार मील (१७०० किलोमीतर) दूर अवस्थित थीं। ध्रुवीय कक्षाके भीतर होनेके कारण यहांकी नदियां सालके अधिक भागमें बर्फ बनी रहतीं, जिससे याता-यात थोड़े-से महीनोंके लिये खुलता, जब कि लेना नदी मुक्त-प्रवाह होती। मजदूर एक मर्तबे वहां जा अत्याचारोंके मारे यदि भागना चाहते, तो आसानीसे भाग नहीं सकते थे। उनसे दससे साढ़े ग्यारह घंटा रोज काम लिया जाता। लेना सुवर्ण-क्षेत्र कंपनीकी तानाशाहीके मारे उनका नाकों दम था। कंपनीका मैनेजर वेलोजेरोफ लेनाका बिना मुकुटका राजा माना जाता था। अत्याचारोंसे तंग आकर फर्वरी १९१२ ई०के अन्तमें खानके एक भागमें हड़ताल हो गई। इसकी खबरसे प्रोत्साहित हो १ मार्च तक और कितने ही भागोंमें हड़ताल फैल गई, और सारे सुवर्ण-क्षेत्रमें आम हड़ताल संगठित कर ली गई। केंद्रीय हड़ताल कमेटीने कंपनीके प्रबंध-विभागसे बातचीत शुरू

की। कंपनीके स्थानीय इंजीनियर तुलचिन्स्कीने बडी अच्छी तरह बातचीत करके मेन्शेविक प्रतिनिधियोंको हड़ताल उठा लेनेपर राजी किया, लेकिन हडताल कमेटीके बोल्शेविक विचार रखने-वाले सदस्योंने हड़तालके पक्षमें प्रचार जारी रखना चाहा। इसपर तै हुआ, कि हड़तालके बारेमें गुप्त मतदान द्वारा कमकरोंसे राय ली जाय। २५ मार्चके सबेरे दो बड़े-बड़े पीपे हरएक क्षेत्रमें रख दिये गये, जिनमेसे एकपर लिखा था—"कामपर लौट जायेंगे", और दूसरेपर "कामपर नही लौटेंगे।" मजदूरोंको एक-एक कंकड़ अपने मतको प्रकट करनेके लिये पीपोंमें डालना था। जल्दी ही "काम पर नहीं लौटेंगे" वाला पीपा पत्थरोंसे भर गया, जब कि दूसरे पीपेमे केवल सत्रह पत्थर मिले। इसपर २७ मार्चको छ हजार कमकरोंने आम हडताल कर दी।

१७ (४) अप्रैलको हड़ताली प्रदर्शन करते हुये जब नदेज्दिन्स्क सुवर्ण-क्षेत्रके पास पहुंचे, तो सेनाने रास्ता रोक दिया। इंजीनियर तुलचिन्स्कीने कमकरोको बिखर जानेके लिये कहा, जिसपर कुछ लोग रुक गये, लेकिन दूसरे एक छोटे रास्तेसे आगे बढ़े। इसी समय धड़ाधड़ गोलिया चलने लगी। दो सौ पचास कमकर निहत हुये और दो सौ सत्तर आहत। यहां भी "खूनी रविवार" की तरह जारशाही अत्याचारने मजदूरोंमे भारी विद्रोहकी भावना पैदा कर दी, और सचमुच ही लेनाके गोलीकाडने अकर्मण्यताके बर्फको तोड़ दिया।

लेनाके गोलीकाडकी खबर सारे देशमें फैल गई। बोल्शेविकोंने फिर अपनी तत्परता दिखलानी शुरू की। इसी समय बोल्शेविकोंने अपने दैनिक "प्राव्दा" (अधिकार, सत्य) के निकालनेकी तैयारी की। "प्राव्दा" रूसी मजदूरोंका पत्र था। उसमें उन्हीकी भाषामें सरल लेख होते थे। यह कुछ मध्यमवर्गके शिक्षितोंके लिये पराई भाषामें कठिन शब्दोंके साथ अपनी मार्क्सवादकी पंडिताई दिखलानेके लिये नही निकाला गया था। १९१२ ई०के जनवरीमे "प्राव्दा" के लिये चन्दा होने लगा, जिसमें रूसके सभी भागोके मजदूरोंने पैसा भेजे। चंदेमे इतनी सफलता हुई, कि लेनिनने उसके बारेमें लिखा—"प्राव्दाका निर्माण रूसी कमकरोंकी एकता, वर्गचेतना और शक्तिका सबसे बड़ा प्रमाण है।" "प्राव्दा"का प्रथम अक स्तालिनके सम्पादकत्वमे ५ मई (२२ अप्रैल) १९१२ ई० को निकला, इसीलिये आज भी रूसमे ५ मईको कमकर-प्रेस-दिवस मनाया जाता है।

चतुर्थ दूमाका चुनाव—१९१२ ई० मे तृतीय राज्यदूमाका कार्यकाल समाप्त होनेपर उसे तोड़ दिया गया, और चतुर्थ दूमाके निर्वाचनका निश्चय हुआ। कई सालोंसे स्तोल्पिनके हाथमे रूसी राज्यकी बागडोर थी। वह अपने अत्याचारोंके कारण लोगोंकी भारी घृणाका पात्र था। १९११ ई०मे उसकी हत्या हो जानेपर फिर सभी जगह पुलिस अत्यचार होने लगा। दूमाका निर्वाचन ऐसे ही वातावरणमे हो रहा था। बोल्शेविकोंने दूमाके भाषणमंचके फायदेको अच्छी तरह समझ लिया था, इसलिये उन्होंने निर्वाचनका बायकाट नही किया। लेनिन उस समय पेरिसमे रहते रूसके भीतर राजनीतिक कार्यका सचालन कर रहे थे। उनको और नजदीक आनेकी जरूरत महसूस हुई, इसलिये १९१२ ई०के ग्रीष्ममें पेरिस छोड़कर वह पोलन्दके नगर क्राकोमे चले आये। निर्वाचनके बाद १९१२ ई०के अन्तमें चतुर्थ राज्यदूमाकी पहली बैठक हुई। इसमे प्रतिगामियोंकी संख्या और बल अधिक था—४१० सदस्योंमें १७० दक्षिणपंथी थे, अक्तूबरियोंकी संख्या सौ थी, जो दक्षिणपंथके अनुयायी थे। कादेतोंकी सख्या पचास थी, इनमें और अक्तूबरियोंमे इतना ही अन्तर था, कि कादेत वामपक्षकी बातोंको इस्तेमाल करते थे, यद्यपि दूमाके भीतर उनका गठजोड़ा अक्तूबरियोंसे था। निम्न मध्यमवर्गके सदस्योंमें दस त्रुदोविकी और सात मेन्शेविक थे। मेन्शेविकोंने बोल्शेविकोंके साथ दूमाके भीतर एकता रखनेका प्रयत्न किया, लेकिन बोल्शेविक छ थे, इसलिये अपने एकके बहुमतका फायदा उठाकर मेन्शेविक बोल्शेविकोंको दूमामे बोलनेसे रोका करते थे, इसपर बोल्शेविक अलग हो गये। ४१० सदस्योंमें ६ की संख्या नगण्य है, लेकिन बोल्शेविक जनताके हितोंके पक्षपाती तथा जारशाही क्रूरताको नंगा करनेके लिये वहां पहुंचे थे, इसलिये उनके भाषणोंका असर लोगोंपर बहुत पड़ता था। अपने प्रचारका यहां बहुत अच्छा अवसर था, और क्रांतिसे पहलेके वर्षोंमें लेनिनके दलने इसका खूब फायदा उठाते जनताके भीतर जारशाहीके विरुद्ध भारी घृणा पैदा करनेमें सफलता पाई। बोल्शेविक अपनी

क्रांतिको केवल रूसियोंके ही लाभके लिये नही चाहते थे, बल्कि उनका लक्ष्य था रूसके भीतर रहनेवाले सभी लोगोंको शोषण और उत्पीड़नसे मुक्त करना। ऐसी हालतमें अ-रूसी जातियोंके बारेमें अपने रुखको स्पष्ट कर देना बहुत जरूरी था, इसीलिये १९१३ ई० में दो महत्त्वपूर्ण कृतिया प्रकाशित हुई—लेनिनका "राष्ट्रीय प्रश्नपर समालोचनात्मक टिप्पणिया" और स्तालिनका "मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"। इन दो ग्रंथोंने सारी जनताके सामने साफ कर दिया, कि साम्यवादी रूसमें "सभी जातियोंको आत्मनिर्णयका पूरा अधिकार होगा, और वह अपनी इच्छानुसार चाहे तो रूसी संघसे बाहर भी जा सकेगी।"

विश्व-युद्धकी तैयारी—आनेवाले विश्व-युद्धमें रूसको अपनी ओर शामिल करनेके लिये पश्चिमी युरोपके दोनो गुटोंने किस तरह कोशिश की, इसके बारेमे हम बतला चुके है। युद्ध कैसर विलियम (विल्हेल्म)की सनकके कारण नही हुआ, बल्कि उसका ठोस कारण परस्पर-विरोधी साम्राज्यवादी आर्थिक स्वार्थ थे। जर्मन साम्राज्यवादने तुर्कीकी ओर बढना चाहा। जर्मन-बंकने रेलों द्वारा जर्मनीको तुर्कीसे मिलाना चाहा। जर्मन सैनिक अफसर तुर्की सेनाको संगठित और शिक्षित करके उसे रूस और इंगलैण्डके विरुद्ध तैयार कर रहे थे। जर्मनीके पास नाममात्रके थोड़ेसे उपनिवेश (अफ्रीकामें) थे। जर्मनीकी सामरिक शक्तिसे भयभीत इगलैण्ड नही चाहता था, कि उसके उपनिवेशोंके बीचमें जर्मनीको कही भी पैर रखनेको मिले। वह चाहता था, कि जर्मनीकी नौसेना और व्यापारिक बेड़ेको नष्ट कर जर्मन उपनिवेशको अपने हाथमें कर ले। तुर्कीको मसोपोतामिया (इराक) और फिलस्तीनसे वंचित करके मिस्रपर अधिकार करनेके लिये भी वह उतारू था। फ्रास जर्मनीकी सैनिक शक्तिको दबाकर अलसस्-लोरेन प्रदेशको जर्मनीसे छीनकर राइन नदीके बाये तटपर अधिकार करना चाहता था, और तुर्की-साम्राज्यकी बंदरबांटमें इंगलैण्डका सहभागी भी होना चाहता था। जारशाही रूसकी योजना थी बासफोरस और दरेदानियालपर अधिकार, तुर्कीके भीतरकी अर्मेनियापर हाथ साफ करना, तथा आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करते हुये बल्कान प्रायद्वीपपर अपने प्रभावको स्थापित करना। जापान भी चीनमें अपनी मनमानी करनेके लिये एक ऐसे बड़े मौकेकी खोजमें था। लेकिन विश्वयुद्धका पहले एक छोटे-से युद्धमें रिहर्सल हुआ, यह था बल्कान-युद्ध।

बल्कान-युद्ध (१९१२-१३ ई०)—बोस्नियां और हेर्जेगोविनामें आगे बढ़कर आस्ट्रियाने रूसको बहुत क्रुद्ध कर दिया था। जारशाही सर्विया, बुल्गारिया, मोन्तेनिग्रो और ग्रीसको बल्कान-संघके रूपमें एकताबद्ध करके उन्हें तुर्कीके विरुद्ध तैयार करना चाहती थी। फ्रांस भी इसमे उसका पृष्ठपोषक था, क्योंकि पश्चिमी देशोंके सामने सबसे बड़ी समस्या थी जनबल या सिपाहियों-की संख्या। वह समझता था, कि इस प्रकार बल्कानकी दस लाख सगीने हमें आसानीसे मिल जायेंगी। जर्मनी और आस्ट्रिया तुर्कीकी पीठपर थे। प्रथम बल्कान-यद्ध १९१२ ई०के शरद्में आरम्भ हुआ। १९११ ई०से ही इतालीके साथ तुर्कीकी लड़ाई छिड़ी हुई थी, इसलिये बल्कान-संघ उसीको आगे बढ़ाते हुये युद्धमें कूदा। तुर्क नये हथियारोंसे सुसज्जित नवसंगठित पूर्वी युरोपके सिपाहियोंके सामने जल्दी ही परास्त हो गये, लेकिन फिर विजेताओंमें आपसमें झगड़ा खड़ा हो गया, जिसके कारण अगले साल १९१३ ई०के ग्रीष्ममें दूसरा बल्कान-युद्ध विजेताओंके भीतर हो गया। बुल्गारियाने सर्वियापर आक्रमण कर दिया, जिससे नाराज होकर दूसरे बल्कान राज्य बुल्गारियाके विरुद्ध हो गये। फलतः बुल्गारियाकी हार हुई, और उसे अगस्त १९१३ ई० में बुखारेस्त-संधिपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। इस संधिके अनुसार बुल्गारियाके अपने कितने इलाके पड़ोसियोंको देने पड़े, और अद्रियानोपोल बुल्गारियाके हाथसे निकलकर फिरसे तुर्कीके हाथमें चला गया। इसी युद्धमें सर्वियाने अल्बानियापर अधिकार कर लिया, लेकिन जब आस्ट्रियाने मैदानमें आनेकी धमकी दी, तो उसे छोड़ना पड़ा।

इन युद्धोंने बल्कानके स्लावोंको तुर्कीकी अधीनतासे मुक्ति प्रदान की, लेकिन अब युरोपकी बड़ी शक्तियां उनपर प्रभाव डालनेके लिये कशमकश कर रही थीं। बर्लिन-बगदाद रेलवेके लिये जर्मन और फ्रेंच दोनों पूंजी लगा रहे थे, और इन विरोधी स्वार्थोंके संघर्षने बल्कानको सचमुच ही

बारूदका ढेर बना दिया था, जिसमें एक चिनगारी पड़ जानेसे भीषण विस्फोटक हो जानेका भय था। सभी युरोपीय शक्तियां हथियार बढ़ानेपर आंख मूंदकर खर्च कर रही थीं। जारशाहीने १९१४ ई०में साढ़े सत्तानबे करोड़ स्वर्ण रूबल सेनाके लिये रक्खा था। १९०७ ई० से १९१३ ई० तक उसने इस मदमें चार अरब रूबल खर्च किये। इंगलैण्ड भी अपनी शक्तिको इसी तरह बढ़ानेमें लगा हुआ था। अपने नौसैनिक बलको बढ़ानेके लिये १९०६ ई०मे उसने प्रकांड ड्रेडनाट युद्धपोत बनाया, जिसका अनुकरण करते जर्मनी और फ्रांसने भी अपने-अपने ड्रेडनाट बनाने शरू किये। फ्रांसीसी पूंजीकी मददसे जारशाहीने भी नौसैनिक निर्माणके लिये बहुत बड़ा प्रोग्राम रक्खा, लेकिन उसकी मंद गतिके कारण अभी एक भी युद्धपोत तैयार नहीं हुआ था, जब कि १९१४ ई०का विश्वयुद्ध छिड़ गया। प्रोफेसर न० ई० जूकोव्स्की पहला आदमी था, जिसने विमान-विद्याका आविष्कार किया, लेकिन जारशाहीने उससे लाभ नहीं उठाया। प० न० नेस्तोरोफने पहिली बार कलैया मारकर अपने हवाई जहाजको उड़ाया, लेकिन जारशाही इसके महत्त्वको नहीं समझ पाई। यही नही, वैसा करनेमें एक छोटे-से पुर्जेके खो जानेके लिये नेस्तोरोफको "अनुशासनहीनता" के लिये जुरमानेका दंड दिया गया।

जैसे-जैसे युद्ध-घोषणाके दिन नजदीक आ रहे थे, वैसे ही वैसे रूसके भीतर जनतामें असंतोष भी फैलता जा रहा था। १९१४ ई० के आरम्भमे सर्वहारोंके क्रांतिकारी संघर्ष जगह-जगह होने लगे। ९ जनवरीको "खूनी रविवार"के वार्षिकोत्सवको ढाई लाख मजदूरोंने हड़ताल करके मनाया। १९१४ ई० के पूर्वार्धमे पंद्रह लाख मजदूरोंने हड़ताल की। १९१४ ई० के ग्रीष्ममे बाकूके तैल क्षेत्रमें भी एक बडी राजनीतिक हड़ताल हुई, जिसे तोड़नेकी जारशाहीने बहुत कोशिश की। बोल्शेविकोंके अपील करनेपर बाकूके हड़तालियोंकी सहानुभूतिमें पीतरबुर्गके नब्बे हजार कमकरोंने काम छोड़ दिया, और ११ जुलाई को तो राजधानीके दो लाख मजदूरोंने हड़ताल करके अपनी सभाओंमें नारा लगाया—"बाकूके साथियो, हम तुम्हारे साथ हैं।" "बाकूके कमकरोंकी विजय हमारी विजय है।"

प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४–१८ ई०)—बल्कानका बारूदका ढेर तैयार ही था। एक ओर जर्मनी और आस्ट्रिया, दूसरी ओर इगलैण्ड, फ्रांस और रूस नखसे शिखतक हथियारोंसे लैस होकर खड़े थे। सेराजिवामे आस्ट्रियाके युवराजकी हत्याने बारूदमें चिनगारी डालनेका काम किया, और जुलाई १९१४ ई० मे जर्मनीके भड़कनेपर महायुद्ध छिड़ गया। इस युद्धके दो दलोंमें एक था चतुर्दलीय पक्ष, जिसमें जर्मनी, आस्ट्रिया-हगरी, बुल्गारिया और तुर्की शामिल थे, दूसरा त्रिदलीय पक्ष, जिसमें इंगलैण्ड, फ्रांस और रूसके साथ सर्बिया और बेल्जियम भी सम्मिलित थे। १९१४ ई० में ही जापान भी त्रिदलीय गुटमे शामिल हो गया, इताली १९१५ ई०में युद्धमें कूदा, और अन्तमें १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिकाने भी शामिल हो इसे विश्वयुद्ध बना दिया। प्रथम विश्वयुद्धमें छोटे-बड़े तैतीस देश शामिल हुये, ७४० लाख सैनिक युद्धके लिये चालित किये गये, जिनमें तीन करोड़ प्राणोंकी हानि हुई—इनमें लाखों भारतीय भी थे। पैसेके रूपमें इसमे तीन अरब रूबल धन स्वाहा हुआ।

त्रिदलीय गुटमें पहले ही निश्चय हो गया था, कि युद्ध छिड़ते ही रूसको पूर्वसे आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण करना होगा। युद्धके आरम्भ होते ही युरोपमें तीन मोर्चे बन गये। पश्चिमी मोर्चा उत्तर समुद्रसे स्वीजलैण्ड तक फैला हुआ था, जिसपर इंगलैण्ड और फ्रांसकी सेनायें जर्मन सेनाओंका मुकाबिला कर रही थी। पूर्वी मोर्चा वस्तुतः रूसी मोर्चा था, जो बाल्तिक समुद्रसे रूमानिया तक फैला हुआ था। इनके अतिरिक्त एक बल्कान-मोर्चा था, जो दन्यूब नदीके किनारे-किनारे चला गया था। रूसी मोर्चा उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दो भागोंमें विभक्त था। उत्तर-पश्चिमी मोर्चा बाल्तिक समुद्रसे बुग नदीके निम्न भागतक चला गया था, और दक्षिणी-पश्चिमी मोर्चा रूस-आस्ट्रियाके सीमांतको लेते रूमानिया तक फैला हुआ था। इन्हीं दोनों मोर्चोंमें रूसको आक्रमण करना था। बल्कान-मोर्चेपर आस्ट्रियाकी सेनाका मुकाबिला सर्बियाकी सेनाको करना था। जर्मनीने अपने सुभीतेको देखकर फ्रासकी राजधानी पेरिसकी ओर जल्दी बढ़नेके लिये बेल्जियमकी तटस्थता भंग कर दी, और इसके कारण फ्रांस और इंगलैण्डकी सेनाके लिये मुकाबिला बहुत जबर्दस्त हो गया।

रूसी सेनाने जर्मन सेनाओंको पश्चिमकी ओर बढ़नेसे रोकनेके लिये उसके पूर्वी सीमांतपर आक्रमण किया। पश्चिममें प्रगति जारी रखते हुये जर्मनोंने इसी समय जेनेरल समसानोफकी रूसी सेनाको मसूरी झीलों---दलदली भूमिमें घेर लिया। लाखों रूसी मारे गये। समसानोफने लज्जाके मारे आत्म-हत्या कर ली। जारशाहीके लिये यह कोई अच्छा सगुन नहीं था। समसानोफकी सेनाको हरानेके बाद जर्मनोंने रेतेनकाम्फकी अधीनतामें लड़ती रूसी सेनापर आक्रमण किया, और वह भी एक लाख दस हजार आदमियोंको खोकर पीछे हटी। रूसियोंने इतनी भारी क्षति उठाई, लेकिन इसके लिये जर्मनीको अपनी सेनाका काफी भाग पूर्वकी ओर भेजना पड़ा, जिसके कारण पेरिस बच गई। पश्चिमी साम्राज्यवादियोंकी मनोकामना पूरी हुई, रूसने सारी चोटें अपने ऊपर लेकर फ्रांसको पराजित होनेसे बचा दिया।

उत्तर-पश्चिमी मोर्चेपर रूसी सेनाके असफल आक्रमण करते समय ही अगस्त १९१४ ई० में चार रूसी अक्षौहिणियोंने दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर आस्ट्रियाके विरुद्ध आक्रमण किया। यहां सफलता मिली, और शत्रुओंको हराकर उन्होंने ल्वोफ और गोलिचपर अधिकार कर लिया, करीब-करीब सारी गलिसिया रूसी सेनाके हाथमें आ गई, लेकिन सितम्बरके अन्तमें जर्मन सेनायें आ धमकीं, जिससे दिसम्बर १९१४ ई० के मध्य तक रूसी सेनाओंकी प्रगति रुक गई। अब दोनों ही पक्ष एक दूसरेको ढकेलनेमें असमर्थ थे। लेकिन १९१४ ई०के शरद्‌में काकेशसका एक नया मोर्चा तैयार हो गया था। दो जर्मन युद्धपोत "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला" भूमध्यसागरसे कालासागरमें घुस आये। तुर्क जर्मनीके पक्षमें थे, इसलिये उन्हें दरेदानियाल पार होनेमें कोई अड़चन नहीं हुई। तुर्कोंने रूसके विरुद्ध जर्मनीसे संधि की थी, इसलिये उसने रूसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला"ने अदेस्सा और फ्योदोसियापर बमवर्षा की, तुर्क सेनाने भी अपना प्रभुत्व दिखलाना चाहा, लेकिन दिसम्बर १९१४ ई०में सरिकामिशके युद्धक्षेत्रमें उसे रूसियोंने बुरी तरह हराया। दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर कितने ही समय तक दोनों पक्षोंकी प्रगति रुके रहनेके बाद १९१५ ई०के अप्रैलके अन्त और मईके आरम्भमें एक जर्मन सेना गोर्लिच और तरनोफके बीच रूसी मोर्चे-का भेदन करनेमें सफल हुई, जिसके कारण रूसी सेना जल्दीसे पीछे हटनेके लिये मजबूर हुई। अब सारे रूसी मोर्चेपर जर्मन छा गये। आस्ट्रियन सेनाने पर्जेमिसल और ल्वोफको ले लिया, जुलाईमें एक जर्मन सेनाने इवानगोरदके किलेपर अधिकार किया, जुलाईके अन्तमें वारसा (वरसावा) और ब्रेस्त-लितोव्स्क जर्मनोंके हाथमें चले गये, फिर आगे बढ़ते हुए उन्होंने ग्रोद्नो और विल्नोस्पर अधिकार किया। १९१५ ई०के शरद्‌में इस प्रकार पोलन्द, लिथु-वानिया और बाल्तिक प्रदेशोंके कितने ही भाग जर्मन और आस्ट्रियन सेनाके हाथमें चले गये। १९१५ ई० के मईसे अक्तूबरके छ महीनेमें डेढ़ लाख रूसी सैनिक मारे गये, और दस लाख आहत या बंदी हुये। इस प्रकार १९१४-१५ ई०में पूर्वी मोर्चेपर रूसी सेनाकी भारी हार हुई। रूसके लिये अब कोई आशा नहीं थी। लोगोंमें युद्धके भीषण संहार, पराजय तथा जारशाही शासनके अत्याचारोंके विरुद्ध भारी असंतोषकी आग भड़क उठी। बोल्शेविक पहलेसे ही युद्धके विरोधी थे। जिस वक्त युद्ध छिड़ा, उस वक्त लेनिन आस्ट्रियामें थे। आस्ट्रियनोंने लेनिनको पकड़कर अपने देश से निकाल दिया, और वह स्वीजलैंण्ड चले गये। बोल्शेविक इस युद्धको अनुचित युद्ध कहते थे, क्योंकि वह परतंत्र देशोंकी मुक्ति या स्वतत्र देशोंकी प्रतिरक्षाके लिये नहीं लड़ा जा रहा था, बल्कि उसका उद्देश्य था विदेशी राज्यों और जातियोंको जीतकर गुलाम बनाना।

रूसमें चारों ओर आर्थिक अव्यवस्था फैली हुई थी। उसकी पिछड़ी हुई आर्थिक-व्यवस्था तथा उद्योग-धंधोंकी निर्बलताके कारण जर्मनोंसे हारनेके सिवा रूसकी सेनाओंके लिये और कोई रास्ता नहीं था। युद्धके कारण कोयलेका अभाव-सा हो गया, जिससे फैक्टरियों और मिलोंने कामको कम कर दिया। १९१६ ई०में धौंकू भट्ठोंने लोहा तैयार करना बन्द कर दिया---फौलादके कारखाने देशके लिये आवश्यक धातुका आधा ही पैदा करते थे। रेलें युद्ध-कालीन यातायातको ठीकसे कायम नहीं रख सकीं। सेनायें ऐसी अस्त-व्यस्त अवस्थामें पीछे हटीं, जिसके कारण बहुतसे इंजन और गाड़ियां दुश्मनोंके हाथोंमें जानेसे नहीं बचाई जा सकीं। सैनिकोंके सेनामें भर्ती होनेके कारण

कृषिकी उपज भी पहलेसे बहुत कम हो गई, वयस्क पुरुषोंमेसे ४७ प्रतिशत (१४० लाख) सेनामें भर्ती किये गये थे। खेतीके लिये उपयोगी घोड़ोंमें पचास लाखकी कमी हो गई थी, फिर कृषिकी उपज क्यो न कम होती? १९१६ ई०म १९०९ ई०की अपेक्षा पचासी प्रतिशत ही खेत बोये गये। लड़ाईके लिये सामान खरीदनेके वास्ते इगलैण्ड, फ्रांस और युक्त राष्ट्र अमेरिकाको ७७६९० लाख रूबल देना था, यह चोट सबसे भयंकर थी। युद्धक्षेत्रमे घोर पराजय और देशके भीतर आर्थिक प्रलय दोनोंने मिलकर रूसी शासकों और पूंजीपतियोंका होश बिगाड़ दिया। रूसी सैनिकोंके खूनकी गिनती न करके जारशाहीके मित्र अपने कर्जोको जल्दी उगाहना चाहते थे। इंगलैण्डका तीन अरब रूबल कर्जा हो गया था, जिसके बदलेमे उसने जारशाही सरकारसे उसकी संरक्षित सुवर्ण-निधिको लंदन भेजनेके लिये मांग की, और साथ ही वह इसपर जोर दे रहा था, कि रूस और भी ताजी सेनायें युद्धक्षेत्रमें भेजे। १९१६ ई०मे फ्रांसने अपने प्रतिनिधि भेज चार लाख रूसी सेना फ्रांसके भीतर लड़नेके लिये मांगी। यदि क्रांति न हो गई होती, तो जारशाही रूस फ्रांसकी मांगको ठुकरा नही सकता था।

इस तरहकी आर्थिक अराजकता और संकटको बर्दाश्त करना जनताकी शक्तिके बाहर था। जनताके सबसे जागरूक भाग मजदूरोंने अपने मनोभावको १९१५ ई०के बसंतसे ही जगह-जगह हड़ताल करके प्रकट करना शुरू कर दिया था। ९ जनवरी १९१६ ई०का "खूनी रविवार" उन्होंने एक बड़ी राजनीतिक हड़तालके रूपमें मनाया। अक्तूबर १९१६ ई०में ऐसी हड़ताल और प्रदर्शन बड़े जोरदार होने लगे, और कमकरोंने नारा लगाना शुरू किया—"युद्ध बन्द करो", "स्वेच्छाचारिता की क्षय।"

सेनाका मनोभाव कैसा था, इसका पता सिपाहियोंके अपने घरोंमें भेजे पत्रों द्वारा मिलता था। एक सिपाहीने लिखा था—"आजके सिपाही वह सिपाही नहीं है, जो कि जापानी-युद्धके समय थे। दासताभरी आज्ञाकारिताके बाहरी परदेके भीतर उनके दिलोंमे भारी गुस्सेकी आग धधक रही है, एक छोटी-सी दियासलाई जलाने भरकी देर है, और वह भड़क उठेगी।" और दियासलाई जलानेका काम बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे कर रहे थे। उनमेसे कितने ही सेनामें काम कर रहे थे। म० व० फ्रुंजे जैसा युद्धकौशल पटु क्रांतिकारी १९१५ ई०मे जेलसे भाग निकला था। उसने मिन्स्क नगरमें एक बोल्शेविक संगठन कायम करके पश्चिमी मोर्चेके सिपाहियोके साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किया। अ० अ० ज्दानोफ सेनाके लिये चालित किया गया था। वहां जाकर उसने सेनामें बोल्शेविक प्रचार शुरू किया। व० व० विवबिशियेफ और स० म० किरोफ काकेशस और समारामें विद्रोह फैला रहे थे। ल० म० कगानोविच पहले कियेफ और बादमे एकातेरिनोस्लावमे मजदूरों और सैनिकोंके बीचमें प्रचार कर रहा था। इस प्रकार मालूम होगा, कि बोल्शेविक इस स्थितिसे फायदा उठानेके लिये तैयार थे।

मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव—युद्धके कारण जो आर्थिक कठिनाइयां युरोपीय रूसमें पैदा हुई थीं मध्य-एसिया उसके प्रभावसे मुक्त कैसे रह सकता था? चीजोंके दाम मंहगे हो गये थे, करके भारसे लोग वैसे ही दबे हुये थे, और अब युद्धके कारण उसे और बढ़ा दिया गया था। रूसी पूजीपतियोंको कपासकी जरूरत थी, इसलिये मध्य-एसियाकी कृषि-भूमिमे कहीं-कहीं आधेसे ज्यादाको कपासके खेतोंमे परिणत कर दिया गया था, जिसके कारण पर्याप्त अनाज पैदा नहीं हो सकता था, और देशमें अन्नका अकाल फैला हुआ था। रूसी सरकार और उसके गोरे अफसर किर्गिज और कजाक घुमन्तुओंको उनकी चरागाहोंसे वंचित करके वहां रूसी किसानोंको बसा रहे थे। १९१५ ई०में पैंतालीस लाख एकड़ बढ़िया जमीन कजाकों और किर्गिजोंसे छीनकर रूसी जमीदारों, सरकारी अफसरों और कुलकों (धनी किसानों) को दे दी गई। युद्धके लिये रिसालोंके वास्ते घोड़ों और खानेके लिये पशुओंको छीन-छीनकर मध्य-एसिया और कजाकस्तानके चरवाहोंकी अवस्थाको और भी बुरा बना दिया गया। लोग पहले हीसे "त्राहि मां, त्राहि मां" कर रहे थे। इसपर जून १९१६ ई० में राजाज्ञा निकली, कि १९ से ४३ वर्षके उमरवाले पुरुषोंको फौजमें भर्ती होना पड़ेगा, और उन्हे युद्धक्षेत्रमें खाइयां खोदने तथा दूसरे कामोंमें लगाया जायेगा। रूसके कानूनके अनुसार रूस-भिन्न जातियोंसे सैनिक सेवा नही ली जा सकती थी। भला जारशाही द्वारा शोषित और

उत्पीड़ित उज्बेक, कजाक, किर्गिज, तुर्कमान क्यों सैनिक सेवा करनेके लिये तैयार होते ? सो भी ऐसे समयमें, जब कि खेतमें फसल काटनेके लिये तैयार थी। उज्बेक और कजाक विद्रोह करनेमें पहले थे। ताशकन्द और समरकन्द जिलेके गावों और कस्बोंमें उज्बेकोंने सरकारी कचहरियों और दफ्तरोंपर आक्रमण किया, और सैनकि भरतीकी सूचीको जला दिया। जुलाई १९१६ ई० के मध्यमे विद्रोह सारे फरगानामें फैल गया। समरकन्द जिलेमे जीजकके पास जारशाही सेनाके साथ बाकायदा लड़ाई हुई, जिसमें रूसी सेनाने तोपोंका इस्तेमाल किया। विद्रोहियोंने वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) और ताशकन्दके बीचके यातायातको काट दिया, और अपने विरुद्ध भेजी गई हथियारोंकी ट्रेन लूट ली। इन हथियारोंसे हथियारबन्द होकर किसान रूसी सेनासे लड़नेके लिये तैयार हो गये, और अक्तूबरसे पहले जारशाही उनके विद्रोहको दबा नही सकी। तुरगाई (आधुनिक अकत्यूबिन्स्क) जिलेके कजाकोंका विद्रोह सितम्बर १९१६ ई० मे शुरू हुआ। उसके दबानेमें जारशाहीको काफी कठिनाई उठानी पड़ी। इस विद्रोहका नेता अमनगेल्दी ईमानोफ था। जब जिलेके कजाकोंने सेनामें भरती होनेसे इन्कार कर दिया, तो रूसी राज्यपालने स्वयं जाकर उन्हें समझाना चाहा, इसपर अमनगेल्दीने उससे पूछ दिया—"इजाजत दीजिये सरकार, एक प्रश्न पूछनेकी। अपने अज्ञानके कारण हमें समझमे नहीं आता, कि इस युद्धमें शामिल हो हम किसकी प्रतिरक्षा करेंगे ?" राज्यपालने अमनगेल्दीको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया, लेकिन वह वहासे अन्तर्धान हो गया, और थोड़े ही समयमें उसने काफी संख्यामे विद्रोहियोंको संगठित कर जारशाही सेनाका मुकाबला पहलेपहल किजिलकुल (लाल सरोवर) में किया। लड़ाई सारे दिन होती रही, सेनाको पीछे हटना पड़ा। अक्तूबर १९१६ ई०के अन्तमे अमनगेल्दी और उसके साथियोंने तुरगई नगरको घेर लिया, लेकिन वह उसके ऊपर अधिकार नहीं कर सके। वहांसे हटकर अमनगेल्दीने बतबकरा गांवमें किलेबन्दी करके उसे अपना केंद्र बनाया। वहां उसने हथियारोंके बनानेके लिये एक मिस्त्रीखाना स्थापित किया, जिसमें कारीगर रात-दिन लगकर तलवार और दूसरे हथियार बनाने लगे। उसने कजाकोंको बन्दूक चलाना और फौजी कवायद सिखाना भी शुरू किया। फर्वरी १९१७ ई०के मध्यमें एक काफी बडी सेना अमनगेल्दीके विरुद्ध भेजी गई, जिसने बतबकरापर अधिकार कर लिया, लेकिन विद्रोहियोंको उनके बाप-दादोंका दश्त (निर्जन भूमि) शरण देनेके लिये तैयार था। बोल्शेविक-क्रातिके अब आठ ही महीने रह गये थे। उतने दिनों तक किसी तरह लड़ते और आत्मरक्षा करते अमनगेल्दी और उसके आदमियोंने बिताया। बोल्शेविक-क्रांतिके समय अमनगेल्दी बोल्शेविकोंमें शामिल हो गया, और बोल्शेविक पार्टीका सदस्य बन क्रातिके लिये लड़ते हुये उसने वीरगति प्राप्त की।

तुर्कमानोंमें भी संघर्ष देरतक रहा। तुर्कमान प्रायः सारे घुमन्तू थे, इसलिये अपने विरुद्ध भेजी सेनासे आसानीसे बचते हुये वह तुर्कमानिस्तानकी विस्तृत तथा बहुत कुछ निर्जन और रेगिस्तानी भूमिमें घूमते रहे, और कही-कही विद्रोही ईरानकी सीमाके भीतर भी चले गये। जारशाही सैनिकोंने जहां भी मौका मिला, तुर्कमानोंके डेरोंको जला दिया, उनकी सम्पत्ति और पशुओंको छीन लिया। इस अत्याचारके कारण कितने ही इलाकोंमें जनसंख्या आधी रह गई। महाराज्यपाल कुरोपत्किनने ३४७ विद्रोहियोंपर मुकदमा चला ५१ को फासी दिलवा दी। जारशाहीने इस तरह अपने अन्तिम दिनोंमें मध्य-एसियाके लोगोंपर भीषण अत्याचार किये। जहां दक्षिणवाले अपने परिवारों और पशुओंको लेकर ईरान और अफगानिस्तानमे भागनेके लिये मजबूर हुये, वहां कितने ही हजार किर्गिज और कजाक चीनी तुर्किस्तानके भीतर भाग गये। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद उनमेसे अधिकाश फिर अपनी जन्मभूमिमे लौट आये।

फर्वरी-क्रान्ति—अन्तिम दिनोंमें जारशाही शासन सचमुच ही जिन्दा सड़ी लाश था। ऊपरसे नीचेतक सारे शासक आकंठ भ्रष्टाचार और अत्याचारमें मग्न थे। मिथ्या विश्वासकी यह हालत थी, कि एक ढोंगी बदमाश ग्रेगोरी रस्पुतिन जारका गुरु बन गया। रस्पुतिन साइबेरियाका एक किसान तथा भूतपूर्व घोड़ाचोर था। ईसाई साधु बनकर मठोंमें इधर-उधर घूमते उसने देख लिया, कि लोगोंकी अंधश्रद्धासे बहुत फायदा उठाया जा सकता है, इसीलिये वह त्रिकालज्ञ महात्मा बन गया।

देहातसे उसकी प्रसिद्धि जल्दी ही राजधानीमें पहुंची। जारिना संतों और सिद्धोंकी बड़ी भक्तिन थी। उसके इकलौते पुत्रको डाक्टरोंने असाध्य रोगी बतला दिया था, इसलिये वह किसी संतकी करामातसे अपने पुत्रकी रक्षा कराना चाहती थी। रस्पुतिनके किसी गणने जारिनाके पास उसकी लम्बी-चौड़ी तारीफ की। जारिनाने उसे राजमहलमें बुला लिया, और घोड़ाचोरने ऐसा जादू चलाया, कि जारिना इस ढोंगीको दूसरा ईसा मसीह समझने लगी। घरके काममें ही नहीं, बल्कि राजके कारबारमें भी रस्पुतिनकी राय ली जाती। उसकी कृपाके बलपर कितने ही लोग बड़े-बड़े दर्जोपर पहुंचे। इस निरक्षरप्राय ढोंगीके कहनेपर जार मंत्रियों तकको नियुक्त और बर्खास्त करता था, जैसा अभी हाल ही में पंजाबके एक मुख्यमत्रीके यहां देखा गया। जिस वक्त युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनायें हारपर हार खा रही थी, उस समय जार-परिवार रस्पुतिनकी भविष्यद्-वाणियोंका तिनकेका सहारा ले रहा था। उसके हदसे ज्यादा बढ़े हुये प्रभावको देखकर जारवंशी महाराजुल तथा उच्चकुलीन लोग भी रस्पुतिनको खतरेकी चीज समझने लगे। उनके ख्यालमें सारी बुराइयों और विपदाओंका कारण वही बदमाश था। उसके विरुद्ध षड्यंत्र करके जारके अपने संबंधियों तथा दूसरोंने १७ दिसम्बर १९१६ ई०को रस्पुतिनको मार डाला, और उसे बर्फ जमी हुई नेवा नदीमें छेद करके बहती धारामे डाल दिया। लेकिन जारशाहीके राजनीतिक और सैनिक ढांचोंको निर्बल करनेका कारण रस्पुतिन नहीं था, और न उसकी वजहसे मजदूरों और किसानोंमें देशव्यापी असंतोष फैला था। पिछडा हुआ रूस एक आधुनिक महायुद्धके भारको उठाने योग्य नहीं था। बहुसंख्यक सैनिक बिना बन्दूकोंके थे। वह कैसे लड़ते? रेलोंका यातायात बन्द-सा हो गया था, कारखानोंको कच्चा माल और ईंधन नही मिलता था। आहार मिलना मुश्किल हो गया था, फिर लोग क्यों न विद्रोह करनेके लिये तैयार होते, और उस अवस्थामें, जब कि सुसंगठित क्रांतिकारी व्यापक रूपसे उनमें प्रचार करते मुक्तिका रास्ता दिखला रहे थे? ९ जनवरी १९१७ ई० को "खूनी रविवार"का पर्व-दिन पड़ा। उस दिन राजधानी पेत्रोग्रादमें युद्धके विरुद्ध भारी प्रदर्शन हुआ। मास्को, बाकू, निजनी-नवोगोरद तथा दूसरे नगरोंमे भी लोगोंने अपने विरोधी भावोंको "खूनी रविवार"के विशाल जलूसोंद्वारा प्रकट किया। मास्कोमें लाल झंडा लेकर "युद्ध बन्द करो" का नारा लगाते हजारों कमकर सड़कोंपर निकल पड़े, जिन्हे सवार-पुलिसने जबर्दस्ती तितर-बितर कर दिया। कितने ही नगरोंमे हड़तालें हुईं। मेन्शेविक और समाजवादी क्रांतिकारी शासनमें परिवर्तन करना चाहते थे, लेकिन इस समय युद्धके पक्षमें होना वह अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानते थे। १४ फर्वरी १९१७ ई० को दूमाके उद्घाटनके दिन बोल्शेविकोंकी प्रेरणासे भारी संख्यामें मजदूर सड़कोंमे "स्वेच्छाचारिताकी क्षय", "युद्ध बन्द करो" के नारे लगाते निकल आये। फर्वरीके उत्तरार्धमे पेत्रोग्रादमें क्रातिकारी आन्दोलन बड़ी तेजीसे बढ़ा। १८ फर्वरीको पुतिलोफके कारखानेमे तीस हजार मजदूरोंने हड़ताल कर दी, और २३ फर्वरीके सबेरे जब उन्होंने अपना जलूस निकाला, तो दूसरे कारखानोंके भी बहुतसे मजदूर शामिल हो गये।

पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक पार्टीकी कमीटीने लोगोंसे कहा, कि ८ मार्च (२३ फर्वरी)को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरिनोंका दिवस राजनीतिक हड़ताल और प्रदर्शनोंके साथ मनाना चाहिये। उस दिन ९०००० स्त्री-पुरुषोंने काम छोड़ दिया। अगले दिन ९ मार्च (२४ फर्वरी) को दो लाख मजदूरोंने हड़ताल कर दी, और नगरके सभी भागोंमें क्रांतिकारी सभायें होने लगीं। पुलिसने सावधानी करते हुये नेवा नदीके सभी पुलोंपर अधिकार कर रक्खा, लेकिन नेवा उस वक्त बर्फ बनी हुई थी, इसलिये मजदूरोंको शहरमे आनेके लिये पुलोंकी अवश्यकता नहीं थी। १० मार्च (२५ फर्वरी) को राजनीतिक हड़तालने सार्वजनिक हड़तालका रूप ले लिया। पेत्रोग्रादके सेनापतिको जारने हुक्म भेजा—"मैं तुम्हें हुक्म देता हूं, कि कलसे पहले ही राजधानीकी दुर्व्यवस्थाका अन्त कर दो।" इसपर पुलिसने प्रदर्शनकारियोंको छतोंपर रखी मशीनगनोंकी गोलियोंसे भूनना शुरू किया। सड़कों और चौरस्तोंमें नगरके केन्द्रीय भागके सभी जगहोंमें सैनिक बैठे हुये थे। मजदूरों और बोल्शेविकोंको पकड़-पकड़कर अंधाधुन्ध जेलोंमें बन्द किया जा रहा था। पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक कमीटीके सदस्य जेलोंमे बन्द कर दिये गये थे। इस समय मोलोतोफके

नेतृत्वमे केन्द्रीय कमीटीका ब्यूरो विद्रोहका संचालन कर रहा था। यहां यह याद रखना चाहिये, कि अभी तक रूसमे पुराना पंचांग चल रहा था, जिसकी तारीख तेरह दिन बाद पड़ती थी—२३ फर्वरी वस्तुतः ८ मार्च थी। प्रथम क्रांति मार्चमे हुई थी, लेकिन पुराने पंचांगके अनुसार उसे फर्वरी-क्रांति कहा जाता है। इसी तरह आठ मास बाद होनेवाली बोल्शेविक-क्रांति वस्तुतः नवम्बरमे हुई थी, लेकिन पुराने पंचांगके अनुसार अक्तूबरमें होनेसे उसे तबसे आजतक अक्तूबर-क्रांति कहा जाता है।

२७ फर्वरी (१२ मार्च)को पेत्रोग्रादमें सेनापर क्रांतिका प्रभाव पड़ने लगा, सैनिक समझने लगे, कि उनका हित जारशाहीके साथ रहनेमे नही, बल्कि विद्रोहियोंका साथ देनेमे है। इसी दिन दो रेजीमेंटोंने वीबोर्ग मुहल्लेमे कमकरोंका साथ दिया। मजदूरोंने एक हथियारखानेपर अधिकार करके वहासे चालीस हजार बन्दूकें और दूसरे हथियार लेकर अपनेको हथियारबन्द किया। उन्होंने जेलोंसे राजनीतिक बंदियोंको छुड़ा लिया। इसी दिन जेनरल खबारोफने राजधानीमे मार्शल-ला घोषित कर दिया। लेकिन जब सेनामें ही विद्रोह फैल रहा हो, तो मार्शल-ला क्या कर सकता था? उस समय जार नगरसे बाहर डेरा डाले हुये थ, और जारिना राजधानीमें बैठी अपने पतिके पास बराबर आशापूर्ण संदेश भेज रही थी। उसने अपने एक पत्रमें लिखा—"यह गुण्डोंका आन्दोलन है। तरुण लड़के-लड़कियां चारों ओर चिल्लाते फिर रहे हैं, कि रोटी नहीं है—यह केवल लोगोंको भड़कानेके लिये।" जारने युद्धक्षेत्रपर हुक्म भेजकर सेनाको पेत्रोग्राद भेजनेके लिए कहा। एक सेना भरी हुई ट्रेन जेनरल इवानोफके नेतृत्वमें मुश्किलसे जार्स्कोयीसेलो (पेत्रोग्रादके पास जारग्राम) मे पहुची भी, किंतु सैनिकोंने क्रांतिकारी सिपाहियोंसे मेल-मिलाप बढ़ाकर अपने जेनरलको पकड़वाना चाहा। जारने अब जार्स्कोयेसेलोको भी अरक्षित देखकर पेत्रोग्रादके लिये ट्रेनपर प्रस्थान किया, लेकिन वहां भी उसे खतरा मालूम हुआ, और ट्रेनको प्स्कोफकी ओर मोड़ दिया गया। सभी जगह सेना क्रांतिकी ओर हो रही थी।

१९०५ ई०की क्रांतिमें हम देख चुके हैं, कि किस तरह अपने आप मजदूरोंने संगठित रूपसे जारशाहीका मुकाबिला करनेके लिये कमकर-प्रतिनिधि-सोवियतें संगठित की। अब इस क्रांतिमें भी उस तजर्बेसे फायदा उठाकर मजदूर-सिपाही प्रतिनिधियोंकी सोवियतें कायम हुई, जिनमें सबसे पहले कायम हुई थी पेत्रोग्राद सोवियत। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को क्रांतिकी विजय हुई। हथियारबन्द मजदूरों और सैनिकोंने राजनीतिक बंदियोंको जेलोंसे छुड़ा लिया। इस प्रकार हम देखते हैं, कि जारशाही शासनयंत्रका स्थान लेनेके लिये सोवियतका पहला तजर्बा तुरन्त काममें आया। अभी सड़कोंमें गोलियां चल रही थी, इस वक्त भी करखानोंके मजदूर सोवियतके लिये अपने सदस्य निर्वाचित कर रहे थे। फर्वरी १९१७ ई० की सोवियतें केवल मजदूरों ही नहीं, बल्कि सैनिकोंके प्रतिनिधियों द्वारा भी संगठित की गई थीं। २७ फर्वरी (१२ मार्च) तक निर्वाचन हो गया था,। उसी शामको पेत्रोग्राद सोवियतकी प्रथम बैठक हुई। पेत्रोग्रादमे क्रांतिके सफल होनेकी खबर मिलते ही सारे देशमें क्रांति फैल गई। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीके संगठनोंने वहांके मजदूरों और सैनिकोंसे पेत्रोग्रादकी क्रांतिका समर्थन करनेकी अपील की। अगले दिन बड़े-बड़े कारखानोंके मजदूर हड़ताल करके सड़कोंपर निकल आये, और वहीपर मास्को छावनीके सैनिक उनमें आ मिले। १ मार्च (१४ मार्च)को मजदूरोंने बोल्शेविक बंदियोंको मुक्त किया, जिनमें प्रसिद्ध क्रांतिकारी तथा पीछे गृहमंत्री फ० ई० जेर्जिन्स्की भी था। निजनी-नवोग्राद (आधुनिक गोर्की) में भी क्रांतिकी विजय हुई। २ (१५) मार्च को तुलाके हथियारके कारखानोंके मजदूरोंने विद्रोह कर दिया, और वहांके जारशाही अफसरोंको पकड़कर अपनी सोवियत (पंचायत) स्थापित की। यद्यपि क्रांति सफल हुई थी मजदूरों और सिपाहियोंकी कुर्बानी और बलपर, लेकिन उससे प्रथम लाभ उठानेवाले थे अवसरवादी समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक। १ मार्चकी रातको उन्होंने बोल्शेविकोंसे बिना पूछे ही दूमाके प्रतिगामी सदस्योंके साथ समझौता करके सरकार बनानेके लिये समझौता कर लिया। २ मार्चके सबेरे राजुल ल्वोफके नेतृत्वमें अस्थायी सरकार घोषित कर दी गई। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि अस्थायी सरकारके सभी सदस्य

पुरानी व्यवस्थाके समर्थक थे। ल्वांफ बहुत बड़ा जमींदार था। मिल्यूकोफको विदेश-मंत्री बनाया गया। गुचकोफ अक्तूबरी दलका नेता तथा मिलमालिक और बैंकर था, जिसे युद्ध-उद्योग-समितिका युद्ध-मंत्री बनाया गया था। प्रगतिशील पार्टीका सदस्य तथा कपड़ामिलका मालिक कोनोक्लोफ व्यापार-उद्योग-मंत्री बनाया गया, और चीनी कारखानोंका मालिक करोड़पति तेरेम्चेको वित्त-मंत्री नियुक्त किया गया। ग्यारह मंत्रियोंमें केवल एक जनसमाजवादी दल (पीछे समाज-वादी क्रांतिकारी दल) का सदस्य वकील केरेन्स्की था, जिसे न्याय-मंत्री बनाकर टरका दिया

१९. (२।४।१) जारशाही प्रसार (१८१९-८५ ई०)

गया। इस मंत्रिमंडलके बारेमें लेनिनने अपने एक पत्रमें लिखा था—"हितकारी व्यक्तियोंका समूह नहीं है यह सरकार। यह रूसमें राजनीतिक शक्ति हथियानेमें सफलता पानेवाले एक नये वर्गके प्रतिनिधि हैं। यह पूंजीपति जमींदारों और पूंजीवादियों (बूर्ज्वा वर्ग) के प्रतिनिधि हैं, जो कि लम्बे अर्सेसे हमारे देशका आर्थिक तौरसे शासन कर रहे थे।"

अस्थायी सरकारका पहला प्रयत्न यह हुआ, कि राजमुकुटकी रक्षा कैसे की जाय? जार पहले ही अधिकार वंचित होकर प्स्कोफमें बैठा हुआ था। गुचकोफ और शुलगिनने अस्थायी सरकार के नामसे वहां पहुंचकर जारपर जोर दिया, कि वह अपने पुत्र अलेक्सीके पक्षमें सिंहासन त्याग दे। लेकिन जारने अपने भाई मिखाइलके पक्षमें सिंहासन-त्याग करना स्वीकार किया। पेत्रोग्राद लौटनेपर दूमा सदस्य गुचकोफने मजदूरोंके सामने भाषण देते हुये निकोलाइ II के सिंहासन-त्यागको घोषित करते हुये अन्तमें "सम्राट् मिखाइल जिंदाबाद" के साथ अपने व्याख्यानको समाप्त किया। इसपर मजदूरोंने तुरन्त गुचकोफके गिरफ्तार करनेकी मांग पेश की। अस्थायी सरकारने बहुत जल्दी देख लिया, कि राजवंशकी रक्षा नहीं की जा सकती, और उसने एक प्रतिनिधिमंडल भेजकर मिखाइल रोमानोफसे सिंहासन त्यागकर सारी शक्ति अस्थायी सरकारके हाथमें दे देनेकी प्रार्थना की। ३ मार्च को मिखाइल रोमानोफने भी सिंहासनसे इस्तीफा देनेके पत्रपर हस्ताक्षर किया, और लोगोंको अस्थायी सरकारकी आज्ञा माननेके लिये कहा।

इस प्रकार रूसका अंतिम राजवंश खतम हो गया, लेकिन क्रांतिसे फायदा उठाकर प्रजाके नामसे जिस गुटने शासन अपने हाथमें लिया, वह साधारण जनताके हितोंकी पक्षपाती नहीं, बल्कि उसने पश्चिमी युरोपकी तरह सम्पत्तिशाली पूंजीवादी वर्गके लिये शासनयंत्रको अपने हाथमें संभाला था। लेकिन हिन्दीकी पुरानी कहावत क्या झूठी हो सकती है—"जो शालिग्रामको भूनकर खा गया, उसे बैंगन भूनकर खाते कितनी देर लगेगी?" जिन कारणोंने जारशाही जैसे शक्तिशाली शासन यंत्रको उखाड़कर फेंक दिया, वह अब भी मौजूद थे।

स्रोत ग्रन्थ

१. आजियात्स्कया रोस्सिया (अ. क्रुवेर आदि मास्को १९१०)
२. पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आज़िइ (न. म. फेदोरोव्स्की, मास्को १९३७ ई०)
३. पुतेशेस्त्वये व् जापद्नीइ किताइ (ग. ये. और म. ये. ग्रुझिमाइलो, पेतेरबुर्ग १९०१)
४. इस्तोरिया दिप्लोमातिइ (३ जिल्द, व. प. पोतेम्किन्, लेनिनग्राद १९४५)
५. यज़ीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (स. ग. विलिन्स्की आदि मास्को १९१४)
६. इस्तोरिया रोस्सिइ (२९ स. सोलोवियेफ्, पेतेरबुर्ग, १८७९-८५)
७. तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द १८८०)
८. History of U. S. S. R. (A. M. Pankratova)
९. Heart of Asia (E. D. Ross)
१०. Manuel historique de politique etrengere (E. Boureois, Paris 1927)
११. La rivalite anglo-russe on xix siecle on Asie (A. M. F. Roure, Paris 1908)
१२. Europe and China (G. F. Hundson London 1931)
१३. Russo-Chinese Diplomacy (Ken Shen-Feigh, Shanghai 1928)
१४. Histoire de Russie (N. Brian-Chaninov Paris 1929)

अध्याय २

खोकन्दके खान

(१७४७–१८७६ ई०)

अस्त्राखानियोंके शासनके निर्बल होनेपर उत्तरके कजाकोंने नोच-खसोट शुरू कर दी। इससे पहले जुंगर-कल्मक अपने प्रभुत्वको बढ़ाते चले आये थे। १७४० ई०तक ताशकन्द और तुर्किस्तान शहरके इलाकोंपर कजाकोंका पूरा अधिकार हो गया था, और पलासीके युद्धके समय (१७५७ ई०) चीनने जब जुंगरोंकी शक्तिको खत्म कर दिया, उसी समय अन्तर्वेदमें शक्तियोंका फिर बंटवारा हुआ—मगितोंने बुखारा और अन्तर्वेदकी भूमिको अपने हाथमें किया, फरगाना और ताशकन्दपर एक नये वंशकी स्थापना हुई। इस इलाकेके नगरोंमें प्रभावशाली खोजा (सैयद) शासन कर रहे थे, जिन्होंने केंद्रके निर्बल होनेपर अपनेको स्वतंत्र शासक बना लिया। फरगानाका शासक यादगार खोजा भी ऐसा ही था, जिसकी लड़कीसे शाहरुख बेकने शादी की, जिसके वंशमें निम्न खान हुये थे—

१. शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद	१७४७ ई०
२. रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
३. अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
४. एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र	—१७७० ,,
५. नरबुले, नरबुते, अब्दुलकरीम-दौहित्र	१७७०-१८०० ,,
६. आलम खान, नरबुले-पुत्र	१८००-९ ,,
७. उमर, नरबुले-पुत्र	१८०९-२२ ,,
८. मुहम्मद अली, मदली, उमर-पुत्र	१८२२-४२ ,,
९. शेरअली, हाजिबी-पुत्र	१८४२ ,,
१०. मुराद, आलिम-पुत्र	१८४२ ,,
११. खुदायार, शेरअली-पुत्र	१८४२-५७ ,,
१२. मुल्ला, शेरअली-पुत्र	१८५७-५९ ,,
१३. शाहमुराद, सरिसक-पुत्र	१८५९ ,,
खुदायार (पुनः)	१८५९ ,,
१४. सैयद सुल्तान, मुल्ला-पुत्र	१८५९-६५ ,,
खुदायार (पुनः)	१८६५-७५ ,,

१. शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद (१७४७ ई०)

जैसा कि कहा, अस्त्राखानियोंकी निर्बलतासे फायदा उठाकर इसने अपना वंश स्थापित किया। वोल्गाके पास रहनेवाले तुर्कोंके किसी कबीलेका यह एक अमीर किंतु राजवंशी नहीं था। १८ वी सदीके आरंभमें यह वोल्गा-तटसे फरगाना पहुंचा, और खुर्रमसरायके शासक यादगार खोजाने इसे अपनी लड़की दे दी। वह अपने अनुयायियोंके साथ खोकन्दसे बारह मील पश्चिम, गूरगान (कूरकान) स्थानमें बस गया। शायद शाहरुख मंगीती था और खोकन्दमें प्रधानता रखनेवाली शाखासे संबंध रखता था। शाहरुखने ससुरको मारकर उसके राज्यको हाथमें कर उसे आगे बढ़ाया। चाहे वह छिङ्-गिस् वंशका न भी रहा हो, लेकिन अपनी धाक जमानेके

लिये छिङ-गिस्‌के खूनका दावा करना फायदेकी बात थी, जैसा कि उससे एक सौ वर्ष पहले बाबर और उसके वंशजोंने भारतमें किया था।

२. रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र

बापके मरनेपर बेटा उत्तराधिकारी हुआ, लेकिन अभी राज्य छोटा होनेसे वह खान न होकर बेक (अमीर) ही रहा।

३. अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र

रहीम बेकके मरनेपर उसका भाई अब्दुलकरीम गद्दीपर बैठा, जिसके समयसे खोकन्दका प्रताप बढ़ने लगा। इसीने वर्तमान खोकन्द नगरको आबाद करके उसे अपनी राजधानी बनाई।

४. एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र (–१७७० ई०)

नहीं कहा जा सकता, एर्दनी बेक अब्दुल-करीमका पुत्र था या भाई। इसने फरगानाके सभी बेकोंको अपने अधीन किया। १७५८ ई०में ताशकन्द चीनके हाथमें चला गया था। चीनी जेनरल चाउ-हो-येइ ने खोजी जानका पीछा करते अपनी एक सैनिक टुकड़ीको बुरूतों (करा किर्गिजों) को दबानेके लिये भी भेजा। एर्दनी बेकने मांस और शराबसे उनका सत्कार किया, और लौटते वक्त उनके साथ गया। उसने अपने एक अफसरको सम्राट् च्यान्-लुङ (काउ-चुङ १७३७–१७९५ ई०) के दरबारमें अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा। अन्दिजानके शासक तुकतू मुहम्मद, मरगिलानके इलास पिङ लीने भी बाज और दूसरी भेंटोंके साथ चीन-दरबारमें अपने दूत भेजे। १७६० ई०में तोकतू मुहम्मद स्वयं पेकिङमें उपस्थित हुआ। एर्दनीने ओश (अजीबी) के इलाकेपर आक्रमण किया, लेकिन चीनी जेनरलके हुक्मपर उसे लौट जाना पड़ा। १७६३ ई० मे बुरूतोंकी भूमिपर चीनियोंने दूसरी बार आक्रमण किया। इस तरह १७७० ई० में जब एर्दनी मरा, उस समय चीनका प्रभाव मध्य-एसियामें जोरोंपर था और उसकी इच्छाके विरुद्ध स्थानीय शासकोंको मनमानी करनेकी हिम्मत नहीं थी।

५. नरबुते, नरबुले, अब्दुलकरीम-दौहित्र (१७७०-१८०० ई०)

अब्दुलकरीम बेककी लड़की अर्थात् एर्दनी बेककी बहिनको बाबर-वंशज अब्दुर्रहीम बेकने शादी की थी, जिससे नरबुते बी पैदा हुआ। इस प्रकार वह बाबरके प्रतापी वंशका उत्तराधिकारी होनेका भी दावा कर सकता था, यद्यपि इस समय भारतमें इस वंशकी भी दशा बहुत बुरी थी। नरबुतेके गद्दीपर बैठनेसे पहले सुलेमान बेक और शाहरुख बेक बारी-बारीसे कुछ महीनों तक खोकन्दकी गद्दीपर बैठ चुके थे। नरबुलेका बाप अब्दुर्रहीम बातिर (बहादुर) उज्बेकोंके मिंग-कबीलेका और इसफाराके इलाकेका शासक था। दूसरी परम्परा यह भी है, कि यह यामच बी (बाबर)का वंशज था। इसफारा लेनेके लिये एर्दनीने अब्दुर्रहमान (अब्दुर्रहीम) को धोखा देकर मार डाला, लेकिन उसके पुत्र नरबुतेको बच्चा समझकर छोड़ दिया। एर्दनीके उत्तराधिकारियोंके भी विच्छिन्न या भाग जानेपर खोकन्दियोंने नरबुतेको लाकर गद्दीपर बैठाया। यह बुखाराके अमीर शाह-मुरादका समकालीन था, और शायद उसकी अधीनता भी स्वीकार करता था। नरबुतेके पास पचास हजार सेना थी। चीन-सम्राट्ने उसे "भुत्र" की उपाधि प्रदान की थी। हर दूसरे साल घोड़ों, समूरी खालों आदिकी भेंट लेकर खोकन्दका दूत चीन जाता था, और बदलेमें लाखों रुपयोंकी बहुमूल्य चीजें इनाम मिलती थी। इस समय चीनी सीमातसे आगे सवारीके लिये संदूकनुमा घोड़ागाड़ी चढ़नेको मिलती, जिसमें दो घोड़े जुतते। खाना-पीना सारा सामान इसी गाड़ीमें रक्खा जाता। जगह-जगह मुसाफिरोंके लिये पड़ाव बने हुये थे, जहां पाँच सौ चीनी सैनिक रहते थे, यात्री इन्हीं पड़ावोंमें रातको ठहरते। रास्ता ऐसे इलाकोंसे जाता था, जहां आबादी बहुत कम थी। चीनकी सीमासे एक मासके करीब पेकिङ था। चीनी दरबारके अपने कायदे थे। दूतको काउ-ताउ

(दडवत्) करनी पड़ती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमे कुछ बोलता, जिसका अर्थ था "सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं, कि मेरा पुत्र नरबुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है ?" दूत फिर दंडवत् करता, और पहलेसे सिखलायें हुये वाक्योंमे उत्तर देता—"नरबुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नहीं है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।" भेट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया, जिसे घोड़ागाड़ियों में रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरबुतेके बारेमे लिखा था—"नरबुतेने अपने लिये एक बड़ा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारें चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी) से ढंकी है। वह दस हजार सिपाहियोंके साथ शुक्रवारकी नमाज पढ़ता है।" उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरबुतेने खोजन्द छोड़ सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमंगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमे थे। खोजन्दके शासक फाजिल बी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगड़ा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरातिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरबुतेने ताशकन्दके शासक मूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलबर्सके मारे जानेके बाद १७४० ई०में ताशकन्द जुगर कल्मकोंके हाथमे चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक बी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोंने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनों छोटे छोटे अमीर जहां तहां राज्य करते रहे, फिर खलीफा अबूबकरके वंशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमें कर लिया, और इसने आसपासके इलाकेको दबाकर १७९८ ई०मे महाओर्दूके कजाकोंको भारी दंड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरबुतेकी पहली भिडंत हुई। १८०० ई० मे नरबुतेको यूनसने पकड़कर मार डाला।

६. आलम खान, नरबुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरबुतेके मारे जानेके बाद उसके बड़े बेटे आलमने अपने भाई रुस्तम बेक और दूसरे संबंधियोंको मारकर गद्दी संभाली। खोकन्दके खानोंमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतवा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढ़ा, खुदायार-पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनों सेनाओंने गोलाबारी की, किन्तु अन्तमे यूनसको खाली हाथ लौट जाना पड़ा। १८०३ या १८०५ ई०में आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथों हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहांसे भगा दिया। आलमने कजाकोंको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार असफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहांका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काश्गर न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत दे रक्खी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे-तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नहीं दिया, जिसपर आलमने खोकन्दसे काश्गरकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने-पर चीनने पेंशनकी बाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बड़ा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लड़कियां उसके मारे सुरक्षित नहीं थीं। निरपराध लोगोंको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरबेक और मामा तुगाईके संचालनमे भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, कि मैंने कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसी दया दिखलानेके लिये आलम खानने उसे गाली देकर फिर बड़ी क्रूरतासे नरसंहार करनेके लिये लौटा दिया। उमरने

जाकर देखा, कि उसके पास दस हजार सेना है, जो इतने बड़े कामके लिये पर्याप्त होगी, इसमें संदेह था। उसने तुगाई तथा दूसरे अफसरोंसे सलाह ली। सबने कहा, कि हमारे घोड़े लौटकर ताशकन्द जानेकी शक्ति नहीं रखते, ऊपरसे मौसिम भी बहुत खराब है, साथ ही कजाक मुसलमान और निरपराध हैं, उनका कत्ल-आम करना ठीक नहीं है, रेगिस्तानमें बिखरे हुये कजाकोंको पकड़ पाना भी संभव नही है। उमरने पूछा--"फिर क्या करना चाहिये?" इसपर मामाने जवाब दिया--"उमरबेकको खान बनना होगा। हम आलम खान-जैसे अत्याचारीकी आज्ञा नही मान सकते।" वहीं उसने उमरके लिये राजभक्तिकी शपथ ली। सेनाने खोकन्दके भीतर पहुंचकर उमरको खान घोषित किया। आलमके साथ तीन सौ आदमी रह गये थे। उसने अपने अनुयायियोंमे खूब इनाम बांटे, और अपने खजाने, हरम, अन्तःपुर, पुत्र शाहरुखके साथ ताशकन्दसे खोकन्दके लिये प्रस्थान किया। रास्तेमें एक किलेमें घिर गया, और आत्मसमर्पण करनेसे भी इन्कार कर दिया। रातको वहीं मुकाम रहा। सबेरे उठकर देखा, तो उसके तीन सौ अनुयायी भी साथ छोड़कर खोकन्द चले गये थे। आंखोंमें आंसू भरकर आलमने अपने पुत्रको हजार तिला (पांच सौ गिन्नी) दे अमीर हैदरके पास बुखारा भेज दिया। अपनी बेगमों तथा खजानोंको गांवके एक मुखियाके हाथमें सौंप बीस सवारों तथा अपने दीवानबेगी (वजीर) के साथ दर्राकोह चला गया। इस दर्रा (पहाड़ी डांडे) से खोकन्द नगर दिखलाई पडता था। दीवानबेगीने खानको खोजन्द चलनेकी सलाह दी, जहांपर चार हजार खोकन्दी सैनिक रहते थे। लेकिन आलम खान अब भी अपनी राजधानीमें जानेका हठ कर रहा था। इसपर उसके और भी साथी हट गये और सिर्फ तीन आदमियोंके साथ वह चला। शत्रु सैनिकोंने उसका पीछा किया, और खानका घोड़ा दलदलमें फंस गया। उसने दीवानबेगीसे घोड़ा मांगा, किन्तु उसने उसे न दे स्वयं दौड़ाते शहरका रास्ता लिया। उमरके सिपाहियोंमेंसे किसीने खानकी पीठमें गोली माकर रातमे दफना दिया। यह १२२४ हि० (१६ II १८०९-७ I १८१० ई०) की बात है। पहले उमरने दीवानबेगी मुहम्मद जहूरका स्वागत किया, पीछे उससे सारा धन छीन लिया। जहूरका अन्तिम समय भक्ति-पूजामे बीता।

मध्य-एसियाके शासकोंमें एक बड़ी कमजोरी यह थी, कि वह शेखों-खोंजोंके बड़े भक्त होते थे, उनकी दिव्य शक्तिपर बहुत विश्वास करते थे, लेकिन आलम इसे नहीं मानता था। खोकन्दमें एक बहुत बड़ा शेख रहता था, जिसके बहुत से मुरीद (चेले) थे, और जिसकी दिव्य शक्तिकी बड़ी प्रसिद्धि थी। आलमने एक बार उस शेखको बुलाया, और तालाबके किनारे रस्सी तानकर कहा--"ओ शेख, कयामतके दिन निश्चय ही तुम अपने चेलोंको पुलेसिरात (स्वर्ग और नर्कके बीचकी पतली दीवार) को पार कराओगे, मै चाहता हूं, कि इस रस्सीसे जरा तुम इस तालाबको पार हो जाओ।" शेखने बहुत कहा, कि कुरानमे दिव्य शक्ति दिखलाना मना है। आखिर शेखको जबर्दस्ती रस्सीपर चढ़ाया गया। गिरना तो था ही, इसपर लोगोंने डंडे मार-मारकर उस ढोंगीके प्राण ले लिये। उसने बहुत-से दरवेशों और साधुओंको पकड़कर ऊंटबानी करनेके लिये मजबूर किया था। आलम खानके जारी किये हुये सिक्के चांदी मिले हुये कांसेके थे।

७. उमर खान, नरबुते-पुत्र (१८०९-२२ ई०)

आलम खानने अपने बेटे शाहरुखको बुखारा भेजा था, लेकिन वह वहां न जाकर ताशकन्द चला गया। पहले वहांके कुशबेगी (सेनापति) ने खानजादेका स्वागत किया, लेकिन आलम खानके मरनेकी खबर पाकर उसने उसे खोकन्द रवाना कर दिया, और चचाके पास पहुंचनेसे पहले ही वह रास्तेमे मार डाला गया। उमर कमजोर दिलो-दिमागका आदमी था। शासन वस्तुतः मामा मुहम्मद रजाबेक तुगाईके हाथमें था। उमरके शासनकालमें खोकन्द एक बहुत बड़ा व्यापार-केंद्र बन गया। इसीके समय उरालिप्पा भी खोकन्दके हाथमें चला आया। यही नहीं, तुर्किस्तान-शहरको भी उसने छीन लिया और वहांके अन्तिम कजाक खान तोगाईने बुखारामें भागकर शरण ली, और वहीं मारा गया। मुहम्मद रजब कराजा बुखारामें भागकर ठहरा हुआ था। आलम खानके बाद वह खोकन्द लौटा। उस समय मामा मुहम्मद रजाबेक और उसके मित्र सेनापति कितकी कराकल्पक

में वैमनस्य हो उठा। एक दिन महलमें भोजनके लिये निमंत्रित मुहम्मद रजाको पकड़कर जेल में डालकर मार डाला गया। इसपर कितकीको भी बोटी-बोटी करके मरवाकर उसकी संपत्ति जब्त कर ली। मुहम्मद रजब कराजा अब खोकन्दका राज्यपाल तथा दरबारमें बहुत प्रभावशाली अमीर बन गया।

उमरने अपने दूत भेजकर रूसियोंको खोकन्दमें अपने कारवां भेजनेके लिये कहा, और यह भी वचन दिया, कि यदि हमारी ओरके आधे रास्तेमें कारवांको लूटा गया, तो मैं व्यापारियोंकी क्षतिपूर्ति दूंगा। इसपर कारवां आने-जाने लगा। किजिलजारमें एक खोकन्दी दूतका रूसी सैनिकसे झगड़ा हो गया, जिसे रूसी सिपाहीने मार डाला। रूसियोंने एक हजार तिला (पांच हजार गिन्नी) जुरमानाके रूपमें दूतके मारे जानेके लिये दिया। १८१३-१४ ई० में कर्नल नजारोफने खोकन्दकी यात्रा की, और रूसी सीमातपर खोकन्दी दूतके मारे जानेके लिये अफसोस करते हुये बहुत समझाया। नजारोफ रक्षक सैनिकों और बीस हजार रूबलके मालके साथ गया था। उसे महलके बगीचेमें ठहराया गया, आदमियों के लिये सफेद रोटी, चावल, चाय, खरबूजा आदि खानकी ओरसे मुफ्त दिया जाता था, और जानवरोंको घास-चारा भी। बारह दिनकी प्रतीक्षाके बाद नजारोफसे खानने मुलाकात की। नजारोफ घोड़ेपर सवार था, लेकिन उसके कसाक पैदल थे। महलके पास जाकर नजारोफ घोड़ेसे उतर गया। रूसियोंको देखनेके लिये सड़कों और मकानोंकी छतोंपर तमाशबीनोंकी भीड़ थी। खान दर्शन देनेके लिये झरोखेपर बैठा था। नजारोफसे कहा गया, कि जैसे अपने बादशाहको सलाम करते हो, वैसे ही यहां भी करो। इसपर नजारोफने अपने सिरको नंगा कर दिया, और सिरपर जारके पत्रको रखकर खानको प्रदान किया। खानकी ओरसे रूसी दूतको एक भोज दिया गया, जिसमें गुलाबी रंगका चावल और घोड़ेका मांस भी सम्मिलित था। नजारोफने घोड़ेके मांसको धर्म-विरुद्ध कहकर नहीं खाया। उसके साथी कसाकोंको खलअत और इनाम देकर लौटा दिया गया, लेकिन नजारोफको रोककर उससे मांग की गई—या तो हमारे दूतकी मौतका हरजाना दो, या मुसलमान बनो, नहीं तो तुम्हें फासीपर चढ़ाया जायगा। यह धमकी वस्तुतः दिखावटी थी। नजारोफके साथ खानका बरताव बहुत अच्छा था, कितने ही भोजोंमें निमन्त्रित कर उसकी नाच-गानेसे खातिर की जाती थी। सिर्फ यही खयाल रक्खा जाता था, कि वह भागने न पाये। खान उसे अपने साथ शिकारमें मरगिलान ले गया, जहांपर काफिर होनेके कारण नजारोफको मुसलमानोंने पत्थर भी मारा। कुछ समय बाद खानने नजारोफको छोड़ दिया, क्योंकि रूसका व्यापार बड़े नफे की चीज थी। उमर १८२२ ई० में अपनी मौत मरा, या शायद भाई मुहम्मद अलीने उसे मार डाला। उसके सिक्कोंपर, "सैयद मुहम्मद उमर सुल्तान" और "मुहम्मद खान सैयद उमर" अंकित रहता है।

८. मुहम्मदअली, मदली खान, उमर-पुत्र (१८२२–४२ ई०)

उमरके उत्तराधिकारी मदलीके बारेमें नहीं कहा जा सकता, कि वह उसका भाई था या बेटा। इसने अपने कई संबंधियोंको देशसे निकाल दिया, जिसमें उसके एक भाई महमूद सुल्तानने शहरसब्ज (किश) जाकर वहांकी राजकुमारीसे शादी की, पीछे बुखाराके अमीर नसरुल्लाका कृपापात्र बन खोजन्द और कुरमीतानका राज्यपाल भी रहा। शायद महमूदको शरण देनेके लिये बुखारासे मदलीका १८२५ ई० में झगड़ा हो गया, और उसी समय जीजकको बुखारियोंने ले लिया। १८२६ ई० में काशगर-राजवंशके जहांगीर खोजाने चीनियोंके विरुद्ध असफल विद्रोह कर दिया, फिर किर्गिजोंसे भी झगड़ा कर लिया और अन्तमें भागकर मदलीके हाथमें पड़ा। मदलीने उसे कुछ दिनोंतक नजरबन्द-सा रक्खा, फिर वह भागकर किर्गिजोंमें चला गया। जहांगीरने उन्हें चीनपर आक्रमण करनेके लिये राजी किया। चीनी काफिरोंका जूआ मुसलमानोंके ऊपर रहे, इसे पूर्वी-तुर्किस्तानके अमीर, जहांगीर खोजा और खुद मदली कैसे पसंद करते? मदलीने मुसलमानोंके साथ बुरे बरताव करनेका बहाना लेकर एकाएक आक्रमण करके बहुतसे चीनियोंको मार डाला। जहांगीर खोजा काशगरपर चढ़ा और मदली खानने सारे चीनी-तुर्किस्तानको

दबा लिया। मदली गाजीका झंडा अब यारकन्द, अक्सू और खोतनपर फहराने लगा। जहांगीर खोजा इसे क्यों पसंद करने लगा ? लेकिन इसी बीच चीनी सेना आ गई, मदली भाग गया, और जहांगीर खोजा पकड़कर पेकिङ भेजा गया, जहां उसे फांसी मिली। चीनियोंने मदलीसे सुल्ह करके उसे यह अधिकार दिया, कि उसका प्रतिनिधि काश्गरके मुसलमानोंके धर्मकी देख-भाल और चीनको वहांके शासनमें सहायता करेगा।

१८२८-२९ ई० में इतिहासकार मिर्जा शम्स खोकन्दमें था, जब कि जहांगीर खोजाका भाई यूसुफ खोजा भी वहींपर रहता था। यूसुफ खोजाके मांगनेपर मदलीने शाही खलअत और पच्चीस हजार आदमी देकर उसे काश्गरके लिये रवाना किया। वह खुद भी ओश तक साथ-साथ गया। ओशसे बीस दिनके रास्तेपर चीनी सीमांतकी फौजी चौकी थी, जिसमें एक सौ पचास सैनिक रहते थे। लेकिन खोजाको भी विकट आदमियोंसे मुकाबिला पड़ा था। चीनियोंको निष्ठुर शत्रुओंसे दयाकी आशा कहां हो सकती थी ? उन्होंने बढ़ियासे बढिया कपड़े पहन, खूब शराब पी और इसके बाद बारूदकी मेगजीनमें आग लगा दी। खोजन्दियोंने पीछे वहां पचास साठ जली हुई लाशे पाईं। केवल पंद्रह जीते बंदी मिले, जिन्हें खोजाने मदलीके पास भेज दिया। पंद्रह वर्स्त (२½ फर्सख) और आगे बढ़नेपर पांच सौ चीनी सैनिकोंकी छावनी मिली, जिसके पास ही ७८०० सेना पड़ी थी। उनके साथ लड़ाई हुई, जिसमें खोकन्दी जीते। चीनी सैनिकोंमेंसे एक-एक या तो मारे गये, या उन्होंने आत्महत्या कर ली। अब यूसुफ खोजा मूसी और लिश्रगरके रास्ते काशगरसे दस वर्स्त (१⅔ फर्सख) पर पहुंचा। वहांपर उस समय काले और सफेद खोजोंका झगड़ा चल रहा था। सफेद खोजे यूसुफके पक्षपाती थे और काले चीनियोंके। सफेद खोजोंने शहरसे निकलकर गाजियोंका विजयीके तौरपर स्वागत करके बाजे-गाजेसे शहरके भीतर प्रवेश कराया। इस समय काले खोजोंका नेता इसहाक बेक अपने तेरह सौ साथियोंके साथ गुलबाग़के किलेमें था। यूसुफ स्वयं एक सौ पचास वर्स्त (८⅓ फर्सख) आगे बढ़कर यंगीहिसार पहुंचा, फिर वहांसे यारकन्द जा अपने पुत्र मिर्जा शम्सको शासक बना काश्गर भी छोड़कर लौट गया। राजधानी काश्गर छोड़नेके चार महीने बाद खबर आई, कि लाखों चीनी सेना फैजाबाद पहुंच गई है। इसपर मिर्जा शम्स अपने बहुमूल्य खजानेको साठ संदूकोंमें बन्द करके भागना चाहा, लेकिन काले खोजोंने उसे लूट लिया, खोकन्दी चीनी-बाढ़के सामने बड़ी तेजीसे भागने लगे। उनके साथ उनके पक्षपाती सफेद खोजा भी भागे, जिनकी संख्या पचाससे साठ हजार तक बतलाई जाती है—स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी पैदल, घोड़ों और गदहोंपर सवार होकर खोकन्दकी ओर भाग रहे थे। उस समय मौसिम बहुत ठंडा था, त्यान्शानके पहाडोंमें बर्फ और सर्दीके मारे उनमेंसे बहुत तो रास्तेमें मर गये। पांच महीने बाद यूसुफ भी खोकन्दमें मर गया। पूर्वी-तुर्किस्तानसे भागे मुसलमान शरणार्थियोंके लिये मदली खानने शेत्रीखाना नगर बसाया, तथा खोकन्दके नीचे सिर-दरियापर भी उनके बसनेका प्रबन्ध किर दिया।

खोकन्द बहुत दिनों तक चीनको नाराज नहीं रख सकता था। रूस अभी उसकी सीमासे बहुत दूर था, इसलिये उसकी अधीनता स्वीकार करके चीनको टरकाया नहीं जा सकता था। १८३१ ई० में खोकन्द और चीनके बीच संधि हुई, जिसके अनुसार "खोकन्दको अक्सू, ओश, तुर्फान, काश्गर, यंगी हिसार, यारकन्द और खोतनमें आयात किये जानेवाले सभी विदेशी मालपर कर पानेका अधिकार मिला, और कर उगाहनेके लिये इन सभी नगरोंमें अकसक्काल (शब्दार्थ श्वेत दाढ़ी, अफसर) रखने तथा मुसलमानोंकी रक्षा करनेका दायित्व मिला। इसके बदलेमें खोकन्दको चीनकी ओरसे यह सेवा करनी थी, कि खोजा [illegible]को छोड़ने न पाये, और यदि कोई छोड़ना चाहे, [illegible] दंड दे।" इससे मालूम होगा, कि १९ वीं शताब्दीके पूर्वार्धके समाप्त होते समय काश्गरमें खोकन्दियोंका काफी प्रभाव था।

दर्पण, एक भारी घड़ी, कुछ बंदूकें और पिस्तौल ले आये थे। बातचीतके बाद निश्चय हुआ, कि कोक्सू नदी सीमा रहे, जिसके उत्तरकी भूमि रूसियोंकी और दक्षिणकी खोकन्दकी। सीमाकी पहिचानके लिये वहां चिह्न खड़े किये गये, लेकिन रूसियोंने इस समझौतेको देरतक नहीं माना, और अपनी सीमामे दक्षिणमे भी किले बनाये। इसके विरोधमें खानने एक हाथी तथा कुछ चीनी गुलामोंकी भेटके साथ अपना दूत सीधे राजधानी पीतरबुर्गमें भेजा।

यह ऐसा समय था, जिस वक्त अंग्रेजों और रूसियोंके संबंध अच्छे नहीं थे, और मध्य-एसियामे अपने प्रभाव को बढानेके लिये अंग्रेज हर तरहकी कोशिश कर रहे थे। इसके लिये उन्होंने कर्नल स्टुअर्टको बुखारा भेजा और कप्तान कोनोली खीवाके खानके पास पहुंचा। कोनोलीको हुक्म दिया गया था, कि खीवासे वह खोकन्द जाये और दोनों राज्योंके रास्तेकी जांच-पड़ताल करे। कोनोली अल्तून-कला, अकमस्जिद, अचकियान हो छ सप्ताहके बाद खोकन्द पहुचा। रूसकी जबर्दस्तीसे मदली जला-भुना बैठा था, इसलिये उसे अपनी तरफ करना कोनोलीके लिये मुश्किल नही हुआ। कोनोली बहुत मूल्यवान् बन्दूकें और दूसरे हथियार कश्मीरी दुशाले तथा कीमती भेंटे, खान और प्रभावशाली दरबारियोंमे बांटीं। अपने दबदबेको दिखलानेके लिये वह अस्सी नौकरोंके साथ यात्रा कर रहा था, और उसके पास बहुत भारी परिमाणमे असबाब था। जिस-जिस इलाकेसे वह गुजरा, वहांके मुखियों और सरकारी अफसरोंको उसने दिल खोलकर इनाम और भेटे दीं। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि यह सारा "परमुडे फलाहार" भारतके मत्थे हो रहा था। कोनोलीकी इस मुक्तहस्तताके कारण खोकन्दमे उसके बहुतसे समर्थक हो गये थे। लौटते वक्त अमीरने उसे मार्ग-पत्र दिया। लेकिन जीजक में बुखाराका अमीर कोनोलीसे बड़े रूखे तौरसे पेश आया, जिससे उसे पता लग गया होगा, कि खीवा और खोकन्दकी सफलताके बाद आगे उसे कैसे दिन देखने पड़ेंगे।

१८३९ ई०मे रूसियों और चीनियोंके दबावके कारण मदलीने बुखाराके प्रभुत्वको स्वीकार कर लिया था, लेकिन कोनोलीकी चाटुकारितासे उसका दिमाग आसमानपर पहुच गया और उसने बुखारासे झगड़ा कर लिया। कोनोलीने दोनों खानोंमें थोड़े दिनोके लिये समझौता करानेमें सफलता पाई। अंग्रेज रूसके प्रभावको आगे बढनेसे रोकनेके लिये यही चाहते थे, कि खीवा-बुखारा-खोकन्द मेलसे रहें। कोनोलीको खोकन्दके मित्रोंने बुखारा जानेसे मना किया, लेकिन हिंदुस्तानके मालिकोंका हुक्म था, इसलिये वह बुखारा गया, और वहां कर्नल स्टुअर्टके साथ कैसे उसे अपने प्राणोंको खोना पड़ा, यह आगे बतलायेंगे।

अपनी तरुणाईके जमानेमें मदली सैनिक-जीवनको अधिक पसंद करता था। उसने कोहिस्तानकी ओर अपनी सीमाको बढ़ाया---करातगिन जीता, कूल्याब, दरवाज और शुगनानने उसकी अधीनता स्वीकार की। लेकिन १८४० ई०के करीब उसके स्वभावमे भारी परिवर्तन हुआ। अब वह मदिरा और मदिरेक्षणाके सेवनमें दिन-रात डूबा रहने लगा, जिसके कारण शासन-केंद्र कमजोर हो चला। ताशकन्दके कुशबेगी-लश्कर काजी कलियां, महासेनापति ईसा खोजा आदिने खानके खिलाफ षड्यंत्र शुरू किया और चाहा, कि उसको हटाकर आलम-पुत्र शेरअली, या नरबुतेके भाई हाजी बी पुत्र, मुराद बीको गद्दीपर बैठाये। शेरअली बहुत समयसे भागकर किपचक-कजाकोंमें रहता था, और मुरादबी खीवामे, जहां अल्ला कुल्लीखांने उसे अपनी लडकी ब्याह दी थी। षड्यंत्रकारियोंने मदलीके विरुद्ध बुखाराके अमीर नसरुल्लाको बुलाया। दूसरी बारके निमत्रणपर अप्रैल १८४२ ई० में वह अठारह हजार सेना ले खोकन्दसे पंद्रह-सोलह मीलपर पहुंचा। डरके मारे मदलीने अपने पुत्र मोहम्मद अमीन और कुशबेगी लश्कर (सेनापति) काजी कलियनको भेजकर अधीनता स्वीकार करते हुये नसरुल्लाके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मंजूर किया। नसरुल्लाने मदलीके पुत्र और काजी कलियानको लौटाकर कुशबेगीसे एकांतमें पूछा, तो मालूम हुआ, कि खोकन्दके लोग आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार हैं। इसपर नसरुल्लाके पास जानेका क्या परिणाम होता, यह मदलीको मालूम था, इसलिये उसने बहुमूल्य वस्तुओं और खजानेको सौ गाड़ियोंपर लदवाकर हजार आदमियोंके साथ नमंगानका रास्ता लिया। राजधानीके बड़ों द्वारा निमंत्रित हो नसरुल्ला बड़े सज-धजके साथ खोकन्द नगरमें प्रविष्ट हुआ और नागरिकोंमे भय संचार तथा अपने सैनिकोंको संतुष्ट करनेके लिये नगरको चार घंटे लूटनेकी

आज्ञा दी। मुल्लोंकी किताब तक भी लूटे बिना नहीं रही, बच्चों और स्त्रियोंपर अमानुषिक अत्याचार हुये। सोना-चादी छोड़कर बाकी लूटे मालको दूसरे दिन खोकन्दके नागरिकोंमें बेच दिया गया।

उधर मदलीकी गाड़ियोंको लेकर उसके अनुयायी चम्पत हो गये, और उसके पास सिर्फ तीन सेवक रह गये। मां, बीबियों, बेटों और भाईके साथ आत्म-समर्पण करनेके लिये वह आ रहा था, इसी समय रास्तेमे पकड़ लिया गया। चालीस गाड़ियोंपर उसके हरम (अन्त.पुर) को सवार कर बुखारा रवाना कर नसरुल्ला अब मदलीके मरवानेकी सोच रहा था। इतना सब हो जानेके बाद कुशबेगी, काजीकला और एरन्दिचकी आखे खुली और उन्होंने खोकन्द-वंशके किसी राजकुमारको अपने हाथकी कठपुतली बना अमीर नियुक्त करनेके लिये नसरुल्लासे कहा। इसपर बुखाराके काजीकलांने विरोध करते हुये कहा—"मदलीने अपनी सास या नानी (उमर खानकी विधवा) को शरीयतके विरुद्ध ब्याहा, इसलिये इस काफिरको उसके परिवारके साथ मृत्युदंड मिलना चाहिये।" नसरुल्लाने मदली, उसकी मां, भाई तथा ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद अमीनको परिषद्के सामने उपस्थित करके कत्ल करवाया। खोकन्दी अमीर और प्रभावशाली मुखिया षड्यत्र करनेके लिये न रह जायें, इसलिये परिवार सहित उनमेंसे ढाई सौ आदमियोको पकड़कर बुखारा भेज दिया गया। खोकन्दके सारे राज्यमें नसरुल्लाके विजयकी घोषणा की गई। अमीर-बुखाराने छ सौ सैनिकोंके साथ समरकन्दके राज्यपाल इब्राहीम दादखाको अपनी ओरसे खोकन्दका उपराज नियुत किया।

९. शेरअली, हाजी बी-पुत्र (१८४२ ई०)

बुखारियोंकी विजय देरतक नहीं रही। तीन ही महीने बाद खोकन्दियोंने विद्रोह कर दिया, और शेरअलीको तख्तपर बैठानेके लिये किपचक-कजाकोंको बुलाया, जिन्होंने बुखारी-सैनिकोंको मार डाला। इब्राहीम जान लेकर भागा, जिसपर नाराज होकर नसरुल्लाने उसे मरवा दिया। अब शेरअली खोकन्दकी गद्दीपर बैठा। नसरुल्ला फिर बीस हजार सेनाके साथ खोकन्दपर चढ़ा। नसरुल्लाके हाथमें पड़े खोकन्दियोंमें मुसलमानकुल चूलाक (लुंज) नामक एक व्यक्ति नसरुल्लाका विश्वासपात्र बन गया था। उसे खोकन्दके सैनिकोंको समझानेके लिये भेजा गया, लेकिन वहा उसने उन्हें भड़काना शुरू किया और बुखारी अमीरोंके नामसे जाली चिट्ठी भेजी, जिसे पढ़कर नसरुल्ला अपने अमीरोंसे नाराज हो गया। इसी समय खीवावालोंने बुखारापर चढाई की। नसरुल्लाको खबर मिली, कि वह हमारे बहुत-से आदमियोंको पकड़ ले गये। इसपर नसरुल्ला दूसरे जामिनोंको भी छोड़कर बुखारा लौट गया।

शेरअलीने मदलीकी लाशको निकलवाकर उसे बड़े सम्मानके साथ दफनाया, मुल्लोंने शवक्रिया कराई। शेरअलीको किपचक-कजाकोंकी सहायतासे तख्त मिला था। इससे पहले खोकन्दमे सर्त (फारसी-भाषी, ताजिक) बड़ा प्रभाव रखते थे। अब वहां किपचकोंकी तूती बोलने लगी। उनका नेता यूसुफ मिंगबाशी खोकन्दका हाकिम (राज्यपाल) बना और मुसलमानकुल चूलाक अन्दिजानका। किपचकों और सर्तोंका झगड़ा उठ खड़ा हुआ। सर्तोंका मुखिया शादी था, जिसपर खानका विश्वास था। उसने यूसुफ मिंगबाशीको मरवाकर उसके अनुयायियोंको खत्म करनेका हुक्म दिलवाया। फिर मुसलमानकुलको खोकन्द आनेके लिये संदेश भेजा। मुसलमानकुलने यूसुफ मिंगबाशीके आदमियोंको अपने पास जमा किया। शादीने कुछ हत्यारे भेजकर अन्दिजानमे चूलाकका काम खतम कराना चाहा, लेकिन चूलाक बहुत चालाक निकला। उसने शादीके आदमियोंको पकड़कर मरवा दिया। इसके बाद किपचकों (तुर्कों) और सर्तोंका खुला युद्ध हुआ। सर्तोको हार खानी पड़ी। शादी मारा गया और उसका पृष्ठपोषक शेरअली खान किपचकोंके हाथमें बन्दी बना। लेकिन किपचकोंको तख्तके लिये दूसरा आदमी न मिला, इसलिये उन्होंने शेरअलीको ही खान रहने दिया। यूसुफ मिंगबाशी और शादीके पदको भी मुसलमानकुलने अपने हाथमें रक्खा। चारों ओर किपचकोंकी तूती बोलने लगी। सर्तोंके दो नेता रहमतुल्ला और मुहम्मद करीमने शहरसब्ज जा आलम खांके पुत्र मुरादको तख्तके लिये तैयार किया। बुखाराने भी सेनाकी सहायता दी। १८४५ ई० में जब मुसलमानकुल सेना-सहित किर्गिजोंमे कर उगाहने गया हुआ था, उसी समय सर्तोंने चढ़ाई कर दी और उन्हें खोकन्द

शहरपर अधिकार करनेमें बहुत दिक्कत नही हुई। मुरादने अपनेको बुखाराके उपराज घोषित किया।

१०. मुराद, आलम-पुत्र (१८४२ ई०)

मुरादका शासन भी दृढ नहीं हो पाया, क्योंकि अमीर नसरुल्लाके अत्याचारोंके कारण खोकन्दी उससे बहुत घृणा करते थे। इसीलिये मुसलमानकुलने फिर बड़ी आसानीसे खोकन्दपर अधिकार कर लिया। मुराद शायद मारा गया या भाग गया।

शेरअलीके पांच पुत्र थे, जिनमे सिरम्सक किपचक-खान तोख्तानजरकी पुत्री जारकिनका बेटा बाईस सालका था। उसका दूसरा पुत्र खुदायार मर्गिलानका बेक तथा मुसलमानकुलका दामाद था॥ मुसलमानकुल सिरम्सकको पसंद नहीं करता था और उसे खुदायारकी मुहरसे पत्र भेज बुलाकर मरवा डाला। फिर अपने सोलह् सालके दामादको खोकन्दकी गद्दीपर बैठाया। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि राज्यकी सारी शक्ति चूलाकके हाथमे थी। इसी समय किपचक-दलके भीतर भी झगड़ा उठ खड़ा हुआ। खासकर ताशकन्दका राज्यपाल नूर मुहम्मद मुसलमान कुलसे ईर्ष्या करने लगा था। चूलाकके विरुद्ध १८५१ ई०में किया गया पहला षड्यंत्र विफल रहा। इसी समय खजानेसे भारी रकम गायब हो गई। खजांचीने उसे अपने मित्रों और नूर मुहम्मदमें भी बाटा था। जब मिंगबाशी (वजीर) मुसलमानकुलने जवाब तलब किया, तो अपराधी अफसरोंने तलवार निकाल ली, फिर वह ताशकन्द भाग गये। मिंगबाशीने ताशकन्दके राज्यपाल नूर मुहम्मदको उन्हें समर्पण करने तथा खुद आनेके लिये लिखा। उसके इन्कार करनेपर मुसलमानकुल चालीस हजार सेना ले ताशकन्दके ऊपर चढ़ा, लेकिन मर्गिलानके बेकके विश्वासघात करनेसे उसे सफलता नही मिली। जून १८५२ ई० मे उसने तीस हजार सेनाके साथ फिर चढ़ाई की। उधर नूर मुहम्मदने भी पूरी तैयारी कर रक्खी थी, और आसपास के नगरोंमें अपने हाकिम नियुक्त कर दिये थे। इसलिये मिंगबाशी मुसलमानकुलको नूर मुहम्मद नहीं, बल्कि औरोंसे भी लोहा लेना था। ताशकदपर जल्दी अधिकार न होते देख कुछ सेना वहां छोड़ मिंगबाशी, ने तुर्किस्तानपर सेना भेजी, और स्वय कुछ सेनाके साथ चिरची नदीके उद्गमके पास बने नियाजबेग किलेको सर करने गया। उसकी मनशा थी, कि नियाजबेगको लेकर ताशकन्दकी ओर पानी लाने- वाली नहरको तोड़ दिया जाय। नहर तोड़नेमें सफल हो उसने ताशकन्दके उत्तर चिमकन्तके किलेको जाकर भी दखल कर लिया। इसी बीच ताशकन्दियोंने छापा मारकर नियाजबेगमें छोड़ी सेनाको हरा नहरको फिर जारी कर दिया। वह ताशकन्दियोंसे भिड़नेके लिये लौट पड़ा, लेकिन युद्धके आरम्भमे ही खुदायारखां उसका साथ छोड़ दुश्मनोंमे जा मिला। खानके इस तरह हट जानेपर सेनामें भगदड़ मच गई। उनमेसे कितने ही मारे गये, कितने ही चिरचिक नदीमें डूब मरे। मुसल- मानकुल बड़ी मुश्किलसे भागकर कराकिर्गिजोंमें पहुंचा—उसकी मा कराकिर्गिजोंकी लड़की थी।

इस समय खोकन्दमें तीन राजनीतिक दल थे, जो शक्ति हथियानेके लिये दूसरेसे मिलकर या अलग ही बराबर प्रयत्न करते रहते थे। किपचकोंमें मुसलमानकुल और नूर मुहम्मदकी दो पार्टियां थीं, तीसरी पार्टी थी सर्तोंकी। उक्त घटनाके दो महीने बाद सर्तोंने किपचकोंके विरुद्ध एक सफल षड्यंत्र किया। उतेनबी और दूसरे कितने ही किपचक नेता मारे गये, और उनका स्थान सर्तोंने लिया। खानने अपने भाई मुल्लाबेकको नूर मुहम्मदकी जगह ताशकन्दका हाकिम (राज्यपाल) नियुक्त किया। खुदायारने किपचकोंको बहुत नाराज कर लिया था, इसलिये उसे हमेशा उनसे डर लगा रहता था। उसने अपने राज्यमे अकमस्जिद (पेरोव्स्की बन्दर) से खोकन्द और काश्गरको अलग करने- वाले पहाड़ोंतक सभी जगह किपचकोंको कत्लआम करनेका हुक्म दे दिया। किपचिक जहां भी, बाजारों, सड़कों, गांवों या मैदानोंमे मिले, मारे गये। १८५३ ई०में बीस हजार किपचिकोंको इस तरह तलवारके घाट उतारा गया। खुदायारकी मां स्वयं किपचकानी थी, लेकिन उससे क्या? अपने किपचक मुख्य- सेनापति सफर बीको और भी सासत देकर मरवाया—पहले उसके हाथ-पैर तोड़ डाले गये, फिर उसके सरपर सीसेका इतना भारी भार रक्खा गया, कि आंखें अपने गोलकसे बाहर निकल आईं। फिर उसके शरीरपर लेई लपेटी गई, और ऊपरसे कड़कड़ाता हुआ तेल डाला गया। अन्तमें उसकी बोटी-बोटी

काट गई। इसके बाद मुसलमानकुल भी गिरफ्तार करके खोकन्द लाया गया। एक खुली जगहमें सिरपर लंबी टोपी पहिना उसे जंजीरोंमे जकड़-बन्द करके लकड़ीके ऊंचे चबूतरेपर रक्खा गया। तीन दिन तक उसी जगह रखकर उसके सामने छ सौ किपचक जबह किये गये, फिर उसे फांसी दे दी गई। खोकन्दको दो बार बुखारियोंसे बचानेवाले इस नीतिकुशल प्रसिद्ध उज्बेकके जीवनका इस प्रकार अन्त हुआ।

किपचकों (उज्बेकों) को इस तरह दबा देनेके बाद अब सर्तो और उसके नेता कासिम तथा मिर्जा अहमदका बोलाबाला हुआ। उनका मल्लाबेकसे झगड़ा हो गया। इसपर उससे ताशकन्दकी राज्यपालता छीन ली गई, और उसका पद मिर्जा अहमदको मिला। मल्ला भागकर बुखारा चला गया।

१८५७ ई० मे नये राज्यपाल मिर्जा अहमदने चिमकन्द और औलियाआताके कजाकोंको अपना दुश्मन बना लिया, लेकिन पीछे अपनी कमजोरी देखकर उसने उनकी मांगोंको पूरा करके सुलह कर ली। उधर मल्लाने भी खोकन्दमे लौटकर किपचकों (कजाकों) और कराकिर्गिजोंको मिलाकर अपनी पार्टी बनाई। उज्बेक-नेता आलमकुल उसका सहायक था।

१२. मल्ला खान, शेरअली-पुत्र (१८५७–५९ ई०)

विद्रोहियोंने आक्रमण किया। समचीके युद्धमें हारकर खुदायार बुखारा भाग गया और उसकी जगह मल्ला खान घोषित किया गया।

रूसी अभियान—१८१४ ई०मे खोकन्दियोंने जब तुर्किस्तान शहरको जीता, तबसे वह इस इलाकेके कजाकोंसे कर मांगने लगे। लेकिन निम्न सिर-दरियाके कजाक अपनेको रूसकी प्रजा कहते थे, इसलिये रूसने खोकन्दियोंका विरोध किया। खोकन्दियोंने अपनेको मजबूत करनेके लिये तुर्किस्तान-शहरसे नीचे यानी कुर्गान, जूलेक, कूनिशकुर्गान, ताशकुर्गान, चिमकुर्गान आदि कई स्थानोंमें अपने गढ़ बनाये, जिनमेंसे सबसे महत्त्वका था अकमस्जिदका गढ़, जिसे खोकन्दियोंने १८१७ ई०में पहलेपहल सिरनदीके बायें तटपर बनाया था, लेकिन अगले ही साल उसे दाहिने तटपर परिवर्तित कर दिया। अकमस्जिदमें खोकन्दियोंका बेक (बड़ा हाकिम) रहता था, जिसके अधीन निम्न-सिरके दूसरे किले भी थे। बेक स्वय ताशकन्दके उपराजके अधीन माना जाता था। गढ़ोंको बना मजबूत हो खोकन्दियोंने कजाकोंपर भारी कर लगाये। प्रति किबित्का (तम्बू या परिवार) सालाना चार भेड़ें, जिसका तिहाई कर उगाहनेवाले (जकातची) को देना पड़ता। इसके अतिरिक्त लकड़ी-कोयले-भुसपर भी प्रति किबित्का चौबीस बोरा कोयला, चार बैल सखसौल (फरास ईधन), हजार पूला नरकट देना पड़ता था। प्रत्येक किबित्काका एक आदमी अपने खर्चपर बेगार करनेके लिये जाता था। ये बेगारू खोकन्दियोंके बगीचोंमें काम करते, किलेकी मरम्मत या भीतरके अस्तबलोंकी सफाई आदि करनेके लिये सालमें एक बार जाते। लड़नेके समय हरएक हट्टे-कट्टे कजाकको अपने घोड़े और हथियारके साथ सिपाही बनना पड़ता था। खोकन्दी कजाकोंपर सचमुच ही बहुत पाशविक अत्याचार करते थे—बिना कलीम (भेट) दिये वह कजाक औलों (गांवों) से औरतें ले जाते, और शरीयतके विरुद्ध उनकी बेइज्जती करते।

निम्न सिर-दरियापर खोकन्दियोंके बहुत सैनिक नहीं थे, लेकिन तब भी उनकी धाक जमी हुई थी। अकमस्जिदमें सबसे बड़ा किला था, जहांपर पचास सिपाही रहते थे। उनके अतिरिक्त वहां सौ बुखारी और खोकन्दी व्यापारी बसे हुये थे। कूनिशकुर्गानके गढ़में पचीस सिपाही, खोशकुर्गानमें चार, जूलेक (१८५३ ई०) में चालीस, और यानीकुर्गानकी आयताकार चार-पांच फुट ऊंची दीवारोंके भीतर दो या तीन खोकन्दी सैनिक रहते थे।

अपनी प्रजा कजाकोंके साथ ऐसा बरताव होते रूसी देख नहीं सकते थे। इसलिये १८४६ ई० में कप्तान शूल्जको सिरके मुहानेकी पड़तालकर वहां किला बनानेके लिये भेजा गया। अराल्स्क के नामसे मशहूर राइम्स्क किलेकी नींव अगले साल पड़ी। १८५० ई० में कजाकोंका मन बिगड़ते देख खोकन्दियोंने उन पर आक्रमण कर दिया, और पहली बार वह उनके छब्बीस हजार तथा दूसरी बार तीस हजार पशु और १८५१ ई० में पचहत्तर हजार पशु छीन ले गये। इसपर अराल्स्कके

रूसी कमांडरने कोशकुर्गानपर अधिकार कर लिया। रूसी आगे बढ़नेके लिये निश्चय कर चुके थे। अराल समुद्रमे गिरनेवाली सिर नदी हमारे यहा की गंगा जैसी बड़ी नदी है। उसकी धाराको सैनिक यातायातके लिये इस्तेमाल किया जा सकता था। इसके लिये स्वीडनमे बने दो स्टीमरोंको पुर्जे-पुर्जे अलग करके अराल समुद्रमें पहुंचा जोड़कर मई १८५२ ई०मे तैयार कर लिया गया। उसी सालकी गर्मियोंमे कर्नल ब्लारम्बेर्गने अकमस्जिद तक सिर दरियाकी सर्वे की, और वहांसे फौजी चौकी हटानेके लिये खोकन्दियोंको कहा। कर्नलके साथ चार सौ सैनिक और दो नौपौंडी तोपे अकमस्जिद आईं। टोकनेपर कर्नलने जवाब दिया, कि हम रूसी तटपर चल रहे हैं, और तुम सिर नदीके दाहिने किनारेपर अपने किलेको नहीं रख सकते। किलेके पास पहुंचनेपर खोकन्दियोंने कर्नलसे चार दिनकी मोहलत मांगी। उन्हें आशा थी, कि इसी बीच कुमक आ जायेगी, लेकिन वह नहीं आई। दिन पूरा होनेपर रूसियोंने ग्रेनेड (हथ-बम) फेंके। खोकन्दियोंने बन्दूकों और दीवारोंपर लगी तोपोंसे जवाब दिया। रूसियोंने उनकी तोपे जल्दी ही चुप कर दीं, लकड़ी-का फाटक तोड़ दिया, लेकिन किलेकी दीवार मजबूत साबित हुईं। रूसियोंने भीतर पहुंचकर आग लगा दी। इस लड़ाईमें पंद्रह रूसी मारे गये और पचहत्तर घायल हुये। लौटते समय उन्होंने कूनिशकुर्गान, चिमकुर्गान और कोशकुर्गानकी चौकियोंको भी नष्ट कर दिया।

१८५३ ई०मे रूसियोंका अभियान और भी बड़ी सेनाके साथ हुआ, जिसमें २१३८ सैनिक, २४४२ घोड़े, २०३८ ऊंट, और २२८० बैल, बारह तोपे और एक चलता-फिरता लकड़ीका पुल था। अरालस्कके किलेको छोड़नेसे पहले ही रास्तेके चारेकी रक्षाके लिये अबकी गर्मियोंमें कजाकोंको वहां डेरा न डालनेका हुक्म दे दिया गया था। यात्रा बहुत रक्षित तौरसे होने लगी, मदद करनेके लिये स्टीमर "पेरोव्स्की" नदीमें साथ-साथ चल रहा था। कराउजियक होते २ जुलाईको रूसी सैनिक अकमस्जिद पहुंचे। इस बीचमें खोकन्दियोंने किलेको काफी मजबूत कर लिया था। उसके चारों तरफ गहरी खाई खोद दी थी, महीने भरकी रसदके साथ तीन सौ खोकन्दी सैनिक वहा तैनात थे। दीवारोंपर उन्होंने तीन तोपे भी लगा रक्खी थीं। लेकिन रूसी सेना और तोपोंके सामने वह कितने दिन तक ठहरते? खोकदियोंने आत्मसमर्पण करनेके लिये पंद्रह दिनकी मुहलत चाही। इसी बीच तीन दिनके बाद एक सैनिक टुकड़ी और आगे ताशकन्दकी ओर भेजी गई। जूलेकके सैनिक भाग गये और रूसी वहाके किलेको ध्वस्त कर बीस तोपों और बहुत-से गोला-बारूदके साथ अकमस्जिद लौट गये। अकमस्जिदवालोंको आनाकानी करते देख बारूदकी सुरंगसे दीवारके एक भागको उड़ा दिया गया, किलेदार मुहम्मदअली अपने ढाई सौ आदमियोंके साथ मारा गया। रूसियोंके हाथमें घोड़ेकी पूछोंवाले दो झडे, दो भालेवाले झंडे, दो कांसेकी तोपें, ६६ छोटी और अधिकतर टूटी-फूटी तोपे, १५० तलवारें और दो कवच हाथ आये। रूसियोंने कजालाका ऊपरी धारपर पहला किला, कर्मकचीपर दूसरा, कूनिशकुर्गानमे तीसरा किला बनाया, और अकमस्जिदका नाम बदलकर पेरोव्स्की कर दिया।

रूसके इस खतरनाक अभियानके समय खोकन्दियोंमे घोर गृहयुद्ध चल रहा था। १८५३ ई० के शरद्मे सबदान खोजाके नेतृत्वमें ७००० सेना ताशकन्दसे अकमस्जिदकी ओर भेजी गई, जिनके मुकाबिलेके लिये दो तोपे ले २७५ रूसी सैनिक गये, जो बड़ी बुरी तौरसे पिटे और बानबे ऊटोंपर घायलोंको लिये रातको १९३ लाशें पीछे छोड़ भाग आये। जाड़ा आनेपर फिर अभियान शुरू हुआ। १४ दिसंबरको १२-१३ हजार सैनिकों और सत्रह पीतलकी तोपोंके साथ खोकन्दियोंने आकर पेरोव्स्कीके सामने मुकाबिला किया। नवीन और प्राचीन हथियारोंका मुकाबिला क्या? दो हजार खोकन्दी मारे गये, जब कि रूसी अठारह हत और उन्चास आहत हुये।

अब तैयारी करना और आगे बढना जारशाही रूसका हर सालका काम हो गया। बड़े परिश्रमके साथ १८५४ ई०मे फिर रूसियोंके विरुद्ध खोकन्दियोंने भी तैयारी की। तुर्किस्तानसे तोप ढालनेवाले कारीगर लाये गये। ताशकन्दके बेकने लोगोंके घरोंसे सारे पीतलके बर्तन ले लिये। उधर रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने अकमस्जिदके किलेको और मजबूत किया, और कमजोर अतएव बेकार समझकर किला नम्बर दोको छोड़ दिया। इसी समय उनपर बुखारावालोंने आक्रमण

बढते खोकन्दियोंके तोकमक, पिशपेक आदि किलोंपर अधिकार कर लिया। अब उन्होंने खोकन्दकी भूमिपर दो तरफसे प्रहारकी योजना बनाई। एक सेना औलियाआता या तलरापर उत्तरकी ओरसे चढ़ी और दूसरी पश्चिमसे तुर्किस्तान शहर (यस्सी) पर। इसी समय पो .न्दमें विद्रोह हो गया और पश्चिमी युरोपमें युद्धकी आशका बढ़ गई थी, इसलिये खोकन्दपर चढ़ाईकी योजना १८६४ ई० में स्थगित कर दी गई। तो भी कराताउ और बोरोलदाईताउकी पहाड़ियोंके खोकन्दी किले एकके बाद एक रूसी लेते गये। तुर्किस्तान शहर और औलियाआताके रास्तेपर अवस्थित चिमकन्दके किलेको खोकन्दी मजबूत करने लगे, जिसकी खबर पाकर निम्न-सिरका रूसी कमांडर जेनरल चेर्नेयेफ सितम्बर १८६४ ई०में रवाना हुआ। चन्द दिनोंके मुहासिरेके बाद चिमकन्दपर उसने अधिकार कर लिया। दस हजार युद्धबंदी और बहुत सा लूटका माल हाथ आया। चिमकन्दके हाथमे आ जानेपर अकमस्जिदसे वेर्नोये (अल्माआता) का रास्ता साफ हो गया, और खोकन्दका एक बहुत महत्त्वपूर्ण इलाका—चू-उपत्यका—खानके हाथसे निकल गया।

खोकन्दी चुप कैसे रह सकते थे? ९ मई १८६५ ई० को ताशकन्दके पास जेनरल चेर्नेयेफकी सेनासे लड़ते हुए आलमकुल घायल हुआ। डाक्टर असदुल्ला उसकी चिकित्सा कर रहा था। डाक्टर आलमकुलकी पोशाकको एकके बाद एक उतरवा रहा था, जिसमें कि मरणासन्न आहत पुरुषको कुछ स्वच्छ हवा मिले। उधर उतारे कपड़ोंको उज्बेक लेकर चम्पत हो रहे थे। अलीकुलको बिल्कुल नंगा देख दूसरा कपड़ा न होनेसे डाक्टरने अपनी खलअतसे उसे ढांक दिया।

ताशकन्द प्राचीनकालसे ही भारी व्यापारिक महत्त्वका नगर था। यहींपर बुखारा, खीवा, खोकन्द और रूसके कारवां-पथ मिलते थे। अब वह अधिक देर तक रूसियोंके हाथसे बाहर नहीं रह सकता था। रोज-रोजके खूनी सघर्ष और अशांतिसे परेशान हो वहाके धनी व्यापारियोंने रूसके दृढ़ शासनको ही पसंद किया। अगस्त १८६५ ई० मे शहरके रईसों और मुल्लाओंने चादीकी तश्तरीमें नमक-रोटीकी भेंट जेनरल चेर्नियेफके सामने रखकर अभिनन्दनपत्र देते हुये अपनेको जारकी प्रजा घोषित किया—"तुम एक समुद्रको दो समुद्रमे नही विभक्त कर सकते, और न एक राज्यके भीतर दूसरा राज्य ही बना सकते।" रूसियोंने तुर्किस्तानका एक नया प्रदेश (गुबर्निया) बना दिया, जिसका शासन-केंद्र ताशकन्द बना।

खुदायार खान पुनः (१८६५-७५ ई०)

अभी भी खोकन्दका कितना ही भाग रूसियोंके हाथमे नहीं था। खुदायार ताकमें था। ताशकन्दमें रूसियोंके जम जानेपर उसने बुखारी सेना ले खोजन्दको जीतते खोकन्द पहुंचकर अपनी गद्दी संभाल ली। बुखारियोंने अपनी सेवाओंके बदलेमे १८६५ ई० में खोजन्दको अपने अधिकारमे कर लिया। यही नही, बुखारी अमीर मुजफ्फरने रूसियोंको हुक्म दिया, कि खोकन्दी इलाकेसे हट जाओ, नहीं तो हम जहाद घोषित करेंगे। और भी आगे बढ़ते हुये मुजफ्फरने बुखारामे रूसी व्यापारियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली, जिसके बदले रूसियोंने ओरेनबुर्गमे बुखारी व्यापारियोके साथ भी वैसा ही किया, और मुजफ्फरके दूतको ओरेनबुर्गमे रोककर उसे पीतरबुर्ग नहीं जाने दिया। सीमाके झगड़ोंके निर्णयके लिये मुजफ्फर खानके बुलानेपर जो रूसी अफसर स्त्रूबे तथा कितने ही इंजीनियर आये थे, उन्हें अमीर-बुखाराने गिरफ्तार कर लिया। इस अपमानको रूसी कैसे बर्दाश्त करते? मुजफ्फरकी गोशमालीके लिये ११ फर्वरी १८६६ ई०को दो हजार सेना ले जेनरल चेर्नियेफ सिर पार हो सीधे समरकन्दकी ओर बढ़ा। रेगिस्तानके रास्ते सात मंजिलें पारकर वह जीजक पहुंच गया, लेकिन बुखारियोंके सैनिक संख्याबलको देखकर उसने लौट जाना ही पसंद किया। बुखारी इसे अपनी विजय समझकर रूसियोंका पीछा करते हुए सिर दरिया पार कर गये। इसपर मेजर जेनरल रोमानोव्स्कीने आक्रमण कर ८ अप्रैलको बुखारियोंको हरा खोजन्दकी ओर भगा दिया। अब सिरपर रूसी स्टीमर सेना और रसद ढो रहे थे। मुजफ्फरने सारे अन्तर्वेदमें रूसियोंके विरुद्ध जहाद घोषित करके धार्मिक जोश पैदा कर दिया था, इसलिये गाजियोंकी कमी नहीं थी। वह चालीस हजार सेना ले ताशकन्दपर आक्रमण करने गया, जब कि वहां रूसियोंकी संख्या

३६०० थी। खोजन्दसे उत्तर-पश्चिम कुछ ही मीलोंपर सिर-तटपर इरजारमें २२ मईको भयंकर युद्ध हुआ। आधुनिक हथियारोंसे लैस रूसियोंने बुखारियोंको घास-मूलीकी तरह काट डाला, और अमीर मुजफ्फर एक हजार सरबाजों (सैनिकों) के साथ प्राण लेकर भागा। उसके डेरेमें "चूल्हेपर रक्खे खानेसे भाप निकल रही थी, और हुक्का पीनेके लिये तैयार था।" अमीरका डेरा, उसकी कितनी ही तोपें, बहुत भारी परिमाणमे गोलाबारूद और रसद रूसियोंके हाथ आई। खुदायारने मनमें घृणा रखते हुये भी विजयके लिये रूसियोंको बधाई दी।

बुखाराकी यह जबर्दस्त हार थी, और मध्य-एसियाकी उस समय बुखारा ही सबसे बड़ी शक्ति थी। रूस जैसे जबर्दस्त साम्राज्य के सिरपर पहुंच जानेपर भी खुदायारकी अकल ठिकाने नही हुई। वह अपनी प्रजापर अत्याचार करता, मनमाना कर लगाता, या ऐसे ही उनकी सम्पत्तिको जब्त कर लेता। घुमन्तू कजाकों और किपचकोंके ऊपर उसने पहलेपहल खास कर लगाये। इस समयकी अवस्थाका वर्णन एक मध्य-एसियाई लेखकने निम्न शब्दोंमें किया था—

'सड़कोंकी मरम्मत, राजमहलोंके निर्माण, खानके बागोंके जोतने-खोदने और नहरोंकी सफाईके लिये सारे देशसे आदमियोंको पकड़कर जबर्दस्ती काममें लगाया जा रहा है। मजूरी क्या उन्हे खाना भी नही दिया जाता। साथ ही यदि गावके आधे लोगोंको कामपर लगाया गया है, तो दूसरे आधे से दो तंका (बारह आना) जबर्दस्ती कर उगाहा जा रहा है। कामसे भागने या इन्कार करनेपर कोड़ोंसे खबर ली जाती है। कभी-कभी कोड़ोंसे मार-मारकर लोगोंके प्राण ले लिये जाते है, और कितनोंको प्राण रहते ही कामकी जगहमे ही दबा दिया जाता है। ऐसी बेगार पहले खानोंके समय मे भी ली जाती थी, लेकिन उन्हें खाना तो मिल जाता था। पहले खानको बिना कर दिये लोग घास, नरकट और ईंधनकी लकड़ी जमा कर सकते थे, लेकिन अब उसमेसे आधी खानको देनी पड़ती है, जिसे सरकार निश्चित दामपर बेच देती है। इसके साथ ही ईधन या सरकंडेकी गाड़ी जब शहरके फाटकपर पहुंचती है, तो आधा तंका वहां और फिर एक तका बाजारमे महसूल देना पड़ता है। पहले झाड़ियोंकी लकड़ी (लीच) कर-मुक्त थी, लेकिन अब खानने प्रत्येक पर चार चेका (दो पैसा) चुंगी देनेके लिये मजबूर किया है। चुंगीवाले जोंकोके तालाबके पास रहते है। पशुओंके बेचनेपर साधारण जकात (शुल्क) के अतिरिक्त खानके लिये प्रति ढोर एक तंका, प्रति भेड़ आधा तंका, प्रति ऊंट दो तंका और प्रति घोड़ा-गदहा एक तका महसूल देना पड़ता है—उस समय खोकन्दी सिक्का सोनेका तिला, जिसमे साठ चांदीका तंका होता और तकेमें चौवालीस चेका या तांबेके पैसे होते। आयात मालपर मूल्यका चालीसवां भाग जकात और ऊपरसे बीसवां भाग और खानके लिये अमीनियाना देना पड़ता था। निर्यातके मालोंमे रेशम और रूईपर प्रति ऊंट दस तंका देना पड़ता। बाजारमे बिकनेवाली स्त्री-पुरुषोंकी पोशाक, तोशक, रेशमी कपड़ो तथा दूसरी मूल्यवान् चीजोंपर एक तका एक थान, और कम कीमती मालपर आठवेंसे चौथाई तंका कर देना पड़ता। दूकानोंकी हिफाजतके लिये पहरा देनेके लिये रातको सिपाही आते। उनके खर्चके लिये भी हर दूकानको हर चौथे महीने दोसे दस तका देना पड़ता। बाजारोंमें बिकनेवाले अनाजपर प्रति चारयक (दो मन दस सेर) पर चार चेका देन पड़ता। सब्जी, खरबूजा और अनाजपर प्रति बोझ एकसे तीन तंका तक कर है, जिसे तेकजाई (बाजारमें बेचनेका हक) कहा जाता है। इनके अतिरिक्त खराज और तनाब (भूकर) अलग है। दूध, खट्टी मलाई आदिपर प्रति प्याला दो चेका कर है। बत्तक या तालकी चिड़ियोंमे हर जोडेमें एक खानका होता, और पालतू मुर्गे-मुर्गियोंमे प्रत्येकपर दो चेका, दस अंडेपर एक चेका देना पड़ता।

भारतीय सिरकीवालोंने शताब्दियों पहले भारतकी पश्चिमी सीमासे बाहर अपना घुमन्तू-जीवन बिताना शुरू किया, और धीरे-धीरे पश्चिमकी ओर मध्य-एसिया ही नहीं, युरोप तक फैल गये। इन्हें अंग्रेजीमें जिप्सी, रूसीमें सिगान और उनकी अपनी भाषामें रोमनी या रोम कहा जाता है। विद्वानोंने निश्चित किया है, कि रोम वस्तुतः हमारे डोम शब्दका ही अपभ्रंश है। रोमनी लोगोंकी भाषाको देखनेसे इसमें संदेह नहीं रह जाता, कि वह भारतीय हैं। ईरान और मध्य-एसियामें

रोमनी लोगोंको लोली या ल्यूली कहते हैं। बहुत पुराने समयसे यह भारतके मदारियोंकी तरह बन्दर, भालू और बकरे लिये नगरों और गांवोंमे तमाशा दिखलाते अपनी जीविका करते थे। "खुदीयारने इन गरीबोंको भी चैनसे नहीं रहने दिया। उसने उनके ऊपर भी अपने कारिन्दे नियुक्त किये, जिन्होंने उनके जानवरोंकी संख्या बढ़ाकर बतलाई। हर बाजारके दिन और बड़े शहरोंमे सप्ताहमें तीन बार लोली अपने पालतू भालुओं, भेडियों, बन्दरों, बकरियों, लोमड़ियों और सूअरोंके साथ बाजार होकर निकलते, और प्रत्येक दूकानको चार चेका उन्हें देना पड़ता। खानके विदूषक भी बाजारमें फिरते, और उन्हें भी दूकानदारोंको पैसा देना पडता। यह पैसा खानके रसोईखानेके खर्चके लिये जाता। मजिस्दका इमाम नियुक्त करते वक्त उसे खानको दस तंका देना पड़ता, सूफी (मुअज्जिन) को पांच तंका। यदि खानको मालूम हो जाय, कि किसी परिवारमे दावत, शादी या खतना है, तो वह अपने गायकोंको भेज देता। गृहपतिको उनमेंसे हरएकको एक चोगा, और दोस पांच तिला (अशर्फी) तक खानके लिये देना पडत। प्रति वसत खोकन्द शहरसे बाहर दरवेश-खानाका भारी मेला लगा करता। उस समय हर एक पेशेवालेको खानके सामने अपनी क्षमता के अनुसार नजर भेट करनी पड़ती, जो सौसे हजार तिला तक होती। अगर इसमे जरा भी गफलत होती, तो पंच लोग पीटे जाते। अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमीसे जमीन या बगीचा लेना चाहता, तो खान उसे उसको मूल कीमतपर ही बेचनेके लिये मजबूर करता, और इसका जरा भी ध्यान नहीं रखता, कि नये मालिकने उसमे मेहनत और खाद-पानीसे कितनी तरक्की की है। खान अपने लिये सभी चीजे सस्तेमे लेना चाहता है। राज्यसे बाहर अगर कोई जाना चाहता, तो दो तंकाके साथ आवेदनपत्र देना पड़ता। यह पत्र फिर महरम (एक अफसर) के सामने रक्खा जाता, जो उसके लिये एक तंका लेता। जानेवालेकी जान इतनेसे ही नही बचती, उसे सड़ककी हर मंजिलपर अलग कर देना पड़ता। घास, इंधनके कर, प्रतिपशु प्रतिमास बारह चेका है। चराईका ठेका खानने सिदीक कुइचीको बीस हजार तिला सलानापर दे रक्खा है। खराज या फसलके महसूलके रूपमें दो लाख चारयक (एक चारयक=दो मन दस सेर) अनाज मिलता, जिसे बेंच दिया जाता। इसके प्रबंधके लिये हर किलेमें विशेष अफसर नियुक्त हैं। शरिकाना जिलेसे नौ हजार चारयक अनाज मिलता है, बालीकिचीसे एक लाख, सोखसे चौदह हजार, मेरकेन्दसे बारह हजार चारयक। बगीचों और मेवाके बागोंके करको तनाब कहते है, जिससे साठ हजार तिला आता। बालीकिची और चिल महरमके बीचमें सिर नदीपर चुगी कर लगता। विवाहकी लिखाई-पढाईपर भी कर था, जो कि आधा तिला तक होता है। वरासत (उत्तराधिकार) पर सम्पत्तिका चालीसवां हिस्सा मृत्यु-करके रूपमें खान लेता है। नमक बनानेके लिये करसे खानको बीस हजार तिला प्राप्त होता। देहाती लोगों और घुमन्तू कबीलोंपर अलग जकातका कर लगा, जिसका ठेका ग्यारह हजार तिलापर चेर्चीबाशीको दिया गया। व्यापारियोंसे जकात उगाहनेवाला मेहतर पैंतीस हजार तिला, खानकी कारवांसरायों और हजार दूकानोंका ठेकेदार ईसाइया तीस हजार तिला देता है। कपास-कर और दलाली-करसे दस हजार तिला राजकोषमे जाता। तेलके कोल्हू, अनाजमडी, रेशम बाजार, घासहट्टा, दूधहाटसे प्रति वर्ष पाच हजार तिला, ब्याह और मुल्ला आदिकी नियुक्तिसे भी पांच हजार तिला प्रति वर्ष मिलता है।"

लेकिन डंडेके सामने खानकी अकल ठीक रहती, इसलिये रूसियोंको व्यापार करनेमें कोई बाधा नही दी जाती थी। इतने भारी करके बोझसे कराहते लोग कब तक चुपचाप रहते? १८७१ ई० में लोगोंने विद्रोह कर दिया, लेकिन उसे जल्द ही दबा दिया गया। काले किर्गिजोंपर प्रति परिवार एककी जगह तीन भेंड़ें तथा पहाड़पर जोते उनके खेतोंपर खानने नया कर लगाना चाहा। किर्गिजोंने कर देनेसे इन्कार कर दिया और खानके तहसीलदारोंको पीट भी दिया। सेनाके आनेपर वह पहाड़ोंपर भाग गये। इसी समय मुसलमानकुलका बेटा तथा खानका साला आफताबचा अब्दुर्रहमान हाजी मक्काकी हज करके खलीफाके नगर कान्स्तन्तिनोपल (कसतुन्तुनिया) होते लौटा था। वह स्वयं भी किर्गिज था, लेकिन खानका संबंधी होनेके कारण दूसरे वर्गसे संबंध रखता था। खानने उसे सेना देकर किर्गिजोंको दबानेके लिये भेजा। उसने किर्गिजोंसे कहा—अपनी

तकलीफको कहनेके लिये खानके पास अपने पचास प्रतिनिधि भेजो, हम उन्हें बिना नुकसान पहुंचाये जामिनके तौरपर रखेंगे। लेकिन वहां आनेपर खुदायारने बड़ी क्रूरताके साथ किर्गिज प्रतिनिधियोंको मरवा डाला। आफताबचाको इसके लिये बड़ी शर्म आई और वह किर्गिजोंकी भूमि छोड़कर खोकन्द लौट गया। किर्गिजोंने बदला लेनेके लिये हथियार उठाया और उजकन्द तथा सुकको ले लिया—सुकमें एक छोटा-सा किला था, जिसमें खानका खजाना रहता था। पहाड़ी इलाकोंमें सफल होते ही मैदानी इलाकेमे जानेपर किर्गिज आक्रमणमें असफल रहे, उनके बहुत-से आदमी खानके हाथमे बंदी बने, जिनमेंसे पांच सौको खोकन्दकी बाजारोंमें फासीपर चढ़ा दिया गया। किर्गिजोंने मदलीखानके पुत्र मुजफ्फरको अपना खान बनाया था। खुदायारने उसकी जिंदा खाल खिंचवा ली। लेकिन विद्रोहियोंकी शक्ति बढ़ती गई, और उसकी क्षीण। इसपर खानने रूसियोंसे मदद चाही, लेकिन वह इस नरराक्षसको क्यों मदद देने लगे? लोगोंकी भी सहानुभूति विद्रोहियोंके साथ थी। खुदायारको अपने बेटे तथा अन्दिजानके बेक (राज्यपाल) नासिरुद्दीनपर भी सदेह हुआ। चारों तरफसे आशाकी एक भी झलक न देखकर खुदायारने खजाने और परिवारको लेकर अपने पदको छोड़ दिया। विद्रोहियोंने बहुत जल्दी ही ओश, अन्दिजान, सूजक, उचकुर्गान और बालिकचीको अपने हाथमें कर लिया। बालिकचीके बेगने विरोध करना चाहा, इसपर मुहके रास्ते डंडा घुसेड़कर उसे जमीनमे गाड़ दिया गया। खानके बहुतसे सिपाही विद्रोहियोंकी ओर मिल गये और उनके कमांडर तथा खानके साले आफताबचाने नमंगानके पास तुराकुर्गानके किलेमें अपनेको बंद कर आगे कोई भी कार्रवाई करनेसे इन्कार कर दिया। १८७३ ई० के जाड़ोंमें विद्रोहियोंकी शक्ति कुछ निर्बल हुई, और कुछ शहर फिर खुदायारको मिल गये, लेकिन १८७४ ई० के वसंतमे खुदायार पुत्र अमीनको आगे करके विद्रोहियोंने फिर बगावतका झडाउठाया। अमीनकी बहुत अधिक बात करनेके स्वभावने परदा फाश कर दिया। उसके चचा बातिरखान तुरा सोलह और षड्यंत्रियोंके साथ राजमहलमें बुलाये गये, जहांसे वह फिर नही लौटे। तरुण खानजादेको निगरानीमें रक्खा गया। मेहतर मुल्ला कामिलने सूचना देकर सावधान नहीं किया था, इसलिये खुदायारने उसे जहर देकर मरवाया। इसके बाद फिर दूसरा षड्यत्र खुदायारके चचा फाजिलबेगके पौत्र अब्दुल करीम बेकको खान बनानेके लिये किया गया। रूसियोंने अब्दुल करीमको पकड़कर ताशकन्दमें और उसके मुख्य सलाहकार अब्दुल करीमको चिमकन्दमे रख दिया। खानको अब हरएक आदमीपर संदेह होने लगा। उसे आंखोंके सामने मौत नाचती दिखाई पड़ती थी; इसलिये वह काफी समय तक महलसे बाहर नही निकला। हबशी गुलाम नसीम तोगा खानका बड़ा ही विश्वासपात्र सेवक था, जो हर वक्त महलके द्वारकी रक्षा करता। उसे भी अपने बीबी-बच्चोंको भीतर न आने देनेका हुक्म था। जब शंका और सदेहका इतना बाजार गर्म हो, तो हर जगह गुप्तचरोंका जाल बिछना स्वाभाविक था।

रूसी खोकन्दकी सारी हालत बड़े गौरसे देख रहे थे। १८७५ ई०मे तुर्किस्तान-प्रदेशका शासक जेनरल काफमान था। उसने खोकन्द होते रूसी सैनिक टुकड़ीको काश्गर भेजनेके लिये सहमति लेनेके वास्ते अब्दुल करीमको खोकन्द भेज दिया। इधर आफताबचा भी अपने पिता मुसलमान-कुलकी हत्याका बदला लेना चाहता था, इसलिये खुदायारके खिलाफ नये विद्रोहका अगुवा बना। सारी सेना उसकी तरफ हो गई। खुदायारके भाई और पुत्र भी उससे आ मिले। खान अपनी बेगमों और दस लाख गिन्नी खजाना लेकर ताशकन्द भागा। रूसियोंने उसे बड़ी खुशीसे आश्रय दे नजरबन्द कर दिया। फिर थोड़े समय बाद उसे ओरेनबुर्गमें रहनेके लिये भेज दिया।

१५. नासिरुद्दीन, खुदायार-पुत्र (१८७५ ई०)

खुदायारके भाग जानेपर विद्रोहियोंने उसके पुत्र नासिरुद्दीनको खान घोषित किया। अब्दुर्रहमान आफताबचा मुखिया था—आफताबचाका अर्थ है हाथ धोनेके आफताबा या गडवेका उठानेवाला। मुल्ला ईसा औलिया और हाकिम नजर परमाचीने जेनरल काफमानके पास अनुनय-विनयके पत्र भेजे, और खुदायारकी गलतियोंको दुरुस्त करनेका वचन देते हुये काफमानकी ओर मित्रताका हाथ

बढ़ाया। काफमानने इस शर्त्तपर बात स्वीकार की, कि नासिरुद्दीन बापकी की हुई संधियोंको स्वीकार करे, रूसी प्रजाके नुकसानोंकी क्षतिपूर्ति दे। नये खानसे रूसी बहुत आशा करतेथे, क्योंकि वह रूसियोंकी चाल-ढालको पसंद करता और रूसी जातीय पेय वोद्का (शराब) का बहुत प्रेमी था।

लेकिन खान अकेला क्या करता ? खोकन्दी मुसलमान काफिर रूसियोंके विरुद्ध जहाद करनेकी तैयारी कर चुके थे। उन्होंने राजधानीमे घोषणा की, कि सभी रूसी मुसलमान हो जायं, नहीं तो इसका नतीजा उनके लिये बुरा होगा। लेकिन यह कब होनेवाला था ? अन्तमें विद्रोह उठ खड़ा हुआ। ताशकन्द और खोजन्दके बीचके तीन और खोजन्द तथा समरकन्दके बीचके कई रूसियोंके डाक-स्टेशन लूटकर जला दिये गये। डाकमास्टर और मेल ढोनेवाले मारे या बन्दी बनाये गये। यात्रियोंकी भी वही दशा हुई। कुछ समय तक खोजन्दके लिये भी भारी खतरा पैदा हो गया।

रूसियोके लिये इससे सुनहला मौका और कब मिल सकता था ? काफमानने भारी तैयारी की, और जेनरल गलवाचेफके नेतृत्वमे एक सेना भेजी, जिसने विद्रोहियोंको हराकर कुरामा जिलेको उनसे मुक्त कर लिया। ३१ अगस्तको वह खोजन्द पहुचा। विद्रोही वहांसे हट चुके थे। रूसी सीमांत और खोकन्दके बीचमे महरमका बड़ा किला था, जहां विद्रोहियोंसे मुकाबला हुआ। एक घटासे कम हीमे किला सर हो गया। ग्यारह सौ गाजियोंकी लाशे वहीं गाड़ी गईं। इस इलाके को भी रूसके तुर्किस्तान-प्रदेशमे मिला लिया गया। ७ सितंबरको रूसी सेनाने खोकन्दकी ओर कूच किया। नासिरुद्दीनने मुल्ला ईसा औलियाको भेजकर क्षमा मागनी चाही। रूसियोंने उसे पकड़कर अपनी विजययात्रा जारी रखी। सर्वत्र रूसी सेनापतिके सामने लोग रोटी-नमक पेश करते अधीनता स्वीकार करते जा रहे थे। खानने अब एक दूसरा दूतमडल भेजा, जिसके साथ भेटके अतिरिक्त डाक-स्टेशनोंमें पकड़े बंदी भी थे। उन्होंने बतलाया कि हमारे सिरको मुड़ा दिया गया, लेकिन और तरहसे कोई बुरा बर्ताव नही किया गया। रूसी स्त्रियों और बच्चोंको खानके अन्तःपुरमे रखा गया था। बिना प्रतिरोध किये ही अन्तमें खोकन्दने रूसियोंके हाथमे आत्मसमर्पण किया। खान स्वय जेनरल काफमानसे मिलने के लिये आया। जेनरल काफमान अपने स्टाफके साथ कुछ दूर तक जाकर खानके साथ अपने डेरेमें लौट आया। रूसियोंने कुछ समयके लिये वहां डेरा डाल दिया। लोगोंपर धाक जमानेके लिये नगरमे बराबर रूसी सेनाका प्रदर्शन होता रहा। जेनरलने दूसरे स्थानोंको भी आत्म-समर्पण करनेके लिये घोषणा निकाली। आफताबचाने मर्गिलानमें काफी सेना जमा कर रक्खी थी। यह सुनकर १७ सितम्बरको काफमान मर्गिलान पहुंचा। आफताबचा किपचकों (उज्बेकों) के साथ वहांसे खिसक गया और मर्गिलानने अधीनता स्वीकार की। आफताबचाका पीछा करते स्कोबेलेफ ओश तक गया—अन्दिजान, बलिकची, सरीखाना और ओशने उसके हाथमें आत्म-समर्पण किया, विद्रोहियोंके तीन नेताओंमेसे एक खालिक नजरने भी प्रतिरोधको बेकार समझकर आत्मसमर्पण कर दिया। नासिरुद्दीनको सधि करनेके लिये काफमानने मर्गिलान बुलाया। समझौतेके अनुसार सिर नदीसे उत्तरका इलाका नमगान रूसियोंके हाथमे चला गया, साथ ही नासिरुद्दीनने छ सालमे तीस लाख रूबल (चार लाख दस हजार पौंड) हरजाना देना स्वीकार किया। और लोगोंको क्षमादान कर दिया गया, लेकिन विद्रोहियोंके जबर्दस्त नेताओं—ईसा औलिया, जुल्फेकार बी और मुहम्मदखान तुरा—को साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया।

लौटते समय नमंगानकी नई बनी रूसी प्रजाने जेनरल काफमानके स्वागतार्थ एक बड़ा तम्बू गाड़कर एक सौ बीस गाड़ी रसद और चालीस हजार रोटियोंकी भेंट पेश की। नदीसे तम्बू तक जेनरलके चलनेके लिये रेशमी पांवडे बिछाये गये, और उसके ऊपर चांदीके सिक्के बरसाये गये।

लेकिन यह अधीनता स्थायी नहीं रही। थोड़े दिनो बाद फिर विद्रोह हो गया और आठ तोपोंके साथ चौदह हजार आदमी विद्रोह दबानेके लिये अन्दिजान भेजे गये, जहां साठ-सत्तर हजार आदमियोंको आफताबचाने जमा कर रक्खा था। किर्गिजोंने भी पूलादबेकको खान घोषित कर अपने पंद्रह हजार योद्धा जमा किये थे। रूसियोंको जबर्दस्ती नगरपर अधिकार करना पड़ा, और उनकी गोलाबारीमें बाजार और बहुत से मकानोंमें आग लग गई। शत्रुओंकी संख्या अधिक होनेके कारण रूसी रास्तेके

गांवोको जलाते नमंगान लौटे। शत्रु उनका पीछा कर रहे थे। यद्यपि असफल होकर ही जनरल त्रोत्स्कीको लौटना पड़ा था, लेकिन फिर भी जारशाहीने उसे सम्मानित किया।

खान नासिरुद्दीनने रूसियोंकी कड़ी शर्तोंको मानकर अपनी प्रजाको जल्दी ही असतुष्ट कर दिया और उसे उनके क्रोधके मारे भागना पड़ा। पूलादके समर्थक तथा उरातिप्पाके भूतपूर्व बेकने राजधानी (खोकन्द) पर अधिकार कर लिया। खोकन्दियोंका पलड़ा भारी होते देख नमंगानवालोंने भी रूसियोंके खिलाफ विद्रोहका झंडा उठाया, और उसपर भी किपचकों (उज्बेकों) क अधिकार हो गया। इस विद्रोहको दबानेके लिये जेनरल स्कोबेलेफने बड़ी निष्ठुरताका परिचय देते अंधाधुध तोपोंसे गोलाबारी की। खोकन्द राज्यमे इस वक्त चारों ओर अराजकता फैली हुई थी, लेकिन रूसके विरुद्ध सभी एक थे। इस्लामके नामपर वह सर्वस्व-त्यागके लिये बेकरार थे। रूसी सेनाके खूनी अत्याचारोंसे उनकी हिम्मत नही टूटी थी। सिर और नरिन नदियोंके बीचमे उस समय लडाकू किपचक रहा करते थे। स्कोबेलेफको हुक्म हुआ, कि इस इलाकेको उजाड दे। जनवरी १८७६ ई०में उसने प्रस्थान किया। जाड़ेके कारण किपचक घुमन्तू इस समय अपने हेमन्त निवासोंमे जमा थे। सिरके उत्तरी तटसे बढते हुये रूसियोंने किपचकोंकी मुख्य बस्ती पैताको नष्ट किया, और हराकर उन्हें भागनेके लिये मजबूर किया। आगे सरखाबा तक हर चीजको जलाते बरबाद करते रूसी बढ़े। शत्रुको भयकर हत्या और हानि पहुंचाकर अन्दिजान सर किया गया। दूसरी विजय थी अस्साकीकी, जहा शहरेखान और मर्गिलानके लोगोंने अधीनता स्वीकार की। अन्तमे पहली फर्वरीको आफताबचाने भी बिना शर्तके आत्म-समर्पण कर दिया। उसके साथ बातिर तूरा, इसफन्दियार और दूसरे सरदार भी थे।

रूसमें विलयन—खोकन्दवाले पूलादबेकसे उकता गये थे। उन्होंने खोजन्दसे नासिरुद्दीनको बुला भेजा था। लेकिन पूलादके समर्थकोंने उसपर आक्रमण कर दिया, और बड़ी मुश्किलसे नासिरुद्दीन जान बचाकर महरम भाग सका। फिर प्रहार करनेपर पूलादबेकने भागकर उच-कुर्गानके पास अलई पहाड़मे जाकर शरण ली, उसके बहुत-से आदमी पकड़े गये और नासिरुद्दीन अभियानमे सफल हो खोकन्द लौटा। लेकिन रूसी देख चुके थे, कि कैसे खान और मुल्ला आसानीसे लोगोंमें जहादका प्रचारकर विद्रोह खड़ा कर सकते हैं, इसलिये अब और खानको कायम रखना वह अच्छा नही समझते थे। जेनरल स्कोबेलेफको हुक्म हुआ और उसने २० फर्वरी १८७६ ई०को खोकन्दपर अधिकार कर लिया। नासिरुद्दीन, आफताबचा और दूसरे नेता बन्दी बनाकर ताशकन्द भेज दिये गये। जारने अपने सिहासनारोहणके वार्षिकोत्सवके समय २ मार्च १८७६ ई० को एक उकाज़े (राजादेश) निकाला, जिसके अनुसार खोकन्दके राज्यको फरगानाके प्रदेशके नामसे रूसी साम्राज्यमें मिला लिया गया। पूलादबेक भागा-भागा फिरता रहा। उसे भी किर्गिजोंने पकड़कर दे दिया और बारह रूसी सिपाहियोकी हत्याके अपराधमे उसे मर्गिलानमे फासीपर चढ़ा दिया गया। इस प्रकार बाबरकी प्रिय जन्मभूमि फरगाना जारके राज्यकी अंग बन गई, और वहांकी प्रजा प्रायः आधी शताब्दीके लिये निरीह बना दी गई।

४. (२ खोकन्द खान-वंशवृक्ष)
(१७४७–१८७६ ई०)
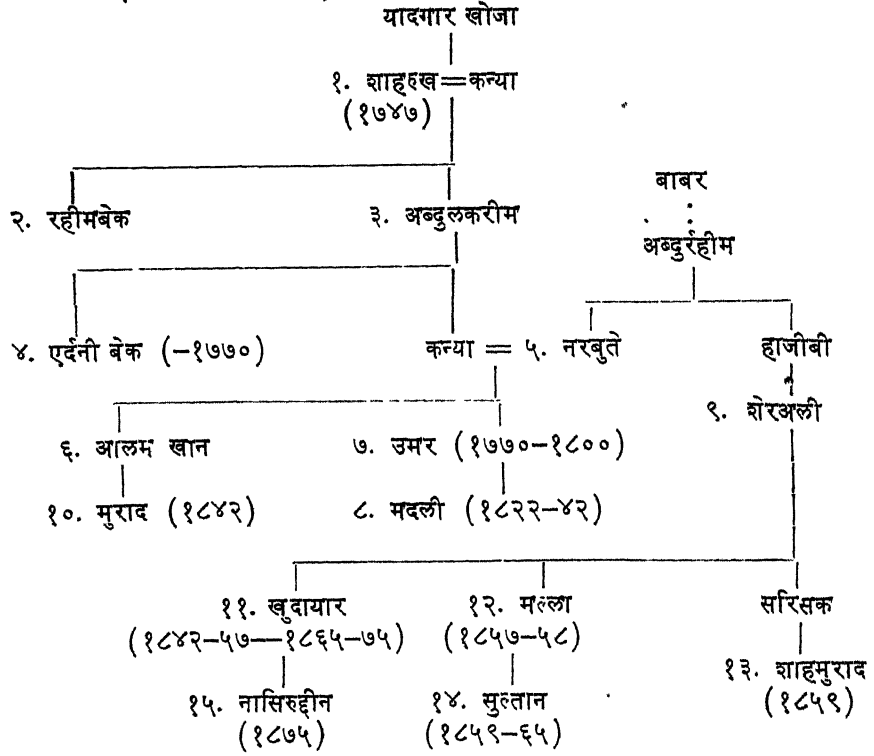
स्रोत ग्रन्थ

१. इस्तोरिया सससर (अ. म. ४ जिल्द, व. इ रव्दोनिकस्)
२. History of U. S. S. R (Ed. A. M. Pankratova, Moscow 1947)
३. Heart of Asia (E. D Ross)
४. History of Mongol (H. H. Howorth)
५ ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिविर (मास्को १९४६)
६. इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
७. इस्तोरिया रोस्सिइ (स. सोलोवियेफ्, पेतेरबर्ग १८७९–८५)
८. आजियात्स्कया रोस्सिया (अ. क्रवेर आदि, मास्को १९१०, पृ० २४९–५८)

अध्याय ३

बुखाराके अमीर

(१७४७–१९२० ई०)

अस्त्राखानी-वंशका स्थान किस तरह अतालीकवंशी मंगीतोंने लिया, इसका वर्णन हम पहले* कर चुके हैं। खुदायार अतालीकके पुत्र मुहम्मद रहीम और दानियाल बी थे। रहीम बी अस्त्राखानी अमीर सैयद अब्दुलफैजका दामाद था। सैयद अब्दुलफैजकी लड़की शम्सबानू आइम दानियाल बीके लड़के शाह मुराद (अमीर मासूम बेगीखान) की बीबी थी, जिससे सैयद अमीर हैदर पैदा हुआ था। यद्यपि अब्दुर्रहीम बीके समयसे ही राज्यशासन नये खानदान (मंगीत-वंश) के हाथमें चला गया था, लेकिन अमीर हैदरके समय तक अस्त्राखानी-वंशके खानको खतम नहीं किया गया। मंगीती-वंश बुखाराका अन्तिम राजवंश था, जिसका उच्छेद बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलताके बाद १९२० ई० में हुआ।

राजावली—इस वंशमें निम्न अमीर हुये—

१.	मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालीक खुदायार-पौत्र	१७४७ ई०
२.	दानियाल बी, खुदायार-पुत्र	–१७७० "
३.	शाहमुराद, अमीर मासूम, दानियाल-पुत्र.	१७७०-९९ "
४.	हैदर, शाहमुराद-पुत्र	१७९९-१८२६ "
५.	हुसैन, हैदर-पुत्र	१८२६ "
६.	उमर, हैदर-पुत्र	१८२६ "
७.	नसरुल्ला, हैदर-पुत्र	१८२६-६० "
८.	मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र	१८६०-६७ "
९.	अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र	—१८९४ "
१०.	मीर आलम, अहद-पुत्र	—१९२० "

१. मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालिक खुदायार-पौत्र (१७४७ ई०)

मंगीत-कबीलोंको छिङ-गि [खानने मंगोलियाके उत्तर-पूर्वसे लाकर वक्षुके मुहाने और बुखारासे एक सौ चालीस मील दक्षिण-पूर्व करशीमें बसा दिया था। मूलतः यह चाहे मंगोलोंके बंधु-बांधव रहे हों, लेकिन आगे तुर्कोंमें मिलकर ये उज्बेकोंके मुखिया बन गये। अस्त्राखानियोंकी प्रभुताके समय ये उनके बड़े भक्त थे। अब्दुर्रहीम उज्बेकोंके मंगीत-कबीलेका मुखिया था। इसके दादा खुदायारने अतालीक (मुख्य परामर्शक) होकर अपनी शक्तिको बहुत बढ़ा लिया था, लेकिन प्रभुताको पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेमे उसके पोते मुहम्मद रहीमबीने ही सफलता पाई। इसने अपने चचा दानियालको समरकन्दका शासक बनाया। अस्त्राखानियोंकी कमजोरीके कारण शहरसब्ज, हिसार (ताजिकिस्तान) और ताशकंद बुखारियोंके हाथसे निकल गये थे। अपने पक्षको मजबूत करनेके लिये रहीमको अफगान अहमदशाह अब्दालीसे मदद लेनेकी जरूरत पड़ी, जो दिल्ली तककी लूट-मार करके काफी प्रसिद्ध हो चुका था। इस मददके बदले उसे वक्षुके दक्षिणके

---

* यहीं जिल्द २।५।१३

भूभागको गिल्जइयों (अफगानों) के हाथमें देना पड़ा। अब्दुर्रहीमने अस्त्राखानी खानको मारकर ही संतोष नहीं किया, बल्कि उसके तरुण पुत्र तथा अपने दामाद अब्दुल मोमिनको एक महफिलमें दावत करके मनोरंजनके लिये कुएके गहरे जलको देखते वक्त ढकेलकर मार दिया। अब्दुर्रहीम बुढ़ापेमें ईरानी गुलाम तथा अपने वजीर दौलत बीके हाथमें खेलता रहा, जो अपने दुःशासनके लिये बदनाम था। रहीम इस वक्त बहुत विचित्र स्वभावका हो गया था। एक दिन वह दर्वेश बन संसारकी असारतापर व्याख्यान देता, और दूसरे दिन मौज-मेलेमें अपनेको भुलाना चाहता। इसी तरहके जीवनमें वह बीमार होकर मर गया। उसके कोई पुत्र नहीं, बल्कि दो लड़कियां थीं। मरते समय उसने अपने चचा दानियाल बीको अपना उत्तराधिकारी बनाया।

२. दानियाल बी खुदायार-पुत्र (–१७७० ई०)

रहीमके मरनेपर उसकी इच्छानुसार वजीर दौलतबीने दानियालको सिंहासन संभालनेके लिये बुलाया। दानियालने स्वयं खान न बन अतालीक ही रहना चाहा, और गद्दीपर उसने अस्त्राखानी अबुल्गाजीको खान बनाकर बैठाया। दौलत बी अब भी राजकाज चलानेमें सर्वेसर्वा था। यही समय है, जब कि बुखाराके बाजारोंमें कलियान (हुक्के) और तम्बाकूका प्रचार बढ़ा, साथ ही काफिर-खरातमें रंडीखाने खुले। दानियालका ज्येष्ठ पुत्र शाहमुराद इनके लिये बहुत अफसोस करता था, क्योंकि वह कट्टर इस्लामका प्रचार करना चाहता था। उसने शाह सफर नामक एक सूफीके यहां जाकर शिक्षा लेनी चाही। शेखने उसे फटकारते हुये कहा—"अत्याचारीका पुत्र कैसे भले काम कर सकता है ?" फिर परीक्षा लेनेके लिये उसने कहा—"जाकर पल्लेदारी करते बोझ ढो।" मुराद गंदे कपड़े पहिनकर तुरन्त बाजारमें चला गया, और अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार कितने ही महीनों तक पल्लेदारी करता रहा। बापके टोकनेपर मुरादने जवाब दिया—"इल्म और धर्मकी खान बुखारा आज अन्याय और दुराचारमें कितना डूबा हुआ है ? जहां तुम्हारे पुत्र व्यसनमें पड़े हुये हैं, जब कि दौलत कुशबेगी जैसा एक दास देशका स्वामी बन बैठा है।" यह कहते हुये मुरादने कहा, कि मैं तो दर्वेश (साधु) बनूंगा। एक साल तक हम्माली (पल्लेदारी) करनेके बाद शेख सफरने मुरादको अपना मुरीद (चेला) बनाया। अब वह अपना सारा समय आलिमों और दर्वेशोंकी सेवामें बिताने लगा। लेकिन साथ ही खोकन्दके दूतकी स्वागतकी तैयारीके लिये उसने कुशबेगीको बुला चुपचाप जल्लादोंको भेजकर उसका काम तमाम किया, और उसकी धन-सम्पत्तिको जब्त कर लिया। अब मुरादकी चलने लगी। उसने एक काजीको हुक्का पीनेके अपराधमें चाल सुधारनेके लिये साल भरका समय देकर उसे मरवा डाला। उसके डरके मारे भाइयोंने भी अपनी चाल बदली। बुरे साथियोंको मारनेमें उसने जरा भी आनाकानी नहीं की, और रंडीखानेको भी जल्दी ही बन्द करवा दिया। बुखारा फिर "स्वर्ग" बन गया। दानियाल बीने शाह मुरादके आगे बढ़नेमें कोई रुकावट नहीं पैदा की, और बेटा भी अपने बापकी बड़ी इज्जत करता था। मृत्युके समय दानियालने शाह मुरादसे प्रतिज्ञा करवाई—"भाइयोंको न मारना न निर्वासित करना, मेरी विधवाओंको ब्याह करनेके लिये मजबूर न करना, ख्वाजासरा खोजा सादिकके साथ अच्छा बर्ताव करना, भाइयों-बहनोंको काफी धन देना और मुझे शाह नक्शबंदकी कब्रके पास दफन करना।"

दानियालका शासन इस प्रकार बहुत कुछ उसके बेटे शाह मुरादका शासन था। उसने उरगंज (खीवा), खोकन्द और मेर्वके शासकोंके साथ मित्रता रक्खी। सिक्का और खुतबा उसने अपना नहीं चलाया। दानियालके मरनेके बाद भी अभी तख्तपर अबुलगाजी अस्त्राखानी ही रहा, यद्यपि शाह मुरादको यह पसंद नहीं था।

३. शाह मुराद, अमीर मासूम बेगीखान, दानियाल-पुत्र (१७७०-९९ ई०)

शाह मुराद बड़ा ही ढोंगी था। वह अपनेको संत सूफी प्रकट करना चाहता था। बापके मरनेपर वह बुखाराके लोगोंसे पिताके दुष्कर्मों तथा कसूरोंके लिये क्षमा मांगता फिरता रहा। बापकी

वरासतमें मिली सम्पत्तिको उसने स्वय न लेकर खैरातके कामोंमें दे दिया। पहलेसे ही वह अपने पल्लेदारीके जीवन तथा दूसरे विचित्र कामोंके कारण कट्टर मुसलमानोंमे सर्वप्रिय हो चुका था, लेकिन उसका अपना भाई तख्तामिश उससे सख्त घृणा करता था, और चाहता था कि किसी तरह गद्दी अपने हाथमें ले ले। उसने शाह मुरादकी हत्याके लिये फरीदून नामक एक आदमी को नियुक्त किया। फरीदूनने शयनकक्षमे जाकर तलवार चलाई, जिससे मुंहसे कानतक घाव लग गई, लेकिन इसी समय जागकर शाह मुरादने हत्यारेकी दाढी पकड़ ली, पर वह किसी तरह जान छुड़ाकर भागनेमे सफल हुआ। सबेरे उसी तरह घावपर पट्टी बांधे शाह मुराद दरबारमें आया। फरीदूनको मृत्युदड हुआ, भाईको उसके कसूरके लिये देशनिकाला मिला। बापको दिये हुये वचनपर ख्याल करके मुरादने उसको और कोई कठोर दंड नही दिया। जब उसके दूसरे भाई सुल्तान मुराद—जो कि कर्मिनियाका हाकिम था—ने विद्रोह किया, तो उसे भी बन्दी बनाकर बुखारामें रख दिया।

मेर्व इस समय ईरानी काजार-वंशके संस्थापक बहराम अली खाके हाथमें था, जिसने १७८१ ई०में इस महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगरको लेकर उसे अपनी राजधानी बना पुराने मेर्वके ध्वसावशेषपर एक किला बनाया। बहराम स्वयं भी तुर्कमान था, इसलिये तुर्कमानोंपर सत्ता जमानेमें उसे बहुत कठिनाई नही हुई। शीया होनेसे धर्मांध शाह मुराद मेर्वपर काजार-शासनको फूटी आंखों नहीं देख सकता था। उसके लिये यह धर्मयुद्धका अच्छा मौका था। दानियाल बीके मरनेपर बहराम अलीने अपनी भक्ति दिखाते हुये यद्यपि कुरान-पाठ करके दान-खैरात दी थी, लेकिन इसका सुन्नी दर्वेश शाह मुरादपर कोई असर नही हुआ। १७८५ ई०में शाह मुराद छ हजार सवारों के साथ मेर्वकी ओर चला। छापा मारकर पहले ही हल्लेमे उसने बहराम अलीको मार डाला। लेकिन उसकी राजधानी आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार नहीं थी। बहराम अलीने सुल्तान संजर सल्जूकी द्वारा बनवाये मुर्गाब नदीके बांध—जोकि मेर्वसे तीस मील ऊपर था—की सुरक्षाके लिये उसपर बने किलेको तोड़ दिया। बाधका हाकिम अपनी स्त्रीके लिये बहराम अलीके पुत्र मुहम्मद खानसे नाराज था। इसी कारण उसने किलाबन्द महलको शाह मुरादको अर्पित कर दिया। शाह मुरादने बन्दको तोड़कर दुनियामें अत्यन्त उर्वर मेर्वकी हरितावली और नहरोंको खराब करके बरबाद कर दिया। इससे भयंकर अकाल पड़ा, जिसके कारण मर्ववाले आत्मसमर्पणके लिये मजबूर हुये। अधिकांश निवासियों—तेरह हजार परिवार—को गुलाम बनाकर शाह मुराद बुखारा ले गया। इसके बाद उसने खुरासानपर धावा करके लूटमार मचाई। शीया ईरानियोंको मारना या गुलाम बनाना सुन्नी धर्मांध शाह मुरादके लिये पुण्यार्जनका सबसे अच्छा उपाय था। तारीफ यह कि इसपर भी इस समय क्रूरकर्मा शासकको अमीर मासूम (निष्पाप शासक) कहा जाता था। अपने सुन्नी धर्म-भाइयोंकी दृष्टिमे वह ऐसी खून-खराबी और लाखों आदमियोंको गुलाम बनाकर कोई पाप नही कर रहा था। उसके सालाना हमलोंके कारण खुरासानके गांव और नगर उजड़ गये। ईरानी गुलामोंकी अधिकताके कारण बुखाराकी बाजारोंमे गुलामोंका दाम गिर गया।

मेर्व शहरको बहरामअलीके पुत्र मुहम्मद करीम खांने बड़ी बहादुरीसे बचाया था। उसके बाद उसके भाई मुहम्मद कुल्ली खांने भी शाह मुरादसे मेर्वकी रक्षा की थी। बांधके संरक्षकने एक वेश्याके प्रेममें अंधे धोखा दिया। हुसेन खां मेर्वका राज्यपाल था, उसने जबर्दस्ती उसकी वेश्याको पकड़ मंगवाया था।

अफगानिस्तानके अहमद शाह अब्दालीसे शाह मुरादके बापका अच्छा संबंध था। सुन्नी होनेसे वह शाह मुरादकी सहायता करनेके लिये कुछ करना पुण्यकी बात समझता था। इस समय अहमदशाह अब्दालीका पुत्र तेमूरशाह काबुलकी गद्दीपर था। उसने लश्करीशाहके साथ एक सेना शाह मुरादकी सहायताके लिये भेजी। लश्करीशाहका पुत्र खंजर खां मेर्वके राज्यपालकी बहिनके प्रेममें फंस गया। हुसेन खांने उसे पकड़कर घायल किया, और वह उसी घावसे मर गया। फिर उसने अपनी बहिनको भी मरवा दिया। लश्करीशाह दो हजार परिवारोंके साथ अपनी सेना ले हिरात लौट गया। हुसेनने दूत भेजकर बुखारासे शांति-भिक्षा मांगी, और बादमें स्वयं बुखारा गया। उसे चहारबागमें बड़ी अच्छी तरह ठहराया गया। उसके बाद उसका भाई मुहम्मद करीम खां भी मशहदसे शाह मुरादके

दरबारमें गया। करीम खाके परिवार तथा मेर्वसे लाये सत्रह हजार परिवारोंमेंसे बहुतोंको हुसेन खां, लौटा ले जानेमे सफल हुआ। अन्तमें मेर्वके तीन हजार सुन्नी और दो हजार शीया-परिवार बुखारामें रह गये। शाह मुरादकी उस चोटके बाद मेर्व तब तक नही सभल सका, जब तक कि बोल्शेविक-क्रातिने उसे एक आधुनिक ढगके उद्योगप्रधान नगरमे परिणत नही कर दिया।

१७५१-५२ ई०से ही वक्षु (आमू-दरिया) के दक्षिणवाले इलाकेके स्वामी अफगान बन गये—यह वही इलाका है, जहा बलख, कुदुज जैसे महत्त्वपूर्ण नगर है, और जिसे पहले वाह्लीक, फिर दक्षिण तुखारदेश कहा जाता था और १८ वी सदीसे आजतक जहा के रहनेवाले अधिकतर उज्बेक हैं। शाह मुरादके बापने अपनी निर्बलताके कारण इस इलाकेको अफगानोके हाथमे दिया, लेकिन शाह मुरादको यह पसद नही था। अहमदशाह अब्दालीका पुत्र शाह तेमूर १७८६ ई०मे सिधके अभियानमे फसा हुआ था। इसी समय उज्बेक सरदारोंने लोगोंको भड़काकर बलख और अक्सीमे विद्रोह कर दिया। शाह मुरादने भी सहायताके लिये सेना भेजी और इस इलाकेसे अफगान हाकिमोंको मार भगाया गया। तेमूर अब्दालीने शाह मुरादको सख्त पत्र लिखकर कहा—"बाहरसे नम्रता दिखलाते हुये तुम इस तरह आक्रमण करते हो? मेर्वमे हमसे यह कहकर सहायता ली, कि हम शीयोंको सच्चे धर्ममे लायेंगे, और कहा था, कि मेर्वके शीयोंको असली मुसलमान बनानेकी जिम्मेवारी हम ले लेगें और इस प्रकार हिन्दुस्तानको हिन्दुओं, यहूदियों, ईसाइयों और दूसरे काफिरोंसे मुक्त करनेके लिये अफगान स्वतत्र रहेंगे। लेकिन, तुमने शहरसब्ज, खोजन्दके सुन्नियोंको तग किया। अब हम तुर्किस्तानके लिये कूच करनेका निश्चय कर चुके है। हिम्मत हो, तो तुम मैदानमें आओ।

तेमूरशाह अब्दाली १७८९ ई०मे एक लाख सेनाके साथ काबुलसे रवाना हुआ। हिन्दूकुश पार हो पहले उसने कुदुजपर अधिकार किया। फिर अक्सी गया। शाह मुराद भी तीस हजार सेनाके साथ किलिफमें वक्षु पार हुआ। लेकिन तेमूरशाहकी सेनाके सामने अपनी शक्तिको निर्बल देखकर उसने नम्रताकी नीतिसे काम लेना चाहा। मुल्ला बीचमे पड़े और उन्होंने कहा, कि दो सुन्नी बादशाहोंको आपसमे लड़कर अपनी शक्तिको बरबाद नही करना चाहिये। शाह मुरादने अपने पुत्रको तेमूरके डेरेमे भेजा और किसी तरह तेमूरशाहकी मृत्यु तकके लिये शाति स्थापित हो गई।

१७९६ ई०मे तुर्कमान सरदार आगा मुहम्मदने मशहदको नादिरशाहके पौत्र अंधे शाहरुखसे छीन लिया। काजार-वशका—जिसने ईरानपर २० वी सदीके प्रथमपाद तक शासन किया—वास्तविक सस्थापक आगा मुहम्मद था। यह हिजड़ा था। मशहदसे वचित हो जानेपर शाहरुखका बड़ा बेटा नादिर काबुल-दरबारमे गया और उसने अपने भाइयों तथा सरदारोंको मदद मांगनेके लिये बुखारा भेजा। अबुलफैजने अस्त्राखानीकी लड़कीके सबध और रहीमपर दिखलाई अपनी दया, तथा सुन्नी धर्मके नामपर सेना मागी। उसने शाह मुरादसे यह भी कहा, कि सफलता प्राप्त करनेपर हम बुखाराके अमीरके नामका खुतबा पढ़वायेंगे। १२ मार्च तक प्रतीक्षा करके कोई सफलता न देखकर वह हिरातकी ओर लौटे। नदीमें धोखेसे डुबानेके लिये पुरानी नावपर चढ़ाया गया था, लेकिन राजकुमार किसी तरह नदी तैरकर चारजूइ पहुच गये। असफल होनेपर ख्वारेज्मके एल्बर्स खानके पौत्र तूरा कजाकको नादिरके दामादके मारनेका बदला लेनेके लिये भेजा गया। तुरा कजाक चारजूइके हाकिमके घर ठहरा। बात खुल गई, तो उसने बहुत गिडगिड़ाकर कहा, कि हम सुन्नी हैं, और तुम्हारे मेहमान है। लेकिन उनको क्षमा न करके तुरा कजाकने नादिरशाही राजकुमारोंको मार डाला।

अबुलगाजीके जीवन भर उसीके नामका खुतबा और सिक्का बुखारामें जारी रहा। शाह मुरादने खानकी गद्दीपर बैठ अपनेको केवल "नवाब" या "वली-निअम" ही बनाकर रक्खा। शाह मुराद बड़े ही नाटकीय ढंगसे अपने त्याग और तपस्याको दिखलाता था। दरबारमें कितने ही बकरीके छाले रक्खे रहते थे, वह उन्हींमेंसे किसीपर बैठ जाता और अपनेको दूसरोंसे बड़ा नहीं समझता था। छोटे-से-छोटे कामोंको भी वह अपने हाथसे करनेमें नहीं हिचकिचाता था। उसके रसोईघरमें एक लकड़ीका कटोरा, एक लोहे की कड़ाही और कुछ मिट्टीके वर्तन थे। वह स्वयं बाजारसे चीजें खरीद लाता और अपने हाथसे खाना पकाता। मेहमानोंका हाथ धुलानेके लिये स्वयं पानी डालता

और उनके जूठे कटोरोंमे खाता। एक बहुत सस्ते गदहेपर बिना चारजामाके ही बैठकर बुखाराके बाजारोंमें चलता। वह अपनेको फकीर कहता था। अपने खर्चके लिये राजकोषसे प्रतिदिन एक तका लेता। अपने बावर्ची, चाकर और मुल्लाके लिये भी एक-एक तंका देता। बीबी शाही खानदान की थी, इसलिये उसे प्रतिदिन तीन तका दे, ऊपरसे शिक्षा देता—"खातून थोडेसे सतोष करो, जिसमे कि अल्ला तुमपर संतुष्ट हो।" लेकिन जब खातूनको पुत्र पैदा हुआ, तो खुश होकर मां-बेटेके लिये पांच तिला (अशर्फी) प्रतिदिन देने लगा। दूसरे दो पुत्रोंके पैदा होनेपर उतना ही और देता रहा। इस प्रकार अपने परिवारको यद्यपि उसने सुखपूर्वक रक्खा, लेकिन स्वयं एक बिल्कुल बिना सजाई छोटी-सी कोठरीमे रहता, जहांपर हर वर्गके आदमी उसके पास हर हमय जा सकते थे। फकीरोंकी तरह उसकी पोशाक बडी मोटी-झोटी होती। न्यायालयमे उसने चालीस मुल्ला रक्खे थे, जिनका अध्यक्ष स्वय था। डाका डालनेके अपराधके लिये मृत्युदड, चोरीके लिये हाथ काटना, शराबीको खुलेआम कोडे लगाना, तमाकू पीनेके लिये भी कडी सजा होती थी। लोगोंको नमाजमे भेजनेके लिये पुलिस डडा लिये तैयार रहती। विद्यार्थियोंको राजकोषसे खर्च मिलता, जिससे बुखारा-के मदरसोंमें एक समय तीस हजार विद्यार्थी रहते थे। विदेशी मालपर छोड़कर और किसी तरहका शुल्क नही था। गैर-मुस्लिमोंसे इस्लामी शरीयतके अनुसार जजिया ली जाती थी, और सिपाही शीयोंको लूटकर जो माल लाते, उसका पचमांश शाही खजानेमे देते।

उज्बेक उसे सचमुच ही अल्लाका वली मानते। जब वह जहादियोंकी सेना लेकर खुरासानपर लूटके लिये जाते, तो भारी रसदके सामानको कई मँजिल पीछे छोड देते, हरावलमें केवल सवार-सैनिक होते। गाजियोंकी सेना इलाकेमे छा जाती, और लूटमार तथा लोगोंको बंदी बनानेका काम शुरू कर देती। हरएक जहादी (धर्मयोद्धा) को अपने और अपने घोड़ेके लिये सात दिनका आहार साथ ले जाना पड़ता। अभ्यासके साथ शाह मुरादके मुजाहिद (धर्मयोद्धा) इतने अभ्यस्त हो गये थे, कि बे-रोक-टोक एकाएक किसी किले, प्राकारबद्ध गांव, नगर या काफिलेपर टूट पड़ते। बंदी बनाये हुये आदमियोंके लिये मुक्ति-धन मांगते, जिसके न मिलनेपर उन्हे दास बनाकर बेचँ देते। शाह मुराद ईरानियोंके विरुद्ध धर्म-युद्धोंमे स्वय अपने आदमियोंके आगे-आगे रहता। फकीरोंकी पोशाक पहने एक छोटे-से टट्टूपर बैठा वह गाजियोंका संचालन करता। उसके अनुशासन बड़े कडे थे। नमाज, रोजा आदि धार्मिक कर्त्तव्योंकी बडी कड़ाईसे पालन कराता। सभी इस्लामी देशोमें "रईस शरीयत" (धर्माधिकारी) पदको उठे बहुत दिन हो गये थे, लेकिन शाह मुरादने बुखारामे फिरसे इस पदकी स्थापना की। चोरों और वेश्याओंको वह सीधे जल्लादके हाथमें दे देता, लेकिन इन सारी धार्मिक कडाइयोंका परिणाम बुखारावालोंके लिये उलटा ही पड़ा।

चिन्नरनके सरदार मएश खानने शाह मुरादके बहनोई तथा जीजकके हाकिम ईशान मखदूम-पुत्र ईशान नकीबके नाम चिट्ठी देकर दूत भेजा। दूतने अपने कामका इस प्रकार वर्णन लिखा है—"मुझे ईशान नकीबके सामने पेश किया गया। वह एक बड़े ही सुदर तम्बूके दूसरे छोरपर बैठा था। अभी हमे बैठे देर नही हुई थी, कि एक अफसर तम्बूमे आया और उसने ईशान नकीबको कहा, कि बेगीजान (शाह मुराद) की इच्छा है, कि आप अपने मेहमानके साथ आवें।... हम खड़े हो गये और अपने-अपने घोड़ोंपर चढ़कर ईशान नकीबके साथ चले। कुछ दूर जानेके बाद हमें एक बांसका तम्बू मिला, जिसकी शकल-सूरत और फटी हालतको देखकर मैंने समझा, कि किसी बावर्ची या भिस्तीका तम्बू होगा। एक बूढ़ा आदमी धूपसे बचनेके लिये उसीकी छायामें घासपर बैठा हुआ था। सब घोडेसे उतर पडे और हरे तथा अत्यन्त गदे कपड़े पहने हुये बूढ़े आदमीकी तरफ बढे। उसके पास जाकर खड़े हो सबने अपने दोनो हाथोंको छातीपर रखकर आदरके साथ सलाम किया। उसने हरएक आदमीको सलामका जवाब दिया, और अपने सामने बैठनेके लिये कहा। वह ईशान नकीबके लिये बहुत मेहरबानी दिखलाता मालूम होता था, और उसे अपनी बातचीतमें उतखुर सूफीके नामसे सबोधित करता था।....मैंने अपना पत्र ईशान नकीबके हाथमें दिया। उसने उसे हरे कपड़ेवाले बूढ़ेके हाथमें थमा दिया, जिसके बारेमे अब मुझे पता लगा, कि वह बेगीजान (शाह मुराद) है। उसने चिट्ठीको खोलकर पढ़ा और फिर अपनी जेबमें डाल लिया।

...हमारी बातचीत होने लगी। इसी बीच बहुत-से दरबारी अमीर आये और मैं उनके असाधारण भड़कीले, तथा मूल्यवान् हथियारों तथा पोशाकको देखता रहा। .....उनके आनेके थोड़ी देर बाद उनका सरदार (शाह मुराद) एक गहरे ध्यानमें डूब गया और जब तक कि शामके नमाजकी घोषणा नही हुई, तब तक वह उसी ध्यानमे लीन रहा। दूसरे दिन बिदाईकी बात होते समय उसका रसोइया कमजोर आंखोंवाला एक नाटा आदमी तम्बूके भीतर आया। बेगीजानने कहा—"क्यों नहीं तुम खानेका प्रबंध करते हो? जल्दी ही नमाजका समय होनेवाला है।" नाटा रसोइया तुरन्त एक बड़ा काला बर्तन लाया और पत्थरोंको रखकर चूल्हा बना उसने चार-पांच तरहके अनाज और थोड़ासा सूखा मांस डालकर उसे चूल्हेपर चढ़ा बर्तनको पानीसे गले तक भरकर, आग जला उसे पकनेके लिये रख दिया। फिर वह तश्तरियां ठीक करने लगा। यह लकड़ीकी तश्तरियां वैसी ही थीं, जैसी कि अत्यन्त गरीब लोग इस्तेमाल करते है। उसने तीन तश्तरी रखकर पकी हुई चीजको उसमें उड़ेल दिया। बेगीजान रसोइयेकी ओर नजर लगाये हुये था। उसकी नजर के सकेतसे रसोइया जानता था, कि कितना कमबेसी तश्तरीमें डालना चाहिये। जब सब ठीक हो गया। उसने एक गंदे कपड़ेको लेकर फैला दिया, फिर उसके ऊपर एक पुरानी जौकी रोटीका टुकड़ा रख दिया, अल्ला ही जानता होगा, कि हिजरीके कौनसे सनमें उसे पकाया गया था। बेगीजान ने रोटीको पानीके प्यालेमे भिगोया। पहली तश्तरी उज्बेकोंके शासक (शाह मुराद) को दी गई, दूसरी तश्तरी मेरे और ईशान नकीबके बीचमें रक्खी गई, और तीसरीको रसोइया ले अपने स्वामीके सामने खानेके लिये बैठ गया। मै पहले ही खा चुका था, इसलिये अपने सामने रखी चीजको सिर्फ चख भर लिया। बड़ी ही दुस्स्वादु थी, गोस्त तो करीब-करीब सडा हुआ था, लेकिन तो भी भीतर आये बहुत-से अमीरोंने हमारे छोडे हुये खानेको खाकर खतम कर दिया, उनके देखनेसे मालूम होता था, कि वह भोजन उन्हे बहुत पसद आया, लेकिन शायद वह अपने पवित्र नेताको प्रसन्न करनेके लिये ही ऐसा कर रहे थे।

४. हैदर, शाह मुराद-पुत्र (१७९९-१८२६ ई०)

अब हम उस समयमें आ गये, जब कि अग्रेज कंपनीका शासन भारतमें दृढ़ता पूर्वक स्थापित हो चुका था और १९ वीं सदीका आरम्भ होनेवाला था। शाह मुरादने रहीम खानकी विधवा तथा अस्त्राखानी अबुलफैजकी लड़की शैम्सबानू आयमसे ब्याह किया था। इसीसे शाह मुरादका सबसे बड़ा बेटा हैदर तुरा (कुमार हैदर) पैदा हुआ। मुरादके मरनेपर तख्तके लिये उमर बी, फाजिल बी, महमूद बीके बीच झगड़ा हुआ, लेकिन नागरिक अपने औलिया फकीर बादशाहके अंधभक्त थे, वह क्यों चाहने लगे, कि तख्तसे औलियाके बेटेको वचित करके चचा शासन करें। बुखारावाले उमरके लोगोंपर टूट पड़े। उमर किसी तरह जान लेकर भागा, लेकिन लोगोंने उसके घरको लूट लिया, बीबी-बच्चोंको कपड़ा छीन नंगा करके छोड़ दिया। शाह मुरादकी ल.श तीन दिनसे महलमे पड़ी हुई थी। हैदर बड़ी तड़क-भड़कवाले अनुचरोंके साथ गद्दीपर बैठा। पीछे बच्चों सहित उमर बी और फाजिल बी भी पकड़कर मार डाले गये। महमूद बी भागकर खोकन्द चला गया। अभी सिंहासनपर बैठे देर नहीं हुई थी, कि भाई मुहम्मद हुसेनपर भी षड्यंत्रमें शामिल होनेका संदेह हुआ। इसपर समरकन्द छीनकर ईरानी दौलतकुश बेगीको वहांका हाकिम बना, भाईको पेंशन दे नजरबन्द कर दिया। इसके बाद हैदरकी निगाह मेर्वके हाकिम हाजी मुहम्मद खां तथा उसके संबंधी करीम खां और बहरामअली खांपर पड़ी, और इन बारह राजकुमारोंको पकड़कर भेड़-बकरियों की तरह मरवा डाला। उनकी बीबियों और बच्चोंको भेंटके रूपमें लोगोंमें बांट दिया। किस कसूरपर उन्हें यह दंड मिला, इसे कोई नहीं जानता। हैदरकी हत्याओंसे डरकर उसका भाई नासिरुद्दीन परिवार-सहित मेर्वसे मशहद भाग गया।

अब हैदरने अपनी दिग्विजयोंको शुरू किया। १८०४ ई०तक उरातिप्पा, खोजन्द और ताशकन्दको उसने ले लिया। इसी साल हैदरने अपना दूत रूसी जारके पास पीतरबुर्ग भेजा, जो मास्को, अस्त्राखान, खीवा और उरगंजके रास्ते लौटा। खीवाके खान इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें आकर

लूट-मार की, जिसपर नियाज बीके नेतृत्वमे तीस हजार बुखारी-सेनाने जाकर इल्तजारको हराया, और वक्षु पार हो जान बचानेके प्रयत्नमें डूबकर इल्तजारने अपने प्राण खोये। लूटके मालमें खीवावालोंका बहुत-सा खजाना बुखारियोंके हाथमे आया, जिसके साथ एक तुर्क (घोड़ेकी पूंछ वाला) झंडा भी था। सेना बंदियोंके साथ लूटका माल लिये बुखारा लौटी । हैदरने हथियार छीनकर बंदियोंको छोड़ दिया और अफसरोंको खलअत भी दी। इल्बर्सकी जगहपर उसके भाई कुतलीमुराद बेकको ईनककी पदवी देकर हैदरने खीवाका हाकिम नियुक्त किया, लेकिन वहां पहुंचनेसे पहले ही उसके छोटे भाईको लोग खान बना चुके थे।

हैदरने यद्यपि आरम्भमें अपने संबंधियों, और जिससे भी खतरेका डर मालूम हुआ, उसे बुरी तरहसे मारा और बरबाद किया, किन्तु पीछेके जीवनमे वह नरम स्वभावका, उदार, न्यायप्रिय आदमी बन गया। उसकी भी इस्लाम-भक्ति बापकी तरह धर्मान्धता तक पहुच गई थी। यद्यपि बापके इतना नही, तो भी वह सादगीसे रहता था। उसके कपड़े सीधे-सादे तथा प्रायः सफेद रंगके होते थे। रोटी और सब्जी यही उसका भोजन था। अपने खर्चके लिये वह यहूदियोंपर लगाये करको इस्तेमाल करता था। उसका दरबार किसी दर्वेश या मुल्लाका दरबार था। वह मेम्बरपर खड़ा हो व्याख्यान देना बहुत पसद करता था। वह लम्बा और सुन्दर था, उसका रंग कुछ पीला लिये हुये अधिक गोरा था। मुहपर भरी हुई दाढ़ी थी। अपनेको सदाचारी दिखलानेका बहुत शौक था और इस्लामी शरीयतके अनुसार चारसे अधिक बीबियां नहीं रखता था। हां, यदि दूसरी कोई सुन्दरीको बीबी बनाना चाहता, तो एकको घर और पेंशन दे तलाक दे देता था। दासियोंकी सख्यापर शरीयतने कोई प्रतिबंध नही रक्खा है, इसलिये हर महीने कोई न कोई सुन्दरी दासी उसके हरममे दाखिल होती रहती। अपनी दासियोंकी कन्याओंको वह मुल्लाओं या सैनिकोंको प्रदान करता।

शासन-प्रबंध—बुखाराका राज्य उस समय सात तुमानोंमे बंटा हुआ था। हरएक तुमान-का हाकिम नकीम और उसका सहायक वजीर होता, जिन्हें अमीर नियुक्त करता। हर तूमानमें बहुत-से गांव होते, जिनके लिये ग्रामकी जनता अपना अक्सक्काल (श्वेत दाढ़ी) नामक ग्रामपति निर्वाचित करती। अक्सक्काल एक मर्तबे निर्वाचित होकर, यदि किसी अपराधके कारण हटाया न जाय, तो जिन्दगीभर अपने पदपर रहता, बल्कि अक्सर उसका पद पैतृक हो जाता। अक्सक्कालका काम था—आपसी झगड़े तै करना, कर उगाहना और राज्यके लिये सिपाही देना। गांवमें हर ब्याहमे कुछ भेंट और भोजमे उसे निमंत्रण मिलता, साथ ही फसलके अनाजमे भी उसका हिस्सा बधा था। जमीनपर कर दहयक (दशांश), गल्लेपर चालीसवां हिस्सा, और सौदेपर भी चालीसवां हिस्सा देना पडता। नायब नकीमके सहायक होते, जो अधिकतर मुल्ला थे। गांवोंके शासनमे उनका भी अधिकार था। धनी और प्रभावशाली उज्बेकोंको बेग या बाय कहा जाता। बुखाराके पास चालीस हजार सेना थी, जिसे आवश्यकता पड़नेपर नये रंगरूटों-का भर्ती करके बढ़ाया जा सकता था। सैनिकोंके पास भाला, ढाल-तरवारके अतिरिक्त थोड़ी संख्यामें पलीतेवाली बन्दूकें भी थीं।

वैदेशिक संबंध—१८२० ई०मे रूसका एक दूतमंडल बुखारा आया। इसका नेता नैगरी था, जिसके साथ बोरोन मेयेदोर्फ भी था। १८१६ ई० और १८२० ई०में बुखाराके दूत दो बार जारके दरबारमें जा चुके थे, उसीके जवाबमें यह रूसी दूतमंडल आया था। दूतमंडलके साथ कुछ कसाक़ सैनिक भी थे। कई सौ ऊंटोंपर रसद और सामान ले दूतमंडलने १०० अक्तूबर १८२० ई० को ओरेनबुर्ग छोड़ा। दश्त-कजाक (दश्ते किप्चक) पार हो अगतमामें पहुंचा। बुखाराकी सीमापर उसका बड़ा स्वागत हुआ। बस्तियोंमे उन्होंने बुखारियोंके बीचमें सफेद पगड़ीवाले रूसी गुलामोंको भी अपनी आंखों देखा। दूतमंडल २० दिसम्बरको बुखारा नगरमें दाखिल हुआ। वह अमीरकी भेंटके लिये अपने साथ समूरी छाल, चीनी बर्तन, बढिया कांचके बर्तन, घड़ियां और बन्दूकें लाये थे। शहरके एक दरवाजेसे सैनिक ढंगसे दाखिल हो महलके पास पहुंच रूसी घोड़ोंसे उतर पड़े। वहां करीब चार सौ सैनिक बन्दूक लिये दो पांतियोंमें खड़े थे, जिनके बीचसे

दूतमंडल आगे बढ़ा। एक महलके आगनमे तीन-चार सौ सफेद पगडीवाले बुखारी स्वागतके लिये खड़े थे। अन्तमे वह दरबार-हाल में पहुचे। खान वहां एक सुनहली किनारेवाली लाल गद्दीपर बैठा था। उसकी बाईं ओर उसके दो पुत्र थे, जिनमे बडा पद्रह सालका था, दाहिनी ओर कुशबेगी (प्रधानसेनापति) था। रूसियोंने अपना प्रमाणपत्र पेश किया। इसके बाद अमीरने कसाक सैनिकोंको देखना चाहा। जब कसाक हालमें लाये गये, तो अमीर हैदर बच्चोंकी तरह खिलखिलाकर हंसा।

बुखारामे यहूदी काफी सख्यामे रहते थे, लेकिन वह सिर्फ तीन महल्लोंमे ही बस सकते थे। अधिकतर उनमे दस्तकार, रगरेज और कुछ रेशमके व्यापारी थे। उनसे जजियाके रूपमे प्रतिवर्ष अस्सी हजार रूबल वसूल किया जाता। नगरके भीतर कोई यहूदी न घोड़ेपर चढ़कर निकल सकता था, न रेशमी पोशाक पहन सकता था। अपना परिचय देनेके लिये एक खास तरहकी चौड़ी टोपी काले मेमनेके चमडेकी पट्टी लगाकर उन्हे पहिननी पडती। वह अपने लिये नया मंदिर नही बनवा सकते थे। बुखारा और रूसका व्यापार पुराने जमानेसे चला आता था। पहले इसके लिये एक बहुत भारी मेला मकरियेफमें लगता था, जिसे १८१८ ई०मे निज्नीनवोगोरद (आधुनिक गोर्की) मे बदल दिया गया। ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमें बुखारी व्यापारके लिये जाते, जिन्हे रास्तेमे कजाक अक्सर लूट लिया करते थे। रूसियोंने अपनी यात्राका जो वर्णन लिख छोडा है, उससे मालूम होता है, कि वहां चारों तरफ लूट-खसूटका बाजार गर्म था, और कोई अपनी सम्पत्तिका दिखावा करनेसे डरता था। शौकीनी और विलासिताके जीवनका भी आकर्षण काफी था, यद्यपि बाहरसे अपनेको बडा सदाचारी दिखलाया जाता। खान अपने निजी जीवनमे किसी तरहकी पाबन्दी नही रखता था। उसको डर था, कि कही कोई विष न दे दे, इसलिये उसके खानेको पहले बावर्ची चखता, फिर कुशबेगी भी चखकर उसे ढांककर अपनी मुहर लगा देता। शहर छोड़ते समय वह पुत्रको भी छोड जाता। रूसियोंके कथनानुसार हैदरके हरममे दो प्रकारकी स्त्रियां थी, जिनमे चार ब्याही थी—हिसारी, समरकन्दखोजाकी पुत्री, अफगानके शाहजमाकी पुत्री··।

हैदरका पुत्र नसरुल्ला करशीमे रहता था। १८२६ ई० में वह बेटेके पास गया, जहांसे लौटते समय बीमार हो बुखारामें पहुच ६ अक्तूबर १८२६ ई० को मर गया।

इन दो पीढियोंमे लाठीके जोरसे लोगोंको जो सदाचारी बनानेका प्रयत्न किया गया था, उसका परिणाम अब अप्राकृतिक व्यभिचारके रूपमे बहुत बुरी तौरसे फैला। शराब और तम्बाकू वर्जित कर दिये गये थे, लेकिन उनका स्थान अब अफीम और भंगने ले लिया था।

५ हुसेन, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

पिताके मरनेपर हुसेन बुखारामे था, इसलिये वह झट गद्दीपर बैठ गया, लेकिन तीन मास बाद ही वह मर गया। फिर उसके भाई मीर उमरने गद्दी संभाली।

६. उमर, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

मीर उमरने गद्दी संभाली, लेकिन नसरुल्ला ताकमें था। उसने २४ अप्रैल १८२७ ई० को आकर बुखारा ले लिया।

७. नसरुल्ला, हैदर-पुत्र (१८२६-६० ई०)

अपने शासनके आरम्भिक कालमें नसरुल्ला नेक और न्यायप्रिय था। उसे "अमीरुल् मोमिनीन" (मुसलमानोंका अमीर), "हजरत" और "इस्लामके खलीफा (तुर्कीके सुल्तान) का धनुर्धर" कहा जाता। लेकिन पांच-छ वर्षसे अधिक वह इस जीवनको नहीं बिता सका। इसी समय १८३२ ई०के आस पास तब्रेजमे पैदा हुआ अब्दुसमद खा नामक ईरानी बुखारा दरबारमें पहुंचा। उसने जेनरल कोर्ट (एक अंग्रेज अफसर) के नीचे रहकर कुछ पश्चिमी सैनिक-विद्या सीखी थी। मुहम्मदअली

मिर्जाने उसे कुछ समय किरमानशाहका हाकिम बनाया था, जहां किसी कसूरमे उसके कान काटे गये। फिर भारत और पेशावरमे कितने ही समय रहकर वह काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मद खाकी सेवामे रहा। तब अग्रेजोंके प्रति भारी घृणा लेकर वह बुखारा पहुचा। कुशबेगी हाकिमबेग अब्दुस्समदसे बहुत प्रसन्न हुआ, और उसे अपना नायब बना सेनाको फिरसे सगठित करनेके काममे लगा दिया। अब्दुस्समद बुखारामे अग्रेजोंकी कोई बात चलने नही देता था।

उबेज्क कहावतके अनुसार "राजा उस युगका दर्पण होता है" मान लिया जाय, तो नसरुल्लाके रूपमे बुखारा दुराचार और अत्याचारमे अपनी पराकाष्ठामे पहुचा था। नसरुल्ला हैदरका पुत्र था, लेकिन अपनी कुटिल नीतिमे अपने दूसरे भाइयोंसे कही आगे बढ़ा हुआ था। कुशबेगी (सेनापति) हाकिम बी और ससुर आयाज तोपची बाशी (तोपखानाका जेनरल अयाज) उसके पक्षमे थे। जब हैदरके मरनेपर बड़ा भाई हुसेनखा गद्दीपर बैठा, तो नसरुल्लाने अपनी बड़ी गर्मा-गर्म वफादारी दिखलाई, लेकिन साथ ही करशीसे वह आगेके लिये तैयारी भी करता रहा, जिसमे उसका प्रधान-सहायक मीर अमीन बेग दादखा था। तीन ही महीनेके शासनके बाद भाई मर गया—कहा जाता है कुशबेगीने उसे जहर दे दिया। करशीके प्रधान काजीने नसरुल्लाके पक्षमे अपना फैसला दे समरकन्दके काजीको भी वैसा ही करनेके लिये कहा, लेकिन इसी बीच दूसरे भाई उमरखाने बुखारापर अधिकारकर समरकद को किसी हालतमे भी न देनेके लिये हुक्म दिया। लेकिन नसरुल्लाके आनेपर दरवाजा खोल दिया गया, क्योंकि समरकन्दके मुल्ला उसके पक्षमे थे। कोकताश (नील-पाषाण) के ऊपर तेमूरके जमानेसे ही गद्दी देनेकी रसम पूरी की जाती थी। वही नसरुल्लाके सिरपर ताज रक्खा गया। कत्ताकुर्गान, करमीना आदि नगरोंने उसका शासन स्वीकार किया, फिर बुखाराको उसने घेर लिया। घेरावेके कारण लोगोंकी हालत बुरी हो गई। आध सेर मास चांदीके सात तकेमे बिकने लगा। बाहरसे कोई खानेकी चीज आने नही पाती थी। उन्हे लोग लाशोंके साथ जनाजेमे छिपाकर लाते। नहरके पानीमे भी असह्य सड़ाद आने लगी थी। भीतरसे कुशबेगी और ससुर अयाज नसरुल्लाके पक्षमे थे ही। उनको बहाना मिल गया। बड़ी तोपको दागकर फोड़ दिया गया था। नसरुल्लाने २२ मार्च १८२६ ई०को दो तरफसे शहरपर आक्रमण कर दिया। चारों ओर विश्वासघात देखकर उमर जान लेकर भाग गया, लेकिन उसके तीन भाइयों और बहुत-से अनुयायियोंको पकडकर नसरुल्लाने मरवा डाला। अमनेको काफी मजबूत कर लेनेपर अपने सहायक कुशबेगीको पहले करशी और फिर समरकन्दमे निर्वासित कर दिया। अपने ससुर तोपची बाशीको बुलाकर सुन्दर घोड़ेपर सवार कर समरकन्दका हाकिम बनाकर भेजा, लेकिन तुरन्त ही बुखारा लौटनेका हुक्म देकर उसे जेलमे कुशबेगीके साथ बन्द कर दिया। फिर जिनके विश्वासघातके बलपर उसे गद्दी मिली थी, उन दोनोंको उसने १८४० ई०में कत्ल करवा दिया। सैनिक अफसरोंमेसे भी उसने चुन-चुनकर बिना मुकदमा किये कितनोंको मरवाया और कितनोंको निर्वासित कर दिया। अन्तमे मुल्लोंके ऊपर पड़ा और उन्हे हर तरहसे दबाकर शरीयतकी जगह अपने हुक्मको सर्वोपरि बनाया।

कुशबेगी तोपची बाशीको १८४० ई०के वसतमे मरवानेके बाद अब नसरुल्लाके सामने कोई बाधा देनेवाला नही रह गया। तुर्कमान रहीमवर्दी माजूमको हथियार बनाकर वह अपना काम लेता था। किसी समकालीन लेखकने उसके शासनके बारेमे लिखा है—"नमाज पढ़नेके लिये लोगोंको डडोंसे पीटा जाता, सिपाही जबह किये जाते या जान बचाकर भागनेके लिये मजबूर होते।"

लेकिन कुशबेगी और तोपची बाशीके मरनेसे पहले ही १८३९ ई०मे माजूम तुर्कमानका समय बीत चुका था। अब सभी पदोंको अमीरने अपने हाथमें रखना चाहा। वजीरके लिये कोई चाहिये, तो वह अपने प्रिय छोकरोंमेसे किसीको तीन-चार सालके लिये बैठा देता, उसके बाद फिर किसी दूसरेको लाता—हटाते वक्त उनके सारे धनको छीन लेता।

ऐसे अत्याचारी, क्रूर और पतित आदमीको सब जगहसे भय होना जरूरी था। इसके लिये उसने नगर, बाजारों, मदरसों, मस्जिदों, हम्मामोंको अपने गुप्तचरोंसे भर रक्खा था।

पिशागरमे किलेको न ढानेसे नाराज होकर वह खोजन्दके खान बेगलर बेकके विरुद्ध

चढ़ा। तीन सौ सरबाजों और नायब समदकी ढाली कुछ तोपोंके साथ जा अगस्त १८४० ई० में खोकन्दियोंको हराया। १८४१ ई०की शरद्‌मे खोकन्दियोंकी लूट-मारका बदला लेनेके लिये वह फिर हजार सरबाजों (सिपाहियों), ग्यारह तोपों और दो मारतोलोंके साथ गया। २१ सितम्बर को याम, और २७ को जमीनपर अधिकारकर वह उरातिप्पाको लूटते ८ अक्तूबरको खोजन्द नगरमें दाखिल हुआ। खोकन्दके खानने मजबूर होकर सुलह की और भारी हर्जानेके साथ खोजन्द तकका प्रदेश नसरुल्लाको देकर नसरुल्लासे सुलह की, साथ ही अधीनता स्वीकार करते उसके नामका खुतबा और सिक्का चलाया। नसरुल्ला खोकन्दके खानके भाई तथा प्रतिद्वंद्वी सुल्तान महमूदको खोजन्दका हाकिम बनाकर बुखारा लौट गया। लेकिन उसके लौटते ही सुल्तान महमूदने अपने भाईसे मेल कर लिया। जब इसकी खबर नसरुल्लाको लगी, तो वह फिर दंड देनेके लिये आया, और २ अप्रैल १८४२ ई०को खोजन्दको हाथमें करके राजधानी खोकन्दको भी आसानीसे सर कर लिया। खोकन्दी खान मदली दस दिन बाद मर्गिलानमे पकड़ा गया, और अपनी खास माके साथ व्यभिचार करनेका अपराध लगाकर उसे, उसके भाई, स्त्री तथा दो पुत्रोंके साथ मरवा डाला गया—मदलीकी गर्भिणी स्त्रीके भी प्राणोंको नहीं छोड़ा गया।

अंग्रेजोंकी चालें—१७ वीं सदीमें पीतर I के समयसे ही रूसने बुखाराके साथ अपना संबंध स्थापित किया था, और तबसे जब-तब दूतमंडल आते-जाते रहे। १८३४ ई०में डाक्टर देमेसोन मुल्ला बनकर बुखारा गया। १८३५ ई०मे वित्कोविच कजाकका भेष बनाकर पहुंचा। १८ वीं सदीमे ही पहला अंग्रेज कप्तान बार्निस बुखारा गया। ओरेनबुर्ग बुखारी व्यापारियोंके लिये एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जिसके जरिये १९वी सदीके पूर्वार्धसे रूस और बुखारामे व्यापार होने लगा था। उस समय खीवावालोंसे रूसका सबंध जितना बिगड़ा हुआ था, उतना बुखारियोंसे नहीं। १८३४ ई०मे ओरेनबुर्गके राज्यपालने अमीर नसरुल्लाके पास पत्र लिखकर शिकायत की, कि खीवावाले रूसियोंके साथ बुरा बर्ताव करते है, और उन्होंने कितने ही रूसियोंको दास बना रक्खा है, खीवावाले रूसी प्रजा कजाकोंपर लूटमार करते है, इसीलिये जारने हुक्म दिया है, कि जबतक खीवावाले रूसी प्रजाको नही छोड़ते, तबतक खीवाके व्यापारियोंको रोक रक्खा जाय। १८३६ ई०में ही कुर्बान बेक अशुरबेक अमीर-बुखाराका वकील बनकर ओस्र्क होते पीतरबुर्ग पहुंचा।

बुखारामें अपनी कार्रवाई शुरू करनेसे पहले कितने ही सालोंसे ईरानी दरबारमें अंग्रेज और रूसी अपने दांव-पेंच चला रहे थे। अंग्रेजी राजदूतने बुखारासे संबंध पैदा करनेके लिये १८३८ ई०में कर्नल स्टोडर्टको भेजा। इसी समय बुखाराके दूतमंडलने बीस आदमियोंके साथ एक हाथी, कश्मीरी शाल और कुछ रूसी बन्दियोंको छुड़ाकर साथ लिये ओस्र्क होते हुये पीतरबुर्ग पहुंच जारके दरबारमें कहा—"मेरे स्वामी रूसियोंके साथ मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करना चाहते हैं। अग्रेजोंने बुखारामें अपने एजेंट भेजकर व्यापार करनेकी कोशिश की है। रनजीतसिंहके खतरेसे परेशान हो काबुलके अमीरने भी हमारे मालिकसे संधि करनेका प्रस्ताव किया है।"

इस प्रकार उसने जारकी मित्रता और सदिच्छा प्राप्त करनेकी कोशिश करते हुये सोना तथा दूसरे मूल्यवान् धातुओंका पता लगानेके लिये अपने यहां एक इंजीनियर अफसरको भेजनेके लिये प्रार्थना की। बुखाराके राजदूतको लौटते वक्त जारकी ओरसे बहुत-सी भेंट मिली। अप्रैल १८३९ ई०में अमीरके बुलावेके अनुसार धातु-इंजीनियर कप्तान कोवालेव्स्की और कप्तान हेर्नगियोस, एक दुभाषिया, एक मुख्य खनक, चार कसाक सैनिकों तथा कुछ और आदमियोंके साथ बुखाराकी ओर रवाना हुये। उनको यह भी भार दिया गया था, कि अमीरसे बुखारामें एक रूसी कोंसल रखनेके लिये बातचीत करे। यद्यपि अभी पंजाबपर रणजीतसिंहका अधिकार था, लेकिन सिंध अंग्रेजोंके हाथमे था, जहांसे वह काबुलमें अपने प्रभावको बढ़ानेकी कोशिश कर रहे थे। रूस भी वहां अपने प्रभावको बढ़ाना चाहता था। इस प्रकार अफगानिस्तानमें दोनों साम्राज्योंकी जोरकी प्रतिद्वंद्विता चल रही थी। दिसम्बर १८३७ ई० में वित्कोविच काबुल पहुंचा। अंग्रेजोंके मनमें संदेह बैठ गया, कि अमीर दोस्त मुहम्मदको रूसियोंने अपनी ओर मिला लिया है। अंग्रेजोंने दोस्त मुहम्मदके विरुद्ध उसके प्रतिद्वंद्वी शाह शुजाकी पीठ ठोंकी, और रणजीतसिंहको भी

काबुल तक चढ़ दौडनेके लिये उभाडा। इतनेसे भी संतुष्ट न हो काबुलसे रूसियोंके प्रभावको बिल्कुल खतम करनेके लिये १८३९ ई०के वसतमे अग्रेजी सेना अफगानिस्तानकी सीमामें दाखिल हुई, और ७ अगस्तको काबुलमे पहुंचकर शाह शुजाको गद्दीपर बैठानेमे सफल हुई। दोस्त मुहम्मद अपने परिवार तथा तीन सौ पचास परिचारकोंके साथ भागकर बुखारामे नसरुल्लाके पास चला गया। नसरुल्लाने पहले उसका बडा स्वागत किया, लेकिन जब उस पतितने दोस्त मुहम्मदके सुन्दर पुत्र सुल्तान जानको अपनी कामुकताका शिकार बनाया, तो मनमुटाव हो गया। अब नसरुल्ला अंग्रेजोंसे मेल करना चाहता था, और शाह शुजासे भी मिलकर उसके भाई तथा अपने मेहमान दोस्त मुहम्मदको खतम करना चाहता था। इसपर दोस्त मुहम्मदकी ओरसे ईरानके शाहने धमकी दी, जिसके डरके मारे नसरुल्लाने दोस्त मुहम्मदको मक्का जानेकी इजाजत दे दी, साथ ही चुपके-चुपके मल्लाहोंको भी हुक्म दे दिया, कि वक्षुमे नावको डुबा देना। इसकी खबर पहले ही लग गई, इसलिये स्त्री-भेसमे दोस्त मुहम्मद पहले शहरसब्ज फिर खुल्म और अन्तमें काबुल लौट गया।

कर्नल स्टोडर्ट हिरातके हाकिमके परिचय-पत्रके साथ रमजानके आरम्भ होनेसे दो दिन पहले बुखारा पहुंचा। अफगानोंसे अच्छा सबध न होनेके कारण पत्रने सदेहको और बढ़ानेका काम किया। कर्नलको पैदल जाकर रेगिस्तान नामक मैदानमे अमीरसे भेट करनेके लिये कहा गया, लेकिन उसने घोड़ेपर चढ़कर जानेकी जिद्द की। बुखारामें मुसलमान छोड़कर कोई घोड़ेपर चढ़कर निकल नही सकता था, फिर इस ईसाईको कैसे वैसे करने दिया जाता? और रेगिस्तानके मैदानमे तो सिर्फ अमीर ही घोड़ेकी सवारी कर सकता था। कर्नल घोड़ेपर चढकर वहां पहुंचा और अमीरके आनेपर भी उसने घोड़ेपर चढे ही सैनिक सलाम दिया। अमीरने इसे अपना अपमान समझा। उसे महलमें बुलाया गया। प्रतिहारने "अर्ज बंदेगान" (सेवकोंका निवेदन) जब कहा, तो कर्नलने इसका भी विरोध करते कहा: "परमभट्टारक" सिर्फ भगवान्‌के लिये कहा जाता है। "आपका अत्यन्त नम्र सेवक" कहनेपर भी उसने आपत्ति की। दरबारी प्रथाके अनुसार दो आदमियोंको बगलमे सहारा देकर चलनेसे भी इन्कार कर दिया। जब हथियारकी पड़ताल करनेकी रसम अदा करनेके लिये दरबारी अफसर आये, तो उन्हें भी कर्नलने मुक्का मारकर गिरा दिया। चुपचाप अर्ज करनेकी जगह स्टोडर्टने बड़े ऊचे स्वरसे फारसी भाषामें भगवान्‌के लिये प्रार्थना करनी शुरू की। अमीर उस समय अपने तख्तपर बैठा इस ढीठ विदेशीके प्रति अपार घृणासे जलता-भुनता दाढ़ीपर हाथ फेर रहा था। अमीरने प्रमाणपत्र मांगा, तो उसने अग्रेज राजदूत जान मेकनेलका पत्र दिया, जिसमें रूसियोंके भीतर न आने देनेपर ईस्ट इडिया कंपनीकी ओरसे सहायतार्थ धन देनेका वचन दिया गया था। अमीरने उत्तरमें कहा—"बहुत खूब, मै जानता हूं, तुम लोग मुझे अपना गुलाम बनाना चाहते हो। बहुत अच्छा, मै तुम्हारी खिदमत करूगा;" और उठकर चला गया

इसके दो दिन बाद कर्नलको वजीरके घरमें बुलवा कुछ आदमियोंने पकड़कर उसके हाथ-पैर बांध दिये, फिर वजीरने उसकी गर्दनपर तलवार रखकर कहा—"अभागे भेदिया, काफिर कुत्ते, तू अपने अंग्रेज-स्वामियोंकी ओरसे आकर बुखाराको भी उसी तरह खरीदना चाहता है, जैसे कि काबुलको खरीदा? लेकिन यहां तुम सफल नही हो सकते। मै तुझे मार डालूंगा।" इसके बाद वजीरके आदमी अमीरके समूरी चोंगेके साथ लाशकी तरह स्टोडर्टको लिये शहरकी सुनसान सड़कोंमेंसे गुजरे, और उन्होंने एक अंधेरे घरमें उसे ले जाकर बन्द कर दिया। नौकर साथमे रोशनी लिये थे। उनकी आंखें भर खुली थीं। "यदि ऐसा ही करना था, तो मुझे बुखारा न आने देना चाहिये था, अब मुझे जाने दो" —कर्नलने मीरशब (कोतवाल) से जब यह कहा, तो उसने इतना ही जवाब दिया, कि मैं अमीरसे कहूंगा। कर्नलके सारे कागजोंको लेकर उसके सामने जला दिया गया। उसके घोड़ेको भी बेंच दिया गया। इसके बाद उसे स्याहचाह (अंधकूप) नामक एक उन्नीस फुट गहरे गंदे गड्ढेमें रस्सीके सहारे डाल दिया गया। इसी कुएंमें दो चोर और एक हत्यारा भी बन्द थे। कुएंमें छिपकलियां, खटमल, पिस्सू भरे हुये थे। उसमें स्टोअर्ट दो महीने रहा। खानेके लिये रस्सीसे रोटियां लटका दी जाती थीं। इसके बाद उसे निकालकर कहा गया, कि अगर जान

बचाना चाहता है, तो मुसलमान हो जा। अक्खड़ कर्नलने अपने सारे गर्व और अभिमानको ताकपर रखकर भारी भीड़के सामने कलमा पढ़ा और एक चौरस्तेपर ले जाकर उसका खतना किया गया।

रूसियोंने कर्नलको मुक्त करानेकी बड़ी कोशिश की। अफगानिस्तानमें जब अंग्रेजोंकी सफलता हुई, तो कर्नलने हिम्मत करके इस्लामको छोड दिया, और अमीरसे भी कहा, कि तुम्हें अपनी भलाईके लिये मुझे अपने पास रखना चाहिये, जैसा कि रणजीतसिंहने कितने ही अंग्रेजोंको अपने पास रक्खा है। अमीरकी ओरसे कर्नलको कहा गया, कि रूसी दूतमंडलके साथ तुम पीतरबुर्ग चले जाओ, लेकिन उस बेवकूफने जानेसे इन्कार करते हुए कहा कि हमारी सरकारका हुक्म है, कि मै बुखारासे न जाऊं। इससे संदेह और बढ़ गया। इसी समय कर्नलने कुछ पत्र लिखकर खुरासानियों, कुर्दों, ईरानियों और यहूदियोंके हाथ भेजे। इसके बाद फिर उसे बन्दीखानेमें बन्द कर दिया गया। तुर्कीके सुल्तान, खीवाके खान और जारने भी उसे छोड़नेके लिये अमीरको बहुत लिखा। एक अंग्रेज लेखकने कर्नल स्टोडर्टके बारेमें लिखा है—"वह अपनी शिक्षा और स्वभावसे किसी भी दौत्यकार्यके लिये बिल्कुल अयोग्य था। उसके रूखे और ढिठाई भरे हुये व्यवहारने अमीरको बहुत ही अपमानित और कुपित कर दिया।" स्टोडर्टको दुबारा जेलमें बन्द करके उसे बहुत-बहुत यातनाये दी जाने लगीं। १८४० ई०में कप्तान आर्थर कोनोली खीवा और खोकन्द होते बुखारा पहुंचा। उसने बुखाराके अमीरको रूसके विरुद्ध हो अंग्रेजोंके साथ मैत्री करनेके लिये उभाड़ा। नसरुल्लाने कोनोलीको भी पकड़कर उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली, और बन्दी बना स्टोडर्टके पास भेज दिया। इसी बीचमें नसरुल्लाको अपनी ओर करनेके लिये १८५० ई०में रूसने मेजर बतानियेफको व्यापार-मैत्री संधिके लिये भेजा। इससे पहले १८२० ई० में प्रथम रूसी दूत रेगनी गया था, और अंग्रेज बार्नेसके जवाबमे १८३४ ई०मे बित्कोविच पहुंचा था। मेजर बतानियेफ का अमीरकी ओरसे बड़ा गर्मागर्म स्वागत हुआ। जारने बहुमूल्य भेंट भेजी थी, उसने भी प्रभाव डाला, लेकिन संधिकी बात करनेपर अमीरने टाल-मटोल कर दिया। इस प्रकार १८४१ ई०में बतानियेफको खाली हाथ लौटना पड़ा।

प्रथम अफगान-युद्धके समय जनवरी १८४२ ई०में १६५०० अंग्रेजी सेना काबुल पहुंची थी, जिनमें अधिकाश हिन्दुस्तानी थे। लेकिन काबुलमे अफगानोंने उन्हें घेरकर खतम कर दिया और सिर्फ उनका एक आदमी किसी तरह जान बचाकर खबर देनेके लिये जलालाबाद पहुंच सका। अंग्रेजोंकी इस जबरदस्त हारसे नसरुल्लाकी हिम्मत बढ़ी। उसके हुक्मसे १७ जून १८४२ ई०को स्टोडर्ट और कोनोलीको कैदखानेसे निकालकर बाहर लाया गया। स्टोडर्ट प्राण बचानेके लिये मुसलमान बन चुका था, लेकिन उसकी गर्दन पहले काटी गई, फिर कोनोलीको मुसलमान बन प्राण बचानेके लिये कहा गया, लेकिन उसने इन्कार कर दिया और उसे भी मार डाला गया। इसके बाद सात और अंग्रेज कत्ल किये गये, लेकिन इनका बदला अंग्रेज कभी न ले सके।

१८४४ ई० मे दोनों अंग्रेज बन्दियोंका हाल जाननेके लिये डाक्टर वोल्फ बड़ी कोशिशके बाद बुखारा गया। तब तक दोनों अंग्रेज मारे जा चुके थे। वोल्फको भी लौटनेमें बड़ी मुश्किलका सामना करना पड़ा। उसने एक चिट्ठीमें लिखा था—"बदनाम नायब अब्दुस्समद खांके बगीचेमें उसके लुटेरे डाकुओंसे घिरा तथा मजबूर होकर छ हजार तिला देनेके लिये आपको यह नोट लिख रहा हूं।"

पामीरसे लगे हुये पहाड़ोंमें केश (शहरसब्ज) का एक छोटा-सा राज्य बहुत दिनोंसे अपनी स्वतंत्रताको कायम रक्खे हुये था—यह वही शहरसब्ज था, जहां तेमूर लंग पैदा हुआ। जब कभी भी बुखारावाले शहरसब्जपर आक्रमण करते, तो वहांवाले बहादुरीसे लड़ते साथ-साथ बंधोंको तोड़कर आसपासकी भूमिको जलमग्न कर देते। बुखाराके पड़ोसी राज्य खोकन्दका शासक बाबरकी बेटीकी संतानोंमेंसे था। खोकन्दी खान मदलीको नसरुल्लाने किस तरह मरवाया, इसके बारेमें हम अभी कह चुके हैं। नसरुल्लाका सबसे बड़ा सलाहकार अब्दुस्समद था।

नसरुल्लाका संबंध खीवासे भी बहुत बुरा था। जब रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने खीवापर अभियान किया, तो नसरुल्लाने भी उसपर हमला बोल दिया। अपने राज्यकी सीमाको बढ़ानेके लिये

नसरुल्लाने बहुत हाथ-पैर मारे, लेकिन बलख, अन्दखूय और मेमनाकी छोटी-छोटी रियासतों-पर कितनी ही बार आक्रमण करनेके बाद वह सफल हुआ और मरते वक्त ही १८२६ ई०मे उसे खबर मिली, कि शहरसब्जपर बुखारियोंका अधिकार हो गया। उसने उसी समय वहांके अमीर तथा अपने सालेको स्त्री-बच्चों सहित अपने सामने कत्ल कर देनेको हुक्म दिया।

नसरुल्ला इन्सानियतसे गिरा हुआ निरा पशु था, तो भी उसकी धाक बुखारामें इतनी थी, कि जब वह अपने महलसे निकलता, तो पासमें कोई शरीर-रक्षक नही होता। बाजारोंमें हफ्तेमें दो-तीन बार दर्वेशका कपड़ा पहने, केवल एक नौकरके साथ उसे घूमते देखा जा सकता था। उसने बनियोंको कह रक्खा था, कि ऐसे समय कोई उसके लिये सम्मान प्रदर्शित न करे, और उसे एक साधारण आदमी-सा जाने। इसीलिये कोई उसके लिये रास्तेसे हटता भी नहीं था। वह एक दूकानसे दूसरी दूकानमे जा अनाज या दूसरे सौदेके भावके बारेमें पूछता और जहां-तहां कोई चीज भी खरीदता।

•८. सैयद मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र (१८६० ई०)

मुजफ्फरुद्दीनकी जवानी करशीमें बीती थी। अपने बापसे वह अधिकतर अलग ही रहा। वह एक ईरानी दासीका पुत्र था। उसे चौदह सालकी उमरमें ही नसरुल्लाने करशीका हाकिम और अपना युवराज बना दिया। अड़तीस सालकी उमरमें मुजफ्फर अमीर हुआ। बापके सारे दुर्गुण इसमें भी मौजूद थे। उसने पहले मुल्लोंको हाथमें करनेका प्रयत्न किया।

नसरुल्लाके मरते समय यद्यपि शहरसब्ज सर हो गया था, लेकिन इस दुर्गम पहाड़ी इलाकेके लोग अब भी बगावत किये हुये थे, इसलिये मुजफ्फरका ध्यान उधर जाना जरूरी था। उसके बाद उसने खोकन्दपर चढ़ाई की, जहांका खान इस समय मदलीका पौत्र खुदायार था, और जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा नसरुल्लाके दरबारमें हुई थी। रूसने १८५३ ई०में अकमस्जिद (सफेद मस्जिद) पर, तथा ग्यारह साल बाद तुर्किस्तान और चिमकन्दपर भी अधिकार कर लिया। १८६४ ई०में ताशकन्दमें असफल होनेपर उसका बढ़ाव रुका। खुदायारने चाहा, कि तुर्किस्तान शहरको भी लौटा ले, लेकिन उसमें विफल होकर उसे राजधानी लौटना पड़ा। किपचकोंने वहां उसके छोटे भाई मुल्लाखांको गद्दीपर बैठा दिया था, इसपर अमीर खुदायार मदद लेने मुजफ्फरके पास आया। मुल्लाको कत्ल करवा मुजफ्फरने खोकन्दमें जा खुदायारको स्वयं तख्तपर बिठाया। किपचक (उज्बेक) अब भी फरगानामें विरोध करते रहे, और उन्होंने खुदायारके आधे राज्यको छीन भी लिया; लेकिन, रूसियोंने इसी समय उनके नेताको ताशकन्दमें मार डाला, जिसके कारण मुजफ्फरको १८६५ ई०मे अपने आक्रमणके वक्त बहुत सुभीता हुआ। चेर्नियेफ ताशकन्दको ले चुका था, खोकन्द भी उसकी दयापर था। मुजफ्फर जहादके नामपर सारे मध्य-एसियाको शत्रु बनाकर एक करना चाहता था। खोकन्द, बुखारा और खीवाको राजनीतिक तौरसे एकताबद्ध करनेका यह अच्छा मौका था, क्योंकि तीनों ही राज्य अपनेको रूसी राहुके मुखमें देख रहे थे। मुजफ्फर समझता था, कि धर्मान्ध मुल्ला मध्य-एसियाकी सबसे बड़ी शक्ति हैं। वह रूसके सबसे जबर्दस्त शत्रु भी थे, इसलिये मुजफ्फरने उनके ही हाथोंमें खेलना पसंद किया। तीनों राज्योंके शहरों और बाजारोंमें जहादका धुआंधार प्रचार हो रहा था। इससे मुजफ्फरको एक भारी सेना तैयार करने में देर न हुई। उसके बलपर मुजफ्फरने अभियान करके समरकन्दसे उत्तर-पूर्व तथा रूसी तुर्किस्तानकी राजधानी ताशकन्दसे सिर्फ सौ मीलपर अवस्थित खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) को दखल कर जेनरल चेर्नेयेफको ताशकन्द खाली करनेके लिये अल्टीमेटम दे दिया।

रूससे युद्ध—चेर्नेयेफ चौदह पैदल कंपनी, छ कसाक स्क्वाड्रेन और सोलह तोपोंके साथ समरकन्द से साठ मीलपर अवस्थित जीजकके किलेपर चढ़ आया। प्रतिरोध जबर्दस्त हुआ और रसदकी भी कमी थी, इसलिये उसे लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। इस सफलतासे प्रोत्साहित हो चालीस हजार सेना ले मुजफ्फर ताशकन्दपर चढ़ा। चेर्नेयेफने रूसी सरकारके हुक्मके बिना ही ताशकन्दको

ले लिया था, इसलिये उसे हटा युद्ध बन्द करनेका हुक्म देकर जेनरल रोमानोव्स्कीको भेजा गया, लेकिन सैनिक परिस्थितिने उसे भी सरकारी हुक्मके विरुद्ध जानेके लिये मजबूर किया। ताशकन्दसे सिर्फ तीनी मंजिलपर बुखारी सेना रह गई थी, और सत्तर हजार आबादीका नगर रूसियोंको फूटी आंखों भी नहीं देखना चाहता था। रोमानोव्स्की चौदह पैदल कंपनी, पांच कसाक स्क्वाड्रेन और बीस तोपोंके साथ सिर नदीके बांये तटसे होते आगे बढ़ा। जैसा कि पहले बतला चुके हैं, जीजक और खोजन्दके बीच इर्जइमे २० मई १८६६ ई०को मध्य-एसियाकी पलासीकी लड़ाई हुई, और ३६०० रूसियोंने बुखारियोंकी पांच हजार पैदल, ३५०० सवार और दो तोपोंवाली सेनाको बुरी तरहसे हराया। हारी हुई सेना अस्त-व्यस्त होकर भगी। आठ दिनके मुहासिरेके बाद ६ जूनको खोजन्द भी रूसियोंके हाथमें चला गया। रूसी अल्टीमेटमकी पर्वाह न करके मुजफ्फरने युद्धकी तैयारी जारी रक्खी, जिससे रूसियोंको फिर आगे बढ़नेके लिये मजबूर होना पड़ा। अक्तूबर तक वह उरातिप्पा और जीजक ले जरफ्शां-उपत्यकाके ऊपरी भागके स्वामी बन गये। १८६७ ई०के वसंतमें यानीकुर्गानपर भी रूसियोंका अधिकार हो गया, जिसे लौटानेके लिये ४५ हजार बुखारी सेनाने दो बार कोशिश की। इस प्रकार १८६७ ई० के मध्य तक सिर और जरफ्शांकी उपत्यकायें जारके साम्राज्यमे चली गई। ओरेनबुर्ग शासन-केंद्र बहुत दूर पड़ता था, इसलिये २३(११) जुलाई १८६७ ई०के उकाज़े (राजादेश) के अनुसार तुर्किस्तानका एक अलग प्रदेश बना दिया गया, और ताशकन्दको तुर्किस्तानके महाराज्यपालकी राजधानी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्किस्तान-सूबा (गुबर्निया)मे सिर-दरिया, सप्तनद (सेमीरेचिन्स्क अर्थात् इस्सिकुल और बल्काशकी द्रोणियां) तथा जरफ्शांके इलाके थे। जेनरल काफमान प्रथम महाराज्यपाल नियुक्त हुआ। बुखारा अब भी जब-तब रूसी सीमात-चौकियोंसे छेडछाड़ करता था। काफमानने मुजफ्फरके सामने सुलहके लिये निम्न शर्त्ते पेश की—मौजूदा सीमांतको स्वीकार किया जाय, व्यापारमें रूसी और बुखारी प्रजाके समान अधिकार हों, युद्धके हरजानास्वरूप सवा लाख तिला (पांच लाख रूबल या तिरपन हजार गिन्नी) रूसको मिले। मुजफ्फरने इसके जवाबमें खीवाकी ओरसे अपनी सेनाको बुलाकर जीजकपर आक्रमण करनेके लिये तैयारी की। रूसी अब समरकन्द लेनेके लिये तैयार हो गये। ३६०० सेनाके साथ १७ मई १८६८ ई०को उन्होंने खीवा और बुखाराकी चालीस हजार सम्मिलित सेनापर धावा बोल दिया, और उथली नदी पार हो समरकन्दसे पन्द्रह मीलपर जरफ्शांके बायें किनारेकी ऊंचाईपर एकत्रित शत्रु-सेनापर आक्रमण कर दिया। बुखारियोंकी भीषण पराजय हुई। अगले ही दिन समरकन्दने आत्मसमर्पण कर दिया, और नगरके सरतों (ताजिकों) ने विजेताओंका खूब स्वागत किया—आखिर उज्बेकोंके जूयेको वह प्रसन्नतापूर्वक नहीं ढो रहे थे। यहूदियोंने रूसियोंका और भी अधिक विश्वास प्राप्त किया, और उन्होंने सरतोंसे सजग रहनेकी सलाह दी। जेनरल काफमानने अपने घायलोंको नगरके बीचमें अवस्थित किलेमें साठ-बासठ गारदके साथ छोड़ शत्रुका पीछा किया। रूसियोंके कुछ ही दूर जानेपर शहरसब्जवाले बीस हजार सैनिक चुपकेसे भीतर घुस गये, उन्होंने किलेको घेर लिया। एक सौ नवासी रूसी प्रतिरक्षक हताहत हुये और किला भारी विपद्में पड़ गया। काफमान शत्रुको फिर फरारी हार दे चुका था, जब कि उसे समरकन्दकी खबर मिली, और उसने लौटकर बड़ी बुरी तरहसे नागरिकोंके साथ बदला लिया। एक अंग्रेज लेखकके अनुसार—"जैसे गिलेस्पीने वेल्लोरके विद्रोहियोंके साथ बदला लिया था। उनके चूतड़ों और जांघोंपर कोड़े लगवाये, हजारोंको बड़ी निष्ठुरताके साथ मरवाया। सरतोंके विश्वासघातका बदला आत्मसमर्पणके बाद सेना द्वारा नगरको लगातार तीन दिन तक लुटवाकर लिया।"

मुजफ्फरका सारा अभिमान अब चूर-चूर हो चुका था। उसने रूसी जेनरलसे तख्त छोड़कर मक्का जानेकी इजाजत मांगी, लेकिन रूसी उसे अपनी गुड़िया बनाकर बुखाराकी गद्दीपर रखना चाहते थे। आखिर वह रूसी लोहेको देख चुका था, और अपने जीवन भर फिर सिर उठानेकी हिम्मत नही रखता था। दूसरा अमीर उसकी जगहपर शायद फिर नया तजर्बा करना चाहता। रूसियोंने उसीको अमीर स्वीकृत किया, समरकन्दको तुर्किस्तानमें मिला वहांपर

उपराज्यपाल बनाकर अन्नामोफको भेजा। मुजफ्फरके बाद १७ सालके युवराज अब्दुल् अहदने बापसे बगावत करके करकीके किलेपर अधिकार कर लिया, लेकिन जनरल अन्नामोफने विद्रोह-को आसानीसे दबा दिया। यही नही, उसने मंगीत-राजवंशके मूल-स्थान करशीको भी ले लिया और करकीपर गोलाबारी की। युवराज बुखारा राज्यकी मध्य पहाडियोंमे भागा, जहांसे भी उसे समरकन्दके पश्चिमी छोरपर भागनेके लिये मजबूर होना पड़ा। विद्रोहोंमे सफलताकी तो आशा नही थी, ऊपरसे प्रजाको सारी आफत सहनी पड़ रही थी, इसलिये कोई आश्चर्य नही, यदि एक किसानने अहदको पकड़वा दिया। मुजफ्फरके पास लाये जानेपर उसने उसके सिरको काटकर महलके दरवाजेपर लटकानेका हुक्म दिया। इस विद्रोहके समय अन्नामोफने पीढ़ियोंसे स्वतंत्रताकी लड़ाई लड़नेके अभ्यस्त शहरसब्जवालोंको भी अपने अधीन कर लिया। मुजफ्फर अब परम जारभक्त था। हिन्दुस्तानमे रहते अंग्रेज इसके लिये अफसोस कर रहे थे, कि मुजफ्फरने अपने पूर्वजोंके भव्य दायभागको इतना जल्दी खो दिया। लेकिन मुजफ्फरने दस-दस पंद्रह-पद्रह गुनी अधिक सेनाके साथ भी लड़कर देख लिया था, कि आधुनिक हथियारोंके सामने उसके जहा-दियोंकी भीड़ टिक नही सकती। जरफ्शांकी ऊपरी उपत्यका और ऐतिहासिक नगर समरकन्द रूसियोंके हाथमें होनेसे बुखारा उनकी दयापर निर्भर करता था। रूसी जरफ्शाके पानीसे किसी समय भी वचित कर बिना एक गोली खर्च किये ही बुखारियोंको मरनेके लिये मजबूर कर सकते थे। अपने जीवनभर मुजफ्फरको मौज करनेमें कोई बाधा नही थी, और हमारे रियासती राजाओंकी तरह वह अपनी प्रजाके साथ चाहे जो भी कर सकता था।

९. अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र (–१८९४ ई०)

मुजफ्फरके उत्तराधिकारी अहदने भी अपने बापका पदानुसरण किया। शरीरमे वह लंबा हट्टा-कट्टा और बहुत सुन्दर था। हर साल वह काकेशसके गर्म चश्मोमें बिहारके लिये जाता और अक्सर जाड़े भी उसके क्रिमियामें बीतते थे, अर्थात् उसके जीवनका ढंग और विलास-प्रेम वैसा ही था, जैसा कि हमारे यहां पिछली पीढ़ीके राजा-नवाबोंका।

१०. मीर आलम, अहद-पुत्र (–१९२० ई०)

युवराजकी अवस्थामें इसे शिक्षाके लिये पीतरबुर्ग भेजा गया, जहां रहते अपनी शिक्षा-दीक्षासे वह बिल्कुल युरोपीय बन चुका था, लेकिन दुराचारमे वह अपने परदादा नसरुल्लाका भी कान काटता था। जबतक जारशाही मजबूत रही, तबतक वह उसका अनन्य भक्त बना रहा, और अपना काम केवल विलासमय जीवन बिताना समझता था, लेकिन बोल्शेविक-क्रांतिके समय सब जगह अशांति मची देख एक बार फिर उसने बुखारामें अपनी तानाशाही शुरू की। शासन-सुधार चाहनेवाले अपने यहां के सुधारवादी जदीदों (नवीनतावादियों) के खूनसे इसने अपने हाथोंको खूब रंगा, लेकिन जैसा कि हम आगे देखेंगे, क्रांतिके सामने इसे देश छोड़कर अफगानिस्तान भागना पड़ा। मुजफ्फरुद्दीनके समयसे बुखारा एक देशी रियासतके रूपमें चला आया था। क्रांतिने उसे मिटाकर मध्य-एसियाकी जातियोंको उनकी सीमाओंके अनुसार उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, कजाकस्तान, किर्गिजिस्तान और ताजिकिस्तानके गणराज्योंमें परिणत कर दिया।

शासन-प्रबंध—बुखारा समुद्रतलसे १२०० फुट ऊपर मेर्वसे १४० मीलपर अवस्थित है। १९ वीं सदीके चतुर्थ पाद हीमे रेल द्वारा इसका संबंध हो गया था, यह हम आगे बतलायेंगे। बुखारा मुसलमानोंके आनेसे पहले ही एक प्रसिद्ध सांस्कृतिक नगर बन चुका था। सामानी बादशाहोंके जमानेमें इसकी बहुत तरक्की हुई। इसकी जामा मस्जिदका २१० फुट ऊंचा मीनार (मीनारकलां) बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी गोलाई नीचे छत्तीस फुट है।

बुखाराके शासकोंमें सूबा (प्रदेश) के अधिकारीको बेक कहा जाता था, जिसके नीचे जिलेके अफसर होते थे, जिन्हें अमलाकदार कहते थे। किसानोंसे दशांश (दहयक) कर लिया जाता था, जिसे मिल्की-खराज कहते थे। कितने ही गांव मस्जिदों और मदरसोंकी देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)

थे। फसल तैयार होनेपर अमीरके अफसर खेतोंमें जाकर भूकरके लिये हरएक खेतका अलग-अलग कूत करते थे। बुखाराका काजी (न्यायाधीश) काजीकलां था, जिसके दो नायब होते थे। अदालतकी मुहर मुफ्तीके हाथमें होती थी। धार्मिक बातोंका अधिकारी रईस था।

४. (३. बुखारा अमीर-वंशवृक्ष)
(१७४७–१९२० ई०)
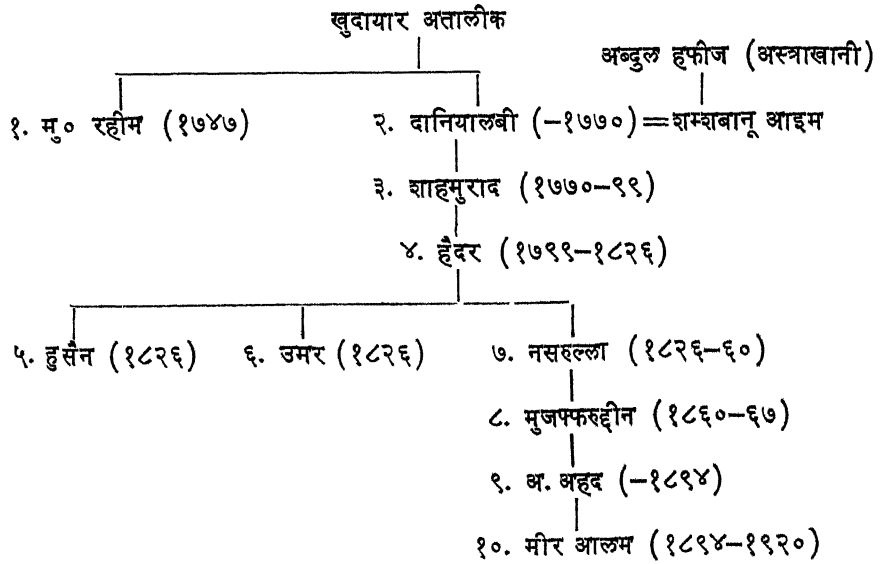
स्रोत ग्रन्थ

१. पो स्रेद्नेइ आजिइ (ल. ये. द्मित्रियेफ-कव्काज्स्की, पेतेरबुर्ग १८९४)
२. ना ग्रानित्साख् स्रेद्नेइ आजिइ (द. न. लोगोफेत्, पेतेरबुर्ग १९०९)
३. इस्कुस्त्वो स्रेद्नेइ आजिइ (व. व. वेइमार्न, मास्को, १९४०)
४. रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (म. य मस्सोन्, ताशकन्द १९२६)
५. आजियात्स्कया रोस्सिया (अ. क्रूवेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७७–२२६, २९३–९९)
६. History of U. S. S. R. (Moscow 1947)
७ Heart of Asia (E. D. Ross, London 1899)
८. History of Mongol (3 Vols. H. H. Howorth, London 1876–88)
९ History of Bokhara (A. Vambery, London 1873)

अध्याय ४

छोटे-छोटे राज्य

१. उरातिप्पा और जीजक

उरातिप्पा—अस्त्राखानी-वंशकी समाप्तिपर बुखारामें बहुत-सी छोटी-बड़ी रियासतें अस्तित्वमें आईं, जिनमें उरातिप्पा भी था, जो समरकन्द, खोजन्द और खोकन्दके रास्तोंके संगम तथा जीजक, समरकन्द और ताशकन्दके रास्तेपर था। उज्बेकोंके उज कबीलेके लोग जीजकमें अपने डेरे डाला करते थे। फजल बी नामक उज-सरदारने १८ वीं सदीमें उसपर अधिकार कर लिया। खोकन्दके नरबुते और बुखाराके रहीम बीने बहुत कोशिश की, लेकिन फजल बीने उन्हें सफल नहीं होने दिया, और शत्रुओंके सिरोंको काटकर उनका मीनार चुनवाया।

फजल बीके बाद उसका लडका खुदायार बी स्वामी हुआ, वह १७९४ ई०में एक लाख परिवारोंका शासक था। बुखाराके अमीर शाह मुरादने जब उसकी ओर कदम बढ़ाया, तो खुदायार बीने उसे बुखाराके फाटकों तक खदेड़ा। वह दिन भर सोता और रातको जाग कर काम करता। शरीरसे पूरा देव था, और एक पूरी भेड़ अकेले ही खा जाता था, तब भी कहता कि भूख अभी पूरी तरह नहीं गई। उसका भाला इतना भारी था, कि किसी दूसरेके लिये उठाना भी मुश्किल था। लड़ाईमें बड़ा बहादुर होनेसे घुमन्तू-कबीलोंका वह आदर्श नेता था।

बाबा बेक, बेकमुराद—खुदायार बीके मरनेपर उसका भाई बाबा उरातिप्पापर और बेटा बेकमुराद खोजन्दपर शासन करने लगे। उमरखान खोकन्दीकी मददसे बाबाने अपने भतीजेको खोजन्दसे भगा पीछे उसे मरवा डाला। बापका बदला लेते हुये बाबाबेकके लड़केने समरकन्दमें मुरादको मार डाला और कुछ समयके लिये उरातिप्पा बुखारामें रहा। फिर खोकन्दके अमीर आलम खांने कुछ समय तक उसपर अधिकार रक्खा, लेकिन जल्दी ही खुदायार बेकके भान्जे तथा प्रसिद्ध खोजा हिरातके वंशज खोजा महमूद खांने खोकन्दी हाकिमको भगा उरातिप्पाको बुखाराके नामसे अपने हाथमें कर लिया। १८१२ ई०में खोजा महमूद उरातिप्पाका शासक था। उमर खांने आक्रमण करके महमूदको पकड़ लिया, लेकिन तीन महीने बाद उसने फिर भागकर अपने संघर्षको जारी रक्खा। इसी समय जीजक बुखारामें और उरातिप्पा खोकन्दमें शामिल कर लिये गये, और इस प्रकार उरातिप्पाकी स्वतंत्र सत्ता खतम हो गई। महमूदका पुत्र तुराबेक यिरुवाकी खोकन्द-दरबारके अमीरोंमेंसे था। जिस समय उरातिप्पाने अपनी स्वतंत्रता खोई, उस समय यहांके उज कबीलेके बहुत-से लोग दक्षिणकी पहाड़ी काफिरनिहां-उपत्यकामें जाकर बस गये।

२. शहरसब्ज

किश या शहरसब्ज तेमूर लंगकी जन्मभूमि थी। बुखारासे जानेपर रास्तेमें दुर्लंघ्य रेगिस्तान पड़ता था, और समरकन्दसे दुर्गम पहाड़ी, इस प्रकार उसे प्रकृतिने प्रतिरक्षाके सुन्दर साधन दे रक्खे थे। १८ वीं सदीमें मंगीत रहीम बी (१७४७ ई०) ने शहरसब्जपर अधिकार किया, लेकिन पांच ही साल तकके लिये। भारी लड़ाकू कैरोसली उज्बेक-कबीलेके डेरे इस इलाकेमें रहा करते थे। उनके सरदारने रहीम बीसे शहरसब्जको मुक्त करा लिया।

(१) **दानियाल अतालीक (१८११-३६ ई०)**—शहरसब्जके शासकोंमें यह बड़ा शक्तिशाली था। इसने अमीर हैदर और उसके पुत्र नसरुल्लाके सारे प्रयत्नोंको निष्फल कर दिया।

दानियालने "वलीनिअम" की पदवी धारण की थी। उसके दो पुत्रोंमें खोजाकुल शहरसब्जमें और बाबा दादखाह् किताबमें शासन करते थे।

(२) **खोजाकुल** (१८३६-४६ ई०)—बापके मरनेपर दोनों भाई आपसमें झगड़ पड़े, जिससे अमीर नसरुल्लाने फायदा उठाकर आक्रमण कर दिया। लेकिन नसरुल्लाके पहुचनेसे पहले ही खोजाकुलने अपने भाईको मार भगाया, इसलिये बुखारी सेनासे लडनेके लिये वह स्वतंत्र था। उसने नसरुल्लाकी सेनाको बुरी तरहसे हराया। नसरुल्लाने अजेय शहरसब्जकी भूमिपर हथियारसे विजय पानेकी आशा नही देखी। इसके बाद वह सालमे दो बार वहांकी भूमिको तबाह करने लगा। सुलह क्षणिक ही हो पाती थी। अपनी मृत्युके समय (१८४६ ई०) तक खोजाकुल बुखारियोंसे लड़ता रहा। उसने अपने भाई इस्कन्दरको किताब देकर संतुष्ट करना चाहा था।

(३) **अशुर बेक** (१८४६ ई०)—खोजाकुलके पुत्र अशुरबेकको बापकी गद्दीपर अधिक दिनोंतक बैठनेका अवसर नही मिला, और चचाने भतीजेको खदेड़कर गद्दी संभाल ली।

(४) **इस्कन्दर** (१८४६-५६ ई०)—इस्कन्दर "वली-निअम" की उपाधि धारण कर, दस साल तक बराबर नसरुल्लासे लड़ता रहा, लेकिन अन्तमे घिरावा डाल तथा खेतों और गांवोंको बरबाद करके भूखा मारकर नसरुल्लाने शहरसब्जको सर किया। इस्कन्दरने किताबमें जाकर अपना प्रतिरोध जारी रक्खा, और अन्तमे अनुकूल शर्तोंके साथ बुखाराकी अधीनता स्वीकार कर वह बुखारा चला गया, जहां कराकुलकी सारी आमदनी उसे जागीरमे मिली। इस्कन्दरकी बहिन केनिंगेज आइम अपने सौंदर्यके लिये बहुत मशहूर थी। वह ब्याही हुई थी। उसपर नसरुल्लाकी नजर पड़ गई। उसने पतिको चारजूइ भेज आइमको अपने हरममें डाल लिया और शहरसब्जके मुख्य-मुख्य खानदानोंको ले जाकर चारजूइ, करशी आदिमें बसा दिया। नसरुल्लाने मरनेसे पहले इस्कन्दर और उसकी बहिनके खूनसे अपने हाथको रंगा। एक प्रत्यक्षदर्शीने इस घटनाके बारेमें लिखा है—

"इस्कन्दर और उसका भाई चुमचू खान रोज एक बार अमीरको सलाम करने जाते थे। उनके जानेके बाद अमीरने मुझे उन्हे बुला लानेके लिये कहा।......लाकर उन्हें अलग कमरोंमें बैठाया गया। उन्होंने कहा—'बुखारामें किसीको पता नही, कल क्या होनेवाला है। आज तुम जिन्दा हो और कल तुम्हारा सिर कटा दिखाई पडे।'.... कुछ प्रतीक्षाके बाद एक बादाचा आया, जिसमें इस्कन्दर और वहां आनेवाली स्त्रीका गर्दन काट लेनेका हुकुमनामा लिखा हुआ था। बादाचा बादामके आकारकी एक मुहर हुआ करती थी। मृत्युदंडका हुक्म देते समय अमीर इसी मुहरका इस्तेमाल करता था। दूसरे कामोंके लिये इस्तेमाल होनेवाली मुहर बड़ी होती थी। जैसे ही हमने हुकुमनामा पाया, तुरन्त इस्कन्दरको वधस्थानपर लानेको कहा। अमीरके किलेमे एक कूये जैसी गहरी तथा तख्तोंसे ढकी जगह है। काटनेके बाद लाश इसी कुएंमे फेंक दी जाती है। वहां बहुत-सी लाशे पड़ी थीं। वधिक हमारी प्रतीक्षामें था। हमारे आते ही उसने तुरन्त इस्कन्दरको जमीनपर पटक दिया। इस्कन्दरके दाढ़ी नहीं थी। बधिकने अपनी अंगुलियोंको उसके नथुनोंमें डाल सिरको पकड़े गलेको काट दिया। इसके बाद लोग एक औरतको लाये। जैसे ही उसने इस्कन्दरके मृत शरीरको देखा, वह अमीरको बुरा-भला कहते रोने लगी। तब हमें मालूम हुआ, कि वह इस्कन्दरकी बहिन तथा अमीरकी बीबी आइम केनिंगेज है। वह केनिंगेज-परिवारकी लड़की थी, इसीलिये सभी उसे "मेरी केनिंगेज चांद" कहते थे। जल्लादने उसके हाथोंको बांध दिया, फिर पिस्तौलसे सिरके पीछेसे गोली चलाई—हमारे लोगोंमे स्त्रियोंका गला नहीं काटने, बल्कि उन्हें गोली मार देते हैं। एक ही गोलीमें वह उसे नहीं मार सका। वह गिरकर कुछ देर तक छटपटाती रही। बधिकने उसके स्तनों और पीठपर बारह बार ठोकर लगाई, तब वह मरी।"

(५) **बाबा बेक**—केनिंगेज-परिवारका यह सरदार अमीरकी अरदलीमें था। नसरुल्लाके मरते समय वह शहरसब्ज लौटा। छ महीने बाद अमीर मुजफ्फर शहरसब्ज आया।

उसी समय उसने बाबा बेक से उसकी बहिन मांगी, जो कि पहले ही उसके बापकी कामुकताको तृप्त कर चुकी थी। मुजफ्फरके ऐसी माग करनेपर बड़ा हल्ला मचा, और उसने बुखारा लौटकर बहुत बड़े-बड़े आदमियोंको जेलमें डाल दिया। लेकिन लोगोंने उन्हें बन्दीखानेसे मुक्त करके बाबा बेकको शहरसब्जका और जरा बेकको किताबका शासक नियुक्त किया। बुखाराके अफसर वहांसे मार भगाये गये। मुजफ्फरने चढाई की, किंतु खोकन्दके झगड़ेके कारण मुहासिरा उठा लेना पड़ा। पीछे बाबा बेकने वार्षिक भेंट और सैनिक सहायता देकर मुजफ्फरकी अधीनता स्वीकार की, पर राज्यके भीतरी मामलोमें वह स्वतंत्र था।

१८६६ ई०मे रूसियों द्वारा मुजफ्फरके हराये जानेपर बुखारामें दो दल हो गये। मुजफ्फर-का पुत्र केत्तात्युरा विरोधी और मुजफ्फरका भतीजा सईद खान समर्थक था। समर्थकोंका मुखिया जुरा बेक था, जो अमीरके रूसियोंपर चढाई करके हारनेके बाद शहरसब्ज भाग गया। रूसियोंने समरकन्दको लेकर अमीरसे बदला लिया। जब अमीर दुबारा रूसियोंका विरोधी बना, तो उसकी सहायतार्थ शहरसब्जके बेकोंने तीस हजार सेना लेकर समरकन्दपर चढ़ाई की। इससे पहले वह जेनरल कॉफमानसे अलग समझौता करनेकी बातचीत कर रहे थे, लेकिन जब जेनरलने उन्हे मुलाकातके लिये बुलाया, तो उनके मनमे संदेह होने लगा, और मुजफ्फरकी ओर होकर लड़नेके लिये तैयार हो गये। अमीरने विवादास्पद नगर चिरागचीको देनेका वचन दिया था, इसलिये भी शहरसब्जवाले उसके पक्षमें हुए। रूसी सैनिकोंको समरकन्दके किलेके भीतर घेरकर शहरसब्जवालोंने बड़ी विपदमें डाल दिया था, लेकिन इसी समय जुरा बेकको कॉफमानके आनेकी झूठी खबर लगी, और उसके एक अफसरने अपने आदमियोंको हटा लिया। इसी सहायता देनेके लिये अमीर मुजफ्फरने जुरा बेकको "दादखाह"की उपाधि तथा दस हजार तंका इनाम दिया था।

१८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ इस्कन्दरकुलके खिलाफ चढ़ा था। उस वक्त कर उगाहनेके लिये गये राजुल उरुसोफको कुछ विद्रोहियोंने मार भगाया। ये आदमी जुरा बेकके पक्षपाती हैदरखोजाके अनुयायी बतलाये जाते थे। जुरा बेकको हैदरको समर्पण करनेका हुक्म हुआ, लेकिन उसने कहा कि हैदर कहीं दूसरी जगह है। इसपर जेनरल कॉफमानने शहरसब्जको खतम करनेका निश्चय कर लिया। जेनरल अब्रामोफने किताबको आक्रमण करके ले लिया, फिर शहरसब्जको आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर किया। बेक भागकर खोकन्द चला गया। रूसियोंने शहरसब्ज-के इलाकेको अमीर-बुखाराके हाथमें दे दिया। विश्वासघाती कहकर खोकन्दके खानने शहरसब्ज-वाले बेकोंको रूसियोंके हाथमें दे दिया। कुछ समयतक वह ताशकन्दमें नजरबंद रहे, फिर बुखारासे दो हजार रूबल पेंशन मिलने लगी। जुरा बेक इसके बाद रूसियोंका बहुत जबर्दस्त पक्षपाती हो गया और वह उसे बहादुर, ईमानदार और निष्कपट कह कर तारीफ करते थे।

३. कोहिस्तान

समरकन्दसे पूर्वका पहाड़ी इलाका अर्थात् जरफशांकी ऊपरी उपत्यका कोहिस्तानके नामसे प्रसिद्ध थी। १८७० ई०में वहां फाराब, मागियान, कश्तुत, फान, यग्नान, माचा और फलगर-के छोटे-छोटे सात शासक (बेक) थे। ये पहाड़ी बेक (ठाकुर) कुछ गांवोंके शासक थे, और बुखाराको थोड़ा-सा कर दे अपने लोगोंके ऊपर मनमाना शासन करते थे।

उरगुत—उरगुतका बेक खानदानी राजा था। मागियान, कश्तुत और फाराबके बेक अपनेको इसके अधीन मानते थे। १९वीं शताब्दीके आरंभमें अमीर हैदर उरगुतको जीतकर उसके बेक युल्दाश परमांचीको बंदी बना बुखारा ले आया। बाकी तीनों बेकोंने बुखाराकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कुछ समय बाद युल्दाशके पुत्र कत्ता बेकने उरगुतको फिर अपने हाथ-में कर लिया, और दूसरे बेकोंसे नाराज होकर उसने अपने भाई सुल्तान बेकको मागियान और कश्तुतका शासक बनाया। अब बुखारासे झगड़ा छिड़ गया। पहाड़ियोंने समरकन्दको खतरा पैदा कर दिया। लेकिन अमीर-बुखाराके सामने तलवार उठाकर खड़े रहनेमें बहुत दिनों

तक लाभ नहीं था, इसलिय उरगुतका बेक नसरुल्लाखानको अपनी बेटी दे बुखाराके सरदारके तौरपर उरगुतोंका शासक बना रहा। कत्ता बेकके मरनेके बाद उसके पुत्र आदिल परमांची उरगुतपर और उसका भाई अलायार दादखाह् मागियानपर शासन करने लगे। मरनेसे थोड़े ही समय पहले अमीर नसरुल्लाने उन्हें बुखारा बुलाकर सपरिवार चारजूयमें निर्वासित कर दिया। रूसियोंके समरकन्द ले लेनेपर अमीर द्वारा नियुक्त अफसर उरगुत छोड़कर भाग गया। इसपर चारजूयमें निर्वासित कुमारोंमेंसे एक हुसेन बेकने खोकन्द होते वहा पहुंचकर उरगुतको ले लिया। रूसियोंने जब वहांसे भगाया, तो वह स्वयं मागियानमें और अपने छोटे भाई शादीको कश्तुत और चचेरे भाई सईदको फाराबपर नियुक्त करके शासन करने लगा। इन छोटी-छोटी पहाड़ी रियासतोंका बुखारी कर उगाहनेवालोंसे बराबर लड़ाई-झगड़ा होता रहता था। १९वीं सदीके आरंभमें ही फलगरके बेक अब्दुश्शकूर दादखाहने सारे पहाडी इलाकेको अपने अधीन कर कितने ही दुर्गम पहाड़ी स्थानोंको सुगम बनानेके लिये रास्ते और पुल बनवाये। अमीर हैदर (१७९९–१८२६ ई०) के समय इन इलाकोंमें बुखाराने अपने बेक नियुक्त किये और किले बनवाये। यही हालत नसरुल्लाके शासनके अन्ततक रही।

समरकन्दके रूसियोंके हाथमें जानेपर वहांसे बुखारी बेक (हाकिम) भाग गया। उसी समय बेक अब्दुल गफ्फारने उरातिप्पाके पूर्व उर्मितानको ले अपनेको फलगरका बेक घोषित किया, लेकिन माचाके लोगोंने शासक मुजफ्फरशाहकी अधीनता स्वीकार की, जिसने अपने भतीजे रहीमखानको अपनी ओरसे शासक नियुक्त किया। रहीमखानने फलगरसे अब्दुल गफ्फारको मार भगाया और उसकी सहायताके लिये आये कश्तुतके शादीबेकको भी हराया। इसने यग्नान और फानको भी जीत हिसारपर चढाई की। रास्तेमें सेना बिगड़ गई, और उसने रहीमको भगाकर पाचा खोजाको अपना नेता बनाया। ये पहाड़ी लोग बहुत पिछड़े हुये थे, लेकिन फलगर-वाले अपनेको माचावालोंसे अधिक संस्कृत समझते थे। उन्होंने फिर अब्दुल गफ्फारको अपने यहां बुलाया, किन्तु उसने हार खाकर समरकन्दमें जा रूसियोकी अधीनता स्वीकार की। इस अशांतिसे लाभ उठा मई १८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ एक छोटी-सी सेना ले पहाड़ोंके भीतर घुसा। १२ मईको उसने उर्मितान ले लिया, २१ को वरसामिनार भी उसके हाथमें चला गया। यह दोनों जगहें फलगरके बेकके अधीन थी। माचाका बेक पाचा खोजा बहुत जनप्रिय था। वह धमकीके पत्र लिखता रहा। अब्रामोफने माचाकी ओर बढकर २८ मईको आबुर्दनको ले लिया। पाचा खोजा भाग निकला। रूसियोने फलगरके किलेको तोड़ दिया, जिसे कि बुखारियोंने पहाड़ी लोगोंको दबा रखनेके लिये बनाया था। अब्रामोफ आगे बढ़ते-बढ़ते अलई पर्वतमालाकी उस हिमानीके पास पहुंचा, जो कि जरफशां (प्राचीन सोग्द) नदीका उद्गम है। लौटकर उसने फान नदीपर अवस्थित सर्वदा, फिर यग्नान-उपत्यकाको जीतते इस्कन्दरकुल (महासरोवर) तक गया। वहांसे पश्चिमी कोहिस्तानकी ओर घूमकर उसने दस हजार फुट ऊंचे कश्तुतके डांडेको पार किया, जिसके पश्चिमी पहाड़ियोंमें एक जबर्दस्त संघर्ष हुआ। कश्तुतको अपने हाथमें करके अब्रामोफ पंजकन्द होते समरकन्द लौट गया।

शहरसब्जकी विजयके बाद रूसियोंकी एक टुकड़ी कश्क-उपत्यकासे हो फाराब और मागियान-पर पड़ी। इन दोनों इलाकोंके बेक रूसके विद्रोहियोंके साथ हो गये थे। रूसियोंने यहांके दोनों किलोंको तोड़ दिया और वहांके बेकों—सईद और शादीबेक—ने आत्मसमर्पण किया। मागियानका बेक हुसेन कुछ महीनेतक हाथ नहीं आया। रूसियोंने फाराब और मागियानको उरगुत जिलेमें मिला लिया। कितने ही समयतक बाकी पहाड़ी लोग रूसियोंके साथ विद्रोही बने रहे, लेकिन कब तक इतनी बड़ी शक्तिका मुकाबला करते ?

४. हिसारके इलाके

आजकल यह पहाड़ी इलाका ताजिकिस्तान गणराज्यका एक बड़ा भाग है। ऊपरी जरफशां-उपत्यकाकी तरह यहांपर भी उस समय कितने ही छोटे-छोटे राजा थे, जैसे:—

(१) **करातगिन**—वक्षु नदीकी मुख्य पहाड़ी शाखा सुरखाव करातगिनके इलाकेसे बहती है। यहांके शासक अपनेको ऐतिहासिक ग्रीक सम्राट् अलिकसुन्दरका वंशज बतलाते थे। कोई आश्चर्यकी बात नही है, यदि ग्रीक या शक-शासनके पतनके बाद वहाके कुछ राजकुमारोने इन दुर्गम पहाड़ियोंमें शरण लेकर अपने लिये स्थान बनाया हो। लेकिन यह साबित करना मुश्किल है, कि सचमुच ही ये छोटे-छोटे शाह और बेक यूनानी सम्राटोंके वंशज थे। दरबाजवालोंने कुछ समयतक करातगिनको जीतकर उसे अपने हाथमे रक्खा, लेकिन जल्दी ही वह फिर स्वतंत्र हो गया। १८३९ ई०में खोकन्दने करातगिनको जीतकर अपने अधीन कर लिया।

(२) **दरबाज**—करातगिनसे दक्षिणमे यह छोटा पहाडी राज्य था, जिसके शासक भी अपनेको सिकन्दरवंशी कहते थे—यह उज्बेक नहीं ताजिक थे। खोकन्दके मदली खानने १८३९ ई०में करातगिनके साथ इसे भी अपने अधीन बना लिया था।

(३) **कुल्याब**, (४) **शगनान**—यह भी दो छोटी-छोटी पहाड़ी रियासतें थीं, जो कि पीछे तबतक खोकन्दका अंग बनकर रही, जबतक खोकन्दको रूसियोंने हजम नही कर लिया।

(५) **हिसार**—करातगिन, दरवाज और शगनानकी पहाड़ी रियासतोंके पश्चिममे हिसार और कुल्याबके इलाके हैं, जिनमे उज्बेकोके कबीले कंकुरत और कतगन रहते थे। उन्होंने इन इलाकोंको अपने हाथमें करके बहुत-से पुराने बाशिंदों—ताजिकों—को भगा दिया था। बुखारावाले उस समय हिसारके इलाकेको उज्बेकिस्तान कहते थे। जान पड़ता है, १८वी सदीके मध्यमें हिसारका इलाका बुखाराके हाथसे निकल गया था।

हिसार और कुल्याबके पड़ोसमें कई और छोटे-छोटे उज्बेक राजा थे, जिनमे कुरगानका अल्लाबर्दी जौज १८वीं सदीके अन्तमें पडोसियोंके लिये काल बन गया था। उसने हिसारको घेरा था, जब कि बेक अल्लायार और करशीके राजुलने उसे मारकर हिसार और कुरगानपर अधिकार कर लिया। तब भी प्राचीन वंशका शासक सईद हिसारका बेक, यदि कामके लिये नही तो नामके लिये, माना जाता था। बुखाराके अमीरने सईद बेककी लड़कीसे ब्याह किया था, और इस प्रकार वह अमीरका कृपापात्र था। कुरगानको हिसारमे मिला लिया गया था। इज्ज-तुल्लाके समय हिसारमें सईद बेक और कुरगानमें अल्लायार बेकका शासन था। पड़ोसी कबादियान इलाकेके बेक थे दोस्त मुहम्मद और मुराद अली। इन छोटी-छोटी रियासतोंको हिसारने हजम कर लिया। १९वीं सदीके उत्तरार्धमें कुल्याब हिसारका शासक कतगन अमीर सरीखान था, जिसके डरके मारे करातगिनके शासकको १८६९ ई०मे खोकन्दकी शरण लेनी पड़ी थी, लेकिन इसी समय बुखाराने उसे अपने अधीन कर लिया। १८७२ ई०मे हिसारमें सात जिले थे, जिनके अपने-अपने बेक थे, कुल्याबमें भी दो जिले थे। ये सभी बेक बुखारा द्वारा नियुक्त होते थे। इन जिलोंके नाम थे—शेराबाद, बाइसून, देहनौ, युर्ची, हिसार (कुर्गानत्यूबे, कबादियान), बल्जुवान और कूल्याब। इनके अतिरिक्त दरबन्द, सरेजूय और फैजाबादपर अमीरका शासन स्थानीय बेकों द्वारा नहीं बल्कि सीधे बुखारासे होता था।

५. तुखारिस्तान

प्राग्-मुस्लिम तुर्कोंके शासनकाल तथा स्वेन्-चाङकी यात्राके समय पहाड़ोंसे उतरकर पश्चिमी-भिमुख बहनेवाली पहाड़ोंतक फैली वक्षुके दोनो तटकी समतल-सी मैदानी भूमिको तुषार या तुखार कहा जाता था। पीछे यह उज्बेकोंकी भूमि हो आजतक है। यहांके निवासी अधिकतर उज्बेक हैं। वक्षुके उत्तरवाला तुखारिस्तान अब सोवियत उज्बेकिस्तानका अंग है, पर दक्षिणी तुखारिस्तान उज्बेक होते हुये भी काबुलके शासनमें है। १८वीं सदीके मध्यमें ही, जब कि अफगानोंका सितारा ऊंचा होने लगा था, दक्षिण तुखारिस्तानमें कितनी ही छोटी-छोटी रियासतें थीं :—

(१) **खुल्म**—१७५१-५२ ई०में अफगानोंने दक्षिणी वक्षु-उपत्यकाको बुखारासे छीन लिया।

१७८६ ई०में अमीर शाहमुरादने उसे लौटानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सफल नहीं हो सका। पीछे यहांपर खिलिच अलीने अपनी प्रभुता जमाई।

खिलिच अली (—१८१७ ई०)—खुल्म बलखसे उत्तर-पूर्वमें है। यहांके उज-कबीलेका सरदार खिलिच अली धीरे-धीरे बहुत शक्तिशाली हो गया, और उसने अपने पड़ोसी इलाकों ऐबक, गोरी, माजूर, दर्रागूजको अपने अधीन कर लिया, तथा कुरगानतेप्पाके उज्बेक सरदार अल्लाबर्दी तौजको हजरत-इमामसें मार भगाया। कुन्दुजका उज्बेक सरदार खिलिच अलीका ससुर था, जिससे उसने मित्रता स्थापित की। काबुलमें भी उसका प्रभाव बढ़ा और वहांसे उसे "अतालीक"की उपाधि मिली। बलखके अफगान राज्यपाल हुकूमतखान-पुत्र सरदार नजीबुल्ला खानपर भी उसका काफी रोब था। तालिकान छोड़कर बाकी सभी जगहोंपर अफगान राज्यपाल नहीं, बल्कि खिलिच अलीकी तूती बोल रही थी। यहांके तीस हजार रुपयाके करमेंसे एक तिहाई काबुल जाता, बाकी पुराने नौकरों, मुल्लों और शासकोंके खर्चमें आता। खिलिच अपने प्रभावको बढ़ा लेनेके बाद अफगानोंका भक्त रहा। उसके पास बारह हजार सवार सैनिक थे, जिनमेंसे दो हजारका वेतन वह खुद देता, बाकीको उनकी सेवाओंके लिये भूमि और जागीर मिली हुई थी। कुन्दुजवाले भी उसे पाच सौ सैनिक दिया करते थे। सेनाका खर्च करनेके बाद उसकी आमदनी उन्नीस हजार गिन्नीके बराबर थी। खिलिच अलीके ज्येष्ठ पुत्रको नौ हजार गिन्नी वार्षिक वृत्ति मिलती। उसे काबुलसे "बलखका बली" (बलख-राज्यपाल)की उपाधि मिली हुई थी। खिलिच अलीका रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। वह १८१७ ई० के करीब मरा। इसके बाद उसके पुत्रोंमें झगड़ा हो गया, जिसमें कुन्दुजके मुराद बीने आगमें घी डालनेका काम किया। खिलिचके दो पुत्रोंमें एकको खुल्म और दूसरेको ऐबक मिला। बलख भी ऐबकवालेके हाथमें था, लेकिन अब दोनों भाई कुन्दुजके अधीन अमीरमात्र रह गये थे।

(२) कुन्दुज (क) मुराद बी (१८१२–४० ई०)—उज्बेकोंके कतगन कबीलेका कुन्दुज प्रधान नगर था। चिङ-गिस खानके समयमें भी नगरका यही नाम था। १८वीं सदीके अन्तमें कतगन-अमीर खोकन्द बेक शक्तिशाली होकर बहुत कुछ स्वतंत्र हो गया और उसने अपने पूर्वी इलाके बदख्शांको लूटमारकर उजाड़ दिया। उसके बाद उसका पुत्र मुराद बी उत्तराधिकारी बना। अपने समयमें यह मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली शासकोंमें था। इतिहासकार इज्जतुल्लाके समय यह कुन्दुजपर शासन करता था। खिलिचके जिन्दा रहनेतक यह अपनी शक्तिको बहुत आगे नहीं बढ़ा सका, लेकिन इसके बाद बडी तेजीसे अपने राज्यको बढ़ाया। अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्टने अपनी यात्राके प्रबन्धके लिये कुछ आदमी भेजे थे, जिनपर वहांवालोंने गुप्तचर होनेका संदेह किया— "अंग्रेज एसियाके किसी भागमें इसके सिवा और किसी मतलबसे प्रवेश नहीं करते, कि अन्तमें वह वहांके स्वामी बन जायं।" पीछे मूरक्राफ्ट स्वयं वहां गया। उस समय मुराद बी खुल्म, कुन्दुज, तालिकान, अन्दराब, बदख्शां और हजरत-इमामका स्वामी था। मूरक्राफ्टने ऐबकसे आगे पहाड़ोंके भीतर बहुत-से कस्बे उजड़े देखे थे, जिसका कारण मुराद बी था। वहांके निवासियोंको वह गुलाम बनाकर ले गया था। मुराद बीका वजीर आत्माराम दीवानबेगी मूलतः पेशावरका निवासी था। आमतौरसे 'हिन्दुओंको वहां बहुत नीची निगाहसे देखा जाता था, लेकिन आत्मारामने अपनी योग्यतासे मुराद बीका कृपापात्र बनकर ऐसे ऊंचे पदको प्राप्त किया। उसके पास बहुत सम्पत्ति और चार सौके करीब दास-दासी थे।

मुराद बी बड़ा ही कर्मठ आदमी था। वह स्वयं अपनी सेनाका संचालन करता और बलख तथा हजाराके शीयोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें दास बनाकर बेंच देता था। चित्रालका मेहतर भी डरके मारे मुराद बीको करके रूपमें गुलाम देता। हिन्दूकुशकी पहाड़ियोंमें सियापोश काफिर आज भी कुछ मुसलमान न बन अपने बाप-दादोंके धर्मको मानते चले आ रहे हैं। मुराद बीने १८३० ई०में दास-दासी बनाकर बेचनेके ख्यालसे उनपर आक्रमण किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली, काफिरोंने उसे आगे बढ़नेसे रोक दिया। इसी समय बर्फानी आंधी आई, जिससे फायदा उठाकर सियापोशोंने आक्रमण कर दिया, और बीके चार हजार सवार काम

आये। मुराद बीके कोपका भारी शिकार बदख्शाकी सुन्दर भूमि हुई, जहांके अधिकांश लोगोंको पकड़कर वह कुंन्दुज ले गया, और वहांके सिकन्दर-वंशी शासनको राज्यसे वंचित कर दिया। १८२३ ई०मे किला-अफगानमें मीरयार बेग खानने मुराद बीके दस हजार सवारोसे नौ हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया, लेकिन उसे हार खानी पड़ी। १८२९ ई०मे यहांके बाशिन्दोको भी उसने कुन्दुज भेज दिया। वूड अपने यात्रा-ग्रंथ (१८३८ ई०) मे लिखता है—"इस प्रकार इस अस्वास्थ्यकर दलदली भूमिमें १८३० ई०से लेकर आज (१८३८ ई०) तक उज्बेकोंने करीब-करीब पच्चीस हजार परिवार या प्रायः एक लाख विदेशियोंको लाकर बसा दिया है, इसमें सन्देह हैं, कि १८३८ ई०मे उनमेंसे छ हजार परिवार भी जिन्दा है। इन पिछले आठ वर्षोंमे उनमेसे बहुतेरे मर गये। कहावत है—'अगर तुम मरना चाहते हो, तो कुन्दुज जाओ।' हमारे वहां पहुंचनेसे बारह महीने पहले कुल्याबके निवासी बहुत भारी संख्यामे अपने पहाड़ी इलाकेसे लाकर हजरत इमाममें बसाये गये। डाक्टर लार्ड और मै उस भूमिसे गुजरे, जहांपर कि उनके घर थे, जिनमेंसे कुछ अब भी खड़े थे, लेकिन चारों ओर नीरवता छाई हुई थी, और चारों ओर फैली बहुसंख्यक कब्रें उनके बहुसंख्यक निवासियोंकी आपबीती बतला रही थीं।" वक्षुके उत्तर कुल्याबसे लेकर दक्षिणमें सिगान (हिन्दूकुशके दो डांडोंके परे तथा बामियानसे तीस मील भीतर) तक और बखान भी मुराद बीका था। मुराद बी १८४० ई०के आसपास मरा।

(ख) मुहम्मद अमीन, खिलिच-पुत्र, खुल्म (१८४०-४५ ई०)—मुराद बीके बाद उसका स्थान खिलिच अलीके पुत्र मुहम्मद अमीनने लिया, जिसको "मीरवली"की उपाधि मिली थी। वह १८४५ ई०में शासन कर रहा था। उसका पुत्र गजअलीबेग बदख्शांका शासक था। कुन्दुजमें मुराद बीका पुत्र मीर रुस्तम खान शासन करता था, किन्तु वह मुहम्मद मीरवलीके अधीन था। मीरवली बुखारा और काबुल दोनोंको खुश रखता था। उसने अन्दखुदको भी अपने अधीन कर लिया था। १८४५ ई०में ऐबकमें उज्बेकोंका कंगली कबीला रहता था। मीरवलीका शासन सरीपुल, अन्दखुद, कुल्याब और वखानसे हिन्दूकुश और बलखतक फैला हुआ था। खिलिच अलीके समय ही तुखारिस्तानमें काबुलका नाममात्रका प्रभाव था, लेकिन अफगानोंकी आंखें इस ओर लगी हुई थीं, जिसमें उन्हें १८५० ई०में जाकर सफलता प्राप्त हुई। काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने बुखाराके अमीर नसरुल्लाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। मीरवलीको दोस्त मुहम्मदने राह देनेके लिये कहा, लेकिन मीरवलीके इजाजत देने या न देनेकी कोई बात नहीं थी। दोस्त मुहम्मदका पुत्र अकबर खान निर्वासित होकर खुल्ममें रहता था, जहांसे वह मीरवलीकी एक दासीपर मुग्ध होकर उसे काबुल भगा ले गया। दासी किसी तरह भागकर खुल्म पहुंच गई। काबुलसे भागकर आनेपर मीरवलीने उसे देनेसे इनकार कर दिया। इस प्रकार दोस्त मुहम्मदके लिये आक्रमण करनेका अच्छा बहाना मिल गया। १८४५ ई०में अफगानोंने चढ़ाई की, लेकिन लड़ाईमें तुरन्त सफलता नही मिली, जिसमें सबसे बड़ी बाधा हिन्दुकोह (हिन्दूकुश) की दुर्गम पहाड़ियां थी। १८५० ई०में अफगानोंने हिन्दूकुश पार करके बलखको जीत लिया। १८५९ ई०में कुन्दुजको भी लेकर वह दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके अपनी आजकी सीमाको स्थापित करनेमें सफल हुये—अफगान अपने इस इलाकेको तुखारिस्तान नहीं तुर्किस्तान कहते हैं।

दोस्त मुहम्मदके बाद उसके पुत्र अफजलखांने—जो बलखका राज्यपाल था—१८५४ ई०मे अपने भाई शेरअलीके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। १८६४ ई०में फिर उसे अपने पदपर बहाल कर दिया गया। अफजलके पुत्रने बुखारा भागकर अमीरकी लड़कीसे ब्याह किया। फिर वह अपने ससुरकी सहायता तथा दूसरोंकी मददसे विद्रोह करके १८६६ ई०में शेरअलीको हटा खुद काबुलकी गद्दीपर बैठा। शेरअलीका तब भी कन्दहार और हिरातपर अधिकार रहा। शेरअलीने फिर १८६८ ई०में तैयारी करके मुकाबिला किया, और अन्तमें सिंहासन पानेमें सफल हुआ। अफजल-पुत्र अमीर अब्दुर्रहमान मशहद भागा, जहांसे मार्च १८७० ई०में ताशकन्दमें रूसियोंके पास गया। उन्होंने उसे पचीस हजार रूबल वार्षिक पेंशन दे समरकन्दमें रख दिया।

अफगानिस्तान ब्रिटिश और जारशाही साम्राज्यके बीचमे था। उसपर दोनों महाशक्तियां अपना प्रभाव डालनेकी कोशिश करती थीं, इसलिये रूसियोंका अब्दुर्रहमानको समरकन्दमें या अंग्रेजोंका अमीर याकूबको लाकर मसूरी (१८८३ ई०)में रखना कोई व्यर्थका सिर-दर्द नहीं था। अफगानोंने दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके बदख्शांमे फिर एक स्थानीय शासकको नियुक्त किया।

(३) **बदख्शां**—१३वी सदीमे प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो बदख्शाके रास्ते चीन गया था। उस समय वहांका शासक अपनेको ग्रीक-सम्राट् अलिकसुन्दरका वंशज बतलाता था। बाबरके समय भी उनके बारेमे यही ख्याति थी। कोई आश्चर्य नही, यदि ग्रीक-बाख्तरी साम्राज्यके नष्ट होनेपर कोई राजकुमार वहां जाकर शासक बना हो, या कोई कुषाणवंशी राजकुमार जाकर रहने लगा हो, जिसके उत्तराधिकारी ग्रीकों और शकोंमे भेद करना भूल गये हों। उज्बेकोने बदख्शांको जीतकर बुखाराके अधीन कर लिया था। बुखाराके शासनके निर्बल होनेपर १८वी सदीमे बदख्शां स्वतंत्र हो गया। अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्ट १८३२ ई०में इधरसे गुजरा था, उस समय तत्कालीन राजवंशको स्थापित हुये सौ साल हो चुके थे।

सुल्तानशाह बदख्शांके राजवंशका संस्थापक था, जिसकी राजधानी फैजाबादको भी उसीने बसाया था।

(क) **सुल्तानशाह** (१७६५ ई०)—जिस साल चीनन वहांके शासक खान खोजासे काश्गरको जीता, उस समय बदख्शाका शासक सुल्तानशाह था। खान खोजाने भागकर चालीस हजार आदमियों के साथ बदख्शामें शरण ली थी। उसके धन और बेगमोंके लोभसे सुल्तान शाहने उसपर आक्रमण कर दिया। खान खोजाने हार खाते समय शाप दिया, कि बदख्शां तीन बार निर्जन बनेगा, और वहां एक कुत्ता भी जिन्दा नही रह जायगा। कुछ साल बाद १७६५ ई०में अफगान अमीर **अहमदने** बदख्शां जीत लिया, जिसमे सुल्तानशाह मारा गया। उस समय बदख्शांमे पैगम्बर मुहम्मदका कुर्ता बड़ी पवित्रताकी चीज समझा जाता था, जिसे अफगान फैजाबादसे काबुल ले गये।

(ख) **मीर मुहम्मद शाह** (१७६५–१८१२ ई०)—सुल्तानकी जगहपर उसके पुत्र मीर मुहम्मदको बैठाया गया। १८१२ ई०में जब इज्जतुल्ला इधरसे गुजरा, तो यही बदख्शांका शासक था।

(ग) **मीर यारबेक खान** (१८२३ ई०)—मुराद बीने इसे १८२३ ई०में किला-अफगानमें हराया, और १८२९ ई०में बदख्शां बिलकुल मुराद बीके हाथमे चला गया। वह यहांके बाशिन्दों-को कुन्दुज ले गया। मीरयार बेकका भाई मीर मुहम्मद रजाबेक तालिकानमें भाग गया।

(घ) **जहांदारशाह** (१८५९–६१ ई०)—अफगानोंने बदख्शांपर अधिकार करके १८५९ ई० मे पुराने वंशके जहांदारशाहको फिर अपनी ओरसे गद्दीपर बैठाया। चित्रालके मेहतरने इक्कीस दास-दासियोंको भेजकर अपनी लड़कीका ब्याह जहांदारके लड़केके साथ किया। १८६१ ई०में इसे गद्दीसे हटा दिया गया।

(ङ) **महमूदशाह** (१८६१ ई०)—जहांदार अमीर शेरअलीके प्रतिद्वंद्वीका पक्षपाती था, इसीलिये उसे हटाकर उसके भतीजे महमूदशाहको गद्दीपर बैठाया गया। इस समय बदख्शां कई इलाकोंमे बंटा हुआ था, जिनमे फैजाबाद और गर्म सीधे महमूदशाहके शासनमें थे, और दराइम, शहरसब्ज (दक्षिणी), गुम्बज, फराखर, किश्म, रूस्तक, इशकासिन, वखान, जेबक, मिन्जान, राग, दौग और आसियाबीमें खानदानी अमीर महमूदशाहकी अधीनतामें शासन करते थे।

तुखारिस्तानके पश्चिमी भागमें कई और छोटे-छोटे राज्य थे, जो अन्तमें अफगानिस्तानके हाथमें चले गये थे।

(४) **मेमना**—नादिरशाहकी मृत्युके बाद वहांके राज्यपाल हाजीखानने अपनेको स्वतंत्र घोषित कर दिया। उसके बाद उसका छोटा लड़का अहमद १७९८ से १८०९ई० तक शासन करता रहा। फिर उसका चचेरा भाई अलायार खां १८१० से १८२६ ई०तक मेमनाका स्वामी रहा। इसके बाद मिजराब खान गद्दीपर बैठा, जिसे उसकी एक बीबीने जहर दे दिया। उसके पुत्रोंमें उत्तराधिकारके लिये झगड़े शुरू हो गये, जिसका फैसला हिरातके अफगान-राज्यपाल यारमुहम्मदने किया—बनियों और किसानोंका शासक उकमेत और किलेकी सेनाका कमांडर शेरखांको

बनाया गया । शेर खां १८५३ ई०तक शासक रहा । उकमेत खानको उसके भाई मिर्जा याकूबने किलेकी दीवारसे गिराकर मार दिया, जिसके बाद उकमेतका पुत्र हुसेन खां गद्दीपर बैठा, किन्तु सारी शक्ति उसके चचा याकूबके हाथमें थी । याकूब जुरमानाकी जगह आदमियोंको बुखारामे गुलाम बना बेचनेके लिये भेज देता था । हुसेन खां काबुलका नहीं, बल्कि बुखाराका पक्षपाती था । उसने लम्बे केशोंवाली अफगानोंकी तीन सौ खोपडियोंसे अपने किलेके दरवाजेको सजाया था, और १८६३ ई०में काबुलपर चढाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन इसके बाद ही उसके संरक्षक अमीर-बुखाराको भी रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी ।

(५) **अन्दखुद (अन्दखोइ)**—यह बुखारा और हिरातके बीचमें खुरासानका एक भाग है जो देरतक अफगानिस्तानके हाथमें रहा । यहां अहमदशाह अब्दालीके पुत्र तेमूरशाहके नामका खुतबा और सिक्का चलता रहा । तेमूरशाहकी ओरसे अफशार कबीलेका सरदार रहमतुल्ला यहाका शासन करता था । बुखाराके अमीर शाह मुरादसे लडते वक्त वह मारा गया । इसके बाद इल्दुज खान शासक था । १८४० ई०में अन्दखुदको बुखाराने ले लिया । यहांके बाशिन्दे मुख्यतः तुर्कमान हैं । अन्दखुदको वास्तविक नर्क कहा जाता था—यहांका पानी खारा और कड़ुवा है, रेगिस्तानमें बालू तपती है, और जहरीली मक्खियां और बिच्छू यहां बहुत मिलते थे । लेकिन अब तो वह कलका नर्क सोवियत तुर्कमानिस्तानका भाग बनकर वास्तविक स्वर्ग बननेके रास्तेमे है ।

(६) **शाबिरगान**—१८१२ ई०में यहा इरज खान फिर रुस्तम खान शासक रहा । १८५३ ई० मे इसे अफगानोंने ले लिया, और तबसे अफगानिस्तानमें है ।

(७) **सरीपुल**—महमूद खान यहांका शासक था, लेकिन काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने १८५३ ई०में जब शाबिरगानको लिया, उसी समयसे सरीपुल भी काबुलके हाथमें चला गया ।

१९वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें एक अंग्रेज लेखकने अफगानी तुर्किस्तानके बारेमें लिखा था—"इन उज्बेक रियासतोंका अधिकांश, चाहे नामके लिये ही हो, अब अफगानोंकी प्रजा हैं, लेकिन अभी हाल हीमें अफगानोंने इन्हें जीता है, और वह अफगानी जूयेको खुशीसे उठानेके लिये तैयार नहीं है । यह अंग्रेजोंके लिये कहांतक बुद्धिमानीकी बात है, जो कि वह आजतक इन रियासतोंको अफगानिस्तान-का अभिन्न अंग माननेपर जोर दे रहे हैं । अंग्रेजोंका ऐसा करना राजनीतिक बात हो सकती है, लेकिन नृवंश और इतिहासकी वह बात नहीं है । इसे असंदिग्ध रूपसे कहा जा सकता है, कि नसल और इतिहास दोनोंकी दृष्टिसे यहांके सबसे अधिक निवासी काबुल नही बुखारासे संबंध रखते है ।"

अंग्रेजोंके बलपर अफगानोंने इस शुद्ध उज्बेक इलाकेको अपने हाथमें बनाये रक्खा । पहले तो अमीरों-अमीरोंका सवाल था, लेकिन अब वक्षु नदीके उत्तरमें मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली, तथा विद्या और उद्योग-धंधेमें आगे बढ़ी उज्बेक जातिका अपना गणराज्य है । वक्षुके दक्षिण तटके उज्बेक परले पार तेर्मिज नगरीको रातको हजारों बिजलीके चिरागोंसे जगमगाते और दिनको कारखानोंकी चिमनियोंसे धुआ उगलते देखकर ठंढी आह लेकर कहते है—"कबतक हम अपने उत्तरी भाइयोंसे अलग रक्खे जायंगे ?"

स्रोत-ग्रन्थ

१. आजियात्स्कया रोस्सिया (अ. क्रूवेर आदि, १९१० ई० पृष्ठ २३६–४८)
२. इस्तोरिया सससर (अ. म. र. दोनिकन् ४ जिल्द)
३. तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द, १८८०)
४. ओत्चेत् ओ कोमेन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व. व. वेर्तोल्द, "इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, जिल्द १. पृष्ठ १–२२)
५. La rivalite anglo-russie on XIX siecle en Asie (A.M.F. Rouire, Paris 1908)
६. History of Mongol (H. H. Howorth, London (1876-88)

अध्याय ५

खीवाके खान (१७००--१८८१ ई०)

खीवा अर्थात् प्राचीन ख्वारेज्ममे किस तरह उज्बेकोंके खान शासन करने लगे, इसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं। १८वी सदीके आरम्भमे पहला उज्बेक-वंश खतम हो गया, लेकिन मध्य-एसियामें अब भी चिङ्-गिस् खानवाले राजकुमारोंकी बड़ी मांग थी, इसलिये उन्हें ढूढ़-ढूढ़कर लाकर खान बनाया जाता था। ऐसे ही बाहरसे लाये हुये खानोंने प्रायः सौ सालोंके लिये खीवाको अपने हाथमे रखा, जिसके बाद अन्तिम कंकुरत-वंशने शासन किया।

§१. बाहरी वंश (१७००--१८०४ ई०)

अधिकारच्युत वंशके राजकुमार अब भी ढूढ़नेसे मिल जाते, लेकिन अन्तिम खानोंके अत्याचारोसे तंग आकर खीवाके प्रभावशाली आदमियोंने उन्हें लेना पसंद नहीं किया, और बुखाराके राजवंश एवं कजाको और कल्मकोंमें दूत भेजकर किसी राजकुमारको ढूंढ़ना चाहा। इस समय पुराने राजवंशके कितने ही लोग अरालके एक द्वीपमे रहते थे। पहला खान अरंक बनाया गया, जो कराकल्पकके खानोसे संबंध रखता था।

१. अरंक, एवरंक, अवरंग खान

बादशाह औरंगजेबका ही नाम इस खानका भी था, और शायद यह औरंगजेबका अन्तिम समकालीन था। लेकिन यह या इसके वंशने बहुत दिनोंतक शासन नहीं किया और लोगोंने इसके बाद शेरगाजीको खान बनाया।

२. शेरगाजी (--१७१३ ई०)

खीवाका खान बननेसे पहले शेरगाजी बुखारामें रहता था, वहींसे इसे लाया गया। १७१३ ई०में तुर्कमान सरदार खोजा नफस अस्त्राखान गया था। वहां वह राजुल समानोफसे मिला। समानोफ गेलानका निवासी था, लेकिन पीछे रूसमें ईसाई बनकर बस गया था। खोजाने उसे समझाया, कि तुर्कमानोंको मिलाकर निम्न-वक्षुके जिलोंको रूसियोंको ले लेना चाहिये, वहां बहुत सोना है। उसने यह भी बतलाया, कि उज्बेक-शासकोंने रूसियोंके भयसे ही बांध बांधकर वक्षुको कास्पियनसे हटा अराल समुद्रमें डाल दिया, उसे फिर कास्पियनमें डाला जा सकता है, उसके बाद आसानीसे वोल्गाके जहाज कास्पियन होकर वक्षुके भीतर जा सकेंगे। खोजाकी यह बात यद्यपि अब २०वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें सच्ची होने जा रही है, लेकिन उस समय उसने इसे रूसियोंको लोभमें डालनेके लिये कहा था। इसी समय राजुल गागरिनसे पीतर I को पता लगा, कि यारकन्दके पास सोनेकी खानें हैं। पीतरको अपने युद्धोंके लिये सोनेकी बड़ी अवश्यकता थी। ऐसे समय कितने ही शासक कीमियांगरोंके जालमें पड़ते देखे गये हैं, इसलिये यदि सोनेकी ख़ानोंकी ओर पीतर असाधारण रूपसे आकृष्ट हुआ हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। खोजाको अपने साथ ले राजुल समानोफ राजधानी पीतरबुर्ग गया। उस समय गारद-कप्तान तथा मुसलमानसे ईसाई बना राजुल बेकोविच चेर्कास्की सम्राट्का बहुत प्रिय दरबारी था। उसने दोनोंको जारसे मिलाया। पीतरबुर्गमें रहते ख़ीवाके दूत अशुरबेक (१७१३-१५ ई०)

ने उनकी बातका समर्थन करते हुये कहा, कि रूसियोंको वक्षुके कास्पियनमें गिरनेके पुराने स्थान (शायद क्रास्नोवोद्स्क)को दस हजार सैनिकोंके रखने लायक बनाना चाहिये। यदि रूसी वक्षुको उसकी पुरानी धारमें डालना चाहेंगे, तो हमारा खान (शेरगाजी) विरोध नहीं करेगा। अशुर-बेक बहुत-सा भेंट-उपहार पाकर १७१५ ई०में अपने खानके पास लौटा, लेकिन अरंग और शेरगाजीके सिंहासनारोहणके समय हुई गड़बड़ीके कारण वह अस्त्राखानमें रुक गया। इसी समय पीतरने अशुरबेकको भारत जा वहांसे तोता और चीता लानेके लिये कहा। राजुल बेकोविच चेर्कास्की (चेरकास-राजकुमार) ने ईरानके शाह हुसेनके शासनकी गड़बड़ियोंके समय रूसमें शरण ली थी। उसक मरनेपर उसके पुत्र अलक्सान्द्रने ईसाई बन राजुल बोरिस अलक्सान्द्र-पुत्र गालितजिनकी लड़कीसे ब्याह किया, और पीतरका गारद-अफसर बना। इसी अलक्सान्द्रके नतत्वम पीतरने खीवाके लिये एक अभियान भेजा। उसके जिम्मे काम दिया गया था—वक्षुकी पुरानी धाराकी सर्वे करना, ख्वारेज्मके खानसे रूसकी अधीनता स्वीकार कराना, और उपयुक्त स्थानोंपर किले बनवाना। यह सब काम कर लेने पर बुखारा के अमीरसे बातचीत करना, फिर लेफ्टिनेंट कोजिनको भेजकर स्थलमार्गसे भारत जानेके रास्ते-का पता लगाना, और एक दूसरे आदमीको यारकन्दक सोनेकी खानोंके बारेमें जाननेके लिये भेजना।

पीतरने उज्बेक-खानों और दिल्लीके बादशाहके लिये चिट्ठियां दी थीं। १७१६ ई०की गर्मियोंमें राजुल बकोविच चार हजार आदमियोंके साथ रवाना हुआ। उसने कास्पियन तटपर करागन, अलक्सन्द्रोवयेस्क और क्रास्नोवोद्स्कके किले बनाये, जिनमें अन्तिम उसी जगह बनाया गया, जहांपर पहले वक्षु कास्पियनमें गिरती थी। इन किलोंमें सैनिकोंको रखकर बेकोविचने खीवाके खानको अपने आनेकी खबर देनेके लिये किरियक (ग्रीक) वोरानिनको भेजा। वोरानिन अस्त्राखानम बसे ग्रीकोंमेंसे था। राजुल स्वयं वोल्गाके तटपर लौट आया। कजानसे पांच सौ स्वीड युद्धबंदियोंको भर्ती करके मेजर फ्राकेनबर्गको उनका अफसर बना बेकोविचने फिर वोल्गातटसे १ जुलाई १७१७ ई०को प्रस्थान किया। अबकी उसने ग्रेबेन्स्कके रूसी कसाकों और नोगाइयोंके इलाकेमें होते स्थलमार्गसे यात्रा की। बेकोविचके साथ अस्त्राखानके रहनेवाले तीन सौ तारतार, कितने ही और बुखारी कारीगर आदि भी थे। गुरियेफमें पहुंचनेपर उरालके पंद्रह सौ कसाक आ मिले। दो दिन बाद यम्बा नदीके तटपर पहुंच बेड़ोंका पुल बना उसे पार किया। बेकोविचने भारतका रास्ता ढूढ़नेके लिये मिर्जा तौकेलेफको भेजा, लेकिन उसे ईरानियोंने अस्त्राबादमें रोक लिया, जहासे पीछे उसे अस्त्राखान भेज दिया गया। यद्यपि उस समय अस्त्राखान, बाकू, बुखारा, समरकन्द आदिमें काफी संख्यामें भारतीय ब्यापारी रहते थ, जिनसे भारतका रास्ता आसानीसे मालूम हो सकता था, लेकिन पीतर सैनिक दृष्टिसे भी सुभीतेका कोई रास्ता ढूढ़ना चाहता था।

यहां बेकोविचको कल्मक थैची आयुका और पहले भेजे दूत वोरानिनने बतलाया, कि खीवावाले अभियानका विरोध करेंगे। यम्बा तटसे दो दिन चलनेके बाद वह बगचतोफ और पांच दिन और चलकर इरकित्श-गिरि (उस्तउर्त या चिंक) पहुंचा। उस्तउर्तकी ऊंची अधि-त्यकाको पार करक वह अराल समुद्रके तटपर गया। अब वह ऐसी भूमिमें थे, जहां इतने आदमियोंके लिये पानी मिलना आसान नहीं था। इसके लिये उन्हें जगह-जगह नये कुएं खोदने पड़े, और कितने ही पुराने कुंओंकी मरम्मत करनी पड़ी। इस प्रकार पानीका प्रबंध करके वह सात सप्ताहतक चलते गये। जब खीवा चार दिन रह गया, तो खानके दूत घोड़ों, चोगों आदिकी भेंट ले बकोविचके पास आये। यद्यपि उन्होंने एक ओर बाहर से इस तरह शिष्टा-चार दिखलाया, दूसरी ओर खीवाके घुड़सवार बेकोविचके ऊपर आक्रमण करते रहे। बेकोविचके आदमियोंने भी अपने बारूदी हथियारोंसे मुकाबिला किया, जिसपर लोग अपने कस्बों और गांवोंको छोड़कर खीवाकी ओर भागने लगे। खानने शत्रुकी शक्तिका अंदाजा लगा चाल चलते हुये कहा—"गलतीके लिये हम क्षमा मांगते हुये आपका स्वागत करते

है, लेकिन आपकी सेनासे लोग भयभीत हैं। सेनाको वहीं रखकर आप मामूली आदमियोंके साथ पधारिये।" इसपर पांच सौ आदमियोंको साथ ले बेकोविच खीवा शहरमें पहुंचा। खानने पीछे छोड़े सैनिकोंके नाम बेकोविचसे जबर्दस्ती या जाली चिट्ठी लिखवाई, जिसमें कहा गया था कि अपने हथियारोंको खानके अफसरको दे दो और एक नगरमें जाकर डेरा डालो। रूसियोंको क्या पता था? उन्होंने चिट्ठीको सच्ची मानकर हथियार दे दिये, और भिन्न-भिन्न जगहोंमें जाकर डेरा डाला। इसी समय खीवावालोंने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया। जो मारे जानेसे बचे उन्हें उन्होंने दास बना लिया। कुछ रूसी सैनिक और तोपखानेके आदमी डरके मारे खानकी सेनामें भी भर्ती हो गये। बेकोविचको लाल कपड़ा पहनाकर खानके तम्बूके सामने ला उसे सिज्दा करनेके लिये हुक्म दिया गया। इन्कार करनेपर पहले उसके पैर काट डाले गये, फिर बड़ी क्रूरतासे उसके प्राण लिये गये। उसकी खालमें भूसा भरकर बुखाराके खानके पास भेज दिया गया, लेकिन उसने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, और खीवाके दूतको यह कहकर भगा दिया, कि तुम मनुष्यका खून पीनेवाले नरभक्षक हो। राजुल समानोफ और दूसरे प्रमुख व्यक्तियोंके सिरोंको काटकर खीवाके दरवाजोंपर भालेसे लटका दिया गया, जो बहुत सालों तक वैसे ही लटकते रहे। तुर्कमानोंने उस समय उज्बेकोंसे खरीदे दो रूसी गुलामोंको हेन्वे नामक एक युरोपीय सरदारको बेचना चाहा। कहते हैं, बेकोविचके बच्चे और बीबी वोल्गामें डूब मरे थे, जिसके कारण भी उसका दिमाग ठीकसे काम नहीं कर रहा था, और वह इतनी बड़ी गलती कर बैठा।

पीतरने फिर भी मध्य-एसियाको छोड़ा नहीं। उसने तुर्की-फारसी जाननेवाले अपने एक इतालियन नौकर फ्लोरियो बेनेवेनीको भेजा, जो ईरानके रास्ते नवम्बर १७२१ ई०में बुखारा पहुंचकर वहां चार साल रहा। अबुल्फैज मुहम्मद खांने बेनेवेनीकी बहुत खातिर की थी।

शेरगाजीको पहिले कितने ही उज्बेक बुखाराके तख्तपर बैठाना चाहते थे, लेकिन उसमें सफल न हो वह जब खीवाकी गद्दीपर बैठा, तो उसके आदमी बुखारामें लूटमार करने लगे। इसपर बुखारियोंने खीवाके पुराने वंश अरालियोंका पक्ष लेना चाहा। उन्होंने १७०७ ई०में अबुलगाजीके वंशज तेमूर सुल्तानको शेरगाजीका प्रतिद्वंद्वी खड़ा किया—वह मूसाखानका पुत्र था, जो बापके मरनेपर बुखारामें रहता था। तेमूरका बड़ा भाई बलखका राज्यपाल था। बड़े भाईको अरालियोंने अपना खान चुना था। बुखारियोंकी मददसे तेमूर सुल्तानने दो बार खीवापर आक्रमण किया। शेरगाजीको बुखारा और तेमूरसे ही मुकाबिला नहीं करना था, बल्कि उसे रूसियोंसे भी बहुत भय था। उसने पीतरको प्रसन्न करनेके लिए रूसी बंदियोंको छोड़ दिया और बेनेवेनीको खीवा आनेके लिये बहुत आग्रह किया। इस समय बुखारामें बड़ी अराजकता फैली हुई थी। वहांके खान अबुल्फैजके खिलाफ यह भी इल्जाम लगाया जाता था, कि उसने एक काफिर (बेनेवेनी) को अपने पास रख रक्खा है। पीतरने ईरानपर जो सफल अभियान किया था, उसकी खबर पा उज्बेकोंका दिमाग कुछ ठंढा हुआ, लेकिन शेरगाजीकी परेशानी कम नहीं हुई। १६ मार्च १७२५ ई० को बेनेवेनीने अपनी सरकारके पास पत्र लिखा था, कि बुखाराकी हालत बहुत डांवाडोल है; सारे रास्ते लुटेरोंके हाथमें हैं। बलखके पुराने शासकने तेमूरके भाईसे उस इलाकेको छीनकर उसे मार डाला। शेरगाजीके लिये दो साल बहुत मुसीबतके थे। तेमूर सुल्तान और उसके सहायक अरालियों और कराकल्पकियोंने दो बार खीवापर चढ़ाई की। रजीम खानके समरकन्दसे आकर बुखारापर चढ़ाई करनेकी खबर आई, जिससे लोगोंमें बड़ी घबराहट मच गई। जिस समय बुखाराकी यह हालत थी, उसी समय बेनेवेनीने मशहदका रास्ता लेना चाहा। तब खीवाका पल्ला भारी हो गया था। १० फर्वरी १७२५ ई०को बेनेवेनी चुपकेसे निकल पड़ा और किसी तरह तुर्कमानोंके खतरेसे बचते खीवा पहुंचा। लोग कहीं गुप्तचर न समझ लें, इसलिये उसने युरोपीय छोड़ एसियाई पोशाक पहिन दाढ़ी रख ली थी। खीवा-खानने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया, और गुलाम रूसियोंके छोड़ देनेका वचन दिया। बेनेवेनीके खीवा पहुंचनेसे पहले ही तेमूर सुल्तान खीवापर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहा था, इसलिये भी शेरगाजी बहुत परेशान था। पीतरका दूत खीवाके राजदूत सुभानकुल्लीको ले वहांसे अगस्तमें रवाना हुआ,

और रूसकी सीमामें सुरक्षित पहुंच गया । इस समय ख्वारेज्म मध्य-एसियामे गुलामोंका सबसे बड़ा बाजार था। वहां दस हजार रूसी और ईरानी गुलाम खेतों और नहरोंपर काम करते थे। रूसी तो ईसाई होनेके कारण काफिर थे ही, ईरानियोंको शीया होनेकी वजहसे मुल्लोंने काफिर होनेका फतवा दे दिया था, इसलिये उनके बेचने-खरीदनेमें कोई रुकावट नही थी । खीवाकी बाजारोसे इन अभागे गुलामोंको कजाक, तुर्कमान और कल्मक खरीद ले जाते थे। १७२८ ई०मे रूसी और ईरानी गुलामोंने शेरगाजीको मारकर तेमूर सुल्तानको खान बनानेकी योजना बनाई थी, लेकिन पहिले ही भंडाफोड़ हो गया । बहुतसे षड्यंत्रकारी मार डाले गये, और अरालके खानको दो दिन बाद आकर खाली हाथ लौटना पड़ा।

१७३१ ई०मे रूसकी शासिका रानी अन्ना (१७३०-४० ई०) थी । उसने कर्नल एर्दबेर्गको दूत बनाकर खीवा भेजा, लेकिन रास्तेमें ही डाकू उसपर टूट पड़े, और सब माल गंवाकर उसे पीछे लौटने-के लिये मजबूर होना पड़ा।

३. इलबर्स (--१७४० ई०)

शेरगाजीके तुरन्त ही या कुछ साल बाद इलबर्स खीवाका खान बना। यह कजाकोंके खानवंशका था । १७३९ ई०में दिल्लीकी सड़कोंपर खूनकी नदियां बहा नादिरशाह जब लौटा, तो बुखाराके अमीर अबुल्फैजने उसे स्वागतका न्यौता दिया। उसने इलबर्सको भी इसकी खबर दी, जिसपर उसने जवाब दिया—"एक पापी आत्माको जबर्दस्ती तुम स्वर्गमें नहीं प्रविष्ट करा सकते।" नादिर जिस वक्त भारतमें लूटमार करनेके लिये गया था, उसी समय मैदान खाली पाकर इलबर्सने खुरासानको लूटा । भारतसे लौटनेपर चारबेकरसे नादिरने इलबर्सको अपने पास आनेके लिये संदेश भेजा, लेकिन जाकर नादिरके सामने कोर्निश करनेकी जगह इलबर्सके तीन हजार यामूद चारजूयपर चढ़ आये, जिन्हें नादिरके हाथों पिटना पड़ा। अबुल्फैजने बीचमे पड़कर क्षमादान दिलानेका प्रयत्न किया, और इसके लिये अपने तीन दूत इलबर्सके पास भेजे। इलबर्सने दो दूतोंको मरवा दिया और तीसरेको नाक-कान काटकर लौटाया । नादिर भला खीवाके खानकी इस गुस्ताखीको कैसे सह सकता था ? उसने अपनी सेनाको दो भागोंमें बांट-कर खीवापर चढ़ाई की। एक सेना वक्षुके बायें तटसे बढ़ी, और दूसरी दाहिनेसे । साथमें बहुतन्सी नावोंका बेड़ा भी चल रहा था । नादिरकी सेना जल्दी ही हजारास्प पहुंच गई। इलबर्स भी तैयार था । नादिरने हजारास्पसे आगे बढ़कर एक सेनाको खानकाह जानेका हुक्म दिया—इलबर्स उस समय खानकाहमे था । नादिरने आत्म-समर्पण करनेके लिये तीन दिन-की मुहलत दी। इसपर इलबर्स गर्दनमें तलवार और रस्सी बांधे नादिरके सामने आया, जिसने उसे माफ कर दिया। लेकिन इलबर्सने किसी खोजा (सैयद)का सिर कटवा लिया था । खोजाके पुत्रोंने खूनका बदला लेनेकी मांग की, जिसपर नादिरके हुक्मसे इलबर्स और उसके बीस अफसर मारे गये। खीवा छोड़ ख्वारेज्मके बाकी शहरोंने नादिरके सामने आत्म-समर्पण किया। इस संघर्षके समय इलबर्सने लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरसे सहायता मांगी थी, और उसने आकर खीवापर अधिकार कर लिया था । इसी समय अबुल्खैरके बुलानेपर रूसी सैनिक इंजीनियर ग्लादिशेफ, मुराविन और नजिमोर सिर-दरियाके मुहानेपर रूसी किला बनाने आये थे। वह दश्ते-कजाककी सर्वे कर चुके थे । खानको उसके डेरेमें न पा वह भी खीवा गये। अबुल्खैरने कुछ सुल्तानोंके साथ मुराविनको नादिरके पास भेजा, जिसने उनका अच्छा स्वागत किया । उसने अबुल्खैरको बुला भेजा, लेकिन वह नादिरपर क्यों विश्वास करने लगा ? नादिरकी कृपासे खीवाको हाथमे रखनेकी जगह अबुल्खैरने देश लौट जाना ही अच्छा समझा। खीवाके नागरिकोंने चार दिनतक नादिरके आक्रमणको विफल करनेकी कोशिश की, लेकिन अन्तमें आत्म-समर्पण करना पड़ा । नादिरने चार हजार तरुण उज्बेकोंको अपनी सेनामें भर्ती करके खुरासान, और बारह हजार रूसी तथा ईरानी गुलामोंको मुक्त करके अपने घर भेज दिया। उन्हींके बसनेके लिये नादिरने अबीवर्दके पास एक नया शहर बसाया।

४. ताहिरखान (१७४०–४१ ई०)

इलबर्सके मारे जानेके बाद बुखारा-खानके संबंधी ताहिरको खीवाका खान बना नादिर चारजूयकी ओर लौट पड़ा। ताहिर बहुत समयतक राज्य नहीं कर पाया। अगस्त १७४१ ई०में नादिर कास्पियनके पश्चिमी तटवर्ती दागिस्तानमें लड़ाईमें फंसा था। इसी समय उज्बेक अरालियोंने अबुल्खैरके पुत्र नूरअलीको बुलाया, जिसने खीवा पहुंचकर ताहिरको मार डाला। थोड़ी देरके लिये नूरअलीने शासन संभाला, लेकिन जब नादिरशाहके फिर आनेकी खबर मिली, तो वह कजाकोंमें भाग गया। नादिरकी सेना नसरुल्ला मिर्जाके नेतृत्वमें मेर्व पहुंची। विद्रोही नेता एर्तुक ईनकने वहां जाकर क्षमा मांगी, नादिरने उसे माफ कर दिया।

५. अबुल् मुहम्मद, इलबर्स-पुत्र (१७४१ ई०)

इलबर्सका पुत्र अबुल् मुहम्मद नादिरकी शरणमें था। नादिरने उसीको खीवाका खान और एर्तुकको उसका वजीर बनाया। एर्तुकको बहुत जल्दी उज्बेक और यामूद विद्रोहियोंने मार डाला और खान अबुल् मुहम्मद भी खीवासे लुप्त हो गया।

६. अबुलगाजी II (१७४५ ई०)

विद्रोहियोंने अब अबुलगाजीको अपना खान बनाया। इस समय उज्बेकोंके साथ-साथ तुर्कमान यामूद कबीलेका भी खीवा-राज्यमें बहुत जोर था। उधर ईरान नहीं चाहता था, कि खीवावाले उसके हाथसे निकल जायं। विद्रोह होते ही रहते थे। ईरानी जेनरल अलीकुल्लीने १७४५ ई०में ख्वारेज्मपर आक्रमणकर उरगजके पास यामूदोंको हराकर बलखानकी पहाड़ियोंकी ओर भगा दिया, और नये खानको नियुक्त करके ईरानका रास्ता लिया।

७. काइप, बातिर-पुत्र (१७५० ई०)

बातिर शायद कराकल्पकोंका खान था। १७५० ई०में इरबेक नामक एक दूतने रूसमें जाकर कहा था, कि खीवा जानेवाले कारवांको बातिरके राज्यके भीतरसे आना चाहिये, नूरअलीके राज्यके भीतरसे आना सुरक्षित नही है। इसी समय कजाक अरालियोंपर आक्रमण करके उनके बहुतसे आदमी और पशु पकड़ ले गये। ये नूरअलीके आदमी थे, इसलिये खीवामें नूरअलीके प्रजाजनोंको पकड़कर उन्हें लूटका माल लौटानेके लिये मजबूर किया गया। बातिरका पुत्र काइप खीवामें आनेसे पहले लघु-ओर्दूके एक कबीलेका खान रह चुका था। काइपने नूरअलीके राज्यसे ओरेनबुर्ग जानेके रास्तेको बंद कर दिया—रूसियोंके व्यापारका केंद्र होनेके कारण ओरेनबुर्गसे व्यापारियोंको बहुत फायदा था। काइपके हुक्मका बदला लेनेके लिये १७५३ई०में नूरअलीने खीवाके कारवांको लूटा और रूससे कहा, कि यदि तोपखानेके साथ दस हजार सेना मिले, तो रूसके लिये हम खीवाको जीत सकते हैं। लेकिन रूसियोंने उसे माननेसे इन्कार ही नहीं कर दिया, बल्कि हुक्म दिया, कि लूटे मालको उसके मालिकोंको लौटा दो। रूस इस तरह खीवासे निरबाध व्यापार होने देना चाहता था, लेकिन मध्य-एसियाके शासकों और अमीरोंके लिये लूट तो एक वैध आय थी। १७५४ ई०में काइपने खीवामें आये एक रूसी कारवांको रोक लिया, और साल भर बाद उसे छोड़ा। काइपके दूतने रूसमें जाकर कहा, कि उज्बेक हमारे खानको पसंद नहीं करते, इसलिये उसकी मददके लिये रूसको हाथ बढ़ाना चाहिये। रूसने इन्कार कर दिया,। नूरअली और उसके पुत्र एरलीके पकड़े जानेपर मुक्ति-धन देकर छुड़ानेका वचन देते हुये सेना एकत्रित की। सेनाको आशीर्वाद देनेके वक्त खोजाने ऐसा करनेसे मना कर दिया।

काइप विद्वान् और साथ ही अत्यन्त क्रूर आदमी था। उसकी क्रूरताके कारण लोगोंने विद्रोह करके उसे लघु-ओर्दूके कजाकोंमें भागनेके लिए मजबूर किया, जिनके ही भीतर रहते

बनाया, लेकिन उसने अपने भाई इल्तजारके लिये पदको लेनेसे इन्कार कर दिया। इल्तज़ारने छ महीनेतक ईनकके तौरपर काम किया। वह रोज खान (कजाक)के पास मुजरा करने जाता। एक रात उसने अपने भाई कुतुलुक मुरादको बुलाकर कहा—"तेमूर लंग, नादिरशाह और बुखारा-अमीर मुहम्मद रहीम कौनसे छिङ-गिस्-वंशके खानोंके पुत्र थे, उन्होंने अपन भाग्यको अपने आप बनाया। अल्लाहकी मेहरबानी है, कि मेरे पास निर्णय करनेकी शक्ति, साहस और सिपाही हैं। कबतक मैं इस गुड़ियाको सम्हाले बैठा रहूंगा ? मैं स्वयं खान बनना चाहता हूं। इसके बारेमें तुम्हारी क्या सलाह है ? मैं कजाक खानको कुछ पैसा देकर उसे उसके घर भेज दूंगा, और फिर यामूदोंसे पिंड छुड़ाऊंगा।" भाईने उसकी बातका समर्थन करते हुये फातेहा पढ़ा। दूसरे दिन इल्तिजारने गुड़िया-खानको किलेसे निकालकर कजाकोंमें भेज दिया और फिर अपने गद्दीपर बैठने हुये कंकुरत राजवंशकी स्थापना की।

§२. कंकुरत-वंश (१८०४-८१ ई०)

इस वंशमे निम्न खान हुयेः—

१. इल्तजार, ईरज-पुत्र, एवज-पुत्र	१८०४-६ ई०
२. मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र	१८०६-२५ "
३ अल्लाकुल, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८२५-४२ "
४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र	१८४२-४५ "
५. मुहम्मद अमीन, अल्लाकुल-पुत्र	१८४५-५५ "
६. अब्दुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
७. कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
८. सैयद मुहम्मद, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८५५-६५ "
(मुहम्मद फना, तुरासूफी-भतीजा)	१८६५ "
९. सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र	१८६५ "

१. इल्तजार, इराज-पुत्र, एवज-पुत्र (१८०४-६ ई०)

जानेवाले खानसे इल्तजारने कहा था—मैं दूसरे खानको बुला रहा हूं। उसने अपनी सेना बढ़ा दस हजार उज्बेकोंको कवचबद्ध किया, फिर मौलवियों, दूसरे धार्मिक नेताओ, अतालीकों, ईनकोंको बुलाकर कहा, कि दूसरे कजाक-खानके बुलानेकी जरूरत नही। उइगुर अतालीक बेक फुलाद सहमत नही हुआ, बाकी सबने फातेहा पढ़कर दुआ मागी। इल्तजार उस समय चुप रहा। बड़े दरबारियो, आलिमो और कबीलोंके अकसक्कालो (ज्येष्ठों)में उसने खलअत और इनाम बांटे, उसके नामसे खुतबा पढ़ा गया। यामूदोंको छोड़ उज्बेको, कराकल्पकों और तुर्कमानोंने नये खानको बधाई दी। इल्तजार जानता था, कि अन्तमें मेरे भाग्यका फैसला तलवार द्वारा होगा, इसलिये उसने अपना सारा ध्यान सेनाको बढाने और मजबूत करनेमें लगाया। तैयारी हो जानेपर वह सरकश यामूदोंके ऊपर पड़ा, जो कि उस समय अस्त्राबाद (ईरान) और गूरगानके इलाकोंमें रहते थे। उसने उनसे मांग की—लूटपाटके जीवनको छोड़ दो, ऊंट-भेड़-फसलपर कर दो, नहीं तो हमारे राज्यसे निकल जाओ। उज्बकोंको लूटनेवाली यामूदोंकी एक टोलीके मुखियाको नाकमे रस्सी डालकर बाजारमें घुमाया गया, लेकिन यामूद घुमन्तुओंका लूटना तो पीढ़ियोंसे व्यवसाय था, उसे वह भला कैसे छोड़ते ? इल्तजार भी निश्चय कर चुका था। उसने एक बार आक्रमण करके पांच सौ यामूदोंको मारा, पांच सौको कैदी बनाया, बाकी प्राण लेकर रेगिस्तानमे भाग गये। अराल द्वीपवाले भी लूट-मारसे तंग कर रहे थे, इसलिये इल्तजार उनके नेता तुरासूफीके ऊपर पड़ा, पर उसे असफल होकर ही खीवा लौटना पड़ा। उसने बुखारामें लूट-मार करके धन जमा करना चाहा, लेकिन बेक पुलादने इसे बुद्धिमानीकी बात नहीं कही। इसपर वह पुलादसे नाराज हो गया, और दरबार छोड़ते समय उसे मरवा दिया। पुलादके

परिवार तथा कबीले (उइगुर) ने विद्रोह किया, इसपर इल्तजारने उइगुर-उज्बेकोंका भीषण हत्याकांड किया। जो कत्ल होनेसे बचे, वे भाग गये, बाकियोंने 'भेड़िये द्वारा जबर्दस्ती लादी शांति'के सामने सिर नवाया। इल्तजारने अपने राज्यकी सीमाको बढ़ानेकी कोशिश की। उस समय उरगंजमें एक बड़ा पुराना खानदानी सैयद अख्तेखोजा रहता था। इल्तजारने बिना बापकी मर्जीके उसकी लड़की ब्याह ली। इसपर खोजाने बुखारा भाग गये यामूदोंको लूटका प्रलोभन देकर बुलाया, और उरगंजमें उन्हें रहनेके लिये जमीन दी। अब खान लोगोंपर पहलेसे भी ज्यादा खुलकर अत्याचार करने लगा। बाहर अब भी इल्तजारके अभियान चलते रहे। १८०५ ई०मे वह बुखाराके ऊपर चढा। उस समय अमीर-बुखाराका दूत अब्दुल करीम जारके दरबारमें जाते हुये उरगंज आया था। उसे जल्दी ही करशी पहुंचकर राज्यपाल बननेका प्रलोभन दे तैयारी करनेके लिये कहा। महीने बाद इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें घुसकर लूट-मार की, और वहांसे पचास हजार भेड़े तथा हजारों ऊट लूट लाया। अमीर-बुखाराने तैयारी करके मुहम्मद नियाज बीको तीस हजार सेना देकर रवाना किया। इधर इल्तजार भी तेक्के, यामूद, सलार, चन्दोर, अमीरअली, बूजेजी, कफ़ुरत, कंकली, मगित आदि तुर्कमान और उज्बेक कबीलोंके बारह हजार जवानोंको लिये वक्षुके किनारे-किनारे चला। उसने बुखाराकी पहली टुकडीपर अकस्मात आक्रमण कर बुखारी दादख्वाहके पुत्रको खतमकर पाच सौ आदमियोंको मारा या पकड़ लिया। बदी रस्सीमें बंधे इल्तजारके तम्बूपर लाये गये। खीवाकी सेनाने बुखारियोके लौटनेके रास्तेको भी काट दिया था, अतः बुखारियोंके लिये लड़ने-मरनेके सिवा कोई रास्ता नही था। वह खूब लड़े। खीवावाले हार गये। उनके बहुतसे आदमी भागते वक्त नदीमें डूब गये। इल्तजारने नावमे बैठकर भागना चाहा। उसके बहुतसे साथी भी प्राण बचानेके लिये उसी नावपर सवार हो गये, और बोझके मारे नाव डूब गई—बहुतसे आदमियों-के साथ इल्तजार भी वक्षुमें डूब मरा। उसके भाई हसनमुराद और जानमुराद भी डूब मरे। मुहम्मद रहीम बुखारियोंके हाथमें बन्दी बना और सिर्फ कुतुलुक मुराद बक बचकर खीवा पहुंचा। यह घटना १८०६ ई०की है।

२. मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र (१८०६—२५ ई०)

बुखारामें उस समय अमीर हैदरका शासन था। खीवावालोसे निर्दयतापूर्वक व्यवहार करके खूनी झगड़ेको और बढाना उसने पसंद नहीं किया, और बंदियोको क्षमा करके उन्हें खलअत और इनाम दे मुक्त कर दिया। इस दयाके लिये कुतुलुक मुरादने अपने भावोको प्रकट करते हुये कहा—"मै अमीर हैदरका कुत्ता, दास हूं, उसका हुक्म माननेके लिये तैयार हूं।" कुतुलुक मुरादको ईनककी पदवी देकर अमीर हैदरने खीवाका राज्यपाल नियुक्त किया था, लेकिन उसके आनेसे पहले ही ख्वारेज्मियोने उसके छोटे भाई मुहम्मद रहीमको खान बना दिया था। कुतुलुकने भी उसे स्वीकार किया, और बुखाराके अमीरके पास लिखकर अपनी मजबूरी प्रकट की। अरालियोंने इसी समय उज्बेकोको लूटा-मारा। नये खानके चचा मुहम्मद रजाबेकने उइगुरोंके विद्रोहके समय उनका साथ दिया था। उसने अब भी विद्रोह करना चाहा, लेकिन उसे हारना पड़ा। कजाकोंके कई साल लूट-मार करनेका जवाब खानकी ओरसे] था, जाड़ोंमें रजाबेकका चेकली, तुर्त-कारा (शेरगाजी), चूमेके, जलैर (बुल्की-सुल्तान)के कजाकोंको लूटने जाना। कजाकोंने मजबूर होकर सौ भेड़ोंपर एक भेड़ खानको देना मंजूर किया। शेरगाजी स्वयं १८१९ ई०मे खीवा-दरबारमे आया, और वही मरा। उसके बाद रहीम खानने अपने बेटेको उसके स्थानपर नियुक्त किया, जिसे कजाकोंने भी मान लिया। अगले साल तुर्तकारा और ओई कजाकोंके ऊपर भी वैसी ही बीती। जाड़ोंमें सरकश कंकुरतोंके अरालद्वीपपर बर्फके ऊपरसे चढ़ाई की, लेकिन आक्रमण उतना सफल नहीं रहा, तो भी खीवाके एक शरणार्थी और उसके पुत्रने तुरासूफी मुरादके सिरको काटकर बोरेमें ला खानके सामने पेश किया। मुहम्मद रहीमने खुश होकर बाप-बटको नौकर रख लिया। जब अराली कंकुरतोंको अपने नेताके मारे जानेकी खबर लगी, तो

उन्होंने खीवाके सुल्तानकी अधीनता स्वीकार की। तुरामुरादके परिवार और खजानेको ले खानने खीवा लौटकर मुरादकी लड़कीसे ब्याह किया। पुराने खानके वंशसे ब्याह करनेके कारण अब वंशका सम्मान बढ़ गया। रहीमने इल्तजारकी सैयद-पुत्री विधवाको भी ब्याहा। अब्दुल्करीमने अब्दुर्रहीमको क्रूरतामें शैतान लिखा है। उसने गर्भिणी अराली स्त्रियोंका पेट चीर गर्भके बच्चोंको टुकड़े-टुकड़े करके अपनी पशुताका परिचय दिया था। रहीमने अपने विरोधियोंको एक-एक करके मार डाला, या उन्हें देशसे बाहर निर्वासित कर दिया। उसके कठोर शासनके कारण यह फायदा जरूर हुआ, कि अब लूट-मार बन्द हो गई, और व्यापारी कारवांसे कबीलोंने मनमाना कर लेना छोड़ दिया। उसने कर की दर निश्चित कर दी, और कर उगाहनेके कस्टम (आयातकर) घर बनवाये। अपनी टकसाल स्थापित करके उसने खीवामें चांदी-सोनेके सिक्के ढलवाये।

ईरान शीया था। मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमान शीयोंको काफिरसे भी बदतर समझ उनके ऊपर लूट-मार करना पुण्य कार्य समझते थे। १८१३ ई०में खीवावालोंने खुरासानपर आक्रमण किया, लेकिन ईरानी सेनाने भी मुकाबिला किया, और चार दिनकी झड़पके बाद दोनों सेनायें पीछे हटी। लौटते समय रहीम खान गोकलान तुर्कमानोंके ऊपर पड़ा, और उनमेंसे बहुतेरे बंदी बनाये। फिर तेक्के तुर्कमानोंके ऊपर धावा बोल उनके जीते हुये खेतोंको छीनकर दक्षिणके नंगे पहाड़ोंमें खदेड़ दिया। इनमेंसे कुछ पीछे जाकर नहरके किनारेवाले इलाकेमें बस गये। रहीमने मंगिशलकके इलाकेमें डेरा रखनेवाले चन्दोर तुर्कमानोंको भी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। रहीमने तलवारके बलपर शांति स्थापित की। इससे खीवा और रूसके बीच कारवांका आना-जाना सुगम हो गया, और पूर्व तथा पश्चिमम व्यापार खूब बढ़ा। रहीमको बिना लड़े चैन नहीं आंता था। १८२० ई०में उसने बुखारापर चढ़ाई की, और जाकर चारजूयको एक महीनेतक घेरे रक्खा। इसी बीच उसके सैनिक पड़ोसमें घुमक्कड़ी करनेवाले तेक्के तुर्कमानोंको भी लूटते रहे। खीवावालोंके पास रूसके साथ संबंध होनेके कारण तोप भी थी, जिसने मदद अवश्य की, किन्तु बिना फैसलेके ही दोनों सेनाओंको लौट जाना पड़ा। रहीमका समकालीन अमीर हैदर भी बहुत मजबूत शासक था। अगले साल वह खुद सेनाके साथ आया। खीवाके नावोंके बेड़ेको उसकी तोपोंने रोक लिया। नदीमें पानी कम था, इसलिये दूर हटकर निकल भागनेका मौका नहीं मिला। रहीम खानके भाई कुतुलुक मुरादको हैदरने हराया। उसकी बहुतसी नावें नष्ट हो गयी, और खीवा-सेना पराजित हो पीछे लौटी। लेकिन १८२२ ई०में फिर कुतुलुक मुरादने बुखाराके राज्यमें कराकुलसक लूट-मार की। मरते वक्त कुतुलुकने मुसलमान भाइयोंपर वार करनेके लिये अमीर-बुखारासे क्षमा मांगी—"सचमुच गाजीके लिये यह शोभा नहीं देता था।"

१९वीं सदीके आरम्भमें काकेशसमें जारका शासन स्थापित हो चुका था, और अब पश्चिमी तटसे ही संतुष्ट न हो वह कास्पियनके पूर्वी तटपर भी अधिकार करनेके लिये व्यग्र था। उधर रहीम खानने पूर्वी तटपर रहनेवाले तुर्कमानोंको बुरी तरहसे दबा रक्खा था, इसलिये रूस उससे फायदा उठाना चाहता था। १८१९ ई०में गुर्जी (जार्जिया) के राज्यपालने पूर्वी कास्पियनके तटपर रहनेवाले तुर्कमानों तथा खीवासे भी संबंध स्थापित करनेके लिये मुरावेफको दूत बनाकर भेजा। मुरावेफ १९ सितम्बरको क्रास्नोवोद्स्कमें जहाजसे उतरा, और ६ अक्तूबरको खीवाके पास पहुंचा। उस समय खान शिकारमें गया हुआ था। उसके आदमियोंने मुरावेफको गुप्तचर समझ नजरबन्द कर खानने मुरावेफको मेहतर (वित्त-मंत्री) आगा यूसुफके घरमें ठहरा दिया। फिर किसी तरह मुरावेफ खानके दरबारमें उपस्थित होनेमें सफल हुआ। मुरावेफने खानके बारेमें लिखा था—"वह अपने सफेद रंगमें उज्बेकोंसे अधिक रूसी-सा मालूम होता था।" मुरावेफने राज्यपालका संदेश देते हुए कहा—"मंगिशलककी जगह क्रास्नोवोद्स्क द्वारा व्यापार-संबंध स्थापित करनेपर तीसकी जगह सत्रह दिनमें ही कारवां समुद्रतक पहुंचने लगेंगे। लेकिन क्रास्नोवोद्स्कका इलाका उस वक्त ईरानी काजार-वंशके हाथमें था, जब कि मंगिशलक

खीवाका था, इसलिये खान कारवा-पथको कैसे बदल सकता था? मुरावेफके लिखनेसे पता लगता है, कि उस समय खीवामें एक शासन-परिषद् थी, जिसका अध्यक्ष मेहतर यूसुफ आगा था। यूसुफ सर्त अर्थात् फारसी-भाषी ताजिक व्यापारीवर्गका प्रतिनिधि था। द्वितीय वजीर कुशबेगी उज्बेक, तीसरा खोजेश मेहरम खानके गुलामका पुत्र था, जो कस्टमका उच्चाधिकारी भी था। परिषद्के सबसे अधिक प्रभावशाली सदस्य थे—खानका भाई कुतुलुक मुराद और काजी (धर्माधिकारी)। परिषद्में चार प्रधान उज्बेक कबीलोंके सरदार भी सम्मिलित थे।

यह बतला आये हैं, कि खीवा उस वक्त गुलामोंका बहुत भारी बाजार था, जिसमें रूसी गुलामोंकी कीमत ज्यादा थी, लेकिन रूसी औरतोंकी अपेक्षा ईरानी औरते ज्यादा महंगी बिकती थीं।

मुहम्मद रहीम १२४१ हि०* मे मरा।

३. अल्लाकुल, रहीम-पुत्र (१८२५-४२ ई०)

रहीमके मरनेपर उसका बड़ा बेटा गद्दीपर बैठा। इसने बापके जमा किये हुये खजानेको बरबाद करना शुरू किया। १८३२ ई०में मेर्वपर चढ़ाई करके तेक्का तुर्कमानोंपर कर लगाया, जिसके लिये खीवासे रेगिस्तान (कराकुम)के बीचसे मेर्व जाते रास्तेपर हर पड़ावपर कुआं खोदना पड़ा। सरख्शके सलोरोंपर भी जबर्दस्ती कर लगाया। कर उगाहनेके लिये दोनो जगह कस्टम-गृह बनवाये। सरख्शसे लौटते समय अलमान्सके साथ बारनेस वहां आया था। उसने लिखा है—"नगरसे चंद मीलपर लूटके मालको गिना गया—एक सौ पद्रह आदमी, दो सौ ऊट और उतन ही ढोर थे। उन्होंने पहले ही लूटके मालको बाट लिया था, लेकिन पांचवां हिस्सा उरगंजके खानको भी दिया।" उस समय किजिलबासों (ईरानी शीयों)के ऊपर लूट करना धर्मयुद्ध माना जाता था, जसा कि स्पेनवाले मेक्सिको और पेरूमें अपने हाथोंको खूनसे रंगनको समझते थ, वह भी अपने लूटके मालका पांचवा हिस्सा स्पेनके राजाके पास भजते थे। इस प्रकार उससे कुछ ही शताब्दियों पहले स्पेनके युरोपीय भी उसी सिद्धांतको मानते थे, जिसे १९वीं सदीके आरम्भमें खीवाके सुन्नी मुसलमान।

बापके समयसे ही लूटपाटके बन्द होनेके कारण ख्वारेज्ममें व्यापार चमक उठा था, और बुखारा उरगंज-मंगिशलकके बीच स्थलसे, फिर अस्त्राखानतक समुद्र-मार्गसे बराबर व्यापारिक कारवां आते-जाते रहते थे। अराल समुद्रके पूर्वी तटसे एक नया व्यापारमार्ग खोलनेके लिये रहीम खानके समय १८२० ई०में रूसियोंने इस इलाकेकी सर्वे की। फिर पांच सौ सिपाहियों और दो तोपोंके साथ एक रूसी कारवा चला। खीवावाले क्यो पसंद करते, कि उत्तरका मार्ग खुल जाय, जिससे उरगंज और मंगिशलकका समृद्ध वणिक्पथ उजड़ जाय। उनकी शहपर तुर्कमानोंने रूसी काफिलेपर प्रहार किया, लेकिन उन्हें हारकर भागना पड़ा। तो भी काफिलेको अपने सौदेको जलाकर खाली हाथ पीछे लौटना पड़ा।

पहली बार असफल होनेके बाद अब अल्लाकुलके शासनकालमें १८३५ ई०में रूसियोंने मंगिशलकके बन्दरगाहके पास अपना किला बना खीवावालोंको डराना चाहा, लेकिन खानने उसकी परवाह नहीं की। इसी समय १२० रूसी इलाकेकी जांच-पड़ताल कर रहे थे, जिन्हें पकड़कर खीवावालोंने बुखाराके बाजारमें बेंच दिया। इसपर १८३६ ई०में जार निकोलाइ I के हुक्मसे ओरेनबुर्ग और अस्त्राखानमें खीवावाले व्यापारियोंको पकड़ लिया गया। उसी साल अगस्तमें निज्नीनवोगोरदके मेलेसे लौटते खीवाके छियालीस व्यापारियोंको भी जेलमें डाल दिया गया। यह स्मरण रहना चाहिये, कि बोल्शेविक-क्रांतिसे पहलेतक निज्नीनवोगोरदका मेला दुनियाका सबसे बड़ा व्यापारिक मेला था। हमारे सोनपुर मेलेका नम्बर उसके बाद आता था। ओरेनबुर्गके रूसी राज्यपाल जेनरल पेरोव्स्कीने खानको कड़े शब्दोंमें लिखा—"तुम्हारी कार्रवाई बुरी है। बुरे बीजका बुरा फल पैदा होता है। तुम्हें चाहिये, कि रूसी बंदियोंको लौटा दो, और कजाकोंके भीतर दखल देने और लूट-मारको बन्द करो। ऐसा करनेसे रूसियोंके साथ

*१६ VIII १८२५–७VII १८२६ ई०

तुम्हारा-जैसा व्यवहार होगा, वैसी ही सुविधायें खीवावालोको रूसमें मिलेंगी।" लिखा-पढी चलती रही, और दो सालमें सौ रूसी बंदी लौटाये गये, लेकिन दूसरी ओर १८३९ ई०में ही खीवावाले दो सौ रूसी मछुओंको कास्पियनसे पकड़ ले गये।

असफल रूसी अभियान (१८३९ ई०)—खीवाके खानकी गुस्ताखियोंको शक्तिशाली रूस भला कबतक बर्दाश्त करता? और यह तो वह समय था, जब कि युरोपमें भी रूसकी धाक जमी हुई थी। जेनरल पेरोव्स्कीने २६ नवम्बर १८३९ ई०के जाडोंमें छ हजार पैदल सेनाके साथ दस हजार ऊंटोंके ऊपर रसद ले ओरेनबुर्गसे प्रस्थान किया, लेकिन रास्तेमें उसे हिमविन्दुसे ४० डिग्री नीचेकी सर्दीका सामना करना पड़ा—नीचे बर्फकी ऊंची ढेर थी, ऊपरसे भयंकर हवा चलने लगी। हजारों सिपाहियोंने हिम-आहत हो अपनी अंगुलियों, पैरों और हाथोंको गंवाया, बहुतसे सर्दीमे मर गये। इस स्थितिका मुकाबिला करते हुये जैसे-तैसे रूसी खीवाकी सीमा पर अकबुलाकमे पहुंचे। खीवाका कुशबेगी (प्रधान-सेनापति) भी रूसियोंके मुकाबिलेके लिये तैयार था। बर्फ आठ फुट मोटी थी। कजाकोंने घोड़ोंके झुडको दौड़ाकर बर्फमें रास्ता बनाया, जिसके दोनों तरफ बर्फकी दीवार खडी थी। सब कोशिश करनेपर भी आगे बढ़ना सर्वनाशके मुहमे पड़ना समझ पेरोव्स्की लौट गया।

रूसियोंको मध्य-एसियाकी ओर—अर्थात् भारतके सीमांतके पास—पहुंचनेकी कोशिश करते देख अंग्रेज कैसे चुप रह सकते थे? मेजर टाड अंग्रेजोंके लिये अफगानिस्तान और बुखारामें अपना जाल बिछा रहा था। उसने हेरातसे काजी मुहम्मद हसनको दूत बनाकर बुखाराके अमीरके पास भेजा। अमीरने मिलकर काजीको बहुत फटकारा, कि वह इस्लामकी भूमिमे काफिरोंको घुसाना चाहता है। इसपर काजीने कहा—"अपने हथियारों, अनाज, सोना, खून और अपनी बुद्धिके साथ मुहम्मद शाहके हथियारोंसे ध्वस्त होते प्राचीरकी रक्षा करने अंग्रेज आये। उन्होंने काफिरोंसे सच्चे मुसलमानोंकी रक्षा की।" और फिर अमीर बुखारासे पूछा— "काफिर कौन है? ईरानी किजिलवास है, जिनकी कि आपने रक्षा की, या अग्रेज जिन्होंने कि सच्चे मोमिनोंकी रक्षा की? बहुत समय नहीं बीतेगा, कि रूसके आक्रमणको रोकनेके लिये भी उनकी सहायताकी अवश्यकता होगी।" काजीने रूसका भय दिखलाकर बुखाराके अमीरको प्रभावित किया, और सफलताकी सूचना देत ज़रीके रेशमी थैलेके भीतर मेजर टाडके पास अपना पत्र भेजा।

बुखारामे सफलताकी आशा देखकर टाडने कप्तान एबटको खीवाके सुल्तानके पास भेजा। उसके हुक्मके मुताबिक एबटन खानको रूसी कैदियोंके छोड़ देने तथा स्वयं अस्त्राखानमें जा वहां पकड़े गये खीवाके व्यापारियोंको छुड़ानेकी कोशिश की। एबट १८४० ई०के बसंतमे चला था, जब कि अभी-अभी जेनरल पेरोव्स्कीका अभियान भयंकर आफतमें पड़नेके बाद नष्टप्राय होकर लौटा था। उस समय खान एक काले तम्बूमें बैठा था, जब कि एबट उससे मिलने गया। एबटने जूता निकाल परदा उठाकर भीतर प्रवेश किया, फिर अपने हाथोंको अदबसे छातीपर रखकर "सलाम् अलेकुम्" कहकर बातचीत की। खानने उसके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव किया। उसके आनेकी खबर सुनकर स्वागत करनेके लिये पहले ही सैनिक भेजे थे। नगरके बाहर वजीरके एक महलमें एबटको टिकाया गया था। एबटने पहलेसे खीवामें बन्दी अंग्रेज गुप्तचर कर्नल स्टोडर्टको छोड़ देनेपर जोर दिया। एबटने यह भी कहा, कि खीवा यदि अंग्रेजोंसे मदद पाना चाहता है, तो रूसी बंदियोंको छोड़ना जरूरी है। स्टोडर्ट बुखाराके अमीरके बंदीखानेमें था। खीवा-खानने उसे छोड़नेके लिये अपना दूत बुखारा भेजा। कास्पियन और ओरेनबुर्गकी ओरसे जिस तरह रूसका फौलादी पंजा मध्य-एसियाकी ओर बढ़ता आ रहा था, और जिस तरह हिन्दुस्तानमें मुस्लिम बादशाहतको खतम करके अंग्रेजोंने अपना राज्य कायम किया था, उसे देखते हुये मध्य-एसियाके शासकोंकी नींद हराम हो गई थी। अंग्रेजों और रूसियोंको वह एक तरफ आग और दूसरी तरफ खड्ड-सा देखते थे, इसलिये किसी निश्चय पर पहुंचना उनके लिये आसान नहीं था। तो भी रूसका खतरा बिलकुल सामने था—पेरोव्स्की यद्यपि इस साल सफल नहीं हुआ था, लेकिन एक बारकी असफलतासे खीवावाले कैसे अपनेको सुरक्षित समझ लेते? इसीलिये अल्लाकुल

समझा-बुझाकर कर्नल स्टोडर्टको छोड़ देनेके लिये बुखाराके अमीरको तैयार करना चाहता था। एबटने अपनी एक मुलाकातमें फारसी अक्षरोंमें लिखे एक नक्शेको अल्लाकुलके सामने रखकर बतलाया, कि इंगलैंडका स्वार्थ इसीमें है कि मध्य-एसिया रूसके हाथमें न जाय। हम मध्य-एसियाके राज्योंको स्वतंत्र और तटस्थ देखना चाहते हैं, और रूसके मनसूबेको असफल करनेमें सहायता देनेके लिये तैयार है। लेकिन खान रूसकी शक्तिको ज्यादा अच्छी तरह जानता था, इसलिये उससे बहुत भयभीत था। उसने चांदीकी तरह सफेद चमकते तीन पौंडके एक तोपके गोलेको दिखलाकर एबटको बतलाना चाहा, कि रूसी बहुत जबर्दस्त शक्ति रखते है। एबटने साफ देखा कि जबतक रूसी तोपका यह सफेद गोला खानके तम्बूमें रहेगा, तबतक उसे कुछ भी साहस नही होगा, और मुझे अपने काममें सफलता नहीं मिलेगी।

एबटके काममें सबसे बाधक मेहतर था, जो रूसी बंदियोंके छोड़ देनेपर जोर देनेके कारण एबटको रूसियोंका गुप्तचर समझता था। एबटके बहुत कहनेपर मेहतरने कहा—अगर हमारे भाग्यमें यही लिखा होगा, तो फिर क्या चारा? इसपर एबटने कहा—तो इसका अर्थ है खीवाको रूसियोंके हाथमें दे देना। मेहतरने गुस्सेमें आकर कहा—"आह! अगर हम काफिरोंसे लड़ते मारे गये, तो सीधे स्वर्गमें जायंगे।" इसपर एबटने जवाब दिया—"और तुम्हारी औरते? तुम्हारी बीबिया और लडकियां रूसी सिपाहियोंकी गोदमे जाकर किस तरहके स्वर्गको प्राप्त करेंगी?" ईरानसे आये हुये दूतने जब ईरानी गुलामोंको छोडनेके लिए कहा, तो अल्लाकुलने जवाब दिया—"मुहम्मदशाहको कहो, कि अभी वह बच्चा है, अभी उसे दाढी भी नही आई है। वह क्यों नही पहले रूसियोंको ईरानसे निकालता?" दरअसल खीवा ऐसी परिस्थितिमें था, कि उसके लिये इस समय कुछ भी निश्चय करना बहुत मुश्किल मालूम होता था। प्रस्थान करते वक्त एबटने खानसे कहा था—बड़ी सावधानीसे काम करनेकी जरूरत है। खानने जवाब दिया—"यह बहुत मुश्किल है। दुनिया भरमें मेरे राज्यको छोड़कर रूसियोंको कोई दूसरा युद्धक्षेत्र नहीं मिलता।"

एबट सुरक्षित तौरसे कास्पियनके तटपर गुयेदिकके बन्दरगाहमें पहुंचा, लेकिन जले-भुने वजीरने ऐसी चाल चली, कि बन्दरगाहपर एबटको जहाज नही मिला। फिर वह वहांसे चार दिनके रास्तेपर दक्षिणमें अवस्थित रूसियोंकी फौजी चौकी दाशकलाकी ओर रवाना हुआ। चौकीपर पहुंचनेमें दस घंटेका रास्ता रह गया था, जब कि उज्बेकोंने उसे लूट लिया। एबटकी दो अंगुलियां टूटीं, और सिर भी फूटा। फिर उन्होंने उसे ले जाकर घुमन्तुओंके डेरेमें रखकर बहुत बुरा बर्ताव किया। टाडने अखुन्द-जादा नामक अफगानको भेजा, जिसने एबटको छुड़ाकर रूसकी ओर रवाना किया। हेरातमें टाडके पास एबटके मरनेकी खबर पहुंची। जिसपर उसने लेफ्टिनेंट शेक्सपियरको खीवाके साथ फिर बातचीत करनेके लिये भेजा। लेकिन खानने उसकी बातोंपर अविश्वास प्रकट करते हुये कहा—"यह क्या बात है, जो हमारेसे इतनी दूर रहनेवाला तुम्हारा देश हमारे देशके साथ मित्रता करनेके लिये इतना उतावला है?" शेक्सपियरने जवाब दिया—"हमारे पास भारत-जैसा एक विशाल उद्यान है, कही कोई उसपर टूट न पड़े, इसलिये हम अपने बगीचेके चारों ओर दीवारें खड़ी करना चाहते है, और वे दीवारें है—खीवा, बुखारा, हिरात और काबुल।" याकूब मेहतरने काफिर कहकर जब ताना मारा, तो उसका जवाब शेक्सपियरने दिया—"हममेंसे कौन काफिर है? तुम, जो कि कभी न बुझनेवाली ईर्ष्याके कारण रोज गुलामोंको सासत देते हो, बापसे लड़कियोंको, पतिसे पत्नीको जबर्दस्ती छीनकर अपनी बाजारोंमें सबसे अधिक दाम देनेवालोंके हाथ बेंच देते हो। या हम जो कहते हैं—ये अभागे लोग मुक्त कर दिये जायं। इन्हे इनके देश और परिवारमें भेजनेकी कोशिश करते है।"

शेक्सपियर कुछ सफलताके साथ बिदा हुआ। ४२० रूसी बंदियोंको मुक्त करा पुराने उरगंजसे रवाना हो वहां समुद्र तटपर पहुंचा, फिर वहासे नाव पकड़कर अस्त्राखान, आगे राजधानी पीतरबुर्ग-में गया। जारने उसकी सेवाओंके लिये बहुत सम्मान करते, उसे रूसी 'सर'की उपाधि प्रदान की।

जुलाई १८४० ई०में अल्लाकुल्लीने समझ लिया, कि रूसियोंके साथ झगड़ा मोल लेना अच्छा नहीं है। उसने घोषणा करके रूसी दासोंके व्यापारको बंद कर दिया, और रूसके राज्यमें लूटपाट मचानेकी मनाही कर दी। लेकिन इसी समय ईरानी गुलामोंको छोड़नेके लिये जोर देनेसे झगड़ा

बढनेकी सम्भावना देख ईरानी शाहने अंग्रेज कप्तान कोनोलीको खीवा भेजा। खानने ईरानी गुलामोंको छोड़नेसे इन्कार कर दिया। कोनोली खीवामें चार महीना रहा। इसी समय हिरातके राज्यपाल यार मुहम्मदने मेजर टाडके षड्यंत्रोंसे परेशान होकर उसे हिरातसे निकाल दिया, और खीवाको भी लिखा, कि अग्रेज गुप्तचरको अपने पास न रक्खें। किन्तु खानने यार मुहम्मदकी बात न मान कोनोलीको खलअत दी, और उससे कहा—खीवाको अपना देश समझिये और इस महलको अपना घर। लेकिन याकूब मेहतरने कोनोलीको पंसद नही किया। धीरे-धीरे उसने खानपर प्रभाव डाला, और अन्तमें कोनोलीको उसने कहा—"तुम हमारे रास्तेमे बाधक हो। अगर तुम यहासे बिदा हो जाओ, तो मुझे इसके लिये दु.ख नहीं होगा।" खीवामें असफल हो कोनोली खोकन्दपर अंग्रेजोंका डोरा डालने गया, जहांसे बुखारा जानेपर उसने अपने प्राण गंवाये, यह हम बतला चुके है।

रूस भी मध्य-एसियाके खानको हर तरहसे अपनी ओर करनेकी कोशिश करता रहा। १८४० ई०मे लेफ्टिनेंट आइतोफ मध्य-एसियाकी यात्रासे पीतरबुर्ग लौटा, फिर कप्तान निकिफोरोफ १८४२ ई०में खीवा भजा गया, जिसने रूस और खीवाके बीच पहली संधि करवानेमें सफलता पाई। अभी वह खीवा हीमें था, जब कि अल्लाकुल मर गया।

४. रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र (१८४२-४५ ई०)

रहीमकुलके गद्दीपर बैठते ही जमशेदियोंने विद्रोह कर दिया। जमशेदी ईरानी कबीला था, जो मुरगाबनदीके बाये तटपर रहते थे। उनमेंसे दस हजारको जबर्दस्ती ले जाकर ख्वारेज्मके इलाकेमें वक्षुतटपर किलिजबेके पास बसा दिया गया था। जमशेदियोंके विद्रोहसे प्रोत्साहित होकर मेर्वके पास डेरा रखनेवाले **सारिक** तुर्कमान भी बिगड़ उठे। रहीम खानने अपने छोटे भाई मुहम्मद अमीनको पंद्रह हजार सेनाके साथ तुर्कमानोंको दबानेके लिए भेजा, लेकिन रेगिस्तानमें उसको बहुत क्षति उठानी पड़ी। उधर अमीर-बुखाराने हजारास्पका मुहासिरा कर रक्खा था। खानके भाईने अमीरकी सेनापर टूटकर उसे हराके संधि की। तीन साल शासन करनेके बाद रहीमकुल मर गया।

५ अमीन, अल्लाकुल-पुत्र (१८४५-५५ ई०)

रहीमके मरनेके बाद उसका भाई गद्दीपर बैठा, जो कि वाम्बेरीके अनुसार आधुनिक कालके ख्वारेज्मके खानोंमें सबसे बड़ा था। अमीनने तख्तपर बैठते ही सारिकोंको सर करनेके लिये अभियान किया, लेकिन वह छ चढ़ाइयोंके बाद काबूमें आये। मेर्वके किले तथा पासके योलोतेन किलेको भी उसने ले लिया। उसके लौटनेपर सारिकोंने खान द्वारा नियुक्त राज्यपाल और छावनीकी सेनाको मार डाला। लड़ाई फिर शुरू हो गई। अबकी बार सारिकोंके पुराने दुश्मन जमशेदी और उनका नेता पीर मुहम्मद भी अमीनके साथ थे। विजय करनेके बाद अमीनने बड़ी तड़क-भड़कके साथ खीवामें प्रवेश किया। उसने तेक्कोके विद्रोहको भी दबानेमे सफलता पाई। निम्न सिर-उपत्यकामें कजाक डेरा डाले रहते थे, वह खोकन्दकी प्रजा थे। उनके लिये खोकन्दसे खीवाका झगड़ा हो गया। १८४६ ई०म खीवाने सीमांतपर खोजा नियाज बी किला बनवाया। लेकिन कजाकोंको खोकन्दका खान ही नही बल्कि रूसी भी अपनी प्रजा मानते थे, इसलिये दश्ते-कजाक पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेके लिये १८४७ ई०में रूसियोंन दश्तमे कितने ही किले बनाये। इसी साल अराल समुद्रपर राइम्स्क या अरालस्क नामक रूसी किला बना। खीवावाले कजाकोंको दबाना चाहते थे। उनके दो हजार सैनिकोंने आक्रमण करके हजारसे अधिक कजाक-परिवारोंको पकड़ लिया, जिसके लिये रूसियोंने आक्रमणकर कजाकोंको छुड़ा खीवा-वालोंको दंड दिया। १८४८ ई०में इस इलाकेमें कई बार लूट-मार होती रही। निम्न-सिरमें अब खोकन्द, खीवा और रूस तीनोंका झगड़ा चल रहा था। १८५३ ई०में जेनरल पेरोव्स्कीने आक्रमण करके निम्न-सिरपर बनाये गये खोकन्दियोंके किलोंको तोड़ दिया।

दक्षिणमें तुर्कमान-भूमि अभी भी खीवाके लिये कांटा बनी हुई थी। १८५५ ई०में अमीनने सरख्शके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन उधर ईरानी शाह भी निर्बल नहीं था। मशहदके राज्यपाल फरीदून मिर्जाने हमला किया। हारकर अमीन लौट रहा था, इसी समय धोखेसे पकड़ लिया गया। उसके साथके दो सौ ख्वारेज्मियोंमेंसे कितने ही मारे गये और कितने ही भग गये। खानको वहीं काट

दिया गया, और उसके तथा २६९ दूसरे मुंडोंको शाहके पास तेहरान भेज दिया गया। इन सिरोंके ऊपर पहले एक रौजा बनाया गया, लेकिन इमामजादाकी संतान होनेसे वहां पूजा चल निकली, जिसके डरके मारे ईरानियोंने उसे तोड़ दिया। हम देख चुके है, कि अमीन और उसका वंश सैयद-जादियोंकी संतान था।

६. अबदुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

ईरानियोंके सामने भागकर लौटी सेनाने खाली गद्दीपर कुतुलुक मुरादके पौत्र तथा इबादुल्लाके पुत्र अब्दुल्लाको बैठाया। गद्दीके लिये आपसमें झगड़ा हो गया। इस गड़बड़ीसे फायदा उठा पंद्रह हजार यामूद तुर्कमानोंने आक्रमण कर दिया। खान मुकाबिलेके लिये सेना लेकर गया। किजिलतेकेरमें लड़ाई हुई। खीवावाले बुरी तरहसे पिटे और उनका खान अबदुल्ला मारा गया।

७. कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

मृत खानकी जगहपर उसका १८ वर्षका भाई २० जिल्हिजा १२७१ हि० (३ सितम्बर १८५५ ई०) को गद्दीपर बैठाया गया, जो हालके युद्धमें घायल हुआ था। यामूदोंका विद्रोह चल रहा था। सारे राज्यमें अशांति फैली हुई थी। इसी समय उत्तरके कराकल्पकोंने यारलिक तुराको अपना खान बनाकर विद्रोह कर दिया। कुतुलुकने सारे तुर्कमानोंको मार डालनेका हुक्म दिया, लेकिन यामूदोंका समर्थक नियाज बी मौजूद था, जिसने मुजरा करनेका बहाना करके महलमें जा खान और उसके सात वजीरोंको मार डाला। मेहतरने किलेकी दीवारसे खबर दी, जिसपर तुर्कमानोंका भी कत्लेआम शुरू हुआ, और बहुत कम तुर्कमान उज्बेकोंकी तलवारसे बच पाये। खीवाकी सड़कोंपर इतनी लाशें पड़ी थीं, कि उन्हें हटानेमें छ दिन लगे।

अमीन खानके बाद बहुत जल्दी-जल्दी दो खान हो गये। इस सारे समयमें खीवा राज्यमें विद्रोह और अशांति फैली हुई थी। यामूद, तुर्कमानोंका सबसे शक्तिशाली कबीला था, जो खीवाके खान-वंशके साथ सर्वस्वकी बाजी लगाकर लड़ रहा था। १८५५-५६ ई०मे उत्तरके कराकल्पकोंने भी विद्रोह कर दिया था। यामूदोंने दक्षिणमें और कराकल्पकोंने उत्तरमें खानके विरुद्ध बगावत करके उसकी स्थितिको बहुत खतरनाक बना दिया था। लेकिन, १२ दिसम्बर १८५५ ई० (८ रवि १२७२ हि०) को खीवावाले कराकल्पकोंको हराकर बहुतसे लूटके मालके साथ राजधानी लौटे, जिसमें बहुतसे स्त्री-बच्चे भी थे।

८. सैयद मुहम्मद, रहीम-पुत्र (१८५५-६५ई०)

कुतुलुकके मरनेपर रहीमखानके बड़े पुत्र सैयद महमूदको गद्दी दी गई, लेकिन अशांत खीवाके इस तीसरे खानको भी अफीमची होनेके कारण गद्दीसे हटना पड़ा, और उसके छोटे भाई सैयद मुहम्मदने तीस वर्षकी अवस्थामें गद्दी सम्हाली। यामूद तुर्कमानों और कराकल्पकोंके विद्रोह अब भी चल रहे थे। कराकल्पक यारलिकके साथ कुहना-उरगंज (प्राचीन उरगंज) पर चढ़े। मुहम्मद खानने उन्हें हराकर उनके उम्मीदवार यारलिकको मार डाला। अब कराकल्पकोंका एक कबीला बुखाराकी प्रजा बन गया। गृहयुद्धने भयंकर रूप लिया था—गांव उजाड़ दिये गये, कस्बों और नगरोंका सत्यानाश हो गया। एक ओर यामूद और उज्बेक आपसमें कट-मर रहे थे, दूसरी ओर मुरगाबसे बढ़ते जमशेदियोंने किल्सूसे फितनियेक तकके इलाकेको लूटा। लूटके मालके साथ वह दो हजार ईरानी गुलामोंको भी छुड़ाकर ले गये। सीमांती किलेके राज्यपाल खोजा नियाजकी जगह उसका पुत्र इरजान बनाया गया था। वह १८५६ ई०में अपनी छावनीके ४० सिपाहियोंके साथ खीवा गया। कजाकोंने अफसरोंको मार भगाया, और भयंकर अत्याचार करते हुये खीवाकी बहुत-सी सम्पत्ति लूट ली। कजाकोंने खीवाके भीतरकी ही लूटसे संतोष नहीं किया, बल्कि उन्होंने रूसी सीमांतके भीतर भी गड़बड़ी मचाई। निम्न-सिर-उपत्यकामें खोकन्दी अपने किलोंके लिये दावा कर रहे थे, और पिछले दस सालोंमें उन्होंने आक्रमण करके उनपर दो बार अधिकार भी कर लिया था। पिछली बार अकमस्जिदके राज्यपालने भारी संख्यामें

पशु देकर खीवियोंको बिदा किया। तीनों शक्तियोंका संघर्ष निम्न-सिर भूमिके लिये चल रहा था। अब निम्न-सिरके खोकन्दी इलाकेपर रूसियोंका दृढ अधिकार हो गया। खोकन्दियोंने अपने किलोंको लौटानेके लिये कहा। इन्कार करनेपर उन्होंने सैनिक टुकड़ी भेजी, लेकिन वहां ईंधन-पानी आदिकी बड़ी कठिनाई थी, इसलिये किलोंको तोड़-फोड़कर खोकंदी सेना लौट गई।

खीवा राज्यमे भारी गड़बड़ी मची हुई थी, जिसके कारण वहां अकाल पड़ गया फिर १८५७ ई०मे हैजा भी फैल गया। इसी साल खानने अपने राज्यारोहणकी खबर देते, जार निकोलाइ I की मृत्युके लिये शोक-प्रकाशन करने तथा जार अलेक्सान्द्रके गद्दीपर बैठनेके समय बधाई देने के लिये शेखुल-इस्लाम फाजिल खोजाको दूत बना पीतरबुर्ग भेजा।

मई १८५८ ई०में जेनरल इग्नातियेफने भी एक दूतमंडल खीवा भेजा, जो ईलक येम्बा और अराल तटसे ऐंबुगिरकी खाड़ी, उर्गा अन्तरीप तथा करालियोंकी पुरानी राजधानी कुंग्रद होते फिर नावसे दस मील प्रति दिनकी चालसे चलते खीवाकी राजधानीकी ओर बढ़ा। गावों और शहरके लोग रूसियोंके आनेकी खबर सुनकर बड़े भयभीत थे। रूसियोंने देखा, कि वक्षु नदीके दोनों तरफके गाव और शहर उजड़े पड़े है। कराकल्पकोंके औलों (डेरों) मे सिर्फ बूढ़े-बच्चे रह गये हैं, बाकियोंको पकड़कर खीवा या ईरानी सीमापर ले जाकर बेंच डाला गया था। कराकल्पकोंसे किपचकों और खोजे-इली कबीलोंकी हालत बेहतर नहीं थी। रूसी दूतमडल जब नवीन उरगंजमें पहुंचा, जो कि खीवाका-दूसरा सबसे बड़ा शहर था, तो एक वजीरने आकर स्वागत किया। दूतमंडलको शहरसे बाहर एक बागमें ठहराया गया। पहले मेहतरने स्वागत किया, राजमहलमें मेहतरके लिये अपना एक खास निवास-स्थान था। रूसी खानके पास पहुचाये गये। खान एक ऊंची गद्दी पर बैठा था। उसके सामने छुरा और पिस्तौल रक्खा था और पीछेकी ओर राजकीय झंडा फहरा रहा था। प्रधान-सेनापति (कुश-बेगी), वित्तमंत्री (मेहतर) और दीवानबेगी (प्रधान वजीर) खानके सामने बैठे हुये थे, और महा-प्रतिहार द्वारपर खडा था।

रूसी दूतमंडलने खीवाकी हालतका अच्छी तरह अध्ययन किया, और समझा-बुझाकर खानको अपनी ओर करनेकी कोशिश की।

उस समय खीवाके अपने सिक्के चल रहे थे। दो तरहके सोनेके सिक्के (तिला) थे, जिनमें से एकका मूल्य अंग्रेजी गिन्नीसे थोड़ा कम और दूसरा उससे आधा था। चांदीके सिक्केको 'तंगा' कहा जाता था, जो अठन्नीके बराबर था। उससे आधेसे कमका चांदीका सिक्का 'शाही' था। तांबेके सिक्केको पूल या करापुल कहते थे, जो एक तंकेमें अड़तालीस होता था।

रूसी मिशनके खीवासे बिदा होते ही कराकल्पकों और कुंग्रदोंने तुर्कमान-सरदार अतामुरादके साथ मेल कर कुतुलुक मुरादको उसके कितने ही आदमियोंके साथ मार डाला।

मुहम्मद खानके समयमें ही १८६३ ई०में पर्यटक वाम्बेरी कितने ही हाजियोंके साथ खीवा पहुंचा था। उस समय चन्दोर तुर्कमान खुला विद्रोह किये हुये थे। उसने खीवाको बहुत सुंदर नगर पाया। शहरके दरवाजेपर जय घोष करते तथा हाजियोंके दामनको चूमते, सूखे मेवे और रोटीकी भेंटके साथ लोगोंने स्वागत किया। लेकिन कारवासरायमें टिकानेके बाद बड़े रुखेपनसे उनकी तलाशी ली गई। समझते थे, कि ये फिरंगियों (अंग्रेजो) या उरुसों (रूसियों) के जनसीज (गुप्तचर) हैं। वाम्बेरी यद्यपि एसियाई पोशाकमें हाजी बना हुआ था, लेकिन उसकी युरोपीय शकल-सूरत छिप नहीं सकती थी। तत्कालीन खानका दूत शुकरुल्ला बी कान्स्तन्तिनोपलमें इस्लामके खलीफाके दरबारमें हो आया था। वाम्बेरी उससे मिला। तुर्की भाषापर अधि-कार होनेके कारण वाम्बेरीको इस्ताम्बूलके आफन्दी (मुल्ला) बन जानेमें सफलता मिली। उसने बतलाया, कि अपने पीर (गुरु) के हुक्मसे मैं बुखारा-शरीफकी तीर्थयात्राके लिये जा रहा हूं। शुकरुल्ला बीने विश्वास करके उसका स्वागत किया। उसने कान्स्तन्तिनोपलके अपने परिचितोंके बारेमें पूछा, जिसका जवाब वाम्बेरीने संतोषजनक दिया। दूसरे दिन खानके बुलानेपर शुकरुल्ला बी वाम्बेरीको साथ लिये दरबारमें गया। वाम्बेरीने वहां सब उमर और सब तरहके बहुतसे आदमियोंकी भीड़ देखी, जो कि खानके सामने अपना आवेदनपत्र

देनेके लिये आये थे। भी ने जब सुना, कि एक बडा दर्वेश (साधु) हमारे खानको दुआ देने आया है, तो उसने वाम्बेरीके लिये रास्ता दे दिया। मेहतरसे बातचीत करनेसे पहले उसने फातिहा पढा। वहाके दरबारी श्रोताओंने 'आमीन' कहकर अपनी दाढियोंपर हाथ फेरा। फिर वाम्बेरीने सुल्तानकी मुहर लगे अपने छपे हुये पासपोर्टको पेश किया। मेहतरने इस्लामके खलीफाके प्रति सम्मान दिखलाते हुये मुहरको चूमकर अपने सिरसे लगाया, और उठकर उसे खानके हाथमे दिया। लौटकर फिर वह दर्वेशको दरबार हालमें ले गया। खान ऊची मखमलकी गद्दीपर रेशमी मसनदके सहारे बैठा था। उसके हाथमे एक छोटा-सा सोनेका राजचिन्ह था। वाम्बेरीने उसकी शकलको बिलकुल निस्तेज और सब तरहसे एक बर्बर अत्याचारी खूसट-जैसी बतलाया है। दर्वेशने सलाम करनेके लिये अपना हाथ उठाया, जिसका जवाब वैसा ही करके खान और उसके दरबारियोंने भी दिया। इसके बाद दर्वेशने कुरानके एक छोटे सूरा (अध्याय)का पाठ किया, और 'अल्लाहुम्मा रब्बेना' कहते अन्तमें जोरकी आवाजमे आमीन कहते हुये पाठको समाप्त किया। इसपर चारों ओर 'आमीन' कहकर लोग अपनी-अपनी दाढियोंपर हाथ फेरने लगे। अमीन खान अपनी दाढीपर हाथ फेर ही रहा था, कि प्रत्येक दरबारीने 'कबूल बोलगुय' (तुम्हारी दुआ स्वीकृत हो)की आवाज लगाई। खानने वाम्बेरीसे यात्राके कुशल-मंगलके बारेमें पूछा। दर्वेशने अपना नाम जमाल बतलाया। हजरत जमालको देखकर सब लोग अपनेको कृतकृत्य समझ रहे थे। खानने उसके साथ मुसाफा (हाथ मिलाने)के द्वारा अपनेको धन्य-धन्य समझा। दर्वेशके लिये लोगोंने एक सौ सत्तर साल जीनेकी कामना प्रकट की। वाम्बेरीने खानसे खीवाके सुन्नी संतोंकी दरगाहोंकी जियारत करके जल्दी बुखारा शरीफ जानेकी इजाजत मागी। खानने पैसा देना चाहा, तो दर्वेशने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, किन्तु तीर्थयात्राके लिये सफेद गदहा लेना स्वीकार किया। रास्तेमें भीड़के स्वागत-घोषके साथ वाम्बेरी अपने डेरेपर लौटा। उसने अपनी यात्रामे साथी दर्वेशके बारेमें लिखा है—"उनमेंसे हरएकने सेर-सेर भर चावल, दुम्बेकी पूछकी आध सेर चर्बीके अतिरिक्त रोटियां, मूली, गाजर चट किये और पंद्रहसे बीस बड़े-बड़े शोरवाके प्यालोंको गलेके नीचे उतारा। प्यालोंमे हरी चाय डाली जा रही थी।" वाम्बेरीके पास जिज्ञासुओंकी भीड़ लगी रहती थी। लोग इस्लामकी राजधानी इस्ताम्बुल (कान्स्तन्तिनोपल)के संतोंके बारेमे जानना चाहते थे। कभी-कभी लोग बीमारीसे छूटनेके लिये झाड़फूक करानेके लिये भी आते थे। वाम्बेरीने अपनी आखों देखा—खानसे इनाम पानेके लिये बहादुर लोग कटे हुये सिरोंको बोरोंमें भरे ले आते थे, जो कभी-कभी आलुओंकी तरह रास्तेमे गिर पड़ते थे। हरएक आदमीको मुंडोंकी संख्याके अनुसार इनाम मिलता था। खीवा छोडनेसे पहले एक बार फिर वाम्बेरीने जाकर खानको आशीर्वाद दिया।

(मुहम्मद फना, तूरासूफी-भतीजा, १८६५ ई०)

मुहम्मद खानको मारकर विद्रोहियोंने मृत तूरासूफीके भतीजे मुहम्मद फनाको गद्दीपर बैठाया। लेकिन अरालियोंकी यह सफलता देरतक नही चली। फनाको रूसियोंका समर्थन प्राप्त होनेपर भी साल भर हीमे मार डाला गया, और अरालियोंको खीवाकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। फनाने ख्वारेज्मका खान बनकर अपना सिक्का चलाया था।

९. सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र (१८६५ ई०)

गद्दीपर बैठते समय सैयद मुहम्मद बीस सालका तरुण था। उसे शासनसे भी ज्यादा बाघके शिकारका शौक था। पैतृक सिहासनके साथ-साथ उसे लूटमारसे बाजार गर्मवाला राज्य मिला था, और ऊपरसे रूस-जैसी शक्ति सिरपर पहुंच गई थी। १८६७ ई०में कॉफमान तुर्किस्तानका राज्यपाल बनकर आया। उसने आते ही अपनी नियुक्तिकी सूचना देते हुये खानको लिखा—सिर-दरियाके पार लुटेरे हमारी भूमिमें बड़ी गड़बड़ी मचा रहे हैं, इसलिये उनके विरुद्ध हम

अपनी सेना भेजनेका अधिकार रखते हैं। खानने जवाब दिया—सिर-दरियाके दोनों तट हमारे हैं। लेकिन जबानी दावेको कौन मानता है? उधर रूसी-प्रजा घुमन्तू कजाक जाड़ोंमें बहुत भारी संख्यामें सिरके दक्षिणमें तथा कुवान और यानी-दरियामें अपने डेरे डालते थे। खानकी पर्वाह न करके रूसी सैनिक सिर पार हो डाकुओंको दंड देने लगे। एक ओर इधर सिरसे दक्षिणकी ओर उन्होंने पैर बढ़ाना शुरू किया, और दूसरी ओर कास्पियनके पूर्व तटपर भी रूसी अपने प्रभावको बढ़ाते जा रहे थे। नवम्बर १८६९ ई०में एक रूसी सैनिक टुकड़ी क्रास्नोवोद्स्कमें उतरकर वहा किला बनाने लगी। उसके बाद उन्होंने दूसरा किला चिकिस्लरमें बनाया। इसी समय वोल्गाकी उपत्यका और उरालभूमिमे दोनकसाकों, कल्मकों तथा कजाकोंके विद्रोह और उनका घोर दमन हो रहा था। भयके मारे लोग अपने गांवोंको छोड़कर भाग रहे थे, जिसके कारण १८७० ई०की गर्मियोंतक कोई व्यापारी कारवां नहीं गया। रूसी सेना जब दंड देने आई, तो पता लगा कि इस विद्रोहमें खीवाके खानका हाथ था। क्रास्नोवोद्स्क किला बनानेके विरुद्ध खानने कुओंमें मुर्दे कुत्तोंको फेककर पानीको विषैला बनाना चाहा था। खीवावाले जानते थे, कि उनकी इस कार्रवाईका जवाब रूसी किस तरह देंगे, इसलिये राजधानी खीवाकी किलाबन्दी कर प्राकारपर बीस तोपें लगा दी गईं। खीवाने तलदिक धाराको रोककर वक्षुके प्रवाहको कई धाराओंमें बदल दिया, जिसमें कि उथली हो जानेके कारण रूसी जहाज अराल समुद्रसे वक्षु दरियाके भीतर होकर आगे न बढ़ सके।

१८७० ई०मे जेनरल कॉफमानने कड़ा पत्र लिखकर धमकी दी, कि अगर बात ठीक-ठाक नहीं की गई, तो हम कड़ी काररवाई करनेके लिये मजबूर हैं। खीवाके कुशबेगी (प्रधान-सेनापति) और दीवानबेगी (वजीर)ने उत्तरमें लिखा—"जहां भी उसकी प्रजा ह, वहा रूसी सम्राट्का शासन; इसलिये यानी-दरिया अकचाक् झीलतक—जहांपर कि रूसी कजाक घूमत हैं—सम्राट्का है, साथ ही बुकान पहाड़, और किजिलकुमसे इर्किबई तकके यानी-दरियाके ऊपरका सारा रास्ता बुखाराके साथ की गई संधिके अनुसार सदासे रूसका माना गया है।" लेकिन इस जवाबसे रूसी क्यों संतुष्ट होनेवाले थे? उन्हे तो आगे बढ़ना था, जिसके लिये खीवावाले अपने लूटपाटकी आदतसे मौका देनेको तैयार थे। दश्त (स्तेपी)के विद्रोहको दबानेके लिये रूसियोंने उस्तउर्तमें अपनी सेना भेजी, और तुर्किस्तानके बड़े अभियानके लिये सैनिक तैयारी होने लगी। खीवाने रूसियोंको कड़ा देखकर बुखाराको साथ मिलानेके लिये दूत भेजा, जिसे अमीर-बुखाराने रूसियोंके इशारेपर जेलमें डाल दिया। खीवाके आदमियोंको भी अमीर-बुखाराने बहुत समझाया, कि रूसी बंदियोंको छोड़ दो, लूट-मार बंद करो और जेनरल कॉफमानके साथ बातचीत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि ताशकन्द भे ो। लेकिन, तरुण खान और दरबारी अपनी अकड़में थे। उन्होंने अमीर-बुखाराकी सीख नहीं मानी।

रूसी अभियान (१८७२ ई०)—१८७२ ई०के वसंतमें कर्नल मर्कोजोफके नेतत्वमें एक मजबूत सैनिक टुकड़ी कास्पियनमें गिरनेवाली वक्षुकी पुरानी धार—उज्बोइ—की जांच-पड़ताल करनेके लिये क्रास्नोवोद्स्क बंदरगाहसे रवाना हुई। वह आगे बढ़ते हुए बल्खान पर्वतके तीन सौ वेर्स्त पूर्वमें अवस्थित ओर्तकू चश्मेपर पहुंची। फिर वहांसे दक्षिणकी ओर मुंह करके उशामला इलाकेके सर्कस-तुर्कमानोंको दंड देते किजिल-अर्वत किलेपर पहुंची। तुर्कमान घुमन्तुओंने आक्रमण किया, लेकिन इससे रूसी सेनाको कोई भारी नुकसान नहीं हुआ। इतनी जांच-पड़तालके बाद रूसी पीछे लौट गये। जिस वक्त रूसी सेना कास्पियन तटसे जाकर कराकुम रेगिस्तानके एक भागपर खोज-पड़ताल कर रही थी, इसी समय वक्षु और सिर-दरियाके बीचवाले महान् रेगिस्तान—किजिलकुम—की भी जांच-पड़ताल करनेके लिये एक रूसी सेना तुर्किस्तान-शहरसे भेजी गई थी, जिसने मिंगबुलाक और बुकान पर्वतोंकी सर्वे की। दोनों तरफसे रूसियोंकी इस कार्रवाईको देखकर सैयद मुहम्मद घबड़ा उठा। उसने महाराज्यपाल कॉफमानकी उपेक्षा करते अपना एक दूत ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल और दूसरा तिफलिसके महाराज्यपालके पास भेजा, साथ ही महाराजुल मिखाइलको भी लिखा—"कई रूसी अभियान मेरे देशपर चढ़ाई कर रहे हैं। मेरे पास ग्यारह रूसी बंदी हैं, जिन्हें मैं

भेजनेके लिये तैयार हूं। यदि यह काररवाई रोकी न गई, तो मै न बंदियोंको भेजूगा, न लूट-मार बंद होगी। अगर ये बंदी तुम्हारे लिये मेरे विरुद्ध युद्ध करनेका बहानामात्र हैं, और तुम अपने राज्यको बढ़ानेपर तुले हुए हो, तो अल्लाहकी जो मर्जी होगी, वही होगा।" खीवाके दूतोंको बंद करके रूसी राज्यपालोंने कहा, कि हम कोई चिट्ठी नही लेंगे, जबतक कि रूसी बंदी नही छोड़े जाते, और दूतको ताशकन्दके महाराज्यपालके पास नहीं भेजा जाता। रूसियोंसे इस प्रकार निराश होनेके बाद खीवाके खानने अंग्रेजोंकी ओर हाथ बढ़ाया और अपने एक प्रतिनिधिको भारतके उपराज नार्थबुकके पास भेजकर रूसके विरुद्ध सैनिक सहायता मांगी। लेकिन अंग्रेज क्या भांग खाये हुए थे, कि खीवाकी रक्षाके लिये एक महायुद्ध सिरपर लाते। उपराज (वाइसराय)का जवाब था—"रूसके साथ शाति करो, उनकी मांगोंको पूरा करो, और उन्हें नाराज होनेका मौका मत दो।"

यद्यपि इस प्रकार खीवाका कोई धनी-धोरी नही था, और केवल अपने बलपर वह रूसियोंका मुकाबिला नहीं कर सकता था, लेकिन खीवा (ख्वारेज्म) इतिहासके आरम्भिक कालसे ही अपने पड़ोसके दो महान् रेगिस्तानों किजिलकुम और कराकुम, तथा निर्जन अधित्यका उस्तउर्त एवं उत्तर-के जनशून्य दश्त-किपचकके कारण बड़े-बडे विजेताओंके मनोरथको अनेक बार भंग करता आया था। अभी भी रूसके लिये अभियान भेजनेमें सबसे कठिनाई इन्हीं रेगिस्तानों और निर्जन भूमियोंके कारण थी। वस्तुतः ख्वारेज्म एक विशाल रेगिस्तानसे घिरी हुई हरितावली है। ताशकन्द-से ६०० मील, ओरेनबुर्गसे ९३० मील और क्रास्नोवोद्स्कसे ५०० मीलकी यात्रा तै करके खीवा कैसे पहुंचा जाय, रूसियोंके लिये यह सबसे बड़ी कठिनाई थी। यद्यपि अरालमें रूसियोंने अपने जहाज तैरा दिय थे, लेकिन उनका बेड़ा काफी शक्तिशाली नही था, और वक्षुकी धार भी उथली थी, जिसमें जहाज नही चलाया जा सकता था। लेकिन खीवाको दड देना आवश्यक था। रूसियोंने तीन सेना-स्तम्भ भेजनेका निश्चय किया—(१) प्रधान स्तम्भ तुर्किस्तान शहरसे जेनरल कॉफमानके संचालनमें अपने साथ ३४२० पैदल, ११५० सवार, ६७७ तोपची, बीस तोपे, दो हलकी तोपे, आठ राकेट लिये भेजा गया। इसके दो विभाग थे, जिनमेंसे एक विभागका संचालक जनरल गोलोवात्शोफ जीज़कसे चला, और दूसरा विभाग कर्नल गोलोफके नेतृत्वमें कजालिन्स्कसे रवाना हुआ। रसद ढोनेके लिये आठ हजार ऊंट—ऊंटके मालिकों कजाकोंको एक ऊंटके मरनेपर पचास रूबल देना तै हुआ था, चार स्टीमर भी और इसी सेनाकी सहायता करनेके लिये लकड़ीके बेड़ोंके साथ वक्षुके ऊपरकी ओर बढ़ रहे थे।

(२) दूसरा सेना-स्तम्भ कसाक जेनरल आतमन वेरेफ्किनके अधीन ओरेनबुर्ग रवाना हुआ, जो यम्बा पहुंचकर अराल समुद्रके पश्चिमी तटपर गया। इस स्तम्भमें ३४६१ सैनिक, १७९९ घोड़े, और सात तोपे थी।

(३) तृतीय सेना-स्तम्भके तीन विभाग थे, जिसमेंसे एक विभागको कर्नल लोमाकिनके नेतृत्व मे मंगिशलकसे बीशअक्ति, इल्तेइजे, तबिनसू होते अइबुगिरकी खाड़ीमें पहुंच ओरेनबुर्गवाले स्तम्भसे मिलना था। बाकी दो विभागोंके दो हजार सैनिक कर्नल मार्कोज़ोफके संचालनमें क्रास्नो-वोद्स्क और चिकिस्लरसे रवाना हुए थे।

कजालिन्स्कवाला स्तम्भ पहले रवाना हुआ, जो बारह दिनमे यानी-दरियापर अवस्थित इर्किबइमें पहुंचा। रास्तेमें इसके कुछ ऊंटोंको नुकसान हुआ। वहांपर यह सेना ब्लागोवेश्चेन्स्क किलेको बना फिर तीन दिन चलकर किजिलकाकमें पहुंची। मौसम खराब हो गया, दोपहरको सूर्यने बरफ-को गला दिया, जिससे ऊंटोंके लिये चलना मुश्किल हो गया। इस वनस्पतिहीन निर्जन भूमिमे ईधन-का कहीं पता नहीं था। इस मुसीबतमें दो दिन और दक्षिणकी ओर बढ़नेपर सेना बुकन्दकी पहाड़ियों-मे जा, आगे युसकुदुक कोकपताश, कोपकन्ताश और मिंगबुलाक होते तम्दी जा पहुची।

जीज़कसे चला प्रधान सेनांग उचमा, फरिश, सिन्ताब, तिमुरकबुक, बल्तासलदिर चश्मा हो बुखारा सीमापर करातोउ पर्वतश्रेणीकी ओरसे नूरताउ पहाड़ीके उत्तरसे प्रदक्षिणा करते आगे बढ़ा। सर्दी बहुत तेज थी, जिससे इस सेनाके भी कितने ही ऊंट रास्तेमे मर गये। पानीकी कमीके कारण तेमूरबेकसे जीज़कवाली सेनाको दो भागोंमें बांटकर आगे बढ़नेके लिये हुक्म हुआ, इनमेंसे एक भाग बिशचगन, यानीकसगन और किदेरीके चश्मोंसे होते आगे बढ़ा, और दूसरे भागने कोशबैगी,

बैमनतंती, मस्ची और अरिस्तन्बेल कुदुकका रास्ता लिया। १२अप्रैलको कुदुकमें दोनों सेनायें मिल गयीं। खानने घबड़ाकर इक्कीस रूसी गुलामोंके साथ पत्र लिखकर कजाला भेजा, लेकिन अब तो 'चिड़ियां चुग गईं खेत'वाली बात थी। इतने खर्च और परिश्रमके साथ भेजा गया महाभियान बातों-बातोंसे कैसे लौट सकता था? रूसी गुलामोंसे पता लगा, कि उनसे बगीचेमें काम लिया जाता और ईरानी गुलामों-जैसा बर्ताव किया जाता था। खानेके लिये उन्हें फल-चावल और कभी-कभी गोश्त और चर्बी भी मिल जाती थी। मिगबुलाक और शूरखानासे अच्छा और छोटा समझ सेनाने खलता और उच्उचकका रास्ता पकड़ा। लेकिन आगे अरिस्तान-बेलकुदुकमें एक पखवारा रुकना पड़ा। यहीं रूसियोंने ईस्टरके त्योहारको मनाया। किजिलकुमके कजाकोंने ८०० नये ऊंट दिये, फिर रवाना होकर ६ मईको सेना खलता पहुंची। यहीं कजालासे आनेवाली सेना भी मिल गई। रास्तेमें टूटे-फूटे बुखारी किलोंकी मरम्मत करके उसका नाम संत-जार्ज किला रक्खा गया।

खलता और आमूके बीच ८० मीलका फासला था, लेकिन रास्ता अच्छा नहीं था। १२० मील-तक फैली हुई हवाके झोंकेपर इधरसे उधर चलनेवाली बालू सबसे कड़ी समस्या थी, और पानी भी केवल आदमक्रिल्गन (मनुष्यमार) कूओंका था, जो खलतासे २४ मीलपर थे। चारों ओर रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान था, जिसमें कहीं वनस्पतिका नाम नही था—लाल रंग-जैसी बालू थी, जिसके कारण इस रेगिस्तानका नाम किजिलकुम (लाल बालू) पड़ा। रास्तेमें एकाध ही सो भी बुरे कुएं थ, जिनसे सेना और उसके पशुओंका काम नहीं चल सकता था। पौने सात घंटेके कूचके बाद प्रत्येकको आमू-दरियाके ऊपर उच्उचकमें भेजनेका निश्चय किया गया। लेकिन बालूमें चलना भारी परिश्रमका काम था। ऊपरसे असह्य धूप पड़ रही थी, इसलिये हरावल सेना १३ मीलसे आगे नहीं बढ़ सकी, और उसके लिये आदमक्रिल्गनसे मीठा पानी भेजना पड़ा। एक रूसी लेखकके अनुसार "अवस्था बहुत भयंकर हो गई। आगे बढ़ना असम्भव मालूम होता था, और पीछे लौटना भारी शरमकी बात होती। आदमक्रिल्गनमे पानी थोड़ा था, और मशकोंमें भरकर साथ लाया पानी खतम हो चुका था।" अन्तमें सुरक्षाकी एकमात्र आशा वह चिथड़ाधारी किर्गिज दिखलाई पड़ा जो कि इर्किबइसे कजालाकी वाहिनीके साथ हो लिया था, और जिसके महत्त्व और गुणका पता जनरल निकोलस और कर्नल द्रेश्चेर्नने पहलेपहल लगाया। किर्गिजने बतलाया, कि रास्तेसे कुछ ही मील दाहिने अल्तीकुदुकके कुएं हैं। जेनरल कॉफमानने अपनी जेबी पानीकी कुप्पी देकर कहा, कि यदि इसमें पानी भर लाओ, तो तुम्हें सौ रूबल इनाम दिया जायगा। किर्गिजने वैसा कर दिखलाया, और सेनाकी एक टुकड़ी अल्तीकुदुक भेजी गई। कुओंकी संख्या कम थी, वह बहुत गहरे नहीं थे, लेकिन उनमे काफी पानी था। पानी निकालकर घोड़ों और ऊंटोंको पिलाया गया, सेनाने भी प्यास बुझाई, फिर कई दिनोंतक यहां डेरा डाल दिया गया, और छोटी-छोटी टुकड़ियोंमें दो की जगह ग्यारह दिनमें कॉफमानकी वाहिनी २३ मईको वक्षु (आमू-दरिया)के तटपर पहुंची। यात्राकी भीषणताका पता इसीसे लगेगा, कि दस हजार ऊंटोंमें सिर्फ बारह सौ बच रहे। खलतासे आगे सारे रास्तेमे रसदकी चीजे, अफसरोंके असबाब, और गोलाबारूदका सामान बिखरा हुआ था। कई जगहोंपर युद्ध-सामग्रीको इस आशासे बालूके नीचे दबा दिया गया था, कि अव-श्यकता पड़नेपर सैनिकोंको लानेके लिये भेज दिया जायगा। कुछ सप्ताह बाद एक रूसी अफसर इस रास्ते गुजरा, जिसने इसके बारेमें लिखा था—"सारे रास्ते भर ऊंटों और घोड़ोंकी कंकाल तथा सड़ते हुए शरीर फैले थे। दुर्गन्धसे नाक फटी जाती थी। पड़े हुये सामानोंके देखनेसे मालूम होता था कि कोई बाजार लगी हुई है।"

खीवावालोंने भी लड़नेकी तैयारी की थी, और जबर्दस्ती लोगोंकी भर्ती करके सैनिकोंकी संख्या बढ़ाई थी। इस सेनाका एक भाग कुंग्रादकी ओर उर्गा खाड़ीके पास यानीकलामें गया, जिसका काम था, उस्तउर्तसे आनेवाली रूसी सेनाका प्रतिरोध करना। छ-सात हजार सैनिक अरालके पूर्वी तटसे आनेवाली सेनाके मुकाबिलेके लिये दौकरामें थे। खीवावालोंने इन्हीं दो जगहोंसे खतरेकी सम्भावना समझी थी। जेनरल कॉफमानके आ जानेकी खबर पा ३५०० तुर्कमानों और कजाकोंको उच्उचकमें भेजा गया, जिनमेंसे पंद्रह सौका कमांडर दीवानबेगी मुहम्मद नियाज था, और दो हजारका

दीवानबेगी मुहम्मद बुराद। यह सेनायें उच्उचकसे पूर्वमे सरदाबाकुल(झील)के परे जाकर जम गयीं, लेकिन पहली ही झड़पमें थोड़ेसे गोले-गोलियोंकी बौछारसे इनके पैर उखड़ गये। शूरखानसे वक्षुके दाहिने तटसे रूसी सेना चली, और चौथे दिन अककामिश पहुंची। वक्षुपार शेखआरिक किलापर थोडेसे गोलोंके छोड़नेकी जरूरत पडी, और शत्रु वहांसे भी भाग गया। नदी उथली थी, केवल छाती भर पानी था। कितने लोग पैदल ही नदीमे घुसकर पार हो गये, और कुछने दुश्मनसे पकड़ी नावोंसे या साथ लाये बेड़ेको बाधकर परले पार जा खीवावालोंके डेरेपर अधिकार कर लिया। वहा उन्हें चावल और नमक भर मिल पाया। रूसियोंके केवल दो घोड़े मारे गये, जिन्हें भूखे सिपाहियोने तुरन्त पकाकर खा लिया।

२८ मईको शूरखानाके आदमियोंके एक प्रतिनिधि-मंडलने रूसी सेनापतिसे मिलकर तुर्कमानों और खीवावालोंके अत्याचारकी शिकायत की। व्यवस्था कायम करनेके लिये कसाक सैनिकोंकी एक टुकड़ी भेजी गई, जो वहां चार दिनतक रही। रूसियोंने अभयदानकी घोषणा करके निवासियोंमें ऐसा विश्वास पैदा कर दिया, कि लोग सेनाके खानेके लिए ढोर, अंगूर आदि फल, तथा जानवरोंके लिये चारा लाने लगे।

आगे शेखआरिकमे थोड़ीसी झड़प हुई। यहींपर खानका पत्र मिला, जिसमे कहा गया था, कि मै जेनरलकी आज्ञा-पालन करनेके लिए तैयार हूं। लेकिन जेनरल कॉफमानने कहा, कि अब बात खीवामे ही होगी। ५ जूनको फिर सेना आगे रवाना हुई, और शेखआरिकसे चन्द घटा चलनेपर हजारास्प पहुच गई। यहा भी कुछ गोले छोड़ने पड़े, और खीवावाले सैनिक भाग खड़े हुये। खीवाका यह सबसे मजबूत किला था। इतिहास बतलाता है, कि हजारास्प (सहस्राश्व) ने कितने ही विश्वविजयी शत्रुओंके दात खट्टे कर कितनी ही बार ख्वारेज्मको बचाया था। लेकिन अब हम बारूदके युगमे आ गये थे, जब कि हजारास्प अपनी करामातको तीर-धनुषके युग हीमें दिखला सकता था। खीवाके छोटेसे राज्यके हाथमे शक्तिशाली आधुनिक हथियार नहीं थे, इसलिये वह रूसियोंका कैसे मुकाबिला करता? हजारास्पके किलेके तीन तरफ पानीसे भरी गहरी खाई थी, और एक तरफ तीन फैदम (३ × ६ = १८ फुट) मोटी दीवार। यहां अवश्य कड़ा प्रतिरोध किया जा सकता था, लेकिन नागरिकोंने सर्वनाशके डरसे किलेको समर्पण कर दिया। रूसियोंने वहा कासे-पीतलकी चार अच्छी तोपे, कुछ गाड़िया, गोला-बारूदके एक बड़े ढेरके साथ हजार पूद (४०० मन) गेहूं, ६०० पूद (२७२ मन) चावल और घोड़ोंके लिये ८०० पूद (३२० मन) बाजरा पाया।*

६ जूनको जेनरल कॉफमानको खबर मिली, कि ओरेनबुर्गकी वाहिनी भी आ गई। अगले दिन अमीर-बुखाराने कॉफमानके पास बधाई भेजी। ९ जूनको फिर सेना कूचकर अगले दिन यंगीआरिक झीलके तटपर पहुंच गई।

कर्नल मार्कोजोफको बुगदैली और ऐदिनके रास्ते उज्बोइ (कास्पियनकी ओर जानेवाली वक्षुकी सूखी धार)से होते तोपियातान, इगदी, ओर्ताकुया, दंदुरसे आनेपर जामुकशिरका ध्वस्त किला मिला, जो कि खीवासे चालीस मील पश्चिम है। यहां पहुंचकर मार्कोजोफको तुर्किस्तानसे आनेवाले सेना-स्तम्भकी प्रतीक्षा करनी थी। कर्नल मार्कोजोफकी सेना करीब आधे रास्तेपर इगदी-तक सुरक्षित पहुंची, और तेक्के-तुर्कमानोंको हराकर उसे बहुतसा लूटका सामान मिला। लेकिन इगदी और ओर्ताकुयाके बीचमें भयंकर बालुकाराशिसे मुकाबिला पड़ा। इस दुर्गम रास्तेसे गुजरकर सबसे पहले पहुंच खीवा जीतनेकी जल्दी थी, जिसका श्रेय काकेशसकी सेनाको मिला, जो कि कास्पियनके पूर्वी किनारेकी बन्दरगाहोंसे रवाना हुई थी। लेकिन बीचकी रेगिस्तानी भूमिकी भयंकर धूप और जलके अभावने सेनाके बढ़ावको रोक दिया। ओर्ताकुयासे आगेके रेगिस्तानकी भीषणताको जानकर सेनाको क्रास्नोवोद्स्क लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। उस समय सैनिक भारी संख्यामें बीमार होकर ऊंटोंपर ढोये जा रहे थे, और उधर तेक्के-तुर्कमानोंने हमला शुरू कर दिया। सारे सैनिक किसी-न-किसी बीमारीमें फंसे थे, जिनमे साठ तो लूसे मर गये। सेना

* २॥ पूद = १ मन

बिना हथियारके समुद्र तटपर लौटी। ऊंटोंको तुर्कमान लूट ले गये, और रसदका बोझा हलका करनेके लिये रेगिस्तानमे फेंक दिया गया था। काकेशसकी सेनाकी क्या दशा हुई थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि एक स्टाफ-अफसरने अपने सारे चांदीके प्लेटोंके सेटको फेंक दिया था। कुछ तोपोंको बालूके नीचे गाड़ दिया गया। बन्दूकोंमेंसे कितनी ही पीछे कजाकों और तुर्कमानोंने लौटाई। यद्यपि यह अभियान असफल रहा, लेकिन बुखाराकी सेनापर अपनी धाक जमाकर इसने उसे खीवाकी मददके लिये जानेसे रोक दिया।

कास्पियन तटसे कर्नल लोमाकिनने उस्तउर्तके रास्ते कूच किया। यह सेना कास्पियन तटपर अवस्थित किद्रेली किलेसे तीन भागमें बंटकर आगे-पीछे २७, २८ और २९ अप्रैलको रवाना हुई। धूप और पानीकी इसे और भी तकलीफ हुई। इसका रास्ता कौनदी, सेनेकसे, बिशअक्ति, कमिस्ती, करस्त्चिक, सइकुयु, बुस्साग, कराकिन, किनिर, अल्पइमास, अकमेचेत, इल्तेइजी, बाइलियर, किजिलअगिर, बैचगिर, मेन्दली, अलान, इलिबइ (ऐबुगिर खाड़ीके दक्षिण-पश्चिम)से था। बिशअक्तिमे कजाकोंको आक्रमण करके पिटना पड़ा। अलानके पास सेना राजुल बेकोविचके बनवाये किलेके ध्वंसावशेषके पाससे गुजरी। जेनरल बेरेत्किन ओरेनबुर्गसे अपनी सेना लेकर आ रहा था। उससे बातचीत करके ऐबुगिरसे आगे बढ़ कुंग्राद पहुंची, और चन्द घंटों बाद ओरेनबुर्गकी सेना आ मिली। इस सेनाको उस्तउर्तकी चार सौ मील लम्बी रेगिस्तानी अधित्यकाको रसद-पानीकी कमीके साथ पार करना पड़ा, लेकिन उन्तीस दिनोंमें उसने यह यात्रा पूरी कर ली।

ओरेनबुर्गकी वाहिनी ११ अप्रैलको वहांसे रवाना हुई थी। ओरेनबुर्गसे अराल-समुद्र तकका रास्ता अब रूसियोंकी भूमिमे होनेके कारण सुपरिचित था, इसलिए इस सेनाको अपनी यात्रा पूरी करनेमें कम तकलीफ हुई। पहले यह पूर्वकी ओर बढ़ती बरसुककी बालुकाराशितक गई, फिर वहासे मुड़कर अरालके पश्चिम उर्गाकी खाडीपर पहुंची। जेनरल बेरेव्किनने घोषणा निकाल दी थी, कि कराकल्पक और तुर्कमान घुमन्तू अपन-अपने डेरों और घरोंमे रहें, तथा सेनाके साथ केवल रूसी कसाक शरणार्थी ही चले। कबीलोंके कितने ही सरदार रूसी सेनाके साथ आ मिले थे, जिन्होंने यात्रामें बड़ी सहायता की। जेनरल बेरेव्किनकी सेना ऐबुगिर पार हो यानीकलाको सर और ध्वस्तकर कुंग्रादमें पहुंची। यहा खीवावालोंकी काफी सेना थी, लेकिन रूसियोंके आते ही वह भाग खड़ी हुई, और शहरपर निर्विरोध अधिकार हो गया। शहरके प्राकार और घर पहले हीके सघर्षमें ध्वस्त हो चुके थे। रूसी जेनरलने खानके प्रासाद और जेसाउल मामितके घरको तुड़वा दिया। शहरमें सिर्फ एक हजार पूद (४०० मन) चावल और ज्वारकी रोटियां मिली। लोग पहले ही भाग गये थे, लेकिन रूसियोंके अच्छे बर्तावकी खबर पाकर वह जल्दी ही लौट आये।

यहींपर जेनरलको रूसी बेड़ेके बारेमें बुरी खबर मिली। २९ अप्रैलको बेड़ेने सिरके मुहानेको छोड़ दो दिन बाद तकमकअता द्वीपके आगे ऐबुगी खाडीमें पहुंच लगर डाला। कुछ दिन ठहरनेके बाद ९ मईको वह उलकुम-दरियाकी पश्चिमी शाखा किचकिन-दरियामें घुसा, और अककला नामक एक छोटेसे किलेके सामने आया। जहाजी तोपोंने बमवर्षा करक किलेके भीतर रहनेवाली सेनाको भगा दिया। फिर बेड़ा उलकुन-दरियामें होकर ऊपरकी ओर चला। कुंग्राद नगर ५० वेर्स्त (८·७ फर्संख) के करीब था, किन्तु नदीमें पर्याप्त पानी नहीं था, इसलिए वहीं लंगर डालना पड़ा। कुछ आदमी जहाजोंसे उतरकर आसपासकी भूमिके बारेमें पता लगानेके लिये भेजे गये, जिन्हें दुश्मनोंने धोखेसे पकड़कर मार दिया। इनकी लाशें पीछे कुग्रादमें दफनाई गयीं। अब फिर बेडा आगे चला। कुंग्रादसे ३० वेर्स्त पहले ही खोजेइलीमें खीवाके चार-पांच हजार सैनिकोंके साथ मामूली झड़प हुई। आगे मगितसे पहले यामूद तुर्कमानोंसे लड़ाई हुई। रूसी शहरपर अधिकार करके शत्रुओंको पीछा करते ही रहे। एक टुकड़ी किताई (करागोसकी नहर)की ओर बढ़ी, और दूसरीने कर्नल स्कोबेलेफके नेतृत्वमें किलिज-नियाजबीकी ओर पीछा किया। आगे बढ़नेपर गुरलान आया। यहीं खानकी मुख्य

सेना थी, जिसपर खीवावालोंकी सारी आशायें केंद्रित थी। लेकिन इस सेनाने भी रूसियोंका नाममात्र ही प्रतिरोध किया। खानने जेनरल बेरेव्किनके पास चिट्ठी भेजकर तीन-चार दिनकी विराम-संधिकी बात करते हुये कहा, कि हमने जेनरल कॉफमानके पास भी इसके बारेमें निवेदन किया है। लेकिन जेनरलने अपने बढ़ावको जारी रक्खा। कात और काशकुपिरके रास्ते वह आगे बढ़ा। वहा कितनी ही बार दुश्मनसे झड़प करते बहुत-सी नहरोंको पार करना पड़ा। रूसियोंने चौबीस घंटेके भीतर किलिज नियाजबी नहरपर १८९ फुटका बेड़ेवाला पुल तैयार किया। ७ जूनको खीवा तीन मीलसे भी कम रह गया था। वहा खानके बागमे जेनरल बेरेव्किनने डेरा डाला। किलेसे तोपे दगने लगी। एक फटे गोलेसे जेनरलके सिरमे भारी चोट आई। रूसी तोपखानेने भी जवाब दिया। नागरिकोंका प्रतिनिधिमंडल रूसी सेनापतिसे मिलने आया। उसने बतलाया, कि खान भाग गया है, नगरमे बड़ी बदअमनी फैली हुई है। बेरेव्किनने तुरन्त गोलाबारी बन्द कर दी, तथा दूतमंडलको कहा, कि जेनरल कॉफमान ही शांति दे सकते हैं, उन्हींके पास जाओ। साथ ही यह भी धमकी दी, कि किलेकी तोपोंको बन्द करो, नही तो दो घंटेके भीतर हम नगरपर गोलाबारी करने लगेंगे। दूसरे नागरिक-मंडलने आकर कहा, कि तुर्कमान सैनिक हमारी बात माननेके लिये तैयार नही है। दस बजे राततक गोलबारी होती रही। उधर कॉफमानका पत्र आया, कि हम खीवासे सिर्फ १६ वेर्स्त (२·७ फर्सख) पर यंगीआरिकपर हैं, पूर्वद्वारसे तीन मीलपर अवस्थित पुलपर आकर मिलो।

जेनरल कॉफमानने ६ जूनको ही ओरेनबुर्गकी सेनाके आनेकी खबर सुन ली थी। यंगीआरिकमें उसके पास खानका चचेरा भाई ईनक इरताश अली खानका पत्र लेकर आया, जिसमें कहा गया था, कि मै जारकी प्रजा हूं, यामूद मेरे हाथमे नहीं है, कल मैं स्वयं सेवामे आ रहा हूं।

शहरमे सचमुच ही अराजकता फैली हुई थी। प्रतिरोध और समर्पणके लिये तैयार लोगोंके दो दल हो गये थे, जिनके बीच भीषण संघर्ष हो रहा था। ईनकके लौटकर आनेसे पहले ही खान राजधानी छोडकर भाग गया था। दीवानबेगी मतमुराद प्रतिरोध-पार्टीका अगुवा था। खानका भाई अताजान तिमूर, जो सात महीनेसे बंदीखानेमें पड़ा था, अब खान बनाया गया था। उसका चचा सैयद अमीरुल्‌उमरा संयुक्त शासकके तौरपर काम कर रहा था। दोनों चचा-भतीजे समर्पण-पक्षपातियोंके मुखिया थे। अगले दिन सबेरे ईनक इर्तसली और दूसरे अमीरोंने जेनरल कॉफमानके पास जाकर अधीनता स्वीकार की।

जेनरल बेरेव्किनने अपनी सेनाके एक बड़े भागको तुर्किस्तानी सेनासे मिल जानेके लिये भेजा, बाकियोंके ऊपर किलेसे गोलाबारी होने लगी। रूसियोंने भी तोपोंको छोड़कर उसका जवाब दिया। वह खीवाके उत्तरी दरवाजे शाहबादको तोड़कर नगरके भीतर घुस गये। कर्नल स्कोबेलेफ सड़कसे महलकी ओर चला। उधर जेनरल कॉफमानने हजारास्प दरवाजेपर पहुंचकर विजयीके तौरपर नगरमे प्रवेश किया। उस समय नगरमें झंडे-पताके फहरा रहे थे, बाजे बज रहे थे। खानके अन्तःपुर (हरम) और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये रूसियोंने गारद नियुक्त कर दिया और सैनिकोंने नगर-प्राकारपर अधिकार कर लिया। जेनरलके हुक्मपर लोगोंके हथियार छीने जाने लग। नगरके बड़े मैदानमें रूसी सेनाने जमा होकर सम्राट्के लिये दुआ और धन्यवादकी रसम अदा की। कॉफमान खानके दरबार-हालमें पहुंचा, जहां नागरिकोंके कितने ही प्रतिनिधि बधाई देनेके लिये आये। सैयद मुहम्मद खान भागकर यामूदोंमें चला गया था, इसलिये रूसी जेनरलने अताजान त्युराको अस्थायी खान बनाया। उसने सैयद मुहम्मदके पास संदेश भेजा, कि मैं तुम्हें खान पदपर पुनः स्थापित करनेके लिये तैयार हूं, इसपर चन्द घंटों बाद खान आ मौजूद हुआ।

खान जड़ाऊ जीन लगे घोड़ेपर चढ़कर अपने महलके बगीचेतक आ जेनरल कॉफमानके तम्बूकी ओर जानेवाले रास्तेके छोरपर उतर पड़ा। फिर अपनी टोपी उतार पासमें पहुंचकर उसने कॉफमानके सामन घुटने टेक दिये। कॉफमान उस वक्त एक कुर्सीपर बैठा रहा। उसने अपने पराजित शत्रुके साथ वीरोचित बर्ताव नही किया। खान घुटना टेके कालीनपर बैठ गया। वह तीस वर्षका

तरुण था। उसका चेहरा असुन्दर नही था। चौड़े चेहरेपर मंगोलायित आंखे कुछ तिर्छी थीं, लेकिन नाक तोते-जैसी थी। बड़ मुखपर छोटी पतलीसी काली दाढ़ी-मूछ थीं। कदमें वह छ फुटका लम्बा-तगड़ा जवान था। उसके सीधे-सादे-जीवनका बुखाराके अमीरसे मुकाबिला करनेपर आश्चर्य होता था। उसका सबसे बड़ा शौक था—सुन्दर तुर्कमान घोड़ोसे अपने अस्तबलको भरे रखना, और कभी-कभी नई बीबी लाना। एक सौ रखेलियोंके अतिरिक्त इस्लामी शरीयतके अनुसार उसकी चार बीबियां राज्यकी चारों जातियोंकी थीं। खानके राज्यकी आमदनी उस समय नब्बे हजार रूबल (पैंतालीस लाख पौंड) थी। किजिलकुमके घुमन्तुओंको छोड़कर उसके राज्यमें पांच लाख आदमी बसते थे। उसे पढ़ने-लिखनेका भी शौक था, और उसके पुस्तकालयमें तीन सौ जिल्द हस्तलिखित ग्रंथोंके थे, जिनमेसे अधिक इतिहासपर, सो भी फारसीसे तुर्कीमें अनुवादित थे।

जेनरल कॉफमानने खानकी सहायताके लिये एक शासन-परिषद् कायम कर दी, जिसमे तीन रूसी (लेफ्टिनेंट-कर्नल इवानोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल पोशारोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल खोरोशिन) और तीन खीवावाले सदस्य (दीवानबेगी मतनियाज, ईनक इर्तसअली और मेहतर अब्दुल्ला बी) थे। मतनियाज इनमे सबसे योग्य था। इस परिषद्का अध्यक्ष नामके लिये खान था, नही तो असली अध्यक्ष कर्नल इवानोफ था। इस्लामी शरीयत और स्थानीय राज्यपालोंकी नियुक्तिका अधिकार खानको दिया गया था। रूस-विरोधी मतमुराद और रहमतुल्लाको बदी बनाकर पहले कजाला, फिर रूस भेज दिया गया। अताजान रूसी सेनामे शामिल हो गया।

रूसियोने खीवापर विजय प्राप्त करके वहाके तीस हजार गुलामोंको मुक्त कर दिया। उन्हे पांच-छ सौके दलमे क्रास्नोवोद्स्क भेजकर वहांसे जहाजोंपर ईरान भेज दिया जाता। पहले जो दो दल भेजे गये थे, उनमेसे एकपर तुर्कमानोंने प्रहार करके कितनों हीको मारा और कितनोंको पकड़कर फिर गुलाम बना लिया। रूसियोंके खीवा छोड़नेपर मुक्त होकर वहां रहते सैकड़ों गुलाम मार डाले गये।

अन्तमें खीवाने संधिपत्रपर हस्ताक्षर किया, जिसमे खानने अपनेको जारका वफादार सेवक रहनेका वचन दिया और यह भी स्वीकार किया, कि मैं किसी भी दूसरी विदेशी-शक्तिसे व्यापार आदिकी संधि नहीं करूंगा, न रूसियोंकी स्वीकृति या जानकारीके बिना कोई सैनिक अभियान संगठित करूंगा।

राज्यकी सीमा निर्धारित हुई थी—अराल समुद्रतक वक्षुकी सबसे पश्चिमी धारा। अरालके तटसे होते उर्गा अन्तरीप तथा उस्तउर्तके उत्तरी छोरतक—वक्षुकी पुरानी धारासे दाहिने तटकी सारी भूमि रूसको मिली, जिसके कुछ भागको इच्छा होनेपर रूस बुखाराको दे सकता था। वक्षुमे नौसंचालनका अधिकार सिर्फ रूसको था, व्यापार और कारखाना बनानेकी भी उसे पूरी स्वतंत्रता थी। रूससे भागे हुये अपराधीको लौटा देना खीवाने स्वीकार किया। दासता-प्रथा बन्द कर दी गई। हरजानेमें बाईस लाख रूबल (दो लाख चौहत्तर हजार पौंड) देना तै हुआ, जिसमें पहले दो सालोतक लाख-लाख रूबल, फिर १८८१ ई०तक क्रमशः बढ़ाते हुये दो लाख सालाना अदा करना था।

खीवाके साथ जो संधि हुई थी, उसे पीतरबुर्गमें प्रकाशित होनेसे पहले ही जेनरल कॉफमानने "तुर्किस्तान गजेत" में प्रकाशित कर दिया था। इससे मालूम होगा, कि रूसके दूर-दूरके महाराज्यपालोंको कितने विशेष अधिकार प्राप्त थे।

इस प्रकार १८७२ ई०में खीवाकी स्वतंत्रता समाप्त हुई। खीवाके राज्यमें सर्त, उज्बेक, कराकल्पक और तुर्कमान चार जातियां रहती थीं, जिनमेंसे सर्त (फारसीभाषी) अधिकतर व्यापारजीवी थे, और सैनिक तौरसे उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं था। बाकी तीन जातियां लड़ाकू और बहुत कुछ घुमन्तू थीं। वही उज्बेक यहां भी थे, जो कि बुखारा और खोकन्दके राज्योंमें रहते थे। कराकल्पक निम्न-वक्षु-उपत्यकामें अराल समुद्रतक फैले हुये थे। बोल्शेविक-क्रांतिके बाद जब जातियोंके अनुसार राजनीतिक इकाइयां बनने लगीं, तो सभी उज्बेकोंकी भूमिको मिलाकर उज्बेकिस्तान गणराज्य बना दिया गया, जिसकी राजधानी ताशकन्द हुई। कराकल्पकोंकी संख्या

थोड़ी थी, लेकिन उन्हें भी उज्बेकिस्तान गणराज्यमे कराकल्पकियाके नामसे अपना स्वायत्त गणराज्य बनानेका मौका मिला। ईरानकी सीमातक तुर्कमान––यामूद, तेक्के आदि––कबीले रहते थे, जिन्होने पीछे अपना तुर्कमानिस्तान गणराज्य स्थापित किया, लेकिन खीवाके सर होनेके बाद ही तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार नही की।

४. (५. ख. खीवा कुंकरत वंशवृक्ष)
(१८०४-६५ ई०)
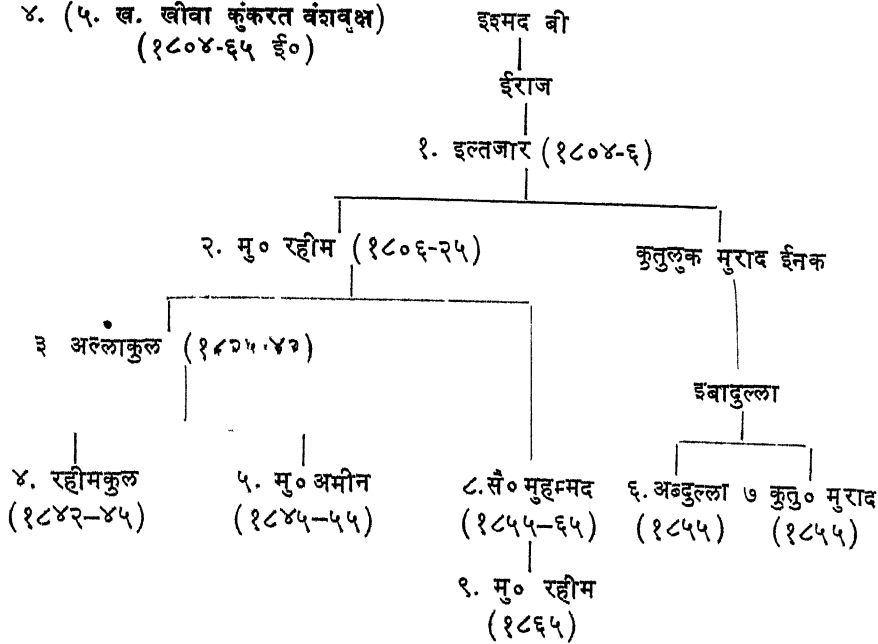
स्रोत-ग्रंथ

१. ओत्चेत ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व. व. व. वर्तोल्द, "ज० रोस्० अकद० इस्त० मतेरि० कुल्तुरी" जिल्द २, पृष्ठ २०)
२. History of Mongol (3 vols, H. H Howorth, London 1876–88)
३. Heart of Asia (E. D. Ross, London 1899)
४. La rivalite anglo-russie an xix siecle en Asie (A. M. F. Rouire, Paris 1908)

अध्याय ६

तुर्कमान

१ तुर्कमान-भूमि

१८७३ ई०मे खीवाने जारकी अधीनता स्वीकार कर ली, इससे चार साल पहले १८६९ ई०मे कास्पियनके पूर्वी तटपर क्रास्नोवोद्स्कका प्रसिद्ध बन्दर स्थापित हुआ था। जारशाहीने क्रास्नोवोद्स्कसे मगिशलक प्रायद्वीपतक बीच-बीचमें रूसियोंकी बस्तियां और किलेबंदियां कायम कर दी थीं। खीवाके पतनके बाद मध्य-एसियामें रूसी साम्राज्यकी सीमा वक्षुकी धाराके साथ-साथ थी। लेकिन कास्पियन और वक्षुके बीचकी भूमिपर अभी भी रूसियोंका अधिकार नहीं हुआ था। वहां अधिकतर घूमन्तू-जीवन बितानेवाले तुर्कमान रहते थे। यह भूमि एक त्रिकोणकी शकलमें है, जिसके सिरेपर खीवा है, और दो भुजाओमें एक कास्पियन तट और दूसरी वक्षुकी धारा। इस त्रिकोणका आधार बलखसे दक्षिण-पश्चिमसे लेकर कास्पियनके कोनेतक चला गया है। यह सारी भूमि दो लाख चालीस हजार वर्गमील होनेके कारण बहुत विशाल है, लेकिन इसके उत्तरी भागकी सबसे अधिक धरती कराकुमका रेगिस्तान है। यद्यपि इस भूमिको बिलकुल बालूकी भूमि नहीं कह सकते, क्योंकि कहीं-कहीपर इसकी वज्र-जैसी भूमिपर घोड़ोंकी टाप पड़नेपर जोरकी आवाज सुनाई देती है, हां दूसरी जगहोपर केवल बालू-ही-बालू है, जिसका कराकुम या कालाबालू नाम रंगकी समानताकी वजहसे पड़ा। बसंतमें वर्षा होनेपर इस भूमिमे जगह-जगह हरियाली, लम्बी घास तथा तरह-तरहके फूल दिखाई पड़ते हैं। इस भूमिको इस अवस्थामे केवल पानीके अभावने पहुंचाया है। यदि पानी होता, तो यहां की चरागाहोमें असंख्य भेड़े और दूसरे जानवर पल सकते थे। यह रेगिस्तान किसी समय मध्य-एसियाके विशाल समुद्रके भीतर था। उस समय आसपासके पहाड़ोंसे निकलनेवाली नदियां इस महासागरमें गिरती थीं, लेकिन अब वह हमारी पुरानी सरस्वतीकी तरह सूखे बालूमें विलीन हो जाती है। मुर्गाब और ताजन्दकी नदिया अफगानिस्तानके पहाड़ोंसे निकलकर उत्तरकी ओर बहते कराकुमके रेगिस्तानमें गायब हो जाती हैं। कितनी ही और भी छोटी-छोटी नदियां इसी तरह अपने अस्तित्वको खोती है। पुराने समयमें इस मरुभूमिके पश्चिमी भागको वक्षुकी धारा सिंचित करती थी, जब कि वह कास्पियनकी मिखाइलोव्स्की खाड़ीमें गिरती थी। हम जानते हैं, चिङगिस् के हमलेके समय १३वी सदीमें वक्षुकी एक शाखा कास्पियनमें गिरने लगी। बसतके थोड़ेसे समयको छोडकर यह सारी भूमि प्रायः वनस्पतिहीन हो जाती है, और केवल थोड़ेसे कंटीले वृक्ष, ऊटोंके खाने लायक कुछ छोटी-छोटी झाड़ियां और फरास (झाऊ)के कितने ही वृक्ष जहां-तहां दिखलाई पडते हैं। जंगली जानवरोंमें यहां क्यांग (जंगली गदहे), कई तरहके हरिन, जिनमें कुछ भेड़ोंके बराबर छोटे-छोटे मिलते हैं।

रेगिस्तानमें कारवाके रास्तोंपर जहां-तहां कुयें हैं, या यों कहिये कि कुओंके जलके सुभीतेके कारण उधरसे कारवां पथ जाता है। ऐसे ही पानीके स्थानोंपर कितने ही पक्षी उड़ते और चहचहाते मिलते है, नहीं तो चारों ओर असह्य नीरवता छाई रहती है। बालूके न उड़ते समय आकाश शुद्ध रहता है, और दूरका क्षितिज नजदीक दिखलाई पड़ता है। गर्मीमें मृगतृष्णाकी हिलती हुई लहरे पथिकको मृत्युकी ओर आह्वान करती हैं। कराकुममें दिसम्बर और जनवरीमें सख्त सर्दी पड़ती है, जब कि तापमान हिमविन्दुसे ५०° से० नीचे चला जाता है। गर्मी भी वहां हद

दर्जेकी होती है——लू आदमियोंकी जान ले लेती है, और बालूके अंधडमें पड़नेपर सांस लेना मुश्किल हो जाता है। इस मरुभूमिमें मनुष्यके लिये बहुत प्राचीन कालसे जीवनका रास्ता रुका हुआ है। यदि इससे कोई फायदा था, तो यही, कि ख्वारेज्म बहुत दिनोंतक बाहरी शत्रुओंके आक्रमणसे बचा रहा। लेकिन जान पड़ता है, अब कराकुममें बिराजती मृत्युकी नीरवता अधिक दिनोंतक नहीं रह सकेगी। खीवाके पास वक्षुसे उज्बोई होते कास्पियनमें मिलनेवाली नहरके बनानेमें आधुनिकतम यंत्रोंका उपयोग किया जा रहा है, और कुछ ही वर्षोंमें वक्षुका बहुतसा पानी कराकुमके एक बहुत बड़े भागको सरसब्ज बनानेमें सफल होगा। लेकिन सोवियत रूस इतने हीसे सतुष्ट नहीं है, बल्कि जैसा कि पहले हम बतला चुके हैं, वह चार सौ फुट ऊंचे बांधको बना कर ओब और येनिसेइके अधिकांश पानीको ध्रुवीयमहासागरमें जानेसे रोककर कजाकस्तान और कास्पियन तटतक फैले एक समुद्रके रूपमें बदलना चाहता है। बलकाश, और अराल समुद्रको अपने गर्भमें लेते यह महासमुद्र कास्पियनतक जब फैल जायगा, तो मध्य-एसियाके विशाल रेगिस्तानों-का पता भी नहीं रहेगा। इस योजना से पहले ही सोवियत कालमें कराकुमके कुछ भागोंको अच्छी चरागाहोंमें बदल दिया गया। जाड़ेके महीनोंमें तापमानका हिमविन्दुसे दर्जनों डिग्री नीचे जाना इसमें सहायक हुआ। कराकुमके रेगिस्तानमें जहां-तहा उगनेवाले वनस्पति और घासे बतलाती हैं, कि धरतीके नीचे वहां पानी भी है। लेकिन पानी अधिकतर बहुत खारा है, जिसे पशु और प्राणी पी नहीं सकते। रूसी वैज्ञानिकोंने इस खारे पानीको मीठे पानीमें बदलनेके लिये जगह-जगह कूओंपर सीमेंट किये हुये बड़े-बड़े तालाब बनाये, और जाड़ोंमें बर्फ जमा कर मीठे पानीको नमकसे अलग करके पशुओ और प्राणियोंके लिये जमीनदोज तालाब स्थापित किये, इस प्रकार वहां लाखो पशु पलने लगे।

लेकिन, तुर्कमानोंकी भूमिका कुछ दक्षिणी भाग ऐसा भी है, जहा रेगिस्तान नहीं है। कास्पियनके दक्षिण-पूर्वमें गूरगान और अतरक नदियो द्वारा सिंचित भूमि है, जो यद्यपि समुद्रके पास दलदली है, लेकिन ऊपरकी ओर बड़ी सुन्दर उपत्यकायें हैं। एक पश्चिमी यात्रीने इस भूमिमे चलते हुये लिखा था——"हमारा मार्ग हरे-भरे खेतों और सुन्दर स्वाभाविक चरागाहोके भीतरसे था, जिनकी पहाड़ियोंमें बड़े कोमल रंगके बांज (ओक)के किसलय शोभा दे रहे थे। जहा-तहां हरा मखमली फर्शसा बिछा मालूम होता था।" कराकुमकी नीरव और निर्जीव भूमिके अतिरिक्त ऐसी भूमि भी थी, जिसमें तुर्कमान घूमा करते थे। ईरान और तुर्कमानिस्तानकी सीमापर कोपेकदाग पर्वतमाला है, जिससे निकलनेवाली नदियोंने किजिल अरबतसे लेकर गियाउर-तककी एक सौ सत्तासी मील लम्बी और पंद्रहसे पचीस मील चौड़ी भूमिको बहुत ही उर्वर बना दिया है। इस प्रदेशको अक्कलकी हरितावल (ओसी) कहा जाता है। जहासे मुर्गाब पहाड़ोको छोड़कर रेगिस्तान ओर बढ़ती है, वहीपर मेर्वकी प्रसिद्ध हरितावल है, जिसे दुनियाकी अत्यन्त उर्वर भूमियोमे माना जाता है। ऐतिहासिक कालमे मेर्वके महत्त्वको हम देख चुके हैं। बुखाराके अमीर मुरादकी सेनाने १७८४ ई०में जब आक्रमण करके मेर्वके इलाकेको बरबाद कर दिया, तबसे इस उजड़ी भूमिके स्वामी तुर्कमान हो गये। मेर्व-हरितावल ईरानकी उत्तरी सीमासे बहुत थोड़ी ही दूरपर है, दोनोंके बीचमें एक छोटी-सी पर्वत श्रृंखला है, जिसको पार करनेमें कभी किसी आक्रमणकारीको रुकावट नहीं हुई। इस पहाड़की चढ़ाई इतनी धीरे-धीरे है, कि आदमीको ऊपर पहुंचनेमें वह नहीं-सी मालूम होती।

२. तुर्कमान कबीले

पीछे हम बतला चुके हैं, कि तुर्कमानोके मूल पुरुष गूज या आगूज बहुत पुराने समयमें अल्ताईकी तरफसे अराल और कास्पियन समुद्रकी ओर आये थे। सल्जूकियोंके नेतृत्वमें इनका प्रभाव बहुत बढ़ा और ये उत्तरी ईरान तथा मेर्वसे कास्पियनतक फैल गये। १९वीं सदीके आरम्भमें भी इनमेंसे अधिकांश अभी घुमन्तू ही थे। करा और येली इन्हीं तुर्कमानोंके पूर्वज थे, जिन्होंने सुल्तान संजरको ११५३ ई०में अन्दखूय और मेमनामें हराकर बन्दी बनाया

था। पिछली शताब्दियोंमें इनके कुछ कबीले मंगिशलक प्रायद्वीपमें घूमा करते थे। अपने घुमन्तू और लड़ाकू जीवनके कारण ये बाहरी प्रभावसे बहुत कम प्रभावित हुये। कभी इन्होंने ईरानी शाहोंकी अधीनता स्वीकार की, और कभी खीवाके खानोंकी। शाह अब्बास (१५८५-१६२६ ई०) ने इन्हें कोपेतदागकी उर्वर उपत्यकासे भगाकर वहां पंद्रह हजार लड़ाकू कुर्दोंको ला बसाया, जिसमें कि वह तुर्कमानोंको घुसने न दें। लेकिन तुर्कमान अपने स्वभावसे लाचार थे। नादिरशाह खूनसे स्वयं तुर्कमान था। २०वीं सदीके आरम्भतक चले आये ईरानके काजार राजवंशका संस्थापक आगा मुहम्मद (१७९६ ई०) स्वयं तुर्कमान था। उसने सभ्यताके महत्त्वको समझकर तुर्कमानोंको भी उस रास्ते ले जाना चाहा, लेकिन उसमें सफल नहीं हुआ। उसके उत्तराधिकारी फतेहअलीने १८१३ ई०में जब उन्हें दबाना चाहा, तो तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन नेपोलियनके आक्रमणसे रूसको कहां होश था, कि इस अधीनता-स्वीकृतिसे लाभ उठाता। १८३१ ई०में अंग्रेज यात्री बार्नेस मध्य-एसियामें गया था। उसने अपनी पुस्तक "बुखाराकी यात्रायें"में तुर्कमानोंका जिक्र किया है। बार्नेसके समय सबसे अधिक संख्या उनमें तेक्के कबीलेकी थी, यद्यपि अभी तुर्कमानोंमें उसको प्रधानता नहीं मिली थी। अपने इतिहासके आरम्भमें तेक्के लोग कास्पियनके पूर्वी तटपर मंगिशलक प्रायद्वीपमें रहते थे। १७१८ ई०में जब कल्मक-मंगोलोंका इनपर बार-बार आक्रमण हुआ, तो तेक्कोंने किजिल अरबतसे यामूदों और कोपेतदागकी उर्वर उपत्यकावाली अक्कल हरितावलीसे कुर्दों और येलियोंको भगाकर वहां अपना अधिकार जमाया। तेक्केका अर्थ तुर्कमानी भाषामें है पहाड़ी बकरी, जो कि सिद्धहस्त पहाड़ी घुड़सवार होनेके कारण इनके लिये उपयुक्त नाम था। खीवाके खानको यह मानते थे और प्रत्येक ग्राम (तम्बुओंका झुंड) सालमें एक ऊंट कर देता था। नादिरशाहने भी इन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया था। जबतक इनकी संख्या बहुत बड़ी नहीं थी, तबतक ये किजिल अरबत और अक्कलमें रहते रहे। संख्या बढ़नेपर १८३० ई०में इनके दस हजार परिवार पूर्वकी ओर जा ताजन्द-उपत्यकामें बस गये, और वहांपर अपने सरदारके नामसे उन्होंने अराज खानकला बनाया। बार्नेसके समय (१८३१ ई०में) तेक्कोंके चालीस हजार परिवार (तम्बू) थे। इस समय ऊपरी मध्य-वक्षुपर सारिकोंके बीस हजार तम्बू थे, जो कि मेर्वपर हाल हीमें अधिकार करनेवाले खीवियोंसे लड़ रहे थे। संख्यामें उन्हींके बराबर यामूद कबीला खीवा और अस्त्राबादके बीच चरवाही जीवन बिताता था। गोखलान तुर्कमानोंकी एक शाखा थी, जो कि अतरक और गुरगानके बीच ईरानी प्रजा होकर रहती थी। सलोर कबीला भी लड़नेमें बहुत बहादुर था, किन्तु उसकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक नहीं थी। सलोर सरख्शके नजदीक ऊपरी ताजन्द-उपत्यकामें रहते थे। इनकी बार-बारके लूट-मारसे तंग आकर ईरानी शाह फतहअलीके पुत्र अब्बास मिर्जाने भारी सेनाके साथ १८३२ ई०में इनपर आक्रमण किया। बहुत खून-खराबीके बाद सरख्शपर ईरानियोंने अधिकार कर लिया, और मारे जानेसे बचे हुये सलोर भागकर मेर्वके दक्षिण योलेतानकी हरितावली में बस गये।

ताजन्दके ऊपरी भागमें बसे हुये तेक्के उत्तरी-ईरानमें बराबर लूट-मार किया करते थे ईरान बराबर प्रतिरोध करता था, लेकिन कास्पियनसे हिरातके पासतक फैली अपनी सारी उत्तरी सीमाको तुर्कमानोंसे सुरक्षित रखना सम्भव नहीं हुआ। १८४८ ई०में खुरासानके ईरानी राज्यपाल आसफुद्दौलाने तेक्कोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें बरबाद कर दिया, किन्तु घुमन्तुओंका इतनी जल्दी सर्वनाश नहीं किया जा सकता। बचे-खुचे तेक्कोंने अपने भाई-बन्दोंके पास अक्कलकी हरितावलीमें शरण लेनी चाही, लेकिन वहां पहले हीसे जनसंख्या अधिक थी, इसलिये जगह न मिली और फिर वह आसफुद्दौलाकी शरणमें गये, जिसने उन्हें सरख्शके उजड़े हुये इलाकेमें रहनेकी इजाजत दी। यह इलाका तेरह साल पहले सलोरोंके हाथसे निकलकर वीरान हो गया था। अब तेक्के खीवाके इलाकेमें लूट-मार करने लगे, इसलिये खीवाके खान मुहम्मद अमीनने सरख्शको जीत वहां राज्यपाल नियुक्तकर छावनी बैठा दी। लेकिन खानके हटते ही तेक्कोंने उन्हें तलवारके घाट उतार दिया। खानने फिर लौटकर चढ़ाई की, लेकिन एक टेकरीपर तुर्कमानोंने घेरकर उसका काम तमाम करके

उसके मुडको काटकर ईरानी शाहके पास भेज दिया, केवल धड़ ले जाकर खीवामें दफनाया गया। तेक्कोंने अब ईरानके भीतर भी लूट-मार शुरू की। जिस खुरासान-राज्यपालने इन्हें इस भूमिमें बसाया था, उसीने सरख्शको जलाकर तेक्कोंको उत्तरमें मेर्वकी ओर भगा दिया। १७८४ ई०के पहलेसे मेर्वमें सारिक कबीला रहता आया था। अब सारिकों और तेक्कोंका खूनी सघर्ष चला। सारिकोंने अपने पक्षको कमजोर देखकर खुरासानके ईरानी राज्यपालको बुलाया, जो अठारह बटालियन पैदल और सात हजार सवार सेनाके साथ आया। तेक्कोंने अन्तमें ईरानकी अधीनता स्वीकार करके राज्यपालको बहुत मूल्यवान् भेटें दीं। फिर वह अपने शत्रु सारिकोंके ऊपर टूट पड़े, और उन्हे मेर्वकी हरितावलीसे निकालकर ऊपरी मुर्गाब-उपत्यकामे योलेतान और पंजदेहकी ओर खदेड़ दिया, जहांसे जाकर उन्होंने ईरानके हुक्मसे हरीरूद नदीके बायें तटपर जराबादसे सलोरोंको बेदखल किया।

कई शताब्दियों बाद मुर्गाबकी उर्वर उपत्यकाके स्वामी अब सारिक थे। उनकी शक्ति इतनी अधिक थी, कि इन्होंने खीवाकी सेनाको हरा दिया। तेक्कोने खेतीके फायदेको भी समझकर उसके प्रचार-की कोशिश की, लेकिन सिंचाई यहांकी सबसे बड़ी समस्या थी। इसके लिये पुराने समयमे बड़े-बड़े बांध बना जल-निधिया स्थापित की गई थीं, जो कि लड़ाइयोंमे बनती-बिगड़ती रहीं। मेर्वके स्वामी बनकर तेक्कोंने मेर्व नगरसे पचीस मील ऊपर एक ऊबड़-खाबड़-सा बांध बना पचीस मील लम्बी नहर खोदी, जिसके सहारे अड़तालीस हजार परिवार खेती करने लगे। बाध और नहरकी मरम्मतके लिये हर पचीस परिवार एक आदमी देता। १८८० ई०मे अंग्रेज यात्री ओडोनोवेन इधरसे गुजरा था। उसने इस बाधके बारेमें लिखा था—"नदी-तटके दोनो तरफ बीस गजतक बड़े-बड़े नरकटोंकी घनी पंक्ति है। पानीकी धाराके लिये मुश्किलसे दस फुट चौड़ी जगह छोड़ी गई है। इस संकरे मार्गसे पानी जोरसे आवाज करता बहता है। पचास गजतक यह पानीका रास्ता चला जाता है। इस दूरीमें भी नरकटोंके बांधको और समेटकर पानीको रोकनेकी कोशिश की गई है।"* लेकिन कृषि-जीवनके लिये जैसी शातिकी अवश्यकता थी, अभी वह तेक्कोंमे नही आ पाई थी। दक्षिणमें सारा खुरासान उनके शिकारकी जगह बना हुआ था, फिर वह क्यों लूट-मारसे हाथ खींचते? वह मशहदसे साढ़े चार सौ मील दक्षिणतक धावा मारते। उनसे प्रतिरोध करनेके लिये १८६० ई०मे ईरानने नवीन सरख्शमें एक किला बनाया, फिर अगले साल ईरानी मुख्य-सेनापतिने बारह हजार पैदल, दस हजार घुड़सवार सेना तथा तेतीस तोपोंके साथ चढाई की। तेक्कोने सुलह करनी चाही, लेकिन इन लड़ाकुओंकी सुलहकी बातपर कौन विश्वास करता? तेक्के भी जानपर खेलकर लड़े, और सारी ईरानी पैदल-सेना मारी या उनके हाथमें बदी बनी, केवल सवार अपने कायर सेनापतिके साथ भागनेमे सफल हुये। इस लड़ाईमें इतने अधिक ईरानी गुलाम तेक्कोंके हाथ आये, कि मध्य-एसियाके बाजारोंमे गुलामोंकी कीमत एक गिन्नी कम हो गई। तेक्कोंको अपने अधीन बनानेका ईरानका यह अन्तिम प्रयास था। अपनी इस सफलताके बाद तेक्के अक्कल और मेर्वमे जम गये, जहांसे वह बराबर ईरानमें लूट-मार किया करते। मेर्व हरितावलके पूर्वी भागमे तेक्कोंकी तोकतामिश-शाखा रहती और पश्चिममे ओतामिश पूर्वी छोरपर बेक रहते। इन शाखाओंके अतिरिक्त उनके कुछ और भी छोटे-छोटे विभाग थे।

३. तेक्कोंका शासन

तेक्के घुमन्तू कबीलेशाही अवस्थामें थे, इसलिये उनका शासन जन-सत्ताको छोड और हो ही क्या सकता था? अंग्रेज यात्री वोल्फने × इनके बारेमे लिखा है—"इन लुटेरे कबीलोंमें रहनेके बाद मैं इस निश्चयपर पहुंचा हू, कि भीडकी इतनी बुरी स्वेच्छा-चारिता कहीं नहीं हो सकती। इससे बढ़कर बुरी बात क्या हो सकती है, कि अपने पागलपनके ही कारण यह अशिक्षित और असभ्य भीड अपनी शान दिखलाती है।" लेकिन वोल्फका यह

* मेर्वकी कहानी। × बुखारा

एकतरफा फैसला था। राजकाजकी बातोंपर निर्णय करनेके लिये सारी जनताकी सभामे वह बहस करते। इन्ही सभाओंमे वह अपना खान चुनते, जो कि शासनका उच्च पदाधिकारी होता। लेकिन जबतक जनता उसे स्वीकार करती, तभीतक वह खान रहता। इस पदके लिये कोई आकर्षण नही था, क्योंकि खानको शिष्टाचार और सम्मान पानेके अतिरिक्त कोई लाभ या अधिकार नही था। उसके पास चालीस जिगित (बहादुर) रहते, जो सरकारी आज्ञाको पालन करवाते, लेकिन खजाना खानके हाथमे नही था। कोई विशेष काम आनेपर कबीला इख्तियार नामक एक विशेष प्रतिनिधि चुनता। सम्मतिदाता कबीलेके सारे लोग होते। १८८१ ई०मे ओडोनोवेनके मेर्वमे जानेपर उसे वहा एक 'इख्तियार' मिला था, जिसे तेहरानमे शाहके पास सुलहकी बातचीतके लिये भेजा गया था। ओडोनोवेनके अनुसार पिछले कुछ समयसे तेक्के अब एक साधारण राज्यपद्धतिकी ओर बढ़ रहे थे, जिसमे जनतंत्रताका स्थान खानदानी राजतत्र लेने जा रहा था। यह परिवर्तन नूरबर्दी खानके समयसे होने लगा, जो कि खीवा, ईरान और सारिकोंके युद्धोंकी विजयोंमे नेता रहा—सफल नेता राजा बन जाता है। उसने अपने पुत्र मखदूम कुलीको अक्कलके तेक्कोंका मुखिया बनाया, और वह स्वयं मेर्वका खान रहा। उसे इतना आगे बढ़नेमें रूसकी ओरसे पैदा हुये खतरेने भी सहायता की। अगर इतना भय न होता, तो शायद घुमन्तू इतनी एकतंत्रताके लिये भी तैयार न होते। तेक्के खीवामें रूसकी प्रभुता स्थापित होते देख चुके थे, उन्हें अपने भविष्यके लिये डर मालूम होने लगा था।

सभी तुर्कमानोंकी तरह तेक्के सुन्नी मुसलमान थे, लेकिन वह धर्ममे कट्टर नहीं थे, और न मुल्लोंकी पर्वाह करते थे। वोल्फके समय (१८४३ ई०मे) खलीफा अब्दुर्रहमान नामक मुल्लाकी बड़ी इज्जत थी। अपनी बहादुरी और बुद्धिके लिये प्रसिद्ध आदमियोंके हाथमें सैनिक जिम्मेवारी दी जाती थी। वह ऐसे आदमीको अपना सरदार (सेनापति) बनाते, जिसे कि आक्रमण की जाने-वाली धरतीका सूक्ष्म ज्ञान होता। इस लूटमे उन्हें जहा माल हाथ आता, वहा बहुतसे नर-नारी भी मिलते। यदि मुक्ति-धन चुकानेके लिये कोई तैयार होता, तो तुर्कमान अपने बदियोंको छोड़ देते, नहीं तो खीवा या बुखाराके बाजारोंमे उन्हे गुलाम बनाकर बेच देते। तुर्कमान बहादुर होने-के लिये तीन बातोंकी अवश्यकता थी—अच्छा घोडा, हथियार और मृत्युसे निर्भयता। कहावत मशहूर थी—"जिसने अपनी तलवारकी मुट्ठीपर हाथ रख दिया, उसे और किसी तर्ककी अवश्यकता नहीं।" और "घोड़ेकी पीठपर सवार तेक्का न बापको समझता, न माको।" युद्धका निश्चय हो जानेपर स्वाभाविक नेता अपने किबिल्का (तम्बू) के सामने झंडा गाड़ता, और अल्ला और रसूलके नामपर भले मुसलमानोंको शीया काफिरोंके ऊपर हमला करनेके लिये बुलाता। थोड़े ही समयमे उसके तम्बूके चारों ओर सैकड़ों योद्धा जमा हो जाते, जो अपने सरदारके हुक्मपर आगमें कूदनेके लिये तैयार रहते। निश्चित दिनपर अनुचर सुशिक्षित घोड़ेपर सवार हो रसद लिये सरदारके पास पहुंचते। यदि अभियान खुरासानकी ओर करना होता, तो कोपेतदाग पर्वत श्रेणीके तीन डांडोंमें-से किसी एकसे पार होते। पहाड पार करके दूसरी ओरके पर्वतसानुपर चन्द सवारोंकी रक्षामें रसदको छोड़, गाजी (धर्मयोद्धा) सारे दिन आगेकी तैयारीमें लगे रहते। दूर उपत्यकामें ईरानके शांत गाव बसे हुये है: शाम नजदीक आ रही है। दरख्तोंके बीच सफेद घरोंसे चूल्हेका धुआ निकलकर आकाशमे मंडरा रहा है। बूढ़े गप कर रहे हैं, तरुणिया चरागाहोंसे अपने पशुओंको ला रही हैं। यह समय है, तेक्कोंके शिकारका। चन्द मिनटोंमे ही गांवकी गलियोंमें तुर्कमान छा जाते। वे अपने धनुष-वाणों और तलवारोको आख मूदकर दाहिने-बायें चलाते; कितनोंको मारते और सारे गांवको भयभीत कर दते। फिर बचे-खुचे लोगों, उनके ढोरों और कीमती चीजोंको इकट्ठा करके जितनी जल्दी आये थे, उतनी ही जल्दी अन्तर्धान हो जाते। यदि पीछा किये जानेका डर होता, तो बिना लगामको रोके सौ-सवा-सौ मीलतक भागते चला जाना उनके लिये साधारणसी बात थी। लड़के और बच्चे ज्यादा कीमती समझे जाते, जिन्हें सवार चारजामोंसे बांधकर दूसरे घोड़ोंपर लाद लेते। ये घोड़े तुर्कमान सवारके घोड़ेसे बंधे होते, इसलिये पीछे-पीछे भगते जाते। दौड़ सकने-वाले आदमियोंको कभी-कभी जंजीरोंसे बांधकर घोड़ोंके साथ भगाया जाता। यदि वह थककर

न चल पाते, तो तुर्कमानकी तलवार उनके दुःखोंका अन्त करनेके लिये तैयार थी। कारवापर जब आक्रमण करना होता, तो वह किसी रेगिस्तानी कुयेंके आसपास छिपे रहते, और जब कारवा विश्राम करने लगता, तो चारों ओरसे उसके ऊपर टूट पड़ते। यदि तुर्कमान अपनी सख्या पर्याप्त नहीं देखते, तो यात्रामे पीछे रह गये ऊंटोंपर हमला करते। तुर्कमानोंकी सफलताकी कुंजी थी, उनके तेज और मजबूत घोड़े, तथा यकायक फुर्तीसे आक्रमण।

कितनी ही बार अपने दासों और दासियोंको बेचनेके लिये तेक्के स्वय खीवा और बुखारा जाते। लेकिन इसकी उन्हें इतनी जरूरत नहीं थी, क्योंकि गुलामोंके सौदागर उनकी बस्तियोंमे आकर गुलामोंको थोक दरपर खरीद ले जाते। रूसियोंने जबतक मध्य-एसियामे अपना प्रभुत्व नहीं जमाया, तबतक वहा गुलामोंकी यह लूट और बेच ऐन इस्लामी शरीयतके अनुसार मानी जाती थी। पीतर I को इतालियन यात्री फ्लोरियों बेनेवेनीने सूचित किया था, कि बुखारामें तीन हजार रूसी गुलाम है, और उतने ही खीवामें भी। अंग्रेज-यात्री वोल्फके अनुसार बुखारामे दो लाख ईरानी गुलाम थे, और उसी समय गये मेजर एबटके अनुसार खीवामे सात लाख थे, जिनमे बच्चों और तरुण लड़कियोंका मूल्य सयानोंसे दुगुना था।

तेक्के अपने घोड़ेका महत्त्व सरदारसे भी बढ़कर मानते थे। उनके घोड़े बहुत समयसे अच्छी जातिके माने जाते थे। कहा जाता है, तेमूर लंगने पाच हजार अरब घोड़ोंको लाकर तेक्के घोड़ोंकी नसलको बढ़िया बनाया था। शाह नासिरुद्दीनने पिछली शताब्दीमें पाच सौ अरब घोड़े तेक्कोंके पास भेजे। लेकिन जान पड़ता है, तुर्कमान घोडोंके लिए अरबी प्रभावकी अवश्यकता नही थी, और न वह अपने रूप और ढांचेमें अरब घोड़ों-जैसे होते है। वह कदमे बडे, लंबे पैर, संकरी छाती, और लम्बे सिरवाले होते हैं। प्रशिक्षित तथा खास चारेपर रक्खे तुर्कमान घोडे एक दिनमे साठ मीलका रास्ता तै करते, इस तरहकी यात्रा वह बहुत दिनोंतक जारी रख सकते थे। तेक्के-सवारोको भी इतना अभ्यास था, कि वह चौबीस घंटा घोड़ेकी पीठपर बिता सकते थे। तेक्कोंके घोड़ोंका चारजामा वही था, जो कि चीनी दीवारके उत्तरके मंगोल घुमन्तुओंमें पाया जाता है। तुर्कमान अपने घोड़ोंसे इतना प्यार करते, कि वह अपने पीनेके पानी, या जौकी आखिरी रोटीको भी घोड़ेको दिये बिना नहीं खाते। उनके हाथोंमें चाबुक केवल शोभाके लिए रहता, नहीं तो घोड़ोंके लिये लगामका इशारा काफी था। सोवियत शासनने तुर्कमान घोडोंकी इस बढ़िया नसलको सुरक्षित रखते हुये उसको बहुत बढ़ाया, और अश्काबादसे मास्कोतककी दौड़ करके देख लिया, कि उनकी प्रसिद्धि झूठ नहीं है। तेक्कोंके ईरानमे जा लोगोंको लूटकर गुलाम बनानेका बड़ा ही सजीव चित्रण मध्य-एसियाके महान् उपन्यासकार सदरुद्दीन एलीने अपने ग्रंथ 'गुलामानमे' किया है।*

१९वी सदीके उत्तरार्धमें तुर्कमानोंमे बस्तीवासी भी काफी हो गये। बस्तीवासियोंको 'चरवा' और घुमन्तुओंको 'चोमरी' कहा जाता था। चोमरी तीन दिनसे अधिक शायद ही कभी एक जगह रहते। उनका धन केवल पशु थे। चोमरी-तुर्कमान सालके कुछ भागमें 'कला' (दुर्ग) मे एक स्थान पर रहते, लेकिन इस किलेका साधारण किलेसे कोई संबंध नहीं। एक खुली जगहमें तुर्कमानोंके तम्बू खड़े होते, जिसके चारों तरफ कच्ची मिट्टीकी दीवार होती, जिसमें खतरेके देखनेके लिए संतरीके वास्ते मीनार बने होते। 'चरवा'के अपने औल (ग्राम) होते, जिनकी चारों ओर गांववालोंके खेत और बाग रहते। वहा जौ, ज्वार और चावलकी खेती ही ज्यादा थी। फलोंमे अगूर, सेब और सबसे अधिक तरबूज होते। तुर्कमानोंके 'कला'में सिर्फ एक दरवाजा होता। पश्चिमके किजिल अरबतसे पूर्वमें अश्काबादतकके औलोंमे प्रसिद्ध 'कला' ग्योक-तेप्पेकी उपत्यकाके सबसे चौड़े भागमें अश्काबाद था, जिसमें आठ औल सम्मिलित थे।

४. पोशाक और रूपरेखा

तुर्कमान शरीरमें मझोले कदके होते। उनका रंग गेहुंआ तथा गालकी हड्डी मंगोलायितोंकी तरह उभड़ी हुई होती। आंखे भी उसी तरह बादामी, नाक चौड़ी—जो सिरे-

*"जो दास थे" (राहुल)

पर उठी, होंठ मोटा, मूछ-दाढ़ी नाममात्र, कान बहुत बड़े—इस प्रकार पता लगेगा कि तुर्कमानोंने शताब्दियोंसे मध्य-एसियामे रहके भी अपने मंगोलायित-खूनको बहुत कुछ शुद्ध रक्खा। ईरानकी लूटी हुई गुलाम स्त्रियोंको अपने पास रखनेकी जगह वह बेच देना ही ज्यादा पसंद करते थे। लेकिन तो भी पिछली शताब्दियोंके यात्रियोंका कहना था, कि तुर्कमान स्त्रियोंकी रूपरेखा मंगोलायित कम होती है। उनके बाल छोटे, मोटे और रूखे होते हैं। तरुणाईमे वह लम्बी और सुगठित दीख पड़ती है। मोजेरने लिखा था—"मध्य-एसियामे तेक्के ही ऐसी स्त्री है, जो कि जानती है कि कैसे चलना चाहिये। जब कोई तेक्के-लड़की पानी भरनेके लिये अपने कंधेपर पानीका कूजा लिये कुयेंपर जा रही हो, तो उससे सुन्दर दृश्य देखनेको नही मिलेगा।" तरुणाईमें इनके गाल गुलाबी होते है, लेकिन मध्यवयके शुरू होते ही मुहपर झुरिया पड़ जाती है।

तुर्कमान पुरुषोंके सिरपर एक बहुत ऊंची और देखनेमें भारी काली भेड़के खालकी टोपी (कल्पक) होती है। टोपीके नीचे आधा सिर ढका होता है। देखनेसे तो मालूम होता है, कि कल्पक पाच सेरसे कमकी न होगी, लेकिन वह बहुत हलकी होती है। लाल रंगका पायजामा और ऊपरसे एड़ी-तँक लटका हुआ काले रंगका जब्बा (चोगा) तुर्कमानोंकी पोशाक है। गर्मियोंमे वह सूती कपड़ेका व्यवहार करते और जाड़ोमे ऊंटके ऊनके बने हुये कपडोंका। पैर जूते और मोजेसे ढका रहता। औरतोंकी पोशाक लम्बे-चौड़े घांघरेकी होती, जिसका रंग लाल या नीला और कपड़ा कभी-कभी रेशमका भी होता। उनकी छातीपर चादीके सिक्कों या दूसरी चीजोंका हमेल पड़ा रहता। ब्याहता स्त्रिया जूडा बांधती, कुमारियोंके बाल कधेपर लटकते रहते। मुंह ढांकनेके लिये बरंजक वह बहुत कम इस्तेमाल करती। तुर्कमानिया अपरिचित आदमीसे भी बातचीत करतीं। उनके हाथका बनाया कालीन बहुत प्रसिद्ध था। बहु-विवाह यद्यपि विहितथा, लेकिन व्यवहारमें बहुत थोड़े ही आदमी अनेक बीबिया रखते। तुर्कमान वैसे लुटेरे थे, लेकिन अपने पूर्वजोंके वक्तसे चले आते अतिथि-सेवाधर्मको वह बहुत मानते थे। कोई भी परदेशी तेक्केके घुये भरे किबित्कामे पहुचने-पर तन्दूरी रोटी, मट्ठा, चाय, हुक्का, पनीर, मट्ठेमे पके चावलमें भागीदार बन जाता। स्वागतके बाद फिर वह शतरज और बासुरीसे मनोरंजन कर सकता। तेक्के डाकू थे, लेकिन चोर नहीं। वह गाली देना नहीं जानते थे, उनके यहां सबसे बडी गाली थी 'कायर' कहना।

५ रूससे युद्ध

खीवाको रूस दबा चुका था, लेकिन तुर्कमान घुमन्तू अपनी शानमे मस्त थे। १८७३ ई०में जब रूसी सेनाये खीवामे आई, तो यामूद-तुर्कमानोंने रूसियोंका जबर्दस्त मुकाबिला किया था, इसे हम देख आये है। कॉफमानने यामूदोंको पाठ पढ़ाना चाहा, और इसके लिये सारी दक्षिणी मरुभूमिमे सर्वनाशका युद्ध छेड दिया, क्रूरतामें जारशाही घुमन्तुओंको भी मात करने लगी। ईरानी राज्यपालने १८६९ ई०मे अतरक नदीकी उपत्यकामे रहनेवाले गोखलान-तुर्कमानोंको दबाना चाहा। कास्पियन समुद्रमे नावों और जहाजोंको लूटनेवाले गोखलानोंको रूसी नौसेनाने दबा दिया। खीवा-विजयके बाद १८७६ ई०मे कास्पियनका पूर्वी तट काकेशसके महाराज्यपालके अधीन रहा, जिसकी सेना यहां रक्षाका काम करती थी। तेक्कोंने अपनी उत्तर-पूर्वी सीमांतमें इस प्रकार रूसियोंकी जबर्दस्त दीवार देखी। यही हालत पूर्व दिशामें भी थी। खीवा और बुखाराने सधि करके रूसकी बातको मान अपने यहां दासताको निषिद्ध कर दिया था, इसलिये तेक्कोंके लाये गुलामोंके बेचनेके लिये अब मध्य-एसियाके बाजार बन्द हो गये थे। उन्होंने रूसियोंसे भी छेड़खानी जारी रक्खी। १८७५ ई०में एक रूसी-कारवां क्रास्नोवोद्स्कसे खीवाकी ओर जा रहा था, जिसे उन्होंने बीचमें लूट लिया। इसी तरह १८७७ ई०में अतरकके उत्तरमें भी एक कारवांको लूटा। रूसी इसका बड़ी कठोरतासे जवाब देने लगे। तेक्कोंको मालूम होने लगा, कि अब हमारी भी वही हालत होनेवाली है, जो कि खीवाकी चार साल पहले हुई। १८७७ ई०में उन्होंने ईरानकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन अब रूस उसकी इजाजत नहीं दे सकता था। तुर्कमानोंकी लूटमारके कारण इधर तुर्कमान-मरुभूमिसे खीवा-बुखाराका

व्यापार बन्द हो गया, और सुरक्षित समझकर ओरेनबुर्गके बहुत फेरवाले रास्तेसे कारवां जाने लगे। पीतरके समयसे ही रूसियोंके दिमागमे समाया था, कि वक्षुको कास्पियनमे मिलाकर वोल्गा-उपत्यकासे जलमार्ग द्वारा व्यापार करें, लेकिन यह काम जारशाही नही कर सकी।

खीवाके विजयके बादके तीन-चार वर्षोंमे तेक्कोने अपनी लूट-मारसे रूसियोको बहानेका रास्ता दे दिया, और १८७७ ई०में जेनरल लोमाकिनको हुक्म हुआ, कि तेक्कोंके किले किजिल अरबतपर अधिकार कर लो। किजिलअरबत कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्क बन्दरगाहसे दो सौ मील पूर्व था। जेनरल लोमाकिन १२ अप्रैलको नौ कंपनी पैदल, दो स्क्वाड्रेन कसाक और आठ तोपे लेकर रवाना हुआ। भला आधुनिक हथियारोंके सामने तेक्के कैसे डटते? वह पहली ही मुठभेडमे भाग गये। इसके बाद अक्कर-उपत्यकाके प्रत्येक औल (गांव)के प्रतिनिधि रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आये, लेकिन लोमाकिन इससे पहले ही डरकर पीछे हट गया था। इसी बीच तुर्कीसे सका युद्ध (१८७७—७८ ई०) छिड गया, जिसके कारण तुर्कमानोंके साथ युद्धको स्थगित करना पडा। १८७८ ई०में तुर्कीके युद्धके खतम होते ही फिर जारशाहीने तेक्कोंकी ओर ध्यान दिया। १८७८ ई०मे एक रूसी सेना अतरक नदीके मुहानेके पास अवस्थित चिकिस्ल्यरसे चली। बेन्देसेन डाडेसे कोपेतदाग पर्वतश्रेणीको पारकर ९ सितम्बरको उसने दंगिल-तेप्पेपर आक्रमण किया। वहां पंद्रह हजार तेक्के योद्धा अपने पांच हजार स्त्री-बच्चोंके साथ मिट्टीकी दीवारसे घिरे स्थानमे लडनेके लिये तैयार थे। तोपके सामने यह मिट्टी-की दीवारे क्या बचाव करतीं? वह प्राण बचाकर भाग निकले। रूसी सवार उन्हे पीछे पड़कर घेरने लगे। चारों ओरसे उन्हें मौत-ही-मौत दिखलाई पड रही थी। अपने स्त्री-बच्चोंको दुश्मन-के हाथमें पड़ते देख "मरता क्या न करता" पर उतर आये, और उन्होंने शैतानकी तरह लड़ाई लड़ी। लोमाकिनका मनोरथ भंग हुआ, साढे चार सौ रूसी हताहत हुये, और बाकी सेनाको लेकर उसे चिकिस्ल्यर लौट जाना पडा। इस विजयकी खबरसे सारे मध्य-एसियामें आशाकी किरण दौड़ पडी। अब और भी लूट-मार होने लगी। १८८० ई०में तीन हजार तुर्कमानोंने वक्षु-तटपर बुखाराकी भूमिमें अवस्थित चारजूय-किलेके पासतकके कितने ही गावोंको लूटा। मध्य-एसियासे जारका रोब उठते देखकर जेनरल स्कोबेलेफने पीतरबुर्ग लिखा था—"यदि हम अपनी पिछले पाच सालकी स्थितिपर विचार करते हैं, तो सामने भयंकर खतरा दिखलाई दिये बिना नही रहता, क्योकि वह साम्राज्यकी आर्थिक और राजनीतिक स्थितिको अस्त-व्यस्त कर सकता है। अंग्रेजोंने एसिया-इयोंको विश्वास दिलाना चाहा है, कि उन्होने कान्स्तन्तिनोपलके सामने रूसियोंको रोक दिया, और उन्हें बल्कान प्रायद्वीप छोड़नेके लिये मजबूर किया। बर्लिनकी संधि जो हमारे अनुकूल नहीं हुई, उसकी भी खबर उन्होंने सारे एसियामें फैलाई है।"

जनवरी १८८० ई०में जार अलेक्सान्द्र II ने पीतरबुर्गमें युद्ध-परिषद्की। सबसे कठिन समस्या थी यातायातकी। और देरतक रुका नही जा सकता था, इसलिए उसी साल तेक्कों (तुर्कमानों)के विरुद्ध अभियान भेजा गया। बारह हजार ऊंट रसद ढोनेके लिये रक्खे गये, जिनमें हजारों रास्तेमें मर गये। रेगिस्तानमे रसद पहुंचाना बहुत मुश्किल था, इसीलिये ग्योक-तेप्पेका मुहासिरा हटाना पड़ा था, लेकिन अब रेलोंके प्रचारसे यातायातकी समस्या उतनी मुश्किल नही थी, यद्यपि उसपर खर्च बहुत पड़ता था। रूसियोंने रेलवे लाइन बनानेके लिये एक खास बटालियन सगठित की, और १८८० ई०के अन्ततक कास्पियनके पूर्व उजुनअदासे मुल्लाकारीतक तेरह मीलकी रेलकी सड़क बना दी। काकेशसके सेनानायकके अधीन जेनरल स्कोबेलेफ अभियानका मुख्य-संचालक था। दंगिल-तेप्पेके तजर्बेसे मालूम हो चुका था, कि तुर्कमानोंके नमदेके तम्बुओंपर आग जल्दी असर नहीं करती। इसके लिये स्कोबेलेफने पेट्रोल भरे गोले तैयार किये। क्रास्नोवोद्स्कमें यद्यपि पासमें समुद्र लहरें मार रहा था, लेकिन उसके खारे समुद्रपर पशु-प्राणी गुजारा नही कर सकते थे। इसके लिये वहांपर एक बहुत बड़ा कारखाना बनाया गया, जिसका काम था पानीको भाप बना फिर जलके रूपमें परिणत करके प्रतिदिन साढ़े सात लाख गैलनके मीठा पानी देना। स्कोबेलेफ

मई १८८० ई०में ही क्रास्नोवोद्स्क पहुंचकर तैयारी करने लगा। काकेशससे बारह हजार सेना और सौ तोपें आयी। सितम्बर १८८० ई०के आरम्भतक तैयारी प्राय: पूरी हो गई।

रूसियोंने १८ दिसम्बरको बामिर, एगमनबातिर (समुर्स्क) पर अधिकार किया। पता लगा, कि शत्रुका मुख्य जमाव दंगिल-तेप्पेमें है। दगिल-तेप्पा प्राय: एक वर्गमीलमें फैली आयताकार भूमि थी, जिसके चारों ओर अठारह फुट मोटी और दस फुट ऊंची दीवार थी, जो बाहरसे दस फुट होते हुये भी भीतरसे पंद्रह फुट ऊंची थी। दीवारके बाहर चार फुट गहरी खाई थी। तेप्पेके पश्चिमोत्तरमे गोल टीला था, जिसे तुर्की भाषामे "दंगिल-तेप्पा" कहते है, उसीके कारण इस स्थान-का यह नाम पड़ा। इसी गोल टीलेपर ईरानियोंसे पकडी पुराने ढंगकी एक तोप रक्खी हुई थी। तीस हजार तेक्के योद्धा अपनी स्वतंत्रताके लिये प्राण देनेको तैयार थे। पानीका यहां कोई दुख नहीं था, क्योंकि पाससे एक नदी बहती थी। रूसी पानीकी धारको चाहत, तो बदल सकते थे, लेकिन तब उन्हे इतनी भारी संख्यामे शिकार एक जगह नहीं मिलता। एक सप्ताहतक आगे बढ़ना रोककर २४ दिसम्बरको रूसियोंने जांच-पड़ताल भर की। १८८१ ई०के नववर्षके दिन यंगीकलापर भीषण आक्रमण शुरू हुआ। कला एक पहाड़ीकी जड़में था। आठ हजार रूसी सैनिक तीन स्तम्भोंमे विभक्त हो बावन तोपों और ग्यारह मशीनगनोंको लिये आगे बढे। दक्षिणवाले स्तम्भने पीछे और सामने दो ओरसे भयंकर गोलाबारी की, जिससे तेक्के यंगीकला छोड़ दंगिल-तेप्पेकी सेनामे जाकर मिलनेके लिये मजबूर हुये। उन्होंने रातको फिर यंगीकलाको लेनेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी तोपोंने उन्हें मार भगाया। ३ जनवरीको रूसियोंन अपने कैम्पको यगमनबातिरसे यंगीकलामे परिवर्तित कर दिया। अगले दिन शत्रुओंके सामने आठ सौ गजपर रूसियोंकी पंक्ति खड़ी थी। रूसियोंके घिरावेको तोड़नेके लिये मेर्वसे पाच हजार और तुर्कमान आये, जिन्होंने रूसियोंकी पंक्तिपर छापा मारा। पागलकी तरह वह रूसी सनिकोंपर पड़े और गोलियोसे जलते-भुनते भी कितनोंने एक हाथसे रूसी सैनिकोंकी बन्दूकोंको पकडा और दूसरे हाथसे अपनी तेज तलवारों द्वारा शत्रुओंकी गर्दनें काटी। सारी भूमि लोगोके मुडों और कटे हुये अंगोसे ढक गई। चारों तरफ "अल्लाह"की आवाज या रूसियोंका "उरा" सुनाई पड़ता था। रूसियोंके दाहिने पक्षपर तीन सौ तेक्के बहादुरोंकी लाशें पड़ी थीं। लेकिन, आधुनिक हथियारोंके सामने अल्ला या यह वीरता क्या कर सकती थी?

४ जनवरी १८८१ ई०को दूसरी पक्ति तैयार की गई, जिसमें छब्बीस सौ सैनिक थे। संध्या-के समय तेक्कोंने छापा मारा तथा बाहरी खाइयोंपर अधिकार कर लिया, और तोपचियोंको काट-कर चार पहाड़ी तोपें, और रेजिमेंटके तीन झंडे भी अपने साथ ले गये। लेकिन, तुरन्त ही यंगीकलासे कुमक आ गई, और तोप छोड़ बाकी चीजोंपर फिर रूसियोंने अधिकार कर लिया। झड़प इसी तरह चलती रही। १० जनवरीको रूसी सेना तेक्कोंकी बाहरी चौकियोंपर अधिकार करनेमें सफल हुई। लेकिन आध घंटे बाद ही तेक्कोंने जबर्दस्त प्रत्याक्रमण किया। तोपचियोंकी एक कपनीके टुकड़े-टुकड़े करके वह दो तोपोंको खाइयोंकी ओर खींच ले गये। रूसियोंने भी नई कुमक पाकर उनके आक्रमणको निष्फल कर दिया। रातके अंधेरेमें तेक्के रूसियोंपर आक्रमण करते। १६ जनवरीकी रातको उन्होंने अपना अन्तिम जबर्दस्त आक्रमण किया, जिसे रूसियोंने बेकार कर दिया। १६ जनवरीको अपनी किलाबन्दीके पूर्वी छोर-पर चौबीस गजके पासतक तेक्के ढकेल दिये गये। २० जनवरीसे उनका किला तोड़ा जाने लगा। किलेके भीतर नमदेके किबितकोंपर पेट्रोलके गोले फेके जा रहे थे। इन्ही तम्बुओंमें सात हजार बच्चे और स्त्रिया थी। तब भी बहादुर तेक्के तीन सप्ताहतक डटकर लड़ते रहे। अन्तिम आक्रमणके दिन जेनरल स्कोबेलेफने अपने सैनिकोंको आदेश देते हुये कहा था—"हमें एक बड़े ही बहादुर और भारी आत्मसम्मानवाले लोगोंसे मुकाबिला करना पड़ रहा है।" अंतिम प्रहारके समय रूसियोंने औरतों और बच्चोंको हटानेके लिये कहा। तेक्कोंने समझा, ये हमारी स्त्रियों और बच्चोंको अपने लिये लेना चाहते हैं, इसलिये उनका जवाब था—"अगर तुम हमारी स्त्रियों और बच्चोंको लेना चाहते हो, तो हमारी लाशोंपरसे होकर ही उन्हें पा सकते हो।" २४ जनवरीके ७ बजे

सबेरे किलेपर चारो तरफसे टूट पड़नेके लिये रूसियोंके चार सेना-स्तम्भ बनाये गये। संकेत पाते ही एक भारी धड़ाका हुआ, और तीन सौ फुटकी दीवार गिर गई। अब तेक्कोंको पता लग गया, कि प्रतिरोध करना असम्भव है। दूसरे ही क्षण सेना-स्तम्भ भी उनपर टूट पडे और जरा ही देरमे भागते हुए घोडोके टापोकी धूल दिखलाई पडने लगी, जिनके पीछे-पीछे कुछ दूसरे भी शरणार्थी जा रहे थे। रूसियोकी आठ हजार सेनामेंसे बारह सौ मारे गये, लेकिन दगिल-तेप्पेपर जार-शाही झंडा गड गया। रूसी सवारोंने दस मीलतक तेक्कोंका पीछा किया। तीस हजार तेक्कोंमेंसे दस हजार काम आये। बच्चो और स्त्रियोंपर रूसियोंने हाथ नही छोडा। रूसी जेनरल जिन तेक्कोंको बहादुर और भारी आत्मसम्मानी जाति मानता था, उन्हींके बारेमे एक पेशन प्राप्त आई० सी० एस० अग्रेज एफ० एच० स्क्रीन लिखता है—"अलावके पास बैठके राजनीति बघारनेवाले लोग ग्योक-तेप्पेकी खून-खराबी और ओम्दुर्मानके घायल शत्रुओके कत्लको सभ्यताके खिलाफ कहेंगे, लेकिन एसियाइयोंके स्वभावका यदि थोड़ा भी परिचय हो, तो उन्हे मानना पडेगा, कि एसियाई बर्बरता और धर्मान्धताकी शक्तियोंके ऊपर प्रहारका सबसे अच्छा उपाय क्रूरताकी नीति है।"

ग्योक-तेप्पामें मध्य-एसियाकी स्वतत्रताकी अन्तिम लडाई लड़ी गई। उसकी विजयके साथ मध्य-एसियापर जारशाहीका अखड शासन और शोषण स्थापित हुआ, जिसका अन्त बोल्शेविक-क्रांतिके साथ हुआ, और उसके बाद तेक्के और दूसरे तुर्कमान अपने स्वतत्र तुर्कमानिस्तान गणराज्यके स्वामी बनकर एक आधुनिक सुसस्कृत जातिके रूपमे अपने समाज और देशका नव-निर्माण करते हुये आगे बढने लगे।

तुर्कमानोके संघर्षके बाद ईरानके शाहकी आंखे खुली, और उसने रूसियोंको हटानेकी कोशिश की, जिसका परिणाम हुआ अतरक नदीके बायें तट और मेर्वसे हाथ धोना।

६ अंग्रेजोंसे तनातनी

ग्योक-तेप्पेकी लड़ाईके बाद रूसियोंको फिर हथियार इस्तेमाल करनेकी जरूरत नही पडी। दिसम्बर १८८ई०मे उन्होंने एक सैनिक प्रदर्शन किया। ३१ जनवरी १८८४ ई०को मेर्वकी भिन्न-भिन्न बस्तियोके एक सौ चौबीस प्रतिनिधियोंने अपने चार कबीलोंके चार सरदारोंकी प्रधानतामे एकत्रित हो महाराज्यपाल कमारोफके सामने जारके प्रति भक्तिकी शपथ ली। एक अफगान साहसीने तुर्कमानोंमें विद्रोह फैलाना चाहा, जिसे ३ मार्चको रूसियोंने दबा दिया। अगली मईमें काकेशसके महाराज्यपालने जीते हुये इलाकेका निरीक्षण किया। फिर थोडे ही दिनों बाद मेर्वसे ३६ मील दक्षिण योलतन-उपत्यकाके पचास हजार सारिकोंने अधीनता स्वीकर की और उसके बाद गियाउर और सरख्शके बीचके कबीले भी रूसी-प्रजा बन गये। रूसकी दक्षिणी सीमा इस तरह आगे बढ़ अफगानिस्तानसे मिल गई। हिरातमे अंग्रेजोंने अफगानोंको एक मजबूत किला बनानेमे मदद दी थी। वह कैसे रूसके इस बढ़ावको पसंद करते? एक अग्रेजी लेखकने रूस और इंगलैण्डके इस समयके संघर्षके बारेमे लिखा है*.—

"भारतीय प्रायद्वीपकी ऐसी भौगोलिक स्थिति है, कि कोई भी युरोपीय शक्ति तबतक इसपर अधिकार नहीं कर सकती, जबतक वह समुद्रपर प्रभुत्वन रखे।····हमारी प्रतिष्ठाके लिये यह जरूरी है, कि हम ऐसे साम्राज्यपर अधिकार रक्खें, जो दुनियाके लिये आश्चर्य और ईर्ष्याकी चीज है। उसपर अधिकार करके हम नफा भी खूब उठा रहे है, हमारे कारखानोंके लिये वहां बाजार है, और हमारे मध्यवर्गकी बेकार शक्तिके लिये वहां काम रक्खा है।

"इंगलैण्डने रूसके कान्स्तन्तिनोपलके रास्तेको रोका। १८८४ ई०में दुनियाकी कुंजी दरे-दानियालको तुर्कोंके हाथोंमें रखनेके लिये इंगलैण्डने रूसके खिलाफ तलवार उठाई और उसके एक-चौथाई शताब्दी बाद, जब कि रूसियोंके हाथमें यह भव्य शिकार जाने ही वाला था, जारकी विजयिनी सेनाको इंगलैण्डने पीछे हटा दिया।····मानवता (?) का हरएक मित्र 'इंगलैण्ड और रूस'की दो शक्तियोंके बीचमें विरोधकी भारी खाईको देखकर अफसोस किये बिना नहीं रहेगा।

*"जार और इंगलैण्ड: मित्र या शत्रु"

यदि दोनों एक हो जायं, तो वह एसियाको सभ्यता और दुनियाको शाति प्रदान कर सकते है।

"एसियाके लोग कास्पियनसे चीनतक, और साइबेरियासे ईरान तथा अफगानिस्तानकी सीमा-तक उससे कहीं अधिक सुख और स्वतंत्रताको भोग रहे है, जितना कि भारतीय राज्यके किसी भागके लोग।... लेकिन वहां (रूमी एसियामें) अब भी २०वीं सदीके आरम्भमें, भारी रक्षात्मक आयकर, अग्रेजी व्यापारकी रक्षाके लिये वाणिज्य-दूतोंकी नियुक्ति, तथा युरोपियनोंके आने-जानेके ऊपर भारी रुकावट मौजूद है।····सिवाय संगीनोंके बलपर हम सदा भारतके स्वामी नही रह सकते है, उसीपर हमारा सिहासन खडा है। हमारा राज्य यहा (भारतमे) कभी गहरी जड नही जमा सकता। संगीनोंके बिना हमारे पूर्वगामियोंकी तरह हमारा भी शासन खतम हुये बिना नही रहेगा। लेकिन मध्य-एसिया उतना घना नही बसा है, और वहाके लोगोंका जीवनतल 'भारत'की अपेक्षा अधिक ऊंचा है।

"हमें विश्वास है, कि यदि 'हमारे इंगलैण्ड और रूस'—एसियाकी दोनों महाशक्तियों—के बीच खुले दिलसे कोई समझौता हो जाय, तो इससे सभ्यताको आगे बढनेमें सहायता मिलेगी।"

इन उद्धरणोंसे मालूम होगा, कि अंग्रेज रूसियोंके दक्षिणी बढावको पसद नही करते थे, लेकिन साथ ही वह जानत थे, कि दोनोंके संघर्षके कारण एसियामे कही युरोपियनोंका शासन खतम न हो जाय, इसीलिये सीमाके निश्चित करनेके लिये दोनोंकी ओरसे जुलाई १८८४ ई०में एक संयुक्त कमीशन नियुक्त हुआ। रूसियोंने पंचदेहके सारिकोंके रूसी-अधीनता स्वीकार करनेका हवाला दे मांग पेश की, कि तुर्क जातिकी सीमा हमारी सीमा है, और अफगान-बस्तियोंसे अंग्रेजोंका प्रभावक्षेत्र माना जाय। लेकिन अग्रेज इसे माननेके लिये तैयार नहीं थे। अपने दावेको मजबूत करनेके लिए अंग्रेजोके शहपर इसी बीच अफगानोने आक्रमण करके बालामुर्गाब और पंचदेह दोनों वादियों (उपत्यकाओं)को दखल कर लिया। इसके जवाबमे जेनरल कमारोफने पुले-खातून, जुल्फिकार डांडा और अक-रबातपर रूसी झडा गाड़ दिया, और फर्वरी १८८५ ई०मे पंचदेह-वादीके छोरपर पुले-कश्तीको भी ले लिया। इगलैडमे इसपर बडा गस्सा प्रकट किया जाने लगा, और हिरातके किले-को मजबूत करनेके लिये अग्रेज इजीनियर भेजे गये, अफगानिस्तानमे हथियार और गोला-बारूद बड़े परिमाणमें भेजा जाने लगा, और भारतके पश्चिमोत्तर सीमांतपर जेनरल राबर्टकी अधीनता-मे भारी सेना जमा की गई। पार्लयामेंटने एक करोड़ दस लाख पौंड सैनिक तैयारीके लिए मंजूर किये। उधर रूसने भी एक भारी नौ-सेना जमा की, और चाहा कि भूमध्यसागरके अंग्रेजी-व्यापार-मार्गको नष्ट कर दे। लेकिन दोनों साम्राज्योंको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि आपसकी लड़ाई-से अंतमे भारी क्षति उठानी पड़ेगी। अग्रेजोंन अफगानिस्तानको रोका, और अप्रैल १८८६ ई०मे दोनों देशोंके प्रतिनिधि पीतरबुर्गमे जमा हुए। रूसियोंको हरीरूदका दाहिना किनारा जुल्फिकार डांडेतक और पंचदेहसे दक्षिण बागी-उपत्यका, जिसमे पंचदेह हरितावली भी शामिल थी, मिली। इस प्रकार रूसी सीमा हिरातसे ५३ मीलपर पहुंच गई, जिसके और हिरातके बीचमें कोई प्राकृतिक बाधा नही थी। लेकिन दूसरी तरफ रूसको अमीर-बुखाराके हाथसे वक्षुके बाये तटपर अवस्थित ख्वाजासालेके दक्षिणके सुन्दर चरागाहोंको अफगानिस्तानको दिलवाना पड़ा। संयुक्त कमीशनने जितनी सफलतापूर्वक अपना काम किया था, उससे उत्साहित होकर १८९५ ई०में दूसरा सीमांत-कमीशन नियुक्त किया गया, जिसने पामीरमें अंग्रेजी और रूसी प्रभावक्षेत्रोंकी सीमा निर्धारित की। यह सीमा विक्टोरिया (जोर कुल) झीलके दक्षिणी किनारेसे शुरू होकर सरिकौल पर्वत-मालाके मेरुदण्डपर होते चीनी सीमांततक पहुंच सारिकौल पर्वतमालाकी एक ऊभड़-खाभड़ और दुर्गम बाहीसे ६ मीलपर सनातन हिमवाले प्रदेशमे जाती है, जहांपर कि कई पर्वतश्रेणियां आकर मिलती हैं। "इसी निर्जन एकांत स्थानमें समुद्र तटसे बीस हजार फुटके ऊपर मनुष्योंकी पहुंचसे बिलकुल बाहर तीन साम्राज्य—भारत (अग्रेजी), चीन और रूस मिलते हैं।"

२५ नवम्बर १८९७ ई०में जरनल क्रोपत्किनने अश्काबादमें अंग्रेज यात्रियोंके सामने भाषण करते हुए कहा था—"भीतरी लड़ाई-झगड़ेकी संभावनाको खतम करनेके लिए हमने देशियोंको बिना हथियारकर उन्हें शांतिपूर्ण जीवन स्वीकार करनेके लिए मजबूर करनेमें कोई

कसर नहीं उठा रक्खी है।....अब एक अकेला यात्री भी कास्पियन तटसे साइबेरियाके सीमांततक, बिना जरा भी भयके यात्रा कर सकता है।....(यहांका) व्यापारीवर्ग सरकारका सबसे बड़ा समर्थक है, जिसके बाद कृषक है।....विरोध अब मुल्लाओंके षड्यंत्र हीका रह गया है।"

७. रेल-निर्माण

तेक्कोके साथ युद्ध करनेके लिए तेरह मीलकी रेलवे लाइन बनकर कास्पियन तटसे रेलोका जाल शुरू हुआ। रेल-निर्माणके लिए खास तौरसे सगठित बटालियनने १८८३ ई०के अंततक उसे कास्पियनसे १३५ मीलपर किजिल अरबततक बना दिया। मेर्वके ऊपर अधिकार हो जानेपर रेल बनानेमे और भी उत्साह हुआ, और अप्रैल १८८५ ई०के उकाजे (राजादेश) द्वारा रेलको आगे बढ़ानेकी स्वीकृति दी गई। ३० जूनको काम शुरू हुआ। इस रेलवे लाइनके बनानेमे बाईस हजार तेक्के मजदूर काम करते रहे, और चौदह महीनेके भीतर रेल किजिल अरबतसे ३५२ मील मेर्वतक पहुंच गई। मेर्वसे चारजूयकी लाइनपर काम अगस्त १८८६ ई०मे आरंभ हुआ। इस लाइनको साठ मील रेगिस्तानमेसे जाना था। चार मासमें यह एक सौ एकतालीस मील लबी रेल भी तैयार हो गई। कास्पियन तटसे वक्षुके बायें किनारेपर अवस्थित चारजूय-तक अब ६६४ मील लंबी रेल बनकर तैयार हो गई। वक्षु हमारी गंगाकी तरह एक बडी नदी है, जिसका पाट चारजूयमे सवा मीलका है। नदीसे थोड़ा ही हटकर दोनों किनारोंपर रेगि-स्तान है, जो कि कराकुम और किजिलकुमके महान् रेगिस्तानके भाग है। आमू (वक्षु)पर पुल बनानेके लिए लकड़ियोके ३३३० बेडे रूससे लाये गये। पहला पाया जून १८८७ ई०मे बैठाया गया और काम इतनी तत्परतासे हुआ, कि छ महीनेके बाद जनवरी १८८८ ई०मे वक्षुका पुल यातायातके लिये खोल दिया गया। यह पुल ४६००गज लंबा था, जिससे २२७० गज चौडी जल-धारा बहती थी। सितंबर १८८७ ई०मे वक्षु तटसे २१६ मीलपर अवस्थित समरकंदतककी लाइन-पर काम शुरू हो गया, जिसे २८ मीलका रेगिस्तान पार करके कराकुलमे जरफ्शा-सिंचित उपत्यका मे पहुचना था। अंतमे मई १८८८ ई०मे कास्पियनसे समरकंदतक ८७९ मीलकी रेल तैयार हो गई। इस रेलवे लाइनपर प्रति मील औसत खर्च ६१४४ पौंड (अस्सी हजार रुपया) आया था, जब कि हिंदुस्तानमें अंग्रेजी कंपनियोंने रेलोपर प्रति मील अठारहसे बीस हजार पौड खर्च किये। १८९५ ई०में समरकन्द और ताशकंदके बीच रेल बननी शुरू हुई। उसके बाद अंदिजान (फरगाना)की लाइन भी तैयार की गई। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्क तक १९२ मीलकी रेल बनी। कुश्कसे हिरात, गीरिश्क, कंधार और चमन होते मध्य-एसियाकी रेलोंको क्वेटामे पाकिस्तानी रेलोंसे आसानीसे मिलाया जा सकता था, इस रास्ते कुश्क और चमनके बीच सिर्फ ४५० मीलकी लाइन बनानी थी। इस सारे रास्तेमे कोई दुर्लंघ्य बाधा नहीं है. सिर्फ खुम्बान (चश्मेसब्ज) डाडेको पार करते लाइनको समुद्र तलसे ३४०० फुट ऊपर उठना पड़ता। चश्मेसब्जके डाड़ेस तीस मीलपर ही सब्जवार है।

८. अश्काबाद

कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्कसे ३२२·२५ मीलपर अवस्थित अश्काबादको रूसियोंने अपना शासन-केंद्र बनाया, जिसकी स्थापना १८८३ ई०में अक्कल हरितावलीके सबसे चौड़े तथा कोपेतदाग पर्वतमालाके सानुपर है। १८९९ ई०मे इसकी जनसख्या सोलह हजार थी, जिसमे दस हजार सैनिक थे। अश्काबादसे नातिदूर कोपेतदागके पहाड़ोंमे २४०० फुटकी ऊंचाईपर फीरोजा और ३००० फुटकी ऊंचाईपर खैराबाद मंसूरी-शिमला-जैसे ठढे पहाडी नगर है, जहांपर रूसी अफसर अपनी गर्मिया बिताया करते थे। अश्काबादका अर्थ आंसुओकी नगरी या इश्काबादसे प्रेमनगरी भी हो सकता है।

९. मेर्व

यद्यपि यह ऐतिहासिक नगरी, ध्वंसावशेषके रूपमें ही सही, मौजूद थी, लेकिन इसके पहले ही इश्काबादको शासन-केंद्र बनाया जा चुका था, इसलिये मेर्व एक छोटा-सा कस्बा ही रह गया, और उसे बोल्शेविक-क्रांतिके बाद ही आगे बढ़नेका मौका मिला।

स्रोत-ग्रन्थ

१. ओचेर्क इस्तोरिइ तुर्कमान्स्कओ नरोदा (व. व. बर्तोल्द, १९२८)
२. आजियात्स्कया रोस्सिया (अ. क्रूवेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७२-७७)
३. तुर्कमानिया इ येये कुरोर्त्नया बगात्स्वा (व. अ. अलेक्सन्द्रोफ, मास्को, १९१०)
४. Heart of Asia (E. D. Ross, London. 1899)
५. History of Mongol (H. H. Howorth, London, 1876-88)
६. La rivalite anglo-russie en xxi siecle en Asie (A. M. F. Rouire, Paris, 1908)

भाग ५

बोल्शेविक-क्रांति

अध्याय १

रूसमें क्रांति

१. लेनिन रूसमें (१९१७ई०)

यद्यपि जार अब तख्तसे उतार दिया गया था, और लोग बड़ी-बड़ी आशा कर रहे थे, लेकिन फर्वरी-क्रातिके परिणामस्वरूप जिन लोगोंके हाथमे शासन गया, वह अब पुराने स्वार्थोंको उसी तरह सुरक्षित रखना चाहते थे, जिस तरह जारशाही करती आ रही थी। औद्योगिक पूंजीवादकी स्थापनाके बाद भी रूसमें अभीतक सामन्तशाही स्वार्थोंके हाथमे ही सैनिक और असैनिक शक्ति थी। फर्वरी-क्रातिने पूजीपतियों और मध्यवर्गको ऊपर आनेका मौका दिया, जो पश्चिमी युरोपकी तरह शुद्ध पूजीका शासन मजबूत करना चाहते थे। लडाईने लोगोंकी जैसी आर्थिक अवस्था कर डाली थी, और किसानों और मजदूरोंके संघर्षोंने जो भावनाये पैदा कर दी थीं, उनके लिये अस्थायी सरकारने कुछ नही किया। लेनिनके अनुसार अस्थायी सरकार "रूसके लोगोंको न शांति दे सकी, न रोटी, न पूर्ण स्वतंत्रता", बल्कि जारशाहीके हट जानेसे पश्चिमी दोस्त कही कोई दूसरा अर्थ न लगाने लगे, इसलिये अस्थायी सरकारने युद्धको पहले हीकी तरह सरगर्मीके साथ चालू रखनेका विश्वास दिलाया। यही नहीं, बल्कि उसीके लिये छ अरब रूबलके 'स्वतंत्रता-ऋण'के उठानेका प्रयत्न किया। भूमि अब भी जमींदारोंके हाथमे अछूती रही, पूजीपतियोंके हाथसे कारखानोंको जरा भी इधर-उधर करनेकी कोशिश नही की गई। कुर्स मोगिलेफ और पेर्मकी गुबर्नियों (प्रदेशों) में किसानोंने कुछ करना चाहा, तो मार्चमे उनके ऊपर सेना भेजी गई। जारशाही अफसर और पुराना शासन-यंत्र वैसा ही अक्षुण्ण रक्खा गया, जिस तरह भारतसे अग्रेजोंके जानेके बाद हिन्दुस्तानमें। बड़े-बड़े जमींदार और पक्के राजभक्त अब भी सर्वेसर्वा थे; समाजवादी क्रांतिकारी दलका वकील करेन्स्की न्यायमंत्री बना था। उसने जारशाही समयके सरकारी वकीलोंको अपनी जगहपर कायम रक्खा। और तो और, पुरानी उपाधियों—राजा, कौण्ट, बारोन आदि—को भी जैसे-का-तैसा ही बनाये रक्खा। नई सरकारने जारके परिवारको सुरक्षित रखनेके लिये उसे इंगलैंड भेजनेकी कोशिश की, लेकिन जबर्दस्त विरोध देख वैसा नहीं कर पायी। फर्वरी-क्रांतिके बाद जो मूर्तियां सामने आईं और उन्होंने जो रवैया अख्तियार किया, उसने बतला दिया, कि इनसे साधारण जनता-का कोई हित नही हो सकता।

लेनिनको जैसे ही फर्वरी-क्रांतिकी खबर मिली, वैसे ही वह रूस पहुंचनेके लिये बेकरार हो गये। लेकिन उनका नाम मित्रशक्तियोंके खुफिया-विभागकी काली-सूचीमें दर्ज था। अंग्रेज अपने प्रदेशसे होकर जानेकी आज्ञा देनेके लिये तैयार नही थे। सोवियतोंकी मांगसे मजबूर होकर अस्थायी सरकारके वैदेशिक विभागने सभी निर्वाचित रूसियोंको देश लौटनेके लिये मित्रशक्तियोंको लिखा, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया, कि अन्तर्राष्ट्रीयता-वादियोंको न आने दिया जाय। इस प्रकार लेनिनका लौटनेका रास्ता बन्द था। वह लौटनेका कोई उपाय सोच रहे थे। उनको यह भी ख्याल आया, कि स्वीडनका पासपोर्ट लेकर जर्मनी-के रास्ते जायं, लेकिन उन्हें स्वीडिश भाषाका एक शब्द भी मालूम नहीं था। तब उन्होंने गूंगा बननेकी भी सोची। सब देखकर अन्तमे उन्हें यह साफ मालूम होने लगा, कि जर्मनीके रास्तेसे ही लौटा जा सकता है। रूसी निर्वासितों—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादियों

——के रूसमें लौटनेसे जर्मन अपना नुकसान नही समझते थे। इसीलिये स्वीजरलैंडके समाजवादी प्लातेनके बहुत लिखा-पढी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने देशके भीतरसे लेनिनको जानेकी आज्ञा दी, कि वह उसी खास ट्रेनमे जाय, जिससे दूसरे निर्वासित रूसी जायंगे। वह न रास्तेमें उतरे, और न किसीसे बातचीत करें। लेनिनको तो रूसमे पहुंचनेसे मतलब था, उन्होंने इस शर्तको स्वीकार कर लिया और मुहरबन्द ट्रेनपर बैठ गये। जब फिनलैंड और रूसकी सीमापर उनकी ट्रेन पहुंची, तो बोल्शेविक नेताओंने उन्हें देशकी परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्रादके पास बेलोअस्त्रोफ स्टेशनपर १६ (३) अप्रैल १९१७ ई०को उन्हे उनके साथियोने देशकी परिस्थिति समझाई। जब वह पेत्रोग्रादके फिनलैंड रेलवे स्टेशनपर पहुंचे, तो हजारों फौजी सिपाही अपने प्रिय नेताके स्वागतके लिये पातीसे खडे सलामी दे रहे थे, सैकडों लाल झंडे फहरा रहे थे। पताकोंपर बड़े-बडे अक्षरोंमे "स्वागत लेनिन" लिखा था। एक हथियारबन्द गाडीपर खडे होकर लेनिनने एक छोटा-सा भाषण दिया, जिसको समाप्त करते हुये "समाजवादी क्राति जिन्दाबाद"का नारा लगाया। १७ (४) अप्रैलको बोल्शेविकोंकी एक बैठकमे लेनिनने अपने प्रसिद्ध निबन्ध "वर्तमान क्रांतिमे सर्वहारोंके सामने काम" को रक्खा, जिसमे लेनिनने बतलाया, कि यह सक्रांतिकी अवस्था है, जिसके द्वारा शक्ति पूंजीवादियोंके हाथमे चली गई है। अब शक्तिको सर्वहारों और गरीब किसानोंके हाथमें करते क्रातिकी दूसरी सीढीको पार करना है। लेनिनने यह भी कहा, कि लड़ाईसे हमें अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिये। इसे उनके सहयोगियोंमेसे भी कितनोने पसन्द नहीं किया। उनका कहना था——तब तो जर्मन बेधडक सारे रूसको दखल कर लेंगे और हम जारशाहीके फंदेसे निकलकर जर्मनशाहीके हाथमे चले जायगे। लेकिन लेनिन अपने निश्चयपर दृढ़ थे——"अब जब कि रूसमें भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है, तो हमारा सबसे पहला काम है, शासनको कमकरों और गरीब किसानोंके हाथमे लानेकी कोशिश करना। अस्थायी सरकारको हमे कोई मदद नहीं करनी चाहिये। यह पूजीवादियोंकी सरकार साम्राज्यवादी छोड़ और हो ही क्या सकती है?....सोवियतोंको भी कमकरों और किसानोंके हाथमें होना चाहिये। जमीदारोंकी जमींदारीको छीनकर किसानोंको दे देना चाहिये। अलग-अलग बैंकोंका मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिये। यद्यपि समाजवादकी स्थापना तुरंत नही हो सकती, लेकिन राष्ट्रकी उपज और उसके वितरणके साधनोंको सोवियतों (पंचायतों)के हाथमे होना चाहिये। जनतान्त्रिक समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) कर देना चाहिये, जिससे मालूम हो कि हम पैरिसकम्यून (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते हैं।" लेनिनके यह विचार रूसके तत्कालीन राजनीतिज्ञोंके ऊपर बमकी तरह पडे। बोल्शेविक नेता भी घबडा उठे—— "यह शेखचिल्लीका महल है। वास्तविकतासे इसका कोई सबंध नहीं है। लेनिन दस सालतक रूसको नही देख पाये, इसीलिये वह इस तरहकी ऊल-जलूल बाते करते है।"

लेकिन लेनिनकी बाते ऊल-जलूल नही थीं, और न वह रूसी जनताकी नब्ज पहचाननेमे गलती कर सकते थे। उन्हे जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हें अच्छी तरह समझानेमे सफल हो रहे थे। उस समय बोल्शेविक पार्टीका केन्द्र क्शेन्स्की भवनमे था, जिसकी सामनेकी सडकपर लेनिन रोज व्याख्यान देते थे। तीन महीनेतक लगातार उनकी कलम और जबान चलती रही। कुछ ही समयमें लेनिन अपनी बातोंको मनवानेमे समर्थ हुये। पेत्रोग्रादके कमकर तो पहले हीसे उनपर अद्भुत विश्वास रखते थे, अब बोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुये। वह देख रहे थे, कि अस्थायी सरकारके जोर देनेपर भी सैनिक मैदान छोड़कर भागते जा रहे हैं, जर्मन फौजें आगे बढ़ती आ रही है। ऐसी अवस्थामें अच्छी शर्तोंपर जर्मनीसे सुलह कर लेना ही अच्छा है। अप्रैलमे बोल्शेविक पार्टीकी सातवी अखिल रूसी कांफ्रेंस हुई, जिसमें भी एक प्रस्ताव पास करके मांग की गई, कि जमींदारोंसे जमीन छीनकर किसान-कमेटियोंके हाथमें दे दी

जानी चाहिये। इसी काफ्रेंसमें स्तालिनने जानियोंकी समस्यापर प्रकाश डालते हुए कहा था, कि सभी जातियोको आत्म-निर्णयका अधिकार मिलना चाहिये, यदि वह रूससे अलग होना चाहे, तो उसके लिये भी उन्हें स्वतत्रता मिलनी चाहिये। ३ और ४ मई (२० और २१ अप्रैल)को अस्थायी सरकारकी साम्राज्यवादी नीतिके विरुद्ध पेत्रोग्रादमे एक लाख आदमियोंने प्रदर्शन किया। इसके विरुद्ध पूजीवादियोने सैनिक अफसरों, विद्यार्थियों, दूकानदारोका जलूस निकाला, जिसका नारा था "अस्थायी सरकारमे विश्वास"। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्रके कमांडर जेनरल कोर्निलोफने हुक्म दिया था, कि मजदूरोंके प्रदर्शन पर सेना गोली चलाये, लेकिन सिपाहियोंने वैसा करनेसे साफ इन्कार कर दिया।

२ करेन्स्की सरकार

१५ (२) मईको अस्थायी सरकारमे कुछ परिवर्तन हुआ, और अब मंत्रिमंडलमें मेन्शेविकों और समाजवादी क्रातिकारियोंकी प्रधानता थी। समाजवादी क्रांतिकारी नेता करेन्स्की अब युद्धमंत्री था। उसने जर्मनीके खिलाफ युद्धको और भी जोरसे चलानेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी जनता इसके लिये तैयार नही थी, प्राचीनपंथी अत्याचारी जारशाही गुलामोकी बातोमे पड़कर वह और लड़नेके लिये सन्नद्ध नही थे। बोल्शेविक इस वक्त वही कर रहे थे, जिसे रूसी जनता चाहती थी। अबतक बोल्शेविकोंका प्रभाव पेत्रोग्रादके मजदूर-सगठनोंमें बहुत बढ गया था। इसका परिणाम यह हुआ, कि मजदूरोंने सोवियतोंके नये चुनावमे मेन्शेविकों और समाजवादी क्रांतिकारी प्रतिनिधियोको हटाकर बोल्शेविकोंको निर्वाचित किया। सोवियतोंमे ही नही, मजदूर सभाओंमे भी, विशेषकर फैक्ट्री कमेटियोंमे, बोल्शेविकोंकी प्रधानता हो गई। १२ जून (३० मई) को पेत्रोग्रादमें फैक्ट्री कमेटियोंकी पहली कांग्रेस हुई, जिसके तीन चौथाई प्रतिनिधियोंने बोल्शेविकों-के पक्षमें अपनी राय दी। गावों और शहरोंसे लेनिन और बोल्शेविक पत्रिका 'प्रावदा'के पास हजारों पत्र आते रहते थे। सिपाहियोने अपने एक पत्रमे लिखा था—"साथी, मित्र लेनिन, याद रक्खो, कि हममेसे एक-एक आदमी जहा है, वहां तुम्हारा अनुगमन करनेके लिये तैयार है। तुम्हारे विचार ठीक किसानों और मजदूरोंके संकल्पको प्रकट करते है। सोवियतोंकी प्रथम अखिल रूसी कांग्रेस जून १७ मे हुई, जिसके हजार प्रतिनिधियोंमें एक सौ पाच ही बोल्शेविक थे, लेकिन अब वह इतने प्रभावित हो गये थे, कि उन्होने बोल्शेविकोंकी नीतिका समर्थन किया। जिस समय कांग्रेस हो रही थी, इसी समय बोल्शेविक पेत्रोग्रादके मजदूरों और सैनिकोके एक भारी प्रदर्शनकी तैयारी कर रहे थे। इसके नारे थे--"सभी शक्ति सोवियतोंको", "पूजीवादी दसो मत्री मुर्दाबाद", "रोटी, शाति और स्वतंत्रता"। मेन्शेविकों और समाजवादी क्रातिकारियोंको भय लगा, कि इससे बोल्शेविकों-का प्रभाव और भी बढ जायगा, इसलिये उन्होंने तीन दिनतक सभी तरहके प्रदर्शनोंको बंद रखने-का प्रस्ताव पास कराया, साथ ही पेत्रोग्राद सोवियतकी कार्यकारिणी समितिने १ जुलाई (१८ जून) को एक साधारण प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा वह "अस्थायी सरकारमे विश्वास"का नारा लगवाना चाहते थे। बोल्शेविकोंने प्रदर्शन करना मंजूर किया, लेकिन उसमें उन्होंने अपने नारे लगवाये। उस दिनके प्रदर्शनमे चार लाखसे अधिक कमकरोने भाग लिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी जो चाहते थे, वह नहीं हुआ और प्रदर्शनने अस्थायी सरकारमे अविश्वासके जलूसका रूप ले लिया।

अप्रैल १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्धमे शामिल हो गया था, लेकिन तबतक इंगलैड और अमेरिकाकी हालत बुरी हो गई थी। यदि पूर्वी मोर्चेपर रूसी भी प्रतिरोध बन्द कर देते, तो वह कुछ नहीं कर सकते थे। इसीलिये वह करेन्स्कीपर जोर दे रहे थे। जुलाईमे मन्त्रिमंडलमे परिवर्तन होकर करेन्स्की प्रधान-मंत्री बन गया। केरेन्स्कीने जोर देकर आक्रमण करवाया, लेकिन रूसी सेनाको तार्नोपोलमे बुरी तरहसे हारकर जल्दी ही हटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। दस दिनके आक्रमणमें साठ हजार रूसी हताहत हुये। लेकिन इससे क्या ? रूसी पूंजीवादी अपने पश्चिमी भाई-बन्दोंके दामनको पकड़े रहना चाहते थे। अभीतक अस्थायी

मंत्रिमडलका काम बहुत कुछ मेल-जोलके साथ चल रहा था, लेकिन अब प्रधान-सेनापति कोर्निलोफ और प्रधान-मत्री करेन्स्कीमे झगडा हो गया। सितम्बरके आरम्भमे कोर्निलोफ कई दूसरे सेनापतियों-की सहायतासे करेन्स्कीको अल्टीमेटम दे सेना ले पेत्रोग्रादपर कब्जा करनेके लिये चल भी पड़ा। करेन्स्की जनतासे डरता था, लेकिन अब उसकी मदद लिये बिना कोई चारा नहीं था। कोर्नि-लोफसे मुकाबिला करनेके लिये सबसे आगे थे बोल्शेविक। करेन्स्कीने अपना नया मंत्रिमंडल बनाया, इसमे भी नरमदली ही अधिक थे, जिनमें जेनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल बेर्देव्स्की भी थे। यह दोनों समाजवादी नही थे, तो भी उन्होंने अपने साथी मंत्रियोसे कहा, कि सेना और नही लड़ सकती, इसलिए लड़ाई बन्द कर देनी चाहिये और सैनिकोंको युद्धक्षेत्रसे हटा लेना चाहिये। लेकिन मित्रशक्तियोंके पिट्ठू करेन्स्की और उसके साथियोंने उनकी बात नही मानी।

युद्धसे प्रति दिन चार करोड रूबलका खर्च देशके मत्थे पड़ रहा था। यह पैसा कहासे आये? सरकारने अन्धाधुन्ध कागजके नोट छापकर उसे पूरा करना चाहा, जिसका परिणाम हुआ सभी चीजोके दामका अप्रत्याशित रूपसे बढना—मुद्रास्फीति। लोग अपने वेतनसे जीविका नही चला सकते थे। साथ ही कारखानोके लिये कच्चा माल और ईधन तथा मजदूरोंके लिये रोटी मिलनी मुश्किल हो गई। रेल और यातायातके दूसरे साधन भी ठप हो गये। मिले और कारखाने बेकार हो गये। मईमें १०८ कारखाने जिनमें ८७०० मजदूर काम कर रहे थे, जूनमें १२५ कारखाने (३८४५५ आदमी), जुलाईमे २०६ कारखाने जिनमे ४७७५४ मजदूर काम करते थे, बन्द हो गये। इस प्रकार मईमें जहा कारखानोंके बंद होनेसे ८७०० मजदूर बेकार थे, वहा जूनमे ३८४५५ और जुलाईमें ४७७५४ मजदूर बेकार हो गये। इस बेकारीने अस्थायी सरकारके विरुद्ध लोगोके भावोको और भड़का दिया। इसीलिये कोई आश्चर्य नही, यदि १७ (४) जुलाईको पाच लाख मजदूरोने अस्थायी सरकारके विरुद्ध जब-र्दस्त प्रदर्शन किया। मेन्शेविक और समाजवादी क्रांतिकारी देख रहे थे, कि वह लोगोंपर अपने प्रभावको खोते जा रहे है, और अधिक समयतक वह शासनको अपने हाथमे नही रख सकेगे। इसलिये उन्होने गोलीसे लोगोंकी हिम्मत तोड़नेकी कोशिश की। १७ (४) जुलाईको युद्धक्षेत्रसे लौटाकर मगाये गये सैनिक अफसरो और कसाकोने प्रदर्शनकारियोंपर गोलियां चलाई, अगले दिन भी वह गोलिया चलाते रहे। उन्होंने बोल्शेविक पत्रिका 'प्रवदा'के कार्यालयपर आक्रमण करके उसे तोड़-फोड दिया। वह लेनिनको पकड़नेके लिये उनकी जगहपर भी पहुंचे, लेकिन तबतक लेनिनको वहासे हटा दिया गया था। वह पेत्रोग्रादसे दूर एक जंगलमे झोंपड़ीके भीतर रहते थे। बोल्शेविक पार्टी अब आधी गैरकानूनी हो चुकी थी। करेन्स्कीकी सरकार लेनिनपर 'देशद्रोह'का अपराध लगा रही थी। रूइकोफ, कामेनेफ और त्रोत्स्की-जैसे ढिलमिलयकीन क्रातिकारियोने जोर दिया, कि लेनिनको आकर अदालतमें अपनी पैरवी करनी चाहिये, लेकिन बोल्शेविकोने इसका विरोध करते हुये कहा—"वह लेनिनको पकड़कर जेल नही ले जायगे, बल्कि रास्तेमें ही मार डालेंगे।" इस दूर-दर्शिताका समर्थन इतिहासने किया। बोल्शेविक-क्रांति लेनिनके बिना बहुत निर्बल हो जाती, उस महान् प्रतिभाके प्राणोकी रक्षा उस समय इसी दूरदर्शितासे हो सकी। ८ अगस्त (२६ जुलाई)को बोल्शेविक पार्टीकी छठी काग्रेस पेत्रोग्रादमे शुरू हुई। पुलिसके डरके मारे काग्रेस गुप्त रीतिसे हो रही थी, तब भी लेनिनका उसमे आना खतरेसे खाली नहीं था, इसलिये वह नहीं आ सके। इसी कांग्रेसने स्तालिनके प्रस्तावको स्वीकार करते हुये बोल्शेविकोंके आर्थिक प्रोग्रामका समर्थन किया—जमींदारोंकी जमींदारियोंको जब्त किया जाय, सभी भूमिको राष्ट्रीय, सभी बैंको और बडे-बड़े उद्योग-धंधोंको राष्ट्रीय बना दिया जाय, और उत्पादन और वितरणपर कमकरोंका अंकुश हो। इसी कांग्रेसने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारीका काम किया।

२५ (१३) अगस्त १९१७ ई०को राज्यपरिषद्की बैठक मास्कोमे बुलाते हुये करेन्स्कीने चाहा कि उसके द्वारा सैनिक अधिनायकत्व कायम करके अपने शासनको मजबूत कर दिया

स्थापित हो जानेपर बोल्शेविकोंके लिये अधिकार हाथमे लेना मुश्किल नही है। "पार्टीके कर्तव्यको अच्छी तरह साफ कर देना चाहिये। पेत्रोग्राद और मास्कोमें सशस्त्र विद्रोह, अधिकारको हाथमे लेना, और सरकारको निकाल बाहर करना—यह काम आजका हमारा प्रोग्राम होना चाहिये।" लेकिन अभी भी बोल्शेविक नेताओंमें कुछ ऐसे लोग थे, जो इतने बड़े कदमको उठानेमें भारी खतरा समझते थे। लेकिन खतरा लिये बिना क्या कभी कोई बड़ा काम किया जा सकता है? केन्द्रीय समितिने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारियां बड़ी तेजीसे शुरू कर दी। पेत्रोग्राद-सोवियतकी एक क्रांतिकारी सैनिक समिति स्थापित की गई, जो विद्रोह-का संचालन-केन्द्र थी। पेत्रोग्रादमें उस समय बारह हजार हथियारबन्द लाल गारद मौजूद थे। निश्चय हुआ, कि उनकी सहायताके लिये हेलसिकीसे बाल्तिक नौसैनिक बेडेके नाविकोको भी बुलाया जाय। सिर्फ पेत्रोग्राद हीमे नहीं, दूसरी जगहोपर भी विद्रोहकी तैयारिया करना जरूरी समझा गया। दोनेत्स-उपत्यकामे बोरोशिलोफ, खार्कोफमे अर्त्योम सेर्गेयफ, वोल्गा-प्रदेशमें कुइविशियेफ, उरालमे ज्दानोफ, पोलेसिये इलाकेमें कगानोविच, इवानोवो-वोज्नेसेन्स्कमें म० व० फ्रुन्जे, उत्तरी काकेशसमे स० म० किरोफ सशस्त्र विद्रोहके सञ्चालक-नियुक्त हुये।

जिस समय इस तरह जबर्दस्त तैयारी की जा रही थी, उसी समय त्रोत्स्की और कुछ दूसरे ढिलमिलयकीन बोल्शेविक-नेताओंने अस्थायी सरकारको यह जाननेका मौका दे दिया, कि ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) १९१७ ई०को—जिस दिन कि सोवियतोंकी दूसरी कांग्रेस शुरू होनेवाली थी—विद्रोह शुरू होनेवाला है। करेन्स्की सरकारने उसे दबा देनेका निश्चय किया। बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिका केन्द्र स्मोल्नी प्रतिष्ठान था। प्रति-क्रांतिके संचालकोने योजना बनाई, कि स्मोल्नीपर अधिकार करके बोल्शेविक नेताओंको पकड़ लिया जाय।

३. राजधानीपर अधिकार

६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)को एक खुली मोटर लारीपर सरकारपक्षी कादेतोंकी टुकड़ी 'रबोची-पुत' (कमकरपथ)की नई कापीको जब्त करनेके लिये उसके आफिसमें पहुची—'प्रावदा' इस समय इसी नामसे निकल रही थी। खबर लगते ही क्रातिकारी सैनिक एक सशस्त्र कारमे वहां पहुच गये, और उन्होंने कादेतोंको भागनेके लिये मजबूर किया। 'रबोची-पुतमें' उस दिन "हमें क्या चाहिये"के हेडिंगसे स्तालिनका एक लेख छपा था, जिसमे कहा गया था—"अब वह समय आ गया है, जब कि और देरी करना क्रातिके लिये खतरनाक होगा। जमींदारो और पूजीपतियोकी वर्तमान सरकारकी जगह हमें मजदूरो और किसानोंकी सरकारको अवश्य कायम करना है।" अगले दिन सोवियतोंकी काग्रेसके उद्घाटनके शुरू होते ही कार्रवाई करनेका निश्चय करके क्रातिकारी सैनिकोको तुरन्त विद्रोह करनेकी हिदायत दी गई। ६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)के सबेरे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अपनी सैनिक टुकड़ियोंको कार्रवाईकी तैयारीके लिये आज्ञा दे दी, और यह भी, कि राजधानीकी ओर आनेवाली हरएक सैनिक टुकड़ीपर निगाह रक्खी जाय। उसने बाल्तिक नौसैनिक बेड़ेके युद्धपोतों और नौसैनिकोको मददके लिये बुलानेका भी निश्चय कर लिया, और हेलसिकीमें बाल्तिक नौसैनिक बेड़ेकी सोवियतोंकी केन्द्रीय समितियोंको पुराने संकेतके अनुसार तार दे दिया—"नियमोंको भेजो", जिसका अर्थ था विद्रोह आरम्भ हो गया, पोतों और आदमियोंको भेजो। ६ नवम्बरको ही एक और भी जबर्दस्त सैनिक शक्ति क्रांतिकी सहायताके लिये राजधानीके भीतर प्रविष्ट हुई, जब कि लेनिन मजदूरके भेसमें चेहरा बांधे, एक साथीके साथ स्मोल्नीमें पहुचे। स्मोल्नीकी रक्षाके लिये पूरा इन्तिजाम कर लिया गया था, क्योंकि वही क्रांतिका प्रधान संचालकमंडल, क्रातिके दिमागका केन्द्र था।

उसी दिन पीतर-और-पालके किलेके हथियारखानेसे हथियार लेकर कितने ही सैनिक बोल्शे-

विकोंकी तरफ चले आये थे। आधी रातसे थोडी देर बाद केन्द्रीय टेलीफोन-आफिस, राज्यबैंक, बड़ा डाकखाना, सभी रेलवे-स्टेशन और मुख्य सरकारी कार्यालय बोल्शेविक क्रांतिकारियोके हाथमे थे। क्रांतिकारी सैनिक समितिने आज्ञा दी, कि सैनिकपोत (क्रूजर) आरोरा नेवामे ऊपरकी ओर बढकर हेमन्त-प्रासादके पास जाये। आरोराके कमाडरने यह कहकर हुक्म माननेसे इन्कार किया, कि नेवा नदीमे पानी पर्याप्त नही है। इसपर नौसैनिकोने थाह लिया, तो पानी काफी गहरा देखा। उन्होंने कमाडरको गिरफ्तार कर लिया और वह युद्धपोतको अस्थायी सरकारके अतिम शरण-स्थान जारके भव्य महल हेमन्त-प्रासादके पास ले गये। आरोराकी तोपे अब उस प्रासादकी ओर मुह किये तैयार थीं। विद्रोह पहलेसे बनाई हुई सूक्ष्म योजनाके अनुसार चल रहा था। ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के ९ बजे सबेरे विद्रोही पलटनोने हेमन्त प्रासादकी ओर जानेवाले सभी रास्तोपर अधिकार कर लिया। अस्थायी सरकारका मत्रि-मडल उस वक्त प्रासादमे अपनी बैठक कर रहा था। अब साफ मालूम हो गया, कि अस्थायी सरकारकी मददके लिये एक भी सैनिक टुकड़ी नही है। करेन्स्कीको कसाकोने सहायता देनेका वचन दिया, किन्तु वह रेडक्रासकी नर्सका भेस बना उसी दिन सबेरे युक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी झडेवाली एक मोटरपर बैठकर राजधानीसे भाग गया।

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के १० बजे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अस्थायी सरकारके उलट देनेकी घोषणा की। यह घोषणा लेनिनने तैयार की थी, जिसमे लिखा था—

"अस्थायी सरकार उलट दी गई। राज्यशक्ति पेत्रोग्रादके कमकर-सैनिक-प्रतिनिधियोंकी सोवियत और क्रातिकारी सैनिक समितिके हाथमे चली गई। वही पेत्रोग्रादके सर्वहारों और सैनिकोंकी मुखिया है।

"जनताके इस सघर्षके उद्देश्य निम्न हैं—तुरन्त ही जनतान्त्रिक-सधिका प्रस्ताव रखना, जमींदारीको खतम करना, उत्पादनपर कमकरोका अंकुश स्थापित करना और सोवियत सरकारका निर्माण करना।

"मजदूरो, सिपाहियों और किसानोंकी क्राति जिन्दाबाद।"

उसी दिन पेत्रोग्राद सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमें लेनिन भी उपस्थित थे। लोगोने बडी गर्मागर्म तालियां बजाकर अपने नेताका स्वागत किया। लेनिनने इस बैठकमें भाषण देते हुए कहा—"साथियो! बोल्शेविक जिसकी अवश्यकताके बारेमे बराबर कहते थे, वह मजदूरों और किसानोंकी क्रांति हो गई। अबसे रूसके इतिहासमे एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। यह क्रांति, तीसरी रूसी क्राति, अन्तमे समाजवादके विजयकी ओर ले जायगी।"

पेत्रोग्राद सोवियतने प्रस्ताव पासकर क्रातिका स्वागत किया। इस समयतक हेमन्त प्रासाद छोड़कर सारा पेत्रोग्राद-नगर बोल्शेविकोके हाथमे था। आज ही सोवियतोंकी काग्रेस शुरू होनेवाली थी, लेकिन उसके शुरू होनेसे पहले ही हेमन्त-प्रासाद पर अधिकार करनेके लिए लेनिनने हुक्म दिया था। अस्थायी सरकारको तुरत आत्मसमर्पण करनेके लिए अल्टीमेटम दिया गया, लेकिन उसने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर ९ बजे शामको हेमन्त-प्रासादपर आक्रमण शुरू कर दिया गया। पूर्व सकेतके अनुसार पीतर-और-पाल किलेसे एक तोप दागी गई। आरोराने कुछ गोले चलाये। इसके बाद बोल्शेविकोंके नेतृत्वमे नौसैनिको और सैनिकोंने जारोके हेमन्त-प्रासादपर हल्ला बोल दिया। अस्थायी सरकारको बाहरसे मदद मिलनेकी आशा थी, लेकिन वह कहा आनेवाली थी?

सोवियतोंकी द्वितीय कांग्रेस स्मोल्नीमें उस दिन (७ नवम्बर) पौने ११ बजे रातको शुरू हुई। हेमन्त-प्रासादके ऊपर इस वक्त भी हमला हो रहा था। काग्रेसमे भाग लेनेवाले कितने ही प्रतिनिधि संघर्षमें भाग लेकर यहां आये थे। कांग्रेस शुरू होते समय मेन्शेविको, दक्षिणपक्षी समजवादी क्रांतिकारियो और कुछ दूसरे प्रतिनिधियोने कहा, कि सैनिक और बिना पार्टीवाले प्रतिनिधि काग्रेस छोड़कर चले चले, लेकिन उनका साथ देनेवाले मुट्ठीभर आदमी थे। उनके हाल छोड़नेके समय रोप प्रकट करते हुए प्रतिनिधियोंने चिल्लाकर कहा—'कोर्निलोफी', 'भगोड़े'। बारहवीं सेनाके एक प्रतिनिधिने उठकर

कहा—"हमें अधिकार अपने हाथमें लेना है। जाने दो इन्हें। सेना उनके साथ नहीं है।"

रातके २ बजकर १० मिनटपर हेमन्त प्रासादको बोल्शेविकोंने दखल कर लिया और अस्थायी सरकारके मंत्रियोंको गिरफ्तार करके पीतर-और-पालके किलेमें बंद कर दिया।

आधी रातके बाद (अब ८ नवम्बरकी तारीख हो गई थी) ५ बजे सोवियतोंकी कांग्रेसने घोषित किया, कि सारी शक्ति सोवियतोंके हाथमें आ गई। तेरह दिन पीछे होनेके कारण पुराने रूसी पचांगके अनुसार उस दिन २५ अक्तूबरका महीना था, इसलिए इसे अक्तूबर-क्रांति कहते हैं। ८ नवम्बरकी शामको ८ बजकर ४० मिनटपर कांग्रेसकी दूसरी बैठक हुई, जिसमें लेनिनने शांति-घोषणा, भूमि-घोषणा पढ़ी। शांतिकी घोषणामें कहा गया था—युद्धमें पड़ी सभी जनता और उनकी सरकारें न्यायोचित जनतांत्रिक सुलहनामा करें, न किसीकी जमीन छीनी जाय, न किसीसे हरजाना मांगा जाय, और सभी उत्पीडित जातियोंको आत्म-निर्णयका अधिकार मिले। भूमिकी घोषणा द्वारा किसानोंको पंद्रह करोड़ हेक्तर (प्राय चालीस करोड़ एकड़) जमीन दी गई और पचास करोड़ सुवर्ण-रूबल वार्षिक मालगुजारीसे मुक्त कर दिया गया। इस घोषणाने किसानोंको बतलाया, "गांवोंमें अब कोई जमींदार नहीं रह गया"। उसी दिन ढाई बजे सबेरे कांग्रेसने प्रथम सोवियत सरकार जन-कमीसरोंकी परिषदके कायम होनेकी सूचना दी, जिसके अध्यक्ष व्लादिमिर इलिच (उलियानोफ) लेनिन बनाये गये और जातियोंके जनकमीसर (मंत्री) का पद योसेफ विसारियोन-पुत्र स्तालिन हुए। सोवियतमें दूसरे विश्वयुद्धके कुछ समय बादतक भी मंत्रियोंको जनकमीसर कहा जाता था। पहली सोवियत सरकारके सभी सदस्य बोल्शेविक थे, दूसरोंको अभी उतना साहस भी नहीं था, कि उसमें शामिल हों, लेकिन पीछे वामपक्षी समाजवादी क्रांतिकारी भी मंत्रिमंडलमें सम्मिलित हुए। ९ नवम्बर (२७ अक्तूबर) को ५ बजे सबेरे कांग्रेसकी बैठक समाप्त हुई, और लोगोंने "क्रांति चिरंजीव" "समाजवाद चिरंजीव" के गगनभेदी नारे लगाये।

करेन्स्कीने हेमन्त-प्रासादसे भागकर कसाक-जेनरल क्रास्नोफसे मिलकर फिर अधिकार प्राप्त करनेकी कोशिश की। क्रास्नोफने १० नवम्बर (२८ अक्तूबर) को पेत्रोग्रादके नजदीक जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) पर अधिकार कर लिया, लेकिन राजधानीके कमकर भला यह क्यों होने देने लगे। वह बड़ी तादादमें क्रांतिकारी सैनिकोंके साथ लड़नेके लिए गये। जिस समय क्रांतिकारी उधर फंसे हुए थे, उसी समय १० नवम्बरकी रातको क्रांति-विरोधियोंने तख्ता उलटनेके लिए षड्यंत्र किया। लेकिन उन्हें सफलता नहीं हुई। १३ नवम्बरको क्रास्नोफके कसाकोंको पुलकोवोके पास क्रांतिकारियोंने बुरी तरहसे हराया, और उससे भी ज्यादा वह कसाक सैनिकोंको समझानेमें सफल हुए, कि क्रांतिका विरोध करना अपने हितोंका विरोध करना है। कसाकोंने अपने जेनरलकी आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया। गत्चिनामें सोवियत नौसैनिकोंके प्रतिनिधिने कसाकोंसे मिलकर उन्हें कहा, कि अगर तुम सोवियतोंसे लड़ना बंद कर दो, तो तुम्हें घर जानेकी छुट्टी मिल जायगी।

पेत्रोग्रादके विद्रोहकी खबर सुनकर ७ नवम्बरको ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने भी विद्रोह आरम्भ कर दिया। उसी रातको क्रेमलिनके विद्रोही सैनिकोंको विद्रोह कर देनेकी आज्ञा देनेकी जगह वहांकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके नेताओंने क्रांति-विरोधी सैनिक हेडक्वार्टरसे समझौता करनेकी बातचीत शुरू की। ८ नवम्बरकी शामको मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने समझौतेकी बातचीत बंद करनेकी मांग की। इस सुस्तीके कारण क्रांति-विरोधियोंको मौका मिल गया और उन्होंने ९ नवम्बरको मास्को नदीके ऊपरके सभी पुलोंको अपने अधिकारमें कर लिया। इसके बाद क्रेमलिनको भी उन्होंने घेर लिया। देरी करना गलती थी। क्रांतिकारी शक्तियां मास्कोमें भी संगठित और सशक्त थीं। १३ नवम्बरको मास्कोके बड़े डाकखाने, केन्द्रीय तारघर और रेलवे स्टेशनोंपर क्रांतिकारियोंका अधिकार हो गया। दो दिन बाद उन्होंने क्रेमलिनपर गोलाबारी शुरू की। १५ नवम्बरको ९ बजे शामको ६ दिनकी लड़ाईके बाद क्रांति-विरोधियोंने हार खाकर आत्मसमर्पण किया और उसी दिन सारी शक्ति मास्को सोवियतकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली आई।

मास्को और पेत्रोग्रादमें बोल्शेविक सरकारके स्थापित हो जानेपर अब और जगहोंमें भी क्रांतिका वेग जोरसे फैला। क्रांति-विरोधी हजार कोशिश करते रह गये, लेकिन वह बोल्शेविकोंकी बाढ़ रोक न सके। फर्वरी-क्रांतिकी तरह पुराने शासनयंत्रके बलपर बोल्शेविक शासन नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने सबसे पहले उस यंत्रमें परिवर्तन किया। पुराने शासन-संबंधी बड़े-बड़े अफसरोंका स्थान सोवियतों और उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोंने लिया, और शासनयंत्रके भीतर रहकर षड्यंत्र करनेका मौका पुराने स्वार्थोंके लिए नहीं रह गया। १२ नवम्बरको सोवियत सरकारने घोषित करके मजदूरोंके लिए आठ घंटेका कामका दिन निश्चित कर दिया। २७ दिसम्बरको सभी निजी बैंकोंको राष्ट्रीय बनाकर उन्हें राज्यबैंकमें मिला देनेकी सरकारी घोषणा निकली।

सशस्त्र विद्रोहके समय स्मोल्नी पार्टीका तथा सैनिक-असैनिक शासनका केन्द्र रही। अब मंत्रालयोंको अपने-अपने कामको और सुव्यवस्थित रीतिसे करनेके लिए पुराने कार्यालयोंमें परिवर्तित कर दिया गया। २८ नवम्बरको जनकमीसर परिषद् (मंत्रिमंडल)ने आज्ञा दी, कि सभी मंत्रालय अपनी-अपनी इमारतोंमें चले जायं और मंत्री केवल शामके वक्त स्मोल्नीमें एकत्रित हों।

१५ नवम्बर १९१७ ई०को वह महत्त्वपूर्ण घोषणा की गई, जिसके द्वारा जारके राज्यमें रहनेवाली सभी जातियोंको बिना किसी भेदभावके समानाधिकार दिया गया —

(१) रूसमें रहनेवाली सभी जातियां समानता और पूर्ण प्रभुत्व रखती हैं, (२) रूसकी जातियोंको स्वतंत्रतापूर्वक आत्मनिर्णय तथा अलग होकर अपना स्वतंत्र राज्य कायम करनेका अधिकार है, (३) किसी जाति या जातीय धर्मके विशेषाधिकार या हस्तक्षेपको उठा दिया जाता है, (४) रूसकी भूमिमें रहनेवाली अल्पसंख्यक जातियों और वंशिक समूहोंको स्वतंत्र विकासका अधिकार है।

इस घोषणाने जारशाही साम्राज्यकी सभी जातियोंको एक सूत्रमें बांध दिया, उनके भीतर फूट पैदा करनेके सारे प्रयत्न सदाके लिये निकम्मे हो गये।

४. दास जातियोंकी मुक्ति

मध्य-एसियामें क्रांतिके बारेमें आगे हम कहनेवाले हैं। यहां इतना जान लेना चाहिये, कि जिस समय पेत्रोग्रादमें सशस्त्र विद्रोहकी सफलता और उसके बादके विरोधोंको हटानेके लिये संघर्ष हो रहा था, उस समय ताशकन्दके बोल्शेविक भी चुप नहीं थे। हमें मालूम ही है, कि जारशाही मध्य-एसियाका शासनकेन्द्र ताशकन्द था। १० नवम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविकोंको दबानेके लिये कसाक और कादेतोंने ताशकन्द सोवियतको घेरकर वहांकी क्रांतिकारी समितिके सदस्योंको पकड़ लिया। इसकी सूचना कारखानेके भोंपूको बजाकर दी गई, इसपर तीन हजार हथियारबन्द रूसी और उज्बेक मजदूरोंने बोल्शेविक बंदियोंको छुडानेके लिये युद्ध छेड़ दिया। कसाक और कादेत ताशकन्दके किलेमें जमा थे, जहांसे नगरपर प्रहार करनेके लिये वह हथियारबन्द मोटरें भेजते थे। क्रांतिकारी कमकरोंने रास्तेको रोकनेके लिये जगह-जगह बाड़े खड़ी कर दी थी। चार दिनतक लड़ाई होती रही। खबर मिलनेपर आसपासके गांवोंके उज्बेक और किर्गिज मजदूर भी मदद करनेके लिये आ गये। जबर्दस्त संघर्षके बाद १३ नवम्बरको राजशक्ति सोवियतोंके हाथमें चली गई, क्रांतिकारी समितिके सदस्य जेलसे निकाल लिये गये, और उसी दिन तुर्किस्तानकी सोवियत सरकार ताशकन्दमें स्थापित हुई। सोवियत शक्तिको मध्य-एसियासे खतम करनेके लिये पूंजीवादके पक्षपाती, राष्ट्रीयतावादी मध्य-एसियाई तथा रूसी क्रांति-विरोधी एक हो गये। अंग्रेजोंने भी उन्हें मदद पहुंचाई। राष्ट्रीयतावादियोंने नवम्बर १९१७ ई०में खोकन्दमें अपनी सरकार कायम की। उसका नाम रक्खा "खोकन्द स्वशासन"। इसीने मध्य-एसियामें गृहयुद्ध आरम्भ किया। फर्वरी १९१८ ई०में खोकन्दकी सरकारको तुर्किस्तानके लाल गारदने खतम कर दिया। लाल गारदमें जहां नगरके रेलवे और कारखानोंके रूसी मजदूर थे, वहां बहुत-से उज्बेक, किर्गिज, कजाक और तुर्कमान कारीगर और किसान भी थे।

बोल्शेविक-क्रांतिने जारशाही रूसके भीतर ही अपने प्रभावको नहीं दिखलाया, बल्कि सुदूर वाह्य मंगोलियाके लोगोंको भी समाजवादके पथपर आरूढ़ किया। जारशाही सेनाके भगोड़े जेनरलोंने वहांपर अड्डा जमाकर क्रांतिका विरोध करनेका मनसूबा बांधा था, लेकिन उन्हें उसमें विफल होना पड़ा।

दूसरे पूंजीवादी और सामन्तशाही सरकारोंकी तरह जारशाहीके भी शासनका स्रोत नीचे नहीं ऊपर था। जार सर्वेसर्वा था। वह अपनी ओरसे महाराज्यपाल और राज्यपाल नियुक्त करता, जो अपने प्रदेशके छोटे जार होते। इसकी जगह बोल्शेविक-क्रांतिने शासनयंत्रके ढांचेको सोवियतोंपर आधारित किया। सोवियतका अर्थ वही है, जो हमारे यहां पंचायतका, यदि अन्तर है, तो यही कि सोवियत प्रभुत्व-सम्पन्न पंचायत है। ग्रामोंके शासनका काम ग्राम-सोवियतोंने लिया, और जिलोंके शासनका काम वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित जिलाकी सोवियतोंने, इसी तरह प्रदेशोंके शासनका काम वहांकी सोवियतोंने। अपने कामोंको सफलतापूर्वक करनेके लिये, तथा जनताको क्रियात्मकरूपसे यह दिखलानेके लिये, कि सरकार उनकी है, अब जारशाही गुबर्नियोंका अनुकरण नहीं किया जा सकता था। उसकी जगह क्रांतिके दो साल ही बाद १९२० ई०के आरम्भमें रूसका विभाजन जातियोंके अनुसार हुआ, और १९२०-२२ ई०के बीचमें इस तरहके कितने ही स्वायत्त सोवियत समाजवादी गणराज्य कायम किये गये, जिनके संघको रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी गणराज्य कहा जाने लगा। इन स्वायत्त गणराज्योंमें बाश्किर भी था, जिसकी स्थापना मार्च १९१९ ई०में हुई थी। रूसी जमींदारों और कुलकोंने जारशाहीके जमानेमें बाश्किर-किसानोंसे जो जमीन छीन ली थी, अब उसके मालिक बाश्किर किसान हो गये। अभीतक बाश्किर अधिकतर घुमन्तू थे, लेकिन अपना खेत मिल जानेपर अब वह अपने गांव बसाने लगे। उनमें शिक्षाका प्रचार भी बढ़ने लगा। बोल्शेविकोंने अच्छी तरह समझ लिया, कि सोवियत शासनकी मजबूतीके लिये यह जरूरी है, कि लोग लिखना-पढ़ना जानें। तभी वह बोल्शेविकोंके उद्देश्यको समझ पायेंगे, और मुल्लों तथा क्रांतिविरोधी सत्ताधारियोंके हाथमें नहीं खेलेंगे। इसीलिये उन्होंने मातृभाषाको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करके उसीमें लोगोंको जल्दी-से-जल्दी शिक्षित बनानेका प्रयत्न किया। अपनी भाषाको सीखनेकी अवश्यकता नहीं थी, उसके लिये जरूरत थी लिपिकी। सोवियत रूसके भीतरकी अधिकांश भाषायें अभी न अपनी लिपि रखती थीं, न लिखित साहित्य। ऐसी भाषाओंको रोमन लिपिमें पहले लिखा जाने लगा, पीछे (१९४१ ई० में) लोगोंने रूसी लिपि अपना ली। शिक्षाकी वृद्धि कितनी जल्दी हुई, इसके लिये इतना ही कहना काफी है, कि प्राय. पचीस लाखकी आबादीवाले बाश्किर गणराज्यमें १९२४ ई०में ही दो हजार स्कूल खुल चुके थे।

१९२० ई०के वसन्तमें बाश्किरोंके पडोसमें तारतारोंका स्वायत्त सोवियत गणराज्य कायम हुआ। अक्तूबर १९२० ई०में कजाकस्तानकी सोवियतोंकी प्रथम कांग्रेसमें किर्गिज स्वायत्त गणराज्यकी स्थापनाकी घोषणा हुई। इस प्रकार सोवियत रूस सोवियत गणराज्यों-के संघका रूप धारण करने लगा। पहले रूसके अतिरिक्त उक्रइन-जैसे गणराज्य कायम हुये थे। दिसम्बर १९२० ई०में उक्रइन सोवियत समाजवादी गणराज्य और रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी गणराज्यने आपसमें एक सैनिक और आर्थिक मित्रताकी संधि की। इसी तरहकी संधि बेलोरूसिया, आजुर्बाइजान, अर्मनिया और गुर्जीके गणराज्योंमें भी हुई। तबतक निम्न की सात स्वतंत्र सोवियत गणराज्य बन चुके थे :—

(१) रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी गणराज्य, (२) उक्रइनी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (३) बेलोरूसी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (४) आजुर्बाइजान सोवियत समाजवादी गणराज्य, (५) अर्मेनियन सोवियत समाजवादी गणराज्य, (६) गुर्जी सोवियत समाजवादी गणराज्य, और (७) तुर्किस्तान सो० स० ग०। इस प्रकार सात गणराज्य और कितने ही स्वायत्त गणराज्य, पांच वर्ष बादतक चलते आये। ३० दिसम्बर १९२२ ई०को सोवियतोंकी प्रथम

कांग्रेस हुई, जिसने निश्चय किया, कि अबसे सारे बहुजातिक राज्यका नाम सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ ' रखकर उसे एक केन्द्रीय राष्ट्रका रूप दिया जाय। सभी जातियोकी समानताको अक्षुण्ण रखनेके लिये यह विधान स्वीकार किया गया, कि सोवियत ससद्के "प्रतिनिधि-सदन"मे जहां संख्याके अनुसार प्रतिनिधि भेजे जाय, वहां "जातिक सदन"मे सभी स्वतंत्र गणराज्योको उनकी सख्याका कोई भी ख्याल किये बिना बराबर संख्यामे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार है।

इस प्रकार सफल क्रांति और सफल सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद २१ जनवरी १९२४ ई०को लेनिनका देहान्त हुआ।

स्रोत-ग्रन्थ

१. History of Civil War in U. S. S. R. (2 vols., G. F. Alexandrov and others, Moscow 1946)
२. History of U. S. S. R. (Ed. A.M. Pankratova, Moscow 1947)
३. La Revolution russie (4 vols., Cloude Anet, Paris 1918-20)
४. La reign de Raspoutine (Rodzianko, Paris 1928)
५. La revolution russie (Al. Ular, Paris 1905)
६. इस्तोरिया ससर (अ. म रव्दोनिकस्, ४ जिल्द)

अध्याय २

उज्बेकिस्तानमें क्रांति

१ उज्बेक जाति

उज्बेक गणराज्यका क्षेत्रफल १८८००० वर्गमील, तथा आबादी बासठ लाखसे ऊपर है। उज्बेक जाति तुर्कोंकी ही एक शाखा है। सुवर्ण-ओर्दू के मगोल खान उज्बेकके नामपर तुर्कोंके बहुत से कबीलोंने यह नाम धारण किया। उज्बेक कबीलोंमें कितने ही कजाकोंमें भी मिलते है, इसलिए उज्बेकों और कजाकोंका पहले एक होना सिद्ध है। उज्बेकोंके सबसे बड़े चार विभाग है—(१) उइगुर-नैमन, (२) कंगली-किपचक, (३) कियात-कुंग्राद, (४) नोकुस-मंगित। और छोटे-छोटे विभाग मिलकर उज्बेक कबीलोकी संख्या ९७ होती है, जिनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

उज्बेक कबीले—

१. मगुत (मगित)(करशी-बुखारा; जुक मगुत, जुकअकरा)
२. मिग
३. युज
४. किर्क
५. उंग
६. उंगाचित
७. जलैर
८. सराय (समरकन्द और करशीके रास्तेपर)
९. कुंग्राद (करशी और शहरसब्जमें)
१०. येलचिन
११. अरगन
१२. नैमन
१३. किप्चक (कत्ताकुर्गान और समरकन्दके बीच)
१४. चीचक
१५. थअवरत
१६. कल्पक
१७. कर्तू
१८. बरलस
१९. बसलक
२०. सेमारचिम
२१. कतगन
२२. कलेची
२३. कुनेगज
२४. बतरेक
२५. उजोय
२६. कबात
२७. खिताई (बुखारा और करमीनाम)
२८. कंगली
२९. उज
३०. चपलेनी
३१. चपची
३२. उतार्ची
३३. उपुलेची
३४. जूलून
३५. जिद (आमू-दरियापर)
३६. जुयुत
३७. चिलजूयत
३८. बुइमौत
३९. उएमौत
४०. अरलत
४१. किरेइत
४२. उंगुत
४३. कंगित
४४. खलेउअत
४५. मसद
४६. मेरकत
४७. बेर्कूत
४८. कुरालस
४९. उगलान
५०. करी
५१. अरबत (करशी और बुखारामें)

५२. उलेची
५३. जूलेगन
५४. किशलिक
५५. गेदोई
५६. तुर्कमान (आमू-दरिया)
५७. दुर्मेन
५८. ताबिन
५९. तामा
६०. रिनदान
६१. मूमिन
६२. उइशुन
६३. बेरोई
६४. हाफिज
६५. किनगिज
६६. उइरुची
६७. जुइरेत
६८. बूजाची
६९. सिहतियान
७०. बेताग (बुखारा)
७१. यागरिनी
७२. शुल्दुर
७३. तुमाई
७४. तलेउ
७५. किरदार
७६. किरकिन
७७. उलगान
७८. गुरलेत
७९. इगलान
८०. चिलकेस
८१. उइगुर
८२. अगिर
८३. याबू
(बुखारा और मियानकुलमें)
८४. नरगिल
८५. यूजक
८६. कहेत
८७. नचार
८८. कूजालिक
८९. बूजन
९०. शीरिन
९१. बखरिन
९२. तूमे
९३. नीकुज
९४. मुगुल
९५. कयान
९६. तारतार

किसी-किसीके अनुसार उज्बेकोंके पाच विभागोंमे निम्न कबीले है :—

I. उइगुर चौदह—

१. उरुस
२. कराकुरसक
३. चुल्लिक
४. उयान
५. कुल्दौली
६. मिल्तेक
७. कुरतुगी
८. गाले
९. तुपकारा
१०. कारा
११. कराबुरा
१२. नोगाई
१३. बिलकेलिक
१४. दुसतनिक

II. ओमली नौ —

१. अखताना
२. कारा
३. चुरान
४. तुर्कमान
५. कुउक
६. बिसबाला
७. कराकल्पक
८. कचाई
९. हजबेचा

III. कुदतमगली नौ —

१. कुलअब्री
२. बरमक
३. कुजहुर
४. कुल
५. चुबुरगान
६. कराकल्पक-कुदतमगली
७. सफरबीज
८. दिलबेरी

९. चचकली

IV. **यकतमगली सात** —

१. तर्तुगू
२. अगामइली
३. इशिकली
४. किजिनजिली
५. उयुगली
६. बूकजली
७. कैंगली

V. **फिर पांच** —

१. जुजिली
२. कूसउली
३. तिर्स
४. बलिकली
५. कूबा

इतिहासकार वाम्बेरीने उज्बेकोके बत्तीस कबीलोंको मुख्य माना है, जो कि निम्न प्रकार है :—

१. अकबेत
२. अचमइली
३. अलचिन
४. अज
५. इशकिली
६. उइगुर
७. उशुन
८. कनली
९. कराकुरसक
१०. कंजिगली
११. किपचक
१२. कुंग्राद कीयेत
१३. कूलन
१४. केत्तेकेसेर
१५. केनेगुज
१६. खिताई
१७. जगताई
१८. जेलेर
१९. ताज
२०. इशकिली
२१. तिर्किश
२२. दुर्मेन
२३. नैमन
२४. नोक्स
२५. नोगाई
२६. बागुर्लू
२७. बलगली
२८. बिरकुलक
२९. मंगित (ओगुत)
३०. मिंग
३१. मितन
३२. सायत

इन कबीलोंके नामोंको देखनेसे मालूम होगा, कि इनमें ऊसुन-जैसे शक कबीले, कुंग्राद-जैसे मंगोल, किपचक-जैसे पुराने तुर्क, खिताई-जैसे चीनी, बर्मक-जैसे खुरासानी कबीलों और जातियोंका भी नाम है। इसीलिये तुर्की अंशकी प्रधानता रहते भी उज्बेक जातिमे बहुतसी दूसरी जातियोका सम्मिश्रण है। उसकी भाषामें व्याकरणका ढाचा तुर्की होते भी शब्दकोष और मुहावरे अधिकतर ईरानी (फारसी) है।

उज्बेक जातिका निर्माण—उज्बेकों, तुर्कमानों तथा किर्गिजों का ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ :—

काल	सिर-उपत्यका	सोग्द	तुखार	ख्वारेज्म
ई० पू० १०००००		मुस्तेर	मुस्तेर	
" ५००००		मदलेन		
" ४०००	फिनो-द्रविड़	फिनो	फिनो-द्रविड़	फिनो-द्रविड़
" ३५००	"	"	"	"
" ३००० नवपाषाण	शक-आर्य-द्रविड़	शकाय-द्र०	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०
" २५००	शक	आर्य	आर्य	आर्य
ई० पू० १५०० पित्तल	शक	सोग्दी	ईरानी	ईरानी
" ७००	शक	सोग्दी	ईरा०	शक

ई०पू०	५५०	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
,,	३२६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
,,	२०६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
,,	१३०	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
,,	१००	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
ईसवी	१०० कुषाण	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०-शक	शक
,,	४२५ हेथता	हूण-कगली	सो०-शक	ईरा०-शक	हेफ्ताल-कंग
,,	५५७ तुर्क	तुर्क-कगली	सो०-तुर्क	ईरा०-शक	सो०-तुर्क
,,	६७३ अरब	तुर्क	सो०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	सो०-तुर्क
,,	८९२ सामानी	तुर्क	ईरानी-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
,,	१२२० मंगोल	तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
,,	१५००	तुर्क (उज्बेक)	उज्बेक-ईरा०	ईरा०-उज्बेक	उज्बेक-ईरा०
,,	१७४७	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
,,	१८६५	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
,,	१९१७	उज०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०

२. उज्बेकभूमि

वर्तमान उज्बेकिस्तान खोकन्द, खीवा (ख्वारेज्म), और बुखारा रियासतोंकी भाग सम्मिलित हैं, जिनमे बुखाराका तो करीब-करीब सारा ही भाग उज्बेकिस्तानमें है। उज्बेकोंकी वर्तमान राजधानी ताशकन्द बिलकुल एक छोरपर कजाकोंकी भूमिके पास पडती है, लेकिन रूसियोंके आनेसे पहले ही वह प्रसिद्ध नगर उज्बेकोंकी भूमिके साथ संबद्ध था। तुर्किस्तानकी राजधानी बननेपर जहा वहा रूसी काफी संख्यामे आये, वहा एसियाइयोंमे सबसे अधिक उज्बेकोंकी आबादी थी, इसलिये वह पहले तुर्किस्तान गणराज्य, फिर उज्बेकिस्तान और ताजकिस्तानके सम्मिलित उज्बेक गणराज्य और अन्तमें उज्बेकिस्तानकी राजधानी रह गया। मध्य-एसियाके समरकन्द और बुखारा-जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी उज्बेकिस्तानमे ही पडते हैं।

३. क्रांतिकी लपट

रूसमें फर्वरी-क्राति होनेपर भी उस समय बूर्ज्वा रूसी शासकोंने मध्य-एसियाकी जातियों—उज्बेकों, कजाकों, किर्गिजो, ताजिकों, तुर्कमानों—के ऊपर होते आये जारशाही शासनमे कोई परिवर्तन करनेकी अवश्यकता नहीं समझी। अप्रैल १९१७ ई०मे श्वेप्किनकी अध्यक्षतामे एक तुर्किस्तान समिति बनाकर भेजी गई, जिसको तुर्किस्तानके सूबेके शासनका पूरा अधिकार दे दिया गया था। जब पेत्रोग्रादमे अस्थायी सरकारमे थोड़ा और परिवर्तन हुआ, और वैधानिक जनतात्रिकोंकी जगहपर मेन्शेविकोंकी प्रधानता हुई, तब तुर्किस्तान कमेटीमे नाममात्रका ही परिवर्तन किया गया। यह कमेटी पुराने जारशाही अफसरों और सफेद क्राति-विरोधियोंके प्रभावको कम करना नही चाहती थी। क्रांतिका एक फल यह हुआ, कि मार्च १९१७ ई०से मध्य-एसियाइयोंमे शूरा-इस्लामिया और शूरा-उलेमा जैसे धार्मिक या अर्धधार्मिक राजनीतिक संगठन अस्तित्वमे आये। उज्बेक राष्ट्रीयतावादी मध्यवर्गने शूरा-इस्लामिया नामकी पार्टी स्थापित की थी, और मुल्लाओंने हमारे यहाकी जमायतुल-उलमाकी तरह उलमाओं (धर्माचार्यों) की एक पार्टी खड़ी की थी, जिसके पोषक बड़े-बडे जमीदार और दूसरे सामन्त थे। दोनों संस्थाओंने अस्थायी सरकारके प्रति अपनी भक्ति कई बार प्रकट की थीं।

तुर्किस्तान-कमेटी क्रांतिके और युद्धके कारण उठ खड़ी हुई समस्याओंमेंसे किसीको भी हल करनेमें समर्थ नहीं हुई। एसियाई जातियोंके ऊपर पहलेकी तरह ही शासन और अत्याचार होता रहा। किसानोंकी अवस्था वैसी ही रही। कारखानेके मजदूरोंकी ओर भी ध्यान नही दिया

गया। १९१७ ई०के सितम्बरमे तुर्किस्तानके मजदूरोंको अब भी बारह घंटे काम करना पड़ता था, जब कि रूसमे वह आठ घंटेका कर दिया गया था। तुर्किस्तान-कमेटीको आगे बढनेकी कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि इस इलाकेमे १९१७ ई०के अन्ततक बोल्शेविकोंके अपने स्वतंत्र संगठन नहीं थे। ताशकन्द, समरकन्द, पेरोव्स्की (किजिल ओर्दा), नवीन-बुखारा आदिमें जो बोल्शेविकोंके भिन्न-भिन्न गिरोह थे, वह रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीसे सम्बद्ध थे। इस पार्टीकी द्वितीय स्थानीय कांग्रेस २१-२७ जूनको ताशकन्दमें हुई थी, जिसमें मेन्शेविकोंकी प्रधानता थी, जिसके कारण कांग्रेसने अस्थायी सरकारमें अपना विश्वास प्रकट किया। ताशकन्दमे बोल्शेविकोंका अपना कोई पत्र नही था, इसलिये समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टीके अखबार "रबोचेये देलो" (मजदूरोंका कार्य) पत्रमे ही उन्हें भी अपने विचारोंको प्रकट करना पडता था, जिन्हें मेन्शेविक कितनी ही बार छापनेसे इन्कार कर देते थे। बोल्शेविक-नेता स्वेर्दलोफने ओरेनबुर्गके बोल्शेविकों द्वारा तुर्किस्तानके बोल्शेविकोंके पास कभी-कभी सबंध स्थापित करनेकी कोशिश की, लेकिन उसमे बहुत सफलता नही हुई। लेकिन जब मध्य-एसियाके लोगोंको मालूम हुआ, कि रूसमें बोल्शेविक क्या कर रहे है, तो वहाके लोगोंमे भी बोल्शेविकोंका प्रभाव जल्दीसे बढने लगा। ई० प० बाबुश्किनके नेतृत्वमें खोकन्दमें बोल्शेविकोंकी एक मजबूत जमात कायम हो गई—बाबुश्किन १९०३ ई०से ही बोल्शेविक था, और खोकन्दके मजदूर-सैनिक प्रतिनिधियोंकी सोवियतका उस समय अध्यक्ष था। समरकन्दमें समाजवादी जनतांत्रिकोंके भीतर रहते हुये बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे काम करने लगे। अक्तूबर (बोल्शेविक) क्रातिके समय नवीन बुखारामें पोल्तरोत्स्कीके नेतृत्वमें एक बोल्शेविक गिरोह काम करने लगा था। पोल्तरोत्स्की १९१८ ई०मे समाजवादी क्रांतिकारियोंके हाथ मारा गया, जिनका मुखिया करेन्स्की था।

ताशकन्दके बोल्शेविकोंका नेता अ० पेर्शिन रेलवे मजदूर, और न० शूमिलोफ कारखानेमें मिस्त्री था। शूमिलोफ १९१८ ई०मे ताशकन्द सोवियतका अध्यक्ष बनाया गया।

इस प्रकार हम देख रहे है, कि तुर्किस्तानके बोल्शेविक अधिकतर रूसी थे, लेकिन उनको वहाके मुसलमान मजदूरोंके "इत्तिफाक" (लीग)का सहयोग प्राप्त था। स्कोबेलेफमें मार्च १९१७ ई०में फरगानाके मुसलमानोंका प्रथम मजदूर संगठन स्थापित हुआ था—मध्य-एसियाई लोगोंको रूसी मुसलमान कहा करते थे। फरगानाके बाद इस तरहके सगठन ताशकन्द, समरकन्द, खोकन्द, मर्गिलान, कत्ताकुर्गान, खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) तथा दूसरे नगरोंमें भी स्थापित हुये। १९१६ ई०मे जारशाहीने बहुतसे एसियाइयोंको मजदूर-सेनामे भर्ती करके युद्धपंक्तिके पीछे काम करनेके लिये भेजा था। यही मजदूर जब लौटकर तुर्किस्तान आये, तो रूसमें बोल्शेविकोंका काम देखे होनेके कारण उन्होंने यहा भी "मजदूर-इत्तिफाक" (मज़दूर लीग)को संगठित करनेकी घोषणा करते हुये अपने उद्देश्यके बारेमे कहा—"तातार (मंगोलायित) और सर्त (ताजिक) गरीब किसानों और मजदूरोंका एक परिवार बनाना है, जो कि पूजीवादके खिलाफके संघर्षमें मजदूरवर्गका समर्थन करेगा और सच्चे जनतांत्रिक सिद्धान्तोंके आधारपर नये समाजके निर्माणमे सहायता करेगा।" इस उद्देश्यसे ही मालूम हो जायगा, कि मध्य-एसियाके देहकान (किसान) और मजदूर रूसमें रहते वक्त बोल्शेविक पार्टी और वहांके मजदूरोंके सम्पर्कमें आकर कितने प्रभावित हुये थे। आरम्भमें इत्तिफाकी दलवाले मेन्शेविकोंके जबर्दस्त प्रभावमें रहे, लेकिन जल्दी ही उन्हें मालूम हो गया, कि मेन्शेविकों और जारशाही साम्राज्यवादियोंमें बहुत अन्तर नही है, इसलिये वह बोल्शेविकोंके नजदीक आने लगे। स्थानीय सरकारी संस्थाओं और सविधान-सभाके चुनावोंके समय उन्होंने बोल्शेविकोंसे मिलकर अपने उम्मीदवार खडे किये। शूरा-इस्लामिया और उलमाके साथ इत्तिफाकियोंका संघर्ष दिन-पर-दिन बढता गया। मुल्लों और मुस्लिम साम्प्रदायिक नेताओंने हर तरहसे लोगोंको यह समझानेकी कोशिश की, कि मुसलमान-मुसलमानमें कोई अन्तर नहीं, सभी मुसलमानोंको एक हो जाना चाहिये। लेकिन मध्य-एसियाके मजदूर-किसानोंको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि उनकी भलाई इस्लामके नारा लगानेवालोंके साथ रहनेमें नहीं, बल्कि बोल्शेविकोंका साथ देनेमें है। सितम्बर १९१७ ई०में मजदूरी बढाने और आठ घंटा काम करनेकी मांगके लिये

ताशकन्द, समरकन्द, नमगान, अन्दिजान, कन्ताकुर्गान और नवीन-बुखाराके मजदूरोंने हडतालें कीं। देहातमे किसानोंने भी जमीदारोंके विरुद्ध सघर्ष छेड़ दिया ।

रूसमे फर्वरी-क्रांतिके होनेके बाद तुर्किस्तान-प्रदेशमे उतना भी परिवर्तन नही किया गया, जितना कि रूसके पासवाले इलाकोंमे। सेना और शासनमे अब भी यहां जारशाही जमानेके ही अफसर थे। जब करेन्स्की प्रधान-मंत्री हो गया, तो एस्-एर् (समाजवादी क्रातिकारी) दल अपनेको सरकारी दल समझने लगा, और उसकी यहां प्रधानता हो गई । लेकिन इससे पहिले १९१६ ई०मे जो विद्रोह मध्य-एसियाके लोगोंने किया था, यद्यपि उसे दबा दिया गया था, तो भी उसके प्रभावसे लोगोके हृदयोंमे शासनके प्रति विद्वेषका भाव अब भी कम नही हुआ था । बल्कि अब उसने एक नया रूप लिया था, जिसमे उज्बेक मध्यवर्गने अपने पुराने खोये हुये राज्य खोकन्दके नाम-पर "खोकन्द स्वायत्तता"की माग पेश की । अभीतक बुखाराका अमीर अपनी जगहपर बना हुआ था। जारशाही अफसरो और पूजीपतियोंने भी स्वायत्ततावादियोंके पक्षका समर्थन करना आरम्भ कर दिया, और जब रूसमे बोल्शेविक-क्रांति हो गई, तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला उनका साथ देना शुरू किया ।• यद्यपि स्वायत्ततावादियोंने अपना काम ताशकन्दमें शुरू किया था, लेकिन वहा उनको उतनी सफलता नही हुई, इसलिये उन्होंने खोकन्दको अपना केन्द्र बनाया।

४. बोल्शेविक-प्रभाव-वृद्धि

ताशकन्दमें पहले मेन्शेविकों और एस्-एर्-दलका ही जोर रहा । ताशकन्द एसियाका सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र था। वहाके कारखानोंमे रूसी मजदूर बड़ी संख्यामे काम करते थे । इनके ऊपर पहले नरमदली समाजवादियोंका प्रभाव होना स्वाभाविक था, क्योंकि रूसी मजदूरोंको एसियाई मजदूरोंकी अपेक्षा ज्यादा रियायते मिली हुई थीं, लेकिन धीरे-धीरे मजदूरोंकी आखे खुलने लगीं, जब कि उन्होंने देखा कि यह दक्षिणपक्षी दल उनका हित-साधन नही कर सकता। वामपक्षकी ओर झुकाव देखकर एस्-एर् (समाजवादी क्रातिकारी) दलमें फूट पड़ गई। वामपक्षी उनसे अलग हो गये, जो कितने ही समयतक बोल्शेविकोंके साथ मिलकर काम करते रहे। जून (१९१८ ई०)के अन्तमे बोल्शेविकोंकी पहली काग्रेस हुई, जिसमे चालीस-पचास प्रतिनिधि शामिल हुये थे, लेकिन जब १९-२९ दिसम्बर (१-१० जनवरी) १९१९ ई०को द्वितीय काग्रेस हुई, तो उसमे एक सौ अस्सी प्रतिनिधि थे । इस समयतक अग्रेजोंकी मददसे वर्तमान तुर्क-मानिस्तानपर क्राति-विरोधी रूसियोंकी प्रभुता कायम हो गई थी, इसलिये वहाके प्रतिनिधि इस कांग्रेसमे शामिल नही हो सके, लेकिन सप्तनदके प्रतिनिधि आये थे। इस कांग्रेसके प्रधानमंडलमें जूराबयेफ, बेदीलोफ जैसे स्थानीय (एसियाई) बोल्शेविक भी निर्वाचित हुये थे, जिससे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामे रूसी बोल्शेविक कहातक अपनेको एसियाइयोंके साथ एकताबद्ध करनेमे सफल हो चुके थे। नरम समाजवादियो और बोल्शेविकोंके बीच किसका साथ देना चाहिये, इसका निर्णय करनेमे एसियाई कमकरोंको दिक्कत नही हुई, जिसका पता काग्रेसमें एसियाई बोल्शेविकोंकी संख्याकी वृद्धिसे मालूम है।

ताशकन्द—पहली काग्रेसतक बोल्शेविक पार्टीके २६१ सदस्य थे, जिनमे २८ स्थानीय (प्राय उज्बेक) थे। इनके अतिरिक्त पुराने ताशकंदमें भी १२५ व्यक्ति पार्टीके साथ थे। दूसरी पार्टीके समयतक बोल्शेविक पार्टीमे २००० सदस्य हो गये थे, जिनमें ९०० स्थानीय, ७०० रूसी और ४०० विदेशी कमकर थे। विदेशियोंमे लत्वियन, उक्रइनी, ईरानी, तारतार और किर्गिज जातियों-के भी लोग थे। १२ अक्तूबर १९१८ ई०मे सारे ताशकंद नगरकी पार्टी-कांफ्रेस हुई।

समरकंद—१९१७ ई०के सितंबरके अंतमे यहां बोल्शेविककी पहली जिला-कांफेस हुई थी। अक्तूबरके मध्यतक समरकन्द जिलेमे अट्ठाइस शाखायें और पैंतीस सौ सदस्य थे।

खोकंद—१९१७ ई०के अक्तूबरमे यहा बोल्शेविकोंकी तीस-पैंतीस जमातें थी । पहली कांग्रेस-तक सदस्योंकी संख्या दो सौ हो गई और रूसियोसे बाहरके कमकरोंमे भी काम होने लगा था। १९१८ ई०के अंततक पार्टीके सदस्योंकी संख्या ७५० थी। आगे हम देखेंगे, कि मध्य-एसियाके

पूजीवादियोंकी संगठित शक्तिका मुकाबला सबसे ज्यादा खोकन्दके बोल्शेविकोंको करना पड़ा था। यहांके ७५० सदस्योंमे २५० स्थानीय लोगोंमें से थे।

खोजन्द (लेनिनाबाद)—सिर नदीके तटपर अवस्थित इस ऐतिहासिक नगरमे भी बोल्शेविकों और नरम-दलियोंका सघर्ष रहा। १९१८ ई०के अप्रैलतक यहां बोल्शेविकोंका संगठन हो गया था, और उनकी प्रथम काग्रेसमे यहासे बीस प्रतिनिधि शामिल हुए थे। खोजन्दमें पार्टी-मेम्बरोंकी सख्या २४६ थी, और इलाकेके दूसरी जगहोंमे भी बोल्शेविक थे, जिनमेसे २१६ खोजन्द नगरमे, पचीस खोजन्द रेल स्टेशनमे, छत्तीस द्रागोमिरोफ स्टेशनमे, तीस कोपीमे, अस्सी पर्लीविकामें, ८०० सरी-दुगानमे, ३१२ उरालके जिले (वोलोस्त)मे, पैतीस चपकुल जिलेमे, पच्चीस बोकल वेदर्गनमे, साठ इनफान इलाकेमे थे। १९१८ ई०के जून और दिसबरके छ महीनोंमे बडी तेजीसे वोल्शेविकोकी शक्ति और सख्या बढ़ी। उन्होंने तबतक अपनी लाल सेना भी संगठित कर ली। पीछे प्रतिगामी हो गया शेख एरगस, एक समय बोल्शेविकोंके साथ था।

अन्दिजान—फरगानाका मशहूर औद्योगिक केंद्र होनेके कारण यह बोल्शेविकोंका भी गढ़ था। दूसरी काग्रेसके समय (१९१८ ई०के अंत)तक यहां दो सौ पार्टी-मेम्बर थे। लेकिन यहापर जनतांत्रिक संगठन औरोंकी अपेक्षा बहुत पीछे हुआ था और १९१८ ई०के अंतमें ही नगर-दूमाकी स्थापना हुई।

फरगाना—फरगाना-उपत्यका रूसी कारखानोंके लिये कपास पैदा करती थी। इसके कारण वहां अन्दिजान, फरगाना तथा दूसरे शहरोमे छोटे-छोटे कारखाने खुल गये थे, जिनमें रूसी मजदूर भी काम करते थे। १९२८ ई०की जुलाईमे अर्थात् रूसमें बोल्शेविकोंके राज्य संभालनेके नौ महीने बाद यहा पार्टीका संगठन हुआ और इस सालके अततक २३७ पार्टी-सदस्य हो गये।

नमंगान—यहां १९१७ ई०के दिसबरमे सात पार्टी-सदस्य थे। अप्रैल १९१८ ई०मे १८० और द्वितीय काग्रेसके समय सदस्योंकी संख्या छ सौ थी, जिनमें दो तिहाई स्थानीय और केवल दो सौ रूसी थे।

किजिलकिया—१९१८ ई०की फर्वरीमे सात सदस्योंको लेकर बोल्शेविकोंका यहां काम शुरू हुआ, लेकिन दिसबरतक उनकी संख्या ४५१ हो गई।

मर्गेलान—यहा १९१८ ई०के अगस्तमें पार्टीकी टुकडी स्थापित हो गई, और द्वितीय कांग्रेस के समयतक बोल्शेविकोंकी सख्या १७० पहुच चुकी थी।

कत्ताकुर्गान—१९१८ ई०के अंतमें द्वितीय काग्रेसके समय यहां सदस्योंकी संख्या करीब तीन सौतक पहुंच गई थी, और यहाके तीन प्रतिनिधि द्वितीय कांग्रेसमे शामिल हुए थे।

जीजक—यहा १२६ सदस्य १९१८ ई०के अततक हो गए थे।

चारजय—आमू-दरियाके बाये तटपर अवस्थित इस महत्त्वपूर्ण स्थानमें १९१८ ई०के दिसंबरमें बोल्शेविकोंका संगठन हो चुका था और द्वितीय तुर्किस्तान पार्टी काग्रेस जब ताशकन्दमे हुई, तो यहा-के बोल्शेविक सदस्योंकी संख्या सौतक पहुंच चुकी थी। लेकिन इस इलाकेमें अंग्रेजोंकी मददसे क्राति-विरोधियोंका बल बढ गया, इसलिये यहांके बोल्शेविकोको उनका सख्त सामना करना पड़ा।

इन आकड़ोंसे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामे बोल्शेविकोंका प्रभाव कितनी जल्दी बढ़ा। इस समय तुर्किस्तान-प्रदेशकी आर्थिक स्थिति बड़ी खतरनाक हो गई, तेल और कोयला मिलना मुश्किल हो गया, रेलका यातायात बिगड गया था। कपासका उद्योग मध्य-एसियाकी आयका सबसे बड़ा साधन था और उसको कोई पूछनेवाला नहीं था। ऊपरसे अन्नका अकाल पड़ा हुआ था। साथ ही क्रांतिके कारण संघर्ष बहुत उग्र हो रहा था। मेन्शेविकों और दक्षिणपंथी एस्-एर् इन कठिनाइयोंके लिये कोई रास्ता निकालनेमें असमर्थ थे। ऊपरसे काशगर, ईरान, अफगानिस्तान आदिके रास्ते क्रांति-विरोधी शक्तियोको अंग्रेज पूरी तौरसे मदद दे रहे थे।

५. खोकन्द स्वायत्ततावादियोंका अन्त

प्रथम विश्व-युद्धके समय एसियाकी बहुतसी पिछड़ी जातियोंमें राजनीतिक स्वतंत्रताके भाव

जगे। मध्य-एसियामे तो १९१६ ई०मे उसने खूनी विद्रोहका रूप लिया था। इसी समय भारतमें प्रथम विश्वयुद्धके बाद देशकी परतंत्रताको और भी कड़ा करनेके लिये अंग्रेज रोलेट-कानून बनाने जा रहे थे। अंग्रेज मध्य-एसियामे 'खोकन्द स्वायत्तता'को सहायता देनेके लिये पूरी कोशिश कर रहे थे। जारशाहीके उच्छेद, क्रांतिकारियोंकी निर्बलता और अंग्रेजोंकी शहसे मध्य-एसियाके मध्यवर्ग-ने इस आंदोलनको खड़ा करके नवंबर १९१७ ई०मे खोकन्दमे अपनी सरकार भी कायम कर ली, जो तीन महीने बाद (फर्वरी १९१८ ई०)तक शासन करती रही। जिस समय ताशकन्दमे ग्यारह दिन (११ जनवरी १९१९ ई०)तक बोल्शेविकोंकी पार्टी कांग्रेस होती रही, उसी समय खोकन्दके क्रांति-विरोधी अपने शासनको कायम करके आगेके लिये बड़े-बड़े स्वप्न देख रहे थे। लेकिन खोकन्दके इस आंदोलनमे खोकन्दसे बाहर सारे तुर्किस्तानके मध्यमवर्गकी सहानुभूति रहते भी उनसे सहायता उतनी नहीं मिल सकी। नवंबर १९१७ ई०मे बोल्शेविक-क्रांति रूसमे सफल हो चुकी थी, इसलिए मध्य-एसियामे कारबार करनेवाले रूसी पूजीपति बदहवास हो गये थे। अन्दिजानका सबसे बडा रूसी पूजीपति खोकन्द-स्वायत्तताका सबसे जबर्दस्त समर्थक था, और वहाका एक बडा रूसी वकील नेन्सबेर्ग उसमे खास तौरसे भाग ले रहा था। लेकिन सभी जगहके क्रांति-विरोधी बूर्ज्वाजीके भीतर एकता नहीं थी, नमगानवाले खोकन्दियोंके साथ नही हुये। खोकन्दके इस आन्दोलनमें सबसे बडा हाथ फरगानाकी बूर्ज्वाजीका था, जिन्हें ताशकन्दके देशी और रूसी बूर्ज्वाजीसे भी पूरी सहायता मिली। ताशकन्द तो वस्तुतः इस आन्दोलनका उद्गम स्थान ही था, और पहले वही उसका केन्द्र भी रहा। लेकिन सबसे पिछले खानकी राजधानी खोकन्द थी, इसलिये वहां सामन्तशाही तत्त्वोंकी अब भी कमी नही थी। खोकन्दके नामपर राष्ट्रीय भावनाके जगानेमें आसानी थी, इससे भी लाभ उठानेके लिये इसी नगरको प्रतिगामियोंने अपना अड्डा बनाया।

खोकन्द स्वायत्तताका आन्दोलन समरकन्दके मध्यवर्गमे भी बढा, और वहां उन्होंने 'इत्तिफाक' के नामसे अपना संगठन मजबूत किया। किर्गिज-मध्यवर्गने भी इस आन्दोलनमे अपने लाभकी आशा देखी, और वह भी इसमे क्रियात्मक रूपसे भाग लेनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यही नहीं, वर्तमान तुर्क-मानिस्तानमें कास्पियन तटतक खोकन्दकी 'स्वायत्तता'की गूज सुनाई देने लगी। सब होते हुए भी इस आन्दोलनका केन्द्र ताशकन्द या समरकन्द न होकर खोकन्द रहा। खोकन्द फर-गानाका सबसे बडा नगर होनेके कारण आर्थिक केन्द्र भी था, लेकिन वह औद्योगिक केन्द्र नहीं था। कमकरोंकी कमजोरीके कारण खोकन्द क्रांति-विरोधी स्वायत्ततावादी इसे अपना केन्द्र बना सके। यहापर जहां मिलें और फैक्टरियां बहुत ही कम थी, वहां सैनिक महत्त्वका स्थान न होनेसे रूसी सैनिकोंकी संख्या कुछ दर्जनोंसे अधिक नहीं थी, जो भी घर लौटनेमें सफल न होनेके कारण खोकन्दके किलेमे रह गये थे। प्रतिगामियोंने इस्लाम धर्मकी भी आड़ लेकर जहादका प्रचार शुरू कर दिया था। यद्यपि इससे उनके पृष्ठपोषक रूसियोंको खतरा था, लेकिन तब भी वह इस समय बोल्शेविकोंके खिलाफ उनकी सहायता करनेके लिये तैयार थे। स्वायत्तता-वादियोंका नेता मुस्तफा चोकायेफ था। लेकिन जैसा कि ऊपरकी बातोंसे मालूम होगा, असली सूत्रधार रूसी पूंजीपति और अफसर थे, जिनमें पीछे मेन्शेविक और दक्षिणपन्थी समाजवादी क्रांतिकारी भी शामिल हो गये। खोकन्द स्वायत्तता-विधानके निर्माणमे नेसबेर्ग-जैसे कितने ही रूसी वकीलोंका मुख्य हाथ था। कजखोफ स्वायत्ततावादियोंकी सेनाका मुख्य शिक्षक था। करेन्स्कीकी पार्टी (समाजवादी क्रांतिकारी)का खोकन्दके आन्दोलनमे खास हाथ था। ताश-कन्दके शिक्षकोंके संघने भी प्रस्ताव द्वारा १० (२३) दिसम्बर १९१७ ई०के अपने सम्मेलनमे स्वायत्तताका समर्थन किया था। खोकन्दकी स्वायत्ततावादी सरकारने गांववालोंको अपने हाथमे करनेके लिये शिक्षितों और मुल्लोंको तैनात किया था। मदरसों, मस्जिदों, चायखानों, बाजारोंमें ज़हां देखो तहा 'स्वायत्तता'का घनघोर प्रचार हो रहा था, उसी तरह जैसे कि इसके साल-डेढ़ साल बाद भारतमे असहयोग आन्दोलन देशके कोने-कोनेमें। लेकिन जहां हमारी राष्ट्रीयताको अंग्रेजोंकी सड़ी-गली व्यवस्थासे भिड़ना था, वहां मध्य-एसियामे वहांके नब्बे प्रतिशत लोगोंके

हितोंके जबर्दस्त समर्थक बोल्शेविकोंके साथ संघर्ष जारी हुआ था। इसलिये मध्य-एसियाके मुल्ला और शिक्षित बहुत दिनोंतक लोगोंको धोखेमे नही रख सकते थे। वह प्रचारके साधनके तौरपर लोगोंकी भुखमरीका उदाहरण दे रहे थे, लेकिन उसके कारण बोल्शेविक नहीं थे। वह बोल्शेविकोंके अत्याचारोंकी मनगढन्त बातें सुनाते थे, लेकिन मध्य-एसियामें जो थोडे-से बोल्शेविक देखे जाते थे, वह गरीबोंके सबसे गहरे मित्र छोड़ और कुछ नही थे। यह भी कहा जाता था, कि बोल्शेविक काफिर इस्लाम और अल्लाहको यहासे उखाड़ फेंकना चाहते हैं, लेकिन इस झूठको वह तभीतक लोगोंमें फैला सकते थे, जबतक कि रक्त-बीजकी तरह बढ़कर बोल्शेविक अपने उद्देश्योंके प्रचारके लिये सब जगह फैल नही गये। बोल्शेविक भी दूसरे रूसियोंकी तरह साम्राज्यवादी है, इस प्रचारको वहाके लोग अपनी आंखों देखकर झूठा समझ सकते थे, जब कि स्वायत्ततावादी नेताओंको जारशाहीके बड़े-बड़े अफसरों और पूजीपतियोंके साथ घुलते-मिलते देख रहे थे।

ओरेनबुर्गमें आतमन दूतोफके विद्रोहके कारण उधरसे रूसका मध्य-एसियाके साथ संबंध कट गया था, और इधर कास्पियनके पूर्वी तटमे अग्रेजी षड्यंत्रने कुछ समयके लिये सफलता प्राप्त की थी। ताशकन्दपर बोल्शेविकोंका अधिकार हो जानेसे उनका विरोधी दूतोफ ओरेनबुर्गसे अनाज आने देनेके लिये कैसे तैयार हो सकता? सारे झूठे प्रचारके होनेपर भी मध्य-एसियाके कमकर-किसान बोल्शेविकोंके कामको देख रहे थे। उन्होंने किसानोंको अपनी जोती जमीन देकर अपनी तरफ कर लिया था। मजदूरोंमें काले-गोरे दोनोंको मिलाकर कल-कारखानोंके प्रबन्धमें भागीदार बना दिया था। धीरे-धीरे स्वायत्ततावादियों और बोल्शेविकोंके कामोंकी तुलना करनेसे इस्लाम और जातीय स्वतंत्रताके नाम पर होते हुये प्रचारका प्रभाव घटने लगा, और समझदारोंको यह समझनमें दिक्कत नही हुई, कि खोकन्दके स्वायत्ततावादकी आड़में बड़े-बड़े रूसी स्वामी, पूजीपति और पुराने शासक शिकार खेल रहे है।

फर्वरीतक फरगानामे भी वर्ग-संघर्ष उग्र रूप ले चुका था और खोकन्दमें अब क्रांति-विरोधियोंका प्रभाव बहुत घट चुका था। उनका शासन केवल पुराने नगरमें रह गया था। नये शहरमे बोल्शेविकोंने सोवियत-शासन स्थापित कर दिया था। किलेमें जो १६ रूसी सैनिक रह गये थे, वह भी बोल्शेविकोंके साथ हो गये थे। खोकन्द सोवियतका अध्यक्ष बाबुश्किन था। क्रांति-विरोधियों (जिसमें सफेद रूसी भी थे) ने पहरेदारको मारकर बाबुश्किनके घरपर आक्रमण किया। उसके बीबी-बच्चे भी साथ थे, लेकिन बाबुश्किन पिस्तौलसे लड़ता रहा। क्रांतिविरोधियोंने योजना बनाई कि पहले किलेको हाथमें किया जाय, फिर टेलीफोनके स्टेशनको, और अन्तमें सोवियत-अध्यक्ष बाबुश्किनको। लेकिन इसी समय फरगानाके पूर्वी भागमें बोल्शेविकोंने सफलता पाई। उन्होंने अन्दिजानको लेकर सारे फरगानापर बोल्शेविक-शासन स्थापित कर लिया।

खोकन्दके पुराने नगरमे सजोनोफ और निकोलायेको खोकन्द स्वायत्त-सरकारके साथ बात-चीत करने गये। १२ फर्वरीके सबेरे दिन बहुत अच्छा था। बोल्शेविकोंका संगठन मजबूत था। १३ फर्वरीको सबेरे स्कोबेलेफ और अन्दिजानसे १२० आदमियोंकी सहायता आ गई। स्वायत्ततावादियोंने बोल्शेविकोंकी बढी हुई शक्तिको देखकर अपनी योजनाको आगे बढ़ानेकी हिम्मत नही की, बल्कि लड़नेकी जगह सुलहकी बातचीत करनेको ही ठीक समझा। १७ फर्वरी (२ मार्च) को दोनों ओरके प्रतिनिधि बात करनेके लिये जमा हुये, जिसमें सोवियतके सत्ताइस और स्वायत्तियोंके चौबीस प्रतिनिधि थे। लेकिन स्वायत्ती अपनी इच्छासे कैसे अपना खातमा कर देते? इसपर बोल्शेविकोंने उन्हें अल्टीमेटम दे दिया। समझौतेमें सबसे बाधक एर्गस और तानीशेफ थे। समझौता होते न देखकर उस दिन १० बजकर ३० मिनटको बैठककी काररवाई रोक दी गई, और तानीशेफके पाससे उत्तरके आनेकी प्रतीक्षा की जाने लगी। अगले दिन तानीशेफने अपनी सहमति दे दी, लेकिन एर्गस मुल्लाओंके बलपर कूद रहा था। जिस समय समझौतेके लिए बातचीत हो रही थी, उसी समय खोकन्दकी सभी

मस्जिदोंमे मुल्ला जहादपर व्याख्यान दे रहे थे। समझौता न होनेपर अब शक्ति मुल्लोंके हाथ-में चली गई थी, जो कि किसी तरहके सुधारको माननेके लिये तैयार नही थे। उनके लिये सुधारवादी उज्बेक भी काफिर थे, इसलिये उनके एक भागको मुल्लोंने गिरफ्तार कर लिया, और दूसरा भाग भागनेके लिये मजबूर हुआ। खोकन्दके सेठोंमेसे कुछ तटस्थ हो गये और कुछने एर्गस तथा मुल्लोका पक्ष लिया। जहातक देहकानों (किसानों)का संबंध था, वह समूहरूपेण सोवियत-सरकारके पक्षपाती हो गये थे। इस प्रकार एर्गसको भारी जनसंख्याका बल प्राप्त नही हो सका। खोकन्दमे मजदूरोंकी भी स्थिति डावांडोल रही, उनकी सभा (इत्तिफाक) एक बार मुल्लोंके प्रचारके प्रभावमें इतनी आ गई थी, कि उसने सोवियतके विरुद्ध प्रस्ताव पास करके अपनेको स्वायत्तियोंके पक्षमें घोषित किया, लेकिन जब एर्गस और मुल्लोंकी सरकारका मजा चखा, तो उनकी आखे खुलीं। उन्होंने "मुसलमान कम-कर संघ" नामक बोल्शेविक-पक्षपाती संघ बनाया, फिर 'इत्तिफाक' भी सोवियत शासनका समर्थक बन गया। व्यापारियोंमे जरूर काफी भाग ऐसा था, जो मुल्लोंकी तरफ था।

खोकन्दकी ऐसी स्थिति थी, जब कि बोल्शेविकोंने स्वायत्ततावादियोंको खतम करनेका निश्चय किया। अबतक ताशकन्दसे भी उन्हें सहायता मिलने लगी थी। सोवियत कमांडरने १९ फर्वरी (४ मार्च) १९१८ ई०के १० बजकर १५ मिनटपर एर्गसको अल्टीमेटम दिया। दिनके १ बजे अल्टीमेटमका समय बीतनेवाला था। पौन बजे एर्गसका जवाब मिला। उसने सोवियत-कमाडरकी मांग पूरा करनेसे इन्कार कर दिया। १ बजेसे बीचमे कभी-कभी रुककर शामके अंधेरेतक तोपे पुराने नगरपर गोला-वर्षा करती रहीं। २० फर्वरीको सबेरे लाल सैनिकोंने पुराने नगरपर धावा बोल दिया। एर्गस अपने आदमियोंको लेकर पहली ही झड़पमे भाग खड़ा हुआ, इसलिये नगरपर अधिकार करनेमें अधिक प्रतिरोधका सामना नहीं करना पड़ा। एर्गसके भाग जानेपर अब पुराने खोकन्दके प्रतिनिधि सुलह करनेके लिये आये। सुलह-सम्मेलन २१-२२ फर्वरी (८-९ मार्च) १९१८ ई०को रूसी-एसियाई बैंकके मकानमें हुआ। सुलहकी शर्तोंके अनुसार हथियारोंको सोवियत कमांडरके हाथमें दे देना पड़ा, खोकन्दमें स्वायत्ती सरकार तोड़कर प्रादेशिक सोवियत जनकमीसर मंडलके शासनको स्वीकार किया गया। इस प्रकार खोकन्दपर किसानों-मजदूरोंका राज्य स्थापित हुआ। एर्गसने यद्यपि यहां असफलता पाई, लेकिन आगे बासमची (डाकुओ) बन अपनी निष्ठुर खून-खराबियों द्वारा उसने तथा मध्य-एसियाके और भी कितने ही अधिकारच्युत धनियों और अमीरोंने बोल्शेविकोंको हटाकर अपनी तानाशाही स्थापित करनेका असफल प्रयत्न किया।

खोकन्द स्वायत्तीय आन्दोलन और सरकारके जीवनका चिट्ठा पुराने रूसी पंचांगकी तारीखों (जो कि तेरह दिन पहले पडती थीं)के अनुसार निम्न प्रकार है:—

दिसम्बर	६-७,	१८१८ ई०	फरगाना जिलेकी सोवियतोंकी कांग्रेस
,,	९-११,	,,	मुसलमानोंकी काग्रेस
,,	११,	,,	खोकन्द स्वायत्तताका आरम्भ
,,	२१-२४,	,,	खोकन्दमें अखिल तुर्किस्तान समाजवादी क्रांति-कारी कांग्रेस
दिसम्बर	२७,	१९१८ ई०	ताशकन्दमे बोल्शेविकोंका प्रदर्शन
फर्वरी	१२,	१९१९ ई०	खोकन्द दुर्ग बोल्शेविकोंके हाथमें और खोकन्दमें सैनिक क्राति-समितिका संगठन
,,	१३,	,,	स्कोबेलेफ और अन्दिजानसे खोकन्दमे कुमक आई, खोकन्द स्वायत्ती सरकारसे प्रथम बातचीत
,,	१४,	,,	स्वायत्ती सरकारसे द्वितीय बातचीत
,,	१४-१६,	,,	एर्गसका किलेपर आक्रमण करनेका प्रयत्न
,,	१५,	,,	स्कोबेलेफ नगरकी दूमाका खोकन्दके शांति-

			सम्मेलनोंमे एक प्रतिनिधि भेजनेका निश्चय
फर्वरी	१७,	,,	शाति-सम्मेलनका उद्घाटन
,,	१८,	,,	मुल्लोंका स्वायत्ती सरकारको अपने हाथमें ले लेना
,,	१९,	,,	ताशकन्दसे खोकन्दमे सेना आनेपर सोवियत कमाडरने अल्टिमेटम भेजा, पुराने नगरपर गोला-बारी शुरू
,,	२०,	,,	एर्गस खोकन्द छोडकर भागा
,,	२२,	,,	सुलहनामेपर हस्ताक्षर

६. समरकन्द-विजय

खोकन्द स्वायत्तियोंपर विजय प्राप्त करना मध्य-एसियामें साम्यवादकी जबर्दस्त विजय थी। उसके बाद यह निश्चय-सा हो गया, कि नगरोंसे बोल्शेविकोंको हटाना बहुत मुश्किल है। १९१८ ई०में बोल्शेविकोंका शासन सिर्फ नगरोंपर था। नगरोंके आसपासके कुछ किसान भी उनके प्रभावमे आये थे। खासकर सिर-दरियाके आसपासवाले इलाके, फरगाना जिला और समरकन्दके जिलोंके किसानोंपर बोल्शेविकोंका प्रभाव बढता जा रहा था, लेकिन उधर मुल्लाओंका संगठन "शूरा-इस्लामिया" (इस्लामी लीग) भी काफिरोंके विरुद्ध धुआंधार प्रचार करके मुस्लिम-जनसाधारण-को रूसियोंके, खासकर बोल्शेविकोंके, विरुद्ध खूब भड़का रहा था। दिसम्बर १९१७ ई०के अन्त और जनवरी १९१८ ई०के शुरूमे समरकन्दमे क्रांतिकारियोंने विरोधियोंको दबा दिया। वहा बोल्शेविकोंका सगठन भी हो गया और रेव-कम (रेव्यूल्यूशनरी कमेटी, क्रांति-समिति)ने बोल्शेविक सेनाके संगठनका भी सूत्रपात कर दिया। लेकिन इसी समय कजाकोंने समरकन्दको खतरेमे डाल दिया। मध्य-एसियाकी जातियोंमे कजाक सबसे ज्यादा लड़ाकू और अभी भी बहुत कुछ घुमन्तू जीवन बिताते थे। साइबेरियामें क्रांति-विरोधियोंने अपने पक्षको मजबूत किया था, और इन कजाकोंका उनसे सीधा संबंध था। समरकन्दके आसपासको घेरनेवाले कजाकोंके साथ बात करनेके लिये बोल्शेविकोंने अपना प्रतिनिधि-मंडल भेजा। किजिल-तेप्पेमे दोनों ओरके प्रतिनिधियोंने बातचीत की। फिर क्रांति-सरकारके नामसे अल्टीमेटम दिया गया, और कुछ अफसरों और प्रतिगामी कजाकोंको छोड सबके हथियार ले लिये गये।

अक्तूबर-क्रांतिके तुरन्त ही बाद समरकन्द-जैसे मध्य-एसियाके महत्त्वपूर्ण नगरमें क्रांतिकी सशस्त्र सेना तैयार करनेमे कैसे ढिलाई की जा सकती थी? इस सेनामें रूसी और एसियाई दोनों ही जातियोंके आदमी थे। जारकी सेनामे काम किये हुये सिपाहियोंके अतिरिक्त काफी संख्यामें नये आदमी भर्ती हुये। इस प्रकार जनवरी १९१८ ई०में लाल सेनाका प्रथम संगठन यहा हो चुका था। समरकन्दको रूसी गैरिसनके सिपाही पहलेसे सैनिक शिक्षा पाये हुये थे, नये क्रांतिके सिपाहियोंने भी सैनिक-शिक्षा तेजीसे ली। साथ ही पुराने सिपाहियोंमें राज-नीतिक चेतना लानेके लिये पूरी कोशिश की गई। कजाक कत्ताकुर्गान शहरपर अधिकार किये हुये थे। अभी भी उनसे खतरा दूर नहीं हुआ था। प्रदेश (क्राइ)की सरकारने पोल्तरा-त्स्कीको उनसे बात करनेके लिये नियुक्त किया। कजाकोंके भी प्रतिनिधि आये। समरकन्दमें दोनोंकी बातचीत होते समय क्रातिकारी कमेटीने उनसे हथियार रखनेकी मांग की, लेकिन कोई निश्चय नही हो सका। फिर बोल्शेविक-प्रतिनिधि सीधे कजाक सैनिकोंसे बात करनेके लिये समरकन्दसे दस वर्स्त (१·६ फर्सख)पर अवस्थित जूमा रेलवे स्टेशनपर गये, लेकिन कजाक किसी बातको सुननेके लिये तैयार नहीं थे। वह समरकन्दपर आक्रमण करनेके लिये उतारू थे। समरकन्दमे भी कमकरोंने बडी तेजीसे सैनिक तैयारी की। मजदूरोंने अपने परिवारको छोड़-कर बन्दूक उठाई और कजाकोंको जीजक स्टेशनमें ही रोकनेका प्रयत्न किया। बोल्शेविक पार्टीका एक भाग सेनाके लिये बाहरी तैयारीपर नियुक्त हुआ। बहुतसे पार्टी-मेम्बर किलेकी

रक्षामें लगे और कितने ही युद्धक्षेत्रमे गये। एसियाई और युरोपीय दोनों ही मजदूर और बोल्शेविक-कर्मी एक-दूसरेसे मिलकर कजाकोंसे समरकन्दको बचानेके लिये बडी तत्परतासे काम कर रहे थे। कजाक अपनेको करेन्स्की की अस्थायी सरकारका सैनिक बतलाते थे, जब कि वह सरकार रूसमें खतम हो चुकी थी। सारा प्रयत्न करनेपर भी कजाक सफल हुये। वह मुक्ति-दाताके तौरपर समरकन्द शहरमे दाखिल हुये। रूसी और एसियाई बूर्ज्वाजीने उनका भारी स्वागत किया, बढिया शराब पिलाई, भोज और उत्सव मनाया। क्रांतिकारियोंमेसे जो भी हाथ आये, उन्हें कजाकोंने बडी निष्ठुरतासे मारा। लेकिन अधिकाश बोल्शेविक अन्तर्धान हो चुके थे। उनका संगठन भी नष्ट न हो, अन्तर्हित हो गया था। इस समय कमजोर दिलवाले अपने आप पार्टीसे अलग हो गये, लेकिन पक्के बोल्शेविक और मजबूतीके साथ अपने सगठनको चलाते रहे। बोल्शेविकोंकी कार्य-तत्परता, कुर्बानी और बर्तावने एसियाई गरीबों और मजदूरोंके दिलमे और भी उनके प्रति विश्वास पैदा कर दिया।

लेकिन, समरकन्द थोडे ही दिनोंके लिये बोल्शेविकोंके हाथसे गया। ताशकन्दमें बोल्शेविक शासन मजबूत हो गया था। खोकन्दमे भी शत्रुओको दबा दिया गया था। अब समरकन्दको फिरसे लेनेके लिये उन्होंने तैयारी शुरू की। ताशकन्दने भी सेना भेजी, समरकन्दके मज़दूरोंने भी बहुतसे सैनिक दिये। समरकन्दके पुराने सैनिकोंमेसे बहुतसे उनके साथ थे, और कुछ ओरेनबुर्गमें क्रांतिविरोधियोंसे लडकर अभी लौटे थे। बोल्शेविकोंके सब मिलाकर तीन हजार पैदल और सवार दोनों ही तरहके सैनिक कजाकोंके मुकाबिलेके लिये तैयार थे, लेकिन इनके पास एक ही मैदानी तोप थी। उधर क्रांति-विरोधियोंके पास २७०० सैनिक थे, जिनमें ईरान और खीवाके युद्धक्षेत्रसे आये हुए भी कितने ही थे। उनके पास दो मैदानी तोपे और दो दूसरी तोपें थी। यह बतला चुके हैं, कि ओरेनबुर्गमे आतमन दूतोफ साइबेरियाके क्रांति-विरोधी जेनरलोंके साथ था, और उसका प्रभाव खीवा होते कास्पियनके पूर्वी तट तथा ईरानकी सीमातक पहुंच रहा था। बुखाराका अमीर यद्यपि अभी सीधे तौरसे बोल्शेविकोंके विरुद्ध होनेकी हिम्मत नही रखता था, लेकिन उसके अफसर वहांके पूजीपति क्रांति-विरोधियोंकी हर तरहसे सहायता कर रहे थे। युद्धके दो दिन पहलेतक कजाकोंके साथ उनकी बराबर बैठकें होती रहीं। अन्तिम आक्रमणके पहले जीजक स्टेशनके पास एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसमे एसियाई मजदूर बड़ी सख्यामे शामिल हुये थे। तुर्किस्तान गणराज्य सोवियत जनकमीसर-परिषद्के अध्यक्ष कोलेसोफने अपने भाषणमे गणराज्यकी सारी स्थितिपर प्रकाश डाला। इसी सभाके बाद योजना बनाई गई। फिर क्रांतिकी सेना दक्षिणवाले रास्तेसे रेलवेके साथ-साथ लाइनसे दाहिने और बाये होते आगे बढी। रोस्तोव्त्सेवो स्टेशनोंमे पहुचनेपर गोलाबारी शुरू हुई। कजाक समरकन्दकी ओर पीछे हटे। बोल्शेविक आगे बढते गये। अन्तमे सोवियतकी क्रांति-विरोधियोंपर विजय हुई, और लाल सेनाके हाथमे बहुतसा गोला-बारूद और दूसरे हथियार आये। पेरफिल्येफ लाल सेनाका कमाडर था। दूसरे अफसर थे--फेदोर कोलेसोफ, पोल्तरात्स्की, फ्रोलोफ, पोनोमारेफ, पेन्दो, दूनायेफ, मिखाइलोफ, पेस्पेलोफ, एसाउलेंको, बेर्ग, शुस्तोफ, बारकुस, ओर्लोफ, इसायेफ आदि। क्रांति-विरोधियोंकी तरफ थे—कजाची, कर्नल जायित्सेफ, स्लिको, सिबको, स्तेपानोफ, गिजबुर्ग, सियानोफ, तोकारेफ, गोरेलोफ, गपेयेफ आदि जारशाहीके पुराने सैनिक अफसर तथा दूसरे।

जनवरी १९१८ ई०के आरम्भमे हुई समरकन्दकी इस विजयने फरगाना, समरकन्द और ताशकन्दके बीचकी भूमिको बोल्शेविकोंका एक दृढ़ केन्द्र बना दिया।

लेकिन, अभी भी बोल्शेविक निश्चित नही बैठ सकते थे, क्योंकि अफगानिस्तान और ईरानके रूसी सीमान्तपर अंग्रेजोंका षड्यंत्र बड़े जोरसे चल रहा था, और चर्चिल सारी शक्ति लगाकर रूससे बोल्शेविकोंको उखाड फेकनेके लिये तैयार था।

७. बुखारा-अमीर भगा (१९२०ई०)

मध्य-एसियामे रूसका शासन स्थापित हो जानेके बाद भी बुखाराके अमीरका शासन हमारे यहांकी बड़ी रियासतोंके ढंगपर हो रहा था। मध्य-एसियाके लोग भी तुर्क हैं, और

तुर्कीके लोग भी। मध्य-एसियाके तुर्क सुन्नी होनेसे तुर्कीके खलीफाको अपना सबसे बडा धर्माचार्य मानते हैं। इस प्रकार भाषा और धर्मके घनिष्ठ संबंधके कारण मध्य-एसियाके शिक्षितोंका तुर्कीके साथ घनिष्ठता होनी स्वाभाविक थी। इसीलिये जिस तरहके आन्दोलन तुर्कीमें होते, उसका कोई-न-कोई रूप मध्य-एसियामें उठ खडा होता। तुर्कीमे नवीन-तुर्क दलने सुधारके लिये बहुत जद्दो-जहद की, और वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें उसने इतनी सफलता पाई, कि तुर्कीके सुल्तानको अनवर पाशा और दूसरे नवीन तुर्क-नेताओंको शासनमें साझीदार बनानेके लिये मजबूर होना पड़ा। नवीन-तुर्क पुराने जमानेकी कितनी ही बातोंको हटाकर तुर्कीको सामन्तशाहीसे पूजीवादी समाजमे लाना चाहते थे। इन्हीं नवीन-तुर्कोंकी नकलपर मध्य-एसियामे 'जदीद' (नवीन) आन्दोलन शुरू हुआ, जिसका केन्द्र बुखारा था। रूसी इलाकेमे अक्तूबर-क्रांतिके बाद खोकन्दी स्वायत्तियोंने शक्तिको अपने हाथमें लेना चाहा, लेकिन जदीदोंने इतना जोर नहीं दिखलाया। जदीद मुल्लाशाहीके भी खिलाफ थे, इसलिये मुल्ला उन्हें फूटी आंखों देखना नहीं चाहते थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भसे ही जदीदवादका प्रचार बुखारामें होने लगा था। १९१७ ई०के मार्च-अप्रैलमे जदीदोंका नारा 'हुर्रियत' (स्वतंत्रता) बड़े जोरोंपर था। फर्वरी-क्रांति द्वारा जारके सिंहासनसे हटा दिये जानेके बाद बुखाराका अमीर आलमखान भी डर गया, और उसने एक बार तुर्कीके सुल्तानका अनुगमन करते हुये जदीदोंकी बहुतसी मांगें मान लीं। लोगोंको मालूम होने लगा, कि यहांपर भी अब जदीदोंका शासन स्थापित होगा। लेकिन सालभर बीतते-बीतते अमीरको फिर इतनी हिम्मत हो गई, कि मार्च १९१८ ई०से उसने जदीदोंका कत्लेआम शुरू कर दिया। चारों ओर मुल्लोंका जोर था। बडे-बड़े पगड़वाले मुल्ला जदीदोंके खूनकी नदी बहते देखकर दाढी फड़फडाते कह रहे थे—"देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत!" बुखारामें सैकड़ों आदमी बुरी तरहसे पकड-पकडकर तलवारके घाट उतारे जा रहे थे, खूनसे भरी खाइयोंके पास बीसों मुर्दे दम तोड़ रहे थे।

जदीदोंके प्रभावके जमानेमें नसरुल्ला कुशबेगीने जदीदोंके साथ सहानुभूति दिखलाई थी, जिसके लिये उसे अपने बीबी-बच्चों और संबंधियोंके साथ बुखारासे निर्वासित करके करमीनामें नजरबन्द कर दिया गया, और उसकी जगहपर मिर्जा उरगंज महामंत्री बनाया गया। जदीदोंने पुराने ढंगके मकतबोंकी जगहपर लडकोंके पढनेके लिये नये ढंगके स्कूल स्थापित करना चाहा। मुफ्ती हाजी अकरामने उनके कामका समर्थन किया था, इसलिये उसे भी गुजारमें निर्वासित कर दिया गया। बुखारा-शरीफका रईस अब्दुस्समद खां जदीद होनेके कारण पदच्युत कर दिया गया। इसी तरह मिर्जा शहबाई और हाजी दादखाह-जैसे प्रभावशाली दरबारी जदीद होनेके इल्जाममें निर्वासित करके कबादियान भेज दिये गये। जिस तरह खोकन्दमें मुल्लोंने अन्तमें सारी शक्ति अपने हाथमें ले ली थी, वही बात अब १९२० ई०में बुखारामें दुहराई जा रही थी। चारों तरफ जहाद (धर्मयुद्ध)का नारा घोषित हो रहा था। मुल्लोंने फतवा दे रक्खा था, कि जदीदोंका खून हलाल और उनकी जोरू हलाल।

लेकिन अमीर और मुल्लोंकी यह धींगा-धींगी छ महीने भी नहीं चल पाई। २० अगस्त १९२० ई०को बुखाराकी हालत परेशान देखी जाने लगी। बुखाराके आर्क (किले)से अमीरका सामान घोडा-गाड़ियोंपर ढोया जा रहा था, और उधर बोल्शेविक तोपें समय-समयपर भूमिको कंपाते हुये गुम्-गुम्की आवाज कर रही थीं। अमीर आर्क छोड़कर सितारामुखासा नामक बागमें ठहरा हुआ था, जहांपर उसकी बेगमें और उसकी कामुकताके शिकार छोकरे गाड़ियोंपर चढ़ा-चढ़ा करके भेजे जा रहे थे। बोल्शेविक केवल तोपके गोले ही नहीं छोड़ रहे थे, बल्कि उनके कागजी गोले और भी शक्तिशाली रूपमें लोगोंके बीचमें फेंके जा रहे थे, जिनकी आखिरी पंक्तियों—"बुखाराके मेहनतकश जिन्दाबाद; बोल्शेविक पार्टी जिन्दाबाद; सोवियत-सरकार जिन्दाबाद; अमीर और उसकी सरकार नेस्तबाद" को पढ़-सुनकर बुखाराके गरीब बड़े उत्साहके साथ नये दिनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उधर जनाब आली अमीर-बुखारा मीर आलम खान भागनेकी फिकरमें परेशान थे।

३०-३१ अगस्त और १ सितम्बर (१९२० ई०)के सोमवार, मंगल और बुधके तीन दिनोंमे सारा बुखारा उलट-पलट गया। नगरमे आग लगी हुई थी। आर्क(किले)के अन्दर हर जगह, खासकर अमीरके गद्दीधर और रनिवासमे, आगकी ज्वालायें लपलपा रही थी।

अमीरके लिये अब सुरक्षित जगह अपने देशके भीतर नही रह गई थी। जब उसकी प्रजामे सबसे अधिक सख्या रखनेवाले गरीब किसान और मजदूर बोल्शेविकोंके फेरमे पड गये थे, तो उसे कैसे त्राण मिल सकता था? उसे अब अफगानिस्तानके भीतर ही जान बचानेकी जगह दिखलाई पडने लगी। लेकिन, वह उज्बेकोंके मैदानी इलाकोंसे गुजरना खतरेकी बात समझता था, इसलिये उसने पहाडी रास्ता लिया। बाइसूनमे जाकर उसने डेरा डाला। मुल्लोंके धुआधार जहादी व्याख्यानोंसे, और उससे भी अधिक लूटके लोभसे पूर्वी बुखारावाले हिसार, कुल्याब, बलजुवान, दरवाज और करातगिनके इलाकोंसे बहुतसे गाजी आये थे, लेकिन आधुनिक हथियारोंसे सुसज्जित और सुशिक्षित बोल्शेविकोंके सामने भला यह शिवजीकी पलटन क्या कर सकती थी? अमीरको बाइसूनसे भी भागकर दुशाम्बा जाना पडा। वहांपर एक ही यूरोपीय ढंगकी इमारत 'बोख्तरखाना' थी, जिसे अमीरने अपना महल बनाया। जब लुटेरोंकी पलटन उसके आसपास आकर जमा होने लगी, तो अमीरको विश्वास हो गया, कि अब बुखारा तो गया, दुशाम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) राजधानीमे ही शायद मै मंगीतोंके शासनको मजबूत करनेमे सफल होऊ। लेकिन फर्वरी १९२१ ई०में फिर अमीरका पैर कापने लगा। पासके खजानेको कही गाजीके नामसे इकट्ठा हुये यह डाकू न छीन ले, यह भी उसको डर था। इसलिये निराश हो कुल्याब होता वह कुछ समय बाद पंज (वक्षुकी ऊपरी शाखा)के किनारे पहुंच दरकदके घाटसे वक्षु पार हो अफगानिस्तान चला गया। जाते-जाते वह डाकुओं (बासमचियों)के सरदारोंको अपना प्रतिनिधि बनाकर छोड़ गया, जिन्होंने १९२१ से १९२६ ई० तकके पाच वर्षोंतक पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)मे बहुत लूट-पाट मचाई, गरीबोंके खूनसे हाथ रंगा, लेकिन अन्तमें उन्हें सोवियत-शासनने खतम कर दिया। बोल्शेविक क्रांतिके बाद सारा रूसी मध्य-एसिया तुर्किस्तान गणराज्यके नामसे संगठित हुआ था। इसके बाद उज्बेकिस्तानका गणराज्य स्थापित हुआ, जिससे १९२४ ई०मे ताजिकिस्तान पहले स्वायत्त गणराज्य फिर पाच साल बाद १९२९ ई०मे स्वतंत्र गणराज्य होकर अलग हो गया।

स्रोत-ग्रन्थ

१. स्पिसोक् नरोद्नोस्तेइ तुर्केस्तान्स्कओ क्राया (इ. इ. जारुबिन्, लेनिनग्राद १९२५)
२. रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३. "वोस्तोको वेदेनिया" (१९४५/३, पृष्ठ ५९-७९, लेनिनग्राद)
४. नसेलेनिये समरस्कन्द्स्कोइ ओब्लास्ति (इ. इ. जारुबिन्, लेनिनग्राद, १९२६)
५. दाखुन्दा (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल सांकृत्यायन, प्रयाग, १९४८)
६. जो दास थे (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल सांकृत्यायन, प्रयाग, १९४९)
७. बुखारा (संस्मरण, सदरुद्दीन ऐनी, अनुवादक स. बोरोदिन्, मास्को, १९५२)

अध्याय ३

कजाकस्तानमें क्रांति

१. कजाक-जाति

इतिहासके आरम्भसे वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमे किस तरह मानव जातियोंका आगमन, निस्सरण और सम्मिश्रण होता रहा, इसे हम जगह-जगह कह चुके हैं। आज जो विशाल भूमि कजाकस्तान गणराज्यके नामसे प्रसिद्ध है, वह भौगोलिक तौरसे इतिहासकी दृष्टिसे साइ-बेरिया, किपचकभूमि, अल्ताई और सप्तनदके भिन्न-भिन्न भागोंमें विभक्त रही। मध्य-पाषाण-युग (ई० पू० ४०००)से पहलेकी पुरापाषाणयुगीन मुस्तेर आदि जातियोंमें से कौन इस भूमिमें रही, इसके बारेमें हमारे पास पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। तुलनात्मक नृवंश-तत्त्व और भाषा-तत्त्वके अध्ययनसे हम यह कह सकते हैं, कि मध्य-पाषाणयुगमे दश्तकिपचकमें फिनो-द्रविड थे और वही जाति सप्तनदमे भी थी, अर्थात् तुर्किस्तान शहर और जम्बुल जिलेके इलाकोंमें किसी समय वही फिनो-द्रविड जाति रहती थी, जिसके अवशेष भारतमे द्रविड़ तथा सोवियतमें कौमी स्वायत्त गणराज्य, और एस्तोनिया तथा फिनलैंडके लोगोंके रूपमे अब भी मौजूद है। लेकिन उससे हजार वर्ष बाद नव-पाषाण-युगमे हम यहा विशेषकर अराल और निम्न-सिर-दरियाकी उपत्यकाओंमें आर्य घुमन्तुओंके आनेका पता पाते है। २५०० ई० पू०में फिर किपचक-भूमि और अल्ताईमे उनका स्थान उन्हीके भाई-बन्द शक लेते है। सारे पित्तल-युग और लौह-युगमे घुमन्तू पशुपाल और कुछ थोड़ेसे खानोंमे काम करनेवाले शक, किपचक, सप्तनद और अल्ताईके निवासी थे। हम देख चुके है, कि ई० पू० ५वीं शताब्दीमें भी, जब कि दुनियाके बहुतसे भागोंमें लोहेका प्रचार हो चुका था, अभी ये शक पीतलके हथियारोंका ही इस्तेमाल करते थे। ई० पू० ४थी सदीमें कजाकस्तान (उस समय शक-भूमि)के पूर्वी भाग अर्थात् अल्ताई-प्रदेशके पड़ोसी हूण थे, जो ई० पू० २री शताब्दीमे शक-भूमिके ऊपर टूट पडे, और उन्होंने शकोंकी प्रभुता वहांसे खतम कर दी। उस समयसे शक-आर्य शरीराकृतिका स्थान मंगोलायित आकृतिने लेना शुरू किया। जो शक इस भूमिमें रह गये, वह मंगोलायितोंमें मिल गये। ईसाकी ५वीं सदीके पूर्वार्ध-में किपचक-सप्तनद-अल्ताईकी भूमिमें रहनेवाले हूण-वंशज मंगोलायित अपनी सामान ढोने-वाली गाडियोंके कारण कंगली कहे जाते—वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमसे आनेवाले घुमन्तू सिरकी वालोको पूर्वी उत्तरप्रदेशमे कगडा कहा जाता था। ६ठी सदीके उत्तरार्धमें फिर तुर्कोंका प्रभुत्व स्थापित होनेके बाद इस भूमिके निवासी तुर्क नामसे प्रसिद्ध होने लगे। तबसे मध्य-एसियाके और भागोंकी तरह आज भी तुर्क जाति यहां रहती है, जो भाषाके थोड़े भेदके कारण कहीं कजाक, कही किर्गिज, कहीं उज्बेक और कहीं तुर्कमानके नामसे पुकारी जाती है। यदि हम आजकी कजाक जातिके ऐतिहासिक विकासको देखते है, तो हमें उनके भीतर निम्न क्रमसे जातियोंके स्तर मिलते है :—

कजाक जातिका निर्माण :—

काल	किपचकभूमि	सप्तनद	अल्ताई
ई० पू० ४००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड़ (अराल-सिर)	फिनो-द्रविड़ (जम्बुल)	
,, ३५००	,,	,,	...
,, ३००० (नवपाषाण)	शकार्य	,,	...

"	२५००	शक	शक	शक
"	१५०० (ताम्र-युग)	श०	श०	श०
"	७००	श०	श०	श०
"	५५०	श०	श०	श०
"	३२६	श०	श०	श०-हूण
"	२०६	श०	श०	श०-हूण
"	१३०	हूण	हूण-श०	हूण
"	१००	हूण	हूण-श०	हूण
ईसवी	१००	हूण	हूण-श०	हूण
"	४२५	कंगली	कगली	कंगली
"	५५७	तुर्क	तुर्क	तुर्क
"	६७३	तुर्क	तुर्क	तु०-किर्गिज
"	८९२	तुर्क	तुर्क	किर्गिज
"	१२२०	तुर्क	तुर्क	किर्०-मंगोल
"	१५००	तु० (कजाक)	तु० (कजाक-किर्०)	किर्०-मंगोल
"	१७५७	कजाक	कज-किर्०-मंगोल	किर्०-मंगोल
"	१८६५	कजाक	कज०-रूस	कज०-रूस
"	१९१७	कज०-रूस	कज०	कज०-रूस

कजाक

अक्तूबर-क्रांतितक कजाक लोग अब भी बहुत कुछ घुमन्तू पशुपाल थे। हम यह देख चुके है, कि इन घुमन्तू जातियोंका पशुपाल-अवस्थामें रहना उनके सामन्ती समाजके विकसित होनेमे बाधक नही था। इस प्रकार वर्गके तौरपर कजाकोंके मुखिया और शासक सामन्ती जीवन व्यतीत करते सामन्ती संस्कृतिसे भी परिचित थे। घुमन्तू जातियोंमे दूसरी घुमन्तू जातियोंका हजम होना बहुत आसान है, और अपने सरदारों या वीरोंके नाम स्वीकार करनेके कारण उनके प्राचीन नामोंका पता लगाना भी मुश्किल है। कजाकोंके बारेमें हम देख चुके है, कि पहले इन्हें उज्बेक या उज्बेक-कजाक कहा जाता था। सुवर्ण-ओर्दूका नाम एक शक्तिशाली उज्बेक खान (१३१३-४० ई०) के अधीन होनेके कारण पड़ा। कजाकका शब्दार्थ चाहे अरबी भाषामे डाकू हो, लेकिन यहांपर तुर्कोंने इसका इस्तेमाल साहसी लोगोंके लिये किया। किर्गिज-कजाक और उज्बेक-कजाक नामके अन्तके कजाक और किर्गिज नाम अब रह गये, जो अपनी-अपनी जातिके परिचायक है। कजाक कबीलोंके नामोंके देखनेसे हमें पता लगता है, कि पुराने कौन-कौन-से कबीले या जातियां आकर इस भूमिमे मिश्रित हो एक जातिके रूपमे परिवर्तित हुई। कबीलोंके ये नाम कजाकों और उज्बेकों में बहुत-कुछ एक-से मिलते है, जिससे इस बातकी पुष्टि होती है, कि मूलत कजाक और उज्बेक एक ही कबीलेके अग थे। दोनों जातियोंके कुछ कबीले है :—

कजाक	उज्बेक	आनेका काल
कुंग्राद (सुवर्ण-ओर्दू)	कुंग्राद	मंगोल-काल
किपचक (मध्य-ओर्दू)	किपचक	तुर्क-काल
किताई (लघु-ओर्दू)	खिताई	
नैमान (मध्य-ओर्दू)	नैमान	मंगोल-काल
उजुन (मध्य-ओर्दू)	ओशुन	शक-काल
उसिउन (सुवर्ण-ओर्दू)	"	
तजलर (लघु-ओर्दू)	ताज	
तरी-उइगुर (मध्य-ओर्दू)	उइगुर	मंगोल-काल

कजीगली (मध्य-ओर्दू)	कंजीगली	
जलैर (सुवर्ण-ओर्दू)	जलैर	मंगोल-काल
कगली (सुवर्ण-ओर्दू)	इचकिली	
अलचिन (लघु-ओर्दू)	अलचिन	

इतिहासमें इन कबीलोंमेंसे कितनोंका हमे पता लगता है। कंगली (कंकली, कंग) बहुत पुराना नाम है, जो यहा आये हूणोंके पुराने वशजोंको दिया गया। नैमन किसी समय इर्तिशसे मगोलियाकी पुरानी राजधानी कराकोरमतक—अर्थात् पीछेकी उत्तरी जुगारियामें बसते थे, जहांसे मगोल-विजेताओंके ओर्दूका भाग बनकर यह मध्य-एसियामे आये।

जलैर बैकाल-प्रदेश तथा दौरियाके बीचमे किसी समय रहते थे, जहांसे ये मगोलोंके साथी बने।

उइगुर लोगोंका केन्द्र भी किसी समय बिशबालिग था। एक बार तुर्कोंके स्थानमें इन्होंने अपनी प्रभुता स्थापित की थी, फिर मंगोलोंके अनुयायी हो उनकी विजयोंमे शामिल हो गये।

कुकुर्द या कुग्राद मंगोलोंका एक बहुत प्रतिष्ठित कबीला था, जो किसी समय दोलेनोर सरोवर, निम्न केरुलोन तथा अर्गुनकी उपत्यकाओंमें रहता था।

अलचिन पहले खिगन पर्वतमालाके वासी थे।

कजाक कबीलोंको आजके कजाकस्तानके भिन्न-भिन्न भागोंमें हम निम्न प्रकार वितरित देखते हैं:—

(१) **महा-ओर्दू**—इसके उइसुन और सीखिम कबीले ताशकन्दके जिलेमें मिलते हैं। औलियाअता (जम्बुल) में इसके जानी, तेंमिर, चीमिर और बोतपाई (खित्तन) कबीले रहते हैं। तुर्किस्तान-शहरके पास और चू-उपत्यकामें सिरगिली, उस्ती, ओतकची, जलैर, चपराच कबीले बसते हैं। कंगली ताशकन्दके पासमे रहते हैं।

(२) **मध्य-ओर्दू**—इस ओर्दूका किपचक कबीला ताशकंदके पास रहता है। कुंग्राद भी वहीं बसते हैं। इनके अतिरिक्त ताशकन्दके आसपास मध्य-ओर्दूके अल्तीअता, कोकतुनगुलू अल्तीअता, कोकतुनचुई, अर्गुन, नैमन भी बसते हैं।

२ १९१६ ई० का विद्रोह
(जारशाहीसे)

जारशाहीके प्रसारके बारेमे लिखते वक्त हम यह बतला चुके है, कि किस तरह अपने शासनको दृढ़ करनेके लिये साइबेरिया और दूसरी जगहोंपर रूसी किसानों और व्यापारियोंकी औपनिवेशिक बस्तिया बसानेकी कोशिश की गई। कजाकस्तानकी भूमिमे ये बस्तियां अधिकतर उसके उत्तर तथा उत्तर-पूर्वमे हैं। लेकिन, आगे चलकर वह ओरेनबुर्गसे सिर-दरियाके किनारे ताशकन्द, और फिर सप्तनद तथा अल्ताई होते साइबेरियाके ओम्स्क आदि नगरोंतक चली गईं। पीछे ओरेनबुर्गसे अराल समुद्रके तटतक और फिर ताशकन्द होते बेर्नीनक रेल बन गई। तुर्किस्तानको साइबेरियासे मिलानेवाली रेलवे लाइन बोल्शेविक-क्रांतिके बाद बनी, लेकिन इससे पहले भी ओरेनबुर्ग, अराल्स्क, अरिस, चिमकन्द, वेर्नी (अल्माअता), बुर्ल्युन्त्युबे, आयागुज, सेमीप्लातिन्स्क, बर्नोल, नवोसिबिर्स्कके आधुनिक रेल-मार्गपर जहा-तहां रूसियोंकी बस्तियां बस चुकी थीं। जारशाहीने पूरी कोशिश की, कि गोरोंके साथ विशेष रियायत करके उन्हें किर्गिजोंसे अलग रक्खा जाय। भारतमें अंग्रेजोंके लिये ऐसा करनेमें सुभीता था, क्योंकि यहांपर अंग्रेज किसान और मजदूर आकर बसने नहीं पाते थे, और भारतीयोंके लिये सभी अंग्रेज साहेब (स्वामी) थे; लेकिन कजाकभूमिके लोग साहेब-रूसियोंको ही अपने पास नहीं, बल्कि लाखोंकी संख्यामें रूसी मूजिकों (गरीब किसानों) को भी देखते थे। उपनिवेशोंमें आकर बसे रूसियोंकी हालत कुछ बेहतर जरूर थी, और मूजिक या मजदूरकी शकलमें आये रूसी भी कुलक (धनी किसान) बननेमें

सफल हो जाते थे, इसलिये भी वह स्थानीय कजाकोके साथ भाईचारा स्थापित नही कर सके। घुमन्तू पशुपाल कजाकोंको कृषि-भूमिकी उतनी अवश्यकता नही थी जितनी कि गोचर-भूमिकी, इसलिए वह अपनी भूमिके साथ उतनी घनिष्ठताका भाव नही रख सकते थे, जितना कि किसान। जारशाही सरकारकी बराबर कोशिश रहती थी, कि खेतीके लिये उपयुक्त भूमि कजाकोंसे छीनकर रूसियोंको दे दी जाय। ९ नवम्बर १९०६ ई०को इसके बारेमें बल्कि भूमि-संबधी एक नया कानून बनाकर कजाकोंको उनकी भूमिसे वचित करनेका भारी उपक्रम किया गया। कजाकोंकी जमीनपर रूसी कुलकोंके पलनेकी यही कथा है।

कजाकोंकी सांस्कृतिक अवस्था बड़ी हीन थी। उनमे निरक्षरताका अखंड राज्य था, और केवल उनके बाय (सामन्त) और मुल्ला पढ़-लिख सकते थे। स्त्रियोंकी अवस्था तो इस्लाम-की रुकावटोंके कारण और बुरी थी। कजाक अपने पूर्वजोंके स्वतत्रता-संघर्षको बहुत-कुछ भूल चुके थे। अगर उनमें कोई संघर्ष होता था, तो आपसी कबीलोंका, जिसको जाग्रत रखनेके लिये जारशाही शासक पूरी कोशिश करते थे। एक प्रकारमे कजाक गहरी नीदमे सोये थे, या किस्मत-की बदनसीबी समझकर निष्क्रिय-से हो गये थे। इसी समय १९०६ ई०का अन्यायपूर्ण भूमि-संबंधी कानून जारी हुआ, और उधर १९०५-६ ई०की रूसी-क्रांतिकी प्रतिध्वनि कजाकस्तानके रूसी मूजिकों द्वारा कजाकोंमे भी पहुंची। यहा आकर बसे रूसी सरकारी अफसरों, व्यापारियों या कुलकोंको उस क्रातिसे कोई सहानुभूति नहीं थी, लेकिन तो भी उसकी चर्चा तो होनी ही थी, इसलिये रूसकी सुनी-सुनाई खबरोंने कजाकोंमे फिर कुछ चेतना पैदा की। ऊपरसे जारशाहीकी न तृप्त होनेवाली लालचने थप्पड लगाकर उन्हे जगानेकी कोशिश की। १९१३ ई०मे सप्तनदके राज्यपाल फोलबौमने लिखा था—रूसी सरकारके प्रति कजाक गरीबोंमे शत्रुताके भाव देखे जाते हैं।

प्रथम विश्वयुद्धमे कजाकोंके ऊपर और भी संकट पैदा हुआ। उनसे बड़ी भारी सख्यामे घोडे, ऊट ले लिये गये, फौजोंके खानेके लिये बकरी, भेड और दूसरे जानवरोंका मास लाखों टन भेजा जाने लगा। अनाज भी ढो-ढो कर सेनाके खानेके लिये भेजा गया। जीवनोपयोगी सभी चीजों-का अभाव तो होना ही था, ऊपरसे जारशाही अफसरो, देशी-विदेशी व्यापारियों और जमीदारोंने चीजोंके दाम को मनमानी और सट्टेबाजीसे बहुत चढा दिया, जिसके कारण कजाक जन-साधारणकी अवस्था दुस्सह हो गई। फिर २५ जून १९१६ ई०को जार निकोलाइ II का उकाजे (राजादेश) निकला, जिसके अनुसार १९ से ४३ वर्षके पुरुषोंको जबर्दस्ती भर्ती करके युद्ध-पक्तियोके पीछे काम करनेके लिये भेजा जाने लगा। कितने ही वर्षोंसे भीतर-ही-भीतर सुलगती हुई असंतोषकी आग १९१६ ई०के विद्रोहके रूपमे भडक उठी, और सप्तनद तथा तुरगाईके जिलोंमे सब जगह बगावत फैल गई। ३ अगस्तको पहलेपहल बेर्नी (आधुनिक अल्माअता) के उयेज्द (जिले)के किजिल बुरकोव्स्की मंडलमे विद्रोह शुरू हुआ, और १० अगस्ततक वह सारे इलाकेमे फैल गया। १९१६ ई०के सितम्बरके उत्तरार्धमे तुरगाई ओब्लास्त (तहसील)मे विद्रोह शुरू हुआ। इस विद्रोहका नेता एक गरीब मां-बापका लड़का अमनगेल्दी इमानोफ था, जिसने अपनी वीरता और सूझ-बूझसे विद्रोहियोंका इतना अच्छा नेतृत्व किया, कि जारशाही सरकार वर्षो-तक उससे परेशान रही और केवल अपने खातमेके साथ ही उसे उससे छुट्टी मिली, यह पहिले बतला चुके है। १९१६ ई०के अक्तूबरमे हजारों विद्रोही जत्थे जारशाहीसे लोहा ले रहे थे, जिनमे कभी-कभी पन्द्रह हजारतक आदमी शामिल थे। उनको दबानेके लिये जेनरल लावरे-न्तेफके अधीन सैनिक अभियान भेजा गया, लेकिन विद्रोह दबनेकी जगह, उस सालके नवम्बर महीनेतक सभी कजाकोंमें फैल गया, तुरगाई ओब्लास्तके पचास हजार आदमी उसमे शामिल थे। यह विद्रोह गरीबोंके विद्रोहका रूप ले चुका था, जिसके कारण कजाक धनियों और सामन्तोंको, उससे डर लगा, और वह जारशाहीको विद्रोह दबानेमें पूरी तौरसे मदद करने लगे। बाइतुरसुनोफ, दुलातोफ आदि ऊपरी वर्गके कजाक-नेताओंने उस समय रूसी सरकारके प्रति अपनी क्रियात्मक राजभक्ति दिखलानेमे कोई कसर उठा नहीं रक्खी। नवम्बरके उत्तरार्धमें रूसी सेनाओंके प्रहारके कारण अमनगेल्दी इमानोफको तुरगाईसे भागकर बतपक-कराके इलाकेमें शरण लेनी

पड़ी, और खुली लड़ाईकी जगह उसने छापामारी स्वीकार की । १९१७ ई०की जनवरीमें इमानोफने फिर तुरगाईमें आकर विद्रोहको भडकाया । जेनरल लावरेन्त्येफने 'फर्वरी १९१७ ई०मे बतपक-करापर चढाई करके इमानोफकी शक्तिको खतम करनेका निश्चय किया, और २४ फर्वरीको उसने इमानोफके प्रतिरोध-केन्द्र बतपक-करापर अधिकार कर लिया। इमानोफ अपने बहुतसे सहकारियोके साथ दश्त (स्तेपी)की ओर भाग गया। विद्रोहको दमन करनेमे जारशाहीने बडी क्रूरताका परिचय दिया। सप्तनदके निवासियोंमेसे एक-चौथाई—तीन लाख स्त्री-पुरुष—भागकर चीनके इलाकेमे चले गये, कितने ही गाव-के-गाव उजड गये। १९१६ ई०के विद्रोहको यद्यपि जारशाहीने दबा दिया, किन्तु उससे कजाकोंको जो शिक्षा मिली थी, उनके मनमे जारशाहीके विरुद्ध जो घृणा पैदा हुई थी, उसने बोल्शेविक-क्रांतिको मदद पहुंचाई। अपने संघर्षमे उन्होंने निम्न श्रेणियोंके रूसियोको उतना क्रूर नही पाया था । उनका नेता इमानोफ जल्दी ही समझ गया, कि अब सभी गरीबों और कमकरोंकी भलाई बोल्शेविक-क्रांतिमें ही है । वह अन्तमें बोल्शेविक पार्टीमे शामिल हो क्रांतिके लिये लड़ा। आज अमनगेल्दी इमानोफ कजाकस्तानका सबसे बड़ा यशस्वी वीर है ।

फर्वरी-क्रांतिके हो जानेके बाद १९१७ ई०की मईके अन्तमें भी तुरगाईमें अभी पूरी तरहसे शाति स्थापित नहीं हुई थी । अस्थायी सरकारने तुरगाई ओब्लास्तके लिये अलीखान बुकेइखानोफकी सहायतामे बहुत-से कजाक-विद्रोहियोंको गिरफ्तार किया, जिनमें इमानोफ भी था । अक्तूबर-क्रांति सिरपर आई, जिसने सप्तनदमे भी रूसियोंको क्रांतिकारी और क्रांति-विरोधी दो दलोमें विभक्त कर दिया । उधर बोल्शेविक सरकारने जातियोंके आत्म-निर्णयका अधिकार देकर कजाकोंके हृदयमे अपने प्रति विश्वास और भक्ति भर दी, जिसके लिये १९१६ ई०के विद्रोही अब क्रांतिके सिपाही बन गये । इसी समय दूतोफके नेतृत्वमें ऊपरी वर्गके कजाकोंने ओरेनबुर्गमें अपनी सरकार कायम करके लोगोंकी आखोंमे धूल झोंककर अपनी ओर करना चाहा, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं हुई। नवम्बर १९१७ ई०से मार्च १९१८ ई०तक क्राति और प्रतिक्रांतिका सघर्ष होकर अन्तमे सारा कजाकस्तान जारशाहीके अवशेषोंसे मुक्त हो गया ।

कजाकस्तान उस समय जारशाही नीतिके कारण एसियाई और यूरोपीय दो प्रकारकी जमातोंमें बंटा हुआ था, इसलिये क्रांतिके लिये सघर्ष भी दोनों जमातोंमे अपने-अपने तौरसे हुआ। सप्तनदके क्रातिके रूसी नेताओंमें से एक ग० फेदेरोफ भी था। उसने वहांके बारेमें लिखते हुये बतलाया है, कि फर्वरी-क्रांतिके होनेतक वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) में सिर्फ एक तरुण संगठन था, जिसके सदस्य रूसी सरकारी अफसरों और व्यापारियों-पूंजीपतियोंके लडके-लडकियां होते थे, और जिनका नेतृत्व जारभक्त अध्यापकोंके हाथमें था। फर्वरीके बाद अल्माअताके स्कूलके विद्यार्थियोंने "नौजवान विद्यार्थी संघ"के नामसे एक संगठन कायम किया । लेकिन, फर्वरी-क्रातिके पक्षपाती जारको हटा कर भी जारशाहीकी हरएक बातको कायम रखना चाहते थे, इसलिये इस विद्यार्थी सघका काम था वनभोज, नाच-गान और पान-गोष्ठियों द्वारा मनोरंजन करना—आखिर, उसके सदस्योंमेसे ९९ फीसदी अफसरो, सेठों और कुलकोंकी संतानें ही तो थी।

३. क्रांति-सघर्ष

अक्तूबर-क्रातिके होते समय यहांपर क्रांति-विरोधियोंका बोलबाला था। वह हर तरहसे कोशिश करते, कि यहां सोवियतका प्रभाव स्थापित न होने पावे। लेकिन अब समाजवादकी बातें अल्माअतामे भी पहुंचने लगी थी। मार्च-अप्रैल (१९१८ ई०) तक तरुणोंने अपने कितने ही अध्ययनचक्र तथा दूसरे संगठन कायम कर लिये। अब गृहयुद्ध साफ दिखलाई पड़ रहा था, इसलिये कमकरों और तरुणोंके जबर्दस्त संगठनकी जरूरत पड़ी। फेदेरोफने लिखा है—एक दिन मैं अपने एक साथीसे मिला। उसने इर्कुत्स्कके छपे एक समाचारपत्रको दिया। मैंने उसे पढकर देखा, कि साइबेरियाके तरुण क्रातिके लिये कितना काम कर रहे हैं। इसके बाद हमने इर्कुत्स्कके नमूनेपर तरुणोका संगठन करना शुरू किया। इस प्रकार तरुण-विद्यार्थी-समाजवादी-

संघ अस्तित्वमें आया। फेदेरोफ और उसके साथियोंने जब अपने संगठनको मजबूत करते प्रचार करना शुरू किया, तो उनके एक सहकारी अध्यापकने कहा—"हम बोल्शेविकोंके साथ काम नहीं करना चाहते। लेकिन अब प्रवाहको रोका नहीं जा सकता था।" लाल सेनाकी सफलताओंकी खबरें भी क्रांति-पक्षियोंमें उत्साह और क्रांति-विरोधियोंमें निराशा पैदा कर रही थी। फेदेरोफने एक दिन अपने क्लासमें कहा—क्रांति-विरोधी पथ सेठोंके हितका पथ है, हमको क्रांतिका पथ लेना चाहिये। इसपर अल्माअताके एक रूसी सेठके पुत्रने उसे मार डालनेकी धमकी दी। संघर्ष और ज्यादा बढ़ता गया। फेदेरोफ-जैसोंको गुप्त गुटोंका संगठन करना पड़ा। जनवरी १९१९ ई०तक अभी सप्तनदमें क्रांति-विरोधियोंका ही पल्ला भारी था, लेकिन जब ताशकन्दपर कमकरोंकी विजय हो गई, तो अल्माअतामें भी उसका प्रभाव बढ़ा, और वहां बोल्शेविक विद्यार्थी संघ स्थापित हुआ, जिसका निर्वाचन करनेके लिये २५ जनवरी १९१९ ई०को सौ सदस्य एकत्रित हुये।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि अक्तूबर १९१७ ई०तक अल्माअतामें कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी। मार्क्सवादी साहित्यका वहां मिलना भी मुश्किल था, और कुछ तरुण गुपचुप केवल क्रांतिके बारेमें विचार-विनिमय भर कर लिया करते थे। कजाकों और रूसियोंको इस तरह अलग-अलग रक्खा गया था, कि वह एक-दूसरेके साथ अभी विचारों द्वारा भी सहयोग नहीं कर पाते थे। लेकिन, ताशकन्दमें लालझंडा गड़ जानेपर सप्तनदमें भी क्रांतिके लिये रास्ता साफ था। जून १९१९ ई०में पार्टीके संबंधमें लोगोंको शिक्षा देनेके स्तेल्माशेस्की लिये आया। इससे पहले वह लाल सेनामें राजनीतिक प्रचारकका काम कर चुका था। फेदेरोफ १९१९ ई०में साइबेरियाके क्रांति-विरोधियोंके साथ लड़नेके लिये युद्धक्षेत्रमें चला गया था, लेकिन जब वह नवम्बर १९१९ ई०में वहांसे लौटा, तो उस समयतक सप्तनदके क्रांतिकारियोंने बहुत बड़ा संगठन खड़ा कर दिया था, और किसानों और मजदूरोंमें से तीन सौसे अधिक तरुण क्रांतिके प्रचारमें पूरा भाग ले रहे थे। इस संगठनका नाम "लाल समाजवादी तरुण-संघ" था। इसके प्रचारक अब रूसी गावों और कजाक औलोंमें भी पहुंच चुके थे। इस समयतक कराकोल, पिशपेक (आधुनिक फ्रुंजे) और जारकेन्द आदि नगरोंमें भी संगठन हो चुका था। "यूनी कम्युनिस्त" (युवक कम्युनिस्ट) पत्र भी निकलने लगा था, जिससे और जगहोंमें क्रांतिके लिये क्या हो रहा है, इसकी खबरें मिलने लगी, और अल्माअता तथा सप्तनदके तरुण समझने लगे थे, हम अकेले नहीं हैं, क्रांति सब जगह सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। इसके कारण लोगोंमें उत्साह बढ़ना जरूरी था। दिसम्बर १९१९ ई०में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें रूसी और कजाक दोनों जातियोंके तरुण रायन (जिले) के भिन्न-भिन्न भागोंसे आकर शामिल हुये। इसीमें ताशकन्दमें होनेवाली तुर्किस्तान-प्रदेश-तरुण-कम्युनिस्ट कांग्रेसके लिये प्रतिनिधि चुने गये। प्रदेश कमेटीके अब्दुर्रहमानोफ, जीय-कुलोफ जैसे कजाक तरुण भी मेम्बर चुने गये। कजाकों और रूसियोंके बीचमें खड़ी की गई दीवार ढह गई थी, इसलिये दोनों एक होकर काम करने लगे। यमसोफ, खुदायेफ, बेन्यूकोफ, यार मुहम्मदोफ, इसायेफ-जैसे तरुण कजाक आगे बढ़े। उस समय लेनिनग्राद और मास्कोमें गृहयुद्धके कारण खाद्यका अकाल पड़ा हुआ था, जिसमें सहायता देनेके लिये तरुणोंने अन्न जमा करना शुरू किया। पिशपेककी तरुण कम्युनिस्ट कमेटीने अपने कार्यालयकी छतको अन्नसे भर दिया था।

अप्रैल १९२० ई०के अन्तमें प्रथम सप्तनद तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस हुई, जिसमें अल्माअता, पिशपेक, फ्रुंजे, जारकेन्द और कराकुलके प्रतिनिधि शामिल हुये। इन प्रतिनिधियोंमें दस कजाक थे। एक सालके भीतर ही दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें सभी तहसीलों तथा बहुतसे औलोंके भी एक सौ पचास तरुण शामिल हुये।

अल्माअताके अतिरिक्त कजाक भूमिमें किजिलओर्दा (भूतपूर्व पेरोव्स्की), कजालिन, तुर्किस्तान शहर, औलियाअता आदिमें क्रांतिके पक्षपातियोंने सबसे पहले अपने संगठन मजबूत किये। १९१८ ई०में ताशकन्दमें जो कांग्रेस हुई थी, उसमें किजिलओर्दाके तीन प्रतिनिधि शामिल हुये थे। १९१८ ई०में यहांके अधिकांश पार्टी-मेम्बर बन्दूके लेकर युद्धक्षेत्रमें क्रांति-विरोधियोंसे लड़ने चले

गये थे। १९१८ ई०के अन्ततक किजिलओर्दाकी पार्टीमें चार सौ मेम्बर थे, जिनमें दो सौ रूसी और दो सौ कजाक थे। राजनीतिक जागृतिके साथ-साथ कजाकोंमें पढ़नेके लिये ज्यादा उत्साह होना स्वाभाविक था, जिसके लिये कजाक भाषामें पुस्तकें और पत्र छापे जाने लगे।

कजालिनमें बोल्शेविकोंका पहला संगठन जून १९१८ ई०में हुआ। यहाके लोगोंको भी क्रांति-विरोधियोंके साथ लड़कर अपनी निष्ठाका परिचय देना पड़ा।

तुर्किस्तान शहरमे नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीका संगठन पहलेपहल अप्रैल १९१८ ई०में हुआ, और औलियाअतामे वह उसी सालके अगस्तमे। औलियाअताकी पार्टीमें सालके अन्ततक एक हजार कजाक मेम्बर थे। वामपक्षी क्रांतिकारी समाजवादी पहले पार्टीके साथ सहयोग देते रहे, लेकिन पीछे उन्होंने विरोध शुरू कर दिया, और इस प्रकार वह क्रांतिसे भी दूर हो गये।

अल्माअताके बारेमे हम पहले कह चुके हैं। तरुणोंके संगठनके बाद जनवरी १९१८ ई०मे वहा पार्टीका सगठन हुआ। अगस्तमे कराकुल, जुलाईमे जारकेन्दमें भी संगठन हुये।

४. सोवियत-शासनकी स्थापना

१९१८ ई०मे मध्य-एसियामें सोवियतका शासन स्थापित हो चुका था, और उसी सालके अप्रैल-में ताशकन्दमे प्रदेश-सोवियतोंका सम्मेलन हुआ। इसीमें तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत गणराज्य-का निर्माण हुआ, जिसमें अल्माअता, औलियाअता (जम्बुल), दक्षिण-कजाकस्तान, और किजिल-ओर्दाके जिलोंको मिलाकर कजाक-सोवियत-समाजवादी-गणराज्यकी स्थापना हुई, और कजाक भाषाको गणराज्यकी मुख्य भाषाके तौरपर स्वीकार किया गया। बसन्त १९१८ ई०से १९१९ ई०की समाप्तितक कजाकस्तानमें भीषण गृहयुद्ध होता रहा। क्रांति-विरोधी रूसी और कजाक दोनों ही तरुण सोवियत सरकारको उखाड फेंकनेके लिये हर तरहकी कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनका संघर्ष जितना ही सख्त होता गया, उतना ही रूसी सर्वहारोंका कजाक सर्वहारोंसे भ्रातृभाव दृढ़ होता गया, और रूसी क्रांतिकारियोंने अपने आचरणसे दिखला दिया, कि सर्वहाराके राज्यमे काले-गोरेका कोई भेद नहीं है। गृहयुद्धके समय १९१८ ई०की जुलाईके आरम्भमे कई भागोंको क्रांति-विरोधियोंने छीन लिया था, तो भी अल्माअता, जम्बुल, दक्षिण-कजाकस्तान, किजिलओर्दा, अक्त्युबिन्स्कके जिले सोवियत शासनमे रहे। १९१९ ई०में क्रांति-विरोधी जेनरल कोलचेकसे आखिरी लड़ाई हुई, जिसमे कजाकस्तानके क्रांतिकारियोंने पूरी तौरसे भाग लिया। कोलचेकके हारनेके बाद ४ अप्रैल १९१९ ई०को कजाकस्तानकी सोवियतोंकी कांग्रेस हुई, जिसमें किर्गिजोंके बारेमें भी विचार करके किर्गिज क्रांतिकारी कमेटी सगठित की गई। अभीतक किर्गिज और कजाक दोनों एक ही गणराज्यमे थे, बल्कि यह कहना चाहिये, कि मध्य-एसिया-की सभी जातियां अभी एक तुर्किस्तान स्वायत्त गणराज्यमें मानी जाती थी। लेकिन आगे जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार किर्गिजोंको भी अपने स्वतंत्र गणराज्यके कायम करनेका अव-सर मिला। बोल्शेविक-क्रांतिने सोवियत सघके क्षेत्रफलमे दूसरे नबरके सबसे बड़े गणराज्य कजाकस्तानको स्थापित किया। अनेक पचवर्षीय योजनाओंने कजाकोंके आर्थिक और सांस्कृतिक तलको बहुत ऊचा कर दिया। इर्तिश नदीके जलको ध्रुवीय समुद्रसे हटाकर दक्षिणकी ओर मोड़नेकी जो विशाल योजना बनाई जा रही है, उसके कारण तो मनुष्य अपनी महान् शक्तिका उपयोग करके इस भूमिको एक-दूसरा ही रूप देने जा रहा है।

स्रोत-ग्रंथ

१. History of Civil War in U. S. S R (2 vols., G. F. Alexandrov and others, Moscow 1946)

२ History of U. S. S. R. (Ed. A. M Pankratova, Moscow 1947)

३. रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द, १९२९)

४. द्वादत्सत् लेत् कजाखस्ताना (लेनिनग्राद १९४०, पृष्ठ ७–१५)

अध्याय ४

किर्गिजिस्तानमें क्रांति

१. किर्गिज

किर्गिजिस्तान मध्य-एसियाके सबसे ऊंचे पहाडों त्यानशान्का देश है। यहीपर सात हजार मीतरसे भी अधिक ऊचे लेनिन्स्क और खानतिगरीके सनातन हिमाच्छादित पर्वतशिखर है। इसकी कितनी ही हिमानियां ८० किलोमीतर (६० मीलसे ऊपर) लम्बी है, और मध्य-एसियाकी सबसे बड़ी नदियां सिर-दरिया, आमू-दरिया (वक्षु), चू, तलस और जरफशा यहीसे निकलती है। हमारे यहाके हिमालयके सबसे अधिक सुन्दर दृश्य यहा देखे जा सकते है। प्राकृतिक सौदर्यके अतिरिक्त किर्गिजिस्तान (किर्गिजिया)मे कोयला, पेट्रोल, रांगा, सुरमा, सोना, चादी आदि धातुओंकी बड़ी-बडी खानें है। चू-उपत्यका, फरगाना, तलस-उपत्यका और इस्सिक्कुलकी द्रोणी-जैसी खेती और बागबानीके लिये बहुत ही उर्वर भूमि यहापर मौजूद है। प्रकृतिने इतना समृद्ध इस भूमिको बनाया था, लेकिन यहाके निवासी किर्गिज बोल्शेविक-क्रातिसे पहले मध्य-एसियाकी सबसे पिछड़ी हुई जातियोंमेसे थे, और घुमन्तू तथा अर्ध-घुमन्तू रहते अपने भेड-बकरियों तथा घोड़ों-ऊंटोंको लिये जगह-जगह चराते फिरना ही उनकी जीविकाका साधन रखते थे। जारशाही शासन यद्यपि १९वीं शताब्दीके उत्तरार्धके शुरू हीमे स्थापित हो गया था, लेकिन उसने यहांके लोगोंको चूसना छोड़ और कोई काम नही किया।

किर्गिज साइबेरियासे मध्य-एसियामें सबसे पीछे आनेवाली जातियोंमेसे है। घुमन्तू होनेकी वजहसे उनके लिये पूर्वमे इर्तिश और पश्चिममे वोल्गाको भी अपनी विचरणभूमि बनाना कोई मुश्किल नही था। लेकिन मूलत. यह अल्ताईके उत्तर-पूर्वके रहनेवाले थे, जहापर उनके भाई-बन्द खकाश अब भी रहते है। अलाताउ १७१६-१९ ई०मे ओब और इर्तिशके बीचकी भूमिके रूसके हाथमे चले जानेके समय इनको अपनी मूलभूमिसे हटना पडा, नही तो पन्द्रह सौ मीलतक साइबेरियाकी दक्षिणी सीमा किर्गिजोंकी भूमिसे मिलती थी। घुमन्तू किर्गिज लूट-मार किया करते थे, जिसके कारण रूसी बस्तियोंको खतरा रहता था, इसलिये रूसियोंने इन्हें तितर-बितर करना आवश्यक समझा। किर्गिजोंकी परम्पराके अनुसार इनके किसी पौराणिक खान अलशने इन्हें तीन ओर्दुओंमे बाटा था, जिनमे महा-ओर्दू बल्काश महासरोवरके आसपास सप्तनद और चीनी तुर्किस्तानमे घूमा करता था, मध्यओर्दू अरालके उत्तर-पूर्वी तटपर और लघु-ओर्दू तोबोल नदी और अरालके बीचमे पशुचारण करता था। रानी अन्ना (१७३०-४० ई०)के शासनकालमें मध्य-, लघु-ओर्दूका महा-ओर्दूके साथ-झगड़ा हुआ। बाकी दोनों ओर्दुओंने महा-ओर्दूसे अपनी रक्षाके लिये १७३२ ई०में रूससे अधीनताके लिये प्रार्थना की। इससे बढकर जारशाहीके लिये और अवसर क्या मिलता? ओरेनबुर्गका व्यापारिक नगर इस वक्ततक स्थापित हो चुका था। मध्य और लघु-ओर्दूके हाथमे आ जानेपर साम्राज्यके बढानेमे बड़ी सहायता मिली, और इसके बाद मध्य-एसिया और ईरानकी सीमातक पहुंचना रूसके लिये आसान हो गया। १८२२ ई०के राजादेशके अनुसार किर्गिज लघु-ओर्दूको ओरेनबुर्गकी सरकारमें डाल दिया गया, और मध्य-ओर्दू या पश्चिमी किर्गिजोंकी भूमिको पश्चिमी साइबेरियाके प्रदेशमे। किर्गिजोको रूसका बल मिलनेसे, अब वह बुखारा, खीवा या खोकन्दकी पर्वाह नहीं करते थे, और उनके कारवाको लूटा करते थे। यही नही, वह रूसी कारवांको भी लूटनेसे बाज नही आते थे। इसके लिये रूसको कई

सैनिक गढ़िया बनानी पड़ीं। किर्गिज रूसियोंको लूटते तो दक्षिणवाले खान उनकी सहायता करते और खानोंसे झगडा होनेपर वह रूसकी शरण लेते। वह रूसी नर-नारियोंको भी गुलाम बना कर मध्य-एसियाके बाजारोंमें बेच दिया करते थे।

किर्गिज जातिका निर्माण—किर्गिजोंका ऐतिहासिक विकास—निम्न प्रकार हुआ :

काल		त्वानशान	पामीर
ई०पू०	२५००	शक	आर्य
"	१५००	शक	सोग्दी
"	७००	शक	सोग्दी
"	५५०	शक	सोग्दी
"	२०६	शक	सोग्दी
"	१३०	शक-हूण	सोग्दी
ईसवी	१००	हूण-शक	सोग्दी
"	५५७ तुर्क	तुर्क	सोग्दी
"	६७३ अरब	तुर्क	ताजिक
"	८९२	तुर्क	"
"	१२२०	तुर्क	"
"	१५००	किर्गिज	"
"	१७४७	किर्गिज	किर्गिज-ताजिक
"	१८६५	किर्गिज-रूसी	किर्गिज-ताजिक
"	१९१७	किर्गिज	किर्गिज-ईरा०
"	१९४७	किर्गिज	

२. १९१६ ई०का विद्रोह

वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमें कई जगह बिखरे हुये किर्गिज कजाकोंमें मिल गये, बाकी भी बोल्शेविक-क्रांतिके बाद कितने ही दिनोंतक कजाकोंमें सम्मिलित थे। जब पता लगा, कि किर्गिजोंकी संस्कृतिमें कुछ अपनी विशेषताएं हैं, इस पर जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार उनका गणराज्य बना। १९१६ ई०में कजाकोंमें भी जबर्दस्त विद्रोह हुआ था, लेकिन किर्गिजोंका विद्रोह उनसे भी बढा हुआ था, जिसके कारण पहले जहां जारशाहीको बहुत क्षति उठानी पड़ी, वहां बादमें किर्गिजोंको भी जारशाहीके भयंकर अत्याचारोंका सामना करना पड़ा।

विद्रोहके कारण—एसियामें अपने राज्यका विस्तार अंग्रेजों और रूसियों दोनोंने किया, लेकिन दोनोंके ढंगोंमें अन्तर था। अंग्रेज हिन्दुस्तानसे बहुत दूरके वासी थे, वह अपनी जन्मभूमिसे समुद्रके रास्ते ही सबंध स्थापित रख सकते थे। पर, एसियासे रूसकी भूमि मिली हुई है। रूसी झंडेके आगे बढनेके साथ-साथ जहां रूसी सैनिक-असैनिक अफसर, व्यापारी और जमींदार आगे बढ़कर अच्छे-अच्छे पदों और भूमिपर अधिकार करते थे, वहा रूसी किसान और मजदूर भी अपने-अपने गांव बसानेमें लग जाते थे। यह रूसी गाव आत्मरक्षाके लिये रूसकी सेनाका एक अंग बने हुये थे। रूसी अफसर अपने किसानों-मजदूरोंका सब तरहसे विशेष ख्याल रखते थे, और स्थानीय लोगोंकी उपयुक्त जमीनको किसी-न-किसी बहाने छीनकर रूसियोंको दे देते थे। १८७४ ई०मे पहिले पहिल सप्तनद और पासकी भूमि (पिशपेक, औलियाअता, चिमकेन्द आदि जिलों)में रूसियोके गाव बसने शुरू हुये, जो तेजीके साथ आगे बढ़ते स्थानीय लोगोंकी पैतृक-भूमियोंपर हाथ साफ करते रहे। वर्तमान शताब्दीमें १९१५ ई०तक १८ लाख एकड़ (७१२०८९ हेक्तर) भूमि केवल पिशपेकके जिलेमें किर्गिजोंके हाथसे छिन गई। उसी साल किर्गिजोंवाले फरगानाके इलाकेमें ८०००० हेक्तर जमीन छीनकर रूसी किसानोंको दे दी गई। पर इतनेसे भी संतोष नहीं हुआ, और

९ जुलाई (२५ जून) १९१६ ई०को (प्रथम विश्वयुद्धके समय) जारने जलेपर नमक छिड़कते हुए एक राजादेश निकाला, जिसके अनुसार किर्गिजों और दूसरी एसियाई जातियोंको जबर्दस्ती सैनिक सेनाके पीछे काम करनेके लिये भर्ती किया जाने लगा। किर्गिजोंने कौन-सा सुख ज़ारशाही शासनमें पाया था, कि वह सेनाके पीछे कुलीका काम करनेके लिये अपनी जन्मभूमि छोड़ दूर देशमें जाते? उन्हें यह भी क्या विश्वास था, कि वहां जाकर कुलीका काम करना पडेगा या सिपाही बनकर मरना पड़ेगा। इस राजादेशके निकलनेपर मध्य-एसियाकी सभी जातियोंमें तहलका मच गया। किर्गिज सबसे ज्यादा शोषित, थे क्योंकि ये सबसे पिछड़े हुये घुमन्तू पशुपाल थे; लेकिन ज़ारने इनके मनापों (सरदारो)को अपने हाथमें कर रक्खा था। धनी मनाप जारशाही-का विरोध करके पहले देख चुके थे, कि इससे वह रूसके जूयेको हटा नही सकते। इस समय सारा तुर्किस्तान एक रूसी प्रदेश था, जिसमें त्यानशान्के पहाड़ों—सप्तनदसे ताशकन्द लेते अराल समुद्र तकके इलाके भी सम्मिलित थे। तुर्किस्तानका महाराज्यपाल करोपत्किन था और सेना अध्यक्ष फोलबौम बेर्नी (अल्माअता) का सैनिक सेनापति था।

राजादेश निकलते ही लोगोंने उसके प्रतिरोधके बारेमें सोचना शुरू किया। ११ (२४) जुलाईको ज़ारकेन्तके किर्गिजों और कजाकोंने इसके प्रतिरोधके लिये अपनी सभाये कीं। किर्गिजों-कजाकोंके भीतर दुंगान (चीनी मुसलमान) भी रहते थे, जो अधिकतर धनी बनिये और महाजन थे। किर्गिजों-कजाकोंमे अशातिके लक्षणको देखकर सबसे पहले २६ (१३) जुलाईको उन्होंने चीनी इलाकेकी ओर भागना शुरू किया। ५ अगस्त (३० जुलाई)को पिशपेक जिलेके किर्गिजों-ने विरोध-प्रदर्शन किया।

६ (१९) अगस्तको पिशपेक जिलेके अतेकिन इलाकेमे किर्गिजोंने पहले पहल सशस्त्र विद्रोह आरम्भ किया। उसी दिन बतबयेफ इलाकेके किर्गिजोंने भी विद्रोह कर दिया।

७ (२०) अगस्तको तोकमकके किर्गिजोंने हथियार उठाया, उसी दिन सरीबागिसेफ इलाके-वालोंने भी विद्रोहका झंडा फहरा दिया।

९ (२२) अगस्तको कराकेचिन, जम्बल्, उरमान जोजिन, पोचकर, आबेलदिनके इलाकोंमें विद्रोह फैल गया।

१० (२३) अगस्तको पिशपेक जिलेके बेलोवद्स्क इलाकेके किर्गिज विद्रोही हुये। उसी दिन जमानसरतोफ, तलेउबेर्दिन, बाकिन, तलदीबुलाकके इलाकोंमे बगावत हो गई, और औलिया-अताके करालतिन इलाकेके किर्गिज भी विद्रोहमें शामिल हो गये।

११ (२४) अगस्तको प्रझेवाल्स्क जिलेके मारिन्स्क गांवके दुंगान (चीनी, मुसलमान) भी विद्रोहमें शामिल हुये।

१२ (२५) अगस्तको प्रझेवाल्स्कके जेलखानेमे बंदियोंपर रूसियोंने गोली चलाई, जिसमें उनसठ किर्गिज मारे गये और बहुतसे घायल हुये।

१३ (२६) अगस्तको तोकमकमें किर्गिजोंपर रूसी सेनाने प्रहार किया, उसी दिन बेलोवद्स्कमें भी विद्रोहियोंको सैनिकोंने दबानेका प्रयत्न किया, और १३८ किर्गिज मारे गये।

१४ (२७) अगस्तको किर्गिजोंने तोकमकको घेर लिया।

२२ अगस्त (४ सितम्बर) को रूसियोंने तोकमकमे किर्गिजोंपर प्रहार करके उन्हें तितर-बितर कर दिया।

१६ (२९) अक्तूबरतक रूसी विद्रोहपर काबू पा सके।

इस विद्रोहमें किर्गिजोंके मनाप (धनी) अधिकतर जारशाहीके साथ रहे और सबसे ज्यादा आगे किर्गिज जनसाधारण थे। कितना भीषण जनसंहार हुआ, यह इसीसे मालूम होगा, कि विद्रोहसे पहले जहां ६२३४० किर्गिज रहते थे, उसी जगह जनवरी १९१७ ई०में उनकी संख्या २०३६५ रह गई, अर्थात् ४१९७५ आदमी मारे गये, कितने ही जगहोंपर ६६% किर्गिज मारे गये। इस अत्याचारके मारे यदि बहुत भारी संख्यामें किर्गिज भागकर चीनी इलाकेमें चले गये, तो इसमें आश्चर्य क्या? कुरोपत्किनने इस मौकेसे फायदा उठाते हुये चाहा था, कि किर्गिजोंकी छोड़ी भूमिमे

रूसियोंको बसा दिया जाय। लेकिन, किर्गिजोंके विद्रोहको दबाते देर नहीं हुई, कि जारशाही ही खतम हो गई। यद्यपि उसका स्थान लेनेवाली पूंजीपतियोंकी करेन्स्की-सरकारने पुरानी नीतिको जारी रखना चाहा, लेकिन उसे भी सात महीनेके भीतर ही खतम हो जाना पड़ा।

जैसा कि अभी बतलाया, उस समय किर्गिज कजाकोंसे अलग नहीं समझे जाते थे, और सप्तनद तथा सिर-उपत्यकाके कजाकोंकी तरह किर्गिज भी तुर्किस्तान-प्रदेशके माने जाते थे। इसलिये विद्रोहके बाद जो घटनायें घटीं और स्थितियोंमें जिस तरह परिवर्तन हुआ, वह वही था, जो कजाकस्तान-उज्बेकिस्तानमें हुआ। जब बोल्शेविक-क्रांतिने किर्गिज भूमिमें कदम रक्खा, उस समय वहाके किर्गिज धनी पहले हीसे धनी रूसियोंके समर्थक हो चुके थे।

किर्गिज शिक्षा और संस्कृतिमें बहुत पिछड़े हुये थे, जिसके कारण राजनीतिक तौरसे भी उनका पिछड़ा होना स्वाभाविक था। इनकी भूमिमें ओश, उज्गेंद, पिशपेक, प्रझेवाल्स्क जैसे कुछ नगर थे, लेकिन वहांपर भी किर्गिजोंकी अपेक्षा दूसरोंकी संख्या या प्रभाव अधिक था। ताशकन्दमें बोल्शेविकोंके आ जानेके बाद किर्गिज भूमिके कस्बोंमें भी क्रांति फैलने लगी। यहाके रूसियोंमें अधिकतर मेन्शेविक और एस्.एर्. (समाजवादी क्रांतिकारी) ही जारशाहीके विरोधी थे, और वह पुराने आर्थिक ढांचेमें नाममात्रका परिवर्तन करना चाहते थे, तथा एसियाइयोंको समानताका अधिकार देनेके पक्षपाती नहीं थे। ओशमें दिसम्बर १९१७ ई०में दो सौसे अधिक एस्.एर्.के सदस्य थे, जब कि बोल्शेविकोंको अंगुलियोंपर गिना जा सकता था। पिशपेक (आधुनिक किर्गिज-राजधानी फुंजे) में मार्च १९१८ ई०में अब भी एस्.एर्.का प्रभाव था। लेकिन जब बोल्शेविकोंके उद्देश्यका पता लगा, तो गरीब किर्गिजोंने बड़ी तेजीके साथ आगे बढ़कर उनका साथ देना शुरू किया। वह देखते थे, कि बोल्शेविक दिलसे और व्यवहारसे भी समानताके पक्षपाती हैं, सचमुच वह गरीबोंके राज्यको कायम करना चाहते हैं। क्रांति सफल हुई। आगे १९२६ ई०में किर्गिजोंकी भूमिका अलग स्वायत्त गणराज्य कायम हुआ, जिसे १९३६ ई०मे स्वतंत्र गणराज्यके तौरपर सोवियत सघका अंग बननेका मौका मिला।

किर्गिजिस्तानका क्षेत्रफल ७८००० वर्गमील तथा जनसंख्या इस वक्त पन्द्रह लाखसे ऊपर है। आज वह मध्य-एसियाकी सबसे पिछड़ी जाति नहीं है, बल्कि रूसियोंकी तरह आगे बढ़ी हुई जाति है।

स्रोत-ग्रंथ

१. रेवोल्युत्सिया ब्स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
२. किर्गिजिया (व. वित्कोविच, १९३८)
३. वोस्तानिये १९१६ गदा व् किर्गिजिस्ताने (ल. व लेस्नोइ, मास्को १९३७)
४. किर्गिजिया (त्रुदी पेर्वोइ कान्फ्रेन्त्सिइ, लेनिनग्राद १९३४)
५. तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (जिल्द १, पृष्ठ ३३८-५१)
६. तेमिर (उपन्यास, तो तुगेल्वाइ सिदिकवेकोफ् अनु० व. रोझ्देस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
७. History of civil war in U. S. S. R. (2 vol., G. F. Alexandrov and others, Moscow 1946)

अध्याय ५

ताजिकिस्तानमें क्रांति

१. सोग्दियोंके वंशज

हम देख चुके हैं, कि किसी समय सिर-दरियासे वक्षु-दरियातक, पामीरसे कास्पियन तटतक सोग्द और ख्वारेज्मकी ईरानी जातियां बसती थीं, जिनके समयमें यहांका सामाजिक और सांस्कृतिक विकास बहुत हुआ। ईसाकी पांचवीं सदीतक यद्यपि शक और हेफ्ताल-जैसी जातियां बाहरसे आकरै इस भूमिमें बसती गईं, किन्तु वह हिन्दी-यूरोपीय जातिकी होनेकी वजहसे इनके भीतर आसानीसे घुल-मिल गईं और पुरानी सांस्कृतिक परम्पराके आगे चलते रहनेमें बाधक नहीं हुईं। छठी शताब्दीमें तुर्क मंगोलायित भाषा और मुखमुद्रा लिये यहां आये, जिन्होंने भी यद्यपि मुखमुद्रामें कुछ परिवर्तन किया, लेकिन सांस्कृतिक तौरसे बहुत भेद नहीं पैदा किया। ७वीं सदीका अन्त होते-होते अरब इस भूमिमे छा गये, और कुछ ही समयमें यहाके सभी लोग मुसलमान हो गये। लेकिन पुराने सोग्दियोंने अपने संघर्षको जारी रक्खा, इसका परिणाम यह हुआ, कि अरब-शासकों और उनके अनुचर खुरासानी मुसलमानों ने सोग्दी वीरों और उनकी भाषाको दुर्गम पहाड़ोंमें शरण लेनेके लिये मजबूर किया। १९वीं सदीसे बहुत पहले ही पुराने अन्तर्वेदकी भाषा तुर्की हो गई, केवल शहरों और कुछ गांवोंके रहनेवाले सर्त या ताजिक ईरानी भाषा बोलते थे, लेकिन यह ईरानी भाषा सोग्दी नहीं, बल्कि खुरासानी मुसलमानोंके साथ आई उनकी फारसी थी। पहाड़ोंमें भाग गये सोग्दियोंके पीछे एकके बाद एक दूसरे भी फारसीभाषी शरणार्थी आते रहे, जिनके कारण धीरे-धीरे सोग्दी भाषाका स्थान वहां भी फारसीकी स्थानीय बोली ताजिकी लेती गई। आज तो पुरानी सोग्दी भाषाकी बोली गलचा या यग्नाबी केवल जरफ्शांकी एक शाखा यग्नाब नदीके किनारेके कुछ थोड़ेसे गांवोंमें रह गई है। वहांपर भी ताजिकी भाषा कितनी घुस गई है, यह १९३४ई०के वहांके गांवोंके आंकड़ोंसे मालूम होगा:—

ग्राम	यग्नाबी	ताजिक
नवाबाद	१५१८	६३४
यग्नाब	६४०	१७७०
दोनों गांवोंमे	२१५८	२४०४

इस प्रकार पुराने सोग्दियोंकी भाषा और उनके प्राचीन समाजके कुछ अवशेष वर्तमान ताजिकिस्तान गणराज्यमें जरफ्शां नदीकी शाखा यग्नाब और बरजाबके किनारेके कुछ गांवोंमें अब मौजूद हैं। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद इन प्राचीन सांस्कृतिक अवशेषोंके जांच-पड़तालकी काफी कोशिश की गई। रूसी वैज्ञानिकोंने वहांपर प्राचीन संघवादी पारिवारिक जीवनके चिह्न पाये। कितने ही गांवोंमें कई परिवारोंके रहने लायक एक-एक घर उन्हें मिले, जिनकी बड़ी-बड़ी शालायें केवल यग्नाबियोंमें ही मिलतीं। कोकतेपा, जूमान, गराब, आबेसफेद-जैसे कितने ही गांवोंको उन्होंने देखा। देहबुलन्द ऊपरी यग्नाबमें सामूहिक परिवारोंका आलाखाना और मेहमानखाना इस बातका प्रमाण था।

यग्नाबी भाषा—यग्नाबी भाषाको कोई-कोई ईरानी और भारतीय आर्यभाषा-वंशोंसे अलग बतलाते हैं, लेकिन यह बात सही नहीं मालूम होती। वस्तुतः सोग्दीकी पुत्री यग्नाबी ताजिकी और पारसीसे कितनी ही बातोंमें अन्तर रखते भी ईरानी-भाषावंशकी ही है। सोवियतके भाषा-शास्त्रियोंने यग्नाबी भाषाके बहुतसे नमूने कहानियों आदिके रूपमें जमा किये हैं। बाइस वर्षीय इब्राहिम सफर

द्वारा कही गई एक जनकथाका कुछ अंश हम यहांपर देते हैं। गावके 'मेहमानखाने' (सामूहिक घर) में जमा हो ऐसी कहानियोंके कहनेका यग्नाबियोंमें बहुत रवाज है* :—

इकम्पिरओइ । ईकल् ज़ूतश् ओइ । के ई मेत् कलि व अवोफ़—"अने दॉदो-त् बिसियार पैदागर खोइ। यक् तंग अवारिश्त् सत् तंगा अकुन अउर्।" के कल् यक् तंगा अनोस् अनीज़् अतेर अशौ इयो-कइ इ मूसफ़ेदे तीरक् अस्त् ख़रे वोरा ई वुज़् चि ख़रे दुम् बस्तगी। कल् ऑस्ताक् अशौ वीत पक्क अकुन् वूज़् अनोस् अवोउ बूज़् अउर कोये अखश् । तिक् अमोन अतेर अशौ मूसफ़ेदे अबियोर अवोव ये बॉबो वीत जाम् कुन्। अख् अगोर अवोव अने वीत-म् ई वुज़् ओइ वुज़् नख। खरे अवोव् इगुम् चक् दॉर मन सोउम वूज़् कोवॉम्। कल् अवोव बॉबो दर वॉउ ख़रे लॉइ ख़स्चे। मूसफ़ेद अतेर। कल ख़रे गूश दुम्-श पक्क अकुन् अवार ई कोये अखश् गूश दुम्-श अउर लोइ नुत् अनीदोन् के अवोव ए बॉबॉ वॉऊ ख़रे लोइ अखश्।

(एक बुढ़िया थी। उसका एक दुष्ट लड़का था। एक दिन उसने अपने दुष्ट लड़केको कहा—"तेरा बाप बहुत पैदा करनेवाला था। एक तंगा ले जाता और अभी सौ तंगा ले आता।" फिर दुष्ट लड़का एक तंगा लेकर बाहर गया। एक जगह एक गदहेके ऊपर सवार एक श्वेतकेश (बूढ़े) को आते देखा, गदहेकी दुममें एक बकरी बंधी हुई थी। दुष्ट लड़का आहिस्तेसे गया, और रस्सीको काटकर बकरीको ले गया।····पीछे बूढ़ेको आकर कहा—"हे बाबा, रस्सी समेट लो।" उसने देखकर कहा—"मेरी रस्सीमें बकरी थी, किन्तु बकरी नहीं है।" दुष्ट लड़केने कहा—"जल्दी जाओ बाबा····।" बूढ़ा चला गया। दुष्ट लड़केने गदहेके दुम और कानको काट लिये। फिर आकर उसने बूढ़ेसे कहा—"हे बाबा, चलो, गदहा कीचड़में फंस रहा है।" बूढ़ा चला गया।)

इस भाषाको देखनेसे मालूम होगा, कि फारसी समझनेवालेके लिये भी इसका समझना मुश्किल है। एकके लिये यहां ई और थीके लिये आई शब्दका प्रयोग हुआ है। दिनके लिये मेत्का शब्द पुरानी सोग्दीमें 'मुद' था, जिसका फारसीमें कहीं पता नहीं। इसी प्रकार गदहेकी पूछके लिये दुमे-खरकी जगह खरे-दुम (खर-पुच्छ) आया है। हिन्दीकी समीपता देखनेके लिये यग्नाबी भाषाके गरीब ताजिक "करके" (करके) रोइ-के (रोकर) शब्दोंको भी देखे।†

बुखारा और खोकन्दके पिछले इतिहासके बारेमें लिखते हुये हम बतला चुके हैं, कि ताजिकिस्तानका पहाड़ी प्रदेश कभी अलग-अलग छोटे-छोटे सामन्तोंके स्वतंत्र राज्योंमें बंटा रहता और कभी उसे खोकन्दके मदली खान-जैसे बाहरी शासकोंके अधीन बनना पड़ता। यह पहाड़ी इलाका अपनी खनिज और दूसरी सम्पत्तियोंको रखते हुये भी उस समय बहुत गरीब था। यहांके लोग सुन्नी मुसलमान थे, इसलिये उनके लड़के-लड़कियोंको गुलाम बनाकर बेंचा नहीं जा सकता था। तो भी अपने सौंदर्यके लिये प्रसिद्ध यहांकी लड़कियोंकी अमीर और उसके सामन्तोंके हरमोंमें बड़ी मांग थी। यहाके पुरुष मजदूरी करनेके लिये बुखारा, समरकन्द, खोकन्द आदि शहरोंमें चले जाते। पुरुष जब वर्षोंके वास्ते रोटीके लिये धक्का खाने चले जाते, तो उनकी स्त्रियां बेचारी घर और खेतीको संभाले बाट जोहा करतीं। इस समयकी अवस्थाका वर्णन बहुतसे लोकगीतोंमें पाया जाता है। एक लोकगीतमें कहा गया है :—

बुलबुल बागमें रोती हुई आई,
गुलाबकी सूखी डालीपर जाकर बैठी।
बुलबुल अपने मुंहसे बोली—
"यह वियोगका घाव कितनोंके दिलपर है।"

× × ×

---

*"ऋदि ताजिकिस्तान्स्कोइ बाज", इस्तोरिया-यज़ीक लितेरातुरा (अकदमी नाउक सससर १९४० मस्क्वा)

† कितनी ही बातोंमें फारसी या ताजिकीसे विलक्षण है, यह उसके गाउ (गाय) कुतर (कुत्ता) और ऑर्ता (आटा) शब्द भी बतलाते हैं।

जगत्के कर्ता ते ी विचित्र महिमा,
तेरे बन्दे सोये और तू खुद जागा ।
अमृत-भोजन दुनियाके सामने फेंककर,
चुगने और जानेका तू तमाशा देखता,

× × ×

अपने सफेदेके लिये अपनी हरनीको खोया,
लोगोंके द्वारपर अपनेको फेंका ।
लोग कहते कि तू दीवाना हुआ,
दीवाना हूं, क्योंकि मैंने अपनी प्रियाको खोया ।

× × ×

हे पथिक, किसीके साथ मैं नहीं हंसी,
न केश धोया न कुर्ता पहना ।
बहुतेरे कारवां आये, पूछनेपर
उन्होंने कहा— "मैंने न देखा न जाना ।"

इसी अवस्थामें ताजिकिस्तानके पहाड़ी लोग अमीर-बुखाराके पूर्वी इलाके (पूर्वी बुखारा)मे रह रहे थे, जब कि बोल्शेविक-क्रांति हुई।

ताजिकिस्तान भाषाके तौरपर पुराने सोग्दियोंकी विस्तृत भूमिका अवशेषमात्र है, जिसके दक्षिणी सीमांत वक्षु नदी और उत्तरी टेढ़ा-मेढ़ा होता सिर-दरियाके उत्तरतक पहुंच गया है। आजकल इसका क्षेत्रफल पचपन हजार वर्गमील और जन- संख्या पन्द्रह लाख है। ताजिक भाषा-भाषियोंकी बस्तियां वैसे वक्षुसे बहुत दक्षिण काबुल नगरके पासतक चली आई है, लेकिन अभी अफगानिस्तानमें रहनेवाले ताजिक उतने सौभाग्यशाली नहीं है, जितने कि क्रांतिकी अग्निमें तपकर निकले उत्तरी ताजिक । मध्य-एसियाकी और किसी जातिको क्रांतिके समय नरपिशाच बासमचियों की निष्ठुरताका उतना शिकार नहीं होना पड़ा, जितना कि कश्मीरके उत्तरी-पूर्वी सीमान्तके पासके इन पहाड़ियोंको ।

ताजिक जातिका निर्माण——ताजिकोंका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ:——

काल			पामीर	सिर-उपत्यका
ई० पू०	४०००	(मध्य-पाषाण)		फिनो-द्रविड़
"	३५००			शकार्य-द्रविड़
"	३०००	(नव-पाषाण)		"
"	२५००		आर्य	शक
"	१५००	(पित्तल-युग)	ईरानी	श०
"	७००		ईरा०	श०
"	५५०		ईरा०	श०
"	३२६		ईरा०	श०
"	२०६		ईरा०	श०
"	१३०		ईरा०	हूण-श०
"	१००		ईरा०	हू०-श०
ईसवी	१००	(कुषाण)	ईरा०	हू०-श०
"	४२५	(हेफ्ताल)	ईरा०	हूण-कंगली
"	५५७	(तुर्क	ईरा०	कंगली-तुर्क
"	६७३	(अरब)	ईरा०	तुर्क
"	८९२	(सामानी)	ईरा०	तुर्क
"	१२२०	(मंगोल)	ईरा०	तुर्क

ईसवी	१५००	ईरा०	तुर्क (उज्बेक)
"	१७४७	तुर्क-ईरा०	तुर्क-उज़्०
"	१८६५	ईरा०तुर्क	उज़्०-ईरा०
"	१९१७	ईरा०-तुर्क	उज़्०-ईरा०
"	१९४७	ताजिक	

२. बासमची-उत्पीड़न

खोकन्दके स्वायत्तियोके हार खानेके बाद बासमचियों (जहादी डाकुओं)ने जोर पकड़ा। १९१९ ई०के वसन्तमें ओश नगर और पामीरके बीचका रास्ता सफेद रूसियों और बासमचियोंके हाथमें था, जिनका मुखिया मुखानोफ और एरगेशताम थे। पीछे कर्नल तिमोफियेफ नामक एक शाही अफसरने यहां नेतृत्व करना शुरू किया। बुखारा की कमजोरियों को देखकर अब यहांके पहाड़ी सामन्त स्वयं बादशाह बननेका स्वप्न देखने लगे। जब १९२१ ई०के फर्वरीमें आलम खान (बुखारा-अमीर) दुशाम्बे होकर अफगानिस्तानकी ओर भाग गया, तो यहांके कुछ लोगोंने अफगानिस्तानके अमीरको भी राज्य संभालनेके लिये लिखा, लेकिन ताजिकिस्तानके पहाड़ोंके लिये काबुलको न उतना प्रलोभन हो सकता था, न उसमें उतनी शक्ति ही थी। हां, मीर आलम खान ताजिकिस्तानमें लूट-मार मचानेवाले बासमचियोंसे पैसा पाता और उसके बदलेमें कुछ हथियार जरूर भेज देता था। जब-तब अंग्रेजोंने भी हथियारसे मदद की, लेकिन उस वक्त असहयोग का आन्दोलन सारे भारतमें चल रहा था, जिससे अंग्रेजोंका दिमाग बहुत परेशान था, और वह बासमचियोंको खुलकर मदद देनेके लिये तैयार नहीं हो सकते थे।

(१) **अनवर पाशा**—अमीरके जानेके बाद एक तरफ बासमची भिन्न-भिन्न गिरोहोंमें बंटे लूट-मार मचा रहे थे, दूसरी तरफ क्रांतिकारियोंने भी गरीबोंको संगठित करनेका काम शुरू किया। लेकिन, बुखारा अभी पूरी तौरसे बोल्शेविकोंके हाथमें नहीं आया था। उनकी ओरसे जो आदमी शासनका भार देकर भेजे गये थे, वह उच्चवर्गके होनेसे अपने पुराने स्वार्थोंको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे, इसीलिये उन्होंने क्रांतिके साथ विश्वासघात किया। बासमचियोंमें जिस तरहके पत्र-व्यवहार हो रहे थे, उनसे उस समयकी स्थितिका कुछ पता लगेगा। एक पत्रमें मुल्लोंने लिखा था—

अमीरुल्-मोमिनीन् अल्लमल्लाह तआला

वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-बादशाह, लश्करबाशीको दुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके दुआ-वाचक परमभक्त आलिम (पंडित) लोगोंने सुल्तानाबादमें पुण्य ईद पर्वके समय इकट्ठा हो आपसमें मंत्रणा की। कुछ लोगोंके बारेमें हमने सुना, कि वह जनाबअली (अमीर-बुखारा) और श्रीमान्के विरोधी और बागी हैं। श्रीमान उनके बारेमें हमें सूचित करें। जो कोई अनवरका अनुयायी है, उसे कुरान और हदीस (स्मृति)के अनुसार काफिर सिद्ध कर सभी यहां एकत्र हुये हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करा देंगे। जो लके (किर्गिज) ताजिक या कर्लुकके अनवरका अनुसरण करते हैं, उनके बारेमें सूचित कीजिये। उनको भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेंगे। हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेंगे। यह सब (काम) हम लोगोंके सिरपर है, यदि वह श्रीमानको उचित जान पड़े। आगे आप स्वयं भली भांति जानते हैं। अस्सलाम् व अलेकुम्।

पत्र भेजनेवालोंकी मुहर और हस्ताक्षर

मुल्ला अहमद सलीमी मुदर्रिस **मुल्ला अली महमदी मुदर्रिस**

खलीफा मुल्ला अल अंजर मखदूम	मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम
मुल्ला तुगाय मुरादी मुर्दरिस	मुल्ला अब्दुर्रहमान मखदूम
	मखदूम महमदी तुकसाबा

इस पत्रसे मालूम है, कि उस समय अनवरपाशा इन पहाड़ोंमे अपनी भाग्य-परीक्षाके लिये आया हुआ था। प्रथम विश्व-युद्धके बाद जर्मनोंके पक्षपाती अनवरका प्रभाव तुर्कीमे उड़ गया, जब कि मुस्तफा कमाल नवीन तुर्कीका नेता हुआ। इसके कारण अनवरको तुर्की छोडकर भागना पड़ा। कुछ समयतक वह बुखारामे रहा, फिर वहांसे भी भागकर इन पहाड़ोंमें आ गया। अनवर नवीन तुर्कीका नेता था, जिससे बुखाराके जदीदोंको भी प्रेरणा मिली थी। लेकिन बुखाराके मुल्ले जदीदोंके खूनके प्यासे थे, इसीलिये वहां अनवर और उसके अनुयायी कुछ नहीं कर सकते थे।

इन पहाड़ोंके सभी लोग क्रांति-विरोधी मुल्लोंकी तरह अन्धे नहीं थे, वह अनवरकी योग्यता और प्रभावसे पूरा फायदा उठाना चाहते थे। इसीलिये अनवरको यहांपर काफी समर्थन प्राप्त हुआ। लेकिन तो भी महत्त्वाकांक्षी बासमची तथा दूसरे सरदार अनवरकी सैनिक योग्यताको अपने मतलबके लिये इस्तेमाल करना चाहते थे, इसलिये स्वनिर्वाचित 'अमीर-लश्कर-इस्लाम, नायब-अमीर-बुखारा व दामाद खलीफा-मुसलमीन अनवर" को सफलता प्राप्त करनेका मौका नहीं मिला और अगस्त १९२२ ई०मे बल्जुवान इलाकेके एक गांवमे ४२ वर्षकी उम्रमे वह मरा। और चगन गांवमे दफनाया गया।

(२) **ईशान सुल्तान***––ताजिकिस्तानमे क्रांतिका एक और जबर्दस्त विरोधी ईशान सुल्तान था। ईशान मध्य एसियामें पीर या गुरुको कहते है, जिनका कई शताब्दियोंसे वहांपर जबर्दस्त प्रभाव रहा है। १९वीं सदीमें दरवाज कला-खुम्बके शाहोंका बहुत प्रभाव था। यह अपने खानदानको सिकन्दर और दूसरे पुराने राजाओंसे मिलाते थे। सीधे-सादे पहाड़ी लोगोंमें राजवंशके होनेसे इनका बहुत मान था। इन्हींके इलाकेमे १८वीं सदीके अन्तमे सागिद दश्तसे डेढ़ मीलपर अवस्थित सैदान गांवमे सैयद-वंशमे एक आदमी पैदा हुआ, जो कि आगे ईशान औलिया (मृत्यु १८६७ ई०)के नामसे प्रसिद्ध हुआ। ईशान औलिया या मिर्जा रहीम पहले कन्दहारमे जाकर किसी पीर ईशान आखुनसाहेबकी सेवामे रहा, जहां उसने ईशानोंके सभी हथकंडे सीखे। फिर लौटकर कुछ दिनों वह अपने गाव सैदानमे रहा, फिर सफेदारान और बादमें दराजमें रहने लगा। उसकी ख्याति दिन-पर-दिन बढ़ती गई और बहुतसे लोग उसके मुरीद हो गये। ईशानके लिये अमीरों और सामन्तोंकी तरह बीबी-बच्चोंके रखनेमें कोई दिक्कत नही थी। ईशान औलियाकी कई बीबियां थी, जिनसे उसके सात पुत्र हुये। उनमे शेख मिर्जाको दरवाजके शाह याकूब खांने अपनी लड़की दी थी। ईशान औलियाको कई गांव बिर्त-बंधानमें मिले थे। औलियाके मरने (१८६७ ई०)के बाद उसके सातों पुत्र भी ईशानगिरीसे धन और सम्पत्ति जमा करने लगे। उनमे ईशान शेख अपने समयमे इन पहाड़ोंमें बड़ा ही सम्पत्तिमान तथा प्रभावशाली आदमी था। उसके मुरीदों (चेलों)की संख्या बहुत थी, और बहुतसे गांव भी उसे मिले थे। चिहकाका, सैदानके अतिरिक्त ईशान शेखकी हवेलियां सफेदारान, याइकपस्ते, याजगंद और दरा-ज़्मे भी थीं। इसीका लड़का ईशान सुल्तान था, जो पूर्वी बुखाराका सबसे बड़ा धनी सामन्त था। इसका जन्म याहकपस्तेमे हुआ था, जहां दस सालकी उमरतक रहा। इसके बाद याजगन्द चला गया। जिस वक्त १९१७-१८ ई०मे क्रांतिकी लहर पहाड़ोंमें पहुंची, उस समय ईशान ४५ वर्षका बहुत तजुर्बेकार और शक्तिशाली आदमी था। बापके बाकी भाइयोंमे सबसे बड़ा होनेसे उसका प्रभाव सबसे ज्यादा था। उसकी जागीरमें याजगन्द, याहकपस्त, यानकुर्गान आदि बहुतसे गांव थे। अमीर-बुखाराकी तरफसे वह अपने इलाकेका 'हाकिम' (सरकारी अफसर) था। ईशान सुल्तानकी धनसे भी ज्यादा धार्मिक प्रभुता थी। आसपासके इलाकोके लोग उसकी

---

*"ऋदि ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजि (९), इस्तोरिया-पजीक-लितेरा तुरा" (अकदमी, नाउक १९४०, पृष्ठ ३-२७)

आज्ञाको खुदाकी आज्ञा मानते थे। भूमिका मालिक और बहुत बड़ा जमींदार होनेकी वजहसे प्रजाको भी कष्ट हुये बिना नहीं रहता था। याहकपस्तेके एक किसान परिवारको इसने बुरी तौरसे सताया था। जब वह लोग दुशाम्बेमे फरियाद करने लगे, तो काजी मुल्ला कामिलको इतनी हिम्मत कहां थी, कि प्रभावशाली ईशान सुल्तानके विरुद्ध फैसला देता। वहांसे बुखारा दाद-फरियाद करने गया, तो वहांपर भी वही हालत हुई। फिर रूसियोंके पास ताशकन्द-तक पहुंचा, लेकिन कहीं सुनवाई नहीं हुई। ईशान सुल्तानकी जागीरदारीमें लोगोंसे बेगारमें काम लिया जाता था। उसके लंगरखानेमे भक्तों और मुरीदोंके खानेके लिये दरवाजा खुला था, बराबर सत्संग और ज्ञान-ध्यान चलता रहता था। ईशानकी कई स्त्रियां थीं, जिनमेंसे एक याजगन्दमें, दूसरी याहकपस्तेमें, तीसरी हिसारमें, बाकी और जगहोंपर रहती थीं, लेकिन संतानोंमें उसे सिर्फ एक लड़की थी।

जब बोल्शेविकोंने फरगाना और ताशकन्दमें सफलता पाई, और क्रांतिकी लपट पूर्वी बुखाराके पहाड़ोंमें भी पहुंचने लगी, तो ईशान सुल्तानको अपनी जागीर और धनके लिये डर पैदा हो गया। १९२१ ई०के जाड़ोंमें बुखारा-अमीर सैयद आलम खा जब भागकर दुशाम्बे आया, तो उसने यहांके पहाड़ी सामन्तोंको संगठित करनेका प्रयत्न किया, और ईशान सुल्तानको 'सुदूर' (अध्यक्ष) की पदवी प्रदान की। २१ फर्वरी १९२१ ई०को जब अमीर दुशाम्बेसे अफगानिस्तान भागा, तो ईशान सुल्तान बोल्शेविकोंसे लड़नेकी तैयारी करनेके लिये याजगन्द चला आया। दुशाम्बे (आधुनिक स्तालिनाबाद) में ईशानको कुछ हथियार मिले। तबिलदरा और चिहलदराके इलाकों मे काजी कुर्गान, नियाज तुकसाबा, अकबर तुकसाबा, सैयद अली उराक आदि स्थानीय अफसरोंको इकट्ठा करके उसने 'गजा" (धर्मयुद्ध) करनेका निश्चय किया। अपने मुरीदोंमेंसे उसने पचासको हथियारबन्द 'गाजी' बनाया। दुशाम्बा और गरमपर अधिकार हो जानेके बाद मेर्कुलोफकी अधीनतामें ओरेनबुर्गसे सवार-सेना आ गई, जिसके कारण बोल्शेविकोंका पलड़ा इन पहाड़ोंमें भारी हो गया। लेकिन सुरखाबकी उपत्यका और गरम उस समय बासमची-सरदार फुजैल मखदूम और लायकपंसदके हाथमें थे, और पीतर दर्रेसे बखियातक को ईशान सुल्तानने अपने हाथमे किया था। लाल सेनाने ईशान सुल्तानको तवील दर्रासे भागनेके लिये मजबूर किया, तो वह सागिरदश्त चला गया। जब फुजैल मखदूम हारकर अफगानिस्तान भाग गया, तो ईशान सुल्तानने बोल्शेविकोंके साथ सुलह करने हीमें अपनी भलाई समझी। इसपर वह इस्लामके गाजियोंमें बदनाम हो गया, जैसा कि अपनेको अनवरका उत्तराधिकारी बतलानेवाले एक तुर्की अफसर सामी पाशाके १९ नवम्बर १९२२ ई०के निम्न पत्रसे मालूम होगा—

"ईशान सुल्तान खोजा सूबा दरवाजके हाकिम और अस्कर बाशी सेनानायक का विश्वासघात

"अफगानिस्तानकी भूमिमें विराजमान जनाबआली अमीर बुखाराशरीफ सैयद अमीर आलमकी सेवामें अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्तानने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाकेको जुवान, आक्सू अधिकृतकर बलकानीतिल्ला और कुलाबदर्राको दबाकर तरह-तरहके झगड़े फसाद और अत्याचार किये। जनाबआलीकी ओरसे नियुक्त नायब और राजप्रतिनिधि बिग्गल शहीद अनवरपाशाके सैनिक और नागरिक शासनके खतम करनेके लिये ईशान सुल्तानने इस्लामके मुजाहिदोंके भीतर उक्त सेनापतिके सामने फूट डाल दी, जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदों की छ हजार सेना बायसून इलाकेसे घबड़ाकर भागी और दुश्मनसे लड़नेकी जगह परस्पर हत्याकांड मचाया, जिसमें सैकड़ों मुसलमान कुर्बान हुये। ईशानकी मददसे फरगानावालोंने उनके प्रतिद्वंद्वियोंको कत्ल किया, जिससे देशवासियोंको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालों और दूसरे कबीलोंके आपसी झगड़ेसे फायदा उठा (ईशानने) उजबेकों और ताजिकोंको

शाह रहमतुल्लाको भी पकड़ लिया। इसके बाद बासमची सरदारों सामीपाशा, फुजैल और दानियाल ने तवील दरके सभी अफसरों, मुल्लों, काजियों, मुफ्तियोंको जमा करके शरीयतके अनुसार अभियोग लगाया कि ये ईशान लाल बोल्शेविकोंसे मिले हैं, इन्होंने एक बासमची सरदार अकबरको मारा। इसपर उन्हें मृत्युकी सजा हुई, और दोनों भाइयोंको १९२२ ई०की शरदमें मौतके घाट उतारा गया।

(३) **फुजैल मकसूम**—बासमचियोंके सरदार फुजैल मकसूमने १९२३ ई०में उत्तरी ताजिकिस्तानके पहाड़ोंमे लूट-पाट करते अपना दृढ शासन स्थापित कर लिया था। गरमका इलाका अच्छे समयमें भी जीविकाके लिये स्वावलम्बी नही था। वहांके बहुतसे लोग नेपालियोंकी तरह फरगानामें जाकर मजदूरी किया करते थे। बासमचियोंके उपद्रवके कारण अब वह रोजी कमाने बाहर नही जा सकते थे, इसलिए सारे इलाकेमे भुखमरी फैली हुई थी, जिससे गरीबोंमें बोल्शेविकोंका प्रभाव बढ रहा था। इसी साल लाल सेनाने वहां पहुंचकर फुजैलको बुरी तरहसे हराया, जिसके बाद फुजैल फिर नहीं संभल सका। मजार गांवमें एक बार फिर उसने मुकाबिला करनेकी कोशिश की, लेकिन उसका घोड़ा मारा गया, फिर दूसरा घोड़ा लेकर वह सीधे अपने गांव मोतीनान गया, और सब तरफसे निराश होकर नकद और मालको ले उसने अपने हाथसे घरमें आग लगा दी, फिर चोपचाकके रास्ते वखेया इलाकेमें होते पंज (वक्षु) नदीके किनारे पहुंचा। रक्षियोंने पकडना चाहा, लेकिन वह अपने दो-तीन आदमियोंके साथ नदी पार हो अफगानिस्तान निकल जानेमे सफल हुआ।

बोल्शेविकोंने कुछ ही महीनोंमें करातेगिन, दरवाज और वखेयासे बासमचियोंका उच्छेद कर दिया। १८ जुलाई १९२३ ई०को गरम बोल्शेविकोंके हाथमें आ गया, ११ अगस्तको कला-खुम्ब (दरवाज) पर भी अधिकार हो गया, इस प्रकार ताजिकिस्तानपर क्रांतिकी विजय हुई। लेकिन अभी भी ताजिक जन निश्चित नहीं हो पाये।

(४) **इब्राहीम गल्लू**—बासमचियोंके सरदार पुराने डाकू इब्राहीम गल्लूने बहुत सालोंतक ताजिकिस्तानके पहाड़ोंमे लूट-पाट मचाकर लोगोंको तंग किया, लेकिन अन्तमें जून १९२६ ई० में उसे भागकर अमीरकी तरह अफगानिस्तानमें शरण लेनेके लिये मजबूर होना पड़ा। उस समयतक वह "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमबेक, दीवानबेगी, तोपचीबाशी, लश्करबाशी, चक्कवे, तुकसाबा-पुत्र"की बड़ी-बड़ी उपाधियोंसे विभूषित तथा अमीर-बुखाराका नायब था।

३. ताजिकिस्तान गणराज्य

पूर्वी बुखारा या ताजिकिस्तान पहले तुर्किस्तान गणराज्यका अंग था। १९२४ ई०में वह स्वायत्त गणराज्य बना और १९२९ ई०में सघ गणराज्य बनकर सोवियत संघके स्वतंत्र गणराज्योंमें से एक हो गया।

स्रोत-ग्रंथ

१. History of civil war in U.S.S.R. (2 vols., G.F. Alexandrov and others, Moscow 1946)
२. रैवौल्युन्सिया व् स्रेद्नेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
३. त्रुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजी : इस्तोरिया यजीक—लितेरातुरा (लेनिनग्राद १९४९)
४. सोवियत्स्कया एत्नोग्रफ़िया (लेनिनग्राद १९३६/६, पृ० १११)
५. दाखुन्दा (उपन्यास, स० ऐनी, अनु० राहुल, प्रयाग १९४८)
६. गुलामान (उपन्यास, स० ऐनी, अनुवाद "जो दास थे" राहुल, प्रयाग १९४९)

अध्याय ६

तुर्कमानिस्तानमें क्रांति

१. तुर्कमान कबीले

तुर्कमान कबीलोंने किस तरह अपनी स्वतंत्रता कायम रखनेके लिये रूसियोंसे अंतिम लड़ाई लड़ी, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। तुर्कमानोंके मुख्य-मुख्य कबीले थे :—

१. चौदार	उस्त-उर्तमे
२. यामूद	चौदारोंके दक्षिण कास्पियन और निम्न वक्षुके बीचमे
३. गोकलान	ईरानकी सीमापर
४. तेक्के	सबसे अधिक शक्तिशाली मुर्गाब-उपत्यका और पासके रेगिस्तानोंमें
५. सरिक	मेर्वमें
६. सलार	मशहदके पूर्व बुखाराके रास्तेमे
७. एरसारी	
८. करदाखली	बुखारा-राज्यकी सीमापर वक्षुके किनारे

आठ सौ वर्ष पहले महमूद काश्गरीने और इतिहासकार रशीदुद्दीनने भी तुर्कमान कबीलोंके बारेमे लिखा है। उनके कथनानुसार पौराणिक आगूज खानके छ लड़के थे, जिनमेसे प्रत्येकके चार-चार लड़कोंके अनुसार तुर्कमानोंके चौबीस कबीले बने। इन दोनों लेखकोंके अनुसार वह कबीले निम्न प्रकार हैं :—

महमूद काश्गरी	रशीदुद्दीन
१. कीनिक	कीनिन
२. काईइग	काईई
३. बायोन्दुर	बायोन्दुर
४. ईवे	ईइवे
५. सल्गुर	सल्गुर
६. अफशर	अवशा
७. बेकतिली	केबदिली
८. व्युकद्युज	व्युकद्युज
९. बयात	बयात
१०. याजगिर	याजिर
११. येएम्युर	येइम्युर
१२. करायुल्युक	कराएवली
१३. इगदेर	ईइगदेर
१४. यूरेकी, यूरेकिर	यूरेकिर
१५. तूतिरगा	दूदुरगा

१६. उला-इओन्दलुग	उला-इओन्तली
१७. त्युकेर	द्युकेर
१८. पेचेनेत	बीजने
१९. जूवाल्दर	जावुल्दुर
२०. जेबनी	चेबनी
२१. जारूकलुग	.....
	याचिर ली
	कारिक
	कार्किन
	तमगी

दोनों सूचियोंका एक-दूसरेसे न मिलना, यही बतलाता है, कि कितने ही पुराने तुर्कमान कबीलोंने नये नाम धारण किये और कुछ दूसरे तुर्कोंमें विलीन हो गये ।

तुर्की भाषाएं उराल-अल्ताई भाषा-जातिसे संबंध रखती है, जिसके भेद है :—

१. **तुंगुस**—जिसमें मंचू भाषा भी सम्मिलित है।

२. **समोयद**—उत्तरी साइबेरियावालोंकी भाषा ।

३. **फिन्नी**—फिन (सूओमी) तथा मगयार (हुंगरी) भाषा।

४. **मंगोल**—इसमें खलखा, कल्मक और बुरयत मंगोलोंकी भाषाएं सम्मिलित हैं ।

५. **तुर्की**—इसकी एक शाखा (क) चगताई, जिसकी शाखायें उइगुर, तुर्कमान, उज्बेक, कजानकी तारतारी भाषाएं है, (ख) शुद्ध तारतार-भाषा, जिसमें किर्गिज, बाश्किर और कराकल्पक भाषाएं हैं, (ग) शुद्ध तुर्क-भाषा, जिसमें ईरानी और उस्मानी तुर्कोंकी भाषायें सम्मिलित हैं। भाषाकी दृष्टिसे तुर्कमानी भाषा पश्चिमी तुर्की अर्थात् तुर्की और आजुर्बाइजानकी भाषाके समीप है।

तुर्कमान जाति-निर्माण—तुर्कमानोंका एतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ :—

काल	ख्वारेज्म	मेर्व	कास्पियन-तट
ई०पू० ५००००			मदलेन
,, ४००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड़		फिनो-द्रविड़
,, ३५००	द्र०		द्रविड
,, ३००० (नव-पाषाण)	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०
,, २५००	आर्य	आर्य	आर्य
,, १५००	ईरानी	ईरानी	ईरानी
,, ७००	शक	ईरानी	ईरानी
,, ५५०	शक	ईरानी	शक
,, ३२६	शक	ईरानी	शक
,, २०६	शक	ईरानी	शक
,, १३०	शक	ईरानी-शक	शक
ईसवी १०० कुषाण	शक	ईरा०-श०	शक
,, ४२५ हेफ्ताल	ईरानी-हूण	ईरा०-श०	श०-कग
,, ५५७ तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०	ईरा०-तुर्क
,, ६७३ अरब	ईरा०-तु०	ईरा०	तुर्क
,, ८९२	तु०-ईरा०	ईरा०-तुर्क	तुर्क
,, १२२० मंगोल	तु०-ईरा०	ईरा०-तु०	तुर्क
,, १५००	तुर्क	तुर्क	तुर्क

ईसवी	१७००	तु०-उज्बेक	तुर्कमान	तुर्कमान
"	१७४७	उज्बे०-तुर्क	तुर्कमान	तुर्कमान

तुर्कमान

२. लालसेना-निर्माण

करेन्स्कीकी अस्थायी सरकारको रूसी गरीबों और मजदूर-किसानोंके बलपर निकाल फेंकना आसान था, क्योंकि रूसमें क्रांति-विरोधियोंके साथ लोहा लेनेवालोंकी संख्या और शक्ति कम नहीं थी, लेकिन मध्य-एसिया और उसमें भी तुर्कमानिया बहुत पिछड़ा देश था, जहाके लोगोंमें शिक्षा एक प्रकारसे नहीं-सी थी। जो साक्षर और शिक्षित भी थे, वह मुल्लोंके मक्तबोंमें पढे और उन्हीके प्रभावमें थे, इसलिए अपने द्वेष और असतोषको वह गैर-मुस्लिमोंको काफिर कहकर ही निकालना जानते थे। तुर्कमानोंमें साम्यवादका संदेश और आन्दोलन पहलेसे बिलकुल ही नहीं था। क्रांतिके बाद वह पहिले मध्य-एसियामें रहनेवाले रूसी मजदूरोंमें फैला, जिसके बाद एसियाई लोगोंमे भी घर बनाने लगा। करेन्स्कीकी सरकारको हराकर जब बोल्शेविकोंने शासन-सूत्र अपने हाथमें लिया, तो मध्य-एसियामे भी उन्हें पुराने शासकोंका स्थान ग्रहण करनेमें पहले अधिक कठिनाईका सामना नही करना पड़ा, तो भी बोल्शेविक आनेवाले खतरेको समझते थे। ताशकन्दमे अक्तूबर-क्रातिसे महीना भर पहले (सितम्बर १९१७ई०मे)ही रेलवे मजदूरोंने अपनेको हथियारबन्द कर लाल-गारदका संगठन कर लिया। लेकिन सैनिक के तौरपर उनका संगठन अक्तूबर-क्रांतिके सघर्षके समय ही हुआ, जब कि ताशकन्दके बहुतसे मजदूर लाल-गारदमे भर्ती हो गये। लालगारदके सैनिक ओरेनबुर्गके मोर्चेपर सफेद-जेनरल दूतोफकी सेनासे भी लड़ने गये थे, जिसने लड़ाकू कजाकोंको भी अपने साथ मिला लिया था।

ताशकन्दका अनुकरण करते हुये मध्य-एसियाके दूसरे शहरोंमे भी लाल-गारदका संगठन हुआ। उस समय तुर्कमानियाको पारे-कास्पियान (जाकास्पिइ) कहा करते थे। पारेकास्पियाके नगरोंमें लाल-गारदका पूरी तौरसे संगठन फर्वरी १९१८ ई०मे शुरू हुआ, जब कि सोवियत शासनको उखाड़ फेंकनेके लिये उत्तरसे कजाक और दक्षिणमे ईरानसे अंग्रेजोंके भाडेके सैनिक सफेद-रूसियोंके मददके लिये आ पहुंचे। चारजूय, तथा दूसरे पारे-कास्पियाके नगरों और स्टेशनोंके मजदूर लाल-गारदमे धडाधड़ भर्ती होने लगे, और वह फर्वरीके अन्त (मार्चके मध्य) तक काफी शक्तिशाली हो गये। गारदने क्राति-विरोधी कजाकोंको दबानेमें बड़ा काम किया। जब विदेशी शक्तियोंका जोर भी इस प्रदेशमे देखा जाने लगा, तो ताशकन्द और दूसरे नगरोंसे भी लाल-गारदके सगठनकर्ता भेज गये। त० कज्लोफके अनुसार पारेकास्पियामे २० (७) दिसम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविक पार्टीके सदस्योंको सम्मिलित करके लाल-गारदकी स्थापना हुई। गारदमें यूरोपीय मजदूरोंके अतिरिक्त उज्बेक, तुर्कमान, कजाक आदि स्थानीय (एसियाई) जातियोंके भी मजदूर सम्मिलित थे। जनवरी १९१८ ई०मे जब मुल्लोंने शासन हाथमे लेनेका प्रयत्न किया, तो उस समय ताशकन्दके एक लाल-गारदमे केवल उज्बेक स्वयंसेवक सैनिक दो सौ थे। तुर्कमानियाम अवेज बेर्दी कुलियेफ-जैसे बोल्शेविकोंने लाल-गारदके संगठनको आग बढ़ाया, और दिसम्बर १९१७ ई०तक उसमें १७५ सवार तैयार हो गये। ६ दिसम्बर (२३ नवम्बर) १९१८ ई०तक तुर्कमानियाके हर नगर, हर बडे स्टेशनपर लाल-गारदके संगठन थे। इनका काम था तुर्कमान मजदूरवर्गको हथियारबन्द कर क्राति-विरोधियोंसे लोहा लेना और पूजीवादियोंसे मजदूरोंके हितोंकी रक्षा करना। पहलेपहल उन्हें ईरानसे आये क्रांति-विरोधी सैनिकों और खीवाकी ओरसे आये कजाकोंसे मुकाबिला करना पड़ा। लाल-गारद दूतोफके कजाकोंके मनोरथको भी विफल करनेमें सफल हुआ।

१९१८ई०के अन्तमें मध्य-एसियामें बोल्शेविकोंकी अवस्था बहुत खतरनाक हो गई थी। रूससे यातायातका संबंध टूट गया था। उस समय पारे-कास्पियामे (समाजवादी क्रांतिकारी) दलका जोर था और बोल्शेविक निर्बल थे। क्रांति-विरोधियोंके नेता जारशाहीके पुराने सैनिक और असैनिक अफसर थे। खोकन्दके स्वायत्तियोंके खतम कर देनेपर वहां बासमचियों (जहादी डाकुओं)का जोर बढ़ा, जिसके कारण बोल्शेविक उनको दबानेमें लग पडे, और महीनों कहींसे कोई सहायता नहीं मिली। यहांके कम्युनिस्तोंमे अभी न उतना तजर्बा था, न अनुशासन और उनमें निम्न-मध्यमवर्गके अराजकतावादी भाव ज्यादा दिखाई पड़ते थे। लेकिन तो भी उच्च आदर्शके प्रति प्रेम और सर्वस्व-त्यागका भाव उनमें काम कर रहा था, जिसके बलपर शत्रुके कितने ही शक्तिशाली होनेपर भी वह लड़नेके लिये तैयार थे। १९१८ ई०के अन्तमें मास्कोसे रेडियोग्राम आया, कि सारी पूंजीवादी दुनिया—फ्रांस, इंगलैड, अमेरिका आदि—ने सफेद (क्राति-विरोधी)-रूसियोंकी सेनाको सक्रियरूपसे मदद देनेका निश्चय कर लिया है। वह और हथियार ही नहीं देंगे, बल्कि अपनी सेना भी भेजेंगे। इस बेतारके तारने जहां अवस्था-की भीषणताको स्पष्ट करके सामने रख दिया, वहा यह भी बतला दिया, कि पूरी तौरसे अनुशासनकी पाबंदी करते हुये हथियारबन्द होकर लड़ना ही एकमात्र रास्ता रह गया है। उस समय बोल्शेविकोंकी कांग्रेस हो रही थी, जिसने निश्चय किया, कि सफेद-गारदोंसे हमें ऊपरका अनुशासन मानते हुये लड़ना है। अन्नका अभाव था, कारखाने बन्द थे। खैर इसका एक फायदा यह भी था, कि मजदूरोंको काम नहीं करना था। रेलवे लाइनें भी बेकार पड़ी थीं।

३. केर्की-कांड (१९१९ ई०)

मध्य-एसिया पहुंचनेके यातायातके बडे रास्तोंमें एक स्थल-मार्ग ओरेनबुर्गसे होकर था, और दूसरा बाकूसे जहाज द्वारा कास्पियन पारकर वर्तमान तुर्कमानिस्तान होकर। ओरेनबुर्गको दूतोफ-ने लेकर उधरका रास्ता बन्द कर दिया था, और कास्पियनके पूर्वी और पश्चिमी दोनों तटोंपर अंग्रेज आ गये थे। इस प्रकार मध्य-एसियाके बोल्शेविक केन्द्रसे बिलकुल अलग-अलग अपनी लड़ाई लड़ रहे थे। उनका मुकाबिला भी केवल सफेद (क्रांति-विरोधी) रूसियों और स्थानीय उच्च और मध्यवर्गसे ही नही था, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीपतियोंकी दुनिया भी उनकी शक्तिकी परीक्षा कर रही थी। बोल्शेविकोंका सबसे ज्यादा बल था—स्थानीय गरीब और मजदूर जनता, जिसके हितोंके लिये वह सब तरहकी कुर्बानियां दे रहे थे। १९१९ ई०के वसन्तके आनेतक अब अमीर-बुखारा भी ज्यादा हिम्मतके साथ क्रांति-विरोधियोंकी सहायता करने लगा था। कास्पियनके पूर्वी तटसे आगे बढ़ते हुये सफेद-रूसियोंने आमू-दरियाके किनारे तथा बुखारासे नातिदूर चारजूयके महत्त्वपूर्ण स्टेशनको अपने हाथमें कर लिया था। लेकिन उनकी हिम्मत नहीं हुई, कि आमू (वक्षु) दरिया पारकर सीधे बोल्शेविकोंपर प्रहार करें। बुखारा राज्यके भीतर बुखारा नगरसे कुछ ही मीलपर कगानका रेलवे-जंकशन जारशाहीने अपने हाथमें कर रक्खा था, जो अब बोल्शेविकोंके हाथमें था। सफेद रूसियोंने सीधे बुखाराकी ओर बढ़नेकी जगह पहले केर्कीको लेनेका निश्चय किया था, जिसके बाद वह बुखाराके अमीरसे मिलकर तुर्किस्तान-प्रदेशसे बोल्शेविकोंको खतम करना चाहते थे। मेर्व (बैराम अली)में कुछ उच्च अमरीकी अधिकारियोंने सफेद रूसियोंसे मिलकर योजना बनाई। १९१९ ई०की मईके मध्यतक उन्होंने अलग-अलग टोलियों-को बनाकर उनके लिये काम निश्चित किया। ऐरापेतोफ एक टोलीका कमांडर नियुक्त किया गया, जिसे केर्कीपर अधिकार करनेका काम दिया गया। वह खर्कोफसे आकर बाकूमें सेनाके साथ शिक्षक-का काम करता रहा। इससे पहले वह जारकी सेनामें अफसर रह चुका था, लेकिन इससे पहले कभी उसने सैनिक अभियानमें नेतृत्व नहीं किया था।

२४-२५ अप्रैलको कप्तान ऐरापेतोफने अपनी सैनिक टुकड़ी संगठित की। पैसेकी कमी थी। पैसे हीके लिये तो क्रांति-विरोधियोंको सिपाही मिल रहे थे। यदि केर्कीपर अधिकार

कर ले, तो अमीर-बुखारा तीस हजार रूबल देनेके लिये तैयार है, कहकर उसने लोभ-लालच दिखला पैंसठ आदमियोंको इकट्ठा किया, जिनमे चार रूसी, तीन ईरानी और कुछ आर्मेनियन भी थे। अंग्रेजोके दिये हुये हथियारोंकी कमी नहीं थी। उनके साथ दो सौ बन्दूके, काफी गोली-बारूद भी थी, इनके अतिरिक्त कुछ मशीनगनें भी थीं, लेकिन तोप नही थी।

सैनिक टुकड़ीने संगठित हो जानेके बाद बैराम अलीसे कूच किया। पहले वह ताशके-परी फिर तख्तबाजार पहुंचे। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्कतक आई रूसी रेलवे लाइन पकड़कर वह पहले दक्षिणकी ओर चले। तख्तबाजारसे ८ (२१) मईको, वह उत्तर-पूर्वकी तरफ केर्कीकी ओर बढ़ने लगे। रास्ता रेगिस्तानका था। यदि ऐरापेतोफके सनिकोंको रास्तेके बारेम अच्छी तरह मालूम होता, तो शायद उनमेंसे कितनोंकी हिम्मत टूट जाती, लेकिन एक बार जब रेगिस्तानमे पड गये, तो पीछे हटनेका सवाल कहां था? ऐरापेतोफने उन्हें बत-लाया था, कि तख्तबाजारसे केर्की दूर नही, सिर्फ तीन दिनका रास्ता है। वह नौ दिन बाद १४ (२७) मईको रेगिस्तानी रास्ता खतमकर केर्कीसे चार फर्सखपर एक बागमे ठहरे। कुछ ही समय बाद अमीर-बुखाराका अफसर नूरुद्दीन निराखुर और नासिरुद्दीन कराउलबेगी मिलने आये। केर्कीके बेग (राज्यपाल) ने सौ हथियारबन्द स्थानीय तुर्कमान ऐरापेतोफकी सेनाके लिये भेजे, और जल्दी ही सैनिक कार्रवाई करनेके लिये जोर दिया। रेगिस्तानके रास्तेसे आकर थके-मांदे पड़े ऐरापेतोफके आदमी अभी उसके लिये तैयार नही थे। इसपर बुखारी अफसरोंकी सलाहसे ऐरापेतोफ अपने सैनिकोंको लिये केर्कीसे चालीस फर्सख दूर किजिलअयाकमे चला गया। यहां डेढ़ सौ तुर्कमान सवार और आ मिले, इस प्रकार ऐरापेतोफकी सारी सेना अब तीन सौ पैंतालीस थी। केर्कीका बेग बराबर ऐरापेतोफसे लिखा-पढ़ी कर रहा था। कपासका बहुत वडा व्यापारी मलिक-कपामेस समसोन क्रांति-विरोधियोंकी सहायता कर रहा था। फर्वरी (१९१७)ई० क्रांतिके समय वह नगरके आर्थिक कमीशनका अध्यक्ष था, लेकिन अक्तूबरकी क्रांतिके बाद वह बोल्शेविकोंके साथ सहानुभूति पैदा करके अपनेको सोवियत संगठनका सदस्य बनानेमें सफल हुआ। उसने एक पत्र केर्कीके बेगके पत्रके साथ ऐरापेतोफके पास भेजा। पत्र पकड़ा गया, फिर समसोन भी गिरफ्तार कर लिया गया।

केर्की अफगान-सीमाके नातिदूर वक्षु नदीके तटपर व्यापारिक और राजनीतिक महत्त्वका स्थान था, जहा १८८९ ई०में जारशाहीने एक किला बनाया था। इसके व्यापारिक महत्त्वका पता इसीसे लग जायगा, कि १९१० ई०मे यहा बाइस लाख रूबलका व्यापार हुआ था। बुखाराके पासके कगान जंक्शनसे करशीको एक रेलवे लाइन लाई गई थी। यह कपासकी बहुत बड़ी मंडी तो थी ही, साथ ही अफगानिस्तानके साथके आयात और निर्यात का भी यह बहुत बड़ा द्वार था। यहांपर दो कपास ओटनेकी मिले भी थी। अक्तूबर-क्रांति द्वारा जब ताशकन्दपर सोवियत-शासन कायम हो गया, तो यहाके गैरिसनके सिपाहियोंने भी लाल झंडा फहराया। मजूर और निम्नमध्यम-वर्गके लोग सोवियत-शासनके पक्षमें थे। ऐरापेतोफके आक्रमणसे पहले यहां बोल्शेविक पार्टीके सौ मेम्बर बन चुके थे।

१२ (२५) मईको केर्कीकी सोवियतको खबर मिली, कि सफेद-गारदके तीन हजार सैनिक आठ तोपों और सोलह मशीनगनोंके साथ आ गये है। अगले दिन यह भी पता लगा, कि सफेद-गारदका कुछ भाग किजिलअयाकमें पहुंच गया है। इसी दिन शामको सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमे प्रतिरक्षाके लिये तैयारी करनेका निश्चय किया गया। इसके लिये एक परिषद् (कलेगियो) बनाई गई, जिसका अध्यक्ष नस्तेरोफ और सदस्योंमे शीरियानेत्स (सोवियत-अध्यक्ष), बबायेफ, वासिलेव्स्की और बर्जानोफ थे। बर्जानोफ युद्धके विशेषज्ञके तौरपर लिया गया। १३ (२६) मईके १० बजे अमीरके पास रहनेवाले सोवियतके रेजीडेंटके पास केर्कीसे शीरिया-नेत्स, नेस्तेरोफ, और लादोगोने खबर भेजी, कि अश्काबादियोंकी पलटन यहांसे अट्ठाईस वेर्स्तपर आ पहुंची है। हो सकता है, हम आपके साथ यह अन्तिम वार्तालाप कर रहे हैं। जो हो सके, मदद हमारे पास भेजें। आज ही शामको युद्ध शुरू होनेकी संभावना है। बेग और

उसके अफसर उनके साथ हैं। उनकी सेनामे ७५० सैनिक, आठ तोपों और सोलह मशीनगनोंके साथ शामिल है। एक अंग्रेज कर्नल सेनाका कमाडर है। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि हम विशेष सहायताकी अवश्यकता है। यदि सहायता न पहुंनी, तो हम बच नहीं सकते, तो भी हम अंतिम समयतक लड़ेगे।

उस समय केर्कीके गैरिसन (छावनी) मे किलेके एक सौ पचास सैनिक—सौ सवार थे। इनके अतिरिक्त नगरमे भी करीब अस्सी लाल स्वयंसेवक थे। समासोनोफ स्टेशनमें भी रेलरक्षक पचहत्तर हथियारबन्द सैनिक थे। इस प्रकार सब मिलाकर तीन सौसे कुछ ऊपर आदमी उनके पास थे।

१५ (२८) मईको सफेद-गारदकी ओरसे सोवियतको अल्टिमेटम मिला, जो जेनरल देनिकिनकी सेनाकी ओरसे भेजा गया था: भाईका खून बहानसे परहेज करनके लिये हम चाहते है, कि तुम केर्कीको समर्पण कर दो। अल्टिमेटमके बाद दो घंटेतक हम प्रतीक्षा करेंगे। जिसके बाद किलेपर गोलाबारी शुरू हो जायगी। अल्टिमेटमपर निम्न अफसरोंके हस्ताक्षर थे :—

अंग्रेजी सेनाका कमांडर कर्नल लोमकार्ट,
फ्रेंच सैनिक मिशनका अध्यक्ष कर्नल वाल्तेर,
रूसी सनाका संचालक मेजर-जेनरल युदेनिच,
तुर्कमानी सेनाका संचालक कर्नल गर-सरदार।

अल्टिमेटमके हस्ताक्षरों और सफेद गारदकी सेनाकी बढ़ा-चढ़ाकर बतलाई संख्याको देखकर केर्कीकी सोवियतको भारी डर लगता ही था, लेकिन चाहे कुछ भी हो, बोल्शेविक किलेको क्रांति-विरोधियोंके हाथमें देनेके लिये तैयार नहीं थे। परिषद्ने हर तरहसे नगरकी रक्षा करनेका निश्चय किया, और अल्टिमेटमका जवाब देते हुये कहा—"आत्मसमर्पणकी जगह निष्कलुष रूप-से मृत्यु प्राप्त करना बेहतर है।" परिषद्ने शिनिकोफ और श्वांस्कीके द्वारा पत्र भेजा। सवेरे दूकानें अभी बन्द ही थीं, तभी सोवियतके प्रतिनिधि नगरसे बाहर हो गये। उन्होंने ऐरापेतोफसे कारवांसरायमें मिलने जाते ढाई सौ हथियारबन्द तुर्कमानोंको देखा। किसीने बात करते हुये बतलाया, कि सेना-संचालक लोमकर्ट है। आदमीने प्रतिनिधियोंसे बात करते ऐरापेतोफको बतलाया, कि केर्की घिर गई है, बुखारासे तारका संबंध कट गया है, केर्की और करशीके बीचकी रेलवे लाइन भी काट दी गई है। तेरमिजके ऊपर पांच सौ सैनिक भजे जा चुके हैं। हमारी भारी सेनामें अग्रेज, तुर्कमानी, रूसी आदि बहुत-सी जातियोंके लोग हैं। जब बातें हो रही थीं, उसी समय किसी आदमीने आकर ऐरापेतोफसे कहा, कि अंग्रेज तोपखाना-अफसर सिगरेट माग रहा है। ऐरा-पेतोफने प्रतिनिधियोंसे बतलाया, कि सिगरेटका मतलब है सिपाही। इस प्रकार उसने प्रतिनिधियों-पर बहुत रोब डालना चाहा। उसने और बात करनेके लिये अपनी ओरसे स्तेपानोफ, उराल्स्की और मूजातिचको शीनिकोफके साथ भजा, लेकिन श्वांस्कीको जामिनके तौरपर अपन पास रख लिया। शीनिकोफन आकर बतलाया, कि सब झांपड़ी हैं, कहीं तोप-ताप नहीं हैं। हा, अमीर-बुखाराके आदमी उनके साथ हैं। युद्ध-समितिने श्वांस्कीको लौटाने तकके लिए ऐरा-पेतोफके दो प्रतिनिधियोंको रख लिया, फिर अल्टीमेटमका उत्तर दिया—"हम अमर प्रोलेतारियोंके पुत्र, तुम्हें सूचित करते हैं, कि सोवियत रूस और तुर्किस्तानके राज्यके सिवा हम किसी राज्य-को स्वीकार नहीं करते। हम सिर्फ सोवियतकी शक्तिको स्वीकार करते, उसीकी आज्ञा मानते, और उसके लिये हम अपने खूनकी अंतिम बूंदतक देनेके लिये तैयार हैं।

केर्कीके बेगकी बहुत-सी कार्रवाइयां पकड़ी गई थीं, इसलिये १६ (२९) मईकी शामको सवा छ बजे युद्ध-परिषद्ने उसे अल्टीमेटम दे दिये, कि अश्काबादके विद्रोहियोंको तुमने मदद दी है, और शहरकें रूसी भाग तथा किलेको उनके हाथमें देनेकी कोशिश करते १५ (२८) मईकी शामको मीर आखुर कादिरकुलोफको पत्र देकर भेजा। दो घंटेका समय देकर बर्जानोफ-ने तोप चलानेका हुक्म दिया। किलेकी तोपें आग बरसाने लगीं। पुराने नगरपर सत्रह गोले छोड़े गये। इसपर बुखारा राज्यपालने अपने प्रतिनिधि भेजे। तुरन्त दो तोपों, दो मशीनगनों

और तीन सौ रूसी बन्दूकोंको देना स्वीकार किया। फिर भी बेगके किलेपर चार और गोले छोडे गैये, जिसपर उसने अपनी दो तोपों, दो सौ बन्दूकोंको भी बोल्शेविकोंके हाथमे दिया। बाकी हथियारोंके बारेमे उसने कहा, कि लोगोंने डरके मारे आमू-दरियामे फेक दिया है ।

अब स्वयसेवकोंकी बड़ी तेजीसे भर्ती होने लगी। बेगको स्वतंत्र रखना खतरेकी बात समझ उसे और उसके आदमियोंको गिरफ्तार करनेका निश्चय किया गया। अमीरके बहुतसे अफसर, तथा बडे बडे व्यापारी अपने धन और परिवारको नगरमे ही छोड गांवोंकी ओर भागे, जिससे आसपासके तुर्कमानोंको लूटका प्रलोभन हुआ। उन्होंने लूटके लिये अपने दल संगठित करने शुरू किये, जिसमे सबसे पहले चाकिर, तराजा और खोजा हैरान गावोंके लोग शामिल हुये। उन्होंने १९ मई (१ जून)को लूट-मार शुरू कर दी। रूसी इसे क्यों बर्दाश्त करने लगे, इसपर तुर्कमानो और रूसियोंमे जग छिड़ गई, जो दो महीनेतक चलती रही। आसपासके गांवोंसे चीजोंका आना-जाना बन्द हो गया, नगरके लोग दिन-पर-दिन भूखे मरने लगे, न बच्चोंके लिये दूध था, न लोगोंके लिये खानेका सामान। तुर्कमानोंने काफी रूसियोंको मारा, और खुद भी उनकी काफी क्षति हुई। ३१ मई (१३ जून)को ३ बजे सबेरे तुर्कमानोंपर आगे बढ कर आक्रमण करनेके लिये बोल्शेविकोंकी टुकडी भेजी गई, जिसने उनको काफी नुकसान पहुंचाया। अन्तमे १ (१४) जुलाईको सुलह करानेके लिये बुखाराके अमीरने ईशान सदूर तथा दूसरोंके साथ अपने आदमी काजीबेकको बातचीत करनेके वास्ते भेजा, लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इसके बाद ४, ५, ६ (१७, १८, १९) जुलाईको तुर्कमानोंने आक्रमण करके नगरपर अधिकार करना चाहा, लेकिन सोवियतकी तोपों और मशीनगनोने उन्हें मार भगाया। जुलाईके मध्य (अन्त)मे स्टीमरसे एक दूत-मंडल ताशकन्द भेजा गया, जिसे बुर्दालिक गावमें तुर्कमानोंने रोक लिया। फिर केर्कीमे बातचीत हुई, अन्तमे तुर्कमानोने स्टीमरको जाने दिया। अमीर-बुखारा उस समय करमीनामे था। केर्कीमें बोल्शेविकोंके इतने जबर्दस्त प्रतिरोध और तुर्कमानोंकी हानि देखकर अमीर बुखाराके आदमी सुलह करानेके लिये १० जुलाईके १२ बजे दोपहरको केर्की पहुचे। १२ (२५) जुलाईके ७ बजे सबेरे तुर्कमानोंके साथ संधिकी बातचीत शुरू हुई। इस बातचीतमे बुखाराके प्रतिनिधि थे—तोकसाबा मिर्जा खोजा, मीर अखुर कारी उसमानबेक और कराउलबेगी जाहिरोफ, और तुर्कमानोंके प्रतिनिधि—ईशान सदुर, ईशान उराक, मुल्ला वलीनियाज, मुल्ला बाबा और मुल्ला जूराकुल तोकसाबा। १९ जुलाई (अगस्त) संधिके ऊपर हस्ताक्षर भी हो गया। तुर्कमानोंने केर्कीके घेरेको हटा लिया। ३० जुलाई (१२ अगस्त)को केर्कीका बाजार खुल गया, गांवोंसे सब तरहकी खानेकी चीजें आने लगीं।

इस प्रकार ऐरापेतोफकी बदर-घुड़कीको खतमकर तुर्कमानोके खतरेसे भी अपनेको मुक्त करके केर्कीमें बोल्शेविकोंने अपनी शक्ति मजबूत कर ली। २२ सितम्बर (५ अक्तूबर) को स्टीमर द्वारा चारजूयसे नई कम्युनिस्त सेना केर्की आ रही थी, लेकिन केर्कीसे पच्चीस वेर्स्तपर तुर्कमानोंने फिर स्टीमरको रोक लिया। लेकिन चार घंटेके बाद उन्होंने उसे छोड़ देनेम ही खैरियत समझी। इसी साल ताशकन्दसे कुछ लाल सैनिकोंके साथ तीस लाख रूबल खजाना लेकर लगोदा और शीनिकोफ आ रहे थे, जिन्हें २५ अक्तूबर (८ नवम्बर)को उसी गांव खोजइबाजमें तुर्कमानोंने फिर रोक लिया। उन्होंने हथियार और खजाना छीन बोल्शेविकोंको मौतका दंड दिया। चार दिन इसी स्थितिमे रहे। केर्कीके बेगपर दबाव पड़ा, तो तुर्कमानोने उन्हें छोड़ दिया। केर्कीकी क्रांतिकारी समितिने इस बातका बहुत विरोध किया, कि ईरानी, जर्मन, अफगान या दूसरे आदमियोंको न रोक तुर्कमान केवल रूसियोंको रोकते है।

केर्की-कांड (१९१९ ई०) की तारीखवार घटनाये निम्न प्रकार थी :—

२४ अप्रैल (७ मई) केर्कीपर चढाईके लिये ऐरापेतोफने सिपाही जमा करने शुरू किये।
५ (१८ ") तख्तबाजारसे ऐरापेतोफकी सेना रवाना हुई।
१२ (२५ ") केर्की-सोवियतको शत्रुके आनेकी सूचना मिली।

१३ (२६ ") युद्ध-परिषद्का सगटन, और नगरकी प्रतिरक्षाकी तैयारी।
१४ (२७ ") ऐरापेतोफकी सेना केर्कीके नजदीक पहुंची।
१५ (२८ ") ऐरापेतोफने अल्टीमेटम दिया, श्वास्की और शिर्निकोफ बात करने गये। परिषद्ने अल्टीमेटम स्वीकार नहीं किया।
१६ (२९ ") युद्ध-परिषद्ने केर्कीबगको हथियार रख देनेके लिये अल्टीमेटम दे पुराने नगरपर गोलाबारी की।
१७ (३० ") पुरान नगरके प्रतिनिधि बात करने आये। बेग और उसके अफसरोंको गिरफ्तार करके पुराने केर्की नगरको बोल्शेविकोंने ले लिया।
१९ मई (१ जून) कगानकी सोवियत सेना समसोनोफ स्टशनपर आई। तुर्कमानोंने केर्कीका मुहासिरा शुरू कर दिया।
२-३ (१५-१६") तुर्कमान नेताओंके साथ प्रथम बातचीत।
३ (१६ ") केर्की-सोवियतने अपनेको खतम करके सारी शक्ति युद्ध-परिषद्के हाथमें दे दी।
४-६ (१७-१८") तुर्कमानोंने आक्रमण करके केर्की नगरको लेना चाहा।
१० (२३ ") बुखारासे बोइल्केविच तथा अमीरके आदमी सुलह् करानके लिये केर्की पहुंचे।
१२ (२५ ") तुर्कमानोंके साथ सुलहकी बात शुरू हुई।
१९ जन (२ जुलाई) सुलहनामे पर हस्ताक्षर।
२८ सितम्बर (११ अक्तूबर) अपने अपराधोंके लिये बर्जोनोफ शिरियानेत्स् और नेतेरोफको गिरफ्तार किया गया।

४. ईरानका दावा

१९०७ ई०में इंगलैंड और जारशाही रूसका जो समझौता हुआ था, उसमें दोनों राज्योंने बीचके थोड़ेसे स्थानको छोड़कर ईरानको अपने प्रभावक्षेत्रमें बांट लिया था, और बहुतसे राजनीतिक और आर्थिक सुभीते अपने लिये प्राप्त किये थे। क्रांतिके बाद सोवियत सरकारने इस तरहके साम्राज्यवादी सधिपत्रोंको फाडकर फेंक दिया। २६ फर्वरी १९२१ ई०को मास्कोंमें ईरानके साथ नये सधिपत्रपर हस्ताक्षर करते हुए सोवियतने ईरानके साथ हुई अन्यायपूर्ण शर्तोंको खतम कर दिया धातु-धुनों, पेट्रोल आदिके संबंधमें जो रियायतें ईरानसे जारशाहीने ली थीं, उन्हें छोड़ दिया। जुल्फा तब्रेज और दूसरी जगहोंमें जारशाहीने जो रेलवे लाइने बनाई थीं, उन्हें ईरानको दे दिया। उरमिया (रजाइया) महासरोवरमें चलनेवाले रूसी स्टीमरोंको ईरानके हवाले कर दिया। तेलीग्राफ, बिजली-स्टेशन, बैंकोंकी इमारतों आदिपर से भी अपना अधिकार छोड़ दिया। कुल मिलाकर प्रायः सात करोड़ सुवर्ण रूबलकी अपनी संपत्तिको देते रूसियोंके वाह्य-राज्यमें विशेष अधिकारको भी छोड़ दिया। एक ओर रूसके नये शासक इस तरहकी उदारता दिखला रहे थे, दूसरी तरफ बख्तियारी सामन्त समसामुस्सल्तनतके नेतृत्वमें ईरान सरकार मार्च १९१९ ई०में पेरिसके अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसमें कौरोश और दारयोशके समयकी ईरानी सीमाको फिरसे कायम करना चाहती थी। समसामुस्सल्तनत उसी बख्तियारी कबीलेका सरदार था, जिसने १९१६ ई०में इंगलैंडके साथ समझौता करके ईरानके प्रसिद्ध तेल-क्षेत्रको अंग्रेजोंके हवाले किया था। इसीके शासनके समय इंगलैंडने ईरानपर पूरी तौरसे अपना अधिकार जमाया, इसलिये अंग्रेजोंकी सम्मतिके बिना वह ऐसी मांगोंको रखनेकी हिम्मत नही कर सकता था। उस समय एक ओर अंग्रेज जेनरल डेन्स्टरविलकी सेना बगदादसे बाकू पहुंची थी, वहां दूसरी सेनाका कर्नल रौलिंसनके अधीन अश्काबाद आई थी। अंग्रेजी सेनाओंके बलपर ईरानकी मांगे यदि लंबी हो जायें तो आश्चर्य क्या? वस्तुतः यह नई सीमा ईरानकी नहीं, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्यकी होती। ईरान सरकारने अपने स्मारक पत्रमें मांग की—बाकू नगरके साथ सारा आजुर्बाइजान, एरेवान, नखचेवान, कराबख आदि नगरोंको साथ रूसी आर्मेनिया, दरबेंदके साथ दागिस्तान (अर्थात् प्रायः सारा काकेशस) ईरानको मिलना

चाहिए। पारे-कास्पियाको लेते हुये ईरानकी सीमा आमू-दरिया, अराल समुद्र और पूर्वी कास्पियन-तट माना जाय; अर्थात् अश्काबाद, मेर्व, खीवा आदिपर ईरानका अधिकार होना चाहिये। कुल मिला पाच लाख सत्तर हजार वर्ग किलोमीतर सोवियतकी भूमिपर ईरानका दावा था। ईरानने बोल्शेविकोको इतना कमजोर समझा था, और अपने सहायक पश्चिमी साम्राज्यवादियो-को इतना मजबूत, कि उसने सोवियत-शासकोके सात करोड स्वर्ण रूबलके स्वार्थ-त्यागको उनकी कमजोरी समझा।

लेकिन ईरान और उसकी पीठ ठोंकनेवाले ब्रिटिश साम्राज्यवादियोके सारे मनसूबोंको मध्य-एसियाके बोल्शेविकों, उनके लाल-गारद और लाल-सेनाने विफल कर दिया। रूसियोंके दांत खट्टे करनेवाले तुर्कमानोंको यह समझनेमे दिक्कत नही हुई, कि उनके भाग्यका सितारा बोल्शेविकों के साथ फिर उगनेवाला है। दूसरी जगहोकी तरह तुर्कमानोमे भी उच्चवर्ग और मुल्ला क्रांति-विरोधी सफेद-गारदोंके साथ हुये, और अधिकाश गरीब जनता बोल्शेविकोंके साथ। इसी जनशक्ति-के बलपर तुर्कमानियामे १९२४ ई०मे किसान-मजदूर-राज्य जातियोके आत्मनिर्णयके अनुसार एक लाख सत्तासी हजार वर्गमील भूमिपर कायम हुआ। यद्यपि इस भूमिका अस्सी सैकड़ा कराकुम (कालाबालू)का महारेगिस्तान है, लेकिन तेरह लाखके आबादी के लिये बाकी बीस सैकडा भूमि भी कम नही है। अब तो वक्षु (आमू-दरयि)को कास्पियनसे मिलानेके लिये ग्यारह सौ कलोमीतरकी जो नहर खोदी जा रही है, उसके कारण इस रेगिस्तान- का बहुत बडा भाग उर्वर भूमिमे परिणत हो जायगा। तुर्कमान घुमन्तू कबीले, और उनके लूट-पाट और लडते-भिड़ते रहनेके जीवनका अत हो चुका है, उनमे शत-प्रतिशत आधुनिक शिक्षा से शिक्षित नर-नारी हैं। वह जीवनके हर क्षेत्रमे बड़ी तेजीसे आगे बढे है।

स्रोत-ग्रंथ

१. रेवोल्युत्सिया स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
२. History of civil war in U S S R (2 vols., G F Alexandrov and others, Moscow 1947)
३. La revolution russe (4 vols., C Anet, Paris 1918-20)
४. La revolution russe (Al. Ular, Paris 1905)

परिशिष्ट

रूसी भाषा और भारत

१. ऐतिहासिक सिंहावलोकन

सिकन्दर (मृत्यु ३२३ ई० पू०) से पहिलेके भी भारतीय युनानियोंको जानते थे। 'माज्झिम-निकाय'के एक सूत्रमें बुद्धने कबोज (उत्तरी अफगानिस्तान) और यवन (यूनान) का नाम लिया है। पाणिनि (ई० पू० ४थी शताब्दी)को भी यवनोंका नाम मालूम था। उसके बाद तो बहुत भारी संख्यामें यवन हिन्दुस्तानमें आये, और ईसा-पूर्व दूसरी और तीसरी शताब्दीमें उत्तरी भारतके कितने ही हिस्सोंपर यवनोंका राज्य रहा। ई० पू० पहली शताब्दीसे ईस्वी तीसरी शताब्दीतक उत्तरी भारतका बहुत-सा भाग शकोंके हाथमें था, और पंजाब तो पाचवीं शताब्दीतक शकोंके शासनमें रहा, जब कि इतिहासमें गलतीसे श्वेत-हूणके नामसे प्रसिद्ध किन्तु वस्तुतः शकोंकी ही एक शाखा हेफतालों (तोरमान-मिहिरकुलके वंश)ने उनको हटाकर अपना राज्य स्थापित किया। मिहिरकुलको मालवाके यशोधर्माने भगाया, जिसके साथ अंतिम शकोंका राज्य भारतसे लुप्त हुआ। इसी समय बाह्लीक (बाख्तर या बलख), तुषार और सोग्दको भी उनसे तुर्कोंने छीन लिया। आठ-आठ शताब्दीतक यवनों और शकोंका भारतसे इतना घनिष्ठ संबध रहा, वे लाखोंकी सख्यामें हमारे देशमें आकर बस गये, और आज वह शाकद्वीपी ब्राह्मण, चौहान, बनाफर-जैसे बहुतसे राजपूतों और जाट-गूजर जैसी जातियोंके रूपमें हिन्दुओंके अभिन्न अग बन गये। तो भी हमारे यहां इस तरफ ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ, कि उनकी भाषाओंका हमारी भाषासे बहुत घनिष्ठ सबध है, और उससे ऐतिहासिक परिणाम निकाले जा सकते हैं।

१८वीं शताब्दीके अंतमें युरोपके विद्वानोंका ध्यान सस्कृतकी तरफ खास तौरसे आकृष्ट हुआ, जब कि उन्होंने देखा कि संस्कृत और युरोपीय भाषाओंमें आपसमें कितनी ही जगह अद्भुत समानता है। इसका श्रेय जर्मन अध्यापक बॉपको है, जिसने अपने विस्तृत अनुसंधानके बल-पर इस समानताको दिखलाया और हिन्दी-युरोपीय भाषा-तत्त्वकी नींव डाली। अब यह सर्वसम्मत बात है, कि सस्कृत तथा युरोपीय भाषाओंकी समानता आकस्मिक नहीं है, जैसे :—

संस्कृत—ददामि	दास्यमानस्	दातर्
ग्रीक—दिदोमि	दोसोमेनोस्	दोतेर्

इसी तरह :—

संस्कृत—वाक् वाचस् वाचाम् वचस् वाग्भ्यस्

ग्रीक—वोक्स् वोकिस् वोकेम् वोकेस् वोकिबुस्

इन समानताओंने सिद्ध कर दिया कि "हिन्दी-युरोपीय भाषाएं सभी एक ही मूल-भाषा की संतानें हैं।"*

हिन्दी-युरोपीय भाषाओंकी इस एकताके सिद्धांतको स्वीकार कर लेनेपर रूसी भाषाका भी संबंध संस्कृतसे है, यह मान ही लिया जाता है। किन्तु इससे एक भ्रम पैदा होता है, कि रूसी भाषा भी उतनी ही दूरसे संस्कृतके साथ सम्बन्ध रखती है, जितनी कि ग्रीक और अंग्रेजी भाषा। फारसी भाषा-का भी संस्कृतसे संबंध है, हिन्दी-बंगलाका भी संस्कृतसे सबन्ध है, लेकिन यहां तारतम्य एक समान

---

* अन्थ्रापौलोजी (सर एडवर्ड टेलर) जिल्द १, पृष्ठ ८

नहीं है। फारसी भाषा अंग्रेजीसे तुलना करनेपर संस्कृतकी सगी बहन-भतीजी मालूम होती है, उसी तरह युरोपकी दूसरी भाषाओंसे तुलना करनेपर रूसी और उसकी स्लाव बहनें संस्कृतकी बिलकुल भागिनेयी और प्रभागिनेयी सिद्ध होती हैं। वस्तुतः रूसी भाषा युरोपीय भाषाओंके वर्गकी नहीं है, बल्कि वह संस्कृत-ईरानी भाषा-वर्गसे संबंध रखती है। १८वी सदीके आरंभतक रूसी भी अपने को युरोपसे अलग समझते थे। आज भी उनके मुखसे जब-तब अपनेसे पश्चिमके देशोंको 'युरोपा' कहकर पृथक् करनेकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

ईरानियों और हिन्दी-आर्योंका घनिष्ठ संपर्क भाषाके अतिरिक्त उनकी देवावली और पूजा-प्रकारसे भी सिद्ध होता है। रूसी भाषाका सस्कृतसे कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके बारेमे हजारो उदाहरण हम यहा देने जा रहे है, इसलिये बहुत लिखनेकी अवश्यकता नही है। लेकिन मूल-भाषा और उसके बोलनेवालोंसे इतिहास-शृंखला कैसे जुड़ती है, इसे यहां सक्षेपमे दिखलानेकी जरूरत है।

हम आसानीके लिये उस भाषाको "प्राक्‌हिन्दी-युरोपीय भाषा" मान लेते हैं, जिसे भारत और ईरानके आर्यों और रूसी तथा युरोपीय जातियोंके पूर्वज एक कबीला होनेके वक्त बोला करते थे। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि भाषा बोलनेसे यह मतलब नहीं, कि वह अपने पूर्वजोंके विशुद्ध वशज है। मानव-जातिया स्थावर नहीं, जंगम है। कभी वह स्वयं दूसरी जातियोंके देशोंमे गई और कभी दूसरी जातियां उनके देशोंमें आई। यदि भिन्न-भिन्न भागों-मे भारतीय आर्योंके रक्तमे द्राविड़, किरात और मंगोल जातियोंका प्रचुर रुधिर है, तो युरोपकी जातियां भी प्राचीन भूमध्यीय जातियों, और रूसी जाति हूणों, तुर्कों और मंगोलोंके रक्तसे बची नहीं है। हा, यह कहा जा सकता है, कि हिन्दी-युरोपीय-भाषा-भाषी जातियोंमे उनके प्राक्-हिन्दी-युरोपीय पूर्वजोंका रक्त अधिक है, परन्तु पश्चिममे यह बात केवल युरोपमे रहनेवालोंपर ही लागू है।

प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिके निवास और कालको ढूंढ़ते-ढूंढ़ते हम नवपाषाण-युगतक पहुंचते हैं। उनके आधुनिक वंशधरोंकी शब्दावलीसे तुलना करनेपर इतना पता लगता है, कि अभी वह कृषिको नहीं जानते थे। इसका अर्थ यह भी हुआ, कि वह नवपाषाण-युगके आरंभिक कालमें थे। यह समय ईसा-पूर्व तीसरी-चौथी सहस्राब्दी या कुछ आगे-पीछे हो सकता है। मानव-तत्त्ववेत्ताओं-में इस सम्बन्धमें मतभेद है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति एसियाकी रहनेवाली थी या युरोपकी। बहुतसे विद्वान् कहते हैं, कि अंतिम हिम-युगकी समाप्तिके बहुत देर बाद एसियाकी एक जातिने युरोपपर धावा बोला और वही प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी। दूसरी तरफ ऐसे भी विद्वान् हैं, जिनका कहना है कि हिम-युगके बाद जिन जातियोंका युरोपमें पता लगा है, उन्हींकी वंशज यह प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी।* हमें अभी इस विवादमें नही पड़ना है। यदि प्राक्-हिन्दी युरोपीय जाति एसिया—मध्य-एसिया—से यूरोपमे गई, तो उसकी पूर्वी शाखा गोबीकी मरुभूमिसे कार्पथीय पर्वतमालातक फैली हुई थी। पीछे इसके विभाग हुये—आर्य और शक। आसानीके लिये हम पूर्वी शाखाको 'शतं वंश' या 'शकाऽऽर्य' कह लेते हैं। पश्चिमी शाखा 'केन्टं' या पश्चिमी युरोपीय जातियोंके पूर्वज थे। लेकिन यहां हम यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि हालकी ख्वारेज्म (निम्नवक्षुनदी) की खोजोंने बतलाया है, कि वहांकी संस्कृति सिन्धु-उपत्यकाकी संस्कृतिसे सम्बद्ध थी, अर्थात् सिन्धु-उपत्यकाकी जाति और प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति-की सीमा अराल-समुद्र और सिर-दरिया थी।

यदि हम यह मान लें, और जिसकी संभावना भी अधिक है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति हिम-युगके बादकी युरोपीय जातियोंसे निकली थी, तो उसके विचरण-स्थानकी सीमा वोल्गा या एम्बा नदी रही होगी, अर्थात् विशाल 'भूखे बयाबान' (कजाकस्तान) से पश्चिम ही। इसी विशाल

---

* 'स्केलेटेन रिमेन्स ऑफ अर्ली मैन' (हरद्लिच्का), स्मिथसोनियन् मिसलेनियस् पब्लिकेशन जिल्द ८३ (१९३०) पृष्ठ ३४७-४९

भू-भागके पूर्वीय अंशमे पूर्वी शाखावाले शकार्य रहते थे। शकार्य-काल मे भी संस्कृतिके तलमें बहुत अन्तर नही पड़ा था। कृषिकी संभावना कम है। शिकारके साथ पशुपालन भी वह करते थे। समाज जन-सत्ताक था, यानी व्यक्तिकी जगह जनकी प्रधानता थी।

शकार्य जातिका सम्मिलित वासस्थान कार्पाथीय पर्वतमालासे पूरब रहा होगा, जिसके पूर्व-में आर्य रहा करते थे और पश्चिममें शक। जनसख्याकी वृद्धि या प्राकृतिक विपत्तिके कारण शकों और आर्योंमें संघर्ष हुआ। परिणामतः आर्योको अपना मूल स्थान छोडना पड़ा। उनका एक भाग कास्पियनके पश्चिम काकेशस पर्वत-मालासे होते क्षुद्र-एसिया (तुर्की) और उत्तरी ईरानके तरफ बढ़ते असीरियाके सभ्य देशकी सीमापर पहुंचा, और दूसरा भाग कास्पियनसे पूरबकी तरफ अराल समुद्रके किनारे होते ख्वारेज्मकी भूमिमे पहुंच वहाकी सभ्यताके सम्पर्कमे आया। काकेशससे होकर जानेवाले आर्योका पता हमे ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमे बोगजकुई (अकराके पास)मे मितन्नी आर्योके अभिलेखसे मिलता है। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि इसी सहस्राब्दी में हिन्दी-युरोपीय ग्रीक ग्रीस देशमे दाखिल हुए।

अराल-समुद्र और ख्वारेज्ममे पहुंचे आर्योंका वहांकी संस्कृत जातिसे संघर्ष हुआ होगा, इसमें संदेह नही। ख्वारेज्मकी सभ्य जाति उसी तरह घुमन्तू आर्योके समक्ष नतमस्तक हुई, जिस तरह हजार वर्ष बाद ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमे हिन्दी आर्योके सामने सिन्धु-उपत्यकाकी सस्कृत जाति परास्त हुई, और वहां आर्योका अधिकार जमा। शकोंसे आर्योके प्रथम अलग होनेका काल ईसा-पूर्व ३००० वर्षके आसपास था। आगे मध्य-एसियामे आर्य कस्पियनसे पामीर तक फैल गये। वक्षु (ख्वारेज्म) सभ्यताने उन्हे कृषि और संस्कृतिकी दूसरी बाते सिखलाईं। आगेके लिये यह भूमि आर्यों का बीजस्थान (आर्याना बेइजा) बन गई। ईसा-पूर्व २५०० के आसपास आर्योके भाई—शक संख्या-वृद्धि, दैवी उत्पात या अच्छी चरागाहोंकी भनक पा पूरबकी ओर बढ़े। संभव है, अराल-समुद्र और सिर-दरियाके उत्तरके पशुपाल आर्य-जनोंसे उन्हें लड़ना पड़ा हो। कुछ भी हो, वह धीरे-धीरे पूरब-में बढ़ते त्यानशान् और अल्ताईकी उपत्यकाओंको लेते गोबी और क्विनलुन् पर्वतमालातक पहुंच गये।

ईसा-पूर्व १५०० मे तरिम, इली और चूकी समृद्ध उपत्यकायें शकोंके निवासस्थान थे। संभव है, वहां वे कुछ खेती भी करते हों, अल्ताईकी खानोसे सोना तो वह जरूर निकालते थे। लेकिन शक अपनी जीविकाके लिये मुख्यतया निर्भर थे पशुओंपर—घोड़ा, गाय और भेडें उनके मुख्य धन थे, ऊंटों-से उनका प्रेम न था। इस प्रकार ईसा-पूर्व १५ वीं सदीमे गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक शक-जातिका वासस्थान था। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमे ग्रीक इतिहासकार दुनाइ (डैन्यूब)के उत्तर तथा अराल-तटपर शकों (स्कुथ, सिथ)के होनेकी बात करते हैं। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमे ईरानी शाहंशाह कोरोस-को शकोंसे बचनेके लिये दरबन्द (बाकूसे उत्तर)की किलाबंदी करनी पडी थी। सिर-दरियाके किनारे भी उसे शकोंसे लड़ना पड़ा था और एक शक योद्धाके हाथ ही घायल होकर उसे मरना पड़ा। ईसा-पूर्व ४थी सदीमें अलिकसुन्दरको दुनाइ और सिरदरियाके तटपर फिर शकोंसे मुकाबला करना पड़ा। इस तरह स्पष्ट है, कि ईसा-पूर्व २००० से अलिकसुन्दर (सिकन्दर)के समयतक कारपाथीय पर्वतमालासे गोबीतककी भूमि शक घुमंतुओंकी विचरण-भूमि रही, और यही महाशक-द्वीप था। यह भी स्मरण रखना चाहिए, कि अराल समुद्रके पास मगेसगेत् (महाशक) नामकी एक शक जाति का वर्णन हेरोदोतने किया है। ई० पू० २०६ मे जब कि ग्रीक-बाल्हीक राजा युथिदेमोने सिर-दरियापर चढ़ाई की थी, उस वक्त भी वहां शक लोगों हीका निवास था। कितने ही पश्चिमी विद्वानों-का विचार है, कि वहा (महाशकद्वीपमें) रहनेवाली शक जाति वस्तुतः एक जाति नहीं थी, अर्थात् वह भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते थे, और उनके रक्तमे भी भिन्नता थी। भिन्न-भिन्न भाषाका मतलब यदि यह है, कि उनमें कई बोलियां थीं, शब्दोंके उच्चारणमे कुछ अतर था, तो इसमें किसीको आपत्ति नही। किन्तु यदि इसका यह अर्थ है, कि वहां 'शतम्' वंशकी भाषासे बिलकुल ही अलग, अथवा हिन्दी-युरोपीय भाषासे भी बिलकुल अलग भाषा बोलनेवाले कबीले रहते थे, और रक्तसे भी वे शकार्य या हिन्दी-युरोपीय जातिसे भिन्नता रखते थे; तो इसके लिये कोई आधार नही है। वस्तुतः भाषाके

मामूली स्थानीय भेदके साथ भी इस सारे महाशक-द्वीपमे शक जातिका अक्षुण्ण आधिपत्य १७२ ई० पू० तक रहा ।

गोबीसे उत्तर, और पूरबमें मंगोल-वंशीय जातियां निवास करती थीं, जिनमें सिन् (चीनी) और हूणका इतिहासमें सबसे पहले नाम आता है। २५० ई० पू०में तूमन् शन्-यूके नेतृत्वमें हूण बहुत प्रबल हुये और चीनको उनके सामने झुकना पड़ा। ये हूण--जिनके ही वशज पीछे चिंगिज खांके मंगोल थे--आधुनिक मंगोलियामे रहा करते थे। इनके आतंक और आक्रमणोंके मारे चीनी परेशान थे और इसीलिये उनसे बचनेके लिये विश्वविख्यात चीनकी दीवार बनी। हूणोंके पश्चिमी पड़ोसी शक थे। तूमन शन्-यूके बाद उसका पुत्र माउ-दुन् हूणोंका राजा हुआ, और वह १८३ ई० पू०में मौजूद था। इसने चीनको कई बार बुरी तरह परास्त किया, और उससे अपनी शर्तें मनवाई। इसके समय हूण राज्य पश्चिममे अल्ताईतक पहुंच गया, और पूर्वमें कोरियातक। अल्ताई और बलखाश्से पूर्वके शकों-ने माउ-दुन्की अधीनता स्वीकार की, और शायद इससे पहले ही बापके समयमें ही अल्ताईके उत्तरकी सोनेकी खानें हूणोंके हाथमे चली गई थीं। संभव है, अब भी वहां काम करनेवाले शक ही रहे हों। जो भी हो, माउ-दुन्ने शकद्वीपके कुछ भागपर अधिकार करके भी उसने अपनी तरहके घुमतू शकोंके उच्छेद करनेकी अवश्यकता नहीं समझी। उसके पुत्र ची-युइ (मृत्यु १६२ ई० पू०)ने शकोंके साथ पिता जैसा बर्ताव नहीं करना चाहा और उसने १७२ ई० पू०में शकोंके उच्छेदका काम शुरू किया। उसने तरिम्-उपत्यकामें बस गये शकों (यू-ची)के राजाको मारकर उसकी खोपड़ीका मद्य-चषक बनाया। इस समयसे शकों और हूणोंका संघर्ष शुरू हुआ, और शकद्वीपके पूर्वी भागमें खलबली मच गई। शक अपने पुराने स्थानको छोड़कर दक्खिनकी तरफ भागने लगे। दक्खिनकी तरफ भागनेवालोंमें सबसे पहले थे यू-ची, जिन्होंने ई० पू० १३० में बाख्तर (बलख)में ग्रीक-बाल्हीक राज्यको समाप्त कर अपने राज्यकी स्थापना की, और इस तरह हिंदुकुशतकका भूभाग शकोंके हाथमें चला गया।

हूणोंके दक्षिणी पड़ोसी चीनी उनसे तंग आये हुये थे। हूण उन्हें दुधार गाय समझते थे, और चीनी किसान एवं शिल्पी जो कुछ धन जमा करते, हूण सवार आक्रमण कर लूट ले जाते। जब हूणों-का शकोंसे भी संघर्ष हो गया, तो उनसे मिलकर एक साथ हूणोंपर आक्रमण करनेके लिये चीनने अपने एक सेनापति और महापर्यटक चाङ-क्यान्को १३८ ई० पू०मे शकोंके पास दूत बनाकर भेजा। चाङ रास्तेमे हूणोंके हाथमे पड़ गया और दस सालतक उनका बंदी रहा। इस वक्त त्यान्-शाङ और अल्ताई पर्वत-मालाओंके बीच इली-उपत्यकामें वू-सुन् शक रहा करते थे। किन्हीं-किन्हीं विद्वानोंका कहना है, कि वू-सुन् कुषाण शब्द हीका चीनी रूपान्तर है। जब वू-सुनोंने १२८ ई० पू० में हूणोंसे अपनेको स्वतंत्र कर लिया, तो चाङ-क्यान्को मुक्ति मिली और वह फर्गानाके रास्ते सिर-तटपर खोकंद नगरमे पहुंचा। वह पहला चीनी यात्री था, जिसने इन देशों और निवासियोंका सुंदर वर्णन किया, जिसका पीछेके दूसरे चीनी यात्रियोंने अनुकरण किया। चीनने यू-ची सरदारोंसे मिलकर उन्हे चीनके सहयोगसे पश्चिमकी तरफसे हूणोंपर हमला करनेके लिये प्रेरित किया। लेकिन यू-ची इसके लिये तैयार नहीं हुये। उन्हें अपना देश छोड़े ३० सालसे अधिक हो गया था। यद्यपि वह अब भी सोग्द, तुषार और बाख्तरमें घुमंतू जीवन ही बिता रहे थे, लेकिन उनके लिये नगरों और गांवोंके रहने-वाले सोग्दी (ताजिक) सारी भोग-सामग्री जुटाते थे। यद्यपि चाङ शकोंको हूणोंके विरुद्ध नहीं कर सका, तो भी चीनने अपने ही बलपर एक विशाल सेना हूणोंके विरुद्ध १२१ ई० पू०में उनकी भूमि (आधुनिक मंगोलिया)पर भेजी। चीनियोंकी भारी विजय हुई, लेकिन घुमंतू जातियोंपर विजय टिकाऊ नहीं हुआ करती। पीछे फिर हूण लूट-मार करने लगे। लौटते वक्त चाङ-क्यान् फिर एक साल हूणोंका बंदी रहा। उसने चीन-सम्राट्से सारी बात सुनाते हुये जे-चुआनके रास्ते भारतसे संबंध स्था-पित करनेके लिये कहा। चीन-सम्राट्ने फिर उसे इली-उपत्यकाके वू-सुन् शकोंके पास साथ मिलकर हूणोंपर आक्रमण करनेकी बात करनेके लिये १२१ ई० पू०में भेजा।*

*देखो जिल्द १, हूण भी।

साथ-साथ यू-चियोंने भी अतमे (चाङ-क्यान्) की मृत्युके दो वर्ष बाद) चीनकी अधीनता स्वीकार की। यही समय है, जब कि शक-राजाओंने चीनी उपाधि 'देवपुत्र' धारण की ।

माउ-दुन्से परास्त यू-चियोंने लोबनोरके तटको छोड़ भागकर बाख्तरके ग्रीक-राज्यको हाथमे ले लिया था, लेकिन वह उतने हीसे संतुष्ट नहीं हुये । सीस्तान (उन्हींके नामसे शकस्तान) और बिलोचिस्तान होते ११० ई० पू०मे सिंध पहुंचे, फिर धीरे-धीरे समुद्र-तटके भागपर अधिकार करते ई० पू० ८० मे तक्षशिला और गाधारके स्वामी बन गये, और उन्होंने एक शताब्दीसे जड़ जमाये यवन-राज्यका उच्छेद कर दिया। इससे पहले ८७ ई० पू० में यू-ची काबुलको भी ले चुके थे । यु-ची सरदार मोग भारतका प्रथम शक राजा था। ११०-८०ई०तक गुजरातभी शकोंके हाथमे चला गया था। ६० ई० पू०तक मथुरामे भी शक-छत्रपी कायम हो गई। मोग (Maus) की मृत्यु ५८ ई० पू०मे हुई, जिसके बाद शकोंके भिन्न-भिन्न कबीलोंमे झगड़ा हो गया और राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। तब शकोके कुषाण कबीलेके यवगू (सरदार) कजुल कद्फिस् I की शक्ति बढ़ी । उसने हिंदुकुश पार हो बाख्तर और तुषारपर भी अधिकार कर लिया। कजुलके पुत्र वीम कद्फिस् द्वितीय (७५-७८ ई०), ने सारे उत्तर भारतको जीता । इसीका पुत्र 'वसीलेउस् वसीलेउन् कनेर् कोस्' (राजाधिराज कनिष्क) हुआ जिसने शक-संवत् चलाया और ७८-१०३ ईसवीतक राज किया। इसके सिक्के अराल-समुद्रसे बिहार तक मिलते हैं। शकोंमे यह सबसे बडा राजा था। इसे बौद्ध धर्ममे नये तौरसे दीक्षित होनेकी अवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यू-ची शकोंकी मूल-भूमि तरिम्-उपत्यकामे ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें ही बौद्ध धर्म पहुंच चुका था और शक ही नहीं, हूण सामन्तोंमे भी बौद्ध धर्मके माननेवाले थे।

शकोंके भिन्न-भिन्न कबीले ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमे इस प्रकार थे—(१) लोब्नोरके आसपास यू-ची, (२) इली-उपत्यकामे वू-सुन्, (३) इस्सिक्कुल् झीलके तटपर सइ-वाङ, (४) ऊपरी तरिम्-उपत्यकामे—जहां आजकल काशगर्-यारकन्द् नगर हैं,—मे कस या खश, (५) मध्य सिर-दरिया तटपर शक, (६) सिर-दरियाके मुहाने तथा अरालके पश्चिमी किनारेपर भी मसगेत (महाशक) रहते थे। जान पड़ता है, काशगरवाले कश नामी शकोंका ही एक उपनिवेश काश्मीरमे था, जिससे उसका यह नाम पडा। उधर हूण और चीनका द्वन्द्व जारी रहा। अंतमे ईसवी प्रथम शताब्दीके मध्यमें हूण चीनके प्रहारसे जर्जर होकर उसकी अधीनता स्वीकार करनेको मजबूर हुए। इसपर सारा हूण-जन उत्तरी और दक्षिणी दो भागोंमे विभक्त हो गया। यद्यपि विभाजन अधीनता स्वीकार करनेके विरुद्ध ही हुआ था, किन्तु स्वतंत्रतावादियोंके लिए वह बहुत महगा पड़ा। चीन और अपने भाइयोंकी सम्मिलित शक्तिके सामने अब निर्बल हो गये और ७३ ई०में उत्तरी हूणोंका पश्चिमाभिमुख महा-अभियान आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे शकद्वीपसे शकोंको हटाकर वह उनकी जगह लेने लगे, लेकिन सिर-दरियाके दक्खिन उन्होंने हाथ नहीं बढ़ाया। ३७० ई० में अराल और कास्पियन-तटपर रहनेवाले आलानोंका उन्होंने ध्वंस किया—यह भी शकोंका ही एक कबीला था। ३७५ ई०मे अपने सरदार बालामेर्के नेतृत्वमे दोन-तटपर पहुंच उन्होंने माओस्त-गत (जाट)को छिन्न-भिन्न किया। फिर द्नियेपर पहुंच गाथोंका ध्वस किया। आगे भी उनका प्रभुत्व बढ़ता ही गया और हूण-सरदार अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के समय मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक हूणों के हाथमे आ गया।

मंगोलियासे आरम्भ हो मध्य-दुनाइतक पहुंच गये पौने पांच सौ सालके इस भयंकर हूण-तूफानने सबसे अधिक क्षति शकोको पहुंचाई, और वोल्गासे गोबीतकके शकद्वीपको शकोंसे खाली करवा लिया। सबसे आखिरमें शकद्वीप छोड़कर भागनेवाले शक हेफ्ताल थे, जिन्हें गलतीसे भारतमें हूण और पश्चिममे श्वेत-हूण कहा जाता है। ३६० ई०में हूणोंके एक कबीले अवार (ज्वेन्-ज्वेन्)ने शक्ति सम्पन्न हो पश्चिमकी ओर बढना शुरू किया। इन्हींके प्रहार से उत्पीड़ित हो हेफ्ताल भगे और धीरे-धीरे ४२५ ई०मे उन्होंने सारे मध्य-एसियाको सिर-दरियासे हिन्दुकुशतक लेकर अपने पूर्ववर्ती कुषाण-राज्यका उच्छेद किया। इनका संगठन कबीलाशाही था, किन्तु सरदारोंका बहुत प्रभाव था। किदार इनका प्रथम महान् नेता था। इसीके नामसे

हेफ्तालोंका दूसरा नाम किदारीय हूण पड़ा। यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि हेफ्तालों (किदारियों) का नाम हूण इसीलिये पडा, कि वह हूणोंके शासनमें चिरनिवासके बाद वहांसे भागकर आये थे। किदारका पुत्र ४५५ ई०में श्वेत हूणोंका राजा था। संभवत: इसीका पुत्र तोरमान था, जिसने ग्वालियर और सागर-दमोहतकको जीत लिया था। ५०२ ई०मे इसकी मृत्युके बाद इसका पुत्र मिहिरकुल राजा बना। मिहिर मित्र (सूर्य) का ही प्राचीन फारसी रूप है मित्र—मित्र > मिथ्र > मिहिर। पीछे शकद्वीपियोके प्रयाससे मिहिर भी उसी प्रकार शुद्ध संस्कृत बन गया, जिस प्रकार शक-द्वीपीय ब्राह्मण शुद्ध भारतीय ब्राह्मण बन गये। कुल—यह हूणी शब्द गुल या ग्युलका अपभ्रंश है, जिसका अर्थ राजकुमार या दास होता है। तोरमान ने ग्वालियरमे सूर्य-मन्दिर बनवाया था, यह उसके शिलालेखसे पता चलता है। मिहिरकुलने मगधपर आक्रमण किया था, किन्तु मगधराज बालादित्यने उसे बुरी तरह हराया। ५३२-३३ ई०के आसपास मालवाके विजयी राजा यशोधर्मा विक्रमादित्यने मिहिरकुलको हराकर उसे कश्मीरकी ओर खदेड़ दिया। हूण नामसे प्रसिद्ध, किन्तु वस्तुत: शक मिहिरकुल अंतिम शक राजा था; जिसे भारतीय इतिहास जानता है। हेफ्तालोंकी राजधानी बुखाराके पास बरख्शा में थी, जहा हालकी खुदाईमें कितने ही भारतीय शैलीपर बने भित्तिचित्र मिले हैं।

हमने शकोंको ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीके आरम्भमें गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक अपने महाशकद्वीपमें बसे देखा। फिर उनकी एक शाखा यू-चीको मध्य-एसिया, तुषार, सीस्तान, सिन्ध, काबुल, तक्षशिला होते मथुरा और उज्जैनतक फैलते देखा। फिर यू-चीकी एक शाखा कुषाणोंको कनिष्कके रूपमें अराल-समुद्रसे बिहारतक राज करते पाया और अंतमें फिर तोरमान और मिहिरकुलके रूपमे शकद्वीपसे सबसे पश्चात् निकलें 'श्वेतहूण' नामधारी शकोंको मगधतक धावा मारते देखा। शकोंके सबसे प्रबल जातीय देवता सूर्य थे। मिहिरकुल (सूर्यदास) का नाम भी इसी बातका परिचायक है।

शकद्वीपीय ब्राह्मणोंके उद्गमके बारेमें यह सर्वमान्य कथा है, कि वह शकद्वीपसे आये और सूर्यपूजा उनका मुख्य कार्य था। शकद्वीप कहा था, इसे ऊपरके वर्णनसे अच्छी तरह समझा जा सकता है—अर्थात् वह गोबीसे वोल्गा और, पश्चिम कारपाथियातक फैला शकोंका-मुख्य निवास था। दक्षिणकी ओर भारततक भागकर आनेवाले शक पूर्वीय-शकद्वीपके थे।

शकद्वीपी ब्राह्मण और सूर्य-पूजाका घनिष्ठ सम्बन्ध है, इससे शक-द्वीपियोंकी सारी परम्परा सहमत हैं। शकद्वीपी-प्रधानतावाले इलाकोंमें अधिकांश सूर्य-मूर्तियां द्विभुज मिलती हैं। इनके कन्धेके ऊपर सिरकी दोनों तरफ सूर्यमुखीके फूल कुछ असाधारणसे जरूर मालूम होते हैं, क्योंकि भारतीय परम्परामे सूर्यमुखी फूलका कोई स्थान नहीं। लेकिन आश्चर्यकी बात तो यह है, कि सूर्यके पैरोंमे दो बूट होते हैं—बूटधारी हिन्दू देवता दूसरा कोई नहीं; और, यह बूट भी घुटनोंतक पहुंचते हैं। इसकी व्याख्या करते पंडित लोग कहते हैं, सूर्यके चरणके दर्शनसे आदमीका अमंगल होता है, इसीलिये सूर्यके पैरोंको ढांक दिया गया है। परन्तु उसे बूटसे ही ढांकनेकी क्या अवश्यकता? और, फिर वही बूट हमें मथुरासे मिली कनिष्क-प्रतिमाके पैरोंमें दिखाई पड़ता है। यहां कनिष्क, शक, सूर्यमूर्ति और सूर्यपूजक शकद्वीपी ब्राह्मणोंका पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। साथ ही यह भी जानना कुतूहलजनक होगा, कि आज भी रूसी लोग जाड़ोंमें उसी तरहके घुटनेतकके बूटों को पहनते हैं, जिन्हें कि हम कनिष्क और सूर्यकी प्रतिमाओके पैरोंमें देखते हैं।

इस समानताका क्या कारण है? इसके लिये आइये, हम शकद्वीपमें रह गये शकोंकी सुध लें। हूणोंने वोल्गासे पूरबके शकद्वीपको शकोंसे खाली करा लिया और वोलगासे मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक भी वह अपनी एक चौड़ी पट्टी खींचते चले गये। इन्हीं हूणोंके वंशज तुर्क, उइगुर और पीछे मंगोल हुए। फिर ५५७ ई०के लगभग तुर्कोंने मध्य-एसियासे अवारों (हेफ्तालों) का राज्य खतमकर वहां अपना अधिकार जमाया और पीछे तो मध्य-एसियामें न शकोंका नाम रहा, न आर्यवंशी सोग्दों (थोड़ेसे ताजिकोंको छोड़कर) का।

लेकिन, वोल्गासे पश्चिमकी कहानी दूसरी है। दोन और द्नियेपर तटपर जिन जातियोंका हूणोंने ध्वंस किया, वह शक-वंशकी थीं। ईसाकी ४थी-५वीं सदीमें मध्य द्नियेपर और क्रिमिया-में शकोंके बहुत-से पुराने नगर-ध्वस मिले हैं। यद्यपि उत्तरके घने जंगलोंमें अब भी घुमन्तू शक पशुपाल रहा करते थे, लेकिन द्नियेपर और क्रिमियाके तटपर वह गांवो और शहरोंमे रहने लगे थे, और ग्रीक सभ्यतासे बहुत प्रभावित हुए थे। हूणोंने अपनी ध्वंस-लीला मचाकर सभ्यताकी इस प्रगतिमे बाधा डाली। ६ठी सदीमे हम पश्चिमी शकोंके कबीलोंमे वेन्द (वेनेत्), अन्त, स्लाव, और सरमात् नामके कबीले पाते हैं। अकदमिक् देर्भाविनके अनुसार इनमे पहले तीन एक ही जातिके नाम थे, और सरमात् भी शकोंकी ही जाति थी। आगे चलकर पश्चिमी शकद्वीपके ये सारे शक स्लावके नामसे मशहूर हुए।

शकोंकी पुरानी नगरियोकी खुदाईमे निकली चीजे भी बतलाती है, कि आधुनिक स्लाव उन्हींके वंशज हैं। शकोंके रेखाचित्र, दीवार और पात्रोंके अलंकरण अभीतक उक्रइनके गांवोमे प्रचलित हैं। उनके आभूषण रूसी किसानोमे तबतक प्रचलित थे, जबतक कि उनमे पश्चिमी सभ्यता भीतरतक नहीं घुस गई। उनके गोखरूवाले सोनेके कुंडल और हसलिया तो आजके भारतमे भी देखी जाती है। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा, हूणोके तूफानने काकेशस और कालासागर तटसे शकोंका सबंध तोड़ दिया। अब वहा हूण कबीले पशु-चारण करने लगे। यही हूण कबीले पीछे पेचेनगा अथवा वोल्गा-तटपर वोल्गार, काकेशसके पास खाजार (काजार) आदि नामसे मशहूर हुए। हूण-उपद्रवके कारण शक अपनी दक्षिणी भूमिसे ही वंचित नहीं हुए, बल्कि उनका उन्मुक्त सभ्यता-प्रवाह भी रुद्ध हो गया, और एक बार फिर वे केवल घुमन्तू-जीवन बितानेपर मजबूर हुए। इतना ही नहीं, इसी परिवर्तनके साथ शक या स्किफ नाम भी इतिहाससे लुप्त हो गया और आगे हम अन्त, वेन्द नामवाले कबीलोको पाते हैं। अरबोके प्रभावसे जिस तरह ८वीं शताब्दीमें पहुंचते-पहुंचते सारा ईरान और मध्य-एसिया मुसलमान हो गया, इसी तरह खजार, बुल्गार आदि हूण-जातियोंने भी इस्लाम स्वीकार किया (बुल्गार आजकल चुवाश के नामसे पुकारे जाते हैं, उनका आजकलके बुलगारिया देशसे कोई संबध नहीं। बुलगारियावाले स्लाव हैं, जब कि वोल्गावाले बुल्गार हूण-वंशज)।

अभी भी रूसी ईसाई नहीं हुए थे, और बहुतसे पुराने देवी-देवताओको मानते थे; जिनमे सूर्य सबसे बड़ा देवता था। सूर्यके एक खास पर्वपर वे लोग घीमे पके लाल चीले उसी तरह खाते थे, जैसे बिहारमे आज भी कार्तिककी सूर्य-षष्ठीके दिन लाल ठकुआ खाया जाता है। आज भी यद्यपि उस दिन रूसी लोग मीठे चीले खाते है, पर अब उनमे पुराने धर्मका माननेवाला कोई नहीं है। ९वीं शताब्दीके एक अरब पर्यटकने वोल्गाके किनारे खरीद-बेचके लिये आये रूसियोंको देखा था। वहां एक रूसी मर गया। लोगोंने लकड़ीकी चिता बनाई और पतिके साथ पत्नी भी सती हो गई।

आगे चलकर इन सभी शक कबीलोंका स्लाव (स्क्लाव <शकल) या श्रव नाम पड़ गया। जिस तरह हमारे यहां उपनिषद्-कालमे सोमश्रवा आदि श्रवान्त नाम बहुत होते थे, उसी तरह स्लावोंमें स्लावांत (स्वेत-स्लाव, व्याचिस्लाव) नाम अब भी होते है—मोलोतोफका नाम व्याचिस्लाव है। स्लाव जाति आज दो भागोमें विभक्त है—(१) पश्चिमी स्लाव जिनमें पोल, चेक और स्लावक है, और (२) पूर्वी स्लाव, जो दक्षिणी और उत्तरी दो भागोंमें विभक्त हैं। दक्षिणी स्लावोंमे बुलगर, सर्व और क्रोवात (क्रोत) सम्मिलित हैं और उत्तरी स्लावोंमे रूसी, उक्रइनी तथा वेलोरूसी है। पोल-चेक् भाषाओंका रूसीसे उतना ही अंतर है, जितना अवधीका बंगलासे। दोनों एक-दूसरेकी भाषाको कुछ कठिनाईसे समझ सकते है। रूसी-उक्रइनी भाषाएं भोजपुरी और मैथिलीकी तरहकी है, और रूसी-बुलगारीमें उतना ही अतर है, जितना मैथिली और अवधीमे। सारे पूर्वी स्लाव एक-दूसरेकी भाषा समझ सकते हैं। पश्चिमी स्लावोंके उच्चारणमे अंतर कुछ अधिक हो गया है, जिससे वे एक-दूसरेकी भाषाको सुगमतासे नहीं समझ सकते।

स्लावोंमें सबसे पहले बुलगारोंने सभ्यतासे संबंध स्थापित किया और ग्रीसके ईसाइयोंके संपर्क मे आ ईसाई-धर्मको स्वीकार किया। छठी-सातवीं सदीमे हुगर या मजार (अत्तिलाके हूणोके वंशज)

के बलको तोडनेमें बुलगारोंने बहुत काम किया, और वे बढ़ते-बढ़ते ग्रीसके पड़ोसी बन गये। यद्यपि उन्होंने ग्रीसको सांस लेनेकी फुर्सत दी, किन्तु स्वयं कांटेकी तरह चुभने लगे। लडाकू घुमन्तुओंको पालतू बनानेके लिये संस्कृतिमें उन्नत धर्म बहुत अच्छे साधन होते हैं। बुलगारोंपर भी ग्रीसने वही शस्त्र चलाया। स्लाव जातियोंका सबसे प्राचीन लिखित साहित्य बुलगारियाकी भाषामें ही मिलता है। उस वक्त पश्चिममें ईसाई-धर्म रोम और ग्रीक दो सम्प्रदायोंमें विभक्त हो चुका था। दोनों सम्प्रदायोंमें जहां क्रिया-कलाप और मतमतांतरका कितना ही अंतर था, वहां दोनोंकी लिपियां भी अलग थीं। लिपिहीन असभ्य जातियां जिस चर्च (सम्प्रदाय)से धर्मकी दीक्षा लेती, उसीकी लिपिको स्वीकार करती हैं। स्लाव-जातियोंमें पोल, चेक, स्लावक यानी सारे पश्चिमी स्लाव तथा पूर्वी स्लावोंमें क्रोवात रोमन-चर्च द्वारा ईसाई बनाये गये, इसलिये उन्होंने रोमन-लिपि स्वीकार की। बाकीने ग्रीक चर्चका अनुयायी बन ग्रीक-लिपि स्वीकार की।

बुलगारियाके ईसाई होनेका यह मतलब नहीं था, कि सारे पूर्वी स्लाव भी जल्दी ही ईसाई बन गये। स्लावों की मूल भूमिमें अब भी पुराने देवी-देवताओंका जोर था। ये उस समय बहुत लड़ाके भी थे। हूणी कबीलोंका जब-जब प्रहार ग्रीसपर होता, तो वह स्लावोंसे मदद मांगता। क्रिमियामें ग्रीक लोगोंकी बहुत-सी व्यापारिक बस्तियां थीं और यहां हर वक्त उनका हूण-वंशज पेचेनगोंसे झगड़ा रहता था। अभी इन स्लावोंमें राजा नहीं थे, कबीलाशाहीका जोर था। सारा काम जन-सभा (वेचे) कबीलेका जिर्गा करता था। लेकिन जैसे-जैसे बाहरके राज्योंसे लडने-भिड़ने और लूट-पाटकी प्रवृत्ति बढ़ती गई, वैसे-ही-वैसे सरदारोंका अधिकार बढा।

९वीं सदीके अन्तमें एक स्वीडिश राजकुमार रूरिक् आकर उनका शासक बन गया। रूरिक्के पुत्र ओलेग (९११ ई०) और ईगर (९११-५७ ई०) ने अपनी लडाकू प्रजाको खूब संगठित किया और दूर-दूरतक विजय-यात्राएं कीं। ईगरने काकेशसके खजारोंके खान और ग्रीस (बिजन्तीन) के सम्राट् दोनोंको नतमस्तक किया। ग्रीकोंने उसे एक किला और बहुत सा धन क्षतिपूर्तिके तौरपर दिया, साथ ही संधिद्वारा ईगरको वचनबद्ध किया, कि तुर्की घुमंतुओंके आक्रमणके वक्त वह ग्रीक-साम्राज्यकी रक्षा करेगा। ईगरने अपनी शक्ति बहुत बढ़ाई। उसका पड़ोसियोंपर बहुत आतंक रहा। ईगरके पुत्र स्व्यातोस्लाव (९५७-७३ई०) ने पिताकी शक्तिको और आगे बढ़ाया। उसने हूणी बुल्गारोंके बोल्गा-तटवर्ती तथा उनके संबंधी चेर्कासोंके कूबन-तटीय नगरोंको लूटा, और अपने पूर्वज शकोंके खोये काला-सागर-तटपर फिर प्रभुत्व जमाते हुए कियेफको एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानीमें परिणत कर दिया। स्व्यातोस्लाव जब विजय-यात्रा करते (९६९-७१-ई०) दुनाइ (डैन्यूब)के तटपर पहुंचा, तो ग्रीस-सम्राट् घबड़ा उठा और उसने कालासागरके उत्तरी तटके बयाबानके निवासी पेचेनेगा घुमंतुओं और दुनाइ-तटवर्ती बुलगारोंको मिलाकर स्व्यातोस्लावका मुकाबला करना चाहा। लेकिन ग्रीसको स्व्यातोस्लावके साथ संधि करनेको मजबूर होना पडा। स्व्यातोस्लाव अपने समयका महान् विजेता था। ग्रीक ऐतिहासिक उसके आकार-प्रकारके बारेमें कहते हैं—"उसका आकार मझोला, नाक उभड़ी हुई, दाढी भरी और लंबी, शिर बिलकुल नंगा, सिर्फ एक ओर कुछ छुटा बाल (शिखा) था, जो कि कुलीनताका परिचायक था। उसकी गर्दन मोटी, कंधे चौड़े, सर्वांग संतुलित शरीर। उसके एक कानमें दो मोतियों और पद्मराग-जटित सोनेका कुंडल था।" स्व्यातोस्लावने विजयीके तौरपर गर्वके साथ विजन्तिन (ग्रीस) की राजधानी कस्तन्तिनोपोलमें प्रवेश किया। लौटनेपर पेचेनेगा घुमन्तुओंने दनियेपरके जल-प्रपातोंके पास धोकेसे उसे मार डा।

स्व्यातोस्लावका पुत्र व्लादिमिर (९७८–१०१५ ई०) पिताकी ही तरह बहादुर निकला और नतमस्तक शत्रुओंको उसने शिर उठानेका मौका नहीं दिया। उसने अपने राज्यका विस्तार पश्चिममें बाल्तिक समुद्रतक किया और पोलों तथा लिथुवानियोंके कितने ही नगरोंको छीन लिया। विजंतिन्का तो वह सरक्षक ही था। जब ग्रीक सेनाने विद्रोह किया, तो सम्राट्की गहारपर व्लादिमिर ने जाकर उसे दबाया। सम्राट्ने पारितोषिकमें अपनी बहनसे व्लादिमिरका ब्याह कर दिया। विजंतिन् दरबारकी तड़क-भड़क, उसके सामंती विलास, कला, संगीतने व्लादिमिरको मुग्ध कर दिया, और

९८८ ई०मे उसने ईसाई-धर्म स्वीकार करनेका निश्चय किया। उसने अपनी प्रजाको हुक्म दिया, कि कल द्निये़परमें जो धर्माभि-षेक (बप्तिस्मा)के लिये नहीं पहुंचेगा, वह मेरी कृपाका पात्र नही होगा। किसकी मजाल थी, राजाकी कृपाका अभाजन हो। इस तरह प्राय. सारी राजधानी एक दिनमे ईसाई बन गई। ईसाई-पुरोहितोंने परामर्श दिया और व्लादिमिरकी आज्ञासे किये़फके सारे देवालय स्लावोके पुराने देवताओंसे खाली हो गये। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि लोगोंने अपने हजारों वर्षोंसे चले आये धर्म और देवताओंको असानीसे छोड़ दिया। उसके लिये कितनी ही जगह विद्रोह हुए।

किये़फके रूसोने इस तरह अपनी प्राचीन संस्कृतिकी बहुतसी निधियोंको खोया। पुराने देवताओं-की मूर्तियों और पूजा-प्रकारोंके साथ उनके हजारों शब्द भी लुप्त हो गये। लेकिन अब उसकी जगह उन्हे एक उन्नत संस्कृतिसे सपर्क स्थापित करनेका मौका मिला, अपनी भाषाके लिए लिपि मिली, ग्रीक-साहित्य, ग्रीक-कलाके सीखनेका रास्ता खुल गया।

१०१५ ई०मे व्लादिमिरके मरनेपर उसके लडकोमे झगडा हो गया और तीन पुश्तोके परिश्रमसे एकताबद्ध किये़फ-रूस-राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। इसमें संदेह नहीं, कि प्राचीन परम्परासे अत्यत विच्छेद होना भी इसका एक कारण हुआ। ग्यारहवीं सदीसे रूस बहुतसे राजुलोमे विभक्त हो गया। तेरहवीं सदीके मध्यमे पहुचनेतक छिङ्गिस् खानके मगोल उसके पौत्र बातूखानके नेतृत्वमे पहुंचे और फिर प्राय. डेढ सौ वर्षोंतक रूसियोंको शिर उठानेका मौका नही मिला। हा, मंगोलोंके शक्तिशाली शासनसे लाभ उठाकर मास्कोके राजुलने अपने प्रभावको बढाया—मगोलखानके कृपापात्रके तौरपर ही। तेमूरने दिल्ली लूटने (१३९८ई०)से तीन साल पहले जब (१३९५ई०) मास्कोके पास तकका धावा करके मंगोल-खान तोक्तामिशकी शक्तिको क्षीण कर दिया, तो मास्कोके महाराजुलोंको रूसको एकताबद्ध करनेका मौका मिला। यह काम वासिली प्रथम (१३८९-१४२५ई०)के कालमें आरम्भ हुआ, और उसे पाचवें उत्तराधिकारी तथा प्रपौत्र महाराजुल (पीछे जार) क्रूर ईवान चतुर्थ (१५३३-ई०) ने पूर्णताको पहुंचाया। उसके पुत्र फेदोर (१५८४-९८ई०) के साथ रुरिक-वशकी समाप्ति हो जाती है। लेकिन, वह अपने कर्तव्यको पूरा कर चुका था। अब रूसी रियासतें मिलकर एक ही नहीं हो गई थीं, बल्कि रूसी राज्य कास्पियनके तटपर पहुंचकर वोल्गा और उरालसे भी पूरबकी तरफ पैर बढा चुका था। यह अकबरका समय था, जबकि भारतने भी देशकी एकतामे कम सफलता नहीं प्राप्त की थी।

हमने देखा, हूणोंके प्रहारके बावजूद भी पश्चिमी शक-द्वीपके रहनेवाले शक एक बार जगलों की तरफ भागे। फिर स्लावोके रूपमे प्रगट हो अंतमें आधुनिक रूसियों और दूसरी स्लाव जातियोंकी शक्लमे अस्तित्वमे आये, और आज भी मौजूद है। शकद्वीपसे भागकर पूर्वी शक दूसरे कितने ही देशोमें बिखरने भारतके शकद्वीपी ब्राह्मणों, कितने ही राजपूतों, गूजरों, जाटों आदिके रूपमे हिन्दुओमे मिल गये। इस सारे इतिहासपर गौर करनेसे स्पष्ट हो जायेगा, कि क्यों रूसी भाषासे संस्कृतका इतना घनिष्ठ सबध है। यह इसीलिए कि रूसी उन्हीं शकोंके वंशज हैं, जिनके भाई-बद आर्य पुराने कालमे आकर हिन्दुस्तान और ईरानमें बस गये, और उनका पारस्परिक संबध वहीं नहीं टूट गया, बल्कि सहस्राब्दिया बीतनेपर फिर बहुतसे शक हिन्दुस्तानमें आये। संस्कृत और रूसी भाषाओमे जो घनिष्ठ संबध मालूम होता है, वह उसी पुराने संबंध ही के कारण।

स्लाव भाषा—रूसी भाषाकी संस्कृतसे कितनी समीपता है, इसके लिये शब्दकोष और शब्द-विश्लेषणको देनेसे पहिले यहां दो शब्द कहनेकी अवश्यकता है। यह एक मान्यता बन गई है, कि लिथुवानी भाषा संस्कृतके बहुत समीप है। रामानंद और कबीरके समयतक लिथुवानी लोग ईसाई धर्ममें दीक्षित न हो अपने प्राचीन धर्मपर आरूढ़ थे, उनके कितने ही देवता वैदिक देवताओंमेंसे थे। उनकी भाषाका विकास भी बहुत मंद गतिसे हुआ था। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं, कि लिथुवानी भाषा रूसीकी अपेक्षा संस्कृतके बहुत समीप है। हिन्दी-युरोपीय भाषाओंके 'शतम्' और 'केन्तम्' दोनों भाषा-समुदायोंमे स्लाव-भाषाये संस्कृत और ईरानीके साथ 'शतम्' वंशकी है, जब कि लिथुवानीकी समीपता 'केन्तम्'

से ह्। उच्चारण भी उसके रूसीकी अपेक्षा संस्कृतसे कितन दूर है, इसे निम्न तालिका मे देखिये :—

लिथुवानी	प्राचीन स्लाव	रूसी	संस्कृत
केतुरि	चेतुरे	चेतीरे	चतुर्
केत्विर्तम्	चेत्वरेते	चेत्वेर्त	चतुर्थं
ब्रोतेरेलिस्	ब्राते	ब्रात्	मातृ
मोते	माति	मात्	मातृ
गुवस्	झिवे्	झिव्	जीव

रूसी भाषा स्लाव-भाषा-वंशकी पूर्वी शाखाकी एक भाषा है । पूर्वी स्लाव-भाषायें हैं—रूसी, बोल्गारी और सेर्बी । उक्रइनी और वेलोरूसी भाषायें यद्यपि अब स्वतंत्र साहित्यिक भाषायें हैं, किन्तु वह रूसीके अत्यत समीप हैं। इसलिये तालिकामें उनके शब्द पृथक् नहीं दिये जा रहे हैं। पूर्वी और पश्चिमी स्लाव-भाषाओंका आपसका सम्बन्ध निम्न तालिकासे मालूम होगा —

पूर्वी स्लाव				पश्चिमी स्लाव		
प्राचीन स्लाव	रूसी	बोल्गारी	सेर्बी	स्लोवानी	चेकी	पोली
बेल् (था)	बिल्	बिल्	बियेल्	बेल्	बेलु	इयलु
दिम् (धूम)	दिम्	दिम्	दिम्	दिम्	दूम्	दूम्
द्न्. (दिन)	देन्	देन्	दन	दन	देन्	जिएन्
स्न (सूनु)	सोन,सिन्	सन्	सन	सन्ज	सेन्	सेन्
म्लेको (दूध)	मोलोको	म्लाकु	म्यिेको	म्लेको	म्लेको	म्लेको
ग्लवा (गल)	गोलोवा	ग्लवा	ग्लवा	ग्लव	ग्लव	ग्लोवा
स्म्रत् (मृत्यु)	स्मेर्त्	स्म्रत्	स्म्रत्	स्म्रत	स्म्रत्	श्मिएरे
मृत्व (मृत्यु)	मेर्त्विइ	म्रत्व्	म्रत्	म्रतेव	म्रत्तु	मर्त्वु
प्ल.न् (पूर्ण)	पोल्न	प्लन्	पुन्	पोल्न	प्ल्नु	पेल्नु
पत् (पच)	प्यत्	पेत्	पेत्	पेत्	पेत्	पिएत्स
रउका (कर)	रुका	(रका)	रुका	रोका	रुका	रेका
मेझ्दा (मध्य)	मेझा	मे झ्दा	मेह	मेया	मेजे	झिएउजा
ज़ेम्ल्यु (ज्मा)	ज़ेम्ल्या	ज़ेम्या	ज़ेम्ला.	ज़ेम्ल्या	ज़ेमे	ज़िएमिए

हम रूसी शब्दों* को नागरी अक्षरमें दे रहे हैं, जिसमें कुछ नये संकेतोंकी अवश्यकता है। ओ का उच्चारण रूसीमें कभी ओ और कभी अ होता है, किन्तु सन्देह उत्पन्न हो जानेके डर से हमने यहां उच्चारणका विचार न कर लिखे जानेवाले अक्षर (ओ)का ध्यान रखा है। रूसी स्वरोका ह्रस्व-दीर्घ उच्चारण ऐच्छिक है, इसलिए नागरी स्वरोंमें ह्रस्व-दीर्घको ध्रुव नहीं समझना चाहिये। रूसीमें उदात्त संकेत लगानेकी प्रथा है, जिससे उच्चारणमें ही अन्तर नहीं हो जाता, बल्कि अर्थमें भी भेद हो जाता है। हम यहां उदात्त संकेतको विस्तार और दुरूहताके कारण नहीं दे सके।

*रूसी शब्दोंके संग्रहमें हमने ब. क. म्युलर, स. क. बोयानुस्के कोश (रुस्स्को-आंग्लिइ-स्किइ स्लोवार, मास्को १९३५) के ६०,००० शब्द, तथा ब. फ. रोतश्ताइन्के कोश (मास्को १९३८)का उपयोग किया है।

परिशिष्ट (१)

रूसी शब्द-कोश

(१) शब्द

अ—अ (निधार्थ)
अजर्त—आज्वाल, ताप
आ—आह !
बेग्—वेग (दौड़)
बेगत् —वेजर्ति (दौडना)
बेग्लेत्स—वेगक (भगेलू)
बेग्स्त्व—वेगकत्व (भगेलुत्व)
बेगून्— वेगकत्व (भागून, भग्गू)
बेजात् —वेजति (भागना)
बेज्—विना (विना)
बेज्-बोज़्निक्—वि-भगक (आनीश्वरवादी)
बेज्-वेत्रेन्निइ—वि-बातीय (बिना (वायुका)
बेज्-बोलोसिइ—वि-बाल, (केशरहित)
बेज्-गलविइ—वि-गाल (शिर बिना)
बेज्-गोलोविइ-वि-ग्रीव (शिर बिना)
बेज्-दोज्दिए—विदुह (वर्षा बिना)
बेज्-दिम्निइ—वि-धूम (धूम-रहित)
बेज्-जिज़्नेविइ—वि-अ-जीवन (जीव बिना)
बेज्-नोसिइ—वि-नास, (नासिका बिना)
बेजो—वि (बिना)
बेज्-रोगिइ—विश्रृंग (श्रृंग बिना)
बेर्योज़ा—भुर्ज (वृक्ष)
बेस्—वि (बिना)
बेस्-प्रि-मेस्नि—वि-प्र-मिश्रण (मिश्रण-रहित)

वेस्-सेर्देच्नोस्त्.—वि-हृदयत्व (हृदयहीनता, श्रद्-हीनत्व)
बेस्-स्लावियें—वि-श्रवी (कीर्तिहीन)
बेस्-स्लावेस्निइ—वि-श्रवणक (वाणी-हीन)
बेस्-स्मेर्तिये—वि-मर्यता (अमरत्व)
बेस्-स्नेज्निइ—वि-स्नेही (हिम-हीन), स्नेह-स्नेज़ (बर्फ)
बेस्-सो-ज़्नातेल्-निइ—वि-स-ज्ञातर् (चेतना-हीन)
बेस्-सोन्नित्सा—वि-स्वप्नता (निद्राहीनता)
बेस्-स्त्राश्निइ—वि-त्रास्नु (त्रास-हीनता)
बिर्युक—वृक (भेड़िया)
बिस्—द्विस् (फिरसे)
बित् —भिद् (तोड़ना, ताडना)
बित्.स्या—भिद् (ताड़ना, भिड़ना)
बत्.यों—भिद् (तोड़ना, भिड़ना)
ब्लागो—भर्ग (अच्छा, आशी.)
ब्लागो-दात्.—भर्गदाति (आशी-र्दान)
ब्लागो-देतेल्.—भर्गदात् (उपकारक)
ब्लागो-देयानिये—भर्गदान (आशीदान)
ब्लागोइ——भर्ग (अच्छा, सुखी, उपयोगी)
ब्लागो-प्रियात्निइ—भर्गप्रियत्नु, (प्रिय)
ब्लागो-रोद्निइ—भर्गरोघ्नु (सुजात)

ब्लागो-स्लोवेनिये—र्गभ-श्रवण। (मंगल सुनना, आशीर्वचन)
ब्लागो-त्वोरीतेल्—भर्गत्वष्टर् (उपकारक)
बोग्—भग (भगवान्)
बोगातेइ—भगत (धनी पुरुष)
बोगात्स्त्वो—भगत्व (धनाढ्-यता)
बोगाच्—भगक (धनाढ्य)
बोगी-निया—भगिनी (भगवती)
बोगो-मातेर्.—भगमातर् (भगवान्की मां, मरियम)
बोगो-पोची-नियेभग-पूजा
बोगो-रोदित्सा—भग-रोहिणी (मरियम)
बोगो-स्लाविये—भगश्रवणा (भगवान्की भक्ति, धर्म-शास्त्र)
बोगो-स्लुज़ेनिये—भगश्रूषणा (भगवान्की सेवा)
बोझे मोइ—भग मे ! (मेरे भग वान्)
बोजेस्त्वो—भगत्व (भगवत्-तत्त्व)
बोक्—पक्ष, वक्षशरीर-पार्श्व)
बोकोवाइ—पक्षत. (शरीर-पार्श्वसे)
बोकोम्—पक्षेण (शरीरपार्श्वसे)
बोले—भूरि (बहु, अधिक)
बोलेये—भूरि (बहु अधिक)
बोल्लात्.—बोल्लति (बोलना)
बोल्तोव्न्या—बोल्लति (बोलना)
बोल्तिइ—बोल्लन्त (बोलक्कड़)
बोल्तून्—बोलतू (बोलक्कड़)
बोल्शे—भरिश. (बहुत—सा) कुस्क्या
बोल्शेविक—भरिक (बहुमतिक)

बोल्शिइ.–भूरिशः (अधिकतर)
बोल्.शे–भूरिशः (अधिकतर)
बोल्. शिन्स्त्वो–भूरित्व (बहुमत)
बोल्. शोइ–भूरिशः (बहुतर)
बोयाउन.–भयान (भय, आतंक)
ब्रात्–भातृ
ब्रतानिये–भ्रातृना (भाई बनना)
ब्रात्वा–भ्रातृक (भैयवा)
ब्रात्स्किइ–भ्रातृकीय (भाई-चारा)
ब्रात्.–भरति, हरति (लेजाना)
ब्रात्. स्या–भ(ह)रति (लै जाया जाना)
ब्रेम्या–भर (भार)
ब्रोवि–भ्रू (भौ)
ब्रोव्.–भ्रू (भौ)
ब्रोदित–बर्धतिः (उठना, हटाना)
ब्रोस(सि)त्.(स्या)–भ्रशति (फेंकना, फिकाना)
बुदुचि–भूतिः (होना)
बुदुश्चिइ–भविष्यतिः (होने वाला)
बुद्.-भूतिः (हो सकना)
बिवात्.–भवति (हो जाना)
बिक्–वृष (बैल)
बिलो–भूत. (भइल, भोजपुरी)
बित्.–भूतिः (होना)
वाम्–वां (तुमको)
वामि–वा (तुम्हारे द्वारा)
वस्–वः (तुम, तुम्हारा)
वश्–वः
व्-वेगात्.–वि-वेजतिः (भीतर भागना)
व्-वेदेनिये–वि-वेदना (निवे. (दना, भूमिका)
व्-वेस्ति–विविशति (भीतर लाना)
व्-व्यज्ञगात्.-वि-वधति (भीतर बांधना)
व-ग्लुबह्–वि-गर्भ (हृदयमे)
व-दलेके–विदीर्घ (दूर)

व्-द्वोये–द्वि. (दो बार)
व्दोवो–विधवा
व्दोव्स्त्वो–विधवात्व
वेदत्.–ब्रेत्ति (जनाना)
वेदेनिये–वेदना (जाना, विद्या)
वेलीकान्–वरक (बड़का)
वेलीकिइ–वरक (बड़ा)
वेलिचाइशिइ–वरेण्य (सबसे बड़ा)
वेर्नुत्–वर्तयति (लौटाना)
वेर्तेत्.–वर्तयतिः (घुमाना)
वेर्तूश्का–वर्तुक, (लट्टू, परेता)
वेसेन्निह्–वासंतिक
वेस्ना–वसंत
वेस्.–स्वे (सारे)
वेतेर्–वात (हवा)
वेतेरोक्–बातक (हवा)
वृज्-वेगात्–विवेजति (दौड़ जाना)
वेशात्.–विशति (लटकना)
वयात्–वयति (फूक लगाना, फटकना, बुनना)
विवात्.–भवति (वो, दीर्घ जीयो)
विद्–विदि (देखना, प्रकट होना)
विदेनिये–वेदना (दर्शन)
वीदेत्.–वेत्ति (देखना)
विद्नेत् स्या–वेद्द ते (दिखाई देना)
ब्-लेतात्.–वि-डयति (उड़ना)
व्-ल्युवित्.–वि-लोभति (प्रेम में पड़ना)
व्-ल्युबन्योन्नोस्त्–विलोभित्व (प्रेम-परायणता)
व्-ल्युब्ल्यत्–बिलोभति (प्रेम करना)
व्-ल्यपत्.स्या–वि-लिंपति (चिपकाना)
व्-माजत्–विमाषति (चिपकाना)
व्-मेशातेल–विमिश्रयितर् (बीचमें पड़नेवाला)

व्-मेशिवात् –विमिश्रक्लि (मिलाना)
व्-नीज–वि-नीचैः (नीचे)
व्-नीजु–नीचैस् (नीचेकी जगह)
व्-निकात्- (निगाह करना)
व्-नोवे- वि-नव (नया)
व्-नोसित्.–वि-नेषति (भीतर लाना)
व्-नुत्रि–अन्तरीय (भीतरमें)
वोदा–उद (पानी)
वोदापाद्–उदपाद्व
वोद्निक–उदनिक (जलकल)
वोज्–वाह (गाड़ीका बोझ)
वोज्.–बुदित्. } वि-बोधिति
वोज्-बुउदात्. } (जगाना, तेज करना, बढाना)
वोज्-वेदेनिये–विबोधना (यशोगान करना)
वोज्-ब्रात् –वर्तति (लौटाना)
वोज्-विसित्–वि-विशति (उठाना)
वोजित्–बहति, त्रोहितः (लेजाना)
वोज्का–वाहक (गाड़ी ढोना)
वोज्ञोक्–वाहक (ढोनेवाले)
वोज्ञोपित्.–वि-ह्वति (पुकारना)
वोज्-रादोवात.स्या–वि-राधति (आनन्द मनाना)
बोल्–बैल (बैल)
वोल्क–वृक (भेड़िया)
वोलोस्—वाल (केश)
वोलचोनोक–वृक शाव (भेड़ियेका बच्चा)
वोप्रोस्–वि-प्रश्न (प्रश्न)
वो-प्रोसित्. } वि-पृच्छति
वो-प्रोसात्. } (पूछना)
वोर–हार (चोर)
वोसेम्.–अष्ट (आठ)
वोसेम-न-देस्यत्–अष्टादश (अठारह)
वोसेम्-देस्यत–अशीतिः (अस्सी)

वोस्-पोल्नित्–विपूर्णयति (अंदर भरना)
वोस्-सेदात्.—वि-सीदति: (बैठना)
वोस्-स्तवात्–वि-स्थाति: (विद्रोह में उठ खडा होना)
वोस्-ख्वलेनिये–वि-स्वरति: (प्रशंसा करना)
वोत्–वत् (यहा, हा)
व्-पदात्.-विपतति (गिरना)
व्-पिवत्.-विपिवति (पीना)
व्-प्लाव्.- वि-प्लाव (तैरना)
व्-प्लिवात्.-वि-प्लवति; (भीतर तैरना, नौयात्रा करना)
व्-पोल्ने- वि-पूर्ण (पूर्णतया, सारा)
व्रात्.–भ(ह)रति (लेटना)
व्-रेज़ात्.–विरेजति: (रेज़ीदन्-फ़ारसी)
व्-रेजक-वि-रेजक (काटना, भीतरी काट)
व्-सदीत्–विशातयति. (भीतर कुतरना)
व्-साद्निक–वि-सादनिक (घोड़े पर बैठने वाला, सवार)
व्स्यो–स्वे (सारे)
व्स्-क्रिचात्.–वि-क्रोशति. (चिल्लाना)
व्-स्लुख्–वि-श्रू (जोरसे बोलना)
व्-स्लूश्(इव)त्.स्या–वि-श्रूषति: (सुनना)
व्म्-पाचेइवात्–विपाययति
व्स्-पोइत् (पिलाना)
व्स्-प्लि(वा)त्.-विप्लवति (उतराना, तिरना)
व्स्-पो-म्नित्.–विप्र मनुति (सोचना, स्मरण करना)
व्–स्तवानिये-स्थापना (उठना)
व्-स्तावृका–वि-स्थापका (अंदर रखना)

व-स्तव्ल्यात्–वि-स्थापयति (भीतर डालना)
व्स्-व्याखिवात्.–वि-त्रासयति (हिलाना)
व्-तिकात्.–वि-टीकति (टिकाना भीतर डालना)
व्-शि(वा) त्–वि-सीव्यति (सीना)
वि–व: (तुम
वि-बेगात् वि-वेजति (दौड़ना)
वि-वेजात्
वि-बिवात्.–वि-भवति (मार गिराना)
वि-बिरात्.–वि-वरति (चुनना)
वि-बोर–वि-वर (चुनाव)
वि-बोर्का-विवरका (चुनना)
वि-ब्रासिवात्–वि-भ्रंशयति (फेंक देना)
वि-ब्रोसित्–वि-भ्रंशति (फेंक देना)
वि-वारिवात्.-वि-बालति (उबालना)
वि-वेदिवात्.–वि-विदति (पा-जाना)
वि-वेज़्ति } –वि-वहति (बाहर
वि-वोजित् } ले जाना)
वि-व्यजात्.–वि-बधति (बांधना, गूथना)
वि-इग्रात्.–वि-क्रीडति (जोतना, खेलना)
वि-गौवारिवात्.–वि-गवति (बौलना)
वि-दबित्.–वि-दाबति (दाबना)
वि-दिरात्.–वि-दारयति (बिदा-रना, फाड़ना)
वि-ज़्रितात्.–वि-छिनत्ति (काटना)
वि-ज़ौत्.–वि-हृवि (पुकारना)
वि-कज़ात्.–वि-काशवति खिलाना)
वि.-कपिवात्–वि-कल्पि (खौदना)
वि-क्लिकात्.–वि-क्लिकति (चिल्लाना)

वि-मिरानिये.–वि-मरण (मरना)
वि-नुदित्.–विनोदयति (जोर-डालना)
वि-पाद्–वि-पात (भीतर डालना घुसेड़ना)
वि-पदेनिये–वि-पतना (गिरना)
वि-पिलिवानिये–वि-पीडना (चीरना)
वि-पिसात्–वि-पिशति
वि-पिसिवात्– „ (लिखना)
वि-पोल्नेनिये–वि-पूर्णना (पूरना)
वि-रेज़्नेनिये–वि-राजना (प्रकाशन)
वि-रुगात्.–(रिगाना, गाली-देना, चिढ़ाना)
वि-स्लुशात्.–वि-श्रूषति (खूब सुनना)
वि-स्तवका-वि. स्थापका (प्रदर्शन)
वि-स्तुपात्.-विस्तोति (बोलना)
वि-सुशिवात्–वि-शुष्यति (सुखाना)
वि-सिपात्.स्या–वि-स्वपिति (खूब सोना)
वि-सिखात्.–वि-शुष्यति (सूखना)
वि-तिरात्.–वि-तिरति (झाड़ना पोंछना)
वि-त्योचिपात्–वि-तक्षति (आकार काटना)
वि-तोपित्-वितपति (गर्मकरना)
वि-त्यसात्-वि त्रासयति (हिला देना)
वि- त्रिखात्.–तृष
वित्.–भिद् (काट गिराना)
वि-त्यनुत्स्या–वि-तनोति (फैलाना)
वि-व्वेनिक्–त्रि.-त्रावनिक'
वि-उचान् (शिक्षित)

वि-चितात्.–वि-चितयति (पढ़ना)
वि-श्चुपात्.–वि-छुवति (छूना)
व्यज्‌नका–बधका (बोझबांधना)
व्यजात्.–बंधति (बांधना)
गदाल्का–गदका (भाग्य भाखना)
गदानिये–गदना (भाग्यभाखना)
गलेरा } -(गली, गलियारा)
गलेर्का }
गर्.–ज्वर (जलन)
गल्-स्तुक्–गल-बंधनी (टाई)
ग्दे–कुत्र (कहा)
गेइ–हे (संबोधनार्थ)
गिर्या-गुरु (भार)
ग्लवा-गल (शिर)
ग्लवाक्–गलक (सरदार)
ग्लोतात्.–गिलति (निगलना)
ग्लोत्का–गल (कंठ)
ग्लुबीना–गर्भीणा (गहराई)
ग्लुबोकिइ–गभिक, गंभीरक (गहरा)
गोवोर् (गवार्)–गवति (बोलना)
गोवोरित्. (गवरित्)–गवति (बोलना)
गोव्यादिना (गव्यादिना)–गव्यादनीय (गोमांस)
गोलोवा (गलवा)–गल (शिर)
गोलोस्-गलक–(स्वर)
गोलिइ–नग्न (नंगल)
गोरा (गरा)–गिरि (पहाड़)
गोरेल्का-ज्वरक (ज्वालक, बर्नर)
गोरेनिये (गरेनिये)–ज्वरणा (जलना)
गोर्लो (गर्लो)–गल (कंठ)
गोर्किइ (गर्की)–ज्वर (जलन-वाला, कड़आ)
गोर्युचिये (गर्युचिये) ज्वरक (जारन, ईंधन)
गोर्याचिइ (गर्याची)–ज्वलक (गर्म)
ग्रब्योज्–ग्राभ (ह)क (लूटनेवाला)

ग्रबीतेल्–गृभी (ही) तर् (लुठक)
ग्रेत्.–ज्वलन (गर्माना, तपाना)
ग्रीवा -ग्रीवा (गर्दन)
ग्रोजित्.–कुध्यति (धमकाना)
गुबा.–जिह्वा (ओंठ)
गुबित्.–क्षुभति (नष्ट करना)
दवात्.–दाति (देता)
दविलो. . (दाबल, भार, दबाव)
दवित्.– . (दाबत, दबाना)
दब्का–दाबक (दबाव)
दालेये–दूर
दाल्योकिइ–दीर्घक (दूरका)
दालेको–दीर्घक (दूरका)
दाल्.–दीर्घ (दूर)
दाल्.नि–दीर्घ (दूर)
दाल्नो-विदेनिये–दीर्घवेदना (दूरदर्शक)
दाम्का–दामा (राजा, रुद्र-दामा)
दन्निइ–दान (भेंट, दिया)
दात्.–दान (भेंट)
दार्–दान
दरेनिये–दान (दान देना)
दरोवानिये–दान (दान देना)
दरोवोइ–दान (भेंट)
दात्.–दाति (देन)
दावा–दान
दयानिये–देय
द्वा–द्वौ (दो)
द्व-द्त्सत्.–द्वाविंशति (बीस)
द्वाज्दि–द्विः (दोबार)
द्वे-ना-द्त्सत्.–द्वादश (बारह)
द्वेर्नोइ–द्वारीय (द्वार)
द्वेर्.–द्वार
द्वे-स्ति–द्विशत (दो सौ)
द्विगात्.–वेगति (चलना)
द्वोये–द्वौ (दो)
द्वोइत्.–द्वितयति (दूना करना)
द्वोइका–द्विक (जोड़ा)
द्वोर्–द्वार (आंगन)
द्वोरेत्स–द्वारक (महल, दर्बार)

द्वोर्यानि–द्वारीय (राजाबाबू)
द्वोयु-रोद्निइ–द्विरोधनीय (चचेरा भाई)
देवेर्–देवर
देवा–देवी (कुमारी)
देवित्सा–देविका (कन्या, चेरी)
देव्का–देविका (कन्या, षोडशी, श्यामा)
देवोमातेर्.–देवमातर् (कुमारी मरियम्)
देवोच्का–देविका. (बच्ची)
देवस्त्वेन्निक्–देवत्विक (ब्रम्हचारी)
देव्चंका–देविका (कन्या)
देवुश्का–देविका (कन्या, कुमारी)
देव्चाता–देविका (कन्या, कुमारी)
देद्–पितामह (दादा)
देद्,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देदुश्का–पितामह (दादा)
देदुश्का,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देका-द्निक–दश-दिनक
देलत्.–दारयति (करना)
देलित्.–दरति (विभाजित करना)
देलो–दर, धर, धर्म (काम)
देन्.–दिन
देरेवा–दारु (वृक्ष)
देरेवत्सो–दारुक (छोटा वृक्ष)
देर्झाव्–दृंहति (शक्ति)
देर्झानिये–दृंहना (रोकना, थामना)
देर्झातेल्.–दृंहितर् (थामनेवाला)
देर्झात्.–दृंहति (थामना)
देस्यत्.–दश (दस)
देस्यातिइ–दशम (दसवां)
देस्यत्का–दशक (दस)
दे(वा)त्.–धाति (रखना)
देयातेल्.–धातर् (कर्ता, चाकर)
द्लिन्ना–दीर्घ (लंबाई)
द्लिन्निइ–दीर्घ (लंबा)

दनेव्निक्–दैनिक (डायरी)
दो–तावत् (तक)
दो-वावित्.–तावद् भवति (जोड़ना)
दो-बूदित्.–तावद्-बुध्यति (जागना)
दो-गोवोर् (दगवार्)–(समझौता)
दोदात्.–ददाति (जोड़ना, बढ़ाना)
दो-एदात्.–तावद् अत्ति (खा डालना)•
दोएनिये–दुहति (दूहना)
दोझ्द–दुहति (बरसना)
दो-झि (बा) त्.–तावद् जीवति (तबतक जीना)
दो-ज्वोनित्.स्या–तावद् ध्वनति (द्वार पर ध्वनि करना)
दो-ज्न (वा) त्स्या.–तावद् जानाति (जानना, चाहना)
दोइत्.–दुहति (दूहना)
दोइनिक्–दुहनिक (दूहनीबर्तन)
दो-कज़ात्.–तावत् काशति (प्रकाशना)
दो-कुदा–कुत्र यावत् (कहांतक)
दोल्गिइ–दीर्घ (दूर)
दोलेये–द्राघीय (दीर्घतर)
दोलिना (दलिना)–द्रोणी, (उपत्यका, दून)
दोल्-शे–द्राघीयस् (दूरतर)
दोम्–दम (घर)
दोम्ना–धूमक (भट्ठा)
दोच्.(का)–दुहितर् (पुत्री)
द्राज्नित्–त्रासयति (चिढ़ाना)
दात्.–दरति (चीरना)
द्रात्.स्या–दरति (लड़ना)
द्रोवा–दारु (ईंधन, लकड़ी)
दुनुत्.–धुनोति (फूंकना, हवा देना)
दुर्नेत.–दुर् नीति (कुरूप होना)
दुर्-नोइ–दुर् (बुरा)

दिम्–धूम (धुआ)
दिरा–दरी (छिद्र, चीर)
द्याद्या–दादा (चाचा, मामा)
द्यादेन्.का–(चाचा, मामा)
एदा–अद (भोजन)
एदोक् (एदक्)–आदक (भक्षक)
एझे-गोदनिक्–एकवार्षिक (वर्षपत्र)
एझे-देकाद्नो–एकैकदशदिन (प्रतिदशाह)
एझे-नेदेल्.निक्–एकैकसप्ताह (साप्ताहिक)
एस्त्.–अस्ति (है)
एस्त्–अश्नोति (खाना)
एस्म्.–अस्मि (मैं हूं)
एस्तेस्त्वो–अस्तित्व, (स्वभाव,) द्रव्य)
एस्त्.–अत्ति (खाना)
एखात्. -एशति (हटाना, चढ़ना, जाना)
झार–ज्वल (जलन, तपन)
झारा–ज्वाला (तपन, गर्म)
झरेनिये–ज्वलन (जारना, भूजना, तलना)
झरेन्निइ–ज्वलित (जारी, भुनी, तली)
झार्किइ–ज्वालक (गरम, मुस्तैद)
झे.–हि (किंतु, और)
झेवानिये–चर्वणा (चबाना, जेंवना)
झ्योल्तेन्किइ–हरितक (पीला-सा)
झेल्तेत्–हरितामति (पीला करना)
झेल्तोक्–हरितक (अंडे का पीला)
झेल्तिइ–हरित (पीला, जर्द)
झेना–जनि (स्त्री)
झेनित्.(स्या)–जनीयति (ब्याहना)
झेनित्बा.–जनितव्य (ब्याह)
झेनिख्–जनिक (वंर)
झेयोन्का–जनिका (वधू)

झेनोल्युबिविइ–जनिलोभी (स्त्रीप्रेमी)
झेन्स्किइ–जनिका (स्त्री)
झेनुश्का–जनिका (मेहरिया)
झेन्श्चिना–जनि (स्त्री)
झेर्त्वा–ज्वलत्व (यज्ञ)
झेच्.–दह, धक्ष, दाग (जलाना)
झिव्–जीव (जीता, जिंदा),
झिवितेल्.निइ–जीवयितर् (जीता)
झिवोइ–जीव (सजीव)
झिवोनये–जीवन्त (प्राणी, पशु),
झिवुश्चिइ–जीवक (जीता)
झिव्चिक्–जीवन (जीवटवाला)
झिव्-योम–जीवक (जीता)
झिज़न–जीवन (ज़िंदगी)
झिलित्स–जीवस्थ (निवास-स्थान)
झिलोइ–जीवल (बसल, बसा)
झितेल्–जीवितर् (रहनेवाला)
झितिये–जीवन (जीवन-चरित्र, जीवन)
झित्.–जीवति-(जीना, रहना)
ज़ा–पश्चात्, आ, ता (बाद, आगे)
ज़ा-विरात्.–आ-भ (ह) रति (ले जाना)
ज़ा-बोल्तात्.–आ-ब्रोल्लति (बहुत बोलना)
ज़ा-ब्रसिवात्.–आ-भ्रंशति (फेंकना)
ज़ा-व्रात् (स्या)–आभ (ह) रति (ले जाना)
ज़ा-बोसत्.–आ-भ्रशंति (फेंकना)
ज़ा-बिवात् आ–भवति (भूलना)
ज़ा-वर्नोइ–आ-वारित (उबाला)
ज़ा-व्वेदेनये–आ-वेदना (उच्च-शिक्षणालय)
ज़ा-वेर्तेत्.(स्या)–आवर्तति (घूमना, फिरकना)
ज़ा-विदेत्.–आ-विदति (देखना)
ज़ा-वाज़ित्–आ-वहति (लेजाना, खींच ले जाना)

जा-ब्यज्का—आ-बंधक (बधन)
जा-ब्यज़िबात्.—आ-बंधति (बांधना)
जा-गार्—आ-ज्वल (धूपमें जला)
जा-ज्लाविये—अ -गल (उपाधि, पदवी)
जा-गोरानिये—आ-ज्वालन (आतपतप्त, भूरा)
जा-गोरेन्निइ—आ-ज्वल (धूपमें जला)
जा-दाचा—आ-द.न (समस्या)
जा-दौतोक्—आदत्त, आधत्त (रखना, निधि)
जा-द्रात्—आ-दरति (भेडियेका भेड़ खा जाना)
जा-एदात्.—पश्चाद् अत्ति (पीछे खाना)
जा-झिवानिये—पश्चाद् जीवन (घाव पूरना)
जा-झिवो—यावद्जीवं (जीवन-भर)
जा-झिगाल्का—जाज्वलक (सिगरेट जलावक)
जा-काज्—आ-काश (आज्ञा)
जा-कोनो-दातेल्.—०धातर्—दातर्(विधाता, दाता, कर्ता)
जाल्—शाल, हाल
जाला—शाला
जा-लिज़ात् —आलिहति (चाटना)
जानिमात्.—आ-जानाति (पढ़ना)
जा-मेर्न—मृत (मरा)
जा-मोरित्.—मरति (भूखा मरना)
जा-ओब्लाच्निइ—आ-अभ्रक (बादलोंसे परे)
जा-पद्—पश्चात्-पद (पश्चिम)
जापिस्.—आपिश (अभिलेख)
जा-पो-वेद्—आ-प्र-वेद (आज्ञा, विधि)
जा-प्रोस्—आपृच्छ (पूंछना)
जा-रेज़(इब)ात्.—आ-रिंहति, आ-रेतति (हनन करना)
जा-रेकात्.स्या—आ-रेचति (त्यागना)
जा-रुबात्.—आ-रुभति (कुठार से गढ़ना)
जा-सद्का—आ-सीदना(बैठाना, बीज बोना)
ज.-स्वेतित् —आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
जा-सुख.—सूखा (जल-अकाल, सूखापन)
जा-सुशेन्नेइ—सुखान(सूख गया)
जा-सिखात्.—आ-शोषयति (सूख जाना)
जा-तप्लिवात्.—आतपति (आग जलाना)
जा-तेम्नेनिये—आ-तमना (अंधकार करना)
जा-तिखात्.—आतुष्यति (शांत होना)
जा-तोपित्.—तोपना (जहाज डुबाना)
जा-तुमानित्.स्या—आ-धूमति (अंधेरा होना)
जा तुखानिये—आ-तोायति: (बुझाना)
जा-शिपेत्.—आ-शपति (सिसकारना)
ज्वानिइ—ध्वनीय(पुकारा गया)
ज्वेनेत्. } —ध्वनति
ज्वोनित्. } (घंटी बजाना)
ज्वोनोक्—ध्वनक (घंटी)
जेवात्.—जंभति(जम्हाई लेना)
ज़ेलेनेत्.—हरितायति (हरित होना)
ज़ेलेन्नोइ—हिरण्य (हरा)
ज़ेल्योनिइ—हरित (हरा)
ज़ेलेन्.—हरित (ज़र्द, हरा)
ज़ेम्लेवेदेनिये—ज्मावेदना (भूविद्या, भू-गोल)
ज़ेम्ल्या—ज्मा (भूमि)
ज़ेम्ल्याक—ज्माक (देश-भाई)
ज़ेम्ल्यानिका } —ज्मालिका
ज़ेम्ल्यान्का } (स्ट्राबरी)
ज़ेम्नोवोद्निइ—ज्मोदकीय (जल-थलका जीव)
ज़ेम्नोइ—ज्मानीय (भूमीय)
जिमा—हिम (जाड़ाऋतु)
जिमोवानिये } —हिमानना
जिमोव्का } (जाड़ा बिताना)
जिमोइ- हिमीय(जाड़ा,हेमन्त)
ज्लातो—हरित (सोना)
ज्लित्.- ेति: (झिड़काना, चिढ़ना)
ज्नाकवात्.—जानाति(जानना)
ज्नाक—ज्ञानक (चिह्न)
ज्नाकोमित्.—जानापेति (परिचय करना)
ज्नाकोम्स्त्वो—जानकत्व (परिचय, ज्ञान)
ज्नाकोमयो—जानक (परिचय)
ज्नामेनिये—जानना (चिह्न)
ज्नामेनितोस्त्—ज्ञानित्व(प्रसिद्धि)
ज्नामेनोवात्.—जानापेति (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज्नात् निइ—ज्ञान (प्रसिद्ध)
ज्नात्नोस्त्.—जातीयत्व (कुलीनता, सामन्तता)
ज्नातोक्—ज्ञाता(जज, विशेषज्ञ)
ज्नात्.—जानाति (जानना)
ज्नाचेनिय—जानना (महत्त्व, अर्थ)
ज्नाचितेल्.—ज्ञातर् (जानने-वाला)
ज्नाचितेल्.नोस्त्.—ज्ञातृत्व (महत्त्व)
ज्नाचित्.—जानाति (जानना, अर्थ लेना)
ज़ोव्—हव (पुकार, निमंत्रण)
ज़ोलोता—हरित, जर्द (सोना)
ज़ोलोतोइ—हरितीय(स्वर्ण-मुद्रा)
ज़ुब्—जिह्वा, जबान (दांत)
ज़ुबोक्—जिअक (छोटा दांत)
ज्यात्.—जामाता, दामाद

इ—च, अ (और, अपि)
इबो—इव (जैसे, लिये)
इगो—युग (जुआ)
इद्ति-एति (जाना, आना)
इज़—अत्, अज् (से)
इज्-ब्रानिये—आ-वरणा (चुनाव)
इज्-ब्रात्.—आवरति (चुनना)
इज्-दवात् —··· (प्रकाशन)
इज् दानिये—(संस्करण)
इकात्.—हिक्कति (हिचकियाना)
इस्-पोल्नेनिये—आपूर्णना (पूरा करना)
इस्-पोल्नितेल्.—आ-पूर्णयितर् (पूरा करनेवाला)
इस्-प्राज़्नियेे—अपराजयना (दोष, खाली करना)
इस्-प्राशिवात्.—आपृच्छति (मांगना, पूछना)
इस्-स्यकात्.—··· (सेंकना, सुखा देना)
इस्-तोपित्.—···(तोपना)
इतक्—इतिक (ऐसे, तैसे, और)
इत्ति—एति (जाना, चलना)
इख्—... (इसका)
क— को, से, लिये, प्रति)
कज़ात्.स्या-काश्यते (प्रकाशित होना, दिखाई पड़ना)
काक्-कथं (कैसे, जैसे, यथा)
ककोइ—कथं (किस भांतिका)
कनोव—खनुवा, कदन् (ख.ई)
करात्.—कारयति (दंड देना, सासत देना)
केमु—केन (किसके द्वारा)
कोये—कहां (कहीपर)
कोशा—कोश (चमड़ा)
कोइ—कः (कौन)
कोमु (कमु)—कम् (किसको)
कोलेसो—चक्र, चर्खे (पहिया)
कपानिये—कापना (खोदना)
कोपित्. (कपित्)—गोपायति (रक्षा)
कोरोचे—क्षुद्र, खुर्द (जटा)
कोचान्—गुच्छ (गोभी फूल)
क्रसित्—कृषति (अलंकार करना, रंगना, चित्रित करना)
क्रस्नेत्.—कृष्णोति (लाल करना)
क्रस्त्.—ग्रसति (चुराना)
क्रिचात्.—क्रोशति (चिल्लाना)
क्रोव्.—कुभा (गुहा, छत, घर)
क्रोव् —क्रव्य (रुधिर)
क्रोइका—कृन्तन (काट डालना)
क्रोइत्.—कृत् (कटाना)
कुग्—चक्र (चर्ख—फारसी), गोल
क्रुझित्.स्या—वक्रीयते (चक्कर काटना)
क्रुझोक्—चक्रक (वृत्त)
क्रित्—कृती (ढांकना)
क्तो—कतर (कौन)
कुबोक्—कुंभक, कुप्पक (प्याला, गिलास)
कुवशिइ—कूपिका (लोटा)
कुदा—कदा (कहां)
कुर्तका—कुर्ता
कुसात्—कुस (काटना)
कुचा—गुच्छा (समूह, ढेर)
कुच्का—गुच्छक (छोटी ढेरी)
कुशात.—ग्रसति, घसति (खना)
लजित्—लंघति (लांघना)
ल्योग्किइ- लघुक (हल्का, आसान)
लेग्को—लघुक (हल्का, आसान)
लेग्चे—लघीयस् (आसानतर)
लेझात्—लेटना
लेन्त्यइका-लेटक (आलसी)
ल्योत्—डयन (उड़न)
लेतात्.—डयति (उड़ना)
लेतो—ऋतु (ग्रीष्म)
लिझानिये—(चाटना)
लिजात्.—लिहना (चाटना)
लिप् किइ—लेपकी (चिपकना, उलझना)
लिप्नुत्—लिंपति (लगाना, चिपकाना)
लोब्जानिये—लोभना (चूमना)
लोबिज़ान्—लोभति (चूमना)
लोवित्.(लवित्) —लोभति (लुब्धक, फंसाना, शिकार करना)
लोव्ल्या—लोभाना (शिकार करना)
लोवुश्का—लोभका (जाल, फंसाव)
लोव्चिइ—लोभिक, लुब्धक (शिकारी)
लोद्का—रोधका (नाव)
लोदि - रुद्र (लदभेसर, आलसी)
लोझित्. स्या—लोटत (लोटना, गिरना)
लोपत्स्या (लोप्नुत्.)—लोपत (तोड़ना, फोड़ना)
लुच्—रोचिः (किरण)
लुच्शे—रोचीयः (बेहतर)
ल्युबितेल् —लोभितर् (कुत्ता शिकारी)
ल्युबित् —लोभति (प्यार करना)
ल्युबोव्—लोभ, लभ (प्यार)
ल्युबोव्निक्—लोभिक (प्रिय, प्रेमी)
ल्युब्याश्चिइ—लोभीय (प्रेमी)
ल्युद्—रोध (लोग, जनता)
माजत् (माज्नुत्.)—माषत (माखना, मांजना)
मज़्न्या—माषना (तेल माखना, माजना)
मज्.—माष (माखना, मांजना)
मस्लो—मसका (मक्खन)
मात्का—मातृका (माता)
मातुश्का—मातृका (माता)

म.तृ.–मातृ (माता)
मखात्.–मंहति, म्हिति (माखन, हिलाना)
म्योद्–मधु (शहद)
म्योद्वेद्–मध्वद (भालू)
मेद्निइ–(तांबेका)
मेदोव्निक्–माध्वीक (अमृतीय, मधुर)
मंदोक्–मधूक (अमृत, मदिरा)
मेद्.–मधु (तांबा)
मेझ्., मेझ्.दु –मध्य (बीचमें)
मेन्या–मे (मुझे)
मरेत्.–मरति (मरन)
म्योर्-त्विइ–मृत (मरा)
मेस्यत्स–मास (महीना. चंद्र)
मेतित्.–मति (चिह्न करना, लक्ष्य करना)
मेशात्.–मिश्रयति (मिश्रित करना)
मिगानिये–मलकाना
मीलोस्त्.–मेल (कृपा, अनुकंपा)
मीलोच्का–मिलक (मेली, प्रिय)
मीलिइ–मेली (मधुर, दयालु)
म्ने–मे (मुझे)
म्नेनिये–मनन (विचार, मनन)
म्नित्.–मनुते (सोचना)
म्नोगो–महा (बहुत, बडा)
म्नोइ, म्नोयु–मया (मेरे द्वारा)
मोगूचेस्त्.–महत्त्व, मंहिष्ट (शक्ति)
मोगूचिइ–महान् (शक्तिशाली)
मोयों, मोइ–मे (मेरा)
मोइका–मोइत (भोजपुरी) (धोना)
मोल्निया (मल्निया)–विद्युत् (मेघकी)
मोलोत्.–मर्दति (पीसना)
मोलोत्बा–मर्दन (दबना)
मोरित्.–मरन (भूखे मरना, मारना)
मोचा–मुंच (पेशाब)
मोचित्.–मेहति (भिगोना, नम करना)
मूझ्.–(मनुष्य, पति)
मुराव्येद्–मूर (फारसी), चीटी भक्षक
मुखा–मक्षी, मगस् (फा०) (मक्खी)
मुश्का–मगस (मक्खी)
मी–हम
मित्.–मोइत् (धोना)
मिश्का–मूषक (चूहा)
मिश्.–मूषक (चूहा)
म्यासो (म्यास)–मांस
म्यत्.–मंथति (मथना)
न–नि, परि (ऊपर, द्वार)
न-वेग्–निर्वेग (दौड़, आक्रमण)
न-बेलो–न-अविल (परिशुद्ध साफ)
न-बोर–नि-हार (एकत्रित करना)
न-वेश् (इवात्)–नि-वेशयति (टांगना)
न-विसात्.–निवेशयति (टांगना)
न-वोज़ित्.–नि.वहति (ले आना ले जाना)
न-व्यज़् (इव) ात्.–निबंधति (बांधना)
नगिशोम्, नगोइ –नग्न (नंगा)
नगोलो–नग्नल (नंगा)
न-गोवन् (रेत).–नि-ज्वलति (जलना)
न-रेगो–नि-गिरि (गिरि पर)
न-ग्रबित्.–नि-गृभीति (लूट लेना)
नाद्–परि, उपरि (ऊपर)
ना-दोल्गो–नि-दीर्घ (चिर-कालसे)
ना-एखात्.–नि-एषति (आना)
न-झिनात्.–नि-छिनत्ति (फसल काटना)
न-काज़्–नि-काश (शासन-पत्र, आज्ञा)
न-लगात्.–नि-लगत (ऊपर रखना, लागू करना)
न-लेगात्.–निलगत (आश्रित होना)
न-लैपित्.–निलिंपति (चिपकाना, लेपना)
नामि–नः (हमारे द्वारा)
न-पदेनिये–निपातना (आक्रमण करना)
न-पेकात्.–नि-पचति (पकाना, भूनना)
न-पिवात्.स्या–नि-पिवति (पीना)
न-पिरात्.–नि-पीडयति (दबाना)
ना-पितोक–निपीतक (पान)
न-पोकाज–नि-प्रकाश (दिखाने के लिये)
न-पोल्नेनिये–नि-पूर्णना (पूरा करना)
न-पोस्लेदोक् (न-पस्लेदक्) –नि-पश्चात्तन (पीछे, अंतमें)
न-रोद्–नि-रोध (जनता)
नोस् (नस्)–नासिका, नासा
न-सादित्.–नि-सादयति (रोपना)
न-झदात्.–नि-सादयति (रोपना)
न-सेदानिये–निषीदका (बहु-संख्यकोंका बैठना)
न-सेद्का–निषीदका (बैठकी)
न-स्लिश्का–नि-श्रूषका (सुनना)
न-स्मेखात्.स्या–निस्मयति (हंसना)
न-स्तावित्.–नि-स्थापयति (रखना)
ना-सुख–नि-शुष्क (सूखा)
नश्–नः (हमारा)

ने—न (नहीं)·
ने-ब्लागो-प्रियत्निइ—न-भर्ग-प्रियत्न् (अशुभ, अननुकूल)
ने-वेदेनिये—न-वेदना (अविद्या, अज्ञान)
ने-बीदल्.—न-वित्त (अनदेखा, अद्भुत)
ने-ग्दा—नकुत्र (कहीं नहीं)
ने-पोच्तेनिये—न-पूजना (असम्मान)
ने-प्रियातेल्—नप्रियतर् (शत्रु, अमित्र)
ने-प्रियत्न—न-प्रिय (अप्रिय)
ने-प्रोबद्निक्—न-प्रबोधक (बिजली-रोधक)
ने-प्रोशेन्निइ—न-प्रश्नीय (बिना पूछा)
ने-स-वेदुश्चिइ—न-संवेदीय (अज्ञ)
ने-सो-ज्नातेल्.—न-सं-ज्ञातर् (अचेतन, अनभिज्ञ)
नेस्ति—नेषति (लेजाना, ढोना)
नेत्. } —नेति (नही)
नेत्तो }
ने-उच्—अन्—अनूचान (अपठित)
ने-चेगो—न-किं (कुछ नहीं)
ने-याव्का—न-आयान (अप्रकाशन)
नि—न (नही)
नि-ग्दे—नकुत्र (कहीं नहीं)
निझइशिइ—नीचीयस् (बहुत छोटा, बहुत नीच)
निझ़े—नीचैस् (नीचे)
निझ्—नीच (सबसे नीचे)
निझ किइ—नीच (नीचे)
झनि निइ—नीचीय (नीचेका)
निज्—नीच (सबसे नीचे)
निज्ञात्.—नहति (बांधना)
निज़ीना—नीचीय (निम्नस्थान, नीचा)
निज़्किइ—नीचक (नीचा, छोटा, तुच्छ)
निज़ोस्त्.—नीचत्व (नीचता)
निज़्शिइ—नीचीयस् (बहुत नीचा)
नि-काक्—न कथं (किसी तरह नही)
नि-ककोइ—न कः (कोई नही)
नि-कोग्दा—न कदा (कभी नही)
नि-क्तो—न कः (कोई नहीं)
नि-कुदा—न कुत्र (कहीं नही)
निस्—निस् (नहीं)
निस्-पदात्.—नि-पतति (गिरना)
नो—नु (किंतु)
नोवेइशिइ—नवीयस् (नवीनतम)
नोवो (नवो)—नव (आधुनिक)
नोवोस्त्.—नवत्व (समाचार)
नोगोत्.—नख (नर)
नोस् (नस्)—नासा (नाक)
नोसिक—नासिका (नाक)
नोसितेल्—नेष्टर् (ले जानेवाला)
नोसित्.—नेषति (लेजाना, ढोना)
नोसो-रोग—नासा-शृंग (गैंडा)
नोचेब्का—निशीयिका (रात को रहना)
नोच्.—निशा (रात)
नु—नु (सचमुच, हां, क्यों ?)
नुत्‌रो—अन्तर, अंदर (फारसी) (भीतर)
ओ—अ (निषेध)
ओबा—उभौ (दोनों), अभि (उपसर्ग)
ओब्-वि-नितेल्—अभि-वि-नेतर् (अपराध लगानेवाला)
ओब्-वि-नित्.—अभि-वि-नेति (दोषारोपण करने वाला)
ओव-विसात्.—अभि विशति (लटकाना)
ओबे—उभे (दोनों)
ओब्-एद्—अभि-अद (भोजन)
ओब्-झिगानिये—अभिजागरण (जगाना, बालना)
ओब्लक—अभ्रक, अब्र (फारसी) (बादल)
ओबो-रोना—अभि-रण (रक्षार्थ युद्ध)
ओबो-रोन्यत्.—अभि-रुजति (फटकारना, रिगाना, गाली देना)
ओब्-रुगात्.—अभि-रुजति (रिगाना)
ओब्-ससिवात्—अभि-चूषति (स्तन पीना)
ओब्-स्लुझिवात्—अभि-श्रूषति (सेवा करना)
ओवेन्—अवि (मेष, भेड़)
ओव्‌चिइ—अविक (भेड़क)
ओव्का—अविका (भेड़ी)
ओग्ने—अग्नि (आग)
ओग्ने-विद्निइ—अग्निविध (आग-जैसा)
ओग्ने-स्लुझेनिये—अग्नि-श्रूषण (अग्नि-पूजा)
ओग्ने-तुशीतेल्.—अग्नि-तोष्टर् (आग-बुझावक)
ओगो—अहो!
ओगोन्योक्—अग्निक (प्रकाश)
ओदिन् (अदिन्)—(एक)
ओद्नो—आदि (एक बार)
ओ-झिवात्—आ-जीवति (फिर जिलाना)
ओ-झोग्—आ-ज्योति (जलन)
ओझोर—आज्वर, अंजोर (जलाना)
ओको—अक्षि (आंख)
ओलेन्.—हरिण
ओन्—एषत् }
ओना—एषा } यह
ओनो—एनत् }
ओ-पिवात्.स्या—आ-पीयते (पी-पीकर अपनेको मारना)
ओप्यत् (अपेत्)—अपि

ओ-प्.यामेनिये—आ-पीवना (शराब पीना)
ओसादा—आ-साद (दुर्गंबद्ध करना)
ओ-स्वेतित्.—आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
ओ-स्लुशानिये—अवश्रूषणा (आज्ञा न मानना)
ओ-स्लिशात्.स्या—अवश्रूषति (ठीक न सुनना)
ओ-स्मेनिवात्.—आ-स्मयत (परिहास करना)
ओस्—अक्ष (धुरा)
ओस्मि-नोग्—अष्टनख (अठपैरा)
ओत्—आत् (से)
अत्-वेचात्.—उद्-वचति (उत्तर देना)
ओत्-व्यज़ात्.—उद्-बंधति (बंधन खोलना)
ओत्-दानिये—उद्-दान (प्रति-दान)
ओ-त्योसिवात्—आ-तक्षति (गढ़ना, पत्थर छांटना)
ओत्-झिवात्—अ-जीवति (मरजाना)
ओत्-कज़ात्.—प्रति-कथयति (इन्कार करना)
ओत्-कुदा (अत्-कुदा)—कुतः (कहांसे)
ओत्-मिरानिये—उत्-मरण (मर जाना)
ओतो—आत् (से)
ओत्-पदात्.—आ-पतति (गिर जाना)
ओत्-रझात्.—आ-राजते (प्रतिबिंबन करना)
ओत्.तोचित्.—उत्-तीक्षणति (तेज करना)
ओत्-तुदा—ततः (वहांसे)
ओख्—आह !
ओखोता—आखेट (शिकार)
ओचरोवानिये—आश्चर्य करना, जादूमें होना

ओचि—अक्षि (आंख)
पा—पाद (पग)
पदात्.—पतति (गिरना)
पदेनिये—पतना (गिरावट)
पाइ—पाइ (भाग)
पल्का—फलक (डंडा)
पार—वाष्पर (भाप)
परेनिये—परायणा (पलाना)
पास्तुख़—पातुक (मेषपाल, चरवाहा)
पतेर्—पितर् (पिता)
पखात्—(जुती भूमि)
पेना—फेन
पेर्विइ—पूर्व (पहिला)
पेरे—प्र, परि, प्राग्
पेरे-विरा(वा)त्.—परि-भ(ह)रति (हटाना)
पेरे-वोज़ित्.—परिवहति
पेरे-व्यज़्का—परिबंध
पेरे-ग्रिज़ात्.—परि-ग्रसति (काट डालना)
पेरे-देल्—परिदार (पुनर्विभाजन)
पेरे-एदात्.—प्र-अत्ति (बहुत खाना)
पेरे-झिवानिये—परि-जीवना (अनुभव)
पेरे-झोग्—प्रजाग (बहुत गरमाना, दीप संजोना)
पेरे-लेज़ात्.—प्र-लंघते (ऊपर चढ़ना)
पेरे-पइवात्.—प्र-पिवति (पान-मत्त होना)
पेरे-पिवात्.—प्र-पिवति (पान-मत्त होना)
पेरे-प्लिवात्.—परि-प्लवति (तैर जाना)
पेरे-पोइत्.—प्र-पिवति (पान-मत्त होना)
पेरे-पुत्.ये—प्रपथ (चौरस्ता)
पेरे-रोदित्.—प्र-रोहति (पुनरुज्जीवन करना)
पेरे-रुबात्—प्र-रुंभति (मारना, काटना)

पेरे-सीदेत्.—प्रसीदति (बैठ जाना)
पेरो—पक्ष, पर (फारसी), पंख (लेखनी)
पेचेनि(न्.)ये—पचना (पकाना)
पेच्का—पचक (चूल्हा)
पेचुर्का—पचक (छोटा चूल्हा)
पेच्.—पच (भूनना, तलना, झुलसना)
पिव्नया—पिवनिया (मद्यशाला)
पीवा—पान (हलकी शराब)
पीला—पीडा (आरा)
पीलित्.—पीडयति (चीरना)
पिसानिये—पिशना (लिखना)
पिसातेल्—पिशयितर् (लेखक)
पिसात्—पिशति (लिखना)
पित्.—पीति (पीना)
प्लवानिये—प्लवना (तैराकी)
प्लाव(वि)त्.—प्लवति (तैरना)
प्लावेत्स्—प्लावक (तैराक)
प्लोद—फल (संतान)
पो—प्र, परि (द्वारा, ऊपर, भीतर, को)
पो-बेग—प्र-वेग (भागना)
पो-बेझात्.—प्रवेजति (भागना)
पो-ब्(बि)रात्—प्रभ(ह)रति (ले जाना)
पो-बुदीतेल्—प्र-बोधितर् (भड़कानेवाला)
पो-बुदीत्.—प्र-बोधति (भड़-काना, उठाना, उत्तेजित करना)
पो-वेदेनिये—प्र-वेदना (प्रवृत्ति, चाल-चलन)
पो-वेसित्.—प्रविशति
पो-व्योर्तिवानिये—प्र-वर्तना (घुमाना)
पो-वोज़्का—प्रवहका (प्रवहण, यान)
पो-व्यज़्का—प्र-बंधक (सिर बंद)

पो-गोलोव्निइ–प्र-गल (सरदार जेनरल)
पोद्–पद (अन्तर, नीचे)
पो-दवात्–प्रदाति (देना, भेंट देना)
पो-दारित्–प्रदाति (देना, भेंट देना)
पो-दारोक–प्रदारक (भेंट)
पो-दात्–प्रदाति (कर देना)
पो-दाचा–प्रदाक (देना, सेवा)
पोद्–वोद्नया–पद्-उदीय
पोद्-व्यज्का–पद्-बंधक
पोद्-झारित्–पजारत (तलना)
पो-दिरात्–प्र-दरति (चीरना, फाड़ना)
पोद्-तचिवात्–प्र-तीक्ष्णति (तेज करना, धार लगाना)
पो-दुर्नेत्–प्रदुर्नेति (कुरूप होना)
पो-एज्द्–प्र-एत् (ट्रेन)
पो-एज्दित्–प्र-एति (चलना, फिरना)
पो-झार–प्रज्वार (आग लगना)
पो-झार्निइ–प्रज्वारनिक (आग-बुझावक)
पो-झिरात्–प्र-जीर्यति (खा डालना)
पो-ज्योविवात्–प्र-जम्भति (जम्हाई लेते रहना)
पोज्झे–प्रहि
पो-ज्न (वा) नियै–प्रजानना (ज्ञान, प्रज्ञान)
पोइत्–पिबति (पीना)
पो-इती–प्र-एति (जाना)
पो-काज्–प्रकाश (दिखलाना)
पो-कज़ानिये–प्रकाशना (गवाही)
पो-कुशात्–कोशीदन् (फ़ारसी–कोशिश करना, यत्न करना)
पोल्नेत्–पूर्णति (भरना, पूरा करना)
पोल्नो–पूर्ण (पूर्णतया, भरा)
पोल्नो-वोद्निइ–पूर्णोदिनी (गहरी नदी)
पोल्नोस्त्यु–पूर्णत्व (पूर्णता)
पोल्नोता–पूर्णता
पो-मजात्–प्र-माखत (तेल लगाना)
पो-माज़ोक्–प्र-मार्जक (झाड़, ब्रुश)
पो-मेस्यच्नो–प्रतिमास
पो-नीझे–प्र-नीचैः (कुछ नीचे)
पो-पदानिये–प्र-पतना (गिरना)
पो-प्लवोक्–प्रप्लावक (तिरने-वाला, काग्)
पो-पोइत्–प्र-पाययति (घोड़ो को पिलाना)
पो-पोइका–प्रपायिका (प्रपा, नौका)
पो-प्रोसित्–प्र-पृच्छति (पूछना)
पो-राझेनिये–पराजयना (पराजय)
पो-रज़ात्–पराजयत
पो-रेज्–प्र-रिंह, रेज (फारसी-काटना, घायल करना)
पो-रोदा–प्ररोह (संतान, जाति, रुधिर)
पो-रोझ्दात्–प्र-रोहति (जन्म देना)
पो-सादित्–प्र-सादयति (बैठाना)
पो-सीदेत्–प्र-सीदति (थोड़ा बैठना)
पोस्ले–पश्चात्, पस् (फारसी)
पोस्लेद्निइ–पाश्चात्तन (पिछला)
पोस्ले-दोवातेल्–पश्चाद्-धावितर् (अनुगामी)
पो-स्लुशानिये–प्रश्रूषणा (आज्ञाकारिता, तपस्या)
पोस्-मेर्त्निइ–पश्चात्-मृत्यु (पोस्टमार्टम्)
पो-स्मेशित्–प्र-स्मयत (हंसाना)
पो-स्पात्–प्र-स्वपिति (थोड़ा सोना)
पो-स्तावित्–प्रस्तावयति (रखना, उपस्थित करना)
पो सुखु–प्र-शुष्क, खुश्क (फारसी,-सूखे मार्गसे)
पो-तुखानिये–प्र-तोषण (बुझाना)
पो-तुशित्–प्र-तुषति (बुझाना)
पोचितात्–पूजति (सम्मान करना)
पो-चिनित्–प्रचिनोति (मरम्मत करना)
पोच्तेन्निइ–पूजनीय (मान-नीय)
पो-शिव्का–प्र-सीव्यक (सिलाई)
प्र–प्र
प्र– प्र (महा)
प्राविलो–प्रभूत
प्रावितेल्–प्र-भवितर (शासक)
प्रावितेल्स्त्वो–प्र-भवितृत्व (सरकार, राज्य)
प्रावो–प्रभु (कानून, अधिकार)
प्रावो-वेद–प्रभु-वेद (कानूनदां)
प्र-देद् }
प्र-देदुच्का } –परदादा
प्र-मातेर्–प्र-मातर् (जग-न्माता)
प्र-रोदितेल्–प्र-रोधितर् (पुरखा), वंश-पिता,
प्रेदो–प्रति (सामने, सम्मुखे)
प्रेद् (पेरेद्)–प्रति, प्राग् (सम्मुख, सामने)
प्रे-दातेल्–प्रति-धातर् (विश्वास-घाती, देशद्रोही)
प्रेद्-वे (वि) देनिये–प्राग्वेदना (पहिले जानना, भविष्य-दर्शिता)
प्रेद्-गोर्ये–प्रति-गिरि (पहाड़को जड़, सानु)
प्रेद्-सेदातेल्–प्र-सीदितर् (प्रेसीडेंट, प्रसीदन्त)

प्रेद्-स्कज़ानिये—प्राक्-कथना (भविष्यद्-वाणी)
प्रेद्-गदात्—प्राग्-गदति (भाखना, दूर-दर्शिता)
प्रेभ्रूदे—प्रागृदा (पूर्वतः)
प्रि—प्र
प्रि-बेगात्.—प्र-वेजति (लेजाना, करने जाना)
प्रि-बेभ्रात्.—प्र-वेजति (दौड़ना)
प्रि-वोज्—प्र-वह (लाना)
प्रि—ज्नाक—प्र-ज्ञक (चिह्न, भूचन)
प्र-ज्नानिये—प्र-जानना (स्वीकारना)
प्रि—काज्—प्र-कथ (आज्ञा)
प्रि-नदित्—प्र-नुदति
प्रि-न्यातिये—प्र-नीति (स्वीकार, स्वागत)
प्रि-पादोक्—प्र-पातक (आक्रमण)
प्रि-रोद—प्र-रोह (प्रकृति)
प्रि-रोस्त्—प्र-रोह (उगना, बढ़ना)
प्रि-रुचात्.—प्र-रोचति (पालतू बनाना)
प्रि-सोस्का—प्र-चू (शो) षक (चूसनेवाला)
प्रिसिलात्.—प्रेषयति
प्रि-त्यनुत्—प्र-तनोति (तानना)
प्रि-चितानिये—प्र-चितना (शोक करना)
प्रियातेल्—प्रियतर् (मित्र)
प्रियत्निइ—प्रियत्न् (प्रिय)
प्रो—प्र (लिये, के)
प्रोबेग्—प्रवेग (दौड़ना)
प्रो-ब्लेस्क—प्र-भ्राज (प्रकाश)
प्रो-बुदित्—प्र-बुध्यति (जागना, उठाना)
प्रो-वोज्—प्र-वह (शकट, ढोने का साधन)
प्रो-दवात्—प्र-दापयति (बेंचना)

प्रो-दाझ—प्र-दाक (बेंची, विक्रय)
प्रो-दान्निइ—प्रदत्त (बिका)
प्रो-दिरान्—प्र-दरति (चीरना)
प्रो-प्रो-वेदिनक—प्र-प्र-वेदनिक (उपदेशक)
प्रोसित्.—पृच्छति (पूछना, मांगना)
प्रो-सिपात्.स्या—प्र-स्वपिति (जगाना)
प्रो-स्पात्.—प्र-स्वपिति (सो जाना)
प्रोस्.बा—प्र-श्न (मांगना)
प्रोतिव्—प्रतीप (विरुद्ध)
प्रो-चितात्.प्र-चितयति (पढ़ना)
प्रोच्. -प्राच् (दूर, दूर जाना)
प्रो-शि (वा) त्.—प्र-सीव्यति (सीना, टांकना)
प्रोश्लोये—पश्चा (पिछला)
पुत्निक—पथिक (यात्री)
पुत्योव्का—पथीयिका (यात्रा)
पुतेशेस्त्विये—पथिकत्व (यात्रा)
पुत्.-पथ (मार्ग, सड़क)
पुन्.यानित्सा—पानका (मदिरा-मत्ता)
प्.यानिस्त्वो—पानकत्व (मत्तता)
पिशात्.—पिंशति (प्रकाशना)
प्यातोक्-पंचक (पांच)
प्यत्-ना-द्त्सत्.—पंच-दश (पांच ऊपर दस)
प्याती—पंच (पांच)
प्यातया-पंचतय (पांचवां)
प्यत्.—पंच (पांच)
प्यत्.-देस्यत्—पंचाशद (पांच-दस, पंचास)
राब्—लाभ (दास)
रबोता—लाभता (काम, श्रम)
राद्—राध, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)
रादोवात्.—ह्लादति (हर्षित होना)

रादोस्त्.—ह्लादित्व (खुशी)
राझ्—राग (क्रोध)
राज्. } -प्रति, —वि! (बिना,
रास् } दूर)
रज्-बेग्—वेग (दौड़ना)
रज्-बोर—वर (चुनना, बांटना)
रज्-बुदित्—बुध्यति (जागना)
रज्-वेद्का—वेदका (खोजना)
रज्-वेद्-चिक्—वेदक (ढूंढ़ने वाला, स्काउट)
रइ-रै (स्वर्ग)
रन्—रण (घाव)
रस्ति—रोहति (उगना, बढ़ना)
रत्-निक्—राति (योद्धा)
रत्.—व्रात (सेना)
रुदेनिये—रोहणता (लालपन)
रेब्योनक्—ऋभुक (लड़का)
र्योव्—रव (शोर, गर्जन)
रेवेत्.—रवति. (शोर करना)
रेज़त्—रिहति, रेलति (काटना)
रेज्निक—रेतक, रिहक (कसाई)
रेका—रेखा, लेखा (नदी)
रेच्.—ऋक् (भाषण)
रिसोव्का—लेख, रेख (रेखांकन)
रोग्—शृंग (सींग)
रोद्—रोध (परिवार, वंश)
रोदिना—रोधिनी, रोहिणी (जन्मभूमि)
रोदितेलि—रोदितर (माता-पिता)
रोदित्.—रोहति (पैदा करना, जन्म देना, फारसी, रोईदन्)
रोझात्. } —रोधति
रोझ्.दात्. } (प्रसव,
रोदित्.स्या— } करना)
रोझ्.देनिये—रोहणा (जन्म)
रोझोक्—शृंगक (छोटी सींग)
रोस्त्—रोह (वृद्धि)
रुब्का— रुंभका (काटना)

रुगात्.*(रिगारना, गालीदेना, शाप देना, चिढ़ना)
रुगान्.—(गाली देना, शाप देना, चिढ़ना)
रुसिइ—ऋषि (पिंगल, श्वेत)
रिदात्.—रोदति (रोना-सिसकना)
रिझिइ—रोह, लोह (लाल)
रिचात्.—ऋचति (शोर करना, चिल्लाना)
स्—स, सम् (सह, लिये, से, ऊपर)
सद्—सद् (उद्यान)
सदित्.स्या } —सीदति
सझात्. } (बैठना)
साम्—स्वयं
सामो—वार्-स्व वाल (समावार चूल्हा)
सामो-लेत्—स्वयंडयन (विमान)
सामिइ—स्वय
साखर—शर्करा
स्-बेगात्—सं-वेगति (दौड़जाना)
स्-बोर—सं-वर, सं-भर (सभा)
स्-वेदेनिये—संवेदना (ज्ञात, सूचना)
स्-वेदुश्चिइ—सं-विद्वस् (विद्वान्, निपुण)
स्व्योकोर—श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि—श्वश्रू (सास)
स्-वेर्ख—स्वर्ग (ऊपर)
स्वेत्—श्वेत (सफेद, संसार, प्रकाश)
स्वेतत्. } —श्वेतति (प्रकाशना)
स्वेतित्. }
स्वेत्लो—श्वेतल (प्रकाशमान)
स्वेतोच्—श्वेतक (मशाल, दीपक)
स्-विदानिये—सं-विदना (मिलना)
स्-विदेतेल्.—सं-वेत्तर् (गवाह)
स्वोयो } —स्वीय (अपना)
स्वोइ }

स्वोइस्त्वो—स्वीयत्व (गुण)
स्वोयाक्—स्वीयक (बहनोई)
स्-व्यज्का—सं-बंधक (मुट्ठा)
स-व्यज्.—स-बंध (बंधन)
स्—देर्झात्.—स-दृहति (पकड़ना)
सेबे } —स्वीये (अपने लिये)
सेबे }
सेब्या }
सेगो-द्नया—स्वक-दिन (आज)
सेदेत्.—श्वेतति (बाल सफेद होना)
सेदोइ—श्वेत (सफेद बालवाला)
सेइ } —स (यह)
सिया }
सिओ }
सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात सौ)
सेम्-ना-द्त्सत्.—सप्त-दश (सात ऊपर दस, सत्रह)
सेम्—सप्त (सात)
सेम्—देस्यत्—सप्त—दशन् (सत्तासी)
सेम्-सोत्—सप्त-शत (सात सौ)
सेर्द्त्से—श्रद, हृत् (हृदय)
सेस्त्रा—स्वसर् (बहिन)
सेस्त्.—सीदति (बैठना)
सिदेत्.—सीदना (घर बैठना)
सिदेत्—सीदति (बैठना)
सीला—शील (बल)
स्-कज्—सं-कथा (कहानी)
स्-कज़ात्.—सं-कथयति (कहना)
स्-कज़्का—सं-कथका (कहानी)
स्-कुचात्.—सं-कुचति (उदास होना)
स्लवा—श्रव (यश)
स्लावित्.—श्रवति (यश बखानना, श्लोक करना)
स्लाव्निइ—श्रवणीय (यशस्वी)

स्-ले.ग्का—सं-लघुक (हल्का)
स्लुगा—श्रूषक (सेवक)
स्लझान्का—श्रूषणिका (सेविका)
स्लुझ्बा—श्रूषा (सेवा)
स्लुझेनिये—श्रूषणा (सेवा करना, काम करना)
स्लुझित्.—श्रूषति (सेवना, काम करना)
स्लुख्—श्रूषा (सुनना, कान)
स्लुशानिये—श्रूषणा (सुनना)
स्लु (स्लि) शात्.—श्रूषति (सुनना)
स्-मेझा (झि) त्—सं-मेचति (आंख मीचना)
स्-मेर्त्.—सं-मर्त (मृत्यु)
स्-मेस्—सं-मिश् (मिश्रण करना)
स्मेख्—स्मय (हंसना)
स्मेयात्.स्या—स्मयति (हंसना, मुसकराना)
स्नेग्—स्नेह (हिम, बर्फ)
स्नोवा—सं-नव (नया, ताजा)
स्नोखा—स्नुषा (नोह, पुत्रवधू)
सो—सम्, स
सोबाका—श्वक (कुत्ता)
सो-विरानिये—सं-हरणा (सभा एकत्रित होना)
सो-विरात्—सं-हरति (एकत्रित करना)
सो-वेत्—संवेत (सभा, मंत्रणा)
सोवेत्निक्—संवेतक (कौंसलर, परामर्शदाता)
सोव्-पदत्—सं-पतति (संपात, एक साथ पड़ना)
सो-ज्नानिये—संजानना (चेतना, ज्ञान, स्वीकार)
सो-ज्नातेल्.—सं-ज्ञातर् (जानने वाला)
सो-इति—सं-एति (जाना)
सोल्न्त्से—सूर्य

सो-म्नेनिये—सं-मनना (संदेह)
सोन्—स्वप्न
सोप्निक्—स्वप्नक (स्वप्न, जोतिसी)
सो-रात्निक्—सं-अरातिक (सह-योद्धा)
सोसानिये—चूषणा (चूसना)
सो-सेद्—सं-सद् (पड़ोसी, फारसी—हम्सद)
सोसोक्—चूषक ((स्तनमुख)
सो-स्ताव्—सं-स्ताव (जोड़ना, गुंफना)
सो-स्तोयानिये—सं-स्थाना (स्थिति, अवस्था)
सोसून् (रोक्)—चूषण (चूसना, स्तन पीना)
सोत्—शत (सौ)
सोतिया—शती (सौ)
सोतिइ—शतीय (सौवां)
सोखनुत्.—शुष्णतिः (सूखना)
स्-पदानिये—सं-पतना (गिरावट, पतन)
स्-पोइवात्.—सं-पाययति (मदिरामत्त बनाना)
स्पाल्.न्या—स्वापालय (शयन-गृह, शयन-यान)
स्पानियो—स्वपना (सुलाई)
स्पात्.—स्वपिति (सोना)
स्प्यच्.का—स्वपका (नींद)
स्रम्—(शर्म फारसी, लज्जा)
स्रेदे—श्रद्, हृद् (मध्य)
स्रेद्स्त्वो—हृत्त्व (मध्यता)
स्तवित्.—स्थापयति (रखना)
स्तान्—स्थान (कैंप, आकार)
स्तानोवित्.—स्थानयति (रखना)
स्तानोक्—स्थानक (बेंच)
स्तानित्स्या—स्थानका (स्टे-शन)
स्-त्योसिवात्.—सं-तक्षति (काटना)
स्तो—शत (सौ)
स्तोइत्.—स्थिति (ठहरना)
स्तोइ—स्थाहि (ठहर)
स्तोइकिइ—स्थायुकीय (दृढ़)
स्तोल्—(टेबुल)
स्तोल्.—स्थाल (स्थाणु, खम्भा)
स्तोयानियो.—स्थानि (खड़ा होना)
स्तोयात्.—स्थायति (खड़ा होना)
स्-त्राख्—स-त्रास (भय, लड़ाई)
स्-त्राशित्—सं-त्रस्यति (भय-खाना, आतंकित होना)
स्-त्रशानिये—सं-त्रासना (डराना)
सु-दार्.न्या—सु-दाना (महिला)
सु-दर्.—सु-दान (भद्र पुरुष)
सुत्.—सत् (सत्त, सार)
सुखो—शुष्क (सूखा)
सुखोवेइ—शुष्कीय (सूखा, सूखी हवा)
सुखो-पुत्निइ—शुष्क-पथ (खुश्की का मार्ग, स्थल-पथ)
सुखोस्त्.—शुष्कत्व (सूखाई, सूखा-सा)
सुशा—शुष्क (सूखी भूमि)
सुशे—शुष्कीयस् (अधिकतर सूखा)
सुशेनिये—शोषणा (सुखाई)
सुशित्.—शुष्यति (सूखना)
सुश्का—शुष्का (सूखना)
सूप्—सूप (मांस-रस)
स्-चितात्.—सं-चितति (गिनना)
सिन्—सूनु (पुत्र)
स्-युदा—इह (पाली— इध, यहां)
स्-यक—एतादृक् (ऐसा)
स्-यम्—तत्र (यहां)
ता—सा (वह)
तोत्—स (वह)
तो—तद् (वह)
तइत्—तायति (छिपाना, शरण देना)
तइना—तायना (रहस्य, भेद)
ताक्—तादृक् (ऐसा)
ताक्-झे—तादृक हि (भी, ही)
त्वोइ / त्वोया / त्वोयो —त्वदीय (तेरा)
तेम्नेत्—तमस्यति (अंधेरा करना)
तेम्नो—तमस् (अंधेरा, अस्पष्ट)
तेप्लेत्—तप (ल) ति (गर्म होना)
तेप्लो—तपल (गर्म)
तेप्लोता—तपलता (फैलती आंच)
तेर्ज़ानिये—तर्जना (सताना, चीरना)
तेर्ज़ात्—तर्जति (चीरना, छिन्न करना)
तेसानिये—तक्षणा (काटना, फाड़ना)
तेसात्.—तक्षति (काटना)
तेस्नित्.—तीक्ष्णोति (दबाना, गारना)
तेतिवा—तंतुव (धनुषकी ज्या)
त्योत्का—ताती (चाची, बुआ)
त्योत्या—ताती (चाची, बुआ)
तिखिइ—तुषी (शांत, नीरव)
तो—तद् (वह, नपुंसक)
तोग्दा—तदा (तब)
तो-एस्त्.—स अस्ति (वह है, अर्थात्)
तोनिन्का / तोन्किइ —तनुका, तन्वी (पतली)
तोपित्.—तपति (तपाना, पिघलाना)
तोप्का—तपका (लालटेन की बत्ती, गर्मानी)
तोत्—स (वह, पुंल्लिंग)
तोचेनिये—तक्षणा, तीक्ष्णना (घिसना, तेज करना)
तोच्योनिइ—तीक्ष्ण (छेनी किया)
तोचिल्का—तक्षलिका (घिसने का पत्थर)

तोचिल्ञ्या–तक्षलका (घिसने की चक्की)
तोचित् –तक्षति (घिसना, तेज करना)
त्रवा–दूर्वा, तृण (घास, बूटी)
त्राव्का–दूर्वका (पत्ती, घास)
त्रेतिइ } –तृतीय (तीसरा)
त्रेत्. }
त्र्योख्–त्रिक (तिन-)
त्रिअदा–त्रिधा (त्रिप्रकार)
त्र-द्त्सत्.–त्रि-शत् (तीस)
त्रिझ्दि–त्रिधा• (तीन बार)
त्रि-ना-द्त्सत्.–त्रयोदश (तीन ऊपर दस, तेरह)
त्रि-स्ता–त्रि-शत (तीन सौ)
त्रोइका–त्रिका (तीनवाली)
त्रुसित्.–त्रस्यति (भय खाना)
त्र्यसेनिये–त्रसना (कांपना, हिलना)
त्र्यस्ति–त्रस्यति (कांपना, डोलना)
तुदा–तत्र (वहां)
तुमान्–धूमन् (भाप, कुहरा, धुआ; फारसी–दूदमान्)
तुशित्.–तुषति (बुझाना)
ति–ते (तू)
त् मा–तम (अधकार)
त्.फु–थू (थूकना)
त्यानुत्.–तनोति (तानना, खींचना)
उ–उद्, अव, वि
उ-बेगात्.–उद्-वेजति (भाग जाना)
उ-वेदित्.–उद्-वेदयति (समझाना)
उ-बित्–उद्-भिदति (मार डालना)
उ-बितोक्–उद्-भिरक (क्षति, हानि)
उ-वझात्.–उद्-भजति (सम्मान करना)
उगोल्.–इगाल, अंगार (कोयला)
उ-दाल्–उद्-दार (साहस)
उ-दार–उद्-दार, विदार (चोट, आघात, फारसी–दरीदन्)
उ-दारित्–उद्-दारयति (मारना, चोट करना)
उ-झे–उद्हि (पहिले ही)
उ-इति–एति (जाता है)
उ-काज–उत्-कथ (आज्ञा)
उ-लेतात्.–उद्-डयति (उड़ता है)
उ-निझे नियां–अव-नीचना (नीचा दिखाना)
उस्त–उत्स (मुह, ओठ)
उस्त्.यें–ओष्ठ (मुंह, ओठ)
उख्–(उंह, ओह, आह)
उचेनिये–ऊचना (पढ़ाना, सिखाना)
उचीतल–ऊचितर् (शिक्षक)
उचित्.–ऊचति, वक्ति (सीखना, सिखाना)
फु (इ)–थू (धिक्कारना)
स्वाला–स्वर (प्रशंसा)
स्वालित्.–स्वरति (प्रशंसा करना)
खोलोद्–शरद (सर्दी)
खुदेनिये–क्षुद्रणा (पतला होना)
खुदोइ–क्षुद्र (बुरा)
खुदिश्का–क्षुद्रिका (पतली तरुणी)
त्स्वेत्–श्वेत (रंग, फूल)
त्सेलो–सकल (सारा, सियल)
त्सेन्त्र–केन्द्र
चशा–चष (प्याला)
चशेच्का–चषक (प्याली)
चश्का–चषक (प्याली)
चेइ–कस्य (किसका, जिसका)
चेरेप्–कर्पं (र) (खोपड़ी)
चेत्वेरो–चत्वारि (चार)
चेत्वेर्.–चतुर्थ (चौथाई)
चेतिर्–चत्वारि (चार)
चेतिरेझ् द्.–चतुर्धा (चार बार)
चेतिरे-स्त–चतुःशत (चार सौ)
चेतिर्-ना-द्त्सत्.–चतुर्दश (चौदह)
चिनित्.–चिनोति (मरम्मत करना, पेबद लगाना)
चितातेल्–चितयितर् (पाठक)
चितात्.–चितयति (पढ़ना)
चिखानिये–छिक्कणा (छींकना)
चिखात्–छिक्कति (छींकना)
च्मोकात्.–चुबति (चूमना)
च्तो–कति (किं) (क्या; फारसी, चि)
शकाल्–शृगाल (गीदड़, फारसी, शगाल)
शेप्तात्–शपति (पुकारना)
शेस्ति-द्नेव्का–षट्-दिनक (षडह)
शेस्तोइ–षष्ट (छठा)
शेस्त्–षट् (छ)
एइ–अयि
एता–एता (यह, वह)
एतत्–एष (यह, पुल्लिग)
युनोस्त्–युवत्व (जवानी)
युनिइ–यून (जवान)
यावित् } –आयाति (दिखलाना)
याव्ल्यात्. }
याव्का–(आवक, वर्तमान)
याव्लेनिये–(आवना, प्रकट होना)

(२) शब्दानुकरण

मर्गात्–आंख मलकाना
आख्–आह
खाखा–हाहा
चप्कात्.–चप्चप् (खाना)
इकात्.–हिक्कति (हिचकी लेना)
चिखात्–छिक्कति (छींकना)
त् फु–थू
फु–फू
कश्ल्यात्–खांसना
गेइ–हे (संबोधन)

(३) उपसर्ग

रूसी भाषामें उपसर्गोंका महत्त्व बहुत अधिक है। समाजके विकासके साथ नये शब्दोंकी अवश्यकता होती है। नये शब्दोंके निर्माणमें उपसर्गोंको जोड़नेका जितना अधिक प्रयोग रूसी भाषामें हुआ है, उतना किसी दूसरी हिन्दी-यूरोपीय भाषामें नहीं देखा जाता। वैसे संस्कृतमें भी माना गया है—"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहार-वत।" किन्तु इस बारेमें रूसी भाषा बहुत दूरतक गई है।

रूसी उपसर्ग (अव्यय भी)

अ—अ (निषेधार्थ)
बेज़्, बेज़ो, बेस् —वि (विना)
व्—(अन्तर्)
वो, वोज, वोस्, वि —वि
दो—तावत् (फारसी—ता, तक)
दुर् (नोइ)—दुर् (बुरा)
जा—आ, पश्चा (पीछे, परे)
इज़्, इस् —अत्, आ (से; फारसी-अज़्)
क्—(के, लिये, प्रति)
ना—नि (ऊपर, द्वार)
ने, नि —निर्, न (निषेधार्थ)
निस्—निस् (निषेधार्थ)
ओ—आ, अ (निषेधार्थ), अव
ओब्—अभि (चारों ओर)
ओबेज़्, ओबेस् —वि (विना)
ओत्—आ, आत्, उत् (से, के, परे, लिये)
ओतो—अत्
पेरे—प्र, परि, प्राग्, पुनर्
पो—परि, प्र (ऊपर, द्वारा, अंतर्, को)
पोद्—पद (नीचे)
पोरा—परा (पोराझेनिये-पराजय)
पोस्ले—पश्चात् (फारसी—पस्)
प्रा—प्र (बड़ा)
प्रे—प्र
प्रेद्, प्रेदो —प्रति, प्राक् (सामने)
प्रि, प्रो —प्र
राज़्, रास् —(प्रति, पुनर्, वि, दुर्, अभाव, विकार)
स, सो —स, सं (द्वारा, लिये, से, ऊपर, फ़ारसी—हम्)
उ—उत्, अव

(४) रूसी धातु

पसात्वेत्., पो,—प्रभवति (जोड़ना)
वेदित्., उ-; बेझ्दात् -उ-; —वेदयति (जतलाना)
वेगत्.—, वेगत, उ- वेगति (भागना)
विवात्., दो—भवति, तावद् (मारना)
विरात्.—चुनना,
विरात्., वि-; —चुनना,
विरात्. इज़्-; —चुनना,
विरत्., जा-; —भ(ह)रत्ति, फ़्यीमक् (लेजाना)
विरात्., ना-; —हरति, नी—(संचय करना)
विरात्.-, सो; —हरति, सं—(संचय करना)
विरात्., उ-; —हरति, अव—(हटाना)
वित्.—भिद् (मारना)
वित्., उ-; —√भिद्, उद् (मार डालना)
बीवात्., प्रो-; —प्रभवति—(परीक्षण करना, जांचना)
बोल्तात्.—बोल्लति (बोलना)
बोयात्. स्या—भय (डरना)
ब्रसि (वा) त्.—भ्रंश (फेंकना)
ब्रसि, वि.—वि + √भ्रंश (फेंकना)
ब्रात्. स्या—भर्, √हर (लेजाना)
ब्रदित्.— √बर्ध (उठना, उभड़ना)
ब्रोस (सिवा) त्. (स्या)—√भ्रंश (फेंकना)
बुदित्., बुदित्., वोज़्-; बुदित्., पो-; —वि + √बुध (उत्तजितकरना, भड़काना। (प्र √बुध् (भड़काना)
बझ्दात्. विज़्-; —वि + √बुध (भड़काना)
विवात्.—√भव (आना)
वि त्.—√भव (होना)
वझात्., उ; —प्र + √भज (भजन करना, सम्मान करना)
वरित्.—√वल् (उबालना. पकाना)
वरित्., प्रद्-; —प्रति + √वल् (खबरदार करना)
वेदि (व) त्.—√विद् (जानना)
वेदि; वि—√ विद् (पाना, ढूंढ़ना)
वेदोमित्., उ-; —अव + √विद

बजाना)
ज़्योमित्—v घंटी बजाना)
ज़ेवत्.— v जृंभ (जभाई लेना)
ज़ेवत्. पो; ओ —प्र v जह (त्यागना, छोड़ देना)
ज़्योविवात्., पो-;— प्र v जृंभ (जंभाई लेते रहना)
ज़ेलेनेत्.— v हरित (हरा होना)
ज़्नात्. } v ज्ञा (जानना
ज़्नवात्. }
ज़्नवात्. सो-;—सं v ज्ञा (पहिचानाना, स्वीकार करना)
ज़्नाकोमित्.– v ज्ञाप् (परिचय कराना)
ज़्नामेनोवात्.— v ज्ञाप् (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज़्नोचित्.—v ज्ञा (समझना, नेमिक, जताना)
ज़्ालोतित्. वि.,–वि-; v हरित (सोना लगाना, मुलम्मा करना)
ज़्यब्नुत्.-इज्–आ,; v हिम (बर्फ बनना, ठिठुरना)
इद्ति—v एत् (जाना, आना)
इकात्.– v हिक्क (हिचकी लेना)
इत्ति–v एत (आना, जाना, टहलना)
कज़ात् (स्या)—v काश (प्रकट होना, जान पड़ना)
कज़ात्. विस्-,–वि v कथ } वि v काश } (प्रकट करा)
कज़ात्.स्—सं v कथ (कहना)
कजिवात्–कथ, कहना, दिखलाना, इंगित करना)
कजत्, ना:–नि v कथ (काश) (इंगित करना)
कज़ात्, प्रि,–प्र vकथ (काश) इंगित करना
क्लिकात्., वि-;–दि vकिलक (क्रुश) (पुकारना)
क्लिक्नुत्.–वि v क्लिक क्रुश (पुकारना)
करत्.– v कार (दंड देना)
क्रसी (शी) वत्.,प्रिज़ क्रष (पुनः रंगना, मोमियाना)
क्रसित्.,पेरे-;–परि v कर्ष (पुनः रंगना)
क्रशात्., उ-;–उत् v कर्ष (सजाना, अलंकृत करना)
क्रिकिवात्.,व्स्-;–वि v क्रुश् (चिल्लाना, हल्ला करना)
क्रिसात्., व्स्-;–वि v क्रुश (चिल्ला उठना)
कोपात्.— v कल्प (कांपना, खोदना)
क्रोइत्.–v कृत् (काटना)
क्रुशात्.,स्-;– सं v क्रष (तोड़ना, विचूर्ण करना)
क्रित्.–v कृत (ढांकना)
कुचात्.,स्-.–सं v कुच (थूकना)
कुचित्, प्रिस्-;– प्र v कुंच् (थूकना)
कुशात्. पो-;–प्र v कुश (कोशिश करना)
लगात्.,ना-;–नि v लग (लगाना)
लदत्, स्-; सं v ह्लद (ह्लादित होना)
ल्गात्.–v लग (लेजाना)
लेगात्.-ना,–नि vलग (लेजाना)
लेझात्— v लेट (लेटना, विश्राम करना)
लेज़ात्—v लंघ (१) चढ़ना, लेज़ात्-, पेरे.–परि लंघ v (चढ़ जाना)
लेपित् वि.,–वि v लिंप (लेपना, चिपकाना)
„ , जा;—आ v लिंप (चिपकाना)
लेतात्.– v डय (उड़ना)
लिज़ात्.– v लिह् (चाटना)
लिपात्.– v लिप् (चिपकाना)
लोबिज़ात्.– v लुभ (चूमना)
लोवित्.–v लुभ् (लुब्धकी करना, फंसाना, आहृत करना)
लोगत्., पो-;–प्र v लग् (रखना, लगाना)
लोझित्. (स्या)– v लोट (लेटना, गिरना)
लोपत्.स्या–v लोप (फटना, टूटना)
लुपित्.,ओत्-; उत् v लोप् (मारना)
लुचत्., इज़-,—आ v रोच् (प्रकाशित होना)
लुचत्., ओत्–अव v रोच् (बहिष्कृत करना)
लुच्शात्.,उस-;–उद् रोच् (धारना, बेहतर बनाना)
ल्युबित्.– v लोभ (प्यार करना)
ल्युवित्., रज़-;–वि vलोभ (प्यार करना)
मज़ात्., मज़्नुत्.– v माष् (माखना, चुपड़ना लगाना)
मज़ात्., बू-;–वि v माष (चाटना)
मज़ात्., पो-;–प्र v माष् (तेल लगाना)

मज़ोक., पो-;–प्रvमार्ज (झाड़ना)
मरत्., वि-;–विvमर (घात करना)
मचिवात्., ज़ा-;–vमिह (भिगोना)
मेझ़ (झि)त्., स्-;–संv मिष (आख मीचना)
मेरेत्.–vमर (मरना)
मेरेत्. वि-,–विvमर् (मर जाना)
मेरित्.–vमा (नापना)
मेतत्.–vमथ (ढकेलना)
मेशिवत्. व्-;–विvमिश्र (मिश्रण करना)
मीलोस्त्–vमिल (मेल करना, कृपा करना)
मिताात्.–vमिष (आंख मलकाना)
मिगनुत्.–vमिष (आंख मलकाना)
मिरत्.,वि-;–विvमर (मर जाना)
मनुत्.–vमनु (सोचना, मनन करना)
मोकात्. वि-;–बिvमुच् (निकल जाना)
मोलोत्.–vमर्द (घिसना, मलना)
मोरित्.–vमर (हत्या करना, भूखा मरना)
मोचित्.–vमेह (भिगोना)
मि(वा) त्.–vमोना (धोना)
नामेकात्.–vनाम (इंगित करना)
नशिवात् ज़ा-;–आvनश्(जीर्ण करना)
निज़ात्–vनह (बांधना, सूत पिरोना)
निज़ि (झि) त्., उ-;–अवv नीच (अपमानित करना)
निमात्., वि-;–विvनय (ले जाना)
नित्., ओब-,वि-;–अभि-विvनय (अपराध लगना)
निच्तोझित्., उ-;–उद्vछिद् (नष्ट करना, बंद करना)
नोस्ति.–v नेष (ले जाना, ढोना) (तेल्.)
नोसि्., जा-;–आvनेष (लिख छोड़ना)
नोचिवात्.–vनिश् (रात बिताना)
नुदित्., वि-;–विv नुद (बाध्य करना)
नु झ्दात्.,-वि-,–विvतुद (बाध्य करना)
पदत्.–vपत (गिरना)
पदत्., नस्-;–निस्vपत् (गिरना)
पदत्. व्स-,–संvपत (एक समय एक स्थान में होना)
पइवात्. व्स्-,–विvपा य (पिलाना, पोषण करना)
पेइवात् पेरे-;–परिvपाय (मद्यपान मे अति करना)
पेरेनिये—पलायना (भागना)
पास्त्.–vपा (पास्तुख् मेषपाल)
पास्त्.–vपत (गिरना)
पेकात्., दो-;–आvपच् (पकाना)
पेच्.–vपच् (पकाना, तलना, भूजना)
पिवात्. ज़ा-,–आvपिव् (पीना)
पिवात् वि-;–विvपिव (पीना)
पिलित्.–v पीड (चीरना)
पिलिवात्.–v पीड (चीरना)
पिसात्.–v पिश (लिखना)
पिसिवोत्.–पिश (लिखना)
पित्.–v पिव (पीना)
प्लवात्–v प्लव (तैरना)
प्लवित् , वि-;–विvप्लव (पिघलना)
प्लिवात्., व्-;–विvप्लव (तैरना, नावपर चलना)
पोइत्.–vपिव (मद्यप बनना)
पोल्नोत्.–vपूर्ण (भरा पूरा होना)
पोल्नोत्., निस्-;–विv पूर्ण (भरना)
पोल्निित्., वि-;–विvपूर्ण (पूरा करना)
पोतेत्., व्-;–विvपोन (पसीने मे नहाना विvस्विद्)
पोचितात्.–vपूज (संमान करना)
प्रशिवात्., वि-;–विv पृच्छ (पूछना)
प्रियुतित्. (स्या)–v प्रिय (?) (शरण देना व पाना)
प्रोसित–v पृच्छ (पूछना, मांगना)
प्रोप्तत्., वो-;–विvपृच्छ (पूछना)
पुखात्., ना-;–निvपुष् (फूल जाना)
पुखात्., प्रि-;–प्रvपुष् (फूल जाना
पिशात्.–v पिश (दहकना)
राद्दोवात्.–vलाद (आह्लादित होना)
रादोवात्. स्या, वेज्-;–विv ह्लाद
रझात्., ओत्-;–आ v राज

दर्पणमें प्रतिबिंबित होना)
रनत्.–v रण (घायल करना)
रस्ति–v रोह (रोहण करना, बढ़ना, फारसी-रोईदन)
रेवेत्.–v रव (शोर करना)
रेजत्., रेजिवात्.–v रिह (काटना, फारसी रेज़ीदन्)
रेजिवात्, प्रि–प्रvरिह (मारना, जोड़ना)
रेझात्. स्या, जा-; आvरेच (तोड़ना)
रोदित्. स्या–vरोध, रोह (जन्माना)
रोझात्.–vरोध, रोह (जन्माना)
रोझदात्.–vरोध, रोह (जन्माना)
रोझित्.–vरोह (जन्माना)
रुगात्., वि-;–विvरिग- (रिगाना, फटकारना)
रुगात्. ओव्-; अभिvरिग (रिगाना, फटकारना)
रुबात् जा-;–आvरभ,v लंभ (कुल्हाड़ेसे गढ़ना काटना)
रुबात्., पेरे-;–परिvलंभ (काटना, मारना)
रुबात्. पो;–प्रvरभ (चीर डालना)
रिवात्.-नज्-vरुद (सिसकी भरना)
सदित्.—vसीद् (बैठना, सादी=असवार)
सदित्.व्;—विvसीद (भीतर घाव करना)
स्वेतत्.—vश्वेत (प्रकाशित होना)
" , ओ–;—आvश्वेत (प्रकाशित करना)
स्वेतित्.-–vश्वेत (प्रकाशित करना)

सेदेत्. — vश्वेत (बाल सफेद होना)
सिदेत्.— vसीद (बैठना)
स्लवित्..— vश्रव (यश गाना)
स्लुक्षित्.—vश्रूष (सेवा करना, काम करना)
स्लुशत्.—vश्रूष (काम करना)
स्मेनिवात्. ओ–;—आ v स्मय (परिहास करना)
स्मेखात्स्या, ना ; — न v स्मय (परिहास करना)
स्मेशित्., पो–;—प्रv स्मय (हंसाना)
स्मेयात्. स्या—vस्मय (हंसना)
सोसात्.— vचूष (चूसना)
सोखनुत्.— vशुष (सूखना)
स्पात्. पो–;—प्रvस्वप (थोड़ा सोना)
स्तावित्., पो–;–प्रvस्थाप (रखना, स्थापित करना)
स्तानोवित्.—vस्थान (रखना, स्थापित करना)
स्तोइत्.—vस्था (आना)
स्तोयात्. ,पो–;–प्रvस्था (खड़ा होना)
सुख्नुत्.,–पो–;—प्रv शुष (सूखना, पो–सुखी –स्थल से)
सुशात्., इस्–;–आvशुष (सुखाना)
सुशि (वा) त.— vशुष (सुखाना)
सुशि , पेरे–;–प्र vशुष (बहुत सूखना)
सिपात्., पो–;–प्रvस्वप (पूरा सोना)
सिखात्., वि–;–विv शुष (अति सूखना)

स्यकात्.— vसेंक (सूख जाना)
सइ (वा) त्. —vताय (छिपाना, त्राण देना)
तल्किवात्. — vतर्क (हिलाना)
तल्किवात्., प्रो–;–प्र vतर्क (ढकेलना).
तेम्नेत्. vतम्– (अंधकार करना). –v
तेप्लेत्. vतप (गर्म होना)
तेजत्.—vतर्ज (चीरना, खंडन करना)
तेरेत्.स्या, वि–;—वि–vतिर (खतम करना, सुखाना)
तेस्त्.— vतक्ष (काटना)
तेस्नित्.—vतीक्ष्ण (दबाना, गालना)
त्योसिवात्,. वि–;– विv तक्ष (आकार गढ़ना)
तिरात्,. वि–;–वि vतीर (पोंछना, सुखाना)
तिरत्, स्या, स, —प्र तीर (भाग जाना)
तिखात्. स्–; —संvतुष् (शांत होना)
तोपित्.—vतप (गर्म करना, पिघलाना)
तोपित्., जा–;–आ vतोप (जहाज डुबाना)
तोप्(लिव)त्. वि–;–विv दब (दाबना, रौंदना)
तोपित्.— vतक्ष (घिसना तेज करना)
त्रशित्., सं–;—सvत्रस (डराना, खतरा मानना)
त्रिगत., सोस् –; सं v तुंह (काटना)
त्रुसित्.— vत्रस (भय खाना)
त्र्यसत्,.— वि–;–वि vत्रस (हिलाना)

श्यत्, पो–;–वव्रस् (हिलाना)
श्यस्ति— वत्रस (हिलाना, डुलाना)
श्यख (खिवा), त्,.; –;–वि v त्रास् (हिला डालना)
श्वख, पो–;–प्रवत्रास् (हिला डालना)
तुमेनित्.स्या, जा–आvतम (मध्यम पड़ना, भोथा होना, मंद पड़ना)
तुपित्., पो-;–प्रvतुप् (गिरना)
तुपित्, प्रि-;–प्रvतुप् (गिरना)
तुशित्., -जा–आvतुष् (बुझना, शनैः चला जाना)
तुसित्.पो-;–प्र-vतुष् (बुझाना, शनैः चला जाना
तिकात्.—(टिक,vटिकना, घुसेड़ना)
त्वुनुत्.–vतनु (खीचना, तानना)
उचित्.–v वच (सीखना, सिखाना)
स्वलित्.–v स्वर् (प्रशंसा करना,)
खोदित्.-;–विvसिद् (चला जाना)
च्नोत्., नेपेरे-;–नि प्रv चिंत (गिनना, बतलाना)
चिनित्.–v चिनु (मरम्मत करना, पेबंद लगाना)
चितात्.–vचिंत (पढ़ना)
चितात्.,पो-,–प्र v चित (पढ़ना)
चिनिवात्. व्स-;–विसंv चिंत (गिनना)
चिखात्.–v छिक्क (छींकना)
च्मकात्.–v चुम्ब (चूमना)
शेतात्.–v शप (फुसफुसाना)
शिवात्., वून-;–वि v सीव (सीना)
शित्., व्-;–वि v सीव (सीना)
श्चुपात्., वि-;–वि v छुप (छूना) स्पर्श करना,
श्चुपात्., ना-;– नि v छुप् (छूकर पता लगाना, चिकोटी काटना)
युचित्., वि-,– वि v युज (लादना)

(५) प्रत्यय-सूची

अत्— ति (बेगत्.)
अवत्.— ति (दवात्.)
इइ—इन् (बेज़रोगिइ)
इक्.—इक (स्तोलिक्)
इकिइं—इक (वेलिइकिइं)
इको—इक (लिचिको)
इज़्न—(क्रिविज़्न)
इच्क—इक (प्तिच्का)
इत—थ (स्कजीते)
इत्—ति (बित्)
इत्सा—ता (बेस्-सोन्नि-त्सा=निःस्वप्नता)
इत्सा—इका (वनित्सा-मंदिर निर्माणागार)
इत्सा—इक (देवित्सा=देविका)
इत्सा—इक (वोदित्सा)
इना—इनी (ग्लुबीना=गंभी-रिणी, ज्वेरिना)
इन्या—इनी (वोगिन्या= भगिनी, भगवती)
इम्—म (वीदिम्, विद्म)
इये—ईय (वेस्स्लाविये)
इवत्—ति (पिलिवत्=पीड-यति)
इवोस्त्.—त्व (इग्रिवोस्त्= क्रीडित्व)
इशिइ—ईयस् (निझाइ शिइ=नीचीयस्)
इश्—सि, से (वीदिश्= वीक्षसे)
इश्चा—इका (रुचिश्चा,अंगु-लिका)
इश्चे—इक (दोमिश्चेद्मिक)
इश्चे—(झिलिश्चे=जीव, वास-गृह)
ईइ—इन् (वेज़्-ग्लाविइ= वि-ग्रीवी)
ईइ—ईय (ज्वनिइ=ध्वनीय)
ईत्—त (बित्.)
ईन्का—इनिका (प्रोस्तिन्का)
ईलो—(बिलो=भइल)
ईवत्.— ति (बिवत्.)
ईश्को—इक (पेरिश्को)
उ—मि-(बुदु=भवामि)
उत्—न्ति (इदुत्=यन्ति)
उत्.—(नावेर्नुत्.)
उन्—आन (बेगुन्)
उश्का—उका (वेतुश्का= वर्तुका, चकरी) देवुश्का=देविका, बच्ची) (देरेवुश्का)
उश्चिइ—इष्य (बुदुश्चिइ= भविष्य)
उश्चिइ—न्त् (झिवश्चिइं,जीवन्
उश्चिइ—वान् (वेतुश्चिइं,= विद्वान्)
ओइ—ईय (ज़ेम्नोइं, मीय
ओक्—क (वेतेरोक्=वातक) (वोज़ोक्=वाहक, गाड़ी)
ओक्.—क (गोलोसोक्.)
ओचेक्—(ओगोन्योचेक्.= अगिया)
ओच्का—का (त्सेपोच्का= टोपियां, देवोच्का, देविका= कुमारी)
ओता—इमा, ता (चेर्नोता= कालिमा)

ओतुन्या—त्नु, (बेगोल्त्या)
ओनोक्—क (वोबुचोनोक्=वृकक)
ओवानिये ना (जिमोवानिये, हिमना)
ओव्—ईय (इवानोव, इवानीय)
ओन्या—नीय (बोल्तोव्न्या)
ओस्त्.—त्व (स्वेझ्ोस्त्., ज्नामेनिमोस्त्.=ज्ञातत्व)
किइ—कीय (ब्रात्स्किई=भ्रातीय) (गोर.किइ्=कटुकीय)
का—का (वोज्का=वाहक, ढोना) (गोदाल्का—गदका, जोतिस) (ओबृशिव्का—भूल) (ब्ल्यश्का)
को—क (उश्को=कनवा)
गा—षा (विस्लुगा=विश्रूषा, सेवा)
ग्दा—दा (व्सेग्दा=सदा)
चा—य (दाचा=देय)
चिइ—(गोर्याचिइ=गरम)
च्—क (बोगाच्=भगक, धनी)
चिक्—क (झ्विचिक=जीवक, जीव)
चिक्—क (म्लादेन्चिक्.)
चाता—ता (देवृचाता=देवता, तरुणी)
ज्न्—आलु (बोदाज्न्=भयालु)
झ्दि—धा (द्वाझ्दि=द्विधा)
ता—ता (पोल्नोता=पूर्णता)
ति—ति (इद्ति=एति)
तिये—ता (वेस्-मेंतिये=विमृत्युता)
तिई—तीय (बोल्तिई=बोल्लतीय, बोलक्कड़)
तून्— (बोल्तून्— बोलक्कड़)
तेई—तीय (बोगातेई=भगीतीय धनी)
तेल्—तर् (बेस्सोज्नोतेल् वि=विसंज्ञातर्, अज्ञानी)
त्—ति (इकात्=हिक्कति, हिचकी मारता है)
त्लिइ—त्नु (प्रियत्लिइ=प्रियत्नु प्रिय)
त्योये—त्नु (झिवोत्नोय=जीवत्नु जीव)
त्से—इक (ब्ल्युद्-त्से)
त्सो—व (पिस्. मेत्सो) (ओजोर्त्सो) (देरेवृत्सो)
निक्—इक् (वोद्निक=उदकिक) (व्साद्निक=सादिन्) (द्वोर्निक=दौवारिक) (ज़ेम्ल्यानिका=ज्मालिका)
नो—(स्वयाज्नो)
नोइ—(द्वेर्नोइ)
नोस्प्—(चेस्त नोस्त्.)
न्—न (दान्.=दान, भेंट; (पोल्न=पूर्ण)
न्का—क (ज़ेम्ल्यान्का)
न्या.—(रेज्न्या)
बा—(प्ल्बा) (खुदोबा)
मोस्त्.— (द्विझिमोस्त्., =वेजनीय) (ज्नामेनिमोस्त्.=ज्ञातत्व)
यात्.—ति (देल्यात्.,=दारयति)
यानि—इन् (द्वोर्यानि,=द्वारिन्, बाबू)
यानिये—ईय (दयानिये दानीय)
युत्—न्ति
येचुक्—इका (दोश्चका=छोटी मेज)
येच्को—इका (कोल्येन्को=कुइयां, कूपिका)
ते—थ (स्कजीते=कथयथ)
येत्.—(वेग्लेत्स्)
येत्स्.—(उरोदेत्स्.)
येत्सो—(पिस्-मेत्सो)
येद्—(मेद्वेद्=मध्वद)
येनिक्—इक (उचेनिक्=वाचक)
येनिये—(स्लुश नियेे=श्रूषणा)
यम्—आम
येल्—इल (नावेलो=नाविल)
येश्—सि (देलयेश्)
येत्.—त्व (स्वेझ्येत्.)
योक्—क (ओगोन्योक अग्निक)
योश्—क (ग्रब्योश्=ग्राभक, लुटेरा)
र्—र (ग्लवार्=ग्रीवार, नेता)
र्—न (दार=दान)
लो—न (नगलो=नग्न)
ल्या—ना (लोव्ल्या=लोभना), आखेट)
वा—का (ऋनावा खनुवा=खांड)
वानिये—ना (ज़िमोवानिये=हिमना)
विइ—वीक (मेदोविइ=माध्वीक, अमृत-जैसा)
वोस्त्.—(लुकावोस्त्.)
शिइ—शः (बोल्. शिइ=भूरिश)
शे—शः (बोल्शे=भूरिशः, बेहतर)
शोइ—शः (बोल्शोइ=भूरिशः)
शोन—ईयः (नगिशोन=नग्नीयः, अतिनग्न)
स्त्वये—त्व (देइस्त्वये)
स्त्वो—त्व (बेगुस्त्वो=भगेलुत्व)
स्या—य (आत्मनेपदी, भावार्थ)

(६) उच्चारण-परिवर्त्तन

संस्कृत—रूसी उदाहरण
अ अ, (निषेधार्थ)
अ ओ, ओस्. (अक्ष) ओगोन्
आ आ, आशिवात्=आसी-व्यति
या यावित्. स्या
उ वो, वोदा—उद
ओ ओबे—उभे
(ऋ आल्) शकाल—शृगाल,
ओल् वोल्क—वृक थर् क
येर् देर्झात—दृंहति
येल् झितेल्—जीवितृ
योर् म्योर्त्विइ—मृत्यु
र् ग्रबित्—गृभीति
रि क्रित्—कृत्ति
रु रुसिइ—ऋषि, ऋचि
स्त्रुन—तृण
रे रेब्योनोक्—अर्भुक छज्ञ
रो प्रोसित्.—पृच्छति
क को कोग्दा—कदा
क तोरिह्—कतर
ग क, शकाल—शृगाल
इग्रोजित्.—क्रुध्यति
क चेरेप्—कर्प
क्ष स, ओस्.—अक्ष
च, झेच्—धक्ष
क्षु खु, खुदेत्.—क्षुदति
खुदोइ—क्षुद्र
ख क, कुसात्.—खुंसति
स, रिसोवात्.—लिखति
ग क, क्रस्त्.—ग्रसति
ग ग्रिवा—ग्रीवा
ग्लोतात्.—गिलति
नगोइ—नग्न
झ बेझात्—वेग
दोझ्द.—दोग्धि
द् प्रेद्—प्राग्
घ ग दोल्गिइ—दीर्घ
ज लजित्.—लंघति
च क प्रेद्की—प्राच् (पूर्वज)
च पोचितात्—पूजति
ज निजु—नीचे येठझ
झ निझ—नीचै
निझात्.—नीचयति
स प्रिपासी—प्रपाच
(भोजन-सामग्री)
सोरोक—चत्वारिंश
छ च कुचा—गुच्छ
झ झेवात्—छीवति
(चबाना)
श प्रशिवात्.—पृच्छति
स प्रोसित्.—पृच्छति
ज गइ बेग—वेज
गोरात्.—ज्वलति
ज वेर्योझा—भूर्ज
प्रिज्नाक—प्रिज्ञानक
ज़ेम्ल्या—ज्मला
झ झार—ज्वर
पोझार—प्रज्वाल
झेना—जनि
द पोबेदा—प्रविजय
ट झ लेझात्.—लेटति
पोलझित्.—प्र-लेट
ड ल, लेतात्—डयति
पीला—पीडा (आरा)
ढ ल पोलोत्.—(लोढ़ना)
ण न पोल्नो—पूर्ण
त त स्त्राख्—त्रास
द पदात्.—पतति
न जेलेन्—हरति
ज इज्—अत्
द झ, झेच्—दह
सझात्—सादयति
द द्रोवा—दारु शिझ
दोल्शे—द्राघीय
दोलिना—द्रोणी
ध ज, ज्वान्—ध्वन
झ मेझदु—मध्य
रोझात्.—रोधति
द व्दोवा—विधवा
देयातेल्.—धातर
(नेता)
न न, तोन्किइ—तनुक
प्रेस बा—प्रश्न
प प, पतात्.—पतति
पास्तुख्—पातुक
पिसात्.—पिशति
फ प पल्का—फलक
(लकड़ी)
ब व
भ ब बोल्-शोइ—भूरिशः
अब्लका—अभ्रक
ब्रात्—भ्रात
ब्रोवि—भ्रू
म म, म्यासो—मास
य य युनोस्त्.—युवन्
र र, ब्रात्—भ्रात
ल लुच्—रोचिष्
पोल्नो—पूर्ण
व ब, इबा—इव
ओवोरोत्—अववर्त
बेज्—वि (विना)
व वोज—वह
श च, नोच्.—निश्
श ख, खोलोदे—शरद
श शकाल—शृगाल
च मेशात्—मिश्रयति
स देस्यत्—दश न् (दस)
मुखात्—शुष्यति
सोबाक—श्वक
स्वेकोर—श्वसुर
ख सिखात्.—शुष्यति
सुखोइ—शुष्क (सूखा)
ज,
झ कीझो—कोष (चर्म)
श स्लुशात्.—श्रूषति
स स सझ्दात्—सदयति
सेब्या—स्वीय

ह शिवात्—सीव्यति
नश्—नस्
ह ओ, ओलेन्—हरिण फो
ख स्मेखात्—मेहति

ह ग, स्नेग्—स्नेह
ज जिमा—हिम
वोज्—वह

झ बेर्झात्—दंहति
झ—हि
द पोरोदो—प्ररोह (ण)

(७) सामाजिक विश्लेषण

संस्कृत रूसी उभयभाषाओं में एक से मिलनेवाले शब्दों के तुलनात्मक विश्लेषण से तत्कालीन सामाजिक विकास पर भी बहुत प्रकाश पड़ता है। "बील्तात्" (बोलना), "दब्ल्यात्" (दाबना)-जैसे शब्द बतलाते है, कि कितने ही संस्कृतमें अप्रसिद्ध किंतु प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भाषाओंमें प्रचलित शब्द अपनी जड़ बहुत दूर आर्य-शक कालमें रखते हैं। इसी तरह छींकना-खांसना जैसे अनुकरणात्मक शब्द उसी समयमें पहुंचते हैं। यहां हम इन शब्दोंके आधारपर यह बतलाना चाहते हैं, कि उस कालमें जबकि आर्य और "शक" अपने मूल-निवाससे अलग-अलग हुए, उनका सामाजिक विकास कहा तक हुआ था। इसके लिए हम शब्दोंका यहां वर्गीकरण करते हैं।

भूमि वर्ग

ज़ेम्ल्या—ज्मा (भूमि)
पुत्.—पथ (मार्ग)
गोरा (गरा)—गिरि
दोलिना (दलिना)—द्रोणी (दून)
कामेन्—अश्मन् (पत्थर)

उदक वर्ग

वोदा (वदा)—उद (पानी)
वोद्का—उदक (शराब)
पेना—फेन
स्नेग्—स्नेह (हिम)
ल्योद्—रोधस् (वर्फ, फारसी—रूद नदी)

अग्नि वर्ग

ओगोन्—अग्नि
उगार्—अंगार
उगोल्.—अंगार
झार—ज्वाल (ताप)
झारा—ज्वाल
तेम्नो—तम (अंधेरा)
तुमान्—धूम (धुंआ, कुहरा)
दिम्—धूम

वायु-वर्ग

वेतेर्—वात (फ़ारसी, बाद)

नभ-वर्ग

स्वेर्ख—स्वर्ग (ऊपर)
नेबो—नभस् (आकाश)
ओब्लका—अभ्र (बादल)
सोल्न्त्से—सूर्य
मोल्निया—मालिनी (बिजली)

काल-वर्ग

देन्—दिन
नोच्—निशा
मेस्यत्स्—मास
लेत्—ऋतु (वर्ष)
वेस्ना—वसंत
जिमा—हिम (हेमंत)

वृक्ष वर्ग

देरेवो—दारु (वृक्ष)
द्रोवा—दारु (ईंधन)
बेर्योजा—भुर्ज (भोजपत्र वृक्ष)
त्रवा—तृण

पशु-वर्ग

झिवोत्नोये—जीवत्नु, जंतु (प्राणी)
पेस्.—पशु
रोग्—शृंग
सोवाका—श्वक (कुत्ता)
ओलेन्—हरिण
शकाल—शृगाल
मेद्वेद्—मध्वद (भालू)
मिश्—मूष
ओखोता—आखेट
ओवेन्—ओव्का, अवि (भेड़)
गोव्य—(द्न्या)—गो (अदनीय)
वोल्—बैल
वोल्क—वृक (भेड़िया)

शस्त्र-वर्ग

पाल्का—फलक (डंडा)
ओस्.—अक्ष (धुरा)
इगो—युग (जुआ)

पात्र-वर्ग

कुबोक्—कूपक (प्याला)
कुव्शिइ—कूपिका (लोटा)
चश—चषक (प्याला)
चश्का—चषक (प्याला)

आहार-वर्ग

एदा—अद (भोजन)
एदोक्—अत्ता (भक्षक)
सूप—सूप (मांसरस)
म्यासो—मांस
क्रोव्.—क्रव्य (रुधिर)
म्योद्—मधु (शहद)

पीवो–(पीवा)—पेय
(हल्की, शराब)

वस्त्रवर्ग

कोझा–कोष (चमड़ा)
नगीइ—नग्न (नंगा)
नगोला—नग्नल (नंगा)
शिवात्.—सीवन
शित्.–सीवन
ओदेवात्.स्या—अधिवास
(पहनना)

शरीरांग-वर्ग

ग्रिवा–ग्रीवा (गर्दन)
गल–गल
गोलोवा–गाल (शिर)
गोर्लो–गल (कंठ)
ग्लवा–गल (शिर)
ग्लोत्का—गल (शिर)
चरेप्–कर्पर (कपाल)
वोलोस्–बाल (केश)
ब्रोवि–भ्रू (भौं)
नोस्–नासा (नाक)
ज़ुब्–जिह्वा (दांत)
ओचे–अक्षि (आंख)
पा–पाद (चरण)
पाइ–पाद (भाग)
पोद् (व्यज़्का)—पाद-
(-बंधक)
बोक्–वक्ष (पार्श्व)
सेर्दत्स–हृद् (हृदय)
क्रोव्.–क्रव्य (रुधिर)
पेरो–पक्ष (फारसी, पर)
रेच्–ऋक् (भाषा)

संबंधि वर्ग

मात्–मातृ (मा)
ब्रात्–भ्रातृ (भाई)
सेस्त्रा–स्वसृ (बहिन)
सिन्–सूनु (पुत्र)
दोच्–दुहितृ (बेटी)
देवा–देवी (कुमारी)
देव्का–देवी (कुमारी)
देवोच्का–देविका (बालिका)
देवुश्का–देविका (कुमारी)
ज्यात्–जामात्
स्नोखा–स्नुषा (पुत्र-वधू)
स्वेकोर–श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि–श्वश्रु (सास)
झेना–जनि (स्त्री)
व्दोवा–विधवा
देवेर्–देवर
द्याद्या–दादा (चचा)
देद्–दादा (पितामह)
प्रेदेद्–परदादा
प्रियातेल्–प्रिय (मित्र)

व्यवसाय-वर्ग

ओखोता–आखेट
लोवुश्चा–लुब्धका (जालक)
लोव्चिइ–लुब्धक (शिकारी)
राना–रण (घाव)
पस्तुख–पातुक (मेषपाल)

वर्ण और धातु

ज़्लातो–हरित (सोना)
ज़ोलोता–हरित (सोना)
ज़ेल्योनिइ–हिरण्य (हरा)
ज़ेलेन.–हरित (=हार)

ज़्योल्तिइ–हरित (पीला,
फारसी-ज़र्द)
स्वेत–श्वेत (प्रकाश)
सेदोइ–श्वेत (सफेद बाल)
त्स्वेत्–श्वेत (रंग)

धर्म-वर्ग

बोग्–भग (भगवान)
बोगिनिया–भगिनी (भगवती)
पोचितिये–पूजा (पूजना)

संख्या-वर्ग

एझे–एक =एझे (गोद्नि,
एकवार्षिकी)
द्वा–दो
त्रि–त्रीणि (तीन)
चेतिरे–चत्वारि (चार)
प्येत्.–पंच
शेस्–षष् (छ)
सम्–सप्त (सात)
वोसेम्–अष्ट (आठ)
देस्यत्–दश (दस)
सोत्–शत (सौ)
स्तो–शत (सौ)

गृह-वर्ग

दिरा–दरि (छेद, गड्ढा)
दोम् (दम)–दम (गृह)
द्वेर्.–द्वार
द्वोर्–द्वार (आंगन)
ज़ाल–शाल
ज़ाला–शाला
शलश्–शाला

उस समय के शब्दकोशमें किसी अनाजका नाम नही आया है, न कृषि-संबंधी ही कोई शब्द है—इगो (युग) है, किंतु वह आरंभमें जोड़े (युगल) के अर्थमें रहा। इससे सूचित होता है, कि अभी लोग कृषिकी अवस्थामें नहीं पहुंचे थे। हिंदी और ईरानी आर्य एक जनके रूपमें रहते समय कृषि से परचिति थे, क्योंकि जौ, गोधूम, माष (उड़द)—जैसे धान्यवाची शब्द दोनोंके शब्दकोशोंमें मौजूद हैं। गाय, भेड़ (अवि)—जैसे शब्द आर्य-शक शब्दावली के हैं, किंतु दूधके लिए समान शब्दका अभाव है, हालांकि आर्य-शब्दावलीमें क्षीर (संस्कृत), शीर (फारसी) मौजूद है। इससे जान पड़ता है, कि यदि वे पशुपालक थे तो भी कम-से-कम क्षीरके उपयोगके लिये पशुओंका पालन आरंभ नहीं हुआ था।

धातुओं और वर्णोंके वाचक शब्दोंकी जिस प्रकारकी अनिश्चितता और व्यवस्था है, उससे जान पड़ता है, कि अभी धातुओंसे उनका परिचय न था।

हथियारोंपर विचारनेसे जान पड़ता है, उनके पास काष्ट और पाषाणके हथियार थे, और ऐसे हथियारोंके गढ़नेके लिये "तक्ष" धातुका प्रयोग होता था। पीछे हम "तक्ष" को संस्कृतमें जहां काठ गढ़नेके लिये रूढ़ पाते हैं, वहां रूसी "तेसात्" और "त्योसिवात्" पत्थरके गढनेमें रूढ पाया जाता है।

सब देखनेसे पता लगता है, कि जिस समय आर्य और शक पृथक् जन (कबीले) के रूपमें परिणत हुए, उस समय वह अभी कृषि और धातु से अपरिचित थे। शिकार (आखेट) के अतिरिक्त वह पशु पालन शायद ही जानते थे; जिसमें श्वक (कुत्ता) उनका अवश्य सहायक था। यह युग मध्य पीषाण या आरंभिक नवपाषाण- युग रहा होगा। वह अपने निवासस्थानों को दम (दोम) कहते थे, जो प्रायः पर्वत की दरि (गुह) हुआ करते थे। द्वार गुहाके द्वार और आगन दोनोके लिये प्रयुक्त होता था। दारु, अश्म और अस्थि के हथियारों वाले इन दरी-निवासियों को अग्निकी सहायता मिल चुकी थी, और इसकी मददसे अपना त्राण और भक्षण प्राप्त करते थे। सरदीसे बचनेके लिये अभी वह सलोम चमड़े (कोश्रा) का व्यवहार करते थे, जिसे हड्डीकी सूइयोंसे सी भी लेते थे--ऊनी कपड़ा अभी उन्हें मालूम न था। मांस उनका प्रधान भोजन था, जिसका वह पचन करके सूप भी बनाते थे, जिसकाअर्थ है, किसी प्रकारका मिट्टी का बर्तन वह बना सकते थे। जंगली मधु उनका प्रिय भोजन था।

रुधिर-संबंधियोंमें नाता दूरतक चला गया था। मां, भाई-बहिन, बेटा-बेटी, देवर और विधवा ही नही स्नुषा (पुत्रवधू), ससुर और सास से भी परिचित थे; इससे यह भी स्पष्ट है, कि समाज मातसताक नही पितृसत्ताक था। दम केवल घरके लिए ही नहीं परिवार और जनके लिए भी प्रयुक्त होता था, जिसका अधिपति दमक (दाश्का) भी कहा जाता था। यही राजवाची शब्द दामाके नामसे पीछे के शकों में राजाके लिये व्यवहृत होने लगा था।

आर्य-शक जनमे देवता (भग) का विचार आ चुका था। यह देवता अधिकतर सूर्य, अग्नि, जैसे प्रत्यक्ष देवता थे।

परिशिष्ट २

स्रोत ग्रंथ (१)

(भाग १ से भाग २ तककी छूट)

भाग १ अध्याय ५

१. जामेउत्तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२. स्वोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिवस्या क् इस्तोरिइ जोल्तोइ ओर्दी (लेनिनग्राद १९४१)
३. History of Mangols, 3 Vols : H. H. Howarth (London 1876-88)
४. जुब्दतुत्-तवारीख . हाफिज अबरू (१२२६–८३ई०, अनुवादक के० एम० मैत्रा, लाहौर)
५. तारीख जहागुशा अलाउद्दीन अता मेलिक जुवैनी
६. तबकाते-नासिरी अबू-उमर मिनहाजुद्दीन उस्मान जुजजानी (११९३–१२०० ई०)
७. युआन् चाउ बि शि. (१२४० ई०, सपादक ग० अ० कोजिन, लेनिनग्राद १९४१)
८. सल्जूकनामा नासिरुद्दीन यहिया इब्न बीबी (१२८२–८५ ई०)
९. जफरनामा : निजामुद्दीन शामी (१३९२–१४०० ई०)
१०. शजरतुल्-अत्राक
११. जोलोतया ओर्दा : अ० यु० याकुबोव्स्की
१२. Geschichte des goldeners Horde in Kiptchak : Hammer-Purgstall (Budapest 1840)

भाग १ अध्याय ३

१. जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ History of Mangols : H. H. Howarth
३. असह्हुत्-तवारीख . अनोनेम इस्कदर
४. तवारीख जहागुशा . जुवैनी

भाग १ अध्याय ४

क. सिथ और स्लाव

१. एल्लिन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ : म० इ० रोस्तोव्त्सेफ (पेत्रोग्राद १९१८)
२. Les Sycthes : F. Bergmann (Halles 1860)
३. ओब्रज़ोवानिये द्रेव्ने रुस्स्कओ गसुदार्स्त्वा : व० ग० माव्रोदिन (लेनिनग्राद १९४५)
४. स्लाव्याने द्रव्नोस्ती : न० स० दे.रझाविन (मास्को १९४५)
५. On the Origin of the Antae : George Bernadsky (Journal of American Oriental Society Vol. 59, PP. 56-64

ख. सिथ सरमात

६. प्लेमैना येवरोपेइस्कोइ सरमातिइ : अ० द० उदाल्त्सोफ़े, सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया • १९४६।२ पृ० ४१–५०

७. मतेरिअली क् व्से सो युज्नोमु अर्खेआलोगिचेस्केम सोवेश्चन्यो (मास्को १९४५)
८. स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये : अ० म० सेलिश्चेफ (लेनिन० १९४१)
९. इस्तोरिया वोल्गाइरिइ : न० स० देर्झाविन् (लेनिन० १९४६)
१०. इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया : स० म० सेरेदोन (पीतरबुर्ग १९२६)
११. एन्त्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया : द्व० व० यागिचा (पीतरबुर्ग १९०९)

ग. कियेफ रूस

१२ कियेव्स्कया रूस : व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४४)
१३ प्रोइस्खोझदेनिये रुस्सकओ नरोदा : न० स० देर्झाविन् (मास्को १९४४)
१४. बोर्बा रुसि जा सोज्दानिये वयेवो गसुदारस्त्वा ब० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४५
१५ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
१६. इस्तोरिया रुस्स्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद १९४१)
१७. Histoire de Russie : N. Brian Chamnor (Paris 1929)
१८. स्लवो ओ पोल्कु इगोरयेवे (व्याख्या) : अ० स० ओर्लोफ (मास्को १९४६)
१९. „ „ (मूल) लेनिनग्राद १९४५)
२०. La Lithuanie : Michel Pietiewicz (Bruxelles 1832)
२१. History of U. S. S. R. 3 Vols (Moscow)
२२. Histoire de l' Empire Byzantin : Ch. Dihl (Paris 1919)
२३. कियेव्स्कया रूस : एम्० सी० गुशेव्स्की
२४. द्रेव्नेइशेये अरब्स्कीये इज्वेस्तिये ओ कियेवे : अ० य० गर्कावी
२५. इज्वेस्तिया ओ खजाराख बुर्तासाख' बोल्गराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साखः अबूअली अहमद बिन्-उमर इब्न-दस्त:

भाग २ अध्याय १

१. जामेउत्-तवारीख : रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२. तवारीख वस्साफ : शिहाबुद्दीन, अब्दुल्ला वस्साफ हजरत (१३००–२४ ई०)
३ History of Bokhara : Arminus Vambery (London 1873)
४. Heart of Asiea : E. D. Ross (London 1899)
५. History Mongol : H. H. Howarth
६. ओचेर्क स्तोरिइ सेमिरेच्या : व. बर्तोल्द (वेर्नी १८९८)
७. तारीख रशीदी : मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत, अनुवाद (London 1888)
७ History of U S. S. R 3 Vols (Mascow)
९. इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ : व० व० वेइमार्ना
१०. „ „ „ ब० व० दनिके, १९२७
११. समरकंद प्रि० तिमूरे इ तिमूरिदाख अ० यु० याकूबोव्स्की (लेनिनग्राद, १९३३)
१२. Exploration in Turkistan, 2 Vols : R. Pumpelly (Washington 1808)
१३. इस्तोरिया कुल्तुर्नीइ झिज्नि तुर्कस्ताना : व० व० बर्तोल्द (लेनिनग्राद, १९२७)
१४. इस्स्कुस्त्वो सोवेत्स्कओ उज्बेकिस्ताना : व० व० चेपेलेफ (लेनिनग्राद १९३५)
१५. Voyages d' ibna. Batoutah

भाग २ अध्याय २

१. जामेउत्-तवारीख : रशीदुद्दीन

२. ,, इस्तोरिइ ज़ोलोतोइ ओर्दी (लेनिनग्राद, १९४१)
३. तवारीख वस्साफ : वस्साफ (–३००–२८–)
४. तारीख-गुजीदा : हम्दुल्ला कजवीनी (१२८१–१३२९–)
५. तारीख जहागुशा : अलाउद्दीन जुवैनी (१२२६–८३)
६ History of Mangol : H. H Howarth
७ History of U S. S. R 3 Vols
८. वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस : व० व० बर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्सिस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी तोम II (पेत्रोग्राद., १९२२)

भाग २ अध्याय ३

१. जफ़रनामा : निजामुद्दीन शामी (–१३९२–१४००–)
२. मत्ला सादैन व मज्मा बहैरन : अब्दुर्रज्जाक समरकदी (१४१३–८२)
३ History of Bokhara : A. Vambery
४. Heart of Asia : E D Ross
५. History of Mangol : H H Howarth
६. अलीशेर नवाई . अ० क० बरोव्कोफ आदि, मास्को, १९४६,
७. Memoire de Baber (बाबरनामा) : बाबर (संपादक : A Beveridge)
८. खुलासतुल्. अखबार : खोंदमीर
९. The Miniature Painting and Painters of Persia, India and Turkey (London, 1912
१०. The Persion Miniature Paintings (London 1933)
११. गिरात्स्केओ इस्कुस्त्वो व् एपोखु अलीशेरा नवाई : अ० अ० सेमेनोफ
१२. सफरनामा : नासिर खुसरो
१३. मशारेउल्-उश्शाक
१४. नवाई इ निजामी : ये० ए० बेर्तेल्स, अलीशेर नवाई पृ ६८–९१
१५. खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकंद, १९०५)
१६. बाबरनामा—संपादक न० इल्मिन्स्की, कजान, १८५७
१७. Histoire des Mongols et des Tatars (Peterburg, 1871)
१८ The Mobaiel-lughat : Mirza Mehdi Khan (Calcbtta, 1910)
१९. Literary History of Persia : E. Browne (London, 1919)
२०. Le Meteriel du miniaturiste de l' enlumineur Iranien : (Behzaad Taberzadeh)
२१ Musalmanic Painting XIIth–XVIIIth centbry Blochet Tran. M. Binijon (London, 1929)
२२ Painting in Islam : Th. Arnold (Oxford, 1924)
२३. Manuel de' Art Musalman : G. Migeons (Paris, 1907)
२४. मोनेती उलुगबेका, व० व० बर्तोल्द, इज्वे० रो० अकद० इस्त० म० कुल्तुरी तोम II
२५. तारीख रशीदी : मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत (लंदन १८८८)
२६. रौजतुस्सफा: खोंदमीर (बंबई)
२७. इस्कुस्त्वो स्रेद्नेइ आजिइ : ब० प० वेइमार्न (मास्को १९४०)
२८. तैमूर अभिलेख (वोस्तोकोव्रेदेनिया १९४०–४५)
२९. इरान्स्कोये इस्कुस्त्वो इ ओर्खेआलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)
२९. उलुगबेकन्इ येओ व्रेम्या : व० व० बर्तोल्द (१९१८)

३०. र्‌युन गोज्‌देम्‌ दे क्लावियो

३१ सोबोर्नया मेचेत्‌ तिमूरा : बीबी खानम, म० ये० मस्सोन्‌ (ताशकंद, १९२६)

भाग २ अध्याय ४

१ शैबानीनामा: मुहम्मद सालेह

२. Heart of Asia : E D. Ross

३. History of Mangol : H H Howarfh

४ तारीख रशीदी : मिर्जा हैदर

५ History of Bokhara : A. Vambery

भाग २अध्याय ५

१. History of Bokhara : A. Vambory

२. Heart of Asia : E.D. Ross

३ History of Mongol : H.H. Howarth

४. ओचेत्‌ ओ कोमन्दिरोव्के व तुर्केस्ताने : व० व० बेर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्स्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, तोम II)

भग २ अध्याय ६

१. किताबुल्‌. हिंद : अबूरेहां अल्बेरूनी, अनुवादक सैयद असगरअली (अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली, १९४१)

स्रोत ग्रंथ (२)

अबरू, हाफिज : जुब्दुतुल्‌-तवारीख (अनुवादक के० एम० मंत्र, लाहौर)

अलक्सन्दरोफ, व० अ० : तुर्कमेनिया इ येये कुरोत्‌ नियें बगास्त्वो (मास्को, १९३०)

अल्बेरूनी, अबूरेहा : किताबुल्‌ हिद (अनुवादक : सैयद असगर अली, अंजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली १९४१)

इब्नदस्ता, अबूअली अहमद बिन्‌-उमर : इज्वेस्तिया ओ खजाराख, बुर्तासाख, बोल्गाराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साख

इब्नबीबी, नासिरुद्दीन यहिया : सल्जूकनामा (१२८२–८५ ई०)

इस्कन्दर, अनोनेम्‌ : असह्‌ह-तवारीख

उदाल्त्सोफ, अ० द० : प्लेमेना येव्‌रोपइस्किइ सरमातिइ (सोवियेत्स्कया एत्नोग्राफिया, १९४६/२)

ऐनी, सदरुद्दीन : गुलामान (जो दास थे, अनुवादक राहुल सांकृत्यायन, पटना, १९४९)

: दाखुन्दा " " प्रयाग, १९४९

: बुखारा (अनुवादक—स. बोरोदिन, (मास्को, १९५२)

ओर्लोफ, अ० स० : स्लवा ओ पोल्कु इगोरयेवे- व्याख्या (मास्को, १९४६)

ओस्त्रियालोफ : इस्तोरिया त्सात्ववोवानिया पेत्रा वेलीकओ, (तोम्‌ ५ पीतरबुर्ग, १९१५–७१ ई०)

कज़्वीनी, हम्दुल्ला . तारीख गुजीदा (१२८१–१३२९)
कुवेर्, अ आजियात्स्क्या रोस्सिया (मास्को, १९१०)
क्लाविवो, र्धुन् गोन्ज़्देम्
खान, मिर्जा मेहदी मब्निउल्–लुगात (कलकत्ता, १९१०)
खुसरो, नासिर : सफरनामा
खोंदमीर रौजतुस्सफा (बबई)
गर्कावी, अ० य० ' द्रेव्नेइशेये अरब्स्कोये इज्वेस्तिये ओ कियेवे ।
ग्रुम. गृझिमाइलो, ग. ये. म. ये. पुतेशेस्त्विये इ् जापद्निइ किताइ (पीतरबुर्ग, १९०१)
ग्रुगेव्स्की, म० म० ' कियेव्स्कया रूस
ग्रेकोफ् , व० ,अ० कियेव्स्कया रूस (मास्को १९४४)
,, ,, बोर्वा रूसि जा सोज्दानिये स्वेयवो गसुदास्त्वी (मास्को, १९४५)
जाखविन्, इ० इ० नसेलेनिये समरस्कन्द्स्कोइ ओब्लास्ति (लेनिनग्राद, १९२६)
जुजजानी, मिन्हाजुद्दीन उस्मान (११९३–१२०० ई०) तबकातेनासिरी
जुवैनी, अलाउद्दीन अता-मैलिक तारीख जहागुशा
टेलर, अर्थर . अन्थ्रपोलोजी
त्रेवर, क. व. कोव्रा इज् नोइनउला (लेनिग्राद, १९४७)
देनिके, ब. प. ' इस्स्कुस्त्वो ग्रेद्नेइ आजिइ (१९२७)
द्मित्रियेफ् -कव्काज्स्की . पो स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुर्ग, १८९४)
देर्झाविन, न. स. इस्तोरिया बोल्गारिइ (लेनिनग्राद, १९४६)
" " . पोइस्खोझ्देनिये रुस्कओ नरोदा (मास्को, १९४४)
" " : स्लाव्याने व् द्रेव्नोस्ती (मास्को, १९४५)
नवई, अलीशेर ' खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकंद १९०५)
पोतेम्किन् व प इस्तोरिया दिप्लोमातिइ तोम (लेनिनग्राद, १९४५)
पोलोस्त्स्कया, न : क् वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुसि दो व्लादिमीरा (१९१७)
फेदोरोव्स्की, न. म ' पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (मास्को, १९३७)
बरोव्कोफ, अ. क. : अलीशेर नवाई (मास्को, १९४६)
बर्तोल्द, व प. : इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्किस्तान (लेनिनग्राद, १९२७)
" " : उलुगबेक इ येओ व्रेम्या (१९१८)
" " : ओचेर्क इस्तोरिइ नरोदा (१९२८)
" " : ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरे च्या (वेर्नी १८९८)
" " : ओत्चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्किस्तान (इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरि, तोम् २, द० १–२२)
बर्तोल्द, व. व. : मोनेती उलुगबेका (इज्वे. रो अ. इ. ह्. म. कु. तोम् २, पृ०१९०–२)
" " : वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस („ १९२२ तोम् २, पृ० ३६१–८४)
बाबर : बाबरनामा, Memoire de Babar, (edit. A. Beveridge)
" : संपादक न इल्मिन्स्की (कजान १८५७ ई०)
बिल्वस्सोफ : इस्तोरिया एकातेरीनि व्तरोय (बर्लिन १९९०० ई०)
Bourgeois, E. Manuel historique de politiqe etrangere (Paris, 1927)
Bergmann, F. G. Les Scythes (Halles 1860)

बेर्तल्स, ये. ए. : नवाई इ निजामी अली शेर नवाई, पृ० ६८-९१ (लेनिनग्राद)
Browne, E. . Literary History of Persia (London, 1919)
Blochet., E.. Musalmanic Painting XII—XVIII century (Tran. M.Binijon, London, 1929)
मस्सोन, म. ये. : रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (ताशकंद, १९२६)
" " . सोबोर्नया मेचेत् तिमूरा बीबी खानिम् (ताशकंद, १९२६)
मानूरोदित, व. व. : ओब्रज़ोवानिये द्रेव्ने रुस्स्कओ गसुदास्त्वां, (लेनिनग्राद, १९४६)
यागिचा, इ. व. : एन्तिसक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया (पीतरबुर्ग, १९०९)
याकुबोव्स्की, अ. यु. ज़ोलोतया ओर्दा
समरकंद प्रि-तिमूरे इ तिमूरिदाख् (लेनिनग्राद, १९३३)
रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०) : जामेउत् तवारीख
Rouire, A.M.F. . La rivalite anglo-russean XIX Siecle en Asie (Paris 1908)
Robzianko, · Le regne de Rasputine (Paris, 1928)
Ross., E.D. : Heart of Asia (London, 1899)
रोस्तोव्त्सेफ, म. इ.. एल्लिन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
र्वदोनिकस, व. इ.. इस्तोरिया सससर ४ तोम्
लेस्नेइ, ल. व. : वोस्तानिये १९१६, गदा व् किर्गिजस्ताने (मास्को, १९३७)
लोगोफेत् , द . न. · ना ग्रानित्साख स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुग, १९०९)
वस्साफ, शहाबुद्दीन अब्दुल्ला : तवारीख़ वस्साफ (१३००–२८ ई०)
वित्कोविच् व . . किर्गिज़िया (१९३८)
विलिस्की, स . ग . : यजीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मास्को, १९१४)
वेइमार्न, व . व . : इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आज़िइ
Vernadsky, G. : on the Origines of the Antae (Am. G. D. S., Vol. II L, pp. 56-64)
वोल्खोन्स्की, स . : आ देकाब्रिस्ताख़ पो सेमेइनिम् वोस्पोमिनानियाम्
शामी, निजामुद्दीन : ज़फ़रनामा (१३९२–१४०० ई०)
समरकन्दी , अब्दुर्रज्ज़ाक (१४१३–८२ ई०) : मत्ला-सादैन व मज्मा-बहरैन
सालेह् . महम्मद . शैबानीनामा
सिदिकब्रेकोफ, तुगेलबाइ . तेमिर (उपन्यास, अनुवादक व. रोझदेस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
सेमेनोफ़, अ. अ. : गिरात्स्कओ इस्कुस्त्वो व् एपोख, अलीशेर नवाई
सेरेदोन, स. म. . इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया (पीतरबुर्ग, १९२६)
सेलिश्चेफ , अ. म. : स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये (लेनिनग्राद १९४१)
सोलोवियेफ़, स. : इस्तोरिया रोस्सिइ २९ तोम् (१८७९–८५)
Hanson, G.F. : Europe and China (London 1931)
Hammer Purgstall : Geschichte des goldenen Horde in Kiptchaka (Budapest, 1840)
Hardlicka : Scaleten remains of Early meen (Smithsonian M S : Pub. Vol. Lxxiii, pp. 34,-49)
Howarth H. H. : History of Mongol, 3 Vols (London, 1876-88)
० . इरान्स्कोये इस्कुस्त्वो इ अर्खेलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)

० : इस्तोरिया रुस्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद, १९४१)
० : इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
० : ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिज़ात्सिइ सिबिरि १७ वीं-१८ वी शती (मास्को, १९४६)
० : किर्गिजिया, त्रुदी पेर्वोइ कान्फ्रेन्त्सिइ (लेनिनग्राद, १९३४)
० : तुर्कैस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग ३ तोम् (१८८०)
० : तेमूरी अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया, १९४०, १९४५)
० : त्रुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाज़ी इस्तोरिया यज़ीक-लितेरातुरा (लेनिनग्राद, १९४०)
० : द्वाद्त्सत् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद, १९४०)
० : Persian miniature Paintings (London, 1933)
० : मतेरिअली क् व्सेसोयुज़्नोमु अर्खेआलोगिचेस्केमु सोवेश्चन्यो (मास्को, १९४५)
० : मशारेउल्उश्शाक
० : युआन्, चाउ. वि. शि (संपादक ग. अ. कोजिन् लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
० : रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आज़िइ (ताशकंद, १९२९)
० : वोस्तोकोवेदेनिया (लेनिनग्राद, १९४५)
० : "शजरतुल् अतराक"
० : सोवियत्स्कया एत्नोग्राफिया (१८३६/६-पृ० ११)
० : स्बोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिरस्या क् इस्तोरिइ ज़ोल्तोइ ओर्दा (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
Histoir edes Mongolse t lest atares .. (Petersburg 1871)
History of Civil War in U S S R.
History of U S S R. 3 Vols (Moscow)

स्रोत ग्रंथ (३)

१. पमपेली, रा . एक्सप्लोरेशन इन तुर्किस्तान, २. जिल्द
२. स्वेन्-चाङ : यात्रा २. जिल्द
३. स्क्रिन, एफ० एच०, और रास, ई० डी० : हार्ट आफ एसिया (१८९९ ई०)
४. बरर्तोल्द, वी : तुर्किस्तान डौन टु द मंगोल इन्वेजन (१९०० ई०)
५. होवर्थ एच० एस० : हिस्ट्री आफ मंगोल, ३ जिल्द (लंदन, १८८० ई०)
६. पारकर, ई० एच० : ए थौजंड यर्स आफ दी टारटर्स (शांघाई, १८९५ ई०)
७. लेम्ब, हेराल्ड : जिंगिज खान (लंदन, १९२८ ई०)
८. कार्पिनी, जौन आफ प्लानो : ट्रेवल, (हक लइट सोसाइटी लंदन १९००)
९. इब्न-बतूता, : ट्रेवल, अनुवादक—दफ्रे मेरी और सांकी नेती, (पेरिस, १९५३ ई०)
१०. मार्को पोलो : ट्रेवल, अनुवादक हेनरी यूल (लंदन, १९२१ ई०)
११. रूबरिक, विलियम : ट्रेवल टू दी ईस्टर्न पार्टस आफ दी वर्ल्ड (हकलूइट सोसाइटी लंदन, १९००)

१२. ईनोस्त्रान्तोफ, क : खुन्नी ई गुन्नी (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)
१३ बाम्बेरी अर्मिनस, हिस्ट्री आफ बुखारा (लंदन, १८६३ ई०)
१४. बारतोंल्द, व. ओचेर्क इस्तोरिइ सेमीरेच्या (लेनिनग्रा, १९२८ ई०)
१५ रियाल गिरार्द दे मेम्बार सुर ला आज़ी सांत्राल (पेरिस, १८७५ ई०)
१६ हैदर, मिर्जा . तारीख रशीदी-ए हिस्ट्री आफ द मोगल आफ सेंट्रल एसिया, अनुवादक एलियस और रास ई. दी. (लंदन, १९९५ ई०')
१७ बरतोल्द, व. व. ओचेर्क इस्तोरिइ तुर्कमन्स्कओ नरोद (१९२८ ई०)
१८. बेर्गमान, एफ० जी०, ले सित, (हाल्स, १८६० ई०)
१९. ए हिस्ट्री आफ दी यू० एस० एस० आर० ३ जिल्द (मास्को, १९४८ ई०)
२०. दमोर्गन जेक, ल' मानिते प्री-इस्तारिक (पेरिस, १९२४ ई०)
२१. मापेरो, जी. . इस्त्वार आंसियान दे प्यूप्ल दे लोरियां (पेरिस, १९०५ ई०) .
२२ तार्न, डब्ल्यू, डब्ल्यू, : द ग्रीक्स इन बैक्ट्रिया एंड इंडिया (कैम्ब्रिज, १९३८ ई०)
२३ पीगुलेवस्कया न. ' सिरिइस्किये इस्तोचनिकी प' दस्तोरिइ नरोदोफ एस० एस० एस० एर० (मस्क्वा, १९४१ ई०)
२४. त्रेवेर, क. व.. पाम्यात्निकी ग्रीको—वाख्त्रिइस्कवो इस्कुस्त्वा (मस्क्वा, १९४० ई०)
२५ त्रेवेर. कमीला टेराकोटाज फ्राम अफासियाब, (मास्को, १९३४ ई०)
२६. ई. अ. ओर्बेली, ई० अ०, और त्रेवेर क. व. : सासानिद् स्किई मेतल (मस्क्वा, १९३५)
२७ ईरान्स्किये इस्कुस्त्वा इ आर्खेओलोगिआ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
२८. सत्यश्रवा, : द शकाज इन इंडिया (लाहौर १९४७ ई०)
२९. पीगुलेवस्कया न. व. : बिजन्तिया इ ईरान (मस्क्वा, १९४६ ई०)
३०. रोस्तोव्त्सेफ, म० ई०. : एलिन्स्त्व इ ईरान्स्त्व ना युग रोसिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
३१ ईरान्स्किये यजीकि, (अकदमिइ नावुक मस्क्वा, १९४५ ई०)
३२. चाइल्ड, गोर्डन : द ब्रौज एज (कैम्ब्रिज, १९३० ई०)
३३. चाइल्ड, गोर्डन, : प्रोग्रेस एंड आर्केआलोजी (लंदन, १९४१ ई०)
३४ हैडन, ए० सी०, : हिस्ट्री आफ अन्थ्रापोलोजी (लंदन, १९४५ ई०)
३५. टेलर, ई० बी०, : अन्थ्रापोलोजी, २ जिल्द (लंदन, १९४६ ई०)
३६. मार, न. य. . यजीक इ इस्तोरिया (लेनिनग्राद, १९३६ ई०)
३७. योवान चाउ बी. सी., अनुवादक कोजिन, स. अ. (मस्क्वा, १९४१ ई०)
३८ वेईमार्न ब. व. इस्कुस्त्व स्रेदनेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)
३९ गिन्जबुर्ग, ब. व. : गोर्निये ताजिकी (मस्क्वा १९३७, ई०)
४०. इस्तोरिय दिप्लोमातिइ, ३ जिल्द (मस्क्वा, १९४५ ई०)
४१. शुनकोफ, ब. ई. . ओचेर्क प. इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिर (मस्क्वा, १९४६ ई०)
४२. सेरेदोनिन, स. म. . इस्तोरि-चस्कया ग्योगराफिया (पेत्रोग्राद, १८१६ ई०)
४३. द्मित्रीयेफ-कफकाजस्की ल. ई , : प रेदनेइ आजिआ जापिस्की खुदोजनिका (पीतरबुर्ग, १८९४ ई०
४४. इस्तोरिआ रुस्कइ लितेरातुरि, अकदमी नाउक (मस्क्वा, १९४१ ई०)
४५. यागिच. ई. व., ' एन्स्क्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिललोगिया, (सां पेतेरबुर्ग, १९०९) ई०
४६. यजीकोज्न निये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मस्क्वा, १९१४ ई०)
४७. ग्रुम ग्रजीमाइलो, : पुतेशस्त्वये व् ज़ापदनिइ किताई (पीतरबुर्ग, १९०१ ई०)
४८. प्रजेवाल्स्की, न० म० : मंगोलिया इ स्त्राना तुगतोफ (मस्क्वा. १९४६, ई०)
४९. आज़ीआत्स्कया रोसिया (मस्क्वा, १९१० ई०)

५०. ग्रकोफ, ब० द० : कियेफ्स्कया रूस (मस्क्वा, १९४४ ई०)
५१, मावरोदिन, व० ब०, ओबराजोवानिये द्रेब्न-रुस्कवो गसुदार्स्त्वे (लेनिनग्राद, १९४५ ई०)
५२. देर्झाविन, न० स० इस्तोरिया बोल्गारिइ, (मस्क्वा १९४६ ई०)
५३. देर्झाविन, न० स०, स्लाव्यिाने त्र्द्रेवनोस्ति (मस्क्वा, १९४५ ई०
५४ स्बॅनिर्क मातेरियालोफ क-इस्तोरिइ जोलोतोइ ओर्दि, जिल्द २ (मस्क्वा, १९४१) ई०
५५. बोरोफकोफ, अ० क०, सपादक . अलीशेर नवाई (मस्क्वा, १९४६ ई०)
५६. हिस्ट्री आफ दी सिविल वार इन दी यू. एस. एस० आर. २ जिल्द (मास्को १९४६ ई०)
५७. बोआस, फ्राज और दूसरे, जेनरल अन्थ्रापोलोजी (न्यूयार्क, १९३८ ई०)
५८. बर्किट, एम० सी० आवर अर्ली एनसेस्टर्स (कैम्ब्रिज, १९२९ ई०)
५९. त्रेवेर कमीला, : ए सकवेशन्स इन नार्दर्न मंगोलिया (लेनिनग्राद, १९३२ ई० १)
६०. इस्तोरिया रसिइ, चित्रमय (पीतरबुर्ग, १९०४ ई०)
६१. केन-शेन-वेग, रसो चाइनिज डिप्लोमेसी (शाघाई, १९२८ ई०)
६२. चूइमची . ए शार्ट हिस्ट्री आफ् चाइनिज सिविलिजेशन (लंदन १९४५ ई०)
६३. रिस्कुलोफ, तु. र . वोस्तानिये १९१६ ग० व०, किर्गिजिस्ताने
६४. बेर्नस्ताम अ. , : तुरोक (मस्क्वा १९४६ ई०)
६५ ग्रेकोफ, ब० द० बोर्बा रोसी जा सोज्दानिये स्वोयेवो गसुदार्स्तव (मस्क्वा, १९४५ ई०)
६६ देझ्राविन, न० स० · प्रोइस्खोज्दानिये रुस्कवो नरोदा (मस्क्वा, १९४४ ई०)
६७. लोगोफेत· द० न० : ना ग्रानित्साख् स्रेद्नेइ अजीइ (पेतेरबुर्ग, १९०९ ई०)
६८. एफीमेन्को, प० प० · पेर्वोबित्नीवे ओव्शेस्त्वा (लेनिनग्राद, १९३८ ई०)
६९. स्त्रूवे, व० व० : इस्तोरिया द्रेब्नेओ वोस्तोका (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
७०. शचनित्सर, या० ब० : इस्तोरिया पिस्मेन (पीतरबुर्ग, १९०३ ई०)
७१. बाचिन्स्की, न० म० · आर्खित्रोक्तुर्निय पामेत्निकि तुर्कमेनिइ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
७२. अलेक्सन्द्रोफ, ब० अ० . तुर्कमनिया इ येवो कूरोर्तनिये बगात्स्त्व (मस्क्वा, १९३० ई०)
७३. वेइमार्न, ब० व० · इस्कुस्त्व स्रेद्नेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)

संग्रह और अनुसधान-पत्रिकायें

१. सोव्येत्स्कोे वोस्तोको-वेदनिये जिल्द I–III
२. सोव्येत्स्कया आर्खओलोगिया
३. सोवेत्स्कया एत्नोग्राफिया
४. वस्तनिक द्रेब्नेइ इस्तोरिइ
५. मतरियलि इ इसुस्लेदोवानिया प. आर्खेओलोगिइ एस० एस० एस० एर०
६. ऋत्किये सोओब्श्चनिया.
७. ताजिक्स्कया कम्प्लेक्सनया एक्सपेदित्सिया १९३२ ई०
८. ताजिक्स्को-पामिर्स्कया एक्सपेदित्सिया १९३५ ई०
९. कराकल्पकिया
१०. इस्तोरिचेस्किये जापिस्की
११. ओजेरो इस्सिक्कुल (मस्क्वा, १९३५ ई०),
१२. किर्गिजिया, अकदमि नाउक (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
१३. इजवेस्तिया रोसिइस्कोइ अकदेमिया (पीतरबर्ग, १९२२ ई०)

१४. नाउच्नये इतोगी ताजिक्स्को—पामिर्स्कोइ एक्सपदित्सि (मस्क्वा, १९३६ ई०)
१५. उज्बेकिस्तान : त्रदि इ मातरियलि पर्वोइ कन्फरन्सिइ प. इजुचनियू प्रोएजवोदित्नीख सील उज्ब-
किस्ताना देकाग्र्ब्या १९३२ (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
१६. मातेरियलि क. व्सेसोयुज्नोमु आर्खओलोगिचेस्कोमू सोवश्चेनीयू (मस्क्वा, १९४५ ई०)
१७. नासलनिये समरकंदस्कोइ ओबलास्ति (लनिनग्राद, १९२६ ई०)
१८. एपिग्राफिका वोस्तोका

परिशिष्ट ३

नामानुक्रमणी

अइगिर—२९७
अइबुगिर—४८१
(देखो एबुगिर भी)
अउसकाकुल—११
अकार—५६
अककु गान—२८०
अक-ओर्दू—१८ (श्वेत-ओर्दू), ४२, ५०
अककला—४८४
अककामिश—४८३
अककियक—३४९
अककुयाश—३१०
अकखोजा—५१
अकताई खान—२०१
अकताग—५९ (श्वेत-ओर्दू), ३६१
अकत्यूबिन्स्क—४१५
अकदमी—२६५
अकनजर—६९
अकबर—१११, ११६, १५४, १८०, १८१, १८३, १८८, २१९, २२४, ३१३, ३२१, ३२४, ४४४, ५४६ (-तुकसाबा बासमची)
अकबास—३०२
अकबुका—३२
अकबेत—५१६ (उज्बेक)
अकमस्जिद (पेरोव्स्की बंदर)—३७८ (अकमेचेत), ३७९, ४२६, ४३०, ४३२, ४७४, ४७७
अकयूर्त—१६६, २७५
अकरमान—३६८
अक-रबात—४९८
अकराम—५२६ (मुफ्ती हाजी)
अक-शक्काल—२१० (जेठ), ४२५ (=अकसक्काल), ४४५, ४७०
अकसाई—३११
अकसी—१७६, १८८, २८१, ३०५, ३०७, ३०८, ४४२
अक्सू—२९६, ३०२, ३०३, ३०४, ३०७ (पू० तुर्किस्तान), ३०८, ३०९, ३१०, ३३१, ४२५
अक्कल (ओसी)—४८९, ४९०, ४९२ (तेक्का), ४९९ (मे अरकाबाद)
अक्तूबर-क्रांति—५१०, ५१८ (=बोल्शेविक-क्रांति), ४२४, ५२६, ५४९
अक्तूबरी—४१०
अक्त्युबिन्स्क—५३४
अखताची—३०५
अखताना—५१५ (उज्बेक)
अखतूबे—५१
अखलकला—३६८
अखसू—१६६
अखुन—३१६, ३५४
अखुन्दजादा—४७५
अखोत्स्क—२४० (शिकारवाला), २४४, २७१, ३८१
अख्तेखोजा—४७१
अगतमा—४४५
अगताई—२००
अगरका—३१७
अगस्तस्—१०९, २४९
अगामइली—५१६ (उज्बेक)
अगिर—५१५ (उज्बेक)
अचकियान—४२६
अचमइली—५१६ (उज्बेक)
अज—५१६ (उज्बेक)
अजक—५६ (अजक जेर्नुक), ५९, ६०, ६२ (क्रिमिया), ६४, १५१ (=अजाक)
अज़ीज़—४३
अजीम—२०५
अज़ोफ—३५, ७४, ७७, २२९, २४७, २४८, २४९, २५१, २८९, ४०९
अतबाश—२९७, ३०१, ३१०
अतरक—४९४
अतलांतिक समुद्र—३७२
अताकरागुई—५८
अताकुर—२९७
अताजान—४७८ (०मुराद), ४८५ (०तेमूर, ०त्युरा)
अतालीक—१४९, १९२, ४३९ (मुख्य परामर्शक), ४४०, ४६९
अतावेग (अध्यापक, संरक्षक)—३१२
अतिक—११२
"अतेचेस्तत्वेन्निये ज़ापिस्की"—३९२

अत्तार—१४७

अत्तिला—७२

अत्लसोफ—२५२, २५३

अदकली—२०० (सैनिक)

अदल्फस—२२५

अदामत—२९१

अदाशेफ—१०७

अदेस्सा—३८०, ३८३, ३९१

अद्नोदेरेब्की—७७ (एकदारुक डोगी)

अद्रियातिक—६, २४

अद्रियानोपोल—३४, ५९,४११

अधिकार-पत्र—९३

अनवर पाशा—५२६, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५

अनस्तासिया—११५

अनहाल्ट-ज्वर्स्त—२५८

अनाकरागुई—५८

अनादिर—२५२

अनाम—७

अनी—६

अनुनीम इसकंदर—४१, ४३, ५१ (इस्कंदर भी)

अनुशा—१९० (खान), २११ (अनुशाह)

अनोइचेंको—३७६

अन्त (जन)—७१-७३, ९३

अंतर्राष्ट्रीयतावादी—५९३

अन्तर्वेद—५५, १२१, १२२, १२८, १३२, १३४, १६५, २७७, ३०६, ३५२, ५३६ (वक्षु-सिरका द्वाबा, मावरा-उन्-नहर)

अतर्-मंगोलिया—३२४

अन्थनी—१९०

अंधकार-भूमि—३७, ७३,९४

अन्दखुई—१३५ (अंदखोई), १८६, १९४, ४५१, ४८९, १९१, १९२, ४६१, ४६३ (अंदखुद)

अंदराब—१३७, १७९, ४६०

अंदा—१३०, १३१ (परममित्र)

अन्दिजान—५५, १५३, १६१ (फरगानामे), १६४, १७५, १७६, १८०, २८०, २८१, ३०२, ३०४, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०, ३१२, ३३६, ३९४, ४२१, ४२२, ४२७, ४३१, ४३५, ४३६, ४३७, ४९९, ५१९-२२

आन्द्रेइ—२७, ५१ (वेनेरिस), ९१, ३१८ (=आंद्रेइ)

अंद्रोनिकस्—३७

अन्ना—८३, १०७, २५७, ४६७ (रानी)

"अन्ना करेनिना"—३९३

अन्नादे—२५५

"अपराध और दंड"—३९२

अप्पक—३२८ (खोजा), ३३३

अफ़गान—१९२, १९४, ४२२, ४४२, ४४६, ४९८ (बस्ती)

अफगानिस्तान—६, ३७, ४७, १२१, १३२, १३४, १३७, १४७, १५०, १५९, १७२, ३०४, ३४७, ३७८, ३८८, ३९०, ४०१, ४१५, ४५० (-युद्ध), ४५३, ४६२, ४७४, ४८८, ४९७, ४९८, ५२०, ५२५, ५२७, ५४१, ५४४, ५४५, ५४६, ५५१

अफनासी—१०१

अफशर—४२५ (अफसर), ५४० (तुर्कमान)

अफ्रीका—१४१, ३७२, ४०८, ४११

अबकस—२०९

अबका—८, २८, २९, ३१ (खान), १३०, १३१, १३२, १३८, १४३, १४४, २८५

अबखाजिया—३९

अबदाबाद—४०

अबनोस्की—३९० (विक्तर)

अबरकुन—१०४

अबलाई (मध्य-ओर्दू)—३३६, ३४१, ३६१ (अबलइ)

अबलिन—२४१

अबलेक—१९६

अबलै—३१५ (० गिराई), ३३७ (०खान)

अबादुल—२८५

अबालक—११२, ११५

अबिश्का—१२८

अबीवर्द—१८५, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, ४६७

अबुलखैर—१५६, १५९ (खान), १६५, १९६, १९७, २७५, २९१, ३०९, ३१७, ३१८, ३४३, ३४४, ४६७ (लघु-ओर्दू)

अबुल्गाजी—१९०, २०६, २०७ (इतिहासकार), २०८, २०९, २८१, ३५६, ३५७, ४४०, ४६८ (द्वितीय खान), ४६९

अबुल्फजल—१४७ (अकबरके प्रधान मंत्री)

अबुल्फतह—१६७

अबुल्-फ़ेदा—४७

अबुल्फ़ैज़—१९२, १९३, ३४९, ४६६, ४६९ (खान)

अबुल्मन्सूर—१६६

अबुल्मुहम्मद—२०३, ४६८

अबूतालिब—१८७

अबूबकर—६०, ६६

अबू-याकूब-यूसुफ़—१२५

अबू-सईद—३३, ६३, १२१, १४५, १४७, १४९, १५९ (खान, बाबरका दादा), १६०, १६५, १६६, १७७, १७८,

३०२•(मिर्जा), ३०३
अब्दाली—१९२
अब्दुर्रज़ाक—६४ (समरकदी), १५०, १५६, १५७
अब्दुर्रशीद—२७८
अब्दुर्रहमान, मुल्ला—४९२ (तेक्का)
अब्दुर्रहमानोफ—५३३
अब्दुर्रहीम खान—४७२
अब्दुल अज़ीज—१९०, २१० (खान)
अब्दुल अहद—४५३
अब्दुल्करीम—४७१, ४७२
अब्दुल-मोमिन—१८०, १८१, १८२, १९४, २०४
अब्दुल्लतीफ—१५८, १५९, १७९
अब्दुल्ला—१३६, १४६, १५९, १६१ (खान), १६५, १७९ (प्रथम), १८० (२), १८२, १८३ (द्वितीय), २०४, २८१, ३३१ (तर्खनबेग), ४७७ (खीवा), ४८६ (मेहतर)
अब्दुस्समद—४४६ (खा), ४५० (नायब-), ५२६ (जदीद)
अब्बास—१८१, १८२, १८३, १८५, १८६, १८७, २०७, २०९ (प्रथम), ४९०, (मिर्जा, शाह)
अब्बासी—१२१
अब्रामोफ (जेनरल)—४५३, ४५७, ४५८
अमनगेल्दी—४१५
अमलाकदार—४५३
अमस—१०४
अमासची—३०३, ३०४ (शैशी=अमासाजी)
अमीन—१७७ (मिर्ज़ा), १९६, ४७६ (खान)
अमीनियाना—४३३
अमीनेक—१९६
अमीर—११३, १४५, १४८, १५०, ४२५, ५२३ (देखो बुखाराके अमीर)
अमीरअली (तुर्कमान)—४७१
अमीरवली—५४, ५५
"अमीरुल् मोमिनीन"—४४६ मुसलमानोका प्रमुख)
"अमीरोका घोंसला"—३९२
अमुरसना—२६३, ३३५, ३३६, ३४६, ४६०
अमूर—३८१
अमेरिका—९, २४०, २५९, २६३, ३६६ ३७२, ५०५ (युद्धमे), ३९७ (सयुक्त राष्ट्र), ४००, ५५०
"अम्बन" (महामात्य)—३२४
अम्बर—७५
अयहुन—२४३
अयागुज़—५३०
अरक—१६५
अरक्चेयेफ—३६५, ३७१, ३७४, ३७५
अरखंगेल्स्क—२२६, २६५
अरगन—५१४ (उज़्बेक)
अरगन—४६ (खान), १३१, १४३, ३८१, ५३० (नदी)
अरंग—४६५
अरतक—१६७, २९८ (कुत)
अरपा—३६ (खान) १३२, २९७, ३१० (-उपत्यका)
अरब—३१, ७४, ८१, ८९, १०३, २०४, २०६, ३०१, ४९३ (घोडे), ५१७, ५३६, ५३९, ५४१, ५४८
अरब मुहम्मद—३३८
अरबशाह—१५३, ३१५ (शाह), ३३८ (मुहम्मद),
अरबाज़ी—२००
अरबात—३०९
अरबी—१५४, ५१४ (उज़्बेक) ५२९
अरलत—१३५, ५१४ (उज़्बेक)
अरसलन—१३८ (खान), २७९ (अर्सलन), २८९ (बेग)
अरसू—३२४
अरा—३२४
अराक तेमूर—१६६
अराजकतावादी—५५०
अराज़खान—४९० (किला-)
अराजान—२९८
अराल (सागर)—६, ६२, १९६, २०६, २०९, २१०, २९०, २९१, ३५२, ३८७, ४३०, ४६४, ४६७, ४७३, ४८६, ४८९, ५२८, ५३५, ५३७, ५५५
अरालद्वीप—४७१
अराली—३५३, ४६१, ४६६
अराल्स्क—३५८, ३७९, ४२९, ४३०, ४७६ ५३०
अरिकबुगा—८, १२८, १२९, १४३ (=अरिगबुका)
अरिक्षलार—३११
अरिग—३०८ (मुगोलिस्तान)
अरिदसियंका—११३, ११४
अरिस—२७९, ५३०
अरिस्तनबेल—४८२
अर्क—१६५ (=अरक), १९०
अर्ज़मस—२३७
अर्ज़म—८, १०४, २०३
अर्दहान—३८६, ३८७
अर्ध-दास—९४, २१८, ३७६, ३८५
अर्पचन (रब्तन)—३३१ ३५० (=अर्बतन भी)
अर्मनी—६, ३९, १२५, १२७, १४१, १४५ (अर्मेनिया), २५१, २६३, ५१२ (गण-

राज्य), ५५१, ५५४
अर्गन—२८, ३१, ३३, ५५ (द० काकेशसमें नगर), १४१, १४५, १४६
अलई पहाड़—४३७
अलक—१९६
अलकनंदा—१५२
अलकसंदरिया—१३५
अलकुसुना—५६
अलगू—८, १२८, १२९
अलचिन—५१६ (उज़्बेक), ५३०
अलची—२९
अलजंई —३०
अलतिन-एमेल—३३१
अलतुन-क्युरगे—२९८
अलदल—२४०
अलबर्ट—९५
अलबाजीन—२४२, २४३, २५५
अलबानिया—२३
अलमाती—२९९
अलश (खान)—५३५
अलसस्-लोरेन—४११
अलाउद्दीन—१३४, १४१, १४४, १५७, १५८
अलाउलमुल्क—१३५
अलाकामक—१२७
अलाची (बहादुर)—३०७ (=अलची)
अलाताउ—१२७, २७७ (=अलाताग) ३११, ५३५
अलान—४८४
अलानिया—५६
अलाबुग—३०१
अलास्का—१५६
अलिकसुदंर—४५९
अलिमूत—२९६
अली—१०३, १८३, २००, ३१५ (ओगलान), ५४८ (उराक)
अली—५७ (-तेक), १०३, १३६ (-सुल्तान), १५० (-मोर्तैयद), १८३, २००, ३१५ (-ओगलोन), २५५ (-मुल), ४६८ (-कुल्ली), ५४४ (-उराक)
अलेक्सान्द्र—३४ (त्वेर), ९५, ९७, ३४९, ४७८ (ज़ार), २६८ (१), २७१, ३७०, ३९३ (३), ४९५ (२)
अलेक्सान्द्र (उलियानोफ)—३९५
अलेक्सान्द्रोवयेल्स्क—४६५
अलेक्सी—९८, १०७, २३५ (अलेक्सांद्र), २४१, २५१, २५२, ४१९
अलेक्सी नेवस्की—२१, २७, ९५, ९६ (=अलेक्सांद्र)
अलेक्सांद्रोवा-स्लवोदोवा—१०८, १०९
अलेक्सेन्द्र (ज़ारिना)—३९४
अलेप्पो—१४० (=हलब)
अलेफ—१०३
अलोई—२५४
अल्कोशिदना—२९७
अल्टीमेटम—५२२, ५२४, ५५२, ५५४
अल्तन—३१५ (=सुवर्ण)
अल्तन खान—२२७, ३२१, ३२४, ३२६, ३३८
अल्ता-ओर्दू—२९१
अल्ताई—४८, १२१, १३२, २३४, २६४, २६७, २७१, ३२१, ३२६, ३७८, ३७९, ३८७, ४०१, ४८९, ५२८, ५३०, ५३५
अल्ताकुल—११०
अल्ती—४२२, ४८२ (-कुदुक), ५३०, (अता),
अल्तून-कला —४२६
अल्त्वीन—१०३
अल्तिशान—३२४
अल्पअर्सलन—३१८
अल्पमास—४८४
अल्बानिया—४९१
अल्माअता—२९८, ३३४ (सेबका बाप) ३६१, ३७९, ४१५, ५३०, (वैनी,) ५३२, ५३३ ५३४
आल्मालिक—५६, १२१, १२२, १२५, १२६, १२८, १२९, १३४, १३५, १३७, १३९, १४९, २९६, २९८
अल्मौल—१३९
अल्लाकुल खान—४७३
अल्लाबर्दी जीज—४१९
अल्लामदार—१५३
अवरत—५१४ (उज़्बेक)
अवशा—५४७ (तुर्कमान)
अवानेक खान—१७८, २००
अवार—२८४
अव्वाकुम—२९
अशगर—१८७
अशूरबेक—४६४, ४६५, ४६५ (=असुर बेक)
अश्कखाशी—५४८
अश्काबाद—३८८, ४९३, ४९८ ४९९, ५४५, ५५१, ५५५
असदुल्ला—४३२ (डाक्टर)
असमानक—३१८
असहयोग-आंदोलन—५...
असेत—६ (औसेत)
अस्कोल्द—७५, ७७
अस्त्राखान—५१, १००, १०८, १६७, १८५, २०५, २२५, २२६, २३६, २३७, २५०, २८७, २८८, २९१, ३३८, ३३९, ३४०, ३४९, ४०३

४२०, ४४४; ४६५, ४७३, ४७४, ४७५
अस्त्राबाद—१५४, १५६, १६१, १६८, १७६, २००, २०३, २०४, ४६५, ४७०, ४९०
अस्पहान—३, १०४, १५०, १५४, २०९
अस्पेराई—२०० (अस्त्राबाद के समीप)
अस्फन्दयार—२०४, २०६, २०७ (=इस्फन्दयार)
अस्साकी—४३७
अहमद—६७, १००, १२६, १३०, १४३ (-तगूदर), १४७, १५३ १६०, १९१ (२), २७६, ३०४–५ (-मिर्जा)
अहमदशाह—१९४, ३४७, ४३९, ४४१, ४४२ (अब्दाली)
अहरार(खोजा)—१५३, १६१, १८३
अहोम—१४
अंका—५५ (-तुरा), ६३
अंगा-त्यूरी—२९७, २९८
अगारा—२३८, २७२, ३२१
अंगोरा—१५२
अग्रेज—२२२, २४०, ३९०, ४४४, ४९७(से तनातनी), ४९८, ५१९, ५२०, ५२२, ५३०, ५४२, ५५१, ५५२, ५५४
आइतोफ(लेफ्टनेंट)—४७६
आइशा—२००
आइने-सिकंदरी—१६१
आकचा—१९४
आक्सफोर्ड—१५८
आक्सू—५४४
आगरा—१७७, ३१३
आगाखान—१४०
आगामुहम्मद–४४२ (तुर्कमान).
४९० (काजारवंश-संस्थापक)
आगा यूसुफ—४७२
आगिस—२००
आगूज—५७, २८२ (तुर्क), ४८९ (तुर्कमान)
आजुरबाइजान—३९, ५४, ६२, १२१, १३१, १४५, १४६, १५०, १६०, १६४, १७२, १७६, ३०१, ३७२, ३७७, ५१२, ५४८ (तुर्की), ५५४,
आतमन (सरदार)—११०, २२३, २३०, २३५, २६१, ५२५ (=अतमन)
आत्माराम दीवानबेगी—४६०
आदमक्रिलगन—४८२
"आधारिक राज्यविधान–"४०४
आफताबचा अब्दुर्रहमान—४३४, ४३५
आफदी—४७८ (मुल्ला)
आफरीकद—२८०
आबदरा—१७४
आबुर्दन—४५८
आबेल्दिन—५३७
आबेसफेद—५३९ (गाव)
आमिन-संधि—३६६
आमू—१२१, १३०, १७३, १८९, २०५, ३३४, ४८२, ४९९ (=वक्षु), ५३५, ५५०, ५५५(=आमूदरिया)
आमूर—२४०, २४२, २७१, ३८८
आमूर्स्की—३८९ (ग्राफ)
आमूल—१०३ (=चारजूय)
आम्सटर्डम—२४८
आयुका—२३५, २५३, ३३२ (खान)
आयुर्बलीभद्र—१५
आरदोक—२०५
आरजित्ज्ञान—१०४
आरिस—५६
"आरोरा"—५०९ (क्रूजर)
आर्क—२११, ५२६ (किला), ५२७ (बुखारा)
आर्क लैम्प—३९६
आर्खेंगेल्स्क—३६५
आर्थिक सकट—३९३
आर्य—५१६, ५३६, ५४१, ५४८
आलक—३३० (अलाताउ)
आलमखान—५२६ (अंतिम अमीर बुखारा), ५४१, ५४४
आलाखाना—५३९ (यगनाबमे)
आलान—१८
आलेस—१११
आल्प—२७०
आवक—६
आवा—७ (बर्मा)
आवार—७२, ७३
आस—२८४
आसफुद्दौला—४९० (खुरासान)
आसाम—१४
आसियाबी—४६२
आस्टर्लिज (बोहीमिया)—३६६, ३६७ (चेकोस्लोवाकिया)
आस्ट्रिया—२४८, २५९, २६०, २६३, २६६, २६९, ३८०, ३८६, ४०७, ४११, ४१२ (-युवराज), ४१३
आस्ट्रेलिया—२४४
आहगर—१२९
आहनीदरवाजा—१७० (लौहद्वार)
इइगदेर—५४७ (तुर्कमान)
इइवे—५४७ (तुर्कमान)
इक—५९ (शकमाराकी शाखा)
इकान—३५३
इकोनियम्—१४३
"इखलास"—१६०

"इख्तियार"—४९२ (तेक्का)
इगदी—४८३
इगदेर—५४७ (तुर्कमान)
इगलान—५१५ (उज्बेक)
इगेल्स्त्रोमन—३५५, ३५६, ३५७
इग्नातियेफ—३८९, ३९० ४७८ (जेनरल)
इचनीबुचनी—२९८
इज्जतुल्ला—४६०(इतिहासकार), ४६२
इज़बोर्स्क—७५
"इज़्ब्रान्नया रादा"—१०७
इज्माइलोवो—२४६
इज़्यास्लाव—८६
इड्स—२५३
इतशकी—२००
इताली—३९, २६६, २६८, २६९, ३७३, ३७९, ३८२, ४११, ४१२
इतिहास—१५६, २०६-८, ३०४ (-लेखक), ४२५ (-कार)
इ-तू—१२८ (इ दू)
इतेल्मेन—२७१
इत्तिल (वोल्गा नदी)—२०, २६, ३०, ३१, ७१, ७३, ७४, ७५, ७९, ८०
"इत्तिफाक"(=लीग)—५१८, ५२१, ५२३
इदिकू—४९, ५६ (उज्बेक), ६२, ६३, ६४, २८६
इनफ़ान—५२०
इनारी—२८९ (नारी समान)
इन्नोसेंत—२६
"इंस्पेक्टर जेनरल"—३८४
इपबिस—६६ (सिकिर)
इपीर—६३
इब्राहीम—७३, १५६, १६६, ५३९ (सफर), ५४६ (-गल्लू बासमची)
इब्न-फ़ज़लान—७९
इब्न-बतूता—३६, १३४, १३५
इब्न-यमीन—१४७
इब्न-हौकल—७३
इमानोफ—५३१ (अमनगेल्दी), ५३२
इमाम—१७४, १७७, १८१ (रज़ा), १८५, २०८ (-कुली).३०४ (-जाफर)
इमिल—२६, ३२७ (नदी)
इरबेक—४६८
इरलात—३०७
इरसारी—१९९, २००
इराक—३३, ३७ (केइलखान), १२४, १४७, १५०, ३०१, ३०३
इरिना—११५
इर्किबइ—४८१, ४८२
इर्कुत्स्क—२३८, २४२, ३२४, ५३२
इर्गिच—३४१
इर्जइ—४५२
इर्ताशअली ईनक—४८५, ४८६
इर्तिश (नदी)—११०, ११२, ११३, ११४, ११५, १३२, १३३, २३५, २५१, २७१, २७९, २९६, २९८, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२५, ३२६, ३२८, ३३०, ३३३, ३३६, ३३८, ३४५, ५३०, ५३४, ५३५
इल-अलरगू—१२५
इलखान—२८, ३२, १३०, १३२, १३३, १३९, १४३, १४७, २८५ (ईरानी)
इलबक—३१५
इलबर्स—१९३, १९६, १९९, २०६, २०७, २०८
इला—१२५
इलाक—१६८
इलान्चुक—१८ (सर्प सदृश), २७९
इलालबालिक—१२७
इलिकदई—१३४
इलिकमिस—५६
इलिन—३२७
इलिबै—४८४
इलिमिश—५६
इलिम्स्क—२४३
इलिया—६४, ३९२,
इलियास—१३७ (खोजा), १४९
इलिश—१११
इली—१२१ (इली नदी), १२५, १२७, १२८, १३२, १३३, २६४, २९७, २९८, ३०० ३०४, ३२५, ३२८, ३३१, ३३३, ३३४, ३३६, ३३७, ३४०, ३४१, ३४२, ३४७, ३६०, ३६०, ३७८ (देखो इलि भी)
इलेत्स्क—३५७
इल्तजार—४४४, ४७० (खान)
इल्तेइज़े—४८१, ४८४
इल्दिर नौयन—१२४
इल्बर्सखान—४६७
इल्मन—७५, ७७, ९३
इवान—३९, ४२ (मास्को), ५२, ९७ (प्रथम, द्वितीय) ९९-१०० (तृतीय), १०६ (चतुर्थ), १०७, १०९, ११५ १३३, २२०, २२७, २३४, २८८, ३३३ ३९२
इवान—२५० (-माज़ेपा), ३१६ (-म्यारजोइ), ३३१ (चेरदोफ)
इवानगोरद—१०० (इवान-नगरी), ११६, ४१३
इवान सुसानिन—३८५
"इवानोफ—२९२, ३८४, ४८६" (लेफ्टनेंट), ४१७ (जेनरल)
इवानोवो-वोज़नेसेन्स्क—५०८

इवेकी—२७१
इशकासिम—४६२
इशकिली—५१६ (उज्बेक)
इशबरदी—११३
इशमा—१११
"इशरतखाना—१६०"
इशिकली—५६१ (उज़्बेक)
इशिम—११२, ११३, ११४, १८२, २८१, ३१५, ३१७, ३१८, ३१९, ३२५, ३२७ (खान), ३४१, ३५५
"इश्तेराक"—२८९
इसनबुगा—१६६, २७५ (=इस्सन बुगा)
इसायेफ़—५२५, ५३३
इसुपो-स्कोय—२२४
इसेत—३१७
इस्कन्दर—१५८, १७९, १८० (-खान), ४५८ (—कुल, सरोवर)
"इस्क्रा" (=चिनगारी)-३९७
इस्तखर—१६१
इस्तम्बूल—१०४ (समुद्र), ४७८
इस्त्रा—७३
"इस्फ़ारा"—४२१
इस्मत—१५८
इस्माइलोफ—२५४
इस्माईल—१४९, १६३, १७१, १७२, १७३, १८३, १९४, १९९, २६३, ३०४, ३०९, ३२८
इस्माईली—१३९, १४०
इसराईली—१५७ (=यहूदी)
इस्लाम—३४, १२४, ३१६, ३४६, ४४६ (-खलीफा), ५२२
इस्सन—३२
इस्सिक्कुल—१२५, १३३, २७५, २९५, २९७, २९८ (सरोवर), ३०१, ३०२, ३१०, ३१३, ३३०, ३३१, ३३२, ४५२, ५३५
इस्सुन—१२६
इंगलैंड—३९, २२५, २२६, २४८, २५६, २६३, २६९, ३६६, ३७७, ३८०, ३८७, ४०६, ४०७, ४०८, ४१२, ४१४, ४७५, ४९७, ५०३, ५५०, ५५४
इंग्रिया—२४९
इग्लिश-चैनल—२४
इजन—२६७
इबा—१०२ (यंबा)
ईकान—३४६
ईगर-७८, ७९ (रुरिक-पुत्र), ८३, ८७, ८९, ९०
"ईगर सेना-गाथा"—८९
ईतल—२७
ईनक-१९७ (सरदार), ४६९ (प्रधान-मंत्री)
ईबक—३१५
ईरान—७, ३३, ५५, ७१, ७५, १००, ११०, १२१, १३२, १४१ १५०, १५९, १७३, १८३, २३६, २५१, २७१, ३७१, ४०५, ४०६, ४०७, ४६६, ४८९, ४९८, ५२०, ५२५, ५३५, ५५४ (का तुर्कमानियापर दावा), ५५५
ईरान-इराक—१३२, १४५
ईरानी—११० (शाह), १५३, १७७, १९२, ४०७ (क्रांति), ४५०, ४९४, ४९६, ५१६, ५१९, ५३९ (भाषावंश), ५४१, ५४२, ५४८, ५५१
ईलक—४७८
ईवे—५४७ (तुर्कमान)
ईशान—१५३ (=पीर, गुरु, आखुन)
ईशा नकीब—४४३ (-कीब), ५४३ (-औलिया, शेख, -सुल्तान), ५४४-४५ (-सुल्तान, सुलेमान), ५५३ (-उराक, सद्दूर)
ईसन थैसी—३००, ३०१, ३०२
ईसाइकी सबोर—३७५
ईसाई—३८, ८३, १०४, १२५, ३१६, ३७२, ४४२
ईस्ट इंडिया कपनी—११०, २६८, ४४९
उइगुर—९ (सिरियावाली), ३०, ५७ (लिपि), १२१ (डांडा), १२४, १६१, १६७, २०२, २०८, ४७०, ५१६ (उज़्बेक), ५१५, ५२९, ५३०, ५४८ (चगताई तुर्क)
उइगुर नैमन—५१४ (उज़्बेक)
उइची—५१५, (उज़्बेक)
उइशुन—५१५ (उज़्बेक), ५३० (उइसुन, वूसुन)
उइस्क—३४६
उई—३४३, ३५८
उकमेत—४६२, ४६३
उकाक—६१
उकाज़े (=राजादेश)—३५७, ३६१, ४३७, ४५२, ४९९, ५३१
उकुर-कितची—२९८
उक्रइन—३९, १००, २२९, २३०, २३२-२३४, २४१, २५९, २८९, ३०२, ३७३, ३७५, ३७६, ३७७, ३९१, ३९९, ५१२, ५१९
उख्तोम्स्की—४०३
उगफेरमर—२९७ (पूर्वी तुर्किस्तान
उगरी—६६
उगलान—५१४ (उज़्बेक), ५१५
उगलिच—१०२, ११५, २१८
उगुजमान—१६८

उगेची खासाग—३००
उगेताइ—५ (छिङ-गिस्-पुत्र), २१
उगोलिन—२४
उग्रा—१००, ११४
उग्रिउमोफ—३३४
उचउचक—४८२, ४८३
उचकुर्गान—४३५, ४३७
उचमा—४८१
उचाचर—१२८
उज—४५५, ४६०, ५१४ (उज़्बेक)
उजतेमूर—१६६, ३०३ (थैची)
उज़ान—४०
उज़ियाक—२७८, ३५०
उजी—२९, ३०
उजुन—१०४, १६० (हसन), २८१ (-सुकाल), ४९५ (-आदा), ५२६ (कज़ाक)
उज़्कन्द—१२८, १६५, १८०, ४३५
उज़्गंद—१२९, २९७, ५३८
उज्जयिनी—१५८
उज़्बेक—२६, ३१, ३३, ३४, ३५, ३७, ४८, ५१, ६७ (दश्ते किपचक), ९७, १४५, १५६, १५८, १५९, १६१, १६५, १६९, १७४, १७७, १७९, १९३, १९४, २०२, २०७, २०९, ३७८, ४१५, ४२१, ४३१ (किपचक), ४४२, ४४३, ४५५ (कबीले), ४५९, ४६४, ४६७, ४६९, ४८६, ५१४, ५१६ (-जाति-निर्माण), ५१७ (-भूमि), ५२७, ५२९, ५४२, ५४४, ५४८ (=चगताईतुर्क) ५४९
"उज़्बेक-उलुस"—३१
उज़्बेक-कज़ाक—२७५, २७६, ३०३, ३०५, ३११, ३१३
उज़्बेक खान—३६, ९६, १३३, १४६, ४६५, ५२९
उज़्बेक सुल्तान—२७७
उज़्बेकिस्तान—१२१, १६२, ४५३, ४५९, ५१४ (में ज्ञाति), ५१७, ५२७
उज़्बेकी—१८३ (भाषा)
उज़्बोई—४८०, ४८३
उतखुर सूफी—४४३
उतरार—४६, ४८, ४९, ५५, ५६, ६०, १६८, (=अतरार)
उताची—५१४ (उज़्बेक)
उत्किया—३५२
"उत्तर तारा"—३७४
उत्तर प्रदेश—५२८
"उत्तरी संघ"—३९३
"उत्तरी सम्मिलनी"—३७४
उद्मुर्त—१०७, २३४, ३९०
उन्कोव्स्की—३३१, ३३३
उपा—२२१
उपुलेची—५१४ (उज़्बेक)
उपेन्स्की—९१
उबसा (सरोवर)—३२६
उबान—२८४
उबैदुल्ला—१६० (-अहरार), १७४, १७६, १७८, १८३, १९२ (१), २०३, २८०, ३०५, ३०९ (खान)
उमरग़ाज़ी—१७८, २०१
उमरशेख—५५, ५६, ५९, १६०, १६३, २९७, ३०५, ३०६
उयान—५१५ (उज़्बेक)
उयुगली—५१६ (उज़्बेक)
उयेज्द—५३१ (=जिला)
उयेमौत—५१४ (उज़्बेक)
उरगंज—५६, ६४, १३५, १७८, १९६, १९९, २०१, २०२, २०४, २०५, २०८, २०९, २१२, २८१ (ख्वा-रेज़्म), ३३०, ४४०, ४४४, ४६८, ४७०, ४७३, ४७५, ४७७ (-कुहना), ४७८, ५२६ (मिर्ज़ा-)
उरमानजोजिन—५३७
उरमिया—५५६ (रज़ाइया)
उरलुक—३१९, ३२१
उर-सांग—३११
उरातिप्पा—१८२, ३०६ (उरातेपा), ४२२, ४२३, ४३७, ४४४, ४४८, ४५२, ४५८
उरानिया—२८९ (देवी)
उराल—२१ (ऊराल), ४९, ९४, १००, १०१, १०७, २०५, २०८, २३४, २३५, २४४, २६१, २६७, २८६, ३१७, ३२१, ३४४, ३५१, ३७६, ४०५, ५०८, ४२०
उराल-अल्ताई—५४८ (भाषा-वंश)
उराल्स्क—२८९, ३५६
उराल्स्की—५५२
उरियानकुत—३२१
उरुस—१८, ५५, ५१५ (उज़्बेक)
उरुसखान—४३, ४८, ५४, ६१ (खान), ५० (-खोजा)
उरुसलन—३२१ (थैशी)
उरुसोफ़—३४५, ४५७
उरेंगयार—२९७
उर्गा (अराल)—२४२, ३२४ (उरगा), ३२९ (-महालामा), ४७८, ४८२,
उर्जाय—५१४ (उज़्बेक)
उर्दा—१०२
उर्मितान—४५८
उर्लुंक—३२६, ३३८ (तोगुंत राजा)
उलकुम दरिया—४८४
उलजह—२९

उल-जै-तू—१५, ३३, १३३, (ईरान), १४५
उलरिच—२५७
उलाइओन्दलुग—५४८ (तुर्कमान)
उला इवोन्तुली—५४८(तुर्कमान)
उलागचारलिग—२९७
उलाझ तुमान—३२१ (लाल ऊंटवाले ओर्दू), ३३९
उलाद—१४४
उलानबातुर—३२४ (=उर्गा, ताहुरे)
उलियस्सुतै—३२४
उलियानोफ़—३९२, ३९४, ५१० (=लेनिन)
उलियानोव्स्क—२३७ (समारा), ३९४
उलुक—६६ (-मुहम्मद), ६७, ३१७ (-बरमा), ३४६ (-ताग)
उलुकची—२६
उलुगताग—५७ (महापर्वत), १५१, १७०, २७९, २८०
उलुग-तूबे-ताश—२०२
उलुग-दुर्जी—१८
उलुगबेक—६७-६८ (शाहरुख-पुत्र), ६८, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १६३, १६५, १७०, १९०, २९९, ३००, ३०२
उलुग-मदरसा—१७१
उलुस—२९, ३३ (मंगोल, =बातू, खुलाकू, चगताइ और चीन), ५१, १२१, १२५ (-इपू), ३०९, (उलुसबेगी), ३२४(-थैशी)
उलेखातून—४९८
उलेची—५१५ (उज्बेक)
उलेमा—५१७ (धर्माचार्य, मुल्ला)
उल्जे-थू—१६, ३२ (खान)
उश-तुर्फान—३३६
उशाकोफ़—२४१, २६३, २६९
उशामला—४८०
उसरी—३८९
उसमानअली—१५२, १६४, १७९, २०७, ६१ (०बहादुर), ५५३ (-कारी)
उसा—१११
उसिउन—५२९ (कजाक)
उसुन—५१६ (उज्बेक)
उस्तउर्त—१९७,२०४, ३५७, ४६५, (चिकया इंकित्स गिरि), ४८१,४८२, ४८४
उस्तकामेन्नेगोर्स्कया— ३३३, ३४९, ३६१
उस्ती—५३०
उस्मानी—१७८, १८१, ५४८ (तुर्की)
उड़ीसा—१२२
उंग—५१४ (उज़्बेक)
उंगाचित—५१४ (उज़्बेक)
उंगुत—५१४ (उज़्बेक)
ऊफा—३१९, ३५०, ३५१, ३५६
ऊ-हो-चे-यू—३२९
एउफ़ेसिया—२२
"एक शिकारीके पत्र"—३९२
एकातेरिना—२५९, २६७(१), ३४७, ३४९, ३५४-५६ ३६१, ३६५, ३६६, ३७२ (२)
एकातेरिना-नहर—३६५
एकातेरिनोस्लाव्ल—२६३, ४१४
एगमन बातिर—४९६ (एगमन बातिर, सुमर्स्क)
एचुवक—३५५
एडवर्ड सप्तम—४०७
एडिसन—३९६
एतियक—२८२
एतिसन—३३९
एदेनिया—३३७
एदेस्सा—८, १४१
एबट (कप्तान)—४७४, ४७५
एबुस्किन—१२६
एमिल—१२१, २९५, २९६, ३३६
एमिलगूचूर—२९८
एम्पेरातोर—२५६
एयागुज—३४९ (नदी)
एरअली—३४५
एरगस—५२० (शेख), ५२२, ५२३, ५२४, ५४२ (एरगेशलाम)
एरगेना—१२७
एरदेनी लामा बातुर खुङ्ग थैची—३३५
एरमिताज़ संग्रहालय—५७ (लेनिनग्राद)
एरमिन—३७
एरली—३५१ (-सुल्तान), ३५६, ४६८
एरसारी—५४७ (तुर्कमान)
एरापतोफ़—५५०, ५५१, ५५२, ५५३
एरेवान—५५४
एरेंक—२१२ (औरंग)
एर्चिश —३३८ (इर्तिश)
एर्ज़ेन—४८
एर्तकईनक—४६८
एर्दन-बआतुर—३२६
"एर्देनी सूकितू बआतुर खुङ्ग-थैशी"—३३३
एर्दबेर्ग (कर्नल) —४६७
एलची—३३ (जनदूत,'महादूत), १३९
एलबा—२४
एलात्ज—६१

एलिजाबेत—१९३, २५५, २५७, २६८, २९१
एलिजाबेतोपोल—३७१
एलियोत—२४३, ३२६ (ओइरोत), ३३२
एलूतियान—३७२
एलेक्त्रोलिसिस—३८३
एल्ब—३७० (द्वीप)
एल्बर्स—४४२
एवज ईनक—४६९
एवरदी—१३५
एवेंकी—२४४
एस्० एर्० (=समाजवादी क्रांतिकारी)—५१९, ५३८
एसम्प्सन—६२
एसाउलेंको—५२५
एसुन—१३३
एसेन—३०७
एसेन—३२, १३३, १३४ (-बुगा), १६६ (-खान)
एस्तोनिया—५२८
एंगल्स—३७४, ३८६, ३९२, ३९३, ३९५
एंडरू विनियस—२२६
ऐगुन—२५५, ३८८, ३८९ (-संधि)
ऐचुवक—३५३
ऐदिन—४८३
ऐनी—४९३ (सदरुद्दीन)
ऐबक—१६१, १६७, १७९, ४६० (=बईबक)
ऐबुगिर—४७८,४८४ (खाड़ी), (=अइबुगिर)
ओइनोग—२९७
ओइरोत—१४२, २७१ (मंगोल), ३०१, ३३७(कल्मक), ३३८
ओइरोतिया—२७१
ओइरोद—१६६, ३२१, ३२४ (=ओलियोत, देखो ओइरोत)
ओका—२२, ५१, ७४, ८२, ९०, ९२, ९६, ९८, १००, १०९, २३४, २४७,
ओगलान—६, ५४, ५६ (राजकुमार), ६१, १०२, १३६, १४४, १४५, १६५
ओगिन्स्की—३६५
ओगूज़—१०३
ओगोताइ—४ (छिङ-गिस्-पुत्र), २३, २५, ४७ (ओगोदाई), १२१, १२५, १२६, १२७, १३० (कैदूका पिता), १३३
ओङ-खान—१८
"ओचाकोफ"—४०२
ओज़ेरो—११४
ओज़ेर्नया—३५१
ओडेर—६, २३
ओडेर-पर फ्रांकफोर्त—२५८
ओडोनोवेन—४९१, ४९२
ओतकची—५३०
ओतरार—५६, १२७, १२९, १५३, १६८, १६९, २७७, ३४६, ३५३ (-उतरार)
ओरतेपयेफ—२१८
ओतामिश—४९१ (तुर्कमान, तेक्का)
ओतियक—६
ओदुलियो—२३८
ओदूल—२७१
ओनेगा—९४
ओपेरा—३२४, २६६
ओप्पेलन—२७
ओप्पेचनिना—१०८, १०९
ओब—११४, २२७, २३८, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२४, ३२६, ३३३, ४८९ (ओबलास्त=तहसील)—५३१
ओम्स्क—२५१, ५३०
ओवस्कया क्रेपोस्त—३३३
ओयरोत—२४३ (=ओइरोत ओइरोद)
ओरखोन्—५ (मंगोलियामें)
ओरगान—१२८
ओरगाना—१२७, १२८, १३९
ओरताग—५७ (उच्च पर्वत)
ओरदा—१८, २०, ४५, ४६, ५० (-उलुस), ५१, १५७ (जूछि-पुत्र), १६५, २८७, ३४३ (=ओर्दा)
ओरदिन्-नाश्चोकिन्—२४१
ओरनाक—२९७ (=ओजनाक, ओरतक)
ओरमुज्द—१०३, १५७
ओरलोफ़—२५९, ५२५
ओरसोवा—२३
ओरी—३४३, ३५१, ३५९ (नदी)
ओरेन्ज़ा—२६ (दुनियेपर दक्षिण-तट)
ओरेन्बुर्ग—२६१, २६२, २७१, २९१, ३४४, ३४५, ३४८, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३७८, ३७९, ४२५, ४३१, ४३२, ४३५, ४४५, ४४६, ४४८, ४५२, ४६८, ४७३, ४७४, ४८१, ४८४, ४८५, ४९५, ५१८, ५२२, ५२५, ५३०, ५३२, ५३५, ५४४, ५४९, ५५०
ओरेल—११०, ४०९
ओर्ज़ोनीकिद्ज़े—४०५
ओर्तुक—४८०
ओर्ताकिया—४८३
ओर्दाशेख—४२
ओर्दू—४२ (अक्-), ५३० (मध्य, महा-)
ओर्दु-बालिक—५ (कराकोरम्)
ओर्मुज़—१०३
ओर्स्क—३४१, ३७८, ४४८
ओ-ला-पू-छू-यो र—२५३
ओलिगर्द—९८
ओलिओत—३२४ (ओरिओत)

ओलेकमा—२४२
ओलेग—७७, ७८, ८३
ओलसिये—५०८
ओल्गा—८२, ८३
ओलगर्द—३८, ५२
ओल्जे–१४८,१४९(=ओल्जइ)
ओल्मुत्ज—१२४
ओश–३०५, ४२१ (अजीबी), ४२२, ४२५, ४३१, ४३५, ४३६, ५३८
ओशुन—५२९ (उज्बेक)
ओसतेइ—५२
ओस्तियाक–११०, ११२, ११३, ११४, ११५, ३१६
औरंगजेब–११६, १९१, १९४, २११, २१२, २४१, २४६, २४७, २४८, २४९, २५२, ३२८, ४६४
औरंग तेमूर—५०
औल—३५८, ४२९ (गांव), ४७८, ४९३ (तुर्कमान गांव), ४९५
औलियाआता—४२९, ४३२, ५३०, ५३३, ५३४, ५३६, ५३७
औहदी—१४४, १४५
कआन—१२१, १२६, १३२, १३५ (चीन-सम्राट्), १३९, (=कगान, खाकान)
ककमा-बुरुजी—२९८
ककाई—१९२
कखोस्क—३७५
कगान—५५०, ५५१, ५५४ (=कआन)
कगानोविच—४१४, ५०८
कचर—६
कचाई—५१५ (उज्बेक)
कजखोफ़—५२१
कजगन—१३६, १४८
कजनची—४९
कजलोफ़—५४९
कजवीन—१८१, २००
कजाक—११०, १५६, १६८, १६९, १७२, १८०, १८७, २०९, २६१ (एसियाई), २७६, २७७, २९३, ३०७, ३११, ३१३, ३१७, ३२१, ३२६, ३३१, ३३७, ३४३ (उज्बेक-कजाक), ३४७, ३४८, ३७८, ४१८, ४१५, ४३३, ४६४, ४६७, ४६९, ४७१ (चेकली, तुर्तकारा, चूमे, जलैर), ४७३, ५१७, ५२४, ५२५, ५२८, (जातिका निर्माण), ५२९, ५३१, ५४९
कजाकखाना—२९१
कजाकस्तान—१२१, १५७, ३६१ (गणराज्य), ४५३, ४८९, ५१२, ५२८ (में क्रांति)
कजंची—५२५
कजान—२७, ३७, ६८, १००, १०२, १०३, १०६, १०७, ११०, ११२, २३४, २६२, ३१५, ३५०, ३११, ३५४, ३६६, ४०१, ४६५, ५४८ (तारतार)
कजाला—४३०, ४८२
कजालिन—५३३, ५३४
कजालिन्स्क—४८९
कजुलई—६५
कतक—२९६
कतगन—४६०, ५४९ ५१४, (उज्बेक)
कताई—४९, ३६५,
कताकुल—१०
कतापुल्त—२५
कतुजोज—३६६, ३६८, ३६९, ३९८
कत्ताकुर्गान—४८७, ४५८ (कता), ५१८, ५१९, ५२०, ५२४
कनली—५१६ (उज्बेक)
कनवान—१६६
कनाई—३२१
कनुजुर—१३ (बुद्ध-बचनानुवाद)
कन्दहार—१७२, १९२, १९३, ४९९ (कंधार), ५४३
कंदुर्च—५९
कन्फूसी—१२
कन्स्तन्तिनोपोल—२९, ३६, ३७, ७५
"कप्तान-कन्या—२६६, ३८४"
कफ्फा—५६, १०४ (कफा)
कबक—३०
कबतेरून—३२१
कबाका—३००
कबात—५१४ (उज्बेक)
कबादियान–१७७, १९२, ५२६
कबिलककला—३१०
कबीकलर—३१०
कबूल—१९०
कमकर-प्रतिनिधि-सोवियत—४१७
कमचत्का—२५३
कमचादल—२५३
कमारोफ—४९७ (महाराज्य-पाल), ४९८ (जेनरल)
कमाल—५५, १४७
कमालुद्दीन–१३८, १४४, १६२
कमिस्ती—४८४
कम्युनिस्ट—३७९ (–पार्टी, लीग), ५५०, ५५३
"कम्युनिस्ट घोषणा"—३७९, ३९३
कम्युनिस्ट सरकार–३९१, ३९२
कम्स्चदाल—२७१
कयान—५१५ (उज्बेक)
कयालिक—१८, १२५, १२७
करइत (केरगुदी)—३२५
करकर—३३४
करकी—४५३ (=केर्की)
करकुल—१२८
करगालचेन—३१८
करगोपोल—२२१
करताग—५७ (गदा पर्वत),

१८७
करदाखली—५४७ (तुर्कमान)
करबला—१७७
करमजिन—२५, ३५, ६३, (करमाजिन), २६६, २७१, ३१८
"करमाजोफ़ भाई—३९२
करमीना—१२४, १९०, २११, ४४७, ५२६
करशी—१२९, १३२, १३४, १३६, १४८, १४९, १५०, १६२, १७०, १७४, १७५, १७६, २१०, ३००, ४३९, ४४६, ४४७, ४५१, ४५३, ४५६, ४५९, ४७१, ५५२
करशी-संधि—२३४ (करसी०)
करसागलेन—३२७
कर सावरान—५५
करस्तचिक—४८४
करा—१२७, ४८९
कराअसमन—२७९ (करासामा)
कराइलू—२०३
करा-इर्तिश—३२६
कराउजियक—४३०
कराकल्पक-६२(=काली टोपी), २८०, २९०, २९२, ३४६, ३४८, ३५०, ३५१, ३५३, ३५६, ३७८, ४६६, ४६९, ४७०, ४७७, ४८४, ४८६, ५१५ (उज्बेक), ५४८ (तारतार-भाषा)
कराकल्पक-कुश्तमगली—५१५ (उज्बेक)
कराकश्ती—२१०
करा-कसमक—२९७
कराकिन—४८४
कराकिर्गिज—४२८
कराकुचिन छेरिङ्—३४०
कराकुम (काला बालू)—१२७, १४९, १९६, ४७३, ४८०, ४८१, ४८८, ४८९, ४९९, ५५५
कराकुरसक—५१५ (उज्बेक), ५१६
कराकुल—१६८, १७०, १७१, १७६, १९३, २१०, ४५६, ४७२, ४९९, ५३३, ५३४
कराकेचिन—५३७
कराकोरम—५, ६ (मंगोलिया मे), ७, २६, १२७, १२८, १३५, १४५, ५३०
कराखानी—१२४
कराखिताई—२१, १२४, २९३
कराखोजा—२९७
करागन—४६५
करातगिन—५२७
करागुचुर—२९७, २९८
कराचा—११३, ११५
कराचार—१४८
कराचिन—११२
कराचिनबग—१६७
कराची—१९६
कराचुक—५७
करातगिन—४२६, ५२७, ५४५, ५४६
कराताउ—१८०, २७९, ४३२, ४८१ (पहाड़)
कराताग—५० (=कराताउ)
कराताल—५०, ५१, २९८, ३३१, ३६१
करातुकाई—३०४, ३१२
करातुरगई—५८
करातेपे—३३९
करावख—५५४
कराबाग—५५, ६७ (ईरान), १४६
कराबुरा—५१५ (उज्बेक)
कराबुलात—३५८
करामुहम्मद—५५
करामस्की—३९३
करायुल्युक—५४७ (तुर्कमान)
करायेबली—५४७ (तुर्कमान)
कराशक्काल—३४५ (काली दाढ़ी)
कराशर—१५२, २९८, ३०४, ३०९, ३३२
करासू—१४३
कराहुलाकू—१२६
करी—५१४ (उज्बेक)
करीमबर्दी—६५, ३०५ (-दोगलत)
करेला—११६, २९२
करेलिया—२५१
करोपत्किन (राज्यपाल)—५३७
कर्त—१३५, १४८ (खुरासान)
कर्तू—५१४ (उज़्बेक)
कर्मकची—४३०
कर्मिनिया—४४१
कर्मीना—१७६
कर्स—३८६, ३८७
कलकत्ता—३७७
कलखान—१८९ (महासेनापति), १९१, २०३ (युवराज)
कलगन—२२७, २४२
कलगा—१७३, १७६
कलाखम्ब—५४३ (दरवाज), ५४५, ५४६ (किला खुम)
कलिनतई—१४४
कलिनिन—९६, ४०६
कलियान (हुक्का)—४४०
कलीम (भेंट)—४२९
कलूगा—२२०, २२२, ३७८
कलेची—५१४ (उज्बेक)
कलेगियो (=परिषद्)—५५१
कलोम्ना—२२, ५२, ६१, ९६, ९७, २२०, २८९
कल्पक—४९४ (=टोपी)
कल्परीत—२८९
कल्मक—११४, १५९, १६६, १८७, १९६, २०६, २०८, २०९, २१०, २१२, २३५, २३७, २६१, २८०, २८२ (मंगोल), २९१, २९६, ३०४, ३०५, ३०८, ३१०, ३१६, ३१८, ३१९, ३२१, ३२४ (जुंगर), ३२५, ३२६, ३२७, ३३२, ३३५,

३३७, ३३८, ३४०, ३४१, ३५१, ३५२, ३५४, ३५७, ३६८, ३७२, ३८५, ४६४, ४६७, ४८०, ४९०, ५१४ (उज्बेक), ५४८
कल्मक-थैची—३०७, ४६५ (आयुका)
क़वामुद्दीन—१५७
कवि—१७५, १९०
कशलतिन—५३७
कश्क—४५८ (-उपत्यका)
कश्तुत—४५७, ४५८ (-डांडा)
कश्मीर—२९९, ३११, ३१८ ४२६
कसतिमूर—४८
कसलोफ़—२१७
कसाक—३९, १०८, ११०, २०६, २०८, २२४, २३०, २४३, २८८, ३१७, ३४१ (रूसी-), ३४४, ३५७, ३७८, ४०१, ४०७, ४२४, ५०६, ५०९, ५१०
कसाकान—३३५
कसिमिर—३८, ३९
कसौबी—८२ (चिरकास)
कशली—५१४ (उज्बेक-किपचक)
कस्तेक—२९७
कस्त्रोमा—६३
कस्साब हैदर—१५०
कहेत—५१५ (उज्बेक)
कंकली—२१, ४७१ (तुर्कमान)
कंकुरत—१८, २०, ३०, ४७, ५१, १९२, ४५९, ४६४, ४६९ (कुनगरद), ४७१ (तुर्कमान) ककुरत वंश—४७०-८७ (वंश)
कंकोर—११०
कंग—५१७, ५३० (=कंकली, कंगली), ५४८
कंगरबेइन—३४१
कंगू-ली—२६, २०७, ४६१, ५१७, ५२८, ५२९, ५३० (कज़ाक), ५४१
कंगडा—५२८
कंगुल—१६६
कंचुवार—३१९
कंजिगली—५१६ (उज्बेक), ५३० (कजाक)
कंदुरता—६०
काइइ—५४७ (तुर्कमान)
काइड—६
काइतक—६१
काइप—३५०, ३५३ (द्वितीय), ३५५, ३५६
काउ-चुङ—२६४, ३३४, ३४७, ४२१
काउंट वित्ते—४०४
काउ-ताउ—४२१ (दंडवत्)
काकेशस—५१, ६१, १०१, १४१, १५०, १५१, ३६७, ३८३, ३९९, ४१३, ४५३, ४७२, ४८४, ४९४, ४९६, ४९७, ५०८
काखोव्स्की—३७६
क़ाजान—१३६ (-कज़ान)
क़ाज़ार—१०७, ४४१, ४४२, ४७२ (ईरानी), ४९०
काजी—१५७
काज़ी अख्तियार—१७२
काज़ी कुरगान—५४४
काज़ी पायन्दा—१८३
काजीबेग—५५३
काज़ी मुल्ला—३७७
कात—३२, ५३, ५४, ५६, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०६, २०८, ३००, ४८५
कादिर कुलोफ़—५५२
कादिर नदी—३५३
कादिर बर्दी—६९, २८६
कादेत—४१०, ५०८, ५११
कानियेफ—२६
कानून—१५४
कांतन—३७४
कांस्तन्तिन—७३, ८७
कांस्तन्तिनोपोल—१०, ११, ७२, ७७, ७८, ७९, ८३, ८४, १०१, १०५, १०६, ११६, १५९, २३०, २६०, २८४, ३६७, ३७७, ३८०, ३८६, ४३४, ४७८, ४७९, ४९५, ४९७
कापबहादुर—५०
काफमान (जेनरल)—३८७, ४३५, ४३६, ४५२, ४५७, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८५, ४९४
काफिर (बौद्ध)—३१३, ३२४, ३३५, ५२३, ५४९
काफिरनिहा—४५५
काफिर-रबात—४४०
काफिर-यारिग—३१०
काफिरिस्तान—३११ (लदाख)
काबिलशाह—१३७, १४९
काबुल—१५१, १६६, १७२, १७६, १८०, १८९, ३०७, ३०८, ३०९, ३१३, ४४१, ४४२, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५९, ४६०, ४६३, ४७५
काबूशान—१५०
कामचत्का—२५६, ३७२, ३७३, ३८१
कामरान—१७९
कामा—७३, १०९, ११०, १११, २३४, २८७ २८९, ३६५
कामिल (हामी)—३०८
कामेनेफ—५०६
काम्बालू—११ (पेकिङ, खान-बालिग)
कायिप—४६८, ४६९ (=काइप)
कार—२६२
कारकिन—५४८ (तुर्कमान)
कारपीनी—२४, २६
कारपेथीय—२३
कारवांसराय—५५२
कारा—५१५ (उज्बेक)
काराई—१८५, १८६
कारासमन—५७

कारिक—५४८ (तुर्कमान)
कार्ल मार्क्स—७७, ९५, ३७०, ३८२ (मार्क्स)
कार्ल पीतर—२५७
कार्सिका—२६९
काल—२०१
कालासागर—७२, ७८, १०१, १०४, १०७, ३६५, ३७७, ३८०, ३८६, ४००, ४०२, ४१३
कालिदास—१६०, ३८३
कालीकट—१०३
काली हड्डीवाले—३५८ (साधारण जनता)
काले—९४, ४२५ (कालेखोजा)
काले पहाड़ी—३३२
काल्ग्रोफ—११३
काशकुपिर—४८५
काशगर—३२, १२१, १२४, १२८, १४४, १४८, १४९, १६१, १६४, १७६, १८०, २७५, २९३, २९५, २९७, २९८, ३०२, ३०३, ३०७, ३०८, ३१०, ३१३, ३२५, ३२८, ३३२, ३३३, ३३५, ३४७, ४२२, ४२४, ४२५, ४६२, ५२०
काशगरिया—३०२, ३०९
काशान—१०४, १५३, १५७
कासिम—१०२, १७२, १९०, ३०९, ४२९
कासिम खान—६९, २७७(जानी-बेग-पुत्र)
कासिम सुल्तान—१९०
कासिमोफ़—२०७, ३१८, ३५८
कास्पियन—३८, ७९, १०८, ११६, १३१, १३७, १९६, २०३, २०५, २३६, २८४, ३३४, ३४२, ३५२, ३७१, ३९०, ४६४, ४६५, ४७२, ४८८ (में वक्षु), ४८९, ४९४, ४९८, ४९९, ५२२, ५२५, ५३९, ५४८, ५५०
किचकिन—४८४ (नदी)
किचिक खानिम—२९८(छोटीरानी)
किज़िनज़िली—५१६(उज्बेक)
किज़िल—१७४
किज़िल अगिर—४८४
किज़िल अयाक—५५१
किज़िल अर्बत—४८०, ४८९, ४९०, ४९५, ४९९
किज़िल-ओर्दा—५१८, ५३३ (पेरोव्स्की), ४३४
किज़िलकाक—४८१
किज़िलकिया—५२०
किज़िलकुम—१७४, १९६, ४१५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८६
किज़िलजार—४२४
किज़िल तेप्पे—५२४
किज़िलपू सहस्सन—३२८(झील)
किज़िलबास—१९१, २०२(शिया), २११, ४७२, ४७४(ईरानी)
किज़िल-बुर्कोव्स्की—५३१
किज़ी—३८१
कितकी—४२४
कितकी कराकल्पक—४२३
किताई—४८४, ५२९ (कज़ाक)
किताई-किपचक—३२१, ३३९
किताब—४५६, ४५७
कितू-बुका—७
कित्तन—४ (राजवंश)
कित्सु—४७७
किदेरी—४८१
किन्—५ (चीन)
किनगिज़—५१५
किनबर्न—२६३
किनिर—४८४
किन्द्रेली—४८४
किपचक—६, १३, १८ (वर्तमान कजाकस्तान), ३६ (सुवर्ण-ओर्दू), ४९, ५०, ५२, ५४, ५५, ५६, ६०, ९७(मंगोल), १२१, १३०, १३१, १३२, १४३, १५६, १६५, १९१, २७५, २८४, ३४३ (जूछि-उलुस), ४२७ (तुर्क) ४२९, (कज़ाक), ४३१, ४३३, ५१४(उज्बेक), ५१६, ५२९
किपचक ओगलान—१३०, १३१
किपचक-कज़ाक—४२७
किपचक खान—१४४ (तोकताइ) १४५
किपचक-तुर्क—२७७
किपचकभूमि—४१, ५२८
किबत मिर्जा—३३६
किबित्का—२८२, ३३८, ४२९ (=तंबू, परिवार), ४९२, ४९४, ४९६
किबिरली—३१८
किबेक—६६
कियांचिक—११४
कियेफ—५ (-रूस), ६, २२ (विजय), २३, २६, ६२, ६३, ७३, ७५, ७७, ७८, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ९२, १००, १८३, २१८, २२९, २३०, २४१, २४६, ३७५
किरकिन—५१५ (उज्बेक)
किरकिपी—२१७
किरगिन—१६६, २७१, २७८, २८२, २९३, ३०७, ३०८, ३१०, ३११, ३१३, ३२४, ३२५, ३२६, ३३०, ३३६, ३३७, ३४१, ३५८, ३७८, ३७९, ४०५, ४२४, ४१४, ४१५, ४२७, ४३४, ५१७, ५१९, ५२१, ५२९, ५३०, ५३४, ५३५ (पुराने कबीले), ५४४, ५४८ (तारतार भाषा)
किरतास—२०३
किरदार—५१५ (उज्बेक)

किर-मंग्रिशलक्—२०१
किरमान—१०४, ४४७ (-शाह)
किरिलोफ—३४४, ३४५, ३५१, ३५२
किरेइत—५१४ (उज्बेक)
किरोफ—३९९, ४१४, ५०८
किर्क—५१४ (उज्बेक)
किर्गिज-कज़ाक—३१३, ३३२, ३४१, ३४४, ३५३, ५३८
किर्गिज-जाति—५३६
किर्गिजिस्तान—१२१, ४०५, ४५३, ५३५ (किर्गिज़िया), ५३८
किलदीबेग—४२
किला—१२१, १९०, २०६, २११, ४६२
किला-अफगान—४६१, ४६२
किलिज नियाज़बी—४८४, ४८५
किशलिक—५१५ (उज्बेक)
किशिनेफ़—३८३
किश्म—४६२
किस्लेफ़—१०२
कीतू-बुगान—१४०
कीनिन—५४७ (तुर्कमना)
कीनिख—५४७ (तुर्कमान)
कीसलप्-नोर—३२७ (सरोवर)
कीसिम—१३१
कुइलवाइन—२९२
कुइलुक—१३२
कुइबिशेफ—२३७, २९१, ५०८
कुउक—५१५ (उज्बेकिस्तान)
कुइ-सुई—३०२
कुकचा-तेङगिज—२९६
कुकिलताश—५५
कुकेर्देलिक—२१०
कुक्कुरगान—१६५
कुङको—३८९
कुङियान—५२
कुचुक—१३१, ३१९
कुचका—९१
कुचुम—११०-, १२, ११४, २८९ (खान), (=कूचुम)
कुचेई—३०९
कुजमा—२२४
कुज़हुर—५१५ (उज्बेक)
कुज़ाश—१९७
कुतन कुनचेक—५१
कुतुगाई—१११
कुतुबुद्दीन—१२५, १४४
कुतुलुक—५७, ६२, ६४, १४५, १५६, ३१० (मुगोलिस्तान)
कुतुलुकबुगा—४९
कुतुलुक मुराद—४७०, ४७१, ४७७ (खीवा खान)
कुतुलुग निगार—३०४
कुतेबेरोफ—३५८
कुतैसी—३७१
कुदुक—४८२
कुनग्रद (कीयेत)—५१६ (उज्बेक)
कुनचुकताग—५७
"कुती"—८६ (चर्म)
कुनेगज—५१४ (उज्बेक)
कुन्दुज़—५६, ४६०
कुपरुकी—२००
कुबकसरी—३२७
कुबरा—२७
कुबलुक—४७ (क्यूलुक)
कुबान—१२१, २९१, ३३९ (-स्तेपी)
कुबिले—७, १३, १२१, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३९
कुबी—४७
कुबुलुक—४७, ४८
कुम—१०४
कुमकंद—२०१
कुमा—३३९
कुमासिया—२३
कुरगान—४५९
कुरगानतेप्पा—४६०
कुरचाकिश—३१९
कुरतुगी—५१५ (उज्बेक)
कुरतुत—३२१
कुरमीतान—४२४
कुरसेवे—१३३
कुरा—६ (काकेशसमें नदी), २८, ३३ ५५, ६१, ७९, १४३, १४६
कुरान—१४८, १७२, १७९, ३४५, ३५२, ४७९
कुरामा—४३६
कुरालस—५१४ (उज्बेक)
कुरी—३२१
कुरुक—१७२
कुरेन—२०४
कुरोपत्किन (जेनरल)—३९८, ४१५, ५३७
कुर्द—४५०, ४९०
कुर्बानि बेक—४४८
कुल—५१५ (उज्बेक)
कुलअबी—५१५ (उज्बेक)
कुलक—४०५, ४१४, ५३० (धनी किसान)
कुलजा—१२१
कुलपति—३९० (रेक्तर)
कुलफ़ा—४२
कुलमलिक—१७४
कुलमुराद—४६९
कुला थैची—३२६
कुलाब—५४ (-दर्रा, =कुल्याब)
कुलारचोक—११४
कुलारेप्स्कया—११३
कुलिक्कोवो—९८
कुलिबिन—२६७
कुली—१५१
कुलीन—३३१
कुलेसालार—१८५

कुल्जा—२९५, ३२५
कुल्दौली—५१५ (उज्बेक)
कुल्याब—४२६, ४५९(कुलाब), ४६१, ५२७
कुल्लरा—११४
कुवान—४८०
कुशबेगी—४२३, ४२६, ४४६ (प्रधान सेनापति), ४४७, ४७४, ४७८, ४८१ (कोशबेगी)
कुश्क—३८८, ४९९, ५५१
कुषाण—४९२, ५४१, ५४८
कुसल—१५
कुसान—३०८
कुसियकबी—४२२
कुस्सू—३६१
कुकुर्त—५३० (=कुंग्राद)
कुंग्राद—२९२, ४१६ (उज्बेक) ४७८ (राजधानी), ४८२, ४८४, ५१५, ५१६, ५२६ (कज़ाक), ५३०
कुंचोक—१५३
कुंजी ओगलान—५६
कुंजेक—१३३
कुंजुकबल—१४३
कुंजीनगर—२५०
"कुंजुल् मआनी"—१४५
कुंदुज—१३६, ११७, १४९, १६३, १७३, १७४, १८६, १८९, ३०९, ४४२
कुंदेलिंग ताईशी—२८२
कूचा—२९५
कूची—३१०, ३११
कूचुकताग—१५१ (लघुपर्वत)
कूचुनजी—१६६, १६९, १७३, १७६, १८३
कूचुम—११०, ११२, ११४, २३५, २७९, २८१, २८९ (खान), ३१५, ३१७, ३२६, ३३८
कू-चू—५
कूजालिक—५१५ (उज्बेक)
कू-तन—५
कूनिश—२०२, ४२९(-कुर्गान), ४३०
कून्ग्रत—२०२ (=कुंकुर्त, कुंग्राद्)
कूफ़ा—३१८
कूफी—१५४
कूबा—३७१, ५१६ (उज्बेक)
कूबान—३६, ६२
कूबेक—१४२ (ओलेज)
कूमिस—२१, २५३
कूयाश—१२५ (सूर्य)
कूयु—१२६
कूरलंड, ड्यूक—२५६
कूरिल—३७२
कूरिल्ताई—३, ४, ५ (महा-), ७, ८, १४, २१ (महासंसद्), २९, ३०, १२६, १२७, १३० (महापरिषद्), १३३, १३७, १३९, १४९, १५०, ३२५
कूलन—५१६ (उज्बेक)
कूली खुलाक्—४६
कूलेसालार—१८२
कूसउली—५१६ (उज्बेक)
कूसिम-तुरा—११५
केखहोल्म—१२२
केगेन—३३१
केजक—१३०
केतनेन—३३१ (पहाड़)
केताक—१०२
केत्ताल्युरा—४५७
केतेकेसर—५१६ (उज्बेक)
केनिंगेज आइम—४५६
केनेगुज़—५१६ (उज्बेक)
केनेसरी कासिमोफ़—३७८
केन्दरलिक—२७९ (नदी)
केपेक मङ्गुत—४९
केबदिली—५४७ (तुर्कमान)
केबेक—१३३, १३४
केरइत—१८
केरगेदान—११०
केरमान—१४५, १५७
केरमारोन—३२
केरुलोन—३२१, ३२९, ३३०, ५३० (नदी)
केरेन्स्की—४१८, ५०३, ५०५ (समाजवादी क्रांतिकारी), ५०६–१०, ५१९–२१, ५२५, ५४९ (=करेन्स्की)
केर्की—५५०–५४ (-काड)
केर्कीबेग—५५४
केर्च—२६०
केलमिश—३०
केलार—३१
केलायस्त—७३
केलेमा—३१७
केश (=शहरसब्ज)—४९, ५४, १३६, १४८, १४९, ४५०
केसलोप—२१८
कैखुसरो—१५०
कैगली—५१६ (उज्बेक)
कैजर—१०७
कैथलिक—३८, १०१ १३४, २३०, ३८० (धर्म
कै-दू—१४ (मंगोल खान), २३, २४, २९, ४७, १२८, १२९, १३०, १३१–३३ (=काइदू)
कैदोल—११५
कैरोली—४५५
कैरून—३२१
कैसर—१०७, ३९७ (जर्मन)
कोइचरी—३११ (भेड़ोंवाला)
"कोइतुल"—१०२, १०३
कोइबिन—३३१
कोइरिअक—६१, ६२, ६३, ६६
कोइसुइ—३०१
कोइसू—३३१

कोक-ओर्दू—१८ (नील-ओर्दू), ४९
कोक-काशानी—१६६
कोकताल—३३१
कोकताश—१२५ (नीलपाषाण)
कोकतुनगुल—५३०
कोकतुनचुई—५३०
कोकतेपे—२९७, (पर्वत) २९८, ५३९ (गांव)
कोकतेरेक—३३१
कोकपताश—४२१
कोकलताश—१८१, १८३, १८६, ३०० (नीलपाषाण), ४४७
कोकशुल—३१९
कोकाजू—१३०
कोकोनोर—३२८, ३२९, ३३२
कोगिलदे—३५९
कोचकर—२९७, ३१०
कोजिन—४६५ (लेफ्टनेंट)
कोजुकोफ़—२४७
कोजल्स्क—२२
कोतियक—२२
कोतो—२४१, ३७४ (साष्टांग दंडवत्, काउ-ताउ भी)
कोनिचि—४६, १४४
कोनुंग—७५ (राजकुमार)
कोनुर-उलेन—३१०
कोनोक्लोफ़—४१८
कोनोली—४२६, ४५० (अर्थर), ४७६ (कप्तान)
कोन्या—१४३
कोपी—५२०
कोपेतदाग—४८९, ४९०, ४९२ ४९५, ४९९, ५०३
कोपोरये—११६
कोबलेफ़—३८२
कोबुक—१३३
कोब्दो—३२४ (पश्चिमी मंगोलिया)
कोमानिया—२६
कोमी—९४, ९८, ५२८ (-गणराज्य)
कोयनिग्सबर्ग—२५८
कोरकान—१४८
कोरचिन—३२९
कोरफू—२६९
कोरिया—३, ५, ३९७, ३९८, ४००
कोरुक—५९ (सूखा)
कोर्ट—४४६ (अंग्रेज चर)
कोर्ट मार्शल—४०२
कोर्दक—११४
कोर्निलोफ—५०५, ५०६ (जेनरल), ५०७
कोर्याकि—३८,२७१ (=कोरिअक)
कोर्साकोफ—३८८
कोलचक—५३४
कोलुमा—२४०
कोलेसोफ़—५२५
"कोलोकोल"—३८२ (कलकल)
कोलोम्ना—६
कोल्चकली—३४७ (नदी)
कोजोफ़—१११, ११२, ३१७ (=मोसाल्स्की)
कोल्त्सोफ—३८२, ३८२ (कवि)
कोवालेव्स्की—४४८ (कप्तान)
कोशकुर्गान—४३०
कोशुर—३१९
कोशोत—२१०
कोसका—६४
कोस्त्रोमा—३५, ५१, १०२ (त्वेर)
कोस्मेस—११०
कोस्सागोल—३२१ (झील)
कोहक—१५७, १५९ (नदी)
कोहिस्तान—३०४, ४२६, ४५८
कौतू—२५३ (=काउ ताउ)
कौनदी—४८४
कौरदक—३१७
कौरोश—५५४
क्याज—२२, ३१७
क्याउ-चाउ—३९७
क्याङ—४८८ (जगली गदहा)
क्याङ-नान्—५
क्याख्ता—२५५, २५६, २५७, ३८९
क्योरिग—३५७
क्राइ—५२४ (=प्रदेश)
क्राको—६ (=क्राकोफ), २३, २६, २७, २१८, २३४, ४१०
क्रांति (१९०५ की)—३९८-४००
क्रांति-विरोधी—५२२
"क्रामवेल"—३७०
क्रास्नोयार्स्क—२३८, ३५७, ४०३
क्रास्नोफ—५१० (जेनरल)
क्रास्नोवोद्स्क—४६५, ४७२, ४८०, ४८१, ४८३, ४८६, ४८८, ४९४, ४९५, ४९६, ४९९
क्रिम—३०, ८३
क्रिमिया—३६, ३९, ५१, ५६, ६०, ७२, ८३, ९६, १००, १०१, १०६, १०७, १०९, ११६, १५१, २२५, २३०, २३१, २३२, २३३, २३५, २४६, २४७, २४८, २५०, २५७, २६०, २६१, २६२, २६३, २८७, ३१८, ३३९, ३४०, ३५४, ३८० (-युद्ध), ३६५, ३६८, ३८६, ४५३
क्रुजेन्स्तर्न—३७२, ३७४
क्रेमलिन—३५, ९८ (दुर्ग), १०५, १०६ (=क्रेमल), १०९, २१९, २२०, २२४, ३६९, ५१०

क्रोन्स्तात्—२, २५९, ४०२
क्रोपत्किन—३८८, ४९८ (जेनरल)
क्रोपोतोफ़—२६४
क्रोबात—३६८
क्रोमी—२१८, २२०
क्रोमोफ—५०७ (जेनरल)
क्रोसिया—६ (युगोस्लाविया)
क्लपकोफ—३२७
क्लाइब—३९०
क्लुशिनो—२२२
क्ल्याज्मा—९०, ९१
क्विचिशियेफ—४१४ (कुइचिशियेफ़)
क्विनलन—३३४
क्वेटा—४९९
खकास—२७१, ५३५
ख़ताई—१३०
खबारोफ़—२४२, २७२, ३७४, ३८०, ३९०, ४१७
खराखुल—३२१, ३२४, ३२५ (चोरोस)
खर्किर—३३१
खर्कोफ़—३६६, ५५०
ख़र्गोश—३३१
खलखा—३२१, ३२४, ३२६, ३२८, ३२९, ३३८, ५४८ (मंगोल)
खलता—४८२
खलवा—३२१ (इलवा)
खलीता—३४, ९७ (पैसेका थैला)
ख़लीफ़ा—१२१, १४०
ख़लील—६३, १३५, १५४, १५५
ख़लील मिर्ज़ा—१५८
ख़लीलबेग—१०२
खलेउअत—५१४ (उज़्बेक)
खलोपी—२२१
ख़वास—१२६
खवास आमिद—१२५
खड्गवीर—९५
"खम्सा"—१६१, १६२ (पंचक)
खस्तमीनारेसी—२०८
खंकिरिन—१२७ (खूकिरान)
खाइत—३००
खाइकानाक—३०८
खाकान—७४, १३९ (=कंआन, कगान)
"खाकानेजहां"—१७९ (दुनिया का राजा)
खाङ-सी—२४३, २५३, २५४, ३२४, ३२८, ३२९, ३३१, ३३२, ३४० (चीन-सम्राट्)
ख़ाजार—२० (ख़ज़ारदरबन्द), ७३, ७४, (बहीरा ख़ाज़ार), ७५, ८३
खाजासलीम बी—५४५ (सामी पाशा)
खातून—२९
खान—५३, ५४, १००, १३२, १९७, २३२, २७५, ३७८ (राजा)
खानकाह—१९३, ४६७ (ख्वारेज़्म)
"खानकाह-शफाइया"— १६१ (सार्वजनिक अस्पताल)
खानजादा—१७१, १७३, (-बेगम)
खान तिङ री—५३५ (शिविर)
खानजादा नोगाई—२८४
खान पुलाद (बुलात)—३४३
खानबालिग—११, १३ (पेकिङ)
खानम—१८५
खान-वंश—६८
खान्स्की—५५२
खानाबाद—१९१, १९२
खाप—१८१
खामिल—३२८, ३३०, ३३१
खार्कोफ—५०८ (=खर्कोफ़)
खाबंद—१३८
खाविंद-तुहूर—३०६
खाविंद बिकी—१६०
ख़िज़िर—४२, ४८, ६५, १३३, २०१, ३१५
खिताई—१०३, ५१४ (उज़्बेक), ५१६
खियाली—१५८
खिंगन—५३० (पर्वतमाला)
खीवा—५३, ५६, १३७, १६९, १७८, १९१, १९६, १९९, २०१, २०४, २०८, २१०, २११, २५१, २७१, ३०५, ३५१, ३५२, ३५३, २५८, ३७८ (ख्वारेज़्म), ३७९, ३८७, ४२६, ४३१, ४३२, ४४४, ४४८, ४५०, ४५१, ४९०, ४९२, ४९४, ५१७, ५२५, ५३५, ५५५
खीवा-खान—१९६, ४६४-८७ (-खान), ४८६ (-संधि-पत्र)
खुई—४०
खुङ थैची—३२७, ३२८, ३३१, ३३३ (=महाराजा), ३५३
खुतकताई—३३८
खुतुलुन—१३२
खुत्तल—५६, १७३, १७४ (खुत्तलान)
खुदादाद—१५५
खुदाबंदा—१३३, १४५
खुदायार बी—४५५ (बी), ४५१
खुदायेफ़—५३३
खुन-थैची—३२५ (=खुङथैची)
खुनबुका—५
खुबिले—३० (कुबले), २९

(-कुसिमन), (=गल्दन)
गपेयेफ़—५२५
गपोन (पादरी)—३९९
गफ्फ़ारी—४८, ६४, ६५
गयतोन—१२७
गयासुद्दीन—१४६, १५६, १५७, १६१
गरबीन—३२
गरम—५४६
गरविलोन—२४४
गरसरदार—५५२
गराब—५३९ (गाव)
"गरोद्‌निची"—२६२
गलवाचेफ—४३६ (जेनरल)
गल्दन—१६६, ३२८, ३३४ (गंदन), ३४५ (-छेरिङ्ग)
गलिसिया—३८, २६०, ४१३
"गसूदर"—१०० (=स्वामी)
गगा—४३०, ४९९
गंधार—१४ (पूर्व-,युग्नन्)
"गाज़ी"—५४४ (धर्मयोद्धा)
गाथ—७२
गालिच—८३ (हालिज), ८४, ८८
गालिच-वोलोहुन्स्क—९२
गालित्ज़िन (राजुल)—४६५
गालित्स—८२
गाले—५१५ (उज्बेक)
'गाड़ीवानोंके गीत"—३८४
"गांवके गरीबोंसे"— ३९७
गिज्दुवान—१७५, २११
गियाउर—४८९, ४९७, (उपत्यका)
गिरती—२०५
गिराई—१६७ (-बेग), २७७, ३०३
गिरिश्क—४९९
गिलगित—३११
गिलियक—२४०, २७१, ३८१
गिल्ज़ई (अफगान)—१९३, १९४, ४४०
गिज़्बुर्ग—५२५
गीलान—१०३ (गेलान)
गुइउक—२८५
गुइगुदार—२४२
गुचकोफ़—४१८, ४१९
गुज़ार—१७२, ५२६
गुर्बनिया (=प्रदेश)—२५१, २६२, ३७०, ४०४, ४३२, ५०३, ५१२
गु-युक—२६
गुयेदिक—४७५
गुरज़ोफ़—१०४
गुरलान—४८४
गुरलेत—५१५ (उज्बेक)
गुरियेफ़—४६५
गुर्जिस्तान—३३ (जार्जिया), १४४
गुर्जी (जार्जिया)—६, ६०, ९२, १४५, १८१, १९२, २५१, २७१, २७२, ३६९, ३७१, ३९५, ३९९, ४०५, ४७२, ५१२
गुलिन्स्क—३५१
गुलबाग—४२५
गुलाम—४९१
"गुलामान"—४९३
"गुलिस्तां"—४१, १४३
गुलिस्तान-संधि—३७२
गूज़—२०७, ४८९ (तुर्कमान)
गूनिब—३७७, ३७८
गूनेज़ी ओगलान—५६
गूरगान—१४८, ४२० (कूरकान), ४७०, ४८९ (नदी), ४९०
गू-युग—६, १३१ (गूयुक)
गूशी (गूश्री)—३२८
गेगेन्—१५
गेदोई—५१५ (उज्बेक)
"गेनरलिस्सिमो"—२७०
(महा-महासेनापति)
गेनांदी—१०२
गेनोवा—११, ३५, ३६ (गेनोआ), ३९
गेरेतू—३२४
गेरेबाल—३२४
गेरेसंजा—३२४
गेविलोन—३२९
गेलन—१९२
गेलेसिया—३९ (=गिलिसिया)
गैखातू—१४४
गैरतशाह—५४५
गैरमुल्की—१२९
गैरिसन (छावनी)—५२४, ५५२
गोकलान—२००, ४७२, ४९०, ४९४, ५४७ (तुर्कमान)
गोगलन—३८४, ३९२
गोनज़ालेज़—१५२, १५३
गोबी—३४२
गोयेज़—३१३
"गोयेबेन"—४१३
गोरदेस्स—६३
गोरलाने—२९२
गोरलोब्का—४०३
गोरियान—१७६, १८१
गोरिल्ला-युद्ध—२२१
गोरी—१७६, १७९, ४६०
"गोरे-अमीर"—१५४
गोरेलोफ़—५२५
गोर्की—९२, २६७, ३९६, ४१७, ४४६
गोर्डन—२४६, २४९
गोर्देयेफ़—२९१
गोलिच—४१३
गोलिस्सिन—२४६, २५६
गोलोफ़—४८१
गोलोवात्सोफ़—४८१ (जेनरल)
गोलोविन—२३९

गोलोव्किन—३७४
गौहरशाद—१५७, १६०
ग्नेज्दा—९२ (कुलाय, घोंसला)
ग्योकतेपे—३८८, ४९३, ४९५, ४९७
ग्रह-कक्षा—१५८
ग्रानोवितया ग्लाता—१०५
ग्रिगोरी—१०, ११०, २१८ (ग्रेगरी)
ग्रिबोयदेफ़—३८२, ३८३ (कवि)
ग्रिवना—८५
ग्रीक—३६, ५३, ७४, ७८–७९ (-अग्नि), ८२ (पूर्वी रोम), १०५, २२९, २४०
ग्रीक चर्च—३४, ८३, २३०, २५९
ग्रीफ्स—१५८
ग्रोबेन्स्क—४६५
ग्रीस—३९, ८३, ४११
ग्रोज्नी—१०९ (क्रूर)
ग्रोद्नो—४१३
ग्रोसा—१११
ग्लादिश्येफ़—२९१, २९२, ४६७
गिल्न्का—३८४, ३८५
गिलन्स्की—१०७
गिलन्त्कया—१०७
ग्लब—८४
ग्वोज्देफ़—२५६
घग्घर—१४१
घटना-लेखक—१५६ (=वक़ायानवीस)
चगताइ—१४ (खान), १७, ३२, ४९, ५६, १०३, १०४, १२१ (-वंश), १२२, १२४, १२५ (खान), १२७, १३०, १३३ (-उलुस), १३७, १६१, १६२, १७४, २७८, २९३, २९५, ३१२, ३१३, ५४८ (तुर्की भाषा)
चगन—५४३ (गांव)
चगान खान—२६४ (श्वेत राज।),
चगानतारा (एक्के=श्वेत तारा)
चचकली—५१६ (उज्बेक)
चंदो—४७१, ४७८ (तुर्कमान)
चपकुल—५२०
चपची—५१४ (उज्बेक)
चपराच—१३०
चपलेती—५१८ (उज्बेक)
चबी—३०, ३१
चमगुल—३१७
चमन—४९९
चरवा—४९३ (बस्तीवासी तुर्कमान)
चरापेन—३६१
चर्चिल—५२५, ५२६
"चश्मये फ़ैज़"—१४५
चश्मी—२०८
चहार देह—१९९
चहार-राह—१६९, १७०
चाउ—१४१
चाउ-हाइ—३३६ (जेनरल)
चाउ-हो-येइ—६२१
चाङ-काइ-शेक—१२
चाङ जू—५
चाङ-ते—१२८
चागन—५ (चगन)
चागा—१३२
चाणक्य—१३९, ३२६
चाता—३१८
चादिरकुल—२९८, ३१०
चापर—१४, ४७, १३२, १३३
चापरइगिर—२९७
चाबुकोफ़—३१६
चारजूय—१९३, २११, ४४२, ४५६, ४५८, ४६७, ४६८, ४७३, ४९५, ४९९, ५२०, ५५०, ५५३ (चारजूइ)
चारबेकर—४६७
चारयक—४३३
चारिन—३००, ३३१
चारुनचलाक—३०८
चार्ल्स—२२२, २३४, २४९, २५०
चार्लोत—३७४
चालिश—२९८, ३०४, ३०८ (कराशर)
चिकिसलर—४८१, ४९५
चिङ-गिस्—६५, ४६०, ४६४ (छिङ-गिस्)
चिङ-साङ—१६६ (उपराज)
चित्रकला—३९३
चित्राल—४६०, ४६२ (-मेहतर)
चिश्तरन—४४३
चिनास—१८९
चिमकंन—४२८, ४२९, ४३२, ४३५, ४५१, ४६०, ५३०, ५३६
चिमकुर्गान—४२९, ४३०
चिमताई—४२, ४८
चियान-लुङ—३४७
चि-येन-लुङ—३३४
चिर—१६६, १६८
चिरचिक—१६८, ४२८ (नदी)
चिरागकुश—३०४ (दीपबुझाव सम्प्रदाय)
चिरागची—४५७
चिलकेस—५१५ (उज्बेक)
चिलिक—३१७ (झील), ३३१ (-उपत्यका)
चिह काका—५४३
चिहल-दरा—५४४, ५४५
चिंगीज़—३११, ३१६, ४६९ (खान), ४८८ (छिङ-गिस्)
चीचक—५१४ (उज्बेक)
चीचिहार—२५३
चीता—४०३
चीन—३, ९, १६, ३८, ७१, ७५, १०३, १२१, १३३,

१४५, १८३, २४०, २४१, २५४, २६३, २६४, २७३, ३२२, ३२४, ३२७, ३४१, ३४७, ३४८ (-भाषा), ३८९, ३९७, ३९८, ४०८ (-क्रांति), ४२१ (-साम्राज्य) ४२५, ४९८, ५३७
चीन-रूस-संधि--३९०
"चीनीखाना"—१५८
चीनी तुर्किस्तान—४२४
चुकची—२७१
चुकोत्स्क—२५६, ३७३
चुपसुन तन्पा—३१८ (जे-चुन-तन्-पा), उगांका लामा
चुबुरगान—५१५ (उज्बेक)
चीमिर—५३०
चुरान—५१५ (उज्बेक)
चुरिगेइ—३६१
चुलपान—५६ (मलिक)
चुल्लिक—५१५ (उज्बेक)
चुवाक—३१५
चुवाद—१३०
चुवाश—७१, १०७, ११२, २२०, २३४, २३७, ३१६, ३७२, ४०१
चु-सिमा—९, ४०० (चूशिमा)
चुसोवया— १०९, ११०
चू—१२५, १२८, १३२, १४१, २७५, ३००, ३०९, ३७९ (-उपत्यका), ४३२, ५३०, ५३५ (-नदी)
चूकी—३३४
चूके—३३१
चूचेलेई—३१९
चुनिपचू—२४३
चूबावोफ—३१९
चूमिश—३२६
चू-चाङ—१६
चूलाक—४२७, ४२८
चूलिम्स्कोये—११३
चेक—२४
चेकली—४७१
चेका—४३३
चेकोव्स्की (संगीतकार)—३९६
चेखोफ—३०६
चेगेन—३३४
चेचन—३७७
चे-ताइ—३३०
चेन्-दू--११ (सदा)
चेबनी--५४८ (तुर्कमान)
चेरकास--२२ (राजा), ३३, ३९, ४२ (बेग) ५६, १४५, २०९, ३१७, ३३९
चेरदिन—११३
चेरमिस—११०
चेरेन सन्लुप—३११ (छे-रिङ्-सम्-डुप.)
चेरमिसी--२२१, २३४
चेर्न्यायेफ—३८६, ३८७
चेर्नीबाशी--४३४
चेर्नीक्लोबुक—८२ (करा-कल्पक)
चेर्निगोफ़—७२, ८४, ८६, ८८, ९१, १००, २२५, ३७१ (=चेरनीगोफ़)
चेर्नियेफ-- ३८६, ३८७ (चेन्र्यायेफ़), ४३२, ४५१
चेर्नीशेव्स्की—३८५, ३८६, ३८७
चेलखान—९७
चेलियाबिन्स्क—३४९
चोका—३४९
चोगा—७९
चोकायेफ़--५२१ (मुस्तफ़ा)
चोन्सी हार्ई--३३१ (गंदन-पुत्री)
चोपचाक --५४६ (गांव)
चोपान-अता—१५८
चोबान--३३, ३९, १४५, १४७, १५०
चोमरी--४९३ (घुमंतू तुर्क-मान)
चोरोस—३००
चोनिये--९४
चोयान--२७९
चौदार--५४७ (तुर्कमान)
च्यान्-लुङ—४२१ (=चियान्-लुङ)
च्वाङ-चिन्-वाङ—३३६
छग्दोर—३२९
छङ-अन्--५ (मि-यन-फू, शेन्सीमें)
छ-नगर--३३३
छलनी--१२२
छिङ-गिस्--३, १०, १३, ३२, ४०, ५४, ५८, १२१, १२६, १३७, १३९, १४०, १४४, १४८, १५३, १६३, १६६, १७७, १८०, १९६, २००, २८०, ३००, ३०९, ३३०, ३५८, ४२०, ४३९, ४७० (=चिंगीज)
छू-मिश--३२४
छेर्तन पल्जोर--३३१
छेरिङ-दोण्डुब् -३३१ (=दीर्घायु सिद्धार्थ, ०ममडुब्), ३३३, ३३४, ३३५
छेवङ-अर्पचन--२८२, ३२९ (=अवर्नन्), ३३०, ३४० (-रत्तन), ३३१, ३५३ (०दोर्जे)
जकात (=शुल्क)—४२९, ४३३
जगताइ--८, ५३, १२१, ५१६ (उज्बेक)
जगात—१४२, १४३
जजीरत्--८ (मेसोपोतामिया)
जदीद—४५३, ५२६ (नवी-नतावादी)
जद्दा—१०३
जन-कमीसर—५१०, ५११,

५२३, ५२५ (मंत्री)
जनतंत्रता—३५१
"जनता संकल्प"—३८७
"जनतांत्रिक समाजवादी पार्टी"
—५०८ (कम्युनिस्ट पार्टी, बोल्शेविक)
जनहूत—१३६
जनयुग—८३ (कबीलाशाही), ८५
जनवादी—३८७
जनसमाजवादी दल—४१८
जनसीज (गुप्तचर)—४७८
जनेवा—३९३ (स्वीजर्लेण्ड)
जब्बा—४९४ (चोगा)
जब्बारबर्दी—६५, ६६, ३०७, ३०८ (–बर्दी)
जमजम—१८०
जमशबर—३२
जमशीद—१५७, ३१३ (जमशेद), ३७६ (ईरानी)
जमानसरतोफ—५३७
जमायतुलउलेमा—५१७
जमाल—१२९
जमालुद्दीन सिताजी—१३८
जमीन—१८०, १८२, १८३
जम्बुल—५२८, ५३० (=औलियाअता), ५३४
जरगआन—३३१
जरफ्शा—१३१, १४१ (सोग्द), १७५, ४५२, ४५७, ४९९, ५३५, ५३९
जरलिंग—२९२
जराताव—४९१
जर्मन—३८, ९४, १००, १०९, २२२, २४०, २५६, २७०, ३४० (-उपनिवेश), ३६८, ३७२ (-प्रवासी), ३९२ (भाषा), ३९६
जर्मनी—२३, २४, ३९, ७४, ३६६ (बवेरिया), ४०६,
४०८, ४११, ४१२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०७
जलाना—८० (मुर्दा-)
जलायर—१४७, १६८, १९० (=जलैर)
जलाल—१५६
जलालुद्दीन—६४, ६५, १४३, १६५
जलियावाला बाग—३९९
जलील—१५७
जलेरताइ—१३१
जलैर—५१४ (उज्बेक), ५३० (कजाक, उज्बेक)
जवात—१३१
जस्सकत खान—३२१
जहाद (=धर्मयु)—३४७, ५२१, ५२६, ५३६
जहादी—४४३ (=धर्मयोद्धा)
जहानशाह—१०४
जहांगीर—५३, ५४, १५०, १५५, १८७, १८८, १८९, २०६, २९७
जहांगीर खोजा—४२८
जहीरुद्दीन—१५८ (बाबर)
जंगली ऊंट—३००
जंगी अता—३६
जजीरा—१४१
जद—४८
जाइच्नेव्स्की—३८५
जाइसन—२३५, ३२५
जाउल्दुर—५४८ (तुर्कमान)
जाकास्पी—५४९ (पारेकास्पियन)
जागन नोमेन—३२६
जागिएलो—९८
जाता—३१२ (सीमांती)
जाति-व्यवस्था—१२
"जातिक सदन"—५१३ (सोवियत)
जातियोंका अधिकार—५११
जाते—१४८
जादहम—१५७
"जा-दुनाइस्की"—२६० (दस्यु-बवाला)
जान—६४
जान मुराद—४७१
जानीबेग—३८, ४०, १६६, १६७, १७३, १७९, १८५, ३०३, ३०९, ५३० (-बेग)
जापान—८, ९, १४०, ३७२, ३९७, ३९८, ४०० (संधि), ४०६, ४०७, ४१० (-युद्ध) ४१२),
जापोरोज्ये—२२१, २३०, २३१ (=जापरोजे)
जापोरोशियान—३९
जावत्—१०, १०३ (जावा)
जाम—१७७, १८१
जामा मस्जिद—४५३
जामी—१६१, १६३
जामुकशिर—४८३
"जामेउत्-तवारीख" २६, १४५
"जामेजम"—१४६
जामोस्तये—२३२
जायित्सेफ—५२५
जार—१०७, १८८, २०६, २१७, २३३, २३४, २५५, २५६, २८१, ३९९, ४५२
जारकद—५३३, ५३७
जारग्राद—७९ (राजनगरी)
जारशाही—५१४
जारिना—४१६, ४१७ (=जारपत्नी)
जारित्सिन—२३६, २६२, २८८ (=स्तालिनग्राद)
जारुन्स्की—२२३, २२५
जार्ज—२१, २२, ३४
जर्जिया—६२, १०३, २६३,

४४३, ४४६ (गुर्जी)
जास्कोंयोसेलो—३८३, ४१७, ५१० (=पुश्किन)
जाल—१५३
जालेस्की—६३
जावा-१० (=जावत्), १०३
जासी—२९७
जास्लाव्स्की—३९१
जाहिरोफ़—५५३ (कराउल बेगी)
जिगित—४९२ (=बहादुर)
"जिजे इलखनी"—१४२ (इलखानी नक्षत्रसूचि)
"जिजे-उलुगबेग"—१५८ (उलुगबेगी नक्षत्र-सूचि)
जिद—५१४ (उज्बेक)
जिप्सी—४३३ (=रोमनी, सिगान्)
जिमावेइएफ़—२६१
जिम्बिल—३३४
जिरियानी—१११
जिलाचिग—२७९
"जिवो नचाल्नया त्रोइत्जा"—१०२ (जीवन-प्रदायक त्रिमूर्ति)
जिंगिस—३४९ (=छिङ-गिस्, चिंगीज)
जीजक—१६६, १६९, १७१, १८०, ४१५, ४२४, ४२६, ४३१, ४३२, ४४३, ४५२, ४५५, ४८१, ५२०, ५२४, ५२५
जीतीकेंद—३०३
जीयाकुलोफ़—५३३
जीलानउति—१८०
जीवा—७३
जुइरेत—५१५ (उज्बेक)
जुगमले—३१०
जुगश्विली—३९५ (स्तालिन)
जुजजानी—२०, २७
जुजिली—५१६ (उज्बेक)
जुबान—५४४
जुबेनी—१२८, १३१ (जुवैनी)
जुरजान—२०३
जुराकुल तोकसाबा—५३३ (मुल्ला)
जुराबयेफ़—५१९
जुरा बेक—४५७
जुल्फ़ा—५५४
जुलियन—२१, १५२ (-पंचांग)
जुलून—५१४ (उज्बेक)
जुल्फिकार—४९८ (डांडा)
जुवाल्दर—५४८ (तुर्कमान)
जुंगर (कल्मक वामपक्ष)—२६३, ३२५, ३२६, ३२८, ३३२, ३३३ (वंश), ३३४ (-सेना), ३३६, ३३७, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३५०, ३५२, ३५९, ३६०, ४२०, ४२२
जुंगारिया—२३५, २८२, २९१, २९६, ३१९, ३२८ (कल्मक-भूमि), ३२९, ३३४, ५३०
जूके—३०
जूकोव्स्की—४१२
जूजी—३९ (=जूछी, तूशी),
जूजीबुका—३१५
जू-छि—१७, १८ (=पथवा), ३९, ४३ (-वंश), ४५ (तू-शी), ४९, ५१, ५४, ६९, १२१, १२२, १२८, १२९ (-उलुस), १३२, १६२, १६५, १८५, १९६, २७७, ३०३, ३१५ (जूजी भी)
जूमा—५२४
जूमान—५३९ (गांव)
जूयुत—५१४ (उज्बेक)
जूयुत (चिल-)—५१४ (उज्बेक)
जूयेबार—२११
जूलेक—४२९
जूलेगन—५१५ (उज्बेक)
जेगुर—२०५
जेखात्—४७
जेङ गिन कुरजी—१२४
जेचुन तम्पा—३२९ (उर्गा लामा)
जेजेद्—१९९
जेते—१४९, १५०, १६९ (मुगोलिस्तान खानकी सेना), २९६
जेनेवा—४०२
जेम्किन्सन—२०१, २०६, २८७, ३१३
जेद—२७
जेबक—४६२
जेबनी—५४८ (तुर्कमान)
"जेम्ला-इ-वोल्या"—३८७
जेम्स्की सबोर—१०८, ११६, २१७, २१९, २२४, २२६ (राष्ट्रीय सभा), २२८, २३३
जेम्सूचिना—१०८ १०९
जेम्स वाट—२६७
जेया—२३९, २४०, ३८८, ३८९
जेरेवो गोरोद्चो—११५
जेरेमिया—११६
जेर्जिन्स्की—४१७
"जेल-जामे-उत्तवारीख"—३२
जेलेर—५१६ (उज्बेक)
जेसाउल मामित—४८४
जेसुइत—३२९ (ईसाई)
जेंकिश—१३५ (जिंकशी), १३६
जेंकिन्स—१९०
जेंक्रिया—२८६
जेंगिर-सराय—५५
जोङ-सान् ताउ-फू—१२५
जोकी—६८
जोचोकबालिक—१३२

जोरकुल--४९८ (विक्टोरिया झील)
जोहरा--१८५, १८७ (-ब्रानू)
जोहाब--३१३
ज्दानोफ--४१४, ५०८
ज्योतिषशास्त्र--२६५
ज्वालामाई--१०३
ज़्वेज़्दा--४०९ (सितारा)
ज़्वेनीगोरद--५२, ९६
ज़्वोइकोफ़--३८८
ज़्वोरोफ़--२३२
टर्की--१७७
टाड (मेजर)--४७४, ४७५, ४७६
टामस हाइड--१५८
टिमरमान--२४७
टुल्कू--३४० (अवतारी)
टेम्स--२४८
डच--२४०
डन्ज़िग--२६०
डेनमार्क--१०८, २५६
डेन्स्टरविल--५५४ (जेनरल)
डेप्टफर्ड--२४८
डोम--२०३, ४३३ (रोमनी, जिप्सी)
ड्रेडनाट--४११
ड्रेसडन--३६८
तकफीर--३७ (सम्राट्)
तकमक अता--४८४ (द्वीप)
तकात--१०४
तख्तबाजार--५५१, ५५३
तख्त-सुलेमान--४३१
तगनरोग--३६५, ३७४ (तगन्रक)
तगिल--१११
तज़लर (कजाक)--५२९
तजीमारी--३०
तनजुर--१३ (शास्त्रानुवाद)
तनाब (भूकर)--४३३
तबी नूस--४८१
तब्रेज़--३२, ३३, ३९, ४०, ४१, ४३, ५४, १०४, १३९, १४१, १४४, १५०, ४४६, ५५४ (=तब्रीज)
तबोल--५१, २३४, ३१७, ३१८
तबोल्स्क--११२, २१९
तमगाज चुरा--२०१
तमगीर--५४८ (तुर्कमान)
तमता--६
तमदी--४८१
तमन--८४
तमातोकत्--३०
तमूतरकान--८४
तम्बोफ़--२२
तम्मेरफोर्स--४०२
तरकू--३०
तरखन--५९, २३४, ३१६ (तर्खन-राजकुमार)
तरखन्स्कोये ओस्त्रोग--३१६
तरत्--८४
तरनोफ--४१३
तरबगताई--२९७
तरबू--२९
तरस--४६, १२७
तरानचिन--२९६
तरानचिन्स्की--२९६
तरिम--१२४, १४१
तरी-उइगुर--५२९ (कज़ाक)
तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस--५३३
तरुण तुर्क--४०७, ४०८
तर्खन जारुकतू--३३४
तर्गुत कलमक--२५३
तर्तुगू--५१६ (उज़्बेक)
तर्मा छेरिङ--२० (=तरमा शेरिन), १३४, १३५
तलजियान--४९
तलतंगा--३४६ (जेनरल)
तलदिक--४८०
तलदी बुलाक--५३७
तलस--२६ (तरस), १२७, १३०, १३२, १३३, १८०, २७८, २७९, २४९, ४३२, ५३५ (नदी)
तलिकू--१३३
तल्लिन--१०८
तलेउ--५१५ (उज़्बेक)
तलेउ बेर्दिन--५३७
तवक्कल खान--१८०, २७९, ३२४, ३२५, ३५०
तवाची--५६
"तवारीखे-नासिरी"--२०
तवील-दरा--५४४, ५४६
तस्ली-यामिश--२०७
तहमास्प--१७६, १७७, १७८, १८१, १८३, २००, २०२ (शाह-)
तका--४३३ (=छ आना), ४७८ (=तंगा)
तंगिदीवान--१९२
तंगुत--३, ३३१ (अम्दू)
तंतसीला--३३१
ताइ-चुङ--४ (मंगोल)
ताइगा--२७१
ताइ-न्याउ--८ (धर्मशाला)
"ताइ-युवान्-तोङ-शी--१५ (मंगोल-महाविधान)
ताइ-चू--३२४
ताउ--१२
ताउरा-अतलस--२९७
तागबुई--१९९, २०३
ताज--५१६ (उज़्बेक), ५२९
ताजन्द--४८८, ४९० (उपत्यका)
ताजमहल--१५७
ताजिक--५६ (=सर्त), १३५, १९४, ३०५, ३७८, ४२७, ५१७, ५३६, ५३९ (सोग्दी), ५४४
ताजिकिस्तान--१२१, १७१,

३०६, ४५३, ४५८, ५१७, ५२७ (पू० बुखारा), ५३९, ५४०, ५४१ (-गणराज्य)
तजिकी—५३९ (भाषा, फारसी)
ताजुद्दीन—१३८
तातातुगा—१२२
तातार—२३४ (तारतार), २३७, २९८, ५१८, (मगोलायित) ५१९,
ततिश्चेफ—३४५
तातीशेफ—३५२
तान—३०
ताना—३८
तानिसेफ—३५२, ५२२
ताबिन—५१५ (उज्बेक)
तामा—५१५ (उज्बेक)
ताम्र-युग—५२९
तायगा—९४ (=ताइगा)
तायनखान—३२१, ३२२, ३२४, ३२५
तारतार-२४, ५१, ९३ (मगोल, तुर्क,) १६७, २२४, २८४, ३१६, ३६८, ३७२, ४०१, ५१२, ५१५ (उज्बेक), ५१८ (मंगोलिया), ५१९, ५४८ (भाषा)
तारतारी—३८१ (-खाडी), ५४८ (चगताई तुर्की)
तारा—३१७ (नगर) ३१९, ३२६, ३३३
ताराब—१२२
"तारीखेगुजीदा"—१४६
"तारीख मुकीमखानी"—१९०
"तारीख रशीदी"-१७३, १७५, २९९, ३०२, ३०८
"तारीख वस्साफ"—१४६
"तारीख शेख-उवेस"—२७, ३९
"तारीख हैदरी"—३१
तारूम—१०३
तार्नोपोल—५०५
तालिकान—१३१, १७९, ४६०, ४६२
तालिश—१४५
ताले—३२४
ताल्की—३२८ (डागा)
तावदा—१११, ११३, ११४
ताउ—५२५
ताशकंद—५५, ५७, १३२, १४९, १५०, १५१, १६१, १७१, १७२, १७६, १७४, १७८, १८०, १८२, २०९, २७८, २८०, २८१, २९१, ३०२, ३०५, ३०७, ३२४, ३२५, ३३१, ३४३, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५९, ३६०, ३७८, ३८७, ४१५, ४२०, ४२२, ४२३, ४२८, ४३९, ४४४, ४५२, ४५५, ४८१, ४८६, ५११, ५१७, ५१८, ५१९, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५३०, ५३३, ५३७, ५३८, ५४४, ५४९, ५५३
ताश-कुपुरुक—२०८
ताशकुर्गान—४२९
ताशकंपरी—५५१
ताश तेमूर—२९६
ताशदकान—११४
"ताश-रबाद"—२९९
तासबुगा—३४ (ताशबेग)
ताहिर खान—३२४, ४६८
ताहिरी—१६३
ताहुरे—३२४ (=उलान-बातुर)
तिउल—३५१
तिक्री—१५३
तिखविन—२६५
तिफलिस—२८, ३९६, ४८०
तिब्बत—७, ९, १६, १३५, ३०९ (लदाख), ३१३, ३२७, ३२८, ३३३ (हस्तलेख), ३३४ (भाषा), ३४० (थिबोत)
तिमिरियाजोफ़ ३९२
तिमुर कबूक—४८१
तिमोवियेज—११०, ५४२, (कर्नल)
तियान्सिन ३८९
तिर्किश—५१६ (उज्बेक)
तिर्म—५१६ (उज्बेक)
तिला—४३३, ४७८ (सिक्का)
तिल्जिन—३६७, ३७०
तिस्मिया—७२
तीकासगरूल्कू—३०५
तीबेची—२००
तुईख्वाजा—४९
तुकातेमुर—२०, ४९
तुकान—२२
तुकाबेक—३१५
तुकाल—१४३
तुखार—४४२, ५१६ (देश)
तुखारिस्तान—१९१
तुगराई—१४५
तुगलक—२०, १३४, १३५, १४८, १४९
तुगलक तेमूर—१३७
तुगाई—१४८, ४२२, ४२३
तुगाचार—२८
तुगाशी—१२६, १२७
तुगुम—३६१
तुङ-कुङ-चुङ-फू—७ (शेन्सी)
तुङ-गुस्—२७१
तुजुक—१५४
"तुजुक-जहांगीरी—१६३"
तुजुकात—१४९

"तुजुकात-तैमूर"---१४८
तुतार--२८ (ततार)
तुनबेमा--२७
तुदा-मङ-गू--२९
तुपकारा--५१५ (उज़्बेक)
तुबेता--११४
तुमाई--५१४ (उज़्बेक)
तुमान--३०, ६३,४४७
तुमूलाइ--५ (मगोल)
तुमेत-- ३२१
तुमेनेत--२२७
तुरका- १४८
तुरखन--१११
तुरगाद---१३७, १४८, ३४१, ३५८, ४१५, ५३१, ५३२
तुरगुत --२६४, ४५७, ४५८ (मगोल)
तुरतेस--११४
तुरसुन--१८७, २०९, २८१, ३४५ (खान)
तुरा--१११, १५४, १७६, २८०, ३०० (=यासाक, यास्सा), ३१६, ३१७, ३२१, ३२८, ४३५ (-कुर्गान)
"तुराबी"--१८७, १८८
तुरा मुराद--४७२
तुराश--३१७
तुरा सूफी--४६९, ४७०, ४७१
तुरी--३१
तुरे कुतुलुक--२९
तुरेव्स्की--७३
तुरोफ-पिन्स्क--८८
तुर्क--५६, ७१, १००, १०२, १०५, ११६, १६१, १७२, २८४, ४६८ (-जाति), ५१७, ५२६, ५२९, ५३६, ५४१, ५४२, ५४८ (-भाषा), ५४९
तुर्कमान--५४, ५५, १५८, १६४, १७५, १७६ (इस्माईलके सैनिक), २००, २०३, २०४, २०५, २०७, २०९, २८७, ३२१, ३३८, ३४८, ३४९, ३५५, ३५७, ३७८, ३८८, ४१५, ४५० ४६३, ४६७, ४७०, ४७१ (तेक्के, यामूद, सलार, चंदोर, अमीरअली, बूजंजी, कंकुरत कंकली, मंगित), ४८३, ४८४, ४८६, ४८८, ४८९ (-कबीले,-बूज,आगूज) ४८९-९३ (तेक्के, सारिक, सलोर), ४९४ (-रूससे युद्ध), ४९३ (पोशाक), रूपरेखा), ५१५ (उज़्बेक), ५१७, ५४७ (कबीले), ५४८ (जाति-निर्माण चगताई तुर्की), ५४९ ५५३, ५५५
तुर्कमानिया--५४९
तुर्कमानिस्तान--१२१, ४५३, ४८९, ४९७ (गणराज्य) ५१९, ५२१, ५४७, ५५०
तुर्कमानी--५५२ (भाषा)
तुर्क वंश--१७२
तुर्किस्तान-- ३७, ३८, ५७, १२१, १२८, १३४ (पूर्वी), १४१, १६५, १६६, १६८, १६९, १७४, १८०, २६१, २७७ (सिर-उपत्यका), २७८, २८०, ३०२, ३०४, ३४८, ३५०, ३७८, ४३२, ४४२, ४५१, ४७९, ५११ (-सोवियत सरकार), ५१२ (-गणराज्य), ५१७, ५१९, ५२०, ५२७, ५३४, ५५२
तुर्किस्तान कमेटी--५१७, ५१८
तुर्किस्तान प्रदेश--३०४ (सिर-दरिया)- ४३५, ४३६, ४५२ (गुबर्निया), ५५०
तुर्किस्तान शहर--१८२, २७५, २८२, ३१०, ३३१, ३२५ (निम्न सिर-उपत्यकामें), ३४३, ३४५, ३५३, ३६०, ४२०, ४२३, ४२९, ४३२, ४८१, ५२८, ५३०-३४
तुर्की--८२, १००, १०३, १५४ १५९, १८३ (भाषा), २०३, २२०, २२६, २३१, २३३, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५७, २५९, २६०, २६४, २६९, ३४०, ३५६, ३६७, ३६८, ३७१, ३८६, ४०६, ४१२, ४५०, ४९५ (युद्ध), ५२६ (सुल्तान), ५४३, ५४५, ५४९
तुर्गनेफ़--३९२
तुर्तकारा--४७१
तुर्फ़ान--२९७ (तुरफान), ३००, ३०२, ३०४, ३०८, ३०९, ३१०, ३१३, ३२८, ३३०, ३३१, ३३२, ४२५
तुलचिन--३७३
तुलचिन्स्की -४१०
तुलसी--२६६
तुला--५ (मंगोलियामें नदी), २२१, २३५, ३२१, ३३०, ३८१
तुलार -११३
तुलिशिन--२६४
तुलीख्वाजा--४९
"तुलुगमेह"--१७१
तुशिने--२२१, २२२ (चुशिमा)
"तुशिनो जार"--२२१
तुशियेतू--३२८
तुगर--३८१
तुगान -- ५३७ (चीनी मुसलमान)

तु गुत्—१२ (अम्दू)
तुंगुस—२३९, ५४८ (मंचू भाषा)
तङ्गा-क्षेत्र—९४
तूक—२०६
तूके किला—२०७
तूकेराबाद—१७३
तू-ची—९ (=जू-छी)
तूज—२१०
तूतिरगा—५४७ (तुर्कमान)
तूफाङ—१२ (तिब्बती)
तूमे—५१५ (उज्बेक)
तूमेत—३२४
तूरातू—६१
तूरान—१४१, १७३, २८६
तूराना-अधित्यका—१६५ (किरगिज-स्तेपी)
तूरान-सुल्तान—५८
तूरिन्स्क—३१६
तूल मेहमत—३१८
तू-ला—१५
तू-ली-शिन्—२५३
तू-लुइ—३ (छिङ-गिस्-पुत्र), ५, ६, (धो-लोइ), १७, १२१ उलुस), १३०, १३९
तू-शि—१८ (जू-छि)
तूशियेतू खान—३२१, ३२९,
तूस—१३, १५०, १७६
तृतीय विभाग—३८५ (खुफिया-विभाग)
तेअवका—३५०
तेक-ज़ाई—४३३
तेकुशचिख—३३१
तेकेस—१२५, ३३४
तेक्के (तुकमान)—२००, २०४, २०७, २०९, ३३७, ३८८, ४७१, ४७२, ४७६, ४८३, ४८७, ४९०, ४९१-९३, ४९५, ४९७, ४९९, ५१७
तेपियर—३५४
तेबेन्दा—११४
तेमिर—५३०
तेमिरलिक—३३४
तेमूर—५०, ५४, ५५, ५६, ५७, १००, १२१, १२९, १३१, १३४, १४५, १४८, १४९, १५३, ४४७
तेमूर अब्दाली—४४२
तेमूर एजबेक—४९
तेमर कआन—३२ (चीन), १३२
तेमूर कुतुलुक—५६, ६२
तेमूर खान—६४, १४४
तेमूर खोजा—४३
तेमूरताश—३९
तेमूर थैशी—१६६
तेमूर बेग—५०, ५८, ४८१
तेमूर बेग नोगाई—१६७
तेमूर मलिक—४९, ५६ (खान)
तेमूर लंग—१३, ४९, ५३, ५४, १६-१३७, १४१, १४८ (-वंश), २८६, २९० २९८, ४७०, ४९३ (=तेमूर)
तेमूरशाह—१३६, १९४, ४४१
तेमूर सुल्तान (खीवा)—४६६, ४६७
तेमूरी—१६३
तेमूरी साम्राज्य—३१६
तेयेन—२१०
तेयेन्कू—३३०
तेरक—२८
तेरमिज—५४, १३०, १३४, १३५, १४३, १७७, ५५२ (=तेर्मिज)
तेरसेक—१९९
तेराक—१५१
तेरेक—६१, १०८, १४५
तेरेश्चेंको—४१८
तेलेंगुत—३१९
तेवकेलेः—३५१
तेवल—२८४
तेहरान—१५७, १८१, ४९२
तेंगरी—५
तैलम्बार—५६
तोइरिन—३३०
तोकताई—१३२ (सुवर्ण-ओर्दू-खान), १४४, १४५, २८४
तोकतामिश (खान)—४३, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ६३, ६८, १५०, १५१, १५८, १६५, ४९१ (तुर्कमान)
तोकमक—२८१, ३७९, ४३२, ५३७
तोकसाबा—५५३ (नुकसावा)
तोका—१३१
तोकाजी—१३३
तोकारेफ़—५२५
तोगताइ—२९, ३०, ४७, (तुगताइ भी)
तोग्ताकिया—५०
तोग्तोग्—१३२
तोगान तेमूर—१६, ११० (०तिमुर)
तोदा—३१७
तोप—६३, १०१ (-खाना)
तोपचीबाशी—४४७ (तोपखाना का जेनरल)
तोपियातान—४८३
तोबोल—५८, ११०, १११, ११३, २७१, ३१६, ३१९, ३२४, ३२६, ३९०, ५३५
तोबोल्स्क—२२७, २५३, ३१६ ३१७, ३१८, ३२१, ३२६, ३३१, ३३३, ३३८
तोम्—३२७
तोम्स्क—३२७
तोरगुत—२१०, ३००,

३१९, ३२१ (तोर्गुत)
तोरिदा—२६२
तोरोपेत—२४९
तोरोबोलोद—३२४
तोर्गुत—२१०, ३००, ३१९, ३२१, ३२६, ३३८, ३३९, ३४० (वोल्गाकल्मक), ३४१, ३४२, ३४३, ३४८, ३४९, ३५०, ३५५, ३६० (तोरगुत)
तोर्गुत—३०९ (डांडा)
तौकेल खानम्—१५१
तौकेलेफ़—४६५ (=तवेकलेफ)
त्यानशान—३२५, ३२६, ३२८, ३४१, ३७८, ४२५, ५३५-३७
त्युकमे—१३३
त्युकेर—५४८ (तर्कमान)
त्युतोनिक—९५
त्यूपा—३३१
त्यूपेलिक करक—२९७
त्यूमेन—१११, २८६, ३१५, (प० साइबेरिया), ३१७, ३१८, ३१९, ३२१, ३२६, ३३८
त्यूलेस—२९८
त्योभ्नी—९९ (अश्व)
त्राउवेन्बर्ग—२६१, ३४१
त्रान्सिल्वनिया—२३
त्रिगर्त—४०७
त्रिपोलितानिया—४०८
त्रुदोविकी—४१०
त्रुवेत्स्की—२२३, ३७५
त्रुवोर—७५
"त्रूतेन"—२६८
त्रेपोजन्द—१०४
त्रोइत्सा—९९
त्रोइत्स्क—३४८, ३४९, ३५५, ३७८, ४४६ (=त्रोयत्स्क)
त्रोइत्स्क सेर्गियेफ़—२२१, २४६
त्रोक—६२
त्रोत्स्की—५३७ (जेनरल), ५०६, ५०८
"तृतीय भाग"—३७६
त्वेर—२२, ३४ (कलिनिन), ९६, ९७, ९८, १००, १०१, १०२, ४०१
त्वेर्त्सा—९६
त्सित्सियानोफ़—३७१
थाइ—७, १४ (=स्याम)
थाङ—१४ (-वंश)
थामस—१३५
थुबु थेमुर—१४
थेओगोनस्—३७
थेगन-थेमुर—१६
थैची—३२६ (तालेह), ३६०, (उबासा)
थैशी—३०४, ३१९ (राजा), ३२५ (थैची)
थोर्न—२६०
थ्रेस—३४
दक्षिणपक्ष—५१९
दन्यूब—५९, ७२, ७३, ८२, ८३, ८८, २५०, २६०, २६३ (दुनाइ), २८४, ३६७, ३८६, ४१२
दन्दुर—४८३
दबूसिया—१६९, १७१
दमिश्क—१०३, १४०, १५२
दरकद—५२७
दरखन—३२९ (तरखन, तर्खन)
दरबन्द—२२, २८, ३०, ३३, ४१, ५१, ५४, ५५, ६१, ६२, १०२ (कास्पियन), १३१, १४१, १४३, १४४, १५१, १७४, २५१, ४५९, ५५४
दरबंदे-आहनी—१७४ (लौह द्वार)
दरवाज़—४२६, ४५९, ५२७, ५४४
दरवेश—१५३, ४२३, ४७९
दरवेशखाना—४३४
दराज़—५४३
दरा-जू—५४३
दरेदानियाल—२६० (दरदानेल्स), ३६७, ३७७, ३८०, ४०७, ४०८, ४११, ४१३, ४९७
दर्वेत—३२६, ३४०
दर्विस—६६
दर्गिज़—४६०
दर्रकोह—४२३
दलननोर—१४४
दलनी—४००
दलमासिया—६
दलाई लामा—३२४, ३२८, ३२९, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५
दश्त—१५६ (मैदान), २९३, ३५८ (स्तेपी), ४१५ (निर्जन भूमि), ४८०
दश्ते-कजाक—३७८, ४४५, ४६७, ४७६
दश्ते-किपचक—३३, ३६, ४९, ५०, ५५ (कजाकस्तान), ५६ (तोकतामिशका राज्य), १५६, १६६, १६८, १६९, १७६, १८०, २७७, २८०, ३०३, ३०९, ३५१, ४४५, ४८१, ५२८
दश्ते-किर्गिज़—३७९
दश्ते-कुलाक—१७३
दश्ते-खाजार—३३, १४६ (-दश्तेखिज़िर)
दसेया—२४०
दहयक (दशांश)—४४५, ४५३
दहित-स्तान—१४५
दंगिल—४९६ (-गोल)

दंगिल तेप्पे—४९५, ४९६, ४९७
दाइशिंग—३२१
दाइ-नोयन—१८
दागिस्तान—३७१, ३७७, ४६८, ५५४
दाजबग—७३ (सूर्य, स्वारोग-पुत्र)
"दादख्वाह"—४५७, ४७१ (बुखारी), ५२६ (हाजी)
दानियल—९६, १३७, ५४६ (बासमची), ४३९, ४६९ (-श्री),
दानिशमन्द—१३६
दाबुल—१०३
दार्योग—५५४
दरोगा—१२, १६८, १७८
दालय—३२१
दावा—१४ (खान), ४७, १३१, ३४६
दाविद—८७
दाविदोफ—३७३
दाशा सेवस्तापोल्स्कया—३८०
दास—८५, ८६, ३०५, ४८६ (-प्रथा)
दिदेरो—२५९, २६७, ३७३
दिनीबेक—३३, ३८
दिमित्रि—३४ (त्वेर), ५१, ५२, ५३, ९८, २१८ (१), २२१ (२), २२५, ३९२
दिमित्रियेफ़—५२
दिमित्रोफ़—६३
दियारबेकर—५, ७, ८, १४१
दिर—७५, ७७
"दिलकुशा"—१५१
दिलबेरी—५१५ (उज्बेक)
दिलावर शाह—५४५
दिल्ली—७, ५५, ६२, १४४, १५१, १५७, १६३ १८९, १९३
दिसबरी—३८२ (वीर)
दीन अहमद—११०
दीन महम्मद—१७८, १७९, १८१, १८५, २००, २०१
दीनार—५८
दीनू—२०१, २०३
दीनबेइ—३२१
दीपालपुर—१४४
दीर्घबाहु—९०
दीवान—१९० (कविता-संग्रह)
दीवानबेगी—१८७, ४२३, ४७८ (प्रधानमंत्री), ४८०
दुचात—११
दुदुरगा—५४७ (तुर्कमान)
दुनाई—२४ (दन्यब), २५०
दुनायेफ़—५२५
दुर्रानी—१९४
दुर्मेन—५१५ (उज्बेक) ५१६
दुलातोफ़—५३१
दुलियाना—३८
दुवा—१३१
दुश—२६
दुशाम्बे—५२७ (स्तालिनाबाद), ५४४
दूसतनिक—५१५ (उज्बेक)
दूतोफ़—५२२, ५२५ (आत्मन), ५३२, ५४९ (सफेद जेनरल), ५५०
दूमा—१०८, २२०, २२८, ३७०, (=ससद्), ४१६, ४१७, ५२३
दे क्लावियो—१५३
देर्झन्येफ—२४०, २५६ (दे ज़ानिओफ़)
देनिकिन (जेनरल)—५०७, ५५२
देनिसोव्का—२६५
देमाबंद—१०३
देमियान्का—११३
देमियान्स्कोय—३१६
देमेसोन—४४८ (डाक्टर)
देरबेत—३२५, ३२६ (मंगोल)
देल्हन—१७८, १९९, २०१, २०४
देझबिन—२६६ (=दझबिन्)
देलनोई—२९१
देलागारदी—२२२
देलाग—२५४, २५५
देवकेसकेन—२०४
देवा—७३
देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)—४५३
देसियातिन—३७२ (=अस्सी एकड़)
देहकान (=किसान)—५१८, ५१९, ५२३
देहनौ—४५९
देहबिद—१८३
देहबुलन्द—५३९ (गांव)
देहरादून—१५१
देहलवी—१४४
दै-शिङ—३३८
"दोस्तरख्वाना"—५२७
दोगलत—२९५, ३०२, ३६१ (=दूलत)
दोण्डुब् थैची—३५२, ३५८
दोन—२२, ३९, ५१, ६१, ६२ ७१, ७२, ७५, ९०, ९८, ११०, १५२, २१७, २२०, २२५, २३०, २४७, २६१, २३५, २३६, २३७, २८४, २८७, २८८
दोन-कसाक—२७१, ३५४, ४८०
दोनेत्स—२३२, ४०३, ५८० (=उपत्यका)
दोनेत्स-उपत्यका—४०९
"दोन्स्की"—९८ (दोनवाला)
दोबरोनीची—२१८
दोमनिकन—१३५
दोमोशेरोफ—३१७

दोरेपत.—२४९, ३६६
दोर्जे (दर्शा) लामा—३३५
दोलोन्-नोर—३२४ (द० मगोलिया), ५३०
"दोल्गोरुकी"—९१, २५६
दोस्त खान—२०२
दोस्त मुहम्मद—४४७ (खान), ४६१
दोस्तोयेव्स्की—३९२
दौग—४६२
दौर—२७२
दौरिया—५३०
दौरी—२४०
दौलत गिराइ—१०९, ३१५
दौलत बर्दी—६९
द्युकेर—५४८ (तुर्कमान)
द्नियेपर—२२, २९, ३९, ६३, ७४, ७५, ७७, ७९, ८३, ८५, ९३, २१८, २३०, २५७, २६०, २६३, २८४
द्नियेपरोपेत्रोव्स्क—२६३
द्नियेस्तर—५१, ७१, ७२, २६०, २६३
द्मित्रोफ़—९२
द्रविड—५१६, ५२८, ५४८
द्रागोमिरोफ़—५२०
द्रेव्ल्यान—७७, ७८, ७९ (दीहाती), ८३
द्रेश्चेर्न (कर्नल)—४८२
द्विना—७४, ७५, ९५, ३६५
धनुर्धर—२२४
धर्म-छे-रिञ—१३४ (तर्मा-शेरिन्)
धर्मपाल—३३९
धर्मशास्त्र—१२४
धर्माचार्य—३५४
धातु-उद्योग—३७६
"धुआं"—३९२
ध्रुवीय—२४०, २६५, ४०९ ८०
(कक्षा), ४८९ (महासागर)
नई सराय—४१
नकशबंदी—१५३
नक्षत्र (तारा)-सूची—१५८ (=जिज)
नक्शबंदी—४४०, ४४५
नखचेवान—३७७, ५५४
नखजवान—५५
"नखली"—१८७
नखशेब—१३४, १४८, १८७
नखिमोफ़—३८०
"नचलनया लेतोपिस्"—८५
नचार—५१५ (उज्बेक)
नज़र—१८७, १८८ (दीवान-बेगी)
नज़ारोफ़—४२४
नजिमोर—४६७
नतालिया—२४७
नदेज़्दिन्स्क—४१०
नमंगान—४२२, ४३५, ४३६, ४३७, ५१९, ५२०, ५२१
नमिश्का—३३४
नम्दारोहण—८० (सिंहासनारोहण)
नया ओर्दू—४१
नया गुलिस्ता—४१
नये किर्गिज—३४८
नरगिल—५१५ (उज्बेक)
नरबुते—४५५
नरिन—३०७, ४३७
नरोद्नये—३७३ (बेचे, लोक-सभा)
नरोद्निक—७३, ३८७, ३९१, ३९३, ३९५
नवगोरद—२२, ३५
नवपाषाण-युग—५२८
नव-ताम्र-युग—३३४
नवसिबेरीय—३७२
नवाई—१६०, १६१, १६३
नवाबाद—५३९
नवीन तुर्क—५२६
नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की—३५८
नवोगोरद—७५, ७७, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८८, ९१, ९३, ९६, ९९, १०९, २१८, २२३, २२५, २२८, २४९, २६२, २६३
नवोग्राद—२१, २७ (०गोरद), ३९
नवोशेरिमन्स्क—३५०
नवोसिबिर्स्क—४०३, ५३०
नसरुल्ला—४२४, ४२६ (अमीर बुखारा), ४४७, ४६८, (-मिर्जा), ५२६ (कुशबेगी)
"नस्ख"—१५५
"नस्खजहानारा"—४८
"नस्तालीक"—१५४
नस्तेरोफ़—५५१
नस्तोरी—२९६
नाइटिंगल—३८०
नाट्य-कला—१४, २४१, २६६, ३९३
नाट्यशाला—१६१
नादिर—१८५ (नासिर), १८७, (वजीर), १९०, १९२
नादिर मुहम्मद—१८९, २१०
नादिरशाह—१९२, ३५२, ३७८, ४४२, ४६७, ४७०, ४९० (तुर्कमान)
नान्सेन—२६५
नारवा—१००, २४९
नारिन—२९९
नारी (नारिन)—१७९ (डांडा)
नार्थब्रुक (वायसराय)—४८१
नार्वे—८४
नार्समेन—७५
नाविकशास्त्र—२६५
नासिर—७, ३६
नासिरुद्दीन—१०, १३, २०, २७ (मुहम्मद), १२७, १४२,

१४४, १५१, ४९३ (शाह), ५५१ (कराउलबेगी)
निकबेई ओगूल—१३०
निकिता—२१७
निकितिच—६४, ११०
निकितिन—१०१
निकिफ़ोरोफ़ (कप्तान)—४७६
निकूदर—१३०
निकोन—२२९, २३४, २४१
निकोलस—४८२ (जेनरल)
निकोलाइ—८३, १३५, ३९२, ३७९, ३९५,, (२), ३९८, ४०६, ४७३ (१), ५३१ (२)
निकोलाइ स्पाथेरी—२४२
निकोलायेव्स्क—३८१
निकोलायेंको—५२२
निगपई—१३१
निगार खानम्—२७७
निजामी—१६१ (कवि)
निजामुल्मुल्क—१३९
निजार-उपत्यका—३१६
निज्नीनवोगोरद—५१ (निचला नवीन नगर), ५२, ६३, ९२, ९८, ९९, १०२, १२१, २२३, २६२, २६७, ४१६, ४४६, ४७३
निपच—२४३
निमिलन—२७१
नियाज़ तुकसाबा—५४४
"निर्दोष-भवन"—१५
निलबर—१७९
निसा—१८५, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४
निसिबी—८, १४१
निकिची—१९९
नीकुज—५१५
नीतिशास्त्र—१२१
नीमा—३४६
नीमेन—९५, ३६८ (नदी)
नीवखी—२७१
नूजी—६२
नूरअली—३३७, ३४१, (लघु-ओर्दू), ३४५, ३४९, ४८६,
नूरजहा—१५५
नूरतुकाई—१६६
नूर मुहम्मद—२०३
नूरवर्दी खान—४९२ (तेवका)
नूर-हाचू—३२४
नूरुद्दीन निराखुर—५५१
नेक्रासोफ़—३९२
नेन्सी—९४, १०१, २३८
नेन्स्कान्स—२५०
नेन्सबेर्ग—५२१
नेपल्स—२४, २६९
नेपाली—५४६
नपोलियन—७८, २६९, २७०, ३६६, ३६७, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७४, ४९०
नेप्रयाद्वा—९८
नेप्लुइयेफ़—३५२, ३५३, ३५४
नेमन—२६, १९६, २०२, २०६
नेरेजेम—२११
नेर्चिन्स्क—२४३, २५३, ३८१, ३८६
नेवा—९४, ९६, २५०, २६७, ३७५, ४१६ (नदी)
नेवेल्स्की—३८१
नेशापोर—१३१, १४३ (खुरासान), १५०, १८१
नेस्तोरी—१२५
नेस्तोरीय—१३६
नेस्तोरोफ़—४१२, ५५४
नैगरी—४४५
नैपाल बाबा—१२२
नैमन—२१, २०८, ३४७, ३४९, ३५३, ५१४ (उज्बेक), ५१६, ५२९ (कज़ाक), ५३०
नौक़स मगित—५१४ (उज्बेक) ५१६
नोवस—५१६ (उज्बेक)
नोगाई—२७, २८, २९, ३०, ३१, ११०, १४१, १४५, १६७, १६८, १९७, २०१, २०८, २०९, २७७, २७८, २७९, २८७, ३१० (संगीत), ३१६, ३१७, ३१८, ३२१, ३२४, ३३८, ३३९, ३४३, ४६५, ५१५ (उज्बेक), ५१६
नोयन—६१, १०३, १४३, १४८
नोविकोफ़—२६८
नौकर—६८ (अफसर)
"नौजवान विद्यार्थी संघ"—५३२
नौरोज अहमद—३२४
नौरोजबेग—४२
नौरोज़ मुहम्मद—१७९
न्यूस्टाट—२४, २५
पगन्नुये—११४
पचिमान—२२
पजार्स्की—२२३
पत्चीमन—६
पद्य-नाटक—२२४, २६६ (ओपेरा)
पपाइ—३५२
पपोफ़—३९६ (बेतार-आविष्कारक)
पयार—३४६
परताल—३०६ (रसद)
परमाणु-विदरण—२६५
परवानेजी—१८८

परशैम्त्रिकोफ़—२४१
पराक—३०६
परिषद्—२२८, ३३३
पर्लीविका—५२०
पलासी—१६, २५८, ३३६, ४२०, ४५२
पलियोलोगस्—२८४
पवित्र-संधि—३७०
पंचक—१६१
पंचवर्षीय योजना—५३४
पंचायत—४०१
पंज—५२७ (वक्षु), ५४६
पंजकंद—१७५, ४५८
पंजदेह—४९१, ४९८
पंजाब—१३४, ४१६, ४४८
पातर—३२७
पानिखेर—२७०
पामीर—१०, १७४, १९२, ३०४, ३३४, ३७८, ४५०, ५३६, ५३९, ५४१
पारस—११ (खाड़ी), १४५, १५०
पारेकास्पियन—५४९ (जा-कास्पी), ५५०, ५५५
पार्लियामेंट (ब्रिटिश-)—४९८
पावल—२६८ (१), ३४९, ३५७ (जार), ३६५
पावलोफ़—३९६
पाषाणपुल—२०८
पाषाण-युग—५२८ (मध्य-, पुरा-, नव-), ५४१, ५४८
पासख—१०४ (ईस्टर)
पिलोतेइ—१०६
पाषाण-युग (मध्य)—५४१, ५४८
पित्तल-युग—५२८, ५४१, ५४८
पित्रुस्का—३९१
पिल्याव्का—२३२
पिशपेक (फ्रुंजे)—३७९, ४३२, ५३३, ५३७, ५३८, ५३९
पिशागर—४४७
पिशिमा—३१७
पिसारोफ़—३९२
पीतर—६४, ९७, ११६, २१२, २४६, २४७, २४८, २६५, ३३३, ३३९, ३७५, ४४८, ४६५, ४६६, ४९३, ४९५ (१); २५५, २५८ (२), २६१ (३)
पीतर-पावल-दुर्ग—२५२, ३८५, ३९२, ५०८, ५१०
पीतरबुर्ग—२१२, २५०, २५२, २५७, २६६, २६८, २७१, २९१, ३३७, ३४८, ३५०, ३५१, ३५३, ३६५, ३६६ (=लेनिनग्राद), ३७०, ३८८, ३७४, ३७५, ३७७, ३७८, ३९०, ३९१-९५, ४०१, ४०२, ४०९, ४१२, ४२६, ४३२, ४४४, ४४८, ४५०, ४५३, ४६४, ४७५, ४७६, ४८६, ४९५, ४९८, ३९७-९९
"पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा"—२६७
"पिता और पुत्र"—३९२
पीर मुहम्मद—१५१, १५४, १७९, १८२, २८१
पीरअली—३५५
पील—२००
पुगाचेफ़—२६०, २६१, २६२, २६८, ३५५
पुतियातिन—३८९ (अद्मिरल)
पुतिलोफ़—३९९, ४१६
पुतिवल—२१८, २२०
पुरगस—९२
पुराना पंचांग—४०१, ४१७
"पुराने वर्षोंका इतिहास"—८५
पुलकोवो—५१०
पुलाद—५४ (—ब्रेक), ६३, ६४, १०२ (—बेग); १३६, १५६, १९६ (खान), २९५ (ची)
पुलेकश्ती—४९८
पुलेसिरात—४२३
पुश्किन—२३८, २६६, ३७१, ३७३, ३७७, ३८२, ३८३ (कवि), ३९२
पुश्किन—५१० (जास्क्रोंये सेलो)
पुस्तोजेर्स्के—२२९
पूद (=१६ सेर)—३७, ४८४
"पूंजी" (मार्क्स)—३९३
पूंजीपति—४०८, ४०९
पूंजीवाद—३६५, ३७६, ३९३
पूंजीवादी—३९२ (युग), ४०६ (व्यवस्था)
पेइ-ही—३८९
पेकिङ—४, ८, १०, ११, १६, २२७, २५३, २५४, ३२९, ३३७, ३४७, ३५४, ३६१, ३७४, ३८१, ३८९, ४२१
पेचेनेग—७५, ७९, ८२, ८३, ८४, ८६, २८४
पेचेनेत—५४८ (तुर्कमान)
पेचेर्स्के—८४, ८५
पेचिङ—२५५, २६३, ३८८ (पेकिङ)
पेचोरा—१११
पेत्रोग्राद—४१६, ४१७, ४१९, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८ (पर बोल्शेविक अधिकार), ५०९, ५११, ५१७
पेत्रोग्राद सोवियत—५०८
पेत्रोपावलोव्स्क—३४७, ३४८, ३४९, ३८०, ३८२
पेत्रोफ़—२२७, ३८३, ३८५
पेन्-किङ—५ (नानकिङ)

पेनूजा—२२
पेन्दो—५२५
पेपंच—१११ (पंस)
पेरियेस्लाव्ल—६३
पेरिश्किन—३९६
पेरिस—२६९, ३७०, ३७४, ३७९, ३८०, ३८२, ३९०, ३९७, ४००, ४०६, ४१०, ४१२, ४१३, ५५४
"पेरिस कमून"—३९१, ५०४
पेरुन—७३, ७६, ८४ (देव)
पेरेइस्लाव—५२
पेरेया—८२
पेरेयास्लाव—८७
पेरेयास्लाव्ल—८२, २३३, २४६, २४७
पेरे-वोलोग—२८८ (प्राग्-वोल्गा)
पेरोफ़—३९३ (चित्रकार)
पेरोव्स्की—३७८, ३७९, ४३०, ४३१, ४५०, ४७३, ४७६, ५१८ (किजिल-ओर्दा)
पेर्फिलियेफ़—२४१, ५२५ (पेर्फिलेफ)
पेर्म—१००, ५०३
पेर्शिन—५१८
पेलेपेलिज़िन—११३
पेलोव्सी—८६
पेशावर—१९३, ४४७, ४६०
पेस्त—६, २३ (बुदापेस्त), २४
पेस्तेल—३७३, ३७५, ३७६, ३८२
पेस्पेलोफ़—५२५
पैंजा—२६२
पैतलिन—२२७
पैगम्बर—१२३
पैमनार—१९३
पोचकर—५३७
पोतोम्किन" (युद्धपोत)—४००
पोनोमारेफ़—५२५
पोप—१०, २४ (ग्रेगरी), १०१
पोयार्कोफ़—२३९, २४०
पोर्ट आर्थर—३९७, ३९८, ४००
पोर्ट्समथ—४०० (-संधि), ४०६
पोल—५३, १९०, २१९, २३२, २३४, २४०, ३१७, ३७७
पोलकसाक—३१७
पोलंद—३, १०, ३६, ३८, ५३, ८४, ९२, १००, १०९, २१८, २२७, २३३, २५९, २७२, ३६७, ३७०, ३९९, ४०२, ४०५, ४१३
पोलाद-तेमूर—३१५
पोलेयान—८३
पोलेत्स—८२
पोलोत्स्क—८८
पोलोत्स्की—२४१
पोलोव्सी—८७, ८९, ९०
पोलोविना—९४
पोल्जुनोफ़—२६७
पोल्तरोत्स्की—५१८, ५२४, ५२५
पोल्तावा—२५०, २५२
"पोल्यार्नया ज्वेज्दा" (ध्रुव-तारा)—३८२
पोशारोफ़ (लेफ्टनेंट)—४८६
प्दयाचिये—२२८ (निम्न लेखक)
प्योत्र अलेक्सियेफ़—३९१
"प्रतिनिध-सदन"—५१३ (सोवियत)
प्रशांत—३७२, ३७४, ३८१, ३९०
प्रशांत-महासागर—२५२, २७२, ३९७
प्रशासन-संस्था—३७३
(देखो त्यनयाङ्मा)
"प्राव्दा" (अधिकार, सत्य)—८५, ४१०, ५०४, ५०५, ५०६ (बोल्शेविक पत्र), ५०८
प्रासादी क्रांति—२५५
प्राहा—४०५, ४०६ (प्राग)
"प्रकाज़ी"—२२८
प्रिस्तोफ—३४० (किशिन्स्की), ३६१
प्रुथ—२५० (नदी)
प्रुशिया—२५८, २५९, २६०, ३५४, ३६५, ३६७ (जर्मनी), ३६८, ३७४, ३७९, ३८०
प्रेयोब्रजेन्स्कोये—२४१, २४६, २४९
प्रोक्रोपी—२२३
प्रोदुगोल—४०८
प्रोदमेत—४०८
प्रोद्रूद सेंडीकेट—४०९
प्रोलेतारी—५५२ (-सर्वहारा)
प्र्जेमिस्ल—४१३
प्र्झेवाल्स्की—२९४, ५३७, ५३८
प्र्याज्नुखा—३३३
प्र्याज्नोये ओजेरो—३३३
प्लातेन—२३
प्लातोन—१०४
प्लेखानोफ़—३९३, ३९७, ४०३
प्लेग (महामारी)—३८
प्लेश्चेयेफ़—२२७, २२८
प्सादूनिक—९१ (नगरपाल)
प्सोल्स्की प्रिकाज—२२८
प्स्कोविच—३७९
प्स्कोफ—३९, ९६, ९७, १०६, १०९, २१८, २२५, २२८, २२९, २६७ (-प्रासाद), ४१७, ४१९
प्स्खालिस—१३५
फग्-पा—८९, १३ (लिच्छवी लामा), १५ (फग्स्-पा=आर्य)

फगफूर—३७ (भगपुत्र, देवपुत्र)
फजल—४५५
फजलान—७४
फज्लल्ला—१४५
फतेह अली—४९० (काजार)
"फतेहनामा-कुचुक"—६०
फना (खान)—४७९
फरगाना—१६७, १७६, १८०, २८०, २९६, २९८, ३०४, ३०५, ३०७, ३३०, ३८८, ४१५, ४२०, ४५१, ५१८, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५३५, ५३६, ५४४, ५४६
"फरहाद-शीरीं"—१६१
फराखर—४६२
फरास—२०८ (झाऊ), ४२९ (सक्सौल), ४८८
फरिश—४८१
फरीदुद्दीन—१४७
फरीदून मिर्जा—४७६
फर्वरी क्रांति—५०३, ५११, ५१७, ५१९, ५२६, ५३२
फलगर—४५७, ४५८
फ़ान—४५८
"फानी"—१६१ (नामनाम)
फागनका—२४
फ़ारसी—१५४, ५३९
फ़ाराब—४५७, ४५८
फितनियेफ—४७७
फ़िन (सुओमी)—७१, १००, ५४८
फ़िनलन्द—७४, ७५, ९४, ११६, २२३, २२५ (-खाड़ी), २५०, २५१, ३६७, ३९९, ४०२, ४०५, (=फिनलैंड), ४०४, ५०७
फिनो-द्रविड—५१६, ५२८, ५४१, ५४८
फिलस्तीन—९५, ३८०, ३८४, ४११
फिलारेत—२१७, २२४
फिलिपोफ—१०४
फिशर—३१६
फीरोज—१४०, १४१
फीरोजा—१७०
फुजैल मख्दूम—५४४-४६ (बासमची)
फुनछोक्—३३४
फ़-तॆ—३३६
फ़ूसङ—१८१
फ़ेदेरोफ़—५३२, ५३३
फेदोतोवा—३९३ (अभिनेत्री)
फेदोर—६४
फैजाबाद—४२५, ४५९, ४६२
फोक—७३
फोनविज़िन—२६६
फोलबौम—५३१, ५३७
फ्योदोरोफ़—२५६
फ्योदोसिया—३६५, ४१३
फ्योरावेन्ते—१०५
फ्राकेन्बर्ग (मेजर)—४६५
फ्रांस—२३, ३९, ८४, १६०, २५९, २६३, २६९, ३६६, ३८०, ३८२, ३८८, ३९०, ३९६, ३९७, ४०६, ४०७, ४०८, ४१४, ५५०
फ्रांस-बेकोफ—२४२
फ्रांसिस—३६६ (१)
फ्रांसिस्कन—१३५
फ्रीडलैंड—३६७
फ्रुंजे—४०५, ४१४, ५०८, ५३३ (पिश्पेक)
फ्रेंच—२४, १९१, २२२, ३७३ (भाषा), ३८९, ३९४, ५५२
फ्रेंच-क्रांति—१६५, २६७, २६८, २७०, ३६५, ३७०, ३७३
"फ्रेंच महामारी"—२६७
फ्रेडरिक—२४, २५८, २६०, २६८-६९ (२)
फ्रोलोफ़—५२५
फ्योदोर—२२, ११५, २०६, २१७, २१८, २१९, २८१, ३१७, ३२५ (जार)
फ्लोरेन्स—३८०
बइकेचर—१३३
बकलान—१७९
बकसी—१६२
बकुनिन—३९१
बक्सी (भिक्षु)—१६२, ३२६
बक्सीगिर—३३४
बखरिन—५१५ (उज्बेक)
बखसमबी—१६५ (मगत)
बख्तियार—१६५
बख्तियारी—५५४
बगचतोफ़—४६५
बगजले—६४
बगदाद—३१, ५६, १३२, १४५, ५५४
बगाबाद—१९९, २०१
बगदान—२३१
बगरातियोन—३६६, ३६८, ३६९
बगोल्युबोव्स्की—९१
बतपकरा—४१५ (बत-बकरा), ५३२
बतरेक—५१४ (उज़्बेक)
बतलान—५६
बतानियेफ़—४५०
बतुमसी—३३४
बतूता—३८, १३५
बत्का—२३६
बथोरी—१०९
बदख्शां—५६, १२१, १३१, १५०, १६६, १७७, १७९, १८१, १९१, १९४, २९७, ३०४, ३१०, ३१३, ४६०, ४६१
बनीकन्त—१४७
बन्दर—१०३, ३६८
बंदूक—१७७

बबायेफ़—५५१
बयन्तु—१३३
बयात्—५४७ (तुर्कमान)
बरका—२०, १४१, १९६, (बेरेका)
बरका-सराय—२१ (सुवर्ण-ओर्दू)
बरकियारोक—६१
बरकुल—१३३, २९६
बरगंडी—१३५
बरगुत—३२१
बरचिन—४१
बरज़ाब—५३९ (नदी)
बरदआ—७९
बरदंजा—२११
बरदी—४१, ४२ (बेग)
बरनूली—२६५
बरन्दा—१११
बरमक—५१५ (उज़्बेक), ५१६
बरमा—३१७
बरलस—१४८, ३१३, ५१४ (उज़्बेक)
बरसावा (पोलद)—३६७
बराबिन—३१७, ३१९, ३४७
बरातिन्स्की—३८२
बरेकेज़ाम—१०२
बर्कुस—५२५
बर्गर—९५
बर्ज़ानोफ़—५५१, ५५४
बर्नोल—२६७, ५३०
बर्मा—३, ९ (मी-यन), १०, १३, १४
बर्लाक तेमूर—१६६
बर्लिन—२५८, ३६७, ४०७ (कांग्रेस), ४११, ४९६
बलकान—१०१, १५९ (यूरोप)
बलकाबी किला—५४४
बलकाश—४६, १२७, २६८, २८४, २९६, ३३१, ३४१, ३५२, ३८९, ५३५ (=बलखाश)
बलख—१३, ५६, १२१, १३५, १४३, १४४, १४९, १५०, १५१, १७१, १७६, १८१, १८६, १८७, १९१, १९४, २११, ४४२, ४५१, ४६० (वली), ५६१
बलखान—१९९, २०९, ४६८ (पहाड़ी), ४८०
बलगली—५१६ (उज़्बेक)
बलजुवान—५२७, ५४३
बलदुमाज—१९९
बलबर्स—१९९
बलम्बर—७२
बलाकिरेफ—३९३ (संगीतकार)
बलाचिया—३६७
बलांजर—७४ (दक्षिणी दागिस्तान)
बलिकची—४३६
बलिकली—५१६ (उज़्बेक)
बलिंजक—५०
बलोग्दा—४०६
बलोचिस्तान—१५० (=बिलोचिस्तान)
बलूची—१४९
बलोत्निकोफ़—२२०, २२१
बल्कान—३७३, ३८६, ४०७, ४११, ४१२, ४९५
बल्जुवान—४५९
बल्तासदिर—४८१
बल्ती-बालूर—३११
बल्शोइ तियात्र—३८५ (महा-नाट्यशाला)
बशीकुजी—२७५
बश्किर—१८, २६२, ३१५, ३१६, ३२१
बसकाकी—९३
बसमानोफ़—२१९
बसलक—५१४ (उज़्बेक)
बसुन—३३४
बहमनी—१५७
बहराम अली—४४१
बहरैन—१०३, १०४
बहाउद्दीन—१२६, १२७
बहादुर—१८७, २३४
बहावलपुर—१९४
बंगाल—१०, १३
बंदे-हरम—१९२
बाइतक—२९७
बाइबल—८५
बेगीजान—४४३ (शाह मुराद)
बाइबेगिस—३१९
बाइलियर—४८४
बाइसून—४५९, ५२७, ५४४
बाइ—३१०
बाइ तुर्सुनोफ़—५३१
बाउलिन—३५७
बाकिन—५३७
बाकी मुहम्मद—१८६
बाकू—१०३, २५१, ३७१, ४१२, ४१६, ४६५, ५५०, ५५४
बाक्सर (-विद्रोह)—३९८
बागी—४९८ (उपत्यका)
बागुर्लू—५१६ (उज़्बेक)
बागेनौ—१६९
बाच्तेयारोफ़—२३९
बाज़नोफ़—२६७
बातुर—२३०, ४६८ (बातिर)
बातुर खुङ-थैची—२८२ (खुङ-थैची), ३२५ (थैची)
बातू—५ (छिङ-गिस्-पौत्र), ६, १८, २०, ३२, ४९, ६३, ९२, ९५, १००, १२६, १२७, १२८, १४५, १६५, २८६, ३१५, ३७७
बातूम—३८७
बातूसराय—२१, २६, २७, २९, ३१, ३७
बादगी—१९२
बाबाकुल—३१५

बापू—२३६.
बाबर—६८, १०६, १४७, १५४, १५८ (-मिर्जा), १५९, १६०, १६३, १६५, १६७, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७७, १७९, १८३, ३०२, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३१३, ४२१, ४३७, ४६२
"बाबरनामा"—१७२
बाबा—३२, १४५, १८० (खान, जान), २७८ (-सुल्तान), ४५७ (-बेक)
बाबुश्किन—५१८, ५२२
बाबुल—१०३
बामियान—४७, ४८, १२६, १९४, ४६१
बामिर—४९६
बामे-दुनिया—२१०
बाय—५३१ (सामंत)
बायजीद—१७३, ३८७
बायन—९, ४७, १३२ (खान), १३६ (-कुल्ली,-सुल्दूज), २१
बायर—३५ (अमीर), ४३, ५१, ५२ (सामंत), ८५, १०४, १०६, १०९, २१९, २२०, २२४
बारकुस—५२५
बाराबिन—३१६
बारोन—५०३ (बैरन)
बार्नेस—४५०, ४४८ (कप्तान) ४७३, ४९०
बालक्लोफ़—१०४
बालिकची—४३४, ४३५ (बालीकिची)
बालिगू—१३०
बालुका वृष्टि—२९३, २९६
बालुका-समुद्र—२९४
बालूर—३११ (बाल्ती)
बाल्तिक—७४, ७५, ८४, ९४, १००, १०८, ११६, २२५, २३४, २४८, २६५, ३९९, ४१२, ४१३, ५०८
बाश्किर—२१ (तातार), २३, ३१, ५६, १०७, ११०, २३४ (तुर्क), २३५, २३७, २५०, २६१, २८४, ३१७, ३२४, ३३९, ३४३, ३४४, ३४५, ३४७, ३४९, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५, ३५७, ३६८, ३७२, ३७८, ४०१, ५१२, ५४८ (तारतार (भाषा, बाश्किर)
बासफोरस—४११
बासमची—५२३ (डाकू), ५२७, ५४२, ५४३, ५५०
बाह्य-धर्मी—३४० (रूसी)
बाह्य-मंगोलिया—३२१, ३२४
बाह्य राज्य विशेषाधिकार—५५४
बितूत—६३
बिल्कोविच—४५०
बिन सब्बाह—१३९ (हसन-)
बिपुरी—२५१
बिरकुलक—५१६ (उज्बेक)
बिरलस—१३६, १३७ (तेमूर-वंश), १४८ (बरलस)
बिलकेलिक—५१५ (उज्बेक,
बिलिकची—२९
बिलुक-अकची—१८६
बिशअक्ति—४८१, ४८४
बिशकंद—१७५
बिशचगन—४८१
बिशबालिग—१३५, ५३०
बिशबाला—५१५ (उज्बेक)
बिस्मार्क—३९०, ४०६
बीजने—५४८ (तुर्कमान)
बीतेइ—३३७,
बीदर—१०१, १०३
बीनाई—१७५
बीनीतर—७२
बीबी खानम्—१५४
बीबीजेह—२०३
बीरेन—२५७
बुआल—२८ (मोवाल)
बुइदश—२७८
बुइमोत—५१४ (उज्बेक)
बुकन्द—४८१ (पहाड़ी)
बुका-बोशा—१२५
बुकान—४८० (पर्वत)
बुकेइ—३५७, ५३२ (खानोफ़)
बुकइयेफ—३५८
बुकोबिच चेर्कास्की—४६५ (राजुल)
बुखारा—२६, ४९, ५४, ५५, ११०, ११२, ११३, ११४, ११५, १२२ (-विद्रोह), १२४, १२९, १३२, १३४, १३५, १३७, १४३, १५४, १५८, १६३, १६७, १६९, १७४, १७६, १७८, १८०, १८१, १८५, १८८, १९०, २०१, २०३, २०४, २०९, २१०, २११, २२७, २७१, २७८, ३०७, ३१५, ३१८, ३१९, ३२५, ३३०, ३३६, ३५३, ३५६, ३७८, ३७९, ३८७, ४२१, ४२२, ४२४. ४२६, ४२७, ४२८, ४३२, ४४०, ४४१, ४४३, ४५३, ४५४, ४५५, ४६४, ४६५, ४६६, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७५, ४७६, ४८४, ४८९, ४९०, ४९३, ४९४, ४९८, ४९९, ५१७, ५१८, ५१९ (नवीन), ५२५ (अमीराका भागना), ५२७ (पूर्वी), ५३५, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५५०, ५५१,

५५२, ५५४
बुखारेस्त—३६७, ३७१, ४११ (-संधि)
बुखोलूज—३३३
बुग—७८ (नदी), ८४, २६०, २६३
बुगई—३१९
बुगदैली—४८३
बुगान—२७९
बुज़ान—१०२, १३५, ५१५ (-बूज़न उज़्बेक)
बुजुगा—२००
बुद्-जेक—६
बुदग्—१६६, १६७ (बूदग)
बुम्सक—२९७
बरन्दक—१५८
बुरलक—६७
बुराक—१५६ (खान), १६५
बुरी—१२७, १३०, १३३, २९७ (-बाशी)
बुरुत—२७८, ३३०, ३३२ (काले किर्गिज), ३४७ (जंगली किर्गिज), ३४८, ३५८ (करा-किर्गिज), ३४९, ३६०, ४२१
बुर्जअली—१४०
बुर्ते-फूजिन्—१८
बुर्यत (मगोल)—२३८, २७२, ४०१, ५४८
बुल्युं त्युबे—५३०
बुर्कि—३४५, ३४६, ३५३ (=बुराक)
बुर्सबोल—३२४
बुल्दुम—१६८
बुलवा—२३०
बुलालगर—१६६
बुल्गार—३७, ४३, ५१, ५६, ५९ (कज़ाक), ८२, ८३, ९२
बुल्गारिया—२७ (बुल्गारी), ८३, २८४, ३८६, ४११, ४१२
बुश्तू खान—३२८ (बोधिसत्व राजा)
बुस्साग—४८४
बूअली सेना—१९२
बूकजली—५१६ (उज़्बेक)
बूकेइ—३४९
बूज़ाची—५१५ (उज़्बेक)
बूजेजी (तुर्कमान)—४७१
बूतुलिन—३५०
बूरब—३६६, ३७०
बूरीची—२०६
बूरुत (किर्गिज)—३३७
बूरुज ओगलान—३०५
बूर्ज्वा (पूजीवादी)—४०५, ५२१, ५२५
बूर्ज्वाज़ी—३७०, ५२१, ५२५
बेइनेग्स—२८९
बेइसखान—२९९
बेउलिन—३५५, ३५६
बेक—३२४, ४५३, ४५७ (ठाकुर)
बेकतिली—५४७ (तुर्कमान)
बेक पुलाद—४७०
बेकेचेर—१३२
बेकोबिच—२५१, ३५१, ४६४-६६, ४८४ (राजुल)
बेग—५५१, ५५३ (=राज्यपाल)
बेगचिक—१६७
बेगलरबेग—२०९
बेग-तेमूर—१३०
बेगफुलात—११३
बेगातकिरी—१७८
बेगीखान—१९४
"बेचारी लीजा"—२६६
बेतलहेम—३८०
बेताश—५१५ (उज़्बेक)
बेर्दिलोफ—५१९
बेन्देसेन—४९५
बेरनु..—५१८ (उज़्बेक)
बेरेकेइ गुरयानी—२९७
बेगातग्वोजा—५५
बेरिंग—२४०, २५६, २७२, ३७३
बेरियोज़ोफ़—२५६ (साइबेरिया)
बेरेक—८, २२, २६, २८, १२८ (-खान), १४१
बेरेकचर—१२९, १३०
बेरेकसराय—५१, ५५
बेरेज़िना—३७०
बेरेदक—१६८
बेरेफ़्किन (जेनरल)—४८०, ४८४, ४८५
बेरेस्त—२३२
बेरोई—५१५ (उज़्बेक)
बेर्ग—५२५
बेर्देव्स्की—५०६ (एडमिरल)
बेर्देस्कोइ—३५१
बेर्दीकुलियेफ—५४९
बेर्बे—७७
बेल—२९१
बेला—२३
बेलिन्स्की—३८२, ३८३ (कवि)
"बेलीकी गमुदार"—२२५, २२९
बेलो—(=श्वेत)
बलोअस्त्रोफ—५०४
बेलोगोर्स्की—११५
बेलोजेरोफ—४०९
बेलोरुसिया—२३०, २६०, ३७७, ५१२
बेलोरूसी—९८, १००, २३४, २५९
बेल्जियन—३९४
बेल्लो—२९३

बलोवद्स्क—५३७
बसकाउन-द्रोणी—३१०
बेसराबिया—३६७, ३६८
बेस्तुजेफ-र्‍यूमिन—३७६
बेहज़ाद—१६२, १७२
बैकाल—२३८, २७१, २७२, ३२१, ५३०
बैचगिर—४८४
बैदू—१४४
बैमनतंती—४८२
बैराम अली—१५० (मेर्व), ५५१
बैसुंकर—१५६, १५७, १६२
बोइत्कोविच—५५४
बोकल—५२०
बोकल-बेर्दगन—१२०
बोग—७२
बोगुन—२३२
बोगोल्युबोवो—९१ (भगवत्-प्रिय)
बोग्दाउला—३२५
बोतपाई—५३० (खित्तन)
बोदी तायन—३२४
बोनद—१०४
बोयकोफ—३१७
बोयन्-थू—१५, ३३
बोरक—८, ६६, ६७, ६८, ६९, १४३
बोरकचीन—२९
बोरकचिन खातून—२६
बोरका—१८०
बोराक—१२९, १३०, १३१, १५८, १६७
बोराविन—४६५ (इतालियन)
बोरिस—८४, ११५, २२६
"बोरिस गदुनोफ"—३८४
बोरोदिन—३९३ (संगीतकार)
बोरौदिनो—३७३
बोरोव मेयेदोर्फ—४४५
बोरोलदाईताज—४३२
बोरोशिलोफ—४०३, ४०६, ५०८
बोर्गा—३६७
बोलोस्त (पर्गना)—३७०
बोल्गार—६, १८, २०, ७३
बोल्गारी—१६६
बोल्शेविक (बहुमतीय)—१८५, ३९७, ३९८, ३९९, ४०३, ४०४, ४०५, ४१३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५१८, ५१९, ५२०, ५३८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५३, ५५५
बोल्शेविक-कमीटी—४१६
बोल्शेविक क्रान्ति—२५०, २५२, ३५८, ३६१, ३८५, ३९२, ३९६, ४०१, ४१५, ४१७, ४३९, ४४२, ४५३, ४७३, ४८६, ४९७, ५०१, ५०६, ५०७ (तैयारियां), ५०९, ५१२, ५१७ (तुर्किस्तानमें), ५२१, ५३२, ५३५, ५३६
बोलशेविक नेता—५०८
बोल्शेविक पार्टी—४०५, ४१७, ५०६, ५०८, ५२१ (-पार्टी), ५२६
बोशोक्तू (बुश्तू)—३२८
बोस—२५४, ३९६ (जगदीशचंद्र)
बोसनिया—३८६, ४०७, ४०८, ४११
बोसफोरस—४०७
"बोस्ताने मुजक्करीन"—१३८
"बोस्तां"—१४३
बोस्ताम—१७६, २०९
बौद्ध—३०, ३४, १२७, १३५, २९६, ३०० (-कल्मक), ३२४, ३२८
बौद्ध-धर्म—८, १५, २०, ३१, ४१ (मंदिर), १३३, १३५, १३८ (संत), १४५, ३२७, ३२८, ३३३ (-बिहार), ३४६
ब्यंलोओज़ेरो—७५ (श्वेत सरोवर)
ब्योर्क—४०६
ब्रन्सविक—२५७
ब्रांडेनबर्ग—२६०
ब्रातिस्लावा—३९
ब्रियास्गा—१११, ११४
ब्रिटिश चैनल—३६६ (-चेनेल) ३८९, ५५५
ब्रूलोफ—३८४
ब्रेस्त—२३०
ब्रेस्त-लितोव्स्क—४१३
"ब्रेस्ला"—६, ४१३
ब्रौनो—३६६
ब्यांस्क—२१७
ब्लांकेननागेल (मेजर)—४६९
ब्लित्ज़क्रीग—२५८
भागीरथ—१५२
भारत—३५, ३७, १५०, १५३, १५७, १६३, १७४, २७१, ३५१, ३५७, ३६६, ३८४, ३८७, ३९६, ४२६, ४४४, ४६७, ४७४, ४९७, ४९८, ५२१, ५२८, ५३०, ५४२
भारतीय—७४, २२६, २२७, २९५, ३३१, ३७४, ४१२, ४३३, ४६५ (व्यापारी)
भाषातत्व—५२८
भिक्षु—१६२
भूमध्यसागर—२६९, ३८६, ४१३
"भूमि-घोषणा"—५१०
भौगोलिक अभियान—३७२
मंगोल—३१९ (पूर्वी-)
मई-दिवस—३९७
मकदूनिया—४०७
मकरियेफ़—४४६
मकरी—१०७
मक्का—१०४, १४३, १८०,

१८५, २०३, २०७, ३५८, ४३४, ४४९, ४५२
मखचकला—७४
मखदूम—१५३, ४९२ (कुल्ली, तेक्का)
मखवेचंको—१९२
"मख्जनुल्-असरार"—१६१
मगयार — २१, २२ २४ (हुंगेरियन), ३७९, ५४८
मगरदी—१४७
मग्ज—२०९
मङ किरमान—६१
मङ किशलक—१३०, १७८ (मङगिशलक)
मङ-गू—६, ७, २१, २९, १२७, १२९, १४७ (खान), २९० (चिपटी नाकवाला)
मङ-गू तेमूर—२९, १३०, १४३
"मजदूर इत्तिफाक"—५१८ (मजदूर लीग)
मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियत—४०१, ४०३
"मजनूं-लैला"—१६१
मजार—५४६ (गाव)
मजीदुद्दीन—१२६
मतनियाज—४८६ (दीवानबेगी)
मतमुराद—४८५ (दीवानबेगी)
"मत्लउस्-सादेन"—१५६,१५७
"मत्लउल-अनवार"—१६१
मत्सेन्स्क—६८
मत्स्य-न्याय—४०९
मथुरा—१५१
मदरसा—१७०, १९३
"मदरसा-खुसरविया"—१६१
"मदरसा निज़ामिया"—१६१
"मदरसा-शेरदिल"—१९४
मदलीखान—५४०
मदलेन—५१६, ५४८
मदिरावाद—१३७
मदीना—१८९, १९०
मध्य-एसिया—१०३, ४०५, ५११
मध्य-ओर्दू—३३२, ३३७, ३४३, ३४७
मनाप—५३७ (सरदार)
मनाहृदान—१६५
मनोमाख—७, १०५
मन्तज़ोला—१३५
मन्लूक—१४०, १४१, १५२
ममाइ—५०, ५१, ९८ (खान)
मरकित—१८
मरगा—१४१
मरगिनान—१७६
मराग-जगात—२८
मरागियान—४१
मरिगोरोफ—३३३
मरियतबुर्ग—२४९
मरिया—११५ (नगाया), २८४
मरीना—२१९, २२५
मरुन्स्क—३८८
मार्कोज़ोफ़ (कर्नल)—४८०, ४८३
मर्गिलान—१७६, ३०५, ३०६, ४२१, ४२४, ४२८, ४३१, ४३६, ४३७, ४४८, ४२०, ५१८, ५२० (मर्गिलान)
मलदाविया—६
मलिक—३६
मलिक अशरफ—३९, ४०, ४१
मशहद—१५८ (खुरासान), १७३, १७६, १७७, १७८, १८१, १८२, १८७, १९१, २०३, २११, ४४२, ४४४, ४६१, ४६६, ४७६, ४९१
मशहदी—१४५
मसऊदबेग—१३०, १३२ (-बेग), १५०
मसऊदी—७३
मसद—५१४ (उज्बेक)
मसूरी—४६२, ४९९
मसूरी झील—४१३
मसोपोतामिया — ५, ४११ (इराक)
मस्कत—१०४
मस्क्वा—९० (मास्को)
मस्ची—४८२
मस्जिद—१८३
"मस्नवी"—१४३ (कथाकाव्य)
महमतकुल — ११०, ११२, ११३, ११४, ३१८
महमूद—६९, १२२, १२३, १९२, २७५
महमूद काश्गरी—५४७
महमूद—१६८-६९ (खान), १९१, २११, २१६, (-बी अतालीक), २७७ (मिर्जा)
महमूद मिर्जा—२७७
महम्मद—(देखो मुहम्मद, मोहम्मद)
महरम—४३४ (एक अफसर)
महाओर्दू—३४३, ३४९, ४२५
महाकेबिन—३३१
महाखान—१२१
महा-गाड़ी—३ (-नगर)
महाचीन—१०३
महादूत—३२
महानोगाई—३३९
महासंघराज—३५, ११६, २२९
महराजुल—३४, ७७, ९३, ९६, ९७
महासागर—३७२
महीने—१९९
मंगजेमा—२३८
मंगलइ सूयाह—३०२
मंगला—२९५
मंगलाई-सूबे—२९५, २९६
मंगलिक—३३८, ३४६
मंगित—१६७, १६८, १६९, १८५, १९२, १९४, २०९, २७९, २८९, २९१, ४२०, ४७१ (तुर्कमान), ४३९

(वंश), ४८४, ५१६ (औगुत, उज्बेक), ५२७ (=मंगीत)
मंगिशलक—१६८ (कास्पियन तट), १८५, १९९, २०३, २०५, २०७, २०९, ४६९ (तुर्कमान), ४७२, ४८१, ४८९ (=मंकिशलक)
मंगुत—२८७, २९१, ३१८
मंगुत (मंगित)—५१४ (करशी बुखारामें)
मंगुश्लक (मंगिश्लक)—३५८
मंगू तेमर—३१५ (मङ-गू-तेमूर)
मंगोल — ३ (-खाकान), १३ (भाषा), ३१, ९२, १००, ११४, १२९, १४१, १४२, १५४, १९६, २१०, २२७, २६३, २७३, ३००, ३१३, ३१६, ३४० (तोर्गुत), ५१७, ५२९, ५३०, ५४१, ५४८
"मंगोल-उत्निगुचा"—१३ (तोपची)
मंगोलायित—२८४, ३०५, ४८६, ५२८, ५३९
मंगोलिया—१२४, १४५, २३८, ३२२, ५१२ (बाह्य), ५३०
मंगोलिस्तान—२९५
मंगोलिस्तानी—१४९
मंचू (छिङ)—३२४, ३२९, ३३७, ३८९
मंचूरिया—३९७, ४०२
मंचूरी—३८९
मदारिन—२५३ (अफसर)
मदोफ—२२७
मंसी—२३५
मंसूर—१६९
माखिम—११०
मागियान—१८७, ४५७, ४५८
माचा—४५७, ४५८
माचीन—१३०
माज़न्दरान—६३ (ईरान), १०३, १४५, १५४, १५७,
माजूर—४६०
मानी—१६२
मामियान—१८७
मार—३१५
मारमोरा—३८६ (समुद्र)
मारी—१०७, २२१, २२४, २३४, २३७, ४०१
मारीइन्स्क—३६५
मार्कोनी—३९६
मार्को पोलो—७, १०, १२, १३, ४६, ४८, ६६, १२५, ४६२
मार्क्स—३७९, ३८६, ३९१, ३९३ (कार्ल मार्क्स), ३९५
मार्क्सवाद—३८७, ३९३, ५०७
"मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"—४११
मार्क्सवादी—४१०
"मार्कोपोलोकी यात्रायें"—११
मार्शल-ला—४१७
"माली तियात्र"—३८५
माल्ता—२६९, २७०
माल्ता-धार्मिक-संगठन—२६९
मावरा-उन्-नह्र—१२१ (=अन्तर्वेद)
मासूम—१९४
मास्को—६, २२ (मकस), २६, ३५, ४३, ५१ (-ध्वंस), ५२, ५३, ६१, ९१, ९२, ९६, ९७, १०१, १०५, ११४, १५१, २०५, २१७, २१८, २१९, २२०, २२२, २२४, २३३, २३७, २४०, २४१, २४६, २४७, २४८, २४९, २५२, २६६, २८९, ३१७, ३१८, ३२५, ३२७, ३३८, ३६५, ३६६, ३६८, ३६९, ३७३, ३७७, ३८३, ३८५, ३८९, ३९८, ३९९, ४१६, ४४४, ४९३, ५०७, ५०८, ५१०, ५११, ५३३, ५५०, ५५४ (मस्क्वा, मास्क्वा)
मास्को राजुल—३४
मास्को-विजय—२२
मास्क्वा—१०१ (नदी), २२१
मिकादो—१४०
मिखाइल—३४, ९६, ९७, १०२, १३५, १८८, २२४, ४०५, ४१९, ४८० (महाराजुल)
मिखाइल रोमानोफ—४१९
मिखाइलोफ—२४८, ५२५
मिखाइलोव्स्कया—३८३
मिखाइलोव्स्की—३९२, ४८८ (खाड़ी)
मिङ-वंश—१६ (=प्रकाश)
मितन—५१६ (उज्बेक)
मित्र-शक्तियां—५०३, ५०६
मित्रासोफ़—३४१
मितिलुन्स्कया—३८५
मिनुसिन्स्की—३९५
मिन्जान—४६२
मिन्स्क—३९५
"मिन्हाजुल्मज़क्करीन"—१३८
मियानकुल—१६३, १७०, १७६, १८२
"मिरातुल्-मफतूह"—१४५
मिर्जा—११३, १६५, २८७
मिर्जा अस्कन्दर—२९८
मिर्जा खोजा—५५३
मिर्जा रहीम—५४३ (ईशान औलिया)
मिर्जा शम्स—४२५
मिर्जा शहबाई (बुखारा)—५२६
मिल—३६५
"मिलियनी"—११ (=करोड़ी)
मिलोरदोजिच—३७५
मिलोस्लाव्स्की—२२७
मिल्की खिराज—४५३
मिल्तेक—५१५ (उज़्बेक)
मिल्युकोफ—४१८

मिस्र—३९, १०३, १३०, १४०, १४१, १४२, १४४, १४५, १५२, २६९, ४११
मिग्—१९१,५१४ (उज़्बेक), ५१६, ४२१ (कबीला)
मिं ग् लक—३००
"मिंग्बाशी"—१४८, ४२८ (वजीर)
मिंग् बुलाक—४८०, ४८१, ४८२
मीनारकलाँ—४५३
मीनिन—२२४
मीर अरब—१८३, १९३
मीरअली—१५४ (तब्रेजी), १६२ (मजनू)
मीर अलीशेख—१८१
मीर आखुर—५५२, ५५३
मीरखोजन्द—१३६
मीर नजीम—१७५, १७६
मीरशब (कोतवाल)—४४९
मीरांशाह—५६ (तेमूर-पुत्र), ६१, ६६, १५०, १५९
मुखानोफ़—५४२
मुकीम—१९१ (खान), १९२
"मुक्ति-संघ"—३७३
मुगजर—३५५
मुगल—१४८, ३०५, ३११, ३१३
मुगल-साम्राज्य—१८७
मुगोल—५१५ (उज़्बेक)
मुगोलिस्तान—४९, ५५, ५६, ६९, १२१, १३४, १३७, १४८, १५५, १६६, १६८, १७१, १७३ ,१७४, १७५, १७७, २७५, २७७, २७८, २९३, २९८, ३०५, ३०७, ३०८ (सप्तनद)
मुगोलिस्तानी—१७१
मुङ-खे—२१, २६, १२७, १२८ (कआन), १३९
मुज़फ्फर—१७२, ४३१, ४३२ (अमीर, बुखारा)
मुजफ्फरी—१४७, १५० (-वंश)
मुजार्त—३३६ (डांड़ा)
मुजाहिद—४४३ (धर्मयोद्धा)
मुद्रा-स्फीति—५०६
मुबारक—८, ४८, ६६, १२९ (शाह)
मरगाब—१४१, १७२, २०३, ४७७, ४८८
मुरमो—८२
मुरशिकन—२८८
मुराद—४६०, ४८९ (अमीर)
मुराबिन—४६७
मुरावयेफ—२७२, ३७३, ३७४
मुरावेफ—३७४, ३८०, ३८१, ३८८, ३८९, ३९०, ४७२
मुराव्योफ-अपोस्तोल—३७५, ३७६
मुरीद—४३, ३७७ (-वाद)
मुर्गाब—४४१, ४८९, ४९८ (बाला), ४९१
मुर्जा—५३ (मिर्जा), २८७
मुर्तुजा—३१५, ३१६
मुलर—३१६
मुल्तान—७, १८, १४४, १५१
मुल्ला कारी—४९५
मुल्ला नीरक—१८३
मुल्ला मुशफिकी—१८३
मुल्ला शम्शुद्दीन—१२२
मुशरिफुद्दीन—१४३
मुसलमान—३०
"मुसलमान कमकर संघ"—५२३
मुसलमानकुल चूलाक (लुंज)—४२७, ८२९
मुसिकी यङ-कि—५६
मुसैबी—१३५
मुस्तफा कमाल—५४३
मुस्तफा खान—१६५
मुस्तेर—५१६, ५२८
मुहम्मद—६९, १०३ (पैगम्बर), १२५ ,१३५, १३६, १४२, १४४, १४५, १५९ (२), १६१, १६६, १६७, १६८, १९०, १९१, २०१, २०४, २०६ (देखो मुहम्मद भी)
मुहम्मद अमीन—४६९ (ईनक), ४९० (खान)
मुहम्मद अली—३९४
मुहम्मद उसमान—११६
मुहम्मद किर्गिज—३१०, ३१२
मुहम्मद खान—६७
मुहम्मद गूरगान—३०६
मुहम्मद जहूर—४२३ (दीवान-बेगी)
मुहम्मद जौकी—१५६
मुहम्मद लर्खन—१६०
मुहम्मद तेमूर—१६९
मुहम्मद नियाजबी—४७१, ४८२ (दीवानबेगी)
मुहम्मद रजा बेक—४७१
मुहम्मद रजाबेक—४२३ (तुगाई) ४७१
मुहम्मद रहीम खान—४७१ (खीवा)
मुहम्मदशाह—३११, ४७४ (ईरान)
मुहम्मद शिकाबी—१६२
मुहम्मद शैबानी—१६३, १६५, १६७, १६८, १६९, १८०, १८३, १९७, २७७, ३०६, ३०७ (शाहीबेग)
मुहम्मद सालेह—१८३
मुहम्मद सुल्तान—५८
मुहम्मद हैदर—३०२
मुंगल नोगाई—२८६
मुंगा—१९७
मू-कुङ—२२७
मूजातिब—५५२
मूजार्त—३३१
मूजिक—२२८, ५३०, ५३१

मूमिन—५१५ (उज्बेक)
मूरक्राफ्ट—४६०, ४६२
"मूर्ख"—३९२
मूलर—१११, ३४५, ३५९ (मुलर भी)
मूसा—१५०
"मूसी"—४२५
"मृत आत्मायें"—३८४
"मृतक गृहके संस्मरण"—३९२
मेकआर्थर—१४०
मेक्नेल—४४९
मेक्सिको—४७३
मेगलान बुका—१४३
मेचनिकोफ़—३९६
मेजमिर—७३
मन्—१५३
मेन्दली—४८४
मेन्देलेयेफ—३९२
मेन्शेविक—३९७, ४००, ४०, ४१०, ४१६, ४१७, ५०५, ५०६, ५०९, ५१७, ५१९, ५२१, ५३८ (अल्पमतीय)
ममक—५०
मेमना—१९१, ४५१, ४८९
मेयाफरकिन—७
मेरकेंद—४३४
मरकुत—५१४ (उज्बेक)
मरेगन—३२१, ३२४
मरगास—१४२
मेरगुल—१३१
मेराउरिक—१२५
मरियां—७७, ९०
मर्कुलोफ़—५४४
मर्गलानी—१२६
मेर्व—१३, १३१, १५४, १६१, १६७, १७०, १७३, १७६, १८१, १८५, १८९, २०३, २०४, ३०९, ३८८, ४४०, ४४१, ४४२, ४४४, ४७३, ४७६, ४८९, ४९१, ४९२, ४९७, ४९९, ५००, ५४८, ५५०, ५५५
मेशकरी—३५५
मेश्केरियक—३५४
मेहतर—४३४, ४३५, ४६०, ४७२ (वित्त-मंत्री), ४७५ ४७७, ४७८
मेहमानखाना—५४० (सामूहिक घर)
मेहरबान खानम—१७७
मेहरानरूद—४०
मेहीन—१९९
मेंगली गिराई—१००
मेंगू—८
मेंशिकोफ—२५५, २५६
मैमना—१९४
मैमाचेन—२५६, २५७
मैलबाश—३२१, ३३९
मोइसेचेंको—३९३
मोक्सी—४१
मोगक—१८३
मोगल—३१२
मोगाकपुल—१७०
मोगिलेफ—५०३
मोजाइस्क—५२, ९७, २२१, ३६९
मोजेर—४९४
मोतिनान—५४६ (गांव)
मोतुगान—१२६
मोन्तेनिग्रो—३८६, ४११
मोन्तेस्को—२५९
"मोरगू"—२५४
मोरान—१३३
मोराविया—२३
मोरोजोज—२२६, २२७, २२८, ३७६, ३९३
मोर्दवी—३७२
मोर्दावी—९०, ९२
मोर्द्वा—१०७
मोर्द्विन—२२, २२१ (मोर्द्-वीन)
मोर्द्विनी—२३४, २३७
मोलियेर—२६६
मोलोगा—३५
मोलोतोफ़—४०६, ४१६
मोल्दाविया—२३, ३९, ३८०, ३६७, ३८०
मोसली—१४४
मोहम्मद ओगलान—४९ (सुल्तान), ५० (ओगलान), ६५ (खान), १६६ (मिर्जा)
मोहीउद्दीन—३९ (बुरदइ), १५७
म्निस्ज़ेफ—२१८
म्स्तिस्लाव—८४
यउजा—२४६
यक्सा—२४३
यग्नान—४५७, ४५८
यग्नाब—५३९ (गांव, नदी)
यग्नावी—५३९ (-भाषा, गलचा)
यझी—१३५, ३०२
यज्द—१०३, १०४, ३०१ (ईरान)
यतीकंद—३०८
यतीकुदुम—१७४ (सप्तकूप)
यदकू—४९
यदा-तासी—१८३
यनकुरु—१५२
यमागुरची—१६७, २८६
यमासोफ़—५३३
यमीशफ—३३३ (यामीशेफ़)
यम्बा—२०५, २०८, २८४, २८६, ३२१, ३३९, ३५० (नदी), ३५६, ४६५, ४७८
यलानतुश—२८२
यवन—२६९
यशमुत—१४३
यस्सू-मङ्-गू—२९
यस्सी—५६ (तुर्किस्तान), ५७, १५९, १६५ (तुर्कि-स्तान शहर), १६८, १६९, १८०, २७९, ४३२
यसाउर—१३४, १३५
यहिया करती—१५०
यहूदी—३६, ७४, ८३, ३९०, ४४२, ४४५, ४४६, ४५०, ४५२

यंगी आरिक—४८५
यंगी कला—४९६
यंगीशहर—१९९
यंगी-हिसार—३०९, ४२५
यंजील—१६०
याइजी—२११
याइलक—३० (याइलग), १३० (गरम चरागाह)
याकुत्स्क—२३८, २४४, ३९१
याकूगिर—२३८
याकूत—७१ (साइबेरियामें), २३८, २७१, २७२, ४०२
याकूतिया—३९१
याकूब—११०, ४६२४, ७६ (मेहतर)
याकोब—३४८
याकोबी—३८३
यागरिनी—५१५ (उज्बेक)
यागलान—६०
यागलिबी—६१
यागेलोन—६१
यांगीकन्त—२९२
याङ-चाउ—१०
याङ-ची—५, १६ (याङ ची)
याचिरली—५४८ (तुर्कमान)
याजगंद—५४३-४५
याजगिर—५४७ (तुर्कमान)
याजिर—५४७ (तुर्कमान)
याजूज—२८०
यादगार—१०४ (महम्मद), (खान), १०८, ११० १६०, १६६, १९६, ३१६
यान—२२१
यान कुर्गान—५४३ (गांव)
यानीकला—४८४
यानी कसगन—४८१
यानी-किर्गिज—३४८
यानीकुर्गान—४२९, ४३१, ४५२
यानीकन्त—२६ (सिरतटे)
यानी दरिया—२९२ (नवीन नदी), ४८०, ४८१
याबू—५१५ (उज्बेक)
याम—११६
यामच बी (बाबर)—४२१
यामिश—३२६ (सरोवर), ३३३
यामूत (तुर्कमान)—२००, २०७, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७७, ४८४, ४८७, ४९०, ४९४, ५४७ (यामूद)
यायिक—२१, ४९, ५८ (उराल), ७५, २०५, २०६, २३५, २३६, २६१, २८४ (उराल), २८५, २८६, २८७, ३१८, ३१९, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४३, ३५०, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८
यायित्स्क—२३६, २६१
यारकंद—१६४, ३०३, ३०७, ३०९, ३१३, ३२८, ३३२, ३३३, ३४७, ४२५, ४६४, ४६५
यार मुहम्मद—१७५, १९५
यार मुहम्मदोफ़—५३३
यारलिक—२६ (शासन-पत्र), २९, ३३, ५१, ६०, ९३ (अधिकार-पत्र, शासन-पत्र), १४३
यारलिक तुराखान—४७७
यारोपोल्क—८३
यारोस्लाव—२६, ५२, ८४ (१), ८५, ९२, २२४, ३१८
"यारेस्लाव्स्की-प्राव्दा"—८४
यालगू—१३०
यालूतुरा—१२२
यालीनिश—३१६
यालीसेफ—२२७
यालू (उपत्यका)—३९८
याब्लोचकोफ—३९६ (बिजली दीप आविष्कारक)
यासा—१२१ (यास्सा), १५४, १६३ (विधान)
यासी—८२ (ओसेती), २९७
यास्साक—१७६ (कानून, यासा)
यास्सी—२६३
याहक पश्ते—५४३, ५४४
यिदिस्से—३४९
यिसु-थेमुर—१५
यु-अन—९
युकलिक—५५
युक्त राष्ट्र (अमेरिका)—४०८, ४१२, ४१४
युग—१५८
युगक्रमिक पद्धति—३९२
युगुर—३१६ (उइगुर)
युग्रा—९४
यु-वेन—३३२
युजा—५१४ (उज्बेक)
"युद्ध और शांति"—३९३
युन्नन—१४
"यूनी कम्युनिस्त" (युवक कम्युनिस्ट)—५३३
युरेकिर—५४७ (तुर्कमान)
युरेकी—५४७ (तुर्कमान)
युर्ची—४५९
युर्त—३०५ (आर्दूवाले देश), १३२
यलदुज—१३३, २९८, ३००
युल्दाश—४५७ (परमांची)
युवान-मिङ-युवान—३८९
यसकुक—४८१
यूकागिर—२७१
"यूगेनी-ओनेगिन"—३८४
यूजक—५१५ (उज्बेक)
यूदेनिच—५५२
यूनस—१६६ (खान), २०२, २७७, २९३, ३०५, ३०६, ३१२, ४२१ (खोजा)
यूनिया—२६९
यूफियोसि—२८४

यूरियेफ—५२, ८४, १०८
यूरी—९० (१), ९२, ९६ (३), ९७, ९९, २३७ (सेनापति)
"यूरोपा"—२४१
यूर्ति—३१९
यूलर—२६५
यूसुफ—४२ (-मिङबाशी), ५३ (सूफी), ५४, १५७, २७८ (अमीर)
येइययुर (तुर्कमान)—५४७
येकाजुखोर—२४१
येज़्द—१०३ (उयेज़्द), १०४
येदेची—११६ (मंत्र द्वारा वर्षा करानेवाला)
येदिस्सन (एतिसन)—३२१
येनिसेइ—२३८, २७१, २७२, ३७६, ३९५, ४८९
येनिसेइस्क—२३८
येपंचिन्स्की—११५
येम्बा—३४३ (यम्बा)
येयेमयुर—५४७ (तुर्कमान)
येरेवान (अरमनी)—३७१, ३७७ (येरिवान)
यरोफेइ—२४२
येर्मक—१०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, २३५, २३८, २७१, २७२, ३१५, ३१६, ३७४, ३८०, ३९० (-एरमक)
येर्मकोवो-गोरोदिची—११०
येर्मकोवा पेरेकोफ—११४
येर्मोलाई—११०
येर्मोलोवा (अभिनेत्री)—३९३
येलचिन—५१४ (उज़्बेक)
येलिगइ—११४
येलदङ—३२१
येलिज़्की—३१७
येली—४८९ (तुर्कमान), ४९०,
येलेना—१०६
येल्तन—३५१
येल्दिङ—३३८
येल्यु—५
येल्यु चुत्साइ—४ (मंगोल)
येवेंकी—२३८
येसू-मुङ-खे—१२६ (-येस्सू मङ-गू)
येस्केल्विनियान—११३
येस्सुन—१३६
येस्सू मङ गू—१२६, १२७
योदोकिया—२५१
योब—११६
योरोशिलम—३८०
योलेतान—४९०, ४९१, ४९७ (उपत्यका)
योलोतेम (किला)—४७६
योसफ—२६७, ३९६ (=स्तालिन)
योहन—१३५
यौज़ा—२४१, २४६
"रईस शरीयत"—४४३ (धर्माधिकारी)
रगूसा—२४
रजब कराजार—४२४
रजाइया—५५४ (उर्मिया सरोवर)
रजाकुल्ली—१९३
रजीमखान—४६६
रणजीतसिंह—४४८, ४५०
रतिबर—६, २३
रबात—१६१ (धर्मशाला), २९८ (पांथशाला)
"रबोचया ज़ार्या" (कमकरों की उषा)—३९१
"रबोचीपुत"—५०८ (बोल्शेविक पत्र)
रबोचेयोदेलो—५१८
रबूतन—३३२, ३३३
रमजन—५१
रशीद खान—२७७
रशीदुद्दीन—२६, ४६, १३३, १४५, ५४७
"रस्कोल्निकी—२२९"
रस्तिसियन-द-पीसा—११
रस्तोफ़—८२, २२४, ४०२
रस्पुतिन—४१५, ४१६
रहमतुल्ला—५४६
रहीम—१८८
रहीमकुल खान—४७६
रहीम बी—१९२, ४५५ (मंगित)
रा—७१ (वोल्गा नदी), ७३
राइ—८१ (स्वर्ग)
राइन—४११
राइम्सक—३५८, ४२९, ४७६
राग—४६२
राजकुमार द्वीप—३११
राजा (वाङ)—३४७
राजादेश—३५७ (उकाज़े)
राजिन—२३६, २३७, २३८, २६१
राजुल—१ (कन्याज), ७५, २५३, ३१७
राजुल उरुसोफ—३५२
राजुल गागरिन—४६४
राजुल ल्वोफ—४१७
राज्यदूमा—३७०, ४०४ (संसद्), ४१०
राज्यपाल—१६८, १७८, २१७
राज्य-परिषद्—३७०, ५०६, ५०७
"राज्य-विधानोंका संहितीकरण"—३७०
रादा—२३२
रादिमिची—७७
रादिश्चेफ—२६७, २६८
रानी—२५५ (एकातेरिना), ३४४, ३५१, ३५२ (अन्ना)
राबर्ट (जेनरल)—४९८
रायन—५३३ (=जिला)
रायमुन्दर—१३५
रावलपिंडी—३१३
राष्ट्रीय परिषद्—११६, २१७
राष्ट्रीय सभा—१०८
रिचार्ड—१३५

रिनदान—५१५ (उज़्बेक)
रिदाल्फो—१०५
रिन्-छेन्-पल्—१६
रिन्-छेन्-फग्—१५
रिपेन्स्की—३५७
रिलेयेफ—३७४, ४७५, ३८२, ३८३ (कवि)
रीगा—९५, १०८, २५१, ५०७
रुइकोफ—५०६
रुथेनिया—२३
रुबरिक—७, ८, १०, १२५, १२७
रुमानिया—३८६
रुम्यान्त्सेफ—२५८, २६०
"रुस्कया प्राव्दा"—८५, ३७३, ३७४
रुस्की अकदमी नाउक—२६४
रुस्तम—१५८
रूज़वेल्ट—४०० (अमेरिकन)
रूज़ा—९६
"रूदिन"—३९२
रूबल—२५५
रूम—१४३
रूमानिया—१०३, २२९, ४००, ४१२
रूमी—१४३, १४७, १५२
रूरिक—७५, ३७२
रूरिक-वंश—११५, २७८
रूस—५, १६, २९, ६८, ७१ ७३, ७७, ७८, ८३, १०३, १०४, १५३, १६७, २०६, २०७, २१०, २३३, २६९, २९१, ३२१, ३२४, ३२९, ३३२, ३४७, ३६६, ३९८, ४०७, ४२५, ४९० ४९४ (तुर्कमानयुद्ध) ५२९, ५३६
रूस-जापान-युद्ध—३९७
रूस में क्रांति—५०३, ५३१ (१९०५)
"रूसमें पूंजीवादका विकास"—३९५
रूसी—५६, ७२, ७४, २४३, २४४, २५३, २७०, २७९, ३१६, ३२६, ३७६, ३८९, ४९३, ५२२ (सफेद), ५३५, ५३६, ५५२
रूसी अभियान—४७४, ४८०
रूसी-एसियाई बक—४०९, ५२३
रूसी किसान संघ—४०१
रूसी गणराज्य—५१२
रूसी गुलाम—४६५-६६
रूसी-चीनी—४०९
"रूसी तियात्र"—२६६
रूसी भाषा—३९२, ५५६ (और भारत)
"रूसी मजदूरोंका उत्तरी संघ"—३९१
रूसी विज्ञान अकदमी—२६४
रूसी तत्य-अधिकार—३७३
"रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टी"—४०५
रूसो—२६७, ३७३
रूस्तक—४६२
रे—१०३ (तेहरान)
रेगिस्तान—४४९
रेडियोग्राम—५५०
रेतेनकाम्फ—४१३
रेनाड—३३१
रेपिन—३९३ (चित्रकार)
रेल-इंजन—३७६
रेल-निर्माण—४९९
रेव्-कम्—५२४ (रेवल्यूशनरी कमिटी, क्रांति-समिति)
रेवेल—१०८
रेंगल—३७३
रोज़ खान—४७०
रोजिन्स्की—२२१
रोम—७३, १०६, १४१, १४५, १५०, २६९, ४३३
रोमन—६ (ईंगर-पुत्र), २२, ५३, ७३
रोमन-पोप—२२९
रोमनोफ—११५, २१७, २५६
रोमनोवा—११५
रोमनी—२०३, ४३३, ४३४ (=जिप्सी)
रोमानोव्स्की—४३२, ४५२ (जेनरल)
रोयरिक—७५ (=रोइरिक, रोरिक)
रोरिक—७५
रोरिक-वंश—५१७
रोलेट कानून—५२१
रोस्तोफ—३५, ६३, ८६, ८८, ९०
रोस्तोव्त्सेवो—५२५
रोहा—८, १४१
र्‌ज्‌र्याद्‌नीप्रिकाज़—२२८
र्‌याज़िन—२२, ३४, ५१, ५२, ६४, ६८, ८२, ८८, ९१, ९२, ९८, १००, १०६, २२०, २२३
लगोदा—५५३
लघु-ओर्दू—२७८, ३३७, ३३९, ३४३, ३४९, ४६७, ४६९
लत्विया—४०१
लत्वियन—५१९
"लताफ़तनामा"—१५८
लतीफ—१६६
लदोगा—९४, ११६, २४९ (सरोवर), ५५१
लश्करबाशी—५४५
लंका—१०, १०३
लंग—१४९ (लंगड़ा)
लंदन—३९, ३८२
लाइप्जिक—२६७, ३७०
लादा—७३ (=ह्लावा)
लादिगिन—३९६ (बिजली-आविष्कारक)
लादिस्लावस—५३ (=ह्‌ला-दस्लवा)

लामा—१२ (साधु), १३८
लायक पसंद (बासमची)—५४४
लायोस कोशुत—३७९
लार—१०३, १०४
लारगा—२६०
लाल गारद—५४९
"लाल जेनरल"—४०६
लाल सरोवर—४१५
लालसेना—५३३, ५४६, ५४९ (तुर्कमानियामें निर्माण), ५५५
लावाजिये—२६५
लाव्रेन्तोफ (जेनरल)—५३१
लाश—८०
लाहार्प—३६५, ३६६, ३७०
लाहौर—७, २८, १४४, ३१३
लिखारेफ—३३३
लिगनित्स—६, २३, २५
लिङ-अन्—९
लित्वा—३१९
लिंके—३७३
लिथुवन—९८
लिथुवानिया—३४, ३८, ५३, ६०, ६८, ९७, १००, १०८, २२९, २३४, ३७७, ४१३
लिथुवानी—५२, ६२, ८३, ९५, ९८, १००, २२१, ३१७
लिथो—१५५
लिपि—९
लिफलेंदिया—२४९
लियांगर—४२५
लिवोनिया—७८, ९४, ९५ (बालतिक-तट), १००, १०८, १०९, ११६
ली-चुङ—८, ९
लुई—२३, २६७, ३७० (अठारहवां)
लुगान्स्क—४०३, ४०६
लुगुई—३१७
लुत्स्क—६३
लुबलिन—६, २७, २३४
लुबा—३१७
लूओराबेतलन—२७१
लूकस—११०
लूल्—४०
लेज्कोइ—३१७
लेना—२३८, २३९, २४०, २७१, २७२, २७३, ३७६, ४०९
लेनिन—३७६, ३८७, ३९२, ३९४-९६, ३९७, ३९९, ४०२, ४०३, ४०५, ४०६, ४१०, ४११, ४१३, ४१९, ५०३, ५०९ (प्रथम राजकीय घोषणा), ५१०, ५१३ (देहांत)
लेनिनग्राद—५७, १६२, २५०, ३९२, ५३३
लेनिन-पर्वत—१०७
लेनिन पुस्तकालय—२६७
लेनिनाबाद—४३१, ४५१, ५१८ (खोजंद)
लेनिन्स्क—५३५ (शिखर)
लेपेस—३४९
लेप्सा—३३१
लेबाउज्की—३१६
लेम्बर—२३
लेर्मन्तोफ—३८२, ३८३ (कवि), ३६९, ३८४
लेव ताल्स्त्वा—१८०, ३९२
लेवितन—३९६ (चित्रकार)
लेंडसेल—२९९
"लैला-मजनूं"—१६१
लोचा (सार्वेरिया)—३३५
लो-डो-स्य-ह्-छेन—८
लोपुखना—२५१
लोब्—३००
लोबनोर—२९७
लोबाचेव्स्की—३८२
लोब्जाङ—३२१
लोब्जाङ जाजेर—३४०
लोब्जुङ—३३८
लोमकार्ट—५५२
लोमनिद्ज—२४
लोमाकिन—४८१, ४८४, ४९५ (जेनरल)
लोमोनोसोफ—२६५, २६७
लोयाङ—५ (होनान्‌में)
लोली—२०३, ४३४ (जिप्सी)
लोवात—७५
लोसवा—१११
"लौह-पुरुष"—२७१
लौह-युग—५२८
ल्याउ तुङ (प्रायद्वीप)—३९७
ल्याखोफ—४०७
ल्यापुनोफ़—२२३
ल्यूप—३३१
ल्योन-परिषद्—६
ल्योनहार्ड—२६५
ल्योन्ति—२२७
ल्योपोल्द—२५७
ल्वोफ़—२३२, ४१३, ४१८
ल्हचन खान—३३२
ल्हासा—३३२, ३४२
"वक़ाया"—६७ (घटना), १५६, १५९
वकुलिंचुक—४००
वक्षु—६ (आमू दरिया), ७, १३०, १३१, १३४, १३७, १३९, १५४, १७३, १८६, १९४, २०५, २०८, ४३९, ४४२, ४६५, ४६७, ४८०, ४८८, ४९०, ४९९, ५२७, ५३९, ५४१, ५५१
वखान—४६१, ४६२
वखेया (इलाका)—५५६
वज़ीर—१२५, १२६, १२७, १३१, १३७ (अमात्य), १८३, १८६, १८७, २०८, ४४५
वज़ीरआजम—१३६ (महामंत्री)

वत्‌शिर—३२४
वदगिस—६७
वरंगी—७५, ७६
वरसामिनार—४५८
वरसावा—२३४ (वारसा)
वर्गचेतना—३९१
वर्णमाला—९
वर्स्त—१११, ४२५(=८¾ फर्सख)
वस्तुवाद—२४१
वस्साफ़—१२७, १२९, १३३, १४५
वहीउद्दीन—१५३
वर्षपत्र—१६
वलाचिया—३९, ३८०
"वलायत-उज्बेक"—१५६
वली—३०४
"वली-निअम"—४४२, ४५६
वली नियाज—५३३ (मुल्ला)
वली मुहम्मद—१८६
वसी कुरजी—१८८
वाटरलू—३७०
वादाचा—४५६
वामपक्ष—५१९
वामपक्षी—४०५
वाम्बेरी—१७२, ४७६, ४७८, ४७९ (वम्बेरी)
वायजीद—१४८, १६५
वायोन्दुर—५४७ (तुर्कमान)
वारज़कद—४८
वारसा—२३४, ४१३ (वरसावा)
वालरस—२४०
वाल-स्टाट—६ (युद्धक्षेत्र), २३
वाल्कोफ़—२६६
वाल्तेर—५५२
वास—१७४
वासमची—५२७
वासिलियेव्स्की—३९९, ५५१
वासिली—४२ (त्वेर-), ५२, ५३, ६१, ६३, ६४, ९९ (१, २), १०२, १०६, १०९ (३), ११०, ११६
वासिली—२१९ (शुइस्की), ३९१ (गेरासिमोफ)
वासिल्को—८७
वास्को-द-गामा—१०१
वाह्लीक—१४९, ४४२
विज्ञान—३९६
विजन्तीन—७३, ७५, ७७ (पूर्वी रोम), ८४, १०५
विजिक—११२
विजयनगर—१५७
वितुत—६० (वियोल्द)
वित्कोविच—४४८
विधान-संहिता—८५
विनिक—२८
विम—१११ (नदी)
विमान-विद्या—४१२
"विरा"—८५ (अर्थदंड)
विलनोस्—५३, २३४ (विलनो), ४१३
विलायत (अन्तर्वेद)—३०८ (=वलायत)
विलियनोफ—३३३
विलियम—४११ (विल्हेल्म)
विलियासुबर—१४३
विल्युइस्स्क—३८६
विल्हेल्म—३७५ (३), ४०६ (२)
विशबालिग—१२७, ३०१
विश्चेरा—१११
विश्लिष्ट—९३
विश्वयुद्ध—५२०
विस्तुला—६, २७, २५९
वीट्स बेरिंग—२५६
वीना—१०१, २४९, ३७०, ३७९ (आस्ट्रिया)
वीबोर्ग—४१७ (विपुरी)
वुचेगदा—१११
वुशिगुन—३२४
वू-चाङ—३११
वूङ—४६१
वेइ-हाइ-वेइ—३९०
वेगुइश—११४
वेगुइशेव्स्कोये—११४
"वेचे"—८९ (पंचायत), ९३, ९४, ९६
वेज़िर—१६८, १७८, १९६, १९७, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०७
वेतुलगा—२३४
"वेदोमोस्ती"—२५२
वेधशाला—१५७
वेनिद—७१ (वेंद)
वेनिस—१०, ३६, ५१
वेनिसी—३८
वेनीउकोफ़—३६१
वेनेविनिनोफ—३८२, ३८२ (कवि)
वेनेवेनी (इतालियन)—४६६, ४९३
वेन्द—७१
वेन्युकोफ—५३३
वेम्बरी—१२४, १८३, २९२
वेरदआ—५५
वेरेन्दे—८२
वेर्खोव्स्की (जेनरल)—५०६
वेर्खोव्नी सबोर (उच्चतम सभा)—३७४
वेर्ख्नेमउरालस्क—३४९
वेर्ख्ने-निजिन्सकया—३१९
वेर्दगन—५२०
वेर्नी—२९९ (अलमाअता), ३७९, ४१५, ५३०, ५३१, ५३७
वेर्नीये—२७७, ३६१ (श्रद्धा), ३७९, ४३२ (अल्माअता)
वेर्स्त—५५१ (वर्स्त)
वेला—२४
वेल्आली—३९०
वेल्लोर—४५२
वेल्यानोफ—३३१
वेल्स्की—१०६
वेवोद—१०९ (राजपुरुष)
वेसिफ—७३
वेसिर—१६८, १९६, १९७

वेसी—७७, ९०
वेस्ना—७३ (=वसत)
वैदिक—५३
वैदू—१४३
वैधानिक जनतांत्रिक—५१७
वोगोल—११०, १११, ११२, ११३, २३५
वोत्याक—२३४
वोद्का (शराब)—४३६
वोयकोफ़—३१८
वोयवोद—२१७, २२३ (=राज्यपाल), २२८, २३८, ३२७
वोरोदिनो—३६९
वोरोनेज़—२४७
वोरोव्योवो—१०७
वोर्स्कला—२५०
वोलिन्स्क—८२
वोलेस्लाउस्—८४
वोलोत्त (=जिला)—४०४, ५२०
वोल्खोफ़—२२१
वोल्खोव्स्की—११४
वोल्गा—२०, २९, ६०, ६१, ७१ (=रा, इत्तिल), ७७, ९०, ९२, ९६, १०२, १९६, २०९, २१०, २३५, २३६, २४७, २४८, २६१, २६४, २८७, २८८, ३२१, ३२५, ३३९, ३४०, ३४२, ३४८, ३५५, ३५७, ३६०, ३७२, ४०१, ४२०, ४६९, ४८०, ५०८ (प्रदेश)
वोलगा-कलमक—२३५, ३१९, ३३८, ३४५, ३५२, ३५५
वोलगार—५, २१, ७३, ७४, ७५, १५१ (बोल्गार)
वोलगारी—७१
वोल्ताइक आर्क (प्रदीप)—३८३
वोल्तेर—२५९, २६६, २६७, ३७३
वोल्ना—६२
वोल्फ—१५३, ४९१, ४९२, ४९३, ४५० (डाक्टर)
वोल्हूनिया—२६, ३८
वोस्ताम—२०४
व्यत्का—२३४
व्यातिची—९०
व्युकद्युज—५४७ (तुर्कमान)
व्रूनवोल्ड—१०८
व्लादिमिर—६, २१, २२, २४, ३५, ५२, ६१, ७८, ८३, (स्व्यातोस्लाव-पुत्र), ८४, ८७, ९१, ९३, ९७, १०५, २५२
व्लादिमिर मनोमाख—९०, ९४
व्लादिस्लाव—२२२
व्लारम्बेर्ग—४३०
व्सेवोलोद—४१ (खोल्म), ८६, ८७, ८८, ९१, ९४
व्सेस्लाव—८६
शक—७१, २८४, २८९ (=सिथयिन), ३३४, ४५९, ५१६, ५१७, ५२८, ५२९, ५३६, ५३९, ५४१, ५४८
शकलाओ—२७
शकार्य—५२८, ५४१
शगनान—४५९
शगिन—२६२
"शअ्तुल्-अतराक"—१८, २६, २९, ३६
शतरंज—४९४
शफी—२०९
शबिनादाबेग—२५५
शमसमात—२८५
शमसा—११४
शमाजहान—२९८
शम्बेगाजानी—४०, ५४
शम्शुद्दीन—१३१, १४३, १४४, १५०, १५३
शम्शबान् आइम—४३९
शम्सिन्स्की—११३
शरफुद्दीन यज़्दी—३०१, ३०४
शरवान—१५६
शरातंजिन—३३४
शराबखाना—२८० (ताशकन्द इलाकेमें)
शराबखानी—२७९
शरीकाना—४३४
शरीयत—१३७, ४४५, ५२६
"शरीयत-शरीफ" (सद्धर्म)—५२६
शर्रा-उसुन—३४१
शहबाई—५२६ (मिर्जा)
शहरसब्ज—१४८, ४२४ (=किश), ४२७, ४३९, ४४२, ४४९, ४५१, ४५२, ४५३, ४५६, ४५७, ४६२ (दक्षिणी)
शहरेखान—४३७
शाङ-तू—८ (कै-पिङ-हू)
शादमुल्क—१५५, १५६
शादीबेक—६३, ६४, ६९
शान—१४ (बर्मा), ३८९
शान्ति-घोषणा—५१०
शापूरगान—१३१, १३५, १८६, १९३, १९४
शाबिरगान—४६३
शाम—३३, ३९, १२१, १४०
शामिल—३७७
शावकान—३२
शाह अब्बास (१)—२०८
शाह इस्माईल—१७४, १७६
शाहजमां—१९४, ४४६
शाहजहां—१५७, १८७, १८९, १९०, २०७, २२६, २२८, २४०, ३२५
शाहजिदा—१५४
शाहतेमूर—४४२
"शाहनामा"—१५७
शाह फखरुद्दीन—१३८
शाहबेग—१०२, १८६
शाह बूदग—१६६
शाह महमूद—१९४

शाहमातोफ—७१
शाहमुराद—४२१, ४६०
शाह याकूब—५४३
शाह राजीउद्दीन—३०४
शाहरुख—६६, ६८, ६९, १५०, १५१, १५७, १५८, १६३, १६५, १९४, २९८, २९९, ३०१
शाहरुखिया—६७, १६७, १७१, २८०, ३०५
शाह शुजा—४४८, ४४९
शाह सफर—४४०
शाह हुसेन (ईरान)—४६५
शाही (सिक्का)—४७८
शाहीबेग—३०६, ३०७, ३०८ (मुहम्मद शैबानी), ३०९
शांघाई—३८९
शिकतुर—१४३
शिगाई खान—३४६
शित्का—२३९
शिमला—४९९
शिया—१४५, १५३, १७३, १७४, १७७, १८९, १९९, ४४१, ४४२, ४७२, ४९२
शिरवान—२८, ३३, ३९, १०२, १४४, २०३
शिरामून—२८
शिरियानेत्स—५५३ (शीर्यानेत्स), ५५४
शिस्—११५
शिस्तमक—११५
शी-चुङ—३३२
शी-चू—२४१
शीराज—३९, १०३, १०४, १५४, १६६, ३०१
शीराजी—१४४, १४६, १५७
शीरीन—५१५ (उज्बेक)
शीरीं-खुसरो—१६१
शीरीं खोजा—१८३
शुइस्की—१०६, २२२
शुगनान—४२६
शुमिलोफ—५१८
शुलगिन—४१९
शुल्दुर—५१५ (उज्बेक)
शुशेंस्कोये—३९५
शुस्तर—१५४
शुस्तोफ—५२५
शकेर—३२८
शूरखाना—४८२, ४८३
"शूरा इस्लामिया"—५१७, ५१८, ५२४ (इस्लामीलीग)
"शूरा उलेमा"—५१७
शूल्ज—४२९
शेक्सपियर (लेफ्टनेंट)—४७५
शेख—१६९
शेख आरिक—४८३
शेख जलील—२०६
शेख नूरुद्दीन—१५५
शेख मस्लहृत—५७
शेख मिर्जा—५४३
शेखहैदर—१६७
शेखुल्-इस्लाम—५९ (इस्लाम के महागुरु), १६६, १६९
शेङ-चू—२४३, ३२४
शेदरिस—५६
शेन्सी—५ (चीन), ३४० (शेनुशी)
शेबास्त—१०३
शेमाख—१०३
शेमीअका—३४४, ३४५ (पुलाद)
शेम्याका—९९
शेरअली—४६१
शेरकुली—१२५
शेरगाजी—२०१
शेरपुल—१९४
शेरमत—५४५
शेर महम्मद—५४५
शेरवान—२०४
शेराबाद—४५९
शेरेमेतोफ—२४९, २५०
शेलगुनोफ—३८५, ३९४
शैबान—६९, १६५, ३१५
शैबानी—१६३, १६७, १७०, १७३, २७५, २८१, ३२१
"शैबानीनामा"—१८३, १९६
शैबानी-वंश—१६५
शोकुर—१११
शोनग्रावेन—३६६
श्चेप्किन—५१७
श्माइलर—३५८
"श्रम-वेतन"—३९३
"श्रमिक मुक्ति"—३९३
श्रीनगर—१५२
श्लिष्ट—९३
श्लुशेल्बर्ग—२५०, २५७
श्वेत-ओर्दू—४५ (अक-ओर्दू), ५०, ५१, ५६, ६८, १६५, १६७, १६८, ३४३
श्वेत-मेश—१७२
सइकुयु—४८४
सइसान झील—३१८ (नोर)
सइस्सन—३२९, ३३३
सईदाबाद—४०
सकसिन—२१ (निम्न वोल्गा-उपत्यका)
सकसीनत—१८
सक्या पण्छेन्—८
सखसौल (फरास)—४२९
सखालिन—३७२, ३८०
सगर्स्की—३२७
सगीरदस्त—५४५
सङ-जी—३३४
सजोनोफ—५२२
सतलुज—१५१
सती—८२
सदरुद्दीन अर्दबेली—३९
सदरे जहान—१२३
सदोव्स्की—३९३ (अभिनेता)
सद्दे-सिकंदरी—१६१
सनजक—३३४
सन्त्सित-वार्पू—३३२

सपिएहाँ—२२१
सपिक्रोफ—३७२
सप्तनद—१२१, १२५, १३२, १३४, २९५, २९७, ३२४, ५१९, ५२८, ५३१, ५३२, ५३३, ५३६, ५३७, ५३८
सफर बी—४२८
सफ़रबीज़—५१५ (उज़्बेक)
सफावी—१७२ (वंश), १७३, १७७, १७९, १८१, १९४, १९६
सफ़ेद खोजा—४२५
सफ़ेद गारद—५५०-५२, ५५५
सफ़ेदरान—५४३
सफ़ेद हड्डी—३५८ (पुराना राजवंश)
"सबका थोड़ा"—२५९
सबा—१०४
सब्ज़वार—१५०, १५४, १७८, १८२, ४९९
"सब्रेमेन्निक"—३८५ (समकालीन)
समद—४४८
समय-माप—१५८
समर—५१९, ५२१, ५२५
समरकंद—२७, ३२, ४९, ५४, ५६, ५७, ६०, ६८, १२१, १२२, १२५, १२७, १२८, १२९, १३४, १३५, १३९, १४८, १४९, १५०, १५२, १५३, १५४, १५५, १५७, १६०, १६३, १६५, १६६, १६८, १६९, १७२, १७४, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८२, २०८, २७७, २७९, २८०, २८१, २९६, २९८, ३०२, ३०५, ३०७, ३३०, ३३६, ३४३, ३८७, ३९०, ४१५, ४२७, ४४७, ४५१, ४५५, ४५७, ४५८, ४६१, ४६२, ४६५, ४९९, ५१७, ५१८, ५१९, ५२१, ५२४-२५ (-विजय), ५२५
समरकंदी—६७, १५९
समसामुस्-सल्तनत — ५५४ (ईरान)
समसोनोफ—४१३, ५५२, ५५४
समंची—४२९
समंदर—७४
समाजवाद—५०४
"समाजवाद और राजनीतिक संघर्ष"—३९३
समाजवादी क्रांतिकारी—३९७, ४१६, ४१७, ४१८, ५०५ (करेंस्की दल), ५१८, ५१९, (एस्० एर्०), ५२१, ५५०
समाजवादी जनतांत्रिक पार्टी—४०४, ५१८ (०मजदूर पार्टी)
समानोफ़—४६४, ४६६ (राजुल)
समारा—२३७, २९१, ३५१, ३५८
समोयद (भाषा)—५४८
समोयित—९४
"समृद्धि-संघ"—३७३
सग़्ड़ब बआतुर—३३४
सरकश—५५
सरकेल—७४
सरखाबा—४३७
सरूस—४७३, ४७६, ४९०, ४९७
सरतक—२६, २७
सरदाबाकुल—४८३
सरबाज़—४३३, ४४८ (सिपाही)
सरमात—७१
सरवान—१३०, १३२, १८०
सरस्वती—१४१, ४८८
सरातोफ—२३७, २६२, ३७२, ३८६
सराय—१३, ३०, ३७, ३८, १०२, १५१, ५१४ (उज़्बेक, महल)
सराय ओर्दा—२९८
सराय चिक—२९
सराय चुका—२८८
सराय तेमूर—४१
सराय बरका—३९, १८५
सराय बातू—३२
सराय बेरेक—६२
सराह—४०
सरिक—५४७ (तुर्कमान)
सरिकामिश—४१३
सरिकौल—४९८ (पर्वतमाला)
सरी—२०१
सरीखाना—४३६
सरीदुगान—५२०
सरीपुल—१७१, ४६१, ४६३ (सरेपुल)
सरीबागिसेफ—५३७
सरीसू—५७
सरूकउज़ेन—५७
सरेजूय—४५९
सरोग—७३
सरोवर—११३, १२५, १८६
सर्गा—३३३
सर्त (फारसी भाषी)—१९९, २०२, २०४, २०७, २०८, ३३१, ३६०, ४२७, ४२८, ४३१, ४५२, ४६९, ४८६, ५१८ (ताजिक)
सर्व—७१ (मकदूनी)
"सर्वरूस महाराजुल"—३९
सर्वदारी—१४७
सर्वहारा—३८७, ३९३, ३९९, ५०४ (प्रोलेतारी)
सर्वियन—३८६
सर्विया—३८०, ३८६ (बोसेनिया), ४११
सर्वेदार—१५०
सलगुर—५४७ (तुर्कमान)
सलजीदइ—३०
सलजूक—२०७
सलबर—३१९
सलार (तुर्कमान)—४७१, ४७३, ५४७
सलाहुद्दीन—१५७

सलूरी—२००
सलोर (तुर्कमान)—२००, ४९०, ४९१ (सलूर)
सल्जूकी—१२३, ४९९
सल्तानिया—३२१, ३३८
सल्तिकोफ-श्चेद्रिन—३९२
ससीवृगा—४८
संगीत—१५६, २६६, ३९३ (-कला)
संघराज—९७, ९८, १०७, ११६, २२३
संजर—१२३, १६६, ४८९
संत जार्ज—१२२, ४८२
संत-महंत—२९१
संत मिखाइल—३५
संधि—३८६
"संयुक्त स्लाव सम्मिलनी"—३७५
संविधान-सभा—४०१, ५१८
संसद—१०८, २२०, ५१३
सस्कृत—९३
संस्कृति—३९६
साइबेरिया—६, ४६, ४७, ६३, १०१, १०८, १०९ (-विजय), १११, २१८, २१९, २२७, २२९, २३५, २४४, २६८, २८०, ३१५, ३१७, ३२६, ३२७, ३३३, ३३८, ३४६, ३४८, ३६१, ३७९, ३८८, ३९५, ३९७, ३९९, ४०९, ४९८, ४९९, ५२४, ५२५, ५२८, ५३५, ५४८ (सिबेरिया)
साइन नोयन—३२१
साइसन-सरोवर—३३२
साईस—३०५
साउस्त्रोफनी—११२
सागिज—३५५
सागिद दस्त—५४३, ५४४
साजलू—४०
सात बायर शासन—२२२
ादी—१४३, १४७
सादुमान—५६
सान् स्तेफानो-संधि—३८६, ३८७
साबरान—४९, २७९ (नदी)
साम—६४
सामंत—८५ (युग), १०९, ४०६ (-वादी)
सामानी—४५३, ५१७, ५४१
सामी पाशा—५४५, ५४६
साम्प्रदायिक नेता—५१८
साम्यवाद—५२४, ५४९ (देखो कम्युनिस्ट, कम्युनिज्म भी)
सायन—२६ (भला राजा)
सायत—५१६ (उज्बेक)
सायब इस्पहानी—१९०
सायो—२४
सारडम—२४८
सारणी—१५७
सारा—१०३
सारिक—२००, २०७, २१०, ४७६, ४९१ (तुर्कमान), ४९२
सालार—११४
सालिन्स्क—३१७
सालीसराय—१४९, १५०
सावरान—४८, ५६, ५७, ६०, १६७, १६८
सावजी—१४७
सावा व्लादिस्लाव—२२५
साष्टांग प्रणिपात—२४१ (कौ-तौ)
सासानी—७३ (ईरानी)
साहिब गिराई—२८७
साहित्य—१३७, १४७, ३९६
सिकंदर (ग्रीक)—५४३ (अलिकसुन्दर)
"सिकन्दरनामा"—१६१
सिगनक—४६-४९, ५०, ५५, १६५, १६६, १६८, २७५, २८०, ३४६, ४५३
सिगाई—१८०
सिगान—३८४, ४३३, ४६१ (रोमनी, जिप्सी, लोली)
सिगवा—१११ (लपिना)
सिगस्मिन्द—१०९, २१८, २२२ (३)
सिङ-क्याङ—१८३, ३३५ (चीनीतुर्किस्तान)
सिताजी—१३८
सितारा-मुखासा—५२६ (बुखारामें)
सिथ—७१
सिद्दी अहमद मिर्जा—१५८
सिनेउस—७५
सिन्ताब—४८१
सिबको—५२५
सिमओन—३८, ३९, ५२, ११०, २४१
सिम्बिर्स्क—२२, २३७, ३९४
सियाङ-याङ—५, ८ (सियाङ-फू), ११
सियानोफ़—५२५
सियापोश (काफिर)—४६०
सिर (नदी)—४९, १२७, १५३, १७४, ३५२, ४३७, ४८४, ५१६, ५२०, ५३८, ५४१ (सिर-दरिया, यक्सर्त)
सिरगिली—५३०
सिरदरिया—६, ५५, १२१, १२९, १४९, १५०, २७९, ३०५, ३५१, ३५७, ३६०, ४२५, ४६७, ४७६, ४७८, ४७९, ४८०, ५२४, ५२८, ५३०, ५३५, ५३९, ५४१
सिरनाग—५१
सिरवान—५४ (शिरवान)
सिरिम (बातिर)—३५५-५७
सिरिया—३९ (शाम), १३०, १४०, १४५, १५१, २८९
सिर्दजान—१०३
सिलजीबुल—७२
सिलूट बरगर—६६
सिल्वा—११०
सिवालिक—१३२

सिबास—१५२
सिबिर—११२-१४, ११६, २३५, २३८, २७९, २८७, २८९, ३१९
सिबिरखान—२८१
सिबोरगान—१३५
सिसिली—२४
सिहतियानी—५१५ (उज़्बेक)
सिंधु—१५१, २७१, १९४, ४४२ (सिंधु)
सिंबिर्स्क—३९२
सिंहल—१०३
सी-खिम्—५३०
सीनिङ्-फू—३३२
सीनोप—३८०
सीमा कमीशन—४९८
सीला—३४६
सीलेंड—२९९
सीमांती—१४८
सीस्तान—१४९, १५०, १५४
सुइउनिच—१६६, १६९, २१० (-बाला)
सुओमी—५४८ (फिन भाषा)
सुक—४३५
सुकलेन—११३
सुङ-ताइ—२१
सुङ-वंश—५ (चीने), ७, ८
सुज्दल—२२, ३५, ८२, ८६, ९०, ९४, ९८
"सुदूर" (अध्यक्ष)—५४४
सुन्ताइ—५ (मंगोल)
सुन्नी—१४५, ४४२, ४७२, ५२६
सु-बो-ताइ—२१, २३ (-सुबोदाइ)
सुभानकुल्ली—१९१, २११, ४६६ (दूत)
सुमारोकोफ—२६६
सुरखाब—१७४, ४५९, ५४४
सुरा—२३४
"सुरिस"—५८
"सुंकन"—४९
सुलेमान—५६, १४७, १९४
सुल्तान—१४१, १४४, १४७, १५४, १५६, १५८, १६५, १६८, १८०, १९१, १९९, २००, २०१
सुलतान अली—१६२ (मशहदी), १६३, १७२
सुल्तान अबुल्फ़ैज़—३४८
सुल्तान—१६० (हुसैन), १६२ (-मुहम्मद), १६६ (-गिराई), २७८ (-निगारखानम्), ३०४ (महमूद), ४४१ (-सजर)
सुल्तानिया—३३, ५५, ६० (ईरान), १०४
सुवर्ण-ओर्दू—३, ८, १८, ३८, ५१, ९८, १००, १०६, १२१, १२८, १३३, १४२, १६५, १८५, ३१५, ५१४, ५२९
सुवाइत—३२१
सुवारोफ—२६०, २६३, २६९, ३६८, ३६९, ३८२, ३९८
सुसगन—११२
सुगारी—२४२, २४३
सूइरमान—३३०
सूइलहिं—३३०
सूकिन—३१६
सूक्ष्मचित्र—१५७
सूचाउ—५, ३१३ (चीन)
सूजक—१६५, १६८, ४३५
सूनित—३२१
सूफ़ी—५६, १२४, ३०५ (संत), १३८, ४३४ (मुअज्जिन)
सूबुइ—१९९
सूयुन्जिक—१७६
सूयुनजी—१९६
सूर—२६६
सूरिकोफ (चित्रकार)—३९६
सूर्यदेवी—१४०
सेइराम—३२८
सेकिज-इगाचे—२९७
सेगोन-गर—१६६
सेङ्गे—३२८ (सेत्सेन खान)
सेच—२३०
सेवक—३१९ (थैशी)
सेचेनोफ—३९२
सेतजुलेत सराय—६६
सेत्सेन खान—३२१, ३२८
सेनेकसे—४८४
सेपूकोफ—५१
सेप्तेन बल्जुर—३३१
सेबल—३७
सेबान—२१
सेमरेक—३६१ (सप्तनद)
सेमारचिम—५१४ (उज्बक)
सेमियोन—५२, ११४
सेमीप्लातिन्स्क—२५१, ३१९, ३३३ (सप्तप्रासाद), ३४७, ३४८, ३७९, ५३०
सेमी-बायर्-श्चिना—२२२
सेमीरेचिन्स्क—४५२
सेमीरोद्स्क—३५५
से-मू—१२ (तुर्क मुसलमान)
सेमूर—५९
सेमेओन—९७
सेरख्स—१६१, १८१ (सरख्स)
सेरपूकोफ़—६३, २२०, २८९
सेराब्रेंका—१११
सेराय—४९, ६० (सराय)
सेरायचुक—६० (सरायचुक)
सेराय सोलकुल—५०
सेरेनइका—४०८
सेरोफ (चित्रकार)—३९६
सेर्गेयफ—५०८ (अत्योंम्)
सेलिगोर—२२
सेलिगिन्स्की—२५३, २५४
सेलीजर—२०५
सेली-त्रेन्नोय—५१
सेलेसिया—६
सेलदूज—१३७
सेलगा—११०
सेल्वेस्तर—१०७
सेवकून—१३३

सेवर्दिनो—३६९
सेवलरी—२५
सेवस्तापोल—३८०
"सेवस्तापोलकी कथायें"—३८०
सेविनबेइ—५३,५४(खानजादी)
सेबेर—८२ (सिवरि)
सेवेरियान—७७
सेवेर्स्क—८४,८९,१००, २१८, २२५
सेहन—१२९
सेडीकेट—४०८
सैंकाकी—१२५
सैंची केशेंस—३१९
सैदान (गांव)—५४३
सैदिक—१६७
सैदियत—११३, ११५
सैफुद्दीन—२७(बाखरी), ६०, १३७, १४०
सैयद अबुल्गाजी—१९४
सैयद इमामकुल्ली—१८७
सैयद उबैदुल्ला—१९४
सैयद—६९ (-खान), १५० (-बरका), १५९ (यबका), १६६ (-बाबा), २३५ (-सादिर),४७७ (-मुहम्मद •खान),४७९ (-मुव्रहीमखान)
सैरान—४९
सैराम—५९, १६६, १७६, १८०, २९७, ३०२, ३०७, ३०९, ३१०, ३३०, ३३१, ३४३, ३५०
सैरामकामिश—५०
सैसन झील—३३३
सोख—४३४
सोग्द—५५ (देश), १७०, ४५८, ५१६
सोग्दी—५१६, ५१७, ५३६, ५३९, ५४१
सोची—४०३
सोद्वो—३३४
सोनपुर(मेला)—४७३
सोफिइरकया—९३
सोफिया—८५ (-गिर्जा),१०६ २४६, २४७, २४९
सोफिया पालेओलोगस—१०१
सोफियान—१९९, २२०
सोलम्दर्क्सा—३३४
सोलोवेत्स्क—३८०
सोवियत—१२१, ५०३,५०५, ५०८ (कांग्रेस), ५१२, ५२२, ५४९
सोवियत-शासन—४९३, ५२३ ५३९
सोवियत समाजवादी गणराज्य-संघ—५१२, ५१३
सोविति संयुक्त समाजवादी गण-राज्य—५१२
सोसकान—११४
सोसत्रा—१११
स्कंदनेविया—३९, ७४, ७५ (स्कैंडनेविया)
स्किफिया—७३ (शकस्तान)
"स्कोत"—८६ (पशु)
स्कोबेलेफ़—४३७ (जेनरल), ४८४, ४९५, ४९६, ५१८, ५२२
स्क्रीन—४९७
स्टाकहोम—४०४
स्टुअर्ट—४२६
स्टोडर्ट—४४८, ४४९, ४७४ (कर्नल)
स्तानित्सा—१०८ (थाना)
स्तानिस्लाउस—२५९
स्तार्क—३९८ (अद्मिरल)
स्तालिन—२६७, ३९६, ४०२, ४०५, ४१०, ४११
स्तालिनग्राद—५१, २३६, २६२
स्तासोफ़—३९३ (संगीतकार)
स्तिफन—१०९
स्तेपान—२३६, २३८
स्तेपान खलतुरिन—३८७, ३९०
स्तेपानोफ़—५२५, ५५२
स्तेपी—३१९, ४८० (दश्त, मैदान, मरु)
स्तेफन बाथोरी—२३०
"स्तेरेगुश्ची"(ध्वंसक पोत)—३९८
स्तेलमाशेस्की—५३३
स्तोल्पिन—४१०
स्तोल्बोवो—२२५
स्त्रान्दमान—३४९
स्त्रूवे—४३२
स्त्रेलेत्सी—२२४, २३७, २४६, २४९ (गारद सैनिक), २३६ (राज-सैनिक), २५२, ३१७
स्त्रेलेत्स्की—२२८
स्त्रोगोन—११० (पीटन)
स्त्रोगनोफ़—१०९, ११०, १११, ११३
स्थानीय बोर्ड (जेम्स्त्वो)—४०४
स्ना—१०२ (थाना)
स्पाल्त्रो—२३
स्पीरिदोन—१०९, ११०
स्पेन—१५२, २४८, ३७३
स्पेनिश—१३५, ३६८
स्पेरिन्स्की—३७०, ३७२
स्मोलेन्स्क—५, ७७, ८२, ८८, ९१, १०१, १०६, २१८, २२२, २२३, २२५, ३६८, ३९१
स्मोलनी—५०८, ५०९, ५११
स्याहकुलाह—२३
स्याहचाह (अंधकूप)—४४९
स्लाव— ३९, ७१, ७५, ८४, २३०, ३८६, ४०६ (-वाद)
स्लावानिक—२५२ (अक्षर), २६५
स्लावेंस—८२
स्लिफ़ो—५२५
स्लेब—९४

स्लोवोदा—११३
"स्वतंत्र रूसी प्रेस"—३८२
स्वाप्निक समाजवाद — ३९१ (उटोपियन)
स्वायत्तत.वादी (खोकंद-)—५१९, ५२०
स्वारोग्—७३, ७६ (देवता)
स्वारोजिक—७३ (स्वारोचिष)
स्विट्जरलेंड—२७०, ३६५ (स्वीजर्लैण्ड), ४१२, ४१३, ५०४
स्वीड्—९४, ९६, १००, २२२, ४६५
स्वीडन—१०८, १०९, ११६, २२२, २३४, २४८, २५०, २५३, २५६, २५९, २६३, ३१८, ३३१, ३६६, ३६७, ४३०, ५०३
स्वीयाज्रेस्क—१०७
स्व्यातोपोल्क—८३, ८४ (१), ८७ (२)
स्व्यातोस्लाव—७८, ८२ (१), ८४, ८६, ८७, ८८
स्वेन्-चाङ—२९३, ४५९
स्वेर्द्लोफ्—४०५, ५१८
हकीम—१२६
हगान—३ (कआन, खाकान, खआन, खान)
हङ-चाउ—९
हचबेचा—५१५ (उज्बेक)
'हजरत'—४४६
हजरत-इमाम—४६०, ४६१
हज़ार—१९४
हज़ारज़मीन—३२
हज़ारा—१४७, १७२
हजारास्प—३२, १७८, १९६, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, ४६७, ४६९, ४७५, ४७६, ४८३, ४८५
हनफी—३२५
हनीफा—३२५
"हफ्त-किश्वर"—१६१
"हफ्त-पैकर"—१६१
हबश आमिद—१२६, १२७
हमदान—३३, १४०, २०९
'हमारे मतभेद"—३९३
हम्दुल्ला मुस्तौफी—१४६
हम्माम—१६१ (स्नानागार)
हरावल—२९५
हरिद्वार—१५१
हरिनोके नरकट—५०
हरीरूद—४९१, ४९८
हर्बिन—३९७
हर्मोगन—२२३
हर्शल—२६५
हलब—८ (अलेप्पो), १४०
"हश्त-बहिश्त"—१६१
हश्तरूद—४० (अष्टनद)
हमज़ा—१७५
हसन—१०२-४ (-बेग), १३९, १४४, १९९ (-कुल्ली), १५०, (-दमगानी), २००, ४७१ (-मुराद)
हड़ताल—४१४
हंसीय—९४
हंसे—९४
हाकिम—५४३
हाकिमबेग—३३२
हागान—१३९ (हगान भी)
हाजिम—२०३, २०५
हाजी—४३ (खा), ६०-६२ (-तर्खन-अस्त्राखान), १३६, १३७, १५७, १९१, २०२-३ (-मुहम्मद), ५२६ (अकरम, -दादखाह)
हाजी बिरलस—१३७, १४८
हान्स-संघ—३५
हाफिज़—१४७, १९१, ५१५ (उज्बेक)
हामी—३१० (चीन), ३३०
हालैंड—२२५, २४८, ३६७
हावड़ा—३७७
हांगकांग—३९७
हिट्लर—१०१, २५८, ३६८, ४०६
हिंद-चीन—३, १०, ३९७
हिंदी-युरोपीय—५३९
हिंदुस्तान—१०३, १०४, १४४, १७६, १८३, २०३, ३५५, ४२६, ४४२, ५३६
हिंदू—१०३, १८८, ४४२
हिंदूकोह—१५१, १७२, १८९, १९०, ४४२ (हिंदूकुश), ४६१ (हिंदूकुश)
हिंदू मंदिर—२९९
हिंदू-विहार—२९९ (बौद्ध)
हिप्पोक्रेत—१९२, २८९
हिदो आंग्लियन—२६६
हिमानी—५३५
हिरात—६६, ६९, १५०, १५४ (खुरासान), १५४, १५५, १५७, १५८, १५९, १६१, १७२, १७३, १७६, १७८, १७९, १८१, १८२, १८५, १९३, ३०३, ४४१, ४४२, ४४९, ४५५, ४६१, ४७४, ४९०, ४९७, ४९८, ४९९, ५२७
हिल्ला—१४४
हिसार—५६, १६७ (ताजिकिस्तान), १७१, १७३, १७४, १७६, १७७, १७८, १८६, २११, ३०६, ३०९, ४३९, ४५९, ५२७
हिसार कुंदुज—३०४
हुगली—३७७
हुमायू—१०६, १७७, १७९, १८३, ३०८, ३१३
"हुर्रियत" (=स्वतंत्रता)—५२६
हुलाकू—८ (वंश), १०, १७, १२५, १२६-३०, १३९, १४०, २८४
हुलीजन हान—३३२
हुसेन—३३ (चोबान), १०३, १३५, १४९, १५०, १५७,

१७७
हु ोन सु.ी—५३ (सूफी), १६० (-मिर्जा), १७१ (-बेकरा), ३०४
हुंगर—६ (मगयार)
हुंगरी—२३, ३९, ७८, ८४ (मगयार), ५४८
हुंगेरियन—१०९
हु-कुङ—५
हू-तुक्-तू—३२४
हूण—२४, २८४, ३३४, ३४३, ५१७, ५२८, ५२९, ५३६, ५४१, ५४८
हेक्तर—५३६
हेजिर—१२५, १२६
हेतमन—२२१, २३०, २३१, २३४ (प्रधान), २५० (अतमन)
हेदविग—५३
हेदेनस्त्रीम—३७२
हेनरी—६, १५२
हेफ़्ताल—७२, ५१७, ५३९, ५४१, ५४८
हेमन्तप्रासाद—२५७, ३८७, ३९९, ५०९ (पेत्रोग्रादमें), ५१०
हेया—५१७
हेरमोलोस—११०
हेराकिल—७३
हेरात—१३१, १३५
हेर्जन—३८२ (एर्जन)
हेर्जेगोविना—३८६, ४०७, ४०८, ४११
हेनगियोस्—४४८ (कप्तान)
हेलमन्द—१७२
हेलसिकी—५०७, ५०८
हेलेना द्वीप—३७०
हेस्टिंग्स—३९०
हैदर—६८, ११६, १७३, १७५, १७९, २९९, ३०५, ३०७, ३०८, ३११, ३१२, ३१३, ४२३, ४५८ (अमीर बुखारा), ४७१
हैदर मिर्जा—३०३ (इतिहास-कार), ३०५
हैरत शाह—५४५
हो—३४६ (चीन सेनापति)
होनान्—५ (चीन), ७
होर्द—२८७
हो-लो-लो कि-या—२९३
होल्स्टाइन—२५७
ह्वाङ-हो—९ (पीत नदी)